राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहद् कोश]

चतुर्थ खण्ड

(द्वितीय जिल्द)

संपादक

(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधनकर्ता)

मनीषी, साहित्य भूषण, डॉ० सीताराम लालस डी.लिट्. (मानद)

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जोधपुर

पृष्ठ [illegible] से ५११८ (व) शब्द संख्या १५१५१

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)



संपादक

(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधन कर्ता)

मनीषी, साहित्य भूषण, डॉ० सीतारांम लालस डी.लिट्.(मानद)

व्युत्पति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण, साहित्य, कोषादि तीर्थ श्री रामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

डॉ० सीतारांम लाळस डी. लिट्. (मानद)

स्व० उदयराज उजळ



प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जो ध पु र .

प्रकाशक :
चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण मूल्य १२ रु०

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस
जोधपुर

छप्पय

जुरजोधन जांणियौ, पाट हथणापुर बैठूं।
एहड़ी कद जांणतौ, जाय जळ भीतर पैठूं॥
सह कौरव लै साथ, कियौ भारत मुदा सूं।
मन रीस्यौ मन मांह, मुऔ भीम री गदा सूं॥
त्रयलोक नाथ होतब तणा, अलप करै कुण अक्खरां।
कवि 'ओप' अग्यांनी नर कहै, नौवां री तेरह करां॥

—ओपौ आढौ

संस्था की ओर से—

चौपासनी सिक्सा समिति; राजस्थांन में सिक्सा रै कांमां मैं ठेठ सूं लगाय नै आज तांई आगीवांण रैवती आई है। पछिमी राजस्थांन में जठै "अणभणिया घोड़ां चढ़ै भणिया मांगै भीख" ईज सईकां तांई नारौ रियौ उठै आ समिति आपरा लगौलग जतनां सूं ग्यांन रा दीपईज नीं चासियौ, घर घर मैं ग्यांन री गंगा नै भी पूगती कीवी। राजस्थांन रै पुरांणै इतिहास, संस्क्रति नै समाज रा मांन – मूल्यां नैं जीवतां राखण खातर नै नवी पौध नै राजस्थांन री जूनी सभ्यता नै समझणै, परखणै, अजमांणै तांई 'राजस्थांनी शोध संस्थान' री थरपना कीवी। घणा अणमोल ग्रंथां नै भेळा किया। पछै सिक्सा समिति रा जाग्रत लोगां साहित्य इतिहास नै राजस्थांनी भासा री रक्सा नै बढ़ौतरी रै खातर 'राजस्थांनी सबद कोस" री घणी जरूरत समझी। आज रै विग्यांन सूं खंवा – ठौरी करता समै मैं अैडा लूंठा कामां मैं समै, स्रम, धीरज नै धन री घणी जरूरत पड़ै। घणा फोड़ा देखणा पड़ै, घणी अबकायां झेलणी – उठावणी पड़ै। राजस्थांनी सबद कोस रा कांम मैं भी अैड़ा घणा उतार – चढ़ाव आया, पण जठै चाह उठै राह। सो, कोस रै छपणै रौ कांम डकरां भरता रथ री भांत चालतौ ईज रियौ।

राजस्थांनी सबद कोस रा चौथा खंड री प्रथम जिल्द रौ साहित्य संसार घणौ, आघमांन कियौ इण माथै म्हनै घणौ मोद है नै आज उणी लड़ी मैं औ "व" आखर रौ चौथा खंड री दूजी जिल्द साहित्य रा पिंडतां रै आगै अरपण करतां म्हांरौ मन हरख सूँ बांसां उछळै है।

आ, सवा सोळै आनां खरी बात है कै रुपियां रौ कांम रुपियां सूंईज सरै। कोस जेड़ा ठाढ़ा कांमां मैं अणूतौ द्रब चायीजै। राज सरकार नै केंद्र सरकार भरपूर मदत करै जद भी कोस कारयालय में धनाभाव इज रेवै इण अभाव नै मेटण ताँई घणा जुगाड़ बैठावणा पड़ै। समिति रा सदस्य गाढी भागा – दौड़ करै, जद जाय नै कठैई कोस री जिल्द छपावण रौ जोग बणै। इण खातर समिति नै आपरी बीजी योजनावां मैं कटौतरी भी करणी पड़ै। पण, फेर भी, कोस री छपाई रै कांम में लांची नीं आवण देवां, इण कांम री मदत खातर राजस्थांन राज रा राज्यपाल महामहिम जोगेंद्रसिंहजी, राजस्थांन रा मुख्य मंत्री स्रीमान् हरिदेव जोसी, सिक्सा आयुक्त स्रीमान् जगन्नाथसिंहजी मेहता, जोधपुर रा जिलाधीस स्रीमान् करुणकुमारजी भटनागर रा म्हैं घणा गुण मानां जिका जद भी कोस रै छपण रौ गाडौ अरथाभाव रा कीच मैं कळीजतौ दीठौ म्हांरी मदत कराय नै चीला माथै दौड़तौ करता रिया। अै महानुभाव इण कांम री कीमत आंकी, परख कीवी नै साधना रौ अभाव टाळियौ।

राजस्थांनी साहित्य नै संस्क्रति रा खंभ ठोक पुजारी नै सांचा हेताळु रांणी लक्समीकुमारीजी चूंडावत, राजस्थांन रा मोबी पूत, साहित्य रा कोडीला सम्रथ मांनवी लक्समीमलजी सिंघवी, सरूपोत सूं ईज कोस रा मेढी गोरधनसिंहजी मेड़तिया खांनपुर रै सहयोग रौ स्मरण नीं करणौ क्रतघणता ईज कहीजै। अै लोग देस, समाज नै आपरा घर घराऊ कांमां मैं समै काढ़ नै, कोस रै कांम खातर सदा उछाव रै साथै त्यार मिळ्या। राजस्थांनी रा जांणीता अर मांनीता साहित्यकार स्री कोमलजी कोठारी, स्री मरुधरजी म्रदुल, स्री कपूरचन्दजी कुलिस, स्री रेवतदांनजी चारण नै स्री सोहनदांनजी चारण रै प्रति आभार परगट करणौ म्हारौ धरम है, आं लोगां री नेक सलाह सूं कांम नै आगै वधावण मैं घणी मदत मिळी है। कोस रा सगळा बीजा हेत – प्रीत पाळणियां रौ भी म्हैं घणौमांन आभार मांनूं।

सगळा सूं घणौ तौ म्हनै औ हरख है कै इण साल कोस रा संपादक स्री सीतारामजी लाळस री तपस्या नै जोधपुर विस्वविद्यालय आंकी अर साहित्य रा इण ग्यांनी गौरख नै डी० लिट्. री मानद पदवी देय नै साहित्यसाधकां रौ उछाह बधायौ। राजस्थांनी साहित्य रा प्रेमियां नै समिति रा सदस्यां सारां खातर स्री लाळस रौ औ मांन गौरव री बात है।

इण जिल्द री छपाई रै कांम नै भली तरै समै माथै पूरौ करावण खातर स्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस रा प्रबंधक स्री हरिदत्तजी थांनवी रौ भी म्हैं आभार मांनूं। सिक्सा समिति रा सदस्यां नै तौ रंग है ईज जिका इण कांम री महत्ता नै समझ बरौबर मदत करता रैवै।

कागद रै मूंघा पणै नै छपाई री दरां री बढ़ौतरी रै कारण इण खंड री कीमत ६२) रिपिया राखणी पड़ी है।

चौपासनी शिक्षा समिति,
बसंत पंचमी संवत् २०३२

— नारायण सिंह मांणकलाव
सचिव
उप समिति राजस्थांनी सबद कोस, जोधपुर.

अपनी बात

राजस्थानी शब्द कोश के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द का देश - विदेश के विद्वानों ने स्वागत, सम्मान कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। इससे हमारा उत्साह ही नहीं बढ़ा, अपितु कार्य की महत्ता और गुरुता का बोध भी हुआ है। सभी जानते हैं कि कोश जैसे दुष्कर और अभिनव कार्य में अनेक प्रकार के बाधा - व्यवधान उपस्थित हुआ ही करते हैं, पर साहसी और लग्नशील व्यक्ति बाधाओं के बारिधि को बिना विचलित हुए पार भी करते हैं। हमने भी कोश के प्रकाशन और मुद्रण के व्यवधानों के समक्ष बिना अवनत हुए आगे और आगे ही बढ़ना अपना लक्ष्य रखा। फलतः कोश के चतुर्थ खण्ड की द्वितीय जिल्द आज हम विद्वानों को समर्पित करने में समर्थ हुए हैं।

आशा करते हैं कि विद्वत् समाज कोश के पूर्व खण्डों की भाँति ही इस जिल्द का भी स्वागत कर हमारा उत्साह - वर्द्धन करेंगे।

इस अवसर पर मुझे यह जानकारी देते हुए भी अतीव गर्व, और आल्हाद की अनुभूति हो रही है कि जोधपुर विश्वविद्यालय ने हमारे विद्वान् संपादक श्री लालस को इस अवधि में मानद डी. लिट्. की उपाधि से विभूषित किया है। चौपासनी शिक्षा समिति, उप समिति राजस्थानी शब्द कोश तथा भारती के उपासक सभी लोगों के लिए यह सम्मान गौरव का प्रतीक है। इस प्रकार शिक्षा समिति तथा डॉ. लालस की ऋषि तुल्य साधना फलवती हुई है।

मुझे विश्वास है कि शिक्षा समिति के लग्नशील सदस्यों, डा. लालस और राजस्थान सरकार के सतत सहयोग से यह कार्य यथा - समय संपन्न हो सकेगा।

प्रह्लादसिंह
अध्यक्ष
उप समिति राजस्थानी शब्द कोश
व
कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर.

दिनांक : ५-२-१९७६

॥ श्री ॥

* निवेदन *

—:दूहा सोरठा:—

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैल ओखद रचैं, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढ़ो होय, साच अमर संसार में । कैतो धोवो कोय, श्री सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती में साचो धरम । इण सूं पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईशर किरपा सू उदय ॥४॥
खत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल अखै । दीपै वांरा देश, ज्यांरा साहित जगमगै ॥५॥

भारत संसद में सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सूं राजस्थान में अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है। श्री सीताराम जी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हैं दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मैंनत सूं कोश रो काम शुरु कियो ने इण में खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज की। इणां कृपा करने मंजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूँ रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवा। सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द संग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दोयो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सूं सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सूँ कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सूं श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई, इण सूं सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बंद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूँ री लगन ही। म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ में कोश में सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जबाब उणां तारीख २९-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूँला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री मनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई। उणां रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू में जोधपुर में ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणाँ री सहायता सूँ सन् १९५७ री जनवरी सूं सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्योंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियाँ पेली बणी हुई ही। इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हैं पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूँ पूरो हुवो।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो। उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूँ श्री नीबाँज ठाकुर साहब सूँ रुपियां री सहायता ले ने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध संस्थान चोपासनी जोधपुर सूँ हुवो ने तारीख ११-३-५९ ने सीतारामजी ने इण सोध संस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूँ वे इण संस्थान में काम करण लागा।

इस कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण में स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदद ही इण वास्ते बैकूंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो:—

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

मीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजो उज्जवल यंत्रो (मेंकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जांचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगों को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से संतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एस० एलन जो संसार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान संबंधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर में दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजो दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है:—

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied.

Sd. W S. Allen M. A., P. H. d.
Professor Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियौ ने सीतारामजी कने भेजोया वो अठे दिया जावे है इण में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

''गीत'' राजस्थानी में

कोम मरू बाणरी सुणे बण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ।।१।।
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ घन छोड़ लाडा ।।२।।
मेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे । गिले सुखलाघ हितकर चित समाजां, दिनों दिन कितां सनमान दरसे ।।३।।
पांण मरू बांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो । रखो नह पढण में भावखां प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ।।४।।
वणाई चारणों व्याकरण विधोविध, बणेगी कोश ही लाखसबदो । 'सीत'रो परिश्रम अथग फलियों सिरे, रेटियो'उदय'मिल सकल सबदो ।।५।।
पोकरण भवानीसीह चांपे प्रथम कोश रे हेत घन खर्च कियो । पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ।।६।।
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति में हजारों खरचवे, दाद उजल 'उदे' देग दीनी ।।७।।
चारणों दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह भीम मिलियो ।।८।।

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदीयापुर रान के कोष बल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी घन घर के ।
प्रांत की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परंपरा बिबुधन दीनमान वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ में रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित बिदाजा है ।
जीवित उट्ठेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेमे जिशाला है ।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. हु० उदयराज उज्जवल
Sd. Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्र०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० रा०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गौ खिड़ियो
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
☼	शब्द के आगे	—	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर	—	यह ध्वनी-लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
___	शब्द के नीचे	—	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'...'	शब्द के दोनों ओर सिरो पर	...	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इनव र्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोष	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधांन माळा	उदयरांम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदांन लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नांम माळा	वीरभांण रतनू. उदयरांम बारहठ
ऐ० जै० का० सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपा. अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयरांम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबंध	पद्मनाभ
गी० रां०	गीत रांमायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढो
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० नां० मा०	डिंगल नांम माला	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियांण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० अगरचन्द नाहटा
नां० मा०	नांम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना० द०	नागदमण	साइयां झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरांमसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियो
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदांन रतनूं
पी० ग्रं०	पीरदांन ग्रन्थावळि	पीरदांन लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदांन गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बाँकीदास
बां० दा० ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासो	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खु०,	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि० दृ०	,,	,,
मा० कां० प्र०	माधवानल कांम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

मा० म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरां बाई	मीरां
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदांन कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकाश	किसनौ आढौ
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जग्गौ खिड़ियौ
र० हमीर	रतनाहमीर री बारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै० छंद	राउ जैतसी रौ छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रां० रा०	रांम रासौ	माधौदास दधवाड़ियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीर भांण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंसरी विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह I	संम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगल	हमीरदांन रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालजी कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	संपादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनय कुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० सं० सा०	विश्णोई संप्रदाय और साहित्य	डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
बि० सं०	बिड़द सिणगार	कविराजा करणीदांन कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदांन बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	संग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पति	गोपालदांन कविया
शि० सु० रू०	शिवदांन सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समयसुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समय सुंदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदांन
ह० नां० मा०	हमीर नांम माला	हमीरदांन रतनू
ह० पु० वां०	श्रीहरिपुरुषजी की वांणी	श्री हरिपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० झा०	हाला झाला रा कुंडळिया	ईसरदास बारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

व

व—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन-वर्ण जो उकार, विकार और अंतस्थ अर्द्ध व्यजन माना जाता है। इसका उच्चारण दंत्योष्ठ है। उच्चारण में जिह्वा-पश्च उकार के समान-संवृत्त या अर्ध-संवृत्त स्थान तक उठता है और तुरंत परवर्ती स्वर के स्थान पर पहुंच जाता है। इसमें व्यंजनात्मकता से अधिक स्वरात्मकता ही पाई जाती है।

वंक-सं. पु.—१ गर्व, अभिमान, घमण्ड।

उ०—१ दिपै रघुनायक दीन दयाळ, पुणां खळ घायक सेवग पाळ। चढै दसमाथ विभंजण **वंक**, लछीवर देण भभीखण लंक। —र. ज. प्र.

उ०—२ बेहु सायबी पगां रांखीबै, वाळी धरा वचूटौ **वंक**। सबळां अनड़ां बेहु तणौ सर, आबु अनड़ तुहाळौ अंक। —दुरसौ आढौ

२ देखो 'बांक' (रू. भे.)

उ०—दरपइ दीठइ दोरडइ, साप न आंणइ संक, बीहइ बिलाडां-बच्चडइ, वाघिणी वालइ **वंक**। —मा. कां. प्र.

३ देखो 'बांकौ' (मह., रू. भे.)
४ देखो 'बंक' (रू. भे.)
५ देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—दीहा पाधर **वंक** गय, भुज धरिये कुळ-भार। —गु. रू. बं.

वंकड़—१ देखो 'बांकौ' (मह., रू. भे.)
२ देखो 'बांक' (मह., रू. भे)
३ देखो 'बंक' (मह., रू. भे.)

वंकड़ी—देखो 'बांकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कटि-तटि हूंती **वंकड़ी**, काढ़ी करि करवाल्। तव अग्गीउ आवी करी, करि वलगु ततकाल्। —मा. कां. प्र.

वंकड़ौ—देखो 'बांकौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ 'वीरम' भाई **वंकड़ौ**, ज्यूं बेटौ जगमाल। दत क्यावर चावा दुनी, साहां उर रा साल। —वी. मा.

उ०—२ भड़ां दुबाहा **वंकड़ां**, हुई सनाहां सत्थि। सेघ निवाहां सूरमां, राहां वेध अरत्थि। —रा. रू.

(स्त्री. वंकड़ी)

वंकट—देखो 'बंकट' (रू. भे.) (नां. मा.)

वंकति—देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—छट सुंदर वीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ़ रूप तणा। दुति **वंकति** तुंड लगांम दियां, कुळवंतिय घूंघट जांणि कियां। —रा. रू.

वंकनाळ, वंकनाळि, वंकनाळी—देखो 'बंकनाळ' (रू. भे.)

उ०—१ **वंकनाळ** घर अभरा भरि हैं, अरघ उरघ घर निरझर झरि है। —अनुभववांणी

उ०—२ अजरामर का मारग औंळा, सौळा संत पिछांणै। **वंकनाळि** मेर संचरि कै, भंवरगुफा सुख मांणै। —अनुभववांणी

उ०—३ पलटि पूरब अपूरब पांणा, करि **वंकनाळी** ले मेर थांणा। —अनुभववांणी

वंकनाड़ी—देखो 'बंकनाळ' (रू. भे.)

वंकि, वंकी—१ देखो 'बंक' (रू. भे.)

उ०—**वंकि** पटां फूलहथां, सोरि खिलकार कुसत्री। तस कसीस लेजमां, जजर गती जाजत्री। —सू. प्र.

२ देखो 'बांकी' (रू. भे.)

उ०—वारण सिर तोड़ै खग **वंकी**। तांणै स्रंगणि अढारह टंकी। —सू. प्र.

वंकीनाळि, वंकीनाळी—देखो 'बंकनाळ' (रू. भे.)

उ०—**वंकिनाळि** चढावै वाटां, घण अटकै हीरामण घाटां। —सू. प्र.

वंकेण—१ देखो 'बांकौ' (मह. रू. भे.)

उ०—दिन वंकै **वंकेणां**, वांणी मंत्र तंत सा बुद्धी। दुरजण सज्जण थांनै सज्जन होइ दुज्जणाकारै। —रा. रू.

२ देखो 'वक्र' (मह., रू. भे.)

वंकौ—देखो 'बांकौ' (रू. भे.)

उ०—१ ढंकै जस जेती धरण, वडपण अंके वार। इण **वंकै** 'पातल' अगै, सह संकै संसार। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ वदै अंगदेसं हुवा जोध **वंका**। लंगा झोकरै झोक प्राजाळ लंका। —सू. प्र.

उ०—३ मिळिया **वंका** राठवड़ चितहित राख वचाव। सुख गाडौ कीधौ सगै, रीधौ हाडौ राव। —रा. रू.

उ०—४ पेखेवा पतिसाह नूं 'अजन' थयौ असवार, गति **वंकी** दिन पाधरै, छत देखे संसार। —रा. रू.

वंक्रत—देखो 'वक्र' (मह., रू. भे.)

उ०—माहा जटीयळ भ्रुगट भेक **वंक्रत** मयंक, अलंक्रत सेस मेचख ऊथाळौ। करण पत प्रभा परभात रा समोकर। तेज पुंज नाथ रा तणौ ताळौ। —भीमसिंह जी रौ गीत

वंग-सं. पु. [सं.] १ जस्ता या रांगा नामक धातु।

२ उक्त धातु का भस्म ।
३ प्रेम, मुहब्बत ।
४ अधिकार, कब्जा ।
५ वंश ।
६ सीधा व सरल होने का भाव ।
७ बिना कष्ट के, आसानी से होने वाला कार्य ।
८ अवसर, मौका ।
९ एक चंद्रवंशी राजा । १० कपास । ११ बेंगन ।
रू. भे.—भंग
१२ देखो 'बंग' (रू. भे.)
उ०—मगध मंडळ अंग **वंग** कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पंचाल जांगल······। —व. स.

वंगर–वि.—एकाकी, अकेला ।

वंगस, वंगसी, वंगस्स – देखो 'वंगस' (रू. भे.)

वंगा –देखो 'वंगाल' (रू. भे.)

वंगार—देखो 'बघार' (रू. भे.)

उ०—झोळ में तौ मुसाला, पांणी अर **वंगार** घी रौ है । मा'राज आं री तौ थांनै सोगन दिराई कोनीं । —फुलवाड़ी

वंगारणौ, वंगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

वंगारणहार, हारौ (हारी), वंगारणियौ—वि० ।
वंगारिओड़ौ, वंगारियोड़ौ, वंगारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंगारीजणौ, वंगारीजबौ—कर्म वा० ।

वंगाळ, वंगाल—देखो 'बंगाळ' (रू. भे.)

उ०—बरहार, मथुरा, अवध्या, वणारसी, चंदेरी मल्लिवाल, महोब, हरियांणउ, भयांणउ, रत्नपुर, कांमरू, आडियांण, जलधर, आरब, **वंगाल**, त्रिहूण, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण···। —व. स.

वंगाळी, वंगाली—देखो 'बगाळी' (रू. भे.)

वंगास्टक–सं. पु. [सं. वगाष्टक] रांगा आदि आठ धातुओं के योग से बना एक रसौषध ।

वंगेसरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

वंगेस्वर–सं. पु. [सं. वंगेश्वर] एक रसौषध । (वैद्यक)

वंगेस्वरी—१ देखो 'बंगेस्वरी' (रू. भे.)
२ देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

वंगोवंग–क्रि. वि.—यथास्थान, उचित स्थान ।
२ व्यवस्थानुसार ।
३ उपयुक्त, यथोचित ।

वंच–सं. पु. [सं.] १ सूर्य ।
२ तोता ।
रू. भे.—बच ।

वंचक–वि.– [सं.] १ छल, प्रपंच से जो दूसरों को ठग लेता है, ठग, धोखेबाज । २ धूर्त खल ।

उ०—१ विभचारी बैरी बद **वंचक**, छळ बळ कपटी छांनौ । महामोह हिंसक मूरख सूं, मरणौ उत्तम मांनौ । —ऊ. का.

उ०—२ 'वांका' **वंचक** वांणियौ, नहिं जांण्या नहिं राह । त्यां हुंदा धन तांणिया, यां आंण्या धर राह । —बां. दा.

३ पढने वाला, पाठक ।

उ०—परधन हरण परायण पांमर, **वंचक** बांणी रे । ते झूंठी बुगलां री बातां नाहक तांणी रे । —ऊ. का.

रू. भे.—वंचक, वंछक
४ सोंधियार, चोर ।

वंचकता–सं. स्त्री. [सं. वचक+प्र. ता.] १ छल-प्रपंच से दूसरों को ठगने का कार्य, ठगी, धोखाबाजी, धूर्तता ।
२ चोरी ।
रू. भे.—बंचकता

वंचण—देखो 'वंचना' (रू. भे.)

वंचणौ, वंचबौ–क्रि. स. [सं. वंचनम्] १ ठगना, धोखा देना ।
२ चालबाजी करना, बेईमानी करना ।
३ देखो 'बांचणौ, बांचबौ' (रू. भे.)
उ०—इम कागद आवियौ, पेखि **वंचै** 'गजपत्ती' । अंग पौरस ऊफणौ, भाहि घ्रित जेम विभत्ती । —सू. प्र.
४ देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरयि नारी नागणी, सब जुग लीया खाय । जे कोई **वंचै** बापड़ौ, गुर का मंतर पाय । —अनुभववांणी
उ०—२ है मुह फाड्यां बाघनी, दाढ्या सब संसार । जो **वंचै** भाज करि, लख चौरासी जेर । —अनुभववांणी

वंचणहार, हारौ (हारी), वंचणियौ—वि० ।
वंचिओड़ौ, वंचियोड़ौ' वंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंचीजणौ, वंचीजबौ—कर्म वा० ।
बंचणौ, बंचबौ—रू० भे० ।

वंचत—१ देखो 'वांछित' (रू. भे.)
२ देखो 'वंचित' (रू. भे.)

वंचना–सं. स्त्री. [सं.] १ ठगी, धोखा, जाल, फरेब ।
उ०—लोग प्रिय उत्तम आचार थी, **वंचना** रहित अक्रूरौ जी । पाप करम थी जे डरता रहइ, कपट थकी रहइ दूरौ जी ।
—स. कु.
रू. भे.—वंचणा, वंचण ।

वंचाणौ, वंचाबौ–क्रि. स. ['वंचणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ ठगवाना, धोखा दिराना ।

२ चालबाजी कराना, बेईमानी करवाना ।

३ देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिवै म्हांनु **वंचावौ**, ताहरां बाळक हंसियौ बांमण छुडाया ।
—देवजी बगड़ावत री वात

उ०—२ लक्ष्मी नै कुण नोतरै, गंगोदक कुण पवित्र करै हंसनै गति कुण सिखावै, ब्रहस्पति नै कुण **वंचावै** । क्रपण नै कुण संचावै । तिम सज्जन नै स्वभावै जांणवौ । —रा. सा. सं.

वंचाणहार, हारौ (हारी), वंचाणियौ—वि० ।

वंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचाईजणौ, वंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वंचावणौ, वंचावबौ—रू० भे० ।

वंचायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ठगवाया हुआ, धोखा दिराया हुआ.

२ चालबाजी या बेईमानी करवाया हुआ ।

३ देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंचायोड़ी)

वंचावणौ, वंचावबौ—१ देखो 'वंचाणौ, वंचाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—हंस नै गति कुण सिखावै, व्रिहस्पति नै कुण **वंचावै** क्रिपण नै कुण संचावै । —रा. सा. सं.

वंचावणहार, हारौ (हारी), वंचावणियौ—वि० ।

वंचाविओड़ौ, वंचावियोड़ौ, वंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचावीजणौ, वंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वंचावियोड़ौ—१ देखो 'वंचायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंचावियोड़ी)

वंचित–वि. [सं.] १ जो ठगा गया हो, धोखा खा गया हो ।

२ जो किसी की कृपा या सहायता प्राप्त करने से अलग रह गया हो, दूर रह गया हो ।

३ जो अभीष्ट फल या लाभ न पा सका हो ।

४ विमुख ।

५ हीन ।

रू. भे.—बंचत, वंचित, वंचत ।

वंचियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ठगा हुआ, धोखा दिया हुआ. २ चालबाजी किया हुआ, बेईमानी किया हुआ ।

३ देखो 'बांचियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंचियोड़ी)

वंछक–वि. (स्त्री. वंछकी) १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला ।

२ कामना करने वाला ।

३ देखो 'वंचक' (रू. भे.)

रू. भे.—बंछक

वंछणौ, वंछबौ–क्रि. अ. [सं. वांछम्] १ चाह होना, इच्छा होना ।

उ०—हरि समरण रस समझण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि । बैसे सभा पारकी बोलण, प्रांणी **वंछइ** त वेलि पढि ।
—वेलि

क्रि. स.—१ चाहना. इच्छा करना, अभिलाषा करना ।

उ०—१ आकास राता, मेह करि माता । क्यां किण नीला, क्यां किण पीला । नाना प्रकार ना रंग, भला सुरग । वाधै अनंग, जगी करै जंग, भोगी पीयै भंग, स्त्री वंछै संग आदि ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ माधव करि माहरूं कहिउं, जु मुझ **वंछइ** खेम । सास लगइ सेवा करिसि, सीत दमयंती जेम । —मा. कां. प्र.

उ०—३ औ अवसांण सूरमां आयौ, पूरां नरां **वंछंतां** पायौ । असमर हथा धणी मुख आगै, लड़तां गयण भुजा डंड लागै ।
—रा. रू.

२ जिज्ञासा करना ।

३ प्रेम करना ।

वंछणहार, हारौ (हारी), वंछणियौ—वि० ।

वंछिओड़ौ, वंछियोड़ौ, वंछयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंछीजणौ, वंछीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

बंचणौ, बंचबौ बंछणौ, बंछबौ—रू० भे० ।

वंछत, वंछती, वंछतौ—देखो 'वांछित' (रू. भे.)

उ०—१ नर न्रप अमर चंद्र अयनेता, क्रम क्रम चाहां करो सकाज । सफळ करण **वंछत** सगळां रा, तो हातां रघुकुळ सिरताज ।
—र. रू.

उ०—२ जग मुगति भुगति दाता जगा, दांन मांन **वंछत** दिये । पारथै किसूं मेळग कुपह, प्रभू नाथ पारत्थियौ । —ज. खि.

वंछना—देखो 'वांछना' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वंछाणौ, वंछाबौ–क्रि. स. ['वंछणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ चाह कराना, इच्छा कराना ।

२ कामना कराना, अभिलाषा करवाना ।

वंछाणहार, हारौ (हारी), वंछाणियौ—वि० ।

वंछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंछाईजणौ, वंछाईजबौ—कर्म वा० ।
वंछाणौ, वंछाबौ—रू० भे० ।

वंछायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चाह कराया हुआ, इच्छा कराया हुआ. २ कामना कराया हुआ, अभिलाषा करवाया हुआ ।
(स्त्री. वंछायड़ी)

वंछासुर—देखो 'वत्सासुर' (रू. भे.)

वंछित–देखो 'वांछित' (रू. भे.)

उ०—महि सुइ खट मास प्रात जळ मंजै, आप अपरस अरु जित इद्री। प्राग वेलि पढंतां नित प्रति,त्री वंछित वर **वंछित** त्री ।—वेलि

वंछियोड़ौ–भू. का. कृ.— १ चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. २ जिज्ञासा किया हुआ. ३ प्रेम किया हुआ ।
(स्त्री. वंछियोड़ी)

वंजण–सं. पु. [देशज] १ घास ।

उ०—१ ताहरां सात-वीस भैंसां दियां । भैंसां लै-नै घरै आयौ । चारणी सखरा आसरा घताया । भैंस्यां व्यायां नै **वंजण** पड़िया । फोफाणंद रै आणंद हुवा । —फोफाणंद री वात
उ०—२ तैंरी बेटी पण लियौ छै। जियै रै सात वीस भैंस्यां नै **वंजण** पड़ै तियै चारण नूं परणीजूं। —फोफाणंद री वात
२ शरीरांग, अंग-उपांग ।
३ शरीर के जन्मजात या स्वाभाविक वे चिह्न जिनके द्वारा मनुष्य की पहचान की जाती है। (जैन)
उ०—ए थारौ सरीर छै रे, **वंजण** लखण उदार । रोग रहित दोख को नहीं रे, जोबन कला अपार । —जयवांणी
४ देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)
रू. भे.—वंजन ।

वंजणौ, वंजबौ–क्रि. अ. [सं. वज्=गति] १ पराजित होना, भागना ।
उ०—रजपूतै भुइ भागियै, दळ मूका छळ देस । 'वीहारी' **वंजै** नहीं, सूना मेल्है नेस । —गु. रू. बं.
२ चलना ।
वंजणहार, हारौ (हारी), वंजणियौ वि० ।
वंजिओड़ौ, वंजियोड़ौ, वंज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंजीजणौ, वजीजबौ—भाव वा० ।
वंझणौ, वंझबौ—रू० भे० ।

वंजन—१ देखो 'वंजण' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)

वंजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पराजित हुवा हुआ, भागा हुआ. २ चला हुआ ।
(स्त्री. वंजियोड़ी)

वंझ—देखो 'बंध्या' (रू. भे.)

वंझणौ, वंझबौ—देखो 'वंजणौ, वंजबौ' (रू. भे.)
उ०—वढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, **वंझियौ** 'सुरजन' देय वढ। गढ चित्तौड़ गरव तण गरजै, गाडौ गो रणथंभ गढ ।
—पत्ता चूंडावत री गीत

वंझि—देखो 'बंध्या' (रू. भे.)
उ०—माई हूई माइ हूई काइं नवि **वंझि**, अह जाया नवि मूआ तुम्हे राजु कांई दैवि दिद्धउ । —पं. पं. च.

वंझियोड़ौ—देखो 'वंजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वंझियोड़ी)

वंट–सं. पु. [सं.] १ बंटवारा करने की क्रिया या भाव ।
२ विभाजन ।
उ०—थे सूंना कूकनै लोक हसावता हा सो आवौ उरा अबै आज इण दिन बराबर **वंट** होवै है । —वी. स. टी.
३ विभाजन द्वारा होने वाला हिस्सा, भाग ।
उ०—अबै आज इण दिन बराबर **वंट** होवै है सो आछौ वंट व्है वौ आप लेलीजौ । —वी. स. टी.
४ अंश ।
५ पीसने की क्रिया या भाव ।
६ विधुर ।
७ हसिया नामक उपकरण का बेंट या दस्ता ।
रू. भे.—बंट, बांट, वांट, वांठ ।

वंटणौ, वंटबौ—देखो 'बंटणौ, बंटबौ' (रू. भे.)
उ०—अब घर अघर कीया मन भाई, बागा अनहद **वंटी** वधाई। नांव अखंडत खंडै नांही, सुरति सबद कै मंडी मांही ।
—अनुभववांणी
वंटणहार, हारौ (हारी), वंटणियौ—वि०
वंटिओड़ौ, वंटियोड़ौ, वंट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंटीजणौ, वंटीजबौ—कर्म वा० ।

वंटवाड़ौ, वटवारौ—देखो 'बंटवारौ' (रू. भे.)

वंटाइत—देखो 'बंटायत' (रू. भे.)

वंटाई—देखो 'बंटाई' (रू. भे.)

वंटाड़णौ, वंटाड़बौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)
वंटाड़णहार, हारौ (हारी), वंटाड़णियौ—वि० ।
वंटाड़िओड़ौ, वंटाड़ियोड़ौ, वंटाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंटाड़ीजणौ, वंटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वंटाड़ियोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बंटाड़ियोड़ी)

वंटाणौ, वंटाबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वंटाणहार, हारौ (हारी), वंटाणियौ—वि० ।
वंटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंटाईजणौ, वंटाईजबौ—कर्म वा० ।

वंटायत—देखो 'बंटायत' (रू. भे.)

वंटायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वंटायोड़ी)

वंटारौ—देखो 'बटारौ' (रू. भे.)

वंटावणौ, वंटावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)
वंटावणहार, हारौ (हारी), वंटावणियौ—वि० ।
वंटाविओड़ौ, वंटावियोड़ौ, वंटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंटावीजणौ, वंटावीजबौ—कर्म वा० ।

वंटावत—देखो 'बंटायत' (रू. भे.)

वंटियोड़ौ—देखो 'बंटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वंटियोड़ी)

वंटीलौ—वि. [सं. वंट+आलुच् प्र.] (स्त्री. वंटीली) १ जिसका किसी हिस्से, भाग या अंश पर अधिकार हो। हकधारी।
२ हिस्सेदार, भागीदार।
३ साझीदार

वंठ, वंठौ—वि. [सं. वंठ] (स्त्री. वंठी) १ उद्दण्ड।
२ अविवाहित, कुँआरा।
३ बौना।
४ पंगु, अंगहीन।
सं. पु. [सं. वठः] १ अविवाहित व्यक्ति।
२ नौकर, सेवक।
३ भाला, बर्छा, शूल।

वंड—देखो 'वंडौ' (मह., रू. भे.)

वंडणौ, वंडबौ—क्रि. स.—पीसना।
उ०—भोरे-भोरे तन करै, वंडै कर कुरबांण। मिठ्ठा कोड़ा ना लगै, दादू तोहू सांण। —दादूबांणी
वंडणहार, हारौ (हारी), वंडणियौ—वि० ।
वंडिओड़ौ, वंडियोड़ौ, वंड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंडीजणौ, वंडीजबौ—कर्म वा० ।

वंडियोड़ौ—भू. का. कृ.—पीसा हुआ।
(स्त्री. वंडियोड़ी)

वंडौ—वि. [सं. वण्ड] १ वह पुरुष जिसके लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर चमड़ा न हो, जो सुन्नी किया हुआ हो।
२ बधिया किया हुआ, आख्ता किया हुआ।
३ अंग-भंग, पंगु।
४ अविवाहित।
रू. भे.—बंडौ।
मह.,—बंड, बयंड, वंड, वयंड।

वंतळ—सं. स्त्री. [सं. वर्तनम्] १ चित्त का किसी कार्य में लग जाना, मनबहलाव।
उ०—नीं कोई बूढ़ी-ठाडी डोकरी ई घरै वंतळ करण सारू आई। —फुलवाड़ी
२ बातचीत, वार्तालाप।
उ०—दीवांणजी रौ एक खास सुभाव के वै लुगायां सूं घणी वंतळ नीं करता। —फुलवाड़ी
रू. भे.—बंतळ, बतळ, वंतोळ, वंतोल, वतळ।
अल्पा.,—वतकलौ।

वंतूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

वंतूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

वंतोळ, वंतोल—१ देखो 'बथूळौ' (मह., रू. भे.)
उ०—चिहुंदिसि चमकइ वीजळी, वादलवा वंतोळ। दुख-दरिया-माहां हुं गई, टळवळती द्रहि बोळ। —मा. कां. प्र.
२ देखो 'वंतळ' (रू. भे.)

वंतोळियौ, वंतोलियौ, वंतोलीयौ, वंथूळियौ—१ देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ मझ जावा तुझ तेडवा, विमासिउं निमि दिन्न। वैगागि वंतोलीया, मरडी नाखइ मन्न। —मा. कां. प्र.
उ०—२ उडइ रेणू अबीर नी, सुरतरु नइं सींदूर। गयणि गुलाल वंतोलिया, छलर विछाहिउ सूर। —मा. कां. प्र.

वंथूलौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

वंद—देखो 'वंद्य' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

वंद—देखो 'वंदन' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—तांण मूंछ तोले तिजड़, विमन सकति कर वंद। कूच नगारां हुय कटक, चवै हुकम जयचंद। —गू. प.

वंदगण—सं. पु.—१ पत्थर। (अ. मा.)
२ बन्दीजन।

वंदगी—देखो 'बंदगी' (रू. भे.)
उ०—तद ठाकुरजी फुरमायो कै थांरी जात मांनी। थे घरै जावो। थे तौ अठैई घणी वंदगी करौ छौ। सू जात्रा सूं इधकी मांना छा। —द. दा.

वंदण—१ देखो 'वंदन' (रू. भे.)

उ०—कवि वेदव्यास वलमीक कवि, करि अस्तुति **वंदण** कियौ।
—सू. प्र.

२ देखो 'वंदिण' (रू. भे.)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, अति रंग रंग अनूप। जसवांणि **वंदण** जीह, उचरंत विरद सईह।
—रा. रू.

वंदणा—देखो 'वंदना' (रू. भे.)

उ०—हींदू तुरक नहीं को इसउ, रिणि राउतवटि लखणउ जिसउ। जे समरंगणि सांम्हा मरइ, ते सुर सिद्ध **वंदणा** करइ।
—कां. दे. प्र.

वंदणौ, वंदबौ–क्रि. स. [सं. वंदनम्] १ नमस्कार करना, प्रणाम करना, अभिवादन करना।

उ०—१ कमधज्ज मिळे सूं कमधजां, हीया परफूल्लंत हुवै। **वंदियौ** 'गजण' बिय चंदवरि, तांम तुरक्कै हिंदुवै।
—गु. रू. बं.

उ०—२ सेतुज **वंदिअ** तीरथराउ, गुरु या गणहर करउ पसाउ। वाग वांणि हउं समरउं देवि, चिहुंगति गमण कहउं संखेवि।
—वस्तिग

२ स्तुति करना, प्रार्थना करना।

३ पूजा करना, अर्चना करना।

४ प्रशंसा करना, तारीफ करना।

वंदणहार, हारौ (हारी), **वंदणियौ**—वि०।
वंदिओड़ौ, वंदियोड़ौ, वंदयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वंदीजणौ, वंदीजबौ—कर्म वा०।
बंदणौ, बंदबौ, बंधणौ, बंधबौ, बंदेणौ, बंदेबौ बिंदणौ, बिंदबौ, विंदणौ, विंदबौ—रू० भे०।

वंदन–सं. पु. [सं.] १ नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।

उ०—१ राजा **वंदन** कीध उभै कर। आसी-वाच विप्रां इम उच्चर।
—गु. रू. बं.

उ०—२ इम सिध वयण सुणे उदमदियौ, **वंदन** करै नरेसुर वंदियौ।
—सू. प्र.

२ प्रार्थना, स्तुति।

३ पूजा, अर्चना।

रू. भे.—बंदण, बंदन, बंदिण, बंदिन, वंद, वंदण।

वंदनमाळ, वंदनमाळा, वंदनवार—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—प्रथीनाथ गढपौळि, प्रथम 'अभसाह' पधारे। तोरण **वंदनमाळ** प्रगट उछव अणपारे।
—रा. रू.

वंदना–सं. स्त्री. [सं. वंदन] १ नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम।

उ०—कर कंइ नइ करूं **वंदना** हुं वारी। पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे हुं वारी लाल।
—स. कु.

२ स्तुति, प्रार्थना।

३ पूजा, अर्चना।

रू. भे.—बंदणा, बदना, वंदणा, वंदनी।

वंदनी–सं. स्त्री. [सं. वन्दनी] १ जीवातु नामक औषधि, जो मृतक को जीवित कर सकती है।

२ गोरोचन।

३ तिलक।

४ वटी।

५ याचना कर्म।

६ देखो 'वंदना' (रू. भे.)

वंदनीक, वंदनीय–वि. [सं. वन्दनीय] १ प्रणाम या नमस्कार करने योग्य।

उ० **वंदनीक** पाय रा गाय रा दुजां विसावीस। आसुरां भजणा आडे धाय रा अमाव।
—र. ज. प्र.

२ स्तुति व प्रार्थना योग्य।

३ पूजा व अर्चना करने योग्य।

वदर—१ देखो 'बंदर' (रू. भे.)

२ देखो 'वांनर' (रू. भे.)

वंदरगाह—देखो 'बंदरगाह' (रू. भे.)

वंदरमाळ, वंदरमाळा, वंदरवाळ, वंदरवाल, वंदरवाळा—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ पांणिग्रहण-तणउ परियांण, माळ्यौ विहु भूपति मंडांण। महोछव तोरण **वंदरमाळ**, अधि वाधइ बारणइ विसाळ।
—छो. मा.

उ०—२ वेलि जु एक रूंख थैं दूसरै रूंख जाइ लागि छै। सु **वंदरवाळ** बंधाणी छै।
—वेलि टी.

उ०—३ चारू घट जुअल दीप प्रदीप मणिमाळा प्रवाल **वंदरवाल** ए द्रव्य मंगलीक स्त्रीदेवपूजन गुरू वंदन प्रमुख भाव-वंदन मंगलीक।
—व. स.

उ०—४ तिणि वेला नऊइं कोरणा बांधीयइ तोरण, बांधीयइ **वंदरवाल**, उत्सव विसाल वाग्विलास।
—व. स.

वंदरियौ—१ देखो 'बंदर' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वांनर' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बंदरियौ' (रू. भे.)

वंदाड़णौ, वंदाड़बौ—देखो 'वंदाणौ, वंदाबौ' (रू. भे.)

वंदाड़णहार, हारौ (हारी), **वंदाड़णियौ**—वि० ।
वंदाड़िग्रोड़ौ, वंदाड़ियोड़ौ, वंदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ ।
वंदाड़ीजणौ, वंदाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वंदाड़ियोड़ौ—देखो 'वंदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वंदाड़ियोड़ी)

वंदाणौ, वंदाबौ–क्रि. स. [सं. वंदनम्] १ स्वागत करना, सम्मान पूर्वक, अगवानी करना ।
उ०—ताहरां राजा वरदाईसेनजी साम्हां जाय कुंवर नूं **वंदाय** घरे ले आया छै । —नैणसी
२ अभिवादन कराना, नमस्कार कराना ।
उ०—१ जांगळू रा लोक ऊंचा चढ चढनै जोवै छै। राजलोक पिण गोखां चढि-चढिने जोवै छै। इण जुगत करिनै तोरण **वंदायौ** छै। —लाली मेवाड़ी री वात
उ०—२ विवध उतारै वीनती, धारै निजर तुरंग । लगन **वंदायौ** तूंवरां, पायौ समै सुरंग । —रा. रू.
उ०—३ तरै पुरोहितजी नै आघा ले'र कांन में पूछियौ—थें नाळेर किणने **वंदायौ** ? मैं थांनै काहुं कहि नै मेलिया था । —राव रिणमल री वात
४ स्तुति कराना, प्रार्थना कराना ।
५ पूजा कराना, अर्चना कराना ।
वंदाणहार, हारौ (हारी), **वंदाणियौ**—वि० ।
वंदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंदाईजणौ, वंदाईजबौ—कर्म वा० ।
वंदाड़णौ, वंदाड़बौ, वंदाणौ, वंदावौ, वंदावणौ, वंदावबौ, बंधाड़णौ, बंधाड़बौ, बंधाणौ, बंधाबौ, बंधावणौ, बंधावबौ, वंदाड़णौ, वंदाड़बौ, वंदावणौ, वंदावबौ—रू० भे० ।

वंदायोड़ौ–भू. का. कृ.–१ सम्मान पूर्वक अगवानी कराया हुआ, स्वागत कराया हुआ. २ अभिवादन कराया हुआ, नमस्कार कराया हुआ. ३ स्तुति व प्रार्थना कराया हुआ. ४ पूजा व अर्चना कराया हुआ।
(स्त्री. वंदायोड़ी)

वंदावणौ, वंदावबौ—देखो 'वंदाणौ, वंदाबौ' (रू. भे.)
वंदावणहार, हारौ (हारी), **वंदावणियौ**—वि० ।
वंदाविग्रोड़ौ, वंदावियोड़ौ, वंदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंदावीजणौ, वंदावीजबौ—कर्म वा० ।

वंदिण—देखो 'बंदिन' (रू. भे.)

वंदित–वि. [सं.] १ जिसको नमस्कार किया गया हो, अभिवादित, सम्मानित ।
२ जिसकी प्रार्थना की गई हो, स्तुत्य ।
३ जिसकी पूजा या अर्चना की गई हो, पूजित ।

वंदिन—देखो 'बंदिन' (रू. भे.)

वंदियौड़ौ–भू. का. कृ.—१ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम व अभिवादन किया हुआ. २ स्तुति व प्रार्थना किया हुआ. ३ पूजा व अर्चना किया हुआ.
(स्त्री. वंदियोड़ी)

वंदीखांनौ—देखो 'बंदीखांनौ' (रू. भे.)

वंदीग्रह, वदीघर—देखो 'बंदीघर' (रू. भे.)

वंदीजण, वंदीजन—देखो 'बंदीजन' (रू. भे.)
उ०—सुभ खमा खमा जय सद्द रौ, कोळाहळ **वंदीजणां** । —रा. रू.

वंदीदाद–सं. स्त्री.—पारसी लोगों की एक धार्मिक पुस्तक ।

वंदेणौ, वंदेबौ—देखो 'वंदणौ, वदबौ' (रू. भे.)

वंदोकड़ी, वंदोखड़ी, वंदोगड़ी—देखो 'बंदोकड़ी' (रू. भे.)

वंदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वंदोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

वंदोवस्त—देखो 'बंदोबस्त' (रू. भे.)
उ०—पण उणरी चौड़ै लड़णैरी आसंग हुई नहीं। तद वरसध नूं लाळच देय अजमेर बुलायौ, अरु खातरी करनै वीटली चाढियौ। पीछै **वंदोवस्त** कियौ । —द. दा.

वंदौ—देखो 'बंदौ' (रू. भे.)
उ०—**वंदा** करियै वंदगी, आतम तैं आधीन । जनहरिया । धम धम घटै, यौ तन होसी छीन । —अनुभववांणी

वंद्य–वि. [सं.] १ नमस्कार, प्रणाम व अभिवादन करने योग्य ।
२ पूजा, अर्चना व स्तुति करने योग्य स्तुत्य, पूज्य ।
३ प्रार्थना व निवेदन करने योग्य ।

वंद्रवाळय—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

वंद्रावनवासी—देखो 'व्रंदावनवासी' (रू. भे.)
उ०—बीयौ टमरियौ **वंद्रावनवासी**, बणराय भार अढ़ार संख्या, बिस्णु बांणी ऐह । —रुकमणी मंगळ

वंध—देखो 'बंध' (रू. भे.)

वधणौ, वंधबौ—देखो 'बंधणौ, बंधबौ' (रू. भे.)

वंधतीवेस—देखो 'बंधतीवेस' (रू. भे.)

बंधन—देखो 'बंधन' (रू. भे.)

उ०—काळ का भै वंधन कांपै, जाप अजपा आप आपै ।

—ह. पु. वां.

वंधव—देखो 'वंधु' (रू. भे.)

उ०—होय कै निकासी बनी वंधवां समेत हल्यौ । ऊझल्यौ सांमुद्र सेनां हळीतौ उदार । —बादरदांन दघवाड़ियौ

वंधाणौ, वंधाबौ—देखो 'वंधाणौ, बंधाबौ' (रू. भे.)

वंधायोड़ौ—देखो 'वंधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंधायोड़ी)

वंधियोड़ौ—देखो 'वंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंधियोड़ी)

वंधेज—देखो 'वंधेज' (रू. भे.)

वंध्या—देखो 'वंध्या' (रू. भे.)

वंध्याचळ, वंध्याचळि—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—करपूर कावेरी तीरि, कुंकुम कास्मीरि, चंदन मलयाचलस्रंगि, कस्तूरी कुरंगि, गजराज वंध्याचलि, मोती जयकुंजरि । —व. स.

वंध्यापणौ—देखो 'बांझपणौ' (रू. भे.)

वंनर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

वंनरमाळ—देखो 'वांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—वणे ग्रहि वंनरमाळ सुव्रिंद । —रांमरासौ

वंनोलौ—देखो 'वंदोळौ' (रू. भे.)

वंन्न—देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—मारुवणी मुंह-वंन्न, आदित्ता हूं उज्जळी । सोइ झांखउ सोवंन्न, जो गळि पहिरउ रूपकउ । —ढो. मा.

वंन्नर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

वंबाळी—देखो 'वंबाळी' (रू. भे.)

वंबि, वंबी—देखो 'वंबी' (रू. भे.)

उ०—गुर का सबदळे भौंरा जगायबा । सरप वंबि तजि अगम तहों जायिबा ।

—ह. पु. वां.

वंभ—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.) (जैन)

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

वंमर, वंमार—देखो 'वंबार' (रू. भे.)

उ०—फर फाटस नाह सनाह फड़ै । भाग्रलोड़ वंमार करंत भड़ै ।

—पा. प्र.

वंभि, वंभी—देखो 'वंबी' (रू. भे.)

वंवक—देखो 'बंबक' (रू. भे.)

वंवाळी—देखो 'बंबाळी' (रू. भे.)

वंस—सं. पु. [सं. वंश] १ किसी जीव, प्राणी या मनुष्य की संतान परम्परा, कुल, खान्दान, गौत्र ।

उ०—१ सीह-छतीसी सांभळै, छाकै वंस छतीस । 'बांकै' पाटी बीर रस, वरणी विसवावीस । —बां. दा.

उ०—२ देवी गाजतां दैततां वंस गमिया । देवी नवै खंड त्रिभुवन तूझ नमिया । —देवि

२ संतान, संतति, परिवार ।

उ०—हिव एकु अम्ह मांनु, दियउ बिहुं पखउ तुं छंडि । कउरव वंस विणासिया, कांई कूडु म मांडि । —प. पं च.

३ बेड़ा ।

४ समुदाय, समूह ।

५ रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड ।

६ खड्ग के बीच का भाग जो अधिक चौड़ा होता है ।

७ युद्ध की सामग्री ।

८ गांठ ।

९ गन्ना, ऊख ।

१० साल का पेड़ ।

११ शहतीर, बल्ला, लट्ठा ।

१२ पुष्प, फूल ।

१३ विष्णु का एक नाम ।

१४ पुरुषों की वहत्तर कलाओं में से एक । (व.स.)

१५ वंस लोचन ।

१६ बारह हाथ का एक नाप ।

१७ देखो 'बांस' (रू. भे.) (नां. मां.)

उ०—यौं चिंता उद्वेगो, लग्गी अग्ग वंस घासाणं । —रा. रू.

१८ देखो, 'वंसी' (मह, रू. भे.)

उ०—तंती ताल टबक्कड़ा, मद्दल वंस विसाल । निरति करइ नव रागमां, मांडी मस्तक थाल । —मां. कां. प्र.

रू.भे.—बंस, वांस ।

अल्पा.—वंसौ ।

वंसक—वि. [सं. वंश+प्र. क] वंश का, वंश सम्बन्धी ।

सं पु. [सं. वंशक] १ बांस का पेड़ ।

उ०—सूंडाळां आलम ढल्ल सिरै । नग्राविध वंसक नंदगिरै ।

—गु. रू. बं.

२ बांस की गांठ ।

३ अगर की लकड़ी ।
४ मछली ।
रू. भे.—बंसक ।

वंसकर—सं. पु. [सं. वंशकर :] जिस से किसी वंश, कुल या गौत्र का प्रारंम्भ होता हो, मूल पुरुष ।

वंसकार-सं. पु.—राजवर्ग विशेष

उ०—कवि काठीया, मसूरिया, दीवटीया उपाध्याय बड्कार करडिकार ग्रालविणिकार वीरणाकार **वंसकार** ग्राउज्जी पखाउजी पास्चात्यपक्षे तारकिक ज्योतिसी वैद्य महावैद्य । —व.स.

वंसछेतर-सं.पु. [सं.वंशछेतृ] १ किसी वंश का अंतिम पुरुष ।
२ एक सर्प विशेष । (शेखावाटी)
रू. भे.—बंसछेतर ।

वंसज-सं. पु. [सं. वंशज :] जो किसी कुल, वंश या गौत्र में उत्पन्न हुआ हो, संतान, संतति, औलाद ।
वि.—बांस का बना ।
रू. भे.—बंसज ।

वंसजा-सं स्त्री. [सं. वंशजा] १ कन्या, पुत्री ।
२ बंसलोचन ।

वंसधर-सं. पु. [सं. वंशधर] १ वंश-परंपरा व वंश की मर्यादा को धारण करने वाला, वशंज । वंश की मर्यादा को उज्ज्वल करने वाला ।
२ सन्तान, संतति ।
रू. भे.—बंसोधर, वंसोधर,

वंसनास-सं. पु. [सं. वंशनाश] १ शनि और राहु का सूर्य के साथ एक लग्न में पड़ने, विशेषत: पंचम लग्न में पड़ने पर होने वाला एक योग जो वंश—नाश का कारण माना जाता है। (फलित–ज्योतिष)
२ एक भयंकर विषैला सर्प जिसके किसी एक व्यक्ति को काटने से शनै-शनै उस (व्यक्ति) के पूर्ण वंश का नाश हो जाता है ।

वंसपरिपाटी-सं. स्त्री. [सं. वंश+परिपाटी, वंशपरम्परा] १ वंश की मर्यादा, गौरव ।

उ०—राज्य–द्रंग–दुरग–देस वैभवज सुख हेय । राखी द्रढ़ **बंसपरिपाटी** की प्रभत्ता को । —बालाबक्ष बारहठ

२ क्रमश: चलने वाली वंश-परंपरा, पीढ़ी, शृंखला ।

वंसव्रख—देखो 'वंसव्रक्ष' (रू. भे.)

वंसभाई-सं. पु. [सं. वंश+भ्रात:] कुटुंबी, सम्बन्धी, बंधु, बांधव, सगौत्री ।
रू. भे.—वंसभाई ।

वंसरी, वंसळी—१ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

उ०—गावणहार मांडइ (अ) र गाई । रास कइ (सम) यइ **वंसली** वाई । —वी. दे.

२ देखो 'वंसावळी' (रू.भे.)
३ देखो 'बांसरी' (रू. भे.)

वंसलोचण, वंसलोचन-सं. पु. [सं. वंशलोचन] लम्बी पोर वाले बड़े बांसों की गांठों को जलाने पर निकलने वाला बांस का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे छोटे टुकड़ों के रूप होता है । वंश-शर्करा, वंशकर्पूर ।
रू. भे.—बंसलोचन ।

वंसव्रक्ष-सं. पु. [सं. वंशवृक्ष] १ किसी वंश का, उसके मूल पुरूष से से लेकर परवर्ती वंशजों का, वृक्ष के रूप में, बनाया हुआ रेखा चित्र या नक्शा ।
२ किसी वंश का क्रमश: दिया गया, विवरण ।
रू.भे.—बंसव्रक्ष, वंसव्रख ।

वंसस्थ-सं. पु. [सं. वंशस्थ] बारह वर्णों का एक वर्ण-वृत ।
रू. भे —बंसस्थ ।

वंसा-सं.पु.—१ शकरि प्रभा नामक नर्क । (जैन)
२ देखो 'बांस' (रू. भे.) रू. भे. बंसा ।

वंसाबळियौ—देखो 'वंसावळियौ' (रू.भे.)

वंसाळी—देखो 'वंसावली (रू. भे.)

वंसावळियौ—देखो 'वंसावळीयौ' (रू. भे.)

वंसावली—सं. स्त्री. [सं. वंशावली] १ किसी वंश या कुल में उत्पन्न व्यक्तियों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची, विवरण ।

उ०—१ वसिष्ठ कहै वंसावळी, राज ख्यात दसरथ । —रांमरासौ
उ०—२ पांछलै पानै वंसावळी छै । —नैणसी

२ वंस, कुल, गौत्र ।
रू. भे.—बंसावळी, वंसळी, वंसाळी वांसावली ।

वंसावळीयौ-सं. पु. [सं. वंश+राज. आवळियौ] वंशगुरु, कुलगुरु ।
वि.—वंश का, वंश सम्बंधी ।
रू.भे.—बंसाबळियौ, बंसाबळीयौ, बंसावळियौ, बंसावळीयौ, वंसावळियौ ।

वंसि, वंसी—वि. [सं. वंशी] किसी वंश विशेष में उत्पन्न । वंश का ।

उ०—१ लागउ पाय मांजीयां आंसू, जरणी दीइ असीस । **वंसि** अम्हारइ तुं अजरांमर, प्रतिपे कोडि वरीस । —कां. दे. प्र.

उ०—२ वंसि तू सूर वंसि मू पीक । नेजे सूं बह धातउ निभीक —रा. ज. सी.

उ०—खटतीस वंस राजकुळी सिरोमणि सूरज **वंसी** राजांन मारवाड़ि

रा नव कोटांरी ठकुराई जळाबोळ राज पदी भोगवै ।
—रा. सा. सं.

सं. स्त्री.—१ बांस की नलिका में छेद करके (स्वर बनाकर) बनाया हुआ एक बाजा जो मुंह से फूंक हाथ की अंगुलियों द्वारा बजाया जाता है। मुरली, बांसुरी।

उ०—१ तिसा बैण स्रीमंडळ जंत्र तालं । सहंनाय वंसी अनै सीस ढालं ।
—रा. रू.

उ०—२ दोय बजावइ ताल दोय वीणा वंसी, दोय बजावइ वांसली ए।
—स. कु.

२ रक्त वाहिनी सिरा, नस।

३ चार कर्ष या आठ तोले का एक मान।

४ वंशलोचन।

५ घोड़े का नथुना।

रू. भे.—बंसरी, बंसली, बंसी, बनसी, बांसरी, बांसळी, बांसुरी, बांसुळी, वंसरी, वंसीय, वंसु, वंसू, वनसी, वांसरी, वांसी, वांहली।

मह.—बंस, वंस।

वंसीधर, वंसीधरण, वंसीधारी— सं. पु. [सं. वंशीधर वंशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण। (अ.मा.)

उ०—वंसीधारी ब्रज वासी विहारी।
—पिं. प्र.

२ ईश्वर। (नां.मा.)

वि.—बंसी बजाने वाला।

रू. भे.—बंसीधर, बंसीधरण,

वंसीय— देखो 'वंसी' (रू.भे.)

वंसीवट— सं. पु. [सं. वंशीवट] वृन्दावन का वह वट-वृक्ष जिसके नीचे बैठ कर श्रीकृष्ण बांसुरी बजाया करते थे।

रू. भे.—बंसीवट, बंसीवट

वंसीवाळौ—सं.पु.—१ श्रीकृष्ण।

उ०—गायां ग्वाळौ कांनो काळौ **वंसीवाळौ** वेहारी।
—पिं.प्र.

२ वह जिसके पास बंसी हो।

वंसु, वंसू—देखो 'वंसी' (रू. भे.)

उ०—खुरताळां विक्खणी, घणी लग्गी आयासां। नह सुणिजै नीसांण, **वंसू** बाजी वरहासां।
—गु. रू. बं.

वंसै—देखो 'वांसे' (रू. भे.)

उ०—तद रांणी कही थांनै जै वास्तै **वंसै** राखिया हंता सु विद्या सीखी क नहीं
—चौबोली

वंसोधर—देखो 'वंसधर' (रू. भे.)

उ०—मिणधर मेछ कमळ मह-मेहण, चाच वंसोधर दे चलण।
—नैणसी

वंसौ—१ देखो 'वांस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वंसौ वधति बहुअं, अंतर गति गंठि बेध उतपन्नो। संजोगि अगनि पतंगौ, प्रजळयं अप मज्झेण।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'वंस' (अल्पा, रू. भे.)

व—सं. पु. [सं] १ वर्ण। २ वायु, पवन, हवा। ३ बाण, तीर। ४ शिव। ५ उपमा। ६ सुखी। ७ अव्यय। ८ अर्थ ९ वरूण देव। १० समुद्र। ११ राहु का नाम। १२ कल्याण मंगल। १३ सांत्वनां। १४तुष्टि साधन। १५ बस्ती। १६ वास, निवास। १७ सम्बोधन। १८ मंत्रणा। १९ बाहु २० वस्त्र। २१ शार्दूल। २२ चीता। २३ कलश से उत्पन्न ध्वनि। २४ वंदन। २५ वृक्ष। २६ मूर्वा-लता। २७ अस्त्र। २८ खड्गधारी पुरुष। २९ सेरकी नामक कंद। ३० जल-कंद, शालूक। ३१ मद्य। ३२ प्रचेता। (एका.)

अव्य. [फा.] १ और, तथा।

सर्व.—२ 'वह' का संक्षिप्त रूप।

वअ—देखो 'वय' (रू. भे.) (जैन)

वइंगण, वइंगणीउ, वइंगणु—सं. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—पटसाउल मेघाडंबर संभारावउं रावेटउं कणवीर सौवन्न-च्छलेउं मनेत्र नीलउं नेत्र रात कडाहउं वइंगणीउं कल्ही...।
—व. स.

२ देखो 'बेंगण' (रू. भे.)

वइ— देखो 'वय' (सं. भे.) (जैन)

वइंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

उ०—तिआं चोपड़ै तेल सिंदूर तन्नं, **वइंडां** वणावै घणूं स्यांम वन्नं। नोड़ी भीड़िआं अंग लग्गा निहंगं, जटाजूट सन्नाह जे कोड जंगं।
—वचनिका

वइअर—देखो 'बैर' (रू. भे.)

देखो 'वैर' (रू. भे.)

वइठणौ, वइठबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—मारू वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास। पूनिम-केरे चंद ज्यूं, मंदिर हुवउ उजास।
—ढो. मा.)

वइठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वइठियोड़ी)

वइट्ठणौ, इइट्ठबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—रूखमइयो नइ राजा भींमक, मंत्र करेवा वइठ्ठा।
—रूकमणी मंगळ

वइठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वइठियोड़ी)

वइण—१ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—स्री संखेस्वर 'पास' जी रे लो, सुणि वारू दोइ **वइण** रे सनेही। —वि. कु.

२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

वइताळ—देखो 'वैताळ' (रू. भे.)

उ०—कांनि कुंडल सिरि मुगट, मुत्ताहलि गलि माल। दिव्य वस्त्र दीसइ भलां, वीर जिके **वइताल**। —मा. कां. प्र.

वइदउं—देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा वीण वाइं, पवन बुहारइ, गणपति गादह चारड, कृतांत कोट राखइ, सनींस्चर रसोइ चाखइ, मंगल स्रीखंड घसइ, बुध सौनउ कसइ, अढ़ार भार वनस्पति फूलपगर भरइं, धन्वंतरि **वइदउं**···करइं। —व. स.

वइन—देखो 'वचन' (रू.भे.)

उ०—त्युं सदुपदेस विसेस दे कइ विमल एकइ **वइन**। बूझव्यौ सो रहनेमि विसयी गई जहां यदुपति सइंन। —वि.कु.

२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

वइर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—चउंड रा **वइर** ले चतुरंग. देवरा मारि ढाहिय दुरंग। —रा. ज. सी.

२ हैखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—पाखरि पलांणि काळउ पहाड। वरिजांग चडिय **वइरां** विभाड —रा. ज. सी.

३ देखो 'बैर' (रू. भे.)

वइरतमांण—देखो विरहमांण (रू. भे.)

वइरसेन—देखो 'वीरसेन' (रू. भे.)

वइराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—१ जेती जउ मनमांहि, पंजर जइ तेती पुळइ। मनि **वइराग** न थाइ, वालंभ वीछुड़ियां तणी। —ढो. मा.

उ०—२ आगइ वार बिच्यारि हराव्या, तुरकिं न लाधउ लाग। मोटे राजि लाज अम्ह आवी, एहवु हुईइ **वइराग**। कां. दे. प्र.

उ०—३ चित्त विचारि समाचरइ रे लाल, वलि मरकट **वइराग** रे। —वि. कु.

वइरागर—सं. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जादर हीरागर **वइरागर** फूलपगर चीर वलगार चुतार पीतांबर चादर रक्तांबर, नेत्रांबर...............। —व. स.

रू. भे.—वयरागर, वयरागरि।

२ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ० उडीसा रौ नइं नाहलौ, चीण भोट चंभेरी। गवड देस **वइरागर** सागर, जाळंधर भंभेरी। —रूकमणी मंगळ

वइरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—१ माली तंब्रोली हरमेखलीया जोगी भोगी **वइरागी** नट विट सुट खरड लाठा रंगाचारच.........। —व. स.

उ०—२ **वइरागी** थिउ विस्तरइ, रांमा सूंपि राग। कारत कांटे काकरि, पुलतु अणहांणि पाग। —मा. कां. प्र.

वइराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे.) (व. स.)

२ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

वइरि, वइरी—१ देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—१ **वइरियां** तणइ सिरि मिरी वाटि। पहू मलइ कूंभ बइसारि पाटि। —रा. ज. सी.

उ० २ साद करैं किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्के पांव। सयणे घाटा वउळिया, **वइरि** जु हूआ वाव। —ढो. मा.

२ देखो 'बैर' (रू. भे)

३ देखो 'वैर' (अल्पा रू. भे)

वइवस्तु—देखो 'वैवस्वत' (रू. भे.)

उ०—सुत कासिप सूरज तप असाधि। **वइवस्तु** सूर सुत तेज वाधि। —सू. प्र.

वइस—देखो वैस्य' (रू. भे.)

उ०—वांणिज्य **वइस** फबि जेण वेर। कोटेक जांण वप धर कुमेर। —सू. प्र.

वइसणौ, वइसबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—कणक सिंहासण स्वांमी **वइसण**। —स. कु.

वइसनव—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—**वइसनव** ग्यांन केवल वियाप। छक प्रेम त्रुलिसिका तिलक छाप। —सू. प्र.

वइसाख—देखो 'वैसाख' (रू. भे.) (उ. र.)

वइसाणौ, वइसाबौ—देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

उ०—अपरापति चडि चाल्यौ राय। ली अस्त्री अरधंग **वइसाय**। —बी. दे.

वइसायोड़ौ—देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री 'बैठायोड़ी' (रू. भे.)

वइसाह—देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

उ०—सव्वे भला मासड़ा, पण **वइसाह** न तुल्ल। जे दवि दाधा रूंखड़ां, तीहं माथइ फुल्ल। —रा. सा. सं.

वइसियोड़ौ—देखो 'वैठियोड़ौ, (रू. भे.)
(स्त्री. वइसियोड़ी)

वइहनडी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—भूरइ रा **वइहनंडी** अकन कुंवार। महाजन भूरई राई साधार।
—बी. दे.

वइहरमांण—देखो 'विरहमांण' (रू. भे.)

वई—देखो 'वेई' (रू. भे.)
उ०पछै आ वात रावळ मालेजी रै हजूर हुई जु खाध रै **वई** एक जरपूत रजपूतांणी छोडी। —नैणसी

वईअर—१ देखो 'वहीर' (रू. भे.)
उ०—दलै कबीला देसने, **वईअर** कीधा वेग। साथै बंधव सातही, तिकै उरस री तेग। —वी. मां.
२ देखो 'वैर' (रू. भे.)

वईकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वईजयंती—देखो 'वैजयंती' (रू.भे.) (अ. मा.)

वईदराज—देखो 'वैद्यराज' (रू. भे.)
उ०—**वईदराज** के विसाल, औखधी उपाइकं। तई **रसायणी** स्वधातु, स्वच्छयं रसायकं। —सू. प्र.

वइद्रभा—देखो विदरभा (रू. भे.)
उ०—बळिभद्र बंधव तेडीयोजी, बीजउ प्रमनकुमार। **वईद्रभा** नयरी वीवाह छइ जी, रहीय म लावौ वार —रूकमणी मंगळ

वईध्रत—देखो 'वैध्रत' (रू. भे.)

वईयर—१ देखो 'वैर' (रू. भे)
उ०—**वईयर** वालै रूसणै सखि भाखै देवी वांणि। —वि. कु.
२ देखो 'वहीर' (रू. भे.)

वईर—देखो 'वहीर' (रू. भे.)
उ०—दुख मेटण पोट कबीर धरां दिस। हाकळ कीध **वईर** हरी।
—भगतमाळ

वईस—देखो 'वेस्य' (रू. भे.) (जैन)

वईस्रवण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.)

वउ—देखो 'बहू' (रू. भे.)

वउबंदोळौ—देखो 'बहुबंदोळौ' (रू. भे.)

वउरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

वउलण—१ देखो 'बोलण' (रू. भे.)
२ देखो 'बोलणी' (रू.भे.)

वउळणौ, वउळबौ, वउलणौ, वउलबौ—देखो 'वोळणौ, वोळबौ' (रू.भे.)
उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पाव। सयणे घाटा **वउळीया**, वइरि जु हुआ वाव। —ढो. मा.
उ०—२ अभिलास द्राखन कउ समांनत, मउज मांनत लोग। वैसाख मइं वयसाख **वउलत**, कहा पीछइं भोग। —वि. कु.

वउलसरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

वउळाणौ, वउळाबौ, वउलाणौ वउलाबौ—देखो 'वोळाणौ, 'वोळाबौ' (रू. भे.)
उ०—सजणियां **वउळाइ** कइ, मंदिर बइठी आइ। मंदिर काळउ नाग जिउं, हेलउ दे दे खाइ। —ढो. मा.

वउळायोड़ौ, वउलायोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वउळायोड़ी)

वउळावणौ, वउळावबौ, वउलावणौ, **वउलावबौ**—देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ तंत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह। भल **वउळावौ** दीहड़ा, दई वळावण देह। —ढो. मा.
उ०—२ कुंती मुद्री जाइ **वउलावेवा** नंदणाह। —पं. पं. च.

वउळावियोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. वउळावियोड़ी)

वउळावू, **वउळावौ**—देखो 'वोळाऊ' (रू. भे.)
उ०—१ **वउळावू** सगळा विलविलइ, ढोलउ किनही पाळउ वळइ। साथी मारू दागण-भणी, घणु कहइ पति न रहइ घणी।
उ०—२ जिणि वेळा ढोलउ नीकळइ, केता **वउळावा** साथइ करइ। सोभ करेवउ इण वात रउ, पडिस्यइ रखै तुम्हां पांतरउ। —ढो. मा.

वउळियोड़ौ, वउलियोड़ौ—देखो 'वोळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० वउळियोड़ी, वउलियोड़ी)

वउलसिरी देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)
उ०—जइ सूकी तउ **वउलसिरी**, त्रूटी तउ मोतीसरी, जइ भागउ तउ वारहउ, थाकंउ तउ सेरांह, जइ खांडउ तोइ चद्र... . ...।
—व. स.

वऊ—देखो 'बहू' (रू. भे.)

वऊबंदोळौ—देखो 'बहुबंदोळौ' (रू. भे.)

वऊरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

वएसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)
उ०—सभै खांडस स्रंगार सुतनी। **वएसा** भूल चली रिखवनि।
—रांमरासौ

वक—देखो 'बक' (रू. भे.)

उ०—सुकवि तजै सुदतार नूं, जिण मुख कुकवि प्रसंस। जळद अग्र **वक** देख जूं, व्है प्रछन्न कळहंस। —बां. दा.
(स्त्री. वकी)

वकट—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—हले थाट दखणाद लग टळ तोपां हसत, खसत मद मींढ़ रा नरां खागां। मरट तिणवार राखी **वकट** मोसरां, सुपेती चौसरां तणी 'सांगा'। —सग्रांमसिह सक्तावत री गीत

वकणौ, वकबौ—देखो 'बकणौ, बकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बांणां बांण वाजै गोळा चोसरा सबीर **वकै**, वाहा हार मील भाजै छाजै पखां बोळ। जठी-तठी भार पड़ै मीरजां ओहटै जठी, तठी-तठी राजा आडौ ओडजै सतोळ। —अमरदास बारहठ

उ०—२ अवळौ बयण अहीर, उठतै तैंहिज आखियौ। **वकियौ** मैं पिण वीर, वात न जांणां वींझरा। —वींझरैअहीर री वात

वकणहार, हारौ (हारी), वकणियौ—वि०।
वकिओड़ौ, वकियोड़ौ, वक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वकीजणौ, वकीजबौ—कर्म वा०।

वकत—१ 'वक्त' (रू. भे.)

२ देखो 'बखत' (रू. भे.)

वकतर—१ देखो 'वकत्र' (रू. भे.) (डि. को.)

२ देखो 'बखतर' (रू. भे.)

वकतरियौ—१ देखो 'बखतरियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बखतर' (अल्पा. रू. भे.)

वकता—सं. स्त्री. [सं. वक्तृ] १ जिव्हा, जीभ, रसना। (ह. नां. मां.)

रू. भे.—वगता।

२. देखो 'वक्ता' [रू. भे.]

उ०—सकल प्रताप सुरसरी, हरिपद रूद्र सहित। सुरता रांम सुमित्रसुत, **वकता** विसवामित्र। —रांमरासौ

वकतावर—देखो 'बखतावर' [रू. भे.]

वकत्र—सं. पु. [सं. वक्त्रं] १ मुख, मुंह, वदन। [अ. मा.]

उ०—देवी भाव स्वादे हसंतै **वकत्रे**। देवी पांणपांणां पिये मद्य पत्रे। —देवि

२ जानवरों का थूंथन।

३ पक्षियों की चोंच।

४ अग्रभाग या नोक।

५ आरम्भ।

६ अनुष्टप छंद।

७ जिव्हा, जीभ।

रू. भे.—बकत्र, वकतर।

वकपंचक—देखो 'बकपंचक' (रू. भे.)

वकफ—सं. पु. [अ. वक्फ] १ देवी-देवताओं या ईश्वर को भेंट करने अथवा धार्मिक कार्यों के लिये दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु।

२ उक्त प्रकार का उत्सर्ग या भेंट करने की क्रिया।

३ दान।

४ वर्षात में छत के टपकने या चूने की अवस्था।

५ दो घटनाओं के बीच का समय, विराम, मध्यान्तर।

६ फुरसत, अवकाश, छुट्टी।

७ देर, विलम्ब।

रू. भे.—वक्फ।

वकफनांमौ—सं. पु. [अ. वक्फनाम:] दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु का दान-पत्र।

रू. भे.—वक्फनांमौ।

वकबाद—देखो 'बकवाद' (रू. भे.)

वकबादी—देखो 'बकवादी' (रू. भे.)

वकवादी—देखो 'बकवादी' (रू. भे.)

वकर—सं. पु.—१ बलिदान, वध।

उ०—उठै देवी आगै भैंसौ **वकर** करण नूं तयार कियौ छै। —नैणसी

२ देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—तरण तप जुळण अंगीट रा सरोतर, सत्रां रिण रीठ रा खगां सालै। कर मकर कर धीट रा वचन ना काढ़ै, चकर अणदीठ रा **वकर** चालै। —महाराजा मांनसिंह जी रौ गीत

वकरगति, वकरगती—देखो 'वक्रगति' (रू. भे.)

वकरगांमी—देखो 'वक्रगांमी' (रू. भे.)

वकरगुल्फ—देखो 'वक्रगुल्फ' (रू. भ.)

वकरणौ, वकरबौ—देखो 'बकरणौ, बकरबौ' [रू. भे.]

उ०—डायण चढ़ी जियां परि डकरै। वांणी विकट भयंकर **वकरै**। —सू. प्र.

वकरदरस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू. भे.)

वकद्रंस्ट—देखो 'वक्रद्रंस्ट' (रू. भे.)

वकरद्रस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू. भे.)

वकरपूंछ—देखो 'वक्रपुच्छ' (रू. भे.)

वकरांग—देखो 'वक्रांग' (रू. भे.)

वकराणौ, वकराबौ—देखो 'बकराणौ, बकराबौ' (रू. भे.)

वकरायोड़ौ—देखो 'बकरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकरायोड़ी)

वकरियोड़ौ—देखो 'बकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकरियोड़ी)

वकरी—१ देखो 'वक्री' (रू. भे.)

२ देखो 'वकरौ' (रू. भे.)

वकरोगति—देखो 'वक्रोक्ति' (रू. भे.)

वकरौ—देखो 'वकरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकरी)

वकळ—१ देखो 'विकळ' (रू. भे.)

उ०—करि अंग **वकळा** हुआं रीस जळाकरी, अगै अकळा करी भगत अमळा। करी चक्रवाह तन ग्राह तंडळा करी, करी राखण गयौ वरी कमळा। —हुकमीचंद खिड़ियौ

२ देखो 'व्याकुळ' (रू. भे.)

३ देखो 'वकळ' (रू. भे.)

वकवाद—देखो 'बकवाद' (रू. भे.)

उ०—सुक-पिक लगै सवाद, भल थोड़ौ ही भाखणौं। व्रथा करै **वकवाद**, भेक लवै ज्यूं 'भैरिया'। —रतलांम नरेस बळवंतसिंह

वकव्रत, वकव्रत्ति—देखो 'बकव्रत्ति' (रू. भे.)

वकसणौ, वकसबौ—देखो 'बकसणौ, बकसबौ (रू. भे.)

वकसियोड़ौ—देखो 'बकसियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वकसियोड़ी)

वकांण, वकांन—१ देखो 'बखांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वकायन' (रू. भे.)

वकाई—देखो 'बकाई' (रू. भे.)

वकाईण, वकायण, वकायन—देखो 'बकायन' (रू. भे.)

उ०—अरक आउल तिणासिरा, सिम रोहिड़ो रोहिण। इंद्रोख अबरस आसिंद्रौ, अरम्यंज **वकाईण**। —रुकमणी मंगळ

वकार—देखो 'वाकार' (रू. भे.)

वकारणौ, वकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बार हजार बंगाळ, 'विलंद' तिण वार **वकारै**। करि कबांण टंकार, घाव सांमां पग धारै। —सू. प्र.

उ०—२ नाई री आ बात राजाजी रै ई सोळै आंना हीयै ढूकी। बोल्या—हां, आ बात तौ थारी साव साची। पोहरौ देवणीयां टाळ तौ वौ किणी नै **वकारिया** ई नीं। —फुलवाड़ी

उ०—३ उडै रीठ अणपार, पीठ लगा लाखां पिसण। वेढ़ीगार **वकार** पैठौ उदियाचळ 'पतौ'। —अज्ञात

वकारणहार, हारौ (हारी), वकारणियौ—वि०।

वकारिओड़ौ, वकारियोड़ौ, वकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वकारीजणौ, वकारीजबौ—कर्म वा०।

वकारियोड़ौ—देखो 'वाकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वकारियोड़ी)

वकाळ—१ देखो 'बक्काल' (रू. भे.)

उ०—विसायतो **वकाळ** और सहर के लोग, इस वजह से गुजारा करै। केतेक भाड़भूंजे केतेक भीख मांग पेट भरै। —दुरगादत्त बारहठ

२ देखो 'वकील' (रू. भे.)

वकालत—सं. स्त्री. [फा.] १ न्यायालय या कचहरी में किसी मुकद्दमे में किसी की तरफ से की जाने वाली बहस, पेरवी या अभिभाषण।

२ वकीलों का कार्य व व्यवसाय।

३ किसी का स्थानापन्न होकर किया जाने वाला कार्य या उसके पक्ष का मंडन।

वकालतन—क्रि. वि. [फा.] वकील के द्वारा, वकील के जरिये।

वकालतनांमौ—सं. पु. [फा. वकालतनाम:] किसी न्यायालय या कचहरी में किसी के मुकद्दमें पर विधिवत बहस या अभिभाषण करने का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र।

वकासुर—देखो 'बकासुर' (रू. भे.)

वकी—देखो 'बकी' (रू. भे.)

वकील—सं. पु. [फा.] १ वह व्यक्ति जो कानून की परीक्षा पास हो और जिसको न्यायालय या कोर्ट में किसी मुकद्दमें की बहस या कार्यवाही करने का अधिकार पत्र प्राप्त हो।

२ किसी के कार्य में उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ संदेश वाहक, दूत।

४ किसी के पक्ष को युक्तियुक्त अभियाचन करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बकाल, बक्काल, वकाल, वक्काल।

वकुल—देखो 'बकुल' (रू. भे.)

उ०—अन्न उदक पय परिहरी, आभरणां ऊवेसि। वकुल-त्वचा वींटि करि, तरुणी तापस वेसि। —मा. कां. प्र.

वकूऔ—सं. पु. [अ. वकूआ] १ प्रकटीकरण।

२ देखो 'वाकौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बाकौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

वकूफ—१ देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

वक्कत्तण—१ देखो 'वक्रता' (रू. भे.)

उ०—हा हा दसम कालबलु, खल वक्कत्तण जोइ। नांमेणिइ सुवि-हिय तणइ, मित्तु वि वयरीय होइ। —षष्टि शतक-प्रकरण

वक्कर—१ देखो 'बकरौ' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बकर' (रू. भे.)

३ देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—तब राकस रूपै रवौ, ददुर पग धूजबै। हुँकार **वक्कर** हुल-सीयौ, कुंवर खडग करि पूजबै। —रीसालू री बात

वक्करणौ, वक्करबौ—देखो 'बकरणौ, बकरबौ' (रू. भे.)

उ०—अचळेस कहै अहमद्द-सूं, वदै न कथयण **वक्करै**। पतसाह पुत्री परणी नहीं, कंवर वीर करणियागरै। —अ. वचनिका

वक्कराणौ, वक्करावौ—देखो 'बकराणौ, बकराबौ' (रू. भे.)

वक्करायोड़ौ—देखो 'बक्करायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वक्करायोड़ी)

वक्करियोड़ौ—देखो 'बकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वक्करियोड़ी)

वक्काल—देखो 'बक्काल' (रू. भे.)

वक्त—सं. स्त्री. [अ.] १ समय, काल, वेला।

मुहा.—१ वक्त काटणी=समय गुजारना, किसी तरह निर्वाह करना। २ वक्त गमांणी=समय नष्ट करना। ३ वक्त री चीज=समयानुसार मिलने वाली चीज, ऋतु के अनुसार गाना या राग।

२ किसी कार्य का उपयुक्त समय, अवसर, मौका।

मुहा.—१ वक्त पर=समय पर, यथा समय। २ वक्त रा बाया मोती नीपजै=समय पर किया काम उचित लाभ देता है। ३ वक्त हाथ सूं गवाणी=अवसर चूकना, मौके का फायदा न उठाना।

३ विशिष्ट कार्य के लिये निश्चित किया हुआ समय।

४ पल, घड़ी, दिन। (ज्योतिष)

५ किसी कार्य में लगने वाली समय की मात्रा, विलंब, देर।

६ अवकाश, फुरसत, टाइम।

७ मृत्यु का समय, मौत की घड़ी।

रू. भे.—बकत, बखत, बख्त, बगत, वकत, वखत, वखत्त, वख्त, वगत।

वक्तव्य—वि. [सं.] १ व्यक्त करने योग्य, निरूपण करने योग्य।

२ वह जिसके लिये कुछ व्यक्त किया जावे, कहा जावे।

सं. पु.—१ किसी घटना विशेष या विषय विशेष पर, लोगों की जानकारी के लिये दिया जाने वाला लिखित या कथित स्पष्टीकरण, मन्तव्य, टिप्पणी।

२ वक्ता का कथन,

वक्ता—वि. [सं. वक्तृ] १ कहने या बोलने वाला, भाषण देने वाला।

२ जो किसी बात या घटना को ठीक ढंग से व्यक्त कर सकता हो, कह सकता हो, भाषण पटु।

सं. पु.—१ कहने, बोलने या भाषण देने वाला व्यक्ति।

२ उपदेशक, शिक्षक।

३ पठन पाठन करने, स्तवन करने व उच्चारण करने वाला व्यक्ति।

उ०—उज्जीण नगरी रै मांही देव सरमा नांमे बिरांमण निवास करै। उवौ च्यार वेद री वक्ता, सठ सास्त्र रौ जांण हार, बडौ पंडित थौ। —साईं री पलक री बात

४ विद्वान, पण्डित।

रू. भे.—बकता, वकता, वखता, वगता।

वक्फ—देखो 'वकफ' (रू. भे.)

वक्फदार—वि. [फा.] वक्फ प्राप्त करने वाला।

वि. वि.—जिस प्रकार भविष्य में की जाने वाली सेवा के लिये जागीरदारों को जागीरें दी जाती थी उसी प्रकार पिछली जानदार सेवा या कार्य करने के बदले पेंशन के तौर पर अथवा पहलवानों, विद्वानों, कलाकारों आदि को जीवन-यापन के लिये जागीरें दी जाती थी उन्हें वक्फ कहते थे। अतः उक्त प्रकार की जागीर प्राप्त करने वाला।

वक्फनांमौ—देखो 'वकफनांमौ' (रू. भे.)

वक्र—वि. [सं.] १ सीधा का विपर्याय, डेढ़ा, तिरछा बांका।

२ झुका हुआ, मुड़ा हुआ, नत।

३ घुघराला, छल्लेदार, गोल-मटोल।

४ कुटिल, धूर्त, बेईमान, छलिया।

५ निष्ठुर, बेरहम।

६ दीर्घ। (छन्दशास्त्र)

सं. पु.—१ मुख। (ह. नां. मा.)

२ रुद्र।

३ मंगल ग्रह

४ शनि,

५ त्रिपुर-नामक राक्षस, त्रिपुरासुर।

६ नदी का मोड़।

७ प्रथम गुरु के गणण का नाम (र. ज. प्र.)

रू. भे.—बंक बक्र, बांकौ, वंक, वंकनि, वंकेण, वंक्रत, वक, वक्कर।

वक्रकोटौ–सं. पु. – एक वस्त्र विशेष ।

उ०—धोत पट्ट, राजपट्ट, गजवडि, हंसवडि, बोरिग्रावडी, ऊमावडि, मूमावडि, पूमावडि, सिलहटी, कपूरीयां, चउकपडीयां, पोतियां, वक्रकोटां नागवटां'''। —व. स.

वक्रगति, वक्रगती–वि. [सं. वक्रगति] १ जिसकी गति तिरछी हो, टेढ़ी चाल चलने वाला ।

२ जिसके आचार-विचार व व्यवहार सीधा-सादा न हो ।

३ विपरीत दशा में चलने वाला ।

४ कुटिल ।

सं. पु.—१ सूर्य से पांचवे, छठे, सातवें व आठवें ग्रह । (ग्रह लाघव)

वि. वि.—मंगल ३६ दिन, बुध २१ दिन वृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ वक्री होते हैं ।

२ मंगल ग्रह ।

३ सर्प, सांप । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वकरगत, वकरगति ।

वक्रगामी–वि. [सं. वक्रगामिन्] तिरछी चाल चलने वाला ।

रू. भे.—वकरगामी ।

वक्रग्रीव–सं. पु. [सं. वक्रग्रीवः] ऊंट ।

वक्रता–सं. पु. [सं.] १ वक्र होने की दशा या अवस्था ।

२ टेढ़ापन, तिरछापन ।

३ साहित्य रचना की एक शैली जो रचना को सौन्दर्य व उत्कृष्टता प्रदान करती है ।

रू. भे.—वक्कत्तण ।

वक्रति—देखो 'विक्रति' (रू. भे.)

उ०—इम करतइ कूवड हवु भूप, कालु कुछित अतिहि करूप । दैवगति आहवी संपनी, एवली वक्रति किहां थी ऊपनी । —नळ दवदंती रास

वक्रतुंड–सं. पु. [सं. वक्रतुण्डः] १ गणेश ।

२ तोता ।

रू. भे.—बक्रतुंड, बिक्रतंड, विक्रतुंड ।

वक्रदंस्ट्र–सं पु. [स. वक्रदंष्ट्र] सूअर, शूकर, वराह ।

रू. भे.—वकरद्रंस्ट ।

वक्रद्रस्टि–वि. [स. वक्रदृष्टि] १ जिसकी दृष्टि में दुष्टता भरी हो, जिसकी दृष्टि पड़ने पर कुछ अमंगल होता हो ।

२ जिसकी दृष्टि में क्रोध भरा हो ।

३ मन्द, दृष्टि वाला ।

४ ईर्षालु, डाही ।

सं. स्त्री.—१ टेढ़ी दृष्टि, तिरछी नजर ।

२ क्रोध पूर्ण नजर ।

३ मन्द दृष्टि ।

४ ऐंचाताना ।

रू. भे.—वकरदरस्टी, वक्रद्रस्टी ।

वक्रपुच्छ–सं. पु. [सं.] कुत्ता, श्वान ।

रू. भे.—वकरपूंछ ।

वक्रांग–वि.—जिसका अंग सीधा न हो, कूबड़ वाला ।

सं. पु.—१ हंस ।

२ चक्रवाक, चकवा ।

३ सर्प, सांप ।

रू. भे.—वकरांग ।

वक्री–वि. [सं. वक्रिन] १ अपना मार्ग छोड़ कर विपरीत दिशा में चलने वाला । (ग्रह)

२ टेढ़े मेढ़े अंगों वाला ।

३ क्रोधी ।

४ विपरीत, उल्टा ।

रू. भे.—बक्री, वकरी,

वक्रोक्ति–सं. स्त्री. [सं.] १ एक काव्यालंकार जिसमें काकुश्लेष से किसी वाक्य या बात का और का और अर्थ निकलता है ।

२ चमत्कार पूर्ण कथन ।

३ काकूक्ति ।

रू. भे.—बक्रोक्ति, वकरोगति ।

वक्रोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे.)

वक्ष–स. पु. [सं. वक्षस्] १ पेट और गले के बीच का भाग, छाती । सीना ।

२ स्त्रियों के कुच, स्तन, चूंचियें व पुरुषों के स्तन चिन्ह ।

रू. भे.–बकस, बक्ख, बक्खल, बक्स, बच्छ, बछ, वख, वच्छ, वछ ।

वक्षस्थल–सं. पु. [सं.] १ छाती, सीना, उर-स्थल ।

उ०–अरु आदमी तरवारां वाय मा'राज नूं छेड़े किया तो हेठै जादूराय मूवौ लाधौ वा कटारी सूधौ हाथ मा'राज रौ जादूराय रै वक्षस्थल मायां सूं काढ़ियौ । —द. दा.

२ कुच, स्तन, चूचियां ।

रू. भे.—वच्छस, वखिस्थळ ।

वक्षोज–सं. पु. [सं. वक्षस्] १ छाती, सीना ।

२ कुच, स्तन, चूंचियां ।

रू. भे.—बक्षोज

वक्ष्मांण–वि. [सं. वक्ष्यमाण] १ जो कहने योग्य हो, वक्तव्य, वर्णनीय

२ जो कहा जारहा हो ।

वख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—ग्रह दाटक थकां कमरण मरण ग्रेरै, जेरै कुंण हासै वख जांण। काळ तरणै डेरै जावै कुंण, फेरै कुंण थारा फुरमांण।

—जसजी खिड़ियौ

२ देखो 'बख' (रू. भे.)

उ०-ग्ररु बीकानेर सूं मूंधड़ै रुघनाथ वा चोरड़ियै मांन जगरूपसिंघ बिहारीदास जी नूं इसी लिखावट करी थी कै मोहतौ थांनूं मारण नूं ग्रादूणी सूं हुकम लेय नै ग्रायौ है, सू थे घणा सैंठा रहज्यौ, तथा थांरौ वख लागै तौ मुहतै नूं धरम-करम देय नें चूक कर मारज्यौ। —द. दा.

३ देखो 'वक्ष' (रू. भे.)

वखड़ी—देखो 'बखड़ी' (रू. भे.)

वखत—१ देखो 'वक्त' (रू भे.)

उ०—१ पंच वखत निम्माज ताज कुलराह सोहइ, खोजा खांन वजीर मलिक उंबरै मन मोहइ। —व. स.

उ०—२ फौज तहव्वरखांन री, ग्रावी ऊगै सूर। वखत वणी रिण सद्धरां, नरां खरां मुख नूर। —रा. रू.

२ देखो 'बखत' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पाखती ना लोक लीडी री मा नुं समझावण लागा हिवै तौ बीजौ परणीजसी कोई नहीं। इण रा वखत मे इसड़ौ हीज लिखीयौ। —कांवळौ जोइयौ नै तीडी खरळ री वात।

वखतवंत—देखो 'बखतवत' (रू. रू.)

उ०—विसम वांणि विसवाद, विसयरस ग्रंगि न बाधइ, वखतवंत वर विबुध वांन दिन प्रति बाधइ। —ऐ. जै. का. सं.

वखतवडाळ—देखो 'बखतवडाल' (रू. भे.)

उ०—तणु केहर' मझमराव मांगळराव तुंगेस। भूपाळै भूपाळ भाटीवटी वखतवडाळ। —नैणसी

वखतवायरौ—देखो 'बखतबायरौ' (रू. भे.)

उ०—'वखता' वखतवायरा, तैं मारचो 'ग्रजमाळ'। हिंदवांणी रौ बादसा, तुरकांणी रौ काळ। —कविराजा करणीदान

वखतविलंद—देखो 'बखतविलंद' (रू. भे.)

वखतसर–क्रि. वि.—उपयुक्त समय पर, ठीक समय पर।

उ०—मोटा ताजां नै डील सारू खसाई रौ खोरसौ भौळावै। पीसणिया पीसै रांधणियां रांधै वखतसर न्हावौ धोवौ ग्रर सिझ्यां सीख री वातां सांधै। —दसदोख

वखता—देखो 'वक्ता' (रू. भे.)

वखतावर—देखो 'बखतावर' (रू. भे.)

उ०—धरम्यांनै पिण तजि धरैं, सहु वखतावर सीर। इंद्र चेडा नै ग्रवगिणी, भयौ कोणिक री भीर। —ध. व. ग्रं.

वखतावरी—देखो 'बखतावरी' (रू. भे.)

वखतावरू—देखो 'बखतावर' (रू. भे.)

उ०—विद्याधर वड वखतावरू महियान सै हो महिमा महिमाय।

—ध. व. ग्रं

वखतौ—देखो 'वगतौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां राजा सों जैत ग्ररज करण लागौ, 'राज बंदे मांहे कौण खांमी जु महाराज ग्रतरा (नाराज) हूवा ?' तद राजा जैत नूं कहीयौ" जू मैं तौ थांनू सगळो ऊपर कीयौ थौ, तिको तूं बाहर चढ नै वांणीया रौ हणां वखतौ माल छोड ग्रायौ।

—जैतमाल प्रमार री वात

वखतैत – देखो 'बखतैत' (रू. भे.)

वखत्त—१ देखो 'वकत्र' (रू. भे.)

उ०—संपदा विहीण खीर कन्यका संतोखियौ क, निसाभू मोखियौ क सुधा सै घणी नखत्त। राजियौ विसन्न' रौ सनंह रोकियौ क, विजा 'किसन्न' रौ विलोकियौ वखत्त। —साहिबौ सूरतांणियौ

२ देखो 'वक्त' (रू. भे)

३ देखो 'बखत' (रू. भे)

वखमी—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ० – जिय जावत घार विना जखमी। वनडा ग्राज वार घणूं वखमी। —पा. प्र.

वखर—देखो 'भखारी' (मह., रू. भे.)

उ०—जंवाईड़ा मेरी गुदड़ां में रोटी मांगै, रे क लाडौ मेरी ना चलै। सासूड़ी मैं कलेवै का वखर भरा थूं, ए क तेरी लाडौ ले चलूं। —लो. गी.

वखसीस—देखो 'बकसीस' (रू. भे.)

उ०—बादसाह री सारी वखसीस ग्रौर वीरमजी दिया सौ सगळा ग्रागे मेल्हिया। —ठाकुर जैतसी री वारता

वखांण—देखो 'बखांण' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)(उ. र.)

उ० —१ घणउं वखांण किसुं हिव कीजइ, ग्रभिनव सारद देवि। तेह तणउं जे कउतिग वीनवउं, ते निसुणउ संखेविइ।

—हीराणंद सूरी

उ०—२ सिंगार खोड मैं संजुत्त सुंदरी वखांण ए। पयंच ग्रांगुळी जु पांण, कांम पंच वांण ए। —गु. रू. बं.

उ०—३ सोल सहस पणि सांमटी, परण्या पुरुस पुरांण। तु हि गोकुल-गोलिणी, विलस्या-तणउं वखांण। —मा. कां. प्र.

उ०–४ माळव-देस विखोड़िया, मारू किया वखांण। मारू सोहागिण थई, सुंदरि सगुण सुजांण। — ढो. मा.

उ०—सीग्राळइ जल मांहि सरि, उंन्हालइ पंचांगि । वरसालइ वगडइ, वसइ कांमकंदला-काजि । —मा. कां. प्र.

वगड़इ—देखो 'बगड़' (रू भे.)

वगड़णौ, वगड़बौ—देखो 'बिगड़णौ, बिगड़बौ' (रू. भे.)

वगड़ावत-सं. पु [देशज] १ गोठण निवासी बाघ नामक क्षत्रिय के वंशज जो २४ विभिन्न जाति की कन्याओं से उत्पन्न हुए थे । ये बड़े शूरवीर और दानी थे ।

वि. वि.—बाघ ने उक्त कन्याओं के साथ जंगल में गंधर्व-विवाह कर लिया, जब यह बात प्रगट हुई तो कन्याओं के माता-पिता ने इनका बाघ के साथ विवाह कर दिया । वास्तव में इन कन्याओं की संख्या २५ थी परन्तु विवाह के लिये आये हुए प्रोहित ने एक कन्या को विवाह कराने के उपलक्ष में मांग लिया । इस प्रकार शेष चौबीस की संतान वगड़ावत कहलाई

रू. भे.—बगड़ावत, बघड़ावत ।

२ इनकी प्रशंसा में गाया जाने वाला लोक गीत ।

वि.—बहादुर, वीर ।

वगट-सं. पु. [सं. भृकुट] शिर, मस्तक ।

वगड—देखो 'बगड़' (रू. भे.)

वगणौ, वगबौ—१ देखो 'बजणौ, बजवौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

वगणहार, हारौ (हारी), वगणियौ—वि० ।

वगिग्रोड़ौ, वगियोड़ौ, वग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वगीजणौ, वगीजबौ—भाव वा० ।

वगत—१ देखो 'वक्त' (रू. भे.)

उ०—१ राजाजी तौ सूरज रै ढळणा री बाट जोवता जोवता पूरा ग्रांती ग्रायग्या हा । सेवट सूरज नै तो वगत माथै ढळणौ हौ इज । —फुलवाड़ी

उ०—२ कंवर नै ऐड़ी अणचींती जीत री ग्रास नीं ही । वौ जांणतौ हौ के उणनै पाधरी सणक करणा में कीं वगत लागैला । —फुलवाड़ी

२ देखो 'बखत' (रू. भे.)

वगतर—देखो 'बखतर' (रू. भे.)

उ०—वाही रांण प्रतापसी, वगतर में वरछीह । जांणक झींगर-जाळ में, मुँह काढ्यौ मच्छीह । —ग्रज्ञात

वगतरियौ, वगतरौ—१ देखो 'बखतरियौ (रू. भे.)

उ०—धीरज रख म्हारा धणी, ग्रोढ लयूं ग्रसमांन । वगतरियां पोवै वरम, पींपळ हंदा पांन । —पा. प्र.

२ देखो 'बखतर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वगता—देखो 'वकता' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

२ देखो 'वक्ता' (रू. भे.)

वगतावर—देखो 'बखतावर'

वगतौ-सं. पु.—लूटा गया माल या धन दौलत ।

उ०—१ ताहरां वांणीयै पुकार घाती । ताहरां नरौ राजा कनै बैठो हुतौ । सु राजा कहीयौ 'खबर करौ कौण पुकारै ? ताहरां नरौ कहण लागौ, 'राज जैत वाहर चढियौ हुंतौ । खबर मंगावूं छूं ।' ताहरां वांणीये कहीयौ । राज जैत ग्राप न चढियौ, रजपूत चढीया हुंता । तिकां म्हारौ वगतौ माल छोड ने ग्राया । —जैत पुमार री वात

उ०—२ राजा देढे बारट नूं पूछजै छै । ताहरां राज देढे नूं बुलायौ । सु देढौ महाराज रै हजूर ग्राय कहीयौ, "जु महाराज मैं तौ इहां नूं कहीयौ, वगतौ माल ढीलौ मता करौ । —जैत पुमार री वात

रू. भे.—वखतौ ।

वगर—१ देखो 'बगैर' (रू. भे.)

उ०—दूभर पेट भरण नुं दन दन दस रड़वड़सां वड़सां देस वदेस । पाखां वगर कीया पारेवा, जातां सुरग बीया 'जगतेस' । —जवांनजी ग्राढ़ौ

२ देखो 'बगड़' (रू. भे.

उ०—सांवरो लगन लगावत ग्रे मा, काहु कछु कांम बहांनें कोई, ग्रपनें वगर में ग्रावत ग्रे मा । —रसीलै राज रा गीत

स. पु.—एक देश विशेष जहां के ऊंट बढिया होते हैं ।

वगरू—देखो 'बगरू' (रू. भे.)

उ०—सू ऊंठ कुण-कुण दिसावर रा छै ? काछी बोदला, छपरी, जालोरी, बगरू बलोची, सिववाड़िया, ग्रौर ही ग्रनेक जात-भांत रा ऊंठ छै । —रा. सा. सं.

वगळ, वगल—देखो 'बगल' (रू. भे.)

उ०—छुरी वगल में हाथि गेडियौ, छांनै बेसर' गळौ छोडियौ —ग्रनुभववांणी

वगलबंदी, वगलवंधी—देखो 'बगलबंधी' (रू. भे.)

वगळांणा—देखो 'बगळांणा' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

वगलामुखी—देखो 'बगलामुखी' (रू. भे.)

वगसणौ, वगसबौ—१ देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—पोहप वगसीया गहक्क करै पख, पांगरीया वन नीला पांन । राव 'पीथल' वाळौ गर रूड़ौ, ग्राबूड़ौ लागौ ग्रसमांन । —ग्राबू परवत रौ गीत

२ देखो 'बकसणौ, बकसबौ' (रू. भे.)

वगसणहार, हारौ (हारी), **वगसणियौ**—वि० ।
वगसिग्रोड़ौ, वगसियोड़ौ, वगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वगसीजणौ, वगसीजबौ—कर्म वा० ।

वगसर—देखो 'बगसर' (रू. भे.)

वगसरिया—देखो 'बगसरिया' (रू. भे.)

वगसरियौ—१ देखो 'बगसरियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बगसर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वगसाणौ, वगसाबौ—देखो 'बकसाणौ, बकसाबौ (रू. भे.)

वगसियोड़ौ—१ देखो 'विकसियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बकसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वगसियोड़ी)

वगसी—देखो 'बकसी' (रू. भे.)
उ०—तद पातसाह जी **वगसी** नूं फुरमायौ के इसका रोजगार चढचा है जितना लेखौ कर चुकाय देवौ । पीछै **वगसी** यांसूं लेखौ कियौ जिणमें तळब रा रिपिया पनरा लाख हुवा । —द. दा.

वगहरा—देखो 'वगैरह' (रू. भे.)
उ०—सो बड़ा ही गाढ़ सूं केसरीसिंहजी नै नागोर मेलियौ । हजार तीस रौ पटौ, सांवां ग्रोडीट वगहरा लिख दिया ग्रर रिपिया दस थाळी रा कर दिया । —ग्रमरसिंह गजसिंहोत री बात

वगाणौ, वगाबौ—१ देखो 'बगाणौ, बगाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ इतरा में भीतर सूं मांई-मां पधारचा । हाथ पकड़ धूजी ने परा रे **वगाया** । —लो. गी.
उ०—२ छोटा छोटा गुलाबी होठ फरूकण लागा । पग पटकनै एक कांकरी उठाई । पछै उण कागा रै सांम्ही **वगाई** । —फुलवाड़ी
२ देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)

वगायोड़ौ—१ देखो 'वगायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वगायोड़ी)

वगार—देखो 'बघार' (रू. भे.)

वगारणौ, वगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

वगारियोड़ौ—देखो 'बघारियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. वगारियोड़ी)

वगावणौ, वगावबौ—१ देखो 'बगाणौ, बगाबौ' (रू. भे.)
उ०—बाप तौ घड़ी एक ई बात कैवतौ के वै उणनै छोडनै कठै ई नीं जावै । थोड़ा दिनां तांई कमाई लारै धूळ **वगावै** ।
—फुलवाड़ी
२ देखो 'बजावणौ, बजावबौ' (रू. भे.)

वगावत—देखो 'बगावत' (रू. भे.)

वगावियोड़ौ—१ देखो 'बगायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वगावियोड़ी)

वगि—देखो 'वरग' (रू. भे.)
उ०—पेखे कोइ कहति एक-एक प्रति, विमळ मंगळ ग्रह एक **वगि** । एणि कवण सुभ क्रम ग्राचरतां, जांणियै वेलि जपंति जग ।
—वेलि

वगियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वगियोड़ी)

वगीची—देखो 'बगीचौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वगीचौ—देखो 'बगीचौ' (रू. भे.)
उ०—गंदाळ सहर गढ़ कोट बाजार पौळि पगार बाग बावड़ी **वगीचा** कूग्रा सखरां री वड़ां पीपळां री छिबि सहर री पाखती विराजिनै रही छै । —रा. सा. स.

वगूतणौ, वगूतबौ—देखो 'विगूतणौ, विगूतबौ' (रू. भे.)
उ०—बुधे तमारी ए ग्रति बलिया बांधव बहु **वगूता** । नहि तरे द्यूत रमता तमौ तिवारां ग्रमौ पासै हूता —नलाख्यान

वगूतियोड़ौ—देखो 'विगूतियोड़ौ' (रू. भे.)

वगेर—देखो 'बगैर' (रू. भे.)

वगेरे, वगेरै—देखो 'वगैरह' (रू. भे.)
उ०—पछै सांचोर ऊपर मांडवां री तथा बोगरा पातसा **वगेरे** केई राज रैया ।
—मारवाड़ री ख्यात

वगेलू—१ देखो 'बघेल' (रू. भे.)
२ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

वगेसरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)
उ०—भणंत स्त्री विनोदयं, कल्यांण केक मोदयं । खंमायची पटंगयं, **वगेसरी** विहंगयं ।
—रा. रू.

वगैर—देखो 'बगैर' (रू. भे.)

वगैरह—ग्रव्य. [फा. वगैरः] १ ग्रादि. इत्यादि ।
२ इसी प्रकार ।
३ सम्बन्धित ।
४ शेष ।
५ प्रभृति ।
६ प्रमुख ।

रू. भे.—बगहरा, वगहरा, वगेरै।

वगोरणौ, वगोरबौ–क्रि. स. [सं. विकुर्वम्] १ प्रव्यंजन करना, व्यक्त करना।

उ०—गजेंद्र कुंभस्थल सीस ढोलइं, कोइ हींडोला जिम सीस डोलइं, तुरंग मातंग ति नींद्र घोरई, न पक्षीया नीद्रलडी **वगोरइं**। —सालिसूरि

२ प्रगट करना, बताना।

वगोरणहार, हारौ (हारी), वगोरणियौ—वि०।

वगोरिग्रोड़ौ, वगोरियोड़ौ, वगोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वगोरीजणौ, वगोरीजबौ—कर्म वा०।

विगोरणौ, विगोरबौ—रू० भे०।

वग्ग—१ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रापै ही जांणावसी, भलौ ज होसी **वग्ग**। कै मांगिए दरसावियां, कै ऊछजियां खग्गि। —हा. झा.

उ०—२ साहिब, म्हां का बापकइ, छइ करहां कउ **वग्ग**। जइ करहउ खोड़उ हुवइ, गादह दीजइ दग्ग। —ढो. मा.

२ देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—१ ग्राधारि **वग्ग** ग्रायासि लग्ग। खुरिसांणि खेड़ि खिविया खड़ग्ग। —रा. ज. सी.

उ०—२ फेरे **वग्ग** तुरंग री, तोले खग्ग करग्ग। रिए पएा उमंगे लगै, 'रैणायर' गयएग। —रा. रू.

वग्गणौ, वग्गबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ **वग्गा** भड़ मेवाड़ रा, सीसौद्या ग्रह सार। ग्राठू दिस कळ सल्लळी, चळाचळी संसार। —रा. रू.

उ०—२ तें जोधां छळ झलियौ, घणी 'ग्रजो' सिर धार। कळ लागै जांणे कवण, विण वग्गी तरवार। —रा. रू.

उ०—३ इण दिसिया ग्रजमेर सूं, ग्रायौ तहवरखांन। इण दिसि **वग्गा** सिंधुवा, भुज लग्गा ग्रसमांन। —रा. रू.

उ०—४ लग्गौ सूर परक्खणौ, **वग्गौ** धारा रीठ। —रा. रू.

३ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)

वग्गणहार, हारौ (हारी), वग्गणियौ—वि०।

वग्गिग्रोड़ौ, वग्गियोड़ौ, वग्गयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वग्गीजणौ, वग्गीजबौ— भाव वा०।

वग्गय—देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—ऊपड़ै **वग्गयं** गाजवां लग्गयं। गोम गयणंगयं, धूजिया नग्गयं। —गु. रू. बं.

वग्गियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'भागियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वग्गियोड़ी)

वग्घ—१ देखो 'बाघ' (रू. भे.)

उ०—वयणें गाढ़ा वड चडै, मूठी गाढ़ा खग्ग। हाजरती दरबार मैं विरता बीयै **वग्घ**। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बाग' (रू. भे.)

वग्रहणौ, वग्रहबौ—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू. भे.)

उ०—कहीया मुख वचन घणा ग्रनकारै, **वग्रहीया** खळ खतावण। नर समजति तरै नरवहीया, रहीया 'चांपा' तरै रण। —गोपाळदास चांपावत री गीत

वग्रहियोड़ौ—देखो 'विग्रहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वग्रहियोड़ी)

वघंबर—देखो 'बाघंबर' (रू. भे.)

उ०—**वघंबर** जेम सिलै विकराळ। मंडै गळिमाळ जिका रुंडमाळ। —सू. प्र.

वघबाव, वघवाय, वघवाव, वघवाह—देखो 'बघवाव' (रू. भे.)

उ०—१ विघ वाघ जिम **वघबाव**, पलटंत गज पछ पाव। —सू. प्र.

उ०—२ वाघ करै नह कोट वन, वाघ करै नह वाड़। वाघां रा **वघवाव** सूं, झिळै ग्रगंजी झाड़। —बां. दा.

उ०—३ दळ गयंद टाळा दियै, वाघ तणी **वघवाह**। हौल पड़ै प्रसणां हियै, गहन 'पतौ' गजगाह। —किसोरदांन बारहठ

वघार—देखो 'बघार' (रू. भे.)

उ०—मोठ मटर चूंला फली रे लाल, छमकारचा देइ **वघार**। मुंल फूल फल पांनड़ा रे लाल, ग्रथांणा सुखकार। —प. च. चौ.

वघारणौ, वघारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

उ०—तूग्ररि नी दालि नां साक, उढ़वां ना साक, चिणां ना साक, राईता मिरीतां खाटां खारां मीठां गल्यां तीखां तमतमां तल्यां **वघारचां** छमकारचा पुंगारचां। —व. स.

वघारणहार, हारौ, (हारी), वघारणियौ—वि०।

वघारिग्रोड़ौ, वघारियोड़ौ, वघारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वघारीजणौ, वघारीजबौ—कर्म वा०।

वघारियोड़ौ—देखो 'बघारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वघारियोड़ी)

वघूल—देखो 'बघूलौ' (मह. रू. भे.)

वघूलौ—देखो 'बघूलौ' (रू. भे.)

वघेरौ—देखो 'बघेरौ' (रू. भे.)

उ०—जंगळ मांहै रमता-रमता गया । ताहरां एक वघेरौ दीठौ । —नैणसी

वघेल—१ देखो 'बघेल' (रू. भे.)

२ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

वघेलखंड—देखो 'बाघेलखंड' (रू. भे.)

वड़—१ देखो 'वट' (रू. भे.)

उ०—**वड़** पीपळ जांबू विरख, नींबू नींब पळास । आसूपाळा अति सरस, आधौ फरै अकास । —गज उद्धार

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठिया, मीर **वड़** वीर रिणधीर रोसइं । —प. च. चौ.

वड़छणौ, वड़छबौ—क्रि. स.—१ काटना, कतरना ।

उ०—त्रांण पाखर भरणण हजारी तड़छिया, रोळ भुज **वड़छिया** रचण राड़ा । कर मछर धाड़वी लियण वित कड़छिया, धड़चिया 'चूंड रज' भुजां धाड़ा । —रावत हम्मीरसिंह चुंडावत री गीत

वड़णौ, वड़बौ—देखो 'बड़णौ, बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ डाढाळौ अर भूंडण चाचरा उठाय अठी उठी जोयौ के चांणचक डाढ़ाळै रै लिलाड़ में तच करती री एक तीर **वड़ग्यौ** । अर भूंडण रै डावै पसवाड़ै सूंसाड़ करती गोळी वड़गी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ गोगादेजी आप सिनांन करण नूं पैठा । पण वांनर तेजौ तळाव मांहै वड़ै नही । —नैणसी

वड़णहार, हारौ (हारी), **वड़णियौ**—वि० ।

वड़िग्रोड़ौ, वड़ियोड़ौ, वड़घोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वड़ीजणौ, वड़ीजबौ—भाव वा० ।

वड़दी—देखो 'वरदी' (रू. भे.)

वड़लौ—देखो 'वट' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेत में वडवोरड़ियां आयोड़ी, गहर डम्मर व्हियोड़ी, जांणै, **वड़ला** ऊभा । —रातवासौ

वड़वड़—देखो 'बड़बड़' (रू. भे.)

उ० – तड़फड़ सायक अति सत्राड़, **वड़वड़** काळज घाव बराड़ । चड़चड़ जोगणियां रतचोस, जुड़ै भिड़ 'धूहड़' बाधै जोस । —गो. रू.

वड़वड़णौ, वड़वड़बौ—देखो 'बड़बड़णौ, बड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ भड़भड़ै के लड़थड़ै भारथ, अड़ै के अखड़ैत । **वड़वड़ै** के हड़हड़ै वीजळ, जड़ै के जरदैत । —र. ज. प्र.

उ०—२ बूर पड़ि जंवूर विहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै रवड़ भड़ । विढ़ण वरि अड़ सुहड़ समवड़ **वड़वड़ै** पिंड चार। —रा. रू.

वड़वड़ियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वड़वड़ियोड़ी)

वड़वा—१ देखो 'बड़वा' (रू. भे.)

वड़वाअगन, वड़वाअनळ, वड़बाग, वड़वाग, वड़वागि, वड़वाग्नि, वड़वानळ, वड़वानल—देखो 'बड़वानळ' (रू.भे.)

उ०—१ जड़ी असमर समर कंवर 'सुबमांन' ज्यां, पड़ी **वड़वाअनळ** सीस पिसणां । —महाराजा सुनमांनसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ सोर आग सपरस्स, किना **वड़वाग** अकारी । माग हूंत सामंद्र, ध्याग बरसण उर धारी । —रा. रू.

उ०—३ वध प्रचंड 'वखतेस' कियौ कोडंड कुमक्कै । ओप वदन ऊभरै, रूप **वड़वाग** निरक्खै । ज्वाळाकार खतंग, कीध गुण सग तमक्कै । प्रळैवंत सिव चक्ख, जाणि अमरांग भभक्कै । —रा. रू.

उ०—४ मुखि 'माधव-माधव' जपइ, नयणे नीर प्रवाह । टंक नमइ नहीं टलवळइ, घटि वडवानळ दाह । —मा. कां प्र.

वड़वामुख—देखो 'बड़वामुख' (रू. भे.) (अ. मा.)

वड़वाय—सं. पु.—वट वृक्ष की उपशाखा ।

उ०—'मान' महावड़ साख कर, आसौ किर **वड़वाय** । साह सभा वन मैं खड़ी, छाया सूं जग छाय । —बां. दा.

वड़सावित्रीव्रत—सं.पु. [सं. वट सावित्री व्रत] स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत जो ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को किया जाता है, इस दिन वड़ की पूजा होती है ।

वड़सी—सं. स्त्री. [सं. वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति का प्रति वर्ष आने वाला मृत्यु का दिन ।

२ उक्त दिन को किया जाने वाला भोजन आदि का विशेष आयोजन

३ देखो 'बड़ी' (रू.भे.)

वड़ाणौ, वड़ाबौ—देखो 'बड़ाणौ, बड़ाबौ' (रू. भे.)

वड़ारण—देखो 'वडारण' (रू. भे.)

उ०—चौगड़दा कनात खंची छै । तैण समै अचूकी रा सुखपाळ आंण लवाई । तैण समै दूजी **वड़ारणां** खवासी उठै हीज बरजी । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

वड़ि—१ देखो 'वट' (रू. भे.)

२ देखो 'बड़ी' (रू. भे.)

वड़ियोड़ौ—देखो 'बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वड़ियोड़ी)

वड़ियौ—देखो 'बड़ियौ' (रू.भे.)

वड़ी—देखो 'बड़ी' (रू.भे.)

वड़ौ—१ देखो 'बड़ौ' (रू.भे)

उ०–उपाड़ सेल अबदल्ल पर, रांम भुजांबळ रोपियौ। वीधियौ जांण तळियौ वड़ौ, ऊथलियौ तन ओपियौ। —रा. रू.

२ देखो 'बडौ' (रू.भे.)

उ०—रूडा रूडा उपदेश दे दे वड़ा वड़ा भूप, कीधा, ध्रम्म, रूप, खड़ा तडा सेवै पाय। —घ. व. ग्रं.

वच–सं.पु. [सं. वंच्] १ वचन, वाक्य।

सं.स्त्री.—२ सरस्वती, शारदा।

[सं. वचा] ३ औषधि विशेष।

रू. भे.—बच।

४ देखो 'वंच' (रू.भे.)

५ देखो 'बीच' (रू.भे.)

उ०–वरै रंभ मनबंछत, वसै सुर थांन **वच**, एळा सर सुजस दध कड़ां अड़ियो। —माहसिंह भाटी री गीत

६ देखो 'वचन' (रू. भे.)

वचकळा–सं. स्त्री [सं. वचः कला] पढ़ने का ढंग या कला, तरीका।

वचखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ अस्त्री पण राजा री राण्यां सूं अनेक प्रमोध आंण लगाए जाए। हेत घणौ बाधौ। या पण महावीर **वचखण** एम करतां सांमणी रौ दीहाड़ौ आवियौ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ अेहड़ी वीर **वचखण**, महा चतर आसैर दौकिऔ

—कल्यांणसिंघ नागराजोत वाढ़ेल री बात

वचणौ, **वचबौ**—देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)

उ०— १ मर सबळां आगै निबळ, नीर धकै वांनीर। वाय धकै त्रण जाय **वच**, भलौ नमण गुण भीर। —बां. दा.

उ०—२ चूर लियौ औ चौतरफ, केवी वयण कहंत। वाघ केम छिपियौ **वचै**, रुपियां धरम रहंत। —बां. दा.

उ०—३ नारिन को पुरखा, चतर न मुरखा, बेद न च्यारि **वचंदा** है। —अनुभववांणी

वचणहार, **हारौ**, (**हारी**), **वचणियौ**—वि०।

वचिओड़ौ, **वचियोड़ौ**, **वच्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

वचीजणौ, **वचीजबौ**—कर्म वा०।

वचत—१ देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—पर आफु क्यारी पंकत, मोताहळ बोह मत। वीरम ठग वाळा वकट, वांका वडा **वचत**।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

२ देखो 'बचत' (रू. भे.)

वचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—बारध कुण बांधै राघव वण, धरा सेस वण कवण धरै। वीकावत पाछै **वचत्रां** रा, कमण दूसरौ तंडळ करै।

—तेजसी खिड़ियौ

वचन–सं. पु. [सं.] १ बोलने की क्रिया या भाव, उच्चारण।

२ मुंह से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाणी, वाक्य।

उ०—१ कदाचित पांणी माहि पाखांण तरइ, कदाचित मेरु चूलिका चलइ, कदाचित् ब्रहस्पति **वचन** तु स्कलइ कदाचित् सिलातलि ऊपरि कमल विकास लहइं। —व. स.

उ०—२ वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक। वे खाधा वे मांनियां, हुवा कतांत खुराक। —बां. दा.

३. कही हुई बात, उक्ति, कथन।

उ०—सांभलि एहवा **वचन** कुमांर, रागातुर हूवौ तिणवार।

—वि. कु.

४ प्रतिज्ञा या प्रण के रूप में दृढ़ता पूर्वक कही हुई बात, वादा, प्रण।

मुहा.—१ वचन तोड़णौ = प्रण को तोड़ देना, वादे के अनुसार न रहना। २ वचन देणौ=किसी के वचनों में बधजाना, वचन बद्ध होना, वादा करना, प्रतिज्ञा करना। ३ वचन भंग करणौ=देखो 'वचन तोड़णौ' ४ वचन राखणौ= प्रतिज्ञा पूरी करना, दिये वचन निभाना, वादा पूरा करना। ५ वचन हारणौ=प्रतीज्ञा पूरी करने में असमर्थ रहना। वादा न निभाना, वचन विमुख होना।

५ घोषणा।

६ उपदेश, निर्देश, मार्ग दर्शन।

उ०–सील संतोस दया सत भक्ती, स्वधरम ग्यांन वैरागी। सत्वगुण का पायक सब साथै, गुरु **वचनां** का पागी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

७ आदेश, आज्ञा।

८ सलाह, परामर्श।

९ वर्णन, बयान,उल्लेख।

१० अभिव्यक्ति।

११ पुनरावृत्ति।

१२ शब्दशास्त्र में शब्द के रूप में वह विधान जिसके द्वारा एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है।

१३ नियम।

१४ सरस्वती।

१५ भाषा।

रू. भे.—वच, वचन, वचन्न, वयण, वयन, बेंण, बेण, बैंण, बैंन, वैंण, वैन, वइण, वइन, वच, वचनि, वचन्न, वच्चन, वयण, वैंण।

अल्पा.—वचनड़ौ, वयणड़ौ।

वचनका—देखो 'वचनिका' (रू. भे.) (द. दा.)

वचनकारी—वि. [सं. वचनकारिन्] १ वचन को मानने वाला।

२ आज्ञाकारी।

वचनगुप्ति—सं. स्त्री. [सं.] वाणी का संयम-जिससे वचन का निग्रह कर प्रयोजन, उचित सत्य, तथ्य व निर्दोष वचन का ही उच्चारण हो। (जैन)

उ०—तपः कांति सोसित लोभ मद, क्रोधाग्नि वध्यापन पयःपूर, मायातमस्विनी संहरणसूर, मांनगिरवरदलनदंभोलि, त्यक्त पुत्रमित्र कलत्रादिसंबंध, मनोगुप्ति **वचनगुप्ति** कायगुप्ति प्रधांन। —व. स.

वचनपाटव—सं.स्त्री. [सं. वचनपटुता] १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ बोलने की चतुराई, वाक्पटुता।

वि. [सं. वचनपटु] बोलने में चतुर, प्रवीण।

वचनप्रतिस्ठा—सं.स्त्री. [सं. वचन+प्रतिष्ठा] वचनों की मर्यादा, कहे हुए वचनों की दृढ़ता, सच्चाई।

उ०—प्रतापि लंकेंद्र, गुरु नियम रांमचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला करण, वचनप्रतिस्ठां युधिष्ठिर, धनुरवेदि. अरजुन, संग्रांमचरचा सूगावीर, आग्यां अजयपाल।

—व. स.

वचनयुद्ध—सं.पु. [सं. वचनयुद्ध] १ जबानी लड़ाई, वाद-विवाद। वाग्युद्ध

२ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

वचनयोग—वि. [सं.] सत्यासत्य भाषा का उच्चारण करने की क्रिया या ढंग। (जैन)

वचनलक्षिता—सं. स्त्री. [सं.] वह परकीया नायिका जिसकी बात चीत से उसके उप-पति से प्रेम लक्षित या प्रगट होता हो।

वचनविदगधता, वचनविदग्धता—सं. स्त्री. [सं. वचनविदग्धता] बोलने की चतुराई, पटुता।

वचनविदग्धा—सं. स्त्री. [सं. वचनविदग्धा] १ परकीय नायिका जो अपनी वचन चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती है।

२ मधुर भाषणी या मन-मोहिनी स्त्री।

रू. भे.—वचन विदग्धा।

वचनसिध—वि. [सं. वचनसिद्ध] वह महात्मा या सिद्ध-पुरुष जिसके मुंह के बोल सर्वथा सत्य होते हों, वचन-सिद्धि प्राप्त महात्मा।

सं. स्त्री.—अपने वचनों या बोल की सिद्धि।

वचनात—सं. स्त्री.—राजा महाराजाओं द्वारा अपने छोटे को पत्र में लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढ़पती हुवा जिणसूं लिखा-बट आगै न रही। प्रथीराज रै मनसब घणौ हो जिण सूं **वचनात** नहीं नै लिखावतू लिखीजतौ। —बां. दा. ख्यात

वचनि—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—चरण चारिहिं हंस हरावती। **वचनि** जिणइं जीती भारती।

—सालि सूरि

वचनिका—सं. स्त्री.—१ गद्य और पद्य रचना का एक ढंग विशेष।

(र. वचनिका)

२ गद्य रचना में छोटे-छोटे युग्म रूप।

३ कोई गद्य रचना।

४ वृत्त-गंधी नामक काव्य रचना का एक विधान। (र. रू.)

५ चम्पू काव्य।

रू. भे.—बचनका, बचनिका, वचनका।

वचनीय—वि. [सं.] १ कहने योग्य, वर्णन करने योग्य।

२ प्रशसनीय।

रू. भे.—बचनीय।

वचन्न—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ तवै 'भीम' वांका वचन्नं तियारं। 'खुमांण' आदू जुद्ध सूं खूंदकार। —गु. रू. बं.

उ०—२ वर विलंद राय लिखिया **वचन्न**। वाचिया किया चख चोळ वन्न। —वि. सं.

उ०—३ गादह दाध्यउ दग्ग करि, सामु कहइ **वचन्न**। करहुउ ए कूड़इ मनइ, खोड़उ करइ यतन्न। —ढो. मा.

उ०—४ मेड़तियौ मुख ऊचरै, हैमतसिंध **वचन्न**। मारौ दुरजण सांम रा, कुण भाई कुण तन्न। —रा. रू.

वचा—देखो 'वाचा' (रू. भे.)

उ०—**वचा** दिराड़ खिलाड़ वछ, चंचळ आंठू चाढ़ियौ। 'पाल' कर कार समंदां परैं, कमध भूत नै काढ़ियौ। —पा.प्र.

वचाड़णौ, बचाड़बौ—देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—जसवंत औरंगसाहि जव, वेद कतेब **वचाड़ि**, बे छत्रपती बहसिआ, रचि दिन राड़ि। —वचनिका

वचाड़णहार, हारौ (हारी), वचाड़णियौ—वि०।

वचाड़िओड़ौ, वचाड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०।

वचाड़ीजणौ, वचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वचाड़ियोड़ौ—देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वचाड़ियोड़ी)

वचाणौ, वचाबौ—देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—तिणि नयरि जेसिंगदे राउ; नवउ खणावइ तिहां तलाव। ते खणावतां लिपि नीसरी, ते न **वचाइं** कुणहिं खरी। —हीराणंद सूरि

उ०—२ नेस वचाया कोलियां, पेस धरे न्रप पाय। पाटण 'अजन' पधारिया, अरि पागड़ै लगाय। —रा रू.

वचाणहार, हारौ (हारी), **वचाणियौ**—वि०।
वचायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वचाईजणौ, वचाईजबौ—कर्म वा०।

वचायोड़ौ—देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वचायोड़ी)

वचार—देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—बांहै सुंदरि बहरखा, जासू चुड़ स **वचार**। मनुहरि कटि थळ मेखळा, पग झांझर झणकार। —ढो. मा.

वचाळै—देखो 'बिचै' (रू. भे)

उ०—अवसर खोय जेतला आया, गोरी दळा **वचाळै** गात। मेवाड़ै खाली मोकळीयौ, पोह महमंद 'जसौ' जग पात। —रांणा कुंभा री गीत

वचाव—देखो 'बचाव' (रू. भे.)

उ०—पायकां के हमल्लै बांक पट्टै फूल हत्थूं का दाव। नजर वछैक का हुंन्नर अंगूगा **वचाव**। हणमंत रूप जगजेठू नै भुजंग दंडूंपर दस्तताळ दिया। —सू. प्र.

वचावणौ—वि.—बचाने वाला, रक्षा करने वाला।

उ०-भुज दंड लीजै भांमणा, अध्रियावणां अभीत। विध-विध दास **वचावणा**, जुध पावणा सजीत। —र. ज. प्र.

वचावणौ, वचावबौ—देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ खत्रवट धरम सदा थां खोळै, श्रौ हिंदवांण **वचावौ श्रोळै**। —रा. रू.

उ०—२ आज न दीसै आपरौ, प्रांण वचावण हार। —पा. प्र.

उ०—३ तवता कुरांण काजी तठै,ब्रहम पुरांण **वचाविया**। आसुरां धरम मेटै 'अजै', सुरां धर्म दरसाविया। —सू. प्र.

वचावणहार, हारौ (हारी), **वचावणियौ**—वि०।
वचाविश्रोड़ौ, वचावियोड़ौ, वचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वचावीजणौ, वचावीजबौ—कर्म वा०।

वचावियोड़ौ—देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वचावियोड़ी)

वचिक्षण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—अनि **वचिक्षण** अम्नाय व्यापरिउ, करण्णवारनइ विसइ कुसलीउ, वैरिजन अनाकलनीय, गुहिर गंभीर। —व. स.

वचियोड़ौ—देखो 'बचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वचियोड़ी)

वचै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—अंब खास **वचै** बांणास आछटी, कहर 'पदम' धमजगर कर। 'मुहण' मरण कीया मार हतै, एकण घाव छट्टक थर। —संकर बारहठ

वचौ—देखो 'बच्चौ' (रू. भे.)

वच्चंसी—वि. [सं. वर्चस्विन्] किसी के छल कपट के बोल में न आने वाला (जैन), प्रभावशाली वचन वाला।

वच्चक—वि. [सं. वाचक] लिखी हुई लिखावट को ठीक ढंग से पढ़ कर सुनाने वाला। बांचने वाला, पढ़ने वाला।
रू. भे.—बच्चक।

वच्चणौ, वच्चबौ—क्रि. स. [सं. व्रज्, प्रा. वच्च्] १ जाना, गमन करना, यात्रा करना।

उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीह तित्थ जां घरि पहुच्चई। मणिचूडह भित्तह भयणि राउ एकु परिहरीउ **वच्चई**। —पं. पं. च.

२ निर्वासित करना। होना।

३ देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)

उ०—आ सुणतां आलोचिया, 'सोनंगर' दुरगेस।' 'अजन' रहै, सच्चे जतन, **वच्चे** मुरधर देस। —रा. रू.

वच्चणहार, हारौ (हारी), **वच्चणियौ**—वि०।
वच्चिश्रोड़ौ, वच्चियोड़ौ, वच्च्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वच्चीजणौ, वच्चीजबौ—कर्म वा०।

वच्चन—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—जेता बोल बोलै तेता दे संभाळ ली, वच्चने **वच्चने** दिए द्रढ्ढ वाळी। —ना. द.

वच्चाळइ—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखै वीस वसाळ। ऊंचै थळइ ज एकलौ, **वच्चाळइ** एवाळ। —ढो. मा

वच्चियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गया हुआ, गमन किया हुआ, यात्रा किया हुआ, २ निर्वासित।

३ देखो 'बचियोड़ौ' (रू. भे.) —(स्त्री. वच्चियोड़ी)

वच्छ—१ देखो 'वत्स' (रू. भे.)

(स्त्री. वछायोड़ी)

वछावणौ, वछावबौ—देखो 'विछाणौ, विछाबौ' (रू. भे.)

वछावणहार, हारौ (हारी), **वछावणियौ**—वि० ।

वछाविग्रोड़ो, वछावियोड़ौ, वछाव्योड़ौ भू० का० कृ० ।

वछावीजणौ, वछावीजबौ—कर्म वा० ।

वछावत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

वछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछावियोड़ी)

वछूटणौ, वछूटबौ—देखो 'बिछूटणौ, विछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—दल लेई जगनीक नरेसर, समरथ सांम्हउ ग्राविउ । बांणावली बिहुं दले वछूटी, इण परि अंबर छायउ । —हीराणंद सूरि

वछूटियोड़ौ—देखो विछूटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछूटियोड़ी)

वछेक—देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—वदै दहुवै घड़ देखि **वछेक**, एकौ भड़ 'ऊदक' ऊद ग्रनेक ।
—सू. प्र.

वछेदणौ, वछेदबौ—देखो 'विच्छेदणौ, विच्छेदबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सवां कमल नी इच्छा करइ, भीमसेनु तउ वनि-वनि फिरइ । ग्रसउण देखी बोलइ राउ, भीम पासि **वछेदिइं** जाउ ।
—पं. पं. च.

उ०—२ सतीय बेउ छइं कासगि रही, इंद्रह ग्राइसु तु तुम्ह कही । मेलहउ पंडव वडइं **वछेदि,** विणु हथियारह बांधा भेदि । —पं. पं. च.

वछेदियोड़ौ—देखो 'विच्छेदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछेदियोड़ी)

वछेर—देखो 'बछेरौ' (मह., रू. भे.)

उ०—**वछेर** केतलं सवागि, फेरकं फरावतं, नटंस नाटक विधांन, साझना सझावतं । —सू. प्र.

वछेरियौ—देखो 'बछेरौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वछेरौ—देखो 'बछेरौ' (रू. भे)

उ०—१ विसनदास लेजाय नै घोड़ी बोर नै घोड़ौ दिखायौ । बरस १ नूं व्याई । **वछेरौ** जायौ । —नैणसी

उ०—२ लोहां लकड़ां चांमड़ां, पहलां किसा वखांण, वहू **वछेरा** डीकरा, नीमटियां परवांण । —ग्रज्ञात

(स्त्री. वछेरी)

वछोड़णौ, वछोड़बौ—देखो 'विछोड़णौ, विछोड़बौ' (रू. भे.)

वछोड़ियोड़ौ देखो 'विछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछोड़ियोड़ी)

वछोडणौ, वछोडबौ—देखो 'विछोड़णौ, विछोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—सोसइ सइरु महातपि, ग्रातपि रहइ गंभीर । मोह तणा जगबंधव, बंध **वछोडइ** धीरु । —जयसेखर सूरि

वछोहणौ, वछोहबौ—देखो 'विछोहणौ, विछोहबौ' (रू. भे.)

उ० जइ करवत सिर ताहरइ, दीजत सिरजणहार । वर **वछोह्यां** साजणां रे, तउ तउ जांणत सार । —हीराणंद सूरि

वछोहियोड़ौ—देखो 'विछोहियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. वछोहियोड़ी)

वछौ—१ देखो 'वत्स' (रू भे.)

२ देखो 'बच्चौ' (रू भे.)

उ०—रोयती य नृप वधूग्र निवारी, **वछि** रोयसि म मइं तूं वारी ।
— सालि सूरि

(स्त्री. वछि, वछी)

वजंतरी, वजंत्री—देखो 'बजंत्री' (रू. भे-)

वजंद्र—सं. पु. [सं. वज्र] कुलिश, वज्र ।

वज—सं. स्त्री. [वजग्र] १ शरीर की बनावट, रचना ।

२ बनावट का ढंग, प्रणाली, रीति ।

३ ग्रवस्था, दशा, हालत ।

४ देखो 'बज' (रू. भे.)

वजड़—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—खोल्या खोल्या **वजड़** कमाड़ । —लो. गी.

वजजंत्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

वजण—१ देखो 'बाजण' (रू. भे.)

उ०—सरण ग्रसरण ग्रदण साझण, टंकर वण किय **वजण** दिन, तिण वार तेर विसाळ । —सू. प्र.

२ देखो 'वजन' (रू. भे.)

वजणौ, वजबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कठै **वजै** वडबोर, कठै झाड़ी मोटोड़ी । कठै बोरटी नांव, वणी देवा री छोड़ी । —दसदेव

उ०—२ काळवी कियौ 'पाल' विनौ कजियौ, वसुधा पर नांम घणौ **वजियौ** । —पा. प्र.

उ०—३ **वजि** म्रदंग चंग रंग उपंग वारंग, ग्रनंग छवि चंग उमंग ग्रंग ग्रंग । —सू. प्र.

वजणहार, हारौ (हारी), **वजणियौ**—वि० ।

वजिग्रोड़ौ वजियोड़ौ, वज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वजीजणौ, **वजीजबौ**—भाव वा० ।

वजन-सं .पु. [फा. वज्न:] १ बोझ, भार ।

२ भार का परिमाण, तौल ।

३ भारीपन, गुरुता ।

४ महत्व या मान का सूचक ।

उ०—यह सिफत कुतबुदीन साहजादे की पढ़ै । बहुत ही **वजन** सुख से बढ़ै । —कुतबीदीन साहजादे री वात

५ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

६ दवाव, दाब ।

रू. भे.—बजन, वजण ।

वजनी-वि. [फा. वज्नी] १ जिसमें वजन हो, भार हो, भारयुक्त, बोझिल ।

२ जिसमें अधिक बोझ या भार हो, गुरुतर ।

३ ठोस

४ महत्वपूर्ण ।

५ गंभीर, महान ।

वजरंग-वि. [सं. वज्रांग] १ जिसका शरीर वज्र के सामान कठोर व मजबूत हो, सुदृढ़ ।

उ०—१ अति सुघट पौड़ **वजरंग** ओप, अय पाक उलट चव जव अनोप । —रा. रू.

उ०—२ वरियांम जणै जण बाजतौ, जोधपुरां जोधहपुरौ । **वजरग** हुऔ हणमंत वरि, भलौ 'भीम' कल्यांण रो । —गु. रू. बं

२ धूल से लथ पथ ।

सं. पु. [सं. वज्र-अंग] पवनसुत हनुमान का नामान्तर । (अ. मा.)

रू. भे.—बजरंग, बजरंगी, बजरअंग, बजरअंगी, बज्रंगी, वजरंगी, वजरांगी, वज्रंगी, वज्रअंगी, वज्रांग, वज्रांगी ।

वजरंगबळी, **वजरंगबली**—देखो 'बजरंगबळी' (रू. भे.)

वजरंगी—देखो 'वजरंग' (रू. भे.)

वजर-सं. पु. [फा. फजर] १ प्रातः काल, प्रभात ।

२ देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०— १मचियै कांकळ मदत री, वीर न देखै वाट । एक अनेकां सूं हिचै, छाती **वजर** कपाट । —बां. दा.

उ०—२ जरदैतां ओरे असि जाऊं, वजर धजर घण गजर वजाऊं । —सू. प्र.

उ०—३ दांतूसळ वजर धजर जमदाढां, वाढां ऊगाढां विहर । असपति नजर भलौ आफळियौ, कुंजर नै नाहर कवर । —लिखमीदास गाडण

उ०–४ सुरतांण हुऔ भय भीत संपेख,गुड़िया खांन सू पड़ियौ गाढ़ । 'अमर' तणा भुज हूंता अंबर, जांणै वजर पड़ी जमदाढ़ । —केसौदास गाडण

वजरतुंड—देखो 'वज्रतुंड' (रू. भे.) (डिं. को.)

वजरदंड—देखो 'वज्रदंड' (रू. भे.)

वजरदंत—देखो 'वज्रदंत' (रू. भे.) (अ. मा.)

वजरदंती—देखो 'वज्रदंती' (रू. भे.)

वजरधर—देखो 'वज्रधर' (रू. भे.)

वजरनख—देखो 'वज्रनख' (रू. भे.)

वजरपांण, **वजरपांणि**, **वजरपांणी**—देखो 'वज्रपांणि' (रू. भे.)

वजरबांह—देखो 'वज्रबाहु' (रू. भे.)

वजरमूठी—देखो 'वज्रमुस्टि' (रू. भे.)

वजरवारक-वि. [सं. वज्रवारक] वज्रप्रहार को रोकने वाला ।

सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

वजरसार—देखो 'वज्रसार' (रू. भे)

वजरांगी—देखो 'वजरंग' (रू. भे.)

वजराक, **वजराग**—देखो 'बजराक' (रू. भे.)

वजरायुध—देखो 'वज्रायुध' (रू. भे.)

वजरासण, **वजरासन**—देखो 'वज्रासन' (रू. भे.)

वजरेसुरी, **वजरेस्वरी**—देखो 'वज्रेस्वरी' (रू. भे.)

वजरोळी—देखो 'वज्रोळी' (रू. भे.)

वजवजणौ, **वजवजबौ**–क्रि. स. [स. भज्] १ प्रभाव या प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रसिद्धि पाना ।

उ०—बारां बुध न ऊपजी, सोळां कळा न होय । बीसा न **वजवजियौ** भळपण वाट न जोय । —अज्ञात

२ वैभव प्राप्त करना ।

वजवजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रभाव, प्रतिष्ठा, व प्रसिद्धि प्राप्त किया हुआ । २ वैभव प्राप्त किया हुआ ।

(स्त्री. वजवजियोड़ी)

वजह-सं. स्त्री. [अ. वज्ह] १ कारण, हेतु, निमित्त ।

२ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन ।

३ कोई असाधारण परिस्थिति ।

४ मुखाकृति, चेहरा ।

५ प्रकृति, तत्त्व ।

रू. भे.—बजह, वजै ।

वजाई—देखो 'विजाई' (रू. भे.)

वजाड़णौ, **वजाड़बौ**—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)

उ०—पाट हुतौ तिण प्रवाड़ा पाटपत, वजाड़ै वार संसार वाजा। आप री राख रज सुरग वसियौ "अना," राज रिध भोगवे महाराजा।
—द. दा.

वजाड़णहार, हारौ (हारी), **वजाड़णियौ**—वि०।
वजाड़िप्रोड़ौ वजाड़ियोड़ौ, वजाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
वजाड़ीजणौ, वजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वजाड़ियोड़ौ—देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वजाड़ियोड़ी)

वजाणौ, वजाबौ—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)
उ०—जिण 'अवरंग' तणा दळ जीता, आतम सकति **वजाई** असमर। मारि बहादरसाह मनाया, जोरै मुलक लिया जोरावर।
—सू. प्र.

वजाणहार, हारौ (हारी), **वजाणियौ**—वि०।
वजायोडौ—भू० का० कृ०।
वजाईजणौ, वजाईजबौ—कर्म वा०।

वजायोड़ौ—देखो 'बजायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. वजायोड़ी)

वजावणौ, वजावबौ—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ बेण वांस वांसळी **वजावण**। धिनी मोहन राधिका धवण।
—ह. नां. मा.
उ०—२ 'विजावत' उप्रमते असि वाग। खत्री गुर 'क्रन्न' **वजावत** खाग।
—सू. प्र.

वजावणहार, हारौ (हारी), **वजावणियौ**—वि०।
वजाविप्रोड़ौ, वजावियोड़ौ, वजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वजावीजणौ, वजावीजबौ—कर्म वा०।

वजावियोड़ौ—देखो 'बजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वजावियोड़ी)

वजित्र, वजित्रि—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)
उ०—१ चतुरंग वणाय गजराज चढ़ि, **वजित्र** अनेक वजाविया।
—सू. प्र.
उ०—२ डोहळै मीर धड़ा गज डंबर, **वजित्रि** नर हैमर कर वेस। आऊगति हिंदुआं ऊपरि, दस संहसि नवसहसउ देस।
—दूदौ

वजियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वजियोड़ी)

वजीफादार—वि. [फा. वजीफ:दार] जिसको वजीफा या सहायता मिलती हो, सहायता-वृत्ति पाने वाला।

वजीफौ—सं. पु. [फा. वजीफ:] १ वह आर्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्वानों, छात्रों, दीनों व बिगड़े हुए रईसों आदि को भरण पोषण के निमित्त दी जाती है।
२ निवृत्ति, वेतन, पेंशन।
३ छात्र वृत्ति।
४ नियम या श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला मंत्र-पाठ, जप।

वजीर—सं. पु. [फा.] १ बादशाह का प्रधान, शासक का मुख्य सलाहकार, अमात्य, मन्त्री, प्रधान, सचिव, दीवान।
उ०—१ हुकम **वजीरां** हुवा, करौ लसकर अधिकारां। तर कलमां दफतरां, हुवै अन्नेक हजारां।
—सू. प्र.
उ०—२ पंच वखत निम्माज ताज कुलहराह सोहइ। खोजा खांन **वजीर** मलिक उंबरे मन मोहइ।
—व. स.
२ राजदूत।
३ रावणा-राजपूतों का एक नाम। (मा. म.)
४ शतरंज नामक खेल का एक मोहरा जो बादशाह से छोटा व अन्य मोहरों से बड़ा होता है।
रू. भे.—उजीर, बजीर।

वजीरात—सं. स्त्री. [फा.] १ वजीर का पद, वजीर का कार्य।
उ०—थांहरी दियांनत सूं हूं म्हारै राज री **वजीरात** तोनूं सौंपी।
—नी. प्र.
२ वजीर का कार्यालय, कचहरी।

वजीरी—सं. स्त्री. [फा.] १ वजीर का कार्य व पद।
२ उक्त पद की नौकरी।
३ बलूचिस्तान में पाई जाने वाली घोड़ों की एक जाति।

वजुआत—सं. स्त्री. [फा.] १ वजह का बहुवचनात्मक रूप।
२ कारणों का समूह।
रू. भे.—वजूआत।

वजू—सं. पु. [अ. वुजू] नमाज पढ़ने से पहले हाथ-पांव धोने की क्रिया। (मुसलमान)

वजूआत—देखो 'वजुआत' (रू. भे.)

वजूद—सं. पु. [अ.] १ शरीर, देह।
उ०—अखाहे सिजदां कुनंद, **वजूद** रा चे कार। दादू नूर दादनी, आसिकां दीदार।
—दादूवांणी
२ सत्ता, अस्तित्व।
उ०—दादू इस्क अलह की जाति है, इस्क अलह का अंग। इस्क अल्लाह **वजूद** है, इस्क अलह का रंग।
—दादूवांणी

वजै—सं. स्त्री.—१ तरह, भांति, प्रकार।
उ०—सरद की चंदणी चंद्रवंसी विमलू का उजास। रितराज के

दिवस तहां सूरज वंसी कंवलूं का प्रकास, इस वजै खटरितु की क्रीला जल्ले गुलांबू की छाक। —सू. प्र.

२ देखो 'वजह' (रू. भे.)

वजोग—देखो 'विजोग' (रू. भे.)

उ०-हर घर ध्यांन कमध हेमाळै, परिहां चाढ़ेवा प्रभत। किसन वजोग चारणां कारण, गळियौ जुजठळ राव गत। —बां. दा.

२ देखो 'वियोग' (रू. भे.)

वजौ—देखो 'बजौ' (रू. भे.)

वज्जणौ, वज्जबौ १ देखो 'बजणौ बजबौ (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ। उआं लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ। —ढो. मा.

उ०—२ हाथी तुरिय तुसार सार अरिअण उतारइ, वज्जइ ढोल नीसांण आंण जगि सघळे जांणइ। —व. स.

उ०—३ रिणमलौत रिण वज्जियौ, सुंदर 'हरी' सुजाव। सहसां ले पड़ियौ समर, घट सौ लग्गां घाव। —रा. रू.

उ०—४ यां 'मधकर' हर वज्जिया, आद विखै अण रेह। ज्यांउलटै मेघा रवि, सिद्ध पळट्टै देह। —रा. रू.

उ०—५ गुंजारव भेरियां, घनक टंका-रव वज्जै। —गु. रू. बं.

उ०—६ वागी खग्गां बे घड़ा, ज्यां वज्जै घड़ियाळ। पाव न मंडै राव पिड़, गौ छंडै रिण ताळ। —रा. रू.

वज्जणहार, हारौ (हारी), वज्जणियौ—वि०।

वज्जिओड़ौ वज्जियोड़ौ, वज्ज्योड़ौ—भू. का. कृ.।

वज्जीजणौ, वज्जीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

वज्जपांणी वि. [सं. वज्रपाणि] १ वह जिसके हाथ में वज्र हो।

सं. पु.—इन्द्र।

वज्जमओ—देखो 'वज्रमय' [रू. भे.]

उ०—रोपीउ पवणिहिं कलपतरौ, सुमिणइ कुंति दूयारि। पवणह नंदणु वज्जमओ, भीमु सु भूयण मझारि। —पं. पं. च.

वज्जया—देखो 'विजया' [रू. भे.]

उ०—देवी दंडणी देव वेरी उदंडा, देवी वज्जया जया दैतां विखंडा। —देवि.

वज्जर—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—१ करां खग तोल खड़ै कयकांण, पड़ै मनु वज्जर सीस, पठांण। —पे. रू.

उ०—२ वड्डा वड्डा गोळा वज्जर। धूआं-धार उठंदा घोमर। —गु. रू. बं.

वज्जरणौ, वज्जरबौ—क्रि. स. [सं. वज्जरं] १ कहना, बोलना।

२ क्रोध में बड़बड़ाना।

उ०—काळ रूप जम रूप, ग्रहे गयणागक उंछळ। वासंग बळ वज्जरै, भुज्ज धूणी वीजूजळ। —गु. रू. ब.

वज्जरणहार हारौ (हारी), वज्जरणियौ—वि०।

वज्जरिओड़ौ, वज्जरियोड़ौ, वज्जरचौड़ौ—भू० का० कृ०।

वज्जरीजणौ, वज्जरीजबौ—कर्म वा०।

बजरणौ, बजरबौ, बज्जरणौ, बज्जरबौ—रू० भे०।

वज्जरियोड़ौ—भू. का. कृ. १ कहा हुआ, बोला हुआ। २ क्रोध में बड़बड़ाया हुआ।

(स्त्री. वज्जरियोड़ी)

वज्जियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वज्जियोड़ी)

वज्रंगी—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

उ०—वज्रंगी किवाड़ भू मेवाड़ भुजां डंडां वंका, वरूथां विभाड़ बीरभद्र सौ बेछाड़। मातंगां पछाड़ सेर ओछाड़ अहाड़ मेर, पिछगै पहाड़ मेर सांवळौ पहाड़। —हुकमीचंद खिड़ियौ

वज्रंद—वि. [सं. वज्र+इंद्र] १ जबरदस्त, जोरदार, प्रचंड भयंकर।

उ०—अरांबां तणौ असबाब अपणावियौ, भट किलकता तणौ भागौ। आड रोपी वज्रंद भीक वागौ असंभ, 'लीक' टोप पटक पंथ लागौ। —कविराजा बांकीदास

२ महान।

वज्र—वि. [सं.] १ बहुत अधिक कठोर, कड़ा, सख्त।

२ अत्यन्त मजबूत, दृढ़।

३ तीव्र, उग्र।

सं. पु.—१ इन्द्र का प्रधान शस्त्र जो दधीचि ऋषि की हड्डियों से बना हुआ माना जाता है। (पौराणिक)

पर्या—अतोट, अतोल, असनी, इंदरसस्तर, इंद्रावध, कुलिस, खटकूणी खयपत्रगिर, खळसाळ, गेत्रभेदी, जोतसुभ्र, दंभोळ दधीचास्थी, पवि, पुरहूतजय, भिदुर।

२ विष्णु का सुदर्शन चक्र। (नां. मा.)

३ कोई भी विनाशक शस्त्र, हथियार।

उ०—मुग्दर, लगुड, गदा दंड भिंडमाल गांजीव विस्फोटक वज्र तरुवारि। —ब. स.

४ बरछा, भाला।

५ शंकर का शस्त्र, त्रिशूल।

६ तलवार।

७ विद्युत, बिजली।

८ फौलाद नामक लोहा, स्टील।

उ०—चढ़ै खळ हीक तुरी उर चोट। कळाहळ भूस हुवै व्रज कोट।
—सू. प्र.

९ हीरा। (अ. मा.)

उ०—आभूखण वजू तरण अथाहै। माथातरणा हार गळि माहै।
—सू. प्र.

१०—हीरा काटने का औजार।

११—एक खंभा जिसके मध्य भाग होते हैं। (वास्तु-विद्या)

१२ चन्द्रमा की एक बनावट।

१३ व्यूह रचना विशेष।

१४ विश्वामित्र का एक पुत्र, वज्रनाभ।

१५ श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का पुत्र जिसकी माता का नाम रोचना था।

१६ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से नंवां योग। (फलित ज्योतिष)

१७ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से पन्द्रवें योग का नाम। (फलित ज्योतिष)

१८ कोकिलाक्ष नामक वृक्ष।

१९ सफेद कुश

२०—अकलबीर नामक पौधा।

२१ थूहड़, सेंहुड़।

२२ वज्रपुष्प।

२३ त्रिकोण। *

रू. भे.—बजड़, बजर, बजरि, बजरी, बज्ज, बज्जर, बज्र, वजड़, वजर, वज्जर, वज्रउ, वज्रह।

वज्रअंगी—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

उ०—एम गंधवाह रै प्राक्रमीस **वज्रअंगी**। जेठो बीस वांहरै अनम्मी इंद्रजीत —सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

वज्रउ—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—स्फुलिंग सहस्र वरसतउ ज्वाला ना सहस्र, भरतउ, देदीप्यमांन, दक्षरण हस्ति वज्रउ लइ चउरासी, सहस्र अति स्वच्छ निरमल वस्त्र।
—व. स.

वज्रकंकट—सं. पु. [सं. वज्रकङ्कट] १ हनुमान। (अ. मा., नां. मा.)

२ हीरकणी।

३ कोकिलाक्ष वृक्ष।

४ थूहड़-सेहुड़।

वज्रकंकटसालमली—सं. पु. [सं. वज्रकंटशाल्मली] अठ्ठाईस नरकों में से एक नरक। (पौराणिक)

वज्रक—सं. पु. [सं.] १ हीरा।

२ वज्रक्षार।

३ सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक जो सूर्य से तेइसवां नक्षत्र है। (फलित ज्योतिष)

४ चर्मरोग के लिये एक तेल विशेष। (वैद्यक)

वज्रकपाट—सं. पु. [सं.] दरवाजे पर लगे वे कपाट जो वज्र के समान दृढ़ और मजबूत हो।

रू. भे.—बजड़कपाट, बजड़किंवाड़, बजरकपाट, बजरकिंवाड़।

वजूकीट—सं. पु. [सं.] पत्थर में छेद कर देने वाला कीड़ा। बनरोहू।

वजूकूट—सं. पु. [सं.] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

वजूकेतु—स. पु. [सं.] नरक का राजा, एक राक्षस। (पौराणिक)

वजूक्षार—सं. पु. [सं] वैद्यक का एक रसायन योग, जो उदर रोगों में काम आता है।

वजूगोप—सं. पु. [सं.] वीरबहूटी नामक कीड़ा, इंद्रगोप।

वजूघट—सं. पु. [सं] लंका का एक राक्षस।

उ०—कर सूळ विकटह सुभट कौचट, रांम थट भट झपट रौंझट। पछक **वजूघट** कुघट ऊपट, रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट।
—सू. प्र.

वजूतुंड—सं. पु. [सं.] १ गरणेश।

२ गरुड़।

३ गिद्ध।

४ मच्छर।

५ थूहड़-सेंहुड़।

रू. भे.—बजरतुंड, बज्रतुंड, वजरतुंड।

वजूदंड—सं. पु. [सं.] इंद्र द्वारा अर्जुन को प्रदान किया जाने वाला एक अस्त्र।

रू. भे.—वजरदंड।

वजूदंत—सं. पु. [सं.] १ वन्य-सूकर, सूअर।

२ चूहा।

रू. भे.—बजरदंत, वजरदंत,

वजूदंती—सं. स्त्री. [सं.] १ औषधि विशेष।

२ उक्त औषधि का पौधा।

रू. भे.—वजरदंती

वजूधर—वि. [सं.] वज्र या हथियार धारण करने वाला।

सं. पु.—१ इन्द्र।

२ महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध (बौद्ध)।

रू. भे.—बज्रधर, वजरधर।

वजूधार–सं. पु. [सं. वज्रधारिन्] इंद्र।

वजूनख–सं. पु. [सं.] नृसिंग।

रू. भे.—वजरनख।

वजूनाभ, वजूनाभ्र–सं. पु. [सं. वज्रनाभ] १ श्री कृष्ण का चक्र।

२ एक सूर्य वंशी राजा।

उ०—बाळ सुतन नृप सिथळ उबंबर। **वजूनाभ्र** जिण सुतण भुपंबर। —सू. प्र.

३ वज्रपुर नगरी का एक राक्षस राजा जो निकुंभ का भाई था। यह कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न के हाथों से मारा गया था।

४ एक दुष्ट राक्षस जो ब्रह्मदेव के हाथ में स्थित कमल के प्रहार से मारा गया।

५ स्कंद का एक सैनिक।

६ प्रद्युम्न का एक पुत्र।

७ विश्वामित्र का पुत्र।

रू. भे.—बज्रनाभ।

वजूपांणि–सं. पु. [सं. वज्रपाणिन्] १ इन्द्र।

२ ब्राह्मण।

३ एक देव-योनि। (बौद्ध)

रू. भे.—वजरपांण, वजरपांणि, वजरपांणी।

वजूपात–सं. पु. [सं.] १ विद्युत या बिजली का आकाश से गिरने का आघात।

उ०—तठै करि खीज वहै तरवार, अकाळिय बीज तणी उणिहार। गजां करि खंडळ तंडळ गात, पवि जिम कीध हुवा **वजूपात**। —सू. प्र.

२ उक्त प्रकार से बिजली के गिरने से होने वाला क्षय, क्षति।

३ कोई भयंकर आपत्ति, दुःख, मुसीबत।

४ शस्त्र-प्रहार।

उ०—गुडै गज्ज प्राहाड़, टूंक ढहिया कूंभाथळ। **वजूपात** करमाळ, गुडै तूटें कंबूं-सळ। —गु. रू बं.

५ दुर्घटना।

रू. भे.—बज्रपात,

वजूपोस–सं. पु.—कवचधारी योद्धा।

उ०—जोगावत 'ऊदल' ऊझल जोस। पछट्टत खाग हणै **वजूपोस**। बिहारियदास अभंग अजागि। लड़े सुत 'वीरम' अंब्रर लागि। —सू. प्र.

वजूप्रांणघातक–सं. पु.—एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

वजूबाहु–सं. पु. [सं.] १ इन्द्र।

२ रुद्र।

३ अग्नि।

४ राम की सेना का एक वानर जिसका कुम्भकरण ने भक्षण किया।

रू. भे.—वजरबाहु।

वजूभाखी–वि. [सं. वज्र+भाषिन्] अपने वचनों पर कायम रहने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ।

वजूभास–वि.—वज्र के समान शरीर वाला, दृढ़ और मजबूत।

रू. भे.—बज्रभास।

वजूमय–वि. [सं.] १ मजबूत और दृढ़, वज्र के समान।

उ०—तरै देवी जी हुकम कियो—एक थारी पाकी ईंट, एक मांहरै नांवै काची ईंट, इण भांत रो गढ़ कराए, **वजूमई** दुरंग अविचळ हुसी। —नैणसी

२ प्रबल, शक्तिशाली।

वि.—हीरे का, हीरे सम्बन्धी।

रू. भे.—वज्जमग्री।

वजूमाग–सं. पु. [सं. वज्र-मार्ग] आकाश, अम्बर, व्योम। (डि. को.)

वजूमुरिठ–स. स्त्री. [सं. वज्रमुष्ठि] १ इन्द्र।

२ तीर चलाते समय की एक विशेष हस्त मुद्रा।

वि.—वज्र के समान मुष्टिका वाला।

रू. भे.—वजरमूंठी।

वजूविसन–सं. पु. [स. विष्णु+वज्र] सुदर्शन चक्र। (अ. मा.)

वजूसरीर–वि. [स. वज्र-शरीर] जिसका शरीर वज्र के समान दृढ़ व मजबूत हो, शक्तिशाली, ताकतवर।

उ०—गयणह वांणी आपीयउ आगइ **वजूसरीरु**। बाघइ पंनइ चंद जिम पंडव गुण गंभीर। —पं. पं. च.

वजूसार–वि. [सं.] अत्यन्त कठोर।

सं. पु.—हीरा।

रू. भे.—वजरसार।

वजूसोह–सं. पु.—वज्र की चोट या प्रहार।

वजांग—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

वजांगी–सं. स्त्री. [स.] १ चोट पर लगाई जाने वाली हड़जोड़ नाम की लता।

२ देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

वजाग, वजागिन—देखो 'वजराक' (रू. भे.)

उ०—१ 'अखा'हर वाहत खाग उनंग। जुड़ै जिम भारथ दारुण जंग। वळोवळ लूंबत रोद्र **वजाग**। भिड़ै सुजि सूर हुवै दुय भाग। —सू. प्र.

उ०—२ धड़ लाकड़ हुवै बळै हंस धुआ, भाळ हुवौ रणताळ भलू। बळणौ खाग अभाग वैरियां, बळती आग वज्राग 'बलू।

—केसोदास गाडण.

वज्रागरा-सं. स्त्री.—पृथ्वी, धरती, धरा। (डिं. नां. मा.)

वज्रायुध वज्रायुधी-सं. पु. [सं. वज्रआयुध] इन्द्र। (नां. मां.)

रू. भे.—वजरायुध।

वज्रासन-सं. पु. [सं.]योग के चौरासी आसनों में से एक।

२ गया में बोधितरु के नीचे की वह शिला जिस पर बैठ कर बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त की थी।

रू. भे.—वजरासण, वजरासन।

वज्री-सं. पु. [सं. वज्रिन्] इन्द्र। (अ. मा.)

रू. भे.—वज्री

वज्रेसरी, वज्रेसुरी, वज्रेस्वरी-सं. स्त्री. [सं. वज्र-ईश्वरी] १ देवी, दुर्गा। (बौद्ध)

२ शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहिनिका भी कहते हैं।

रू. भे.—वजरेसुरी, वजरेस्वरी।

वज्रोळी-सं. स्त्री. [सं.] १ अंगुलियों द्वारा बनाई जाने वाली एक मुद्रा विशेष। (हठयोग)

२ नाथ सम्प्रदाय की वज्रायनी शाखा की योग साधन की एक मुद्रा जिसमें स्त्री का संयोग होना आवश्यक है।

वि. वि.—इस सम्बन्ध में ऐसी किंवदंती है कि साधक साधना करते समय एक साथ कई स्त्रियों का संयोग कर सकता है, लिंगेन्द्रिय द्वारा स्त्री के रज का शोषण कर सकता है, वीर्य का स्तंभन कर सकता है, इत्यादि इस प्रकार की कई चेष्टाएं कर सकता है।

रू. भे.—बजरोळी, वजरोली।

वझणौ, वझबौ-क्रि.अ. [सं. भज्=आश्रय लेना]१ फैलना,विस्तार होना।

उ०-पाखती अरटां री झींगड़ि चींगरड़ि पड़ि नै रही छै। डुहारौ खटाकौ लागिनै रहिऔ। पाखती नीळ वझि नै रही छै।

—रा. सा. सं.

२ देखो 'बझणौ, बझबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बजणौ, वजबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

वझियोड़ौ—१ फैला हुआ, विस्तार प्राप्त।

२ देखो 'वझियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वझियोड़ी)

वझौ—देखो 'बजौ' (रू. भे.)

वट—सं. पु. [सं. वटः] १ बरगद का पेड़, बड़।

उ०—१ ता मधि राजन एक वट, छांह रहतु ठहराय। सदा विराजत सारती, आंन-दिसा नह जाय। —गजउद्धार

रू. भे.—बट, बट्ट, बड़, बड, वड़, वड़ि, वड, वड्ड।

अल्पा.-बड़लौ, बड़ल्यौ, वड़लौ।

[सं. वर्त्मक, प्रा. वट्ट] अभिमान, गर्व, घमंड।

उ०—१ काय आडां पग आंण, काय कर धात कटारियां। छोगाळा छळ छाड, रांणा रावत वट तणौ। —नैणसी

उ०—२ रौदां भांज उजळां रूंकां, वैर वाळ उजवाळ वट। पग मलंग निरलंग अंग पाड़ै, भुज निरलंग निरलंग भ्रकुट। —द. दा

मुहा.—१ वट काढ़णौ=अभिमान को समाप्त करना, मन की निकालना, २ वट निकलणौ=घमंड समाप्त होना, मन की मुराद पूरी होना। ३ वट भरीजणौ=गर्व करना।

३ मर्यादा, गौरव, परम्परा, कायदा।

उ०—१ आकुली कुळ वट लोपिय, गोपिय रमइ रंगि। फांस केसि चांणूर ए, चूरए जे बहु भंगि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ ज्याग रा गीत सुण प्रीत न करी जिकै, प्रीत हद चारणां हूंत पाळी। वीत रै वाहरू हुवौ जिण वार में, चीत रज रीत वट तणी चाली। —गिरवरदांन सांदू

४ गुण, धर्म।

उ०—कुळवट छोडै कांण, छतै पांण गढ़ छोडियौ। रजवट रौ वट रांण, छांटोही न रहियौ 'चिमन'। —लक्ष्मीदांन बारहठ

५ मौड़, ऐंठन, बल।

उ०—आ बात कैय राजाजी गुमांन सूं मूंछ्यां रै वट देवण लागा —फुलवाड़ी

मुहा.—हाथां रौ वट काढ़णौ=किसी को पीट कर अपने मन की निकालना।

६ शृंखला, सांकल, लगर।

७ एक वर्ग विशेष।

उ०—मांमगर कउतिगीया कुहटीया नट वट गांछा छीपा परियटा सुइ नाई तेली मोची सतूआरा बंधारा चीतारा...... —व. स.

वि. [सं. वट=शून्य] १ भयानक, भयावह।

उ०—वट वाटै घाट औघटे रण वन। जळ थळ महियळ अजर जरै। चेलक चाड आप रग्यां रण, करणी सदा सहाय करै। —दोलौ

२ देखो 'वाट' (रू. भे.)

रू. भे.—बट, वट्ट।

वटकणौ, वटकबौ,—देखो 'वटकणौ, बटकबौ' (रू. भे.)

वटकियोड़ौ—देखो 'बटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वटकियोड़ी)

वटकी—देखो 'बाटकी' (रू. भे.)

वटकौ—१ देखो 'बटकौ' (रू. भे.)
उ०—ईतरे उमरां उपर कागला पांच आय बैठा। तद रजपूत लाकड़ी री **वटकौ** वायौ। जणी सूं पांच कागला मुवा।
—पंच मार री वात

२ देखो 'बाटकौ' (रू. भे.)

वटक्कणौ, वटक्कबौ—देखो 'बटकणौ, बटकबौ' (रू. भे.)

वटक्कियोड़ौ—देखो 'बटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बटक्कियोड़ी)

वटक्कौ—देखो 'बटकौ' (रू. भे.)
उ०—वीर झटक्के वज्जिया, वे रणधीर दुबाह। अंग **वटक्के** उडंता, सेन अटक्के साह। —रा. रू.

वटचड़—सं. पु. [अनु.] १ बेचैनी में धीरे धीरे बोलने या बड़बड़ाने की क्रिया या भाव।
२ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

वटणियौ—देखो 'बटणौ' (अल्पा., रू. भे.)

वटणौ, वटबौ—१ देखो 'बटणौ, बटबौ' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां भीतर सू कहायौ—कुंवर ने ले आवणी छै तो आप पधारौ नहीं तौ कोई आवै नहीं। जै साहूकार नै आदमी आयां री खबर हुई तौ कहीं परदेस मेल देसी। पछै क्यों ही **वटसी** नहीं।
—पलकदरियाव री बात

उ०—२ डाकण भखै न वाघ अडोळै, दीधां वटै न कोडी दांम। अस जो उरो लियौ औ "चूंडै", गज दीधौ काय दीधौ गांम।
—ओपौ आढौ

२ देखो 'वांटणौ वांटबौ' (रू. भे.)
उ०—गाय, भैंस और ऊंटां रा घाव भरै **वट** नीम दे. धबसौ पांन उबाळ धोयां, नव्य त्वचा सट सीम दे —दसदेव

वटणहार, हारौ (हारी), वटणियौ—वि०।
वटिओड़ौ, वटियोड़ौ, वटयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वटीजणौ, वटीजबौ—कर्म वा०।

वटत—देखो 'बटत' (रू. भे.)

वटतर—सं. पु. [देशज] वेर, दुश्मनी।
उ०—तरै राजा वूझियौ तौ कठा सूं आया, असौ कांसूं बटतर छै।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढ़ेल री वात

वटपत्री—सं. स्त्री. [सं. वटपत्रं] १ रामतुलसी।
[सं. वटपत्रा] २ चमेली।
३ एक वनस्पती विशेष [जड़ी] जिसके रस से पत्थर फूट जाता है। पत्थर फोड़।

वटपाड़ौ—देखो 'बटपाड़ौ' (रू. भे.)
उ०—१ जम दळ **वटपाड़ौ** वह जासी, थासी नहीं विगाड़ो थारै। जगपत निस दिन नांम जपंतां, संता सारा काज सुधारै।
—र. ज. प्र.

उ०—२ **वटपाड़ां** धरपाड़ां वाळी आभ जड़ां नांखें ऊपाड़। कोय न गांज सके किनियांणी, भीभळियाळ तुहाळा भाड़ —बां. दा.

वटभरणौ—सं. पु.—धनुषाकार एक काष्ट का बना छोटा यंत्र जिसके मध्य के छेद में लकड़ी का डंडा लगा रहता है, जिसकी सहायता से मोटी रस्सियों या जेवड़ी के वट दिया जाता है।
रू. भे.—बटभरणौ।

वटर—सं. पु. [सं. वट+अरन् वटरः] १ चोर, डाकू।
२ बटेर पक्षी।
३ बिस्तर, बिछोना, चटाई,
४ पगड़ी।
५ मथाणी।
६ मुर्गा।
७ एक सुगंध युक्त घास।

वटळणौ, वटळबौ—देखो 'विटळणौ, विटळबौ' (रू. भे.)
वटळणहार, हारौ (हारी), वटळणियौ—वि०।
वटळिओड़ौ, वटळियोड़ौ, वटळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वटळीजणौ वटळीजबौ—भाव वा०।

वटसावत्री-पूनम—सं. स्त्री.—जेष्ठ मास की पूर्णिमा। उस दिन कबीर जयंती भी मनाई जाती है।

वटसावत्री-व्रत वटसावित्री व्रत—सं. पु.—जेष्ठ शुक्ला त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला व्रत जिसमें तीन दिन निराहार रहा जाता है और वट की पूजा होती है।
वि. वि.—मतान्तर से जेष्ठ वदी अमावस्या को भी यह व्रत किया जाता है।

वटाउ—देखो 'वटाऊ' (रू. भे.)
उ०—जु सोरंभजी रै घाट थी गंगादिक आंणनै देवरै पाटण सोमइयै ऊपर चाढै, सु सातमी वार गंगोदक कावड़ भरी नै आंणतौ हुतो सु किणहेक सहर **वटाउ** थकौ किण हेक रे चौंतरै उतरियौ हुतौ। — नैणसी

वटाउड़ौ—देखो 'बटाऊ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मारग चालतौ एक **वटाउड़ौ** बोल ऊठ्यौ-तेरे मन कुछ और है करता के कछु और। —रातवासौ

वटाऊ — खरीददार।

उ०—किसतूरी झंखी मई, केसर घटियौ ग्राघ। सह वस्तू सुहंगी थई, गयौ वटाऊ बाघ। —ग्रासौ बारठ

२ देखो 'बटाऊ' (रू. भे)

उ०—रोतां ग्रग रोवरावीया, वाट वटाऊ लोक। जातां जीव वहै नहीं, वीछड़वा नौ सोक। —स्रीपाल रास

वटाऊड़ौ—देखो 'बटाऊ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—सेवै नर सदीना मुरधर, सदा नीरोगी ही रवै। बूठै जांरी बातड़ी नै, वगत वटाऊड़ा कवे। —दस देव

वटाड़णौ, वटाड़बौ—देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

वटाड़ियोड़ौ —देखो 'वटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वटाड़ियोड़ी)

वटाणौ, वटाबौ—देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

वटाणहार, हारौ (हारी), **वटाणियौ**—वि०।
वटायोड़ौ,—भू० का० कृ०।
वटाईजणौ वटाईजबौ—कर्म वा०।

वटायोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वटायोड़ी)

वटारक—सं. स्त्री. [सं.] डोरी, रस्सी।

रू. भे.—बटारक।

वटाळ—देखो 'वटाळौ' (मह., रू. भे.)

(स्त्री. वटाळी)

वटाळणौ, वटाळबौ - देखो 'विटाळणौ, विटाळबौ' (रू. भे.)

वटाळणहार, हारौ (हारी), **वटाळणियौ**—वि०।
वटाळिग्रोड़ौ, वटाळियोड़ौ, वटाळचोड़ौ—भू० का० कृ०।
वटाळीजणौ, वटाळीजबौ—कर्म वा०।

वटाळौ—वि. [स्त्री. वटाळी] दुष्ट, नीच, धूर्त।

वटाव—देखो 'वाट' (रू. भे.)

उ०—तेजसी तासली लेने डेरै ग्रायो। रावजी बुरौ मांनियौ। बास छूटौ, वटाव मांहे लोग कहै छै-थाळी तेजसी ली-सु इण भांत लीधी। —राव रिड़मल री बात

वटावणौ, वटावबौ - देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

उ०—सब कोइ प्रीत वटावते, सब कोइ करतै भाव। सम्मन वै कुण रूंखड़ा, ज्यां न झकोळै वाव। —सम्मन

वटावणहार, हारौ (हारी), **वटावणियौ**—वि०।
वटाविग्रोड़ौ, वटावियोड़ौ, वटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वटावीजणौ, वटावीजबौ—कर्म वा०।

वटावियोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वटावियोड़ी)

वटावू—देखो 'बटाऊ (रू. भे.)

उ०—१ जमला जोवन फूल है, फूलत ही कुम्हलाय। जांण वटावू पंथ सिर, बैठे भी उठ जाय। —जमाल

उ०—२ मस्तक लीलौ लूंग, धरण री धूड़ ठरावै। खेजड़ खेबा खाय, मरु में छांन छवावै। वगत वटावां हेत, खेत किरसांणां तांई, वन में पसवा प्रेम, हमीरां ग्रांम हुथाई। —दसदेव

वटियोड़ौ—देखो 'बटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वटियोड़ी)

वटियौ—१ देखो 'बाटियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाटौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

३ देखो वटभरणौ।

वटी—सं. पु. [सं.] १ रस्सी, डोरी।

२ गोली या टिकिया।

३ उपवन, बगीचा, उद्यान।

रू. भे.—बटी।

वटु, वटुक—स. पु. [सं. वटुकः] १ बालक, लड़का।

२ ब्रह्मचारी, माणवक।

३ धर्म शास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी, छात्र।

४ एक भैरव।

वि —मूर्ख मूढ़।

रू. भे.—बटुक, वडुया, वटुय।

वटूकणौ वटूकबौ—देखो 'बटूकणौ, बटूकबौ' (रू. भे.)

उ०—कंथा करक न छोडियै, हिरण किसा घी खाय। ग्राक वटूकै, पवन भखै, घोड़ां ग्रागळ जाय। —ग्रज्ञात

वटूकणहार, हारौ (हारी), **वटूकणियौ**—वि०।
वटूकिग्रोड़ौ, वटूकियोड़ौ, वटूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वटूकीजणौ, वटूकीजबौ—कर्म वा०।

वटूकरण—सं. पु.—उपनय संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार। (डिं. को.)

रू. भे.—बटूकरण।

वटूकियोड़ौ—देखो 'बटूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वटूकियोड़ी)

वटेवाहु—देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)

उ०—इकि डोकरि तिणि दीसि पांच पूत्र इकि वहूय सउं। कुंती नइ ग्रावासि वटेवाहू वीसमियां। —पं. पं. च.

वटंत—देखो 'वटाऊ' (मह., रू. भे.)

वटौ—देखो 'बट्टौ' (रू. भे.)

वट्ट—१ देखो 'वाट' (रू. भे.)

उ०—अति आंणंद ऊमाहियउ, वहइज पूगळ **वट्ट**। त्रीजइ पुहरि उलांघियउ, आडवळा रउ घट्ट। —ढो. मा.

ऊ०—२ कूच नगारा वज्जिया, गिर गज्जिया गहीर। समंद उलट्टै जिम सजळ, **वट्टै** लगै वहीर। —सू. प्र.

२ देखो 'वट' (रू. भे.)

उ०—कट थट्ट गयौ खग झट्ट कहै, रण थट्ट घणा भट पास रहै। घर हट्ट घड़ं, पिड़ खंड विहंड पमंग पड़ं। —पा. प्र.

वट्टि—देखो 'वाट' (रू. भे.)

उ०—हरि हथीआर हलावतां, मुकल्यह रुंधी **वट्टि**। ते मुभ-लीधइं आविजै, नाकि घणा जिणि घट्टि। —मा. कां. प्र.

वट्टौ—सं.पु. [स. वट प्रा. वट्टुल] १ गोला, गोली, कोई गोल मोगरा।

उ०—आंगे खबर फिरै ओहट्टां। वाटां दूत थया नट वट्टा, अति सोचै पतसाह अछांनै, खिण सज्या खिण तारतखांनै। —रा. रू.

२ आर्यावर्त का एक जनपद, एक देश।

उ०—विदेह संडिल्ल मलय बत्स मत्स वरण दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भंग वट्टा कुणाल लाट केकयमंडलारद्ध इत्यरद्ध पंच विंशति जनपदा आरया। —व. स.

४ देखो 'बट्टौ' (रू. भे.)

वठ-पुं.—१ अनुसार, अनुरूप।

उ०—रसा रूठौ रूठौ अलख इक रूठौ मत रहे। हमारी देखे ना विरुद निज लेखे **वठ** वहै। —ऊ. का.

२ देखो 'वठै' (रू. भे.)

वठल—वृक्ष विशेष।

उ०—कल्प द्रुम नइ केतकी, कठल **वठल** कंकुस्ट। कमरख अनइ कालुंबरी, केसर सुर संतुस्ट। —मा. कां. प्र.

वठांऊं-क्रि. वि.—वहां से, उधर से।

वठी—देखो 'वठै' (रू. भे.)

रू. भे.—बठी, बठीनै।

वठे, वठै-क्रि. वि.—वहाँ, उधर।

उ०—अबै ईणा बांमण रा बेटा नै कनात मांहै लीधौ। कथा वंचाणी मांडी। **वठै** बांमण रूपवंत असतरी देखे नै मन डीग्यौ थकौ कथा वांचवां लागौ। —गांव रा धणी री बात

रू. भे.—बठेई बठे, बठैई, वटै, वठ।

वड-सं. पु.—१ शिर ढापने या घूंघट निकालने के लिये स्त्रियों द्वारा खींचा जाने वाला ओढ़नी का पल्ला, छोर।

उ०—धरती मांहे नै थारै दरबार मांहै इण सरीखौ दातार कोई नहीं। तिणसूं लोवड़ी रौ **वड** माथा ऊपर खैंच्यौ। —जगदेव पंवार री वात

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.) (ह. नां. मा.) (उ. र.)

उ०—१ हरि मन हरिखि हकारिय नारिय स्यउं निजजाति। बइसिइं **वड** लहुडाईय, भाई जिम ते पांति। —जयसेखर सूरि

उ०—२ **वड** जगड विसतारै, निधि मेघा तुझौ नभ।—रांमरासौ

उ०—३ दीसंत दुयंग पटदेवगत्ति। दीवांण वडौ **वड** देसपत्ति। —गु. रू. बं.

३ देखो 'वट' (रू. भे.) (उ. र.)

वडउ—देखो 'बडौ' (रू. भे.) (उ० र०)

उ०—तुं ही रावत गोरल्ल, तुं हीज दल मांही वडउ, तुं ही रावत गोरल्ल, तुं हीज मोरउ भाईड़उ। —प. च. चौ.

वडकंवार—१ देखो 'बडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—तरै किणही कह्यो-काइक वडकंवार बेटी वरस १५ तथा १६ रा बैर हुवै तिकां जो च्यार पोहर छाती सूं लगाय सोवै तो बाहुड़ै। बीजूं तो जीवै नहीं। —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे.)

वडकारण-वि. [देशज] १ बड़ाई करने वाला, प्रसंसा करने वाला।

उ०—केहर वाघ आद **वडकारण**, चक्रवत पगे एक सो चारण। पति ची प्रीत धारियां पूरी, हेमराज अबदार हजूरी। —रा. रू.

२ स्तुति व यशोगान करने वाला।

वडकुंवार—१ देखो 'बडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—जेसळमेर सोढां रे विच में कोटेचा रजपूत रहै। कोटेचां रै **वडकुंवार** दीकरी सु पड़िहारै रो मोहिल परणीजणनूं आयो। —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे.)

वडकौ—देखो 'बडकौ' (रू. भे.)

उ०—कांमेती खावै धन कूड़ा, पड़िया दुख भुगतै रजपूत। यौं **वडकी** थां **वडकां** आंगो, बटका हुय झड़िया अंगबूत। —ऊमरदांन लाळस

(स्त्री. वडकी)

वडगात-वि.—१ वीर, शक्तिशाली, बहादुर।

उ०-१ प्रथम 'अभैपति' पूछियौ, भूप करणौ भ्रात। अब झगड़ौ कीजै किसूं, वखतसिंघ **वडगात**। —सू. प्र.

उ०—२ वांणी अवरळ सुध वचरण, गुरण सागर **वडगात**। ढोलौ पुंगळ आवतां, पंथ मळै कविपात। —ढो. मा.

रू. भे.—बडगात।

वडगूजर–सं. पु.—एक क्षत्रिय वंश या इस वंश का व्यक्ति।

उ०—भजि जात प्रजा मय वात भंगेळां, पाटरण तूंग्रर कंपपुरे। **वडगूजर** जाट अहीर तजे वळ, दाट लगा पुर राट दुरै। —रा. रू.

रू. भे.–बडगूजर।

वडगोतण—देखो 'बडगोतरण' (रू. भे.)

वडगोळौ–सं. पु. [सं. वट+राज. गोळौ] वट वृक्ष का फल।

वडचड–वि. **१** दुराग्रही, जिद्दी, हठी।

२ विरुद्ध आचरण करने वाला।

वडचीत– वि.—१ दानवीर, उदार चित्त, महान।

उ०—**१** खाग तियाग, रखरण खूमांरणा, सगराहां हिंदू सुप्रवीत। सिवयंसी न मिळै 'अड़सी' सुत, चीतोड़ौ खांमंद **वडचीत**।
—जादुरांम आढ़ौ

उ०—२ लखधीर **वडौ** लख लूट **वरणी** वपि लाज। **वडचीत** वरीसरण वाज गरीब निवाज॥ —ल. पिं.

२ वीर, साहसी।

उ०—त्हारौ सुजस अमर 'करणावत' वासुर जग बहु हुवै वितीत। वाधारियौ पाघड़ौ विढ़तै, चैराड़ियौ नहीं **वडचीत**। —द. दा.

रू. भे.—बडचीत, बढ़चीत।

वडजांनी–सं. पु.—बारात में वर के दादा, पिता, चाचा आदि मुखिया पुरुष।

उ०—बेली सहि बिरदैत, जेठी 'गोवरधन' जिसा, "करनाजळ" अरणबर कन्है, **वडजांनी** वांनैत। —वचनिका

वडणौ, वडबौ—देखो 'बढ़णौ, बढ़बौ' (रू. भे.)

उ०—कमळ बीय ससिकळा, कळा **वडती** जग वंदै। कळाहीरण खळ हुवै, जेम निस पूनिम चंदै। —गु. रू. बं.

वडणहार, हारौ (हारी), वडणियौ—वि०।

वडिओड़ौ, वडियोड़ौ, वड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वडीजणौ, वडीजबौ—भाव वा०

वडत्यागी–वि.—दान वीर, त्यागमूर्ति।

उ०—आंबेर उदैपुर मुरधर आबु, पूगौ जस गुजरात परै। ताहरौ सुजस सदा **वडत्यागी**, "भगवंत" बुंदी साख भरै। —ओपौ आढ़ौ

वडनाळ–सं. स्त्री. तोप।

उ०—भुरजां-भुरजां भिरड़गढ़, **वडनाळ** गुड़क्की, सोर धुंआ रव घोर सज, घर अंवर ढक्की, आई बीज अचीत की, असमांन कड़क्की, भूप तुरांटां भेळिया, जुध कारण जक्की। —वी. मा.

रू. भे.—बडनाळ, बडीनाळ, वडीनाळ।

वडपण, वडपणौ, वडप्पण, वडप्पणौ—देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)
(उ० र०)

उ०—१ हाथी हींडत देख, कूकर लव-लव कर मरै। **वडपण** तणै विवेक, क्रोध न आंणै किसनिया। —अज्ञात

उ०—२ रांणै प्रताप राव-मालदै सत्रजीतां चाळां सटै। पण बांध विखौ भांजो यौ पिसण, विखा **वडप्पण** नह घटै। —रा. रू.

वडफर, वडफरि, वडप्फर–वि. [सं. वड्+फलक] रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—कहर हर निज थरहर ऊपर कायरां, अतर सर सोक जरहर अखत। जो वर 'तेज' हर इसौ मौसर जठै, होऐ वडफर मौहर खूद हत। —कवि करणीदांन

स. पु. [सं. वड्+फलक] ढाल।

उ०—**१** अति खीजै सुरण सुरण असुर, जरण जरण छीजै प्रांण। अबदलखां चढ़ियौ अकस, कस **वडफर** केवांण। —रा. रू.

उ०–२ गज बाधा वहै उपगार खत्री गुर, वदन वहै खग आंकविया। (तै), ऊबारिया **वडफरां** ओटां, कोटां पावरण हार किया।
—महाराजा गजसिंह रौ गीत

उ०—३ सरिखां सूं वलभद्र लोह साहियै, **वडफरि** उछजतै विरुधि। भलाभली सति तोईज भंजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि। —वेलि

उ०—४ **वडप्फर** टूक ऊऐ गजवाज, तड़फफड़ मच्छ जिहीं सिरताज। मरद्द जरद्द पड़ै अनमंध, कहक्कह वीरह नाचि कमंध।
—वचनिका

रू. भे.—बडफर।

वडबडणौ, वडबडबौ—देखो 'बड़बड़णौ, बड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वरियांम विढ़ोबा **वडबडंत**। जमदूत जोध सिलहां जडंत।
—गु. रू. बं.

वडबडियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वडबडियोड़ी)

वडबेहड़ौ—देखो 'बडबेड़ौ' (रू. भे.)

उ०—कोई सिरदार रै सत्रुओं नै मार भगाया सो सिरदार री फतै हुई। पाछा आया तरै **वडबेहड़ां** सूं वधाया, वधावा ठावा २ आदमी तिकां रा नांम सूं गावीजरण लागा। —वी. स. टी.

वडबोर—देखो 'बडबोर' (रू. भे.)

उ०—कठै वजै **वडबोर**, कठै भाड़ी मोटोड़ी। कठै बोरटी नांव, वरणी देवा री छोड़ी। —दसदोख

वडबोरड़ी, वडबोरी—देखो 'वडबोर' (१) (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेत में **वडबोरड़ियां** आयोड़ी, गहर डम्मर व्हियोड़ी, जांणै वड़ला ऊभा। —रातवासौ

वडभाग—१ देखो 'वडभाग' (रू. भे.)

२ देखो 'वडभागी' (रू. भे.)

उ०—दोनूं देरावर तणी, भटियांणी **वडभाग**। ओपै वर वरदळ अभौ, सोभै अचळ सुहाग। —रा. रू.

वडभागी—देखो 'वडभागी' (रू. भे.)

उ०—ए वडभागण राधका, कवण तपस्या कीन। तीन लोक तारण तरण, सो थारै आधीन। —अज्ञात

(स्त्री. वडभागण, वडभागणी, वडभागिण)

वडमंन—वि.—१ उदार चित्त, दयालु।

उ०—अति उतिम दीजै उकति, सरसति हू सुप्रसंन। गाम्रां 'लखपत्ती' गुणै, महि पत्ती **वडमंन**। —ल. पिं.

२ विशाल हृदय, महान, श्रेष्ठ,।

वडम—सं. पु.—१ यश, कीर्ति, बड़ाई, विरुद, महत्व, विशेषता।

उ०—१ कनक जड़ाव दयण 'करणावत,' तै कीधो कुण करै तम। आठ पोहर मोटा आर्थाणां, वाखांणां थारी **वडम**।

—किसनौ आढ़ौ

उ०—२ फब खट वंन चहुंफेर, घेर रावतां सुभटां। करण जेर केवियां, वाय समसेर विकटां। मारू जैसलमेर, बळै आंबेर बखांणू। नांगंद्र बीकानेर हेर दीठौ हिंद वाणूं। रैणवां दियण कुंमेर रिध **वडम** सुमेरज विसतरै। धज, वंध 'सेर' रियां घणी, अेक बेर फेर अवतरै। —पहाड़खां आढ़ौ

२ पूर्वज, बुजुर्ग।

३ बड़प्पन, महानता, सज्जनता।

उ०—१ हिव चालौ प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सफाई। चंद्रदीप मांहे वैठा किम, आवै **वडम** वडाई। —वि. कु.

उ०—२ लछवर तास वारणा लीजै, **वडम तणा** कीजै वाखांण। —ह. नां मा.

उ०—३ प्रसण वखांण करै जोधांपत, **वडम** तुहाळी साख वळै। ग्रे जो जिकै वहै ऊवेड़ा, खेड़ां तले राखिया खळै।

—महाराजा गजसिंह रौ गीत

४ देखो 'वडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ **वडम** पराक्रम वीर वर, विहर निडर बळ बांह। सर "प्रताप" केई सुखी, छत्र धर तो कर छांह। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ **वडम** सुदातार हर भगत ताळा वीळंद, संरसरी ऊवार गुण अरत सरसै। वरसतां सदन कर इंद जिम 'वगतसी,' दरस तां इता साभाव दरसै। —महाराजा वगतसिंह रौ गीत

रू. भे.—वडम, वडिम, वडिमि वडमि, वडिम, वडिम, वडिमि, वडीम, वाडम, वाडव, वाडिम।

वडमन, वडमनौ, वडमन्न—देखो 'वडमंन' (रू. भे.)

उ—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढा नीर पवन्न। तिण रित नेह न छांडियइ, हे वालम वडमन्न। —ढो. मा.

उ०—२ विधौ-विध धूहड़ दाख वचन्न। मेले नह चाल रांणी वडमन्न। —गो. रू.

वडमपण, वडमपणौ—सं. पु.—१ वृद्धापन, बुजुर्गियत।

२ देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)

उ०—बिया जैचंद छत वडमपण वेगतां, नेगतां छत्रपति भोक लागै। तीसरो थयो ईसांण न्रप ताहरो, अभंग "पीक" "जैतसी" कीध आगै। —द. दा.

वडमि—देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—गढ़पति गहगीर हद विहद हेल हमीर। धरपति लखधीर वडमि घण बावन वीर। —ल. पिं.

वडराग—सं स्त्री.—देखो 'बड़ौ-राग' (रू. भे.)

उ०—धकै सिसोद मेवास चढ़िया घटा, गोळिया गाज वडराग गवता। —दलजी मोतीसर

वडरूप—देखो 'विडरूप' (रू. भे.)

वडलाज—वि. स्त्री.—जिसको बहुत लाज आती हो, जो, लज्जाशील हो, लजालु।

उ०—रूप नरूकी रांणियां, वडभागणि **वडलाज**। पाधारै आया प्रथम, महिल जिके महाराज। —रा. रू.

वडवडाळौ—वि. [अनु.] बड़े से बड़ा, सब से बड़ा।

उ०—अवै अछाया दैतराय रोद्र काया रूप ए। अन्नत कराळा **वडवडाळा** भड भुजाळा भूपए। —गु. रू. ब.

वडवांनळ—देखो 'बड़वानळ' (रू. भे.)

उ०—आगलि रही करि अरदास, चाहूआंण राउ नीलविलास। जउ सायर **वडवांनळ** समइ, तउ कान्हउ तुरकांनह नमइ।

—कां. दे. प्र.

वडवार—देखो 'बडवार' (रू. भे.)

उ०—लंगर बंध दुलावत 'लाला', सुपह दात फरसी भळ गार। सर डूंचण दुसहां नवसहसां, वड करसण भोका **वडवार**।

—लालसिंह राठोड़ बड़ली रौ गीत

वडवामुख—सं. पु. [सं. बडवा+मुखः] पाताल। (डि. को.)

रू. भे.—बडवामुख ।

वडवालु, वडवालौ–सं. पु.—वट वृक्ष का फल ।

उ०—**वडवालु** नइ वुरिण वली, वांस वरणसरी वेलि । वाकुंभा वाधइ भला, वकुल व्रद्धतरु वेलि । —मा. कां. प्र.

वड़व्वड़–क्रि. वि.—बढ़ बढ कर ।

उ०—वडव्वड वीजळ धार वहंत । लडत्थड संकर सीस लहंत । —गु. रू. बं.

वडस—देखो 'विडस' (रू. भे.)

वडहठ—युद्ध, लड़ाई, जंग ।

उ०—वीरम पहली वीरवर इतरै वह आया । साहै खग वळ सांखलै, वडहठ रचाया । —वी. मा.

रू. भे.—बडहठ ।

वडहत, वडहत्थ, वडहथ–वि. [सं. वड्हस्त] १ आजानबाहु ।

उ०—१ विदा किया भाटी खगवाहा, बेली साथै कमंध दुबाहा । मारण दुयण करन महवेचै, **वडहथ** 'नाथौ' अमर धवेचै । —रा. रू.

उ०—२ अदल आंण वरती इळा, जसराज जमाया । **वडहथ** पूगळ जिणवखत, भाटी मन भाया । —द. दा.

रू. भे.—बडहत, बडहत्थ, बडहथ, बडहाथ ।

वडहर–वि. [सं. वड्+हर ?] उच्च कुल का ।

सं. पु.—पाखर से मिलता जुलता पत्तों वाला एक वृक्ष विशेष ।

रू. भे.—बडहर, बडहार, बढ़हर ।

वडहार—देखो 'वडहर' (रू. भे.)

वडां– वि. वृद्ध (सामान)

वडांबडी–वि. स्त्री.—१ महान, वड़ी, समर्थ ।

उ०—**वडांवडी** किनियांणी बांका.' पोख पूजगां पाळै । देस विदेस मांय डाढाळी, राज दरबार रुखाळै । —कविराजा बांकीदास

२ देखो 'बडांबडी' (रू. भे.)

वडाई—देखो 'बडाई' (रू. भे.)

उ०—१ वडा **वडाई** ना करै, वडा न बोलै बोल । हीरा मुख से ना कहै, लाख हमारा मोल । —अज्ञात

उ०—२ कहै प्रोहित 'केहरी' अम्हां घरवट अधिकाई । सांम सुछळ सत्र वाढ़ि, वडा जुध तरै **वडाई** । —सू. प्र.

उ०—३ जिकौ पंवारां रौ आदमी आवै तिण आगै पंवारां री घणी **वडाई** करै । —नैणसी

वडाऊ—देखो 'बडकौ' ।

वडाक–सं. पु.—भेड़िया ।

उ० ताहरां जांन नू मारग में जावतां **वडाकां री सवण** हुवौ । ताहरां सवणियां कही—राज ! सवण भला न हुवा छै, पाछा फिरौ —नैणसी

रू. भे.—वड्डाक, वड्डाख ।

वडापण, वडापणौ—देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)

वडार—देखो 'बडहार' (रू. भे.)

वडारण–सं. स्त्री. [सं. अवदरिका, भाटकारिणी=भडारण] दासी सेविका, बांदी, दरोगा जाति की स्त्री ।

उ०—१ हाडा राव 'रतन' री हवेली कनै डेरौ हुतौ । रांणी राठौड़ वीकावतजी सत कियौ । **वडारण** पातर खवास ऐ ११ बळी —बां. दा. ख्यात

उ०—२ तांहरां **वडारण** पूजा करण नूं आई । ताहरां मूळ वडारण नूं पकड़ आपरी दोवड़ मांहै पोट बांध अर उवैरा कपड़ा पैहरनै कोट ऊपर चढ़ियौ । —नैणसी

उ०—३ दांत रा चुडा विना **वडारण** राखण री आखड़ी । —रा. सा. सं.

रू. भे.—बड़ारण, बडारण, वड़ारण ।

वडाळ–सं. पु.—१ रथ । (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—'वरसिंघ देव' राजा **वडाळ** । बूंदेल चडै चम्मर बंबाळ । —गु. रू. बं.

रू. भे.—वडाळ ।

वडाळौ—देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ उत्तम नांम वंस उजवाळौ, वेद-धरम चौ बंधव **वडाळौ** । —सू प्र.

उ०—२ हाडा गौड़ जादव्व झाला हठाळा । वळै वंस छत्रीस साथै **वडाळा** । —वचनिका

उ०—३ सोळहसै संमंत हूऔ जोगण पुर चाळै । सम्मै एकासियै मास काति **वडाळै** । —गु. रू. बं.

उ०—४ 'करण' तणै परणंतै क्यावर, कर मुकता कवि वियै कल्यांण । वडहर कहियौ पंथ **वडाळौ**, जांगळवा कहियौ जेसांण । —द. दा.

(स्त्री. वडाळी)

वडाळौराग—देखो 'बडौराग' (रू. भे.)

उ०—रूड़ै **वडाळाराग**, हूर अछर सिव हरखिया । —गो. रू.

वडावड, वडावडी—१ देखो 'बढाबढी' (रू. भे.)

उ०—राव मालदे रै कूंपौ जी सिरै चौकी हुवा । बीकानेर डीडवांना सरीखा तखत पटै हुवा । तौही तद रिणमलां रै घरै इसडी **वडावड** हुती । —राव मालदे री बात

२ देखो 'बड़ाबड़' (रू. भे.)

वडिव, वडिम, वडिमि–स. पु.—देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—धन **वडिम** गोवरधन धारण । चख यक सूर वियो चख चंद ।
—ह. नां. मा.

उ०—२ रथि हाथ रूक सम थर रेखगि, महिपति पग तिस एक एक मण । प्रम कमधज जिण **वडिम** पूजतौ, ग्राप वडिम सुजि ग्राचरण । —जैमल राठौड़ रौ गीत

उ०—३ धारण सलज चखां चंद धारै । ग्राच उठाया **वडिम** उच्चारै । विच पुर घसे विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चंद राजा । —सू. प्र.

उ०—४ उदह बेळां **वडिम** महारस दांनेत, जौति जळ ग्रचळ सीतळ प्रबळ जांण । कोक जळचर निजर दमंगचर पाळ कब, मीन सागर गिरंद चंद खूमांण । —महांणा जगतसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—५ भिड़ै पतसाह सैं हाथि जिण भांजिया, **वडिम** विधि जास दरगह विराजै, इसै विरदै लियै ग्रौ जगति ऊपरां 'सूर' सुत तपै खत्रवाट साजै । —केसोदास गाडण.

वडियाससुर–सं. पु. (स्त्री. वडियासासु) श्वसुर का बड़ा भाई ।

वडिस–सं. पु [सं. बडिशं, बलिशं.] मछली पकड़ने का कांटा, वंशी । (डि. को.)

रू. भे. बडिस ।

वडी - देखो 'बडी' (रू. भे.)

वडीतीज–सं. स्त्री.—भाद्रव मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया ।

वि. वि.—देखो 'तीज' ।

रू. भे.—बडीतीज ।

वडीदेव–सं. स्त्री.—१ श्री करणी देवी ।

उ०—संग वीतज ग्राया उरा सार, किये बूंब करनला कर पुकार । दरसण दिये ताछिन **वडीदेव**, साजौ किये करह्यौ फळी सेव ।
—रामदांन लाळस

२ भगवती, दुर्गा।

वडीनाळ—देखो 'वडनाळ' (रू.भे.)

उ०—**वडीनाळ** दस विखम, धोम सतपंच मुहर घर । तीन राड़ि विच जीत, ग्रायौ रेवा नदि ऊतर । —सू. प्र.

वडीम—देखो 'वडम' (रू. भे.)

वडीमां–सं. स्त्री.—पिता की भोजाई, ताई ।

वडीराग– सं. स्त्री.—देखो 'बडीराग' ।

वडु—१ देखो 'बडौ' (रू. भे.) (उ० र०)

उ०—लंक वडु घूंटी लहु, पींडी चड़तई मांसि । घूंटण पणि घाठा जिस्या, कांई न कीजइ पासि । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'वट' (रू. भे.) (उ० रा०)

वडुग्रार—देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ वड पह **वडुग्रार** भुजि कुळिभार धर सिणगार तपै लखधीर । विलसण गजवाज कुंग्रर सकाज वसधा राज करै वर बीर । —ल. पिं.

उ०—२ साख सिणगार **वडुग्रार** सांमौ, नवै खंड जास जसवास नांमौ । —ल. पिं.

वडूजा —देखो 'विडूजा' (रू. भे.)

वडूजावाह—देखो 'विडूवावाह' (रू. भे.)

वडेर–सं. पु. [सं. वड्+रा. प्र. ग्रेर] १ बड़ा घर ।

२ 'कूटे' एवं माटी से बनी हुई ग्रनाज डालने की कोठी (गोड़वाड़)

रू. भे.—बडेर ।

वडेरउ, वडेरौ—देखो 'बडेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वडउं **वडेरउं** भाइगु जांणि,स्रावक नइ घरि चडइ प्रमांणि । करम ना जोइ एवडा फेर, धरम ग्राडा छइं काठिग्रा तेर ।
—वम्तिग

उ०—२ ताहरां गोगैजी कही—थे **वडेरा** छौ, छोटा तोई सुसरा छौ, पण बडा छौ, थे बैसौ, हूं ले ग्राईस । —नैणसी

उ०—३ ताहरां **वडेरा** लोक एकठा हूवा । दाबड्यां तेडीयां । वात पूछी । —देवजी बगड़ावतां री वात

उ०—४ हेमौ कहै–कूंभा ! थारै ग्रजेस पिंड लोह नहीं लागो छै, बाळक छै । तूं घाव कर । हूं **वडेरौ** छूं, घाव क्यूं करूं ? कूंभौ कहै–हेमाजी ! वरसै थे वडा पण पर्गै म्हे वडा । थां मांहरौ थांन पलै में लियौ, थे माहरा चाकर, तै में वडा, थे घाव करौ ।
—नैणसी

२ देखो 'बडौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—नांन्हइ किसनइ नाथियौ, वासिग नाग **वडेरौ** रे । नास करइ रवि नांन्हड़ौ, ग्रंधकार बहुतेरौ रे । —पं. च चौ.

वडै—समान, बराबर ।

वडैरौ—देखो 'बडेरौ' (रू. भे.)

उ०—सु 'जैतौ' 'कूंपौ' तौ बडी वेढ़ कांम ग्राया था, नै तद **वडेरां** ठाकुरां मैं रावजी कन्है जेसौ भैरवदास हुतौ, तरै जेसैजी रावजी सुं कह्यौ । —राव मालदे री बात

वडोड़ौ—देखो 'बडौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ ग्रा तौ उण डाढाळा रा मन में सुहावै नहीं वे वांरा भाला

तौ ऊगिड़-सूर **वडोड़ौ** ग्राप री डाढ़ां प्रळा रूपी दिखाय भांज न्हांकसी । —वी. स. टी.

उ०—२ चाकरड़ी, रे मारू थांरै **वडोड़ै** वीरैजी ने मेल, राय भरिये रे भाद्रवै रे, म्हारा गाढ़ा म्हारू घर बसौ । —लो. गी.

वडौ—देखो 'बडौ' (रू. भे.)

उ०—१ कळिहरा 'करनोत' **वडा** काळ'नळ, 'भेडक' 'नाथू' निवड भडं । लखथाट करै दहवाट 'लखंमरा', घरा घाए वर त्रिघि घिघडं । —गु. रू. बं.

उ०—२ व्रज राखियौ विगोयौ वासव, **वडो** ग्रवर कुरा विसन वड । —ह. नां. मा.

उ०—३ छाजू, सिवौ वडा रजपूत, नै कनै **वडो** वित, तिरा घर २० तथा २५ रजपूतां रा वसाया । वडी वसती हुई । —नैरासी

उ०—४ पुर लूटियौ वडी सिघ पाई । संभिया सुज मारिया सिपाई । —रा. रू.

उ०—५ ते वडी चिडी नही जे वडउ फडहउ, ते वडी नइ नही जे **वडउ** खड हड । —व. स.

(स्त्री. वडी)

वडौ-दूहौ—सं पु.—दोहे नामक छंद का एक भेद जिसके प्रथम व चौथे चरण में ११-११ तथा दूसरे व तीसरे चरण मे १३-१३ मात्राएं होती है । —बां. दा.

उ०—खित्रियां वडाराग माहै **वडादूहा** गवाड़ौ । —वचनिका

वडौ-बाप—देखो 'बडौ-बाप' (रू. भे.)

वडौ-माव—सं. पु.—हाथी का एक रोग (मोतीजरा) जिसके कारण उसका शरीर सूक जाता है और वह खाना पीना बंद कर देता है । वि. वि.—इस दशा में अगर हाथी की पूंछ चीरी जाय तो उसमें खून के स्थान पर पानी निकलता है ।

वडौ-राग—देखो 'बडौ-राग' (रू. भे.)

उ०—१ खित्रियां रा **वडा** राग माहै वडा दूहा गवाड़ौ । —वचनिका

उ०—२ नौबति भींगड़ी पड़ी नै रही छै । भेर नफेर, करनाळ भभक नै रह्यौ छै । सुरणायां री क्रहक पडि नै रही छै । **वडौ-राग** सिंधवौ वागि नै रहीग्रौ छै । —रा. सा. सं.

वडौ-राज—सं. पु. [सं. वड् राज्य] राजा का राज्य, बड़ा राज्य ।

उ०—मोटी भायप होय, पिंडां हुवै पूजता, वडाराज रो गांव लोग सोह वूझता । नह को लोपै लीह, क घरे घचोलणा, एता दे किरतार फेर नहीं बोलणा । —भोमिया बंचन

वड़ौ रावळौ—सं. पु.—गांव के ठाकुर का घर ।

रू. भे.—बडौ रावळौ ।

वडौ-लाट—देखो 'बडौ-लाट' (रू. भे.)

वडौ-सांणोर—सं. पु.—एक प्रकार का डिंगल-गीत जिसके प्रथम व तृतीय विषम चरणों में २०-२० मात्राऐं तथा द्वितीय व चतुर्थ सम चरणों १८-१८ मात्राऐं होती है, साथ ही प्रथम द्वाले के प्रथम पद में २३ मात्राऐं होती हैं । (र. रू.)

वि. वि.—इसका दूसरा नाम 'शुद्ध-सांणोर' भी है ।

वड्डवड्डी—सं. स्त्री.—सर्व शक्तिमान देवि, दुर्गा ।

उ०—देवी चंद्रघंटा महम्माय, चंडी । देवी वीहळा ग्रन्नळा वड्डवड्डी —देवि.

वड्डाक, वड्डाख—देखो 'वडाक' (रू. भे.)

उ०—वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकरिण महासद्द । मिळ समळ ग्रीध ग्रामंख भक्ख, जंबक्क रींछ वड्डाक जक्ख । —गु. रू. बं.

उ०—२ जरख रींछ वड्डाख, सिवा सत लस्स मलक्का । साकरिण डायरिण सकति, काळ भैरव काळक्का । —गु. रू. बं.

वड्डौ—सं. पु.—१ देखो 'बढौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बडौ' (रू. भे.)

रू. भे.—वढौ ।

वड्ढणौ, वड्ढबौ—देखो 'बढणौ, बढ़बौ' (रू. भे.)

वड्ढियोड़ौ—देखो 'बढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वड्ढियोड़ी)

वढ—सं. पु. [सं. वर्ध] १ घाव ।

उ०—वढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, वंभियौ 'सुरजन' देख **वढ** । गढ चित्तौड़ गरब तण गरजै, गाडौ गौ रणथंभ गढ । —पत्ता चूंडावत रौ गीत

२ कटाव ।

उ०—तासणी री बाड़ी रौ नीपनौ इकतीस ताड़ी रौ, नाळेर सौ मोटौ, खोपरा बढ रौ, गरी रै दळ रौ, हाथ सूं छूट पड़ै तौ काच री सीसी ज्यूं किरचा-किरचा हुय जावै । —रा. सा. सं.

३ काट-छांट ।

४ देखो 'बढ' (रू. भे.)

५ देखो 'वढौ' (रू. भे)

रू. भे.—वढौ वड्ढ ।

वढणी—सं. स्त्री.—१ ग्रामातिसार से होने वाला पेट का दर्द, ऐंठन ।

२ काटना क्रिया का भाव ।

वढणौ, वढबौ—१ देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वढ पड़ूं विहर थाटां विळंद, भुजलग भट सेलां भचड़ि ।

सुग वसूं कहै 'हटमल' सुतन, "अमूनि" जिम खाटै अचड़ि ।
—सू. प्र.

उ०—२ रजपूतां रै स्त्रियां रौ तौ धरम पती रै लारै काठ चढ जांणौ नें रजपूतां रौ धरम स्यांम धरम सारू तथा निजकुळ सारू तरवारां री धारां सूं वढ जावणौ । —वी. स. टी.

२ देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. रू.)

वढणहार, हारौ (हारी), वढणियौ—वि० ।

वढिग्रोड़ौ, वढियोड़ौ, वढ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वढीजणौ, वढीजबौ - भाव वा० ।

वढवार—देखो 'बढवार' (रू. भे.)

वढाणौ, वढावौ—देखो 'बढाणौ, बढाबौ' (रू. भे.)

उ०—पण म्हारौ मन तौ श्रो इज कैवै कै खुदा रा इण रांमतिया री अब कांई जरूरत है, इण तौ अणगिण मिनखां रा गळा वढाय दिया वढावतौ इ जावैला । —फुलवाड़ी

वढाणहार, हारौ (हारी), वढाणियौ—वि० ।

वढायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वढाईजणौ, वढाईजबौ—कर्म वा० ।

वढायोड़ौ—देखो 'बढायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वढायोड़ी)

वढाळ, वढाळी, वढाली-सं. स्त्री.—तलवार ।

उ०—१ वढाळ सेल के वणाय, कीध ओपमै कळा । जिके कुमार वीज जांणि, चंचळा अपच्चळा । —सू. प्र.

उ०-२ वीजली परि झलकती, तीन्ही धाराळी वढाली अणी आळी —व. स.

वढावणौ, वढावबौ—देखो 'बढाणौ, बढाबौ' (रू. भे.)

उ०—२ इण तौ अण गिण मिनखां रा गळा वढाय दिया, वढावतौ इज जावैला । —फुलवाड़ी

वढावणहार, हारौ (हारी), वढावणियौ—वि० ।

वढाविग्रोड़ौ, वढावियोड़ौ, वढाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वढावीजणौ, वढावीजबौ—कर्म वा० ।

वढावियोड़ौ—देखो 'बढायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वढावियोड़ी)

वढियोड़ौ—१ देखो 'बढियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधियोड़ौ'

(स्त्री. वढियोड़ी)

वढूलियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—धूळि जु ऊडी छै। त्यै खेह माहै। सूरज किसौ देखिजै छै। जैसे वढूळिया (वधूलिया) माहै प्रात दीसै । —वेलि टी.

वड्ढ—१ देखो 'वढ' (रू. भे.)

उ०—संग्राम सदग्ग वाहंत सनद्ध । वपै पात [illegible] । —[illegible]

२ देखो 'बढ' (रू. भे.)

३ देखो 'वढौ' (मह., रू. भे.)

वढ्ढणौ, वड्डबौ—१ देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

उ०—आरण कियौ उछाह, वीरातन वढ्ढियौ । माफ [illegible], चमू सफ्र चढ्ढियौ । —किसोरदांन बारहठ

२ देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

वढ्ढियोड़ौ—१ देखो 'बढियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वढ्ढियोड़ी)

वढौ-सं. पु.—१ रुपये पैसे के अभाव में [illegible] दिया जाने वाला सामान, पशु आदि ।

२ बंधन के कारण शरीर में रस्सी का होने वाला निशान ।

३ देखो 'वढ' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'बढ' (मह., रू. भे.)

वण-सर्व.—१ उस, उन ।

उ०—१ आप वण छोड़ कर जोड़ि कीधी अरज । [illegible] पधारौ इंद्र बाई । —मे. म.

उ०—२ सेल भुजां बळ सेलणौ, [illegible] मन [illegible] । [illegible] दीठां वणौ, वण फुळ रौ वारौल । —पा. प्र.

२ देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—वण दीवक मंदिर [illegible], वण पुत्र परिवार । [illegible] कंत वण, घ्रत वण अळण अहार । —[illegible]

३ देखो 'वणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ चंदण नीरू वण चरै, वण नीरू [illegible] । [illegible] करहलौ, जित बरजूं तित जाय । —[illegible]

उ०—२ सेत कंवळा । बाजरी मोट मूंग वण घणी । —नैणसी

३ देखो 'अण' (रू. भे.)

४ देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—जिण दाहे वण हर घरइ, नदी [illegible] नीर । [illegible] ठाकुर किम चलइ, घण किम बांधइ धीर । —[illegible]

रू. भे.—बण, बिण, वण, विण ।

अल्पा.,—वणि, वणी, वणी ।

वणक—देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—कै पूजै स्रीकंत नूं, कै पूजै अरिहंत । 'बांका' मन विश्वास कर, ए सह वणक असंत । —बां. दा.

वणकर—देखो 'बुनकर' (रू. भे.)

उ०—सोइ नइ सराणी आ, कंसारा तिहां कोडि । **वणकर** नइ बालंद परिण, घसता हाथा जोडि। —मा. कां. प्र.

वणकल—देखो 'वरिणक' (अल्पा., रू. भे.)

वणगत सं. स्त्री—१ मेल जोल ।

२ कपड़े बुनने का ढंग या प्रकार, बुनाई ।

रू. भे.—वाणक ।

वणचरि—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—सूयर देखी मेल्हिउं बांणु, अरजुन सिउं कुरिण करइ संधांणु । तिरिण खिरिण मेल्हिउं **वणचरि** बांरणु, ऊडिउं गयणि हुउं अप्रमांणु । —पं. पं. च.

वणज—१ देखो 'विरणज' (रू. भे.)

२ देखो 'वांरिणज्य' (रू. भे.)

वणजणौ, वणजबौ—देखो 'विरणजरणौ, विरणजबौ' (रू. भे.)

वणजणहार, हारौ (हारी), **वणजणियौ**—वि० ।

वणजिग्रोड़ौ, वणजियोड़ौ, वणज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणजीजणौ, वणजीजबौ—कर्म वा० ।

वणजार—१ देखो 'बिरणजार' (रू. भे.)

२ देखो 'बिरणजारौ' (मह., रू. भे.)

वणजारा—देखो 'बिरणजारा' (रू. भे.)

वणजारौ—देखो 'बिरणजारौ' (रू. भे.)

वरणजियोड़ौ—देखो 'विरणजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरणजियोड़ी)

वणठण—देखो 'बरणठरण' (रू. भे.)

वणठणौ, वणठबौ—देखो 'बिरणठरणौ, बिरणट्ठबौ' (रू. भे.)

वणठणहार, हारौ (हारी), **वणठणियौ**—वि० ।

वणठिग्रोड़ौ, वणठियोड़ौ, वणठचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणठीजणौ, वणठीजबौ—भाव वा० ।

वणठियोड़ौ—देखो 'बिरणट्ठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरणठियोड़ी)

वणणौ, वणबौ—देखो 'बरणरणौ, बरणबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ करै तिकांरा कांठला, कंठ न्रपत कुंवरांह । वधनहियां ज्यां सिर **वणै**, कीरत जेरण करांह। —बां. दा.

उ०—२ सखी अमीणो साहिबौ, मदन मनोहर गात । महाकाळ मूरत **वणै**, करण गयंदा घात । —बां. दा.

उ०—३ भांरण उदय इव विधि वयरण, कुरण तिरण रुकरण करेह । त्युंही हुकम 'पातल' तणौ, **वणबौ** त्युंही वरोह । —जैतदांन बारहट

उ०—४ आभा रूप जोम ऊफांरिणक । **वणियौ** अनंक दूसरै वांरिणक । —सू. प्र.

उ०—५ साजिहांनजी रै बेटा ४ हुवा । द्वारासाह, साहसूजौ, औरंगजेब, मुरादबगस । सू इणां रै आपस में **वणै** नहीं । —द. दा.

उ०—६ औरंगसा अजमेर सूं, कूच करंतां वार । **वणी** अनायत खांन सूं, कांने सुणी पुकार । —रा. रू.

उ०—७ अग नयणी अगपति-मुखि, अगमद तिळक निलाट । अगरिपु-कटि सुंदर **वणी**, मारू अइहइ घाट । —ढो. मा.

उ०—८ कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळ, सोसनिया नारंगिया सपेता जांगे तिजारा की वाड़ी फूली छै । ऊपर उरणहीज **वणता** हथियार बांधजै छै । —रा. सा. सं.

वणणहार, हारौ (हारी), **वणणियौ**—वि० ।

वणिग्रोड़ौ, वणियोड़ौ, वण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणीजणौ,वणीजबौ—भाव वा० ।

वणता—देखो 'वनिता' (रू. भे.)

वणराइं, वणराई, वणराज, वणराय,—१ देखो 'वनराज' (रू. भे.)

उ०—१ तिसिह आविउ वसंत, हुउ सीत तणउ अंत । दक्षिण दिसि तणउ, सीतल वाउ वाइं विहसइं **वणराइं** । —रा. सा. सं.

उ०—२ थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ । गुणै सुगंधी मारवी, महकी सहु **वणराइ** । —ढो. मा.

उ०—३ **वणराय** भार अढ़ार संख्या, विस्णु वांणी एह । जेलुं जांण्यु तेतलुं, वखांण्यउं, भरणइं पदम विसेख । —रूकमरणी मंगळ

उ०—४ अत तपियै तन अवनि, दियै परजन सरदाई । सुधा पाय ससि करै, जेम वरणराय सवाई । —रा. रू.

उ०—५ विद्या सवि सिद्धिहिं गई, जां पेखइ परणराइ । आहेडी आरोडीउ तां एकु सूअरु धाइ । —पं. पं. च.

वणराव—देखो 'वनराज' (रू. भे.)

वणरावमुनी—सं. पु.—नारद मुनि ।

वणवास, वणवासु—देखो 'वनवास' (रू. भे.)

उ०—बारह ए वरस **वणवासु** नाठै हींडिवुं तेरभई ए । अम्हि किम ए जांरिणसुं तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए । —पं. पं. च.

वणवीरोत—सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

वणसटी—देखो 'वरणस्टी' (रू. भे.)

वणसणौ, वणसबौ—देखो 'विरणसरणौ, विरणसबौ' (रू. भे.)

उ०—गाडा में नाव नाव में गाडौ, लेख तणा कुण भेद लदै । 'ओपा' रांम तणी गत अंवळी, **वणसै** दली' र दखरण वदै । —ओपौ आढ़ौ

वणसणहार, हारौ (हारी), वणसणियौ—वि० ।
वणसिम्रोड़ौ, वणसियोड़ौ, वणस्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
वणसीजणौ, वणसीजबौ—भाव वा० ।

वणसियोड़ौ—देखो 'विणसियौड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वणसियोड़ी)

वणस्टी-सं. पु. [सं. वणयष्टि] कपास के पौधे का डंठल ।
रू. भे.—बणसटी, बणस्टी, बनसटी, वणसटी।

वणस्सइ—देखो 'वनस्पति'
उ०—सात लाख जीव प्रथवी माहि, साते उप साते तेउ माहि । वाउकाई जीव साते विचारि, दस लाख वणस्सइ मभ्फारि ।
—वस्तिग

वणाक—१ देखो 'बणाक' (रू. भे.)
२ देखो 'विनायक' (रू. भे.)

वणाकियौ—देखो 'बणाक' (अल्पा., रू. भे.)

वणाड़णौ, वणाड़बौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

वणाड़ियोड़ौ—देखो 'वणाणियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वणाड़ियोड़ी)

वणाणौ, वणाबौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)
वणाणणहार, हारौ (हारी), वणाणणियौ—वि० ।
वणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वणाईजणौ, वणाईजबौ—कर्म वा० ।

वणायतौ-वि.—१ प्रभाव पूर्ण व्यक्तित्व वाला ।
उ०—तरै सहांणी लायक ठावौ वणायतौ डील देखि उठि मिळियौ ।
—जगदेव पंवार री वात
२ सुन्दर, तेजस्वी ।

वणायोड़ौ—देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वणायोड़ी)

वणारसी—१ देखो 'बनारसी' (रू. भे.)
२ देखो 'बनारस' (रू. भे.)
उ०—वरहार मथुरा अवध्या वणारसी चंदेरी वल्लिवाल महबर महोब हरियाणउ भयाणउ ।
—व. स.

वणारिस-सं. पु. [सं. वाचनाचार्य] वाचनाचार्य (उ. र.)

वणाव—देखो 'बणाव' (रू. भे.)
उ०—१ ग्राद कंठ चव अक्खिरां, अंत दोय ठहराव । यौ सुबंध घट अक्खियां, बिगड़ै कंठ वणाव ।
—र. ज. प्र.
उ०—२ मन हरखै तन उच्छव मोटै, कियौ वणाव 'अभै' नवकोटै । सुरंग बसन सुंदर तन सोहै, वेखि रूप रति भूप विमोहै ।
—रा. रू.
उ०—३ जुद्ध रा भागळ मरियोड़ा घरै आया सो पति मरियां पछै विधवा रै कांई वणाव ।
—वी. स. टी.

वणावटी—देखो 'बनावटी' (रू. भे.)
उ०—कोई वीर पुरुष की स्त्री वणावटी सूरवीरां नै कहै-हे वणावटी रावतां सीह मत वाजो थांरै मांहै सीह वाजो जेड़ी सकती नहीं ।
—वी. स. टी.

वणावणौ-वि.—१ जो बनाने योग्य हो, बनाने वाला ।
२ जो बनाने का माध्यम हो, जिससे कुछ बनाया जाय ।
उ०—घाव काळजै घला निजरै, मिनखां घर वणावणौ । पर कारजां देव संधेड़ो, अह निस ग्राडो ग्रावणौ ।
—दसदेव

वणावणौ, वणावबौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ वेह समत्थ वणावियौ, बाघ डाच जम बत्थ । जिण माभ्फल लग जाड़ियां, माय जाय गज मत्थ ।
—बां. दा.
उ०—२ ग्यांन ब्रह्म 'जसराज' गुण, पुन उग्र तप करि पाविया । सार 'जसबंत' ग्रादि स्तुतिवर, विविध ग्रंथ वणाविया ।
—सू. प्र.
वणावणहार, हारौ (हारी), वणावणियौ—वि० ।
वणाविम्रोड़ौ, वणावियोड़ौ, वणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वणावीजणौ, वणावीजबौ—कर्म वा० ।

वणावि—देखो 'बणाव' (रू. भे.)
उ०—गयण दास खवास भणै, अवसर मन भांणौ । घर वाल्हौ ग्राप रौ तिकै पट घूंघट तांणौ । उण वणावि ग्रांमासि प्रभू दरसाव न पासै । सुख छूटौ संभारि दीह कट्टौ ते सासे ।
—रा. रू.

वणावियोड़ौ—देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वणावियोड़ी)

वणास—१ देखो 'विनास' (रू. भे.)
उ०—१ 'पाल' तणै ग्रेह पागड़ो, ग्राखी म्है ग्ररदास । ग्रब सूरजमळ ग्रावियो, वधै न वैर वणास ।
—पा. प्र.
उ०—२ वणाय खाग चाढ़ि वाढ़, ग्रोपवै उजास रा । वणांत वीच नीर वाधि, रूप में वणास रा ।
—सू. प्र.
२ देखो 'बनास' (रू. भे.)

वणासणौ, वणासबौ—देखो 'विनासणौ, विनासबौ' (रू. भे.)
उ०—सु ग्रांनै रे देस मांहै काळ पड़ै, तद थोरीए एक जिनावर वणासियौ ।
—नैणसी
वणासणहार, हारौ (हारी), वणासिणियौ—वि० ।
वणासिम्रोड़ौ, वणासियोड़ौ, वणास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वणासीजणौ, वणासीजबौ—कर्म वा० ।

वणासियोड़ौ—देखो 'विनासियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वणासियोड़ी)

वणिक–सं. पु. [सं. वणिक] (स्त्री. वणिश्रांणी, वणियांणी) १ व्यापार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने वाला, बनिया, व्यापारी।
उ०—करै **वणिक** कुळ कसब कर, हित मांहे वित हांण । वणिक दगौ दे विरचियौ, उर इचरज मत आंण । —बां. दा.
२ व्यापारी समुदाय।
उ०—महेसदत्त नांमै धनवंत, सहु **वणिक** मांहै सोभंत । —वि. कु.
३ वैश्य ।
उ०—**वणिश्रांणी** रहसी नहीं, रहसी सूथारी । सोनारी जासी परी, (कह) भावज कूंमारी । —अज्ञात
रू. भे.—बणक, बणिक, बांणक, बांणिक, वणक, वांणक, वांणज़ू ।
अल्पा.—बणियौ, बनियौ, बांणयौ, बांणियौ, बांण्यौ, वणियौ, वांणियौ, वांण्यौ ।

वणिकपण–सं. पु. [सं. वणिक+त्व] १ बनिया या व्यापारी होने का भाव ।
२ बनिये का स्वभाव ।

वणिग्यौ–सं. पु.—सूत खोलने के परीते के ऊपर का डंडा जिसमे संतुलन रहता है।
रू. भे.—वणीग्यौ।

वणिज—देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—गज तुरंग नर पालखी, पांच सयां प्रत्येक । कोठा जेहनै पांच सै, वली **वणिज** सुविवेक। —बि. कु.

वणिजारौ—देखो 'बिणजारौ' (रू. भे.)
उ०—जरासिंध नउ आविउ दुउ, कालकुमरु जंई लग्गइ मुउं। **वणिजारा** नी वात सांभली, जरासिंधु आवइ तूम्ह भणी ।
—पं. पं. च.

वणिज्ज—देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)
उ०—करै **वणिज्ज** एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए। साखा चौतार मुक्खमल्ल, रेसमी वसत्त ए। —गु. रू. बं.

वणियांणी–सं. स्त्री. १ एक बरसाती कीड़ा ।
२ एक पौधा विशेष ।
३ वणिक जाति की स्त्री, वणिक की स्त्री ।
रू. भे.—बणयांणी, बणियांणी, बनियांणी, बांणण बांणनी, बिणियांणी, बिरांणी, वांणण, वांणणी, विरांणी ।

वणियौ—देखो 'वणिक' (रू. भे.)
उ०—जग अपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय । जिम तिम कर बणियौ रहै, **वणियौ** तेण कहाय । —बां. दा.

वणी–सं. स्त्री. [सं. वनज प्रा. वउणी] १ कपास का पौधा ।
१ कपास का डोडा।
३ करधा ।
४ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र.)
५ देखो 'वनी' (रू. भे.)
६ देखो 'वण' (अल्पा., रू. भे.)
७ देखो 'वह्न' (रू. भे.)
रू.भे.—वणि, बणी ।
अल्पा.,—बण, वण ।

वणीग्यौ—देखो 'वणिग्यौ' (रू. भे.)

वणीठणी–वि. स्त्री. [अनु.] १ जो बन-ठन कर तैयार हो, सुसज्जित, तैयार ।
२ किसी निर्णयिक स्थिति में आई हुई, व्यवस्थित ।
ज्यूं—बणीठणी बात बिगड़गी ।

वणीमग–सं. पु. [सं. वनीपकः, वनीयक;] १ भिक्षुक, भिखारी (उ. र.)
२ याचक ।

वणीमगड़ौ–सं. पु.—एक प्रकार का दोष जो दानशाला का भोजन ग्रहण करने से लगता है। (जैन)

वणीमगदोस–सं. पु.—भिखारी जैसी दीनता दिखलाने पर लगने वाला दोष। (जैन)

वणीयण–वि.—१ आतंक फैलाने वाला, आतंकित करने वाला ।
उ० —'तेजौ' नेजां ऊपरा, ओरै तेज तुरंग । कहर **वणीयण** 'चंदकौ' मुहर अणी रण जंग ।
—रा. रू.
२ बनाने वाला ।

वणेच–सं. पु.—आभूषण । (अ. मा.)

वणोखड़ी—देखो 'बणोखड़ी' (रू. भे.)

वणोड़ौ—देखो 'बणोड़ौ' (रू. भे.)

वणोद—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

वण्यौ–वि.—१ अचल, अटल, शाश्वत ।
२ देखो 'वणियोड़ौ' (रू. भे.)

वत–वि. [सं. वत्] १ किसी वस्तु की सम्पन्नता प्रगट करने के लिये संज्ञा शब्दों के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय ।
२ समान, तुल्य ।
उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य। आरण्य-रुदन **वत** भौ अयोग्य ।
—ऊ. का.
अव्य.—१ कष्ट ।

२ दया ।

३ विस्मय ।

४ सुखी ।

५ आमंत्रण ।

६ देखो 'वित' (रू. भे.)

उ०—सत रा हरचंद सुमत रा सागर, चित रा विलंद सुदत रा चाव। **वत** रा व्रवण प्रभत रा वाघण, नत रा तार सुक्रत रा नाव ।
—र. ज. प्र.

७ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—वदै रिख स्रंग लोमंजर **वत** । —रांम रासौ

अल्पा.—वतौ ।

वतक—देखो 'वतक' (रू. भे.)

उ०—आवि विदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह मतवाळा री **वतक** ज्यूं, पिय नइं परहरियाह । —ढो. मा.

वतकलौ—देखो 'वंतल' (अल्पा., रू. भे.)

वतका, वतड़ी—देखो 'बात' (अल्पा., रू भे)

उ०—**वतका** जग जाहर हुई, सांप्रत आसुर आय । तनुजा सांम दैन तजी, मिळी देवगत माय । —पा. प्र.

वतकाव, वतगाव—देखो 'बतळाव' (रू. भे.)

उ०—आयौ साथ निबाब रै, कोटै हुंदौ राव । मिळिया स्त्री महाराज सूं, साह कियौ **वतकाव** । —रा. रू.

वतन—सं. पु. [फा.] १ जन्म-भूमि, स्वदेश ।

उ०—सो एक समय उठै काळ पडियौ सौ पेट भरणै री जरूरत सूं **वतन** छोड नीसरयौ । —नी. प्र.

२ देश, राष्ट्र ।

उ०—ईरांण **वतन** हिम्मत अथाह । सिरविलंद तुज सिरखा सिपाह । —वि. सं.

वतरणौ—देखो 'बरतणौ' (रू. भे.)

वतळ—देखो 'वंतल' (रू. भे.)

वतळाणौ, वतळाबौ—१ ललकारना ।

उ०—तद रैबारियां कहीं, साहिबी कुंवरसी सांखलै री छै। तिण कही म्हारां रजपूत थां पल्हू में मारियौ । तेरै वैर मे ले जावां छां अर थांनां मारां छां । तद औ मोटियार था सताब खड़ कोसां पांचां सातां आय पोहता ! आंण **वतळाया** औ **घिरिया सो रीठ** वागौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'बतळाणौ, बतळाबौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां पंचाइण तीसां असवारां सूं वीरमदेजी रै ऊपर आयौ। नै वीरमदेजी नूं **वतळायौ** । —नैणसी

३ देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

वतळाणहार, हारौ (हारी), वतळाणियौ—वि० ।

वतळायोड़ौ —भू० का० कृ० ।

वतळाईजणौ, वतळाईजबौ—कर्म वा० ।

वतळायोड़ौ—१ ललकारा हुआ ।

२ देखो 'बतळायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वतळायोड़ी)

वतळाव, वतळावण, वतळावणी—देखो 'बतळावण' (रू. भे.)

उ०—१ निबाब थटैरौ, दूसरौ मौबतखां ठिकांणा सूं-दणांसूं चूक री **वतळावण** थी । —द. दा.

उ०—२ पछै रांमदासजी बरछी फेरनै बुडी री दीधी इका रै छाती में । सो सास जातौ रयौ । तरै बीजा इका रै ने रांमदासजी रै वतलावण हुई । —रा. सा. सं.

वतळावणौ, वतळावबौ—१ देखो 'बतळाणौ, बतळाबौ' (रू. भे.)

उ०—सुणि एम वचन प्रजळै असुर, दसौ तेज दरसावियौ । वमरीर वाघ **वतळावियौ**, जांणै नाग खिजावियौ । —सू. प्र.

२ देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

वतळावणहार, हारौ (हारी), वतळावणियौ—वि० ।

वतळाविओड़ौ, वतळावियोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वतळावीजणौ, वतळावीजबौ—कर्म वा० ।

वतळावियोड़ौ—१ देखो 'बतळायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वतळावियोड़ी)

वतसर—देखो 'वत्सर' (रू.भे)

वतहा—सं. पु [फा.] अरब के मदीना नामक शहर का नाम ।

उ०—मदीना रो नांम **वतहा** । —बां. दा. ख्यात

वतागर—सं. पु.—सलाह मशविरा करने वाला, परामर्श करने वाला, सलाहकार ।

उ०—जरां आपरा उमराव **वतागरां** नै तेड़ीया । पृथ्वी-थांने तौ म्हांका राज की काई चित्तां फिकर नहीं अर नांनौ मांभोजी करै सो हुवै छै । —राव रिणमल री बात

वताणौ, वताबौ—देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

उ०—जिम कंकण विध भूप जताई । वीर अग्र तिम जती **वताई** ।
—सू. प्र.

वताणहार, हारौ (हारी), वताणियौ—वि० ।

वतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वताईजणौ, वताईजबौ—कर्म वा० ।

वतायोड़ौ—देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वतायोड़ी)

वतावणौ, वतावबौ—देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

उ०—तमासौ **वतावण** वीस हत तैलीया, लार रिजवार गोरां सहत लै लीया। झट भुजां ईस डैरू अजब झेलिया, या गजब रीस किण सीस अलबैलीया। —महादांन महड़

वतावणहार, हारौ (हारी), वतावणियौ—वि०।

वताविग्रोड़ौ, वतावियोड़ौ, वताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वतावीजणौ, वतावीजबौ—कर्म वा०।

वतावियोड़ौ—देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वतावियोड़ी)

वती-वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

२ बहुत, अधिक, ज्यादा।

३ अक्षय, स्थायी।

सं. पु.—१ सरकारी मकानों में रोशनी के निमित्त प्रजा से लिया जाने वाला कर।

२ देखो 'बत्ती' (रू. भे.)

उ०—नहीं तार, नहिं टैम है, नहीं **वत्ती** में तेल। आ चालै मन रे मतै, मारवाड़ री रेल। —अज्ञात

३ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—विसंभर जिका आ केम मांनां **वती**, उडपति समौवड़ आप बाळै। —र. रू.

वतीकर-सं. पु.—कपट। (अ. मा)

वतीत—देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—आया वसियां आपणी, ग्रीखम भई **वतीत**। १७३६ गुण चाळौ लागौ वरस, चाळौ सरस सजीत। —रा. रू

वतीतणौ, वतीतबौ—देखो 'व्यतीतणौ, व्यतीतबौ' (रू. भे.)

उ०—सौ थांनक खड़ ऊगिया, किता **वतीता** काळ। औ जायल ऐसा करै, गोखां आफू गाळ। —पा. प्र.

वतीतणहार, हारौ (हारी), वतीतणियौ—वि०।

वतीतिग्रोड़ौ, वतीतियोड़ौ, वतीत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वतीतीजणौ, वतीतीजबौ—भाव वा०।

वतीतियोड़ौ—देखो 'व्यतीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वतीतियोड़ी)

वतूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जिसै एक **वतूळियौ** आयौ सू रेत सूं कपड़ा भरीज गया। —द. दा.

उ०—२ रेढ़ां नै माईतां री बात मन परबारी मांनणी ई पड़ी। डुसक्या भरता वै थेह सूं बारै निकळिया अर निकळतां ई **वतूळिया** रै वेग जैसांणै री सींव कांनी दड़बड़ां सोकड़ मनाई। —फुलवाड़ी

वतूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

उ०—एक भरचौ ए **वतूळौ** आवौ विनायक, विणजारा के बैल ज्यूं। —लो. गी.

वतेरौ—देखो 'बत्तेरौ' (रू. भे.)

उ०—खारौ मीठै **सूं** सरस है, भळै वतेरा पांनड़ा। देस विदेस दुवायां वणै, खुसी डाकधर खांनड़ा। —दसदेव

वतं-सं. पु.—प्रकार। (बांकीदास)

वतोकड़-वि. [स्त्री. वतोकड़ी] १ अत्यधिक बोलने वाला, वाचाल।

२ अधिक बात बनाने या कहने वाला।

रू. भे.—बतोकड़।

वतौ—१ देखो 'वत' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वत्तौ' (रू. भे.)

वत्त—देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—१ सुणी कमधां ऊधरां, उत मेवाड़ां **वत्त**। साथै साहस झलियौ, घातै हात परत्त। —रा. रू.

उ०—२ इणि परि ऊमा देवड़ी, जांणी मारू-**वत्त**। सु प्रभाति कहिवा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त। —ढो. मा.

उ०—३ मरदिया जेम जगमल्ल मल्ल, ढंढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, सम्मळइ सत्त विसथरइ **वत्त**। —रा. ज. सी.

उ०—४ राइं नट तेडावियां, कही विवस्था, **वत्त**। वाडव को वेस्या जपइ, टालि पहुते रत्त। —मा. कां. प्र.

वत्तड़ी—देखो 'बात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सूरां पूरां **वत्तड़ी**, सूरां कांन सुहाय। भागल अदवा राजवी, सुणतां ही टळ जाय। —राव रिणमल री वात

उ०—२ हेक धकौ चौड़ै हुवां, असमर करां अदोस। डेरां डेरां **वत्तड़ी**, डेरां डेरां जोस। —रा. रू.

२ देखो 'वाती' (रू. भे.)

वत्ती—१ देखो 'बत्ती' (रू. भे.)

वत्तीस—देखो 'बत्तीस' (रू. भे.)

उ०—**वत्तीस** आखडी रौ निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार। —रा. सा. सं.

वत्तौ-वि० [स्त्री. वत्ती] अधिक, बढ़कर।

उ०—१ साच रै पखै बंधण रौ दुख दुनियां रै सरब सुखां सूं घणौ वत्तौ है। —फुलवाड़ी

उ०—२ थारै-सूं वत्ती लिखमी और कुण हुसी। —बरसगांठ

रू. भे.—बतौ, वतौ।

वत्थपुन्न–सं. पु. [सं. वस्त्र-पुण्य] वस्त्र-दान से होने वाला पुण्य। (जैन)

वत्थिरि–क्रि. वि.—विस्तार से।

उ०—अजितनाथ वर भवण नदि मंडिय गुरु वत्थिरि।
—अभयतिक

वत्थु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—जिम गंगाजल जलइ मझि सुपवित्त भणिज्जइ। जिम सोह गह **वत्थु** मझि ससहरू वन्निज्जइ। —ऐ. जै. का. सं.

वत्री—देखो 'बात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दुगम पिनाक सहल तो दीसै, विगत हमैं सुण **वत्री**। खंडै मैं वसुधा विण खत्री, कीधी वार इकीसैं। —र. रू.

वत्रीस—देखो 'बत्तीस' (रू. भे.)

वत्स–सं. पु. [सं.] १ बेटा, पुत्र।

२ गाय का बछड़ा।

३ किसी जानवर का बच्चा।

४ छोटा बच्चा, शिशु, बालक।

५ संतान, औलाद।

६ इन्द्र।

७ कंस का एक अनुचर।

८ एक प्रचीन देश जहाँ का राजा उदयन था। इसकी राजधानी कौशांबी थी।

रू. भे.—बच्छ, बछ, बछक, बाच, बाछ, वच्छ, वच्छि, वछ, वाच, वाच्छि, वाछ।

अल्पा.—बच्छड़ौ, बच्छ, बछड़ौ, बछरौ, बछवौ, बछियौ, बछौ बाछड़ियौ, वाछड़ू, बाछड़ौ, बाछरू, बाछियौ, बाछौ, वचौ, वच्छड़ौ, वच्छ, वछड़ौ, वछौ वाछड़उ, वाछड़ौ, वाछरू, वाछरौ, वाछौ।

वत्सक–सं. पु. [सं. वत्सकः] १ छोटा बछड़ा, बच्चा।

२ कुटज का पौधा।

३ एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा।

४ एक यादव वंशीय राजा जो वसुदेव का भाई था।

[सं. वत्सकं] ५ पुष्प कसीस।

६ कुटज।

७ निर्गुण्डी।

८ कंस के अनुचर वत्स का नामांतर।

रू. भे.—बछक, वछक।

वत्सनाभ–सं. पु. [सं.] १ हिमालय की तराई में कम ठंडे भागों में पैदा होने वाला वछनाभ नामक एक प्रकार का पौधा।

२ उक्त पौधे की जड़ से निकलने वाला विष विशेष जो मीठा होता है, मीठा विष।

रू. भे.—बच्छनाग, बच्छनाभ, बछनाग, बछनाभ, वच्छनाग, वच्छनाभ।

३ एक महर्षि। (चरित्र कोश)

वत्सर–सं. पु. [सं. वत्सरः] १ द्वादश मास की एक अवधि, वर्ष।

२ विष्णु का एक नाम।

३ एक राजा जो ध्रुव राजा का छोटा पुत्र था।

[सं. वत्सतरः] ४ वह बछड़ा जो जवान व जोतने योग्य हो गया हो।

रू. भे.—बच्छ, बच्छर, बतसर, बत्सर, वच्छर, वच्छरी, वछर वछरि, वतसर।

वत्सराज–सं. पु. [सं. वत्स.,+-राज] १ गाय का बछड़ा।

२ गौतम बुद्ध का समकालीन कौशाम्बी का प्रसिद्ध राजा, उदयन।

३ कौशल देश का एक राजा जो द्रोपदी स्वयंवर में उपस्थित था, वत्स।

४ संवत् १५६० के लगभग हुए अजमेर के प्रसिद्ध दानवीर गौड़वंशीय राजा का नाम।

रू. भे.—बछराज वछराज।

वत्सळ, वत्सल–वि. [सं. वत्सल] (स्त्री. वत्सला) १ जो पुत्र या संतान के प्रति स्नेहालु हो, प्रेम से परिपूर्ण हो।

२ जो अपने छोटों के प्रति कृपालु, दयालु हो।

सं. पु. [सं. वत्सलं] १ अनुराग, प्रेम।

२ वात्सल्य रस।

रू. भे.—वच्छळ, बछळ, वच्छळ, वच्छल, वछळ, वाछळ।

वत्सलता–सं. स्त्री.—१ स्नेहालु या कृपालु होने की अवस्था, भाव।

२ अनुराग, प्रेम।

३ कृपा, दया, अनुग्रह।

रू. भे.—वच्छलता।

वत्सासुर–सं. पु. [सं.] वत्स नामक असुर जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया।

रू. भे.—वंछासुर, बछासुर, वंछासुर, वछासुर।

वथ—देखो 'बाथ' (रू. भे)

उ०—रथ छांडि राजन उतरया, रूक्मणी साहिउ **वथ**। दड दोट वाजई कोट भाजई, वेग वाल्या हथ। —रुकमणी मंगळ

वथवौ, वथूअउ—देखो 'बथवौ' (रू. भे.) (उ. र.) (अमरत)

वथूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

वथूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

वद–सं. पु.—१ किसी विषय का विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का वास्तविक ज्ञान।

२ वृत्त।

३ चारों वेद।

४ किसी मास का अर्धभाग, कृष्ण पक्ष, जिसमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः ह्रास होता है और पूर्व निशा में अंधकार बढ़ता जाता है।

५ एक रोग विशेष। (भाव प्रकाश)

६ देखो 'बद' (रू. भे.)

रू. भे.—बद।

वदक–वि. [सं. वद्] कहने वाला, वक्ता।

वदकौ–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

२ सज्जन, भला।

३ अधिक, बहुत।

रू. भे.—बदकौ।

वदखोर, वदखोरौ—देखो 'बदखोर' (रू. भे.)

उ०—कर जुध धरा रह्यौ करनांणी। **वदखोरौ** आयौ चढ वाढ।
—द. दा.

वदगढ–सं. पु.—दिल्ली का एक नामान्तर।

वदणौ, वदबौ–क्रि. स. [सं वद्] १ कहना।

उ०—१ महा सुगण रूप है सुचित सार आचार में, सखां कवण जोड़-जें, अघट आज संसार में। यळा सह **वदै** यसौ, सुजन रांम साधार है। पुणां जस जिवै पढौ, सुज कथा स असार है। —र. ज. प्र.

उ०—२ सुतण 'नाथ' 'खेतसी' **वदै** सांदू खग वाहण। 'वखतौ' खिड़ियौ वदै, रचूं 'अमरा' जेही रण। —सू. प्र.

२ उच्चारण करना, बोलना।

३ वर्णन करना, उल्लेख करना, निरूपण करना।

उ०—सात सहस नव सौ सकळ, ऊपरि रूप अढार। जजसन लघु गुर जांणिजै, **वदि** गुण रतन विचार। —ल. पिं.

४ बात करना।

५ सूचना देना, बताना।

६ पुकारना, चिल्लाना।

७ महत्व देना, बड़ा मानना, मान देना, इज्जत करना।

उ०—१ सु रावळ घड़सी जगमालनूं कहै छै-ऐ हईया पोहड़ द्रेग वसै छै, तिकै ऐ म्हांनूं लिगार मात्र **वदै** न छै। ए जठा ताई जैसल-री धरती में छै तितरै म्हानूं धरनी री आस काई नहीं।
—नैणसी

८ किसी प्रकार की मान्यता देना, मानना, किसी श्रेणी में गणना करना।

उ०—१ सो ए पांच दंड हुवै तिण नै राजा **वदां**।
—पंच दंडी री वारता

उ०—२ **वदियौ** स्वांन वनचरां, नहिं लाज निहारै। मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै। —सू. प्र.

९ मानना, स्वीकार करना।

१०—आज्ञा देना, निर्देश देना।

उ०—१ सांपन्ना मूझ हवै सुख सात, **वदौ** जो हि देव करूं सो ही बात। सांप्रत सांमी मौ मज्झ सरीर, गोविंद गदाधर ग्यांन गहीर।
—ह. र.

उ०—२ पांवा रहण **वदी** पतसाहां सिर दावां घावां सहण। दारण रूप बाजिया दारण, बारण नै बारण बहण।
—लिखमीदास गाडण

११ बाजी लगाना, शर्त बदना, होड़ लगाना।

उ०—समंद फाळ कूदै हणू, जहर जारै संकर, सेस ही भुजां धर भार साहै। 'करण' रै 'पदम' जिम साह रै कटैड़े, **वदूं** जो कोई तरवार वाहै। —द. दा.

१२ प्रतिस्पर्धा करना।

उ०—**वदि** रुद्र खाग स्नोहथां वाहै। सूर थंभि रथ हाथि सराहै।
—सू. प्र.

१३ बढ़ बढ कर बातें करना, डींग हांकना।

१४ बहस करना, जिद्द करना।

१५ परस्पर निश्चय करना, नियत, मुकर्रर या तय करना।

१६ परिश्रम करना, उद्योग करना।

१७ देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

वदणहार, हारौ (हारी), वदणियौ—वि०।

वदिओड़ौ, वदियोड़ौ, वद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वदीजणौ, वदीजबौ—कर्म वा०।

वदणौ, बदबौ, बधणौ, बधबौ—रू० भे०।

वदन–सं. पु. [सं.] १ मुख, मुंह। (अ. मा.)

२ चेहरा, शक्ल, सूरत।

उ०—१ अति रूप क्रांति उजास, प्रफुल्ल **वदन** प्रकास। आवियौ पह उण वार, मिंदरां राज मंझार। —सू. प्र.

उ०—२ पूछ्यां विना पयंपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी। **वदन** मत दिखाळै वंस द्रोही बळै। —र. रू.

उ०—३ विळखीजै तरुणी बदन, कंथ न आयौ तीज। मावड़ियां आयां मुहम, **वदन** जाय विळखीज। —बां. दा.

३ रूप, आभा।

४ अग्र भाग, अगला हिस्सा।

५ प्रथम संख्या।

६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।
७ देखो 'बदन' (रू. भे)
रू. भे.—वदन, वदन्न, वदनि, वदन्न, वदीन ।

वदनारविंद-सं पु. [सं. वदन+अरविंद] कमल के समान मुख, मुखारविंद ।
वि.—उक्त प्रकार के मुख वाला ।

वदनि—देखो 'वदन' (रू. भे.)
उ०—वदन चंद महारस लेइ घडिउं, अमीय एह तणी रसना जडिउं । पवन चंदनगंध हरावतउ, **वदनि** वासि वसइ दिसि वासतु । —सालिसूरि

वदनीत—देखो 'बदनीयत' (रू. भे.)
उ०—**वदनीत** पाप चल धरम बाध, सब तजै धरम कत दुस्ट साध । मिट पूज देव मरजाद मूक, चळ विचळ अमर सब थांन चूक । —शि. रू.

वदन्न—देखो 'वदन' (रू. भे.)
उ०—सुण निबाब समसत्त, जाव छत्रपत्ति जवन्नां । सूर मीर सोचिया, नूर खंचिया **वदन्ना** । —रा. रू.

वदपख-सं. पु. [सं. वदि-पक्ष] किसी मास का कृष्ण पक्ष ।
उ०—मधि हिमरित वर अघण मास । सनि चतुरदस **वदपख** सकाज । —सू. प्र.

वदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

वदरंगी—देखो 'बदरंगी' (रू. भे.)

वदरा-सं. स्त्री.—धन, दौलत, वित्त ।
रू. भे.—बदरा ।

वदरीनाथ—देखो 'बदरीनाथ' (रू. भे.)

वदळ—देखो 'वादळ' (रू. भे.)
उ०—भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै । भीण **वदळ** मांभळ रवि भळकै । —सू. प्र.

वदळणौ, वदळबौ—देखो 'बदळणौ, बदळबौ' (रू. भे.)

वदलाड़णौ, वदलाड़बौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळाणौ, वदळाबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळावणौ, वदळावबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

वदळायत—देखो' बदळायत' (रू. भे.)
उ०—**वदळायत** नायक अंग वजै, भय आंणव पायक नोज भजै । चोह चाल भालाळ विचाळ लियौ, किरणालर भाळ कुंडाळ कियौ । —पा. प्र.

वदळी—१ देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मेरे पिया के देस वरस **वदळी**, मेरे पिया के । —लो. गी.
२ देखो 'बदळी' (रू. भे.)

वदळे, वदळै—देखो 'बदळै' (रू. भे.)
उ०—रात गमाई सोयकर, दिवस गमायो खाय । हीरा जनम अमोल था, कोडी **बदळे** जाय । —अज्ञात

वदळौ—देखो 'बदळौ' (रू. भे.)

वदांन्य-वि. [सं. वदान्य] १ जो मृदु भाषी हो, जिसकी बोली मधुर हो ।
२ जो बहुत उदार चित्त हो, दयालु ।
३ बात चीत करने पर संतुष्टि देने वाला ।
रू. भे.—बदांन्य ।

वदांन्यता-सं. स्त्री. [सं. वदान्यता] १ वदान्य होने की अवस्था या भाव ।
२ उदारता, कृपा ।

वदांम—देखो 'बादांम' (रू. भे.)

वदांमण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे.)
२ देखो 'वदावन' (रू. भे.)

वदांमी—देखो 'बादांमी' (रू. भे.)

वदांवण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे.)
२ देखो 'वदावन' (रू. भे.)

वदाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

वदाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

वदाउ, वदाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

वदाउड़ो—देखो 'बधाऊ' (अल्पा., रू. भे.)

वदाड़णौ, वदाड़बौ—देखो 'वदाणौ, वदाबौ' (रू. भे')
वदाड़णहार, हारो (हारी), वदाड़णियो—वि० ।
वदाड़िओड़ो, वदाड़ियोड़ो, वदाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
वदाड़ीजणौ, वदाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वदाड़ियोड़ो—देखो 'वदायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वदाड़ियोड़ी)

वदाणौ, वदाबौ-क्रि. सं. ['वदणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ कहलाना ।
२ उच्चारण कराना, बोलाना ।
३ वर्णन कराना, उल्लेख कराना, निरूपण कराना ।
४ बात कराना ।
५ सूचना दिराना, बतलाना ।
६ अवाज दिराना, चिल्लाहट कराना ।
७ महत्व, मान व इज्जत दिराना, बड़ा मनवाना ।

८ किसी को किसी प्रकार की मान्यत दिराना, मनवाना, किसी श्रेणी में गणना करवाना

९ स्वीकार कराना।

१० आज्ञा या निर्देश दिलवाना।

११ बाजी लगवाना, शर्त लगवाना, होड़ लगवाना।

१२ प्रतिस्पर्धा कराना।

१३ बढ़-बढ़ कर बातें करवाना

१४ निश्चय, नियत या तय कराना।

१५ बहस या जिद् कराना।

१६ परिश्रम कराना, उद्योग कराना।

१७ देखो 'वधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

वदाणहार, हारौ (हारी), वदाणियौ—वि०।

बदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वदाईजणौ, बदाईजबौ—कर्म वा०।

बदाणौ, बदाबौ, बदावणौ, बदावबौ, **विधाणौ, बिधाबौ, वदाड़णौ, वदाड़बौ, वदावणौ**, वदाव्बौ—रू. भे.।

वदायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कहलाया हुग्रा. २ उच्चारण कराया हुग्रा, बोलाया हुग्रा. ३ वर्णन कराया हुग्रा, उल्लेख कराया हुग्रा, निरूपण कराया हुग्रा. ४ बात कराया हुग्रा. ५ सूचना दिराया हुग्रा, बतलाया हुग्रा. ६ आवाज दिराया हुग्रा, चिल्लाहट कराया हुग्रा. ७ महत्व, मान व इज्जत दिराया हुग्रा, बड़ा मनवाया हुग्रा. ८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दिराया हुग्रा, गणना कराया हुग्रा. ९ स्वीकार कराया हुग्रा. १० आज्ञा या निर्देश दिलवाया हुग्रा. ११ प्रतिस्पर्धा कराया हुग्रा. १२ बढ़-बढ़ कर बातें करवाया हुवा. १३ बाजी, शर्त या होड़ लगवाया हुवा. १४ निश्चय, नियत या तय कराया हुवा. १५ बहस या जिद् कराया हुग्रा. १६ परिश्रम कराया हुग्रा, उद्योग कराया हुग्रा।

१७ देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदायोड़ी)

रू. भे.—'बिधायोड़ौ'।

वदारौ—देखो 'बवारौ' (रू. भे.)

वदावणौ, वदावबौ—१ देखो 'वदाणौ, वदावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

उ०—ल्याई मालण सेहरी हे सहेली, पनाजी रै मीस गुलाब री। रसीलाराज उण राजकंवर नैं और वदावण बेहरौ।

—रसीलै राज रा गीत

वदावणहार, हारौ (हारी), वदावणियौ—वि०।

वदाविग्रोड़ौ, वदावियोड़ौ, वदाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वदावीजणौ, वदावीजबौ—कर्म वा०।

वदावन—सं. स्त्री.—१ स्वागत, सत्कार।

२ अगवाणी।

रू. भे.—बदांमण, बदावण, बदावन, वदांमण, वदांवन, वद्धांमणी।

वदावियोड़ौ—१ देखो 'वदायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वदावियोड़ी)

वदि—अव्य. [सं. वदि] किसी मास के कृष्ण पक्ष की।

उ०—१ दीसै न न्याय भोगवि दसा, पड़छौ सुदि **वदि** पख रौ देखैं नैं साच दाखैं दुनी, खांडौ चांदौ ए-खरौ। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ सतरइ, सतसट्ठ, वरीसइ, मिगसर **वदि** दुतिया दीसइ हो।

—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—बदि, बदी, वदी।

वदियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कहा हुग्रा। २ बोला हुग्रा, उच्चारण किया हुग्रा। ३ वर्णन किया हुग्रा, उल्लेख किया हुग्रा, निरूपण किया हुग्रा. ४ बात किया हुग्रा. ५ सूचना दिया हुग्रा, बताया हुग्रा. ६ पुकारा हुग्रा, चिल्लाया हुग्रा. ७ महत्व, मान व इज्जत दिया हुग्रा, बड़ा माना हुग्रा। ८ किसी प्रकार की मान्यता दिया दिया हुग्रा, किसी श्रेणी में गणना किया हुग्रा. ९ स्वीकार किया हुग्रा, माना हुग्रा. १० आज्ञा या निर्देश दिया हुग्रा. ११ बाजी, शर्त या होड़ लगाया हुग्रा. १२ प्रतिस्पर्धा किया हुग्रा. १३ बढ बढ़ कर बातें किया हुग्रा, डींग हांका हुग्रा. १४ बहस या जिद् किया हुग्रा. १५ निश्चय, नियत या तय किया हुग्रा. १६ परिश्रम किया हुग्रा, उपयोग किया हुग्रा. १७ देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदियोड़ी)

वदी—१ देखो 'वदि' (रू. भे.)

२ देखो 'बदी' (रू. भे.)

उ०—सांसण ग्रै उथपिया सांभळ, विरड़ कुमंत्री करै **वदी**। जादव कांनौ दियै नह जग, जादव थांभौ दियै जदी —कविराजा बांकीदास

वदीत, वदीतउ—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—येहड़ौ जाग आहाड़ा हुऐ, तुऊ घर बीयां न होय। दत देतां ग्रीखम दरसांणी, सीत **वदीत** हुई सगळोय।

—जोगिदास कवारीयौ

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

उ०—१ राउल श्री भीम कहइ जी, जादव वंसि **वदीत** रे। पधारौ जेसलमेरु नइजी, प्रीति धरी निज चित्त रे। —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ वसुधा वीर **वदीतउ** जीतउ जिणि जरासंधु। तहिं हरि अरिबल टालए पालए राज सुबंधु। —जयसेखर सूरि

वदीतै—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

वदीतौ-वि. [सं. विदित] (स्त्री. वदीती) १ प्रसिद्ध, विख्यात ।

उ०—१ जपियौ सिध जिण विध जुध जीता, वधै वंस खैरोंद **वदीता** । असुर हणै ग्रद वणै अथागा, वर सिधकरि खैरोदा वागा ।
—सू. प्र.

उ०—२ बीजा पुरी सैन वीतौ, वजाए जेत्राई वाजा । जीतौ जीतौ महाराजा **वदीतौ** जगति । —दूदौ सुरतांणोत बीठू

उ०—३ पूज्यां सहुं इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै दूरै हो । जिण चौसट योगिनी जीती, वरतइ ए बार **वदीती** हो । —ध. व. ग्र.

२ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

वदूळ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—सो कैसे सांमळै **वदूळ** पर वीजूजळां का सिळाव । ऐसे भयांणक एकलगिड़ वराह ढाए । —सू. प्र.

वदूसणौ, वदूसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे.)

वदूसियोड़ौ—देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदूसियोड़ी)

वदेस—देखो 'विदेस' (रू. भे.)

उ०—बहु धंधाळ आव घरि, कासूं करइ **वदेस** । संपत सघळी संपजै, अे दिन कदी लहेस । —ढो. मा.

वदोतर-वि. [सं. वृद्धोत्तर] १ बढ़ा हुआ, अधिक ।

२ बढ़ने योग्य ।

३ समाप्त प्रायः ।

वदोवद, वदोवदि-सं. पु. होड, प्रतिस्पर्धा ।

रू. भे.—वादोवदी ।

वद्दळ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—गिरि जांणि चरण लहि लखत गोम, **वद्दळ** इळ दरसै छांडि व्योम । जंघाळस वंदण चित्र जास, किरि जळद इंद्र धांनुख प्रकास ।
—रा. रू.

वद्दळी, वद्दल्ली-देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

वद्धणौ, वद्धबौ—देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

उ०—लोय लोयण दळै अमिउं वरसंतउ वद्धए सुद्ध जिम बीय चंदौ । —ऐ. जै. का. सं.

वद्धमांण—देखो 'वरद्धमांन' (रू. भे.)

वद्धांमणी-सं. स्त्री.—१ देखो 'वधांमणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जीतउ कांन्ह वात इम सुणी, नगर लोक वइ **वद्धांमणी** । मदनभेरि भूंगळ भरहरइ, वरण अढ़ारइ जय-जय करइ ।
—कां. दे. प्र.

२ देखो 'वदांवण' (रू. भे.)

वद्धांमणौ—देखो 'वधांमणौ' (रू. भे.)

वद्धाणौ, वद्धाबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

वद्धापन—देखो 'बूढ़ापण' (रू. भे.)

वद्धायोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धायोड़ी)

वद्धावणौ, वद्धावबौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

उ०—वगु विणासी बगु विणासी भीमु आवेउ, **वद्धावइ** जगु सगलु जीव दांनु तइ देव दिद्धऊ केवलिवयणु जु सच्चु किउ त्रिहुं भुयणि जसवाउ लिद्धउ । —पं. पं. च.

वद्धावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धावियोड़ी)

वद्धियोड़ौ—देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धियोड़ी)

वध—सं. पु. [सं.] १ जान-बूझ कर किसी को मारने की क्रिया या भाव, हत्या ।

२ विनाश, विध्वंस ।

३ विरोध, वैर, वैमनस्य ।

उ०—रांणौ कुंभौ पाट छै । मांहोमांहि भाइयां ग्रासि **वध** लागौ ।
—नैणसी

४ आघात, प्रहार ।

५ युद्ध ।

रू. भे.—बध, ब्रध ।

वधक-सं. पु.—१ मछली पकड़ने का कांटा । (अ. मा.)

२ देखो 'वधिक' (रू. भे.)

उ०—हांणि कह्यां कोई न पतीजै, निहचै अग **वधक** कूं धीजै । जमनिति सदा बधक न हिरणां, चौरासी में दोडधाई फिरणां ।
—ह. पु. वा.

रू. भे.—बधक ।

वधण-सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] बढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि, बढ़ोतरी ।

उ०—**वधण** सरस वरसा वरस, दरस कमंध कुळदाप । अरस लगौ छक ऊफणै, पौरस तूझ 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ

वधणौ, वधबौ—देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आभा रूप जोम ऊफांणिक, वणियौ अनंग दूसरै वांणिक ।

वीर तदिन कीरति वाधारी, भरथ साख **वधियौ** कुळ भारी ।
—सू. प्र.

उ०—२ पांण जोड़ रिणछोड़ पूजजै, प्रथी चौगणौ **वधै** प्रमांण ।
—ह. नां. मा.

वधणहार, हारौ (हारी), वधणियौ—वि० ।

वधिग्रोड़ौ, वधियोड़ौ, वध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधीजणौ, वधीजबौ—कर्म वा० ।

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू. भे.)

वधतेरौ—देखो 'बधती'

वधतौ—देखो 'बधतौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद पूलै नूं कयौ 'चौधरी इसी दातारगी कर सू पांडू गोदारै सूं नांम **वधतौ** हुवै । —द. दा.

उ०—२ 'पातळ' दत वीरत पणौ, समंदर तणौ सभाव । **वधती सूं** वधती वणौ, चढ़ती लहर चढ़ाव । —जैतदांन बारहठ

(स्त्री. वधती)

वधरणौ, वधरबौ—क्रि. अ. [सं. वर्धनम्] १ आगे बढ़ना, अग्रसर होना ।

उ०—जेसळ आप बडइ असवार, कोस वधरइ वारा वार । जोयण एक घड़ी मइ जाइ, हारइ नहीं न थाका थाइ । —ढो. मा.

२ वृद्धि को प्राप्त होना, वृद्धि होना ।

३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु का त्रुटित होना, टूटना ।

४ काटा जाना ।

५ किसी देवता को चढ़ाने के लिये नारियल आदि को फोड़ा जाना, तोड़ा जाना ।

६ विस्तार होना, विस्तृत होना, लम्बा होना ।

७ बोला जाना ।

वधरणहार, हारौ (हारी), वधरणियौ—वि० ।

वधरिग्रोड़ौ, वधरियोड़ौ, वधरघोड़ौ—भू० का० कृ०

वधरीणौ, वधरीजबौ—भाव वा० ।

बधरणौ, बधरबौ—रू० भे०

वधराणौ, वधराबौ—क्रि. स. [वधरणौ क्रि. का प्रे. रू.] १ आगे बढ़ाना, अग्रसर कराना

२ वृद्धि कराना/करना ।

३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ाना ।

४ कटवाना ।

५ देवताओं को नारियल आदि फोड़कर चढवाना ।

६ विस्तार कराना, लंबा कराना ।

७ बोलाना, बुलवाना ।

वधराणहार, हारौ (हारी), वधराणियौ—वि० ।

वधरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधराईजणौ, वधराईजबौ—कर्म वा० ।

बधराणौ, बधराबौ, बधरावणौ, बधरावबौ, वधरावणौ, बधरावबौ—रू. भे.

वधरायोड़ौ—भू. का. कृ. [स्त्री. वधरायोड़ी] १ आगे बढ़ाया हुआ, अग्रसर किया हुआ. २ वृद्धि कराया हुआ/किया हुआ. ३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ाया हुआ. ४ कटवाया हुआ. ५ देवताओं को नारियल आदि फोड़ कर चढ़वाया हुआ. ६ विस्तार कराया हुआ, लंबा कराया हुआ. ७ बोलाया हुआ, बुलवाया हुआ ।

वधरावणौ, वधरावबौ—देखो 'वधराणौ, वधराबौ' (रू. भे.)

वधरावणहार, हारौ (हारी), वधरावणियौ—वि० ।

वधराविग्रोड़ौ, वधरावियोड़ौ, वधराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधरावीजणौ, वधरावीजबौ—कर्म वा० ।

वधरावियोड़ौ—देखो 'वधरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वधरावियोड़ी)

वधरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आगे बढ़ा हुआ, अग्रसर हुवा हुआ. २ वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. ३ त्रुटित हुवा हुआ, टूटा हुआ. (चूड़ी आदि) ४ कटा हुआ. ५ फोड़ा हुआ, फूटा हुआ, तोड़ा हुआ. (नारियल आदि) ६ विस्तारित, विस्तृत ।

(स्त्री. वधरियोड़ी)

वधरोम, वधरौमौ—सं. पु.—सुग्रर, वराह । (ग्र. मा , ह. नां. मा.)

रू. भे.—बधरोम ।

वधांमण, वधांमणउ—देखो 'वधांमणौ' (रू. भे.)

उ०—जाय हुइ बेटउ, तउ ग्रावइ लोक भेटउ, कीजइ **वधांमणउं**, सकल लोक ग्रांणंदणउं । —व. स.

वधांमणी—सं. स्त्री.—देखो 'वधांमणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मागइ मांत **वधांमणी**, धव धव धाया लोक । ताहरु माधव ग्रावीउ, ग्राज समाविन सोक । —मा. कां. प्र.

उ०—२ ग्रावी नै वन पालक दीध **वधांमणी** रे, गुरु आगमन प्रघोस । वांदिवा चाल्यौ निज परवार सुं रे, हौ न्रप तेहनै संतोस ।
—वि. कु.

उ०—३ राजडीउ भाथाइत जेउ, नइ केल्हण रइबारी बेउ । राउल भणी गया परि सुणी, वेगइ मांगइ **वधांमणी** । —कां. दे. प्र.

वधांमणौ—सं पु. [सं. वर्द्धमानकम्] १ स्वागत, अगवानी ।

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति राजांन राजावत ग्रैराव रै रिणखेत हाथी ग्रायौ छै । रिण जीत नगारा धुबै छै ।

फतै रा सैदांना वागा छै। जस जैत रा डंका वाजिग्रा छै। कुसळखेम ग्रांणंद रा **वधाइदार** दौड़िया छै। घरां साम्हां फौजां रा घड़ूस चालीग्रा छै। ग्रावै छै सु किण भांत बखांणीजै छै। पातसाह रा डेरा हसंम रखत तखलूग्रां हूंता सु ग्रांणि थांणें दाखलि कीग्रा छै। ग्रजमेर रा थांणा री जमीत कीजै छै। घरि घरि मंगळाचार ग्रांणंद **वधांमणां** कीजै छै। घणां माल निजराति उवारीजै छै।
—रा. सा. सं.

२ ग्रादर, सत्कार, मान सम्मान।

३ ग्रानन्द, उत्साह, खुशी। (उ. र.)

उ०—१ ग्रम्हारइ है, ग्राज **वधांमणा**, सहेली है गावउ मंगलच्यार। पहिलउ है मंगल माहरइ, सहेली है गावउ ग्ररिहंत देव। तित्थंकर त्रिभुवन तिलौ, कर जोड़ी है। करि सुरनर सेव।
—स. कु.

उ०—२ निबौजी फतै करै नै गांव धिणलै पधारिया, **वधांमणा** हुवा।
—वीरमदै सोनगरा री बात

४ किसी के स्वागत में या ग्रानन्द या खुशी में गाया जाने वाला गीत।

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नगर, वाजै सुसर **वधांमणा**। वाजत्र सुतांन खटत्रीस वगि, सौभै ग्यांन सुहांमणा।
—रा. रू.

५ शुभ समाचार या शुभ सन्देश सुनाने की क्रिया या भाव।

६ उक्त समाचार सुनाने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार।

रू. भे.—बदावणौ, बधांमणौ, बधावणौ, वद्धांमणौ, वधांमण, वधांमणउ, वधावणौ।

ग्रल्पा.,—वधांमणी।

वधांमणौ, वधांमबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

वधाग्रणौ, वधाग्रबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

वधाइ—देखो 'बधाई'।

उ०—**वधाइ** वधाई जसोदा वधाई।
—नागदमण

वधाइदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

उ०—फतैरा सैदांनां वागा छै। जस जैत रा डंका वाजिग्रा छै। कुसळखेम ग्रांणंद रा **वधाइदार** दौड़िग्रा छै।
—रा. सा. सं.

वधाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

उ०—सिवौ नदी तिरनै साहजादी नूं ले नीसरियौ। सारै **वधाई** वांटी। साहजादी सिवै सूं बहोत राजी हुई। बहोत वधाई दीवी। घोड़ो सिरेपाव दियौ।
—नैणसी

वधाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

उ०—विळकुलै **वधाईदार** वधि, ग्रांणंद उछब ग्रथाह सूं। ग्रागम्म खवर 'ग्रभसाह' री, जाय कहै 'जैसाह' सूं।
—सू प्र.

वधाउ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

उ०—महि वीतां दस मास, जांम न्रप कुंवर जनम्मै। **वधाउवां** जिणवार 'ग्रजै' बहु दरब उधम्मै।
—सू. प्र.

वधाउड़ौ, वधाऊड़ौ—देखो 'बधाऊ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

वधाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

उ०—ए उछाह करंता ग्राया, ग्रागै जनक **वधाऊ** ग्राया।
—रांमरासौ

वधाऊहार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

उ०—इसौ ग्रांणंद देखि के कटक मांहे थै **वधाऊहार** ग्रागै वदोवदि दौड्या।
—वेलि टी

वधाणौ, वधाबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसा रंग उच्छाह सूं, रांम ग्राया। बधी मात कौसल्या ग्राए **वधाया**।
—सू. प्र.

उ०—२ साथ सारौ ग्रमलां सूं लाल्हरतौ थको वहै छै। बधाईदार ग्रागै वधाइयां छै। सू **वधाई** प्रांण दीवी छै।
—रा. सा. सं.

वधाणहार, हारौ (हारी), **वधाणियौ**—वि०।

वधायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वधाईजणौ, वधाईजबौ—कर्म वा०।

वधापण—देखो 'बूढ़ापण' (रू. भे.)

वधापौ—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

वधायक—वि. [सं. बृध्-वर्धयते] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उ०—वधै राज सुख विहद, वधै हित संपत **वधायक**। ग्रवर वधै दिन इतौ, वधै पल पल वरदायक।
— सू प्र.

२ देखो 'विधायक' (रू. भे.)

३ देखो 'विधेयक' (रू. भे.)

वधायोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वधायोड़ी)

वधारण—वि [सं. वृद्धि-कार:] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला।

२ खींचने वाला, लम्बा करने वाला।

३ त्रुटित करने वाला, तोड़ने वाला।

वधारणौ, वधारबौ—क्रि. स. ["वधरणौ" क्रिया का प्रे. रू.] १ ग्रागे बढ़ाना, ग्रग्रसर करना, ग्रागे जाने के लिये प्रेरित करना।

उ०—'रूपां' 'पातां' 'धांधळां' छळ जोधांण नरिंद। वंस छत्रीमां झलियां, धंस **वधारण** दुंद।
— रा. रू.

२ वृद्धि करना, बढ़ाना। (उ. र.)

उ०—१ वनि वनि विकसइं वेउल खेउ लगाडइं चींति । दीठा द्राखह मंडव मंड **वधारइं** प्रीति । —जयसेखरसूरि

उ०—२ देवर माहरि घरि नहीं, ऊठी गिउ आखेटि । प्रीऊडा-पंजरि पापीइ, जलण **वधारिउ** जेठि । —मा. कां. प्र.

३ विस्तार करना, फैलाना, लम्बा करना ।

उ०—१ वधि रां' ण सुवप **वधारियौ**, असमांण छिब्रतौ आबियौ । —सू. प्र.

उ०—२ सिखा फरहरती, उत्तरासंगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउ जनोइ सिर भद्रिउं तिलक **वधारिउं**, गायत्री साधनुं । —व. स.

उ०—३ ऊणी राजा जोवा गयु, दीठूं खडग रलिया अति थयु । वेगि लेई **वधारू** चीर, पिहिरी खंड नीसरयु वीर । —नळाख्यांन

उ०—४ राज गरीब निवाज, जेण प्रहळाद उबारै । राज गरीब निवाज, द्रोपदा चीर **वधारै** । —गजउद्धार

४ मान देना, इज्जत देना, सम्मान ।

उ०—१ सु पछै रावळ घड़सी धरती वाळी, तरै सारां विखायतां नूं **वधारिया** तरै महिपां नूं कह्यौ—'थे माहरी वडी चाकरी पोहता छौ, सु थे मांगौ जितरी धरती म्हे थांनूं दां । —नैणसी

उ०—२ पाछै जिण दिन तख्त बैठियौ छत्र धारियौ ताहरां बहरांम कवी से ने तेड़ पूरौ **वधारियौ** । —नी. प्र.

५ काटना, कतरना, टुकड़े करना ।

६ किसी देवता को चढ़ाने के लिये नारियल आदि को फोड़ना, तोड़ना ।

७ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ना, समाप्त करना ।

वधारणहार, हारौ (हारी), वधारणियौ—वि० ।

वधारिओड़ौ, वधारियोड़ौ, वधारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधारीजणौ, वधारीजबौ—कर्म वा०

बंदारणौ, बंदारबौ, बंधारणौ, बंधारबौ, बदारणौ, बदारबौ, बधारणौ, बधारबौ, बनारणौ, बनारबौ, बाधारणौ, बाधारबौ, वाधारणौ, वाधारबौ । —रू. भे. ।

वधारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ आगे बढ़ाया हुआ, अग्रसर किया हुआ, बढ़ने के लिए प्रेरित किया हुआ. २ वृद्धि किया हुआ, बढ़ाया हुआ. ३ विस्तार किया हुआ, फैलाया हुआ, लम्बा किया हुआ. ४ मान, सम्मान व इज्जत दिया हुआ. ५ काटा हुआ, कतरा हुआ, टुकड़े किया हुआ. ६ फोड़ा हुआ, तोड़ा हुआ. (नारियल) ७ तोड़ा हुआ, समाप्त किया हुआ. (मांगलिक पदार्थ)
(स्त्री. वधारियोड़ी)

वधारौ—देखो 'बधारौ' (रू. भे.)

उ०—१ दिआ **वधारा** देस दे, हैंवर द्रव्व हसत्ति । पतिसाही थां ऊपरां, यू कहिओ असपत्ति । —वचनिका

उ०—२ थया हरख सौ गुणा, भड़ां चौगुणा **वधारा** । साज हूंत गजराज, किताइ धजराज सिरा रा । —रा. रू.

उ०—३ आवियां सेव पावौ उतन्न । धर सहत **वधारा** बिगुण धन्न । —सू. प्र.

वधाव—देखो 'बधाव' (रू. भे.)

उ०—नितु नितु जोसी पूछीइ, नितु नितु सुकन मुभाव । नित नित निरति विहूणडां, आबिइ वली **वधाव** । —मा. कां. प्र.

वधावणौ—देखो 'वधांमणौ' (रू. भे.)

उ०—महाराय स्री कल्यांणमलजी जन्म महोच्छव मांगळिक **वधावण** कराया । —द. वि.

वधावणौ, वधावबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ भलौ भलौ सारौ जग भाखै, कही न लाई वात कई । मागज धरां **वधावण** मोटां, मोटी पाघ संसार मई । —द. दा.

उ०—२ सहू महाजन हरखीया, कोण देस कहौ कुणि ठांमि ? रावळी पोळै आवीया, पौळचा वेगी **वधावउं** जाह । —बी. दे.

उ०—३ इणि परि राउ **वधावीइ**, मनि आंण्यां हे परमांणंद । नयर लोक आसांचरीजि' जउ इम बोलइ ए 'हीराणंद' । —हीराणंद सूरि

वधावणहार, हारौ (हारी), वधावणियौ—वि० ।

वधाविओड़ौ, वधावियोड़ौ, वधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधावीजणौ, वधावीजबौ—कर्म वा० ।

वधावधि, वधावधी—देखो 'बढाबढी' (रू. भे.)

उ०—वधावधि राड़ि करै खगवाह । सत्रां 'परसावत' 'माहवसाह' । —सू. प्र.

वधावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वधावियोड़ी)

वधावौ—देखो 'बधावौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीर पुरस री स्त्री नै आ वात रुची नहीं, तिण सूं कहै है कि हे सखियां फगत ऊजळा कपड़ा राखण वाळां रा थे **वधावा** गाओ पण वीर पुरस नै पिछांणौ नहीं । —वी. स. टी.

उ०—२ घणौ रस रहियौ बडा **वधावा** हुआ । —गौड़ गोपाळदास री वारता

वधिक-सं. पु. [सं. वधकः] १ हत्या करने वाला, हत्यारा, वध करने वाला ।

२ प्रहार, घात व चोट करने वाला, घातक ।

३ जल्लाद ।
४ शिकारी, व्याध ।
५ मृत्यु ।
रू. भे.—वधक, बधिक, वधक ।

वधियोड़ौ—देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वधियोड़ी)

वधिर—देखो 'बधिर' (रू. भे.)

वधिरपणौ—देखो 'बधिरपणौ' (रू. भे.)

वधु, वधू–सं. स्त्री. [सं. वधुः, वधूः] १ ऐसी युवती जिसका विवाह तुरन्त ही हुआ हो, दुलहिन, नव विवाहिता ।
२ पुत्र-वधू ।
३ सम्बन्ध की दृष्टि से छोटे की स्त्री ।
४ पत्नी ।
५ स्त्री, औरत ।
रू. भे.—बधु, बधू ।

वधूवर–सं. पु. [सं. वधू-वर] १ दूल्हा । (उ. र.)
२ पति ।

वधेतौ—देखो 'बधतौ' (रू. भे.)

वधेपौ—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

वधेवधि—देखो 'बढाबढी (रू. भे.)
उ०—समोभ्रम 'दीप' हिंदाळ' सधीर । वधेवधि लोह करै नर वीर ।
—सू प्र.

वधोतरी—देखो 'बढोतरी' (रू. भे.)

वधोवधू, वधोवधौ–स. पु.—मवेशी को चरने के निमित्त हांकते समय किया जाने वाला शब्द ।

वधौ—देखो 'बाधौ' (रू. भे.)
उ०—ध्रम सनेह कुळ मारग धारा । प्रांण हूंत वधि आप पियारा ।
—सू. प्र.
(स्त्री. वधि, वधी)

वध्धाणौ, वध्धावौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

वध्धाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

वध्धाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)
उ०—सुणि अविया बहु सुधन, दुझ्ळ वध्धाईदारां । सझै अवासां डंबर, चित्र अवछाड़ि बजारां । —सू. प्र.

वध्धावणौ, वध्धावबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)
उ०—सुमंत्रा अनै केकई मात साई । भली भांत वध्धाविया च्यार भाई । —सू. प्र.

वध्धावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वध्धावियोड़ी)

वध्रारु–सं. पु.—शाक विशेष
उ०—वालु नइं वेलातरु, वेऊ वेतस वांणि । वध्रारु वाहलु लीउ, वाउलीउ वखांणि । —मा. कां. प्र.

वनंचर—देखो 'वनचर' (रू. भे.)
उ०—वदियौ स्वांन वनंचरां, नहिं लाज निहारै । मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै । —सू. प्र.

वन–सं. पु. [सं.] १ जंगल, विपिन ।
उ०—कुंजर ज्यूं जो केहरी, तूं लेतौ तालीम । काळ में रखवाळत कवण, संपूरण वन सीम । —बां. दा.
पर्या०—अटवी, अरण्य, आरण, ऊंख, कंतारक, कनवा, कछ, कांतार, कांनन, खंड, गहन, झक, रन, रिख, विपन, त्रिगवात ।
मुहा०—वन में जाणौ=दिशा (मैदान) जाना, (साधु के लिये)
२ जल, पानी । (ह. नां. मा.)
३ जल का स्रोत ।
४ वाटिका, बगीचा ।
५ कमल ।
६ कमल के फूलों का दस्ता ।
७ आवास स्थान, घर ।
८ काष्ठ, लकड़ी ।
उ०—आतुर चित्त आगळी, धांम विसरांम सुधारे । वन चंदण बावना, अगर घणसार अपारे । महल-काठ चुगि विमळ, पहल, रूई व्रत पूरित । ओप सदळ औछाड़, अमळ परिमळ आंकूरित । उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत गुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी । —रा. रू.
९ किरण, रश्मि ।
१० शंकराचार्य के अनुयायी दशनामी संन्यासियों की एक शाखा ।
रू. भे.—बण, बन, बन्न, वण, वनु, वन्न ।
अल्पा.—बंनी, बणी, वणी, वन्नि, वन्हि ।
मह.—वनाळ ।

वनअमावस्या—सं. स्त्री.—श्रावण मास की अमावस्या, हरियाळी अमावस्या ।

वनउक, वनओक–सं. पु. [सं. वन+ओकम्, वनौक] १ वानर, बंदर । (अ. मा., ह. नां. मा.)
२ वन्य-पशु ।
३ वानप्रस्थाश्रमी, तपस्वी, मुनि ।

वि.—वन में निवास करने वाला, बनवासी।

रू. भे.—बनउक, बनग्रोक।

वनकर-सं. पु. [सं. वन्यकर] सूर्य, भानु।

रू. भे.—बनकर।

वनखंड-सं. पु. [सं. वनखंडं] वन, जंगल।

उ०—१ जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ **वनखंड** दाह। जिण रित मालवणी कहइ, कुंण परदेसां जाह। —ढो. मा.

उ०—२ **वनखंड** गिर झंगर नह वसियौ, हूं ग्री देख कतूहळ हसियौ। —सू. प्र.

रू. भे.—बणखंड, बनखंड।

वनखंडी-सं. पु. [सं. वनखंड+रा. प्र. ई.] १ साधु, संन्यासी, तपस्वी।

२ वनवासी।

रू. भे.—बणखंडी, बनखंडी।

वनगव, वनगाय, वतगाव-सं. स्त्री. [सं. वनं+राज. गव] १ नीलापन लिये हुए भूरे रंग का गाय के ग्राकार का एक वन्यपशु, नीलगाय। २ एक प्रकार का तेंदू वृक्ष।

रू. भे.—बनगव, बनगाय, बनगाव।

वनड़ी—देखो 'बनी' (ग्रल्प., रू. भे.)

वनड़ौ—देखो 'बनौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—होय रंग हबोळोय मांढहडौ। वळियौ जनवास हमैं **वनड़ौ**। —पा. प्र.

वनचर, वनचरी, वनचरु, वनचारी-वि. [सं. वनचर] (स्त्री. वनचारण, वनचारिण) १ वनमें विचरण करने वाला।

उ०—हाडा, कूरम राठवड़, गोखां जोख करंत। कहज्यौ खांना खांननै, वनचर हुवा फिरंत। —महाराणा ग्रमरसिंह

२ वनवासी, उदासी।

उ०—ग्ररजुन वनचर लागउ वादु, करउं झूझु ऊतारउं नादु। —पं. पं. च.

सं. पु.—१ जंगली प्राणी, जंगली पशु।

उ०—जळचर वनचर ग्रांतरौ, जळचर जळ में जोर। **वनचर** ग्रति वेढीमणौ, जो कछु लाभै कोर। —गज उद्धार

२ बंदर, वानर। (ग्र. मा., नां. मा.)

३ हनुमान, बजरंगी।

उ०—हणु मिलत धुर हर दीध सिर हथ, रिधु बजरंग हुवौ समरथ। चवै रघुवर वयण **वनचर**, सीत सुध साजै। —र. रू.

४ हरिण।

५ शरभ नामक जंगली जंतु।

६ एक प्रकार का जंगली घास।

रू. भे.—बणचर, बनचर, बनचरी, बनचारी, वणचरि, वनंचर, वनेचर।

वनज-वि. [सं. वन+जन्य, वनजः वनजं] वन में उत्पन्न होने वाला।

सं. पु.—१ कमल २ वृक्ष ३ वनस्पति ४ हाथी। ५ सुगन्ध युक्त तृण। ६ नील कमल का पुष्प। ७ जंगली कपास का पौधा।

रू. भे.—बनज।

वनझंगर-सं. पु.—वन की झाड़ी समूह।

उ०—इण भांत रा **वनझंगरां** मांहै हरिण, सूग्रर, सांबर, रोज, खरगोस, गैंडा, खग भांति भांति रा जानवर चरै छै। —रा. सा. सं.

वनडंडकारण—देखो 'दंडकारण्य' (रू. भे.)

वनता—देखो 'वनिता' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वनतुळसी-सं. स्त्री. [सं. वनं+तुलसी] तुलसी के समान मंजरी व पत्तियों वाला बर्बर नाम एक पौधा विशेष, बर्बरी।

वि. वि.—यह चरपरी, रूचिकारक, गरम तथा कफ, वात रोग ग्रौर नेत्र रोग नाशक है तथा सुख पूर्वक प्रसव कराने वाली है।

रू. भे.—बनतुळसी।

वनद-सं. पु. [सं. वनदः] मेघ, बादल।

रू. भे.—बनद।

वनदरसाव-सं. पु.—इन्द्र। (ग्र. मा.)

वनदेव-सं. पु. [सं. वनदेवता] (स्त्री. वनदेवी) वन का ग्रधिष्ठाता देवता।

वननाथ-सं. पु. [सं.] १ समुद्र।

२ मलय-वन।

वननिधि-सं. पु. [सं.] समुद्र।

रू. भे.—बननिधि।

वनपत, वनपति, वनपती-सं. पु. [सं. वनपति] वन का राजा सिंह, शेर। (ग्र. मा.)

उ०—१ कोरण सुभट घटा घट कटकां, त्रजड़ां हथ दांमणी तप। 'सूर' तणौ धरहरै नरेसुर, वनपत यर खैगरै वप—देवराज रतनू

उ०—२ लंक वन पति हंसगति को करमण, मनमंत —ढो. मा.

रू. भे.—बनपत, बनपति, बनपती।

वनपाळ, वनपाळक-सं. पु. [सं. वनपालकः] वन या वगीचे का रक्षक, बागवान, माली।

रू. भे.—बनपाळ, बनपाळक।

वनफळ-सं. पु. [सं. वनं+फलं] वन के फल-फूल।

रू. भे.—बनफळ ।

वनबिलाव-सं. पु. [सं. वनं+बिडालः] १ बिल्ली की जाति का परन्तु कुछ बड़े आकार का एक जंगली हिंसक जंतु ।

वि. वि.—इसके शरीर का रंग मटमैला होता है और कानों का बाहरी भाग काला होता है। यह प्रायः झाड़ियों में रहता है और चिड़ियों को पकड़-पकड़ खाता है ।

२ उक्त प्रकार के जन्तुओं का वर्ग ।

रू. भे.—बनबिलाव ।

वनभ्रंग-सं. पु. [सं. वनभृंग] वन का भ्रमर ।

उ०—जिम केतकी वनभ्रंग, तिम सुगुरु सुं मुझ रंग ।
—समय सुंदरगणि

वनमय-वि. [सं. वनं+मय=युक्त] वनों से युक्त या परिपूर्ण ।

रू. भे.—बनमय ।

वनमांनस, वनमांनुस-सं. पु. [सं. बनं+मानुष] १ एक जंगली जंतु जो बन्दर से कुछ उन्नत और मनुष्य से कुछ मिलता-जुलता होता है।

२ उक्त प्रकार के जंतुओं का वर्ग जिसमें गोरिल्ला, चिपेंजी, ओरंग उटंग आदि जंतु हैं।

रू. भे.—बनमांनस, बनमांनुस ।

वनमाळ, वनमाळा-सं. पु. [सं वनमाला] वन के पुष्प एवं पल्लवों की गुंथी हुई कंठ से पांव पर्यन्त लटकने वाली माला ।

रू. भे.—बनमाळ, बनमाळा, वन्नमाळा ।

वनमाळी-वि. [सं.] वनमाला धारण करने वाला ।

सं. पु.—१ ईश्वर । (नां. मा.)

२ विष्णु ।

उ०—पर प्रहळाद तणी प्रतपाळी । वळ घू अखी कियौ वनमाळी।
—र. ज. प्र.

३ श्री कृष्ण । (अ. मा.)

उ०—भीमकराय भणइ रुखमइया, वर वनमाळी जांणु । छपन कोडि जादव नौ राजा, वंस विसुध वखांणु । —रुकमणि मंगळ

४ बागवान, माली ।

उ०—वन माळी रै पुत्तर जायो । जिण तुळछां रो बन रौपायौ ।
—लो. गी.

रू. भे.—बनमाळी, बनमाली, बनवारी, वनवारी, वन्नमाळी, ।

वनमुरगौ-सं. पु. यौ. [सं. वनं+फा. मुर्ग] जंगली मुर्गा जो साधारण मुर्गे की अपेक्षा कुछ बड़ा होता है, वन-कुक्कुट ।

रू. भे.—बनमुरगौ ।

वनमूत-सं. पु. [सं. वनमूतः] बादल, मेघ ।

वनर—देखो 'वांनर' (रू. भे.) (नां. मा.)

वनरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

वनराइ, वनराज, वनराय, वनराव-सं. पु [सं. वनराज] १ सिंह, शेर ।

उ०—पद वनराव न पांमियौ, दुरद दिखाळै दांत । सीह थयौ वन साहिबौ, ठींगांरी संकरांत । —बां. दा.

२ बड़ा जंगल, विशाल वन ।

[सं. वनराजि] ३ बृक्ष, पेड़, वृक्ष समूह ।

उ०—१ धमक खोद धरणी सहै, काट सहै वनराय । फुटक वचन असली सहै, ओरां सह्या न जाय । —स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणी वनरायौ जी । थुड़ साखा अंकुरित थइ, सोह वसंतइ पायौ जी । —वि. कु.

४ वृक्ष पंक्ति ।

५ पेड़ पौधे, वनस्पति आदि ।

उ०—२ पोस में ओस पड़ै निस, रुदन करै वनराय । दोस विना पिउ रोस करै, तै सोस ज थाय । —ध. व. ग्रं.

६ वन, जंगल ।

उ०—कीधी परतग्या इसी, मन सेती महाराय । पदमणि परणुं तो घरि रहुं, नहिं तौ गिरि वनराय । —प. च. चौ.

७ वनखण्ड ।

रू. भे.—बणराइ, बणराइ, बणराज, बणराब, बणराव, बनराइ, । बनराज, बनराय, बनराव, बणराई, वणराइ, वणराई, वणराज, वणराय, वणराव ।

वनरवाल, वनरवालि—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—तलिआं-तोरण ऊभीआं घरि-घरि बांधीआं ए बनर वालि । गुहरइं मादल रण कीआं तिहिं नाचइं ए नवरंगि बाल ।
—हीरांणंद सूरि

वनरावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

उ०—आस्रम चौथे आयके इक बनरावन जावै । आस्रम चौथे आयकै इक तीरथ दिस धावै । —अर जुनजी बाहरठ

वनरुह-सं. पु. [सं. वनरुहं] कमल का फूल ।

वनरोई,वनरोही-सं. पु.—१ वन, जंगल ।

२ बीहड़वन, दुरुह जंगल ।

रू. भे.—बनरोई, बनरोही ।

वनलक्ष्मी-सं. स्त्री. [सं.] १ वन की शोभा, वनश्री ।

२ केला ।

वनलौ—देखो 'बनौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वरसंता सहरां वीटांणौ, नमख न हुए नराळो । डांणां आज लगौ डुंगरियौ, वनलौ कांठळ वाळौ । —अज्ञात

वनवारी—देखो 'वनमाळी' (रू. भे.)

उ०—सोधन पीवजी साज संवारी, अब वेगि मिळौ तन जाइ वनवारी। —दादूबांणी

वनवास-सं. पु. [सं.] १ घर, नगर व बस्ती छोड़ कर जंगल का निवास।

उ०—वस राज (जी) रौ राखणी, कुण धणी आयत होयबै। वनवास अती दुख घणा, क्यां जांणां क्या जोय बैं। —रीसालु री बात

२ उक्त प्रकार के निवास की क्रिया, दशा, व्यवस्था, विधान।

मुहा.—वनवास दैणौ=घर से दूर जंगळ में उदासी बन कर रहने की आज्ञा देना।

रू. भे.—बनबास, बनवास, वनोवास।

अल्पा.—बनवासौ, वणवासु, वनवासु, वनवासौ, ।

वनवासी-वि. [सं. बनवासिन्] १ वन में निवास करने वाला, बसने वाला।

२ उदासी, तपस्वी ।

सं. पु.—१ ऋषि-मुनि, संन्यासी, २ वानप्रस्थी ।

रू. भे.—बनवासी।

वनवासु, वनवासौ—देखो 'वनवास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बारह ए वरस वणवासु नाठै हींडिवुं तेरमई ए। अम्हि किम ए जांणिसुं, तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए। —पं. पं. च.

उ०—२ वनवासौ चवदै वरसां रौ, वांमां संग बिळावै। बीते पलही कलप बराबर, जिकै दिवस किमि जावै। —र. रू.

वनविळासिणी-सं. स्त्री.— वन में विलास या विचरण करने वाली देवी।

वनवीरोत-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

वनसण-सं. स्त्री. [सं. वनशण] शण-पुष्पी नामक औषधि विशेष। (निघंटु)

रू. भे.—बनसण।

वनसपति, वनसपती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—१ **वनसपति** फूली फळी, नांना रंग धरंति। तिम तूं यौवन जांणीजै, खिण एक-मांहि खिरंति। —मा. कां. प्र.

उ०—२ वनसपती पुहपति विसतारै। भंवर गुंजार करै सुर भारै। —सू. प्र.

उ०—३ वनसपती सूं वेलां लपटनै रही छै। —रा. सा. सं.

वनसी—१ देखो 'बंसी' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

वनासपति, वनासपती—देखो 'बनासपति' (रू. भे.)

वनस्थळि, वनस्थली-सं. पु. [सं. वनस्थली] १ वनों से घिरा हुआ प्रदेश। अरण्य देश।

२ वन का भाग।

रू. भे.—बनसथळी, बनस्थळी।

वनस्पति-सं. स्त्री. [स. वनस्पतिः] १ जमीन से अंकुरित होकर उत्पन्न होने वाले पेड़, पौधे, लताएं, घास आदि।

२ बड़ा जंगली वृक्ष जिसमें पुष्प लगे बिना ही फल लगते हों।

३ वृक्ष, पेड़।

रू. भे.—बनसपति, बनसपती, बनस्पति, बनस्पती, बनासपति, बनासपती, वनसपति, वनसपती, वनासपति, वनासपती।

वनस्पतिसास्त्र-सं. पु. [सं. वनस्पति+शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधों की उत्पत्ति, गुणधर्म तथा जातियों का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया हो, वनस्पति-विज्ञान।

रू. भे.—बनस्पति-विद्या।

वनागनी, वनाग्नि-सं. स्त्री. यौ. [सं. वन+अग्नि] वन मे लगने वाली आग, दावानल।

रू. भे.—बनागनी, बनाग्नि, वनिअगनि।

वनात—देखो 'बनात' (रू. भे.)

उ०—धणी रंग रंग री वनात मुखमल कळाबूती सोने रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजे छै। —रा. सा. सं.

वनाती—१ देखो 'बनाती' (रू. भे.)

उ०—वनाती झूलां घातियां रहकलां, इकां, खड़सलां जूता छै। सुहालियां थकां घोड़ां री मांम पाड़ै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बनात' (रू. भे.)

उ०—घोड़ौ तो भीजै, पिया, नवलखौरै, कोई भीजै रे **वनाती**, भीजै रे वनाती, रे साज। —लो. गी.

वनाधिप, वनाधिपति-सं. पु. [सं. वन+अधिपति] सिंह, शेर।

रू. भे.—बणाधिप, बणाधिपति।

वनापार-वि.—अत्यधिक, अपार।

उ०—मौसरां तांण घमसांण रै मागड़ै, पागड़ै जैत खाटै **वनापार**। जोधपुर नाथ कर कोप पुठै जकां, ऊतन छूटै तकां हुए आधार। —जवांन जी आढौ

वनायु-सं. पु. [सं.] १ एक प्रचीन देश जहां के घोड़े प्रसिद्ध होते थे।

२ उक्त देश का निवासी।

३ पुरुरवस् राजा का उर्वशी से उत्पन्न पुत्र।

४ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के दस प्रधान पुत्रों में से एक था।

वनायुज-सं. पु. [सं.] १ उक्त देश (वनायु) का घोड़ा। (डिं. को.)

२ घोड़ा (डिं को.)

वनाळ-सं. स्त्री. [सं. वन+अलिका] १ सूरजमुखी।
२ देवदाली घघरबेल, बंदाळ। (अमरत)
३ देखो 'वन' (मह., रू. भे.)

वनास—देखो 'बनास' (रू. भे.)
उ०—चढंती सुहाससर ,बनास फळंती छोळां, सुभ्र गीडुलंती बीरां करीरां सुवास। समीरां हलंती बेस गहीरां तरां री साखा, कमोद फूलंती नीरां चौगणौ प्रकास। —महाराजा मांनसिंह

वनासपति वनासपती—१ देखो वनस्पति' (रू. भे.)
उ०—गिरां खळक्कै नीर नदि, झरणा झरै अपार। वनासपति पाखर वणी, विविध अठारै भार। —गज उद्धार
२ देखो 'वनासपति' (रू. भे.)

वनि-सं स्त्री. [स. वह्नि] १ अग्नि, आग। (ना. डिं. को.)
[सं. वनिः] २ अभिलाषा ,कामना।
३ याचना।
४ देखो 'वनी' (रू. भे.)
उ०—१ पंथी एक संदेसड़इ, लग ढोलइ पैहच्याइ। विरह-वाघ वनि तनि वसइ, सेहर गाजइ आइ। —ढो मा.
उ०—२ (इसी) जु मालिण छै सु वनि वनि रै विखै केसरि चुणै छै। —वेलि टी
५ देखो 'बनी' (रू. भे.)
रू. भे.—बनि, वन्हि, बन्ही बहनि. बहनी. बेहनि, बेहनी, वनी, वन्नि, वन्हि, वन्ही।

वनिअगनी—देखो 'वनागनी' (रू. भे.)
उ०—आवै सगण अचींत, जेम वनिअगनि सिळगां। सरप विक्ख सोखवां, मंत्र आवै सुखमंगां। —रा. रू.

वनिता-सं. स्त्री. [सं.] १ पत्नी, भार्या।
उ०—वनिता-पती विदेस गय, मंदिर-मझै अद्धरयणीए बाळा। लिहइ भुयंगो, कहि सुंदरि कवण चुज्जेण। —ढो. मा.
२ स्त्री, औरत, नारी, रमणी।
उ०—वनिता रूपं रात्रि आंमणी। —धरम-पत्र
३ प्रियतमा, प्रिया, प्रेयसी।
४ स्वामिनी, मालकिन।
५ वेश्या।
६ दो सगण युक्त छै वर्णों की एक वृत्ति।
रू. भे.—बनता, बनिता, वणता, वनता, वनित्ता, वनीता।

वनितामुख-सं. पु.—मनुष्यों की एक जाति। (मारकण्डेय पुराण)
वनिता सुत-सं. पु. [सं वैनतेय] गरुड़। (डिं. नां. मां.)
वनित्ता—देखो 'वनिता' (रू. भे.)
उ०—वप सोळह सिणगार वनित्ता, लखण बतीस संजुगत ललित्ता। सोभा सारिख किरण सवित्ता, दीपै मंदर राज दुहित्ता। —गु. रू. बं.

वनिस्पत—देखो 'बनिस्पत' (रू. भे.)

वनी-स. स्त्री. [सं.] १ छोटा वन, वाटिका।
उ०—वैरि गंदिरि स लाछि सांसही, आतम पौरुस वनी समई दही। भूंटि भूंबि मुझ नारि विनोई, आथमिउं मिहर सूं मुंह जोई। —सालि सुरि
२ बीहड़ व भयावह जंगल।
३ वनस्थली, झाड़ी, कुंज।
४ देखो 'बनी' (रू. भे.)
५ देखो 'वनि' (रू. भे.)
रू. भे.—बणी, बनि, बनी, बन्नी, बन्हि, बन्ही, वणी।

वनीत—देखो 'बनीत' (रू. भे.)

वनीता—देखो 'वनिता' (रू. भे.)
उ०—सोहत बांम दिसा निज सीता, बादळ बीज प्रभाव वनीता। —र. ज. प्र.

वनीपक, वनीयक-सं. पु. [सं.] भिखारी, भिक्षुक, याचक। (ह. नां. मा.)
वनीसिख-सं. स्त्री. [सं. वह्नि-शिख] केसर। (ह. नां. मा.)

वनु—देखो 'वन' (रू. भे.)
उ०—दह दिसि इम जां वनु आरोडई। जीव विणासई तरुयर मोडइ। जां इम दलवइ पारधि लागई तांम असंभमु पेरवइ आगइ। —पं. पं. च.

वनेचर—देखो 'वनचर' (रू. भे.)
वनै—देखो 'बनै' (रू. भे.)
वनोक-सं. पु. [सं. वनौकस्] वानर।
रू. भे.—'बनोक'
वनोड़ा देखो 'बणोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—ताहरां हेमौ बोलियो-कूंभा मालांणी! थारा बाळ वनोड़ा मतां नांखै। साइयां मिळो! ताहरां कूंभो घोड़ै हूं उतरियो। —नैणसी

वनोत्सरग-सं. पु. [सं. वन+उत्सर्ग] १ देव मन्दिर, वापी, कूप उपवन आदि बनवा कर सार्वजनिक उपयोगार्थ, शास्त्र विधि से दिया जाने वाला दान, उत्सर्ग।
२ उक्त प्रकार के दान की शास्त्रोक्त विधि।
वनोद-सं. पु. [सं. वनोदय] १ कमल।
२ देखो 'विनोद' (रू. भे.)
वनोदनैणी-वि. स्त्री.— जिसके नैत्र कमल के सदृश्य हों, कमल-नयनी।

उ०—नाहरां नु करै जेर जाहरां **विनोदनैणी**, प्रचा दोय राहरां। नु देर लैणी पेस। दिळी ईस जिसा फेर नरां नू ऊथाप दैणी, दीना नाथ 'सैणी' वीस करां नूं आदेस। —नवलजी लालस

वनोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वनोळौ—देखो 'बदोळौ' (रू. भे.)

वनोवास—देखो 'वनवास' (रू. भे.)

उ०—किसा दीह आंणंद-विन्नोद कीधा। लहै भूप आग्या **वनोवास** लीधा। —सू. प्र.

वनौ—देखो 'बनौ' (रू. भे.)

उ०—१ रहियौ एकज रात, कोलूमड पाबू कमंद। पमंग चढ़ै परभात, वरवा धण खड़िया **वनौ**। —पा. प्र.

उ०—२ दुखां रौ डेरियौ वीकानेरियौ दिनां रौ दादौ, दीठां सीस ढेरियौ हेरियौ जरादूत। भूटे लोब लाग **वनौ** हेरियौ बखाकभंड, पीढ़ी सात मातै पांणी फेरियौ कपूत। —उदैभांण बारहठ

वनौकस—सं. पु. [सं.] १ बंदर, वानर।

२ वनवासी।

वनौखद वनौसद—सं. स्त्री. [सं. वन+औषधि] १ जंगल में पैदा होने वाली औषधि, जड़ी, बूंटी।

वन्न—देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—सीहां देस विदेस, सम, सीहां किसा उतन्न। सीह जिकै वन संचरै, सो सीहां रौ **वन्न**। —बां. दा.

वन्नमाळ—देखो 'वनमाळा' (रू. भे.)

वन्नमाळी—देखो 'वनमाळी' (रू भे.)

उ०—तिसी तंत ताती बजी ताल ताळी, मंडचौ पाव आंरभियौ **वन्नमाळी**। —ना. द.

वन्नर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

उ०—मूगले कहिय मुहि मारि मारि, धूणियउ कोट काळइ कंधारि। पतिसाह तणै भालिय पखांण, जुधि चडिय लंक **वन्नर** जांण। —रा. ज. सी.

वन्नरमाळ, वन्नरमाळा, वन्नरवाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दिल्ली नगरी-रै साज-रो आज कांई कैणौ। घर घर फरियां अर **वन्नरमाळावां** बांधीजै है। चारू कांनी वाजा वाजै है। —वरसांगठ

उ०—२ अति अंब मौर तोरण अजु अंबुज, कळी सु मंगळ कळस करि। **वन्नरवाळ** बंधांणी वल्ली, तरुवर एका बियै तरि। —वेलि

वन्नि—१ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ केसरि कथिन्न सांभळि कन्नि, बाउळि कि **वन्नि** लागउ वहन्नि। 'वीकाहर' राजा ए वखांण। जाळोवळि सीतउ अिस जांण। —रा. ज. सी.

उ०—२ एकइ **वन्नि** वसंतड़ा, एवड़ अंतर काई। सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाई। —अ. वचनिका

२ देखो 'वनि' (रू. भे.)

वन्निजणौ, वन्निजबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—जिम चिंतामणि रयण मझि, उत्तम सलहिज्जइ। जिम कणयाचल गिरिह मझि, किरि धुरहि ठविज्जइ। जिम सोह गह वत्थु मझि, ससहरु **वन्निज्जइ**, जिम तरुह मझि वंछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ। —अभयतिक यति

२ देखो 'विणजणौ, विणजबौ' (रू. भे.)

वन्निजियोड़ौ—१ देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विणजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वन्निजियोड़ी)

वन्नीयणौ, वन्नीयबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—तीणइ थापिउ तिहू यण सारौ, वीजउ अमरापुरि अवतारौ। हथिणाउरपुरु **वन्नीयए**। —पं. पं. च.

वन्नीयोड़ौ—देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वन्नीयोड़ी)

वन्य—वि. [सं.] १ वन का, वन सम्बन्धी, जंगळी।

२ जंगल में उत्पन्न, जंगल की पैदाइश।

३ बर्बर, हिंसक।

४ असभ्य, अशिष्ट।

सं. पु. १ जंगली सूरन।

२ क्षीर विदारी।

३ वाराही कन्द।

४ राख।

वन्यकर—देखो 'वनकर' (रू. भे.)

वन्या—सं. स्त्री. [सं.] १ बड़ा वन, अनेक वन।

२ जल की बाढ़।

३ अश्वगंध।

६ गोपाल ककड़ी।

(४) मुद्गपर्णि।

(५) गुंजा।

वन्रमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—पूजा-पाठ निराठ, वरै **वन्नमाळां** मोखी। जागण राती जगां, दसुटण दायजां चोखी। —दसदेव

वन्हि—१ देखो 'वनि' (रू. भे.)

२ देखो 'वनी' (रू. भे.)

३ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'वह्नि (रू. भे.)

उ०—सीत न तावड मनि गणइ, दिवस न रयणी संक। भूख पिपासा न वह्नि जल, केवल यथा करंक। —मा. कां. प्र.

वन्ही—१ देखो 'वणी' (रू. भे.)

उ०—सबको सीर सपूत में, सब कोई मित सपूत। कुळरौ ढाकण होत है, ज्यूं वन्ही को सूत। —अज्ञात

२ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

वन्हौ—देखो 'बनौ' (रू. भे.)

वप—देखो 'वपु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—पेखियौ सहर जोधांण-पत, सब जण धणी संपेखियौ। वप आभ परख च्यारू वरण, लाभ नयण पण लेखियौ। —रा. रू.

उ०—२ रांम लखण सत्रघण भरथ, सूरज वंस सिंगार। एक अंस चत्र वप अवधि, ऐ चत्रधा अवतार। —सू. प्र.

वपणी-सं. स्त्री—१ नाईयों के हजामत करने का स्थान

२ देखो 'विपणी' (रू. भे.)

वपन-सं. पु. [सं.] १ बीज बोने की क्रिया या भाव।

२ शिर-मुंडाई, हजामत।

३ वीर्य।

वपराणौ, वपराबौ-क्रि. स. [सं. व्यापरणम्] १ अपने उपयोग के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था करना, उस वस्तु को किसी तरीके से प्राप्त करना। उपलब्ध करना।

उ०—मन करती जणा ई मासी सिरै गाय वपराय लेती। गायां री ई एक छोटी-मोटी छांग बणगी ही। —फुलवाड़ी

२ व्याप्त करना, संचार करना, फैलाना।

उ०—वपरातौ ठाडोळ, तूठजै वार खेगाळां। दुखियां मेठण दुक्ख विड़द धण संपत वाळां। —मेघ

३ उपयोग करना, उपभोग करना, इस्तेमाल करना।

वपराणहार, हारौ (हारी), वपराणियौ—वि०।

वपरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वपराईजणौ, वपराईजबौ—कर्म वा०।

वपराणौ, वपराबौ, वपरावणौ, वपरावबौ—रू भे.।

वपरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ उपयोग या आवश्यकता पूर्ति के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था किया हुआ, प्राप्त किया हुआ, उपलब्ध किया हुआ. २ व्याप्त किया हुआ, संचार किया हुआ, फैलाया हुआ. ३ उपभोग किया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ।

(स्त्री. वपरायोड़ी)

वपरावणौ, उपरावबौ—देखो 'वपराणौ, वपराबौ' (रू. भे.)

वपरावणहार, हारौ (हारी), वपरावणियौ—वि०।

वपराविअोड़ौ, वपरावियोड़ौ, वपराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वपरावीजणौ, वपरावीजबौ—कर्म वा०।

वपरावियोड़ौ—देखो 'वपरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वपरावियोड़ी)

वपरीत—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—'केहर' 'कांदळ' मारकै, ऐ अगलूणी रीत। 'कांदळ' 'केहर' मारियौ, रीत कनां वपरीत। —हररांम आसियौ

वपरुच-सं. पु. [सं. वपु.+रुचि=कांति] रूप, रंग। (अ. मा.)

वपा-सं. स्त्री. [सं.] १ चर्बी।

२ मेद।

३ गुफा।

४ चीटियों या दीमक द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का टीला। वल्मीक

५ बांबी।

रू. भे.—बपा।

वपि—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—वपि—केसरिया साज बणाया। उभै सहंस सिंधुर धुज आया। —सू. प्र.

वपु-सं. पु. [सं. वपुस] १ शरीर, देह, अंग, काया।

उ०—१ खग नीर धीर अंतर खरा, मद कुंअर वपु जिम मयगल। मन बसै तेम तूं मांहरै, मौ मन वसियौ महमहण। —र. र.

उ०—२ वपु दस गुणौ, जोर नृप बधियौ। सौ गुण अनंत पराक्रम सधियौ। —सू. प्र.

२ रूप, सौन्दर्य, वरण।

३ आकार, **आकृति**।

रू. भे.—बप, बपु, बपुख, बप्प, बप्पु, वप, वपि, वपुख, वप्प।

वपुख—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—सिर नासा कांन दसन आखै, नख गाळ वपुख ना गत नाखै। भिलणौ लेखौ करै संभरणौ, बिहचण अपरभौ और गत धरणौ। —वं. भा.।

२ देखो 'वपुस' (रू. भे.)

वपुस-सं. पु. [सं. वपुषः] देवता।

रू. भे.—वपुख, वपुख्ख।

वपुस्टमा-सं. स्त्री. [सं. वपुस्टमा] काशिराज सुवर्णवर्मन् की कन्या जो

जन्मेजय को ब्याही गई थी ।

वि. वि.—इसके शतानीक व शंकुकर्ण नामक दो पुत्र थे ।

वपुस्मती–सं. स्त्री. [सं. वपुष्मती] १ सिन्धुराज की पुत्री जो राजा मरुत्त की पत्नी थी ।

२ स्कंद की एक अनुचरी ।

वप्प—देखो 'वपु' (रू भे.)

उ०—देवी वाहनं नांम कै वप्प-वाळी । देवी खग्ग सूलंधरा खप्पर वाळी । —देवि

वप्र–सं. पु. [स. वप्रः, वप्र] १ मिट्टी की दीवाल ।

२ शहर-पनाह ।

३ मिट्टी का टीला ।

४ चोटी या शिखर ।

५ नदी तट ।

६ किसी भवन की नींव ।

७ पहाड़ का उतार ।

८ शहर-पनाह का द्वार या फाटक ।

९ खाई की मिट्टी का उसके किनारे बना हुआ धुस्स ।

१० वृत्त का व्यास ।

११ खेत ।

१२ मिट्टी, धूल, रेणु ।

[सं. वप्रिन्] १३ प्रजापति ।

१४ द्वापर युग के व्यास ।

वप्रवरण–सं. पु. [सं. वप्रावरण] गढ़, किला । (अ. मा., ह. नां मा.)

वप्रौढौ–सं. पु. [सं. विवोढ़] १ पति । (ह. नां मा.)

२ दूल्हा, वर ।

वफा–सं. स्त्री. [फा.] १ निर्वाह, पालन, अमल ।

२ सद्व्यवहार, बर्ताव ।

३ प्रेम, मोहब्बत ।

४ निष्ठा, आस्था, भक्ती ।

५ सुशीलता, सज्जनता ।

वफादार–वि. [फा.] १ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, वचन निभाने वाला ।

उ०—हर बात में कौल पालणौ बडी बात छै । **वफादार** सांच रौ संग करजै, सांचौ कोल पाळणौ —नी. प्र.

२ स्वामी भक्त, नमक हलाल ।

३ कर्त्तव्य-निष्ठ ।

४ सच्चा ।

रू. भे.—बफादार ।

वफादारी, वफेदारी–सं. स्त्री. [फा. वफादारी] १ वफादार होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रतिज्ञा पालन करने की क्रिया या भाव ।

उ०—तो गोपाळदास नवाब नूं कहाई जे बात तौ म्हांसूं ही मालुम हुई छै । नवाब तुम हम सूं सलाह करो तो **वफेदारी** है । —गौड़ गोपाळदास री वारता

३ स्वामी भक्त ।

उ०—तद गोपाळदास कही वादशाह री चाकरी में **वफेदारी** कांई नहीं । —गौड़ गोपाळदास री वारता

४ कर्त्तव्य निष्ठा ।

५ सच्चाई ।

रू. भे.—वफादारी, बफेदारी

वफारौ—देखो 'वफारौ' (रू भे.)

वब्भीखण—देखो 'विभीखण' (रू. भे.)

वब्भीखणौ—देखो 'विभीसण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—उवै वार **वब्भीखणौ** चालि आयौ । लखै ते हणूमांन पावां लगायौ । —सू. प्र.

वभक—देखो 'भभक' (रू. भे.)

वभकणौ, वभकबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चहक पावक वभक चहुं चक । तद अरक रथ थरक कौतिक, उदधि रण अण थाह । —सू. प्र.

उ०—२ जळ बड़वानळ जिकौ जळावै, ऊन्हौ तिकौ समंदचै आवै । वात एम कहतां न्रप वांणी, पहाड़ फोड़ि **वभकियौ** पांणी । —सू. प्र.

उ०—३ धड़ फूटत तूटत सीस धार, पड़नाळ स्रोण **वभकै** अपार ।

उ०—४ डील ऊकळै **वभकि** ऊठै, मरद त्रंबांळा आ गिरै । जाळ झालौ देय बुलावै, सुखद छांय सरजित करै । —दसदेव

वभकणहार, हारौ (हारी), वभकणियौ—वि० ।

वभकिओड़ौ, वभकियोड़ौ, वभक्योड़ौ—भू० का० कृ०

वभकीजणौ, वभकीजबौ—भाव वा ।

वभकाणौ, वभकाबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' ।

वभकाणहार, हारौ (हारी), वभकाणियौ—वि० ।

वभकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वभकाईजणौ, वभकाईजबौ—कर्म वा०

वभकायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वभकायोड़ी)

वभकार—देखो 'भभकार' (रू. भे.)

उ०—तिर आयौ तीरूं, गज हमगीरूं, चवै सरीरूं, कर चीरू। वभकार गहीरूं, आयौ भीरूं, होय कंठीरूं, हड़ड़ंतूं। —भगतमाळ

वभकियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वभकियोड़ी)

वभकी—देखो 'भभकी' (रू. भे.)
उ०—डील ऊकळै वभकी उठै, मरद त्रँवांळा आ गिरै। जाळ झालौ देय बुलावै, सुखद छांय सरजित करै॥ —दसदेव

वभक्कणौ,वभक्कबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू भे.)
उ०—१ लोही धखधक्क वभक्कत लाल। पड़ै घर जांणि पतंग पखाल। —सू. प्र.
उ०—२ रोळ गजां गैंघड़ा वभक्कै घाव चोळ रत्तां। सळाबोळ कीधां आयौ वेताळौस क्रोध। —हुकमीचंद खिड़ियौ
वभक्कणहार, हारौ (हारी), वभक्कणियौ—वि०।
वभक्किओड़ौ, वभक्कियोड़ौ, वभक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वभक्कीजणौ, वभक्कीजबौ—भाव वा०।

वभक्काणौ, वभक्काबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ (रू. भे.)
वभक्काणहार, हारौ (हारी), वभक्काणियौ—वि०।
वभक्कायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वभक्काईजणौ, अभक्काईजबौ—कर्म वा०।

वभक्कायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. वभकायोड़ी)

वभक्कियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वभक्कियोड़ी)

वभयंद्री—सं. पु. [सं. इन्द्रिय-विभु] इन्द्र। (अ. मा.)

वभाड़—देखो 'विभाड़' (रू. भे.)
उ०—पतसाहां हु अमेल परठीयौ, भरीयौ सुरत अनत वभाड़। असमर "अमर" तणौ ऊगाड़ौ, छत्र धारीयां तणौ ओछाड़। —अमरसिंह रौ गीत

वभाड़णौ, वभाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाड़बौ' (रू. भे.)
वभाड़णहार, हारौ (हारी), वभाड़णियौ—वि०।
वभाड़िओड़ौ, वभाड़ियोड़ौ, वभाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वभाड़ीजणौ, वभाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वभाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वभाड़ियोड़ी)

वभीखण, वभीसण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)
उ०—रवि वभीखण लंक राज रघुवर आविया अवधेस। —सू. प्र.

वभुत—१ देखो 'विभुता' (रू. भे.)
२ देखो 'विभुति' (रू. भे.)

वभूत—देखो 'विभूति' (रू. भे.)
उ०—धू परि आड वभूत तिलक धरि। कदळी पत्र दीध राजा करि। —सू. प्र.

वभूतासिद्ध—देखो 'विभूतिसिद्ध' (रू. भे.)

वभूति—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

वभ्भीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)
उ०—उरध अंबर उद्धरण, वेद ब्रहमा गावाळण। दळ दांणव निरदळण, अब्ब रांमण चौ गाळण। वभ्भीखण जण करण, सबळ देतां संधारण। नवनाथ निमधियण, त्रिविध लोकां ऊपावण। —ज. वि.

वभ्रु—देखो 'बभ्रु' (रू. भे.)

वभ्रुपिपळा—सं. स्त्री.—शनि। (अ. मा.)

वभ्रुवाहन—देखो 'बभ्रुवाहन' (रू. भे.)

वमणौ, वमबौ—क्रि. स. [सं. वमनम्] १ कै करना, वमन करना। (उ. र.)
२ थूकना।
३ उड़ेलना।
४ उगलना, प्रकट करना। (उ. र.)
५ फेंकना।
६ खारिज करना, अस्वीकार करना, त्यागना।
उ०—हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियौ अति घणुं। दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुं। —वि. कु.
वमणहार, हारौ (हारी), वमणियौ—वि०।
वमिओड़ौ, वमियोड़ौ, वम्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वमीजणौ, वमीजबौ—कर्म वा०।

वमथु, वमथू—सं. पु. [सं. वमथुः] १ हाथी की सूंड का पानी।
२ कै, उलटी।

वमन—सं. पु. [स.] १ कै या उलटी करने की अवस्था, क्रिया या भाव।
२ कै, उलटी।
३ थूक।
४ उड़ेलना क्रिया।
५ उगलना क्रिया।
६ फेंकना क्रिया।
७ त्याग छुटकारा, अस्वीकृति।

वमर—देखो 'विवर' (रू. भे.)
उ०—एक महामोटौ प्रबत छै। तण ऊपरां देवळ छै। तठै वमर छै। सो गुपत गेलौ आंपां रा घर वीच नीसरै छै। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कै किया हुआ, वमन किया हुआ। २ थूका हुआ। ३ उड़ेला हुआ। ४ उगला हुआ, प्रगट किया हुआ। ५ फेंका हुआ। ६ खारिज किया हुआ, अस्वीकार किया हुआ, त्यागा हुआ।

(स्त्री. वमियोड़ी)

वमुख, वमुह—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ घर कारण बेहु आवड़ै छत्रधर, पाछट खग दाखवीयौ पांण। कुंभळमेर न दीधौ कूंभै, सेवा **वमुख** गयौ सुरतांण।
—महारांणा कुंभा रौ गीत

उ०—२ सुजड़ भड़ंतां वाड न्रप वेहु अड़तां समर, खत्री अन देख स्रत **वमुह** खड़तां। अगाड़ी तणा भड़ खड़ै अस आवीया, पछाड़ी ऊपरै भार पड़तां।
—पहाड़खां आढौ

वमेक—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

उ०—इसौ **वमेक** सद्रढ मत ऐहौ। जोगेसुरां दुलभ अति जेहौ।
—सू. प्र.

वम्मरौ—देखो 'विवर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—देवी **वम्मरे** डूंगरे रन्न वन्नै। देवी थूंबडे लींबड़े थन्न थन्नै।
—देवि.

वयंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ तूटा गज सिर करै त्रंबाका, दांतूसळां बजावै डाका। गत न्रत करि सिंधू सुर गावै, **वयंड** सूंड ची भेर वजावै। —सू. प्र.

उ०—२ पटहसति सूंडि फेरइ प्रचंड, त्रिख दिसा बोम नांखइ **वयंड**। पटहसती छाया पक्खरेह, पाहाड़ जांणि हालइ पगेह।
—रा. ज. सी.

उ०—३ निपट खळां ची नार कथ कहै नित नाह नैं, **वयंड** खळ भाड़ तौ देख हथवाह नैं। रोस इळ छोड जावै अगम राह नैं, समर मत छेड़जे कंवर "रणसाह" नैं।
—रणसिंह सीसोदिया रौ गीत

२ देखो 'वंडौ' (मह., रू. भे.)

वयंडकनी–वि. स्त्री. [सं. वंड+कर्णिक] कटे कान वाली।

वयंडचर–सं. पु. [सं. वितंड+चरः] अनलपक्षी।

उ०—**वयंडां** घड़ा आडा-खंडां बाढतै, गाढमल जाजमा धकै गाहै। मझी समर बीर नारद अछर माल्हिया, माल्हिया **वयंडचर** समर माहै।
—राव बुधसिंह हाडा रौ गीत

वयंडमुख—देखो 'वितंडमुख' (रू. भे.)

वयद—देखो 'वियत' (रू. भे.) (नां. मा.)

वय–सं. स्त्री. [स.] १ बीता हुआ जीवन-काल, उम्र, अवस्था। (अ. मा.)

उ०—१ अंग सो लियौ कनिक उणहारै। सोळ वरस **वय** सोळ सिंगारै।
—सू. प्र.

उ०—२ **वय** किसोर ऊतरै, जोर जोबन परगट्टै। अणमायौ अंब मैं ति किरि रतनाकर तट्टै।
—रा. रू.

२ जवानी, युवावस्था।

३ समय, काळ। (ह. नां मा.) (अनेका.)

उ०—पलटै **वय** पलटै प्रकत, रितु दिन पलटै रैंण। पलटै नहीं "प्रतापसी," विछुटै जे मुख वैंण।
—जैतदांन बारहठ

४ क्रम। (अनेका.)
५ विस्तार। (,,)
६ बल, शक्ति। (,,)
७ पक्षी, विहंग (,,)
[सं. वच्] ८ वचन, वाणी, बोल।

उ०—१ झुक वहणौ नह जांणियौ, दीयण **वय** मुख दब्ब। "पातल" हूंदा उरध पण, संधा अनम सरब्ब।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ जांणमती **वय** संसौ राजिंद, तात कहूं विध तोनूं। स्रीपत सेस उचारण, संतां, देह धरी नर दोनूं।
—र. रू.

९ स्वर, आवाज।

उ०—डहंत केळि डाळयं, उपंति बंद्रबालयं। बहत दुंदभं **'वयं** जपंत देव जै जयं।
—सू. प्र.

१० छप्पय छंद का एक भेद जिसमें, ४८ गुरु व ५६ लघु कुल १५२ मात्राएँ होती हैं।

उ०—गुर अड़चासां गाइजै, लघु कर छप्पन लेख। **वय** छपय वाखांणीयै, सेसौ कहै विसेख।
—पिंगळ सिरोमणि

११—जुलाहा।
१२ वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
वि [सं. वयस्य] समान।

उ०—बाबर बीखरिया ओढ़णियें आडै, डाबर नयणां री टाबर **वय** डाडै।
—ऊ. का.

रू. भे.—वय, वग्र, वइ

वयअभीत–सं. पु. [सं अभीत-वय] युधिष्ठिर। (अ. मा.)

वयकुंठ— देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वयगरण, वयगरणौ—देखो 'व्ययकरणिक' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—मंत्रि महामत्रि रांणा स्रीगरण **वयगरण** रायगरण धरमाधिगरण देव गरण नायक दंडनायक अंग लेखक भांडागारिक।
—व. स.

वयगरणी—देखो 'व्ययकरणिक' (रू. भे.)

उ०—क्षण एक जाइ **वयगरणी**, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण

एक जाइ हस्ति सालां, क्षण एक जाइ आयुध सालां, क्षण एक जाइ वाहणि, क्षण एक जाइ राजकुलि। —व. स.

ट्ठणौ, वयट्ठबौ—देखो 'बैठणौ, वैठबौ' (रू. भे.)

उ०—सेज रमंतां मारुवी, खिण मेल्हणी मजाइ। जांणिक विकसी केतकी, भमर **वयट्ठउ** आई। —ढो. मा.

वयट्ठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वयट्ठियोड़ी)

वयण—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ चूर लियौ औ चौतरफ, केवी **वयण** कहंत। वाघ केम छिपिया वचै, रुपियां धरम रहंत। —बां. दा.

उ०—२ गांठि री कोइ न लगै गरथ, सिगला हुइ जिण थी सयण। धरम नै करम सहु में धुरा, बडी वस्तु मीठौ **वयण**। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ **वयणां** गाढ़ा वडचढ़ै, मूठी गाढ़ा खग्ग। हजरती दरबारमें, विरतावीयै बग्ध। —गु. रू. बं.,

वयणड़ौ—देखो 'वचन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बलिहारी गुरु **वयणड़ै**, बलिहारी गुरुमुख चंद रे। बलिहारी गुरु नयणड़ै, पेखहतां परमांणंद रे। —स. कु.

वयणदूठ-वि.—अपने वचनों पर दृढ़ रहने वाला।

उ०—सांम धरम रत्ता पण साचै। **वयणदूठ** मुख झूठ न वाचै। —रा. रू.

वयणपुन्न-सं. पु. [सं. वचन+पुण्य] मुख से शुभ वचन बोलने पर होने वाला पुण्य। (जैन)

वयणसगाई-सं. स्त्री.—डिंगल काव्य का एक शब्दालंकार विशेष जिसमें, किसी छन्द के प्रथम चरण के प्रथम शब्द के आदि में जो वर्ण आता है वही वर्ण उस चरण के अंतिम शब्द के आदि में आता है।

उ०—**वयणसगाई** वेस, मिल्यां सांच दोखण मिटै। किणयक समैं कवेस, थपियौ सगपण ऊथपै। —र. रू.

वि. वि.—वयण सगाई के प्रमुख तीन भेद माने गये हैः—

(१) शब्द-वर्ण वयण सगाई, (२) वर्ण संख्यक वयण सगाई व (३) मित्र वर्ण वयण सगाई।

(१) **शब्द-वर्ण वयणसगाई**—के र. ज. प्र. के अनुसार व र. रू. के अनुसार तीन भेद हैं।

"वयण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अंत। —र. ज. प्र.

(१) **आदिमेल**—इसमें छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के आदि में होती है।

(२) **मध्यमेल**—इसमें छन्द चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के मध्य में होती है।

(३) **अन्तमेल**—इसमें छंद चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के अंत में होती है। इनके अतिरिक्त इसकी तीन श्रेणियां भी मानी गई हैः—

(१) अत्युत्तम आदि मेल।

(२) अत्युत्तम मध्य मेल।

(३) तथा अत्युत्तम अंत मेल।

(२) **वर्ण-संख्यक वयण सगाईः**—इसमें छंद चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के नियम से न होकर चरणान्त वर्ण संख्या के हिसाब से होती है। इसके निम्नलिखित पांच भेद माने गये हैः—१ अत्युत्तम २ उत्तम ३ मध्यम ४ अधम ५ अधमाधम।

(३) **मित्र-वर्ण वयण सगाई अथवा अखरोटः**—इसके अन्तर्गत छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द में होने के स्थान पर उस वर्ण के मित्र वर्ण की आवृत्ति हो जाती है। मित्र वर्ण निम्न लिखित हैंः—

(१) **अधिक मित्र**—आ, ई, उ, ए, ग, व,।

(२) **सम मित्र**—ज-झ, ब-व, प-फ, न-ण, ग घ च-छ।

(३) **न्यून मित्र**—त-ट, ध-ढ (ठ), द-ड।

डिंगल काव्य में वयण सगाई का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है। परन्तु इसका निर्वाह अनिवार्य हो ऐसा नहीं है। इसका निर्वाह न होने से किसी छन्द में दोष आ जाता हो ऐसी बात नहीं है। गीतों में इसका प्रयोग अनिवार्य माना गया है। १४ वीं शताब्दी की रचना में इसका प्रयोग देखा जाता है। संभवत इसकी शुरुआत इससे पूर्व में हो चुकी थी।

रू. भे.—बयणसगाई, वैणसगाई, नैणसगाई

वयद—१ देखो 'वियत' (रू. भे.)

२ देखो 'वैद्य' रू. भे.)

उ०—विध सब करि जिम ग्रंथ बखाणै। औखद जा तूं कहै सुणि आवै। सुणै राज दस हुकम सराहौ। अरज वयद कीधी फिर एही। —सू. प्र.

वयबधणा-सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा।

वरंकरार—देखो 'बरकरार' (रू. भे)

उ०—राठौड़ां सौह वधी, वधी गोह हिन्दवांनां। वरंकरार नवकोट, हसम राखिया खजांनां। —गु. रू. बं.

वयर—देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—१ म्हाराजा अहां ससत्र भुज मुधारा, सौ-गुणी जोम पंडां कथन सुधारा। आज री वार लेसी वयर ऊधारा। देखजै आन करण सर घरै दुधारा। —पदमसिंह आढौ

उ०—अनि करै कुरण इण भांति, खित वयर काढण खांति । इक वयर धरा अबीह, सुजि वंस दूजौ 'सीह' । —सू. प्र.

वयरणीऔ-[सं. पु.] शत्रु, वैरी।

उ०—**वयरणीऔ** रहु वेगली, मुझ-सिउं म करु बात । आठ दीवाली आज थी, भमु लगी भव सात । —म. कां. प्र.

वयराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—१ धर ध्यांन सुजाय लिये धिप में । **वयराग** सुमाग हुवौ विप में । —पा. प्र.

उ०—२ **वयराग** इ मन वालियउ रे, संयम पालइ सुद्ध रे । —स. कु.

वयरागर—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—१ किहां करीतरु, किहां गुंजाफल, किहां लोहागर, किहां **वयरागर**, किहां गुंजाफल, किहां मुक्ताफल। —व. स.

उ०—२ उत्तम औसधि, सप्त धातुनी खांणि । परवत गंधक हींगलौ, **वयरागर** वखांणि । —मा. कां. प्र.

२ देखो देखो 'वइरागर' (रू. भे.)

उ०—१ वांमसऊआ मुगवनां मांगलियां **वयरागरां** हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडंवर मेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट । —व. स.

वयरागरी—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—गजराज वंध्याचलि, मोती जयकुँजरि, पदम पदमाकरि, तेजस्विता दिवाकरि, हीरा **वयरागरि**, प्रधांन, स्वरणमंदिरि, विवेक गूरजरि, विधि विवेकिया तणइ घरि । —व. स.

२ देखो 'वइरागर' (रू. भे.)

वयरागियौ—१ देखो 'वैरागियौ' (रू. भे.)

उ० —देस्य धन जांमात नै, कन्या परणावेह । व्रत लेस्यै **वयरागियौ** मन धरि परम सनेह । —वि. कु

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

वयरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—साहेली हे **वयरागी** गुरु वालहा, साहेली हे वांचइ सूत्र सिद्धांत । —स. कु.

वयराड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

उ०—गावत **वयराड़ी** रागइ, अलापत स्त्रीसंघ आगइ । —स. कु.

वेराजी—देखो 'बेराजी' (रू. भे.)

वयराजीउं—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटां सारनाला खासटां अगिहिल कबीच संजरांमां मदवी फूलपगरीयां सारीपी तिलवास गरब्भसूत्र राजिउ **वयराजीउं** महिद उरउं । व. स.

वयराट—१ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

२ देखो 'विराट' (रू. भे.)

उ०—**वयराट** रांणी मनि देवि आंणी, गई तेइ नइं लेविणु मद्य पांणि । —सालिसूरि

वयरि, वयरी—देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—१ राउ बांभण ना **वयरि** मारइ । —उ. र.

उ०—२ **वयरि** वारिउ ऊगतां, वली वधारि वयर । रोसि रथ राखी रहिउ, आदित अे कुण पइरि । मा. कां. प्र.

उ०—३ जिण दीहे पावस झरइ, समनेहां सुख होइ । तिणि दिन **वयरी** वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ । —ढो. मा.

उ०—४ हूं क्षणि क्षणि क्षीणी थइ, वाधी **वयरणि** आस । वावइ वली वक्षःस्थली, निसि नइ उर-निसास । —मा. कां. प्र.

उ० —५ मोटउं कूडउं मागसिरि, वली विचारी जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, **वयरणी** कांइ विगोइ । —मा. कां. प्र.

(स्त्री. वयरण, वयरणि, वयरणी)

वयळ—देखो 'बयळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ घण खळ असि झोकै खग घाऊं । वयळ-मंडळ नट कुंडळ बणाऊं । —सू. प्र.

उ०—२ दूभड़ां रायपाळां दुभ्फळ, **वयळ** धरां सिर दुंद वण । ऐ कहै करौ खग भट इसी, रवि वाखांणै हाथ रिण । —सू. प्र.

वयसंधि—सं. पु. [सं.] दो अवस्थाओं के बीच की स्थिति ।

उ०—सु इह तौ न बाळक अवस्था माहे सूऐ छै। नै यौवण आयै जाणै छै। इहि विधि की संधि सु **वयसधि** कहावै। —वेलि टी.

वयस—सं. पु. [सं. वयस्] (स्त्री. वयसा) १ उम्र ।

२ जवानी ।

[सं वयस्य] ३ साथी, मित्र ।

४ सहयोगी ।

५ हम-उम्र ।

रू. भे.—बयस, बेस. बैस वयस्य, वेस, वै' ।

वयसाख—देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

वयसाही—देखो 'वैसाखी' (रू. भे.)

उ०—वीवइ दीवाली, कालू कात्तिकी,वरस **वयसाही** नितू वधांमणउं, पेटि पेटि आग्रहणी । —व. स.

वयस्थविर—वि. साठ वर्ष की अवस्था वाला । (जैन)

वयस्य—देखो 'वयस'

वयांणौ—सं. पु. [देशज] विवाह में गीत गाने के लिये आई स्त्रियों में बांटी जाने वाली मिठाई ।

वयार—देखो 'वयार' (रू. भे.)

उ०—देखौ वनरईयां फूलन लागी मा, आगम वसंत बहार कै। और की और भई छिब वन की, कोउक झोलै वयार कै।
—रसीलौ राज

वयाळ—देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

वयोधर-वि. [सं. वयोधस्,] (स्त्री. वयोधरी) युवा, तरुण।

उ०-निसास-रोज आंननी उरोज धारनी नहीं। क्रसोदरीय कांमिनी बिभा वयोधरी नहीं।
—ऊ. का.

वयोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—साहण समंद ऊछळिय सारि, साइयर कउंण सकइ सहारि। रहचडियउ आवइ रीस रोम, वाजां सबद्दि फाटइ वयोम।
—रा. ज. सी.

वयोवरध, वयोवृद्ध वयोव्रध, वयोव्रिध-वि. [सं. वयोवृद्ध] जो अवस्था, अनुभव और ज्ञान में बड़ा हो, वृद्धपुरुष, बूढा।

वरंग-सं. पु. [सं. वर+अंगम्] १ शिर, मस्तक।

२ उत्तम शरीरांग।

३ सुडौल शरीर।

४ देखो 'वरांग' (रू. भे.)

[सं. वर+अंगः] ५ हस्ती, हाथी।

६ देखो 'बरंग' (रू. भे.)

उ०—कितां वप वरंगा उडै कट किरमरां, सघर धर लड़ै उतबंग बोलै सरां। चापडै मचै रिण निसाचर बनचरां, वीर कोतिक रचै जांण बादीगरां।
—र. रू.

उ०—घंघूमै आरीठ घटां आवटै मथांण घांण, उडै फाड़ कूंभाथळां वरंगां उरंग। राकसां बिभाड़ै पाड़ै आखाड़ै बजाड़ै रूक, 'नाथ' रौ सूरां रमाड़ै ऊपाड़ै निहंग।
—राव सत्रसाल रौ गीत

वरंगन—देखो 'वारंगना' (रू. भे.)

उ०—वरंगन कंठ घरै वरमाळ, रूकां उडी सीस चढै रुंडमाळ। अपच्छर सूर जोड़ै हिज आय, जई रथ बैठि वसै स्रुगि जाय।
—सू प्र.

वरंगी-वि.—वरंग का, वरंग सम्बन्धी।

रू. भे.—बरंगी।

वरंच-अव्य. [सं.] १ अपितु, बल्कि।

२ परंतु, किन्तु, लेकिन।

३ देखो 'विरंचि' (रू. भे.)

वरंड-सं. पु. [सं.] १ समूह, झुण्ड।

२ समुदाय।

३ घास का ढेर, गट्ठर।

४ चेहरे पर होने वाले मुंहासे।

५ जेब, खीसा।

६ बंसी की डोर।

[सं. वितंड] ७ फीलखाने में दो लड़ाके हाथियों के बीच बनाई जाने वाली दीवार जो इनको लड़ने से रोके।

८ हाथी, गज।

९ देखो 'वरंडौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—वरंडक।

वरंडक-सं. पु. [सं.] १ हाथी पर रखी जाने वाली अंबाड़ी, हौदा।

२ मिट्टी का टीला।

३ दीवार।

४ देखो 'वरंड' (रू. भे.)

वरंडा-सं. स्त्री. [सं.] छुरी, खंजर।

२ सारिका पक्षी।

३ लैंप की बत्ती।

वरंडी—देखो 'भिंडी' (रू. भे.)

उ०—१ पांनि तणौ परिगरु देहरी तण उमहरु, चउकी भउ सडे झलहलइं, उआरे पांणी खलहलइं, पगथिआरां सारूयारा, वरंडी उदार लहरीमाला उच्छलइं, मत्तवारणां उपरि पांणी वलइं।
—व. स.

उ०-२ भींवै मन मांहै जांण्यौ, बावड़ी मांहे किसूं करै छै। यों जांण वरंडी रा छेकड़ा मांहे जोवै। तठै देखे तो अस्त्री छै।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ देखो 'आंडी' (रू. भे.)

वरंडौ-सं. पु. [सं. वरंडः] बरामदा।

उ०—निवड लोह तणी स्रंखला तोडी, पंतार पाडी, कपाट संपुट फाडी, पडिहारु गांजी, चरण संबंधीयां त्रिगडा भांजी, वरंडा पाडतउ, मांणस मारतउ राउत रसाडतउ।
— व. स.

रू. भे.—बरंडौ, बिरंडौ।

मह.—वरंड।

वर-वि. [सं. वर] १ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ।

२ उत्तम, बढ़कर, श्रेष्ठ।

उ०—१ लांघै विखमी चालतां होजी, वाट अनड़ वर वीर प्रबल पराक्रमी।
—वि. कु.

उ०—२ वांमा अंग वणी वर सुंदरि, कनकलता जांणी कळपतरि।
—गु. रू. बं.

३ चुनने योग्य, योग्य, लायक।

४ दानी। (५) सुंदर। (६) भला।

सं. पु. [सं. वरः] १ पति, भरतार। (ग्र. मा , ह. नां. मा.)

उ०—१ मारू नूं ग्राखइ सखी, एह हमारी बुझ्झ। साल्ह कुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुंदरि सउ **वर** तुझ्झ। —ढो. मा.

उ०—२ बेटी इतरी मोटी हुई नै इण रै **वर** री खबर ही नहीं। न जांणां मुंवौ किना कठी ही जोगी संन्यासी हुय गयौ। —नैणसी

उ०—३ वच्छे ! सासुरा तणी इसी स्थिति जांणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउं देखइ, **वर** पुण लडइ, देवर नडइ, जेठांणी कुसइ, देग्ररांणी हसइ, नणंद नरनरावइ सासु कांम करावइ। —व. स.

२ वधू-प्रार्थी।

३ स्वामी, मालिक।

उ०—वीर विच्चखण क्रीत तणौ **वर**, ढाहण खाग ग्ररिंदां ढूकौ। 'नाथ' तणौ 'सुरतेस' ग्रभै नर, चित ठीक नहीं कुळ रीत न चूकौ। —ठाकर सूरतसिंह चहुवांण रौ गीत

४ दामाद, जमाता।

५ देवी-देवताग्रों से ग्रभीष्ट वस्तु पाने के लिये की जाने वाली प्रार्थना, याचना, विनय, उपासना।

६ उक्त प्रकार से प्राप्त होने वाली संतुष्ठि।

७ देवी-देवताग्रों से प्राप्त होने वाला ग्राशीर्वाद, वरदान, ग्रनुग्रह, सिद्धि।

उ०—१ मारग मांहै पांणी नहीं। कटक मरण लागौ। तद जनी नूं कह्यौ-पांणी पैदा कर। सु जती नूं खेतपाळ रौ **वर** हुंतौ, रोही मांहै जाइ खेत्रपाळ जी री ग्राराधना करी। —नैणसी

उ०—२ इक धारण तो जिम चित ग्रावै। पूजै भेख जिकौ **वर** पावै। —सू. प्र.

८ ग्रभिलाषा, इच्छा कामना।

९ भेंट, पुरस्कार।

१० चुनाव य पसद करने की क्रिया या भाव।

११ चयन, चुनाव।

१२ वरण करने, ग्रपनाने, की क्रिया या भाव।

१३ दहेज।

१४ लंपट व्यक्ति।

१५ गोरैया पक्षी।

[सं. वरं.] १६ केसर। (डिं. को.)

१७ हल्दी।

१८ दाल चीनी।

१९ ग्रदरक।

२० सुगध तृण।

२१ मौलसिरी।

२२ सेंधा नमक।

२३ मधु मक्खी का छाता।

२४ गुग्गुल।

२५ श्रीकृष्ण।

२६ दो लघु के गणण के भेद का नाम। (डिं. को.)

[देशज] २७ रहट के माल की एक लड़ी।

प्रत्य. [फा.] १ संज्ञा शब्दों के ग्रागे लगने वाला एक प्रत्यय।

ज्यूं.—ताकतवर।

ग्रव्य.—२ ग्रगर, यदि, ग्रौर।

रू भे.—बर, वरु।

वरउमिया—सं. पु. [सं उमा-वर] महादेव, शिव।

वरकंठ—सं. पु. [सं.] सुग्रीव।

उ०—**वरकंठ** वांमा धरी धांमा किता कांमा बद किया। भय मेट भारी धनुसधारी ग्ररज सारी येह। —र. रू.

वरक—सं. पु. [फा. वरकः] १ सोने या चांदी को कूटकर बनाया हुग्रा बहुत पतला झिल्ली नुमा पत्तर जो मिठाइयों पर लगा कर खाया जाता है तथा ग्रौषधियों में काम ग्राता है।

२ पत्र, पृष्ठ, पन्ना।

३ पत्ता, दल।

४ टिकट, प्रयोग-पत्र।

[सं. वरकः] ५ इच्छा, चाह, वर।

६ चुग्गा।

७ जंगल में उत्पन्न होने वाला मूंग, वन-मूंग।

८ तोलिया, दस्तर (डस्टर), झड़न।

९ कपड़ा, वस्त्र।

१० नाव के ऊपर की छाजन।

११ देखो 'विरक' (रू. भे.)

रू. भे.—बरक, बरख, बरग, वरग।

वरकरार—देखो 'बरकरार' (रू. भे.)

उ०—सांकर प्रथीराजोत। संमत १६७२ ग्ररटियौ गांव २ सूं **वरकरार**। समत १६८४ पूनासर। —नैणसी

वर्किंगकमेटी—सं. स्त्री. [ग्रं.] कार्य-कारिणी-समिति।

वरक्ख—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—ग्रोथै तेरस ऊजळीं, माह उजाळै पक्ख। 'ईदावत' ईजत सटै, गौ बासटै **वरक्ख**। —रा. रू.

वरक्रतु, वरक्रत, वरक्रतू, वरक्रित—सं. पु. [सं. वरक्रतुः] इन्द्र। (नां. मा., ह. नां. मा.)

वरख—देखो 'वरस' (रू. भे.)

वरखणौ, वरखबौ—देखो 'वरसणौ' (रू. भे.)

उ०—१ वरस बि च्यारि न मेह वरखि। पड़ै धर काळ लगौ लगि पखि। —रांमरासौ

उ०—२ बेऊं चतुर सुजांण, पेम-रंग-रस पिया। वरखा-रुति घण वरख जांणि कु हरखिया। —ढो. मा.

वरखणहार, हारौ (हारी), वरखणियौ—वि०।

वरखिओड़ौ, वरखियोड़ौ, वरख्योड़ौ,—भू० का० कृ०।

वरखीजणौ, वरखीजबौ—भाव वा०।

वरखम—सं. पु. [सं. वर्ष्मन्] १ शरीर, देह। (अ. मा.)

२ ऊंचाई, माप।

वरखा—देखो 'वरसा' (रू. भे.)

उ०—१ माळवणी ढोलउ कहइ, हिव म्हां सीख करेह। ऊन्हाळउ **वरखा** विन्है, रहिया तुझ्झ सनेह। —ढो. मा.

उ०—२ सुर तैंतीसूं साथ लै, सुरपत सांम्हौ आय। पोहपन की **वरखा** करी, लीधौ ग्राह वधाय। —गजउद्धार

उ० —३ इसौ समइयौ बण रह्यौ छै, **वरखा** मंडनै रही छै। विजळी झिळमिळ करने रही छै, वादळां झड़ लायौ छै। —रा. सा. सं.

वरखामापक—सं. पु. [सं. वर्षा+राज. मापक] वर्षा मापने का एक यन्त्र, रेनगेज।

वरखारत, वरखारित, वरखारिति, वरखारितु वरखारुत वरखारुति—देखो 'वरसारितु' (रू. भे.)

उ०—१ **वरखारितु** लागि विरहणी जागी आभा झरहरै वीजां आवास करै। —रा. सा. सं.

उ०—२ बेऊं चतुर सुजांण पेम-रंग-रस पिया। **वरखारुति** घण वरख जांणि कु हरखिया। —ढो. मा.

वरखियोड़ौ—देखो 'वरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरखियोड़ी)

वरख्यात—सं. पु. सरोवर, तालाब। (ह. नां. मा.,)

रू. भे.—वरख्यात

वरग—सं. पु. [सं. वर्ग] १ श्रेणी, जमात.।

२ जति, समुदाय, समाज।

३ एक ही समान धर्म वाली वस्तुओं या प्राणियों का समूह, झुंड, दल, टोली।

उ०—१ इसे हीज तंत में कुंवरसी चढियौ सौ जाय सांढां रा **वरग** सरब घेरिया। रैंबारी बीस पच्चीस हाथ आया सो मारिया। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ ताहरां पाबूजी कह्यौ-बाई! हूं तोनूं दोदै सूमरै री सांढां रा **वरग** आंण देईस। —नैणसी

उ०—३ सो इहां रै गाय भैंस सांढां रा **वरग** घणा। सो सांढां रै लारै रैंबारी रहै। सो अति अटावरा रहै, अपजोरा हालै। कही नूं खातर में न आंणै। सो जिके ही गांव जाय वरगां री पीहो करै, तिकै गांव च्यार पुहर री तिसवारी पड़ै। --कुंवरसी सांखला री वारता

४ किसी उद्देश्य विशेष के लिये बना हुआ कुछ व्यक्तियों का दल, पक्ष।

५ निश्चित अक्षर समूह में किसी एक वर्ण से उच्चरित प्राणी का नाम जिसकी मान्यता पशु, पक्षी के नाम से की जाती है। (फलित ज्योतिष)

७ विभाग, भाग।

८ न्याय शास्त्र के नौ या सप्त पदार्थ विभाग।

९ व्याकरण में एक स्थान से उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यंजन, वर्णों का समूह।

१० ग्रंथ विभाग, परिच्छेद, प्रकरण, अध्याय।

११ दो समान अंको या राशियों का गुणनफल।

१२ वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई समान हो, समकोण।

१३ शक्ति, ताकत।

१४ शत्रु दल।

१५ पत्र, पत्ता।

१६ पांच की संख्या। * (डिं. को.)

वि.—पांच।

रू. भे.—वग बग्ग, बरग, वाग, वग वग्ग, वरग्ग, वाग,।

वरगड़ौ, वरगड्ड—सं. पु.—१ सिंह। (सभा)

२ देखो 'बरगड़ौ' (रू. भे.)

वरगफळ—सं: पु. [सं वर्गफल] किसी अंक को उसी से गुणा करने पर आने वाला गुणनफल।

वरगमूळ—सं. पु. [सं. वर्गमूल] किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन का वही वर्गांक हो।

ज्यूं०—४×४=१६। १६ का वर्ग मूल ४ है।

वि. वि.—ये वास्तविक और काल्पनिक दोनों प्रकार के होते हैं।

वरगळणौ, वरगळबौ—क्रि. अ.—१ गुमराह, होना, भ्रम में पड़ना।

२ उत्तेजित होना, भड़कना।

वरगळणहार, हारौ (हारी), वरगळणियौ—वि०।

वरगळिओड़ौ, वरगळियोड़ौ, वरगळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरगळीजणौ, वरगळीजबौ—भाव वा०।

बरगळणौ, बरगळबौ—रू० भे०।

वरगळाणौ, वरगळाबौ–क्रि. स. [राज. 'वरगळणौ' क्रि. का प्रे. रू.] १ गुमराह करना, भ्रम में डालना।

२ उत्तेजित करना, भड़काना।

वरगळाणहार, हारौ (हारी), वरगळाणियौ—वि०।

वरगळायोड़ौ - भू० का० कृ०।

वरगळाईजणौ, वरगळाईजबौ—कर्म वा०।

वरगळाणौ, वरगळाबौ—रू० भे०।

वरगळायोड़ौ–भू. का. कृ. १ गुमराह किया हुआ, भ्रम में डाला हुआ.

२ उत्तेजित किया हुआ, भड़काया हुआ।

(स्त्री. वरगळायोड़ी)

वरगळियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ गुमराह हुवा हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ.

२ उत्तेजित हुवा हुआ, भड़का हुआ।

(स्त्री. वरगळियोड़ी)

वरगिरजा–सं. पु. [सं. गिरिजा-वरः] महादेव, शिव।

वरगोत्तम–सं. पु. [सं. वर्गोत्तम] राशियों के वे श्रेष्ठ अंश जिनमें स्थित ग्रह शुभ होते हैं। (फलित ज्योतिष)

वरग्ग—देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—वदै असुर गढ न दूं **वरग्गां**। कूंची दे आपरा करग्गां।

—सू. प्र.

वरघू–सं. पु. देखो **'बरघू'** (रू. भे.)

उ०—सबद उग्र करनाळ सवाई। सुर **वरघू** तुरही सहनाई।

—रा. रू.

वरड़णौ, वरड़बौ—देखो 'बरड़णौ, बरड़बौ' (रू. भे.)

उ०—अधपत "भीम" कुमंत्री आंटै, **वरड़ै** तीजी वेळा। 'माधव' जिसा खीजाया माफी, मडीया ऊंबळमेळा। —नवलजी लाळस

वरड़णहार, हारौ (हारी), वरड़णियौ—वि०।

वरड़िओड़ौ, वरिड़ियोड़ौ, वरड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरड़ीजणौ, वरड़ीजबौ —भाव वा०।

वरड़ियोड़ौ—देखो 'बरड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरड़ियोड़ी)

वरड़ी–सं. स्त्री. [देशज] १ लाल रंग की मिट्टी विशेष जिस पर पानी बड़ा स्वच्छ दिखाई देता है।

उ०—तिकौ तळाव किण भांत रौ छै। राती **वरडी रौ**। पांडरौ नीर। पवन रौ मारियौ फीण आछंटतौ थकौ झोला खाय रह्यौ छै।

—रा. सा. सं.

२ देखो 'बरड़ी' (रू. भे.)

उ०—दोय तो म्हांनै छाळी दीज्यौ दोय दीज्यौ लरड़ी। काळी भूरी दोनूं दीज्यौ एक वणालां **वरड़ी**। —लो. गी.

वरच—देखो 'वरच[illegible]

वरचणौ, वरचबौ— [illegible] (रू, विरचबौ' (रू. भे.)

उ०—संवत च[illegible]इ ए, **वरचीउं** चरी रसालू ए, अचल वधांमणु ए। —हीराणंद सूरि

वरचणहार, हार॰ (हारी), वरचणियौ—वि०।

वरचिओड़ौ, वरचियोड़ौ, वरच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरचीजणौ, वरचीजबौ—कर्म वा०।

वरचस–सं. पु. [सं. वर्चस्] १ प्रकाश, उजाला, तेज।

(नां. मा., ह. नां. मा.)

२ कान्ती, दीप्ति।

३ रूप, शक्ल।

४ शक्ति, पराक्रम।

५ विष्ठा।

६ वृक्ष, पेड़।

रू. भे.—**बरचस, वरच**।

वरचियोड़ौ—देखो 'विरचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरचियोड़ी)

वरछणौ, वरछबौ–क्रि. स. [सं. व्रश्चम्] १ घाव करना, काटना।

उ०—धौम पिंड **वरछियौ**, वेध मातौ धरा, खार खुद रांम रिण हाथ लागा खरा। पांण तज मेलिया मांण हुय पाधरा, मिळै दहवाट ग्या थाट मंडोवरा। —द. दा.

२ चीरना, फाड़ना।

३ काट कर अलग अलग करना।

४ देखो 'विरचणौ, विरचबौ' (रू. भे.)

वरछणहार, हारौ (हारी), वरछणियौ - वि०।

वरछिओड़ौ, वरछियोड़ौ, वरछ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरछीजणौ, वरछीजबौ—कर्म वा०।

वरछियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ घाव किया हुआ, काटा हुआ। २ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ। ३ अलग-अलग किया हुआ।

४ देखो 'विरचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरछियोड़ी)

वरजण—देखो 'वरजन' (रू. भे.)

उ० – महिपत बूढै मेलियौ, **वरजण** कज असवार। कूक लोक जादा करै, हमें मैं खादी हार। —पा. प्र.

वरजणीक—देखो 'बरजनीक' (रू. भे.)

वरजणौ, वरजबौ—देखो 'बरजणौ, बरजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ खैर नांखै चुगल जोदपुर खजांनै, दुजल हव जकां नै **वरज**

दीजै। अीत रा म

मदत्त कीजै। गाढी करण। ाकादास

उ०—२ जोतिस सगुन बिहूं कि ना वरजै लेख प्रमांणै। पोह —सू. प्र.

उ०—३ दिन रयण सुख विधि वरजि, गरजि कण रुख गोहुए। —रा. रू.

उ०—४ एह विध्याता नीलज निसि दमयंती नि सरजी। प्राकृत नारी नीपाईनि स्रस्टि जेणि नवि वरजी। —नलाख्यांन

वरजणहार, हारौ (हारी), वरजणियौ—वि०।

वरजिओड़ौ, वरजियोड़ौ, वरज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरजीजणौ, वरजीजबौ—कर्म वा०।

वरजत—वि. [सं. वर्ज्य] जो निषिद्ध हो, निषेध करने योग्य।

सं. पु.—पाप। (अ. मा.)

वरजन—सं. स्त्री. [सं. वर्जनम्] १ निषेध करने की क्रिया या भाव।

२ मनाही, मुमानियत, निषेध, रोक।

३ व्यवधान, बाधा, अवरोध।

४ परित्याग, त्याग।

५ वैराग्य, विरक्ति।

रू. भे.—वरजण।

वरजनीक—देखो 'बरजनीक' (रू. भे.)

वरजाग, वरजागी—देखो 'बजराक' (रू. भे.)

उ०—१ खाग आग **वरजाग,** प्रिसण बाळै परजाळै। खत्रवाट कुळवाट, पाट परियां उजवाळै। —गु. रू. बं.

०उ—२ जोऐ जुध रीस चढी **वरजागि**। उठी घ्रत सींचिया जांणिक आगि। —सू. प्र.

वरजाणौ, वरजाबौ—देखो 'बरजाणौ, बरजाबौ' (रू. भे.)

वरजाणहार, हारौ (हारी), वरजाणियौ—वि०।

वरजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वरजाईजणौ, वरजाईबौ—कर्म वा०।

वरजायोड़ौ—देखो 'बरजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरजायोड़ी)

वरजियोड़ौ—देखो 'बरजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरजियोड़ी)

वरजिस—सं स्त्री. [फा. वर्जिश] १ ऐसा कार्य जिसको करने में शारीरिक श्रम अधिक लगता हो।

२ कसरत, व्यायाम।

३ अभ्यास, प्रयास।

वरजोर—देखो 'बरजोर' (रू. भे.)

उ०—'अजमाल' सुणिजै एह, कर जोड़ एम कहेह। इम्म साह की हुइ ओर, जंग किया हम **वरजोर**। —सू. प्र.

वरजोरा—सं. स्त्री. [देश] राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

वरजोरी—देखो 'बरजोरी' (रू. भे.)

वरज्या—देखो 'व्रज्या' (रू. भे.)

वरट—सं. पु. [स. वरटः] (स्त्री. वरटा) १ हंस।

२ बरैया।

३ विरी अनाज।

४ कुन्द का फल।

वरटापति—सं. पु. [सं. वरटा+पति] हंस।

उ०—वरटापति सुंदर तां दीठूं कनक वर्ण सरीर। एक वरण पांखमांहि (ली) धौ, बीजु अवनी मांडी। —नळाख्यांन

वरडौ, वरढौ—देखो 'वढौ' (रू. भे.)

वरण—सं. पु. [सं. वरणं, वरणः] १ इच्छा और रुचि के अनुसार किया जाने वाला चयन।

२ कन्या के योग्य वर के चुनाव की क्रिया।

उ०—सिणगारी सन्नाह सं, विस कांमणि वग्गियांम। वरि आई हाला वरण, करण, महा जुध कांम। —हा. भा.

३ उक्त चुनाव के पश्चात कन्या द्वारा वर को वरमाला डालने की क्रिया, अंगीकार, विवाह, शादी।

उ०—तरण रथ थिकत घण वहै खागां अतर, अडर कर कर मरै **वरण** अवरी। पड़ै धड़ गजाणण कहै इम पंचाणण, गजाणण कठै रिण सोभ गवरी। —पीथी सांदू

४ आदर, सत्कार।

५ यज्ञ आदि के लिये उपयुक्त ब्राह्मण का चुनाव व उसका आदर-सत्कार।

६ उक्त ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान।

७ पूजन, अर्चना, धर्मानुष्ठान।

८ याचना।

९ ढकने या लपेटने की क्रिया भाव।

१० आवरण, आच्छादन।

११ पर्दा, चादर।

१२ शहरपनाह की दीवार, प्राकार।

१३ घेरा।

१४ पुल, सेतु।

१५ आर्या गीति या स्कंधाण (स्कंधक) का भेद विसेश।

१६ गाने में स्वर विस्तार की क्रिया-इसके चार भेद स्थायी,

आरोही, अवरोही, व संचारी ।
१७ पंवार वंश की एक शाखा ।
[सं. अवरण-भागुरे अलोप] १८ ऊंट।
[सं. वर्णिणी] १९ स्त्री, पत्नी ।
[सं. वर्ण]—२० रंगरूप ।

उ०—१ कंथड़ा झालि किरमाळ कैड़ौ करां । सार झड़ वरण सो सोक सैलां सरां । —हा. झा.

उ०—२ भुज विसाळ लंकाळ, वरण झाळाहळ सुंदर । भरि मातै भाद्रवै, जांणि ऊगौ भासंकर । —गु. रू. बं.

२१ अक्षर, स्वर ।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह । सब वरण वांण सरीर, इम कहत दुरत अधीर । —रा. रू.

२२ अकारादि शब्दों के चिन्ह या संकेत।
२३ प्रार्थना, स्तुति।
२४ गुण।
२५ आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य समाज के चार विभाग । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
२६ भेद, किस्म ।
२७ यश, कीर्ति । (अ. मा.)
२८ देखो 'वरुण' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—आंबेरौ "जैसाह" सूरसागर आसम्मै, वरण दिसा वाग सूं, घणी बूंदी वड ध्रम्मै । 'अभा' आदि उमराव, रांण वाळा मन रक्खै, वरण इंद्र धनवंत, इसौ "अगजीत" निरक्खै । —रा. रू.

२९ देखो 'व्रण' (रू. भे.)
३० देखो 'वरणन' (रू. भे.)

उ०—कांन सुणण भागवत तणी कथ । वरणव करि अवरण वरण । —ह. नां. मा.

रू. भे.—बरण, बरन, बरन्न, ब्रण, ब्रन, ब्रन्न, वंन्न, वरन, वरन्न,

वरणग्रढार—देखो 'अढारव्रन्न'

वरणखंडमेरु-सं. पु. [सं. वर्ण-खंडमेरु] छन्द शास्त्र या पिंगल की वह क्रिया जिससे बिना मेरू बनाये वर्ण-वृत्त व मात्राएं ज्ञात की जा सकती है ।

वरणजथा-सं. स्त्री.—डिंगल गीत रचना का एक नियम विशेष जिसमें गीत के प्रत्येक द्वाले में नवीन वर्णन किया जाता हैं ।

वरणज्येस्ठ-सं. पु. [सं. ज्येष्ठवर्ण] सब वर्णों से बड़ा, ब्राह्मण वर्ण।

वरणण—देखो 'वरणन' (रू. भे.)

उ०—१ वर विचार मनहूं कहूं, वरणण सुद्ध वणाय । तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय । —र. ज. प्र.

उ०–२ व्हौ मिळण सीता परसपर हर, घणां उतसव उमड़ घर घर। वखत जिण आमोद वरणण, को करै कवराज । —र. रू.

वरणणौ, बरणबौ–क्रि. स. [सं. वर्णनम्] १ वर्णन करना, (उ. र.)

उ०—१ सबळ करण अगे कुरुपत उच्चरणै । कुळ राठौड़ वळै "मोडौ" कव वरणै । —पा. प्र.

उ०—२ मांनव मनसा यूं कहै वरणै जरी जराय । रचना कहु (न) विरंच की, उपमा कही न जाय । —गजउद्धार

२ उल्लेख करना।

उ०—सोई ग्रथां थी सुण्यौ, जोई वरणिय जांण। सोई जोई धर सुकवि, आदि अंत अहिनांण । —डिं. नां. मा.

३ रचना करना, लिखना।

उ०—गणपति मोहि सुमत्ति दै, सुभ अख्खर ततसार। मो मत सारू वरणवूं, हरि गुण ग्रंथ अपार । —गजउद्धार

४ व्याख्या करना ।

उ०—नारकीइ वरणवउं हउं, जेहां नारकीना दुख संभारता स्मरता हूंता भव्वांण भव्य जीव हुइं हरि विस्णु हर ईस्वर तेह नी रिद्धि सम्रद्धि लक्ष्मीनउ विस्तार उद्धोसं उद्धरसण रोमांच जणइ करइ । —षष्टीशतक प्रकरण

५ प्रशंसा करना, सराहना।
६ निवेदन करना ।
७ चित्रण करना ।

वरणणहार, हारौ (हारी), **वरणणियौ**—वि० ।
वरणिग्रोड़ौ, वरणियोड़ौ, वरण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरणीजणौ, वरणीजबौ—कर्म वा० ।

बरणणौ, बरणबौ, वन्निजणौ, वन्निजबौ, वन्नीयणौ, वन्नीयबौ —रू. भे. ।

वरणत—देखो 'वरणन' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वरणदूत-स पु.—पत्र ।

उ०—इण रीति री आदेस सुणि टीले दूत रै साथ सत्कार री वरणदूत तौ अगाऊ भेजियौ । —वं. भा.

२ लिपि ।

रू. भे.—बरणदूत ।

वरणन-सं. पु. [सं. वर्णन] १ किसी विषय, व्यक्ति, घटना, दृश्य आदि का विस्तार पूर्बक कथन, वृत्तान्त, हाल, बयान ।

उ०—अलख पुरुस आदेस, देस बचाय दयानिधे, वरणन करूं बिसेस, सुहृद नरेस 'प्रतापसी' । —दुरसौ आढ़ौ

२ रंगने की क्रिया या भाव, चित्रांकन ।
३ व्याख्या, उल्लेख ।

४ निवेदन, स्तुति, प्रार्थना ।
५ प्रशंसा, श्लाघा, सराहना ।
६ बखान ।
७ लेखन ।
रू. भे.—वरणण, बरणन, वरणाव, वरण, वरणण, वरणत, वरणव, वरणांम, वरणाव।

वरणनस्ट—सं. पु. [सं. वर्ण-नष्ट] प्रस्तार के अनुसार वर्ण-वृत्तों के किसी रूप को लघु गुरु के विचार से जानने की, छन्दशास्त्र की एक क्रिया ।

वरणना—सं. स्त्री. [सं. वर्णनम्] गुण कथन ।

वरणनास—सं. पु. [सं. वर्णनाश] व्याकरण में, उच्चारण की कठिनता या किसी अन्य कारण से किसी शब्द के अक्षर या वर्ण के लुप्त हो जाने की अवस्था या स्थिति । (निरुक्तकार)

वरणपताका—सं. स्त्री. [सं. वर्णपताका] वर्ण-वृत्तों के भेदों में से लघु-गुरु जानने की क्रिया । (पिंगल)

वरणपात—सं. पु. [सं.] किसी वर्ण (अक्षर) का शब्द में से लुप्त होने की क्रिया, वर्णनाश ।

वरणपाताळ—सं. पु. [सं. वर्ण—पातालः] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे किसी संख्या के वर्ण के वृत्त और उन वृत्तों में से लघ्वादि, लघ्वंत व गुर्वादि, गुर्वंत एवं सर्व लघु ज्ञात किये जा सकते हैं ।

वरणपास—सं. पु. [सं. वरुण-पाश वृङ्संभक्तौ=पाशवरण] १ वरुण देव, वरुण । (अ. मा.)
२ समुद्र में रहने वाला एक भयंकर जलजंतु जिसे अंग्रेजी में शार्क कहते हैं ।
३ वरुण का एक अस्त्र ।
४ ऐसा पाश या फंदा जिसमे बचना बहुत कठिन हो ।

वरणपुर—सं. पु. [सं. वरुण-पुरः] १ वरुणलोक ।
२ शुद्ध राग का एक भेद । (संगीत)

वरण प्रत्यय—सं. पु. [सं. वर्ण प्रत्ययः] छन्दशास्त्र या पिंगल की वह प्रक्रिया जिससे वर्ण-वृत्तों के भेद, स्वरूप तथा संख्याऐं जानी जाती हैं ।

वरणप्रस्तार—सं. पु. [सं. वर्ण प्रस्तारः] छंदशास्त्र की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे ।

वरणमरकटी—सं. स्त्री. [सं. वर्णमर्कटी] पिंगल या छन्दशास्त्र में एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और उनमें कितने लघ्वादि, लघ्वंत तथा गुर्वादि गुर्वंत तथा सब वृत्तों को मिलाकर कितने वर्ण, कितने गुरु-लघु, कितनी कलाऐं और कितने पिंड होंगे ।

वरणमाता—स. स्त्री. [सं. वर्णमातृका] १ सरस्वती ।
२ लेखनी ।

वरणमाळा—सं. स्त्री. [सं. वर्णमाला] १ किसी भाषा या लिपि के वर्णों (अक्षरों) की श्रेणी या लिखित सूची ।
२ तेसठ की संख्या * (डिं. को.)
[सं. वरणमाला] ३ वह माला या पुष्पहार जो दुलहिन दुल्हे के गले में पहनाती है ।

वरणव—देखो 'वरणन' (रू. भे.)

वरणविचार—सं. पु. [सं. वर्णविचार] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का उल्लेख हो ।

वरणविपरजै, वरणविपरय्य—सं. पु. [सं. वर्णविपर्यय] निरुक्त के अनुसार किसी शब्द के वर्णों में उलट-फेर होने की स्थिति । (भाषा विज्ञान)
ज्यूं—पकड़णौ=कपड़णौ ।

वरणव्यवस्था—सं. स्त्री. [सं. वर्णव्यवस्था] हिन्दुओं की समाज-व्यवस्था जिसके अनुसार समाज को चार भागों में विभाजित किया गया है । वे चारों भाग हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र ।

वरणव्रत—सं. पु. [स. वर्णवृत्त.] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या व लघु गुरु के क्रम में समानता हो ।
वि. बि.—मात्रावृत्त का उल्टा ।

वरणसंकर—सं. पु. [सं. वर्णसङ्कर] १ वह व्यक्ति, जाति या कुल जो विभिन्न जाति के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुआ हो । (दोगला)
२ रंगों का मिश्रण ।

वरणसमांम्नाय—स पु. [सं. वर्ण-समाम्नायः] वर्ण माला ।

वरणसरिक—सं पु [स. वर्ण+सरिक] एक आभूषण विशेष । (व. स.)

वरणसूची—सं. स्त्री [सं. वर्ग-सूची] छन्दशास्त्र या पिंगल की एक क्रिया जिससे वर्ण वृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आद्यंत लघु और आद्यत गुरु की संख्या जानी जाती है ।

वरणस्रेस्ठ—सं. पु. [सं. वर्ण-श्रेष्ठ] सब वर्णों में श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।

वरणांम—देखो 'वरणन' (मह., रू. भे.)
उ०—धर रूप भुजां असमांन धरै । कव 'पाल' तणौ वरणांम करै ।
—पा. प्र.

वरणा—सं. स्त्री. [सं. वरुणा] १ काशी के उत्तर में बहने वाली एक छोटी नदी ।

२ पंजाब की एक नदी, वरुणा नदी।

३ एक आर्य जन पद।

उ०—विदेह संडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भंग [वट्टा] कुणाल लाट, केकयमंडल।
—व. स.

वरणागियौ—सं. पु. [सं. वर्ण] रूप-रंग, वर्ण।

उ०—तास **वरणागिये** दीठि मनह् तणौ। मलफियौ सांमहौ, कळह बेढ़ीमणौ।
—द्वा. भा.

वरणाधिप—सं. पु. [सं. वर्णाधिप] ब्रह्मादि वर्णों के अधिपति ग्रह।
(फलित ज्योतिष)

वरणायंद—सं. पु.—१ सूर्य. २ इन्द्र. ३ वरुण. ४ जल।

वरणाव—देखो 'वरणन' (रू. भे)

उ०—भमरी अळवांमणी डांण भरै। कवराव किसौ **वरणाव** करै।
—पा. प्र.

वरणास्रम—सं पु. [सं. वर्णाश्रम] १ आर्य संस्कृति के अनुसार समाज की एक व्यवस्था जिसमें मनुष्य समाज को-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त किया गया है और मनुष्य जीवन के चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास निर्धारित किये गये हैं।

उ०—व्रंम हरी मुख व्रंम विचारण, सो वरणास्रम कारिज सारण।
—जयपुर रौ गीत

२ उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत निर्धारित नियम या धर्म।

उ०—वरणास्रम ध्रम मरजाद बेद। भाखा खट नवरस अरथ भेद।
—वि. सं.

रू. भे.—बरणास्रम,।

वरणि—देखो 'वरणी' (रू. भे.)

उ० - चंद वयणि, चंपक-**वरणि**, अहर अलत्ता-रंगि। खंजर-नयणी, खीण-कटि, चंदन-परिमळ चंग।
—ढो. मा.

वरणियोड़ौ—भू का. कृ.—१ वर्णन किया हुआ, निरूपण किया हुआ. २ बयान किया हुआ, उल्लेख किया हुआ. ३ रचना किया हुआ, लिखा हुआ. ४ व्याख्या किया हुआ. ५ प्रशंसा किया हुआ, सराहना किया हुआ. ६ निवेदन किया हुआ. ७ चित्रण किया हुआ।

(स्त्री. वरणियोड़ी)

वरणियौ—सं. पु.—डाभ का बना मोटा रस्सा। (पानी भरने के काम आता है।

वरणी—वि. [सं. वर्णिन्] १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धित।

२ किसी वर्ण से सम्बन्धित।

३ किसी रंग से सम्बन्धित, रंग वाला।

४ रंग रूप से सम्पन्न।

सं. स्त्री.—१ किसी साधनीय कार्य के अनुष्ठान के लिये नियोजित कर बैठाई जाने वाली ब्राह्मणों की मंडली।

उ०—कुँवरसी असवार हुवौ, जिण दिन सूं भरमल एक टंक मध्यांन ढळियां रोटी जवां री खाधी, जमी सूती, तीन वखत रौ सिनांन, आपरै इस्ट रौ भजन करती रहती। काजळ, तेल, तंबूळ, कूंकूं सारो त्यागियौ। दूध, दही, घिरत मीठौ सारौ छोडियौ। ब्राह्मण पचास **वरणी** पर बैसांणिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ साधनीय कार्य के अनुष्ठान की विधि।

[सं. वर्णिनी] ३ स्त्री, अर्धांगिनी, पत्नी।

४ नियोजन की क्रिया।

५ हल्दी।

रू. भे.—बरणी, वरणि, वरन्नी।

वरणोद्दिस्ट—सं. पु. [सं. बर्णोद्दिष्ट] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे वर्ण वृत्त के रूप एवं भेद की जानकारी की जाती है।

वरणौ—वि. [सं. वर्णिन्] (स्त्री. वरणी) १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धी।

२ किसी वर्ण या जाति से सम्बन्धित।

उ०—कि जोग जाग जप तप तीरथ कि, व्रत कि दांनास्रम **वरणा**। मुख कहि क्रसन रुखमिणि मंगळ, कांइ रे मन कलपसि क्रपणा।
—वेलि

३ किसी रंग से सम्बन्धित रंग का।

उ०—१ बांवळिया रै सोनल **वरणा** पीळा फूलां सूं गवाड़ी री छिब सवाई बधगी ही।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कैतां-कैतां हरी रौ मूंडौ तांबै **वरणौ** हुयग्यौ अर होट फड़कण लागग्या।
—वरसगांठ

४ रूप-रंग से सम्पन्न।

सं. पु.—वृक्ष विशेष जिसके पत्ते विल्व पत्र से मिलते झुलते होते हैं।

रू. भे.—बरणौ, वरनौ, वरन्नौ।

वरणौ, **वरबौ**—क्रि. स. [सं. वरणम्] विवाह के लिये चुन कर वरण करना, अंगीकार करना, शादी करना।

उ०—१ 'अभपाल' आप छळि करि अचड़, वप विहंडाय रंभा वरूं। जंग करण महा भारथ ज्युंही, 'करण' नांम साचौ करूं।
—सू. प्र.

उ०—२ परणूं धी पतसाह री, रजवट लागै रोग। वर अपछर वीरम कहै, जांणौ सुर पुर जोग।
—बां. दा.

उ०—३ कोई झगड़ा में सूर वीर मारीजिया तिकां नै अपछराआं

वरिया सो स्वरग वधावा हुतां लारै री लारै सतियां पिण सत कर नै गई सौ अपछराम्रां रा वधावणा देख सतियां कहै।
—वी. स. टी.

२ चुनाव करना, पसंद करना।
३ स्वीकार करना, मानना।
४ निगलना, खाना। (उ. र.)
५ वरदान देना, आशीर्वाद देना।
६ मांगना, याचना करना।

वरणहार, हारौ (हारी), वरणियौ—वि०।
वरिश्रोड़ौ, वरियोड़ौ, वरचोड़ौ—भू० का० कृ०।
वरीजणौ, वरीजबौ—कर्म वा०।
वरणौ, वरबौ—रू० भे०।

वर'णौ, वर'बौ—देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भली भांति सूं अ्रत्थ वत्थां भरै। बिनै इंद्र सांमंद्र 'जेहौ' वरै'। —ल. पिं.

उ०—२ अरि मुख पारथ बांण बरखिया एहि धगारां। ज्यूं कमळां पर मेघ वरै' थूं अणगिण धारां। —मेघ

वरत—सं. स्त्री. [सं. वरत्रा.] १ चमड़े का मोटा रस्सा जो हाथी को बांधने,कूए से मोट खींचने तथा नट के नटक्रीड़ा में काम आता है।

उ०—१ रै चित व्रत द्रढ़ एम रख, मूरत स्यांम मझार। मेल्ह सुरत नट वांस में, प्रगट **वरत** व्है पार। —र. ज. प्र.

उ०—२ एक वैर जावै छै। सु साठीको कोहर, तियै री **वरत** छै सु **वरत** सांवटिनै काख मांहै घाली छै। —नैणसी

२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

उ०—१ कीजै **वरत** भजन पिणि कीजै। भगत-बछळ रीझै व्रज-भूप। —ह. नां. मा.

उ०—२ आज मिरति मंगळी, आज पति **वरत** संभाळै। ऊपन्नौ जग अंस, आज सुज वंस उजाळै। —रा. रू.

उ०—३ केहरि तण पण लड़ण अकूंणौ। लीधां **वरत** 'जोगपती' 'लूंणौ'। —रा. रू.

उ०—४ तठा उपरांति देव जागिआ छै। काती मास रा **वरत** महोछव कीजै छै। घरि घरि दीपमाळिका रा वणाव हुइ नै रहिया छै। —रा. सा. सं.

३ देखो 'विरत' (रू. भे.)

रू. भे.—वरत, भरत, वरतर, वरता, वरत्त।
मह.—वरत्रौ।

वरतण—१ देखो 'बरतण' (रू. भे.)

२ देखो 'बरतन' (रू. भे.)

उ०—सोर आग सपरस्स, किना वड़वाग अकारी। माग हूंत सांमंद्र, ध्याग **वरतण** उर धारी। —रा. रू.

वरतणि, वरतणी—देखो 'बरतणी' (रू. भे.)

उ०—जोधपुर सुपह री चाड मांडै जुड़ण, आपरा लियां परिग्रह उजासै। 'पाल' रौ खूंद **वरतणि** जूदी पांमतौ, पूजियौ विघन री वार पासै। —केसोदास गाडण

वरतणौ—देखो 'बरतणौ' (रू. भे.)

उ०—पांच दोरा रे लेखणी पांच मसीजणा, वास कूंपी रे कांबी वारू **वरतणा**। —स. कु.

वरतणौ, वरतबौ—देखो 'बरतणौ, बरतणौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुर तजौ चित **वरतौ** असोक। लंकेस हणूं सुख करां लोक। —सू. प्र.

उ०—२ तथा स्रीभाभीजी आपरौ वडौ मुलायजौ **वरतै** है सू हमार फळौधी रा गांव ८४ खालसै किया है। —द. दा.

उ०—३ देवावत लिछमण' जग दाता, हेळा करण भिड़ाव हुवौ। भिड़जां भड़ां चारणां भाटां, मुंहगां **वरतणहार** मुवौ। —बां दा.

उ०—४ मुथरा मांहि **वरतिया** मंगळ। घण कितूहळ घरोघरि। —ह. नां. मा.

उ०—५ रूक हूं झरत्त रत्त, करंतौ कोप धूहड, वेहडा घणा करतौ, **वरतौ** दुबाह। —दूदौ वीठू सुरतांणोत

उ०—६ संवत सोल चिहुत्तरइ, पोस सुदि तेरस **वरतई**। माग करइ सहि लोक, पूज पहुंता परलोक। —कविवर स्रीसार

उ०—७ संसार चक्र तणउ इण परि ढालु, चलतउ पलतउ **वरतई** कालु। कल्प द्रुम मनवंछित होइ जुगलाधरम तिहां नराह सोइ। —वन्हिग

उ०—८ जासी हाट बात रह जासी जग, अकबर,ठग जासी एकार। रे राखियौ खत्री ध्रम रांणै, सारौ ले **वरतौ** संसार। —प्रथ्वीराज राठौड़

उ०—९ घर घर मंगळचार, मोहन चढियौ मंडोवर। नाद बेद **वरतिया**, सुकवि बोलै सुभ अक्खर। —गु. रू. बं.

वरतणहार, हारौ (हारी), वरतणियौ—वि०।
वरतिश्रोड़ौ, वरतियोड़ौ, वरत्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वरतीजणौ, वरतीजबौ—कर्म वा०।

वरतन—१ देखो 'वेतन' (रू. भे.)

उ०—जगदेवजी कह्यौ, सेर बाजरी नै हीज आयौ छूं। तरै राजा कह्यौ, पटौ लेस्यौ कै कोरी **वरतन** (वेतन) लेस्यौ। जगदेवजी कह्यौ, कोरी **वरतन** लेस्यूं। —जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'बरतन' (रू. भे.)

वरतनी—देखो 'बरतणी' (रू. भे.)

वरतमांण, वरतमान—वि. [सं. वर्तमान] १ विद्यमान, मौजूद।

उ०—ज्यूं लारलड़ा वह् गया **वरतमांण** वह् ज्याय। काळ-कळत में कळ रह्या, ठीक न 'विसना' ठाय। —विसनौ

२ जीव धारी, जिन्दा।

३ जो अपने अस्तित्व व सत्ता में हो।

४ घूमने-फिरने वाला।

५ सहयोगी।

६ जो प्रभाव में हो, लागू हो (नियम, विधान)

सं. पु.—[सं. वर्तमानः] १ व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जो किसी क्रिया का चालू होना सूचित करता है।

२ वर्तमान काल, मौजूदा समय।

उ०—त्रकाळग्यांनदरसी निज त्रमकूं पहिचांणै। भूत भवस्त **वरतमांन** जुगति सौं जणें। —सू. प्र.

३ समय, वक्त, वेला,। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वरत्तमांन।

वरतमा—देखो 'वरत्म' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वरतर, वरता—देखो 'वरत' (रू. भे.) (ड. र.)

वरताड़णौ, वरताड़बौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ' (रू. भे.)

उ०—वसती सु दळि वरताड़, अनि गांम धांभ उजाड़। पह रोस जोस अपार, लेखवै मेछ लिगार। —रा. रू.

वरताड़णहार, हारौ (हारी), वरताड़णियौ—वि०।

वताड़िओड़ौ, वरताड़ियोड़ौ, वरताड़्याड़ौ—भू० का० कृ०।

वरताड़ीजणौ, वरताड़ीजबौ—कर्म वा०।

वरताड़ियोड़ौ—देखो 'वरतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरताड़ियोड़ी)

वरताणौ, वरताबौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ' (रू. भे.)

उ०—नै किसनदासजी गढ मैं आया। राव कल्यांणसिंघ जी री आंण **वरनायी**। —द. दा.

वरताणहार, हारौ (हारी), वरताणियौ—वि०।

वरतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वरताईजणौ, वरताईजबौ—कर्म वा०।

वरतायोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरतायोड़ी)

वरतार—देखो 'वरतारौ' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'भरतार' (रू. भे.)

वरतारि—देखो 'व्रतारि' (रू. भे.)

वरतारौ—सं. पु. [सं. वृत्तचार] १ प्रयोग, ईस्तेमाल करने की क्रिया।

उ०—पछै संवत १८४१ रै वरस नागोरी लूंकां रा गछ रा स्रीपूज हरखचंद जिन मत रा टीपणा रौ वरतारौ कियौ। —बां. दा. ख्यात

२ समय, वक्त।

उ०—म्रग जळ नीर सींग ससियेका, ज्यूं बंझया का बारा। दुख सुख जरा मरण सुपना में, यूं सतोगुण वरतारा। —सुखरांमजी महाराज

३ किसी देवि-देवताओं या देव-योनि में गई हुई मृतात्मा का किसी मनुष्य शरीर में प्रवेश की अनुभूति एवं तदनुसार होने वाली चेष्टाएं।

४ वह पद्य जिसमें कविता या छंदों के रचना संबंधी नियमों का निरूपण हो।

५ आधार, सहारा, आश्रय।

रू. भे.—बरतारौ।

मह.—वरतार

वरताव—देखो 'बरताव' (रू. भे.)

उ०—ऐड़ौ **वरताव** करती जांणै किणी पाड़ोसण रौ टाबर व्है। —फुलवाड़ी

वरतावणौ, वरतावबौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ'

उ०—१ हिंदुस्थांन का छत्र जगत छाया **वरतावण**। हिंदुस्थांन में सूरज कवि-कमळ-विकसावण। —रा. रू.

उ०—२ स्रीपुर नगर सोहांमणु, तिहां **वरतावी** अमार। —स. कु.

वरतावणहार, हारौ (हारी), वरतावणियौ—वि०।

दरताविओड़ौ, वरतावियोड़ौ, वरताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरतावीजणौ, वरतावीजबौ—कर्म वा०।

वरतावियोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरताविथोड़ी)

वरतियोड़ौ—देखो 'बरतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरतियोड़ी)

वरतियौ, वरतीयौ—देखो 'भरतियौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै **वरतिया** कना मेह बंधावण रौ तलास कियौ। तरै वरतिये कह्यौ—एक हिरण मंगावौ। तरै हिरण, आंणजै कागळ? में जंत्र लिखनै वरतिये कोरनै हिरण रै सींग मांहै घात नै कोस २ भाखर थौ तठै हिरण रै सहनांण कर छोड दियौ। —नैणसी

उ०—२ हिवै इया रै देस मांहै धांन घणा। वहवारीयां रै लाखै ग्यांन हुवौ। केलैंकोट, बगै, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुया। होई नै एक **वरतीयै** नुं कह्यौ, जु "धांन म्हांहरै घणौ। ज्यूं करौ

ज्यूं घांन रा पईसा हुवै ।" ताहरां महाजन मेह बंधायौ ।
—लाखै फूलांणी री बात

वर , वरतुल-वि. [सं. वर्तुल] चक्करदार, गोल ।
सं. पु. १ चक्कर, गोला ।
२ चक्र ।
३ वातचक्र ।
रू. भे.—बरतुळ, वरत्तुल ।
अल्पा.,—वरत्तुळौ, वरतुलौ ।
वरतेसरी—देखो 'व्रतेसरी' (रू. भे.)
वरतौ—देखो 'बरतणौ' (रू. भे.)
वरत्त—१ देखो 'वरत' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

वरत्तणौ, वरत्तबौ—देखो 'बरतणौ, बरतबौ' (रू. भे.)
उ०—१ भांण प्रताप पड़ै भूपत्ती । विच गढ कमधां आंण वरत्ती ।
—सू. प्र.
उ०—२ घोपट्टं लीध धरत्ती । जिहंगीरे आंण वरत्ती ।
—गु. रू. बं.
वत्तरणहार, हारौ (हारी), वरत्तणियौ—वि० ।
वरत्तिओड़ौ, वरत्तियोड़ौ, वरत्त्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरत्तीजणौ, वरत्तीजबौ—भाव, कर्म वा० ।

वरत्तमांन—देखो 'वरतमांन' (रू. भे.)

वरत्तिकाविंदु—सं. पु. [सं. वर्त्तिकाविंदु] हीरे का एक दोष ।

वरत्तियोड़ौ—देखो 'बरतियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वरत्तियोड़ी)

वरत्तुळ, वरत्तुल—देखो 'वरतुळ' (रू. भे.)
उ०—ह्रदै मूल वरत्तुल इक होइ । दुहु कूखे लांबा द्यौ दोइ ।
—घ. व. ग्रं.

वरत्तुळौ, वरत्तुलौ—देखो 'वरतुळ' (अल्प., रू. भे.)
उ०—दूजौ लंबौ ग्रीव परि, जहां धरिजै जोत । दो लवणौ द्यौ वरत्तुला, ध्यारै इहि विधि होत । —घ. बं. ग्रं.

वरत्म—सं. पु. [सं. वर्त्मन्] १ मार्ग, पथ, रास्ता, राह ।
२ सड़क ।
३ पगडंडी ।
४ पंथ ।
५ स्थान ।
६ लीक ।
७ पद्धति, रस्म, चलन, परम्परा ।
८ किनारा, तट ।
रू. भे.—वरतमा ।

वरत्तारि—देखो 'अत्रारि' (रू. भे.)

वरत्री—सं.स्त्री. [सं. वर्तनिः] मार्ग, रास्ता, सड़क, राह । (ह. नां. मा.)

वरद—वि. [सं.] १ वरदान देने वाला, अभीष्ट की पूर्ति करने वाला, वर-दाता ।
२ शुभ ।
सं. पु.[सं. वरदः] १ देवता (अ. मा.)
२ देखो 'विरुद' (रू. भे.) (अ. मा.)
रू. भे.—बरद ।

वरदउदात—सं. स्त्री. [सं. उदात वरद, वरद+उदात] सरस्वती, शारदा । (अ. मा.)

वरदपत, वरदपति,—देखो 'विरुदपति' (रू. भे.)
उ०—हाथी बहु हेला दिये कर बाहर करतार । वेगा आवौ वरदपत मेरी भीर मुरार । —गजउद्धार

वरदळ, वरदल, बरदळि, वरदलि—[सं. पु.] १ दुल्हा, वर ।
उ०—१ बंधव अनुज 'गजे' री बेटी, लाज सील गुण प्रीत लपेटी । वरदळ लख घर मेळ सवायौ, प्रकट तिकण रौ लगन पठायौ ।
—रा. रू.
उ०—२ सरीखा खेड़ धरा खुरसांण, सरीखौं राउ अनै सुरतांण । वरदळ बेढी वडे वीवाह, मिळी धण तुग्ग महा-रिण मांह ।
—रा. ज. सी.
उ०—३ दळपति कोइ न दूजौ वरदळि । निरदळियां मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियी । राव तणौं घरि लहीस वर ।
—दूदौ
२ वर-पक्ष ।
उ०—ढोलउ-मारु परणिया, वरदळ हुवउ उछाह । आ पूगळ ची पदमिणी, अउ नरवर चउ नाह । —ढो. मा.
३ बारात ।

वरदांणी—देखो 'वरदायिणी' (रू. भे.)
उ०—हंस गमण ब्रह्मांणी हसा रूप हंस आरूढ़ । देवगुरू **वरदांणी** निधि वांणी तुभ्यौ नम । —देवि

वरदांन—सं. पु. [सं. वरदान] १ किसी देवी, देवता या बड़ों द्वारा अभीष्ट की पूर्ति के लिये दी जाने वाली सिद्धी । शुभ कार्य की कामना की पूर्ति के लिये दिया जाने वाला आशीर्वाद ।
उ०—देवी माई हिंगोळ पच्छम माता, देवी देव देवाधि **वरदांन** दाता । —देवि
२ वह वस्तु, अवस्था या स्थिति जो मंगल दामिनी हो, अनुग्रह रूप हो ।
रू. भे.—बरदांन ।

वरदांनी—वि. [सं. वरदान+रा. प्र. ई.] १ वर देने वाला, मनोरथ सिद्ध करने वाला ।

२ जिसको **वरदान** प्राप्त हो, सिद्धिधारी।

वरदा-सं. स्त्री. [सं.] १ कुंवारी कन्या, लड़की।

२ असगंध।

३ अड़हुल।

४ एक नदी का नाम।

५ सरस्वती, शारदा।

रू. भे.—बरदा।

वरदाइ—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

उ०—**वरदाइ** पढत गुण कवि वखांणि। मंगळीक वयण मौसर प्रमांणि। —सू. प्र.

वरदाइक—देखो 'वरदायक' (रू. भे.)

उ०—**वरदाइक** 'लाखौ' वंसि बधारण वांन। मनमोट महिपती। मेर जिसौ अनमांन। —ल. पि.

वरदाई-वि. [स. वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—नव दुरगा नवै खेट **वरदाई**, करगि मंगळीक रच्चए। वंदिण जैकार बिंद कोळाहळ, विप्रां वेदउ वच्चए। —गु. रू. बं.

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सुदि अगसर सप्तमी वार मंगळ **वरदाई**। अंस परम "अभसाह" विमळ ग्रहि वंस वडाई। —रा. रू.

३ यशस्वी।

उ०—१ 'सूजा' पाट सकाज, 'वाघ' कमधज **वरदाई**। कर दन खग वह कवर, पिता पहिला सुत पाई। —सू. प्र.

उ०—२ वीर पाबू समराथ, वीर साचौ **वरदाई**। वीर खाग सिर वहन, वीर चारणियां भाई। —पा. प्र.

४ वीर।

उ०—'सूरा 'अड्डबाळ' सुजड हथ 'सांडा,' 'जैतां' 'जगमल्ल' जैत्राई। 'कांधिळ' कळिमूळ सदा कळि चालण, 'गैरा' वेढक **वरदाई**। —गु. रू. बं.

उ०—२ **वरदाई** भुजे बडाई तमांण सवाई। सिधि पाई जुध जैत्राई सकति सहाई। —ल. पि.

५ वरदान या सिद्धि प्राप्त।

उ०—१ 'सांवत' 'माहव' तणौ सवाई। 'वीठल' रौ 'सकतौ' **वरदाई**। —रा. रू.

उ०—२ पाबू पाट रै रूप राठवड़ां, सेवै तूझ सधीरा। वेगड़े पाल्ह लीया **वरदाई**, सिंध तणा सांढी रा।

—पाबू राठौड़ धांधळौत रो गीत

६ वरदान से उत्पन्न होने वाला।

उ०—पांण का कपिराज सूरज का बंस। देवी का **वरदाई** दईव का अंस। दिल का दलेळ लहरूं का दरियाव। —सू. प्र.

८ अनुकूल, लाभप्रद।

रू. भे.—बरदाई, वरदाइ, वरदायी, बिरदाई।

वरदाचतुरथी, वरदाचौथ-सं. स्त्री. [सं. वरदाचतुर्थी] माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

वरदात-वि. [सं. वरदातृ] वर देने वाला, वरदाता।

सं. स्त्री [सं. वरदात्री] १ सरस्वती। (अ. मा.)

२ पार्वती गिरिजा (अ. मा.)

३ देखो 'वरदाता' (रू. भे.)

वरदाता-वि [सं. वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदायक।

उ०—दीनानाथ अभै **वरदाता**, त्राता सेवग तारणा। —र. ज. प्र.

सं. पु.—ब्रह्मा।

रू. भे.—बरदाता।

वरदाय, वरदायक-वि.—१ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—जांनुकी वर मरम जांणंग, तेग अरेसां तायक। 'किसन' भज जन मांन रक्खे, दांन अभै **वरदायक**। —र. ज. प्र.

२ सिद्धि देने वाला।

३ यशस्वी, कीर्तिवान, विरुदधारी।

उ०—वधै राज सुख विहद, बधै हित संपत वधायक। अवर वधै दिन इतौ, वधै पल पल **वरदायक**। —सू. प्र.

४ श्रेष्ठ।

उ०—'सुरतौ' 'गांगावतां' 'नरां' 'पदमौ'। नर नायक। अणभंग 'चूंडावतां' 'विजौ' कमधां **वरदायक**। —सू. प्र.

५ वीर।

उ०—उदर सुमित्र लछण जीपण अरि, धरै सेस अवतार धुरंधर। बियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघबाह वडौ **वरदायक**। —र. रू.

६ सिद्धि प्राप्त।

७ वर प्राप्त, वरदान धारी।

उ०-आंमो-सांमहो झटकां हुंचे उतरिआ। आप रखी रा **वरदायक** हुता। सो मछ री दया वासतै घणा सेहर रा लोक मछ ऊपरा तरवारिआ वाढ़िया। —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ **वरदायक** सकति रौ, कंत कीत रौ कहावै। उरड़ जोम अंगरौ, अवर पह मींढ़ न आवै। —सू. प्र.

८ फलदायक, सफलता देने वाला।

उ०—१ वरदाय 'लखण' रण सूर वीर। धारण प्रवीण अण धार धीर। —रा. रू.

उ०—२ इत्ता भड़ चारण क्रोध असाधि। विढै **वरदायक** वीर-विराध। —सू. प्र.

रू. भे.—वरदायक, बिरदाक, वरदाइक, विरदायक

६ देखो 'विरुदायक' (रू, भे.)

वरदायण, वरदायणि, वरदायणी, वरदायिणी,–सं. स्त्री. [स्त्री. वर+दायिनी] सरस्वती। (डिं. को.)

उ०—ऐवास विराजै ऊजळा, विध ऊजळ हंस-वाहणी। ऊजळ अडोल गाऊं 'अभौ', दीजै वर **वरदायणी**। —बखतौ खिड़ियौ

वि.—१ सिद्धि व सफलता देने वाली।

उ०—पांण बुध 'अनावत' तणी जस पायणी, अेम बण बायणी तेज आंनेक। मीर भक डायणी अंबखासां महीं, असी **वरदायणी** कटारी एक। —करनीदांनजी कवियौ

२ वर देने वाली।

रू. भे.—बरदायण, बरदायणि, वरदांणी।

वरदायी—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

उ०—नांनण छावहड़ौ **वरदायी** हुवौ। पोकरण आय वसियौ। —बां. दा. ख्यात

वरदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—कप जेह छळ कूदिओ, फर वडाळी फाळ। एक कटारी अंगरंग, वकट, 'कलौ' **वरदाळ**।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

वरदाळौ—देखो 'विरुदाळौ' (रू. भे.)

उ०—जै खळ जठी तठी जुध जीपण, हठी भीम कारज हड़मंत। वणीयौ यळ राखण **वरदाळा**, डाढाळा केसव चौ दंत

—किसनौ आढ़ौ

वरदी–सं. स्त्री.[अ. वर्दी] किसी विभाग, संस्था या वर्ग के कर्मचारियों के लिये निर्धारित पोशाक विशेष, यूनिफॉर्म।

रू. भे.—बड़दी, वड़दी।

वरदेत, वरदैत—देखो 'वरदायक'

उ०—१ कथ 'पाल' तैं साची कही, **वरदेत** झूठ न वात। आया समै रा मारिया, एकरैसूं कव उतपात। —पा. प्र.

उ०—१ वडा खळ खाग हणै **वरदैत**। जुड़ै इम 'भांण' समोभ्रम 'जैत'। —सू. प्र.

वरद्धक-वि. [सं. वर्द्धक] १ वृद्धि करने वाला, बढाने वाला।

[सं वर्धक:] २ काटने वाला।

३ विभाजन करने वाला।

रू. भे.—वरधक, वरधकि।

वरद्धन–सं पु. [सं. वर्द्धन] १ वृद्धि, बढ़ौतरी।

२ उन्नति।

३ वृद्धि या बढ़ोतरी होने की अवस्था।

४ काटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—वरधन।

वरद्धमांन–वि. [सं. वर्द्धमान] १ जो बढ़ रहा हो, वृद्धिशील हो, बढ़ने योग्य।

२ बढ़ने की प्रवृत्ति वाला।

३ उन्नति के लिये उन्मुख।

सं. पु.—१ जैनियों के चौबीसवें तीर्थकर, महावीर स्वामी।

२ एक वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण में १४, दूसरे में १३, तीसरे में १८ व चौथे चरण में १५ वर्ण होते हैं।

३ वार व नक्षत्र सम्बन्धी २८ योगों में से २८ वां योग। (फलित ज्योतिष)

४ देखो 'वरद्धमानतप'

रू. भे.—बधमांन।

वरद्धमांनतप—सं. पु. एक प्रकार का व्रत विशेष

उ०—स्थांन पंचमी, मुकुट सहामी, मांणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमण-तप, **वरद्धमांनतप**, इंद्रियजय, कसायजय। —व. स.

वरधक-सं. पु. [सं. वर्धक: वर्धकि:] १ बढ़ई, तक्षक।

२ देखो 'वरद्धक' (रू. भे.)

रू. भे.—बरधकि, बरधकी, वरधकि।

वरधका–सं. स्त्री. [सं. वृद्धा] १ गाथा-छंद का एक भेद जिसमें विप्र गण (चार मात्रा के समूह) का प्रयोग बहुत होता है।

उ०—भगण बहुत सो प्रौढ़ा भणजै। गण बोह विप्र **वरधका** गिणजै। —र. ज. प्र.

२ देखो 'व्रद्धा' (रू. भे.)

वरधकि—देखो 'वरधक' (रू. भे.)

वरधन—देखो 'व्रद्धापन' (रू. भे.)

वरधापन—देखो 'व्रद्धापन' (रू. भे.)

उ०-ऐ अखीयात कीद 'आसावत', रौदां सुं लेवै रिण। वण वढीयौ **वरधापण** वढतां, पोरस मछर जवांनपण।

—दुरगादास आसकरणोत री गीत

वरन्–अव्य [सं.] १ बल्कि २ ऐसा नहीं।

वरन—देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ पसरि पंख है पाई, इल्ला उड्डे आभंतरि। जरद लाल इक स्याह, **वरन** वांना विबहथरि। —गु. रू. ब.

उ०—दुति सोभा दांमणी, **वरन** आदीत वरन्नी। भाव-सिंध मारधू, देव कन्या उतपन्नी। —गु. रू. ब

उ०—३ जप जाप होम कीजै जिगन, **वरन** खट्ट ग्रांमै वरौ ।
जोधपुर ग्राज ग्रजुधापुरी, रांम राज कमधज्ज रौ । —गु. रू. बं.

वरनसन—सं. पु. [सं. वर्णाऽऽसन:] कवि, पंडित । (ग्र. मा.)

वरना—ग्रव्य. [फा. वर्ना:] १ ग्रन्यथा ।

२ नहीं तो ।

३ ऐसा नहीं हुग्रा तो ।

वरनोळी, वरनोली—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वरनोळौ, वरनोलौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

उ०—ताजां नेजां गयणइ सोहइ, **वरनोलइ** इम मनमोहत ।
—कविवर स्रीसार

वरनौ—देखो 'वरणौ' (रू. भे.)

उ०—फौजां डेरा फाबिया, दीसै हद्द विहद्द । सबज **वरना** स्याह ग्रन, लाल सपेत जरद्द । —गु रू. ब.

वरन्न—देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—मारू मारइ पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न । दंती, चूड़इ मोतियां, त्रीयां हेक **वरन्न** । —ढो. मा.

उ०—२ वेधै खळ सावळ चोळ **वरन्न** । कहै रवि झोक लड़ै 'सुभक्रन्न' । —सू. प्र.

वरन्नी—देखो 'वरणी' (रू. भे)

उ०—एक खड़ी मुख रूप नियाळै, एक खड़ी सिर चम्मर ढाळै । कांम लता पिण कणक **वरन्नी**, पास खड़ी सुख रास पतन्नी ।
—गु. रू. बं.

वरन्नौ—देखो 'वरणौ' (रू भे.)

उ०—विवह **वरन्ना** कप्पडा, विवह वरन्नी पाग ।
फजर हुवंदी फूलिया, जांण मलूकां वाग । —गु. रू. बं.
(स्त्री वरन्नी)

वरपूर—देखो 'भरपूर' (रू. भे.)

उ०—तद तरवार म्यांन सूं लीवी सू प्यादां झगड़ौ **वरपूर** हुवौ ।
—द. दा.

वरम—स. पु. [रू. वर्मन्] १ कवच, बखतर ।

उ०—काटसी घणा ग्रघ ग्रोघवाला करम । वेध नह सके जम पहर इसड़ौ **वरम** । —र. ज. प्र.

२ घर, मकान ।

३ छाल, गूदा ।

४ पित्तपापड़ा ।

[फा. वरम] ५ किसी ग्रंग पर ग्राने वाली सूजन, शौथ ।

६ घाव ।

७ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

रू. भे.—बरम, बरम्म, वरम्म ।

वरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

वरमा—सं. स्त्री. [सं. वर्म्मन्] १ नाम के ग्रंत में लगाई जाने वाली क्षत्रियों की एक उपाधि ।

२ उपनाम ।

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.) बरमा

वरमाळ—देखो 'वरमाळा' (रू. भे.)

उ०—१ करण ग्रखियात चढियौ भलां काळमी, निवाहण वयण भुज बांधिया नेत । पंवारां सदन **वरमाळ** सूं पूजियौ, खळां किरमाळ सूं पूजियौ खेत । —बां. दा.

उ०—२ रांमायण भारथ तणय रंग, जांणियौ ग्रभायण विकट जंग । गंठ-जोड़ ग्रछर भूलाल गंठ । कदगां ग्रंत्रळ **वरमाळ** कंठ ।
—वि. सं.

वरमाळणौ, वरमाळबौ—क्रि. स. १ दुलहिन द्वारा वर के गले में माला डालना, वरमाला डालना ।

उ०—विध जुत कूरमराज विचारे, स्रीफळ कंचन रतन सिंगारै । सुभ दिन लगन घड़ी ले सुंदर, **वरमाळियौ** 'ग्रभौ' प्रथमी-वर ।
—रा. रू.

२ जयमाला डालना ।

३ वरण करना, विवाह करना, शादी करना ।

उ०—वीरम नां **वरमाळतां**, मिटियै रे 'किसमीर' । 'बूकण' रौ घर बूडसी, नदी वहंते नीर । —वी. मा.

४ स्वीकार करना, ग्रंगीकार करना ।

वरमाळणहार, हारौ (हारी), **वरमाळणियौ**—वि० ।
वरमाळिग्रोड़ौ, वरमाळियोड़ौ, वरमाळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरमाळीजणौ, वरमाळीजबौ—कर्म वा० ।

वरमाळा, वरमाला—सं. स्त्री. [सं. वर+माला] १ दुल्हन द्वारा दूल्हे को पहनाया जाने वाला पुष्पहार, हार ।

उ०—१ विच गळ रंभ वरू **वरमाळां** । ग्रोयण मझि उभळतां ग्रत्राळां । —सू. प्र.

उ०—२ इसी बात सुण ल'डी **वरमाळा** लेय घणा लोगां री भीड़ सूं उछाह करती ग्राई वरमाळा गळै पहराई ।
—पंच दंडि री वारता

उ०—दसण सयण रयण छळ दमंगगळ, राछ गळौ वळ भींच रहै । धड़ ग्रारती ऊतरै धारां, **वरमाळां** किरमाळ वहै । —दूदो

२ जयमाळा ।

रू. भे.—बरमाळ, बरमाळा, वरमाळ, वरम्माळ, वरम्माळा ।

वरम्म—१ देखो 'वरम' (रू. भे.)

उ०—नमसकार सूरां नरां, विरद नरेस **वरम्म** । रिजक उजाळे सांम रौ, पाळै सांमधरम्म । —बां. दा.

वरम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

वरमाळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वरमाला डाला हुआ. २ जयमाला पहनाया हुआ. ३ वरण किया हुआ, विवाह किया हुआ, शादी किया हुआ. ४ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ ।
(स्त्री. वरमाळियोड़ी)

वरम्माळ, वरम्माळा—देखो 'वरमाळा' (रू. भे.)

उ०—१ कवी छंद वोलै प्रभू अग्रकारी । धणी कंठि सीता **वरम्माळ** धीरी । —सू. प्र.

वरयता—सं. पु. [सं. वरयिता] स्त्री का पति, भर्तार, स्वामी ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

वि.—वरण करने वाला ।

रू. भे.—बरयिता ।

वरयात्रा—सं. स्त्री. [सं. वर+यात्रा] १ वर का विवाह के लिये वधू के यहाँ बरात सहित किया जाने वाला गमन ।

२ बरात ।

वरयेचा—सं. स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उप-शाखा ।

वररमा—सं. पु. [सं. रमा+वर] १ रामचन्द्र ।

उ०—तोड़ खळ जमा चौ आच खग तोलियां, ईस गण नाच घमघमाचौ ओप । गजब रौ तमाचौ अजब रौ थकौ गण, कना सर **वररमा** चौ कोप । —बद्रीदास खिड़ियौ

वररुचि—सं. पु. [सं.] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन पंडित जो व्याकरण और काव्य के मर्मज्ञ थे । सुविख्यात प्राकृत व्याकरणकार ।

२ एक प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र प्रणेता ।

रू. भे.—बररुचि ।

वरळ—सं. पु. [सं. वरलः] १ सूर्य, सूरज । (नां. मा., ह. नां. मा.)

२ हंस ।
३ बरैया ।
४ प्रकाश, उजाला, रोशनी ।

रू. भे.—बरळ ।

वरळक—सं. पु. [सं. वरलः+रा. प्र. क.] उजाला, चमक ।

उ०—तै भवियौ घणां भड़ां बळि ताकै, रिणवट 'कूंपा' रूप रखा । **वरळक** करै फरै वीरारसि, अहि जिम थांरौ कूंत 'अखा' । —नांदण बारहठ

वरलच्छि—सं. पु. [सं. लक्ष्मी-वरः] विष्णु ।

रू. भे.—बरलच्छि, वरलाछ ।

वरळणौ, वरळबौ—देखो 'विरळणौ, विरळबौ' (रू. भे.)

उ०—दादू स्वाद लाग संसार सब, देखत वरळय जाय । इंद्री स्वारथ साच तज, सबै बंधांणी आई । —दादूबांणी

वरला—सं. स्त्री. [सं.] मादा हंस, हंसिनी ।

वरलाछ—देखो 'वरलच्छि' (रू. भे.)

वरळियोड़ौ—देखो 'विरळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वरळियोड़ी)

वरळ, वरलु—देखो 'विरळौ' (रू. भे.)

उ०—जनम लगइ विहडइ नहीं, भली नारी जे होइ । एतला ऊफरू सार नथी, राखइ ज **वरलु** कोइ । —नळदवदंती रास

वरवंछक, वरवंछत—वि.—बुरा चाहने वाला, दुश्मन ।

उ०—आसीस दीयै 'सुरतांण' अछरा, न्रप हां वडा वधारण नेह । **वरवंछत** लाधा तो वडतां, छत्र पतीयां सुं बाधा छेह । —दुरसौ आढौ

वरवड़ी—सं. स्त्री. [देशज] चारण वंशोत्पन्न एक देवी जिसने महाराणा हमीर को राज्य प्राप्त कराया था ।

वि. वि.—यह चखड़ा की पुत्री थी ।

रू. भे.—बरबड़ी, बिब्बड़ ।

वरवती—वि. (स्त्री.) १ सौभाग्य शालिनी, सुहागन ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो ।

सं. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति जिन्दा हो, सुहागन स्त्री ।

रू. भे.—बरबती ।

वरवर—देखो 'बरबर' (रू. भे.)

वरवरण—सं. पु. [सं. वरवर्ण] १ अच्छा वरण, सुन्दर वरण ।

२ स्वर्ण, सोना ।

वरवरणी—सं. स्त्री. [सं. वरवर्णिनी] १ लक्ष्मी ।

२ दुर्गा ।
३ सरस्वती ।
४ सुन्दर स्त्री ।
५ उत्तम स्त्री. ।
६ लाख ।
७ हल्दी ।
८ प्रियंगुलता ।

वरवरणौ, वरवरबौ—देखो 'बड़बड़णौ, बड़बड़बौ' (रू. भे.)

उ०—**वरवरतौ** वेध वरद वीसाळा, ठहतौ खळां घाल तो ठाळ । आबुदसा आवतौ आबू, वैरीयां दळ दीठौ 'विजपाळ' । —दुरसौ आढौ

वरवरियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरवरियोड़ी)

वरवार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

वरवासण, वरवासणी–सं. स्त्री. [सं. वरवासिनी] कछवाहों की कुल देवी।

उ०—पछै मलीरणा रै गांव झूंपड़ा खेडै सोहड़ भगवंतगढ सेस भारिज्ये मलीरणै रै वीछूं दैनै हुय जीरोतरौ गांव हाडोती रौ हुय-नै आगै खंडारगढ़ चांबळ मेळी हुई तठै देवी **वरवासण** रौ थांन छै। —नैणसी

वरवीर–सं. पु. [सं. वर-वीर] १ श्रेष्ठ वीर, श्रेष्ठ योद्धा।

उ०—वडौ वडग्रार भुजे कुळ भार, धरा सिणगार इसौ लखधीर। वहै खत्रवाट नमावण नाट, विधांसण थाट सत्रां **वरवीर**। —ल. पि.

२ श्रेष्ठ विद्वान, सुयोग्य पंडित।

उ०—ह भ ध र घ न ख भ होय, अंक अठ दगध अधीरह। आखर दग्ध अठार बदे, कवसल **वरवीरह**। —र. रू.

३ बुद्धिमांन, विवेकी।

उ०—तुरातुर नीसरजा भव तीर, विसे-विस बीसरजा वरवीर। हमें गुरु वायक मां बुधहार, सभै निज नायक की सुध सार। —ऊ. का.

४ एक छन्द विशेष।

उ०—चव कळ उरोज थळ च्यार वोज। **वरवीर** छंद, कह यम कव्यंद। —र. ज. प्र.

वरवेरण–सं. पु. [सं. वडवा—रमण] घोड़ा। (नां. डिं. को.)

वरसंत, वरसंति–सं. पु. [सं. वर्ष+अंत] किसी वर्ष या साल का अन्त या समाप्ति।

उ०—इम करतां हूउं प्रभात, राय भणइ सुणि मुहता वात। ईणि पुरि देवि जईवंत, तेह नी जात्र हुई **वरसंति**। —हीराणंद सूरि

वरस–सं. पु. [सं. वर्ष] १ काल-क्रम के अनुसार वह अवधि जिसमें सब ऋतुओं की आवृत्ति हो जाती है। बारह महीनों की एक अवधि, वर्ष, साल।

उ०–१ एता दीह न जांणिया रे, निरगुण जांणी कंत। हिव खिण जातउ **वरस** सउ रे, जाइ मुझ विलवंत। —हीराणंद सूरि

उ०—२ कुंभसुति ते आचमन कीधूं, कोटि **वरस** रहु ठालु। अनेकि कुंभि ऊलेचतां ए धरि नहीं सर चालु। —नळाख्यान

२ किसी संवत्सर की निर्धारित दिन से क्रमशः चलने वाली अवधि।

उ०—आया वसियां आपणी, ग्रीसम थई वतीत। १७३९ गुण-चाळौ लागौ **वरस**, चाळौ सरस सजीत। —रा. रू.

३ पुराणानुसार सप्त द्वीपों का एक विभाग।

४ भारत वर्ष।

५ बादल।

उ०—सजै फौज कांठळ घरर घणां निसांण घुर, अनल धुंआ रवण रण ऊजाथै। वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेरगिर 'गजण' रा तणै माथै। —अजबौ बारहठः

६ एक व्याकरणाचार्य जो पाणिनि का गुरु था।

७ वसुदेव व उपदेवी के पुत्रों में से एक पुत्र।

८ सहस्रार्जुन राजा का पुत्र, एक राजा।

रू. भे.—बरख, बरस, बरिस, बरीस, वरक्ख, वरख, वरसि, वरसी, वरस्स, वरिस, वरिसि, वरीस।

अल्पा.,—बरसड़ौ वरसड़ौ।

वरसकटी–सं. स्त्री. [सं. वर्ष+कट्य=समूह] १ ऋणी और ऋणदाता के मध्य तय होने वाली वह शर्त जिसके अनुसार निश्चित अवधि तक ऋणी की भूमि का उपभोग ऋण दाता कर सकता है।

२ ऋण के ऊपर लगने वाला ब्याज या सूद जिसमें ब्याज पर भी ब्याज जोड़ा जाता हैं।

वरसगांठ–सं. स्त्री. [सं. वर्ष+ग्रन्थि] १ प्रत्येक वर्ष या साल में आने वाला किसी के जन्म का दिन या तिथि, सालगिरह।

२ उक्त दिन को मनाया जाने वाला उत्सव।

रू भे बरसगांठ।

वरसट, वरसठ–सं. पु. [सं. वरिष्ठं] ताम्र, तांबा। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बरसट, वरस्ट।

वरसण–सं. पु. [सं. वर्षण] बादल, मेघ। (अ. मा., ह. नां. मा.)

वि.—१ बरसने वाला।

२ दानी, दातार।

रू. भे.—बरसण, वरसणौ, वरीसण।

वरसणी–सं. स्त्री. [सं. वर्षणिः] १ वृष्टि।

२ व्यवहार, वर्ताव।

३ यज्ञीय कर्म, यज्ञ।

४ क्रिया।

५ एक महाविद्या।

उ०—आकासगांमिनी सौदांमिनी कांमगांमिनी कांमसांमिनी भुवन-क्षोभिनी कांमरूपिणी मनःस्तंभिनी जलस्तंभिनी आग्नेयी वायवी **वरसणी** कौमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी अवलोकिनी भुजंगिनी..........इत्यादि महाविद्या। —व. स.

वरसणौ, वरसबौ–क्रि. अ. [सं. वर्षणं] १ बादलों से पानी का बूंदों के रूप में पृथ्वी पर पड़ना, वर्षा होना।

उ०—१ यहु तन जारी मसि करूं, धूंआ जाहि सरग्गि। मुझ प्रिय बद्दळ होइ करि, **वरसि** बुझावइ अग्गि। —ढो. मा.

उ०—२ उत्तग गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ **वरसत** जोर। दमकती दांमिनी बहुर भांमिनी, चमकती तिहि ठोर। —वि. कु.

मुहा.—१ आग वरसणी. बहुत तेज धूप होना, कर्कस वाणी निकालना (ऊ. का.) २ दूध रौ मेह वरसणौ=आनन्दोत्सव होना, आनंद ही आनंद होना। ३ पुमपां री. वरसा करणी महान कार्य करने पर उसके स्वागतार्थ उस पर फूल उछालना।

२ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिरना।

३ आंखों से लगातार आंसू बहना, अश्रुओं की झड़ी लगना।

४ मुख से मधुर वाणी निकलना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग होना।

उ०—कमला कहउं कि सरसति, **वरसति** अमीरस वांणि। कंचणु कुणि किर जाविय, पाविय सारंगपांणि। —जयसेखर सूरि

५ धन या दौलत का चारों ओर से आना, थोड़े से परिश्रम से खूब लाभ होना, अच्छी आमदनी होना।

मुहा.—दूध री बरसा होणी=आनन्द मंगल होना।

६ चहरे की कान्ति और ओज का अच्छी तरह से झलकना।

ज्यू—उणरौ चेहरौ तौ अबार वरसै, सिणगार करयां पछै तो बात ई छोडौ।

७ क्रोध और आवेश के कारण किसी के द्वारा डांटा जाना, फटकारा जाना।

८ लगातार अस्त्र-शस्त्र प्रहार होना।

उ०—१ अयी समर सर **वरसतां** अमर नर ऊचरै, आवधां ठेलफीळां अरांणी। पाळि रूपै अवर तूटि पड़ै, पडंग गमियौ नहीं तांम पांणी। —राव छत्रसाल हाडा रौ गीत

९ तुष्ट मान होना (देने के लिये)
१० दान देना।

वरसणहार, हारौ (हारी), **वरसणियौ**—वि०।
वरसिओड़ौ, वरसियोड़ौ, वरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वरसीजणौ, वरसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
वरसाणौ, वरसाबौ—सक० रू०।

बरखणौ, बरखबौ, बरीमणौ, बरीसबौ, वरक्खणौ, वरक्खबौ।
वरखणौ, वरखबौ वर'णौ, वर'बौ, वरीसणौ, वरीसबौ।—रू० भे०।

वरसधर–सं. पु. [सं. वर्ष-धरः] बादल, मेघ।

वरसप, वरसपत, वरसपती–सं. पु. [सं. वर्षप, वर्षपति] वर्ष के अधिपति ग्रह। वह ग्रह जो संवत्सर के वर्ष का अधिपति हो।
(फलित ज्योतिष)

वरसवियांणि, वरसवियांवणी—देखो 'वरसव्यावणी' (रू. भे.)

वरसव्यावणी–सं. स्त्री.—जिसके प्रति वर्ष प्रसव होता हो (प्रायः गाय, भैंस)

रू. भे.—बरसव्यावणी, वरसवियांणी, वरसवियावणी।

वरससत–सं. पु. [सं. शत-वर्ष] सौ वर्ष। (उ. र.)

वरसा–सं. स्त्री. [सं. वर्षा] १ बरसने की क्रिया या भाव।

२ आकाश के मेघों से पानी का बरसना, बारिस, बरसात।
उ०–करि पांणा सुतांणा कमांणा कसै। **वरसांण** सरांणा तणा वरसै। —सू. प्र.

३ बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।
पर्या.—बरसण, व्रस्टी।

४ किसी चीज का अधिक मात्रा में ऊपर से गिरना, वृष्टि।
क्रि. प्र.—करणी, होणी।

५ लगातार चलने वाला कोई क्रम, बौछार।
क्रि. प्र.—आणी, पड़णी, होणी।

६ किसी वस्तु की बहुतायत होने की अवस्था।
रू. भे.—बरखा, बरसा, बरिखा, विरक्खा, बिरखा, वरखा, वरिक्खा, वरिखा।

वरसाऊ–वि. [सं. वर्षा+रा. प्र. ऊ] १ बरसने वाला।

२ बरसने योग्य।

३ आभा और कान्ति वाला।

उ०–जोयां घर कर जंग, पौहव वीरम जंग पड़ियौ। तद मिळ सळगा तणौ, जरु चंदनौमी जुड़ियौ। कहर विखौ काळियौ, कमध चूंडै काळाऊ। "आलै' जद ओळख्यौ, सही ताळै **वरसाऊ**। मेहवै जाय 'आलौ' मिळै, मलीनाथ राखौ मदत। आंपणौ गांम चूंडौ उठै, गुत वीरम रौ सांपरत। —राव चूंडा रौ छप्पय

रू. भे.—बरसाऊ।

वरसाकरण–स. पु.—इन्द्र।

रू. भे.—बिरखाकरण।

वरसाकाळ–स. पु. [सं. वर्षा-काल] बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु। (उ. र.)

वरसागम–सं.पु. [सं. वर्षा+आगम] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षारंभ।

वरसाणौ, वरसाबौ–क्रि. स.—१ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराना।

२ आंखों से लगातार आंसूं बहाना, अश्रुओं की झड़ी लगाना ।
३ मुख से मधुर वाणी निकालना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग करना/कराना ।
४ धन या दौलत को चारों ओर से प्राप्त करना, थोड़े से परिश्रम से खूब लाभ कमाना, अच्छी आमदनी करना/कराना ।
५ क्रोधवश या आवेश-वश किसी को डांटना, फटकारना ।
६ निरन्तर अस्त्र-शस्त्र का प्रहार करना/कराना ।
७ खर्च करना/कराना ।
८ दान देना, दिलवाना ।
वरसाणहार, हारौ (हारी), वरसाणियौ—वि० ।
वरसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरसाईजणौ, वरसाईजबौ—कर्म वा० ।
रू. भे.—बरखाणौ, बरखाबौ, बरसाणौ, बरसाबौ बरसावणौ, बरसावबौ, वरीसाणौ, वरीसाबौ ।

वरसात—सं. स्त्री. [सं. वर्षा+ रा. प्र. त] १ आकाश के मेघों से पानी की वर्षा, जल वृष्टि ।
उ०—हरियाळी वांरै वास्तै ई विकसै । वांरै वास्तैई बादळा गरजै, बीजळियां खिवै अर **वरसात** व्है ।
—फुलवाड़ी
२ वह रात या दिन जब वर्षा हो रही हो । (उ. र.)
३ वर्षा ऋतु, वर्षा काल ।
उ०—तरै **वरसात** रा दिन था । काचै खड़ै पखाळद थकौ राव धीणौद री पाखती थौ । —नैणसी
रू. भे.—बरसात, बरसाद, बरसायत, वरसाति, वरसाती, वरसायत, वरात ।

वरसाति, वरसाती—वि. [सं. वर्षा+रा. प्र. ति. ती.] १ बरसात का, बरसात सम्बन्धी ।
२ बरसात की मौसम में होने वाला ।
सं. स्त्री.—१ प्लास्टिक या मोमजामे का बना हुआ एक बड़ा कोट जिसको पहनने से शरीर व वस्त्र वर्षा के पानी से भीगने से बच जाते हैं ।
२ घोड़ों का एक रोग । (शा. हो)
रू. भे.—बरसाती ।
३ देखो 'वरसात' (रू. भे.)
उ०—१ आगलि थी प्रतीहारड़ी, हाथमां सोवन कंब । रिदय कमल विकास हुइ जिम **वरसाति** कदब । —नळ दवदती रास
उ०—चंद्र सूरय पाखलि कूंडालू थाई छि **वरसाति** ।
—नळाख्यांन

वरसातीबुखार—सं. पु.—वर्षा काल में मच्छरों के काटने से फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमें आरंभ में जाड़ा लगता है, शीत-ज्वर ।

वरसाधिप—देखो 'वरसपती' ।

वरसाभू.–सं. पु. [सं. वर्षाभू] १ मेंढ़क ।
२ इन्द्रगोप या बीरबहूटी नामक कीड़ा ।
३ रक्त पुनर्नवा ।
रू. भे.—बरसाभू ।

वरसायत—देखो 'वरसात' (रू. भे.)
उ०—**वरसायत** आवण की धारी छै, आपकै जावण की त्यारी छै। जमीं नीला सिणगार धारसी, 'जसां' सिणगार उतारसी । मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलीगन झणकसी, भमरा भणकसी सीतळ पवन वाजसी, मुधरौ मेह गाजसी —मयारांम दरजी री बात
रू. भे.—बरसायत ।

वरसायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ किसी पदार्थ को छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ. २ आंखों से लगातार आंसूं बहाया हुआ, अश्रुओं की झड़ी लगाया हुआ. ३ मुख से मधुर वाणी निकाला हुआ, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग किया हुआ. ४ धन या दौलत को चारों ओर से प्राप्त किया हुआ, थोड़े परिश्रम से अधिक लाभ कमाया हुआ, अच्छी आमदनी किया हुआ. ५ क्रोध या आवेश के वशीभूत होकर किसी को डांटा हुआ, फटकारा हुआ. ६ निरन्तर लाठी या अस्त्र-शस्त्र प्रहार किया हुआ, कराया हुआ. ७ खर्च किया हुआ, कराया हुआ. (स्त्री. वरसायोड़ी)

वरसारितु–सं. स्त्री. [सं. वर्षा-ऋतु] वर्षा काल, बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु ।
रू. भे.—बिरखारत, बरखारत, बरखारित, बरखारिति, बरखारुत, बरखारुति, बरिखारित, बरिखारितु, बरिखारुत, बरिखारुति ।

वरसाळ, वरसाल–सं. स्त्री. [सं. वर्षा+आलुच्] १ वर्षा, वृष्टि, बारिस ।
उ०—१ खाळ रत्त खळहळै जांण **वरसाळ** नदी जळ । गज तुरंग गुड्डिया, गुडै भड हुवा गूंछळ । —गु. रू. बं.
उ०—२ तोपूं का जंजीरा चौतरफ फेरे । दोऊ तरफ दगी तोपूं अताळ । झालूंका झलहळ गोळूं का **वरसाळ** । धोमूं का अंधार ।
—सू. प्र.
२ वर्षा ऋतु ।
रू. भे.—बरसाळ, बरसाळा, वरसाळा, वरसाला ।

वरसाळइ, वरसालउ–देखो 'वरसाळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—सीग्रालइ जल-मांहिं सरि, उंन्हालइ पंचांगि । **वरसालइ** वगडइ वसइ, कांमकंदला-काजि । —मां. कां. प्र.

वरसाळा, वरसाला—देखो 'वरसाळ' (रू. भे.)

उ०—**वरसाला** ऋतु सोहांमणी, जलधर वरसइ मेह । कदंब रूडा वन वहिसीइ, विरहीग्रा जागइ नेह । —नळदवदंती रास

वरसाळी–वि. [सं. वर्षा+ग्रालुच्] १ वर्षात का, वर्षा सम्बन्धी ।

२ वर्षात की मौसम में होने वाला ।

सं. स्त्री.—१ वर्षात के मौसम की फसल, खरीफ की फसल ।

उ०—उदैपुर री हवेली रा गांव नजीक तिणरौ हैंसौ भोगरौ **वरसाली** हैंसौ ३ लाग सूधौ ग्राधा उनाळी हैंसौ ३ ग्राध पड़ै । —नैणसी

२ उक्त उपज का मुग्रावजा, हिस्सा, भाग, ग्रंश ।

उ०—दौलतावाद रौ हुकम ग्रायौ सु स्रीजी पौस बद३ ग्रसवार हुवा तद गुजरात रा परगनां री **वरसाळी** स्रीजी नुं दिराई । —नैणसी

३ देखो 'बारसालौ' (रू. भे.)

रू. भे.—बरसाळी, बरसी ।

वरसाळु, वरसाळू–वि.–१ जो बरसने की स्थिति में हो, बरसने योग्य ।

२ जो बरसता हो, बरसने वाला ।

उ०—गोरी तो भीजै ढोला गोखड़ै जी, कोई ग्रालीजौ भीजै, ग्रालीजौ भीजै फौजां मांय, हांजी ढोला मांय, ग्रब घर ग्रायजा, **वरसाळू** वादळा हो जी । —लो. गी.

३ वर्षा ऋतु सम्बन्धी ।

४ उक्त ऋतु की फसल के लिये चलने वाला (व्यक्ति, हळ)

उ०—कसबै सोजत हळ २०१ दरबार हासलीक **वरसाळू** जुपै छै । —सोजत रे मंडळ री बात

सं. स्त्री.—१ वर्षा, बारिस ।

उ०—मोतियां री लड़ियां उंची सोवै बुगला विसाळ, रसराज पिया पपिया रै कारण ग्राई **वरसाळू** । —लो. गी.

२ वर्षात की मौसम।

३ उक्त मौसम में होने वाली फसल, खरीफ ।

४ उक्त मौसम में होने वाला बुखार, विषमज्वर ।

रू. भे.—बरसाळू ।

वरसाळै–क्रि. वि.—वर्षा ऋतु में ।

उ०–सुंदर स्यांम सरीर, बाधौ कट रांम पीत पीतंबर । काळै बादळ सूं कै, वीटांणी बीज **वरसाळै** । —र. ज. प्र.

वरसाळौ–सं. पु. [सं. वर्षा+ग्रालुच] १ वर्षा ऋतु, बरसा का मोसम ।

उ०—१ ऊनाळौ उतरियौ, **वरसाळौ** उतरियौ, सीयाळौ ग्रायौ । —नैणसी

उ०—२ वरखा छूर गोळिया वाळै, वणियौ मेघ जांण **वरसाळै**। समड़ै मुड़ै मुड़ै समड़ावै, ग्रसुर सजोस रोस उफणावै । —रा. रू.

२ वर्षा ऋतु के चार मास की ग्रवधि, चातुर्मास ।

३ वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

वि.—बरसने वाला, बरसने योग्य ।

रू. भे.—बरसाळौ, वरसाळइ, वरसाळउ ।

वरसावरस, वरसावरसी–सं. पु. [सं. वर्ष+वर्ष] प्रति वर्ष, हर साल ।

उ०—१ सीदौ उदियासिंघ सूं कीधौ रांम करार । सोझत लौ **वरसा वरस**, रुपिया सात हजार । —रा. रू.

उ०—२ पछै जांम बात कर मेळ कियौ । घोड़ा ५ जांम दिया । घोड़ा १० री जमै ग्रागै की, सु **वरसावरस** द्यै । ग्राय मिळियौ । ग्रमीखांन दिसिया कहचौ-मार ल्यौ, थांहरौ गुनैगार छै । हमैं घोड़ा ६० वरसावरस द्यै छै । —नैणसी

रू. भे.—बरसाबरस, बरसावरसी ।

वरसि—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—कां कलपांत ज ग्रादरइ ? गूझ कहूं गुण-रेख । इणि घटि माधव मेलवसि, **वरसि** दीह विसेखि । —मा. कां. प्र.

वरसिंघ–सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बां. दा. ख्यात)

रू. भे.—बरसिंघ, बरसिंह, वरसिंह ।

वरसि—१ देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ० कांन्हडदेवि कही परि घणी, किसी वात समीयाणा तणी । केहउ गरव तुम्हे मनि धरउ, सात वरसि लीधउ डूंगरउ । —कां. दे. प्र.

२ देखो 'वरसो' (रू. भे.)

वरसिण—देखो 'वरसण' (रू. भे.)

वरसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बूंदों के रूप में पृथ्वी पर पड़ा हुग्रा. (पानी) २ बादलों के पानी की तरह छोटे-छोटे कणों के रूप में गिरा हुग्रा. (कोई पदार्थ) ३ ग्रांखो से बहा हुग्रा. (ग्रांसू) ४ मधुर वाणी निकला हुग्रा, मधुर भाषित. ५ चारों ग्रोर से ग्राया हुग्रा, थोड़े परिश्रम से मिला हुग्रा. (धन, लाभ) ६ ग्रच्छी तरह से झलकित. (कान्ती) ७ किसी को किसी के द्वारा डांटा जाना, फटकारा जाना. ८ ग्रस्त्र-शस्त्र प्रहार हुवा हुग्रा, ग्रस्त्र-शस्त्र प्रहारित । ९ दान दिया हुग्रा ।

(स्त्री. वरसियोड़ी)

वरसींघोत—देखो 'वरसिंघ' (रू. भे.)

वरसी–सं. स्त्री. [सं. वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति के पीछे किया जाने वाला प्रथम वार्षिक श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन, दान-पुण्यादि ।

उ०—तद फूलमती कहीं- राजा जो तूं मोनुं हाथ लगायौ तौ हूं पण मरीस अर तनेंई मारीस। अर एक वरस तांई हर हेके हूं जदेह महल रहीस एतै वरस दिन तांई पुन्य कर कुंवर री वरसी कर पछै थारै ढोलीयै आईस इतरै मनें छेड़े मती। —चौबोली

२ मृत व्यक्ति के पीछे प्रति वर्ष मृत्यु के दिन किया जाने वाला श्राद्ध, ब्राह्मन भोजन, दान।

३ प्रति वर्ष आने वाली मृतक की मृत्यु तिथि।

४ द्वादशी तिथि।

५ देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—रिसभदेव वरसी तप कीधउ, छमासी कीधउ वरधमांन। —स. कु.

रू. भे.—बरसी, वरसि।

वरसूवलिया-सं. स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

वरसेस-सं. पु. [सं. वर्ष+ईश] किसी संवत्सर के किसी वर्ष का अधिपति ग्रह। (फलित ज्योतिष)

वरसोत, वरसोद-सं. स्त्री. [सं. वार्षिक वर्षोत्थ, वर्षोदय] १ किसी कार्य के बदले दिया जाने वाला वार्षिक वेतन, साल भर की मजदूरी जो एक साथ दी जाती है।

उ०—इयै नै म्हां चाकर राखियौ छै, औ कहै छै-मनै साहूकारां कन्हा वरसोद कराय देवौ, पछै चोरी काई हुवण देऊं नहीं। —राजा भोज व खाफरा चोर री वात

२ राजा या शासक को प्रति वर्ष भेंट के रूप में दिया जाने वाला लगान, कर।

उ०—पूनियं रै परगने में हळगणत-आवै। डीडवांणे रा साहूकारां री वरसोत आवै। परबतसर चौरासी मारोठ री दाळ आवै और च्यारू पासां रौ माल खायजै। —सूरे खींवै कांधलोत री वात

३ प्रति वर्ष दी जाने वाली सहायता, अनुदान।

४ वार्षिक पुरस्कार।

उ०—बारोटौ,देण रौ, कवल पैलां तें कीधौ। वचन करे वरसोद,रुकौ हाथां लिख दीधौ। रुपीया दोय हजार, धांन मण तीन हजारां,ज्याज पाप री जेम, खोय पींदै जळ धारां। —अरजुनजी बारहठ

रू. भे.—बरसोंद, बरसोद, बरुद, बरुध, वरोद, बरोध।

वरसोदण-वि. स्त्री. [सं. वर्षोदयन] १ जो प्रति वर्ष फल दायिनी हो। जो प्रति वर्ष फल देने के लिये आती हो।

उ०—ल्यावणवाळां ने लिचपिच लापसी, जी क काटणवाळां ने गुडळी खीर। औ क वरसै वरसोदण होळी पावणी जे। —लो. गी.

२ वर्ष भर निभने वाली, वर्ष भर चलने वाली।

३ प्रति वर्ष उत्थान या उन्नति करने वाली।

रू. भे.—बरसोदण।

वरसोदियौ, वरसोदीयौ-वि. [सं. वर्षोदयन] (स्त्री. वरसोदण) १ प्रति वर्ष प्राप्त होने वाला।

२ प्रति वर्ष उन्नति देने वाला।

३ वर्ष भर तक मौजूद रहने वाला, निभने वाला, चलने वाला।

४ प्रति वर्ष आने वाला।

रू. भे.—बरसोंदियौ, बरसोदियौ, बरसोदीयौ।

अल्पा.—बरसोदी।

वरसोदी-वि.—प्रति वर्ष।

अल्पा.—बरसोड़ी।

वरसोळौ-सं. पु. [स. वर्षोपलः] १ वर्षा की बूंदों के साथ गिरने वाला छोटा हिम खण्ड, ओला। (उ. र.)

२ एक खाद्य पदार्थ विशेष।

३ बढ़ई का लकड़ी छीलने का एक उपकरण, औजार।

रू. भे.—बरसोळौ, बरसोलौ।

वरसोह-सं. पु.—[सं. वर्ष्मन्] विवाह के समय दूल्हा व दुल्हन के चेहरे तथा शरीर पर आने वाली आभा या कान्ती।

उ०—करियरि ककण सुकरि, नैंत्र बाधौ सिखराळह। वीररस्स वरसोह, कंठ लज्जी वरमाळह। विकट रूप वींदणी, खुरम घड कीध आडंबर। लगन प्रब्ब रणताळ, धमळ-मंगळ सिंधू-सुर। अधपति बहूतरि ऊमरा, सतरि खांन सुरतांण रा। दळ-थंभ 'गजण' दुल्लह हुऔ, जांन सेन जोगणपुरा। —गु. रू. बं.

वि. वि.—देखो 'सोळौ' (१)

रू. भे.—वरस्सोह।

वरस्ट—देखो 'वरसट' (रू. भे.) (अ. मा.)

वरस्वरग-सं. पु.—१ मुक्ति। (अ. मा.)

२ जीना।

३ निश्रेणी।

वरस्स—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—आयौ जाळंधर 'अजौ' सुख ऊपनौ सरस्स। सुज तिण ऊपर संपनौ, पंचावनौ वरस्स। —रा. रू.

वरस्सोह—देखो वरसोह' (रू. भे.)

उ०—तुरां तोखै मेलवा लोह तातौ। मरेवा तणी होड रौ कोड मातौ। वरस्सोह बध्धावळै आंक आडौ, लखै थाट जांनी हुऔ 'भीम' लाडौ। —गु. रू. बं.

वरह-सं. पु. [सं. बर्ह] १ मोर की पूंछ।

२ मोर की पूंछ का चंदोवा।

३ पक्षी की पूंछ ।
४ पत्र, पत्ता (अ. मा.)
५ अनुचर वर्ग ।
६ देखो 'विरह' (रू. भे.)
उ०—वरह दावानल आकुली, सखी प्रिय प्रिय भाखइ रे । भाखइ नइ दाखइ, कंत किहां गयु ए । —ढन दवदंती रास
रू. भे.—बरह, वरहरा ।

वरहण –१ देखो 'वरह' (रू. भे.) (नां. मा.)
२ देखो 'विरहरा' (रू. भे.)

वरहमुख–सं. पु. [सं. वर्हिमुख] देवता, देव (ह. नां. मा.)
मि.—अग्नि-मुख ।

वरहार–सं. पु.—एक प्राचीन देश ।
उ०—पंचाल गोरजर नागद्रह ऊंच वरहार मथुरा अवध्या वणारसी चंदेरी । व. स.

वरहास–सं. पु. [सं. वर+भास] १ घोड़ा, अश्व । (ह. नां. मा.)
उ०—१ वरहास दौड़ै वेगला, किरि खडै नभ उर मंडळा । हुइ हमस धम धम हैं-खुरां, वाजंत धम-धम पाखरां । —गु. रू. बं.
उ०—२ वरहास नास चाचर विखेरि, फारक्का जेम असि, फिरइ फेरि । आसिरा तणउ ऊजळ इ आसि, वेताळि केल्ह चडियउ व्रहासि । —रा. ज. सी.
२ ऊंट, उष्ट्र ।
उ०—१ कमळा किया कतार, भर बुडी तंग भार । लेह देह छोडीजै लास, विलोहणै वरहास । —गु. रू. बं.
उ०—२ ढोलो कहै म सांहणी, वाळी अंतुळ ग्रास । सांझै पुंगळ पुजवै, कोई एहडो वरहास । —ढो. मा.
रू. भे.—बरहास, बरास, ब्रहास, भ्रहास, वरास, व्रहास ।

वर्हि, वरही—देखो 'बरही' (रू. भे.)
उ०— कोकल परियां गांन घणकिया, ग्रीधां भमर भणंकिया गाढ़ । वरही कपण ढणकिया चहुंवळ, विविध सुबास खणकिया वाढ । —राव चांपा रौ गीत

वरहीवाह–सं. पु. [सं. वर्ही-वाह] स्वामी कार्त्तिकेय । (नां. मा.)

वरहु—देखो 'विरह' (रू. भे.)
उ०—बार घडी जीणइ उग्रउ लीध, बार वरस तीणइ वरहु कीध । पुत्र राजि बइसारी करी, नल दवदंती संयम वरी । —नळ दवदंती रास

वरांग–स. पु. [सं. वर+अंगः,] १ हाथी ।
[सं. वर+अंगम्] २ सिर, मस्तक ।
३ सुडौल शरीर ।
४ विष्णु जिन के सब अंग श्रेष्ठ माने गये हैं ।
५ ३२४ दिनों का एक नक्षत्र वत्सर ।
६ दाल चीनी ।
७ वृक्ष की शाखा, टहनी ।
८ गुदा ।
९ भग, योनी ।
वि. [सं. वर+अंगी] १ सुन्दर अंगों वाला ।
२ उत्तम, अवयव ।
रू. भे.— बरंग, बर-अग, वरंग, वरांगी ।

वरांगना—देखो 'वारगना' (रू. भे.)

वरांगी–सं. स्त्री. [सं. वर+अंगी] १ हल्दी ।
२ मजीठ ।
३ देखो वरांग' (रू. भे.)

वरांसइ, वरांसउ, वरांसिउ, वरांसीयइ–वि. [सं. विपर्यस्त] १ परिवर्तित, बदला हुआ । (उ. र.)
२ भ्रामक ।
सं. पु.—१ अभाव, अनस्तित्व ।
उ०—फरस रांम आपणी माइ तणउं सिर-कमल छेदइ । माघ जेवडो विद्वांस पग सूजि भूखि मूउ, नागारजुन स सिद्धि पूठिउ, गांगेय जेवडो सुभट पुत्र नइं वरांसइ पडइ । —व. स.
२ प्रतिकूलता, उलटापन, विरुद्धता । (उ. र.)
३ अदल-बदल, उलट-पलट । (उ. र.)

वरा–सं. स्त्री. [सं.] १ पार्वती । २ लक्ष्मी । ३ हल्दी । ४ त्रिफला । ५ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य । ६ ब्राह्मीबूंटि । ७ मजीठ । ८ मदिरा, शराब । ९ गुड़च । १० विडंग । ११ चित्रकला १२ मेदा ।

वराक–वि. [सं. वराक] १ तुच्छ, नगण्य ।
उ०—काट जिकां कुळ ऊबटै, आठ-वाट इतफाक । वां सबळां ही पुरसड़ां, वैरी गिणै वराक । —बां. दा.
२ नीच, पामर, हीन ।
३ अभागा, दीन, गरीब, बेचारा ।
स. पु. [सं. वराकः] १ शिव महादेव ।
२ युद्ध, लड़ाई ।
३ पापड़, पर्पट ।
४ दूध भरने से उभरे हुए स्तन ।
५ योनि । (पशु)
६ बगला ।
रू. भे.—बराक ।

वराड़—सं. पु. [सं. वरऽऽर] १ विचार।
२ चंदा।
उ०—विणज हुग्रौ बिछड़ती वेळा, वळीयौ कर ग्रापरौ **वराड**। बिणज करै केईक बावड़िया, गया कतायक मूळ गमाड़। —ग्रोपौ ग्राढौ
३ देखो 'बराड़' (रू. भे.)

वराड़णौ वराड़बौ—देखो 'वराणौ, वराबौ' (रू. भे.)
वराड़णहार, हारौ, (हारी), **वराड़णियौ**—वि०।
वराड़िग्रोड़ौ, वराड़ियोड़ौ, वराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
वराड़ीजणौ, वराड़ीजबौ—कर्म वा०।

वराचक, वराचख, वराछक—देखो 'बराछक' (रू. भे.)
उ०—हुवा रण छेह हठै न हनौज, कटै हथणापुर ग्रौर कनौज। ग्रणी सिर नांखत खैग ग्रमीर, **वराचख** जूंभत पाबूग्र वीर। —पा. प्र.

वराट वराटक—सं. पु. [सं] १ कौड़ी।
२ रस्सी, डोरी।
३ कमलगट्टा।
रू. भे.—बराट, बराटक।

वराटिका—सं. स्त्री. [सं.] १ कौड़ी।
२ तुच्छ वस्तु।

वराणौ, वराबौ—क्रि. स. ["वरणौ" क्रि. का प्रे. रू.] १ विवाह के लिये चुनकर वरण कराना, ग्रंगीकार कराना, शादी कराना।
२ चुनवाना, पसंद करवाना।
३ स्वीकार कराना, मनवाना।
४ निगलवाना, खिलाना।
५ वरदान दिलाना, ग्राशीर्वाद दिलाना।
६ याचना करवाना।
वराणहार, हारौ (हारी), **वराणियौ**—वि०।
वरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वराईजणौ, वराईजबौ—कर्म वा०।
वराड़णौ, वराड़बौ—रू० भे०।

वरात—देखो 'बरात' (रू. भे.)
उ०—'पाल' रौ **वराती** वरन पाल, संभरी हाथ ग्रहियां चडाल। बाचत खत ग्रायौ वडे वेव, दाखूं **वरात** मझ गोगदेव। —पा. प्र.

वरा'त—देखो 'वरसात' (रू. भे) (डूंगरपुर)

वराती—देखो 'बराती' (रू. भे.)
उ०—'पाल' रौ **बराती**' वरन पाल, संभरी हाथ ग्रहियां चडाळ। बाचत खत ग्रायौ वडे वेव, दाखूं वरात मझ गोगदेव। —पा. प्र.
उ०—२ कोई तावड़ियै बळैगा जांन-**वरातियां**। —लो. गी.

वरापूर—देखो 'बरापूर' (रू. भे.)
उ०—मिळै जैत माळा मुदी वैल माळा। **वरापूर** सूरां धजा संगि बाळा। ग्रणी सांमि ग्रागै इसै कांम ईंदा, वणै ऊहड़ै वंकड़ा क्रीत विंदा। —रा. रू.

वरारक—सं. पु. [स. वरारकं] हीरा।
रू. भे.—बरारक।

वराळ, वराल—सं. पु. [सं. वाष्प+राज. राळ] १ ग्रग्नि की लपट
उ०—धुबि झाळ **वराळ** पुरा धूंबाड़े, ज्वाळ कराळ विसाळ जळै। इक सूर लड़ै रिण चूर हुवै, ग्ररि पूर धकै इक दूर पुळै। —रा. रू.
२ वाष्प।
३ तीव्र उष्णता।
रू. भे.—बरळ, बराळ।
[सं. वराळः, वरलका] ४ लौंग, लवंग।

वरावणौ, वरावबौ—देखो 'वराणौ, वराबौ' (रू. भे.)
उ०—समोभ्रम 'मांडण' दारुण सूर। हठी खळ मीर **वरावत** हूर। —सू. प्र.
वरावणहार, हारौ (हारी), वरावणियौ—वि०।
वराविग्रोड़ौ, वरावियोड़ौ, वराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वरावीजणौ, वरावीजबौ—कर्म वा०।

वरास—देखो 'वरहास' (रू. भे.)
उ०—वैराड़ देस रा के **वरास**, हालता झांप भरता हुवास। पींडा-स चाक ग्रह तन प्रचंड, हरडा स बाज ताजी हुसंड। —पे. रू.

वरासन—सं. पु. [सं. वर+ग्रासन] १ उच्च व श्रेष्ठ ग्रासन।
२ वर के बैठने का ग्रा ग्रासन। (विवाह)
३ दरबान।
४ ग्रड़हुल।
५ नपुंसक।

वराह—सं. पु. [सं.] १ शूकर, सूग्रर।
उ०—१ केहर रै हाथळ करी, **कीधी दांत वराह**। **सूर काज कीधौ** सुजड़, विध करतापण वाह। —बां. दा.
उ०—२ **केताएक दिन पीछै वीसल महाराज कुमार सिकार गया।** तहां एक **वराह** रौ पीछो कियौ। **संग बीछुड़ियौ। ग्रकेला दूर गया।** —सिंघासण बत्तीसी

२ विष्णु के दश अवतारों में से तीसरा अवतार।

उ०—सिर हल्लिय अध सेस, हहर चित्त कछप हल्लिय। हल्लिय दाढ वराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय। —र. ज. प्र.

३ मेढ़ा।

४ सांड।

५ बादल।

६ युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।

७ अष्टादश पुराणों में से एक।

८ शूकर के रूप का व्यूह।

९ घड़ियाल, नक्र, मगर।

१० एक प्राचीनपर्वत।

११ वाराही कन्द।

रू. भे.—बराह, बाराह, वराहउ वराहै, वरांहा, वारा, वाराह, वाराहउं, वाराहर।

वराहउं—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—जइ सूकी तउइ वउलसिरी, जइ वीधी तउ मोतिसिरी, जउ भागउं तउ **वराहउं**, जइ थाकउं, तउइ सोराहउं, जइ खांडउ तउ चंद्र। —व. स.

वराहक—सं. पु. [सं.] १ कुबेर सभा में उपस्थित एक यक्ष।

२ घृत राष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ था।

वराहजयंती—सं. स्त्री.—भादौ सुदि तृतीया की तिथि।

वराहजी—सं. पु. [सं. वराह+रा प्र. जी.] १ विष्णु का वराह अवतार।

२ देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—भीनमाल नगर रतन महैसदासोत रै समै स्वप्न दे नै स्त्री **वराहजी** प्रथी बाहर आया। —बां. दा. ख्यात

वराहदूहौ—सं. पु.—दूहा नामक छंद का एक भेद जिसमें २१ गुरु व ६ लघु होते हैं। इसको भ्रामर या सुभ्रामर भी कहते हैं।

उ०—विस्व दुगण मुनि कहि वरण, रस मुनि त्रिगुण रहोइ। नांम **वराह सु** छंद वद, जिण फिरि लघु गुर जोइ। पिं. प्र.

वराहमिहिर—सं पु. [सं.] वृहत्संहिता, पंच सिद्धांतिका और वृहज्जातक नामक ग्रंथों के रचयिता ज्योतिष के प्रधान आचार्य।

रू. भे.—बराह मिहिर।

वराहमोती—सं. पु. [सं. वराह+मौक्तिक] एक प्रकार का मोती जो सूअर के मस्तक में से निकलता है।

वराहसंहिता—सं. पु.—वराहमिहिर द्वारा रचित वृहत्संहिता नामक ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रंथ।

वराहावतार सं. पु. [सं] विष्णु का तीसरा अवतार जो हिरण्याक्ष नामक असुर का वध करने के लिये हुआ था।

रू. भे.—बाराहावतार, वाराहावतार।

वराही—देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—देवी नारसिंघी **वराही** विख्याता, देवी इळा आधार आसूर हाता। —देवि

वरि—क्रि. वि. [सं. उपरि] १ ऊपर, पर।

उ०—१ कंठि निगोदर अवसर नवसर उर **वरि** हार। कंचण कंकण चूडिय रूडिय बाहु सिंगार। —जयसेखर सूरि

उ०—२ अणियाळा नयण बांण अणियाळा, सजि कुंडळ खुरसांण सिरि। वळे बाढ़ दे सिळी सिळी **वरि**, काजळ जळ वाळियौ किरि। —वेलि

२ फिर, पुनः बाद में।

वि.—१ समान, अनुरूप।

उ०—वदन कळा सोळह सिसहर **वरि**, कोमळ वप्प वरन्नी केसरि। वांमा अंग वणी वर सुंदरि, कनकलता जांणे कळप्पतरि। —गु. रू. बं.

सं. स्त्री.—तरह, भांति।

उ०—१ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु **वरि**। हिव पल-पल चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि। —वेलि

उ०—२ मावीत्र अजाद मेटि बोलै मुखि, सुवर न की सिसुपाळ सरि। अंति अंबु कोपि कुंवर ऊफणियौ, वरसाळ वाहळा **वरि**। —वेलि

देखो 'वरी' (रू. भे.)

रू. भे.—बरि।

वरिआंन—सं. पु.—१ एक वर्ण वृत्त जिसमें प्रथम एक दीर्घ, फिर चार ह्रस्व वर्णों के क्रम को तीन बार रखकर अंत में गुरु लघु कुल सत्रह वर्ण होते हैं। —ल. पिं.

२ देखो 'वरियांण' (रू. भे.)

३ देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

वरिआंम—देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

उ०—'प्राग'हर मोटा प्राक्रम जाचणां वगसणौ जगम। अनविधण हींदू ओपम वीरवर **वरिआंम**। —ल. पिं.

वरिक्खा, वरिखा—देखो 'वरसा' (रू. भे.)

उ०—१ प्रजा राज आणंद पूगी परखा। वधै देवतां कीध फूलां **वरिक्खां**। —सू. प्र.

वरिखारित, वरिखारितु, वरिखारुत, वरिखारुति—देखो 'वरसारितु' (रू. भे.)

उ०—१ दसराहा लग भी रहयउ, मालवणी री प्रीत । **वरिखारुति** पाछी वळी, आवी सरद सुचीत । —ढो. मा.

उ०—२ ग्रीध चात्रिग वीरघंटा दादुर बोलै, मुगळ लाल ममोला सा निजरि आवै । **वरिखारित** वरणी । सरदरित कहणी । —वचनिका

वरिठ्ठ—देखो 'वरिस्ठ' (रू. भे.)

उ०—आणंद वरत्या हुया उच्छव, वसुह मांहि **वरिठ्ठ** ओ । सो गुरु स्रीजिणचंद सूरि, धन्न नयणै दिठ्ठ ओ । —स. कु.

वरियण—सं. स्त्री. पृथ्वी, भूमि । (डिं. नां. मा.)

वरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ समभाय एक **वरियां** सकाज, रण हतां असुर बैनीत-राज —शि. रू.

उ०—२ नून चाहजै सो पद सौ नहि, पद निकमौ है अधिक पद । पद इक द्वै **वरियां** सु कथित पद, हव सुण पतत प्रकर्स ह्रद । —बां. दा.

वरियांण—सं. पु. [सं. वरियाण] १ ज्योतिष के २७ योगों में से अठारवें योग का नाम । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—वरिआंण, बरीयांण ।

२ देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

वरियांम—वि. [सं. वरेण्य या वरीयस्] १ श्रेष्ठ, उत्तम, शिरोमणि, सर्वोत्तम ।

उ०—१ सहकोय साजत करौ सुभडां, विरद झल **वरियांम** । कुळ जनक कुमरी व्याह करसी, रिधू वरसी रांम । —र. रू.

उ०—२ अखरतौ मदां करैवा अचड़ां, वैर वाराह कमंध **वरियांम** । आग्रै दळै सांमहौ आयौ, रूक भुगत करवा बळरांम । —बळरांम राठौड़ रौ गीत

उ०—३ चडै बेल **वरियांम**, सुजळ ते आगळ चंचळ । गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर त्रंबागळ । —गु. रू. बं

२ प्रवीण, चतुर ।

३ वरण करने योग्य ।

उ०—"आसकन्न" वडौ एकाधपत्ति, नींबउत्त नमौ आतम सकत्ति । ओपमा करन्नै अणं-नींद, **वरियांम** कुंआरी घडा-वींद, । —गु. रू. बं.

४ सुन्दर, रूपवान ।

उ०—१ **बरियांम** लगांण पलांण बणावौ, एस उपाडै ऊकडता । परचंड हुसंड किया तहि पक्खर, अंबर सांमां ऊछळता । —गु. रू. बं.

उ०—२ निज कौसल्य केकइ सुमित्रा नांम । **वरियांम** तणै अति हेत वांम । दसरत्थ विभै इम नजर दीध । कांमना पुत्र धरि जिगन कीध । —सू. प्र.

उ०—३ सिणगारी सन्नाह सूं, बिसकांमिणि **वरियांम** । वरिआई हाला वरण, करण महाजुध कांम । —हा. झा.

५ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—१ ऐ **वरियांम** निहस्सिया, दोय घड़ी इक जांम । "अजबौ" वीठळदास रौ, पड़ियौ खैत दुगांम । —रा. रू.

उ०—२ सनमुख साह निविद्धियौ, कीधौ नारद कांम । कळि लग्गी रट्ठौड हर, मरसी के **वरियांम** । —गु. रू. बं.

उ०—३ 'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि । मुळकियौ मछरि घण रोस मज्झि, कमधज कहै कर धूणि तेग । **वरियांम** विडगां चडौ वेग । —गु. रू. बं.

६ जोरावर, जबरदस्त ।

उ०—१ आरब मारचौ 'अमरसी,' वड हथ्थै **वरियांम** । हठ कर खैडै हारणी, कमंधज आयौ कांम । —द. दा.

उ०—२ राजकुळी वंस छतीसेइ रावतं, वीरति वंका **वरियांम** । मारूधर सांम तणै छळि मिळिया, करण कणैगिरि संग्रांम । —गु. रू. बं

७ प्रमुख, मुख्य ।

उ०—१ रहच खळां दळ रोळणा, वीर उभै **वरियांम** । 'किचनर' 'पातल' रै करां, लंदन तणी लगांम । —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ सू किसा-एक सरदार जुवांन छै ? पाकां पाकां **वरियांम** नूं, अजरायलां नूं खींवरां नूं डांण हुलां, डाकियां नूं ।—रा. सा. सं.

सं. पु.—मंत्री, वजीर । (डिं. नां. मा.)

रू. भे.—बरयांम, बरियांम, बरीयांम, बारियांम, बारीयांम, वरिआंम वरीआंम, वरीयांन, वरीयांम ।

वरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ विवाह के लिये चुना हुआ, वरण किया हुआ, अंगीकार किया हुआ, शादी किया हुआ. २ पसंद किया हुआ, चुना हुआ. ३ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. ४ निगला हुआ, खाया हुआ. ५ वरदान दिया हुआ, आशीर्वाद दिया हुआ. ६ मांगा हुआ, याचना किया हुआ ।

(स्त्री. वरियोड़ी)

वरियोवेस—सं. पु.—राठौड़ों की प्रसिद्ध तेरह शाखाओं में से एक । (बां. दा. ख्यात)

वरियौ—देखो 'बड़ियौ' (रू. भे.)

वरिस—देखो 'वरस' (रू. भे.)

वरिसणौ, वरिसबौ—१ देखो 'वरणौ, वरबौ' (रू. भे.)

उ०—इक भव अथवा दोइ भव अंतरै रे, वरिस्यौ सिवगति नार ।
—वि. कु.

२ देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू. भे.)

वरिसि—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—बार **वरिसि** गोदावरी, अेहवी अेक जिवार । हंस हवइ छांडइ नहीं, गुण केहा गमार । —मा. कां प्र.

वरिसियोड़ौ—१ देखो 'वरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरिसियोड़ी)

वरिस्ठ—वि. [सं. वरिष्ठ] १ श्रेष्ठ, उत्तम, उच्च ।

उ०—मिथ्या मंनण मती कर मन तूं, सत् विचार उर धरना । वर वरीयांन **वरिस्ठ** पदवी, पोथा सोई तिरना ।
—स्रीसुखरांम जी महाराज

२ पूजनीय, पूज्य ।
३ पुराना, बुजुर्ग ।
४ तुलना में किसी से बढ़कर।
५ सबसे बड़ा ।
६ सब से अधिक लंबा ।
७ सबसे अधिक भारी ।
सं. पु. [सं. वरिष्ठः] १ तित्तिर या तीतर पक्षी ।
२ नारंगी का पेड़ ।
[सं. वरिष्ठं] ३ ताम्र, तांबा ।
४ मिर्च ।
५ चाक्षुप मनु के पुत्रों में से एक ।
६ धर्म सावर्णि मन्वंतरों के सप्त ऋषियों में से एक ।
७ उरुत्तम्स ऋषि का एक नाम ।
रू. भे.—वरिट्ठ, बरिस्ठ, वरिट्ठ ।

वरी—सं. स्त्री.[सं.] १ सूर्य पत्नी छाया का नाम ।

२ शतावरी का पौधा ।

३ विवाह के समय वर पक्ष की ओर से बधू के लिये भेजी जाने वाली विशेष पोशाक ।

४ दुल्हे व दुल्हिन की पोशाक ।

५ कुए से पानी निकालने की छोटी रस्सी ।

देखो 'वरि' (रू. भे.)

उ०—उडै पग हात किरका हुवै अंग रा, बहै रत जेम सांवण बहाळा आप आपौ **वरी** जोयनै आड़ियां, लड़ै रिण भल-भला निराताळा
—र. रू.

रू. भे.—बरी, वरि, भरी ।

वरीआंम—देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

उ०—इण भांति रौ धंधळी तजारौ, वांधळौतजारौ सो किणनूं जी पाकां पाकां **वरीआंमां** जोधारां करड़दंता ।
—रा. सा. सं.

वरीयां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ दुपहरा की **वरीयां** यैसौ बीजण होय गयौ छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै कैसी भांति जैसी माह की राति होय ।
—वेलि टी.

उ०—२ तद राजा कहि साबास आहीज आहीज **वरीयां** ले आवौ ।
—चौबोली

वरीयांण—१ देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

२ देखो 'वरियांण' (रू. भे.)

वरीयांन, वरीयांम—देखो 'वरियांम' (रू. भे.)

उ०—मिथ्या मंनण मती कर मन तूं, सत् विचार उर धरना । वर **वरीयांन** वरिष्ट पदवी, पोथा सोई तिरना ।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ बंस विसुद्ध **वरीयांम** सांम्हौ विढण । घणा दिसि दोइणौ म्हांलियौ विरद घण । —हा. झा.

उ०—३ 'पाल' हरा काळ रूपी बीज जिही खीज बडै, अडै भुजा भला गौ इसौ **वरीयांम** । —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

वरीस—सं. पु. [सं. वारि+ईश] १ समुद्र, सागर ।

उ०—'भीम' भांण सारीख, 'करन' सिवदांन सरीसा । जोधा छळ जोधांण, बोल दळ वेळ **वरीसा** । —रा. रू.

२ देखो 'वरीसण' (रू. भे.)

उ०—१ वीस च्यार धुर वरणवौ, सुख **वरीस** संसार प्रथवी सीस पचीसमौ, ईस 'पतौ' अवतार । —जैतदांन बारहठ

उ० —२ साहण समंद सेन सीसौदा, रांणा तौनूं रांम रिम । अरथ **वरीस** करै सिर ऊपर, कळह वरीस न करै किम ।
—महरांणा कुंभा मोकळोत री गीत

उ० —३ गढपत्ती सांसण गजां, आपण लाख पसाव । अभौ प्रतप्पौ कोटि जुग, कोड़ि **वरीस** सुभाव । रा. रू.

उ०—४ विरुदावली हसती **वरीस** अवनीस, लाख सांसण कोड़ि **वरीस** । अडंड डंडण अगंजी गंजण, अनमी असुत ताहि न्रमी भूत करण । —रा. रू.

३ देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—१ जोड़ विराजै वर तरुणि, मोड़ विराजै सीस । कव आसीसै लोड़ धन, जीवौ कोड़ **वरीस** । —रा. रू.

उ०—२ राजा तुम्ह रुड़ूं हजौ, इम माहरी आसीस । परिकर सहू परिवार-सिउं, जीवै कोडि **वरीस** । —मा. कां प्र.

रू. भे.—बरीस ।

वरीसण, वरीसणौ–वि. [सं. वर्षणम्] १ दान देने वाला, दातार, उदार-चित्त ।

उ०—१ लख धीर वडौ लख लूट वणी वपि लाज, वड चीत **वरीसण** बाज गरीबनिवाज, जदुवस उजाळ महागुण जांण, तप तेज दिनंकर जेम तपै तुडितांण । —ल. पिं

उ०—२ आहुई वडौ राठौड़ विसरांमियां, तज गया दूसरा न मायत टेक । हसत नित **वरीसण न कौ** इळ रायहर, हसत बंध कवि नहीं जगत मैं हेक ।

—द्वारकादास धधवाड़ियौ

उ०—३ कोडि **वरीसणौ** लखधीर वडाकर, राजिंद रूपक रंजणौ । वैर वराहळि आंदळ बादळ, भूप खळां दळ भंजणौ । —ल. पिं.

२ दान ।

३ उत्सर्ग, त्याग ।

रू. भे.—बरीस, बरीसण, वरीस ।

वरीसणौ, बरीसबौ–देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू. भे.)

उ०—लाख वरीसै भोज तूं, कवित नवा कहणांह । लड़ालूंब वणियौ विहद, गढपत जस गहणांह । —बां. दा.

वरीसणहार, हारौ (हारी), वरीसणियौ— वि० ।

वरीसिओड़ौ, वरीसियोड़ौ, वरीस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वरीसीजणौ, वरीसीजबौ—कर्म वा० ।

वरीसियोड़ौ—देखो 'वरसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरीसियोड़ी)

वरु—देखो 'वर' (रू. भे.)

उ०—१ जो अम्हारूं वयणु सुणेसिइ, निम्चि सो **वरु** मइं परिणेसिइ । खेचरु भूचरु भूमिधरो । —पं. पं. च.

उ०—२ खूटां अरजुन सवि हथियार, माल भूझ बेउ करइं अपार । साहिउ अरजुनि वनचरु पागि प्रकटु हुई बोलइ **वरु** मांगि ।

—पं. पं. च.

वरुऔ–सं. पु. [सं. वटुक, प्रा. बडुअ] १ ब्रह्मचर्यावस्था, बटुक, ब्रह्मचारी ।

२ उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत ।

३ उक्त संस्कार के अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

४ ब्राह्मण बालक ।

५ प्रोहित कर्म करने वाला विद्वान् ब्राह्मण ।

रू. भे.—बरुऔ ।

वरुण–सं. पु. [सं.] १ सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता जो जल का अधिष्ठाता, दस्युओं का नाशक व देवताओं का रक्षक माना गया है ।

उ०—१ वरुण जाय दीन्हा तहां, रतन पदारथ जाय । आय अवंतिका सौ रतन, ब्राह्मण दीधा आय । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ ता पुर में जैते बसै, सब ही वरुण समांन

—गजउद्धार

२ आठ दिक्पालों में से एक, पश्चिम दिशा का दिक्पाल ।

३ पश्चिम दिशा ।

४ मित्र देवताओं के साथ रहने वाले बारह आदित्यों में नौवें आदित्य का नाम ।

५ समुद्र ।

६ पानी, जल, नीर ।

उ०—**वरुण** येतौ कठा सूं आंण सूं विचारै, चवै इम तरण सूं मूंह चडियौ । करण दरियाव री रीत लख केलपुर, पुरंदर भरण रौ चीत पडियौ । —महाराणा राजसिंह रौ गीत

७ सूर्य ।

८ आकाश ।

९ सौर जगत का सब से दूरस्थ ग्रह (नेपचून)

१० एक मरुत, जो मरुतों के तीसरे गण में शामिल था ।

११ एक देव गंधर्व, जो कश्यप एवं मुनि के पुत्रों में से एक था ।

रू. भे.—बरुण, वरण, वारुण ।

वरुणग्रह–सं. पु —१ घोड़ों का एक रोग, जिसमें घोड़े की जीभ, तालू, आंख और लिंगेंद्रिय आदि अंग काले पड़ जाते हैं । (शा. हो.)

२ देखो 'वरुण' (रू. भे.)

वरुणदेव—सं. पु. [सं.] जल के अधिष्ठाता, सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता ।

उ०—सैं प्रसन्न होय आसीस देय विदा हुआ । जद समय देख **वरुणदेव** प्रसन्न होय राजा नूं कही-राजा, तूं बडौ उदार, धीर-वीर, हूं तो'सूं प्रसन्न हुवौ । —सिंघासण बत्तीसी

वरुणपुरी, वरुणलोक–सं. स्त्री. [सं.] वरुण देवता का निवासस्थान, वरुणलोक ।

उ०—बडै महल हैं वरुण कै, बडे हाट बाजार । जोजन अढी हजार में, **वरुणपुरी** विसतार । —गजउद्धार

रू. भे.—बरुणपुरी ।

वरुणालय—सं. पु. [सं.] समुद्र, सागर ।

वरुथ—देखो 'वरूथ' (रू. भे.)

वरुथणी, वरुथनी—देखो 'वरूथणी' (रू. भे.)

वरुथी—देखो 'वरूथी' (रू. भे.)

वरूथ–सं. पु. [सं. वरूथं] १ लोहे की चद्दर या जाली का बना रथ का आवरण जो शत्रु के आघात से रथ की रक्षा करता है ।

२ कवच, बखतर ।

३ ढाल ।

४ सैन्यदल, सेना ।

५ समूह, समुदाय ।

[सं. वरूथिन्] ६ रथ ।
वि.—१ कवचधारी ।
२ रक्षक ।
३ रथारुढ़ ।
रू. भे.—वरुथ, वरुथी, वरुथ्थ, वरूथ, बरूथी, वरूथ्थ, विरूथ वरुथ, वरुथी, विरुत्थ, विरुथ ।
अल्पा.,—बिरूतौ ,वरूथौ ।
वरूथणी, वरूथनी वरूथिनी-सं. स्त्री. [सं. वरूथी] सैना, फौज । (ह. नां. मा.)
रू. भे.—वरुथणी, बरुथनी, बरुथिनी, वरुथी, वरूथ, बरूथणी, बरूथनी, बरूथिनी, बिरूथण, बिरूथणी, बिरूथनी, वरुथणी, वरुथनी वरुथी ।
वरूथिनी-एकादसी-स. स्त्री.—वैशाख कृष्ण एकादशी ।
वरूथी—१ देखो 'वरूथ' (रू. भे.)
२ देखो 'वरूथणी (रू. भे.)
वरूथौ-वि. [सं. वरूथिन्] १ प्रचंड, भयकर, जवरदस्त ।
२ वीर, योद्धा ।
३ कवचधारी ।
सं. पु.—१ सेनापति ।
२ देखो 'वरूथ' (अल्पा., रू. भे.)
रू. भे.—वरुथौ, बिरथौ, बिरूथ, बिरूथौ, विरूतौ ।
वरे, वरै-क्रि. वि.—१ अधिकार में, कब्जे में ।
वि.—माफिक, अनुकूल ।
उ०—कुतब, गोस, अबदाळ सूफी अनै कळंदर, पीरजादा मिळै सांझ परभात । कांन पातसाह रा भरै एक राह कज, वरै न पड़ै 'जसवंत' जिते वात । —नरहरदास बारहठ
रू. भे.—भरै ।
वरोळ-सं: पु. [सं. बर्ह] १ बरं ।
२ देखो 'विरोळ' ।
वरोलण-वि. [राज. वरोळ] १ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।
उ०—जग करण धमजगर हुए 'तेजळ' जुंही, राव रावळ रजा रांण रोदां । आवसी नजर जण दन वळै आखसां, हजारां **वरोळण** वजर होदां । —ठाकुर कुसळसिंहजी रौ गीत
वरोळणौ, वरोळबौ-क्रि. स.—देखो 'विरोळणौ, विरोळबौ' (रू. भे.)
उ०-१ चातुरंगी **वरोळ** थाटकै आवळा चमु, भू काज वावळा खळां दाटकै भनेव । आरांण छेड़ियां चखां भाटकै व्रजाग आग, भाटकै बचाळै अंवा हेड़ीयां जनेब । —जवांनजी आढ़ौ
उ०-२खड़ां **वरोळ** मार चौधारां,काळ वहंता कमण कळै । रोळै दळ बोळै रुद्रायण, वळीयौ जेम समंद वळै । —महेसदास आढ़ौ
उ०—३ देवी मेरगिर रूप सायर **वरोळै** । देवी सायरं रूप गिर मेर बोळै । —देवि.
उ०-४ 'माल' हरै वध सुछळ महारिण, आखै सह मांनव सुर-ईस । पांणी असुर **वरोळै** पीधौ; भारी दूध तणौ 'गज' 'भीम' । —कल्यांणदास महडू
वरोळणहार, हारौ (हारी), **वरोळणियौ**—वि० ।
वरोळिओड़ौ, वरोळियोड़ौ, **वरोळयोड़ौ**—भू० का० कृ० ।
वरोळीजणौ, वरोळीजबौ—कर्म वा० ।
बरोळणौ, बरोळबौ—रू. भे.
वरोळियोड़ौ-भू. का. कृ.—देखो 'विरोळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वरोळियोड़ी)
वरौ-सं. पु. [सं. वराटः] १ कूए, वापी आदि से पानी निकालने की रस्सी ।
२ हाथी को बाधने या गर्दन मे डालने का मोटा रस्सा ।
उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति कपोळां रै मदगंध करिनै भोरां रा भोर पड़नैं रहीआ छै । भौरां नूं बैठा सासहै नहीं, सूंडीर **वरां** बळाका खाइ नै रहीआ छै । —रा. सा. सं.
३ आश्रय ।
उ०—जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट प्रांमै **वरौ** । जोधपुर अजुधापुरी, रांम राज कमधज रौ । —गु. रू. बं.
वळ-सं. पु.—१ भोजन, खाना ।
उ०—१ हाथी १ घोड़ा ६ सोना रूपा सूं मांढिया नाळेर देनै प्रोहित कांमदार धार मेल्हिया । तिकै धार आया । तद सगळां नै खबर हुई, गोड़ां रा नाळेर आया । तदि डेरौ दिरायौ **वळ** रौ चारा रौ जाबतौ करायौ । —जगदेव पंवार री बात
उ०—२ किसतुरी बिना रहवा री आखडी । फाटा कपडा सीवण री आखडी । साथ नै **वळ** हुआ बिनां जीमण री आखडी । वावडी रौ पांणी पीवण री आखडी । वेहती नदी रौ पांणी पीवण री आखडी । —रा. सा. सं.
२ भोजन की सामग्री ।
उ०—उठी नूं दिन पांच कुंवरसी टिकियौ सो ज्यूं ही तौ भुजाई हुवै ज्यूं ही **अळ** तुलै । लोग सारौ आय भेळौ हुवै ।
—कुँवरसी सांखला री वारता
(मि. पेटियौ)
३ बलि ।
उ०-१ ताहिरां भैंसौ राकस रूप कर बोल्यौ । कहियौ-वडा रजपूत । औ राजा तौ केहि कांम रौ न छै । अर तूं वरदाईसेन रौ बेटौ छै, सो तूं म्हनै सौ बाकरा, सौ भैंसा अर सौ मण दारू री म्हनै **वळ** दै तौ तोनै हूं वर देऊं । —नैणसी ।

उ०—२ सु उठै कोई कसवरण हुवौ, तरै क्युं' पग ठांभिया,उठै उतरिया सवरणी बुलायौ, तरै सवरणी कहचौ-एक ग्रादमी ग्रठै वळ दियौ जोईजै । तरै रावळ साथै ग्रादमी १२ साख-साख रा था, नै एक रतनूं ग्रासराव बेटो सूधो थौ, तरै बारठ विचारियौ, विचारनै कहचौ–सिगळी ही साख रौ एकूको छै, नै म्है दोय जरणा छां, सु म्हां माहिलौ एक जरणौ वळ चाडौ। —नैरणसी

४ गौष्ठी,भौज ।

उ०—इतरी थोरियां विचारी । ताहरां पाबूजी तौ कारणीक मरद। तद पाबूजी ईयां रै जीव री लखी । तांहरां पाबूजी बोलिया। कही—रै थोरियां ! थे ग्रा सांढ लै जावौ, ग्राज री वळ करौ । —नैरणसी

५ भोज या बलि पर लिया जाने वाला कर। (नैरणसी)

६ दर्द के कारण ऊरु-मूल, कांख या कर्ण मूल में से किसी स्थान पर होने वाली ग्रन्थी, शोथ। (ग्रमरत)

वि. वि.—ऐसा संधि-स्थलों का खुल कर कार्य न करने के कारण होता है।

७ घुमाव, मोड़।

८ टेढ़ापन, लचक

९ ऐंठन, मरोड़, बांक।

उ०—वळ काढ़ि गांसियां, परां चाढिजै पंखाळां। वाढ ग्रणी करि वलक, ग्राब कीजै ग्रणियाळा। —सू. प्र.

१० दिशा।

११ मेघ, बादल।

१२ एक ग्रसुर।

१३ पार्श्व, पहलू।

१४ सिकुड़न।

१५ झुकाव।

सर्व—उन।

उ०–तूटै कमळ वहै वळ तेगां, नेगी त्रपत करण रिण नेगां। पहिलै धकै पांच सौ पड़िया, मुगलां प्रांण चका सै मुड़िया। —रा. रू.

क्रि. वि [सं. वलन्] १ फिर, ग्रौर।

उ० —१ ध्रुर तुक मत चौवीस धर, वळ दूजी ग्रकवीस। ती चौवीसह चतुरथी, कळ ग्रकबीस कवीस। —र. ज. प्र.

उ०—२ खट बहन प्रथम जनमी विसैक, दिल थयौ दुचित वळ सुता देख। मन विकता पड़ी नह कुटंब मांय, ग्रवतरी जोग माया जु ग्राय। —रामदांन लाळस

२ ग्रोर, तरफ।

३ देखो 'वळ' (रू. भे.)

वलउ, वळक, वलक–सं. स्त्री. [सं. वलक:] १ प्रकाश, चमक। (उ. र.)

उ०—वळ काढिजै गांसियां, परां चाढिजै पंखाळां। वाढ ग्रणी करि **वळक**, ग्राब कीजै ग्रणियाळां। —सू. प्र.

२ ग्राभा, कान्ति, तेज।

३ किरण, रश्मि।

४ शत्रु, दुश्मन।

उ०—वैर वारह वाहरु वैरां, **वळकां** कर करवा दईवांन। सत्र घर गर्गौ नसां जसवारौ, मनखां रौ लागै मझमांन। —रावत ग्ररजणसिंह रौ गीत

५ ग्रावेश, तेजी।

६ काष्ठ का लट्टा।

७ तामस मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

८ कटि, कमर।

उ०—हार त्रोडती, **वलक** मोडती, ग्राभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकिणीकलापुच्छोडती, माथउं फोडती, वक्ष:स्थल ताडती, कुंतलकलाप रोलती, प्रथ्वीतलि लोलती, सकज्जल बास्पजलि कंचुक सिंचती। —व. स.

रू. भे.—बळक, बलक।

वळकणौ, वळकवौ–क्रि. ग्र.—१ बादलों के बीच बिजली का बल खाते हुए चमकना, दमकना।

उ०—१ डोहंत सूंडाडंड ए, स्रीखंड सरपक हिंड ए। गज-वाग मत्थै मैंगळां, **वळकत्त** वीजक वद्दळां। —गु. रू. बं.

उ०—२ खिमै कूंत ग्रदभूत, भडां वांकां भूडडै। वादळ वादळ **वळकि**, वीजलत्ता व्रहमंडै। —गु. रू. बं.

२ किसी वस्तु का चमकना।

उ०—१ **वळकै** वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूंसर साबळ झळहळ ए। ग्रडडै कांछूसळ कुटकै कम्मळ. सोणी रळ-चळ खळहळ ए। —गु. रू. बं.

उ०—२ बाजी हाक बाहदरां, होय वीर हकारां, वळवळ बाढ **वळकिया** खुरसांण दुधारा। —वी. मा.

३ ग्राभा, कान्ती, या तेज का झलकना, शोभा देना।

४ प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना।

वळकणहार, हारौ (हारी), वळकणियौ—वि०।

वळकिग्रोड़ौ, वळकियोड़ौ, वळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वळकीजणौ, वळकीजबौ—भाव वा०।

वळक्कणौ, वळक्कबौ—रू. भे.।

वळकती-केळ–स. पु.—भाला, वल्लम। (ना. डि. को.)

वलका–सं. स्त्री.—संजीवनी बूंटी। (अ. मा.)

वळकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, दमका हुआ. २ झलका हुआ, शोभित. ३ प्रकाशमान हुवा हुआ।
(स्त्री. वळकियोड़ी)

वळकी—देखो 'वल्लकी' (रू. भे.)

वळक्कणौ, वळकबौ—देखो 'वळकणौ, वळकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भिदै जाळियां रूप सोभा भळक्की। वणै बीजळी जांण आभै वळक्की। —सू. प्र.

उ०—२ वाराह धड़क्कै दाढ़ खड़क्कै कंध कड़क्कै कूरमं। सम्मूह सळक्कै कूंत वळक्कै खेंग खळक्कै कैजम्मं। —गु. रू. बं.

वळक्कियोड़ौ—देखो 'वळकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वळक्कियोड़ी)

वळख–सं. पु. [सं. अवलक्ष] १ उज्वल, शुभ्र। (अ. मा.)
२ श्वेत, सफेद।

वलगणौ, वलगबौ–क्रि. अ. [सं. वल्गनं] १ लूंबना, लटकना, झूमना।

उ०—बल करी वलगइ बांहड़ी, तई आपी तस बांह। रंग वधारइ वली वली, ते तूठउ तनि तांह। —मां कां. प्र.

२ लिपटना।

उ०—गोरी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम व्रक्षि। विनय करीनइ विलपती, विधि-विधि थई विलक्षि। —मा. कां. प्र.

३ उछलना, कूदना।
४ पकड़ना।

उ०—कटितटि हूंती वंकड़ी. काढी करि करवाल। तव अग्गीउ आवीकरी, करि वलगु ततकाल। —मां. कां. प्र.

५ छलांग मारना।
६ व्यर्थ की उछल कूद करना।
७ ऊछल उछल कर चलना।
८ अवलंबन करना।
९ उलझना, फंसना।

उ०—वलता ब्रहदस्व [ऋखि] बोलि, सांभलि राजा धरम। प्रांणि सरव सदायि दूखिया, [येन्हि] वलगां करम। —नळाख्यांन

वलगणहार, हारौ (हारी), वलगणियौ—वि०।
वलगिओड़ौ, वलगियोड़ौ, वलग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वलगीजणौ, वलगीजबौ—भाव वा०।
वलग्गणौ, वलग्गबौ—रू० भे०।

वळगत, वळगताऊ–क्रि. वि. [सं. वल्गितं] राह चलते हुए।

वलगा—देखो 'वल्गा' (रू. भे.)

वलगार–सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जादर हीरागर वइरागर फूलपगार, चीर वलगार चुनार, पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर। —व. स.

वलगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लूंबा हुआ, लटका हुआ, झूमा हुआ, झूला हुआ. २ लिपटा हुआ. ३ उछला हुआ, कूदा हुआ. ४ पकड़ा हुआ. ५ छलांग मारा हुआ. ६ व्यर्थ की उछल-कूद किया हुआ. ७ उछल उछल कर चला हुआ. ८ अवलंबन किया हुआ. ९ उलझा हुआ, फंसा हुआ।
(स्त्री. वलगियोड़ी)

वलग्गणौ, वलग्गबौ—देखो 'वलगणौ, वलगबौ' (रू. भे.)

उ०—रवि किरणे हू वलग्गि चडिय अट्ठावय तित्थहि। निय २ वन्न पमांण बिंब वंदिय, जिण भतिहि। —अभयतिक यति

वलग्गियोड़ौ—देखो 'वलगियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वलिग्गियोड़ी)

वळण, वळणि, वळणी–सं. पु. [सं. वल] १ प्रस्थान, गमन।

उ०—मेहां बूठां अन बहळ, थळ ताढा जळ रेस। करसण पाका कण खिरा, तद कउ वळण करेस। —ढो. मा.
२ लौटना क्रिया।

उ०—सेवगां रंगरळी मेट वसीयौ सुरग, रैण सर ऊजळी कीत राहै। वळण करवा तणी हूंस पाछी वळी, मिळी जळ बूंद दरियाव मांहै। —चिमनजी आढ़ौ

३ आगमन।
४ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव।
५ घूमने या मुड़ने की क्रिया या भाव।
६ वक्र गति, वक्र चाल, टेढ़ी-मेढ़ी चाल।

उ०—नदी दो तड पाडती, कचवर उपाड़ती, रूंख उन्मूलती, कुंभिणि घातती, सींव ज हणति, जडि मूलि खणती, मारग लोक खलती, वळणी चलती, तरु तोखती, नीचंद जोअती, महापूरि कलकलती, कल्लेलि उच्छलती…। —व. स.

७ भुगतान।
८ ग्रह, नक्षत्रादि का सायनांश से हट कर चलना (ज्योतिष)
रू. भे.—वळण, वलन।

वळणौ, वळबौ–क्रि. अ. [सं. वल्] १ वापस लौटना, लौट कर जाना, जाना।

उ०—१ कमधज वर मांगै जोड़ै कर, हुबै दांन चाहौं सुज हाजर। तथास्तु कहि मुनिंद वळे तुर, रावा दिन मिळसी राजेस्वर। —सू. प्र.

उ०—२ लै 'श्रोपा' कव कीरत लाडी, वड पौबार बजाड़ै। इण मांहढै कई श्राला श्राला, **वळिया** ढोल वजाड़ै। —श्रोपौ श्राढौ

उ०—३ एक काठियां रै वास थौ, तठै रावळ वाड़ मांहैं कूद पड़ियौ। लाखै दीठौ-जु जु जाइ (?) तरै पाळसेट तरवार वाही, सु गुदड़ी माहै श्रांगळ बै बैठी। लाखौ पाछौ **वळियौ**। रावळ काठियां मांमां माहैं गयौ। —नैणसी

उ०—४ कहियौ श्रौ ठाकुर सुणौ, श्रै लोक सुणौ श्रौ नीलौ रूंख छै, जै छै मास तांई नायौ तौ तैं कहियौ न मैं सुणियौ, मैं कहियौ न तैं सुणियौ, वाचा श्रवाचा छै। ताहरां बीजाणंद श्राधौ हालियौ। सयणी पाछी **वळी**। —सयणी री बात

२ प्रस्थान करना, गमन करना।

३ लौट कर आना, वापिस आना।

उ०—१ पछै श्रांण सिंधमुख डेरौ कियौ। पाछा फतै कर **वळिया**। पाछा श्रावतां नै दासू वेहणीवाळ श्राय मिळियौ। दासू कह्यौ—राज म्हारौ वैर छै। जो लरावौ तौ धरती थांहरी छै, सो लेवौ —नैणसौ

उ०—२ भला पधारौ भींचड़ा, गरक सिलह मैं गात। केहर वाळा कळह री, **वळता** कीजौ वात। —बां. दा.

४ प्राप्त होना, आना। (वृद्धा अवस्था)।

उ०—सरधा घटगी सेंग, बेग बिरधापण **वळियौ**। निकळण रौ रथ नहीं, कळण ऊंडी मैं कळियौ। मगरपचीसी मांय, डोकरी बणगौ डाकी, डांगड़ियां निठ डिगै, थिगै टांगड़ियां थाकी। —ऊ. का.

५ घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। (व्यायाम)

६ घूमना, मुड़ना।

उ०—जुड़ै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठां पंचमुख। वाच न क्यूं परगह वोळावै, रावत **वळियौ** तेण रुख। —द. दा.

७ बल खाना, वक्रगति चलना।

८ आगे बढ़ना।

उ०—हाथी लख मन हेत, **वळियौ** वेढ लगाय कै। चित उत धरियौ चेत, मिळवा कांमण मांणवा। —गजउद्धार

९ ढलना।

उ०—१ छांह गुश्राळ **वळंती** छाया, जकौ पटंतर देख जुए। सुबस वसीजै सहर सितारौ, हथणापुर में वेढ हुए। —श्रोपौ श्राढौ

उ०—२ मन जांणै वड़लौ हुवां, (ऊगां) वेणप री थळियांह। बीझौ ढाळै ढोलियौ, **वळती** छांहड़ियांह। —बीझा सोरठ री बात

१०—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ तरै देवराज कह्यौ—भली वात। म्हारै माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतौ हूं मोटौ हुईस, नै मांहरी धरती गई छै सु वाळीस। मांहरौ दावौ वरिहाहां मांहै छै, सु **वळसी**। राज री मैहर था मांहरै सोह वात भली हुसी। —नैणसी

उ०—२ तरै जोगी खुसी हुय, दवा दीनी कह्यौ—थांहरी ठाकुराई दिन दिन वधसी, थांहरै पग सूं श्रा धरती कदै नहीं जाय, थांहरा दावा **वळसी**। —नैणसी

११ आकर्षित होना।

१२ अंकन होना, लिखा जाना।

उ०—मन जांणै पीवूं पै-मिसरी, छाछ सुवरणी मिळै न छांट। **वळिया** सौ पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा श्रांट। —श्रोपौ श्राढौ

१३ आना।

१४ लगना, पड़ना।

उ०—सैणां ठरिया नयण, हिया प्रसणां परजळिया। जस प्रताप वाधियौ, घाउ नीसांणां **वळिया**। —गु. रू. बं.

१५ प्रवेश होना, घुसना।

उ०—दरवाजौ तूटण सूं किला में खळबळी माचगी। जेज व्हियां नांकाबंदी होवण रौ भौ हौ सौ भीमड़ौ बिजळी रै पळाका रै ज्यूं किला रै मांयनैं **वळियौ**। पण ड्योढी पूगतां-पूगतां चांफेर सूं घेरीजग्यौ। —श्रमरचूंनड़ी

क्रि. स.—१६ ढकना, लपेटना।

१७ लौटाना, देना।

उ०—इण गौरबंधियै रै कारणै मैं तौ नव दिन निरणी रह गई रै। म्हारौ गौरबंध **वळतौ** कर। —लो. गी.

१८ प्रत्युत्तर करना, उत्तर देना।

१९ भरपाई करना, चुकता करना।

२० देखो '**बळणौ**, बळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ करहा लंबी वीख भरि, पवनां ज्यूं वहि जाह। झंभ **वळंतइ** दीवळइ, धण जागंती जाह। —ढो. मा.

उ०—२ सूरज ना किरण पच्छिम ढळचा, पंथी सगां नइ मिळचा। विरही ना हीया **वळचा**, गोवाळ घरे वळचा। —रा. सा. सं.

वळणहार, हारौ (हारी), वळणियौ—वि०।

वळिश्रोड़ौ, वळियोड़ौ, वळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वळीजणौ, वळीजबौ —भाव/कर्म वा०।

वलणौ, वलबौ, वल्लणौ, वल्लबौ—रू. भे.।

वलणौ, वलबौ—देखो 'वळणौ, वळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दांनि धरमि एक वीर विचारै, सइं नरेंद्र न **वलइ**

अरणमारै। हेम नी गजवडिइं पताका, करण्ण जांगिन किसिउं सिराका। —सालि सूरि

उ०—२ करि लज्जा **वलती** कहै रै हां, घर मन अधिक उमंग। महाराज इण पापीयै रै हां, कीधउ मुझ घर भंग। —वि. कु.

उ०—३ तुरगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ, सरप जिम **वलतउ** मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ, लीलां चालतउ, रभसि माल्हतउ, क्रीडा खेलतु, सूत्कार मेल्हतउ। —व. स.

उ०—४ व्रहदस्व रखि ग्रोचरै सांभलि, कुंतातंन। पुण्य स्लोक एम **वलतु** वदि रै सुणीनि वचंन।

वलणहार, हारौ (हारी), वलणियौ—वि०।

वलिग्रोड़ौ, वलियोड़ौ, वल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वलीजणौ, वलीजबौ—भाव/कर्म वा०।

वळतपूंछ–सं. पु. [सं. वलित-पुच्छ] श्वान, कुत्ता। (ग्र. मा.)

वळतासंख–स. पु.—वह छप्पय छंद जिसमें प्रथम कही हुई तुक की पुनरावृति लाटानुप्रास शब्दालंकार के समान होती है। (र. ज. प्र.)

वलद—देखो 'वळद' (रू. भे.)

उ०—हाली नइ भवि हल खड़्या, फाड़्या प्रथिवी पेट। सूड़ निदांण किया घणा, दीधी **वलद** थपेट। —स. कु.

वळदार–वि.—जो मुड़ा हुआ हो, घुमावदार, ऐंठा हुआ।

रू. भे.—बळदार।

वळदियौ—देखो 'वळद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मूळ गळचौ रोहण गळी, आद्रा वाजी वाय। हाळी वेचौ **वळदियौ**, खेती लाभ नसाय। —वर्षा-विज्ञान

वळद्दिख–सं. पु. [स. वलिदृक] इन्द्र।

वलन— देखो 'वळण' (रू. भे.)

वलनास–सं. पु. [सं. वलनाश] अयनाश से किसी ग्रह के वलन अर्थात् हटकर चलने की दूरी का अश। (ज्योतिष)

वळपूरण–वि. [सं. बल=भोजन+पूर्ण] १ भोजन देने वाला।

सं. स्त्री.—२ अन्न-पूर्णा।

३ वरवडी देवी का नाम।

उ०—हूं इज बूंट बेछरा वीसहथी हूं वाजूं। **वळपूरण** वरवड़ी हूं इज सिह वण अग्राजूं। —पा. प्र.

रू. भे.—वलांपूरण।

वळबंड—देखो 'वळबंड' (रू. भे.)

वलभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.) (अ. मा.)

वळभउतंग—देखो 'वलभी उतंग'(रू. भे.) (अ. मा.)

वलभज्जन, वलभज्यन–सं. पु. [सं. वल्लभ+जन] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

२ मित्र-वर्ग, मित्रगण।

३ बंधवजन।

रू. भे.—बळभज्जन।

वलभतन–सं. पु. [सं. वल्लभ-तनु] मित्र। (ह. नां. मा.)

वळभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू. भे.)

वळभद्रोत–सं. पु.–कछवाहा वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति (बां. दा. ख्यात)

वळभन–सं. पु. [सं. वल्लभ] भोजन। (ह. नां. मा.)

वलभा—देखो 'वल्लभा' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

वलभाचारी—देखो 'वल्लभाचारय' (रू. भे.)

वळभि, वलभी–सं. स्त्री. [सं. वलभिः] १ घर के ऊपर बना हुआ मंडप, गुंबज, गुमटी।

२ घर का सब से ऊपरी भाग, हिस्सा।

३ छत।

४ छप्पर।

५ शिखर।

६ झोंपड़ी। (डिं. को.)

७ काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी।

रू. भे.—बळभि, बळभी।

वलभीउतग–सं. पु. यौ. [सं. वलभी-उतुंग] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

रू. भे.—वळभउतंग।

वलम १ देखो 'बल्लम' (रू. भे.)

२ देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—सो एका-एक बेटौ, फेर कुंवर सरब राजा रौ भार संभाळ लियौ। तेथी राजा नै घणौ **वलम**। —पलक दरियाव री बात

३ देखो 'बालम' (रू. भे)

वलय–सं. पु. [सं. वलयः, वलयं] १ कंकण, कंगण।

उ०—ललाट पट्ट मध्यविभागिकृत कस्तूरिकातिलक, बाहुवल्लरी पहिरित रत्नमय **वलय**, स्रवणि तारस्फार झलकता कुंडल। —व. स.

२ सधवा के धारण करने की कलाई की चूड़ी।

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड़ खाय दिखाय थण, घण पण **वलय** बताय। —वी. स.

३ बाजूबंध।

उ०—१ ललाट तिलक, कने झलक, बांहे **वलय** अंगुलि अंगुलियक कंठि कंठिका, गलइ हार । —व. स.

उ०—२ जी हो एक **वलय** मंगल भणी, जी हो राख्या रमणी बांह । —स. कु.

४ कड़ा, छल्ला ।
५ घेरा, कुंज ।
६ वृत्त की परिधि ।
७ व्यूह रचना विशेष ।
८ वेष्ठन ।
९ कमरपेटी, इजारबंध ।
१० किनारा, छोर ।
११ गल-गंड नामक एक रोग ।
१२ ढगण के प्रथम भेद आदि ह्रस्व मात्रा का नाम । (र. ज. प्र.)
१३ णगण के प्रथम भेद दीर्घ मात्रा का नाम (र. ज. प्र.)
१४ देखो 'विलय' (रू. भे.)
रू. भे.—वलय, वला ।

वलयावळि—सं पु.[सं. वलय+अवलि] हाथों में धारण करने के कंगन ।
उ०—**वलयावळि** हत्थ में यौं दसतांन दिपाया । —व. भा.

वळयोड़ौ—देखो 'वळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वळयोड़ी)

वळराव—देखो 'बळिराव' (रू. भे.)
उ०—वीड़ा झलै ऊठीयौ, लग्गा असमांणा । जांणै त्रीकम वाधिया, **वळराव** छळांणा । —द. दा.

वलवंड—देखो 'वळबड' (रू. भे.)

वळवंत, वळवंती—देखो 'बळवंत' (रू. भे.)
उ०—जोधपुरौ जोगणिपुरौ, जग-जेठी **वळवंत** । लेण क लंका रामचद, हुंकारै हणमंत । —गु. रू. बं.

वलवत्त—स. पु.—१ एक देश का नाम ।
उ०—देस संख्याः आदिइं अयोध्या नगरी, उखा मडाल ग्रांम च्यारि कोडि, **वलवत्ता** देस ३ कोडि —व. स.
२ देखो 'बळवंत' (अल्पा., रू. भे.)

वळवळ—सं. पु. [सं. वल] १ विलाप, रुदन ।
२ प्रकाश, चमक ।
३ झलक ।
४ जलन, दाह ।
५ कंपन ।
क्रि. वि. (अनु.) १ चारों ओर, चहुंओर ।
उ०—**वळवळ** कंठ विलासं, हार भुजंग गंग सिर खळहळ । —रांमरासौ
२ फिर-फिर कर, रह-रह कर, पुनः पुनः ।
उ०—ग्राह गयंद विढवा लागा, **वळवळ** दाखै पांण । उदध छौळ यंबर लगा, फेर मथै महरांण । —गजउद्धार
३ क्रमशः ।
४ निरन्तर ।
रू. भे.—बळबळ, बलवळ, बलवळां, वळवळां, वळविळ, वळावल, वली-वली, वल्वल ।

वळवळणौ, वळवळबौ—क्रि. अ.—१ चमकना, प्रकाशमान होना ।
उ०—खळहळ रत खाळ झबकि खग झळहळ, कंठल **वळवळ** वीज कळां । कळ ऊकळ हुए गळोब (ळ) कंदळ, आफळ घाया उभै दळां । —गु. रू. बं.
२ धीरे-धीरे जलना, शनै-शनै जलना ।
३ जलन होना, दाह होना ।
४ झिलमिलाना, झलकना ।
५ कम्पायमान होना, कम्प-कम्पाना ।
वळवळणहार, हारौ (हारी), **वळवळणियौ**—वि० ।
वळवळिओड़ौ, वळवळियोड़ौ, वळवळयोड़ौ—भू० का० कृ०
वळवळीजणौ, वळवळीजबौ—भाव वा० ।
बळबळणौ, बळबळबौ, वलवलणौ, वलवलबौ—रू० भे० ।

वलवलणौ, वलवलबौ—देखो 'वळवळणौ, वळवळबौ' (रू. भे.)
उ०—१ टलवलइ जिम निरजलि माछिली, **वलवलइ** अति अंगि वली वली । झखइ लांखइ लावर आकुलउ, विरहि विव्हल वांतर वाउलउ । —सालि सूरि
उ०—२ **वलवलती** विव्हल वदनि, वलती वदइ उदार । 'राजा रुठउ मनाविसुं, सुंपी संपति सार ।' —मा. कां. प्र.
वलवलणहार, हारौ (हारी), **वलवलणियौ**—वि. ।
वलवलिओड़ौ, वलवलियोड़ौ, वलवल्योड़ौ—भू० का० कृ०
वलवलीजणौ, वलवलीजबौ—भाव वा० ।

वळवळां—देखो 'वळवळ' (रू. भे.)
उ०—१ वण उत्तंग **वळवळां**, छटा घण अदभुत छाजै । जाळी विद्रुम जड़त विवध मण नगां विराजै —भोपालदांन सांदू
उ०—२ **वळवळां** अंजस वधै, भड़ां खळां छक भारियौ सुत । '**बाघ**' तणौ उछरंग सभै, गंगराव अग्राजियौ । —सू. प्र.

वळवळाट—सं. पु.—१ चमक, प्रकाश, रोशनी ।
२ झलक ।
३ जलन, दाह ।
४ झिलमिलाहट ।
५ कंपन ।

६ व्यर्थ का प्रलाप, बकझक ।

वळवळियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, प्रकाशमान हुवा हुआ. २ शनै-शनै जला हुआ. ३ जलन हुवा हुआ, दाह हुवा हुआ. ४ भिल-मिलाया हुआ, झलका हुआ. ५ कंपायमान हुवा हुआ । (स्त्री. वळवळियोडी)

वलवलियोड़ौ—देखो 'वळवळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वलवलियोड़ी)

वळवांण—देखो 'बळवांन' (रू. भे.)

उ०—'नरहर' जोगीदास निभै नर, आणंदसुत कुळ रीत उजागर । बंधव त्रण आगळ वळवांणे, 'अखइ' हरा वधै अवसांणे ।—रा. रू.

वळविळ—देखो 'वळ-वळ' (रू. भे.)

वलसणौ, वलसबौ—देखो 'विलसणौ, विलसबौ' (रू. भे.)

उ०—ठगीया देवता नर नाग ठगारी, हे लछमी सुण वात हमारी। वलसणहारो "कमो" वैहारी, धूतै तौ जांणू धूतारी ।
—कमा विहारी रौ गीत

वलसणहार, हारौ (हारी), वलसणियौ—वि० ।
वलसिग्रोड़ौ, वलसियोड़ौ, वलस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वलसीजणौ, वलसीजबौ—कर्म वा० ।

वळसदन—देखो 'बळसदन' (रू. भे.)

वलसाड़णौ, वलसाड़बौ—देखो 'विलसाणौ, विलसाबौ' (रू. भे.)

वलसाड़णहार, हारौ (हारी), वलसाड़णियौ—वि० ।
वलसाड़िग्रोड़ौ, वलसाड़ियोड़ौ, वलसाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वलसाड़ीजणौ, वलसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वलसाड़ियोड़ौ—देखो 'विलसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वलसाड़ियोड़ी)

वलसाणौ, वलसाबौ—देखो 'विलसाणौ, विलसाबौ' (रू. भे.)

वलसाणहार, हारौ (हारी), वलसाणियौ—वि० ।
वलसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वलसाईजणौ, वलसाईजबौ—कर्म वा० ।

वलसायोड़ौ—देखो 'विलसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वलसायोड़ी)

वलसावणौ, वलसावबौ—देखो 'विलसाणौ, विलसाबौ' (रू. भे.)

वलसावणहार हारौ (हारी), वलसावणियौ—वि० ।
वलसाविग्रोड़ौ, वलसावियोड़ौ, वलसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वलसावीजणौ, वलसावीजबौ—कर्म वा० ।

वलसावियोड़ौ—देखो 'विलसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वलसावियोड़ी)

वलसियोड़ौ—देखो 'विलसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वलसियोड़ी)

वलसूदन–सं. पु. [सं. वल+ल्यु-अन] इन्द्र ।

वलहंता–सं. पु.—इन्द्र ।

वळहट–सं. पु. [राज. वळ=भोजन+सं. हठ] १ हठ पूर्वक कराया जाने वाला भोजन ।

उ०—**वळहट** देवे 'कुंवरसी,' आवे वरण अढार । पेतीसूं राजा कुळी साख-साख सरदार । —कुंवरसी सांखला री वारता

२ देवड़ा (चौहान) राजपूतों का विरुद ।

३ सोलंकी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—बळहट ।

वळहटमल, वलहटमल्ल–सं. पु. [राज वळ+हठ+सं. मल्लः] १ हठ पूर्वक भोजन कराने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—बळहटमल, बळहटमल्ल ।

वळहळ–सं. स्त्री.—चमक, दमक, चमचमा'ट ।

उ०—कुंडळां कांन **वळहळ** करंत, सुब काळा लोवड़ी सिर सोहंत ।
—रांमदांन लाळस

वळहणौ, वळहबौ–क्रि. अ.—बढ़ना ।

उ०—रस वन फळ बौह पाय रसाळी, पुत्रां हेत करै रिखपाळी । वणि ससिवेस रमै मांझळ वन, तै वळहती वेल सोव्रन तन ।
—सू. प्र.

वळहियोड़ौ–भू का. कृ.—बढ़ा हुआ ।

(स्त्री. वळहियोड़ी)

वलहौ—देखो 'वल्लभ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वेगाह वळजौ वलहा, संपत लच्छी सहेत ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

वळां–क्रि. वि.—१ ओर, तरफ ।

उ०—१ भिड़ फौजां गज दहूं **वळां** । निज घोर नगारा ।
—द. दा.

उ०—२ चळवळां जोगण खपर चढ़वै, सिभ कमळां संग । जग गीत चिहूंवै—वळां जाहर, सुजस हुवै सुढंग ।
—र. ज. प्र.

२ दफा, मर्तबा, बार ।

रू. भे.—बळां, बळांई ।

वळांणौ—देखो 'बळांणौ' (रू. भे.)

उ०—दसरावा रौ डूंगलौ, गणगोरी रौ सिरपाव, **वळांणौ** घोड़ौ सलूंबरसूं भींडर महाराज पावै । —बां. दा. ख्यात

वळांपूरण—देखो 'वळपूरण' (रू. भे.)

उ०—नित वळां अनवळ दियण नेर ही, **वळांपूरण** विरवड़ी मा वळांपूरण विरवड़ी । —वरवड़ी देवी रा छंद

वळांमण-सं. पु.—ढंग, तरीका, रीति ।

वळा, वला-क्रि. वि.—१ और, तरफ।

उ०—उठै चत्रकोट **वळा** उजवाळ, करै जुध नाह इंहां कळिचाळ । —सू. प्र.

उ०—२ किलबांइण चंचळ पाय कळा, वध, सोच खड़भड़ आठ **वळा**। —रा. रू.

२ बार, दफा, मरतबा ।

उ०— वा दो तीन **वळा** मासी रै मूंडा सांम्हौ जोयौ तौ उणनै ऐड़ौ लखायौ जांणै उणरी आंख्यां होठां माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं । —फुलवाड़ी

१ खलिहान ।

२ अफगानिस्तान का निवासी, अफगान ।

[अ. वला] ३ लोभ, लालच ।

४ आसक्ति, मोह ।

५ इश्क, प्रेम ।

६ देखो 'वलय' (रू. भे.) (उ. र.)

वळाकौ-सं. पु. [सं. वल्ल+राज. प्र. कौ] १ एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक लगाया जाने वाला चक्कर, चक्कर, फेरा, ट्रिप ।

उ०—दीवांणजी नगर री गळियां में टपाटप **वळाका** देवण लागा उण वेळा पूरौ सोपौ पड़ग्यौ हौ। —फुलवाड़ी

२ घुमाव, मोड़, टेढ़ापन ।

३ ऐंठन, मरोड़, वट ।

उ०—मूछां रा **वळाका** दीधां सीसोद गनीमां माथै, धू हास तमासै मुनिंद्र रीधा धीर। म्यांन हूं उखेलतांई कीधा खाग तेढ़ीमणौ, वेढी-मणौ मेलतांई कीधा महावीर। —बद्रीदांन खिड़ियौ

४ मोच ।

५ कसक ।

रू. भे.—बळाकौ, भळाकौ ।

वळानाथ-सं. पु. [राज. वळा=अरावली पर्वत+सं. नाथः] हाडा राजपूतों की विरुद, उपाधि ।

रू. भे.—बळानाथ ।

वळाबंध-सं. पु.—अरावली पर्वत का नाम ।

उ०—ले पाए घातिया, मेर साखा कर वाढ़ै, **वळाबंध** ढंढोल, 'कमौ' अळगां हूं काढै। भड तुरंग वीणार, चडै माभी गज केसर, फौज लगै फूलियै, दीध परराठां पस्सर। —गु. रू. बं.

रू. भे.—बळाबंध ।

वलायत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

उ०—तो वडका दिल्ली तखत, रक्खी पत केइ वार। ते जुध मदत **वलायतां**, सह जस कथ संसार। —जैतदांन बारहठ

वलारा-सं. पु. [देशज] अनाज सहित कुचले हुए भूसे के ढेर के दोनों ओर के किनारे ।

वलालौ—देखो 'विलालौ' (रू. भे.)

उ०—चत लागौ जां रौ हर चरणां, करै न प्रेत भजन अधकार। सुकव **वलाला** थनै सेवीयौ, सेवूं कम वीजा सरदार। —किसनजी आढ़ौ

(स्त्री. वलाली)

वळाव-सं. पु.—१ दिशा।

उ०—वळकंति खग्ग चहुंवै **वळाव**। सिहरे क जांण वीजां सिळाव। —गु. रू. बं.

२ खलिहान ।

३ वह भूमि जहां खलिहान बनाया जाता है ।

वळावणौ, वळाववौ—देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—तंत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह। भल वउळावौ दीहड़ा, दई **वळावण** देह । —ढो. मा.

वळावळ—देखो 'वळवळ' (रू. भे.)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणियां पधारण, वधारण खड़ग घड़ करणवा वार। **वळावळ** वाज नै महारिण वाजियौ, साद रणै सिर सांधणौ सार । —गोरधन गाडण

वळावियोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वळावियोड़ी)

वळावौ—देखो 'वोळाऊ' (रू. भे.)

वळाहक—देखो 'बळाहक' (रू. भे.) (सभा)

वळि, वलि-क्रि. वि. [स. वलति] १ फिर, और।

उ०—१ **वळि** मालवणी बीनवइ, हुं प्री दासी तुज्झ। का चिंता चित अंतरे, सा प्री दाखउ मुज्झ । —ढो. मा.

उ०—२ पडिउ भीमु आसासिउ राइ गदा लेउ **वलि** सांम्हउ थाइ। अरजुनु जां भूझेवा जाइ राख सु भीमि रहाविउ ठाइ । —पं. पं. च.

२ पुनः दुबारा ।

उ०—गह छंडइ गहिलउ हुअउ, पूछइ **वळि** पूछंत। मारु तणइ संदेसड़इ, ढोलउ नहु धापंत। —ढो. मा.

३ इस पर भी ।

उ०—सीह अनइ वलि पाखरयउ, कहु किम जीपणउ जाय ।
—सहज कीरति

४ तब ।

उ०—लहरी सायर-संदियां, वूठउ-संदउ वाव । वीछुड़ियां साजण मिळइ, वळि किउ ताड़उ ताव । —ढो. मा.

५ ओर, तरफ ।

उ०—जातौ किण ही न दीठौ तेह, फिर पाछौ ना' थौ वलि गेह ।
—वि. कु.

६ बार, दफा, मर्तबा ।

स. स्त्री.—१ रेखा, लकीर ।

२ झुर्री, सिकुड़न ।

३ छप्पय नामक छंद का एक भेद जिसमें ४६ गुरु व ५४ लघु मात्राएं होती हैं ।

४ देखो 'बळि' (रू. भे.)

उ०—संपहुता सज्जण मिळचा, हूंता मुझ हीयाह । आजूणइं दिन ऊपरइ, बीजा वळि कीयाह । —ढो. मा.

उ०—२ वळि राजा छळि जैण बांधियौ । नमौ पराक्रम नारिअण ।
—ह. नां. मा.

रू. भे.—वळि, बलि, वलिय, वळी, वली, वलीय ।

वलित—वि. [सं.] १ गतिशील ।

२ घूमा हुआ, मुड़ा हुआ ।

३ गुंथा हुआ ।

४ लिपटा हुआ, वेष्टित ।

५ झुर्री पड़ा हुआ ।

वळिभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू. भे.)

उ०—वळिभद्र बंधव बधव तेडीयौ जी, बीजउ प्रसंन कुमार । वईद्रभा नयरी वीवाह छइजी, रहीय म लावौ वार ।
—रुकमणी मंगळ

वलिमधु—सं पु.—मधुप ।

वळिमुख—सं. पु. [सं.] वानर, बंदर । (डि. को.)

वलिय—१ देखो 'वलि' (रू. भे.)

उ०—वरतणा वारु वलिय कमली, पांच झलमलि अति भली । थापना चारिज पांच ठवणी मुंहपती पुड़ पाटली । —स. कु.

२ देखो 'वलित' (रू. भे.)

वळियोड़ौ—भू का. कृ.—१ वापस लौटा हुआ, लौट कर गया हुआ, गया हुआ. २ प्रस्थान किया हुआ, गमन किया हुआ. ३ लौट कर आया हुआ. ४ घूमा हुआ, फिरा हुआ, चक्कर लगाया हुआ । ५ घूमा हुआ, मुड़ा हुआ. ६ वक्र गति या बल खाकर चला हुआ. ७ आगे बढ़ा हुआ. ८ ढला हुआ. ९ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. १० आकर्षित हुवा हुआ. ११ ढका हुआ, लपेटा हुआ. १२ लौटाया हुआ, दिया हुआ. १३ प्रत्युत्तर किया हुआ, उत्तर दिया हुआ ।

१४ देखो 'बळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वळियोड़ी)

वळियौभंवर—स. पु.—रेगिस्तान की वह भूमि जिसमें चलते समय मनुष्य धस जाता है ।

वळियौ—सं. पु.—१ समय ।

२ अवसर ।

३ बैलों के सींगों पर लपेटने की रंगीन डोरी ।

४ बल खाई हुई कोई वस्तु ।

५ देखो 'बळियौ' (रू. भे.)

६ देलो 'वळि' (२) (अल्पा., रू. भे.)

वळिराज, वळिराजा, वळिराव—देखो 'बळिराजा' (रू. भे.)

वळिहारी, वलिहारी—देखो 'बळिहारी' (रू. भे)

उ०—सांग काछि माया मंडया, हरि विचि भी भारौ । जन हरिदास माया तजै, ताकी वळिहारी । —ह. पु. वां.

वळिवंड—देखो 'वळवंड' (रू. भे.)

वळींड—देखो 'बळींड' (रू. भे.)

वली—सं. स्त्री [सं.] चर्म या चमड़ी की सिकुड़न, झुर्री ।

२ पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर ।

३ पंक्ति ।

४ रेखा, लकीर ।

५ उत्तराधिकारी, वारिस ।

रू. भे.—वळि ।

वळी, वली—सं. स्त्री. [देशज] १ पहाड़ के नीचे की भूमि, लम्बी भूमि ।

उ०—पंवारां री पैंतीस साख, त्यां मांहे एक साख भायलां री, भायलां रौ माथासरौ गांव रोहीसी मगरा नीचै वळी छै तठै नै सिवाणचीनूं । —नैणसी

२ रेतीले टीबे पर प्राकृतिक रूप से बनी लहरनुमा उभरी रेखाएं ।

३ रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड ।

४ सीधा रोपा जाने वाला वह काष्ठ का डंडा जिस पर धनुषाकार लकड़ी रख कर उस पर बैठ कर चक्कर काटा जाता है ।

वि. वि.—देखो 'चकचूंदियौ'

५ रुपया-पैसा ।

सं. पु.[ग्र.] ६ वह धर्मात्मा ग्रौर महात्मा व्यक्ति जो ईश्वर की दृष्टि में प्रिय ग्रौर मान्य हो ।

७ शासक, बादशाह ।

उ०—ग्रकबर साह जलालदी, खितवा वली खुदाय । वाजदार कर बंदगी, ताजदार हुय जाय । —बां. दा.

८ हाकिम ।

९ देखो 'वळि' (रू. भे.)

उ०—१ एक सुयखंध इणि ग्रंग नउजी, वरग छइ ग्राठ ग्रभिरांम । ग्राठ उद्देसा छइ वली जी, संख्याता सहस पद ठांम । —वि. कु.

उ०—२ ग्रगनि में बांण छूटा ग्रसंख, वळी वीढ़ चिहुँवै वळां । पछि वांण हुवौ पूठीरुखौ, 'गजण' तांम दिल्ली दळां ।—गु. रू. ब.

उ०—३ जासक कटक ग्रांपणइ ठांमि, गूजराति ग्रावसइ ग्रनांमि । करि वीबाह मनि ग्रांणी रुली, छपन कोडि धन देसइ वली । —कां. दे प्र.

रू. भे.—बळी, बली ।

वलीग्रयद, **वलीग्रहद**—सं. पु. [ग्र. वलीग्रहद] १ बादशाह के बाद होने वाला उत्तराधिकारी, वारिस, युवराज ।

२ राजकुमार, शाहजादा ।

३ संतान ।

उ०—पातसाह साजिहांनजी रै वलीग्रयद सायजादा च्यार हुवा । —द. दा.

वळीगण—सं. पु. [सं. ग्रवलिगन] ताप पर चढ़ाये जाने वाले रसोई के बर्तनों के पेंदे पर लगाया जाने वाला मिट्टी का लेपन ।

वळीट, **वळीठ**—देखो 'बलिष्ठ' (रू. भे.)

उ०—वरु थोय जोयग ग्रंबर बाथ, हुवौ हव पाबुए एकण हाथ । वराचक ढाकिय कोट वळीट, परां थट दीठ उगाडिय पीठ । —पा. प्र.

वलीय—देखो 'वळि' (रू. भे.)

उ०—वाहण जेह नै पांच सै, वलीय पांचसइ हाट । घर गोकुल पिण पांचसै तितला सकट सुघाट । —वि. कु.

वली-वली—देखो 'वळ-वळ' (रू. भे.) (उ. र.)

वळू—वि.—१ मददगार, सहायक ।

२ रक्षक ।

३ पक्षका, तरफ का ।

रू. भे.—बळू ।

वळे, **वले**—देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—१ मंगळ बुद्ध मयंक, वळे सनि सुक्र ब्रहस्पति । राहु केत रिख ग्ररुण, नवै ग्रह सांति करै नित । —ह. र.

उ०—२ ग्रौ हुव वळे तक्षक हुय ग्रावै । पांण हूंत तो जांण न पावै । —सू. प्र.

उ०—३ ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणगार ग्रपार । ग्रास्यां तउ मिळस्यां वळे, नरवर कोट जुहार । —ढो. मा.

उ०—४ मांगी दूं बधावणी तोने, पंथीड़ा लाखपसाव हो राज । वले संघ जोतां बाटड़ी, थे तो ग्रावी ग्राज सुणाय हो राज । —राज

उ०—५ ग्रायत इळा ग्रनळ पुड ग्रायत, समंद ग्रायतां वळे ज सात । लाखां तेथ बहुंचिया लाखै, बडा बडा जुग रहसै बात । —महारांणा लाखा री गीत

वळेरण—सं. पु. [देशज] छत पर बनी मुंडेर ।

वळेवड़ौ—सं. पु.[देशज] १ ऊंट या बैल की गर्दन पर कपर्दिका गूंथा हुग्रा, बांधने का ग्राभूषण ।

उ०—इसा ऊंठ झेकजे छै, हाथ फेरजै छै । पीतळ रा गिरबांण रूपे रा कड़ा छै । ता मांहे मोहरा बेळचौ मोहरा घातजै छै लूंबा कवडाळा वळेवडा घातजै छै । —रा. सा. सं:

२ बैलों के दोनों सींगों को लपेटते हुए बांधी जाने वाली डोरी ।

वळै—क्रि. वि.—१ फिर, ग्रौर ।

उ०—१ सिव नै सिसहर निलै सकति नै सीह चइन्नी । बांमण ग्रनियै वळै वाच बळराजा दीनी । —गु. रू. बं.

उ०—२ कुटंबा सहेता हुती नाव कीरं । वळै पाय रैणा तरी रग्घुवीरं । —सू. प्र.

उ०—३ खुशी भेळी एक वळै खुसी । उच्छब भेळौ एक वळै उच्छव । —फुलवाड़ी

२ पुनः, दुबारा ।

उ०—१ सं. १६७७ पछै ग्रमरसिंघजी साथै गयौ । पछै वळै ग्राय वसियौ, तरै लवेरा रौ पटौ दियौ । —नैणसी

उ०—२ तरै सोच धारै कपी देह त्यागं । वळै ग्रावियौ ग्रादि ग्रासोक बागं । —सू. प्र.

३ पीछै, बाद में ।

वि.—ग्रतिरिक्त, ग्रन्य ।

सं. स्त्री.—तरह, भांति, प्रकार ।

रू. भे.—बळे, बले, बळै, बिळै वळ, वळे, वले, भळ, भळे, भळै ।

वळोवळ, **वळोवळी**—सं. पु. [राज.वळ] भोजन ।

उ०—सांझै भूखा सोई, करै परभात वळोवळ । हाथऊ कूंत उपाड़ि, मार ढाहै मोताहळ । —राव रिणमल री बात

क्रि. वि.—१ चारों तरफ, चहुं ओर।

उ०—१ वाजि धमस ऊडंड, वाजि त्रंबाळ चहूंवळ। द्रोण वाजि है खुरां, वाजि दळ सौक **वळोवळ** —सू. प्र.

उ०—२ आगरै तखत सुं 'डूंगरौ' आंणतां। **वळोवळ** लिखांणां जगत वाका। जुहारीसींघ का टाळिया जगत में, डाकुवां रूप रा सुजस डाका। —बुधजी आसियौ

२ जिधर-किधर, यत्र-तत्र, इधर-उधर।

उ०—तद जाटां रौ सारीई साथ भागौ सू **वळोवळी** मूंडा लेय नै पापै पुनै गया नै कंवर स्त्री वीकैजी री वडी फतै हुई। —द. दा.

३ पृथक-पृथक।

४ अपने अपने मन से।

५ पुनः पुनः, बार-बार।

उ०—करांमति देखि छत्ति 'नींवदे' कळोधर, खळां भुज **वळोवळ** जितूं खांडे। चाळबंधै जिकै लड़ता चापड़ै, मांगवा बाजरी चाल मांडै। —दुरगादास राठौड़ आसकरणोत रौ गीत

६ निरन्तर, लगातार।

रू. भे.—बळोबळ, बलोबळी, वळोवळ, वळोवळी, वळौवळ, वळौवळी

वळौ—सं. पु.—१ अरावली पर्वत।

उ०—घर हरै पाखरां वाजतै घूघरै, दीह सूझै नहीं खेहरै डंबरै। रूधियौ **वळौ** रायसिंघरै लस्करै, डूंगरै घणा औलाड़िया डूंगरै। —द. दा.

२ पर्वत श्रेणी।

३ स्तंभ, खम्भा।

४ वांस।

५ कच्चे मकानों की छाजन के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, कड़ी।

उ०—खूंटा खड़ा **वळा** डूंचिया, हालां सूं हळ ठाटिया। सिरधर अर सैंतीर साळां, खूड़ भूण थम, पाटिया। —दसदेव

६ हुक्के कीने के ऊपरी भाग पर लगाया जाने बाला सोने या चांदी का छल्ला।

रू. भे.—बळौ।

वळौवळ, वळौवळी—देखो 'वळोवळ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रीध हळवळ संमळ गळळ पळडळ गरां। त्रिसळ सळ **वळौवळ** कळळ हूंकळ तुरां। —महादांन मेहडू

उ०—२ **वळौवळि** ऊछळै सोर साहां विढण, बौल जांगी विचै असत बूडे। उडाड़ै लोह एकां सिरै 'अखा' रौ, 'अखा' रा ऊपरां लोह ऊडे। —कमां अखावत पड़ियार रौ गीत

वल्कल—सं. पु. [सं: वल्कलः] १ वृक्ष की छाल।

२ उक्त छाल का वस्त्र जिसे ऋषि, मुनि महात्मा, अरण्यवासी पहनते थे।

३ ऋषि मुनि महात्माओं व तपस्वियों के पहनने का वस्त्र।

४ छिलका।

५ ऋग्वेद की वाष्फल नामक शाखा।

रू. भे.—बकल, बक्कल, बलकल वल्कल।

वल्गन—सं. स्त्री. [सं. वल्ग-गतौ] १ घोड़े की एक चाल जिसमें वह उछलता कूदता चलता है, दुलकी। (शा. हो.)

[सं. वल्गनं] २ उछाल, फलांग, छलांग।

वल्गा—सं. स्त्री. [सं.] लगाम, रास, बाग-डोर।

रू. भे.—बल्गा, वलगा।

वल्गित—सं. स्त्री. [सं. वल्गितं] १ घोड़े की सरपट चाल।

२ डींग, शेखी।

वल्द—सं. पु. [अ.] पुत्र, तनय, सुत, बेटा।

वल्दियत—सं. स्त्री. [अ.] १ पिता के नाम का परिचय।

२ पुत्र होने की अवस्था या भाव।

वल्ल—सं. पु. [सं] १ गिलाफ, आवरण।

२ चादर।

३ तीन घुंघची के बराबर की तौल।

४ वर्जन, निषेध।

५ गमन, चाल।

वल्लकी—सं. स्त्री. [सं.] १ नारद की वीणा का नाम।

२ वीणा।

३ सलई का पेड़।

रू. भे.—बलकी, बल्लकी, वलकी।

वल्लणौ, वल्लबौ—देखो 'वळणौ, वळबौ' (रू. भे.)

उ०—सज्जण वल्लै गुण रहै, गुण भी वल्लणहार। सूकण लागी बेलड़ी, गया ज सींचणहार। —ढो. मा.

वल्लणहार, हारौ (हारी), वल्लणियौ—वि०।

वल्लिग्रोड़ौ, वल्लियोड़ौ, वल्ल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वल्लीजणौ, वल्लीजबौ—भाव वा०।

वल्लभ—वि. [सं.] (स्त्री. वल्लभा) १ प्रिय, प्यारा, स्नेही, प्रेमी।

उ०—अति **वल्लभ** तेहने पुत्री इक, जास मदालसा नांम रे। रूपैं करि जीति जांणौ रति, अपछर जिम अभिरांम रे। —वि. कु.

२ सुख प्रद, सुखद।

उ०—वपि असह जळ सुख उसण **वल्लभ** सूर कर हुइ सीतळं।

उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळं ।
—रा. रू.

३ वांछनीय ।
४ सर्वोपरि, उत्तम ।
५ सुन्दर ।
सं. पु.—१ पति, स्वामी, प्रियतम ।
२ प्रिय व्यक्ति, प्रेमी ।
३ स्वामि, मालिक ।
४ मित्र, दोस्त ।
५ अध्यक्ष ।
६ पर्यवेक्षक ।
७ प्रधान या मुख्य ग्वाला, गोप ।
८ वैष्णव सम्प्रदाय का एक आचार्य ।
९ सुभ लक्षणों वाला घोड़ा, अश्व ।
१० पाण्डव पुत्र भीम का एक नाम ।
उ०—दूत लक्षण कला सवि जांणू ; मूं हरइं हुसि राज परांणउ ए युधिस्थिर नरेंद्र सूयार, नांमि वल्लभ भुजा बलि सार ।
—सालि सूरि

११ ज्योतिष में कर्ण ।
रू. भे.—वलभ, बलम, बल्लभ, वल्लम, वलभ, वलम, वल्लव, वल्लह, वल्लहउ, वल्लहु, वल्ह, वल्हम, वालंभ, वालंम, वालिभ ।
वालिभि, वालिम, वाल्हम ।
अल्पा.,—बल्लहौ, वल्हौ, वलहौ, वल्लहौ, वल्हौ, वालमियौ ।

वल्लभा—वि. स्त्री.[सं. वल्लभ] प्यारी, प्रिय ।
उ०—'जग रूप' सधू 'जगनाथ-कुळ,' पदमणि किरि सूरज प्रभा । बनीतौ कुलीण कुरम वडी, परम लछि पती वल्लभा ।
—गु. रू. बं.

सं. स्त्री.—पत्नी, स्त्री, प्रिया ।
रू. भे.—वल्भा, वल्लहा, वल्लही ।

वल्लभाचारच—सं. पु. [सं. वल्लभ-आचार्य] चार वैष्णव सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक ।
रू. भे.—वलभाचारी ।

वल्लव—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—कथ संभर खेड़ नरेंद्र कही । सन मंधिय वल्लव जींद सही ।
—पा. प्र.

वल्लवसिवा—सं. पु. [सं. शिवा+वल्लभ] चंदन । (अ. मा.)

वल्लह, वल्लहउ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—१ वच्छा ! वल्लह तुम तणौ, गिरूई रिद्धि समेउ मासऽभिंभ-तर निच्छइण, मिलस्यै घरौ म खेउ ।
—श्रीपाल रास
उ०—२ ठविउ नेमि जिणिइं जग वल्लहउ । परमतेजिहिं तेजलु ते कहउ ।
—जयसेखर सूरि

वल्लही—देखो 'वल्लभा' (रू. भे.)
उ०—बहु गुणवंती गोरडी, कंठि विलाइ कंत । मझ-पाहिं तुझ वल्लही, ते कहीइ कुण कंत ।
—मा. कां. प्र.

वल्लहु—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—मुझनइं ते अति वल्लहु, सदा न तजतु संग । ते देखंतां तुझ-सिउं, रमतां न रइइ रग ।
—मा. कां. प्र.

वल्लहौ—देखो 'वल्लभ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ जीव उहां पिंजर इहां, हिवड़ै हूला-हेल । रे परदेसी वल्लहा, वेल विहूणा फूल ।
—जलाल बूबना री बात
उ०—२ हा ! बांधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्रांण । पांणी में पड़तौ थकौ, इम स्युं थयौ अजांण ।
—वि. कु.

वल्लाह—अव्य. [अ.] १ ईश्वर की शपथ ।
२ सचमुच ।

वल्लियोड़ौ—देखो 'वळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वल्लियोड़ी)

वल्ली—सं. स्त्री. [सं. वल्लि, वल्ली] १ लता, वल्लरी, बेल ।
उ०—१ सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । अण वल्ली विसतरी, वर्णं ग्रह वरी दिसा वन ।
—रा. रू.
उ०—२ वल्ली तसु बीज भागवत वायौ, महि थांणौ प्रिथु दास मुख । मूळ ताल जड़ अरथ मंडहै, सुथिर करणि चढि छांह सुख ।
—वेलि

२ पृथ्वी ।
३ मिट्टी ।
४ शाल-वृक्ष ।
५ अग्नि-दमयंती ।
६ केवटी मोथा ।
७ काली अपराजिता ।
रू. भे.—बल्लि, बल्ली ।

वल्लुर, वल्लूर—सं. पु. [सं. वल्लुरं, वल्लूरं] १ लता कुंज, लता मण्डप ।
२ पवन ।
३ मंजरी ।
४ अनजुता खेत ।
५ रेगिस्तान ।

६ वीरान जंगल, वन ।

७ उपवन ।

[सं. वल्लूरः] ८ जंगली शूकर का मांस ।

९ सूखा मांस ।

वल्वल–सं. पु.—१ बलराम द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य ।

२ देखो 'वलवल' (रू. भे.)

वल्ह, वल्हम—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—मालवणी जांणै धणूं, मारू माथै सल्ल । पिण ढोलौ जांणै नहीं, बीछड़ीया वे वल्ह । —ढो. मा.

उ०—२ ये आदर दैण कूं आपही ऊभा हुआ छै। जेसैं कोई और भी वल्हम हितू आवै छै। त्यों ते ऊभा हुव्यै छै। —वेलि टी.

वल्हौ—देखो 'वल्लभ' (अल्पा., रू. भे.)

वव–सं. पु. [सं.] ग्यारह करणों में एक करण जिसमें जन्म लेने वाले मनुष्य को बलवान, धीर-गंभीर और विचक्षण होना माना जाता है। (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—बब, बव ।

ववकणौ, ववकबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मेछ तड़पफड़ मारका, ग्रीधांण गहक्की । पत्र भरै रत पूरियां वीरांण ववक्की । —वी. मा.

उ०—२ सुण इम वचन सधीर, बीर रणधीर ववक्कै । मतवाळा मदमत्त, घोम झाळा धकधक्कै । —पे. रू.

उ०—३ माहा क्रोधंगी गनीमां हुंता हुचकै नरींद 'माधौ' । भूचकै भुलोक वादौ चकै कोम भार । बोमंगी अराबा झाळ बैताळ ववकै बकै, बांजद्रां 'बाहदरैस' हकै जैण बार । —हुकमीचंद खिड़ियौ

ववकणहार, हारौ (हारी), ववकणियौ—वि० ।

ववकिओड़ौ, ववकियोड़ौ, ववक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

ववकीजणौ, ववकीजबौ—भाव वा० ।

ववड़—देखो 'वधू' (मह., रू. भे.)

ववड़ी—देखो 'वधू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—म्हारी अे ववड़िया सरवणती, आ सासड़ रै हुकमां में चालै ववड़िया सरवणती । —लो. गी.

ववज–सं. पु.—१ व्यवधान, बाधा ।

उ०—संदेसांहि ववज पड़चौ, लांघ्या परवत दुरघट-घाट। परिदेसां परि-भूमि गयउ, वीरी जण हन चालइ बाट । —वी. दे.

२ कारण ।

ववणौ, ववबौ–क्रि. अ. [सं. वपनम्] बोवाई होना, बोया जाना ।

उ०—केहर रा नख रंध्र सूं, गज मोतियां निपात । सूरत कीरत वेल रा, बीज ववै अवदात । —बां. दा.

ववयण–सं पु. [सं. वि+वचन] यश, कीर्ति, प्रशंसा । (अ. मा.)

ववळाणौ, ववळाबौ—देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—सज्जणिया ववळाई कइ, गउखे चढी लहक्क । भरिया नयण कटोर ज्यउं, मुंधा हुई डहक्क । —ढो. मा.

ववळाणहार, हारौ (हारी), ववळाणियौ—वि० ।

ववळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

ववळाईजणौ, ववळाईजबौ—कर्म वा० ।

ववळायोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ववळायोड़ी)

ववहाणौ, ववहाबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

उ०—ववहाय घणी घण खग वही, सेखराव पड़ियौ समर । दौलत्तिइ पाव तजि गौ जदिन, गंगाराव धरियौ गुमर । —सू. प्र.

ववहायोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ववहायोड़ी)

ववहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

ववहाररासि–सं. पु.—जीवाणु समूह का एक अंश ।

उ०—किमइ निगोदह जीव नीसरइ, बवहाररासि ते जाई नय वरइ । असंख सइर तणउ करइ संहार, जीवह जीव करइ आहार । —वस्तिग

ववांण—देखो 'विमांन' (रू. भे.)

उ०—'मालै' बेस ववांणां मांई, क्रीत जुगां तांई कहलोत । अपछर परण गयौ इकदांई, गळबांई कीदां गहलोत । —महादांन मेहडू

ववासीर—देखो 'बवासीर' (रू. भे.)

वसंग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—इंद्र वज्र है एक कड़क सारी धर धूजे । गुरड एक वसंग अनेक पंस आपांण न पूजे । —पा प्र.

वसंत–सं. पु. [सं.] १ षट ऋतुओं में प्रथम एवं प्रमुख मौसम जिसका समय चैत्र व वैशाख मास होता है।

वि. वि.—इस मौसम के आगमन के पूर्व पेड़ पौधों के सब पत्ते झड़ जाते हैं । और सारी वनस्पती पुनः फलने-फूलने लगती है। इसलिये यह ऋतुओं का राजा माना है । यह शिशिर और ग्रीष्म के बीच का मौसम है, जो अत्यन्त सुहावना होता है।

२ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना है ।

३ संगीत में छः रागों में से दूसरा राग ।

उ०—कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसंत । तरुणी दल दोलारस सारस भमइ हसंत । —जयसेखर सूरि

४ एक ताल। (संगीत)
५ माघ सुदी पंचमी को आने वाला पर्व।
वि. वि.—इस दिन से इस ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है।
६ फूलों का गुच्छा।
७ एक वस्त्र विशेष।
उ०—अनेक एक पेखियंति, रूप में चिरत्त ए। **वसंत** पट्टणं विसाळ, जोति में नखत्त ए। —गु. रू. ब.
८ अतिसार रोग।
९ शीतला या चेचक की बीमारी।
१० मसूरिका नामक रोग।
११ पीला रंग*। (डि. को.)
रू. भे.—बसंत, वासंत।
अल्पा.—वसंतड़ौ, वसंतौ।

वसंतजा—सं. स्त्री. [सं.] १ वासन्ती या माधवी लता।
२ सफेद जूही।
३ वसन्तोत्सव।

वसंतड़ौ-वि.—१ बसने वाला, रहने वाला।
उ०—अेकइ वन्नि **वसंतड़ा**, एवड़ अंतर काइ। सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ। —अ. वचनिका
२ देखो 'वसंत' (अल्पा., रू. भे.)

वसंततिलक—सं. पु. [सं] १ वसंत का आभूषण।
२ देखो 'वसंततिलका' (रू. भे.)

वसंततिलका—सं. पु. [सं. वसंततिलकः, वसंततिलका, वसंततिलकं] चौदह वर्णों का एक छन्द जिसके, प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण भगण और दो गुरु होते हैं।
रू. भे.—वसंततिलक।

वसंतदूत—सं. पु. [सं.] १ कोयल।
२ चैत्र मास।
३ आम का वृक्ष।
४ पंचम राग।

वसंतदूती—सं. स्त्री. [सं.] १ कोयल।
२ पाडर वृक्ष।
३ माधवी लता।

वसंतपंचमी, वसंतपांचम, वसंतपांचिम—सं. स्त्री. [सं. वसंतपंचमी] माघ शुक्ला पंचमी, माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी, इस दिन वसंत तथा रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है।
उ०—प्रथमादि आग **वसंतपांचिम**, राग फाग परीखिये। हित धांम-धांम धमाळ सुख हुय, उरध भींमळ ईखिये। —रा. रू.
वि. वि.—आज कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है।
रू. भे.—वसंतपंचमी, बसंतपांचम, वसंतपांचिम, बसतपांचिमी, वसतपांचम, वस्तपांचम।

वसंतबंधु—सं. पु. [सं] कामदेव।

वसंतभैरवी—सं. स्त्री. [स.] एक रागिनी का नाम। (सगीत)

वसंतमारू—सं. पु.—सब शुद्ध स्वरों का संपूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)

वसंतमालतीरस—देखो 'सुवरण-मालिनी-वसंत' (वैद्यक)

वसंतरत—देखो 'वसंतरितु' (रू. भे.)
उ०—मचियौ रसवीर **वसंतरत** मातौ, अवध पवन पोह गोळा तीर। कुसुम पात तर जठै 'कुसळ' हर, गहरापण कीधौ गजगीर। —अभैरांम महीयारियौ

वसंतरमण, वसंतरमणि, वसंतरमणी—सं. पु.—एक छंद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण में १९ मात्राऐं होती हैं तथा शेष तीनों चरणों में १६-१६ मात्राऐं होती हैं तथा अंत भगण आता है। इसकी तुकात मिलती है।
उ०—१ आद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वखांण। अंत भगण जिण गीत नं, **वसतरमणि** बखांण। —र. ज. प्र.
उ०—२ कर कर आद में हिक नगण सुभंकर, धुर उगणीस मत्त नहचै घर। बे लघु होय तुकंत बराबर, सुसबद रांम कहै मझ सुंदर। गीत **वसंतरमण** कवि गावत, सोळह पद-प्रत मात सुभावत —र. ज. प्र.
रू. भे.—बसंतरमणी।

वसंतरित, वसंतरितु—देखो 'वसंत' (१)
उ०—ऊपर तिठा **वसंतरित** आई, सीत वितीत हुई असुहाई। सोभै अब आद तर सारा, वर्णं नीत जिम प्रज चा वारा। —रा. रू.
रू. भे.—वसंतरितु, वसंतरत।

वसंतवाक—स. पु. [स. वसंतवाक्] संगीत दामोदर के चोदह तालों में से एक।

वसंतसख, वसंतसखा—स. पु. [सं वसंत सखः] कामदेव का एक नाम।

वसंति, वसंती—वि. [सं. वसन्ती] १ वसंत ऋतु का, वसंत ऋतु सम्बंधी।
२ वसंत ऋतु में होने वाला, चलने वाला।
उ०—अंबा डार कोयलिया बोलै, वहत **वसंती** बयार मा। कुंज-कुंज रसराज दंपत जहां, भंवरन ज्यूं मिळ डोलै। —रसीलै राजरा गीत
३ वसंती (पीले) रंग का।
सं. स्त्री.—१ वसंत ऋतु की देवी, सरस्वती।
उ०—दस मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणंति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती **वसंति**। —वेलि

२ सरसों के फूल के समान हल्का पीला रंग ।

३ जूही ।

रू. भे.—बसंती, बासंती ।

वसंतोत्सव–स. पु. [सं.] १ वसंतपंचमी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव ।

२ प्राचीन काल में वसंतपंचमी के दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव ।

३ होली का उत्सव ।

वसतौ—देखो 'वसत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेले अति ही उलसंती, वालंभ विनु कैसौ **वसंतौ** हो लाल । —ध. व. ग्रं.

वसंधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

उ०—असुरांण आंण मिटसी इळा, सुर वध पांण **वसंधरा** । नवकोट नाथ निसचौ निजर, डर धारौ हरि ऊपरा । —रा. रू.

वसंभर—देखो 'विस्वंभर' (रू. भे.)

उ०—भीर म्हैं जकां भीरू **वसंभर**, गांज कुण सकै 'जसवंत' रा गांव । राव एक थाप ऊथापीया रड़मलां, रड़मलां पुड़दड़ी राखीया राव । —दुरसौ आढौ

वस–वि. [सं. वश] १ नियन्त्रण या काबू में आया हुआ, अधीनस्थ ।

२ आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी ।

३ विनम्र ।

४ किसी किसी प्रकार के जादू-टोने के प्रभाव में आया हुआ, वशीभूत ।

मुहा.—वस में होणौ=काबू में होना, अधिकार में होना, मुग्ध होना, मोहित होना, मोहजाल में फसना, भ्रमित होना ।

सं. पु. [सं. वशः] १ अभिलाषा, कामना, संकल्प, इच्छा, चाह ।

२ नियन्त्रण, काबू, अख्त्यार ।

उ०—वस राखौ जीभ कहै इम 'बांकौ', कड़वा बोल्यां प्रमत किसी । लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।—बां. दा.

३ किसी विषय या बात को अपने अनुकुल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति ।

४ प्रभाव, प्रभुत्व, धाक ।

५ पहुंच ।

६ गति, वेग । (अ. मा)

मुहा.—१ वस चालणौ=स्थिति काबू में होना ।

२ वस में होणौ=कोई कार्य अपने अधिकार-क्षेत्र में होना ।

३ वस री बात=वह स्थिति जहां पर अपनी पहुँच हो, प्रभाव हो ।

७ उत्पत्ति, जन्म ।

८ रंडियो का चकला, रंडी खाना ।

९ देखो 'विस' (रू. भे.)

रू. भे.—बस, वसि ।

वसक्कि, वसख—देखो 'विसिख' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—**वसक्कि** भबक्कि बळक्कै सार । घावां मिळ तिम्मर घोर अंधार । —गु. रू. बं.

वसट–अव्य. [सं. वषट्] यज्ञों में अग्नि में आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला एक शब्द ।

वसटकार–सं. पु. [स. वषट्कार] १ उक्त शब्द उच्चारण करने वाला व्यक्ति ।

१ एक देवता ।

३ देवताओं के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ ।

वसटकृत–वि. [सं. वषट्कृत] हवन किया हुआ, होमा हुआ, हुत ।

वसटकृत्य–सं. पु. [सं. वषट्कृत्य] हवन, यज्ञ, होम ।

वसण—१ देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—१ खंध **वसण** रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह, घर रखवाळौ विन घरण, गिणै न त्रण सम देह । —जैतदांन बारहठ

उ०—२ आज झगड़ा ऊपरै जावतां भेस करियौ छै-कुसुम फूलां रौ मौड़ अनै **वसण** कपड़ा रंगिया है । —वी. स. टी.

२ देखो 'बसण' (रू भे.)

वसणौ—१ देखो 'बसणौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वसन' (अल्पा., रू. भे)

वसणौ, वसबौ—देखो 'बसणौ, बसबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ हसतौ न्रप देखे सिध हसियौ । विभ्रम तांम न्रपति उर **वसियौ** । —सू. प्र.

उ०—२ पैंड दियै अममेद रा, मरै खड्ग री मीच । अच्छरां बांहड़ियां गळै, **वसै** विमांणां बीच । —बां. दा.

उ०—३ संमत १६६१ अमरसिंघजी साथै गयौ । पछै संमत १६—९६ वळै **वसियौ** । काठमी पटै । —नैणसी

उ०—४ जिणै देसे सज्जण **वसइ**, तिणि दिसि वज्जउ वाउ । उआं लगै मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा.

उ०—५ पवन चंदनगंध हरावतउ, वदनि वासि **वसइ** दिसी वासतु । —शालि सूरि

वसणहार, हारौ, (हारी), **वसणियौ** –वि० ।

वसिओड़ौ, वसियोड़ौ, वस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वसीजणौ, वसीजबौ—भाव वा० ।

वसत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—१ रुत प्रति चंदण कपूर, सफै समसांण सफाई । विविध अमित सुचि **वसत** वेहग्नि निमति चलाई । —रा. रू.

उ०—२ वणक कहै आवै **वसत**, कै कूड़े कै गूंण । चेळै पड़े सो होय सुध, सैंभर पड़ें स लूंण । —बां दा.

उ०—३ इतरी **वसत** कनक घट आंणै। संपुट दियै किये सहनांणै । बाळजती पतिवरता बेवै । सपत निसा जाग्रण करि सेवै । —सू. प्र.

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

वसतपांचम—देखो 'वसंतपंचमी' (रू. भे.)

वसतर—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—पौढे तांम उठावै ऊपरि । केसर चंदण झीण **वसतर** करि । —सू प्र.

वसति, वसती—स. स्त्री. [सं. बशित्व] १ अष्ट सिद्धियों में से एक जिससे सब को वश में करने की शक्ति आजाती है । (डि. को.)

२ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)

उ०—१ ओपौ आढ़ौ कहै ईसबर, नित राखूं चित थारौ नांम । तूं छती मांय देवण सुख तूंही, रणां तणी **वसती** तू रांम । —ओपौ आढौ

उ०—२ **वसती** मांय मिळै नहीं वासौ, खरच पला रौ खासी । साजण सैण सीरवी सुख रा,जीव हेकलौ जासी । —भीखजी रतनूं

उ०—३ ऊंडा जळ सूकै अवस, नीलौ वन जळ ज्याय । चुगल-तणा पग फेरसूं, **वसती** ऊजड़ ज्याय । —बां. दा.

उ०—४ ऊग्यौ डूंख अफीम, नीमरौ रूंख निरोगी । **वसती** होड़ हकीम, नीमड़ौ जंगम जोगी । —दसदेव

वसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—ताखी, ताव तमांम, पीनणी अर पुसळाई । नैड़ी थैंड़ी तणी जाळ **वसतुवां** वणाई । —दसदेव

वसतौ—देखो 'बसतौ' (रू. भे.)

वसत्त—१ देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—हुंता सज्जण-हीयड़ै, सयणां हुंदा हत्त । जउ सोहणौ साचइ होअइ, सोहणौ बडी **वसत्त** । —ढो. मा.

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—करै वणिज्ज एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए । साखा चौतार मुक्खमल्ल, रेसमी **वसत्त** ए । —गु. रू. बं.

वसत्र—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—भ्रांमी **वसत्र** सेत तन भासत, वसन लाल खित्रणी सुवासत —र. ज. प्र.

वसदे—१ देखो 'वसुदेव' (रू. भे.)

२ देखो 'वासदे' (रू. भे.)

वसदेराव—देखो 'वसुदेव' (रू. भे.)

वसदेव—देखो 'वसुदेव' (रू. भे.)

उ०—१ सेत अस्व सुभद्रै स करण-सत्र । सखा तास **वसदेव** सुत । —ह. नां. मा.

उ०—२ धन **वसदेव** तणौ गरधारी, जमदग रै घर फरस जपै । संकर रै गणपत सारीखौ, दूजौ 'फतमल' असौ दपै । —मेगराज आढौ

२ देखो 'वासदेव' (रू. भे.)

उ०—रुइ घ्रत पूंछ लपेट कर, **वसदेव** जगाया । देतां का एवास सब, जद आग जळाया । —केसौदास गाडण

वसधा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—वड पह वहुआर भुजि कुळिभार, घर सिणगार तपै लखधीर । विलसण गजवाज कुंअर सकाज, **वसधा** राज करै वरवीर । —ल. पिं.

वसधापत, वसधापति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे.)

उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रबंधु करै, भुव कंपित भार दिगीस डरै । मन आंन महीपन के प्रजरे, किन पै **वसधापति** कोप करै । —ला. रा.

वसन—स. पु. [सं. वसनं] १ वस्त्र, कपड़ा, परिधान । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ झूंटि झूंबिय महीतलि रोली । काढ़िवा **वसन** कीध । हीयाली —सालि सूरि

उ०—२ तन स्यांम अंबुद रूप तड़िता, **वसन** पीत विचार । वासन्न पीत विचार सरवर, धनुख सायक धार । —र. ज. प्र.

२ कफन ।

३ आवरण, गिलाफ, आच्छादन ।

४ स्त्रियों के कमर में धारण करने का एक आभूषण, करधनी ।

रू. भे.—वसना ।

५ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

६ देखो 'बसण' (रू. भे.)

रू. भे.—बसण, बसन, बसन्न, वसण, वसन्न, वासन्न ।

अल्पा—बसणौ ,वसणौ ।

वसनस—सं. पु. [सं. वस्नसा] स्नायु, रग, नाड़ी ।

वसना—देखो 'वसन' (३) (रू. भे.)

वसन्न—देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—वर्णं सांमळौ गात झीणं वसन्नं । तिसी भूखणे जोत मोती रतन्नं । —रा. रू.

वसमगत, वसमगति—देखो 'विसमगति' (रू. भे.)

उ०—हीयै धारीयां खांन जुवांन छबतौ नहंग, अवर नर वीसरै तणा अछभा । **वसमगत** देख 'जसराज' खग वाहतै, रही रथ साह गजगाह रंभा । —महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

वसरांमणौ, वसरांमबौ—१ देखो 'विसरांमणौ, विसरांमबौ' (रू. भे.)

उ०—वडौ सूर दातार रायसींग **वसरांमियौ,** बडण कुण वड वडी घड़ा वरसी । कुंजरां तणी मोताज करसी कमण, कमण कोड़ां तणी रीझ करसी । —दुरसौ आढ़ौ

२ देखो 'विस्रांमणौ, विस्रांमबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

वसरांमियोड़ौ—१ देखो 'विसरांमियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्रांमियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विसरायोड़ौ'

(स्त्री. वसरांमियोड़ी)

वसराळ—देखो 'विसराळ' (रू. भे.)

उ०—त्रबक बाग **वसराळ** गैणाग जग आतसां, खाग दावायतां आव खूटी । लाय बूंदी तगत लयंतां लगाई, आग जैपुर नगर जाग ऊटी । —दुरजणसिह रौ गीत

वसव—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—सरखी कमंद वरी सायजादी, सार नार पड़ जना सगार । **वसव** ऊपरै येक वखांणां, मांणै बीजै सुरग मंझार ।

—मेसदास आढौ

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—**वसव** छांडै भुजंग, गंग, ऊलट वहावै, कहावै वेद कुण साच करसी । लख दीया 'भीम' आखर जकै लुपावै, ऊदै रव न थावै वीया 'अरसी' । —जवांनजी आढ़ौ

वसवांन—देखो 'वसीवांन' (रू. भे.)

उ०—१ घर डुल्लिय परिभार, पहुमि **वसवांन** उचल्लिय । हल मिल्लिय परि जोर, सेस अहि फन पर सल्लिय । —ला. रा.

उ०—२ सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर, समर जसवांन न्रप, सियासामी । तवतां नांम नसवांन अघ भव तणा, भव तणा हिया **वसवांन** भामी । —र. ज. प्र.

वसांमघ-सं. पु.—पाटल नामक वृक्ष । (अ. मा.)

वि. वि.—देखो पाडळ'

वसा-सं. स्त्री. [सं. वशा] १ औरत, नारी, स्त्री ।

२ पत्नी, भार्या, जोरू ।

३ लड़की, पुत्री ।

४ पति की बहन, ननद ।

५ बंध्या स्त्री ।

६ गौ, गाय ।

७ बांझ गौ ।

८ हथिनी ।

[सं. वसा] ९ मेद । (डिं. को.)

१०—चरबी, मांस ।

११ मस्तिष्क ।

रू. भे.—बसा ।

वसाकेतु-सं. पु. [सं.] पश्चिम में उदय होने वाला एक धूम केतु, तारक-पुंज ।

वसाड़णौ, वसाड़बौ—देखो 'बसाणौ, बसाबौ' (रू. भे.)

उ०—जादम जाडा वजिया, 'रांमो' नै ऊदल्ल । विच सुरपुरां **वसाड़िया,** अछरां तणा महल्ल । —रा. रू.

वसाड़णहार, हारौ (हारी) वसाड़णियौ—वि० ।

वसाड़िओड़ौ, वसाड़ियोड़ौ, वसाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वसाड़ीजणौ, वसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वसाड़ियोड़ौ—देखो 'बसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बसाड़ियोड़ी)

वसाणौ, वसाबौ—देखो 'बसाणौ, बसाबौ' (रू. भे.)

वसाणहार, हारौ (हारी), वसाणियौ—वि० ।

वसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वसाईजणौ, वसाईजबौ—कर्म वा० ।

वसायोड़ौ—देखो 'बसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वसायोड़ी)

वसारेळ-सं. पु. [सं. वसु=पृथ्वी+राज.रेळ=तरुवतर] इंद्र ।

उ०—घटा बांध चमराळ पखराळ फौजां घसण, दुजड़ तड़िताळ छिबझाल दखतौ । आंण अणगाळ रौ गिरां अग्राजियौ, वेरियां काळ **वसारेळ** 'वखतौ' । —करणीदांन कवियौ

वसाळ-सं. पु—भेड़ ।

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखे वीस **वसाळ** । ऊंचे थळइ ज एकलौ, वच्चाळइ एवाळ । —ढो. मा.

वसाव, वसावट—देखो 'बसाव' (रू. भे.)

उ०—नम महल न पोढ़ै प्रमण नचीता, वमरे गिरै **वसाव** कीया । वंस तणौ ऊडाव वीडरे, सीसोदां बक रास कीया ।

—मेपजी बारहठ

वसावणौ, वसावबौ—देखो 'बसाणौ, बसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मुलक **वसावणहार**, चिणावै चेजा भारी। ढूंढा पड़वा साळ, भखारी भींत तिबारी। —दसदेव

उ०—२ घर आंगण मांहै घणा, त्रासै पड़ियां ताव। जुध आंगण सोहै जिके, वालम वास **वसाव**। —बां. दा.

वसावणहार, हारौ (हारी), वसावणियौ—वि०।

वसाविओड़ो, वसावियोड़ौ, वसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वसावीजणौ, वसावीजबौ—कर्म वा०।

वसावियोड़ौ—देखो 'बसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वसावियोड़ी)

वसाह-सं. पु—नगर या शहर के चौहटे का नाम। (सभा)

वसि—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

२ देखो 'वस' (रू. भे.)

उ०—अंगथीआं चंदन धूओं, देह माहारांनि कसि। प्रत्यक्ष जूऔ पारखूं, विसधर जेणि बहु वसि। —नळाख्यांन

वसितव, वसिता—देखो 'वसित्व' (रू. भे.) (ना. मा.)

वसितागाथा-सं. स्त्री.—गाथा छंद का एक भेद जिसमें आठ गुरु व ४१ लघु होते हैं। (पिंगल सिरोमणि)

वसित्व-सं पु. [सं. वशित्व] १ वशता, अधीनता।

२ एक प्रकार की सिद्धि।

रू. भे.—वसितव, वसिता, वसीता।

वसिमा—देखो 'वसि' (रू. भे.)

वसियकरण—देखो 'वसीकरण' (रू. भे.)

उ०—मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही, **वसियकरण** कियौ कोइ। रग दिखालइ हो रालइ जे दुख आपणौ, ते गुण रसिया जोइ। —वि. कु.

वसियां—देखो 'वस्ती' (रू. भे.)

वसियोड़ौ—देखो बसियोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. वसियोड़ी)

वसिस्ट, वसिस्ठ-सं. पु. [सं. वसिष्ठ] १ एक प्रचीन एवं प्रसिद्ध ऋषि, जो स्वायंभुव मन्वंतर में उत्पन्न हुए ब्रह्मा के दस मानसपुत्रों में से एक माना जाता है।

उ०—१ होता प्रभु करना जग हरता, कहता गुर **वसिस्ट** जिम करता। धरि गुर वचन वचन पित धारै, प्रभु सिय जुत वनवास पधारै। —सू. प्र

उ०—२ **वसिस्ठ** आदि व्रह्मयं, करत जातक्रंमयं। हळद्द कुंकमं हरी, करंत छोह केसरी। —सू. प्र.

वि. वि.—वसिष्ठ नामक सुविख्यात ब्राह्मण वंश का मूल पुरुष भी इसे ही माना जाता है एवं यही वंश अयोध्या के वैदिक-कालीन सूर्यवंशी (इक्ष्वाकु वंशी) राजाओं का सदियों तक पौराहित्य करता रहा था। इन्हें ही ऋग्वेद के सातवें मंडल के रचयिता माना जाता है।

२ एक स्मृतिकार ऋषि।

३ एक ऋषि जो भरतवंशीय सम्राट रंतिदेव सांकृत्य का पुरोहित था।

४ रैवत मन्वंतर का एक ऋषि।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

६ श्राद्ध देव का प्रोहित एक ऋषि।

७ सप्तर्षि मंडल का एक तारा।

८ आठवां वेद व्यास, जिसे इन्द्र ने ब्रह्मांड पुराण सिखाया था।

९ एक शिल्प शास्त्रज्ञ।

१० अगस्त्य ऋषि का छोटा भाई विदेह-राज निमि का प्रोहित था।

रू. भे.—बसिस्ठ, बसीठ, बासिस्ट, बासिस्ठ, वसीठ।

वसिस्ठपुरांण-सं. पु. [सं. वसिष्ठपुराण] एक उपपुरांण, जिसे लिंग पुराण भी मानते हैं।

वसी-सं. पु. [सं. वसिः] १ गृह, घर, निवासस्थान। (अ. मा.)

उ०—आयां **वसियां** आपणीं, ग्रीखम थई वतीत। १७३९ गुण चाळो लागो वरस, चाळो सरस सजीत। —रा. रू.

२ वस्त्र।

[सं. वश्यः] ३ नौकर, चाकर, दास, अनुचर (परिग्रह)

उ०—१ रावळ नूं डूंगरपुर नेड़ीहीज ठौड़ पाधर में वताई तठै ऐ आपरा गाडा आंण वसी सूबा छोडिया। —नैणसी

उ०—२ ताहरां एक दिनै ऐ चढनै घूघरोट रा पाहड़ां मांहै राव मालदेजी री **वसी** हुती, तिकै नूं बंध कीवी। —नैणसी

५ जागीरदारों द्वारा लिया जाने वाला कर विशेष जो प्रजा की रक्षा करने के कारण लिया जाता था।

६ वह व्यक्ति जो जागीरदार का विशेष कृपा पात्र होता था और सभी प्रकार के कर व लागों से मुक्त होता था।

उ०—हूवै वसी रौ वांणियौ, पातर हुयै खवास। हुवै कीमियागार ठग, निध हर जावै नास। —बां. दा.

वि. वि.—उक्त कृपा व स्वतन्त्रता के साथ ही इसे जागीरदार की इच्छा का हर वक्त ध्यान रखना पड़ता था।

७ बसने के लिये दी जाने वाली जागीरी, स्थान।

उ०—सहसो तेजसी वरसिंघ जोधाउत्त रौ पोत्रौ मेड़तीयौ वास राखीयौ थौ तिणनुं रीयां **वसी** नुं दीनी थी।

—राव मालदे री बात

८ निवास।

उ०—जैंतौ जोधपुर चाकरी करै। कूंपौ सोभत चाकरी करै। सु जैंतै री वसी वगड़ी मांहैं। सु वगड़ी वीरमदै रै बांटै में आई। —नैणसी

[सं. वशि:] ८ अधिकार, कब्जा।

९ अधीनता।

१० मनमोहकता।

वि.—१ बसाया हुआ, २ आकर बसा हुआ, ३ वश में रहने वाला।

रू. भे.—बसि, बसी, बस्सी, वसि।

वसीकर-वि. [सं. वशीकर] १ वश में करने वाला।

उ०—मंत्र **वसीकर** महली, वांणी बोयलियांह। कुरजड़ियां गरदन कहूं, कंठां कोयलियांह। —पा. प्र.

२ मोहित करने वाला, मुग्ध करने वाला।

रू. भे.—**बसीकर**।

वसीकरण, वसीकरणि-सं. पु. [सं. वशीकरण] १ वश में करने की क्रिया या भाव।

२ एक मंत्र, जिसके प्रयोग से किसी को वश में किया जा सकता है। (तन्त्र)

३ अष्ट सिद्धियों में से एक सिद्धि। (ह. नां. मा.)

४ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

उ०—आकरसण, **वसीकरण** उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पंच। चितवण हसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा संच। —वेलि

५ वश में करने का कोई साधन।

उ०—वाजित्र गरथ **वसीकरण** बीजा सहु अकयथ्थ। जिए चडचा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ। —व. स.

उ०—२ रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलियलित, वसीकरणि अमूढ़ लक्ष खड़ी। —व. स.

रू. भे.—बसीकरण, वसियकरण।

वसीका-सं. स्त्री. [अ. वसिका] अगर की लकड़ी।

वसीकौ-वि. [अ. वसिक] १ शून्य, रहित।

२ रीता, खाली।

[अ. वसीक:] ३ पेंशन पाने वाला।

[सं. पु.] (१) ऋण पत्र। (२) दस्तावेज। (३) इकरार नामा।

४ सरकारी खजाने में जमा कराया जाने वाला धन जिसका सूद जमा कराने वाले के सम्बन्धियों को मिलता है।

रू. भे.—बसीकौ।

वसीक्रत-वि. [सं. वशीकृत] १ मोहित, मुग्ध।

२ वश में किया हुआ।

वसीटाळू—देखो 'विस्टाळू' (रू. भे.)

वसीटाळौ—१ देखो 'विस्टाळौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्टाळू' (रू. भे.)

वसीट्टी-सं. पु.—१ दूत।

उ०—पंचे मिलि बात पतीठी, परगच्छी हुआ **वसीट्टी**। —कविकनक सोम

२ देखो 'वसीठी' (रू. भे.)

वसीठ-सं. पु.—१ संदेशवाहक, दूत।

उ०—हे सखी म्हारै पती कोई जोवार नें मारण री इच्छा न होवै तद उणनें उर छाती में भाला री बूड़ी दे अटकावै-रोकै-पण काळ तौ उठा सूं प्रांण लेण नें **वसीठ** दूत भेज देवै। —वी. स. टी.

३ राज दूत।

४ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

रू. भे.—बसीठ।

वसीठी-सं. स्त्री.—१ वसीठ का कार्य।

२ संदेश लाने-लेजाने का कार्य।

रू. भे.—बसीठी, वसीट्टी।

वसीता—देखो 'वसित्व' (रू. भे)

वसीतुनीर-सं. पु.—तीर, बांण। (अ. मा.)

वसीभूत-वि. [सं. वशीभूत] १ वश में या काबू में किया हुआ, नियंत्रित, अधीन।

२ दूसरों की इच्छा के अधीन रहने वाला।

३ मोहित, मुग्ध।

रू भे.—बसीभूत।

वसीयत-सं. स्त्री. [अ.] १ विदेश गमन या मरणासन्न व्यक्ति द्वारा अपनी सम्पत्ति के विभाग उपयोग के लिये की जाने वाली व्यवस्था।

२ मरणासन्न व्यक्ति का अपनी सम्पत्ति के व्यय एवं प्रबंध के लिए अंतिम आदेश, निर्देश।

३ मरने वाले का अंतिम कथन।

४ सम्पत्ति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला दस्तावेज।

रू. भे.—बसीयत।

वसीयतनांमौ-सं. पु. [अ. वसीयतनाम:] १ अपनी सम्पति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला कानूनी दस्तावेज।

२ इच्छा-पत्र।

वसीरौ–सं. पु. [सं. सिच क्षरणे+क्त=अवसिक्त या शीक्ृ सेचने+क्त =अवशीकित। भागुरी के मत से अ का लोप सिक्त अथवा शिकित=वसीकौ=वसीरौ] प्रजा ।

उ०—१ राव सुरतांण रै **वसीरा** रजपूतां रा गांव छै, तिण ऊपर फौज १ पैलीजै ज्यूं रजपूत जुदा जुदा विखर जाय, पछै सुरतांण नूं कूट मारिस्यां। —नैणसी

उ०—२ चौपदौ घण। सो ईयां रौ घण लोकां रा खेत खावै। **वसीरा** लोकांरा खेत ऊभा खाईजै। सु लोक वसीरौ भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार घालै। —नैणसी

वसीलौ–सं. पु. [फा. वसील:] १ आश्रय, सहारा।

उ०—सावळ संत तणी सुण सांमी, ढळवळ सहज न धारै ढील। वचन उसीला तणौ **वसीलौ**, वड दरबारां तणौ वकील। —ओपौ आढौ

२ सम्बन्ध, लगाव।

३ साधन, जरिया, माध्यम ।

उ०—अंग असीला हो लाल, तुझ नइ दीठां आणंदा । मुगति **वसीला** हो लाल, समता सुरतरु कंदा। —वि. कु.

४ उपकरण।

५ बिचौलिया।

रू. भे.—वसीलौ।

वसीवांन–वि. [सं. वसि+प्र. वत्] १ बसने वाला, निवास करने, वाला, निवासी ।

२ वंश परम्परा के अनुसार जो स्थायी रूप से निवास करता हो ।

रू. भे.—बसीवांन, बसैवान, वसवांन।

वसुंधरा–सं. स्त्री. [सं.] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—ए'क तीन वसत निभाइयौ विनायक, पवन-पांणी-**वसुंधरा** । —लो. गी.

रू. भे.—बसंदरा, बसंधरा, बसुंधरा, वसंधरा, वसुधर, वसुधरा।

वसु–सं. पु. [सं.] १ धन, दौलत, द्रव्य। (अने.)

२ प्रकाश, तेज।

३ देवता, सुर।

४ रत्न।

५ स्वर्ण, सोना।

६ एक ही श्रेणी के आठ देवताओं का एक गण (समूह)

उ०—तहां वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मंत्र-बळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इंद्र आदि देवता अड़सठ तीरथ, चार वेद, आठ **वसु**, अस्ट परवत दसों दिग्पाल आदि सै आवाहन करि आहुति कर प्रसन्न किया। —सिंघासण बत्तीसी

वि. वि.—आठ देवताओं के नाम इस प्रकार है:—आप (अह), ध्रुव, सोम, धर या धव, अनिल, अनल, प्रत्यूप और प्रभास। ७ कुबेर। (ह. नां. मा.)

(८) इन्द्र। (९) मेघ, बादल। (ना. डिं. को.) (१०) सूर्य। (११) विष्णु। (१२)शिव,रुद्र। (१३)जल, पानी। (१४) वायु। (१५) प्रजापति। (१६) तालाब, सरोवर (१७) मरुद्गण। (१८) पदार्थ, वस्तु। (१९) लवण विशेष। (२०) अगस्त्य का वृक्ष। (२१) वक-वृक्ष। (२२) छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ३ गुरु व १४६ लघु होते हैं। (२३) साधु पुरुष, सज्जन। (२४) अधिकार, कब्जा, वश। (२५) आठ की संख्या।※ (डिं. को.) (२६) दीप्ति, चमक। (अनेका.) (२७) अग्नि, आग। (अ.) (२८) किरण, रश्मि। (२९) पृथ्वी, धरती।

उ०—कछव कछवाह वांसौ पलट करै किम, **वसु**-हं चीं मांड बिहूं भड़ां वांसै। —मिरजा राजा जयसिंह रौ गीत

(३०) उषा। (३१) अश्वी। (३२) इन्द्र की अमरापुरी। (३३) कुबेर की अलका पुरी। (३४) अमरापुरी व अलका पुरी में बहने वाली एक नदी। (३५) दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम। (३६) मौलश्री। (३७) वृद्धि नामक औषधि, जड़ी। (३८) लगाम, रास बागडोर।

वि.—१ जो सब में निवास करता हो।

२ जिसमें सबका निवास हो।

३ अधीन, अवलम्बित।

क्रि. वि.—अधिकार में, कब्जे में, अधीन।

उ०—माल-बित सारौ संभाळनै हाथ **वसु** कियौ। —नैणसी

रू. भे.—वसु, बसू, बिसू, वसुह, वसू।

वसुचरण–सं. पु.—डगण के चतुर्थ भेद का नाम, इसमें आदि गुरु, फिर दो लघु (ऽ।।) होते हैं।

वसुद–सं. पु. [सं. वसु+प्र. द.] १ विष्णु। २ कुबेर।

वसुदरम–सं. पु, [सं. वसुधर्म] इन्द्र।

रू. भे.—वसुदरम।

वसुदा—देखो वसुधा' (रू. भे.)

उ०—'जुंजा' सुतन जमायौ जबरौ, सत्रहां ऊपर इसौ सधीर। **वसुदा** संग वळा नै वांदै, वांदै वळौ तोनै नर वीर।

—ठाकुर इंदरसिंह रौ गीत

वसुदेव–सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण के पिता एवं यदुवंशियों के राजा। (ह. नां. मा.)

उ०—अबळा बाळक एक, अरज करूं ऊभी अठै। टाबर ध्रुव री टेक, तैं राखी **वसुदेव** तण। —रांमनाथ कवियौ

रू. भे.—बछदेव, वसुदेव, वसदे ,वसदेव ।

वसुधर, वसुधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.) (डिं. नां. मा., नां. मा.)

वसुधांन, वसुधा—सं स्त्री. [सं. वसुधा] पृथ्वी, धरती, धरा । (अ. मा., डिं. को., डिं. नां. मा., ना. डिं. को., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ हिचै मरै खळ हात, खगधारां कुळ खोवणा । सूंपै हेकण साथ, सिर वित धर **वसुधा** सुजस । —बां. दा.

उ०—२ दत देतां धन मांगतां, जगि सुणाता जसवास । **वसुधा** इण पर वौळिया, नव कोटी खट-मास । —गु. रू. बं.

रू. भे.—वसुदा, वसुधा, बिसुधा, वसधा, वसुध्धा, वसुह, वसुहा, वसूधा ।

वसुधाधर—सं. पु. [सं.] १ विष्णु ।

२ शेषनाग ।

३ पर्वत ।

वसुधाधिप, वसुधाधिपति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे.)

वसुधाधोख—सं. पु. [स. वसुधाधुक्] पानी, जल । (अ. मा.)

वसुधापति—सं. पु.—राजा, नृप ।

रू. भे.—बसुधाधिप, वसधापत, वसधापति, वसुधाधिप, वसुधाधिपति ।

वसुधारा—सं. स्त्री. [सं.] १ कुबेर की राजधानी, अलकापुरी ।

२ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

३ जैनों की एक देवि, शक्ति ।

वसुधेस—सं. पु. [सं. वसुधा+ईश] १ ईश्वर ।

२ राजा, नृप ।

रू. भे.—बसुधेस ।

वसुध्धा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—**वसुध्धा** वट्ट । पैमाळ पहट्ट । गोधूळ गरद्द । पाखै गय-मद्द । —गु. रू. बं.

वसुपय—सं. पु.—डगण के चतुर्थ भेद का नाम । (र. ज. प्र.)

वसुप्रसुन—सं. पु. [सं. विसप्रसून] १ कमल ।

रू. भे.—वसूप्रसून ।

वसुमता, वसुमति, वसुमती, वसुमत्ती—सं. स्त्री. [सं. वसुमति] पृथ्वी, धरती । (डिं. नां. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ डारण समर अडोल, मारण चढचौ मेवासियां । तिण कारण खग तोल, बोल उबारण **वसुमती** । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंह री बात

उ०—२ रजनीचरण करन निरमूळहि, सारदूळ चढ़ि गहिय त्रिसूळहि । अगपति चलिय हलिय **वसुमत्ती**, स्रीकरनी जयजयति सकत्ती । —मे. म.

रू. भे.—बसुमति, बसुमती, बसूमती ।

वसुरेता—सं. पु. [सं. वसुरेतस्] १ अग्नि ।

२ शिव ।

वसुरोधी—सं. पु.—शिव ।

वसुह—१ देखो 'वसु' (रू. भे.)

उ०—जिम धायौ जोगेस, वसुह दिख ज्याग विधूसण । जिम धायौ ग्रह बांण, पत्थ गौ ग्रह छाडावण । —गु. रू. बं.

२ देखो 'वसु' (२९) (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—परचंड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पंच दिन । 'गजसाह' वसुह राखी पगै, डहै भुज्ज डिगियौ गिगन । —गु. रू. बं.

वसुहा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—१ बांमा देवीउ अर सुत्ति मंजुल मुत्ताहल । सयल कलावलि कलिकाय कलिमलि **वसुहा** हल । —स. कु.

उ०—२ **वसुहां** वर वड वीर धीर दुज्जणजण गंजण, सुभट पणाइ सुरतांण स्रीय महिमूद मनरंजण । —व. स.

वसूंलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

वसू—देखो 'वसु' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ वडी विपत सह वीर, वडी कीत खाटी **वसू** । धरम-धुरंधर धीर, पोरस धिनो प्रतापसी । —दुरसौ आढौ

उ०—२ धुजा फरक्की धूहडां, बहरक्की गज वोह । **वसू** थरक्की काबली, मुरधर छक्की मोह । —किसोरदांन बारहठ

उ०—३ पछै पताई रावळ रै साळौ सइयौ वांकलियौ तिकै रो वडौ मांमलौ, वडौ इतबार गढी री कूंची तै **वसू** । —नैणसी

उ०—४ कटोरां माहै फूल लीजै छै । बाकरा होंसनाकां **वसू** कीजै छै । —रा. सा. सं.

उ०—५ तिण कारण मरवौ भलौ रे, तिरसारत इण ठांम । पिण न हुवां तेह ना **वसू** रे, लोक वदै सहु ग्रांम । —वि. कु.

उ०—६ मुरधर संखौधार, लियौ लोहां बळि ईडर । **वसू** लाख छत्तीस, पुठि कन्नौज वडौ घर । —गु. रू. बं.

वसूधा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—**वसूधा** प्रगट दीसती वेस्या, भूकै भूप भुजंग सु भूठ । —ध. व. ग्रं.

वसूप्रसून—देखो 'वसुप्रसून' (रू. भे.) (अ. मा.)

वसूमती—देखो 'वसुमती' (रू. भे.) (अ. मा.)

वसूल—वि. [अ.] १ वसूली करने पर जो प्राप्त हुआ हो, जो लिया गया हो, लब्ध ।

२ जो व्यव या श्रम के प्रति फल में मिला हो ।

सं. पु.—१ आय, प्राप्ति ।

२ प्राप्ति की रकम ।

वसूली–सं. स्त्री. [अ.] १ वसूल करने या उगाही करने की क्रिया या भाव ।

२ लोगों से प्राप्य धन लेकर एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

वि.—जो वसूल के लिये हो ।

रू. भे.—बसूली, बसोली ।

वसुलौ–सं.पु. [सं. वासि:] १ लकड़ी छीलने का, बढ़ई का एक औजार।

उ०—रंदोही होवै मती, मती बसुलौ मित्त । होवै करवत सारिसौ, वांटण-खाटण वित्त । —अज्ञात

२ ईट काटने का एक औजार विशेष ।

रू. भे.—बसूलौ, बसेलौ, बसोलौ, बांयलौ, बांसोलौ, बांहोलौ, भसोलौ, भासोलौ, भोयलौ, भौहलौ वसूलौ, वसोलौ, वांयलौ, वांसोलौ, वांहोलौ, वासूलौ ।

अल्पा.—बसूली, बसोली, बांसोली, बांहोली, वांयली, वांसोली ।

वसेक, वसेख—देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ पाबूजी अर हरियौ थोरी असवार हुयनै सांढियां देने कोळू आया । ताहरां वसेक हुवौ । —नैणसी

उ०—२ दुवार है मरब्ब दास, जै वसेख दुज्जयं । अतीत ग्रेह तप्प आय, प्रीत हूंत पुज्जयं । —सू. प्र.

वसेखौ—देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे)

उ० – मुजरौ छै पारख मरदां री, वीरत अंग खत्रवाट वसेखौ । आया खग झटकां ईसर सुं, दोय दोय बटका देखौ । —पहाड़खां आढौ

वसेरौ—देखो 'बसेरौ' (रू. भे.)

वसेस—देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—प्रिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पुंगळ देस । ढोला म्हां विच मोकळा, वासा घणा वसेस । —ढो. मा.

उ०—सकारां चुरसां थारां जांणीयो जेहांन सारां. बाखांणीयौ छत्र धारां जोड़रां वसेस । आडंबरां भड़ाळां सांवरां साज ओछाड़ीया, अगांछाळां वागंबरां पूजीया महेस । —करणजी मईयारीयौ

वसोख–सं. पु. [सं. विशिखा] राजमार्ग, राजपथ, आमरास्ता ।

उ०—बाजार हाट वाटां वसोख, इण भांत दांन द्रव्र ओपत अनोख । हिम मणि जटत सब ग्रह होय, पुर अवर वताओ जोड़ कोय । —शि. रू.

वसोलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

वसौ–क्रि. वि.—१ वैसा, तैसा ।

उ०—आप पोढिया था सो हूं तौ म्हारै मन री खुसी सूं जसौ दरसाव देखियौ वसौ कहियौ । —कुंवरसी सांखला री वारता

२ लिये, निमित्त, हेतु ।

वस्त–सं. पु. [सं. वस्तु, वस्तं] १ वासा, डेरा ।

२ गमन ।

३ मांगना क्रिया ।

४ घायल करना, मारना क्रिया ।

५ नाभि के नीचे का हिस्सा, मूत्राशय ।

६ परवस्ती, कृपा ।

उ०—अंतरजांमी, तुं अछै हो लाल, वाल्हेसर सुवीदीत जि० । साहिब वस्त तिका करौ हो लाल, जिण करि करि आवै चीत जि० । —वि. कु.

[सं. वस्त:] ७ बकरा ।

[अ.] ८ बीच का भाग, मध्य ।

९ देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—१ जन हरिदास मन गहि पवन ब्रह्म अगनि विसवन दहौ । अगम वस्त अतरि अगह तहां उनमनि लागा रहौ। —ह. पु. वां

उ०—२ मिळतां रांण घरै महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा । जिती वस्त नित अम्रत जोड़ां, राजै नव नवभांत रसोड़ां । —रा. रू.

उ०—३ घणीं प्रीति सूं, अंबिकाजी आपणा हाथ सूं पूजि । जु वस्त आपणा मन नइ प्यारी थी । सु वस्त अपणैं हाथि की । पूजा कौ फळ हाथि आयौ । —वेलि टी.

उ०—४ जे नगर मांहइ दांनसाला, पौसघसाला, धरमसाला, गढ मंदिर प्रकार, चुरासी चुहुटांणी हटस्रेणी, मांहइ वस्त संपूरण वरतइ । —व. स.

उ०—५ संचा वस्त अनेकौ तणा, का न रहइ मननी कांमिणा । ऊंचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक । —प. च. चौ.

वस्तपांचम—देखो 'वसंतपंचमी' (रू. भे.)

वस्तर—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—घर घर ग्वालन दही बिलोवै, कर कंगन झनकारै । वस्तर भूसण तन पर धारौ, पगियां पेच संवारै । —मीरां

वस्तवंत–वि. [सं. वस्तु-वत्] जो वस्तुओं से भरपूर हो, वस्तुओं से परिपूर्ण, वस्तु युक्त, सामग्री युक्त ।

उ०—वन ते जे व्रक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, देस ते जे प्रजावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंतु, वाट ते जे सूधवंत, हाट

ते जे वस्तवंत, वचन ते जे सत्यवंत सस्य ते जे विनयवंत, प्रधांन ते जे बुद्धिवंत, राजा ते जे न्यायवंत, तिम धरम ते जे दयावंत ।
—ब. स.

वस्ति—सं. स्त्री. [सं. वस्तिः] १ निवास, ठहराव ।
२ नाभि के नीचे का पेट का भाग ।
३ कोख ।
४ मूत्राशय ।
५ पिचकारी ।
६ योग की एक क्रिया जिससे उदर-शुद्धि होती है ।
उ०—नाभि प्रमांण सु वारि में, उत्कट आसन लाय । नळि दे गुद संकोच कर, वारि उदर ले जाय । कर सुनौळि फिर त्याग दे, यह ही वस्ति कहाय । वात पित्त कफ जन्य जे, गुल्मादिक गद जाय ।
—स्वांमी नारायणदास

रू. भे.—बसति, बसती, बसत्ती, बस्ति, बस्ती, वस्ती ।
७ देखो 'वस्ती' (रू. भे.)

वस्तिकरम—सं. पु. [सं. वस्ति-कर्म] १ पिचकारी देने की क्रिया ।
२ पेट की आंतें साफ करने या रेचन करने के लिये गुदा मार्ग से पानी चढ़ाने की क्रिया (एनिमा) ।
३ उदर शुद्धि के लिये की जाने वाली योग-साधना ।
रू. भे.—बस्तिकरम ।

वस्तिमळ—सं. पु. [सं. वस्ति-मल] पेशाब, मूत्र ।
रू. भे.—बस्तिमळ ।

वस्ती—१ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)
उ०—वडी साहिबी हुती । तद सैहर वस्ती घणी हुती । हमैं ही जैतारण सारीखौ सहर वसै छै । मुदौ वस्ती रौ वांणियां ऊपर छै ।
—नैणसी
२ देखो 'वस्ति' (रू. भे.)

वस्तु—सं. स्त्री. [सं.] १ वह चीज या पदार्थ जिसका अस्तित्व हो, सत्ता हो, जिसको देखा व छूआ जा सकता हो, जो अपनी वास्तविकता रखता हो ।
२ सारवान चीज, धन, दौलत ।
३ साधन व सामग्री जिससे कोई चीज बनती हो ।
४ सार, तथ्य ।
५ खाका, ढांचा ।
६ श्रम द्वारा निर्मित कोई चीज़ ।
७ विषय-वस्तु जिस पर वाद-विवाद व विचार विमर्श किया जा सकता है ।
८ किसी नाटक की कथावस्तु, कथानक ।
रू. भे.—बसत, बस्त, बस्तु, बुसत, बुस्त, वत्थु, वसत, वसतु, वसत्त वस्त, वुसत, वुस्त ।
अल्पा.—बसतड़ी ।

वस्तुनिरदेस—सं. पु. [सं. वस्तु-निर्देश] नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दिया जाता है ।

वस्तौ—देखो 'बस्तौ' (रू. भे.)

वस्य—सं. पु. [स. वश्यः] १ अनुचर, नौकर, दास ।
२ देखो 'वस्या' (रू. भे.)
उ०—कहिन बहिन बाई कुण नई एह जाई, करिन मझ पसाई ताहरउं हउं जिभाई । कहइ हिव सुदरसणा वस्य देवंग त्रस्णा, मझ तणी ए सिलिंद्री स्रीसमांणी पुरिंद्री ।
—सालिसूरि

वस्यकरम—सं. पु. [सं. वस्यकर्म] ७२ कलाओं में से एक ।

वस्या—सं. स्त्री. [सं वश्या] आज्ञा कारिणी स्त्री ।
रू. भे.—वस्य ।

वस्त्र—सं. पु. [सं.] १ ऊन, रुई, रेशम आदि के धागों से बुन कर बनाया हुआ कपड़ा जो अनेक प्रकार से उपयोग में आता है । (उ. र.)
२ शरीर पर धारण करने का कपड़ा, पोशाक, परिधान । (उ. र.)
रू. भे.—बसत्र, बस्तर, बस्त्र, वसत, वसतर, वसत्त, वसत्र, वस्तर ।
अल्पा.,—बासतौ, बासत्थौ, बास्तौ ।

वस्त्रकार—सं. पु. [सं.] १ वस्त्रों के आगार का अधिकारी ।
उ०—उद्दीसकार धृतिकार रूपकार, करणीकार रसकार क्षीरकार सस्यकार वस्त्रकार विभूसणाकार, पुंतार, अस्त्रसिक्षाकार, रथकार ।
—व. स.
२ वस्त्रों का व्यापारी, बजाज ।

वस्त्रगांठ, वस्त्रगांठि—सं. स्त्री. [सं. वस्त्र-ग्रंथि] ३ कपड़े की गांठ, बंडल । (उ. र.)

वस्त्रगोपना—सं. पु.—१ वस्त्रों की रक्षा ।
२ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

वस्त्रपरिधायक—वि. [सं.] वस्त्र धारण कराने वाला, पहनाने वाला ।
उ०—गज वैद्य, वृत्रिवायक, वहीवायक, आचायक, त्रिहायक अंगरक्षक वलवक वस्त्रपरिधायक, काठिया लोहटिया —व. स.

वस्त्रागार—सं. पु. [सं. वस्त्र+आगार] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहाँ कई प्रकार के बहुत से वस्त्र हों, वस्त्र भण्डार ।
२ घर का वह कक्ष जहां पहनने के कपड़े रहते हों (ड्रेसिंग रूम)

वहंग—देखो 'विहंग' (रू. भे.)
उ०—रंग रळां दह नमै अढंग मैं जगन रण, कमंध अणभंग ऊछरंग कीधौ । सोहीयौ पलंग जंग हुवै बांग्ति सुत, दुगम उतवंग वहंग त्याग दीधौ ।
—ठाकुर जोगीदास रौ गीत

वहंगपत वहंगपति—देखो 'विहंगपति' (रू. भे.)

उ०—थाळ सारंग न खेग संख कंज पलंग थत, **वहंगपत** न पूगौ चाल बांसै। हाल ऊगौ लगा नहंग छबतौ हरी, पाल अरधंग गयौ मतंग पासै। —हुकमीचंद खिड़ियौ

वहंगराज, वहंगराजा—देखो 'विहंगराज' (रू.) भे॰

उ०—१ पतंग ऊगतै रहै थाकै **वहंगराज** पंथ, जाय गंग वमुह खाय नहंग झालौ। सेस थर तजै पंथ भंजै वागां समर, देवगर डगै तौ चगै 'दोलौ' —नाथजी बारहठ

उ०—२ राहां सकाजा अळंगां सग्र दौड़ में **वहंगराजा**। ताव तेज झौड़ में नहंग राजा तास। रूप रंग घाट थाट देख रीझै रावराजा, वाग माहाराजा असौ मौजीयौ व्रहास। —हुकमीचंद खिड़ियौ

वहंडणौ, वहंडबौ—देखो 'विहंडणौ, विहंडबौ' (रू. भे.)

उ०—जद वारंग कहै 'जोगावत', घड़ा **वहंड** सुरलोक गयौ, मह जोधां सळखां रड़माळां, कमदां कुळ ऊजळौ कियौ। —हरटैसिंग पातावत रौ गीत

वहंडणहार, हारौ (हारी), **वहंडणियौ**—वि॰।
वहंडिओड़ौ, वहंडियोड़ौ, **वहंड्योड़ौ**—भू॰ का॰ कृ॰।
वहंडीजणौ, वहंडीजबौ—कर्म वा॰।

वहंडियोड़ौ—देखो 'विहंडियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वहडियोड़ी)

वहंत–सं. पु. [सं. वहन्त] १ हवा, पवन। (२) बच्चा।

वह–सर्व [सं. वह्] कर्तृ कारक प्रथम पुरुष सर्वनाम जो किसी संदर्भ का अनुमान देता है।

सं. पु. [स. वह:] १ परोक्ष या दूर की वस्तुओं का संकेत करने का एक निर्देशकारक शब्द।

२ समर्थन, सहमति।

३ लेजाने की क्रिया।

४ वाहन, सवारी।

५ घोड़ा।

६ हवा, पवन।

७ मार्ग, सड़क।

८ नद।

९ बैल का कंधा।

१० कंधा, स्कंध।

११ चार द्रोण भर का एक नाप।

१२ देखो 'वाह' (रू. भे.)

उ०—हरांमखोरां नूं नेड़ा आवण देवौ। जाहरां तीर-**वह** मांहे आसी, ताहरां म्है हंकारौ करसां। —राजा नरसिंघ री वात

रू. भे.—बह, वहै।

वहकणौ, वहकबौ—देखो 'महकणौ, महकबौ' (रू. भे.)

उ०—मंच अति मंच तणी रचना हुई। स्वरगपुरी तणी सोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुस्प परिमल **वहकई** नाचई पात्र। राजभवन आवई अक्षत पात्र। —वाग्विलास

वहचरा, वहचराय—देखो 'बहचराय' (रू. भे.)

उ०—बहीचरा देवी अरथ कुक्कटवहणी लोक **वहचरा** कहै। —बां. दा. ख्यात

वहजावणौ, वहजावबौ—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)

उ०—रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गजै कूंण गिणावै। खांत लगै केता खळ खाधा, वळै दांत **वहजावै**। —र. ज. प्र.

वहण–वि.—१ वार करने वाला, मारने वाला।

२ चलने वाला, गमन करने वाला।

उ०—उड्डि महाभर कंध, भार भलपण संब्बाहै। वेगड वांमी **वहण** प्रथी प्राझौ पति साहै। —गु. रू. बं.

३ धारण करने वाला।

सं. पु. [सं. वहनं] १ वाहन, सवारी।

२ रथ।

उ०—जाय जोगण बंद जाजा, प्रजुण वन्ही करै प्राजा। **वहण** आवध होम बाजा, रुपि दराजा रोस। —र. रू.

३ नाव, नौका।

उ०—**वहण** पोत (भव महण लंघावण, तरण उदय हरि नांम तराज)। —ह. नां. मा.

४ नदी, सरिता।

उ०—जुग जवंदा जोइया जिम **वहण** वहाई। —केसोदास गाडण

५ समय। (अ. मा.)

६ वार, प्रहार।

७ चाल, गति।

८ देखो 'वहन' (रू. भे.)

रू. भे.—बहण, वहणौ।

वहणी–सं. स्त्री.—१ चलने की क्रिया या भाव।

२ आचार-व्यवहार, चाल-चलन।

३ बर्ताव।

४ तेज चलने वाली, शीघ्र गामी।

५ चाल, गति।

६ बहने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—**बहणी**, वहनि, वहनी, वहिणि, वैणी।

वहणौ–वि. [सं. वह्] (स्त्री. वहणी) १ चलने वाला, गतिशील।

२ घूमने वाला, टहलने वाला, विचरण करने वाला।

उ०—भार अठारा पसरि न पोखै, नभ वहणि पवन धरती नहिं सोखै। निरभै भया भरम सब भागा, ल्यौ की डोरी उनमनि लागा।
—ह. पु. वां.

३ तेज चाल वाला।

४ बहने वाला।

वहणौ, वहबौ-क्रि. अ. [सं. वहनं] १ चलकर कहीं जाना, गमन करना, चलना, किसी की ओर निरन्तर चलना।

उ०—१ धवळ न अटकै धुर वहै, कासूं पांणी कीच। इण री जननी तारही, वैतरणी रै बीच। —बां. दा.

उ०—२ मारवणी मनि रंगि, वाटइ तिणि आवी वहइ। कुंभी एकणि संग, तालि चरंती दिट्ठियां। —ढो. मा.

उ०—३ वायक वांमांनां सुणी, आकासमारगि अणसरी। वेगि वही नि तै गयु रै हंस नलरांनी पुरी। —नळाख्यांन

उ०—४ वहै क वाज पत्थए, अकास मै क रत्थए। सीरंम साह नस्सहै, विवांण उड्डिया वहै। —गु. रू. बं.

२ पास से गुजरना, निकट से होकर चलना।

३ द्रव्य पदार्थ या पानी का धारा रूप में बहना, प्रवाहित होना।

उ०—तठै समुद्र मांहै पैठा। पैस अर एक वडो पाटलौ तिण ऊपर भांणेज नूं बैसांण अर पाटला नूं धकाय अर वह तै पांणी मांहै वहाय दियौ। —नैणसी

मुहा.—बहती गंगा में हाथ धोणा=अवसर का लाभ उठाना, सहज में ही कार्य साधना, अवसरानुसार परोपकार करना।

४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहना, प्रवाहित होना।

उ०—ऊफळै नीर पताळां एहा, जळनिध प्रबळ घटा घण जेहा। राजा दास कुसळहु घट रहिया, वैरी सकळ सुजळ मंहि वहिया।
—सू. प्र.

५ इधर-उधर घूमना, भटकना।

६ गतिमान होना।

७ घूमना, मडराना।

उ०—१ रहियौ रवि कौतिग तांण रत्थ, सिव सुरां कोडि तेतीस सत्थ। अपछर विवांण ऊपरि वहंत, हुय औसर नारद हड-हडंत।
—गु. रू. बं.

उ०—२ वहै क वाज पत्थ ए, अकास मै क रत्थ ए। सीरंम साह नस्स है, विवांण उड्डिया वहै। —गु. रू. बं.

८ आचरण करना।

उ०—रहणौ एकण रंग, वहणौ वीरत ढंग विच। सदा स्यांम ध्रम संग, ताहरै अंग 'प्रतापसी'। —जैतदांन बारहठ

९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चल पड़ना।

उ०—प्रचंडै गोळै नाळ प्रचंड, वहंतै हैकंपियौ ब्रहमंड। जुडंत खुरंम अनै जिहंगीर, तिडां किरि अंबर उड्डै तीर।
—गु. रू. बं.

१० गोली, तीर आदि का छूटना, निकलना।

११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन करना।

१२ कीर्ति या विरुद धारण करना।

१३ स्वाभिमान व अभिमान रखना।

उ०—नलै जांण्यूं 'हूं जीतीस सही, ए अखम हारवा आव्यु अहीं'। कहि 'भालण' 'अभिमांन ज वहि, परि काल तणी गति कौ नवि लहि।
—नळाख्यांन

१४ घुसना, धंसना।

उ०—कह्यौ-'यूंही'। यूं कही नै राव बीजी कांनी जोयौ। तरै लाडक राव नूं पाछा सूं झटकौ वाह्यौ। राव रै गोरै लागौ। घणौ वूहौ। सु राव लाडक नूं गाबड़ सूं झालनै नीचै दियौ। —नैणसी

१५ कूप का पानी निकाला जाना।

उ०—जावतां एकै जायगां अरहट वहतौ दीठौ तेथ आया। आय अर घोड़ा पाया। घोड़ां रा मुंह छांटिया। हाथ धोया। आंख्यां छांटी अर अमल कियौ। पांणी पियौ। —नैणसी

[सं. वह्] १६ प्रचलित होना, फैलना।

१७ झरना, टपकना।

उ०—पटा वहंत मद्द ऐं, (कि.) धरा मै जळद गैं। नेजा बरक्क फब्ब ऐं (सु) ताड व्रिक्ख पब्ब ऐं। —गु. रू. बं.

१८ खेत में अनाज बोया जाना।

उ०—मुहारा रै खड़ीण रौ उनाव जैसळमेर सूं कोस ६ तथा ७ दिखण नूं वडी ठोड़ कोस ५ मांहै उनाव भरीजै। पारवती रा भाखरां रौ पांणी आवै। मांहै गोहूं मण ५००० बीज वहै निततौ भोग अखै। पांणी निठै जदी वेरा मांहै २० तथा २५ बयायोड़ा, पांणी घणौ मीठौ —नैणसी

[सं. वध] १९ शस्त्र प्रहार होना, आघात होना, वार होना।

उ०—१ वाहै खग 'केहर' रोस वधत, वंकी खग 'केहर' सीस वहंत। फिरै खळ गेहरिया जिम फाग, खिवै घण 'केहरिया' पर खाग।
—सू. प्र.

उ०—२ सग्रांम खडग्ग वाहंत सनड्ढ, वपै पळ तंडळ ऊखळ वंड्ढ। वढै जरदैत जडाळ वहंति, तुटंत गडा किरि साविण तंति।
—गु. रू. बं.

२० वीर गति प्राप्त होना।

उ०—वारां दुहां अभिनमै वीरम, कायर नह जिम कीध किसां।

वहि दुरवेस दुरंग कीयौ वसि, दीन्हौ वहियै दुरवेसां ।

—दूदौ बारहठ

२१ उछलना ।

उ०—विपरीत विस्सम घात, किरि बांण वज्रहै पात । वरजाग बूंग वहति, किरि अग्गि द्रस्टि हुवंति । —गु. रू. बं.

२२ वध करना, मारना, समाप्त करना ।

उ०—कुंअर पयंपै 'केहरि', करि मोसूं रिणताळ । 'गोइंद हूंतौ साथि मौ, मैं वूहौ 'गोपाळ' । —गु. रू. बं.

उ०—२ ऊधम किर राळै घर अंदर, वाग असोक लांगड़ै वांनर । दहुवै जुवां भड़ां खळ दहिया, वीरोचन अंमर दळ वहिया ।

—सू. प्र.

उ०—३ केवी भरड़ै वाहि कटारी, केवी दिम्म उठियौ कहै । वळै किणी रा पिता वहै तूं, वळै किणी रा चचा वहै ।

—राठौड़ झरडा बूड़ावत रौ गीत

उ०—४ बळ थियौ दित हरणाक्ष्य अप्रबळ, तेज मीहर धर रसातळ तांम । ब्रहम पुकार रघुपत करण मुख कहै । गरुड़धुज विप धांम ···गिड़, प्रळय जळ मग गंध सुध पड़ । आंण घरघर देत अणघट, विकट अर वहै । —र. ज. प्र.

२३ प्रहार करना, वार करना, आघात करना ।

२४ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन करना, धारण करना ।

२५ धारण करना ।

उ०—हुं निज बीती ह्रौ बात सी दाखवूं जी, जांणउ छउ जिनराय । तारक विरुद हौ वहियइ आपणौ जी, वांह ग्रह्यांनी लाज ।

—वि. कु.

२६ लाद कर ले जाना, ढोना ।

उ०—करणराइ आपणी जीभइं घोडउं बाध्यउ, विक्रमादित्य काग खाधउ पुण अजरामर न हुउ, नलिराइ रसोइ पची, हरिस्चंद चांडाल तणइ घरि पांणी वहचउं, पुरुसरांमि जननीबधु कीधउ ।

—व. स.

वहणहार, हारौ (हारी), वहणियौ—वि० ।

वहिओड़ौ, वहियोड़ौ, वहयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वहीजणौ, वहीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

वहणौ, वहबौ, वहवणौ, वहवबौ, बुवणौ, बुवबौ, बुहणौ, बुहबौ, बूहणौ, बूहबौ, बे'णौ, बे'बौ, बेवणौ, बेवबौ, बैं'णौ, बैं'बौ, बंवणौ बंवबौ, बैहणौ, बैहबौ, वहोणौ, वहीबौ, वहेणौ, वहेबौ, वे'णौ, वे'बौ, वै'णौ, वै'बौ, वैवणौ, वैवबौ—रू० भे० ।

वहत-सं. पु. [स. वहतः] १ यात्री ।

२ बैल ।

रू. भे.—बहत, वहत्त ।

वहतिक—१ देखो 'वहित्रिक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

देखो 'बोहित्त' (रू. भे.)

वहतीवांण-सं. पु.—१ सीमा में होकर चलने का महसूल ।

उ०—बीकानेर रै देस था वहै तिणनूं रु० ।॥) देस में वहतीवांण नूं लागै । घोड़ै १ दीठ रु० ४ वहतीवांण कारवांन नै लागै सरब रु० १५००० री ठोड़ वरस १ री तुलावट विकरी । —नैणसी

२ देखो 'वंतियांण' ।

वहत्तर, वहत्तरि—देखो 'बओत्तर' (रू. भे.)

उ०—पातिसाह अजमेर, आप आयौ गुडि पक्खरि, सतरिखांन खीटिया. अनै उबरा (व) वहत्तरि । —गु. रू. बं.

वहत्रक—देखो 'वहित्रिक' (रू. भे.)

वहद—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—है वह हीयै सेल थारौ हद, वहद खटकै पंच वखत । लोह जसौ दूखै नह लागौ, अण लागौ दूखै अखत । —सगरांम सांदू

वहन-सं. पु. [सं.] १ ग्रहण करने या धारण करने की क्रिया या भाव

२ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी सम्भालने की क्रिया या भाव ।

३ भार या बोझा लादकर लेजाने या ढोने की क्रिया ।

४ सवारी ।

५ नाव या बेड़ा ।

६ ध्वजा ।

७ खंभे के नौ भागों में से सब से नीचे वाला भाग (वास्तुकला)

८ देखो 'वह्नि' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

९ देखो 'बहन' (रू. भे.)

रू. भे.—बहण, बहन, वहण ।

वहनट—देखो 'ब्रहनट' (रू. भे.)

वहनि, वहनी—१ देखो 'वहणी' (रू. भे.)

२ देखो 'वहन्य' (रू. भे.)

उ०—जिण न्रप वहनि सुजाव क्रतंजय । जेण सुजाव नरेस रणंजय

—सू. प्र.

३ देखो 'वह्नि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—अड़डाट नाद वैराट आज, घट्ट जांणि दूजौ घड़ै । वरसाळ झाळ गोळा वहनि, प्रळै काळ छोळा पड़ै । —सू. प्र.

वहनीसिखा—देखो' वह्निसिख' (रू. भे.) (अ. मा.)

वहन्न, वहन्नि—१ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

उ०—१ कपि जेम सुदिढ़ पइ तीख कन्न । बाजिन्न जेम ऊन्हउ

वहन्न। साहणांह दीवउ वांग साहि। मंडळेसर चडियउ थट्ट माहि
—रा. ज. सी.

उ०—२ केसरि कथिन्न सांभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि। वीकाहर राजा ए वखांण, जाळोवळि सीतउ ध्रित्त जांण।
—रा. ज. सी.

२ देखो 'वहन' (रू. भे.)

वहन्य-सं. पु.—एक सूर्य वंशी राजा, जिसका पुराणों में शुद्ध नाम वर्हि मिलता है। दूसरा नाम धर्मी भी मिलता है।

ऊ०—जे सुत व्रहद भोज जगजाहर। व्रहदभोज सुत वहन्य श्रीतवर।
—सू. प्र.

रू. भे.—वहनि, वहनी।

वहम-सं. पु. [अ.] १ किसी प्रकार के अनिष्ट या हानि के प्रति मन में उठने वाली निराधार कल्पना, संभावना या धारणा।

२ भ्रम, भ्रांति।

३ शक, संदेह, शंका।

उ०—दरबार तौ आप रै माथै पूरा महरबांन है। आप नै नाराजगी रौ फकत वहम है। आप निसंक होयनै किलै पधारौ।
—अमरचूनड़ी

रू. भे.—बहम, बेंम, बें'म, वें'म।

वहमी-वि. [अ.] १ वहम करने वाला, शक करने वाला।

२ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला, शक्की मिजाज।

रू. भे.—बहमी, भहमी, वैमी।

वहरणौ, वहरबौ—देखो 'बैरणौ, बैरबौ' (रू. भे.)

उ०—मोरधुजी महाराज था जन सचा हर का। करवत हत्थां वहर कै दिय सीस कंवर का। —दुरगादत बारहठ

वहरणहार, हारौ (हारी), वहरणियौ—वि०।

वहरिओड़ौ, वहरियोड़ौ, वहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वहरीजणौ, वहरीजबौ—कर्म वा०।

वहरांमसंद-वि. [फा. बहरामंद] धनाढ्य, सम्पन्न, भाग्यशाली।

उ०—लिखमी रां लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरांमसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै। —रा. सा. सं.

वहराड़णौ, वहराड़बौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

उ०—पाघरै खेत भाराथ रौ पाड़ियौ, साथ भूलाडियौ रुधर सूरा। पागड़ौ खगां वहराड़ियौ सीस पर, भोयण चहराड़ीयौ नहीं भूरा।
बादरसिंह रौ गीत

वहराड़णहार हारौ (हारी), वहराड़णियौ—वि०।

वहराड़ीओड़ौ, वहराड़ीयोड़ौ, वहराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वहराड़ीजणौ, वहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

वहराड़ियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहराड़ियोड़ी)

वहराणौ, वहराबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

वहराणहार, हारौ (हारी), वहराणियौ—वि०।

वहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वहराईजणौ वहराईजबौ—कर्म वा०।

वहरायोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री, वहरायोड़ी)

वहरावणौ, वहरावबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

वहरावणहार, हारौ (हारी), वहरावणियौ—वि०।

वहराविओड़ौ, वहरावियोड़ौ, वहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वहरावीजणौ, वहरावीजबौ—कर्म वा०।

वहरावियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहरावियोड़ी)

वहरियोड़ौ—देखो 'बैरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहरियोड़ी)

वहरूपियौ—देखो 'बहुरूपियौ' (रू. भे.)

वहळ, वहल—१ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—१ मोरी सइयां ए, रुण झुण वहळ जुड़ायी —लो. गी.

उ०—२ पछै कलौ नाडुल वहळ बैस नै गयौ।
—राव चंद्रसेण री बात

उ०—३ भरमल आप री तरफ रौ कपड़ौ वसत सारी मंगाई, सो ऊंठ बीस भरीया। दस वहलां तयार कीवी। दस घोड़ा तयार किया इव कर इण रौ सखरौ महुरत देख भार सभांवण लागौ।
—कुँवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'वेहळ' (रू. भे.)

उ०—मंडे सरट ललाटी जैमल, सथर गहर धु वेद संसार; वहळां संपत विपत वैरीयां, सुज 'सुरत्तांण' कळोधर सार।
—भीमौ आसियौ

३ देखो 'बळद' (रू. भे.)

वहलवांन—देखो 'बहलवांन' (रू. भे.)

वहलि-सं. स्त्री.—१ हाथी या घोडे को हांकने की छड़ी (उ. र.)

२ देखो 'बहल' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'वहली' (रू. भे.)

वहलियौ—१ देखो 'बळद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोटौ, हांसल छोटौ दीधौ छै और खाणौ पेरणौ दासदासी नै रोजगार रथ नै वहलिया ऐ समाचार छै। —जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'वहलियौ' (रू. भे.)

वह्ली–सं. स्त्री, [सं. बहला] १ वड़ी इलायची।

[सं. बहलः] २ ऊख विशेष।

रू. भे.—बहलि।

३ देखो 'वहल' (अल्पा., रू. भे.)

वहव - देखो 'बहू' (रू. भे.)

उ०—रांमापीर ऊंची रुणेचा रे मांहि मांगु पूत रत्नों री जोड़ कुळ में वहवां रौ जाजौ भूलरौ —रांमदेवजी तुंवर रौ गीत

वहवारियौ—देखो 'व्यवहारीयौ' (अल्प., रू. भे.)

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी **वहवारिया** सोदागर वहरांमसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै।

—रा. सा. सं.

वहाड़णौ, वहाड़बौ - देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

उ०—आहवि वाहि **वहाड़ि** असिस्मर, महाराज ले जाज्यौ मधुकर।

—वचनिका

वहाडणहार, हारौ (हारी), वहाड़णियौ—वि०।

वहाड़िग्रोड़ौ, वहाड़ियोड़ौ, वहाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वहाड़ीजणौ, वहाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वहाड़ियोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहाड़ियोड़ी)

वहाणौ, वहाबौ–क्रि. स. ['वहणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ कहीं जाने के लिये प्रेरित करना, भेजना, गमन कराना, चलाना।

२ द्रव पदार्थ या पानी को धारा के रूप में बहाना, प्रवाहित करना।

३ उक्त धारा में बहाना, प्रवाहित करना, तिराना।

उ०—तठै समुद्र मांहै पैठा। पैस अर एक वडौ पाटलौ तिण ऊपर भांणेज नूं बैसांण अर पाटलानूं धकाय अर वहतै पांणी मांहै **वहाय** दियौ। —नैणसी

४ भटकाना, घूमाना।

५ गतिमान करना, गति देना।

६ घूमाना, टहलाना।

७ आचरण कराना।

८ अलग हटाना, दूर कराना।

९ शस्त्र प्रहार कराना, आघात कराना, वार कराना।

१० वध कराना, मरवाना, वीर गति प्राप्त कराना।

११ उछालना।

१२ प्रचलित कराना।

१३ टपकाना, झरवाना।

१४ खेत में अनाज बोआना, बोवाई कराना।

१५ किसी उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी को वहन कराना, धारण कराना, जिम्मेदारी डालना।

१६ लदवा कर ले जाना, ढोवाना।

१७ शपथ दिलवाना।

वहाणहार, हारौ (हारी), वहाणियौ—वि०।

वहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वहाईजणौ, वहाईजबौ—कर्म वा०।

वहाड़णौ, बहाड़बौ, बहाणौ, बहाबौ, बहावणौ, बहावबौ, बुवाणौ, बुवाबौ, बुहाणौ, बुहाबौ, बूहाणौ, बूहाबौ, बैवाणौ, बैवाबौ, वहाड़णौ, वहाड़बौ, वहावणौ, वहावबौ—रू० भे०।

वहानौ—देखो 'बहानौ' (रू. भे.)

वहायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कहीं जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, चलने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ. २ बहाया हुआ, प्रवाहित किया हुआ. ३ भटकाया हुआ. ४ गतिमान किया हुआ. ५ घुमाया या टहलाया हुआ. ६ अलग हटाया हुआ, दूर किया हुआ. ७ शस्त्र प्रहार कराया हुआ, आघात या वार कराया हुआ. ८ वध कराया हुआ, मरवाया हुआ. ९ उछाला हुआ. १० प्रचलित कराया हुआ. ११ टपकाया हुआ, झरवाया हुआ. १२ बोवाई कराया हुआ, बोवाया हुआ. १३ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन कराया हुआ, धारण कराया हुआ. १४ भरवाया हुआ. (स्त्री. वहायोड़ी)

वहार—देखो 'बहार' (रू. भे.)

उ०—मिळी सहेली महल में, वणी किसीक **वहार**। चुतर सरद रौ चंद्रमा, नवल चांनणी नार। —र. हमीर

वहाळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

वहालौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहाली)

वहाव—देखो 'बहाव' (रू. भे.)

वहावणौ, वहावबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

वहावणहार, हारौ (हारी), वहावणियौ—वि०।

वहाविग्रोड़ौ, वहावियोड़ौ, वहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वहावीजणौ, वहावीजबौ—कर्म वा०।

वहावियोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहावियोड़ी)

वहिंचणौ, वहिंचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—जाइ उवै तळाव पर घोड़ा **वहिंचिया**।

—कूंगरै बळोच री वात

वहिंचियोड़ौ—देखो 'वंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वहिंचियोड़ी)

वहि—देखो 'वही' (रू. भे.)

वहिउ-वि. [सं. व्यूढ़] १ फैला हुआ, चौड़ा, प्रशस्त। (उ. र.)
२ वृद्धि को प्राप्त। (")
३ वृद्ध, वूढा। (")
४ दृढ़, सशक्त। (")
५ विवाहित। (")

वहिचणौ, वहिचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)
उ०—तांहरां विजौ बोलीयौ जी हालौ आधौ आध **वहिच** लेस्यां।
—चौबोली

वहिचियोड़ौ—देखो 'वंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वहिचियोड़ी)

वहिण—देखो 'बहन' (रू. भे.)

वहिणि—देखो 'वाहनि' (रू. भे.)
२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

वहितिक, वहित्र, वहित्रक, वहित्रिक-सं. स्त्री. [सं. वहित्रकं] १ नाव, जहाज। (ह. नां. मा.)
२ बेड़ा, पोत।
रू. भे.—बहित्र, वहतिक, वहत्रक।

वहित्थ-सं. पु. [सं. वाहित्थं] हाथी का मस्तक।
उ०—चिरै **वहित्थ** हत्थि के चिकार चूर चूर व्है। भिरै भटाळि भाळ में, भिखार भूर-भूर व्है। —ऊ. का.

वहित्रौ-सं. पु.—नगर का चौहटा। (सभा)

वहिन—१ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)
२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

वहिनमुख—देखो 'वह्निमुख' (रू. भे.) (अ. मा.)

वहिनी-सं. स्त्री. [सं. वहिनी] १ नाव, नौका।
२ बेड़ा, पोत।
३ देखो 'वाहनी' (रू. भे.)
४ देखो 'बहन' (रू. भे.)
५ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

वहिया-सं. पु.—पंवार वंश की एक शाखा।
(बां. दा. ख्यात)

वहियोड़ौ-भू. का. कृ. (स्त्री. वहियोड़ी) १ चलकर कहीं गया हुआ, गमन किया हुआ, चला हुआ, किसी की ओर निरन्तर चला हुआ। २ पास से होकर गुजरा हुआ, निकट से होकर चला हुआ। ३ द्रव पदार्थ या पानी का धारा के रूप में बहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ। ४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ। ५ इधर-उधर घूमा हुआ, भटका हुआ। ६ गतिमान हुवा हुआ। ७ घूमा हुआ, मंडराया हुआ। ८ धारण किया हुआ। ९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चला हुआ। १० गोली, तीर आदि का छूटा हुआ, निकला हुआ। ११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन किया हुआ। १२ कीर्ति या विरुद धारण किया हुआ। १३ स्वाभिमान व अभिमान रखा हुआ। १४ घुसा हुआ, धंसा हुआ। १५ प्रचलित हुवा हुआ, फैला हुआ। १६ झरा हुआ, टपका हुआ। १७ खेत में अनाज बोया हुआ। १८ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ, आघात हुवा हुआ, वार हुवा हुआ। १९ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ। २० उछला हुआ। २१ वध किया हुआ, मारा हुआ, समाप्त किया हुआ। २२ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ, आघात किया हुआ। २३ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन किया हुआ, धारण किया हुआ। २४ धारण किया हुआ। २५ लाद कर ले जाया हुआ, ढोया हुआ।

वहिरंग-सं. पु. [सं.] १ अंतरंग का विपर्याय, उल्टा।
२ शरीर का बाहरी भाग।
वि.—१ ऊपर-ऊपर का, बाहर का।
२ अनावश्यक, फालतू।

वहिरणौ, वहिरबौ—देखो 'बेंरणौ, बेंरबौ' (रू. भे.)
उ०—थांनक, नित्य पिंड कलाल रौ पांणी **वहिरणौ** आदि छोड, नवौ साधपणौ पचख्यौ, पिण सरधा तो वाहीज पुन री।
—भि. द्र.

वहिरलापिका-सं. स्त्री. [सं. वहिर्लापिका] वह प्रश्न या टेढ़ा वाक्य जिसका श्रोताओं से उत्तर पूछा जाय, पहेली, समस्या।

वहिराणौ, वहिराबौ—देखो 'बेंराणौ, बेंराणौ' (रू भे.)
वहिराणहार, हारौ (हारी), वहिराणियौ—वि०।
वहिरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वहिराईजणौ, वहिराईजबौ—कर्म वा०।

वहिरायोड़ौ—देखो 'बेंरायोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—वहिराव्या तिण वस्त्र प्रधांन जो, अनुकंपा कीधी रे च्यारै अगना रे लौ। धन धन तुं प्रिय गुण निधांन जो, मुनि पड़िलाभ्या वस्त्र सुचंगना रे लौ। —वि. कु.

वहिरावियोड़ौ—देखो 'बेंरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वहिरावियोड़ी)

वहिरउ—देखो 'बहरौ' (रू. भे.)
उ०—वज्जिय ए तूर गंभीर अंबरू वहिरिउ पडिरमन। नाचहि ए अबलिय बाल, रंजिय सुर धवला खेहिं। —स्रीधरम कलस मुनि।

वहिरमांण-सं. पु.—महादि देह क्षेत्र के तीर्थंकर ।

उ०—**वहिरमांण** स्रीमंधर स्यांमि, सीधा वि आव्यउ सिर नांमी ।
—ऐ. जै. का. सं.

वहिरौ—देखो 'बहरौ' (रू. भे.)

वहिल—१ देखो 'बहल' (रू.भे.)

उ०—१ तठा उपरांत करि नै राजांन कुमार री जांन घणै आडबर सूं हाथी घोड़ा **वहिल** सुखासण रथ पायक रा वणाव कियां थकां बघेल जांनियां रै साथ लियां घणौं मोती जड़ाव जरकसी सूं लड़ालंब हुआ छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ तहरां भींवौ भळका लेनै हालियौ । भरमल पासै आयौ अर कह्यौ—थानै बाघौजी बोलावै छै। तद सहिनांण लेनै **वहिल** चढ़ि चाली । —ऊमादे भटियांणी री वात

उ०—३ ताहरां साहूकार हुआ बड़ौ लवेस करि थाहे रैस करि **वहिल** उठ त्यार करि ; कपड़ौ ले नै चालीया। —चौबोली

२ देखो 'बैल' (रू. भे.)

वहिलउ, वहिलु—देखो 'वहिलौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ **वहिलउ** आए वल्लहा, नागर चतुर सुजांण। तुझ विण घण विलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमांण । —ढो. मा.

उ०—२ राइं कागल मोकलिउ, माधव **वहिलु** आवि । जिम जांणइ तिम तुं करइ, तेणि सदनि सिधावि । —मा. कां. प्र.

वहिळौ, वहिलौ-क्रि. वि. [प्रा. वहिल्ल] (स्त्री. वहिली) १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—१ रूनी रने चढ़ेह, जातांही जोयौ नहीं । **वहिला** वळण करेह, जुग जीवूं जी जेठवा । —जेठवौ

उ०—२ माधव **वहिला** आवज्यौ, हुं जोऊं घरि वाट । फल दल जल अग्नि धरूं, भूमि सयन नही खाट । मा. कां. प्र.

उ०—३ किसं जबांनं करै प्रघट दाखियो पहिलौ । दंत भणै अकरूर विसन नां ल्याव **वहिलौ** —पी. ग्रं.

उ०—४ मम ढील करौ हल वार म लावौ, वेग चढ़ौ **वहिळा** वहिळा । —गु. रू. ब.

२ पहले, पूर्व।

उ०—खट-दस-वीस वंस खत्रियां गुरु, खट दरसण आचार खरौ । वाखांणै ऊगा दिन **वहिलौ**, हरि पहिलां किलियांणहरौ ।
महाराजा करणसिंह रौ गीत

वि.—१ उदार, दानी।

२ प्यारा, प्रिय ।

३ विरला ।

रू. भे.—वहिलउ, वहिलु, वहीलौ, वहेलौ ।

वहिल्ल—१ देखो 'बैल' (रू. भे.)

उ०—उंदर दर खण मरै पैस भोगबै भुवंगह । हल वहि मरै **वहिल्ल**, हरी जव चरै तुरंगह । —नैणसी

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

वहिस-अव्य.—१ अच्छे समय पर ।

उ०—प्रथम दुतिय चवथे पदें, मोहरा **वहिस** मिळंत । रह अमेल पद तीसरौ, जो झड लुपत झिलंत । —र. रू.

२ देखो 'बहिस' (रू. भे.)

वहीं-अव्य. [राज. वह] १ उसी स्थान या जगह पर ।

२ उसी बिंदु स्थान, समय या स्थिति पर।

३ उसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के प्रति ।

रू. भे.—वहि, वही ।

सं. स्त्री. [सं.वयस्] आयु-उम्र ।

उ०—दूत हकीकत कहै छै, जु राजांन कुंअर ऊठती **वही रौ** जुवांन आजांनबाह राज हंस लीलंग छे। —रा. सा. सं.

वही-सर्व. [राज, वह] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति निश्चित रूप से संकेत करने वाला सर्वनाम।

उ०—करहा पीपल पांन चर, आगै मरसि भूख। जासां उणहीज देसड़े, वे फळ **वहीज** रूख । —ढो. मा.

रू. भे.—वहि, बाहि, बाही।

२ देखो 'बही' (रू. भे.)

३ देखो 'वहीं' (रू. भे.)

उ०—तव गौतम आव्या तिहां **वही**; लोक सहु हरख्या गह गही ।
—स्रीपालरास

वहीण—देखो 'विहीन' (रू. भे.)

उ०—म्याराजी थे मुरधरा, वालम जाय वसांह । आप **वहीणी** एक दन, जीवै नहीं 'जसांह' । —मयारांम दरजी री बात

(स्त्री. वहीणी)

वहीणौ, वहीबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

वहीर-सं. पु.—१ प्रस्थान, गमन, प्रयाण, कूच ।

उ०—१ अरु गढ मैं आदमी हजार दोय हा सूं खरच घणौ, सू जोइया नूं तथा दूजै साथनूं तो घरनूं **वहीर** कर दीना वा गढ में भाटी आदमी पांच सौ रया । —द. दा.

उ०—२ तांहरां विसनदास फोज ले अर **वहीर** हुवौ। —नैणसी

२ सदा साथ रहने वाले नौकर, अनुचर, परिजन ।

उ०—बेटौ खांन इनात रौ, गढ़ सूं थयौ तगीर । चाली महमद बेग री, दिल्ली दिसा **वहीर**। —रा. रू.

३ कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार।

उ०—गोकुळ हूंत गयौ ज्यूं गिरधर, ऊभा छोड अहीरां। 'सगता' जेम गयौ स्रग सासू, वांसै छोड वहीरां। —बुधजी आसियौ

४ सेना।

उ०—१ वहंती इसी पंथि ओपै वहीरं, नदी हेम थी ले चली जांणि नीरं। कतारां कठठ्ठे चलै जूंग काळा, वहै वादळा जांणि भाद्रव्व-बाळा। —वचनिका

उ०—२ वह रहि हिलै वहीर, पाइक ओठक पड़तळां। मिळवा फिर चाली महण, नवसै नदि ले नीर। —वचनिका

उ०—३ एकणी नगारै थाट एम। हल्ले वहीर जिम सलित हेम। —सू. प्र.

रू. भे.—वहिर, बहीर, वईग्रर, वईयर, वईर।

वहीलौ—देखो 'वहिलौ' (रू. भे.)

वहीवेस-सं. स्त्री. [सं. वय-वयस्] १ युवावस्था, जवानी।

उ०—तिण सूं स्रीमाजी साहिब, हुकम करौ तौ पातिसाहां री उळग करूं। इण वहीवेस मांहे सारौ बिवहार छै। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

[सं. वह्+वयस्] २ अस्थाई अवस्था, बीतने योग्य उम्र।

वहु—देखो 'बहू' (रू. भे.)

वहुअड़—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

वहुअर—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

वहुअड़ी—देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे)

वहुआरी—देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

वहुबंदोळौ—देखो 'बहुबंदोळौ' (रू. भे.)

वहुरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

वहुरावणौ, वहुरावबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

उ०—गुरु देखी हरसित थया, वहुराव्यौ पुत्र रतन। धरम लाभ गुरु तव दीये, करजौ पुत्र जतन। —कवियण

वहुरावियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वहुरावियोड़ी)

वहुव—देखो 'बहू' (रू. भे.)

वहुअड़, वहुअर, वहुवड़, वहुवर—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

उ०—१ आयौ आयौ ग्रे वहुअड़ फागण मास, वहुअड़ फागण मास घर-घर होय रयौ नीपणौ ग्रे। —लो गी.

उ०—२ नीपौ नीपौ ग्रे वहुअड़ चाकड़ली री चूळ, वहुअड़ चाकड़ली री चूळ नीपौ चूलौ वेवणी —लो गी.

उ०—३ माय कहै वहुअर सहित, जीवौ कोडि वरीस। अविचल जोडी तुम्ह तणी, इम दीधी आसीस। —स्रीपालरास

उ०—४ हे चार चतर, मिळ म्हारी जच्चा रांणी ने, हे किस वहुवड़ किस धीय। —लो. गी.

वहूवासौ—देखो 'बहुवासौ' (रू. भे.)

वहू—देखो 'बहू' (रू. भे.)

उ०—१ वहू च्यार पगां लगै जेण वारै। सुमंत्रा अनै केकई कोसल्या रै। —सू प्र.

उ०—२ कद हूं कवी कुमारड़ी, कहि नै कदि परणेसि। वद हूं वाजिद कोटड़ै, बीजा वहू कहेसि। —सयणी री वात

वहूअर—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

उ०—जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन बीनवीइ किसी, हूं वहूअर तू जेठ। —मां. कां. प्र.

वहूदक-सं. पु. [सं.] चार प्रकार के संन्यासियों में से एक।

वहूबंदोळौ—देखो 'बहुबंदोळौ' (रू. भे.)

वहूरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

वहूवत—देखो 'वधूवत' (रू. भे.) (उ. र.)

वहेड़ौ—देखो 'बेंड़ौ' (रू. भे.)

उ०—हरड़ वहेड़ा आंवळा, घी-शक्कर में खाय। हाथी दाबै कांख में साठ कोस ले जाय। —अज्ञात

वहेणौ, वहेबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदरि मो सारउ नहीं, कुंअर वहेसी मग्ग। साहिब चित्त उपाड़ियउ, जिम केकांणां वग्ग। ढो. मा.

वहेलौ—देखो 'वहिलौ' (रू. भे.)

उ०—विहांणे नवे नाथ जागौ वहेला, हुवा दोड़िवा धेन गोवाळ हेला। —नागदमण

वहौ—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—बुधवंत वहौ कथ सांच कहौ, सुण लीध सहौ ग्रह पंथ गहौ। —र. रू.

वहोत्तर—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

उ०—देवळ एक खंभ दोइ जाकै, पांच भांति रंग दीया। दस दरवार वहोत्तर छाजा, गळी गांव 'वहौ' कीया। —ह. पु. वां.

वहोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—वहोत जतन करि वांणिक वांण्या, ऊपरि कळस चढाया। ए दोइ रतन उजागर दीसै, वहोत भांति सूं लाया। —ह. पु. वां.

वहोड़ि, वहौड़ी—देखो 'बहुरि' (रू. भे.)

उ०—माया तजि भजि नांव निरंजन, जीवन अंजली नीर। यहु औसर भी वहोड़ि न लाभै, जम का काटि जंजीर। —ह. पु. वां.

वह्नि-सं. स्त्री. [सं] १ अग्नि, आग ।

उ०—त्रिभुवन मांहै ए जिन तारण, वारण दुख वन वन्हि जी ।
—ध. व. ग्रं.

२ अन्न को पचाने की शक्ति, पाचन-शक्ति ।

३ भूख ।

४ चिता ।

५ सवारी ।

सं. पु.—६ राम की सैना का एक बन्दर ।

रू. भे.—वह्न, वह्नि, वह्नी, वह्निं, वह्निी ।

वह्निकर-वि. [सं.] १ जलाने वाला ।

२ भूख बढ़ाने वाला ।

३ आग पैदा करने वाला ।

सं. स्त्री.—१ विद्युत, विजली ।

२ चकमक ।

३ पथरी ।

वह्निबीज-सं. पु. [सं.] १ सोना, स्वर्ण ।

२ नीबू ।

वह्निमुख-सं. पु. [सं.] देवता ।

रू. भे.—वहिनिमुख ।

वह्निसिख-सं. स्त्री. [सं.] १ केसर । (नां. मा.)

२ कुसुंम ।

[सं. वह्नि—सख] ३ पवन, हवा ।

रू. भे.—वनीसिख, वहनीसिख ।

वह्न—देखो 'बहू' (रू. भे.)

उ०—जितरै साह री वह्न घर में आयी ।
—राजाभोज अर खापरा चोर री वात

वां-सर्व.—१ उन ।

उ०—१ काट जिकां कुळ ऊबटै, आठ वाट इतफाक । वां सबळां ही पुरसड़ां, वैरी गिणै वराक । —बां. दा.

उ०—२ ज्यांरी जीभ न ऊपड़ै, सेणां मांही सेत । वां रा कर किम ऊपड़ै, खळां धिरचां बिच खेत । —बां. दा.

उ०—३ लाखौ वो असवारां मांहै हुय नै भुज आयौ । —नैणसी

२ उन्होंने ।

उ०—१ कैरव ज्यूं आया कमंध, पांडव ज्यूं पतिसाह । यां हरि नांम उचारियौ, वां रहिमांण अलाह । —वचनिका

उ०—२ नारायण रौ नांम ज्यां, नहं लीधौ निरणांह । वां जमवारौ वोळियौ, ज्यूं जगळ हिरणांह । —हरिरस

अव्य.—५ वहां, उस जगह ।

रू. भे.—वां ।

वांइटौ-सं. पु. [सं. वात-घटौ] १ शरीर में वात-विकार के कारण होने वाली ऐंठन या शून्यता ।

२ पेचिस आदि के कारण पेट में होने वाली ऐंठन या मरोड़ ।

रू. भे.—बांइटौ, बांईटौ, बांयटौ, बाइटौ, बाईंटौ, वांईटौ, वाईंटौ ।

वांई-सं. स्त्री. [सं. वायी] १ सर्प का बिल ।

२ खाट के पैताने की ओर आड़ा बांधा जाने वाला मोटा बंधन जो खाट की बुनाई व वदावन का आधार होता है ।

वि. वि.—यह रस्सी खाट बुनने वाली मूंज की बनती है । मूंज को पांच-सात बार आड़ी लपेट कर उस पर चिथड़े लपेट दिये जाते हैं जिससे यह एक मोटे रस्से के समान हो जाती है ।

रू. भे.—बांई, मांई, म्यांई ।

३ करधनी ।

वांईटौ—देखो 'वांइटौ' (रू. भे.)

उ०—उण नै बूंगी आयगी । डील थर थर धूजण लागौ । मासी है जठै ई हेटै गुड़गी । हाथां पगां वांईटा आवण लागा । —फुलवाड़ी

वांक—देखो 'बांक' (रू. भे.)

उ०—१ रज्जब पारस परस कै, मिटगौ लोह विकार । तीन वात तो ना मिटी, वांक धार अरु मार । —संतकवि रज्जब

उ०—२ आप वस्तुआं नूं तयार कर ऊंट पर घाल गंगाजळी पाणी री एक हांनै घाली । वांक एक पताकै बांधी ।
—साह रांमदत्त री वारता

उ०—३ आदित्य आंखि ज विस्वनी, ऊघाडण ए आंक । थासिइ अंध उलूक तु, सूरि जनु स्यु वांक । —मा. कां. प्र.

उ०—४ तूं रूठइ थइ आपदा पूज जी, राय थकां करइ रांक । मेर थकां सरसव करइ पूज जी, वांकां काढ़इ वांक । —स. कु.

वांकउ—देखो 'बांकौ' (रू. भे.) (उ. र.)

देखो 'बांक' (मह., रू. भे.)

वांकड़—देखो 'बांकौ' (मह., रू. भे.)

उ०—घरि बइठा ही आविस्यइ, लाखै लियां लडंग । तिणि मइं लेस्यां टाळिमा, वांकड़ मुहां विडंग । —ढो. मा.

(स्त्री. वांकी)

वांकड़लौ—देखो 'बांकौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. वांकड़ली)

वांकड़ी—१ देखो 'बांकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ भुंअ सजोड़ै दीपै वांकड़ी कबांण नै जीपै हो । मांहौ-मांही न छीपै ते भाल विसाल समीपै हो । —वि. कु.

उ०—२ कमधजिया लैरां चालां ली । मोही मोही **वांकड़ी** तरै सुं । —रसीलै राज री गीत

२ देखो 'बांकड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'बांकली' (रू. भे.)

वांकड़ीनाळ, वांकड़ीनाळी—देखो 'बांकली' (रू. भे.)

वांकड़ौ—१ देखो 'बांकौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **वांकड़ा** कमंध वीर, सांकड़ा आया सधीर । तांम सोढि देखि ताव, पालटै कुरंग पाव । —सू. प्र.

उ०—२ परवांणौ पतसाह रौ, लिख मूकै मेलांण । इण गढ हिंदू **वांकड़ौ**, कर ग्रहियां केवांण । —नैणसी

उ०—३ दगै तोफां बहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जो लार सकै सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ **वांकड़ौ** बीटियौ दूजां गढां भोळै, लोहां जाळ घसै कहौ नसैणी लगाय । —बां. दा.

उ०—४ वारु थई विवहारीउ, वाहणि घोड़ा साथ । पूरण पुहुँचालगि भरिउ, वेढि **वांकड़ा** हाथि । —मा. कां. प्र.

उ०—५ कड़ियें कटारो धरमी रे **वांकड़ौ**, सोरठड़ी तरवार श्रो । —लो. गी.

(स्त्री. वांकड़ी)

२ देखो 'बांकड़ौ' (रू. भे.)

वांकम, वांकमि—देखो 'बांकम' (रू. भे.)

उ०—१ तेज तरह **वांकम** तोखारां, धर वांकम पाधर कर धूत । अंग वांकम रंग छै 'ऊदांणी', रंग वांकम वांका रजपूत ।
—जोरावर सिंह ऊदावत रौ गीत

उ०—२ सखी अमीणौ साहिबौ, **वांकम** सूं भरियोह । रण विकसै रितुराज मैं, ज्यूं तरवर हरियोह । —बां. दा.

उ०—३ राजीवाई राव आय नैड़ौ ऊतरियौ । करां भाल केवांण वींद **वांकम** बळ भरियौ । —द. दा.

उ०—४ ऊंचा जोर अकास हूं, पहला अप्रमांण । **वांकम** जोर मरोर अंग, एहे अहिनांण । —गजउद्धार

वांकल-सं. स्त्री.—देखो 'बांकल' (रू. भे.)

उ०—राय आंगण चौपड़ रमौं, महिलां सरब सुदाह । रखसी **वांकल** राज रौ, चूड़ौ अमर सदाह । —पा. प्र.

३ देखो 'बांक' (मह., रू. भे.)

वांकस—देखो 'बांक' (रू. भे.)

उ०—कुचां पर फाबै अलका री **वांकस** । —र. हमीर

वांकिम, वांकिम्म—देखो 'वांकम' (रू. भे.)

उ०—१ नर नरिंद अणनिंद, विंद **वांकिम्म** वीरवर । सुत सुरिंद हरचंद, कंद काढण केवी हर । —गु. रू. बं.

उ०—१ 'ऊदौ' 'अनौ' विकट ऊदावत, जोड़ मोड़ दळ बिन्है जगावत । 'रतन' जगावत **वांकिम** रातौ, 'रांमै सुभावत मेळ अरातौ । —रा. रू.

वांकियौ—१ रथांग विशेष ।

उ०—जूँ सहरी भ्रूह नयण अग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र । वाळी किरि **वांकिया** विराजै, चंद रथी तांटक चक्र । —वेलि

२ देखो 'बांकियौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बांक' (अल्पा , रू. भे.)

वांकी—देखो 'बांकी' (रू. भे.)

उ०—खरगौ, लुद्रवा कनै । घोड़ां, ध्राव, वडी **वांकी** ठोड़, मुहांरा दिसी जैसळमेर था कोस १६, खडाळ में । —नैणसी

वांकु—देखो 'बांकौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—बल नी वांमा बोलि मरम, **वांकु** छि अति मन नु धरम । मनि मांनु ते मांनुम देव, जे परिण लखिणु करम निखेव । —नळाख्यांन

(स्त्री. वांकी)

वांकौ—देखो 'बांकौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोहिली भोमि **वांक** सुभट्ट । भूझार दियइ करिमाळ भट्ट । —रा. ज. सी.

उ०—२ 'वीकै' दुरंग थापियौ **वांकौ** । कांटां सरण उवेळ करौ । —महाराजा करणसिंह

उ०—३ फूलाँरा चौस पैहरियां थकां टोय अणियाळा काजळ टांसियां थकां **वांका** नैणांरी भोक नांखती पायलै रै ठमकै सूं घूघरै रै घमकै सूं विछीयां रै छमकै सूं रमभोळ करती अंगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चाली जाय छै । —रा. सा. सं.

उ०—४ दुरजन जे **वांका** हुता, नार कीया ते जेरौ रे । जिण अगपति नै आगलौ, न सकै गयवर फेरौ रे । —वि. कु.

उ०—५ तूं रूकउ ढाइ आपदा पूजजी, राय थका करइ रांक । मेर थकां सरसव करइ पूजजी, **वांकां** काढइ वांक । —स. कु.

(स्त्री. वांकी)

वांग—देखो 'बांग' (रू. भे.)

वांगड़-वि.—वीर, बहादुर ।

उ०—अबळा रै आगेह, कासूं सबळा पण करै । **वांगड़** जद वागेह केवा लै खीची कनै । —पा. प्र.

रू. भे.—बांगड़ ।

वांगण–सं. पु. [सं. अवाञ्जन] १ वह स्निग्ध पदार्थ जो गाड़ी या रहट को आसानी से घूमने के लिये चक्रों की धुरी में लगाया जाता है।

२ उक्त पदार्थ लगाकर वांगने की क्रिया या भाव।

वांगणौ, वांगबौ–क्रि. स. [सं. अवाञ्जनम्] १ गाड़ी या रहट के चक्रों की धुरी में स्निग्ध पदार्थ (ग्रीस आदि) लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाना।

२ पीटना, मारना।

३ संभोग करना, मैथुन करना। (बाजारू)

४ गमन करना।

वांगणहार, हारौ (हारी), वांगणियौ—वि०।

वांगिओड़ौ, वांगियोड़ौ, वांग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांगीजणौ, वांगीजबौ—कर्म वा०।

बांगणौ, बांगबौ—रू० भे०।

वांगरी–सं. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

वांगळी–सं. स्त्री.—१ रेगिस्तान के मैदान में धूल पर पड़ने वाली लहरें।

२ पानी जाने की छोटी नाली।

वांगळौ—देखो 'बांघळौ' (रू. भे.)

उ०—चोळ चख कीयां घणा बोळ पंजा चढत, भुज अटत आभ खळ घटत भाळौ। बाहरु रसा रौ फतै कर बावड़ै, **वाँगळौ** सीह 'वगतेस' वाळौ। —मेगराज आढौ

वांगियोड़ी–भू. का. कृ.—१ संभोग की हुई, मैथुन की हुई (स्त्री)

२ ग्रीसादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाई हुई (गाड़ी)

वांगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ ग्रीस आदि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाया हुआ। (रथ, रहट)

२ पीटा हुआ, मारा हुआ।

३ गमन किया हुआ।

(स्त्री. वांगियोड़ी)

वांगौ–सं. पु.—१ प्रवाह, गति, चाल।

२ पानी बहने की गति।

३ पानी के बहने से भूमि पर पड़ने वाले चिन्ह।

४ प्रथा, परंपरा।

वांघळौ—देखो 'बांघळौ' (रू. भे.)

वांचणौ, वांचबौ—१ देखो 'बांचणौ, बांचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिण **वांचै** उच्छब न्रप जांणै। आरंभ समर करण घख आंणै। —सू. प्र.

उ०—२ संदेसा मति मोकळउ, प्रीतम तूं आवेस। आंगलड़ी ही गळि गयां, नयण न **वांचण** देस। —ढो. मा.

उ०—३ गीता रौ पाठ होवतौ। आतमा परमातमा एक है री चरचा चालती। रांमायण **वांचीजती**। सगळै पूछण आंवता पण टुणटुणी वजाय' र टरकंत। —वरसगांठ

२ देखो 'वांछणौ, वांछबौ' (रू. भे.)

वांचणहार, हारौ (हारी), वांचणियौ—वि०।

वांचिओड़ौ, वांचियोड़ौ, वांच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांचीजणौ, वांचीजबौ—कर्म वा०।

वांचियोड़ौ—१ देखो 'बांचियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वांछियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वांचियोड़ी)

वांच्छित—देखो 'वांछित' (रू. भे.)

वांछक–वि. [सं.] इच्छा, अभिलाषा या चाह करने वाला।

उ०—विधि बतावै छै सूआ इहै पाठक वकता हुआ। सारस छै स रस **वांछक छै**। —वेलि टी.

वांछणौ, वांछबौ–क्रि. स. [सं. वांछनम्] १ चाहना, इच्छा करना, अभिलाषा करना। (उ. र.)

उ०—१ चित सूं आगम चितवै, आ मजबूत उपाय। 'बंक' जुड़ै नहीं **वांछियौ**, इण कारण है आध। —बां. दा.

उ०—२ मनुस्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवै छै। अर रूंखां की छांह **वांछै छै**। —वेलि टी.

उ०—३ जिह घड़ी नै घणुं **वांछता** था घणा दिन लगै। सु घड़ी आंण मिळी। —वेलि टी.

उ०—४ संध्या कौ समय हुओ छै। क्रस्णजी रति **वांछै छै**। —वेलि टी.

२ जिज्ञासा करना।

३ प्रेम करना।

वांछणहार, हारौ (हारी), वांछणियौ—वि०।

वांछिओड़ौ, वांछियोड़ौ, वांछ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांछीजणौ, वांछीजबौ—कर्म वा०।

बांचणौ, बांचबौ, बांछणौ, बांछबौ, वांचणौ, वांचबौ—रू० भे०।

वांछना–सं. स्त्री. [सं. वांछा] १ चाहना, चाह।

२ इच्छा, अभिलाषा।

३ कामना।

४ जिज्ञासा।

रू. भे.—बांछना, वंछना।

वांछनीय–वि. [सं.] १ जिसकी इच्छा, चाहना या कामना की गई हो।

२ चाहने या इच्छा करने योग्य ।

वांछा-सं. स्त्री. [सं. वाञ्छा] १ इच्छा, चाह ।

उ०—पछै वह मोटी हुई सो या तौ कांम री **वांछा** करै ।
—राजा रा गुर रा बेटां री बात

२ अभिलाषा ।

३ कामना ।

उ०—वर प्राप्ति हुआ वर की **वांछा** करै छै तिहि समय परमेसर रा गुण भणि जिकाई इच्छा उपनी छै । —वेलि टी.

४ जिज्ञासा ।

उ०—उवां कहीया म्हांनुं ही मिळण री **वांछा** हुती आइनै मिळीया । —चौबोली

रू. भे.—वछया, वांछा, विंछया ।

वांछित-वि. [सं.] चाहा हुआ, अभिलषित, इच्छित ।

उ०—१ **वांछित** वर पायां पाछै । आप माहै प्रीति राति दिन इसी उपजै । —वेलि टी.

उ०—२ आयां साध न देवे उत्तर, **वांछित** वस्तु बतावै । व्है जेड़ी कर देवे हाजर, पद ऊंचा जद पावै । —ऊ. का.

रू. भे.—बंचत, बंछित, बांछित, वंचत, वंछत, वंछती, वंछतौ, वंछित, वांच्छित ।

वांछियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चाहा हुआ. २ इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. ३ कामना किया हुआ. ४ जिज्ञासा किया हुआ. ५ प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री. वांछियोड़ी)

वांझ—देखो 'वंध्या' (रू. भे.)

उ०—१ दूहौ टुपटौ दांम, जोडचा सो ही जांणसी । व्यावर-तणौ विरांम, **वांझ** न जांणै वींझरा । —वींझरा अहीर री बात

उ०—२ **वांझां** सूं घर वास कर, कोई पुत्र खेलावै ।
—केसौदास गाडण

वांझगाई, वांझगाय-सं. स्त्री. [सं. वन्ध्या-गौ] वह गाय जो बंध्या हो, जिसके प्रसव न होता हो । (उ. र.)

उ०—सेवै क्रपण सरदार, करै दलाली कोयलां । हे कांई लेवणहार, **वांझगाय** सूं 'वसतिया' । —समेळजी बारहठ

वांझड़ी, वांझणी, वांझि, वांझिणी—देखो 'बंध्या' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—विवेकी जुउ-जुउ वस्तु-स्वभाव, छते जोग जोवन वतीजी **वांझणी** न जणै बाल । मूंछ नहीं महिला मुखेजी, करतल ऊगै न वाल । —वृ. स्त.

वांझीयौ—देखो 'बांझड़ौ' (रू. भे.)

उ०—नारी बिन तूं **वांझीयौ** । —धरम पत्र

वांट—देखो 'वंट' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हरदास कहै—एकै जोधपुर रा कासूं दो **वांट** करां ?
—नैणसी

वांटणौ, वांटबौ—देखो 'बांटणौ, बांटबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—नूर सूर सम वदन निहावै, आपै मात रतन घन आवै । सहर गळी प्रत गळी सुहावै, गुळ **वांटै** त्रिय मंगळ गावै । —रा. रू.

उ०—२ चोर च्यार ही डूंगर में **वांटण** लागा । ततरै देहलगढ़ रौ धणी सकार रमतौ आय नीसरिओ ।
—कल्यांणसिह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ रुपीया पचास वडारण कनियां मंगाय आप रै हाथ निछरावळ कर वडारण नूं सौंप फुरमायौ 'परभात अतीत फकीर गरीब **वांट** दीजौ । —कुंवरसी सांखला री वारता

वांटणहार हारौ (हारी), वांटणियौ—वि० ।

वांटिओड़ौ, वांटियोड़ौ, वांटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वांटीजणौ, वांटीजबौ—कर्म वा० ।

वांटियोड़ौ—देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वांटियोड़ी)

वांटौ—देखो 'बांटौ' (रू. भे.)

उ०—१ कटक्कां मिळै मेखळां मेर कांनै, खड़ा ऊमरा खांन दीवांण खांनै । विढ़ेवा कियौ साहिजादौ विचारं, अणि फौज **वांटौ** हुऔ अस्वारं, । —गु. रू. बं.

उ०—२ करदंत ताकइं, त्रुटि कार अरिरिकार हाकइं, **वांटै** चडचा योध ताकइं उसरइं, पइसरइ, तीहं वीर तणा नाभिप्रमांण बहुल कूंच । —व. स.

उ०—३ सुंजैतै री वसी वगड़ी वीरमदेव रे **वांटै** में आंन ।
—नैणसी

वांटयौड़ौ—देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वांटयौड़ी)

वांठ—१..........

उ०—द्रस्टि जांणइ क्षीर, मत्स्य जांणइ नीर, **वांट** जांणइ घोडा, स्त्री जांणइ मुह मुचकोडा, गारुड़ी जांणइ साप, मा जांणइ बाप, वणिग जांणइ माप, मन जांणइ पाप, मुख जांणइ मीठा, द्रस्टि जांणइ दीठा । —व. स.

२ देखो 'वंट' (रू. भे.)

वांठि, वांठी-सं. स्त्री.—अहंकार, गर्व ।

उ०—गुरध्रम खोया गांठिस् तन सूं रखै सांठि । हरिया ऐसे पतित की, मिटै न मन की **वांठि** । —अनुभव वांणी

रू. भे.—बांठि ।

वांड-सं. पु.—खंड, टुकड़ा।

उ०—नाराजीग्रांरी भांट पड़ि नै रही छै। वगतरां ऊपरां तरवारीग्रां रा **वांड** त्रूटि ने रहीग्रा छै। —रा. सा. सं.

वांडरणौ, वांडबौ-क्रि. स.—देखो 'बाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—उगै पग लगां जांणौ भुजंग डांडियौ, सुरंग रंग चडियौ स्रोण गारी। वार बरछी कही खळां विष **वांडियौ**, बीनड़ी काडियौ हाथ बारी। —महारांणा भीमसिंह रे भाला री गीत

वांडणहार, हारौ (हारी), वांडणियौ—वि०।

वांडिग्रोड़ौ, वांडियोड़ौ, वांड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वांडीजणौ, वांडीजबौ—कर्म वा०।

वांडियोड़ौ—देखो 'बाढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वांडियोड़ी)

वांडौ, वांढौ-वि. [सं. वंड] १ अविवाहित।

उ०—कोई माई रौ लाल हुंकारौ भरतौ तौ या तौ पेलां पाघड़ी मांगतौ अथवा लुगाई टाबरां वाळा नै तौ राखण नै तैयार हो पण म्हारै जिसा **वांडा** कुतकां नैं नहीं। —रातवासौ

२ मूर्ख, बेवकूफ।

सं. पु —१ अविवाहित व्यक्ति।

२ परिवारहीन व्यक्ति।

३ अपने परिवार से अलग दूर कहीं अकेला रहने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बंडौ, वांढौ।

मह., —बंड।

वांण-सं. स्त्री. [सं. वांणि] १ बनावट, रचना।

२ मूर्ति।

सं. पु. [सं. वाक्] ३ पडित, कवि।

उ०—वांण सराहै **वांण**, खाग सराहै समर खळ। मौज उभळ महरांण, सारा है रघुवर सुकव। —र. ज. प्र.

४ सिंह, शेर। (ना. डिं. को.)

[सं. यान] ५ गाड़ी।

६ वायुयान, विमान।

७ गाय-भैंस आदि मादा पशुओं का ऋतुमति होकर गर्भधारण करने योग्य होने की क्रिया।

क्रि. प्र.—आणौ

८ बुनावट में कांम आने वाली रस्सी, जेवरी।

उ०—पंचरंग दीया ढोलिया, पुतळी पागो जांण। सेभ सुंहाली अति भली, रेसम वणीयौ **वांण**। —ढो. मा.

९ एक प्रकार का वात रोग विशेष।

क्रि. प्र.—वहणौ।

१० देखो 'वांणी' (रू. भे.)

उ०—१ नांम है रांम कौ, ओक आरांम कौ। साच राघौ कथा, **वांण** दूजी व्रथा। —र. ज. प्र.

उ०—२ अनु आतुर चढियौ 'अजन' रिम सुणि जातां राह। **वांण** नगारां ऊधरी, सारां धरी सनाह। —रा. रू.

उ०—३ जग लोक **वांण** सीखै जवन, पढै व्रहम मुख पारसी। हित देव सेव आधा हुआ, काई लग्गां आरसी। —रा. रू.

उ०—४ दिलीपति ढीलौ हुवौ, पहुंचै कोई न पांण। अचरिज आसंगी न सकै, बोलै एहवी **वांण**। —प. च. चौ.

११ देखो 'बांण' (रू. भे.)

उ०—१ वडा पुरस री **वांण**, अदना रौ आदर करै। ओछां रा ऐलांण, चुभता बोलै चकरिया। —मोहन लाल साह

उ०—२ बांण्या थारी **वांण**, नर कोई जांणै नहीं। पांणी पीवै छांण, लोही अणछांण्यौ पिवै। —अग्यात

उ०—३ प्यारा पाखर पेम की, कांइ ज पहिरि अंगि। वयण खटक्कइ **वांण** ज्यूं, कोइ न लागइ अंगि। —ढो. मा.

वांणक, वाणक्क-सं. स्त्री.—१ कांती, शोभा, दीप्ति, आभा।

उ०—१ **वांणक** दीठां ही वण आवै। —अग्यात

उ०—२ औ मंद हास किण नूं न मोहै है, इण बत्तीसी रौ इसौ **वांणक** है। इण आकां गैई मोती मांणक है, हसतां फूल झड़ै है।

२ सुंदरता, रूप, सौंदर्य।

उ०—जिहुं **वांणक्क** कटाख, चपळ नयणी चंद्रांणणि। के कुरंग लोचना, कांम अक्खी केकांणी। —गु. रू. बं.

३ सूरत, शक्ल, आकृति, स्वरूप, बनावट।

उ०—१ ओपै हाट औछांड़ियां, पाटंबर अणपार। **वांणक** जांणक वद्दळां, इंद्र धनुस उणहार। —रा. रू.

उ०—२ तारागढ़ छायौ रहै, सोर तणै नीसार। आबू जांणक ओपियौ, **वांणक** बद्दळ धार। —रा. रू.

४ सजावट, ठाट-बाट।

५ रंग-ढंग।

६ ढंग, प्रकार।

उ०—तदि जोड़ रांम लछमणतणी, विध **वांणक** विसतारिया। बह कळस बांदि घर रजत बह, पह मेड़तै पधारिया। —सू. प्र.

७ एक वर्ण-वृत्त जिसमें सर्व प्रथम नगण फिर भगण और अंत में भगण होता है।

उ०—आठ आठ सौ वजि उभै, सहस रूप संभळावि। नगण भगण स जगण निरखि, **वांणक** छद वतावि। —ल. पिं.

८ देखो 'वणगत' (रू. भे.)

उ०—राव 'दुरगौ' जोरावर थकौ रहै। रांणा सूं मिळै नहीं। रांणा नै राव दुरगै आपस में **वांणक** को नहीं। —नैणसी

रू. भे.—बांणक, बांणिक, बांनक, वांणिक, वांनक।

वांणण, वांणणी—देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

उ०—थळ कतार लांघण थटै, ले जिहाज जळ अंत। भोळी ढाळी **वांणणी**, बेटा धूत जणंत। —बां. दा.

वांणप्रस्थ—देखो 'वांनप्रस्थ' (रू. भे.)

वांणरस—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—संजुत वसत **वांणरस** सोखां। नागलता मघई पत्र नोखां। —सू. प्र.

वांणवहण—सं. पु.—१ नाव, जहाज। (अ. मा.)

२ देवी प्रकोप होने की अवस्था या भाव।

वांणा—देखो 'वांणी' (रू. भे.)

उ०—सारद थे सु-प्रसन हुवौ, दे अक्खर **वांणा**। —द. दा.

वांणारसी—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—पछै गांम रै धणी राजा रा गुर रा बेटा नै पूछ्यौ थे **वांणारसी** गया था सो कां ही भण्या।
—राजा रा गुर रा बेटा री बात

वांणाळ—१ देखो 'बांण' (मह., रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'बांणावळी' (मह., रू. भे.)

वांणावळी—देखो 'बांणावळी' (रू. भे.)

वांणावळौ—सं. पु.—रथ। (डिं. नां. मा.)

वांणास—देखो 'बांणास' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

वांणि—देखो 'वांणी' (रू. भे.)

उ०—१ डींभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही **वांणि**। ढोला एही मारुई, जेहा हंभ निवांणि। —ढो. मा.

उ०—२ **वांणि** अनादह फुड वयण, सुभ भाखा सरजित्र। गाहा करई वर रसाउला, दूहा छंद कवित्त। —गु. रू. बं.

वांणिक—देखो 'वांणक' (रू. भे.)

उ०—१ तपत बांण कीधौ हर तांणिक। वांमी-बंध एरसै **वांणिक**। —सू. प्र.

उ०—२ आभा रूप जोम ऊफांणिक। वणियौ अनंग दूसरै **वांणिक** —सू. प्र.

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

वांणिज—१ देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

उ०—**वांणिज** विण साह, सहर हाटां विण, जळ विण गांव वसै जेहड़ौ। विण गायां त्रिखम, सभा पंडित विण, विण महमा तीरथ तेहड़ौ। —आसौ बारहठ

२ देखो 'वणिक'

वांणिजू—१ देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—लाख बिच्यारि **वांणिजू** चालइ, बार लाख उलगांणा। करकटीया हबसी भाथाइत, फरसीधर सपरांणा। —कां. दे. प्र.

वांणिज्य—सं. पु. [सं. वाणिज्य] वस्तुओं का क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यवसाय।

उ०—**वांणिज्य** वइस फबि जेण वेर। कोटेक जांण वप धर कुमेर —सू. प्र.

रू. भे.—बणज, बणिज, बनज, बिनज, बांणिज, वांणिज्य, बनिज, बिणज, वणिज्ज, वांणिज, वांणिजू, वांनिज, विणज, विणज।

वांणिनी—सं. स्त्री. [सं. वाणिनी] १ चालाक स्त्री, धुर्त्त औरत।

२ नर्त्तकी, अभिनेत्री।

३ दूती।

४ स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

५ शराब के नशे में चूर स्त्री, मदोन्मत्त स्त्री।

६ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होते हैं तथा इनका क्रम नगण, जगण, भगण, जगण तथा रगण और एक गुरु होता है।

वांणिया-कूटावणियौ—सं. पु.—लुब्धक नामक तारा।

वांणियां-रौ-देवळ—सं. पु.—वर्षा ऋतु में होने वाला एक उद्भिज पदार्थ जिसे "लांकी-मूळी" भी कहते हैं।

वांणियावटी, वांणियावाटी—सं. स्त्री. [सं. वणिक-वृत्ति वणिक-पाटी]

१ एक प्रकार की गणित विद्या जो बनियों के व्यापार व लेन-देन में काम आती है।

२ एक प्रकार की भाषा एवं लिपि जो बनियों की बहियों में लिखी जाती है।

३ बनिये का कर्म।

वि.—१ बनिये की, बनिये सम्बन्धी।

२ महाजनी।

रू. भे.—बांणियावटी, बांणियावाटी।

वांणियौ—देखो 'वणिक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गाहै सोदै ग्राहकां, ढाहै जे गज ढल्ल। लाहो लोटै वांणियौ, आ है सांची गल्ल। —बां. दा.

वां'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

उ०—धरती रौ जित्ती बार काळजौ चीरीज **वां'णियां** लागै उत्ती वत्ती नैपै व्है, साख फळै। —फुलवाड़ी

वांणी—सं. स्त्री. [सं. वाणी] १ सरस्वती, शारदा। (अ. मा.)

उ०—भेत गुणा गाय भेव, आभड़े न अहंमेव, ईंदसा सुरा अजेव, साभ तास सेव। कीरती वांणी कहैव, दिलां धरै संभदेव; वाह जेण चेत वेव, देव देव देव। —र. ज. प्र.

२ मुंह से निकलने वाला सार्थक शब्द, वचन।

उ०—१ सुणं नृपति हित बात सुहांणी। विधिवत कहण लागौ सिध वांणी। सू. प्र.

उ०—२ मन री बात नै वांणी मिळतां ही राजाजी नै चेतौ व्हियौ —फुलवाड़ी

३ वाक शक्ति।

उ०—अथाह सुख अर दुख दोनूं ई निपट गूंगा व्हैगा। गळा री वांणी वांरौ भार झेल नीं सकै। च्यारूं जणा खासी ताळ तांई बोला-बोला एक दूसरा रौ मूंडौ जोवता रह्या।

—फुलवाड़ी

४ स्वर, ध्वनि, आवाज, नाद।

उ०—परम हंस आणंद में प्रांणी। ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वांणी। —सू. प्र.

५ योग के अनुसार च्यार प्रकार की वांणियों में कोई एक

उ०—चार अवस्था सप्त भूमिका, पंच कोस विगतांना। चार सरीर भाव पुनि च्यारूं, वांणी चार सयांना।

—स्रीसुखरांम जी महाराज

वि. वि—योग के अनुसार वाणी के च्यार भेद माने गये हैं:—वैखरी, मध्यमा, पश्यंती, अत्यंता।

६ भाषा, शब्द, वाक्य।

उ०—चांद सूरज गळै मिळ्या। धरती रा कण कण में हरख समायग्यौ। पांन पांन में रस सांचरग्यौ। उण मिळण अर आणंद री कोई वांणी नीं ही। —फुलवाड़ी

७ जिव्हा, जीभ।

८ बोलने की क्रिया या भाव।

उ०—१ अंतस रा मून मिळाप पछै वांणी री सुध-बुध बावड़ी। होठ खुलता सा निगै आया। —फुलवाड़ी

९ साधु-संतों द्वारा कथित या रचित, उपदेशात्मक पदों, दोहों या सोरठों का संग्रहित ग्रंथ।

उ०—पाप चीकणां भव पैलै में, खूब करैलां ख्वारियां। वांणी लिखि गया साध विचारौ, मुकति हुवै मन मारियां। —ऊ. का.

१०—प्रायः 'तंदूरा' पर गाया जाने वाला निर्गुण भक्ति का पद।

११ साहित्यिक निबंध।

१२ एक छंद।

१३ केवट, नाविक। (अ. मा.)

१४ प्रशंसा।

१५ ध्रुपद की चार वाणियों में से कोई एक या सब:—गौरहारी, नौहारी, डागरी, और खंडारी (संगीत)

रू. भे.—बांण, बांणि, बांणी, बांनी, वांण, वांणा, वांणि।

वांणीमंड—सं. पु. [सं. वाणीमण्ड] दांत। (अ. मा.)

वांणीरणजोधार—सं. पु.—पंडित, विद्वान। (वं. भा.)

वांणोतरौ—सं. पु.—वनिक समाज।

उ०—सो साहुकार री बहू मूंई। पछै कितरैक दिनें साहुकार नै सहर रा वांणोतरां कही। साहजी विवाह करौ। तद साह वांणोतरा नै कहा। अबै हूं वरस पचास रौ हुयौ, हूँ विवाह करौं नहीं।

—साहूकार री वात

वांणौ—सं. पु. [सं. वाहन] १ पानी लाने के लिये गाड़ी पर रखे हुए जल पात्रों का समूह।

२ उक्त प्रकार से पानी लाने की क्रिया या ढंग।

३ रू. भे.—वांहणौ।

वांण्यौ—देखो 'वणिक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वांण्यौ मित्र न वेस्या सती, कागौ हंस न बुगलौ जती।

—अज्ञात

वांति—सं. स्त्री. [सं. वांतिः] १ वमन, कै।

२ उगाल।

वांतौ—सं. पु.—अंतर, फर्क।

वांथ—देखो 'बाथ' (रू. भे.)

उ०—तद कुंवरसी दीठौ माजी छेहड़े आय गया। तद ठाढी वांथ घात कहण लागौ, जी माजी जीव मनै भी प्यारौ छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

वांद—१ देखो 'बांदौ' (मह., रू. भे.)

उ०—ऊंचा नीचां वाक्य बोलइ, प्रही प्राहुणौ टलइ, छोरु चाकरु भिडइ, वांद गुलांम मुहिं चडइ, थकी सीकउं त्रोडइ, बोलावी माथुं फोडाडइ, कुंटब सदा दुखि पाडइ। —व. स.

२ देखो 'बांद' (रू. भे.)

वांदणौ, वांदबौ—देखो 'बांदणौ, बांदबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ आयौ चाहंता अंगद, मह सेन मझारै। प्रभु पद वांदै जोड़ पांण, अग्र मुकट अधारै। —सू. प्र.

उ०—२ अंब डाळ कुंभ आंणि, विमळ वर तरणि वंदावै। वांदि कळस तिण वार, भूप द्रब रूप भरावै। —सू. प्र.

उ०—३ वांदण आव्या स्रेणिक राय, नगर लोक पिण वांदण जाय। आपै प्रभु गणधर उपदेस, सजल जलद अनुहार विसेस।

—स्रीपाल रास

उ०—४ बळ दुधमार बयण बौणासुर, आयै दिन न कीध अंवार। वडा वडा गा तोरण वांदै, नवल बना अहंकार निवार।
—ओपौ आढौ

उ०—५ फरण चतुरद्दसी तणइ दिनि चतुपथि स्नांन करइ, सिद्धायतनि ध्यांन धरइ, अस्वत्थ प्रभ्रति वनस्पति वांदइ, सकुनग्यांनीया आनंदइ। —व. स.

वांदणहार, हारौ (हारी), वांदणियौ—वि०।
वांदिओड़ौ, वांदियोड़ौ, वादचोड़ौ—भू० का० कृ०।
वांदीजणौ, वांदीजबौ—कर्म वा०।

वांदर—देखो 'वांनर' (रू. भे.)

वांदरपगौ-सं. पु.—वह बैल जिसके पिछले पैर के टखने भूमि को स्पर्श करते हों।
(मि.—मोदीपगौ)

वांदरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

वांदरी-सं. स्त्री. [देशज] १ मोट की रस्सी के साथ जुड़ा हुआ एक लकड़ी का उपकरण जिसमें कील डाल कर बैलों के साथ जोड़ा जाता है।
२ देखो 'वांनर' (स्त्री.)

वांदरौ—देखो 'वांनर' (अल्पा., रू. भे.)

वांदियोड़ौ—देखो 'बांदियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. वांदियोड़ी)

वांदी—देखो 'बांदी' (रू. भे.)
उ०—नै जीमण रौ वखत हुवौ। तरां ठाकुरां वांदी सागै वीरमदे जी री मांजी सीसोदणी नूं कहायौ जीमण सारू। —द. दा.

वांदौळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वांदोळौ—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वांधणौ, वांधबौ—१ देखो 'बांधणौ, बांधबौ' (रू. भे.)
उ०—ना हूं सींची सज्जणे, ना बूठउ अग्गाळि। मो ताळि ढोलउ बहि गयउ, करहउ वांध्यउ डाळि। —ढो. मा.

वांधणहार, हारौ (हारी), वांधणियौ—वि०।
वांधिओड़ौ, वांधियोड़ौ, वांध्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वांधीजणौ, वांधीजबौ—कर्म वा०।

वांधियोड़ौ—१ देखो 'बांधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वांधियोड़ी)

वांन-सं. पु.—१ यश, कीर्ति, शोभा।
उ०—१ कटां वेक्ष भाड़ भाड़ा पहाड़ सैंलोट कीधा। वंस रांण मेवाड़ा अहाड़ा चाढै वांन। —राजा उम्मेदसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—वाधारण हिंदुसथांन वांन। 'अभमाल' जोड़ नह भूप आंन।
—सू. प्र.

उ०—३ ऊभै करग जग ऊपरा, सखरा खरा सहज्ज। वांन वधारण वीरवर, सूर सधीर सकज्ज। —ल. पि.

२ हौसला, साहस, जोश।
उ०-२ वांन वधारे कमधजां, आधारे असमांन। 'गजबंधी' नवसाहसै, भागा बारह खांन। —गु. रू. बं.

३ उमंग, उत्साह।
उ०—वाहै खग बींद जिहीं चढ़ि वांन। धरा नवकोट सिरै परधांन।
—सू. प्र.

४ प्रतिष्ठा, इज्जत,।
उ०—खित पुड़ि साहिब खांन हणमंत ज्यूं 'जैता' हूरौ, उणि वेळा लागौ अरसि, वंस वधारण वांन। —वचनिका

५ तेज, कान्ति, दीप्ति।
उ०—अळगी वे (व्है) जोहे अली, जोवण दीजौ जांन। मांगीगर म्यारांम कौ, वेखण दीजौ वांन। —मयाराम दरजी री बात

६ वचन।
उ०—बहिनी थई त्रिलोचना, वदै परस्पर वांन। —वि. कु.

७ स्वाद, जायका।
उ०—वळी बीजां आण्या पकवान, जिमतां वाधइ मुख नु वांन, ने कुण जाति, नव नवी भांति, दही वडा गुंदवडा —व. स.

[प्रत्य.] ६ कुछ शब्दों के आगे लगने वाला एक सम्पन्नता सूचक प्रत्यय।
७ देखो 'बांद' (रू. भे.)
रू. भे.—बांन।

वांनइत—देखो 'बांनैत' (रू. भे.)
उ०—पतिसाह सल्ल ऊघाडि प्रोळि, ऊतेड़ि अग्नि आउध इतोळि। वांनइत जेस रांणिग देव। बोलिया वाघ बिहुं बांह बेव।
—रा. ज. सी.

वांनक—देखो 'वांणक' (रू. भे.)

वांनगी—देखो 'बांनगी' (रू. भे.)

वांनणी—देखो 'बांनणी' (रू. भे.)

वांनप्रस्थ-सं. पु. [सं. वानप्रस्थ] आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से एक जो गृहस्थ आश्रम के बाद तथा संन्यास आश्रम से पहले आता है। जीवन की तीसरी अवस्था।
रू. भे.—बांणप्रस्थ, बांनप्रस्त, बांनप्रस्थ, वांणप्रस्थ।

वांनर-सं. पु. [सं. वानर] १ मनुष्य से मिलती-जुलती शक्ल का एक प्रसिद्ध प्रांणी, बंदर, कपि।

उ०—ऊधम किर राळै धर अंदर। वाग असोक लांगड़ै **वांनर**। —सू. प्र.

पर्या.—कपी, कीस, प्लवग, प्लवंगम, बनचर मरकट मांकड़ लंगूर साखामृग, हरि।

२ दोहा नामक छंद का एक भेद विशेष।

वि. वि.—देखो 'मरकट' (७)

३ राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—'नारण' 'केसव' तणौ निभै नर। बन्नर नील जिसौ बळ **वांनर**। —रा. रू.

४ भाटी वंश की एक शाखा।

५ बढ़ई का एक औजार विशेष।

रू. भे.—बंदर, बनर, बन्नर, बांदर, बांनर, वंनर, वंन्नर, वनर, वन्नर, वांदर।

अल्पा.—बंदरियौ, बांदरियौ, बांदरौ, बांनरड़ौ, वांदरौ, वांनरौ।

६ देखो 'बंदर' (रू. भे.)

वांनरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—हे पांन अणावौ ए मारी जच्चा रांणी रै तास रा, हे जठै पूरवि छै **वांनरमाळ** ए। —लो. गी.

वांनरमुख-सं. पु.—नारियळ। (अ. मा.)

वांनरी-वि. [सं. वानर+ई प्रत्य.] १ बंदर की, बंदर सम्बन्धी।

२ बंदर के समान।

उ०—रूखांरा जूट रामचंद री **वांनरी** सैन्या ज्यौं रीछां री जमात सा निजर आवै छै। —रा. सा. सं.

स. स्त्री.—१ केंवाच, कौंछ।

२ देखो 'वांनर' (स्त्री.)

वांनरौ—देखो 'वांनर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दादू डोरी हरि के हाथ है, गळ माहि मेरे। बाजीगर का **वांनरा**, भावै तहां फेरै। —दादूवांणी

वांनवासिका-सं. स्त्री. [सं. वानवासिका] सोलह मात्राओं का एक छन्द विशेष जिसमें नवीं और बारहवीं मात्रा लघु होती हैं।

वांना-सं. स्त्री. [सं.] बटेर, लवा।

वांनायुज—देखो 'वनायुज' (रू. भे.) (डि. नां. मा.)

वांनाबंध, वांनाबंधण, वांनावंधण—देखो 'बांनाबंध' (रू. भे.)

वांनी-सं. स्त्री.—१ भस्म, विभूति, राख।

उ०—१ **वांनि** अंग वळेट, मेखळी भुज पर मेली। ले मांछंदर नांम, साह तन कंथा सेली। —पा. प्र.

उ०—२ दूध पाय मूंडा में वांनी री चिमटी भुरकाती। —फुलवाड़ी

२ कांती, दीप्ति।

उ०—जोम अनंग सौ गुणौ जवांनी। वप व्है कनक सोळिमां **वांनी**। —सू. प्र.

रू. भे.—बांणी।

वांनीर-सं. पु [सं. वानीर] १ बेंत।

मर सबळां आगै निबल, नीर धकै **वांनीर**। वाय धकै त्रण जाय वच, भलौ नमण गुण भीर। —बां. दा.

२ पाकर का पेड़। (सभा.)

वांनै-क्रि. वि.—१ ओर, तरफ।

उ०—हिंदवां छात दोय वात ले हालियौ, बाळग्यौ आंक जुग चिहूं **वांनै**। —दुरसौ आढौ

वांनेत, वांनैत—देखो 'बांनैत' (रू. भे.)

उ०—१ मुख **वांनैत** महीपती, 'करन' अनै चंद्रभांण। कियौ सकोधां सांम कज, यां जोधां आरांण। —रा. रू.

उ०—२ तरै अजब' भड़ तैड़िया, वड रावन **वांनैत**। मार मार मुख मुख मुणै, बांह प्रळंब वरदैत। —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ बेलौ सहि बिरदैत, जेठी गोवरधन जिसा। 'करनाजळ' अणवर कन्है, वडजांनी **वांनैत**। —वचनिका

उ०—४ रिण पाखै झगड़ा बिना दुमनौ रहै लाज इतरी के चित मैं ही नहीं समावै झगड़ा री वेळा पाछा पग दे नहीं जांणै लाज रा लंगर पड़िया है। उण वीर नें **वांनैत** कहणौ। —वी. स. टी.

वांनोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वांनोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

वांनौ—देखो 'बांनौ' (रू. भे.)

उ०—१ **वांनौ** देखै वांदिये, क्या करणी सूं कांम। —अग्यात

उ०—**वांना** ओपै हद्द विहद्द, लाल सपेत स्याह जरद्द। —गु. रू. बं.

उ०—३ वीर सिंगार चढ़ै **वांनां**। पहरै अतर अरोगै पांनां। —सू. प्र.

उ०—४ वणिया गजां तणौ सिर **वांना**। मिळिया तुरळ रजी असमांना। —रा. रू.

उ०—५ सबजे जरदाई लाल सिहाई **वांनै** छायौ ब्रहमंड। फररा बैरक्कां फाबी कटक्कां जांणक फूलै वन-खंडं। —गु. रू. बं.

उ०—६ इंद्र समीवर जांणियै, रिद्धि करी राजा नौ रे। गुनह खमै निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै **वांनौ** रे। —वि. कु.

उ०—७ जिकूं चाहीजै सूं सरब थांनूं दिरावीस, थांहरा घणा **वांना** करीस, अर थे मांगिस्यौ सूं राजा देसी । —सयणी री वात

वांबासणौ, वांबासबौ–क्रि. स.—जोश दिलाना ।

वांबासियोड़ौ–भू. का. कृ.—जोश दिलाया हुआ ।

(स्त्री. वांबासियोड़ी)

वांभ—देखो 'भांब' (रू. भे.)

उ०—वसती री हुवै **वांभ**, वेठ नह काढणी । कांमेती हुकम हुवै घणी । बाकी किण रौ बीह, खुसी से खेलणा, ऐता दे करतार फेर नई बोलणा । —अग्यात

वांमण—१ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—सवळ सेन साथइ वहु थट्ट, याचक मंगण **वांमण भट्ट** । —ढो. मा.

(स्त्री. वांमणी)

२ देखो 'भांभी' (स्त्री.)

वांमणी–सं. स्त्री.—१ मेवाड़ की एक नदी ।

उ०—नदी तीन री विगतः—१ चांबळ, १ वांमणी, १ पगघोई । —नैणसी

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री.)

३ देखो 'भांबी' (पु.)

वांभी—देखो 'भांबी' (रू. भे.)

(स्त्री. वांभण)

वांमंग—देखो 'वांमांग' (रू. भे.)

उ०—१ राठौड़ रचेवा रणांताळ, **वांमंग** डहै बीजळा झाळ । बांधै कंदीळ संधे विवांण, कोसीस भुजै दीना कबांण । —गु. रू बं.

उ०—२ वडफर भुज **वांमंग**, सझै दक्खिण भुज साबळ । जांम विक्ख भरि जमी, बहसि असि चढे अतुळवळ, । —सू. प्र.

वांम–सं. पु. [सं. वामः] १ शिव, महादेव ।

२ एक रुद्र ।

३ काम देव । (अनेक)

४ सूर्य ।

५ कृष्ण का एक पुत्र ।

६ चन्द्रमा के रथ का एक घोड़ा ।

७ जन्तु ।

८ सर्प ।

९ स्तन, कुच ।

१०—चौबीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और एक यगण होता है ।

११ छै मात्राओं का एक मात्रिक छंद ।

[सं. व्यामः] १२ लंबाई का एक नाप जो दोनों भुजाओं को दोनों ओर फैलाने पर एक हाथ की उंगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उंगलियों के सिरे तक की लंबाई का होता है । (उ. र.)

१३ धन, सम्पत्ति ।

सं. स्त्री.—१४ सर्पाकार चितकबरी मछली विशेष ।

१५ पृथ्वी, भूमि । (डिं. नां. मा)

वि. [सं. वाम] १ बांया, दाहिने का विपर्याय ।

उ०—ऊससै घणौ उछाह, चाप वांण धरै चाह । **वांम** हाथ लीध वाह, जीमणौ कसीस जाह । —र. रू.

२ बांई ओर स्थित, वांमभागस्थित ।

उ०—दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै । सकत **वांम** सुरराय, सोम दाहिणै संभारै । —रा. रू.

३ उल्टा, औंधा ।

४ विरुद्ध या विपरीत स्वभाव का ।

५ कुटिल स्वभाव का । (अ. मा., अनेक.)

६ दुष्ट, नीच ।

७ मनोहर, सुन्दर । (अ मा., अनेक.)

रू. भे.—बांम ।

८ देखो 'वांमा' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ पास सहेली पीव रै, वण यूं ऊभी **वांम** । निसरे चावक नेह रा, लोपै लाज लगांम । —अग्यात

उ०—२ सुंदर सोभत घणस्यांम, तड़िता पट-पीत छिब तांम । **वांमै** अंग सीता वांम, रूप अनंग कौटिग नांम । —र. ज. प्र.

उ०—३ भणौ आप रौ देस री, और **वांम** रौ नांम । आंमद कुण से देस ते, इत आये की कांम । —पंच दंडी री वारता

वांमअरधपादासन–सं. पु. [सं. वामार्धपादासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन विशेष ।

वि. वि.—इसमें बांये पांव की पिंडली दबाकर उसी पांव को दाहिने पांव के घुटने पर रख दिया जाता है, तथा दाहिने पांव की एड़ी दाहिने भाग की जंघा के निम्न भाग के लगाकर बैठा जाता है । इसका विपरीत दक्षिणार्धपादासन होता है ।

वांमजांन्वासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि. वि.—यह दक्षिणजान्वासन से विपरीत होता है ।

वांमण—१ देखो 'वांमन' (रू. भे) (ह. नां. मा.)

उ०—१ असनिकुमार अगनि वन आखौ, देवनाथ महि **वांमण** दाखौ । समंद प्रजापति आदि सुरेसर, कमंधां धणी तणी रक्षा कर । —रा. रू.

उ०—२ सखी अमीणौ साहिबौ, सूर धीर समरत्थ । जुध में **वांमण** डंड जिम हेलौ बाधै हत्थ । —बां. दा.

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—**वांमण** चरण प्रताप विधि, हिम पित गौरी विहून ।
—रांमरासौ

(स्त्री. वांमणी)

वांमणदेव—देखो 'वांमन'

वांमणौ–वि. [सं. वाम] (स्त्री. वांमणी) १ विरुद्ध, प्रतिकूल ।

उ०—सहु को देखो **वांमणौ**, नृप कन्या स्रीपाल । कुमरी वर वरवा भणी, कंठ ठवी वरमाळ । —श्रीपाळ

२ तिरछा, टेढा ।

वांमदक्षिणपादासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें बांये पांव को लंबा करके दाहिने पांव पर खड़ा रहना पड़ता हैं ।

वांमदक्षिणस्वासगमनासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि. वि.—इसमें दाहिने पैर के घुटने को दाहिने हाथ की बगल में रखकर शरीर का बोझा उसी पर दिया जाता है, तथा बांये पैर को घुटने से मोड़कर उसकी ऐड़ी उसी तरफ की जंघा के निम्न भाग को लगाकर गुदा ऊंची करके बैठना होता है ।

वांमदेव–सं. पु. [स. वाम+देव] शिव, महादेव । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बांमदेव ।

वांम देवी–सं. स्त्री. [सं. वाम-देवी] १ दुर्गा ।

२ सावित्री ।

वांमन–सं. पु. [सं. वामन] १ ईश्वर ।

२ विष्णु भगवांन के पांचवे अवतार का नाम, जो बलि राजा को छलने के लिये लिया था । (अ. मा.)

उ०—प्रीतांबर सुं प्रीति पहिलकी, ते तां सुद्दई जांणई । मछ कोरंम वाराह नारसिंध, **वांमन** फरस वखांणई । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ मछ वाराह धरणीधर, नारसिंह **वांमन** करुणा कर ।
—गजउद्धार

३ बौना या ठिंगना आदमी ।

४ विष्णु ।

५ शिव ।

६ दक्षिणी दिग्गज का नाम ।

७ अठारह पुराणों में से एक ।

८ काशिका वृत्ति के रचयिता का नाम ।

९ अंकोट वृक्ष का नाम ।

वि.—१ छोटे डील का, ठिंगना, बौना, नाटा, खर्व ।

२ नम्र ।

३ नीच, कमीना, शठ ।

रू. भे.—बांमण, बांमन, बांवन, बावन्न, वांमण ।

अल्पा.—बावनियौ, बावनौ, बावन्यू ।

(स्त्री· वांमनी)

वांमनजयंती, वांमनद्वादसी–सं. स्त्री.—भाद्रपद मास के शुक्ल-पक्ष की द्वादसी ।

वि. वि.—यह वामन भगवान का जन्म दिन माना जाता है । इस दिन व्रत रखा जाता है व वामन भगवान की पूजा की जाती है ।

वांमपदअपानगमनासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक।

वि. वि.—यह दक्षिणपादअपानगमनासन से विपरीत होता है।

वांमभुजासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि. वि.—इसमें बांये हाथ की टेहुनी मोड़ कर भूमि पर रख दी जाती है तथा उस हाथ की हथेली को गाल पर लगा कर शरीर का बोझ डाल कर बैठा जाता है तथा पीछे दोनों पांवों को संकुचित करके बांये पांव पर दायां पांव रखकर दाहिना हाथ उस पर रख दिया जाता है ।

वांममारग–सं. पु. [सं. वाममार्ग] वेद विहित दक्षिण मार्ग के विरुद्ध एक तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस, व्यभिचार आदि निषिद्ध तत्वों का विधान रहता है ।

रू. भे.—बांममग ।

वांमराड़–वि.—देखो 'बांबराड़' (रू. भे.)

वांमलोचना–सं. स्त्री. [सं. वाम+लोचन] १ सुंदर-स्त्री ।

२ स्त्री, नारी । (अ. मा., ह. नां. मा.)

वांमवक्रासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जो दक्षिणवक्रासन के विपरीत होता है ।

वांमसाखासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जो दक्षिणसाखासन के विपरीत होता है ।

वांमसिद्धासन–सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें बांये पैर की पुड़ी सिवनी में लगाकर दांये पैर के सम्मुख लंबा करके बैठना होता है ।

वांमसर, वांमसुर–सं. पु. [सं. वाम-सुर] महादेव, शिव । (नां. मा.)

वांमहथौ–सं. पु.—अयाल में अशुभ भौंरी वाला घोड़ा ।

वांमहस्तचतुस्कोणासन–सं. पु. [सं. वामहस्तचतुष्कोणासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर को घुटने से मोड़कर बैठना होता है तथा पीछे बांये पांव के पंजे को बांये हाथ की ठेउनी में लगाना तथा दाहिने हाथ की उंगलियों पर परस्पर भिड़ाना होता ।

वांमहस्तभयंकरासन-सं. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें बांये हाथ को ऊंचा रखकर पलथी मार कर बैठना होता है।

वांमांग-वि. [सं. वाम-अंग] १ बांयें अंग का, बांयें अंग सम्बन्धी।

२ बांयें अंग की ओर का।

३ देखो 'वांमांगी' (रू. भे.)

रू. भे.—बांमांग, वांमंग।

वांमांगिनी, वांमागी-सं. स्त्री. [सं. वामा+अंगी] पत्नी, स्त्री।

रू. भे.—वांमांग।

वांमा-सं. स्त्री. [सं. वामा] १ धर्मपत्नी, स्त्री।

उ०—देवी कांम ही लोचना हांम कांमा, देवी वासनी मेर माहेस **वांमा**।

—देवि

२ सरस्वती, शारदा।

३ लक्ष्मी।

४ रमणी, युवती।

उ०—फूटै चीर साबळां नीसांण वार पार फूटै, माथा सत्रां तूटै जांणै हारां मोती लाल। छकै-पंजै मेछां छळै **वांमां** हुवै अग्रांमां छूटै, संग्रांमां प्रजंकां लूटै बीजौ रायासाल।

—रावदेवीसिंह सेखावत रौ गीत

५ सुन्दरी, स्त्री।

६ पृथ्वी। (नां. मा.)

८ दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

रू. भे.—बांमा।

वांमाचार-सं. पु. [सं. वामाचार] तांत्रिक मत का एक भेद, जिसमें पंच मकार—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की आराधना की जाती है।

वांमादेवी-सं. स्त्री. [सं. वामदेवी] पारसनाथ जी की माता का नाम।

उ०—अस्वसेन न्रप कुल तिलौ रे, **वांमादेवी** को नंद। —वि. कु.

वांमासर-सं. पु.—पाडल नामक वृक्ष। (अ. मा.)

वांमी-क्रि. वि. [सं. वाम] बांयी ओर, बांई तरफ।

उ०—महोदर वजर मुसटंदु दाहैं मसत, दुरीमुख धूंमनर धूंम **वांमी** दसत।

—र. रू.

सं. स्त्री. [सं. वामी] १ घोड़ी।

२ गधी।

३ हस्तिनी।

४ गीदड़ी।

वि.—५ वाम मार्गी।

रू. भे.—बांमी।

वांमीबंद, वांमीबंध-सं. पु.—१ राठौड़ों का विशेषण सूचक शब्द।

२ राठौड़ राजपूत।

उ०—तपत बांण कीधौ हर तांणिक। **वांमीबंध** एरसै वांणिक।

—सू. प्र.

वि. वि.—इनके साफे या पगड़ी का बंध बांई ओर होता है।

३ गौड़ राजपूत।

उ०—बापस **वांमीबंध**, कंध अवकंध कहांणौ, खांन जिहां भंजियौ, पछ घर बतख पछांणौ।

—विनवरासौ

रू. भे.—बंदवांमी, बंधवांमी, बांमीबंद, बांमीबंध।

वांमै-क्रि. वि. [सं. वाम] बांई ओर।

उ०—'दुरग' खड़ै दक्खिण दिसा, अकबर सूं हित आख। कर घर गुज्जर जीमणौ, छप्पन **वांमै** राख।

—रा. रू.

वांमौ-वि. [सं. वाम] (स्त्री. वांमी) १ दाहिने का विपर्याय, बांया।

उ०—सु लोहार कौ जु **वांमौ** हाथ। क्रस्णजी रौ डील हुऔ। रुखमइये की तरफ की देखै छै तब तपि आवै। रुखमणीजी की तरफ देख्यै सीतळ होय आवै।

—वेलि टी.

उ०—२ पूठी **वांमै** दाहिणौ, आगळि अग्गै-वांण। राजा "गाजी साह" नूं, राखंदौ रहमांण।

—गु. रू. बं.

२ प्रतिकूल, उल्टा, विरुद्ध।

उ०—'वैणौ' वहै जगत सूं **वांमौ**, नाहर अमर करण **जग** नांमौ। सेरौ घरां जावतौ सोयौ, करणी मौज करारौ कांमौ।

—वैणीदास सांचोरा रौ गीत

३ दुष्ट, शठ, नीच।

रू. भे.—बांमौ।

वांयली-वि. स्त्री. १ पिछली, पीछे की।

२ देखो 'वसूलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वांयलौ-वि.—(स्त्री. बांयली) पिछला, पीछे का, शेष।

२ देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

वांये—देखो 'वांसै' (रू. भे.)

वांरुबौ-सं. पु—वात रोग की एक प्राचीन चिकित्सा।

वांस-वि.—१ वंश का, वंश सम्बन्धी।

२ देखो 'वंस' (रू. भे.) (उ. र.)

३ देखो 'वांस' (रू. भे.)

उ०—१ चिगतां उखेल पखरे चरित, रक्खै मेळ अमेळ रुख। वध वेध बळै खळ **वांस** ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख।

रा. रू.

उ०—३ वेण वांस वांसळी वजावण। धिनी मोहन राधिका धव।
—ह. नां. मा.

वांसइ–अव्य.—१ पीछे।

उ०—१ के मेहल्या पूगळ दिसइ, किहीं भळाया भार। साल्ह कुंवर करहइ चढचउ, वांसइ चाढि नार। —ढो. मा.

उ०—२ अस तरे सलीता अस्सराळ। कांमाळां पूठी के कंठाळ। ऊभारि तडंगी पूरि अंभ वांसइ सहारि वूहा विखंभ। —रा. ज. सी.

उ०—३ वादल कहै सहू भलौ, हुइ आवीसीइ तुम नांम रे भाई। करज्यौ वांसइ कुमरजी, सबळौ ऊपर सांमि रे भाई।
—प. चं. चौ.

२ निकट, समीप, पास।

उ०—सूवा एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुज्झ। प्रीतम वांसइ जाइ नंइ, मुई सुणावै मुज्झ। —ढो. मा.

वांसरी—१ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

२ देखो 'बांसरी' (रू. भे.)

वांसली–वि. स्त्री. १ पीछे की, पिछली।

उ०—१ रात पोहर १ वांसली थी, सु सासरिया हालण दै नहीं।
—नैणसी

उ०—तरै इण वांसली वात सोह मांडनै कहची। —नैणसी

रू. भे.—वांहली।

२ देखो वंसी' (रू. भे.)

उ०—१ क्षणु भुखि वाइ वांसली, क्षणु करि वेणा ताळ। सीसि मुगट पय घूघरी, गळि मोत्ताहळ माळ। —मा. कां. प्र.

उ०—२ वीणा ताल ग्रदग बाज रहिग्रा छै। वांसली वाजि रही छै। ढोलकां वाजि रही छै। —रा. सा. सं.

३ देखो 'बांसरी' (रू. भे.)

वांसळौ, वांसलौ–वि. [सं. वंश+रा. प्र. लौ] (स्त्री. वांसली) १ वंशज सतान, वंशके।

उ०—१ तारां पातसाजी इण नूं नरवर पटै दीनीं। सू नरवर आसकरण रा वांसला राज करै है। —द. दा.

उ०—२ सोम केहर रौ, देवड़ी लाछां रै पेट रौ। इण रै को दिन विकूंपुर हुतौ। तिण सोम रै वांसला सोम-भाटी छै। —नैणसी

वि.—२ पीछे का, पिछला।

उ०—१ गढ वांसलौ भोमियां लीयौ रांणी। आंबावरी जात करनैं गांव नांगदहैं बांभणा रै आय डेरौ कियौ। —नैणसी

उ०—२ तिको जखड़ौ वांसलै आसण भीलां सांमो बैठो।
—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

३ शेष, अविशष्ट।

उ०—राव दूदै सूं लड़ाई कीवी। सु राव दूदौ कांम आयौ। अर आकूंतखां पण कांम आयौ, घड़ी ५ तथा ६ दिन वांसलै थकै।
—नैणसी

रू. भे.—बांसलौ।

वांसा–सं. स्त्री. [देशज] १ घोड़े की जीन।

२ देखो 'वासै' (रू. भे.)

उ०—१ कासम परखै जोस कमंधां, एक धकै हुयगी ऊबंधां। भाजै आप गयौ मझ भीतां, वांसा लोक लखै सुख वीतां। —रा. रू.

उ०—२ वांसा सूं ऊदैजी तरवार काढ़ अर वाही सु बिघड़ हूआ।
—नैणसी

वांसावळी—१ देखो 'वासावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'वंसावळी' (रू. भे.)

३ देखो 'बांसवाळी' (रू. भे.)

वांसियौ–सं. पु.—१ बांस का बना अनाज बोने का एक उपकरण।
(शेखावाटी)

वि. वि.—देखो 'नाई'१

२ एक अर्द्ध चन्द्राकार गोल घड़ा हुआ पत्थर।

रू. भे.—बांसियौ।

वांसौ–क्रि. वि.—पीछे।

उ०—सो प्रोहित चाल जांगळू आयौ। माळी रै घर डेरौ लियौ। रात रह्यौ। परभात खबर लीवी। सो कुंवर तो सिकार चढ गयौ। तद प्रोहित पिण वांसौ चढ गयौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

वांसै–क्रि. वि.—१ पीछे से, पीछे।

उ०—१ केहर मत बाळक कहौ, देखौ, जात सुभाव। वांसै देखै बाहरां, परत न छंडै पांव। —बां. दा.

उ० २ करहौ कंथ कुबेरियां, सुगणी मारु संग। वांसै उमर सुमरौ, ताता खड़ै तुरंग। —ढो. मा.

उ०—हुरम कबीला रिद्ध तर, साथै मीर प्रचंड। इण वांसै कर-चलियौ, आसा खंड विखंड। —रा. रू.

२ पश्चात, बाद में।

उ०—१ 'सत्तौ' लूण करणोत, राव रणमल साथै चीतौड़ कांम आयौ। 'सत्ता' रो राव रिणमल सू बोल हुतौ—"थां वांसै हूं नहीं जीवूं"। —नैणसी

उ०—२ ताहरां सयणी तो हीमाळै नूं हाली। वांसै सात में दिन बीजाणंद आयौ। —सयणी री वात

३ शेष, बाकी।

४ समीप, पास।

उ०— राणी अजमेर कितरा एक दिन रहसी। सवारे सोह साथ **वांसै** छै, तिकै भेळा करनै जाय अजमेर लेस्यां।

—राव मालदे री बात

५ साथ में।

६ मदद में, इमदाद में।

उ०— वीकांणी देसांणै **वांसै**। करनादे पलटै किम कोट।

—द. दा.

वि.—७ अधीन, अन्तर्गत।

उ०—१ किसनावत भाटियां रा गांव आगै तौ पूंगळ **वांसै** हुता हमैं तो वीकानेर **वांसै** छै।

—नैणसी,

उ०—२ आ खरड़ विक्रूंपुर सूं जुदी जेसळमेर **वांसै**, जुदी चाकरी करै।

—नैणसी

रू. भे.—बांसा, बांसे बांसै, वंसै, वांये, वांसा।

वांसोली—देखो 'वसूली' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र.)

वांसोलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

वांसौ-सं. पु.—१ पीछा।

उ०—१ सोनगरां अर राव तीडैजी रै वेढ हुई। सोनगरां रा पग छूटा। तरै राठौड़ां **वांसौ** कियौ।

—नैणसी

उ०—२ कांन्है नूं मारियौ। वित री **वांसौ** कियौ। मेर ज्यूं-ज्यूं लाधा, त्यूं मारियां।

—नैणसी

२ पीछे का भाग, पीठ।

उ०—१ तरै राजा रौ **वांसै** सुं राठौ फाडने बाळक काढियौ ने पाटौ बांध्यौ।

—रा. वं. वि.

उ०—२ कछव कछवाह **वांसौ** पलट करै किम। वसुह ची मांड बिहूं भड़ां **वांसै**।

—महियारियौ पुरौ

३ साथ।

४ मदद, इमदाद।

५ बेंट, दस्ता, मूठ।

६ देखो 'बांस' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—बांसौ।

वांह—देखो 'बांह' (रू. भे)

उ०—चाचर सूर पऊर गह, चाचर चाडे देग। लक्ख लहै दुहु **वाह** बळि, दुइं दुइं बंवै तेग।

—गु. रू. बं.

वांहड़ी—देखो 'बांह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रतन में राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरा **वांहड़ी** लहक लोड़ै। स्वाति नौ विंदलौ नासिका निरमयौ, आज आल्यंगन क्रस्न क्रोड़ै।

—रूकमणी मंगळ

वांहणौ—देखो 'वांणौ' (रू. भे.)

उ०—तिण गांव कूवौ १ छै, तिण पांणी निपट मीठौ पालर सारीखौ छै, उठारा **वांहणा** पांणी सहर आवै छै।

—नैणसी

वांहळी—देखो 'वाळी' (अल्पा., रू. भे.)

वाहली—१ देखो 'वंसी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बांसली' (रू. भे.)

वाहौलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

वा-सर्व. स्त्री.—१ वह।

उ०—१ कुळवंती सूं कीत रौ, उलटौ है आचार। **वा** न तजै घर आपरौ, जग इण रौ संचार।

—बां. दा.

उ०—२ पड़सी जद कांम दोड़सी पाळी, दाढाळी असुरां भुजडांण **वा** आवै ऊपर इकताळी, देसणोंक वाळी दीवांण।

—अग्यात

२ उस, उन।

उ०—१ राज पद पावै या कहावै राजकुळ में। गायौ कवि गुन कै बतायौ **वा** को महावीर।

—ऊ. का.

उ०—२ म्हारी गळियां ना फिरै, **वा** के आंगण डोले हो। म्हारी अंगुळी ना छुवै, **वा** की बहियां मोड़े हो।

—मीरां

अव्य.—१ अथवा, या।

उ०—सिंघासणौ **वा** इंद्रासणौ **वा** प्रिथीपती **वा** सरगपती **वा**। भ्रितं सुरौ **वा** भ्रितं नरौ **वा**, दिलीसरौ **वा** जगदीस रौ **वा**।

—गु. रू. वं.

२ और, तथा, भी।

३ जैसा, सदृश।

४ विकल्प या सन्देह वाचक।

५ समाप्ति सूचक अव्यय, इत्यलंम, बस।

उ०—पेट रा आंतरा गळै चढै जद बात कहीजै। लारला भौ री थनै मांगत चूकावूं। कमसल रा मूंडा सूं **वा** तौ निकळै ई कोनी।

— फुलवाड़ी

सं. स्त्री.—१ अंबा। (एका.)

२ विकलय। (,,)

३ प्रेम, स्नेह। (,,)

४ अति। (,,)

५ प्रहार, चोट। (,,)

६ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—पछि चैद देस तां आवी, मि नवी जांणी मासी। **वा** वाइ तेह्वा ओलवा लीजि, थई रही तिहां दासी।

—नळाख्यांन

रू. भे.—बा।

वा'—१ देखो 'वाह' (रू. भे.)

२—देखो 'वास' (रू. भे.)

वाअणी—१ देखो 'वाहनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

वाअणौ, वाअबौ—१ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—सीयाळउ तउ सी पड़इ, उन्हाळइ लू **वाइ** । वरसाळइ भुंइ चीकणी, चालण रत्ती न काइ । —ढो. मा.

२ देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू भे.)

वाअदी, वाअदे—देखो 'वासदे' (रू. भे.)

वाअळी—देखो 'वाळी' (अल्पा., रू. भे.)

वाअली—देखो 'वा 'लौ' (रू. भे.)

वाइटौ—देखो 'वांइटौ' (रू. भे.)

वाइंदौ—सं. पु. [देशज] फूस, कचरा.

वाइ—सं. स्त्री. [सं. वाद] १ आवाज, ध्वनि ।

उ०—कुंझड़ियां कळिअळ कियउ, सुणी उ पंखइ **वाइ** । ज्यांकी जोड़ी बीछड़ी, त्यां निसी नींद न आइ । —ढो. मा.

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—१ बंदीवाळू घणा सीदाता, दीठा पाडइ डाढि । दिसि अगासई तावडि दाझइ, रातइ वाइ ताढि । —कां. दे. प्र.

उ०—२ माघै **वाइ** माहावठी, सीत करइ संचार । माहरइ माधव सरण थी, लागइ नहीं लगार । —मा. कां. प्र.

३ देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—सरोवरां तटाक होद, तीरथं प्रमांण ए । वावी अनूप कूप **वाइ**, नीझरं निवांण ए । —गु. रू. बं.

४ देखो 'बादी' (रू. भे)

उ०—**वाइ** करडि केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू । पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु । —धरम कलस मुनि

५ देखो 'वाई' (रू. भे.)

वाइक—सं. पु.—१ मित्र, दोस्त । (ह. नां. मा.)

२ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)

उ०—तौ 'केहर' कहिजै सताब, **वाइक** विगताळा । कूदि पड़ां गज कटहड़ां, चढि गौख विचाळा । —सू. प्र.

३ देखो 'वायक' (रू. भे.)

वाइकचर—सं. पु. [सं. वाक्य+चर] श्रवण, कान । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वायकचर ।

वाइड़, वाइड़ि—देखो 'बायड़' (रू. भे)

वाइड़ियौ—देखो 'बायड़ियौ' (रू. भे.)

उ०—मेळौ कहै—सिखराजी ! हूं तौ **वाइड़ियौ** छूं । कह्यौ—उठौ ठाकुर अमल करौ । —ऊदे उगमणावत री वात

वाइड़ौ—देखो 'वायड़ौ' (रू. भे.)

वाइणौ, वाइबौ—१ देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रस्य थइ, विली वाउ **वाइवा** लागा, तलांनी माटी ऊपरि आंणइं । —व. स.

वाइदौ—देखो 'वादौ' (रू. भे.)

वाइन—स. पु. [अं.] शराब ।

वाइफ—सं. स्त्री. [अं.] पत्नी, जोरू, स्त्री ।

वाइमल्ल—सं. पु.—वादियों में मल्ल ।

उ०—मिगसर बदी छठ्ठ प्रभारइं, मिलिआ पतिसाह संघातइं । **वाइमल्ल** बोलायउं पिछांणी, साहि बांन सहु गुदरांणी । —कवि कनकसोम

वाइयोड़ौ—१ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाइयोड़ी)

वाइर—देखो 'बैर' (रू. भे.)

उ०—कहियौ जी म्हारा घर सुं उठीया म्हारी **वाइर** थांनुं मूकिया तै म्हारी वडाई । —चौबोली

वाइरियौ, वाइरौ—देखो 'बायरौ' (अल्पा., रू. भे.)

वाइरौ, वाइलउ—देखो 'बायरौ' (रू. भे.) (उ. र.)

वाइस—१ देखो 'वायस' (रू. भे.)

उ०—ढोला, मिळिसि म वीसरिसि, नवि आविसि ना लेसि । मारू'-तणइ करंकड़इ, **वासइ** ऊडावेसि । —ढो. मा.

२ देखो 'बाईस' (रू. भे.)

वाइसचांसलर—सं. पु. [सं.] किसी विश्व विद्यालय का उपकुलपति ।

वाइसचेयरमेन—सं. पु. [अं.] १ उपसभापति ।

२ उपाध्यक्ष ।

वाइसप्रेसिडेंट—सं. पु. [अं.] १ उपराष्ट्रपति ।

२ उपाध्यक्ष ।

वाइसराय—सं. पु. [अं.] अंग्रेजी शासन-काल का भारत का सबसे बड़ा शासक, जो सम्राट का प्रतिनिधि होता था ।

वाइसी—देखो 'बाईसी' (रू. भे.)

वाईटौ—देखो 'वांइटौ' (रू. भे.)

वाई—सं. पु.—युवा बैलों को कृषि कार्य व गाड़ी खींचने के लिये शिक्षित करने की क्रिया ।

२ उक्त क्रिया से शिक्षित बैल ।

उ०—वाई पय प्रायै हुवै, चंचल गति तिण नांहि । राय कहै वछ माहरै, तुं वसीयौ मन मांहि । —वि. कु.

क्रि. प्र.—करणौ, काडणौ ।

३ देखो 'बादी' (रू. भे.)

रू. भे.—बाई, वाइ ।

३ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सकसै का जैत वार, अकसै का वाई । रहणी मैं जोगेस्वर, बहणी मैं जगदीस । —रा. रू.

वाईदड़ौ—देखो 'वायड़ौ' (रू. भे.)

वाईसी—देखो 'बाईसी' (रू. भे.)

वाउ—देखो 'वायु' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ झिलै राग वागां मुठी वाउ झल्लै । चतुरबाह रा रत्थ ज्यूं पत्थ चल्लै । —वचनिका

उ०—२ वनिता समई न वेदना, करतां कोडि उपाय । वाउ विलोलइ वींजणइ, को चंदन घसी लाय । —मा. कां. प्र.

उ०—३ हेमंत रित लागी पछिरौ वाउ फिरियौ । उतराधौ वाउ, बाजियौ । —रा. सा. सं.

वाउकाय—सं. पु.—वायु के जीव, वायु में रहने वाले जीवाणु ।

उ०—जद स्वांमीजी कह्यौ—औ पांणी कठै पड़सी ? जद तिण कह्यौ—हेठै पड़सी । स्वांमीजी कह्यौ—इहां पांणी पड़तां वाउकाय आदि जीवां री अजयणा व्है । —भि. द्र.

वाउचर—सं पु. [अं.] हिसाब के ब्यौरे का कागज, प्रमाणक ।

वाउदेवता—देखो 'वायुदेवता' (रू. भे.)

उ०—लंका राजधांनि त्रिकुट परवत गढ जीणइं अत्यु बांधी पातालि घालिउ, नवग्रह खाट तणइं पाईइं बांध्या, वाउ-देवता आंगणउं बुहारइ, चउरासी देव छ डउं देइं । —व. स.

वाउमंडळ—देखो 'वायुमंडळ' (रू. भे.)

उ०—मिटतै खूरम 'भीमेण' अत दिन मछर, विढै वीछोड़ियां खागवाहै । पड़ै गज सबळ धरमंडळ ऊपरा, मिळै गज-कमळ वाउमंडळ माहै । —चतरौ मोतीसर

वाउल—१ देखो 'वधूळौ' (मह., रू. भे.) (उ. र.)

२ देखो 'वावळ' (रू. भे.)

३ देखो 'बांवळ' (रू. भे.)

वाउलउ—१ देखो 'बावळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

२ देखो 'वावळ' (अल्पा., रू. भे)

वाउळि, वाउळी—१ देखो बावळौ' (स्त्री.) (उ. र.)

२ देखो 'बांवळी' (रू. भे.)

३ देखो 'वावळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जीव जंजालै उलझ्यौ ज्युं जोगि जटा, पाचे पांम मंझार ज्यूं भोमर में भटा । नांणे मन में धरम करै साटा नटा, घेरी ज्यासै काल जेम वाउळि घटा । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ केसरि कथन्न सांभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि । 'वीका' हर राजा ए वखांण, जाळोवळि सीतउ धित जांण । —रा. ज. सी.

वाउलीउ—देखो 'बांवळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वालु नइ वेलातरु, वेउ वेतस वांणि । वध्राण वाहलु लीउ, वाउलीउ वखांणि । —मा. कां. प्र.

वाउळौ, वाउलौ—१ देखो 'बावळौ' (रू. भे.)

उ०—सरसती न सूझै वाउवा हुऔ कि वाउळौ । मन सरिसौ धावतौ मूढ मन, पहि किम पूजै पांगुळौ । —वेलि

२ देखो 'वावळ' (अल्पा., रू. भे)

(स्त्री. वाउळि, वाउळी)

वाउवौ—वि. [सं. वातिक] वात रोग ग्रस्त (लबार) वाचाल ।

उ०—सरसती न सूझै ताइ तूं सोझै, वाउवा हुऔ कि वाउलौ । —वेलि

वाउसू—देखो 'वावसू' (रू. भे.)

उ०—भारी कटक्क धर धुसइ भारि, आविया वाउसू सरि उतारि । हलहलिय देस हइवइ हुवासि, तड़वांगै पड़िया लोक त्रासि । —रा. ज. सी.

वाएक—१ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)

उ०—राइ-वाएक । —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

२ देखो 'वायक' (रू. भे.)

वाएरौ—देखो 'बायरौ' (रू. भे.) (अ. मा.)

वाओकळौ—सं. पु. [सं. वायुस्थलम्] हवादार व खुला स्थान ।

वाक—सं. स्त्री. [सं. वाक्] १ सरस्वती, शारदा । (ह. नां. मा.)

२ जिव्हा, जीभ ।

उ०—कमंध-अगंजी विभनौ कहियौ, वड दाता कीरत चौ वींद । वाक तुहाळी करंडी वाळौ, काळौ भू'बाऊं कासींद । —ओपौ आढौ

३ वाणी, वचन, वाक्य ।

उ०—विदेहं प्रतंग्या कहै एम वाकं । पुत्री जो वरै सो ज तांणै पिनाकं । —सू. प्र.

४ आवाज, ध्वनि ।

५ देखो 'बाकौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—बाक ।

वाकई–क्रि. वि. [अ. वाक़िई] यथार्थ में, वास्तव में, वस्तुतः।

रू. भे.—वाकेई।

वाकचपळ–वि. [सं. वाकक्चपल] बहुत बोलने वाला बातूनी, लबार।

वाकप—देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

उ०—वांसा थी साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयौ, कांवौ अबु मेड़तै बरस २ रह्यौ छै, उठा री **वाकप** छै। —नैणसी

वाकपटु–वि. [सं. वाक्पटु] बातों में या बोलने में चतुर।

वाकपति–सं पु. [स. वाक्पति] १ वृहस्पति।

२ विष्णु।

३ सत्य देवों में से एक।

वाकपतिराज–सं. पु [सं वाक्पतिराज] १ भव भूति का समसामयिक एक कवि जो राजा यशोवर्मा का आश्रित था।

२ सीयक का पुत्र मालवा का एक परमार राजा।

वाकफ—देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

वाकफियत–सं. स्त्री. [अ वाक़फ़ीयत] १ जान कारी, परिज्ञान।

२ अनुभव।

रू. भे.—वाकबियत।

वाकब—देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

उ०—रतनां इमरती सुं भांत भांत पकी कीवी। भिन भिन **वाकब** कर दीवी। भांत भांत री बुराकां चढाई, सूवा ने पढावै इण भांत पढाई। —र. हमीर

वाकबदार—देखो 'वाकिफकार' (रू. भे.)

वाकबियत—देखो 'वाकफियत' (रू. भे.)

वाकबी—देखो 'वाकिफ' (रू, भे.)

उ०—अबे करौं ज **वाकबी** हगीगतं अबेलेनैं। प्रचंड जूंभ मल्लनैं बुलाय वीर पांनै। —पा. प्र.

वाकयौ—देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

वाकळ–सं. पु. [सं. वाष्पकल] १ कूए का पानी।

२ पंवार वंशोत्पन एक देवी। (बां. दा ख्यात)

[सं. वल्कल] ३ एक वस्त्र विशेष।

उ०—रत्न कम्मल छाइल मकन्ल अराल साउला उरसाला वाला पटुलां **वाकलां** घनवेलि। —व. स

रू. भे.—बाकळ।

वाकळा—देखो 'बाकळा' (रू. भे.)

उ०—**वाकळां** वळां सोह छोडसी वकायत, वायरां वकायत ठीक वहसी। पखां मंत्र न मांभी लियौ पाप रौ, राज मंत्र खीलियौ थकौ रहसी। —भेरूंदांन बारहठ

वाकवांणी–सं. स्त्री. [सं. वाकवाणी] १ सरस्वती शारदा।

२ वाणी।

रू. भे.—बाकबांणी, बाकबांनी।

वाकसाळी–सं. स्त्री. [सं. वाक्+शालिन्] एक देवी जिसकी वाणी प्रभावशाली हैं।

रू. भे.—बाकसाली।

वाकानवीस–वि. [अ. वाकिअः नवीस] १ घटना, वृत्तान्त वा हाल लिखने वाला।

उ०—हलकारा **वाकानवीस** कुफियांनवीस डाक चौक्यां अरज लिखे दिन रात।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ इतिहासकार।

३ संवाद-दाता।

वाकार–सं. स्त्री.—१ ललकारनै की क्रिया या भाव।

२ ललकार, वीरहाक।

३ सम्बोधन करने की क्रिया या भाव।

४ विरुदाने की क्रिया।

५ पुकार।

६ व अक्षर या वर्ण

रू. भे.—बकार, बाकार, वकार।

वाकारणौ, वाकारबौ–क्रि. स. [सं. वक्र आकारणं] १ युद्ध के लिये ललकारना।

उ०—१ वैड तौ पेख पतसाह **वाकारियौ**, टाळ अन करै मन जहीं टाळियौ। —द. दा.

उ०—२ कर हथनाळ कलाइयां दे धनुस टंकार। सर गण ऊपर सांधनै, वळिया दळ **वाकार**। —पा. प्र.

उ०—३ विळकुळियौ वदन जेम **वाकार्यौ**, संग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रुकम अउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बधि। —वेलि

२ उत्तेजित करना, जोश दिलाना।

उ०—वयणे **वाकरियौ** तांम माभी गज केसरी। पवन पूर ऊफणे, जळण जांणे वन अतरि। —गु. रू. बं.

३ आव्हान करना

४ सम्बोधन करना, पुकारना, बुलाना।

५ प्रशंसा करना।

वाकारणहार, हारौ (हारी), वाकारणियौ—वि०।

वाकारिओड़ौ, वाकारियोड़ौ, वाकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वाकारीजणौ, वाकारीजबौ—कर्म वा०।

बकारणौ, बकारबौ, बाकारणौ, बाकारबौ, भकारणौ, भकारबौ भखारणौ, भखारबौ, वकारणौ, वकारबौ —रू. भे.

वाकारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ युद्ध के लिये ललकारा हुआ. २ उत्तेजित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आव्हान किया हुआ. ४ सम्बोधन किया हुआ, पुकारा हुआ, बुलाया हुआ ५ प्रशंसा किया हुआ।

वाकाबत—सं. पु.—कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति —बां. दा. ख्यात

वाकिफ—सं. स्त्री. [अ.] १ जानकारी, खबर, पता।

२ ज्ञान, अनुभव।

वि.—१ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू. भे.—वकूफ, वाकप, वाकफ, वाकब, वाकबी।

वाकिफकार—वि. [अ. वाक़िफ़कार] १ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू. भे.—वाकबदार।

वाकिमि—१ देखो 'बांकम' (रू. भे.)

उ०—नर समंद साहण समद नरियंद। जुधि मयंद वाकिमि विंद राजिंद। —ल. पिं.

वाकियौ—सं. पु. [अ. वाकिअ] १ कोई घटना, दुर्घटना।

२ वृत्तान्त, हाल, चर्चा।

३ समाचार, खबर।

रू.—वाकूऔ, वाकयौ, वाकौ।

वाकी—देखो 'बाकी' (रू. भे.)

उ०—१ थरिया तन का क्या गुमांन है, जम सूं कुण **वाकी**। —केसौदास गाडण

उ०—२ तद कुंवर कह्यौ, कई तौ सरदार था, वैर तौ वडौ पडियौ। इव जांणां हां ततौ पूठौ कर **वाकी** रा काहिणू जावण देवा हा। —कुंवरसी सांखला री वारता

वाकुंडिम—सं. स्त्री.—सर्प की कंचुकी ?

उ०—अवसरि सूंआलइं गीत गाइं, सांमउं जोइं फण मंडावइ, सरीर नी **वाकुंडिम** छंडावइं इसा गारुड़ी। —व. स

वाकुंभ—सं. पु.—वृक्ष विशेष।

उ०—वडवालु नइ कुणि बली, वांस वणसरी वेलि। **वाकुंभा** वाघइ भला, वकुल वद्धतरु वेलि। —मा. कां. प्र.

वाकुंभीय—सं. पु.—कंद विशेष।

उ०—अमर कंद आदूं अलां, सूरण रोभ रताल। वच्छनाग **वाकुंभीया**, भेडागारी भालि। —मां. का. प्र.

वाकुर—सं. पु.—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। —बां. दा. ख्यात

वाकेई—देखो 'वाकई' (रू. भे.)

वाकौ—वि. [अ. वाकिअ:] १ जो घटित हो चुका हो।

२ घटित होने वाला।

३ देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

उ०—१ सयदां (ण) इम साजिया, उडै **वाका** अणथाहै। सुणै बहादरसाह, मंगळ प्रजळै उर माहै। —सू. प्र.

उ०—२ **वाकौ** भूठौ अखियौ, दक्खण गयौ सदूर। आप वडाई आप री, आपी साह हजूर। —रा. रू.

उ०—३ जवन पखी राजा उर जळिया, किळबां अनम सुणै विळकुळिया। इळ ईरांन मकै लग **वाकौ**, जबना सुण उर पड़ै जराकौ। —रा. रू.

उ०—४ आगरै तखत सूं डूंगरी आंणतां, वळौ-वळ लिखांणा जगत **वाका**। जुहारीसिंघ का बाळिया जगत में, डाकुवां रूप रा सुजस डाका। —बुधजी आसियौ

४ देखो 'बाकौ' (रू. भे.)

वाक्य—सं. पु. [सं.] १ ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो किसी एक विचार या आशय को व्यक्त करता हो।

२ भाषण, कथन।

रू. भे.—बाइक, वाएक, वाइक, वायक।

वाक्यकर—सं. पु. [सं.] १ एक की बात दूसरे को कहने वाला, संदेश-वाहक, दूत।

वि.—बातें बनाने वाला।

वाक्यानवीस—सं पु.—मुगल कालीन एक ओहदा या पद विशेष।

वि. वि.—कभी-कभी सूबे के बख्शी को वाकयानवीस का कार्य भी करना पड़ता था; वैसे आम तौर पर इस कार्य के लिए अलग ही अधिकारी रखा जाता था। वह अधिकारी अपनी देख रेख में सूबे भर में प्रमुख-प्रमुख स्थानों पर यहाँ तक कि सिपहसालार, दीवान, काजी, फौजदार आदि अफसरों के कार्यालयों तक में संवाद-लेखकों और गुप्तचरों को नियुक्त करता था। ये लोग उसके पास प्रतिदिन रिपोर्टें भेजते थे। इन रिपोर्टों का वह सूक्ष्म रूप तैयार करता था और उसे शाही दरबार में भेज देता था। क्यों कि सम्पूर्ण शासन-प्रबंध की सफलता गुप्तचर विभाग के ऊपर भी बहुत कुछ निर्भर होती है, इसलिये इस ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। कभी-कभी केन्द्रीय सरकार भी अपने संवाद-लेखकों

और गुप्तचरों को सूबों और परगनों में भेजती थी, जो उसी की आज्ञा-आदेशों का पालन करते थे।

वाखर—देखो 'बाखर' (रू. भे.)

उ०—१ जिसड़े ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीत तिसड़ै ही मूरछा आइ पड़िया। तिसड़ै गोवळजी संबाह्या। पेट रौ **वाखर** सहु झळकतौ दीठौ। —द. वि.

उ०—२ सुकर घर सर बजर ससतर, गहर हर बह पथर तर गिर। वहर सिर कर देह **वाखर**। पहर चौसर सुवर अपछर।

—र. ज. प्र.

वाखळ—देखो 'बाखळ' (रू. भे.)

उ०—निकळै मिरड़ां लार, गंठेळी सूकी सांकळ। घरकोटां रै ध्येय, पड़ी लद लकड़्यां **वाखळ**। —दसदेव

वाखांण—देखो 'बखांण' (रू. भे.)

उ०—जस **वाखांण** राज पंछ बाजै, अखिळ भुवेण सुणै इम। रांणा अवर घणां दिन रहसी, जुग जुग पंगी चंग जिम।

—रांणा जगतसिंह रौ गीत

वाखांणण—देखो 'बखांणण' (रू. भे.)

वाखांणणौ, वाखांणबौ—देखो 'बखांणणौ, बखांणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पनरै तेरैह मत्त पय, छंद उल्लाल पिछांण। रघुनाथ सुजस सो छंद रच, बीदग मुख **वाखांणजै**। —र. ज. प्र.

उ०—२ दीनां लंका जे हाथां न कजै दीधा जग सारौ जांणै। वेदां भेदां धाता वीठळ, वारवार रटै **वांखाणै**। —र. ज. प्र.

उ०—३ दूभड़ा रायपाळां दुभ्भळ, वयळ घरां सिर दुंद वण। ऐ कहै करौ खग भट इसी, रवि **वाखांणै** हाथ रिण। —सू. प्र.

वाखांणणहार, हारौ (हारी), वाखांणणियौ—वि०।

वाखांणिओड़ौ, वाखांणियोड़ौ, वाखांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वाखांणीजणौ, वाखांणीजबौ—कर्म वा०।

वाखांणियोड़ौ—देखो 'बखांणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाखांणियोड़ी)

वागंबर—देखो 'बाघबर' (रू. भे.)

वाग-सं. स्त्री.—१ मोट की सूंड के नीचे का वह भाग जिसके रस्सी बांधी जाती है।

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—वाछड़िया रा **वाग** चरावै चढ़ चढ घोरां। गायां एवड़ ग्वाळ अगीरै रागां छोरां। —दसदेव

३ देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—१ ऊपड़ी **वाग** "अरजण" हरौ, सूर धीर संत आगळै। तिण दीह रहै "डूंगर" तणौ, राघव भाटी रिण खळै। —गु. रू. बं.

उ०—२ **वाग** धरि करि ताजणउ, राग-तणइ रसि जाइ। आगलि न रहइ आगल्या, पाछै न नु मिलाइ। मा. कां. प्र.

उ०—३ रोज सिकारां खेलणौ, देखै **वाग** तड़ाग। हूंकळ दळ गज हैवरां, अमरख नरां अथाग। —रा. रू.

उ०—४ सर सरिता बहु **वाग** सडंबर। मझि तिण सिंगी कांम चित्र मंदिर। —सू. प्र.

उ०—५ लेगौ सिध वा त्रिय बुगलांणै, उलट गयौ आस्रम आपांणै। सुंदर न्रप चित्रमहल बसाई, **वाग** चंद्रिका जेणि वणाई।

—सू. प्र.

५ देखो बाज' (५-८) (रू. भे.)

उ०—१ हुय हक्क किलक्क समुक्ख हलां, भयंकार घड़ी वण वार भलां। सिर ढाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम **वाग** डंडैहड़ फाग जदै।

—रा. रू.

उ०—२ रंग राग **वाग** अंगराग सूं न रींजै, पातिसाह महमदसाह चिंता मैं छीजै। —रा. रू.

वागड़-सं. पु.—१ डूंगरपुर-बांसवाड़ा प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

उ०—१ ऐ रावळ करन रै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण मांहै राहप राणा रा चीतोड़ धणी। रावळ माहप रा वागड़ धणी। ऐ सदा चीतोड़ रा राणा री चाकरी करता। **पछै सै दिल्ली रा पात-साहां** सूं पिण रजूआत राखै छै। वागड़ नूं गांव ३५०० सै लागै। आधा डूंगरपुर वांसै आधा वांसवाहळा वांसै हुवा। पेहली तौ ठकुराई डूंगरपुर मुदै हुती। पछै सूं रावळ उदैसिंह गांगै रै सूधी तो **वागड़** एक छत्र भोगवी। —नैणसी

उ०—२ **वागड़** देस विदरा गर नांम, जिहां खट दरसन ना विस्रांम। राजधांनी नूं रुडउ ठांम, देस मध्य गिरि पुर वली गांम।

—जय विजय मुनि

२ वर्त्तमान शेखावाटी तथा बीकानेर-वाटी से मिले हुए प्रदेश (हिसार) का पुराना नाम।

उ०—१ सोडस ज्वर लक्षण सहित, औसध क्वाथ बखांन। कह्या **वागड़** देसाधिपति, न्रप स्री दउलतीखांन —दुउलति विनोद सार

उ०—२ वीरा **वागड़** लाट करणाट। —धरम पत्र

३ एक वैश्य जाति।

उ०—सोनी नइ सुतार पणि, त्रागड़ **वागड़** वंस। तेली तंवोली वली, दोमी उपरि डंस। —मा. कां. प्र.

४ खादर का विपर्याय, एक प्रकार का भू-भाग जो अपेक्षाकृत ऊंचा व कम आबाद होता है, पठार।

उ०—नित वरसौ, मेहा **वागड़** में, मोठ बाजरौ वागड़ निपजै। गेहूंड़ा निपजै खादर में, नित वरसौ मेहा, वागड में। —लो. गी.

५ कच्छ राज के एक भू-भाग का नाम।

६ देखो 'वगड़' (रू. भे.)

उ०—जोवन कारमौं रे वीहांणौ उठ जासी, आदर भजन तणौ अभियास। प्रांणियां न आवै कदैं प्रांमणौ, वळै न बीजं दागड़ वास। —ओपौ आढौ

रू. भे.—बागड़, बागड, बागर, बाघड़, वागर।

अल्पा.—वागड़ियौ।

वागड़णौ, वागड़बौ—क्रि. अ.—चलना, फिरना।

उ०—भागड्दि भूत जोगण गण भैरव, आगड्दि अमर अपछर गण आंण। पागड्दि प्रबळ परचर पुर पेखत, वागड्दि व्योम सुर-छाया विमांण। —र. रू.

वागड़णहार, हारौ (हारी), वागड़णियौ—वि०।

वागड़िग्रोड़ौ, वागड़ियोड़ौ, वागड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वागड़ीजणौ, वागड़ीजबौ—भाव वा०।

बागड़णौ, बागड़बौ—रू० भे०।

वागड़िया—सं. स्त्री.—चौहानों की एक शाखा।

रू. भे.—बागड़िया।

वागड़ियौ—वि.—१ वागड़ का, वागड़ सम्बन्धी।

सं. पु.—१ वागड़ प्रदेश का निवासी।

२ वागड़ जाति का वेश्य।

३ रहट की माल में छोटी-छोटी काष्ठ की कीलियां लगाने के समय माल को स्थिर रखने के लिये लगाई जाने वाली मोटी कीली, कील।

४ वागड़िया जाति का चौहान।

रू. भे.—बागड़ियौ।

वागड़ी—सं. पु.—१ चौहान राजपूत वंश की एक शाखा।

उ०—डाहळियां री छापर वडी साहिबी थी। नै वागड़ी रजपूतां री भोम नागोर थी। —नैणसी

२ बावरियों के समान एक जंगली जाति विशेष जो खेतों की रखवाली का काम करती है।

३ इस जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—बागड़ी।

वागडोर—देखो 'बागडोर' (रू. भे.)

उ०—१ करै पोस जरकसी, कड़ी सोव्रन कोतल कसि। वागडोर रेसमी, तरह पचरंग धरै तसि। —सू. प्र.

उ०—२ जीण मांडजै छै। केसवाळी रंग-रंग री गुंथजै छै। अगाड़ी-पछाड़ी खोलजै छै। रेसम री वागडोरां सूं आंण हाजर कीजै छै।···किसा हेक घोड़ा छै? वेपख भला, ऊचा अलला, कटोरनखा, आरसी सारीखा। —रा. सा. सं.

वागढाल—सं. पु.—घोड़े की लगाम को ढीली करना, विश्राम करना।

उ०—घोड़ां रा तंग ढीला करौ, वागढाल करीजै, मांहै थांहरौ चोर छै तौ अबै जाय कठै ही नहीं। —राव रिणमल री बात

वागणौ, वागबौ—१ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाल वदन अंबर सिर लागौ। विक्रमादित जवनां हूं वागौ। —सू. प्र.

उ०—२ असुर हणै व्रद वणै अथागा। वर सिधकरि खेंगेदा वागा। —सू. प्र.

उ०—३ चारण ग्रहि चौधार, सत्रु मारण अवसांण सिध। वागौ डारुण 'वैणउत' सिरदारां सिरदार। —वचनिका

उ०—४ हुवौ अति सींधवौ राग, वागौ हकां। थाठ आया पिसण घाट लागै थकां। —हा. झा.

उ०—५ जोम गाडावाळी प्रळय काळा री उनागी जठै। वागौ हाडावाळी नराताळ री बांणास। —दुरगादत्त बारहठ

उ०—६ आडौ अड़ि एकाएक आपड़ै, वाग्यौ एम रुक्मणी वीर। अबळा लेइ घणी भुंइ आयौ, आयौ हूँ पग मांडि अहीर। —वेलि

उ०—७ धीरवंत कुंवर नें निरखी, धीवर पाइ लागा। स्वांमी पणै थाप्यौ सहु मिलनै, जस ना वाजत्र वागा। —वि. कु.

उ०—८ गावय वयराडी रागइ, आलापइ स्त्री संग आगइ। वांसुरी मधुरी वागइ, सुख पावइ सयण। —स. कु.

३ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)

वागणहार, हारौ (हारी), वागणियौ—वि०।

वागिग्रोड़ौ, वागियोड़ौ, वाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वागीजणौ, वागीजबौ—भाव वा०।

वागमी—देखो 'वाग्मी' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

वागर—सं. पु. [सं.] १ विद्वान पंडित, गुणी।

२ ऋषि, मुनि, महात्मा।

३ शूरवीर, योद्धा।

४ देखो 'वांगड़' (रू. भे.)

उ०—जंबू द्वीप देस तहां वागर, नगर फतेहपुर नगरां आगर। आसि पासि तहां सोरठ मारू, भासा भल्ली भाव पुनि सारू। —रूपवती

३ देखो 'बागर' (रू. भे.)

वागरवाळ—वि. [सं. वाग्वर-पालक] कवि, विद्वान, पंडित।

उ०—१ ढाढी गुणी बोलाविया, राजा तिणही ताळ। नरवर गढ ढोलइ-कन्हेइ, जावउ वागरवाळ। —ढो. मा.

उ०—२ वागरवाळ विचारीयउ, ए मति उत्तिम कीध। साल्ह-महल हूं ढूकड़ा, ढाढी डेरउ लीध। —ढो. मा.

वागरी—देखो 'बागरी' (रू. भे.)

उ०—घर चंगी, नर चोरटा, **वागरियां** रे वेस । भालड़ियां घिसता फिरै, अइ हो आबू देस । —अग्यात

वागळ—देखो 'बागळ (रू. भे.)

उ०—कोचर अरु चमचेरा **वागळ**, और उलूक अग्यांना हो । इनके रवी द्रस्टि नहिं आवै, तम का इन कूं ग्यांना हो ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

वागळी, वागली—१ देखो 'बागळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बागळ' (रू. भे.)

उ०—वील्हा वायस विंभलां, आगलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ **वागली**, ते ऊंधी टंगाय । —मा. कां. प्र.

वागवांणी—सं. स्त्री. [सं. वाग्वाणी] सरस्वती, शारदा ।

उ०— 'नाल्ह' रसायण नर भणइ, राजा रह्यौ उड़ीसई जाय । **वागवांणी** मौ वर दीयौ, अस्त्री-रसायण करूं वरखांण ।—बी. दे.

वागसणौ, वागसबौ—देखो 'बकसणौ, बकसबौ' (रू. भे.)

उ०—धनुस धरण अवगुण नंह धारै, सरण सधार कहै जग सारै । **वागसै** तनै गुणौ इण वारै, चित अयणौ जो विरद विचारै ।
—र. रू.

वागसणहार, हारौ (हारी), **वागसणियौ** —वि० ।
वागसिओड़ौ, वागसियोड़ौ, वागस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वागसीजणौ, वागसीजबौ—कर्म वा० ।

वागसियोड़ौ—देखो 'बकसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वागसियोड़ी)

वागांसपूर—देखो 'बागांसपूर' (रू. भे.)

उ०—वाटका पोड़ वंजर समांन, घाटका नळी निघोटवांन । सुभ लछा अछा **वागांसपूर**, लागां स रांन वच्चा लंगूर । —पे. रू

वागाइत, वागायत—देखो 'बागायत' (रू. भे.)

वागी—देखो 'बागी' (रू. भे.)

उ०—साहजादौ खुरम पातसाह जहांगीर सूं **वागी** हुवौ ।
—बां. दा. ख्यात

वागीचौ—देखो 'बगीचौ' (रू. भे.)

उ०—फब हार धार घण फरहरंत । **वागीचां** चादर जळ वहंत ।
—सू. प्र.

वागीस—सं. पु. [सं. वागीश] १ ब्रह्मा ।

२ वृहस्पति ।

३ कवि ।

४ वक्ता ।

वागीसा—सं. स्त्री. [सं. वागीशा] सरस्वती ।

वागीस्वर—सं. पु. [सं. वागीश्वर] १ ब्रह्मा ।

२ वृहस्पति ।

३ कवि ।

वागीस्वरी—सं. स्त्री. [सं. वागीश्वरी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ एक रागिनी विशेष ।

३ एक महाविद्या ।

रू. भे.—बंगेसरी, बंगेस्वरी, बागेसरी, बागेसुरी, बागेस्वरी, वंगेसरी, वंगेस्वरी, वागेसरी, वागेस्वरी, वाघेसुरी, वाघेस्वरी ।

वागुर, वागुरि, वागुरी—सं. स्त्री. [सं. वागुरा:] १ फंदा, जाल ।
(उ. र.)

उ०—१ लागी बिहुँ करे ध्रुयणी लीधै, केस पास मुगता करण । मन-म्रग चै कारणै मदन ची, **वागुरि** जांणै विसतरण ।
—वेलि

उ०—२ हंस गतइं चालती, गज गतइ माहालती, कांम कांमनी पालती, आंखिनइ मटकारइ मदन नी **वागुरा** घालती कस्तूरी अलंकृत भाल पट्ट, तरु (ण) तणां भांजइ मरट्ट । —व. स.

सं. पु. [सं. वागुरिक] २ बहेलिया, शिकारी, चिड़ीमार । (उ. र.)

वागुळि—सं. स्त्री. [सं. वल्गुलिका] १ मंजूषा, पेटी ।

२ पिटारी ।

३ कत्थई रंग का पतंग जाति का कीट, तैलपायी । (उ. र.)

वागेलौ—सं. पु —गायों का समूह ।

रू. भे.—बागेलौ ।

वागेसरी, वागेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—१ कमळापति तणी कहेवा कीरती, आदर करै जु आदरी । जांणै वाद मांडियौ जीपण, वागहीण **वागेसरी** । —वेलि

उ०—२ वारुणी दारुणी भास्करी, संकरी जया विजया घोरा कौबेरी प्रवाही मदनसेना बलमथनी गौदिनी पेसांनी **वागेस्वरी** सिद्धावी अजरांमरा इत्यादि महा विद्या । —व. स.

वागोल—देखो 'बागोल' (रू. भे.)

वागोलणौ, वागोलबौ—देखो 'बागोलणौ, बगोलबौ' (रू. भे.)

उ०—वौ होळै होळै हालतौ वखारी रै अड़ोअड़ पूगग्यौ । वखारी रै अेक बाजू अेक भेंस ऊभी **वागोलती** ही । वौ भेंस रै पाखती ई रुई बांधण सारू आपरौ खेसलौ बिछायौ । —फुलवाड़ी

वागौ—देखो 'बागौ' (रू. भे.)

उ०—१ वेहद्द हद्द **वागै** वणाव, चम्मीर हीर जांमै जड़ाव ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ सो माथा पर किलंगी अने सेवरौ केसर में रंगिया दकूळ-कपड़ा-**वागौ** केसर में रंग दौ आप रा सिरदार ने कहै। —वी. स. टी.

उ०—३ **वागा** वेस सोहांमणा, भुखण मोती माळ। कनक कचोळा जड़ावरा, सुंदर सोवन थाळ। —ढो. मा.

उ०—४ पाग बिण प्रीतम कहें, तपइ सूथण पाय। **वागौ** कीनौ अरगजौ, सुंदर नें बहोत सुहाय। —व. स.

वाग्गेयकार-सं. पु.—संगीत एवं पद रचयिता।

वाग्देवी-सं. स्त्री. [सं. वाक्+देवी] १ सरस्वती, शारदा।

२ वाणी।

वाग्दोस-सं. पु. [सं. वाग्दोष] बोलने में व्याकरण सम्बन्धी त्रुटी।

वाग्भट-सं. पु. [सं.] अष्टांग संहिता नामक वैद्यक ग्रंथ का रचयिता।

वाग्मिता-सं. स्त्री.—वाक पटुता।

उ०—दानं दुरभिक्षे, पौरुसं रणे, स्त्री सीलं संगमे, धोरेयं पथे, **वाग्मिता** सदसि, साहसं दुरदासायं, मित्रं व्यसने, कलत्रमायदि, पुत्रो वृद्धत्वे ग्यायते। —व. स.

वाग्मी-सं. पु. [सं. वाग्मिन्] १ वृहस्पति।

२ वाकपटु-व्यक्ति।

वि.—१ वाकपटु, अच्छा वक्ता।

२ बातूनी, वाचाल।

३ बहुवादी, बहुत बोलने वाला।

४ पंडित, कोविद।

५ कवि।

वाग्युद्ध-सं. पु. [सं.] १ केवल बोली से ही की जाने वाली लड़ाई, जबानी-झगड़ा।

२ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।

वाघंबर—देखो 'बाघंबर' (रू. भे.)

उ०—गज अंबराळ हगा अणगिणिया। **वाघंबरां** चीर सिर वणिया। —सू. प्र.

वाघ—१ देखो 'बाघ' (रू. भे.) (उ. र., अ. मा.)

उ०—१ विण जुध कारण, **वाघ** रै दूजौ नावै दाय। एक अनेकां ऊपरा, जुलम करेवा जाय। —बां. दा.

उ०—२ सरप **वाघ** गज रींछ सरीखा, तुंड कुंदाळ मगर सम तीखा। —सू. प्र.

उ०—३ हाका पीथळ हाक हक, हथपाह हड़ंदै। **वाघण** व्याई वेढ़ में, कुण दूर करंदै। —पा. प्र.

उ०—४ दरपइ दीठइ ठोरडइ, साप न आंणइ संक। बीहइ बिलाडां-बच्चडइ, **वाघिणी** वालाइ बंक। —मां. का. प्र.

(स्त्री. वाघण, वाघणी, वाघिणी)

२ देखो 'बाग' (रू. भे.)

वाघचंब, वाघचरम—देखो 'बाघचरम' (रू. भे.)

उ०—जठा मुगट मांहि गंगा दीठी, अंगि भसमीअ धूल। **वाघचंब** पांगुरणै दीठां, दीठउ वळी त्रिसूळ। —कां. दे. प्र.

वाघनख, वाघनखौ—देखो 'बाघनख' (रू. भे.)

वाघनखौ—देखो 'बाघनखौ' (रू. भे.)

वाघमुखी, वाघमुखौ—देखो 'बाघमुखौ' (रू. भे.)

उ०—वड़ चख ऊजळ वरन, स्रवण मोती वेंडूरज। मुगता फळ गळ मई, कडा कर **वाघमुखा** कज। —पा. प्र.

वाघमूत—देखो 'बाघमूत' (रू. भे.)

वाघूळ-सं पु. [सं. वाह=पानी+घूल] १ बादल, वारिद।

उ०—तूल जिम उड़ै खळ थूळ गुरजां तड़छ, भूळ चवसठ लगी लेण झंपा। सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्यांम **वाघूळ** बिच जांण संपा। —बालाबख्स पाल्हावत

२ वात-चक्र।

वाघेल—१ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

उ०—डंड लियां झालां दूर चूड़ासमा बल चूर। **वाघेल** गोहिलवाड़, रस कीध घाट वराड़। —रा. रू.

वाघेला—देखो 'बाघेला' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

वाघेलौ—देखो 'बाघेलौ' (रू. भे.)

वाघेसुरी, वाघेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—मोर चढ़ै खळ मारणी, महिप चढ़ै भालांण। वाघ चढ़ै **वाघेस्वरी**, नाग चढ़ै नागांण। —पा. प्र.

वाड़-सं. स्त्री.—१ आड़, ओट

उ०—१ बांवै दयांणै भोजायां री **वाड़**। —पाबूजी रो पवाड़ौ

२ देखो 'बाड़' (रू. भे.)

उ०—१ वाघ करै नह काट वन, वाघ करै नह **वाड़**। वाघां रा वघवाव सूं, झिलै अगजी झाड़। —बां. दा.

उ०—२ दिवी भोलावण तुम नै धणी, प्रदेसे चाल्यौ मुझ धणी। घर हुंती किम उठै धाड़, चीभड़ला किम खायै **वाड़**। घ. व. ग्रं.

उ०—३ वेर हमेस विसावणा, **वाड़** विना वसणोह। वाघां रै क्यूंकर वणै, आरण आळसणोह। —बां. दा.

वाड़णी, वाड़बी—देखो 'बाड़णी, बाड़बी' (रू. भे.)

वाड़भेय—देखो 'वाड़वेय' (रू. भे.) (अ. मा.)

वाड़लियौ—देखो 'बाड़लौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—अहड़ा तौ **वाड़लिया** म्हांरै घर घणा रे, लंजा ओठीड़ा ऐ लौ। खूंट्यां टंक्या नवसरहार वाला जी। —लो. गी.

वाड़ली-सं. स्त्री.—देखो 'बाड़ली' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तिमणियै रै बाद आई **वाडली**, कातरिया नै कड़ौलियां री बारी। —रातवासौ

वाड़लौ—देखो 'बाड़लौ' (रू. भे.)

वाड़व, वाड़वा—१ देखो 'बाड़व' (रू. भे.)

उ०—१ वदन तेज कळपंत री वयळ **वाड़व** वर्णं, ऊफणे क्रोध पोरस अमांमौ। मंडांणौ हैक राजा घणै मछर सूं, साहजादां दहूं तणे सांमौ। —महाराजा जसवंतसिंह री गीत

उ०—२ देवी कूरम रे रूप तूं मेर पूठी। देवी **वाडवा** रूप तूं आग ऊठी। —देवि

२ देखो 'बड़वा' (रू. भे.)

वाड़वाग, वाड़वाग्नि—देखो 'बड़वाग्नि' (रू. भे.)

उ०—१ भूम वहंतौ को जण भाळै, **वाड़वाग** निझ समंद विचाळै। —रा. रू.

वाड़वामुख-सं. पु.—पाताल। (ह. ना. मा.)

वाड़वेय, वाड़िभेय, वाड़िवेय-सं. पु. [सं. वाडवेय] १ बैल,

२ सांड। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बाडभेय, वाड़भेय।

वाड़ि—देखो 'बाड़ी' (रू. भे.)

उ०—नोबत टकोरा पड़ि नै रहिआ छै बाहरि डेरा कीआ छै। असपका खड़ी हुई छै। तंबू समीआंणां सिराइचा, रावटी, **वाड़ि** समेत करणाटी, गूडर तांणीआ छै। —रा. सा. सं.

वाड़ियौ—देखो 'बाड़ियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

वाड़ी—देखो 'बाड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ सखि ए साहिब आविया, मन चाहंदी मोइ। **वाड़ी** हुवा वधांमणा, सज्जण मिळिया सोइ। —ढो. मा.

उ०—२ सत्तम प्रहरै दिवस कै, घण जु **वाड़ियां** जाइ। आंणै द्राख-विजोरियां, घण छोलइ, प्रिउ खाइ। —ढो. मा.

उ०—३ वे अरथ छांह पंथी विरथ, हेत कपट हरियावळी। मौकमा कमंध मोटा मिनख, **वाड़ी** फूली रावळी —अरजुणजी बारहठ

उ०—४ नबाब खांनखांनी सारा बेड़ा हुता इण री बीगड़ीयौ कुंही नहीं। सारां री खबरदार बीच नायक **वाड़ी** फिरता था। पोहोर २ पछै सारा उमराव आया तठै दळथंभण नांम पायौ। —नैणसी

वाड़ोटियौ—देखो 'बाड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

वाड़ौ—देखो 'बाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—सूवरां रै, आयै साल बधाया सूं **वाड़ौ** एवड़ री गळाई भरीजग्यौ हौ। —फुलवाड़ी

वाच-स स्त्री. [सं. वाक्] १ सरस्वती का एक नाम।

२ जिव्हा। (अ. मा.)

३ वांणी, शब्द, ध्वनि, वचन।

उ०—१ इम **वाच** ज्वाब 'अभमाल' रा, धरि अजागि बळधांखियौ। व्रत जेम आग सींचीं घणूं, उरस लाग उपड़ांखियौ। —सू. प्र.

उ०—२ खावौ—विलसौ भोगवौ, जो जग मांहै किम जांणौ साच। स्वाद अछै इण वात मां, इम जंपइ हो ते व्रद्धा **वाच**। —वि. कु.

उ०—३ काचा कुंभ ज्यूं काया जांणै, परायी छठी जागै। रिड़तौ तेज, भूखियौ लोह लियां रहै, काछ-**वाच** निकळंक।—रा. सा. सं.

४ बयान, वर्णन, उल्लेख।

५ वादा, कौल, वचन।

उ०—बांण पत्थ बळि भीम, जिसौ अहंकार हि रांमण। जिसौ **वाच** जुजठिल्ल, जिसौ मांणाहि द्रोणोवण। —गु. रू. बं.

६ प्रतिज्ञा, प्रण।

उ०—१ जाय पूछ्यौ महल में, रांणी भाख्यौ साच। पदमणि परणोवा सही, चाल्यौ पालण **वाच**। —प. च. चौ.

उ०—निस प्रथम जांम आलोझ नर, दारण 'सोनागिर' 'दुरग'। कर **वाच** वाद अकबर कुसळ, 'वीद' हरै सझिया विड़ंग। —रा. रू.

७ यश, कीर्ति। (ह. नां. मा.)

८ प्रशंसा, स्तुति।

उ०—जिकां भलां धन जोड़ियौ, ऊधमियौ निज आच। कीरत पोहरै करन रै, वीदग ऊठै वाच। —बां. दा.

९ मछली।

१० मदन नामक, पौधा।

[अं.] ११ घटिका, घड़ी।

१२ देखो 'वत्स' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बाच।

वाचक-वि. [सं.] १ कहने वाला, बोलने वाला।

२ बताने वाला, बोध कराने वाला।

३ वाचन करने वाला, पढ़कर सुनाने वाला।

४ साधक।

उ०—माया कथा मिळै नहिं माया, यूं **वाचक** तत् कूं नहिं पाया। दरद मिटै नहिं कोई। —स्री सुखरांमजी महाराज

५ द्योतक, सूचक, प्रतीक।

[सं. वाचिक] ६ वाणी सम्बन्धी।

७ शाब्दिक।

८ मौखिक।

सं. पु. [सं. वाचक] १ वक्ता, व्याख्याता।

उ०—**वाचक** ग्यांनी बुगल बरावर। लक्ष हंस रहता सुख सागर, हीरां चूंण चुगोई। —स्री सुखरांमजी महाराज

२ व्यंजक शब्द।

३ पाठक।

४ संदेशवाहक, दूत।

५ समाचार, संदेश, खबर।

६ भाषा विज्ञान के अनुसार तीन प्रकार के शब्दों में साक्षात्-अर्थ बोधक शब्द, नाम, संज्ञा।

रू. भे.—बाचक, वाचिक, वाची।

वाचकधरमलुप्ता—सं. स्त्री. [सं. वाचकधर्मलुप्ता] १ एक प्रकार की उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो। लुप्तोपमा।

वाचकलुप्ता—सं. स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमा-वाचक शब्द लुप्त होता है।

वाचकवरू—सं. पु.—उपाध्याय वर्य।

उ०—तस सतीरथ्य **वाचकवरू** रे, हरस कुसल सुजगीस। —वि. कु.

वाचकोपमांनधरमलुप्ता, वाचकोपमांनलुप्ता—सं. स्त्री. [सं. वाचकोउपमानधर्मलुप्ता] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय हो।

वाचकोपमेयलुप्ता—सं. स्त्री. [सं. वाचकोउपमेयलुप्ता] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक शब्द व उपमेय का लोप हो।

वाचडवायौ—देखो 'बाछड़वायौ' (रू. भे.)

वाचणौ, वाचबौ—देखो 'बांचणौ, बांचबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ स्री सुविहांण दीवांण सूं हुकम फुरमायौ, सेर विलंद गुजरात राज ठहरायौ। दिली कौ नांम सुण कमांन कूं खांचै, मोरे फुरमांण हासी तैं **वाचै**। —रा. रू.

उ०—२ कारज कहीयै एह विसेस, हीयड़ै धरीज्यौ **वाची** लेख —वि. कु.

उ०—३ अगा नैणी **वाचजौ**, सैणां पत्र सनेह। बैणां हीये बरतजै, नैणां हंदौ नेह। —अग्यात

वाचणहार, हारौ (हारी), **वाचणियौ**—वि०।

वाचिओड़ौ, वाचियोड़ौ, वाच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वाचीजणौ, वाचीजबौ—कर्म वा०।

वाचन, वाचना—सं. पु. [सं. वाचनं] १ पढ़ने की क्रिया या भाव।

२ पढ़ने का ढंग।

३ पठन, पाठ।

उ०—परित्त जेहनी **वाचना** रे जिनजीं, संख्याता अनुयोग। —वि. कु.

४ कथन।

५ घोषणा।

६ प्रतिपादन, व्याख्या।

७ बताना क्रिया।

८ वाक्य, शब्द।

रू. भे.—बाचण, बाच्यन।

वाचनालय—सं. पु. [सं. वाचन+आलय] वह स्थान या कक्ष जहां समाचार-पत्र, पत्रिका आदि पढ़ने की व्यवस्था हो।

वाचनिकळंक—सं. पु. [सं. वाच+निष्कलंक] युधिष्ठर।

रू. भे.—बाचनिकळंक।

वाचबांह—देखो 'बांहबोल' (रू. भे.)

उ०—कंवर कह्यौ–स्री इकलिंग जी री **वाचबांह** छै, ज्यौं थे कह वाळी कहस्यौ तौ परमांण छै। —राव रिणमल री बात

वाचलौ—वि. [सं. वात्सल्य] प्यार करने वाला, प्रेम करने वाला।

उ०—वीदा तो रण **वाचला**, बीदा वेर बराह। बीये दळ पयली हुवै, बीदां री हथवाह। —मारवाड़ रा अमरावां री वारता

वाचसपति, वाचस्पति—सं. पु. [सं. वाचस्पति] १ वाणी के प्रभु देव गुरु बृहस्पति की उपाधि। —अ. मा.

उ०—ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्सायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुर वेदायुर वेदादि सास्त्र रत्नसागर कूरचालसरस्वती महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष **वाचस्पति**, इसउ विद्वांस। —व. स.

२ प्रजापति, ब्रह्मा।

३ सोम।

४ बहुत बड़ा विद्वान।

वाचा—सं. स्त्री., ब. व. [सं.] १ वाणी, बोली।

उ०—दांणवां तणा फाटिगा डाचा, **वाचा** नह ऊपड़ै विचार। अणभंग 'सिवौ' खाग ऊपाड़ै, हालियौ लंक लगावण हार। —जोगीदांन चारण

मुहा.—१ वाचा खुलणा=जबान खुलनी, बोलने की शक्ति आनी ।
२ वाचाबंद होणा=बोलने की शक्ति समाप्त होना, शारीरिक शक्ति शिथिल पड़ना ।
३ वाचा बंद करणा, (देणा) निरुत्तर करना, आतंकित करना ।
२ जिव्हा, जीभ । (ह. नां. मा.)
३ वचन, वाक्य, शब्द ।
४ बोलने की शक्ति ।
५ वादा, कौल, इकरार ।

उ०—१ सत के 'सोनागिर' **वाचा** हरिचंद । साच के अजातसत्र गात रति विंद । —रा. रू.

उ०—२ ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ, अन्य उपरि रहै लीण । **वाचा** न काचा हो जे तुझनइक हइ, ते मूरख मतिहीण । —वि. कु.

उ०—३ समुद्र कनां **वाचा** लीन्ही, लेय नै छोड दीयौ । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ धरिया न्रप दत्त खाग विरद धज, ग्रह तिण रै इक रंग सेतगज । सुणि न्रप सचिव मेल्हिया साचा, वित बहु दियण कहै तिण **वाचा** । —सू. प्र.

उ०—५ इतरी सुण देवी कही—वर मांग । राजा कही—**वाचा** पाऊं । देवी कही त्रि वाचा । —सिंघासण बत्तीसी

७ प्रतिज्ञा, प्रण ।

उ०—१ इण भांत 'पतौ' रावत अभंग, वाचा सिध आपे बयण । मेवास नास मेलूं मुकर, गुमर धार लागौ गयण । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

८ उपदेश ।
६ सिद्धान्त या श्रुतिवाक्य ।
रू. भे.—बाचा, बाया, वचा, वाया ।
अल्पा.,—बायौ ।

वाचाइ—सं. स्त्री.—चारण वंशोत्पन्न वाचा की पुत्री एक देवी ।

उ०—लटीयाळ तूंही लख विरद लैण, **वाचाइ** घुंघी साच वैण । बैछरा काळका तूं अंबाय, मन रंग थळ चाळकनैचराय । —रांमदांन लाळस

वाचाछळ—वि.—किसी के साथ वचन-बद्ध होकर धोखा देने वाला ।
सं. स्त्री.—चौहानों की एक देवी ।
उ०—चहुवांण धणखरा सारा राव लाखण नाडूळ धणी तिण री पीढ़ी आसराव हुवौ । तिणरै घरै **वाचाछळ** देवी जी आया छा । —नैणसी

वाचाबंध—वि. [सं वाचा+बद्ध] जो किसी प्रकार के वचन, कौल या प्रतिज्ञा में बंधा हो, प्रतिज्ञाबद्ध ।

उ०—चौईसा आखड़ी चालण, सु तौ राव ताल्हण । महाराज मांगियौ सौ पायौ, वाचाबंधौ सुरतांण पातसाह आयौ । —अ. वचनिका

रू. भे.—बाचबंध, बाचाबंध, बाचाबंधी, वाचाबद्ध ।

वाचाबंधन—सं. पु. [सं. वाचा+बंधन] १ प्रतिज्ञा या वचन-बद्ध होने की अवस्था या भाव ।
२ वचन बद्धता ।

वाचाबद्ध—देखो 'वाचाबंध' (रू. भे.)

वाचाळ, वाचाल—वि. [सं. वाचाल] १ जो बोलने में चतुर हो, वाक्पटु ।

उ०—अधिक **वाचाल** मछराल स्रीपाल इम, घाव घमसांण हैरांण कीधा । घाव ठांमे रुहिर बिंब धारा पड़ै, अरि तणा जीव कण काढ़ि लीधा । —स्रीपाल रास

२ जो अपने वचनों पर दृढ हो, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

उ०—साचाळा **वाचाळा** बोल जगाळा सांचा । भीछाळा ए हाळा हालै हाडा रै सुभाव । —सनमांन हाडा रौ गीत

३ बहुत बोलने वाला, व्यर्थ बकने वाला, बकवादी ।
४ उद्दण्डता पूर्ण बहुत बढ़ बढ़ कर बातें करने वाला ।
सं. पु.—बहुत बोलने का एक रोग जिसमें अप शब्द भी बोल दिये जाते हैं । (अमरत)
रू. भे.—बाकचाळ ।

वाचाळता—सं. स्त्री.—१ वाचाल होने की अवस्था या भाव ।
२ बकवास ।
३ वाक्पटुता ।

वाचि—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाचिक—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाचियोड़ौ—देखो 'बाचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वांचियौड़ी)

वाची—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाच्य—वि. [सं.] १ जो पढ़ने व बाचने योग्य हो ।
२ कहने योग्य, जो कहा जा सके ।

उ०—मन बुध अमांन पहुंचे न प्रांन, बाचक न **वाच्य** वह पद अवाच्य । —ऊ. का.

३ जिसका शाब्दिक संकेत द्वारा बोध हो ।
४ जो अभिधा में जाना जाय, अभिध्येय ।
५ निंदनीय, तिरस्करणीय ।
सं. पु.—१ कठोर शब्द ।
२ कलंक, दोष ।

३ भर्त्सना, निंदा ।

४ क्रिया का वाचक ।

वाच्छि—देखो 'वत्स' (रू. भे.)

वाच्छिल, वाच्छिल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू. भे.)

उ०—१ कांमसेन किंकर थई, सेव करइ सुविचारी । विधि विधि **वाच्छिल** विस्तरइ, सयरि समप्पइ सार । —मा. का. प्र.

उ०—२ वाडव वली विचारतु, लिखवा गाथा एक । सार सरस सोहांमणी, **वाच्छिल्य** वचन विसेस । —मा. कां. प्र.

वाच्यन—देखो 'वाचन' (रू. भे.)

उ०—दळ दूजा रौ पद दळ दूजै, जांण अबै अभवन मत जोग । कवि वांछन पद **वाच्यन** करही, पढ अनभीहित वाच्य प्रयोग । —बां. दा.

वाछ—देखो 'वत्स' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

वाछड़उ, वाछड़ौ, वाछरू, वाछरौ—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ सो खेंचा तांण करी पण उठै हीज हुचका खावै पण चलै नहीं जद उण हीज वीर धवळा रौ बाळक **वाछड़ौ** तिकौ हीज इण सकट रै कंध लगाय नें ताडूकै छै । —वी. स. टी.

उ०—२ धवळ धेनुवे धवळइ वरणि, सारीखा **वाछड़ा** सुवरण । घोड़ा-तणी कळि माहि आंणि, पाइ गहइ बांध्या तिणि ठांणि । —ढो. मा.

उ०—३ गाया नै घेरी, धरमी, **वाछरू** बांध्यां जाय गवाळ ओ । —लो. गी.

वाछळ—१ देखो 'वात्सल' (रू. भे.)

उ०—देव राघव दीन पाळ दयाळ वंछित दायकं । नांम मांनव देव नांम रटंत सीय सुनायक । माथ-पच दुयेण भंज अगंज भूप महाबळं । वंद तूं 'किसनेस' पात सुपाय जे जन **वाछळं** । —र. ज. प्र.

२ देखो 'वात्सल्य' (रू. भे.)

वाछल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू. भे.)

उ०—गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी, नागेस सज्या क्रत सैन नांमी । है जंग वागां दस-माथ हंता, माहेस **वाछल्य** सुकंठ मीता । —र. ज. प्र.

वाछांट—सं. स्त्री. [सं. वात-छटा या वायुच्छटा] वायु के झोके से मकान या खिड़की से दरवाजे के अन्दर आने वाली वर्षा की बूंदे, बौछार।

उ०—पण ओरी में ई **वाछांट** सूं गिरियां-गिरियां तक पांणी भरीजग्यौ अर सांमनै सूं ठंडौ टीप वायरौ आवतौ हौ । —रातवासौ

रू. भे.—बाछांट ।

वाछिल—देखो 'वत्सल' (रू. भे.)

उ०—१ पुत्र-पांहि प्रीछिउ भलु, **वाछिल** करि विवेक । परठिउ पांणी छांटवा, सही तिणि दीधउ सेक । —मा. कां. प्र.

उ०—२ कोई सखी कौतुक गणी, **वाछिल** जंपइ वांणि । क्षमा करइ तु हूं खरूं, जंपू जोडी पांणि । —मा. कां. प्र.

वाछोड़—सं. पु. [सं. वात्सकम्] गायों के बछड़ों का समूह ।

वाछोड़ियौ, वाछोलियौ, वाछोलौ—सं. पु.—१ गाय या भैंस का मरा हुआ बच्चा जिसमें मसाला भर कर रक्खा गया हो ।

२ गाय के बछड़े का चमड़ा ।

३ देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

वाछौ—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेरा **वाछा** रमै छै गो-ठांण. कुण चुंधावै, बाबल तेरी धीय विना । —लो. गी.

वाजंत वाजंत्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ हुकम लेर भड़ हालिया, साहू करां समसेर । जेम न कीधी जादवां, **वाजंत्र** दिया विखेर । —वी. स. टी.

उ०—२ मंगळ धमळ उदमाद, वजै **वाजंत्र** जिण वेळा । ग्रहि ग्रहि उडि गुड्डियां, मिळै सज्जण घण मेळा । —सू. प्र.

उ०—३ आरंभ काज गज आरुहै, अनमित सेन उलट्टियौ । सुणियौ प्रचंड **वाजंत्र** सुर, किर ब्रहमंड पलट्टियौ । —रा. रू.

वाजंद, वाजंद्र—देखो 'वाज' (मह., रू. भे.)

उ०—अनि लोक संपति इंद, जिण मांहि दळ **वाजंद** । दइवांण सोबादार, पाठांण सूर अपार । —सू. प्र.

वाज—सं. पु. [सं.] १ संग्राम, युद्ध ।

२ ध्वनि, नाद ।

३ घृत, घी ।

४ यज्ञ ।

५ अन्न ।

६ जल ।

७ बल ।

८ पलक ।

९ मुनि ।

[फा. वा' ज] १० धार्मिक उपदेश ।

११ सीख, नसीहत ।

वि. [फा. वाज] १ स्पष्ट, खुला ।

२ व्यक्त, प्रकट ।

३ देखो 'बाज' (रू. भे.) (अ. मा., ना. डिं. को.)

उ०—१ वहै क **वाज** पत्थए, अकास मैं क रत्थऐ । सीरम साह नस्स है, विवांण उड्डिया वहै । —गु. रू. बं.

उ०—२ ढैच ढाळव्वळा, अस्सि ऊतांमळा । वहै वेगागळा, **वाज** वाहै नळा । —गु. रू. बं.

उ०—३ दिल्लीवै सुरतांण, **वाज** वंका वैगागळ । सूंटी ले मेल्हीया जूह मद वहता मैंगळ । —गु. रू. बं.

उ०—४ तरै सरब ठाकुर आरोगै छै-अो ठाकुर हाथ नीचो करै तो **वाज** नहीं । तरै अो बोलियौ-ठाकुरै अजूं वाज ही नही आयी छै काहूं आरोगां ।

वाजण—देखो 'बाजण' (रू. भे.)

वाजणी—देखो 'बाजणी' (रू. भे.)

उ०—सुराही गळारै घाटि सभा सलां पींडी भीगै गिरीऐ ऊपरि **वाजणी** पायाल रा घूघरा रमझोळ झणकिआ जांणे कळहंस रा बच्चा बकोर करि रहिआ छै । —रा. सा. सं.

वाजणूं, **वाजणौ**—देखो 'बाजणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रंगीलो चंग **वाजणूं** म्हांरै वीरैजी मंढायो चंग वाजणूं । —लो. गी.

उ०—२ म्हारी मा री ए जायी विछिया घड़ा चूं ए बाई तनै **वाजणा** । —लो. गी.

वाजणौ, **वाजबौ**—देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ सो पड़िया दूजा सुहड़, अन ऊपड़िया खेत । अंग नत्रीठा **वाजिया**, आद 'दुरग्ग' सचेत । —रा. रू.

उ०—२ तठै झगड़ो हुवौ ठाकर जगरूपसिंघ विहारीदास दोनूं **वाज** मूवा । —दा. दा.

उ०—३ गहगहिय थाट बेऊं गरीठ, राठउड़ि रउद्रि **वाजियउ** रीठ । सूरा सधीर वाजइ सरोस, पड़िफाळ ऊडइ जिरहपोस । —र. ज. सी.

उ०—४ इम जीपै आवियो, गंग' **वाजतां** नगारां । सुजस वधै घर सिरै' उछक छक वधै अपारां । —सू. प्र.

उ०—५ आरती उतारीजै छै । केसरि-चंदण चरचीजै छै । अगर उखेवीजै छै । पंचसबदा **वाजि** रहिआ छै । झालरिआं झणकार हुइ नै रहिआ छै । —रा. सा. सं.

उ०—६ के जम नांम तणो तन सज कर, भै जमहूं डर डर मन भाजै । किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां, वीठळनाथ अनाथां **वाजै** । —र. ज. प्र.

उ०—७ जिण दीहै पावस झरइ, **वाजइ** ताढौ वाय तिण रिति मेल्है माळविण, प्री परदेस म जाय । —ढो. मा.

उ०—८ मोर सोर मंडै, इंद्र धार न खंडै, आभो गाजै, सारंग **वाजै** । —रा. सा. सं.

उ०—९ जुध तणो भरोसो अगै ही जांणत, कमध खग चाळ घखचाळ करंता । 'मांनडो' 'वैण' फौजां तणा मोहरी, **वाजि** वैकूंठ गया डांण भरता । —जगो सांदू

वाजणहार, **हारो**, (**हारी**), **वाजणियौ**—वि. ।

वाजिओड़ो, **वाजियोड़ो**, **वाज्योड़ो**—भू० का० कृ० ।

वाजीजणो, **वाजीजबौ**—भाव वा० ।

वाजत्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ **वाजत्र** वजत विमेक, न्रित गांन करत अनेक । सोभंत इंद्र समाज, रविवंस रवि महाराज । —सू. प्र.

उ०—२ धीरवंत कुमर नै निरखी, धीवर पाइ लागा । स्वांमी पणे थाप्यो सहु मिलनै, जस ना **वाजत्र** वागा । —वि. कु.

वाजपत, **वाजपति**—सं. पु. [सं. वाजपति] अग्नि, आग ।

वाजपेई, **वाजपेय**, **वाजपेयी**—सं. पु. [सं. वाजपेयी] १ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

उ०—जोसी जांनी जेतला, पाठक पंड्या पाढि । **वाजपेय** दीक्षित दवे, राउल-सरसा राढि । —मा. कां. प्र.

२ अत्यन्त कुलीन पुरुष ।

[सं. वाजपेय] ३ एक प्रसिद्ध यज्ञ ।

वाजब—देखो 'वाजिब' (रू. भे.)

उ०—अबै ही तो चूंडो ऊबरै अनै हूं ई इण म्हारै सूरवीर धणी नै समझाय नै कहूँ की जगत में वळै ही सूरवीर है सो आपने अबै मांनणो **वाजब** है । —वी. स. टी

वाजबी—देखो 'वाजिबी' (रू. भे.)

वाजा—सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा । (बां. दा. ख्यात)

वाजाळ—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.) (डि. नां. मा.)

वांजित्र—देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—वजि थाळ सकळ **वांजित्र** घजे, कुसम सघण सुरियंद किया । वेखियां हीज आवै वणे, उण दिन तणी अजोधिया । —सू. प्र.

वांजिद, **वांजिद्र**, **वांजिद्रक**—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.)

उ०—१ नल नदियां वीजळ निसा, गिणे न जळ थळ घाट । आवै राजिद प्रीतवस, **वांजिद** खड़िया वाट । —पनां

उ०—२ थोर पींडा पग्ग थंभ, गात जांणे गजखंभ । सतेज रूप साहणं, **वांजिद** राज वाहणं । —गु. रू. बं.

उ०—३ घण जांणिक घट्टा साहणं छुट्टा सातक फट्टा सांमद्रं । सणणो सीचांणां जेम विवांणां वांनर डांणां **वांजिद्रं** । —गु. रू. बं.

७ घेरा, आहता।
८ बाग, उद्यान।
९ लतामण्डप।
१० समय, वक्त।
११ कमर, कटि, कूल्हा ।
१२ पेट में होने वाला मरोड़ा, ऐंठन ।
१३ वस्तु।
१४ अन्न विशेष।
१५ इमारत।
१६ घोड़े या घोड़ी का पेशाब ।
१७ घोड़ी की योनि ।
१८ तोलने के आधान, तोल।
१९ विवाह मण्डप में अग्नि की परिक्रमा (भांवर) देने के पश्चात कन्या को उसके पिता द्वारा पहनाई जाने वाली पोशाक।
वि. वि.—देखो 'धरममंढ'
रू. भे.—बट, बट्ट, बाट, बाटी, वट, वट्ट, वट्टि, वाटि, वाटि वाटी।
अल्पा.—बाटड़ली, बाटड़ी, बाटली, वाटड़ली, वाटड़ी, वाटली।
मह.—बाटड़, वाटड़।

वाटकड़ी—देखो 'बाटकी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आटकड़ी नहीं जीमें **वाटकड़ी** नहीं जीमें। ऐ तो जीमें वांरा कोडिला सालाजी रा मोटोड़ा थाळ में। —लो. गी.

वाटकड़ौ—देखो 'बाटकौ' (अल्पा., रू. भे)

वाटकियौ—देखो 'बाटकौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हरसा बीर मेरा रै, एकै आंगरण में रै दोन्यू खेलिया, एकै **वाटकियै** पीयौ दूध । —लो. गी.

वाटकी—देखो 'बाटकी' (रू. भे.)

उ०—उपरि सोना नां थाळ अत्यंत घणु विसाल, विचिमांहि चउ-सठि **वाटकी** लगार नहीं जांति काटकी। —व. स.

वाटकीटाळ—देखो 'बाटकीटाळ' (रू. भे.)

वाटकौ—देखो 'बाटकौ' (रू. भे.)

उ०—सु ग्वारां रै चावळ मूंगां री खीचड़ी तयार थी सु **वाटका** एकरण मांहै घात ल्याया, मांणकराव चढियै हीज खाधी। —नैणसी

वाटड़-सं. पु.—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)

वाटड़ली—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लागै रै भंवरजी मेहूड़ा री छींटां, रावळी कटारी रा घाव । पधारो मारवरण रा रसिया, मेंलां जोऊं **बाटड़ली**। —लो. गी.

वाटड़ा-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

रू. भे.—बाटड़ा, बाटाड़ा।

वाटड़ी—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **वाटड़ी** जोवतां थई कन्यका जी, लख्रण्य गुण रूप तरणौ जांरणे धांम हो। —वि. कु.

उ०—२ सज्जरण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारंग। जिरण वाटइ सज्जरण गया, सा **वाटड़ी** सुरंग। —ढो. मा.

वाटणौ, वाटबौ—देखो 'बांटणौ, बांटबौ' (रू. भे.)

वाटबड़—देखो 'बाटबड़' (रू. भे.)

वाटपाड़उ, वाटपाड़ौ—देखो 'बटपाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ चोर चरड नइ चाडिया, गांठीछोडा गाहाट । **वाटपाड़ा** नइ फांसिया, नाडी त्रोड़ा नाट। —मा. कां. प्र.

उ०—२ चोर चरड वहुल, **वाटपाड़ा** तरणा कलकल, धरम गुरु चपल पापोपदेस कुसल —व. स.

वाटभोजन-सं. पु. [सं. वाट+भोजन] यात्रा में मार्ग में, किया जाने वाला भोजन।

वाटर-सं. पु. [अं.] पानी, जल।

वाटरप्रूफ-वि. [अं.] जिस पर पानी का असर न हो, जिसमें से पानी नहीं निकलता या छनता न हो।

सं. पु.—उक्त प्रकार का कपड़ा।

वाटरवरक्स-सं. पु. [अं. वाटरवर्क्स] नगर में पानी की व्यवस्था करने वाला विभाग, जलदाय विभाग।

वाटलउ—देखो 'वाट' (रू. भे.)

उ०—जातु सही जासइ हरी, चोर तरणी जिम चाल । वंछित पांमिउ **वाटलउ**, ने परिण त्राटला काल। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'वाटलौ' (रू. भे)

वाटली-सं. स्त्री. [सं. वर्त्तुलिका प्रा. वट्टुली] १ अंगूठी । मुद्रिका । (उ. र)

उ०—१ मोती-जड़ी ज हाथि, सुरह-सुगंधी **वाटली**। सूती मांझिम रात, जांणू ढोलू जागवी। —ढो. मा.

उ०—२ खूरणाली खांति वली, वली **वाटली** कोट। बाली परवाळी अधर, अमी तरणी तिहां ओट। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—वाटुली।

५ देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)

६ देखो 'वाटी' (अल्पा., रू. भे.)

७ देखो 'बाटली' (रू. भे.)

वाटलीयौ-सं. पु.—१ वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडीआं सरणीआं

उ०—सौरयव्रत्ति जेह नइ समग्र, मूस माहि फिरता सुवरण्ण नी परिइ **वाटुलां**, वीज सरीखां नयन तेह नइं भइं ऊपजइं गजनइं रोगक्षयन। —व. स.

वाटौ—देखो 'बाटौ' (रू. भे.)

वाड—१ देखो 'बाड़' (रू. भे.)

उ०—यंत्र मंत्र मसांण गीध करकां की **वाड** मंडी। —अ. वचनिका

२ देखो 'वाट' (रू. भे.) (७)

उ०—जठै अमरसिंघजी घोड़ौ कुदायौ सौ हमजै रै हाथी रै दांतूसळां ऊपर पग मेलिया। अरु अमरसिंघजी रौ डावौ हाथ हौदै री **वाड** मैं पड़ियौ। —द. दा.

३ देखो 'बाढ' (रू. भे.)

उ०—जमी खेद लागा प्रळै काळ रूपी वीर जुटा, नीराताळा बांण छूटा आतसां नीहाव। कैवांण **वाड** सूं सत्रां झोकीया भारात कूंपै, 'हरा' वाळै जाडा थडां झोकिया हेराव। —विसनसिंघ रौ गीत

वाडगिरी-सं. पु.—पर्वतों में श्रेष्ठ हिमालय पर्वत।

वाडचर-सं. पु.—सूअर, वराह। (अ. मा., ह. नां. मा.)

वाडणौ—देखो 'बाढणौ' (रू. भे.)

उ०—वाहरू धरा आंटायतां **वाडणा**, पखां जळ चाडणा अखाड़ै पाथ। 'नाथ' रौ ऊथपै जकौ राजा नहीं 'नाथ' रौ थपै सुज जोधपुर नाथ। —हटौजी खिड़ियौ

वाडणौ, वाडबौ—देखो 'बाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—'**विड़देस**' पवंगै **वाडतै**, खग नागपुर घर खाटतै। जीवता केहर तणी जांणौं, खांच काढी खाल। —रा. रू.

वाड़णहार, हारौ (हारी), वाडणियौ—वि०।

वाडिग्रोड़ौ, वाडियोड़ौ, वाडचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वाडीजणौ, वाडीजबौ—कर्म वा०।

वाडभेय—देखो 'वाडवेय' (रू. भे.) (अ. मा.)

वाडम—१ देखो 'वडम' (रू. भे.)

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

वाडली—देखो 'बाड़ली' (अल्पा., रू. भे.)

वाडलौ-सं. पु.—१ ऊंठ या घोड़े को खुला छोड़ते समय उनके पावों में लगाया जाने वाला बंधन, जिससे पशु चल सकता है पर भाग नहीं सकता।

उ०—तितरै मारग मांहै ढोलेजी नै चारण मिळीयौ। कह्यौ, जे ठाकुरां, उंठ खोडावै नें बेऊं जणा ऊपर चढीया। सो इसौ करहा में कासूं खून छै। ... दीनी। तारै चारण उंठ रै ... पगां हुवौ। —

२ देखो 'बाड़लौ' (रू. भे.)

वाडव-सं. पु.—[सं. वाडव्यं] १ ब्राह्मण।

उ०—१ पणि **वाडव** बंधवु नहीं, दीजइ देस-निकाल। वार विलंब न कीजइ, ते माटइ ततकाल। —मा. कां. प्र.

उ०—२ दैवइं लिखिउं ते नवि टलइ, **वाडव** रहिउ विचारि। धीर धरी घर उडितु, हईडां हवइ म हारि। —मा. कां. प्र.

उ०—३ **वाडव** संभलि वीनती, सूर देवरावूं साखि। यौवन मइं इम जालविउ, रंक रयण जिम राखि। मा. कां. प्र.

उ०—४ घरि घरि दो दो दीसीइ, चरसिइ आभि अगालि। लेई आवै लाख ते **वाडव** वाचा पालि। —मा. कां. प्र.

वाड़वक-सं. पु.—शृंगार में एक आसन विशेष।

वाडवेय-सं. पु. [सं.] १ सांड।

२ बैल।

रू. भे.—बाडभेय, वाडभेय, वाडिभेय।

वाडहोळौ-सं. पु.—भय का गोला।

उ०—वैरियां री फौज रै म्हारौ पती जावतां ही दुसमणां री छाती में हौल खाडा पड़ण ढूक जावै **वाडहोळा** (भै रा गोटा उठै छाती नें) निजर पड़तां ही अर सिपाही ओडौ ओळा ताक ताक नै कहै आयौ आयौ। —वी. स. टी.

वाडि—देखो 'वाटिका' (रू. भे.)

उ०—माझळि झूथ मतंगा, घण मद मोख खोख घूमंता। ताकि वाडि विलगा काकीडा, ननै कूदंति। —रांमरासौ

२ देखो 'वाटी' (रू. भे.)

वाडिभेय—देखो 'वाडवेय' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वाडिम—१ देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—देसा सिरोमणि दीपणौं, जुध जीपणौं जमरांण। देसोत **वाडिम** दाखणौ, घर राखणौ लखधीर। —ल. पिं.

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

वाडियोड़ौ—देखो 'बाढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाडियोड़ी)

वाडियौ—देखो 'बाड़ियौ' (रू. भे.)

वाडी-सं. स्त्री.—१ रथ।

उ०—इक दिन इक अटवी में ऊभौ, छबि सखरी तरु छाया। **वाडी** चढि राय दसारण, उणहिज वडि तलि आया। —ध. व. ग्रं.

कस्तूरीश्रां प्रतापीश्रां, कुसंभीश्रां [illegible]

वाटलौ 'वाटौ' (स्रीश्रां मगीश्रां जे. र.)

देखो 'वाटिका' (रू. ल्पा., रू. (उ. र.)

उ०—वीर जइ वाडी माहि [illegible] कींउ विस्रांम। चंपक-तलि चिंता समी, निद्रा श्रावी तांम। —मा. कां. प्र.

वाडौ—देखो 'वाड़ौ' (रू. भे.)

वाढ—देखो 'बाढ' (रू. भे.)

उ०—१ वणाय खाग चाढि वाढ, श्रोपवै उजास रा। वणत वीच नीर वाधि, रूप में वणास रा। —सू. प्र.

उ०—२ मरद घमसांण पुह लिये श्रालोमणां, वढण कज वाढ भेरीजीये वीजळां। डोह घड़ चोवड़ा फतह जग खळां डळां, खत्री गुर रौ छएल करै नत धूंकळा। —श्रज्ञात

उ०—३ दांतूसळ वजर घजर जमदाढ़ां, वाढ़ां ऊगाढां विहर। श्रसपति नजर भलौ श्राफळियौ, कुंजर नै नाहर कवर। —लिखमीदास गाडण

उ०—४ घणी तरवारचां रा वाढ उछळै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—५ लड़ पड़ै फूट छड़ छाक लोह, छड़ पकड़ जड़ै जमदढ़ छछोह। भड़ियाल वाढ खग धजर भाट, घड़ियाल फजर गढ लक घाट। —बि. सं.

वाढण—देखो 'बाढण' (रू. भे.)

उ०—पायकां पद खाग घणू पलकी, हव लागत 'पाल' तणी हलकी। दोयणां सिर वाढण श्रान दुश्रौ, हरणांखुर 'ढेव' सवार हुश्रौ। —पा. प्र.

वाढणौ—देखो 'बाढणौ' (रू. भे.)

वाढणौ, वाढबौ—देखो 'वाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वहता रगत देखि खळ वाढै। चंद्रप्रहास ग्रहै घक चाढै। —सू. प्र.

उ०—२ सत्रू वाढि सीस पूजै सकत्ति। वाढेल कहाया इण विगत्ति। —सू. प्र.

उ०—३ 'वीरम' सलखावत खगां बाग। जोइयां वाढि बिढियौ वजाग। —सू प्र.

उ०—४ तरै गरीबनाथ कुहाड़ियौ लेनै श्रांबा वाढण नूं ऊठियौ। तरै चेले १ कह्यौ—हाथां रा पाळिया कांय वाढौ। —नैणसी

उ०—५ राजाजी नै रीस तौ ऐड़ी श्राई के डोकरा रौ माथौ वाढ न्हांकै। पण पटकता बोल्या—थूं भूठौ नीं है तौ कांई म्हैं भूठौ हूं। —फुलवाड़ी

उ०—६ मिळग्यौ तौ कुचमादी री एक-एक रग सगळां सस्तरां सूं वाढेला। —फुलवाड़ी

उ०—७ वांक मुहा वाजिद बिवांणां, दाढ़ां पीसै रीस लगांणां। धरती धमस तुरां धम धमी, वाढै साढ सेट सीरम्मी। —गु. रू. बं.

वाढणहार, हारौ (हारी), वाढणियौ—वि०।

वाढिश्रोड़ौ, वाढियोड़ौ, वाढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वाढीजणौ, वाढीजबौ—कर्म वा०।

वाढाळ—देखो 'बाढ़ाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—धोराड़ि जमदढ़ फाटि फटै घट, नीसर सुस्सर सेल नरां। वाढाळ वहै रत खाळ विछूटै, रंभ वरै वरमाळ वरा। —गु. रू. बं.

वाढाळी—देखो 'बाढाळी' (रू. भे.)

वाढाळौ—देखो 'बाढालौ' (रू. भे.)

उ०—१ चाढ़ां दहुं वळ चाढवै, भळहळ भूलाळा। खुरसांणां दहुं दळ खिवै, वींजळ वाढाळा। —सू. प्र.

उ०—२ वढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, वभियौ सुरजन देख वढ़। गढ चित्तौड़ गरव तण गरजै, गाडौ गौ रणथंभ गढ। श्रज्ञात।

उ०—३ बीकानेर भोज वाढाळै, सारां मुंह श्रोडवै सरीर। 'रूपा' हरै राखियौ रूडौ, नेहचैई ऊतरतौ नीर। —द. दा.

वाढियोड़ौ—देखो 'बाढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाढियोड़ी)

वाढेती—देखो 'बाढेती' (रू. भे.)

वाढेल—सं. पु.—१ राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

२ पंवार वंश की एक शाखा।

३ देखो 'वाढेलौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—बाढेल।

वाढेलौ—वि.—१ वीर, योद्धा, बहादुर।

सं. पु.—२ पंवार वंश की 'वाढेल' शाखा का व्यक्ति।

३ राठौड़ वंश की 'वाढेल' उपशाखा का व्यक्ति।

रू. भे.—बाढेलौ।

मह.—बाढेल, वाढेल।

वाढोवाढ—सं. पु.—प्रहार पर होने वाला प्रहार, घाव पर घाव।

वा'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

वा'णौ, वा'बौ—देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

उ०—पाछी री पाछी सुथरा पांणी रौ लोटौ लेय मासी रै गोडै श्राई। हाथ पग दबावण लागी। पछै नाक री फुरणियां भींच मासी रौ सास रोक्यौ। पांणी रा छाबका दिया। दो तीन तड़ाचां वा'यनै मासी थोड़ी सी श्रांख्यां खोली। —फुलवाड़ी

वात—सं. पु. [सं.] १ वायु के श्रधिष्ठाता, पवन देव, श्राठ दिग्पालों में से एक।

सं. स्त्री.—२ वायु, पवन, हवा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—फागुन फरहरै वात प्रभात नौ सीत अपार। नाह सुं फागन रमैं बहु राग, सुहागणि नारि। —ध. व. ग्रं.

२ शरीरस्थ तीन तत्व-कफ, वात पित में से दूसरा, जिसके कुपित होने से अनेक रोग पैदा होते हैं।

उ०—आधि भूतक अधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित। त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध में, न भवति वेलि जपंतनित। —वेलि

३ शरीर की अपान वायु, अधो-वायु।

रू. भे.—बत, बात, बाय, वायइ।

४ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—१ अहै अंत्रावळि, उड़ि चली ग्रीभरणी। त्रिहूं भुवण रही वात सोहड़ां तणी। —हा. झा.

उ०—२ वरि हूं आविसी थई रही, मझ लागी हूं मात। मइं माधव-विण एक क्षण, जीव्यानी नहीं वात। —मा कां. प्र.

उ०—३ पिता प्रणांम करूं किस्यूं, मोकलावउं किहां वात। करसिइं ते कलपांत कलि, स्रवणि सुणंतां बात। —मा. कां प्र.

उ०—४ रावळा आसापुरां जांणै, थां थकां क्युं न जांणां। रावळ टीकै बैठे, तरै म्हां नै रावळ वात। —नैणसी

उ०—मास तीन चार री आवाधांन छै। समुद्र मोहल में बैठी छै। वातां एकांयत करै छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

वातकंटक-सं. पु. [सं.] एक वायु रोग जिससे पावों की गांठों (ग्रंथियों) में दर्द होने लगता है।

वातकार-वि. [सं] १ वायु उत्पन्न करने वाला।

२ वह खाद्य पदार्थ जिनका उपयोग करने से वायु उत्पन्न होती है।

३ देखो 'बातकार' (रू. भे.)

उ०—वंसकार यंत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुंगलकार आउजकार पखाउजकार गीतकार वातकार, न्रत्यकार पाडकार। —व. स.

वातकोप-सं. पु. [सं.] शरीर के अन्दर होने वाला वायु का प्रकोप। (वैद्यक)

रू. भे.—वातप्रकोप।

वातगर—देखो 'बातकार' (रू. भे.)

उ०—राजद्वारिक लेखक कथक वातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय बइकार। —व. स.

वातगुल्म-सं. पु. [सं.] १ वात विकार से होने वाला गुल्म रोग (वैद्यक)

२ वात चक्र, अंधड़।

वातड़ली, वातड़ी—देखो 'बात' (अल्पा रू. भे.)

उ०—१ था वीना सारी वातड़ी, सूनी होयसी सार वै। कुवर कहहै रै सूवटा, आइ राकस हार वै। —रीसालू री बात

उ०—२ मात-पिता सै वीसरै, बंधू वीसारैह, सूरां पूरां वातड़ी, चारण चीतारैह। —अग्यात

उ०—३ सेवै नर सदीना मुरघर, सदा नीरोगी ही रवै। बूठै जांरी वातड़ी नै, वगत वटाऊड़ा कवै। —दसदेव

उ०—४ पंथी नइ पूछूं वातड़ी रे, तुमे आया उग्रसेन पुर थी आज रे। तिहां दीठा अम्ह गुरु राजीया, श्रीजिनकुसल सूरि राज रे। —स. कु.

वातचक्र-सं. पु. [सं.] १ आषाढ मास की पूर्णिमा के सूर्यास्त को आने वाला ज्योतिष का एक योग।

२ देखो 'वथूळी' (रू. भे.)

उ०—ऊपड़ी रजी मभि अरक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसंति। सद नीसह नीसांण न सुणिजै, वरहासां नासा वाजंति। —वेलि

वातचीत—देखो 'बातचीत' (रू. भे.) (उ. र.)

वातज-वि. [सं.] वायु द्वारा उत्पन्न, वायुकृत।

सं. पु.—१ हनुमान।

२ भीम।

वातजात-सं. पु. [सं. वात-जायते] १ हनुमान।

२ भीम।

वातज्वर-सं. पु. [सं.] वायु विकार के कारण होने वाला ज्वर।

रू. भे.—वायज्वर।

वातप-सं. पु.—हरिण, मृग। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बातप।

वातपुत्र-सं पु. [सं.] १ हनुमान।

२ भीम।

वातपोत, वातपोथ-सं. पु. [सं. वात पोथः] पलास का वृक्ष।

वातपोस—देखो 'बातपोस' (रू. भे.)

उ०—राव जोधौ पोढियौ हुतौ। वातपोस वात करता हुता। राजवियां री वातां करता हुता। —नैणसी

वातप्रकोप—देखो 'वातकोप' (रू. भे.)

वातप्रकृति, बातप्रगति-वि. [सं. वातप्रकृति] १ जिसकी प्रकृति में वायु की प्रधानता हो।

२ जिसके खाने से शरीर में वात-वृद्धि होती हो, जो वायु

।।

वातरक्त, वातरगत–सं. पु. [सं. वात-रक्त] कुपथ्य या अयुक्ताहार-विहार से वात विकार के कारण रक्त विकार होने का एक रोग ।

वातरोहिणी–सं. स्त्री. [सं.] मुंह में होने वाला एक रोग ।

वि. वि.—इस रोग में जीभ पर चारों ओर कांटे के समान मांस उभर आता है ।

वातल, वातली–सं. पु. [सं. वातालः] १ चना ।

वि.—१ वायु वर्द्धक ।

२ वात युक्त, वायु प्रधान ।

उ०—भक्ष्य भोजन निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमरयाद, रहस भेद, रसच्छेद, आऊसां स्तोक निवाणिज लोक, देह **वातली**, भक्ति पातली, अल्प अत्यु, पगि पगि अकृत्य, बाप बेटा तणा गरथ सांतइं, आपणां छोरु कुक्षेत्रि घातई। —व. ब.

३ देखो 'वातोल' (रू. भे.)

वातलड़ी—देखो 'बात' (रू. भे.)

वातविगत—देखो 'बातविगत' (रू. भे.)

वातवैरी–स. पु.—बादाम ।

वातव्याधि–सं. स्त्री.-गठिया रोग ।

वातहडा–सं. पु.—कोई जाति या वर्ग विशेष । (सभा)

वाताट–सं. पु.—१ सूर्य का घोड़ा ।

२ मृग या हरिण ।

वातात्मज–सं. पु. [सं.] १ पवन-पुत्र हनुमान ।

२ भीम ।

वातापि, वातापी–सं. पु. [सं. वातापिः] १ एक पौराणिक राक्षस जो आतापि का भाई था।

उ०—**वातापी** पीधू वली, अंगइ अणि अगस्ति । इंद्र तणा आयुध गली, दीध दधीचिइं अस्थि । —मा. कां. प्र.

२ हरिण, मृग ।

वातायण, वातायन–सं. पु. [सं. वात+अयनं] १ खिड़की ।

२ झरोखा।

३ रोशनदान।

४ घर के दरवाजे के आगे की पटी हुई जमीन ।

५ फर्श, गच ।

६ जाली ।

[सं. वात+अयनः] ७ घोड़ा, अश्व ।

रू. भे.—बातायण ।

वातायनासन–सं पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि. वि.—इसमें बांये पैर की ऐड़ी दाहिने पैर के जांघ के मूल में लगा कर, घुटना दाहिने पांव के घुटने पर लगाकर खड़ा रहना होता है ।

वातायु, वातायू–सं. पु. [सं. वातायुः] १ हरिण । (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ बारहसिंगा ।

वातारि–सं. पु. [सं] १ एरंड ।

२ अजवायण ।

३ वायवड़िंग ।

४ सतावर ।

५ बील का पोधा ।

वाताल–वि —बातें करने वाला, बातुनी ।

वाताळगौ–सं. पु.—वात चीत, वार्तालाप ।

उ०—ताहरां भाटियै कहियो-पांणी पावो, ज्युं **वाताळगो** करां वैर भांजां । —नैणसी

वाति–सं. स्त्री.—१ घोड़े का मूत्र ।

उ०—घोड़ो मोल लेतां डावो पग आघो करै सो न लीजै । जीमणो पग आघो करै सो लीजै । (शुभ) जको घोड़ो मोल लेतां हींसै और खता करै लाद करै सो लीजै । (शुभ) **वाति** करै सो न लीजै, लाद करै सो सुखदाई । —शा. हो.

रू. भे.—वाती ।

वातियौ—देखो 'बात्यौ' (रू. भे.)

वाती–सं. स्त्री.—१ कच्चे मकानों की छाजन पर लगाया जाने बाला पतली लकड़ियों का बंध ।

उ०—वाडै फोग खेतड़ा कढ़ै, सीवां वाड़ वणावता । टापी टाटा टेर **वाती**, फलसां छांट छवावता । —दसदेव

२ देखो 'वाति' (रू. भे.)

३ देखो 'बाती' (रू. भे.)

वातुंनी, वातूंनी—देखो 'बातूंनी' (रू. भे.)

वातुल, वातूल–वि. [सं. वातुल] १ उन्मत्त, मस्त । २ पागल । ३ सनकी । ४ वायु से पीड़ित, गाठिया का रोगी ।

रू. भे.—बातूल ।

वातोकळौ—१ देखो 'बातूंनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वारतालाप' (रू. भे.)

वातोदर–स. पु. [सं.] एक रोग विशेष जिसके कारण हाथ-पांव, नाभि, कांख, पसली पेट, कमर और पीठ में पीड़ा होती है, तथा सूखी खांसी आती है और शरीर भारी रहता है ।

उ०—महोदर जलोदर कठोदर **वातोदर** भगंदर अतिसार ।
—व. स.

वातोरमी–सं. स्त्री. [सं. वातोर्मी] एक वर्ण वर्त्त जिसमें ग्यारह अक्षर होते है, जिसका क्रम मगण, भगण तगण और अंत में दो गुरु होते हैं ।

वातोळ-सं. स्त्री.—रबी की फसल में बोवाई से पहले की जाने वाली खेत की जुताई ।

वातौंण-सं. पु.—बातचीत ।

उ०—वरी सूं **वातौंण**, कासूं हव भरड़ा करै । इण सात्रव हाथांण, केवा लै जमड़ा कनै । —पा. प्र.

वात्रक-सं. स्त्री.—ईडर राज्य की एक नदी ।

वि. वि.—यह दक्षिण-पूर्व में मेघराज के पास से निकल कर दक्षिण-पश्चिम में जाकर माझम नदी में मिलती है तथा बोथा स्थान पर साबरमती से मिलती है ।

वात्सल्य-सं. पु. [सं. वात्सल्यं] १ संतान के प्रति होने वाला स्नेह, ममत्व ।

२ प्रेम ।

रू. भे.—बाछळ, बाछल, वाच्छिल, वाच्छिल्य, वाछल, वाछल्य ।

वात्सायन-सं. पु. [सं.] १ कामसूत्र के रचयिता एक ऋषि ।

२ न्याय सूत्रों पर भाष्य रचयिता ।

वात्सायनसास्त्र-सं. पु.—वात्सायन ऋषि द्वारा रचित कामशास्त्र ग्रंथ (व. स.)

वाद-सं. पु. [सं.] १ हठ, जिद्द ।

उ०—१ कुंवर मत कर **वाद**, राव कहै सो सांभळौ ।
—कुंवरसी सांखला री वात

उ०—२ तरै सारै चाकरै नागही रा देवातन री वात राव कनै कही, पण मंडळीक मांनै नहीं । **वाद** लागौ । —नैणसी

उ०—३ दुथणी री जाई नै कितौ कह्यौ के दोनां नै जगाय नै सिधावती वेळा मिळाय दां । चोज राख्यां बातड़ी बिगड़ैला । पण वादीली मांनी ई नीं । ओई कोई **वाद** है । —फुलवाड़ी

२ वादा, कौल, वचन ।

उ०—वांकिम्म वींद दिन वांकड़ै, **वाद** न छंडै वंकपण । वांकड़ौ सेर उठै विढण, वदै जीह वंका वयण । —गु. रू. बं.

३ विवाद, प्रतिवाद ।

उ०—१ किसौ **वाद** रिख सूं करौ, सांभळी जनक सुगात्र चाप दिखाळौ रांमचंद, भणै लिखमण भ्रात्त । —रांम रासौ

उ०—२ कियौ **वाद** हाथे जिकां बात इतरी कही । दादि जिण बात री जगत दीधी । —कंवर नरपाळ देवल रौ गीत

४ तर्क, दलील, वहस ।

उ०—साधन काव्य कला सुर साधत, **वाद** विवाद करै मत वांधत ।
—अग्यात

५ युद्ध, झगड़ा ।

उ०—१ राजा रांणां मेलिया, कीध उकीलां वत्त । **वाद** वडां सूं छंडियै, एहस आद् मत्त । —गु. रू. बं.

उ०—२ मांणस २ रूड़ा मेलनै रायसिंघ नूं कहाडियो-थे नै जसै बेई **वाद** कियौ छै थे स्यांणा छौ, जसौ मोटियार छै । —नैणसी

६ प्रण, प्रतिज्ञा ।

उ०—१ वीरा रस हेक न मेल्है **वाद** । निहस्से हेक करै सिंहं नाद ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ आप लोगां नै समभावण रौ **वाद** भगवांन ई करै तौ उण नै हार माननी पड़ैला । —फुलवाड़ी

७ बातचीत, कथन ।

८ वाणी ।

९ शब्द, वचन, वाक्य ।

१० बयान, वर्णन, निरूपण ।

११ टीका, व्याख्या, भाष्य ।

१२ उत्तर ।

१३ अफवाह, किंवदंती ।

१४ तर्क शास्त्र ।

उ०—**वाद** भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस ।
—धरमपत्र

१५ शास्त्रार्थ ।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद सरवानुवाद पंचावयवि दसावयवि वादीसिउं **वाद** लिइ छइ भासा बोलइ । —व. स.

१६ किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित किया हुआ कोई सिद्धान्त

१७ किसी अभियोग या मुकद्दमें पर विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला मन्तव्य ।

१८ दुराग्रह ।

१९ संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय ।

२०—७२ कलाओं में से एक ।

२१ भैंस के चर्म की पतली रस्सी ।

उ०—खालड़ी में लूण भराय घांणी में घाल पीलावैला के सूळी चाढ मारैला के माथा रै **वाद** बंधाय प्रांण काढैला इणरी की ठा' कोनी । —फुलवाड़ी

२२ भैंस का चमड़ा ।

२३ देखो 'वाद्य' (रू. भे.)

रू. भे.—बाद, बाध, वादि, वादी, वाध ।

वादक-सं. पु. [सं.] १ गवैया, गायक ।

२ वाद्य बजाने वाला, संगीतज्ञ ।

।ा बहस करने वाला ।

४ ५.।।

रू. भे.—वाद्यक ।

वादण-सं. पु. [सं. वादनं] १ वाद्य बजाने की क्रिया भाव।

२ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

३ बाजा, वाद्य।

४ भेंस के चमड़े की रस्सी जो गाड़ी के हिस्सों को बांधने के काम आती है ।

उ०-दातां झालै डाढियां खीजै गउ खाणांह। थे रांणां अवगा थयौ **वादण** दौ वांणांह। —पा. प्र.

५ वादी जाति की स्त्री।

रू. भे.—बादण ।

वादणौ, वादबौ-क्रि. स. [सं. वादनं] १ वाद-विवाद या बहस करना ।

२ वादन करना, बजाना ।

३ युद्ध करना।

४ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—तिम सयल वादि निय निय घरि हिं, तांम गत्व पटावइं चड़इं। जिन भद्र सूरि गुरु तणीय, हुथुन जां कन्नि हि पड़ई । —जिन भद्र सूरि

वादणहार, हारौ (हारी), वादणियौ—वि० ।

वादिग्रोड़ौ, वादियोड़ौ, वाद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वादीजणौ, वादीजबौ—कर्म वा० ।

बादणौ, बादबौ—रू.भे. ।

वादप्रतिवाद-सं. पु.—१ वाद या तर्क में होने वाला परस्पर कथोपकथन, बहस ।

२ वाद-विवाद ।

वादरंग-सं. पु. [सं.] १ वट वृक्ष ।

२ अश्वत्थ का वृक्ष, पीपल।

वादरायण-सं. पु.—वेदव्यास का एक नाम।

रू. भे.—वादरायणि ।

वादरायणि-सं. पु.—१ व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि।

२ देखो 'वादरायण' (रू. भे.)

वादरी-सं. स्त्री.—चमड़े का तस्मा जो घोड़े के चारजामे के साथ रकाब में कसा जाता है ।

वादळ, वादळउ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—१ उडतौं जिकां ओप कवि आंणै। अनळ दक्षिण **वादळ** अहिनांणै । —सू. प्र.

उ०—२ एक सोर सारत्ति घोर धूंवा रवि डंबर । ज्यौं वावळि **वादळ** विसाळ ओपै मग अंबर। —रा. रू.

उ०—३ कोट भुरजां रा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड़ ज्यौं **वादळां** रा कीरण सारीखा ऊजळा सीकोट सौं निजरि आवै छै। —रा. सा. सं.

वादळांवाळौ—देखो 'बादळांवाळौ' (रू. भे.)

वादळियौ—देखो 'बादल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सांवण आयौ सायबा, कहौ य तो पीवर जाय। पग-पग पांणी पालरौ, **वादळियां** री छांय। —ली. गी.

वादळी—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आयौ-आयौ सांवण भादवौ, कोई काळी धटा घिर आय । आज म्हारी **बादळी** वरसेगी । —लो. गी.

वादळौ—१ देखो 'बादळौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसी देख भींवै कह्यौ, क्यूं पांणी छै तो कहौ ज्यूं उजळाई करां। तरै कह्यौ, म्हारा घोड़ा रै हांनै **वादळौ** जळसूं भरियौ छै, सो ल्यौ। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

उ०—२ अतलस थरमां ऊमदा, तास **वादळा** त्यार । जसड़ा कसीया जांनीया, कसीयौ राजकुमार। —मयरांम दरजी री बात

२ देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

वादविवाद-सं. पु.—१ तर्क-वितर्क, वहस ।

उ०—दारू पीलै पदमणी, मत कर **वादविवाद**। दारू में मारू दूसरौ, पी कर देख सवाद। —लो. गी.

२ शास्त्रार्थ।

वादवी-सं. स्त्री. [सं. वाद+वी='वी गति व्याप्ति-प्रजने'] सैना, फौज। (अ. मा.)

वादसाह—देखो 'बादसाह' (रू. भे.)

उ०—पछै **वादसाह** जी दिखण में खानजहां लारै बुरहांनपुर गया। —बां दा. ख्यात

वादसाही—देखो 'बादसाही' (रू. भे.)

वादांम—देखो 'बादांम' (रू. भे.)

वादांमी—देखो 'बादांमी' (रू. भे.)

वादानुवाद—देखो 'वादविवाद' (रू. भे.)

वादाळ, वादाळक-सं. पु. [सं. वादाल:] १ सहस्रदंष्ट्र नामक मछली ।

रू. भे.—बादाळक।

वादासिर–सं. पु.—वादा, कौल, प्रतिज्ञा के अनुसार।

उ०—रांगा वणवीर रौ वडौ रजपूत हुवौ, जिणनूं कंवर वीरमदे ओळ पातसाह कनैं राखनैं आप आयौ, पछै वीरमदे **वादासिर** आयौ नहीं। —नैणसी

वादि–वि. [सं] १ विद्वान।

२ निपुण, दक्ष।

३ देखो 'बादी' (रू. भे.)

४ देखो 'वाद' (रू. भे.)

उ०—पहुबी पयउ पमांण लखण वर वखांणइं, **वादि** विवादि विनोदि संक निय चित्त न यांणइं। —जिनभद्र सूरि

वादित्र–सं. स्त्री.—१ चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ अर घणा महोच्छव सेती गीत **वादित्र**, नाटिक, मंगळाचार करि दूलह-दुलहणि रा सोहला गाईजता बीकानेर पधारिया छै। —द. वि.

उ०—२ जिम नरेंद्र माहै रांम, जिम रूपवंत माहै कांम, जिम स्त्री माहै रंभा जिम **वादित्र** माहे भंभा। —वाग्विलास

वादियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वाद-विवाद या बहस किया हुआ. २ वादन किया हुआ, बजाया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ।

४ देखो 'बाजियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. वादियोड़ी)

वादियौ–सं. पु.—सोने-चांदी के आभूषणों पर चमक (पालिस) करने का एक औजार विशेष।

वादीसिउं–सं. पु.—छः प्रकार के तर्कों में से एक।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद, अरथानुवाद, सरवानुवाद, पंचावयवि, दसावयवि, वादीसिउं वाद लिइ··· —व. स.

वादी—देखो 'बादी' (रू. भे.)

उ०—१ एरिस जि केवी भुवणिंहि भलइं **वादी** मयंगळ गउयड़इं। जिनभद्र सूरि केसरि उरिंहि त धुज्जवि धरणिंहि पड़इं। —जिनभद्र सूरि

उ०—२ तिण भाग रौ कांई देखा अमरसिहजी इसे **वादी** अहंकारी हुवा। —ठा. राजसिंह री वारता

उ०—३ सौ सूरेजी रो बेटौ वेरसी वरस आठ रौ खींवे री बेटौ जागर बरस दस रौ सो सयांणौ अर वेरसी रौ सुभाव **वादी**, रीसट सौ सारा जांणै। —सूरे खींवे कांधलोत री बात

वादीकर—देखो 'बादीकर' (रू. भे.)

वादीगर—देखो 'बाजीगर' (रू. भे.)

उ०—जरमनी जोधार मिटावै मारका। ज्यूं **वादीगर** वाग अछत्तां आरखा। —किसोरदांन बारहठ

वादीलौ—देखो 'बादीलौ' (रू. भे.)

उ०—१ पग-पग कांटा पाथरै, **वादीलौ** बनराव। होणौं ज्यूं त्यूं होवसी, दियै न हीणौ दाव। —बां. दा.

उ०—२ दुथणी री जाई नै कित्तौ कह्यौ के दोनां नै जगाय सिधावती वेळा मिळाय दां। चोज राख्यां बातड़ी बिगड़ैला। पण **वादीली** मांनी ई नीं। ओई कोई वाद है। —फुलवाड़ी

(स्त्री. वादीली)

वादीवाय–सं. पु. [सं. वातविकार] ऊंटों का एक रोग जिसमें उनका चलना फिरना बंद हो जाता है।

वादू—देखो 'बाधू' (रू. भे.)

वादूमाळा—देखो 'विद्युन्माला' (रू. भे.)

वादै–क्रि. वि. [सं. वाद] शास्त्रार्थ में, विवाद में।

उ०—ब्राह्मण **वादै** हराविया··· । —धरमपत्र

वादोधुनि—देखो 'वेदध्वनी' (रू. भे.)

वादोवदि—देखो 'वदोवदि' (रू. भे.)

उ०—इसौ आणंद देखि कै कटक माहै थै वधाऊहार आगै **वादोवादि** दौड्या। —वेलि टी.

वादोवाद—देखो 'बादोबाद' (रू. भे.)

वादौ–सं. पु. [फा. वादः] १ किसी कार्य के लिये निश्चित किया जाने वाला समय, नियत समय।

२ किसी कार्य को पूरा करने के लिए किया जाने वाला संकल्प, प्रण, प्रतिज्ञा।

उ०—जो इण भांति नहीं करै छै, सो **वादौ** खोटौ छै। —नी. प्र.

३ कौल, वचन, इकरार।

रू. भे.—बादौ, वाइदौ, वायदौ।

वाद्य–सं. पु. [सं.] १ वाद्ययंत्र, बाजा। (संगीत)

२ उक्त यंत्र की ध्वनि।

३ बहोत्तर कलाओं में से एक।

४ चौसठ कलाओं में से एक।

रू. भे.—वाद।

वाद्यक—देखो 'वादक' (रू. भे.)

वाद्यकळा–सं. स्त्री. [सं. वाद्यकला] वाद्य बजाने की कला। (संगीत) (व. स.)

वाद्ययंत्र–सं. पु. [सं] वह यन्त्र जिसको विविध तरह से बजाकर विविध प्रकार की ध्वनियां निकाली जा सकती है, साज-बाज, बाजा।

वाधावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाधावियोड़ी)

वाधि—१ देखो 'बद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

३ देखो 'बाघौ' (पु)

वाधियोड़ौ—१ देखो 'बधियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. वाधियोड़ी)

वाधी—१ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

२ देखो 'बद्धी' (रू. भे.)

३ देखो "वाघौ' (पु०)।

वाधु, वाधू—देखो 'बाधौ' (रू. भे.)

उ०—१ वर्ण रूप व्रंदावनं ओप **वाधू**, सदा सोवतं देवतं व्रंद साधू। तरां भार अड्डार नूं भार तैसौ, अनेकां विराजै व्रखां रूप ऐसौ। —रा. रू.

उ०—२ रिघू लाज 'पाता' 'भदा' काजि 'रूपा'। इकां एक **वाधू** अनूपे अनूपा। —रा. रू.

वाधैपौ—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

वाधौ—देखो 'बाघौ' (रू. भे.)

उ०—नखत परमांण बाखांण **वाधौ** नरे। आवगौ भूंझ रौ भार भुजि आपरै। —हा. झा.

(स्त्री. वाधि, वाघी)

वापक—देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

वापणी—वि. स्त्री. [सं. व्यांपनं] १ भीतर-बाहर, सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति।

उ०—देवी मंत्र मूळं देवी बीजबाळा, देवी **वापणी** स्रब्ब लीला विसाळा। —देवि

२ व्यापने वाली।

वापणौ, वापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

वापणहार, हारो (हारी), वापणियौ—वि०।

वापिओड़ौ, वापियोड़ौ, वाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वापीजणौ, वापीजबौ—भाव वा०।

वापरणौ, वापरबौ—कि. स. [सं. व्याप्तरणम्] १ उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम में लेना। (उ. र.)

उ०—१ दांतां लूण ज **वापरै**, भोजन ऊनौ खाय। डावैं पसवाड़े सूवै, जिण घर वैद न जाय। —अज्ञात

उ०—२ गोड़ीजी इस्ट सोढां रै जिण सूं वीरवाव कोट में मद-मांस **वापरै** नहीं। —बां. दा. ख्यात

२ लेकर आना, लाना।

उ०—अमारि करावी, सरवत्र मंगलाचार दीजइं, तूर वाजइं, अक्षतपात्र सांचरइं, तंबोळ वापरइं, अरथ व्यय नी संभाल नहीं। —व.स

क्रि. अ.—३ व्याप्त होना, फैलाना।

उ०—१ के रोळौ **वापरियौ**, वा'वा' रोळौ वापरियौ। देस में अंग्रेज आयौ रे, के रोळौ वापरियौ। —लो. गी.

उ०—२ गोरसांत भोजन, गजांत दांन, बांधवांत वियोग, विपदांत मैत्री गजांत लक्ष्मी, **वापरांत** दरिद्र नायकांत युद्ध। —व. स.

४ आगमन होना, आना।

उ०—१ जग में ऊसरियौ खापरियौ जं'रो। वाल्हा बीछोडण **वापरियौ** वैरी। —ऊ. का.

उ०—२ अति विचक्षण, अम्नायक **वापरिउ**, करण वारनइ वखइ कुसलीउ वैरजन अनाकलनीउ···। —व. स.

५ उदय होना, पैदा होना।

उ०—भटियांणी री निरोगी देह में दिनां परवांण केई केई मांदगियां **वापरगी**। —फुलवाड़ी

६ खुशी या दुख का संचार होना, अनुभूति होना।

उ०—जीव में सोराई **वापरी** तौ वा वापरी! म्हारी बेटी रौ नांव परमेस्वर सूं कोई कमती माया थोड़ी ई है। —फुलवाड़ी

७ शुरू होना, प्रारम्भ होना।

उ०—निहसंति जोध नत्रीठि। रिण रूक **वापरि** रीठ। बे निहस सेन निसंक। किरि रांम रांमण लंक। —गु. रू. बं.

वापरणहार, हारौ (हारी), वापरणियौ—वि०।

वापरिओड़ौ, वापरियोड़ौ, वापरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वापरीजणौ, वापरीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

बापरणौ, बापरबौ, बावरणौ, बावरबौ, वावरणौ, वावरबौ—रू.भे.

वापरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ उपयोग में लाया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ, काम में लाया हुआ. २ लेकर आया हुआ, लाया हुआ. ३ व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ४ आगमन हुवा हुआ, आया हुआ. ५ उदय हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ. ६ खुशी या दुख का संचार हुवा हुआ. ७ शुरू या प्रारम्भ हुवा हुआ।

(स्त्री. वापरियोड़ी)

वापस—वि. [फा.] १ लौटा हुआ, प्रत्यागत।

२ लौटाया हुआ, फेरा हुआ, प्रतिदत्त।

३ छिपा हुआ।

क्रि. वि.—४ पुनः, दुबारा।

वापसी—सं. स्त्री. [फा.] १ लौटने या वापस आने की क्रिया या भाव।

. या फेरने की क्रिया या भाव ।
.टने वाला ।

वापार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—पड़ गहणा लीयै दीयै नह पाचा, सत्र खत्त नह दाखै ग्रह सार । 'सोड' तणा **वापार** सारखौ, वळ मांडीयौ 'ग्रखै' वौपार ।
—दुरसौ ग्राढ़ौ

वापारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—१ लिखमी रा लाडिला लोक वडा **वापारी** वहवारिया सोदागर वहरांमसंद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ जु ग्रादमी खबर दी-जु **वापारी** लोक छै । पैंडै जाय छै ।
—नैणसी

वापि, वापिका—देखो 'वापी' (रू. भे.)

वापियोड़ौ—देखो 'व्यापियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वापियोड़ी)

वापी-सं. स्त्री. [सं.] एक चौड़ा कुआ, कुण्ड या जलाशय, जिसमें पानी तक पहुंचने के लिये सीढ़ियां बनी रहती है । बावली ।

उ०—१ वाटिका **वापी** पुसकरिणी क्रीड़ातड़ाग सरोवर ।
—व. स.

उ०—२ पीयार प्रिथी पुड उद्धरै, सर **वापी** उद्धरि वरण । 'गजसाह' 'गांगे' हर ऊठियौ, पतिसाहां छळ उधरण ।—गु. रू. बं.

रू. भे.—बापि, बापिका, बापी, बिग्रापी, वाइ, वापि, वापिका, वाय. वाव, वावि, वावी, वावीय, वाव्य विग्रापी ।

ग्रल्पा.—बाबड़ी, बावड़ी, वावड़ी, वावळि, वावळी ।

वाफणी—देखो 'भांपणी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

वाफणौ, वाफबौ—देखो 'बाफणौ, बाफबौ' (रू. भे.)
वाफणहार, हारौ (हारी), वाफणियौ—वि० ।
वाफिग्रोड़ौ, वाफियोड़ौ, वाफ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वाफीजणौ, वाफीजबौ—कर्म वा० ।

वाफतौ—देखो 'बाफतौ' (रू. भे.)

उ०—तद नबाब हुकम दियो—जावौ, तोसाखांनै से **वाफता** लावौ ।
—पदमसिह जी री वात

वाफियोड़ौ—देखो 'बाफियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वाफियोड़ी)

वामराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू. भे.)

उ०—काबड़ी नै खुणा में वगाय वा सिंघणी ज्यूं रीस में **वाभराभूत** हियोड़ी बारै निकळगी ।
—फुलवाड़ी

वाभी—देखो 'भाभी' (रू. भे.)

उ०—पड़ै न पथ में विघन बिलखती वाभी मिळसी । गिणती दुख रा दिवस जीव रै जतनां घुळती ।
—मेघ

वाभीजी, वाभीसा—देखो 'भाभीजी' (रू. भे.)

उ०—दोरांणी कहै **वाभीजी** ग्राज पुरस ग्रांपांरा घरै नहीं नै वैरीयां रौ नगारौ सांमै कांकड़ वाजतौ सुणीजै छै । —वी. स. टी.

वाभौ, वाभौजी—देखो 'भाभौजी' (रू. भे.)

उ०—१ तद राव सूजै ग्रापरी माजी नूं कयौ, 'मांजी थे **वाभैजी** वीकैजी खनै जावौ, नै थां गयां वात सलटसी ।
—द. दा.

उ०—२ तीन चार वळा ग्राडो भचेड़ियौ, पण ग्रागळ नीं खुली नवी मां रै साथै **वाभौजी** वंतळ करता व्हैला, ग्रा सोच थोड़ी ताळ तांई बोला बोला बारै ऊभा रिह्या ।
—फुलवाड़ी

वाभौसा—देखो 'भाभौसा' (रू. भे.)

उ०—कह्यौ—के **वाभौसा** नै गाय चींथ न्हाकिया, माथै बैठगी । हाडका कुळै ।
—फुलवाड़ी

वायंगणनैत्र-स. पु.—एक वस्त्र विशेष । (व. स.)

वाय-सं. स्त्री. [फा. वायः] १ मनोकामना, मुराद ।
२ प्रतिदिन ली जाने वाली ग्रफीम की खुराक, मात्रा ।
[सं. वायः] ३ बुनन, बुनावट ।
४ सिलाई ।
[सं. वायुः] ५ पश्चिमोत्तर कोण, वायव्य कोण ।
[सं. वचन] ६ वाणी, वचन ।

उ०—१ भगवंत बोल्या इसड़ी **वाय** । देवांगुणिया जिम सुख थाय ।
—जयवांणी

उ०—२ ग्राय माता नै इम कहैं, मैं सुणग्रा वीर ना **वाय** । धन कृतारथ तुम पुता ! इम बोली छै माय ।
—जयवांणी

७ देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—पांणी रौ गांव रै खेड़ै दुख हीज छै, मुहै खारौ कूवौ सहर में तेजसी री **वाय** ऊपर छै, तिण तीण ६ वहै छै ।
—नैणसी

८ देखो 'वायु' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

उ०—१ ऽवां मांहि मिळै 'जैसाह' ग्राय । वैसंदर जांणिक भोळ **वाय** ।
—सू. प्र.

उ०—२ दिन ऊनाळै वोभर भट्ठी, घोरां मौज प्रभात री । कासमीर री ठंड वखेरै, **वाय** ठगोरी रात री ।
—दसदेव

उ०—३ सुरै **वाय** वडी लघुनीत तणी । संग्या कुंगुलिया दोस सुंणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांबडिया ।
— व्र. स्त.

उ०—४ वायव कूंणै वण रही, पुरी **वाय** की जांण । ग्रति प्रचंड सोभा ग्रधिक, को कर सकै बखांण ।
—गजउद्धार

उ०—५ पंजरि पावक परजळइ, जिम जिम नाखइ **वाय** । मूंधि न जांणउ एतलुं, तिम तिम अधिकु थाय । —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बाय ।

वायइ—सं. पु. [सं. वातिः] १ सूर्य । २ चंद्रमा । (उ. र.)

३ देखो 'वात' (रू. भे.)

वायक—सं. पु. [सं. वायकः] १ जुलाहा ।

२ ढेर, संग्रह ।

३ समुदाय ।

४ संदेश, खबर, समाचार ।

वि. [सं. वाचकः] १ संदेशा लाने वाला, सूचना देने वाला दूत ।

२ कहने वाला, वक्ता, व्याख्याता ।

३ पढ़ने वाला, पाठक ।

४ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)

उ०—१ **वायक** सतगुर वेद रौ, घणौ करै हित घोस । रे ! इण लालच रोग रौ, सद औसद संतोस । —बां. दा.

उ०—२ अदु **वायक** बोध दियै महिला, प्रिति लागन काळ कियै पहिला । —ऊ. का.

उ०—३ बह **वायक** सिंघ जिम बोलंता । तायक भुजां ययण तोलंता । —सू. प्र.

उ०—४ महाराजा रघुवंसमण सुज रांवण समथ रा धनु सर पांणा धारै । **वायक** सत सीतावरण न्रप नायक रघुनाथ तूं संतां तारै । —र. ज. प्र.

रू. भे.—बाइक, बाएक, बायक, वाइक, वाएक ।

वायकचर—देखो 'वाइकचर' (रू. भे.) (अ. मा.)

वायकुंडौ, वायकूंडौ—सं पु. [सं वात कुण्ड] १ चन्द्रमा के चारों ओर फीका वर्ण युक्त विशाल वृत्त जो प्रचण्ड वायु का सूचक माना जाता है ।

वि. वि.—इस वृत्त में तारा नहीं होता है ।

२ सूर्य के चारों ओर कभी कभी होने वाला वृत्ताकार घेरा जो, शकुन शास्त्र के अनुसार, वर्षा का अभाव सूचित करता है ।

उ०—कोपै कौल तुंडा कासवांणी छाय **वायकूंडा**, गै अठांणी भुसंडा भमाय भूलै गाज । रथां गैण देव रंभां अयोक अचूंडा रोकै, राजा राड़ीगारौ ऊंडा झौके बाजराज ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

रू. भे.—वावकूंडियौ, वावकूंडौ ।

वायड़—देखो 'बायड़' (रू. भे.)

वायड़ियौ—देखो 'बायड़ियौ' (रू. भे.)

वायड़ौ—सं. पु. [सं. वात-कारक, वातल] १ पागल कुत्ता ।

२ उक्त कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग ।

३ दीवाना, पागल ।

४ वात-विकार से पीड़ित ।

५ ज्वर-प्रलाप ।

६ वात-कारक ।

कहा.—किणी रे बैंगण वायड़ा, किणी रे बैंगन पच्च । किणी रे चढे आंफ, किणी रे चढे मच्च । —अग्यात

रू. भे.—बायड़ौ, बायड़ै, बायड़ौ, वाइड़ौ, वाईदड़ौ ।

वायज्वर—देखो 'वातज्वर' (रू. भे.)

वायण, वायणि, वायणी—सं. स्त्री.—१ दुर्गा या देवी का एक नाम ।

उ०—साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि । समळ महा सिध सकति, सकति **वायणी** सिकोतरि । —सू. प्र.

२ गहलोतों की कुल देवी ।

उ०—गहलोतां रै **वायण** चुंडाय दीप दैवी, तिलंगापुर पाटण सू उठिया । —बां. दा. ख्यात

३ वाद्य बजाने वाली ।

उ०—पोलि परठिया पोलीया, माहि माधव बंभ । आगळि नाचइ उरवसी, गायणि **वायणि** रंभ । —मा. कां. प्र.

वायणौ—देखो 'बाजणौ' (रू. भे.)

उ०—समुद्र खारउ, बाउल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ **वायणउ** जन बोलणउ, सुणह भषणउ, ससउ, नासणउ रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ...। —व. स.

(स्त्री. वायणी)

वायणौ, वायबौ—१ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गुण कथीइ गाईइ सुसर, **वाईइ** चंग अदंग । पात्र पचारा नाचतां, अहनिसि इणी परि रंग । —मा. कां. प्र.

उ०—२ सेसनाग राज छत्र धरइ, गंगा यमुना चमर ढालइं, व्रहस्पति घडिआलउं **वायइ**, सुक्र मंत्रि बइसइ...। —व. स.

उ०—३ तीन गढ जीत मन मींत चौथै मिल्या, पांच पचीस मिळ एक पाया । दास हरिरांम कहै राज अणभै भया, नाद अनहद नीसांण वाया । —अनुभववांणी

२ देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

वायणहार, हारौ (हारी), **वायणियौ**—वि० ।

वायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाईजणौ, वाईजबौ—कर्म वा० ।

वायदौ—देखो 'वादौ' (रू. भे.)

उ०—१ यमन रौ वादसाह मोनूं माल मतौ गांव देणै रौ घणौ **वायदौ** कियौ छै । —नी. प्र.

उ०—२ वायदौ पाळणौ श्रो छै न्याय गरीब रौ अन्याई कना सूं लेवै। —नी. प्र.

वायनंद—सं. पु [सं. वायु+नंदन] १ पवन पुत्र हनुमान।

उ०—नागैस पनंगां सिरै, जतंद्रीयौ बायनंद, चवां गोरखैस, जोगारवां सिरै चींत, ऊददां खीरोद सिरै जुधां गुड़ाकेस श्रोपै। श्रोपै खाग त्याग सिरै ऊदांरौ अदीत। —ठाकुर सांवतसींग रिंबाज रौ गीत

२ पांडुपुत्र भीम।

रू. भे.—बायनंद।

वायपुरी—सं. स्त्री. [सं. वायु+पुरी] पवन देव की पुरी।

उ०—जोजन अढी हजार में, वायपुरी विसतार। सो सब ही कंचन मई, सोभत अधिक अपार। —गजउद्धार

वायब—देखो 'वायव्य' (रू. भे.) (अ. मा,)

उ०—कोस ६ वायब कूण मांहै बडोवास भेळौ छै। जाट विसनोई बांणीया बसै। —नैणसी

वायबिड़ंग, वायबिडंग—देखो 'बायबिड़ंग' (रू. भे.)

वायर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—तरै भींवौ बोल्यौ, म्हारा देस एक कुरीत छै। कोई ठावौ गांमेती वासड़ियौ तथा घररौ धणी रजपूत मरै, मोटियार कै कांम आवै, तो उण री वायर गाघरांणी करै। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सूरां नूर दरस्सिया, तोलै सेल करग्ग। वायर ज्यौं लग्गा विमुह, कायर आहू मग्ग। —रा. रू.

वा'वर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—अरु मोहतौ रायमल जाय वीरमदे रै ढोलियै प्रदक्षण देय नै वा'वर आयौ। —द. दा.

वायरियौ—सं. पु.—१ वायु सम्बन्धी एक लोक गीत।

२ लड़की को विदा करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

३ देखो 'बायरौ' (अल्पा., रू. भे.)

वायरी—सं. स्त्री.—देखो 'बायरौ' (अल्पा., रू. भे.)

वायरौ—देखो 'बायरौ' (रू. भे.)

उ०—१ रात रा ई वायरौ बाजतौ तो करसा चूकता कोयनी, कारण के सियाळा रौ दिन तौ पीलू जितोक व्है। —रातवासौ

उ०—२ ताहरां राजा ताळौ उखेलियौ। देखै तौ माहै मोर छै। मोर कह्यौ धन्य राजा तूं मोनुं संसार रौ वायरौ लगायौ। —चौबोली

वाय'रौ—देखो 'बा'यरौ' (रू. भे.)

वायल—सं. स्त्री.—१ स्त्रियों के पावों में पहनने की चूड़ी जिसके नीचे गुरिया या मनका लगे हुए होते हैं।

२ बढ़िया किस्म का एक बारीक वस्त्र।

अल्पा.—वायली।

३ हल द्वारा बोया हुआ ग्वार आदि का खेत।

रू. भे.—वायल, बोयल।

वायव—देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

उ०—वायव कूंणैं वण रही, पुरी वाय की जांण। अति प्रचंड सोभा अधिक, को कर सकै बखांण। —गजउद्धार

वायविड़ंग, वायविडंग—देखो 'बायबिड़ंग' (रू. भे.)

वायवी—सं. स्त्री.—१ एक महाविद्या।

उ०—आकास गामिनी सौदांमिनी कांमगामिनी कांमसामिनी भुवनक्षोभिनी कांमरूपिणी मनः स्तंभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी बरसणी कौमारी···। —व. स.

२ वायव्य कोण सम्बन्धी।

३ देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

वायव्य—स. पु. [सं.] १ उत्तर-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण।

वि.—वायु सम्बन्धी।

रू. भे.—वायब, वायव, वायवी।

वायस—सं. पु. [सं. वायसः] १ कौआ, काक।

उ०—१ वीलहा वायस विझलां, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊंधी टंगाय। —मा. कां. प्र.

उ०—२ बायस वीजउ नांम ते, आगळि लललउ ठवइ। जइ तूं हुई सुजांण, तउ तूं वहिलउ मोकळै। —ढो. मा.

२ अगरू का वृक्ष।

३ तारपीन।

४ कौर, निवाला।

५ सूर्य या चन्द्र ग्रहण।

६ पकड़ या गिरफ्त।

रू. भे.—बइस, बाइस, बायस, वाइस।

अल्पा.—वायसड़ौ।

वायसड़ौ—देखो 'वायस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—उड वायसड़ा म्हारा पी'यर जा नूंत पि'यर रा भातवी जै। —लो. गी.

वायससात्रव–सं. पु. [सं. वायस:+शात्रव:] जल कौआ, जल काक ।

वायसूळ–सं. पु. [सं. वायु+शूल] १ घोड़ों का एक रोग जिसमें उनका मलमूत्र रुक जाता है । (शा. हो.)

२ वायु के विकार से शरीर में उत्पन्न पीड़ा

वाया—१ देखो 'वाचा' (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०–१ साचा सबद एक है सोई, दूजां काम सरै नहीं कोई । सौ मैं सबद गरू तें पाया, फुरै मंत्र इसरो **वाया** । —अनुभववांणी

उ०—२ मुनिवर मिलि जिणंद मैं आया, हाथ जोडी नै बोलै **वाया** । प्रभु ! तमारी आग्या थाय, तो म्हां द्वारिका में गोचरी जाय । —जयवांणी

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सेलि वलइ जल ऊछलइ, सायर छडइं सीम । **वाया** विण वाजइ सबद, महाभयंकर भीम । —मा. कां. प्र.

वायार—सं. पु. [सं. वातार] वरुण । (अ. मा.)

वायु—सं. पु. [सं.] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव ।

२ पवन, हवा, वात । (डिं. नां. मा.)

उ०—धरणी वीर तेज **वायु** नभ, सबै सता प्रकासी । निराकार आकार में पूरण, नहिं आवै नहीं जासी । —स्रीसुखरांम जी महाराज

३ त्रिदोषों में से एक ।

उ०—१२ ज्वर, १३ संनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात, ८४ वायु, ३६ महावायु दोस, ४५ खाधाविकार, १०८ कोडि ।

रू. भे.—बाब, बाथ, वायु, बायू, वा, वाइ, वाई, वाउ, वाय, वाया, वायू, वावू । —व. स.

वायुकाय—देखो 'वाउकाय' (रू. भे.)

वायुकुमार–सं. पु. [सं.]—१ भुवनपति जाति के देव (जैन)

२ हनुमान ।

३ भीम ।

वायुघ्न—सं. पु. [सं.] गुग्गल, गुगुल ।

वायुदेवता—सं. पु. [सं. वायु देव] पवन देव ।

उ०—नवग्रह खाट तणाई पाइ बांधा, **वायुदेवता** अंगणइ बुहारइ । —व. स.

रू. भे.—वाउदेवता ।

वायुमंडळ–सं. पु. [सं. वायुमंडल] पृथ्वी के चारों ओर का वाष्पीय वायुमंडल आवरण या घेरा, वातावरण, आब हवा, क्लाईमेट ।

रू. भे.—वाउमंडळ ।

वायुवाह—सं पु. [सं.] धूंआ ।

रू. भे.—बायुवाह, बायुवाह ।

वायुविरोधी–सं. पु.—गरुड़ । (ना. डि. को.)

वायुसखा—सं. पु. [सं. वायु–सख:] अग्नि, आग ।

रू. भे.—बायुसखा, बायूसखा ।

वायुसुत–सं. पु. [सं.] १ हनुमान ।

२ भीम

रू. भे.—बायसुत, बायुसुत ।

वायुहन–सं. पु. [सं. वायुघ्न] मंकण ऋषि के पुत्र, एक ऋषि ।

वायू—देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—१ इसडो छै आछो आयू, ज्यू ओस खिरै वागै वायू —जयवांणी

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति ग्रीखम रित माहै पवन पावक समान वाजियो छै । प्रथी अप नै वायू अकास च्यारि तत पांचमैं अगनी । —रा. सा. सं.

वायेरो—१ देखो 'बायरो' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

उ०—१ वीभणां सूं **वायेरो** लीजै छै सू किण भांतरा बीभणा छै ? लाहोर रा कियोड़ा छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ कहचौ-भलौ हो राजा मांनधाता थारै बिना संसार रौ **वायेरौ** कुण दिखावै । —चौबोली

(स्त्री. वायेली)

वायेलौ—देखो 'भायेलौ' (रू. भे.)

उ०—नैणां रौ सिणगार कागळ कूंपळी में रैगो रै, बाळापण रौ **वायेलौ**, पीवर में रेगो रे परो बुलावौ । —लो. गी.

वायोड़ौ—१ देखो 'बाजियोडौ' (रू.भे.)

२ देखो 'बावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वायोड़ी)

वायौ–वि. [सं. वातल] १ उन्मत्त, मस्त ।

उ०—इण पर तहवरखांन अछायौ । विचित्र हुवौ लड़तां रस **वायौ** । —रा. रू.

२ बावरा, पागल ।

वारंग–सं. स्त्री. [स वारंग:] १ तलवार की मूठ,

२ छुरी का दस्ता ।

सं. पु.—३ एक वृक्ष विशेष, जो तणछ से मिलता-जुलता होता है जिसके पत्ते न तो अधिक गोल होते हैं न लम्बे । मध्यम दर्जे का वृक्ष ।

४ देखो 'वारंगना' (रू. भे.)

उ०—१ भभक्कत **वारंग** फेर भुकंत, हुवै इम चूक मुनेस हसंत । —सू. प्र.

उ०—२ वर अनेक **वारंग** पांव वंदै सुरपत्ती। पावरा करि पारंग त्रिपुर नारंग सकत्ती। —सू. प्र.

उ०—३ वजि अदंग चंग रंग उपंग **वारंग**। अनंग छबि चंग उमंग अंग अंग। —सू. प्र.

उ०—४ जद **वारंग** कहै 'जोगावत' घड़ा विहंड सुरलोक गयौ। मह 'जोधां' 'सलखां' सुमालां, कमंधां कुळ ऊजळौ कियौ।
—हरिनाथ जोधा रौ गीत

वारंगना, वारंगा–सं. स्त्री. [सं. वारंगना] १ स्त्री, नारी, औरत। (अ. मा.)

२ अप्सरा, परी।

उ०—१ वारंगना रही धारै व्रत, अत स्यांमावत्त तणै उमाह। पिंडि खुरसांणै बींद परखियौ, बळि कुंडांणै हुवौ बिमाह।
—उदैभांण राठौड़ रौ गीत

उ०—२ उधम होय इचरज घर असुरां। धम धम तखत जड़ाली धार। धम धम विखम अरि तणा घाटा वारंगना झमझम जुध वार। —लूणकरण

उ०–हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां, गई स्रग विवांण वेस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना वींदां।
—महाराज जसवंतसिंह रौ गीत

३ देव कन्या।

४ गणिका, नर्त्तकी।

५ वेश्या, रण्डी।

रू. भे.—वरंगा, वरांगना, वारंग वारंगना, वारंगा, वारांगना, वरंगन, वारंग, वारांगना।

वारंट–सं. पु [अं.] १ आज्ञा-पत्र, अधिकार-पत्र।

२ अदालत द्वारा पुलिस या किसी राज्य कर्मचारी को दिया जाने वाला वह अधिकार-पत्र जिससे किसी को गिरफ्तार किया जा सके या किसी की तलासी ली जासके।

३ साधारण माने में किसी को गिरफ्तार करने के लिये निकाली जाने वाली अदालती सूचना।

वारंटरिहाई–सं.पु. [अं. वारंट+फा. रिहाई] गिरफ्तार व्यक्ति या बंदी को मुक्त करने के लिये दिया जाने वाला अदालती-आज्ञा-पत्र।

वारंवार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

उ०—लज्जा छोडी **वारंवार**, ऊंचइ स्वर ते करइं पुकार। मन में धारै अधिकौ सोग, हींयड़ौ फाटई नाह वियोग। —वि. कु.

वार–सं. पु. [सं.] १ दिन, दिवस।

उ०—१ जकै वार री औधि सोभा जगांणी, ब्रहम सारदा होत जायै वखांणी। —सू. प्र.

२ सप्ताह के सात दिनों में से कोई एक और सब।

उ०—१ धन दीहड़ौ, धन घड़ी, धन **वार**, धन मोहरत धन वेळा जकौ राज पधारिया।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ सतरै संमत पोस पैंत्रीसै, दसमी **वार** ब्रहस्पत दीसै। सुरधर छत्र 'जसौ' महाराजा, सुरपुर गयौ लियां व्रद साजा। —रा. रू.

३ समय, वक्त।

उ०–१ वदै मुनेस जेण **वार**, देखि भूप वीनती। मखं सहाय काज लेलि, पुत्र लै रघुपती। —सू. प्र.

उ०–२ प्रायै छोरू न लहै सार, मावीत्रां नी किण ही **वार**। पिण मावीत्र तपै दिन राति, पांणी वल विरहौ न खमात। —वि. कु.

उ०—३ पिंगळ राजा नूं मिल्यउ, सउदागर तिणि **वार**। राज दुवारइ तेड़ियउ, आदर करै अपार। —ढो. मा.

४ देर, विलम्ब।

उ०—१ जगवासी न सांभलौ, ए संसार असार। तिहां तन धन यौवन निफल, जातां न लहै **वार**। —वि. कु.

उ०–२ तरै कलियांणसिंघ जांणियौ अस्तरी तौ बाहुड़ै नहीं, अर **वार** घणी लागी। तरां नैणां में गद-गद कंठ बेहां रौ हुऔ। आप असवार होअै हालिआ। अस्त्री घरै आवी।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ इतरा माहै वात करतां **वार** लागै। वैकुंठ री रौस गैब री इच्छा सरूप गढ कोट बाजार सतखणा सोव्रन मैं आवास गोख जोख चित्रांम चित्रसाळा रचाई। —र० वचनिका

५ काल, युग।

उ०—१ द्रोणपुर, भारद्वाज रौ बेटौ द्रोणाचारज नूं थौ, पांडवां कैरवां री **वार** मांहै। पछै पमार डाहळिया नूं हुंतौ द्रोणपुर। —नैणसी

उ०—२ सीयळ पंवार लुद्रवा री रैत ज्यौ भोग दे। मुहार रावळ भीम री **वार** मांहै खेतसी मालदैओत नूं थो। पछै रावळ मनोहरदास मांन खींमावतनूं पटै दियौ थौ। —नैणसी

रू. भे.—बाहार।

६ किसी शासन करने वाली जाति के नाम के अगाड़ी लग कर उसके अधीनस्थ भू-भाग का बोध कराने वाला शब्द। ज्यूं-जोइयां री वार, भाटियां री वार।

७ ऋतु, मौसम।

८ आघात, प्रहार, चोट।

उ०—१ पांच कलै परवार सूं, रावळ ग्रालोचेह । ग्रापें मर गढ ग्रापस्यां, बिजड़ां **वार** करेह । —नैणसी

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, **वार** चक्रधार तिण बार दीधा । बिळबै बार समराथ जळ दळ बिगरि, कुंभसुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा । —राव सत्रसाल री गीत

उ०—३ वीतां ग्रधूरां वारां पूरां वेध सूरां वच्चए । सेले प्रहारं धार सारं मार मारं मच्चए । —रा. रू.

६ युद्ध ।

१० तीर, बांण ।

११ समुद्र, सागर ।

१२ नदी ।

१३ दशा, हालत, परिस्थिति ।

उ०—जळ सह ऊतर जाय, नग सिर पर पावै नहीं । बिगड़ी जांरी **वार**, वळै न पाछी 'वसतिया' । —समळौजी बारहठ

१४ किनारा, तट, कूल ।

उ०—१ जोय प्रबळ ग्रणपार जळ, **वार** रह्या भड ग्रांन । निडर उलंघण वारनिध, हुवौ त्यार हनुमांन । —र. रू.

उ०—२ ग्रठी रमजांनबेग पंजाब री विजय करि महमद नूं निरबळ निहारि पाछौ जाइ ग्रारचावरत नूं ग्रांगमण रै काज तैमूर नूं ग्रटक नदी रै **वार** ग्रांणियौ । —व. भा.

१५ इस किनारे ।

१६ उस किनारै ।

उ०—ग्रागै ग्रावतां एक खाळ बारह हाथ कौ चौड़ौ, घणौं ऊंडौ, ग्राडै ग्रायौ जठै कुमार दूदौ तौ सहज मैं सांवळिया नैं भंपाइ खाळ रै **वार** ग्राइ भालौ ऊबाइ सांम्हौ खड़ौ रहियौ । —वं. भा.

१७ ग्रवरोध, रुकावट ।

१८ शिव, महादेव ।

१६ क्षण, पल ।

२० कुज नामक वृक्ष ।

२१ एक गज की लम्बाई का नाप ।

२२ सात की संख्या । * (डिं. को.)

[सं. वार्] २३ जल, पानी । (ह. नां. मा.)

उ०—नैणां पल पल निरखती, **वार** पीवती वार । विसरै उवा क्यूं विरहणी, ग्रटक रही उणिहार । —ग्रग्यात

२४ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें पन्द्रह मात्रा पर यति से कुल तीस मात्राऐं हो एवं ग्रन्त में मगण या रगण हो । (र. ज. प्र.) मतान्तर से ग्रन्त में रगण हो (र. रू.)

२५ काम, कार्य ।

उ०—सूवा एक संदेसड़उ, **वार** सरेसी तुज्झ । प्रीतम वांसइ जाइ नइ, मुई सुणावे मुज्झ । —ढो. मा.

२६ दफा, मरतबा ।

उ०—१ सुंदरी तहं सच्चउं कहिउं, तैं मुझ प्रांण प्रीयार । तेणी-करी जीवूं ग्रम्हैं, जनमिउ वीजी **वार** । —मा. कां. प्र.

उ०—२ ‌ार सत्त पंचास, गुड़ै गैमर गळ गंजै । लख्ख एक तोखार, ठि‌ल ग्ररीयण घड़ भंजै । —नैणसी

क्रि. वि.—२ इस ग्रोर, इस तरफ ।

उ०—ग्रायौ बूंदी ग्रापरौ, ग्रमल दरारै **वार** । बधियौ रहसी जतन बिण, ग्रंतपण म्हांरौ पार । —वं. भा.

प्रत्य. [फा.] ३ क्रमशः, क्रमानुसार ।

४ देखो 'बार' (रू. भे.) (१)

उ०—इसै हीज तंत में कुंवरसी चढियौ, सो जाय सांढां रा वरग सरब घेरिया । रैबारी बीस हाथ ग्राया, सो मारिया । बाकी केई था, सो बांठां में गया । सो नाठा, जाय **वार** घाती । —कुंवरसी सांखला री वारता

५ देखो 'बारी' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रौर निधड़क ग्रभिमांन देख रात में सोवै जद नींद वस ग्रसावधांन होवै तद सत्रुग्रां री **वार** लागै । —बीं. स. टी.

उ०—२ तजियै मांन गुमांन, रहाय गुरु गम चली । सिवरौ सिरजनहार, **वार** ग्राई भली । —स्री सुखरांमजी महाराज ।

उ०—३ बाळ मुकुंद बिरदाधिपति, क्यूं नह सुणौ पुकार । काहै ऐती ढील की, मोहन मेरी **वार** । —गज उद्धार

वा'र—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—१ चौधरी चुपचाप ग्राय'र बैठग्यौ ग्रर थाळी में सोगरौ ने लूण-मिरच देखनै भट-भट खावण लाग्यौ–जांणौ लारै **वा'र** ग्रावती व्है । —रातवासौ

उ०—२ चोर लारै **वा'र** वणाई, ग्राव लारै उपाय वताई । —दसदोख

उ०—३ ग्राया **वा'र** निदांन री, वीस हजार मुगल्ल । —रा. रू.

वारक—सं. पु. [सं.] १ निषेध करने वाला घोड़ा ।

२ घोड़े की चाल ।

३ वह स्थान जहां पीड़ा होती हो ।

४ बाल छड़ ह्रीवेर ।

[सं. वारकिन्] ५ विरोधी, शत्रु ।

६ समुद्र ।

७ शुभ लक्षणों वाला घोड़ा ।

८ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी ।

वि.—अड़चन डालने वाला, रोकने वाला, अवरोध करने वाला।

वारकन्या-सं. स्त्री. [सं.] वेश्या, रण्डी।

वारख—देखो 'वारिख' (रू. भे.)

वारगह, वारगाह-सं. पु.—देखो 'बारिगह' (रू. भे.)

उ०—इभ कुंभ अंधारी कुच सूं कंचुकी, कवच सं.] कांम क कळह। मनु हरि आगमि मंडै मंडप, बंधण दीध कि वारगा ;। —वेलि

वारगिरी, वारगीर-वि.—देखो 'बारगीर' (रू. भे.)

उ०—अड़ा भीड़ आवधां, वाळ आवै पिड़िहारां, कियां त्यार साकुरां, घात पाखरां अपारां। अत ताता ऊधरा, जात जात रा भिड़जां, वारगीर वांटजै, साख साख रा सकाजां। —बखातो खिड़ियो

वारड़-सं. पु.—देखो 'वारड़' (रू. भे.)

वारड़ो—१ देखो 'वार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—धानंतर मयंक हणू सुक्र धावो, नरपाळग रुद्र रिख निवड़। एक वारड़ो 'करन' उठावो, धन खट तणो प्रीयागवड़। —ईसरदास बारहठ

२ देखो बारी (रू. भे.)

उ०—निकमाळै निकमा फिरै ना, लगै कूवटां कारड़ी। मीणेदार मजूरी करै, विच विच अपणी वारड़ी। —दसदेव

वारचर-सं. पु. [सं. वारिचर] १ जल में रहने वाला जंतु, जल जंतु।

२ मत्स्य, मछली (अ. मा., ह. ना. मा.)

वारज—देखो 'वारिज' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा)

उ०—वप घणस्यांम नैत्र दुति वारज। क्रत अवतार सुरांचै कारज। —सू. प्र.

उ०—२ वारज द्रग वारद वरण, गहर धरण गुणगाथ। करूणा-निध अकरण करण, नमो नमो रघुनाथ। —र. रू.

उ०—३ सस्त्र विद्या के आचारज। जळ रूप क्षत्रियां के वारज। —रा. रू.

वारड-सं. पु. [अं. वार्ड] १ रक्षा, हिफाजत।

२ अस्पताल या जेल का कोई कक्ष या विभाग।

३ किसी नगर या मोहल्ले का किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत किया हुआ समूह।

वारण-सं. स्त्री. [सं.] १ निषेद, मनाही।

२ रोक, रुकावट, अवरोध।

३ बाधा।

४ सुरक्षा. सहायता।

५ न्योछावर होने या बलैयां लेने की क्रिया या भाव।

६ हरताल।

७ सफेद गोरेया।

सं.पु. [सं.] ८ हाथी, गज। (ह. नां. मा.)

उ०—१ मुख मंद हास आणंदमय, आराधित अहि नर अमर। दंड व्रत तूझ मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर। —सू. प्र.

उ०—२ कहै तिया सुण कंत, किसी बात तोसूं कहूं। मौलाए गज दंत, वारण पाछो वळ गयो। —गज उद्धार

९ हाथी का अंकुश।

१० संयम।

११ कवच, बखतर।

१२ आर्यगीति या स्कंधांण का एक भेद विशेष।

१३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएं होती हैं।

१४ छप्पय का ३० वां भेद जिसमें ४१ गुरू तथा ७० लघु कुल १११ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं।

वि. वि—मतान्तर से इसमें ४१ गुरू, ६६ लघु के अनुसार १०७ वर्ण व १४८ मात्राएँ भी मानी जाती है।

वि.—१ मिटाने वाला, निवारण करने वाला।

उ०—धिन हो दुख वारण, काज सुधारण। भगत उधारण भगवन तूं। —भगतमाळ

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ मना करने वाला, रोकने वाला।

४ जबरदस्त।

क्रि. वि.—५ रोकने हेतु।

६ रक्षा करने हेतु।

रू. भे.—बारण, वारणु, वारिणि।

वारणपति-सं. पु. [सं. वारणः+पतिः] १ महावत।

२ हाथी।

रू. भे.—बारणपति, बारणपती।

वारणदासोत-सं पु—भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

वारणा-सं. पु., ब. व.—१ बलिहारी जाने की क्रिया या भाव।

२ बलैयां, न्योछावर।

उ० १ आंखियां लाज लीधां अडर, सारा काज सुधारणा। मादक अलीण मेलै न मुख, वांरा लेऊ वारणा। —ऊ. का.

उ०—२ राजा अजीत दसरत्थ ज्यौं, सुत सजीत परखै सही। वारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कोसल्या जिही। —रा. रू.

उ०—३ अब वे हीज सिरदार भांमणा वारणा लेवै है पण जेथ जठै वांही भड़ां घोड़ां में जै—फतै तो म्हारा कंत घणी ने मिळी है। —वी. स. टी.

रू. भे.—बारणा।

वारणावत-सं. पु. [सं.] गंगा किनारे का एक प्राचीन नगर या जनपद। —(महाभारत)

वारणी-सं. पु. [सं. वारण] १ विवाह के समय दुल्हा-दुल्हिन तथा इनके सम्मुख नाचने वाली के ऊपर रुपये, पैसे आदि न्यौछावर करने की क्रिया। (एक प्रथा)

वि. वि.-इस प्रकार की न्यौछावर के पैसे ढोल-वाजा वाले या नाई को दिया जाता है।

२ देखो 'वारुणी' (रू. भे.)

उ०—चौरंग पांत फौज चौवड़ती, फूल धार **वारणी** करै। कुते हुलै मिळै करणावत, काळै भांत मनवार करै।

—बळरांम राठौड़ री गीत

वारणीय-वि.—१ न्यौछावर योग्य, उत्सर्ग योग्य।

२ निषेध योग्य।

वारणू, वारणौ-सं. पु.—१ वारणा या वारीजाने की क्रिया या भाव।

२ वारा जाने वाला या न्यौछावर किया जाने वाला पदार्थ।

रू. भे.—अंवारणौ

३ देखो 'वारणौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वारण' (रू. भे.)

उ०-१ वोम लागा वहै लोडता **वारणू**। हल्लवै द्रोण ऊपाड़ जांणै हरणू। —गु. रू. बं.

उ०—२ ताहरां वेणीदास, चंदण चौपदार, हरदांन, रांमदांन ओळखवां नै साथै ले बजार गयौ। जाय हाट रैं वारणैं आया थका खड़ा रहि देखा किया। —पलक दरियाव री बात

वारणौ, वारबौ-क्रि.स. [सं. वारणं] १ बलिहारी जाना, बलैया लेना, वारी जाना (उ. र.)

उ०—१ नर नारि द्वार नरपत्त रै, ईख करै तन **वारणैं**। उमराव परस्सण उल्लसै, कोड़ां दरसण कारणैं। —रा. रू.

उ०—२ हाथी रै होदै मारियौ पती ने देख **वीर** स्त्री कहै-वारीं वालम **वारणैं** जाऊं। —वी. स. टी.

उ०—३ देखै मुख वसुदेव देवकी वार-वार **वारै** पै वारि।

—वेलि

२ न्यौछावर करना, उत्सर्ग करना।

उ०—१ त्याग पर **वारू** आपरी दातारगी रौ एक दूहै पर नव लाख रिपिया बगसिया। —द. दा.

उ०—२ चारो नाणूं व्है खारी भर चारै, अपणी प्यारी पर प्रांणां तक **वारै**। —ऊ. का.

उ०—इसड़ी आंखड़ियांह किया अग **वारणै**। सर मनमथ गा हारि क अंजण सारणै। —बां. दा.

३ देवी-प्रकोप, [illegible]ग।

प्राणी को शरीर [illegible]स' (रू.भे.)

उ०—सासु[illegible] **वारस** दिन आसुर। मौत अचिंत गया कर संमर। **वारिया**।

—रा. रू.

उ०—२ [illegible]रिस' (रू. भे.) (मा. म.)

दास नूं व[illegible]दस 'जीदै' रोह उवै लोक सह ईखतौ। लड़ जिय मोहणदास [illegible] पर फेर कर [illegible]। —पा. प्र.

४ दूल्हे-[illegible] देख घणी राजी हु[illegible] आदि वार कर ढोली, नाई आद कं[illegible] वरसी सांखला री वार[illegible] [illegible]दास मोहण

५ सामना करना, बाधा डालना, रोकना। (उ. र.)

उ०—ऊलटियौ सिर आगरै, अबदुल्ला 'अजमाल'। आगै पौहतै आगलौ, **वारण** खांन दुझाल। —रा. रू.

६ रक्षा करना, सहायता करना, उबारना।

उ०—साहिब रै सहि थारौ सारौ, वडा धिणी जंम प्रासै **वारौ**। खोटी बात संसारीइ खारौ, आतिमा मुंना पारि उतारौ।

—पी. ग्रं.

७ इनकार करना, मना करना। (उ. र.)

८ निवारण करना, छोड़ना। (उ. र.)

उ०—घणा नींदाळवां नींद **वारौ** घणी। तूंग नहं छै भली हींस घोड़ां तणी। —हा. झा.

९ दूर करना, हटाना, मिटाना।

उ०-तारै दासां त्रिकमाह, भय **वारै** जम भूप। हूं बलिहारी स्रीहरी, रे! थांनै निज रूप। —र. ज. प्र.

वारणहार, हारौ (हारी), वारणियौ—वि०।

वारिओड़ौ, वारियोड़ौ, वारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वारीजणौ, वरीजबौ—कर्म वा०

अंवारणौ, अंवारबौ, बारणौ, बारबौ—रू० भे०

वारता-सं. स्त्री. [सं. वार्त्ता] १ जनश्रुति, अफवाह, किंवदंति।

२ वार्तालाप, कथोपकथन, संवाद।

३ कुशल-समाचार, हाल, खबर।

उ०—१ रखी सुनमांन दीवो। तरै आप रूजक पगै मेलियौ। टहेल कीधी। रखी **वारता** पूछी—तरै आप सारा ही क्रम कथा कही। —कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ जांमण की ये जाई! मां बाबल बूजें ये थारी वारता

—लो. गी.

४ बात।

उ०—हां ये गोरी! अब करस्यां मनुवार। घर आय पूछां मनड़े री **वारता** जी। —लो. गी.

वि.—अड़चन डालने वाला, रोकने वाला, अ...ीत।

वारकन्या-सं. स्त्री. [सं.] वेश्या, रण्डी। ... भाव की हांन। वा

वारख—देखो 'वारिख' (रू. भे.) ...र।

वारगह, वारगाह-सं. पु.—देखो 'बारिगह' (रू. भे.) ...रांमजी महाराज

उ०—इभ कुंभ अंधारी कुच सूं कंचुकी, कवच सं...

मनु हरि आगमि मंडै मंडप, बंधण दीध कि वारगा...

वारगिरी, वारगीर-वि.—देखो 'बारगीर' (रू. भे.) ...आर नगर ना

—घ. व. ग्रं.

भगवां...

—सी सुख...

थांनु संपड़ा-

डी री वारता

११ ऐतिहासिक आख्यान।

रू. भे.—बारता, वारथा।

वारतालाप-सं.पु. [सं. वार्तालाप] परस्पर की जाने वाली बातचीत, कथोपकथन, संवाद।

वारतिक, वारतिक्क-सं. पु. [सं. वार्तिकम्] १ किसी ग्रन्थ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने वाला वाक्य या शब्द, व्याख्या।

वि. वि.—भाष्य में केवल मूल ग्रंथ का आशय ही स्पष्ट किया जाता है परन्तु वार्त्तिक में वार्त्तिककार नई बात कहने के लिये भी स्वतन्त्र होता है।

२ छंद शास्त्र के नियमों से रहित एक प्रकार का तुकांत गद्य पद्य मय छंद।

३ कात्यायन का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें पाणिनि के सूत्रों की विश्लेषणात्मक व्याख्याएं लिखी हुई हैं।

[सं. वार्तिकः]—४ वृत्तांत, हाल।

५ जासूस।

६ दूत, चर।

७ किसान।

वि. [सं. वार्तिक] १ वार्त्ता या संवाद सम्बन्धी।

२ व्याख्याकारी।

३ खबर लाने वाला।

वारतिय-सं. स्त्री. [सं. वारस्त्री] वेश्या रण्डी।

वारथा—देखो 'वारता' (रू. भे.)

उ०—म्हारौ पती हाथळ रै जोर हाथी मारै है सो औ नाहर इणां ने कहणा चाहीजै इती भा **वारथा**। —वी. स.टी.

वारद—देखो 'वारिद' (रू. भे.)

उ०—१ सुंदर तन स्यांम स्यांम **वारद** सम। कौटक भा रद कांम सकांम। —र. ज. प्र.

उ०—२ **वारद** विद्युत वरण, पीत अरु धरण नीलपट। तरह मदन रत तरणी, देख दिल दरप जाय दट। —र. रू.

वारदद्रू-सं. पु. [सं. वारिद-द्रु] इन्द्र। (अ. मा.)

वारदा—देखो 'वरदा' (रू. भे.)

वारदात-स. स्त्री. [फा. वारिदात] १ कोई सोचनीय काण्ड, दुर्घटना

उ०—ठौड़ ठौड़ खून अर कतल री **वारदातां** होवती अर रात-दिन करफ्यू लाग्योड़ौ रैवतौ। —रातवासौ

२ दंगा फसाद, मारकाट।

३ चोरी, डकैती।

४ वृत्तांत, हाल, हकीकत।

उ०—सांम्हैं देख पूछी—क्यों, केसरिया कुंवर किस तरह ? तद केसरसिंहजी सारी **वारदात** जाहिर की। —पदमसिंह री बात

वारद्ध-सं. पु.—१ देखो 'वारिद' (रू. भे.)

२ देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

वारद्धक-सं. पु. [सं. वार्द्धक्य] १ वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

उ०—किताक काळ पछै अठी बंबावदा रै नरेस हालू १८२१ अनेक उपाय करि थाकौ तौ भी रण मरण न पायौ जांणि प्रति-दिन **वारद्धक** नूं वरद्धमांन देखि··· —वं. भा.

२ वृद्धि, बढोतरी।

३ बुढ़ापे की शिथिलता।

रू. भे.—बारद्धक।

वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस—देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

उ०—**वारधेस** जोम गाज गाळीया त्रकूट वासी, राजचीळ जाळीया तारखी तेज रूस। —हुकमीचंद खिड़ियौ

वारनारी-सं. स्त्री [सं.] रंडी, वेश्या।

वारनिध, वारनिधि—देखो 'वारिनिधि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—जोय प्रबळ अणपार जळ, वार रहचा भड आंन। निडर उलंघण **वारनिध**, हुवौ त्यार हनुमांन। —र. रू.

वारनिस-सं. पु. [अं. वार्निस] लकडियों या लकड़ी के बने फर्नीचर पर चमक लाने के लिए लगाया जाने वाला एक तरल पदार्थ।

रू. भे.—बारनिस,

वारनिसांणी—देखो 'वार' (२४)

वारपार-वं. पु. [सं. अवर-पार] १ एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक की पूरी चौड़ाई, मोटाई।

२ पूरा या समूचा विस्तार ।
३ सीमा, मर्यादा ।

उ०—रूप न रेख अलेख है, कुछ वार न पारा ।
—केसोदास गाडण

वि.—१ पारंगत,दक्ष ।

उ०—हाथ री उछांग नै पगां री फुरती अर गाढ़ पर अमट । तिकौ सरदार री वातानों चार । सो म्होकमसिंघ तो च्यारांही में **वारपार** । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

अव्य.—२ इस किनारे से उस किनारे तक ।
रू. भे.—वारापार,

वारबधू—देखो 'वारवधू' (रू. भे.)

उ०—आगै वरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग । हवणौ का अलियळ हुआ, **वारबधू** वप लाग । —बां. दा.

वारबुंद–वि. [सं. वारिबुंद] तुच्छ, सुक्ष्म । (अ. मा.)

वारमुखी–सं. स्त्री. [स.] रण्डी, वेश्या ।
रू. भे.—बारमुखी ।

वारमौं—देखो 'बारवों' (रू. भे.)

उ०—वरस **वारमइ** वइठउ राजि । अरि भाजइ संभळि आवाजि ।
—ढो. मा.

वारवधु, वारवधू–सं. स्त्री. [सं. वारवधू] १ वेश्या, रण्डी । (अ. मा.)
२ नर्तकी, गणिका ।

उ०—वरवाजू के ततकार खटरागूं के धीर, **वारवधु** के न्रतकार त्रिछायतूं के वणाय अत अंतरू के डंवर......। —र. रू.

रू. भे.—बारबधू, बारबधूटी, वारबधू ।

वारवार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

उ०—हुज रद रदन दसन मुख दीपन, ढळियौ कंस पकड़ि गज-दंत । वारवार करतार बखांणौ, सुर सिणगार सुधारण संत ।
—ह. नां. मा.

वारवाह—देखो 'वारिवाह' (रू. भे)

वारविलासणी, वारविलासनी, वारविलासिनी–सं. स्त्री [सं. वारविलासिनी] १ वेश्या, रण्डी ।
२ नर्तकी, गणिका ।

उ०—चांमरधारिणी **वारविलासनी** महल्लक महल्लिका उपाध्यांन गावन ...। —व. स.

रू. भे.—बारबिलासिणी,

वारविलावण–वि. [सं. वारि-विलोवन] समुद्र मंथन करने वाला ।
सं. पु.—विष्णु, हरि ।

रू. भे. वारिविरोळण ।

वारस—१ देखो 'बारस' (रू.भे.)

उ०—आसू वद **वारस** दिन आसुर । मौत अचित गया कर संमर ।
—रा. रू.

२ देखो 'वारिस' (रू. भे.) (मा. म.)

उ०—दिस दिस 'जीदै' रोह उवै लोक सह ईखतौ । लड़ जिय लीधै रोह, **वारस** कोइय न आवियौ । —पा. प्र.

वारसार—देखो 'वारिसार' (रू. भे.) (अ. मा.)

वारसिक–वि. [सं. वार्षिक] १ एक वर्ष भर या एक वर्ष तक । रहने वाला ।
२ सालाना ।
३ वर्षा ऋतु या वर्षा सम्बन्धी ।
सं. पु.—१ वर्ष के वर्ष दिया जाने वाला कर ।
२ वर्ष के वर्ष मिलने वाला लाभ ।

वारसिप–सं. पु. [अं. वारशिप] युद्ध पोत, जंगी बेड़ा ।

वारसी–सं. स्त्री—१ बाला, युवती ।

उ०—पहिलूं परजापति-थिकी परठाइ ए पइरि । भोगवि सोडस वारसी, सुक सिधावीइ धिरि । —मा. कां. प्र.

२ रक्षा, सहायता, मदद, पक्षपात ।

वि. स्त्री.—१ वर्ष की, वर्ष सम्बन्धी ।
२ देखो 'वारस्त्री' (रू.भे.)

वारसुंदरी–सं. स्त्री. [सं.] १ वेश्या, रंडी ।
२ गणिका, नर्तकी ।
रू. भे.—बारसुंदरी ।

वारसूळ–स. पु. यौ. [सं वार-शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार शूल का विशिष्ट वारों को विशिष्ट दिशाओं में होने वाला निवास ।

वि. वि.—इसका सोम, शनि को पूर्व दिशा में, गुरु को दक्षिण में, रवि, शुक्र को पश्चिम में तथा मंगल बुधको उत्तर दिशा में निवास रहता है । मतान्तर से रवि का उत्तर में भी ।

वारस्त्री–सं. स्त्री. [स.] १ वेश्या, रण्डी ।
२ नर्तकी, गणिका ।

वारहौ–सं. पु.—यवन, मुसलमान ।

उ०—असंख दळ दिली रा भुजां उछवाळतौ, मगर अर [illegible] दीठौ सबां ही । वेर विच **वारहौ** मंडीवर [illegible] [illegible] आंबेर मांही ।

वारांगना—देखो 'वारंगना' (रू.भे.)

उ०—एक एक नै दोय दोय वारांगना [illegible] आंमना ।

वारांणसी-सं. स्त्री.. [सं. वाराणसी] बनारस का प्राचीन एवं आधुनिक नाम ।

उ०-वारांणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नांम ए। तेह नौ पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जांणे रूपे कांम ए। —वि. कु.

रू. भे.—बांणारसि, बांणारसी, वांणरस, वांणारसी ।

वारांह—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—साहिजादौ सुरतांण बै, रिण झूझै रिम राह । डार परिग्गह करि मुहरि, नीसरियौ **वारांह** । — गु. रू. बं.

वारा-सं. स्त्री. [सं. वार] १ मदिरा, शराब । (अ. मा.)

२ देखो 'वराह' (रू. भे.)

३ देखो 'वार' (रू. भे.)

उ०—१ बीछुड़तां ई सज्जणां, राता किया रतन्न । **वारां** विहुं चिहुं नांखिया, आंसू मोती वन्न । —ढो. मा.

उ०—२ न कौ मास पखं न को तिथ **वारा** । —अनुभववांणी

वाराणसी-देखो 'वारांणसी' (रू. भे.)

वाराधिप-सं. पु. [सं. वारि-अधिप] समुद्र ।

उ०—**वाराधिप** सेतां बंधण रौ, कुळ राखस जूथ निकंदण रौ। दिल तूं 'किसना' जग बंदण रौ, नहचौ रख कोसळ नंदण रौ। —र. ज. प्र.

वारापार—देखो 'वारपार' (रू. भे.)

उ०—उण मुख तैं गग्गौ कयौ, इण कर धरी दुधार। वार कहण पायौ नहीं, निकसी **वारापार** । —द. दा.

वाराह, वाराहउ, वाराहर—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—१ धड़हड़ै सात पंयाळ धूजै, सेसनाग धड़क्क ए । खित भार दाढ **वाराह** खड़क्कै, कोम कंध कड़क्क ए। —गु. रू. बं.

उ०—२ जइ भागउं तो **वाराहउं**, जइ थाकउ तो पारकरउ घोडउ जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दावडउ। —व. स.

उ०—३ हुऐं आप हथवाह, राव **वाराहर** झालौ। ले छकड़ां सिर-लार, पुळै बाजू दळ पाळौ। —पा. प्र.

वाराहिकंद—देखो 'वाराहीकंद' (रू. भे.)

वाराही-सं. स्त्री. [सं.] १ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आठ देवियों में से एक ।

२ पृथ्वी ।

३ सूअर के रूप में विष्णु की एक शक्ति ।

४ सूअरी ।

५ सप्त मातृकाओं में से एक जिसका वाहन बैल है ।

६ माप विशेष ।

रू. भे.—बाराही, वराहजी, वराही ।

वाराहीकंद-सं. पु. [सं.] एक महाकंद जो औषधियों में काम आता है और जिसे गेंठी भी कहते हैं ।

रू. भे.—बाराहीकंद, वाराहिकंद ।

वारि-सं. पु. [सं.] १ पानी, जल ।

उ०—१ बापरै तखत बैठी, धारि छत्र जोम धारि । वीजळां दिलेस देस, मारि कीध थाळ **वारि** । —सू. प्र.

उ०—२ अहिलइं गयु अवतार, इम, कांमकंदलां नारि । परवत-स्रंगि तलावड़ी, व्रथा रहिउं जिम **वारि** । —मा. कां. प्र.

उ०—३ **वारि** वसंती पद्मिनी, ससीहर सूर आकासि । महीपति ! तिम महिला-तणां, मन ते माधव-पासि । —मा. कां. प्र.

२ कोई तरल पदार्थ ।

३ सरस्वती, वाणी ।

४ निसानी छंद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण में ४ गुरू व १५ लघु वर्ण होते हैं ।

५ देखो 'वार' (रू. भे.)

उ०—१ छांना नितु पुहचइ परधांन, रळियात थ्या चिति परधांन । मास दोह आगळि असवार, आया पूगळि नयरि ते **वारि** । —ढो. मा.

उ०—२ कहिस्यां तौ तूझ भलौ करणाकर, वपि एकणि सहु धरै विचारि । रावळ जांम सरीखौ राजा, वळै घड़िस जौ बीजी **वारि** । —ईसरदास बारहठ

६ देखो 'वारी' (रू. भे.)

रू. भे.—बारि, बारीय ।

वारिईस—देखो 'वारीस' (रू. भे.)

उ०—जक्षेस **वारिईस** की, सुरेस नेस प्री जिसा । 'अभौ' त्रिलोक में अचंभ, भोग भागवै इसा । —रा. रू.

वारिख-सं. पु [सं. वार्क्षम्] वन, जंगल । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वारख ।

वारिगह, वारिग्रह—देखो 'बारिगह' (रू. भे.)

उ०—जु मन वांध्यौ चाहिजै । त्यैं कै कारणैं या **वारिगह** दीधी छै । —वेलि टी.

वारिचर-सं.पु. [सं.] १ जल में विचरण करने वाले प्राणी, जल-जन्तु ।

२ मछली, मत्स्य ।

३ शंख ।

वारिज-सं. पु. [सं.] १ कमल ।

उ०—रवि ऊगतां जिसौ मुख राजै वारिज प्रफुल्लित नैत्र विराजै।
—सू. प्र.

२ शंख। (ह. नां. मा.)
३ घोंघा।
४ मत्स्य, मछली।
रू. भे.—बारिज, वारज।

वारिजपुंड्र—सं. पु. [सं.] श्वेत-कमल।

वारिजलोचण—सं. पु. [सं. वारिजलोचनं] परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

वारिजात—देखो 'वारिज'

वारिद, वारिद्द—सं. पु. [सं. वारिद] मेघ, बादल।

उ०—१ रित सारिद **वारिद** रहित, आगम अघहण मास। 'अजन' विदा कीधौ '**अभौ**' निरखण ग्रेह निवास। —रा. रू.

उ०—२ कितां कंध धारां झरै मद्द काळा। वणे जांणि **वारिद्द** भाद्रव्व वाळा। —रा. रू.

रू. भे.—बारद, बारिद, वारद।

वारिद्र—सं. पु. [सं.] चातक-पक्षी।

वारिध—देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

उ०—अंगीकृत ईस्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ। **वारिध** वाड़व अग्गि वहैं पांणी सासंतइ। —प. च. चौ.

वारिधर—सं. पु. [सं.] १ बादल, मेघ।

२ समुद्र।
३ नागरमोथा।
४ एक समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण और दो भगण होते हैं।
रू. भे.—बारिधर।

वारिधि—सं. पु [सं.] समुद्र, सागर।

उ०—१ पदमणि स्युं पांणी ग्रहण, विचि **वारिधि** अतिक्रूर। ऊखांणो साचौ हुऔ, बाघ नदी जल पूर। —प. च. चौ.

उ०—२ हूं **वारिधि** मांहै पड्यौ, मीनोदर रह्यौ केम। गणिका घरि सुक किम थयौ, भाखौ जिम छै तेम। —वि. कु.

रू. भे.—बारध, बारधि, बारिधि, वारद्ध, वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस, वारिध वारुध।

वारिनाथ—सं. पु [सं.] १ समुद्र।

२ वरुण देव।
३ बादल।

वारिनिधि—सं. पु. [सं.] समुद्र।

रू. भे.—वारनिध, वारनिधि।

वारियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—वात वड साळ फरीयां जकण **वारियां**, भाटी कह 'दांन' 'सादूळ' छक भारीयां। धणी सूंपां सरण मरण संक धारीयां, लाज मन धरै जेसांण गढ लारीयां। —जसौ आढौ

वारियौ—सं. पु.—देखो 'बारियौ' (रू. भे.)

उ०—सांझै स्यारी जूप, ताकड़ै रात्यूं रेवै, करै कीलिया राग, **वारियौ** दूहा देवै। —दसदेव

वारिरुह—सं. पु. [सं.] कमल।

वारिवारि—१ देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

उ०—तु **वारिवारि** पंथ साहांनि कहुछौ राजंन। चरण त्यजवा तह्मारां किम चालि माहारूं मंन। —नळाख्यांन

२ देखो 'बारीबारी' (रू. भे.)

वारिवाह—सं. पु. [सं] बादल, मेघ।

रू. भे.—बारिबाह, वारवाह।

वारिविरोळण—देखो 'वारविलोवण' (रू. भे.) (नां. मा.)

वारिस—सं. पु. [फा.] १ किसी की जायदाद का हकदार, जायदाद के लिये मनोनीत किया हुआ या कानूनन अधिकारी।

२ उत्तराधिकारी।
३ वह जिसने अपने आपको किसी अन्य के कार्यों के लिये योग्य बना लिया है।
रू. भे.—वारस।

वारिसार—सं. पु—चन्द्रगुप्त का एक पुत्र, अशोक का पिता, बिंदुसार।

वारिसास्त्र—सं. पु. [सं. वारिशास्त्र] गर्ग मुनि द्वारा रचित फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ।

वारी—सं. स्त्री.—१ अवसर, मौका, पारी।

उ०—१ थावी केतली रे नर ऊमर थारी। भाखे मुख असहा वच भारी। वचस्यौ नहीं आवियां **वारी**, गावौ रे गावौ गिरधारी। —बक्सीरांम लाळस

उ०—२ सेज संवारी छै तन री तयारी छै। और उवां री **वारी** छै आज। —रसीलै राज रा गीत

२ न्यौछार, उत्सर्ग।

उ०—१ हूं **वारी** रे माधवा, बिरह जलंती जांणि। तूं तु तापइ दूरि थी, प्रेमि पसारी पांणि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ नीबूड़े री गहरी गहरी छांय ओ थां पर **वारी** रे सैयां। ढोला नै मरवण सुख भर पोढिया ओ राज। —लो. गी.

३ निवारण, निवृत्ति।

उ०—सदा सेवकां लोक सांनिध्यकारी। प्रभु 'पास' स्तंभनौ विघ्न **वारी**। —स. कु.

४ साधुवाद या धन्यवाद देने की क्रिया या भाव ।

उ०—हाथी रै हौदै मरियौ पती नै देख वीर स्त्री कहै **वारी** वालम वारणै जाऊं धणी री वाह हथ वाहनै वारणौ । —वी. स. टी.

[सं. वारी] ५ हाथी को बांधने की रस्सी या जंजीर ।

६ हाथी को पकड़ने के लिये बनाया हुआ गड्ढा ।

७ हाथी को बांधने का स्थान ।

८ कैदी, बंदी ।

९ जल-पात्र ।

१० तरल पदार्थ रखने का एक टोंटीदार वर्तन ।

११ सरस्वती का नाम ।

१२ देखो **'बारी'** (रू. भे.)

उ०—तद भरमल रै रहवासरै उण घड़ी खिड़की कराई । सो रात घड़ी च्यार गयां भरमल हजूर आवै, उठै जीमै, सेझ बिछावै । **बारी** होवै सो मोहल आवै । रात घड़ी च्यार पाछली रहां बहोड़ जावै । —कुंवरसी सांखला री वारता

रू. भे.—बारि, वारि ।

वारीय—देखो 'वारि' (रू. भे.)

वारीवारी—देखो 'बारी बारी' (रू. भे)

उ०—दारूड़ा री मनवार आपस री, वण रही **वारी वारी** । —रसीलै राजरौ गीत

वारीस–सं. पु. [सं. वारि+ईश] १ समुद्र ।

२ जल के अधिपति वरुण देव ।

रू- भे.—बारिस, बारीस, वरीस, वारिईस ।

वारुंवार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

वारु—१ देखो 'वारू' (रू. भे.)

उ०—१ वैशाख **वारु** मास, नहीं ताढ़ि तड़कउ तास । उंची चढ़ि आवास, वइसयइ केहनइ पास । —स. कु.

उ०—२ पहुआवर धनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ़ ग्वालेर । करणसाही लाडु भला रे लाल, **वारु** बीकानेर । —प. च. चौ.

उ०—३ हउआे [हुइतो] संभालु [मन] मांरू ठारु । सोकागनीजवा [ला लागी] छि, सीतल [वचनि] **वारु** । —नळाख्यांन

वा'रु—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

वारुण–वि. [सं.] १ वरुण का, वरुण सम्बन्धी ।

२ वरुण को समर्पित किया हुआ, दिया हुआ ।

[सं. पु.] १ नव खण्डों में से एक ।

२ शतभिषा नक्षत्र ।

३ देखो 'वरुण' (रू. भे.)

वारुणास्त्र–सं. पु. [सं.] एक अस्त्र विशेष ।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र संवर्त्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र आग्नेयास्त्र **वारुणास्त्र** दांनवास्त्र माहेंदास्त्र तिमिरास्त्र डिंभककारास्त्र नारायास्त्र अस्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणी । —व. स.

वारुणि–सं. पु. [सं. वारुणि] १ एक पैतृक नाम जो अगस्त्य, भृगु एवं वाशिष्ठ आदि ऋषियों के लिये प्रयुक्त होता है ।

वि. वि.—ये सब ऋषि ब्रह्मा के यज्ञ से उत्पन्न हुए और वरुण ने इनको पुत्र रूप में माना इसलिये इनका नाम वारुणि पड़ा ।

२ धर्म सावर्णि मनवन्तर का एक ऋषि ।

३ एक पक्षिराज, जो कश्यप एवं वनिता के पुत्रों में से एक था ।

४ वानरों का एक राजा ।

वारुणी–सं. स्त्री. [सं.] १ स्वायंभुव मनवन्तर के वरुण की पत्नी ।

२ अरण्य प्रजापति की कन्या जो चक्षुष् राजा की पत्नी एवं चक्षुष् मनु की माता थी ।

७ एक महाविद्या ।

उ०—वारुणी दारुणी भास्करी संकरी जया विजया घोरा कौबेरी प्रवाही मदनसेना । —व. स.

८ उपनिषद विद्या ।

९ पश्चिम दिशा ।

१० मदिरा, शराब ।

११ शतभिषा नक्षत्र, जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को पड़ता है ।

१२ उक्त दिन का माना जाने वाला पर्व ।

१३ दूर्वा, दूब ।

१४ घोड़े की एक चाल ।

१५ मादा हाथी, हस्तिनी ।

रू. भे.—बरुणी, बरूणी, बारणी, बारुणी, बारूणी, वारणी ।

वारुध—देखो 'वारिधि' (रू. भे.) (अ. मा.)

वारुसी–सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बां दा. ख्यात)

वारूंवार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

उ०—सकति गणेस नवै ग्रह सोई· सुर तेतीस सहाय सकोई । वड पहि जतन सुं वारूंवारा, हुवो धरम लख कोड़ हजारां । —रा. रू.

वारू–वि. (सं. वरः] १ वर, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—१ तो **वारू** राजा रे अहि उसीयां पछी मांहरा साहिबा, अनंगसेना इण नांम रे वेस्या विगताली । —वि. कु.

उ०—२ भोग परित्याग प्रव्रज्या परयवा जी, सूत्र परिग्रह **वारू** तप उपधांन हो । —वि. कु.

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ तुं गुण अनंत करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे। सुंदर तुझ मुख नउ मटकौ, वारू लोयण नउ लटकउ रे। —वि. कु.

उ०—२ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मंडप नीपाईउ, पोइणि ने पांनि छाइउ, कंकूना छाबड़ा मोतीना चडक। —व. स.

३ स्वादिष्ठ।

उ०—मोतीग्रा लाडूं, दाखडिग्रा लाडूं, दहीथरां तिलसांकली, फीणा वरसोला, साकरीग्रा चणा, कोहलापाक, दूध पाक सेलड़ी पाक खरगां पाजां जलेबी हेसमी, वारू पडसूधी तणा ग्राछा मांडा, लगार नहीं खांडा। —व. स.

सं. पु.—१ वह हाथी जिस पर विजय पताका रहती है।

रू. भे.—'वारु'।

वा'रू—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

वारुगु, वारुगौ—सं. पु.—एक कारीगर।

उ०—गलीग्रारा चींतारा घणा, ताई वणकर तेहनी नहीं मणा। कंडीग्रा जडीग्रा गणीग्रा भला, लाभइ वारुगा रूडी कला। —नळदवदंती रास

वारुवार—देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

वारेवौ—सं. पु.—त्यागने, निवारण करने की क्रिया या भाव।

उ०—राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौहो। सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार वारेवौ हो। —वि. कु.

वारोत—देखो 'बारोत' (रू. भे.)

वारोवार, वारोवारी—१ देखो 'बारंबार' (रू. भे.)

उ०—१ तिहां जिनवर मुनि सुव्रत स्वांमिनै, देव ग्रह निज ग्राय। वारोवार करै गुण वरणना, मन सुद्ध प्रणमै रे पाय। —वि. कु.

उ०—२ किम रिहिसि ए निराधार, वाघ संघ करसि तां ग्राहार। एणी पिरि करतां वारोवारि, कलियुगि मन प्रेरचू ग्रपार। —नळाख्यांन

२ देखो 'बारीबारी' (रू. भे.)

उ०—तूटै सनाह फूटै तुरस, वाह सरस तरवारियां। सोहै निराट हिंदू ग्रसुर, वाहै वारोवारियां। —रा. रू.

वारौ—स. पु.—१ कूए से पानी निकालने का चरस, मोट।

उ०—१ ताहरां पाबूजी कोहर तेवण ग्राप लागा। ताहरां एक वारौ काढियौ। तैसूं कोठा कूंडचां खेळियां भरी। —नैणसी

उ०—२ सो नापौ' ऊपर खड़ौ थौ। कोहर तेवायौ सो वारा ग्राठ नो नीसरिया। दसमों वारौ खांचतां नाकौ खुस गयौ। वरत ढीली पड़ गई। —नापै सांखलै री वारता

२ कूए के पानी का मोट उड़ेलते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

३ रात्रि के समय मादा ऊंटों के झुण्ड के बैठने का स्थान।

४ उजाड़, जंगल।

५ लघुशंका करने की क्रिया।

६ समय, काल।

उ०—१ राम राज जोधपुर, सहू हरचंद वारौ। मास पांच खट मास, साह ग्रापै वाधारौ। —गु. रू. बं.

उ०—२ दिन ग्रायां चक्कवै गया सक्कवै समाए। दिन ग्रायां हरिचंद गयौ वारौ वरताए। —रा. रू.

७ किसी काम या बात के लिए वह ग्रवसर जो कुछ ग्रन्तर देकर क्रम से ग्राता है, पारी।

उ०—१ ताहरां जियै वदू री वारौ हुंतौ, सु मारग रोकि ऊभौ। ज्यूं हरदास पाछली रात रौ बाहुड़ियौ ताहरां कह्यौ—सासूजी। हरदास बाहुड़ै छै। —नैणसी

उ०—२ घड़ी च्यार बैस पूछौ वारौ केरो। तद ग्ररज कीवी भरमल रौ वारौ ले ग्रसवार हुग्रा सो इहां रौ छै। तद ग्राप उठि भरमल रै मोहल पधारियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

८ चेचक।

उ०—वणवीर ग्रांणि ग्रर मूंहतै ग्रचळै नूं ग्रर नाई लखमन लाहोरी नूं सूंपियौ। ग्रागै भोपतजी समाधिया हुग्रा हुता। काचौ पाकौ वारौ ढळियौ हुतौ। —द. वि.

९ स्कन्दापस्मारादि बालग्रहों से पीड़ित बच्चे के शिर के ऊपर वारा जाने वाला जल जो किसी वृक्ष विशेष की जड़ों में डाला जाता है।

१० बड़ी तीज के रोज लड़की के पिता के द्वारा उसके ससुराल भेजी जाने वाली मिठाई।

वि. वि.—इसमें बड़े-बड़े लड्डू भेजे जाते हैं।

११ बड़ी तीज के रोज लड़के के पिता के द्वारा (शादी होने के पहले) पुत्र वधु के लिए भेजी जाने वाली मिठाई व वस्त्र ग्रादि।

१२ देखो 'वार' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—मरण तणौ डर कोई नहीं, मरना है इक वारौ रे। बहुत निवाज बडा करूं, ह्युं बहु देस भंडारौ रे। —प. च. चौ.

रू. भे.—बारौ।

वालंटियर—सं. पु. [ग्रं.] निस्वार्थ भाव से किसी कार्य में योग देने वाला स्वयं-सेवक।

वालंध—सं. पु.—एक जाती या वर्ग विशेष।

उ०—माली तंबोली छीपा परीयट बंधारा तूनारा सोनारा ठांठार लोहार चमार सुई **वालंध** कडीया सिलवट उड गांछा कोली टाटिया बाबर ढेढ डूंब। —व. स.

वालंभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—१ **वालंभ** एक हिलोर दे, आई सकै तउ आइ। बांहड़ियां बे थक्कियां, काग उडाइ उडाइ। —ढो. मा.

उ०—२ प्रीतड़ी **वालंभ** पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे।
कठिन हियुं नवि किजियइ, कीजइ सगुण सनेह रे। —स. कु.

वाळ, वाल—सं. पु. [सं. वल्ल] १ चादर, गिलाफ। (उ. र.)

२ पर्वत की तलहटी।

३ पर्वत की तलहटी में स्थित खेत।

४ घुड़साल, अस्तबल।

५ घोड़ों का समूह।

उ०—धन हाथां हिंदु धणी, कीरत वणी सकाज। **वाल** तणौ छोगौ व्रवी, 'रूपमणी' धजराज। —चिमनजी आढौ.

६ तीन घुंघची के बराबर एक तोल।

७ निषेध, वर्जन।

८ बारीक खुदाई या जाली काटने का एक औजार।

९ एक प्रत्यय।

१० देखो 'बाल' (रू. भे.) (ह. नां. मां.]

११ देखो 'बाला' (मह., रू. भे.)

उ०—लौकिक न रहइ लोकमां रे लाल, विसय थकी मन **वाल** सुकुलणी रे। कांम भोग भुंडचा कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल सुकु. रे। —स. कु.

रू. भे.—वालइ, वालई, वाळि, वालि, वाळी, वाली।

वालइ, वालई—१ देखो 'वाल' (रू. भे.)

उ०—कान्हडदे पाटनउ धणी, बीजी भूमि भोगवई धणी। राजरिद्धि नूं किसूं वखांण, **वालइ** पंच-वरण केकांण। —कां. दे. प्र.

२ देखो 'बाला' (रू. भे.)

वालउ—१ देखो 'बाल' (रू. भे.)

२ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—हुं कित **वालउ** माय गहिरि गयंदंतउ खेलउं, हुं कित बालउ माय, सेसफण विमुहा पिलहउं। —प. च. चौ.

वाळक—सं. पु. [देशज] १ जंगल में स्वतन्त्र चरने वाले पशु, जिनके साथ चरवाहा नहीं होता।

२ नव प्रसूता मादा ऊंट जो अपने बच्चे को छोड़ कर जंगल में चरने जाती है।

३ हाथ में पहनने का कंगन, बाल छड़।

वि.—१ बंधन रहित, स्वछन्द, मुक्त (पशु)

वाळकी—१ देखो 'बाळी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बालिका' (रू. भे.)

वाळकौ—देखो 'बाळक' (अल्पा., रू. भे.)

वाळछौ—देखो 'बाळछौ' (रू. भे.)

वालट्ठादोस—सं. पु.—बालक के खाने के लिये बनाई हुई वस्तु को लेने से लगने वाला दोष। (जैन)

वाळण—वि. [सं. वलनं] १ रोकने वाला, सामना करने वाला।

२ लौटाने वाला।

३ वापिस लाने वाला।

४ मोड़ने वाला, घुमाने वाला।

५ प्रतिशोध लेने वाला।

६ आने वाला।

वाळणोत—देखो 'बाळणोत' (रू. भे.)

वाळणौ, वाळबौ—क्रि. स. [सं. वलनं] १ वापस लौटाना, लौटा कर लाना।

उ०—१ जुड़ै तै बार किता इंद्रजीत, संहार दइत्तां **वाळी** सीत। —ह. र.

उ०—२ **वाळियौ** वरग गायां तणौं बीसहथ, सीर संभाळियौ बीर सागी। अरण बिच बरण बिच घटा जिम ओवड़ी, लोवड़ी जाय असमांन लागी। —गोपीनाथ गाडण

उ०—३ रतन मंजरी रीस करि कहियौ, राजा नर ब्रह्मा री आंण दीवी छै। जुं सांढ पाछी **वाळ**। —पच दंडी री वारता

२ वापस लेना, प्राप्त करना, अधिकार में करना।

उ०—१ म्हारै माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतौ हूं मोटौ हुईस, नै मांहरी धरती गई छै सु **वाळीस**। —नैणसी

उ०—२ आंपै वेढ सूं अलाहिदा रहिस्यां, नै आंपां नूं धरती **वाळणी** छै। —नैणसी

उ०—३ **वाळण** दक्खण वसुह, कटक बंध चढिया कोअंण। भेरी पंचसद्द ताम, सुणियै लग जोजण। —गु. रू. बं

३ प्रति शोध लेना।

उ०—स्रीसेरसाह राव स्रीजैतसिंघ जी रै वैर **वाळण** रै कियै राव मालदे ऊपरि आप पधारि अर राव मालदे रा रजपूत उमराव घणा मारिया। —द. वि

४ रोकना, सामना करना।

५ वापस बुलाना।

६ घुमाना, फिराना, चक्कर लगवाना।

७ विदा करना, लौटाना।

८ मोड़ना ।

उ०—१ विचै आवतां बंधवां बांह वाळै । रटै रांम बांणं जती छेदि राळै । —सू. प्र.

उ०—२ किण रौ ई रह्यौ न हटकियौ, निज हट कियौ निभाव । बाळै ज्यूंइ वळियौ नहीं, बाळापणंइ सुभाव । —जैतदान बारहट

९ खारिज करना, निरस्त करना ।

उ०—जनम जनम में करज कियौ है माथै करड़ौ । मिनख कियौ महाराज काट दे क्यूं नहिं खरड़ौ । यौ खरड़ौ करड़ौ घणौ, कीकर बणै बणाव, निस वासर सगरांम कह, रांमधणी नै ध्याव । रांमधणी नै ध्याव, वाळदे खावंद खरड़ौ । जनम-जनम में करज कियौ है माथै करड़ौ । —सगरांम दास.

१० मिटाना ।

उ०—मन जांणौ पीवूं पै मिसरी, छाछ सूवरणी मिळै न छांट । वळिया सौ पाछां कुण वाळै, उण घर री लेखन रा आंट । —ओपौ आढौ.

११ झुकाना ।

१२ वसूल करना, लेना ।

१३ जेवरी गूंथना ।

१४ हवाकरना, पवन डुलाना ।

१५ पशुओं को एक स्थान पर एकत्र करना ।

१६ देखो 'बाळणौ, बाळबौ' (रू. भे.)

वाळणहार, हारौ (हारी), वाळणियौ—वि० ।

वाळिओड़ौ, वालियोड़ौ, वाळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाळीजणौ, वाळीजबौ—कर्म वा० ।

वालणौ, वालबौ—रू० भे० ।

वालणौ, वालबौ—देखो 'वाळणौ, वाळबौ' (रू. भे.)

उ०—आऊखा नै अंतपक्ष, अणसण पाली नै । संवत पनरपचीस, मन वैराग वाली नै । —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ संद सु सब थई पाडइ, लेख न लिखिउ जाय । पिऊ माहरु परदेसि थि, किणी-परि वालसि वाय । —मा. कां. प्र.

उ०—३ माहरौ मन पापी हो, कहूँ अवगुण किसा । मन पाछौ वाल्यौ हो, एम कहै मदालसा । —वि. कु.

वालणहार, हारौ हारी), वालणियौ—वि० ।

वालिओड़ौ, वालियोड़ौ, वाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वालीजणौ, वालीजबौ—कर्म वा० ।

वाळध-सं. पु.—श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)

वालम—१ देखो 'बालम' (रू. भे.)

उ०—१ हेटै दुसमण हाथी रै हौदै मरियौ पती नें देख वीर स्त्री कहै वारी वालम वारणैं जाऊं धणी री वाह हथ वाहने वारणैं । —वी. स. टी.

उ०—२ कहै कुमरी नैं हो ताहरौ भाग्य फल्यौ । मन मांनीतौ हो वालम आयौ मिल्यौ । —वि. कु.

वालमकाकड़ी-सं. स्त्री.—लम्बे आकार की एक ककड़ी विशेष ।

रू. भे.—बालमकाकड़ी ।

वालमियौ—देखो 'बालमियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बालम' (अल्पा., रू. भे.)

वालमिक, वालमीक—देखो 'बालमीक' (रू. भे.)

उ०—देवी वालमिक व्यास रुपे तुं कत्तं । देवी रांमायण पुराणौ भागवंत्तं । —देवि

वालर-सं. पु.—हरिण, मृग ।

वालरकाकड़ी-सं. स्त्री. [सं. वल्लूर-कर्कटी] रेगिस्थान में होने वाली एक ककड़ी विशेष । (उ. र.)

वाळलियौ—देखो 'वाळलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वाळलौ-सं. पु.—स्त्रियों के गले में पहनने का हंसुली के आकार एक आभूषण ।

रू. भे.—बाळलौ ।

अल्पा.—बाळलियौ, वाळलियौ ।

वाळव-सं. पु. [सं. वालव] फलित ज्योतिष में दूसरा करण जिसमें शुभ कर्म वर्जित नहीं है ।

रू. भे.—बालव ।

वाळस—देखो 'बाळस' (रू. भे.)

वालहउ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—संखे आतीस सांभळी रे, भरम पड्यउ भरतार । एहनउ अनेरउ वालहउ रे, मूंकी दडाकार । —स. कु.

वालहली-सं. स्त्री. [सं. वल्ल फलिका] लता की फली ? (उ. र.)

वाळहौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—बळबळती रेत रै माथै ढाळौढाळ पांणी रळकण लागौ । सूखा वाळहा खाळा जीवण सांचरतां ई भरणाटै दौड़ण लागा । —फुलवाड़ी

वालहौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम सालूरां सरवरां, जिम धरणी अर मेह । चंपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह । —ढो. मा.

उ०—२ माहरा वालहा, ताहरी न तजुंलार तूं हीयड़ा नुं हार । तूं यौवन सिणगार, तूं भोगी भरतार । —वि. कु.

उ०—३ मदन मंजरी बेटी मुझने वालही रे, ए सरिखौ वर जोइ। —स्रीपाल रास

(स्त्री. वालही)

वाला-सं. स्त्री.—१ पंवार वंश की एक शाखा। (बां. दा. ख्यात)

२ वस्त्र विशेष।

उ०—रत्न कंबल छाइल मकबल अगल साउला उरसाला **वाला** पटुलां वाकलां घनवेलि कमलवेलि। —व. स.

३ वृद्ध व्यक्तियों द्वारा ससुराल में स्त्रियों के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द विशेष।

२ देखो 'बाला' (रू. भे.) (व. स., ग्र. मा.)

उ०—नह **वाला** नह तरणा, ब्रध परण्या न कंवारा। —केसोदास गाडण

रू. भे.—बाल्हा, वाल्हा।

वालावत-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

वालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—हो **वालिभ** मइं तुंनइ वारियउ, वा' रे, हो जूयटइ रमिबा तूं म जाइ। —स. कु.

वालिभि—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—कविन्याति कायस्थ वड, **वालिभि** विख्यात। पूरुए पद बंधतां दीह थया दह सात। —मां कां. प्र.

वालि—१ देखो 'वाल' (रू. भे.)

उ०—१ कूकड़ा कंध कालम्म कन्न, रेवंत जोति दीवा रतन्न। पांणेण पियइ जळ पोव पंथ, सोहइ सरूप धुरि वालि संथ। —रा. ज. सी.

उ०—२ पांडव दीइ चासणी खांण। वालि लेई बांध्या केकांण। —का. दे. प्र.

उ०—३ हइ **वालि** खंभि सोहइ हसत्ति। गढपत्ति जइतसी ग्रउब गत्ति। —रा. ज. सी.

२ देखो 'वाली' (रू. भे.)

वालिद-सं. पु. [ग्र.] पिता, जनक।

वालिदा-सं. स्त्री. [ग्र.] माता।

वालिबध-सं. पु. एक प्रकार का घोड़ा जो उत्तम गिना जाता है।

वालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—**वालिभ** गरथ वसीकरण, बीजा सहु ग्रकयथ्थ। जिए चडचा दळ उतरइ. तरणि पसारइ हथ्थ। —ढो. मा.

वाळियोड़ौ,वालियोड़ौ-भू. का. कृ. १ वापस लौटायां हुग्रा, लौटाकर लाया हुग्रा. २ वापस लिया हुवा, प्राप्त किया हुग्रा, ग्रधिकार में किया हुग्रा. ३ प्रतिशोध लिया हुग्रा. ४ सामना किया हुग्रा, रोका हुग्रा. ५ वापस बुलाया हुग्रा. ६ घुमाया, फिराया व चक्कर लगवाया हुग्रा. ७ विदा किया हुग्रा, लौटाया हुग्रा, ८ निर्देश दिया हुग्रा. ९ मोड़ा हुग्रा, बल डाला हुग्रा. १० खारिज किया हुग्रा. ११ मिटाया हुग्रा. १२ झुकाया हुग्रा. १३ वसूल किया हुग्रा, लिया हुग्रा. १४ जेवरा गूंथा हुग्रा. १५ हवा किया हुग्रा, पवन डुलाया हुग्रा. १६ एक स्थान पर एकत्र किया हुग्रा (पशु)

१७ देखो 'बाळिगोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बाळियोड़ी, वालियोड़ी)

वाळी-सं. स्त्री. [स. बाळी] १ कान व नाक का ग्राभूषण विशेष।

प्रत्य.—२ संज्ञा या क्रिया शब्दों के ग्रागे लगने वाला सम्बन्ध बोधक प्रत्यय।

३ देखो 'वाळौ' (पु.) (रू. भे.)

वाली-वि. स्त्री.—प्यारी, प्रिया।

उ०—बौह सिर दार सीला सूं सवायौ। वाली सासड़ली रौ जायौ। —रसीले राज रा गीत

देखो 'वाल' (रू. भे.)

उ०—**वाळियां**—वधइ घरि-घरि ग्रहास। ग्रासिया सपूरित ग्रास वास। —रा. ज. सी.

१ देखो 'वाळौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बाली' (रू. भे.)

वाळिवेस—देखो 'बाळीवेस' (रू. भे.)

वालीसा-सं. पु.—चौहान वंश की एक शाखा।

उ०—सु लालै रै वैर रा. भाखरसी सादूळोत सूं थौ, तिण ऊपर वालीसां री धरती में रहतौ। —नैणसी

वालीसौ-सं. पु.—वालिसा शाखा का व्यक्ति।

वालु-सं. पु.—एक शाक विशेष।

उ०—वालु नइं वेलातरु, वेऊ वेतस वांणि। वघ्रारु वाहलु लीउ, **वाउलीउ** वखांणि। —मा. कां. प्र.

वालुका-सं. स्त्री. [सं.] १ ककड़ी विशेष।

२ देखो 'बालु' (रू. भे.)

वाळुकाजंत्र—देखो 'बाळुकाजंत्र' (रू. भे.)

वालुकाप्रभा-सं. पु. [सं.] एक नरक का नाम।

वाळुकायंत्र—देखो 'बाळुकाजंत्र' (रू. भे.)

वाळुचौ, वाळुछौ, वाळूंचौ—देखो 'बाळछौ' (रू. भे.)

वालेय—देखो 'बालेय' (रू भे.) (ह. नां. मा.)

वालेसर—देखो 'वालौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ गांव सिधाया ओ अजमौ कुण सोवसी ओ राज। थेई ओ मांनेतण रांणी थेई ओ **वालेसर** रांणी। —लो. गी

उ०—२ **वालेसर** हो वली परभातें बात, कहस्युं आइ होसी जीसी जी। दिलीसर हो वांची चीठी वात, सीख करा जावां घरे जी। —प. च. चौ.

वालोच-सं. पु.—प्रेम, प्यार।

वालोत-सं पु. [स्त्री. वालोतणी] चौहान-वंश की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (बां. दा. ख्यात)

वालोळ-सं. स्त्री.—सेम की फली जिसकी तरकारी बनती है।

वाळौ-सं. पु.—१ बरसात में चलने वाला पानी का नाला, जल स्रोत।

२ नेहरुवा नामक रोग व इसका कीड़ा।

वि. वि.—देखो 'नारू

प्रत्य. [सं. आलुच्] (स्त्री. वाली) ३ क्रिया शब्द के आगे लग कर कर्तृवाचकसंज्ञा का अर्थ बोध करने वाला शब्द।

ज्यूं—करण वाळौ, मरण वाळौ, बोलण वाळौ।

उ०—मारण वाळा सूं मरण वाळौ बत्तो सूरवीर व्है। मारण **वाळौ** तौ कायर ई व्हिया करै पण कोड सू मरणियौ कायर नी व्है। —फुलवाड़ी

४ संज्ञा, पदार्थ या स्थान-वाचक शब्द के आगे लग कर सम्बन्ध वाचक अर्थ-बोधक शब्द। (ह. नां. मा.)

ज्यूं—दूधवाळौ, घर वाळौ।

उ०—१ साहिजादा अनै रायजादां संगठा, बाधियौ वळै दिखणाद **वाळौ**। —सुभरांम गौड़ रौ गीत

उ०—१ नाडी **वाळौ** तोतक तौ गजब इज रह्यौ। आ तौ सूळी चढणा बिचै ई सवाई व्ही। —फुलवाड़ी

रू. भे.—आळौ।

५ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, का।

उ०—१ उदधि कलवाह **वाळौ** उदक ऊकळै, रूक तण भीम ज्वाळा तणं रोस। —राव दुरजणसाळ हाडा रौ गीत

६ देखो 'बाळौ' (रू. भे.)

उ०—चमकै बूंदा झमकै वाळा, और बुलाक मोती लटकन वाळा। —रसीले राज रौ गीत

रू. भे.—बहाळौ, बाळौ, बाहळौ, बाहाळौ, व्हाळौ, वहाळौ, वाळहौ, वाहळौ, वाहलौ, वाहल्यौ, वाहाळौ, व्हाळौ।

वालौ-सं पु.—१ पति, खाविंद।

उ०—तूनै धूप खेवत के हरसंधी, कर हेत। **वाला** बीछड़िया मलै, मनवंछत फळ देत। —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ स्वामी, मालिक।

३ चुंबन, बोसा।

उ०—बेटा आगै बाप नै फेर हार मांनणी पड़ी। लुळनै उण रा लिलाड़ माथै **वालौ** दियौ। —फुलवाड़ी

वि. (स्त्री. वाली) १ प्यारा, प्रिय, स्नेही।

उ०-१ **वालौ** लागै छै म्हारो देसड़ौ ए लौ। केम कर जावूं परदेस, वाला जो। —लो. गी.

उ०—२ ज्यां घणूं **वालौ** जीवणौ, घट तिकां डर व्यापै घणौ। महाराजा सूं भ्रम द्वार मांगै, सहर तजि इंद्र साह। —रा. रू.

२ मनोहर, मोहक।

३ मीठा, मधुर।

रू. भे.—बहालौ, बालहौ, बालौ, बाल्हौ, व्हालौ, वहालौ, वा'लउ, वालहउ, वालहौ, वाल्हू, वाल्हौ, वाहलउ, वाहलु, वाहलू, वाहलौ, वाहल्यौ, वाहुलु, वाहुलौ।

अल्पा.,—बालुड़ौ, बालूड़ौ, वालड़ौ, वाहलकडु, वाहलकड़ौ, वाहिलियौ।

मह.,—बाल्हेसर, वालेसर, वाल्हेसर।

वाल्मीक, वाल्मीकि—देखो 'बालमीक' (रू. भे.)

वाल्हम—१ देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—ओ म्हारौ झूंपड़ो लूटनै पुळीजै न्हास जाओ विवेक राख नै, **वाल्हम** जो म्हारौ पती आय गयौ तौ अड़ब-अड़ब रुपीयां रौ कर एक एक तिणखलौ ही वेचसी। —वी. स. टी.

२ देखो 'बालम' (रू. भे.)

वाल्हा—देखो 'वाला' (रू. भे.)

वाल्हीक-सं. पु. [सं.] १ भारत की उत्तर-पश्चिम की सीमा पर स्थित एक प्राचीव जनपद। (सभा.)

२ आधुनिक बलख का नाम।

३ बलख देश का घोड़ा।

४ केसर।

५ हींग।

६ एक गंधर्व।

रू. भे.—व्रालिक, बाल्हीक, बाहलीक, वाहलीकण।

वाल्हूं—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०–तुम्ह थी कुण मुझ नइ वाल्हूं, हुं तउ तुम हिज ऊपरि माल्हुं हो।
—वि. कु.

वाल्हेसर—देखो 'वालौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ **वाल्हेसर** सांमी मांनि नें तुं ग्रंतरयांमी, मांनि नें सिवगति गांमी, वीनतड़ी मुझ मांनी वा। —प. च. चौ.

उ०—२ प्रीतड़ियां न कीजइ हो नारि परदेसियां रे। खिण-खिण दाझइ देह। वीछड़िया **वाल्हेसर** मलवौ दोहिलउ रे। सालइ सालइ ग्रधिक सनेह। —स. कु.

वाल्हौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ हे नीला मो पहली जुद्ध में कट पड़ण री उतावळ थनें नहीं करणी ही म्हैं थनै घणा **वाल्हा** कवा खवाय पाळियौ हौ सो म्हनें मरण देनें पड़ियौ होवतौ। —बी. स. टी

उ०—२ गायण दास खवास भणै ग्रवसर मन भांणौ। घट **वाल्हौ** ग्रापरौ तिकै पट घूंघट तांणौ। —रा. रू.

उ०—३ ईसांणद, बारट ग्राराधे, भल गुण थारा व्यास भणै। वालमीक् तूं नां ग्रति **वाल्हौ** पीरदास ग्ररदास पणै।
—पी. ग्रं.

उ०—उणारा लिलाड माथै लुळनै **वाल्हौ** दियौ। —फुलवाड़ी

उ०—५ भुज भरिनै भेळाह, मिळस्यूं जदि मन मेळुवां। **वाल्ही** साइ वेलाह, जनम सफल गिणस्यूं 'जसा'। —जसराज

उ०—६ **वाल्ही** नै वलि विनय वहै, गुण संग्रह म्हारा लाल। वहै धरम पमाडै जेह जगत में जस लहै म्हारा लाल। —स्रीपाल रास
(स्त्री. वाल्ही)

वाव–सं. स्त्री. [सं. वात] १ पवन, हवा।

उ०—१ चलंत घाव वेग **वाव** धाव पाव चंचळे। ग्रही कपाळ नीठ धीर, पीठ कोम ग्राकुळे। —रा. रू.

उ०—२ वेगा लीयैं मूंठी वाव, राज रथं पंखा राव। मैंगळां ऊरघ मंड, खेसै ग्राठ भीत खंड। —गु. रू. बं.

२ ग्रपान वायु।

उ०—पिणियारियां छैला, तनक सी तांन, किरकांटचां सा रंग। कागदी ज़बांन, वचन का कहाव ऊट का **वाव**।
—दुरगादत्त बाहरठ

३ पताका, ध्वजा।

उ०—**वाव** फरूकै वेढ वळै न वापरै। पांणां चढियां किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोर दांन बारहठ

४ देखो 'वापी' (रू.भे.)

उ०—१ ग्रादमी हजार ४००० जुहर हुवौ। सरोवर, कुवा, **वाव** एतलां मांहै सूं बाळक ३००० जाळ नखावै काढिया। —नैणसी

उ०—२ देवी देव जाळंधरी सप्त दीपं, देवी कंदरं सख्खरं **वाव** कूपं। —देवि.

रू. भे.—बाव।

वावकूंडियौ, वावकूंडौ—देखो 'वायकूंडियौ' (रू. भे.)

वावड़—देखो 'बावड़' (रू. भे.)

वावड़णौ, वावड़बौ—देखो 'बावड़णौ, बावड़बौ' (रू. भे.)

उ०–१ वाह वाह 'कूसळा'लघु वेसां, 'हरा' सुतन भेळै वरहास। 'ग्रभा' सुछळ दुरदां ग्रावड़ीयौ, **वावड़ियौ** रंगीयां बांणास।
—ठाकुर कुसळसिंह रौ गीत

उ०—२ ताहरां कहचौ—थे मोनूं कोई द्रव्यवत **वावड़ौ**।
—सयणी री वात

उ०—३ ताहरां ऊदैरी मां नूं बोलाई। कहचौ—वीरम **वावड़ौ** नहीं तर उदै री खाल कढ़ाऊं छूं, ग्रर भुस भराऊं छूं।—नैणसी

वावड़णहार, हारौ (हारी), **वावड़णियौ**—वि०।

बावड़िग्रोड़ौ, वावड़ियोड़ौ, वावड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

वावड़ीजणौ, वावड़ीजबौ—भाव वा०।

वावड़ियोड़ौ—देखो 'बावड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वावड़ियोड़ी)

वावड़ी—देखो 'बावड़ी' (रू. भे.)

उ०—गंदाळ सहर गढ़ कोट बाजार पौळि पगार बाग **वावड़ी** बगीचा कूग्रा सरवरां री बड़ां पींपळा री छिबि सहर री पाखती विराजि नै रही छै। —रा. सा. सं.

वावची—देखो 'बापची' (रू. भे.)

वावणौ, वावबौ—१ देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मूळ मोळता मिनख, मिरड़िया घणां घुमावै। हळ **वावतड़ी** वेर फोगड़ां बीज तुपावै। —दसदेव

उ०—२ रावळजी तौ पूखता छै नै नींबौ तौ मोटीयार छै। कदेस भालौ पकड़ने पूठै। रावळजी नै **वावै** तौ म्है किसुंण करां।
—वीरमदे सोनगरां री वात

उ०—४ सुध क्षेत्र समकित बीज **वावइ**, संघ ग्रांनंद ग्रति घणौ। जिन सिंघ सूरि करउ **चउमासउ**., स्रावण मास सोहांमणौ।
—समय सुंदर

उ०—५ संचित् पूरव करम नां, फल भोगवीइ पुण्य। जिहां **वाविउं** तिहां ऊगमइं, ग्रण–वाविउं तिहां सून्य। मा. कां. प्र.

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घर लुकट मुकट वन वीथियां घावजै। बांसरी **वावजै** ग्रहीरां वास। —बां. दा.

उ०—२ मतसागर उनमत्ती, वीणां सुर मधुरे **वावत्ती**। वाहण हंस विगत्ती, साय सुप्रसंन हुश्रौ सरसत्ती। —गजउद्धार

उ०—३ डफ ताल चग श्रदंग **वावत**, उडावतहि गुलाल। इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि बेहाल। —वि. कु.

उ०—४ वरसिंघ बंदि हूंता छडावि, श्रजमेरि कोटि नीसांण **वावि**। —रा. ज. सी.

वावणहार, हारौ (हारी), वावणियौ—वि०।

वाविश्रोड़ौ, वावियोड़ौ, वाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वावीजणौ, वावीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

वावदूक—वि. [सं.] **१** बातूनी, बकवादी।

२ वक्ता।

३ वाक्पटु।

वावपोटी—सं. स्त्री.-घोड़े का एक रोग जिससे उसके पिछले पैरों में नरम ग्रंथियां हो जाती हैं। (शा. हो.)

वावरणौ, वावरबौ—देखो 'वापरणौ, वापरबौ' (रू. भे.)

उ०१ सूरवीर दोई साथ, बोळ चोळ लूथबाथ। **वावरंत** रूप वीज, खंजरां कटार खीज। —सू. प्र.

उ०—२ कूंपावत पहिलै श्रणी, **वावर** खग्ग करग्ग। 'भीमाजळ' सारां मुहर, पड़ियौ धारां लग्ग। —रा. रू.

उ०—३ विसन समरजै मीठी वांणी, **वावरजो** धन देह वडांणी 'श्रोपा' श्रा ऊमर श्रोचांणी, परवत हूंत विछूंटा पांणी। —श्रोपौ श्राढौ

उ०—४ जउ दातार तउ वलि करण श्रवतार, जउ लक्ष्मी न **वावरइ** तउ प्रच्छन्न पुण्य करइ, जो उणु बोलि तो भोलउ···। —व. स.

उ०—५ स्री संघ मन पुगि रुलीए, गुण गाइ गोरडी सवि मिलिए। दक्षीण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रै धन **वावरइए**। —सिवचूला गणि

वावरणहार, हारौ (हारी), वावरणियौ वि०।

वावरिश्रोड़ौ, वावरियोड़ौ, वावरयौड़ौ—भू० का० कृ०।

वावरीजणौ, वावरीजबौ—कर्म वा०

वावरदी—वि.—वरदी सहित।

उ०—माहाराजा जसवंतसिंघ सात हजारी असवार तिण में पांच हजार दोसपा सेंसपा, दोय हजार **वावरदी** २५८० श्रांसांमी ५ कासमखांन बगेरै। —नैणसी

वावरियोड़ौ—**१** देखो 'वापरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बावड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वावरियोड़ी)

वावरी—देखो 'बावरी' (रू. भे)

(स्त्री. वावरण, वावरणी)

वावळ, वावल-सं. स्त्री. [सं. वायुगुल्म, वातगुल्म] **१** प्रचण्ड-हवा झंझावात 'श्रांधी'।

उ०—**वावळ** श्रागै वीभणौ, की पावै सनमांन। तूझ रीझ श्रागै तिसौ, 'देवा' जग चौ दांन। —बां. दा.

२ श्रांधी।

उ०—सिर सिंधुर सेरखां, श्रोप श्रंबर सिर लग्गा। उरड वडां ऊमरां वधै तुरही सुर वग्गा। कायमखांन तरीम जोड चड तीन हजारी। श्रलीयार श्रसवार हुवौ, गज सिंघ प्रहारी। श्रारुहै गयंद श्रवदळ श्रली, सैद महाबळ सद्दळां। हाहुळि श्रसंख मिळि हल्लिया, जांणक **वावळ** वद्दळां। —रा. रू.

३ वायु, हवा, समीर।

वि.—१ मस्त, मदोन्मत्त, उन्मत्त।

क्रि. वि.—२ श्रोर, तरफ।

उ०—'केहर' साहां भंजणां, सक राखण कथ्थां। विहुं **वावळ** खागां श्रड़ै, भुज डड समथ्थां। —द. दा.

रू. भे.—बउल, बाउल, बावल, वाउळ, वावल्ल।

श्रल्पा.—वाउलउ, वाउळउ, वाउळि, **वाउळी, वाउळौ, वावळि,** वावळी वावळौ, बावलौ।

वावळि, वावळी—**१** देखो 'वावळ' (श्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ एक सोर सारत्ति धोर धूंवा रवि डंबर। ज्यौं **वावळि** वादळ विसाळ श्रोपै मग श्रंबर —रा. रू.

२ देखो 'बावड़ी' (रू. भे.)

३ देखो **'बावळी'** (रू. भे.)

४ देखो **'बावळौ'** (स्त्री.)

उ०—२ जोध जडाग श्रभनमौ 'जैतौ,' सदा चलै श्रापरै सुभाय। लख दत दीयै भाजणो लाखां, खेड़ेचौ **वावळी** खुदाय। —तेजसी खिड़ियौ

वावळौ, वावलौ—१ देखो 'बावळौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुण सुण मीठी बोलगत, बैठ न वैरी पास। दही भरोसे **वावळा**, खायै कदै कपास। —श्रज्ञात

उ०—२ धारण सलाह चित नह धरै, श्रारण करण उतावळौ। **वावळा** गयंद मसतां विधीं, वींफरियौ रिण वावळौ। —सू. प्र.

उ०—३ वप गिणत **वावळी** कुंभ वार, जुध गिणै सती स्रीफळ जुंझार। —पे. रू.

(स्त्री. वावळि, वावळी)

२ देखो 'वावळ' (श्रल्पा., रू. भे.)

वावल्ल-सं. पु.—१ एक आयुध या शस्त्र विशेष ।

उ०—चाप चक्र नाराच अरद्ध चंद्र असिपत्र करपत्र क्षुरप्र क्षुरिका करवाल कुंत सल्ल **वावल्ल** भल्ल । —व. स.

२ देखो 'वावळ' (रू. भे.)

वावसू-सं. पु. [स. वाह वसु] १ दूत, चर, संदेश-वाहक ।

उ०—सांम्हा दौड़ै **वावसू**, घोड़ौ डाक प्रमांण । साह अकब्बर वयण सू, खबर लियण सुरतांण । —रा. रू.

२ जासूस ।

उ०—१ इतरे अस खड़ आविया, साथ **वावसु** सताव । अकबर कहियौ आवते, वहियौ साह निबाब । —रा. रू.

उ०—२ तठा पछै रावळ देवराज घार ऊपर कटक कियौ, सु पंवारा रा **वावसू** था त्यां रावळ चढियां री खबर दी। —नैणसी

रू. भे.—वाउसूं ।

वावार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणियां पधारण, वधारण खड़ग घड़ करण **वावार** । —गोरधन गाडण

वावि, वाविय—देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—१ जिम वन मांहि मालती, वास-विहूणी **वावि** । तिम घट माहरू पापीउ , एकू कांमि न आवि । —मां. कां. प्र.

उ०—२ कूआ **वावि**, सरोवर घणा, विवहारीयानी नहीं कोई मणा तिण नयरी स्रेणिक नरनाह जिणवर आंण धरै उच्छाह । —स्रीपालरास

उ०—३ गढ मढ मंदिर पोलि प्राकार **वावि** सरोवर कूआ खाइ आरांम वन खड बिभुंइआ त्रिभुंइआ आवास । —व. स.

उ०—४ मुहि मुहि किय अड दत दंतहि दंतहि अड **वाविय**। **वावि**-**वावि** अड कमल कमलि दल लखु लख न (ना) विय ।

—अभयतिक यति

वावियोड़ौ—१ देखो 'बावियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वाजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वावियोड़ी)

वावी—देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—सरोवरां तटाक हौद, तीरथं प्रमांण ए । **वावी** अनूप कूप वाई, नीझरैं मिवांण ए । —गु. रू. बं.

वावीसेक—देखो 'बाईसेक' (रू. भे.)

वावु, वावू—देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ चढि परताळिया, डूंगर दीन्हा पूठि । खोजै **वावू** हथ्थड़ा, घूड़ि भरेसी मूठि । —ढो. मा.

वावेळौ, वावेलौ-सं. पु. [फा. वावैला] १ कोलाहल, शोर गुल ।

२ रोना-पीटना, त्राहि-त्राहि ।

३ चिल्लाहट ।

वावोकळौ-सं. पु. [सं. वाताकुल्य] वह स्थान जहाँ खुली हवा आती हो।

वावोड़—देखो 'बावड़' (रू. भे.)

वावौ-सं. पु [सं. वपनम्] १ रबी की फसल में बोया जाने वाला बीज ।

२ रबी की फसल की बोवाई या जुताई ।

वाव्य—देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—**वाव्य** कुवा सरोवर जिहां । —धरम पत्र

वासंत-सं. पु. [सं. वासंतः] १ ऊंट ।

२ हाथी ।

रू. भे.—बासंत ।

३ देखो 'वसंत' (रू. भे.)

उ०—देवी रूप **वासंत** रे वन्न राजै। देवी आग रे रूप तूं वन्न दाझै । —देवि

वासंती-स. स्त्री.-१ एक वर्ण वृत जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते हैं और ६, ७, ८, व ९ वां वर्ण लघु होता है । शेष सभी वर्ण गुरु होते हैं ।

२ देखो 'वसंती' (रू. भे.)

वासंदर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ रवंद । का **वासंदर** सेवियइ' कइ तरुणी कइ मंद । —ढो मा.

वास-सं. पु. [सं. वास.] १ रहने की क्रिया, निवास, आवास ।

उ०—१ काळ है, अंदेस नां संदेस औ करचौं । देसतें बिदेस **वास** त्रासतें डरचौं । —ऊ. का.

उ०—२ हर कोई जीव धालिया हाळो, **वास** सदा जिण मांय वसै । परठण कज रोटी कपड़ां री, जिकौ कमावै भोग जिसै ।

—ओपौ आढौ

उ०—३ लोग सारौ कांमरौ बडौ दिलावर पण धूहुड़ गंवार लोग सो उधाड़ौ ही जे रहै । पंछी ज्यूं **वास** रहै ।

—दूलची जोइयेरी वारता

२ विश्राम, आराम ।

उ०—१ पण पाबू स्त्री रौ मुख ही न दीठौ नै तरवारां रै धारातीरथ में स्नान कर सती सहेतां सुरग **वास** कीधौ ।

—वी. स. टी.

उ०—२ हे प्रभू इण आरांम री ठौर रे बणावणे वाला नूं वकुंठ रौ **वास** देय आरांम दीजै । नी. प्र.

३ रहने का स्थान, डेरा ।

उ०—१ ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पंछी ग्रह वास। उडियर पाछउ ग्रावियउ, माळवणी कइ पास। —ढो. मा.

४ घर, गृह। (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ म्हारै तौ माता ग्रौ हीज डायजौ है म्हनैं तौ सुख रै वास परणाजै–ग्ररथात ऐड़ौ सुवस हौवै किण सूं इ लड़ै न भिड़ै गरीब होवै तौ सुख है। —वी. स. टी.

उ०—२ ग्रबै राघवदे सासरै गयौ। दिन पांच रहचौ। ग्रांणी करि छिपियै ग्रायौ। तिकौ जैंतसीजी रै वास बसियौ। —जैंतसी ऊदावत री वात

५ मोहल्ला।

उ०—१ ग्रणंद पढीयां रौ वास १ रायसळ रौ वास १ ग्रचळा जसड़ रौ वास। —नैणसी

ग्रल्पा.—बासड़ियौ, बासेड़ौ, वासड़ियौ, वासड़ौ।

६ जगह, स्थान।

उ०—नहीं तूं ग्रन्न नहीं तूं ग्रास। नहीं तुं बन्न नहीं तूं वास। —ह. र.

७ शरण, पनाह, ग्रासरा।

उ०—१ ताहरां हरदास उण वगत बीरमदेजी रौ वास छाडियौ। नागोर नूं हालिया, सरखेलखां रै वास रहण नूं। —नैणसी।

उ०—२ पछै कितराहेक दिने राठौड़ तेजसी रांणा उदयसिंघ रै वास वसीया। —राव मालदेव री बात

उ०—३ सहर ग्रजमेर वडौ गढ। तेथ राजा वीसलदे चहुवांण राज्य करे। वीसलदे रे वास हरराम चहुवांण रहै। —देवजी बगड़ावतां री बात

८ पास में रखने या बसाने की क्रिया।

उ०—ताहरां राजा हरराम नुं कहै। हरराम तुं ग्रा घरै वास। घरै ले जाह ज्युं थारौ दुहुवां रौ पण रहै। —देवजी बगड़ावतां री बात

९ गंध, बू।

उ०—१ ग्रबूझ बाळक नै तौ जांणै प्रीत री वास ग्रावै। —फुलवाड़ी

उ०—२ जिण मारग केहर बुवौ, लागी वास तिणांह। ते खड़ ऊभा सूखसी, नह चरसी हिरणांह। —ग्रग्यात

१० सुगंध, महक।

उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणै ग्राणंद चहक्की। संग वेळ सूरमा, वास ग्रगरेळ महक्की। —रा. रू.

उ०—२ सुहड़ा स्रब ग्रंग चग दिग्गंबर' राइ ग्रंगण सोभ ए। मधुकर गुंजार डंबरी सांमळ, परिमळ वास लोभ ए। —गु. रू. बं.

उ०—३ जावसी देह सोभा न जावसी। वास रह जावसी फूल वाळी। —भीखजी रतनू

ग्रल्पा.,—बासड़ी, वासड़ी।

११ वस्त्र, परिधान, पौशाख।

[सं. वाश] १२ गर्जना, दहाड़ना क्रिया।

१३ चिल्लाहट।

१४ भूंकने की क्रिया।

१५ गुंजन, गुंजार।

१६ बुलावा, पुकार।

१७ वस्तु, पदार्थ।

१८ जागीर।

रू. भे.—वांस, वास, वासइ, वासई, वासउ, वासि।

ग्रल्पा.,—बासड़ी, बासड़ौ, वासड़ली, वासड़ौ।

वासइ, वासई, वासउ—देखो 'वास' (रू. भे.)

उ०—१ चिंतामणि निव्रत्ति करिवा ग्राविउ, कल्पतरु जीणइं कारणि वेस्या तैं कांई भक्ति प्रकासइ, जीणइं पिरायुं मन वासइ। —व. स.

उ०—२ करहा तो बैसासड़उ, मो विण-सारचा काज। ग्रंतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ ग्राज। —ढो. मा.

उ०—३ बाबा म देइस मारुवां, सूधा एवाळांह। कंधि कुहाड़उ सिरि घड़उ, वासउ मझि थळांह। —ढो. मा.

वासक–सं. पु. [सं. वासकं] वस्त्र, कपड़ा।

रू. भे.—वासक।

वि. [सं. बासक] १ बसने वाला, निवास करने वाला।

२ बसाने वाला, ग्राबाद करने वाला।

[सं. वाशक] ३ दहाड़ने वाला, गर्जने वाला।

४ ध्वनि करने वाला।

५ देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—बद्री वासक व्यास बेदां-वण। परम निरंत मुकति सद पावण। —ह. र.

वासड़ी—देखो 'वास' (९, १० ग्रल्पा., रू. भे.)

वासकसज्जा-सं. स्त्री. [स.] वह नायिका जो अपने नायक से मिलने के लिये सज धज कर तैयार बैठी हो।

रू. भे.—बासकसजा।

वासकेट–सं. स्त्री. [ग्र. वेस्टकोट] बिना ग्रास्तीन व बिना गले की पट्टी की एक प्रकार की फतुही, जाकिट या बंडी जिसके ग्रागे-पीछे के कपड़े में प्राय: भेद होता है।

वासग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—१ रतन में राखड़ी वेणी **वासग** जड़ी, सूभरा वांहड़ी लहक लोड़ै। स्वाति नौ विंदलौ नासिका निरमयौ, आज आल्यंगन क्रम्न क्रोड़ै। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ हाम्यौ-तमासौ कर रहचा छै, मांथै रा जूड़ा केसां रा छूटा छै। सू किसा नजर आवै जांणै काळा **वासग** तिरै छै।

उ०—३ सरग इंद्र सलहियै राव पायाळै **वासग**। मान लोक नूं राव कहां हव ओपम कासग। —नैणसी

उ०—४ जैतां तणी रीत अजवाळी, खागां मुहै पाड़िया खळ। 'जग राजोत' ईढ रा जातां, जड़िया **वासग** सर जुयळ। —तेजसी खिड़ियौ

वासग-नाग—देखो 'वासुकि'

उ०—सीस वण्यौ ए नारेळ, मिरगानैणी जी राज। चोटी तो कहियै **वासग नाग**, की सी म्हांरा राज। —लो. गी.

वासगेस—देखो 'वासुकि' (मह., रू. भे.)

उ०—लादा पातां बैरड़ा रूपगां राग नांही लुबै, सनातनां दीधा त्याग इरादा कुलीक। **वासगेस** नाग 'मघा' कैड़ रा 'कुसाळ' बापौ, लोपै नोज सोभाग अजादा मंत्रां लीक। —कविराजा करनीदान

वासड़ली—देखो 'वास' (९, १०) (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कहां बसियौ कांन्हा रातड़ली। अरै तेरै मुख बिच आवै मोहै **वासड़ली**। —मीरां

वासड़ियौ—सं. पु. [सं. वास+रा. प्र. ड़ियौ] १ गांव के एक मुहल्ले (बास) का जागीरदार।

उ०—कोई ठावौ गांमेती **वासड़ियौ** तथा घररौ धणी रजपूत मरै, मोटियार के कांम आवै, तो उणरी वायर गाधरांणी करै। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ देखो 'वास' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'वासी' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—बासड़ियौ।

वासड़े—क्रि. वि.—निकट, समीप, नजदीक, पास।

वासड़ो—देखो 'वास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वैरी वाड़ै **वासड़ौ**, सदा खणक्कै खाग। हेलो कै दिन पांवणौ, चूड़ौ भाग सुहाग। —वी स

वासण—सं.पु. [सं. वासन] १ दुर्गन्वित करने की क्रिया, भाव या अवस्था।

२ सुगन्धित या सुवासित करने की क्रिया, भाव या अवस्था।

३ निवास करने या बसने की क्रिया।

४ घर, मकान।

५ कोई पात्र, टोकरा, पेटी आदि।

उ०—१ ताहरां वेलदारां ऊंडा खिणनै काढिया। देखै तौ भूंजाई रा **वासण** छै: चरवा, द्रेगां, कुंडियां थाळियां। —नैणसी

उ०—२ तठा उपरायंत भोइयां नै हुकम हुवौ छै। भुजाई रा **वासण** तयार कर राती नाडी चालज्यौ। सू वासण तयार कीजै छै —रा. सा. स.

उ०—३ थाल कचोला वाटला, **वासण** चरवी चंग। मग गोधू-मादि दियै, प्रथवी रतन सुरंग। —वि. कु.

६ वस्त्र, परिधान।

७ चादर, गिलाफ।

८ आच्छादन।

९ ज्ञान।

रू. भे.—बासण।

वासणौ, वासबौ—१ सुगंध लेना, सूंघना।

उ०—कड़ियां सुंवै पांणी में पैस पगां रा नख झांखै छै, दूध रै भोळावै विलाव वासीजै छै। ऊपर कूजां, सारसां गहकनै रही छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'भासणौ, भासबौ' (रू. भे.)

उ०—गोबर कीड़उ किसिउं भ्रमर जिम रण झणइ, धवलउ बक किसिउ राजहंस जिम चालइ, काग किसिउ कोकिला जिम **वासइ**, मयूर जिम किसिउं ढेलि किंगाइं। —व. स.

३ देखो 'बासणौ, बासबौ' (रू. भे.)

उ०—देखी किण एक भवि मुनि ग्रांन जौ, निंदा कीधी रै तेहनी घणुं धणी रै लौ। एतो मीनक नी परि म्लांन जौ, मछ जिम **वासै** गंध देही तणी रै लौ। —वि. कु.

४ देखो 'बसाणौ, बसाबौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां ईयै बांमण एक जाइनै फूटरी देखिनै टाळि लीधी। बांमण खोड़ौ हुतौ तिकै आंणिनै घर **वासी**। —देवजी वगड़ावतां री बात

वासणहार, हारौ (हारी), वासणियौ—वि०।

वासिओड़ौ, वासियोड़ौ, वास्योड़ो—भू० का० कृ०।

वासीजणौ, वासीजबौ—कर्म वा.।

वासत—सं. पु. [स.] गधा।

वासतपत, वासतपति—सं. पु. [सं. वास्तोपति] १ इन्द्र।

२ वास्तुपति।

वासते, वासतै—देखो 'वास्तै' (रू. भे.)

उ०—१ देस सिंध ऊनड़ दियौ, दीधौ सिर जगदेव। 'बांका' जस रै **वासतै**, दाता न कूं अदेव। —बां. दा.

उ०—२ ताहरां सुसरौ-साळा कहण लागा-थे बाहिर निकळौ नहीं, घर मांहै बैठा रहौ सो किसै **वासतै**। —नैणसी

उ०—३ तांहरां हररांम कहै। माहाराजा मो मैं दोस कोई छै नहीं। स्रीपरमेस्वरजी जांणै छै हुं किसै वासते ईयैं नुं ले जाऊं।
—देवजीवगड़ावतां री वात

वासदी, वासदे–सं. पु. [सं. बिस्वे-देव, वैस्वानर] १ यज्ञ का अधिष्ठाता, अग्नि देव।

२ अग्नि, आग।

उ०—१ रांमजी री माळा रै **वासदी** लगाय धणी सूं छांनै बचायोड़ी गूंजी हाथ में राखती तो म्हनै ऐ दिन नीं देखणा पड़ता।
—फुलवाड़ी

उ०—२ खाफरां जइत वाहइ खड्ग, **वासदे** जांणि वन्ने विलग्ग। ऊतरा सेनि 'जइतउ' अबीह, सींधरै पईठउ जांणि सीह।
—रा. ज. सी.

रू. भे.—बासते, बासतै, बासदी, बासदे, बासदेव, बास्ती, बास्ते, बाहदी, बसदे, बसदेव, वाम्रदी, वाम्रदे, वासदेव।

वासदेव—१ देखो 'वासदे' (रू. भे)

उ०—ताहरां खापरै नीचै **वासदेव** जगायौ, खांड रा काबा मांहै घात पांणी घातियौ। —राजा भोज अर खापरा चोर री वात

२ देखो 'वासुदेव' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—वसदेव पिता हुआ तेंके घर बेटौ हुऔ तौ **वासदेव** स्रीक्रस्ण हुऔ।
—वेलि टी.

वासदेवा—देखो 'वासुदेवा' (रू. भे.)

वासना–सं. स्त्री. [सं] १ अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना, चाह। (ह. नां. मा.)

२ जन्मान्तर के जमे हुए संस्कारों से उत्पन्न मानसिक दुःख-सुख के भाव, विचार।

उ०—दादू देह यतन कर राखिये, मन राख्या नहीं जाइ। उत्तम मध्यम **वासना**, भला बुरा सब खाइ।
—दादूवांणी

३ भावना, ख्याल, धारणा।

उ०—प्रभणंति पुत्र इम मात पिता प्रति, अम्हां **वासना** वसी इसी। ग्याति किसी राजवियां ग्वाळां, किसी जाति कुळ पांति किसी।
—वेलि.

४ न्याय के अनुसार देहात्मक बुद्धि जन्य मिथ्या संस्कार, विचार।

उ०—विमळ हुवै मन मिटै **वासना**, रहि एकंत समरिये रांम।
—ह. नां. मा.

५ कल्पना।

६ स्मृति।

७ ज्ञान।

८ दुर्गा का एक नाम।

९ अर्क नामक वसु की पत्नी का नाम।

१० भोग-विलास, विषय।

११ गंध, बू।

उ०—१ तद राजा सारा सरदारां ने कही–या किसी **वासना** है। जद सारां ही कही, महाराज या तौ सागै हो मछी री वासना आवै है।
—साहूकार री बात

उ०—२ तिहां वली सबळौ सिंह विकूरबी रे, ते कहै मैं दीठौ इक सींह रे। मांणस नी लेतौ **वासना** रे, आवै छै इण वार अबीह रै।
—वि. कु.

१२ सुगंध महक।

उ०—१ फूलां मझै **वासना**, तिल तेल विलोये।
—कैसौदास गाडण

उ०—२ पछै ढोलौजी ने मारवण ढोलीयै पोढीया छै। तिण समै मारवणीजी रै **वासना** कस्तूरी सरीखी वास रही छै। बिहुं जणा सुख में पोढीया छै।
—ढो. मा.

रू. भे.—बासना।

वासनी–सं. स्त्री.—शराब, मदिरा।

वि. स्त्री.—निवास करने वाली, बसने वाली।

उ०—देवी कांमही लोचना हांम कांमा। देवी **वासनी** मेर माहेस वांमा।
—देवि.

वासन्न–वि.—१ सुगंधित, सुवासित।

२ देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—**वासन्न** पीत विचार सरवर। धनुख सायक धार।
—र. ज. प्र.

वासपुज्ज, वासपूज, वासपूज्य—देखो 'वासुपूज्य' (रू. भे.)

वासमती–सं. पु.—सफेद चावलों की एक जाति व इस जाति के चावल जो ऊंचे दर्जे के व स्वादिष्ट होते हैं।

उ०—छूटा चावळ रांधण रै पगां **वासमती** मंगायजै छै।
—रा. सा. सं.

वासर–सं. पु. [सं. वासरः, वासरं] १ दिन, दिवस। (अ. मा.)

उ०—१ हुवै जेम हरहंस सूं **वासर** कमळ विकास। एम धरम जस व्है उभै, दत सूं बांकीदास।
—बां. दा.

उ०—२ **वासर** चित्त न वीसरइ, निसि भरि अवर न कोइ। जइ निद्रा-भरि भोगवूं, तउ सुपनंतरि सोइ।
—ढो. मा.

उ०—३ इम **वासर** ऊगतां डाक बागी दसदेसां। जुध जीता 'अगजीत' सुणै जवनेस नरेसां।
—सू. प्र.

२ प्रातः काल, सवेरा।

रू. भे.—बासर, बासुर, बासुरी, वासुर, वासूर।

वासरकर, वासरकिरण–सं. पु. [सं. वासरः+कर, वासरः+किरणः] सूर्य, भानु।
रू. भे.—वासरकर, बासरकिरण।

वासरमणि–सं. पु. [सं.] सूर्य, सूरज।

वासव–सं. पु. [सं. वासवः] १ इन्द्र का एक नाम, इन्द्र।
(ना. डि. को., नां. मा., ह. नां. मा.,)
उ०—१ व्रज राखियौ विगोयौ **वासव**। वडौ अवर कुण विसन वड। —ह. नां. मा.
उ०—२ दीजै जोड़ किसौ न्रप दौलत, राज विभौ अवरेख। मात सुखां भुगतै दिन साजा, **वासव** हूत विशेष। —र. रू.
उ०—३ इण बे विधि **वासव** विध विध भजे, इणरी महिमा कहै महेस। —गी. रां.
२ महादेव, शिव। (नां. डि. को.)
वि. [स. वसव]—इन्द्र, का, इन्द्र सम्बन्धी।
रू. भे.—बासब, बासव, वासिव।

वासवांणौ–सं. पु. [सं. वस्] निवास स्थान, निवास।
उ०—मेड़तौ गांम सोह पड़ायौ, रावळा घरां रा खेत किया सहैर नाडी दोरांणी कन्है **वासवांणौ** कीयौ थौ। कहै छै कइक ढूंढा हुवा था। —नैणसी

वासवि, वासवी–सं.स्त्री. [सं. वासवी] उपरिचर वसु की कन्या सत्यवती (मत्स्यगधा), व्यास की माता। (डि. को.)
सं. पु.—१ अर्जुन। (डि. को.)
२ इन्द्र पुत्र जयन्त।
रू. भे.—बासवी।

वासवीदिसा–सं. पु. [सं.] इन्द्र की दिशा, पूर्व की दिशा।
रू. भे.—बासवीदिसा।

वाससुद्रुम–सं. पु.—चंदन। (नां. मा.)

वाससुमेर, वाससुमेरु–वि. [सं. वास+सुमेरु] सुमेरु पर्वत पर निवास करने वाला।
सं. पु.—देवता।
रू. भे.—बाससुमेर, बाससुमेरु।

वासावळी–सं. स्त्री. [सं. वास+अवळी] १ सुगंध, महक।
उ०—१ अंबर मोरीजै छै। कूंपळां फूटीजै छै। वणराइ मंजरी छै। **वासावळी** फूटि रही छै। केसू फूलि रहिया छै। रितिराज प्रगटीओ छै —रा. सा. सं.
उ०—२ साहरी आवळी घड़ा सर सावळां, झीक पड़ कावळी रोप झंडां। अर गजां खून काटै बिना आवळी, खुलै **वासावळी** तेण खडां।
—राव ऊदाजी रौ गीत

२ सुगंधित पदार्थों का समूह।
रू. भे.—बंसावळी, बांसवाळी, बासांवळी, बासावळी, वांसावळी

वासिग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)
उ०—उठियौ राउ भाटि लागै अंबरि, दोमजि **वासिग** खांड डहै। जुध सूतौ कुंभ करन्न जगायौ, गोइंददास बांणास ग्रहै। —गु. रू. बं.

वासिंदौ—देखो 'बासिंदौ' (रू. भे.)
उ०—धूळ अर रूड़ियां री रंजी सूं भखभूरव्हियोड़ा आं टपरियां रा **वासिंदा** इण धरती माथै कोढ ज्यूं रगवगै। —फुलवाड़ी

वासि–सं. पु. [सं. वाशिः] १ अग्नि देव।
[सं. वासि] २ वसूला।
३ कुठार।
४ छैनी।
५ देखो 'वास' (रू. भे.)
उ०—१ सांई एहा भीचड़ा, मोलि महूंगै **वासि**। ज्यां आछन्ना दूरि भौ, दूरि थकां भौ पासि। —हा. झा.
उ०—२ स्रीक्रस्णजी जैसे कोई आंणि बधाई दे छै। तइसें सोंधा के **वासि**, अर नूपुर कै सबद, आंणि वधाई दीन्ही। —वेलि टी.

वासिग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)
उ०—१ सिरि वेणी सिरली असी, जांणइ **वासिग** नाग। बीहता माटइ बंभणइ, कीधु ताहरु त्याग। —मा. कां. प्र.
उ०—२ नांन्हड़ किसनइ नाथियौ, **वासिग** नाग वडेरौ रे। नास करइ रवि नांन्हड़ौ, अंधकार बहुतेरौ रे। —प. च. चौ.
उ०—३ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति नख सिख सूधौ सिणगार वखांणीजै छै। **वासिगां** सारीखी पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिआंरो वणाव वणिनै रहिओ छै। —रा. सा. सं.

वासिट्ठ—देखो 'वासिस्ठ' (रू. भे.)

वासिद्द–सं. पु.—शिव, महादेव। (डिं. नां. मा.)

वासियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सुगन्ध लिया हुआ, सूंघा हुआ।
२ देखो 'भासियोड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बासियोड़ौ' (रू. भे.)
४ देखो 'बसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वासियोड़ी)

वासियौ–वि.—निवास करने वाला, निवासी।
उ०—भुज लगां ऊडै त्रण पोहोर भाराथियां, वासिया सुरग अर कीयां गळ बाथियां। सूर 'सुरतांण' रंग घणा समराथियां, सुज घणां रंग 'सुरतांण' रा साथीयां। —ठाकुर सुरतांण सिंह रौ गीत

वासिव—देखो 'वासव' (रू. भे.)

उ०—**वासिव** घर मजलेस, नेस लखि ईस परक्खौ। 'ग्रभै' जिसौ नर अवर, राज घर कुंवर निरक्खौ। —रा. रू.

वासिस्टी, वासिस्ठ–सं. स्त्री. [सं. वाशिष्ठी] राजस्थान की बनास नदी का नाम।

उ०—पंच ग्रयुत लय संग दळ, होय किलम हमगीर। कियौ मुकांम उलंघि जळ, खळ **वासिस्टी** तीर। —ला. रा.

वि.—१ वसिष्ठ का, वसिष्ठ सम्बन्धी।

२ वसिष्ठ का वंशज।

रू. भे.—बासिस्टी, बासिस्ठी, वासिट्ट।

वासींदौ—देखो 'बासिंदौ' (रू. भे.)

वासी–वि. [सं. वासिन्] १ निवास करने वाला, रहने वाला, निवासी।

उ०—१ नांम तुमारूं स्युं अछै, किम छोड्या मां बाप। किरण नगरी किरण देस ना, **वासी** छौ महाराज। —वि. कु.

उ०—२ अळगी-अळगी भांय रा **वासी** आप-आप री बोली में दाछंट बोलै अर सुगरिगया दाछंट समझै। —फुलवाड़ी

३ मुहल्ले का, मुहल्ले सम्बन्धी।

सं. पु.—१ वह व्यक्ति जिसका किसी गांव या कस्बे के केवल एक मुहल्ले पर ही जागीरी सम्बन्धी अधिकार हो।

२ देखो 'बासी' (रू. भे.)

अल्पा.—वासड़ियौ।

वासीजवारी–सं. स्त्री.—विवाह के समय दूल्हे को सुसराल की तरफ से दी जाने वाली प्रथम भेंट। (चारण, राजपूत)

रू. भे.—बासीजवारी।

वासीवड़–स. पु. [देशज] किसी सम्बन्धी या कुटुम्बी के मृत्यु के बाहरवें दिन प्रातः काल स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला रुदन।

वासु–सं. पु. [सं.] १ जीव, आत्मा।

२ विश्वात्मा, परमात्मा।

३ विष्णु भगवान का नामान्तर।

वासुकि, बासुकी, वासुगि–सं. पु. [सं. वासुकिः] १ कश्यप एवं कद्रू के नाग पुत्रों में से एक जो आठ नाग राजाओं में से एक गिना जाता है।

उ०—कांम देव कटारउं बांधइ, **वासुगि** खाट पहरउ दिइ। —व. स.

वि. वि.—इसकी पत्नी का नाम शतशीर्षा था। देवों व असुरों के समुद्र मन्थन के समय यह मंथनदण्ड की रस्सी बना था। यह शिव के गले पर निवास करता है। त्रिपुरदाह के समय यह शिव के धनुष की प्रत्यंचा व रथ का कूवर बना था। इसके भतीजे का नाम आस्तीक था जो एक ऋषि था।

२ शेष नाग, जो कश्यप एव कद्रू के पुत्रों में से एक था। यह आठ नागराजाओं में से एक माना जाता है।

वि. वि.—इसे भगवान् का अंशावतार माना जाता है एवं उसके लिए शय्यारूप होकर उसे धारण करता है। इसका निवास स्थान पाताल लोक है। यह समस्त पृथ्वी को अपने शिर पर धारण करता है। गंगा के उपासना करने पर इसने उसे ज्योतिष शास्त्र एवं खगोल शास्त्र का ज्ञान दिया था। श्रीकृष्ण जब वसुदेव द्वारा गोकुल ले जाये जा रहे थे उस समय इसने उसकी रक्षा की थी।

३ एक प्राचीन देवता।

४ सर्प, सांप।

उ०—१ आवाहन कर **वासुकि** हि, विक्रम कही सुणाय। ब्राह्मण नूं अब हाल हौ, निस्चय देहूं जिवाय। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ कुब्जा नूं करि रूप युत्त, मनसा मम इमि थाय। इतरी सुण कर **वासुकी**, विधा दई बताय। —सिंघासण बत्तीसी

रू. भे.—बासक, बासग, बासिग, बासुकि, बासुकी, बासुग, वासंग, वासग, वासिग, वासिग।

वासुदे, वासुदेव–सं. पु. [सं. वासुदेव] १ श्रीकृष्ण।

उ०—१ **वासुदेव** पिता सुत थिया वासुदे, प्रदुमन सुत पित जगतपति। —वेलि.

उ०—२ महासंग्रांम रांम रावण तणउ, लवण सागर तणुं, लावण्य तउ वासुदेब तणउं, आचारच तप सनत्कुमार तणउ... । —व. स.

उ०—३ भरतेस्वर बाहु बलि आपमाहिं संग्रांम करइं, **वासुदेव** बलदेव द्वारिकानउ दाघ ऊवेखइ। —व. स.

२ परमेस्वर, ईस्वर। (ह. नां. मा.)

उ०—रांमकिसन हर नारियण, सचितांनंद गोविंद। **वासुदेव** बीठळ बिसन, नरहर गोकुळचंद। —ह. र.

३ वसुदेव के वंशज।

रू. भे.—बासदेव, बासुदे, बासुदेव, वासदेव।

वासुदेवक–सं. पु.—श्री कृष्ण का उपासक।

वासुदेवा–सं. पु.—भाटों की एक शाखा।

रू. भे.—बासदेवा, बासुदेवा, वासदेवा।

वासुदेवौ–सं. पु.—भाटों की वासुदेवा शाखा का व्यक्ति।

वि. वि.—ये जाड़ों की पिछली रात में गीला कपड़ा सिर पर ओढ़ कर बस्ती में फेरी लगाते हैं और याचक वृत्ति करते हैं।

वासुपुज्य, वासुपूज्य–सं. पु. [सं. वासुपूज्य] जैनियों के बारहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

रू. भे.—बासपुज्य, वासपुज, वासपूज्य।

वासुभद्र–सं. पु. [सं] श्रीकृष्णचंद्र।

वासुर—देखो 'वासर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ कनक दांन कुरखेत बिरधि, गुणि **वासुर** वासुर। सुबुध वधै सत संग, ग्यांन गुर वांणि उजागर। —रा. रू.

उ०—२ त्हांरो सुजस ग्रमर, 'करणावत' **वासुर** जग बहु हुवै वितीत। —द. दा.

उ०—३ सुभ वासुर सुभ जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट तांण ए। सोलह मुखि कळा चद संपूरण, द्वादस ऊगति भांण ए। —गु. रू. बं

वासुरा–स स्त्रीं [सं.] १ पृथवी, धरती।

२ रात्रि, रात।

३ स्त्री, नारी।

४ हथीनी।

रू. भे.—बासुरा।

वासू–स. स्त्री. [सं.] १ जवान लड़की।

२ कुंवारी लड़की।

वासूर—देखो 'वासर' (रू. भे.)

वासूळौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

उ०—ऊछळै खळै तज तुरंग एक। **वासूळै** पूळां सूं विसेख। —रा. रू.

वासै—देखो 'वांसै' (रू. भे.)

उ०—१ तारां कूंपौ जोधपुर गयौ। नै इण जावतां साराई रिणमलोत गया। ग्ररु **वासै** घोड़ा सात सौ रायमल खनै रया। —द. दा.

उ०—२ तद इहां कही म्हे वीरभांण कुंवर रा चाकर छां। सु म्हांनै **वासै** राख हंतौ सु हमैं म्हे कंवर री खबर करण जावां छां। —चौबोली

वासौ–सं. पु. [सं. वासः] १ रहने क्रिया या भाव, निवास।

उ०—१ सरस्वती रो **वासो** सब्दा में। —फुलवाड़ी

उ०—२ गया भ्रम्म ग्रकरम्म, गया जमहंदा पासा। गया मुगति दोइ पक्ख, गया ग्रभ हूंदा **वासा**। —जगो खिड़ियौ

२ निवासस्थान।

उ०—भगा पौरस मांण भग्गौ, ग्रड़ सगर उमराव ग्रग्गौ। ताप सुणि ग्रग जेम तासा, वसै खळ गिर-भिगर वासा। —सू. प्र

३ विश्राम।

उ०—१ एक पड़तळ नूं बळद। तिकै रजपूत गांव मोतीसर ग्राय **वासौ** लियौ। रात रह्यौ। —नैणसी

ऊ०—२ विदेसीड़ा रे ग्रायौ छै रे चौमासौ, मारग रो प्यारौ खेद उतारौ, म्हांरै डेरै लै वासौ। —रसीलैराजरौ गीत

४ विश्रामस्थल, डेरा।

५ गांव।

उ०—प्रिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पुंगळ देस। ढोला म्हां बिच मोकळा, **वासा** घणा बसेस। —ढो. मा.

६ पड़ाव।

७ एक शिकारी पक्षी।

उ०—हमें तीतरां ऊपर बाज छूटै छै। करवांनकां ऊपरै जुररा छूटै छै। तिलोरां ऊपरा **वासा** छूटै छै। —रा. सा. सं.

रू. भे.—बासौ।

वास्तव–वि. [सं.] १ ग्रसली, मूल, सही, सच्चा।

२ प्राकृतिक।

३ सारयुक्त, तथ्य युक्त।

४ निश्चित, निर्दिष्ट।

सं. पु.—निश्चित की हुई कोई वस्तु।

वास्तवा–सं. स्त्री. [सं.] उषा काल, प्रातः काल।

वास्तविक–वि. [सं.] १ सत्य, यथार्थ, प्राकृतिक, ग्रसली।

२ ठीक, उचित।

रू. भे.—बास्तविक।

वास्तविकता–सं.स्त्री. [सं. वास्तविक+ता. प्र.] १ सच्चाई, ग्रसलियत।

२ ग्रौचित्य।

वास्तुपूजा–सं. स्त्री. [सं.] नवीन घर में गृह प्रवेश के ग्रारंभ में की जाने वाली वास्तु-पुरूष की पूजा।

वास्तुविद्या–सं. स्त्री. [सं.] भवन-निर्माणकला, ग्रभियान्त्रिक, इन्जीनियरिंग।

२ चौसठ कलाग्रों में से एक। (व. स.)

३ बहत्तर कलाग्रों में से एक। (व. स)

वास्तुसांति–सं. स्त्री. [सं. वास्तु-शान्ति] नवीन-गृह-प्रवेश के समय किये जाने वाले शान्ति कर्म ग्रादि।

वास्तुशास्त्र–सं. पु. [सं. वास्तु शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें भवन-निर्माण सम्बन्धी सारी बांतों की उल्लेख होता है।

वास्तुसिद्धि–सं. स्त्री. [सं.] स्त्रियों का चौसठ कलाग्रों में से एक। (व. स.)

वास्ते, वास्तै–ग्रव्य. [ग्र.] १ निमित्त, लिये।

उ०—१ ताहरां नरै कह्यौ–माजी। हूं ईयै नूं गुदरूं छूं थांहरै **वास्तै** छै ईयै रै घरै। —नैणसी

उ०—२ ताहरां फरवास वढायौ ढोल रै वास्तै। तांहरां पुकार गई। राज! फरवास वीरमजी रै लोकै वाढियौ। तोई जोईयां गई कीवी। —नैणसी

उ०—३ दीवांणजी कह्यौ–घोडो तो फगत म्हारै **वास्तै** ई चाहीजै। दूजोड़ा तौ सगळा लुक्योड़ा रैवैला। कठै ई कुचमादी न्हाटग्यौ तौ म्हारै मन री मन में रै जावैला। थूं आ वात घणीं चौड़ै किण **वास्तै** करै। —फुलवाड़ी

२ कारण से, प्रयोजन से।

उ०—ताहरां गोगादेजी मगरां में परांणी घाव दीठा, तद कह्यौ औ कासूं छै। ताहरां उठै रजपूत बहुत दिलगीर हुवौ। ताहरां गोगादेजी कह्यौ–रे किसै **वास्तै**? ताहरां राजपूत सारी हकीकत कही। —नैणसी

उ०—२ कह्यौ रे तूं अठै क्यों ऐकलौ रहै छै। सहर तौ कोई नहीं। जद सूथार कही जी अठै एक वस्तु हूं वणाऊं छूं तेरै **वास्तै** रहूँ छूं। —चौबोली

रू. भे.—बासते, बासतै, बास्ते, बास्तै, वासते, वासतै।

वास्तौ–सं. पु. [अ. वास्त:] १ सम्बन्ध, लगाव।

२ प्रयोजन, मतलब।

उ०—राजाजी उणरा हाथ सूं पांनौ लिय इण भांत जोर जोर सूं बांचण लागा, जांणै नाई नै बांच सुणावै, वांरां सू उणरौ कीं **वास्तौ** नीं। —फुलवाड़ी

३ माध्यम, जरीया।

४ कारण।

उ०—मोटा रूप सूं जठा ताईं सुणनै समझण री सवाल है, आखा प्रांत में बातचीत सारू अटकण री कोई **वास्तौ** कोनीं। —फुलवाड़ी

५ शक्ति, बल।

६ पुरुषार्थ।

रू. भे.—बासतौ, बासत्थौ, बासत्तौ, बासस्थौ बास्तौ।

वास्प–सं. स्त्री. [सं. वाष्प] १ आंसू।

२ भाप।

३ कोहरा।

४ लोहा।

रू. भे.—बासप।

वाह–सं. स्त्री. [सं.] १ शस्त्र प्रहार, चोट।

उ०—१ वैणावत 'पातल' वीजळ **वाह**, गोड़ै गज बाज खळां गजगाह। —सू. प्र.

उ०—२ तठै मांराज फुरमायौ सत्रसालजी नूं कै कहौ तौ सावंतराय पाळां में निजीक है सू इणरी छाती में सांग री **वाह** करूं। —द. दा.

२ आक्रमण, हमला।

उ०—ध्रू मन्न घडै। सुमांण खडै। खड़ि-**वाह** कियं। मेल्हांण लियं। —गु. रू. बं.

३ युद्ध।

उ०—तो मोनै धरती री आस छै जो **वाह** करसी, धरती घेरसी। —ठा. जैतसी री वारता

४ प्रहार की सीमा, परिधि, क्षेत्र।

५ शस्त्र, आयुध।

६ धनुष।

उ०—ऊससे घणौ ऊछाह, चाप वांण धरै चाह। वांम हाथ लीध **वाह**, जीमणौ कसीस जाह। —र. रू.

७ गति, चाल।

उ०—मंद लख **वाह** सुपरण तजैं माग में, चरण ऊवांहणौ धरण चलै। —र. ज. प्र.

८ वाहन, सवारी। (अ. मा.)

उ०—घोडा हस्ती तणी नहीं **वाह**, लोक नइ घरि न वीवाहना गाह। —नळदवदंती रास

९ घोड़ा, अश्व। (अ. मा., डिं. नां. मा.)

१० बैल।

११ बोझा लादने वाला पशु।

१२ नदी। (अ. मा.)

१३ मदद।

१४ वायु, हवा।

१५ सुगध, महक।

उ०—घणीं वासावली रौ **वाह** लागी नै रहिजौ छै। भीर वांट वांट नै पांणी उछाळीजै छै। —रा. सा. सं.

१६ बदबू, दुर्गन्ध।

१७ खेत में हल चलाने की अवस्था, दशा, हल चलाने का मौसम।

उ०—कहीयौ जु देखां अर्ज लग सत्रां रौ साथ सावतौ ऊभौ छै। वूठै ऊपरि **वाह** देणरी इहै वेळा छै। —वेलि टी.

अव्य.—१ धन्य, साबास।

उ०—१ जुधै जुध 'नाहर' रौ 'जगसाह'। उडावत लोह कहै रवि **वाह**। —सू. प्र.

उ०—२ 'वीकौ' 'गाजीसाह' तण, **वाह** अडोळ कमंध। फट्टा साह समंद नूं, दियण अघट्टा बंध। —रा. रू.

२ आश्चर्य या घृणा सूचक शब्द ।

३ आनन्द या हर्ष सूचक शब्द ।

वि.—खूब, अत्यन्त ।

उ०—सद माल सूर 'दूदे' सगाह । विजपाल दळां जूंझोह वाह ।
—रा. रू.

५ बस ।

रू. भे.—बाह, वह वा', वाहा ।

वाहक–वि. [सं.] १ लेजाने वाला, ढोने वाला ।

२ वहन करने वाला ।

सं. पु.—१ कुली, हमाल ।

२ गाड़ीवान ।

३ घुड़ सवार ।

४ एक विषैला कीड़ा ।

वाहण—देखो 'वाहन' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

उ०—१ रस वाग कुसम भ्रम छांह रूप । अवतार अरक **वाहण** अनूप ।
—रा. रू.

उ०—२ कहै–आडा **वाहण** कनारै घोड़ा छै। पछै इण भांत करनै कटक आयौ ।
—नैणसी

उ०—३ तारा-बळ चंद्र-बळ, घडी-अम्रत साधारण । चतुर पंच सह बळी, नांम **वाहण** सुभ वाहण ।
—गु. रू. बं.

उ०—४ तद गांगैजी वा जैतसी जी जोसी नूं बुलायौ, ने कह्यौ "सवारै जोगणी कांई **वाहण** छै ।
—द. दा.

उ०—५ **वाहण** जेहनै पांचसै, वलीय पांचसइ हाट । घर गोकुल पिण पांचसै, तितला सकट सुघाट ।
—वि. कु.

वाहणगरुड़–सं. पु. [सं. गरुड़-वाहन] विष्णु ।

वाहणव्रखभ—देखो 'वाहनव्रखभ' (रू भे.) (अ. मा.)

वाहणसंभु–सं. पु.—१ नन्दी–बैल ।

२ वृषभ, बैल । (डिं. नां. मा.)

वाहणसिखी–सं. पु.—स्वामीकार्तिकेय का एक नाम । (अ. मा.)

वाहणि, वाहणी–सं. स्त्री.—१ खेत की भूमि को बार-बार जोत कर बीज बोनेयोग्य बनाने की क्रिया या ढंग ।

उ०—कांकड़ प्रबळ **वाहणी** काढै, महपत सबळ घणा दळ मांण । सत्र हर ढगळ करे सह सूघा, दळ चावर फेरे दीवांण" ।
—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

२ देखो 'वाहन'

उ०—१ तारू तरिवा सावधांन हूआ, हीआहीण अण बूडइ **वाहणि** मूआ ।
—व. स.

उ०—२ मकरध्वज **वाहणि** चढचौ अहिमकर, उत्तर वाड वाए अडर । कमळ बालि विरहिणी वदन किय, अंब पालि संजोगि उर ।
—वेलि

३ देखो 'वाहनी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.) (अ. मा.)

रू. भे.—वाहणौ ।

वाहणौ—देखो 'वाहन' (अल्पा., (रू. भे.)

उ०—अरधंगी हेम-पुत्री: सरपौ कंठेणि, **वाहणौ** सांडौ । सिखा-नेत भाळ चंदौ, तस्मै रुद्राय नमौ ।
—गु रू. बं.

वाहणौ, वाहबौ—देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू भे.) (उ र.)

उ०—१ सु ओळ रुखा ऊभा हुता, तिकै केई भाला **वाही** सकिया कै न वाही सकिया, नै आय ऐ भेळा हुवा ।
—नैणसी

उ०—२ **वाहि** बुहाय घणी वीजूजळ । तंडळ खगां करै व्हां तंडळ ।
—सू. प्र.

उ०—३ रिण आगै राजांन रै, खग **वाहतौ** विकट्ट । कवि 'किसनौ' लड़ केवियां, झड़ पड़ियो खग झट्ट ।
—रा. रू.

उ०—४ मो गळि घालउ घूघरा, मो मुखि **वाहउ** लज्ज । हूं ज भलेरउ करहलउ, सूंघ मिळाऊं अज्ज ।
—ढो. मा.

उ०—५ वलि ऊखर धर ऊपइ, जउ बीज कउ **वाहै** रे । अंकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहैं रे ।
—वि. कु.

उ०—६ राउत्तां गात बंबाळ रगत्त, करंमर **वाहि** किया करवत्त । अणी झवरक्क हुलां ऊझेल, सनाह सुं सुतणां तोड़ै सेल ।
—गु. रू. बं.

वाहणहार, हारौ (हारी), वाहणियौ—वि० ।

वाहिओड़ौ, वाहियोड़ौ, वाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाहीजणौ, वाहीजबौ—कर्म वा० ।

वाहन–सं. पु. [सं.] १ वहन करने या ढोने की क्रिया या भाव ।

२ वह पशु, प्राणी या साधन जिस पर बैठ कर कहीं आया जाया जासकता हो । सवारी ।

३ घोड़ा ।

४ हाथी ।

५ रथ ।

६ नाव, जहाज ।

७ सवार ।

८ लक्कड़ बग्घा ।

९ उद्योग, प्रयत्न।

१० सैना।

११ नदी।

रू. भे.—बहांण, बांहण, बांहिण, बाहण, बाहन, बाहेण, वाहण, वाहणि, वाहणी, वाहिण।

अल्पा.—वाहणौ।

वाहनव्रखभ-सं. पु. [सं. वाहन+वृषभ] शिव, महादेव। (नां. मा.)

रू. भे.—वाहणव्रखभ।

वाहनी-सं. स्त्री. [सं. वाहिनी] १ सेना, फौज। (अ. मा.)

२ प्राचीन भारतीय सैना का एक दल जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार, तथा ४०५ पैदल होते थे।

३ आधुनिक सेना का एक विशिष्ठ विभाग, डिवीजन।

वि.—चलाने वाली।

उ०—देवी जम्मणी मख्ख आहूति ज्वाळा, देवी **वाहनी** मंत्र लीला विसाळा। —देवि

रू. भे.—बाअणी, बाहणी, बाहनी बाहिणी, वाहिनी, वहिणी, वहिनी, वाअणी, वाहणि, वाहणी, वाहिणि, वाहिणी।

वाहपत्री-सं. स्त्री. [सं. पत्रवाह] सर, बांण, तीर।

वाहर—देखो 'वाहर' (रू. भे.)

उ०—१ सिया **वाहर** समर दसांणण साझा, व्रवी उछाहर दीन निवाजा। —र. ज. प्र.

उ०—२ तद कही राज! घोड़ी थांनूं दीवी छै, जो म्हारै कांम पड़ै तद म्हांरी **वाहर** करज्यो। —नैणसी

उ०—३ **वाहर** काज खळां बळवाणां, रैहै जीण पमंग जवनांणां। —रा. रू.

वाहरलौ—देखो 'बारलौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाहरली)

वाहरमौं—देखो 'बारवों' (रू. भे.)

वाहरि—देखो 'वाहर' (रू. भे)

उ०—तब ये भ्रूहां ही में थोड़ौ थोड़ौ हसि। अर एक एक होय ग्रह थें स जु **वाहरि** गई। —वेलि टी.

वाहरु—देखो 'वाहरू' (रू. भे.)

उ०—आय पांतियं बैठा। आरोगता हुता। आधाइक जीमिया हुता नै **वाहरु** आया। —नैणसी

वाहरुओ—देखो 'वाहरू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नह सादूळौ नीमजै, जुध जिण तिण सूं जाय। औ **वाहरुआं** आफळै, कुंजर हलकां काय। —बां. दा.

वाहरू—देखो 'वाहरू' (रू. भे.)

उ०—१ धीत रा कीत रा रिखी सुकंठ मीत रा घनौ। **वाहरू** सीत रा रांम अदीत रा वंस। —र. ज. प्र.

उ०—२ बाळियी वैर-वैरां तणौ **वाहरू**, 'अमर' मुहरै हुयै सर रंग आयौ। —अमरसिंह राठौड़ गजसिंहोत री वात

उ०—३ तद इण कह्यौ 'कुंवरसी सांखला री रजपूत छूं, चेतो कर मारजौ। म्हारै **वाहरू** सबळा छै। ऐ तौ आंधा हुवा वहै कै नै गिणौ? सो मार हेठौ नाखियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

वाहळ-सं. पु.—१ घृत परोसने का एक टौंटीदार बर्त्तन।

२ बैल के पिछले पैरों में होने वाली बालों की पंक्ति या कतार।

३ देखो 'वहल' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

वाहलउ—१ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—जांन्हवी यमुना बेहू मिलीआ, माइ बेटी तेह। आपणउं **वाहलउं** देखी करीनइ, अधिक ऊपजइ नेह। —नळ दवदंती रास

२ देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

वाहलकडु, वाहलकडौ—देखो 'वाळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**वाहलकडु** वारू गणी, हेलि! न धरीइ हेजि। सेज-थिकी नर नीसरिइ, वली न लीजइ सेजि। —मा. कां. प्र.

वाहळि, वाहळी—देखो 'वालौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पड़सी **वाहळियांह**। उर ओलै प्री राखियइ, मूंवा काहळियांह। —ढो. मा.

उ०—२ वाणिया नाळा माग वहै दुत **वाहळी**। मेह ओसर में बहै, नाळा अर नाहळी। —लो. गी.

वाहलीकजा—देखो 'वाल्हीक' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

वाहळु, वाहळू—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

वाहलु, वाहलू—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—भमरी भुंडा व्रक्षनी, मनि मंदार न जांणि। एक ज **वाहलु** ऊलखइ, जिम कांणी केकांणि। —मा. कां. प्र.

वाहळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ आगै पोकरण रा **वाहळा** ऊपर रेहता। उरजनोत जोधपुर चाकर। —नैणसी

उ०—२ जउ साहिब तूं नावियउ, मेहां पहलइ पूर। विचइ वहेसी **वाहळा**, दूर स दूरे दूर। —ढो. मा.

उ०—३ अति रोस करि जैसउ उलटचौ ज्यौ वरसाला कउ **वाहल्यौ** ऊफणइ। —वेलि टी.

वाहलौ, वाहल्यौ—१ देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—कलकलती कल्लोलि उच्छलती लहरि करी सूसूती, वाहळ फूफूती, जिसी क्रतांत तणी मूरत्ति तिसी रौद्र बेउ तट इ आव्ही नदी। —व. स.

२ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाहला पइं विसहर भलु, डसी करि वली अंत। प्रेम पन्नगइं जै डस्यां, तै किम सुख पांमति ? —मा. कां. प्र.

उ०—२ सूल पांणि संकर तिहां, जात्र मिली जोग्रेसि। फालि देई हूं फणगटइ, वाहला ! वाडि पाडेसि। —मा. कां. प्र.

वाहलौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

'वा' वा'—देखो 'वाहवाह' (रू. भे.)

वाह-वाह-वि. अनु. [फा.] धन्य-धन्य, साधु-साधु।

उ०—१ अर सोलंखी भांणराज प्रतिहार तेजसिंह रौ मस्तक उडाय महारुद्र रा मुख सूं वाह-वाह पढायौ। —वं. भा.

उ०—२ एसी अनेक बात कही। और ही कवेसर बोल वाह-वाह कही। —रा. रू.

उ०—३ एक बात ऊबरां, सुणै रीझियौ नरेसुर। वाह-वाह अक्खियौ, तोल खग लगै अथंतर। —सू. प्र.

वाह-वाही-सं. स्त्री. [फा.] १ प्रशंसा, धन्यवाद, साधुवाद।

२ किसी कार्य के प्रति प्रगट किया जाने वाला आश्चर्य।

रू. भे.—वाहवाही।

वाहा—देखो 'वाह' (रू. भे.)

वाहाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

उ०—द्वारकादास, एका हमीर बळू नूं मनावण सारा भाटी नै राव सूरसिंघ आया था। उठै वाहाऊ आयौ तठै राव सूरसिंघ बळू भा। —नैणसी

वाहादर—देखो 'बहादुर' (रू. भे.)

उ०—तोई झगड़ै री आसग हुई नहीं। दलपत वडौ जमैमरद वाहादर देख्यौ। —द. दा.

वाहार—१ देखो 'वार' (रू. भे.)

उ०—घर १ राजा स्री गजसिंहजी री वाहर मांहे नवौ हुवौ छै, दुड़ौ छै। —नैणसी

२ देखो 'बाहर' (रू. भे.)

वाहाळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

वाहालौ—देखौ 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ हा माहा नाथजी, कांहां गया जी, मूंहि एकली मेहेली वंन रे वज्रमि कठिण ते किम थयूं रे, वाहाला तम्हारूं मंन रे। —नळाख्यांन

उ०—२ वेस्या किणि वाहाली करी, भूमंडलि ? भूदेव। कोडि कोटि-ध्वज क्षय गया, करतां वेस्या-सेव। —मा. कां. प्र.

(स्त्री. वाहाली)

वाहिण—देखो 'वाहन' (रू. भे.)

वाहिणि, वाहिणी—देखो 'वाहनी' (रू. भे.)

वाहित्थदेस—देखो 'बाहित्थदेस' (रू. भे.)

वाहियात-वि. [फा.] व्यर्थ, निरर्थक।

वाहियोड़ौ—देखो 'बात्रियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाहियोड़ी)

वाहिर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—पांचां दिनां पछै महलां महां दाढी समराइ अर वाहिर पधारिया। —द. वि.

वाहिलियौ—देखो 'वालौ' (अल्पा., रू. भे.)

वाही—१ देखो 'वही' (रू. भे.)

उ०—केतीबार जेठी जोर आगै पेच कीनां, पूरै चांपि जेठि नै भ्रमाया नांखि दीनां। वाही स्याति नीसरिगा जेठी का प्रांण। पूरा मल्ल बादिस्याह कीनां फुरमांण। —शि. वं.

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.) (जैन)

वाहु—देखो 'बाहु' (रू. भे.)

वाहुड़णौ, वाहुड़बौ-देखो 'बावड़णौ, बावड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाहुड़ि गोरी ! तुं घरि जाह, हुं लेइ आवऊ थारउ हो नाह। सोना तौ बांध्यौ गांठड़ी, दीधी सोपारी दोय कर च्यार। —बी. दे.

उ०—बोलिन सक्कूं वीहतउ, हेक ज बात हुई। राजि अपूठा वाहुडउ, माळवणी मूई। —ढो. मा.

वाहुड़णहार, हारौ (हारी), वाहुड़णियौ—वि०।

वाहुड़िओड़ौ, वाहुड़ियोड़ौ, वाहुड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वाहुड़ीजणौ, वाहुड़ीजबौ—भाव वा०।

वाहुड़ियोड़ौ—देखो 'बावड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाहुड़ियोड़ी)

वाहुलु, वाहुलौ—१ देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाट-वचइं छइ वाहुलु, तिहां जाइ नर नारि। नाव नरेसर मेहलि करि, परि परि पार ऊतारि। —मा. कां. प्र.

उ०—१ मारगि मोटा डूंगरा, नद वाहुला विसेखि। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रूंधी रूंखि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

विचियौ—देखो 'बींछियौ' (रू. भे.)

विछियौ—देखो 'विछियौ' (रू. भे.)

विछुड़ी—देखो 'विच्छुड़ी' (रू. भे.)

विछचा—देखो 'वांछा' (रू. भे.)

उ०—कूकर कै मन कांम की, रुत सिर **विछचा** होय। कांमी नर कै कांम की, हरीया निसदिन होय। —अनुभववांणी

विजणौ, विजबौ—देखो 'वींजणौ, वींजबौ' (रू. भे.)

उ०—हरि ने हलधर दोनूं गज चढ्या, साथे लियौ गज कुमार। छत्र ने चांमर दोनूं **विजे** रहचा, बाजे बाजा रा झणकार। —जयवांणी

विजणहार, हारौ (हारी), **विजणियौ**—वि०।

विजिप्रोड़ौ, विजियोड़ौ, विज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विजीजणौ, विजीजबौ—कर्म वा०।

विजन—देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)

उ०—१ भूप वधायौ मोतियां, कीधा निजर तुरंग। भोजन भूंजाई विवध, **विजन** पाक सुरंग। —रा. रू.

उ०—२ निज मजलस रस सजणां, **विजन** पाक ऊग विहांण। हित करणै जैसाह रै, वरणै को कवि वांण। —रा. रू.

उ०—३ जनकपुरी में जीमिया है, विध विध **विजन** कोर। भला सरस भोजन हुवा है, पण औ आनंद ओर। —गी. रां.

विजाहरि—देखो 'विजयहरी' (रू. भे.)

उ०—गढ गिरुउ अनइ विसमउ, जेह नउ पायउ पातालि पयठउ, महागज तणा जिसा पाग तिसां कोसीसां, गरुई पोलि निविड कमाड लोहभोगल, **विजाहरी** तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि, ढींकुली तणी परंपरा...। —व. स.

विजियोड़ौ—देखो 'वींजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विजियोड़ी)

विजुल-सीत—सं. स्त्री. [सं. वञ्जुल-शीतः] १ कुंज, कुंजगलि। (अ. मा.)

२ अशोक वृक्ष।

विझगिरी—देखो 'विंध्यगिरि' (रू. भे.)

विझगिरिपादमूळ—देखो 'विंध्यगिरिपादमूळ' (रू. भे.)

विझलो—सं. पु. [सं. वीजनः] चक्रवाक नामक पक्षी।

उ०—वील्हा वायस **विझलां**, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊंधी टंगाय। —मा. कां. प्र.

विझाचळ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—थियौ चोळ सिंदूर कुंभाथळयं, वन गेरुअ जांण **विझाचळयं**। —गु. रू. बं.

विट—देखो 'वींट' (रू. भे.)

उ०—अवतार वहै आपै अनंत, सह विदु हुय जावै सगा। तक **विट** नांम स्री रांम रौ, जग समंद तिर तूं 'जगा'। —ज. खि.

विटणौ, विटबौ—देखो 'वींटणौ, वींटबौ' (रू. भे.)

उ०—एहवौ धातकी खंडए, परदक्षण परकार। अठ लख जोयण **विटीयौ**, समुद्र कालौ दधि सार। —वृ. स्त.

विटणहार, हारौ (हारी), **विटणियौ**—वि०।

विटिप्रोड़ौ, विटियोड़ौ, विट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विटीजणौ, विटीजबौ—कर्म वा०।

विटाणौ, विटाबौ—देखो 'वींटाणौ, वींटाबौ' (रू. भे.)

विटाणहार, हारौ (हारी), **विटाणियौ**—वि०।

विटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विटाईजणौ, विटाईजबौ—कर्म वा०।

विटायोड़ौ—देखो 'वींटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विटायोड़ी)

विटियोड़ौ—देखो 'वींटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वींटियोड़ी)

विट्टणौ, विट्टबौ—देखो 'वींटणौ, वींटबौ' (रू. भे.)

उ०—कमनेत नेतबंधी सिपाह, सब सिलह पूर **विट्टै** सनाह। चवगांत जांन रनवीर खेत, ताजी तमांम पक्खर समेत। —ला. रा.

विट्टणहार, हारौ (हारी), **विट्टणियौ**—वि०।

विट्टिप्रोड़ौ, विट्टियोड़ौ, विट्टयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विट्टीजणौ, विट्टीजबौ—कर्म वा०।

विट्टियोड़ौ—देखो 'वींटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विट्टियोड़ी)

विठणौ, विठबौ—क्रि. अ. [सं. विनष्टनम्] १ नष्ट होना, बरबाद होना।

उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु, ते **विठीया** हारि वाहार। तेह रांक नुं वांक किसु, जु दसा पडी अपार। —नळाख्यांन

२ भ्रष्ट होना, बिगड़ना।

३ अदृश्य होना, गायब होना।

विठणहार, हारौ (हारी), **विठणियौ**—वि०।

विठिप्रोड़ौ, विठियोड़ौ, विठ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विठीजणौ, विठीजबौ—भाव वा०।

विठियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नष्ट हुवा हुग्रा, बरबाद हुवा हुग्रा. २ भ्रष्ट हुवा हुग्रा, बिगड़ा हुग्रा. ३ ग्रदृश्य हुवा हुग्रा, खोया हुग्रा.

(स्त्री. विठियोड़ी)

विण—देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—झाबकि पइठी झाळि, सुंदरि दीठी सास विण। जिमि व्हालां विच बाळ, प्रिव जोई मारू नहीं। —ढो. मा.

विणणौ, विणबौ—१ देखो 'विणणौ, विणबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणणौ, बुणबौ' (रू. भे.)

विणणहार, हारौ (हारी), विणणियौ—वि०।

विणिग्रोड़ौ, विणियोड़ौ, विण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विणीजणौ, विणीजबौ—कर्म वा०।

विणियोड़ौ—१ देखो 'विणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणियोड़ी)

वितर—देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)

उ०—पंचेंद्रि तिरजंच नै मांनव, एह थया इकवीसजी। वितर जोतिसी नै वैमांनिक, इम दंडक चौवीस जी। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ वाघ सिंघ वितर घणा, भुंइ बीहृती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा रत घणु ए। —नळ दवदंती रास

उ०—३ ज्योतिसी भुवणि नी वितरी त्री पणौं, नैरित कूण जिण वांणि ऊभी सुणौ। —ध. व. ग्रं.

(स्त्री. वितरी)

वित्तणौ, वित्तबौ—देखो 'बीतणौ, बीतबौ' (रू. भे.)

उ०—सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभौ पोगंड मंड सिंगारौ। ज्यों व्रंदारक तरयं, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम्। —रा. रू.

वित्तणहार, हारौ (हारी), वित्तणियौ—वि०।

वित्तिग्रोड़ौ, वित्तियोड़ौ, वित्त्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वित्तीजणौ, वित्तीजबौ—भाव वा०।

वित्तियोड़ौ—देखो 'बीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्तियोड़ी)

विंद—सं पु. [सं] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक, जिसका वध भीम ने किया था।

२ भारतीय युद्ध में कौरव पक्ष का एक केकय-राजकुमार जिसका वध सात्यकि द्वारा किया गया था।

३ ग्रवंती देश के राजा जयसेन एवम् वसुदेव की बहिन राजाधि-देवी के दो पुत्रों में से एक पुत्र।

वि. वि.—इसके कनिष्ठ भ्राता का नाम ग्रनुविंद एवं एक बहिन का नाम मित्रविंदा था। यह दुर्योधन एवं जरासंघ का पक्षपाती था। इसकी बहिन का विवाह दुर्योधन से होना तय हुग्रा था मगर इसकी बहिन की इच्छानुसार श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा से विवाह किया। भारतीय युद्ध में यह एक ग्रक्षौहिणी सेना के साथ कौरव पक्ष में सम्मिलित हुग्रा था तथा यह दश रथियों में से एक था। ग्रपने दक्षिण दिग्विजय के समय सहदेव ने इसे जीता था। ग्रन्त में यह ग्रर्जुन द्वारा मारा गया।

४ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचंद। साच के ग्रजातसत्र गात रति विंद। —रा. रू.

उ०—वरै रंभ वैसि रथां रण विंद। ग्रधोग्रध राज लियै सुरइंद। —सू. प्र.

उ०—३ विंदया भद्रा गोपियां विंद। ग्रारती करै ऊतारा इंद। —पी. ग्रं.

उ०—४ नर नरिंद ग्रणनिंद, विंद बांकिम्म वीर वर। सुत गुरिंद हरचंद, कंद काढण केवी हर। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बूंद' (रू. भे.)

उ०—निज रोस रु ध्वेस से कांम नहीं, उर हांम ग्रारांम हरांम नहीं। गरवै स्तुति निंद समांन गिनें, हरवै न बनें नहिं विंद हनें। —ऊ. का.

३ देखो 'बिंदु' (रू. भे.)

उ०—जाय हिमाळै गळत जिंद, उलटि राखत नाद विंद। कोटि गउ दिज दांन देत, मरत कासी मुगति खेत। —ग्रनुभववांणी

४ देखो 'बिंदी' (मह., रू. भे.)

विंदक—वि.—१ जानने वाला, ज्ञाता।

२ जन्म देने वाला।

३ देखो 'बिंदक' (रू. भे.)

विंदगी—देखो 'बंदगी' (रू. भे.)

उ०—सो इंद्रायण! थे नै ग्राठ ही ग्रपछरां मारी विंदगी घणी कीधी, सो थे वर मांगौ सौ थांनै मे वर देनै गुर-चेलौ ग्रलोप होसां। —मयारांम दरजी री वात

विंदण—देखो 'विंदग' (रू. भे.)

विंदणौ, विंदबौ—देखो 'वंदणौ, वंदबौ' (रू. भे.)

उ०—कोउ येक निंदौ कोउ येक विंदौ, नांम सुधारस पागा। जन मीरां गिरधर वर पायौ, भाग हमारा जागा। —मीरां

बिंदणहार, हारौ (हारी), **बिंदणियौ**—वि० ।

बिंदिग्रोड़ौ, बिंदियोड़ौ, बिंद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिंदीजणौ, बिंदीजबौ—कर्म वा० ।

बिंदली—देखो 'बिंदी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—सोहै भाळ विसाळ, लाल **बिंदली** सिंदूरं। नैणे काजळ, मुख तंबौळ, वणि वदन सनूरं। —गज उद्धार

बिंदवी—देखो 'विंदवीं' (रू. भे.)

बिंदसरोवर—सं. पु.—गुजरात में पाटण (सिद्ध पुर) से ग्राधा कोस दूर, एक तीर्थ स्थान।

बिंदावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

उ०—धन गोकळ नंर ग्वाळ धन, धन जसोदा धन। **बिंदावन** धन सरब वन, वाह वाह मधवन। —पी. ग्रं.

बिंदी—देखो 'बिंदी' (रू. भे.)

उ०—सीसफूल तारा भला रे, ग्ररधचंद सम भाग रे रंग। बिंदी जाणे मणि धरी रे, पीवत ग्रम्रत नाग रे रंग। —प. च. चौ.

बिंदु—१ देखो 'बिंदु' (रू. भे.)

२ देखो 'बूंद' (रू. भे.)

३ देखो 'बिंदी' (रू. भे.)

उ०—स्यांमा तणै लिलाट सोहिया, कुंकुम **बिंदु** प्रसेद कण। —वेलि

बिंदु ग्रांगिरस—सं. पु.—वेदों के एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

बिंदुचित्रक—सं. पु. [सं.] सारे शरीर पर गोल चित्तियों वाला मृग।

बिंदुजाळ, बिंदुजाळक—सं. पु. [सं. विंदुजाल] १ सफेद बिंदियों का वह समूह जो किसी हाथी के मस्तक ग्रौर सूंड पर बनाया जाता है।

२ पद्मक नामक हाथियों का एक रोग।

बिंदुतीरथ—सं. पु. [सं. विंदुतीर्थ] काशी के पंचनद तीर्थ का एक नाम जहां बिंदुमाधव का मंदिर है

बिंदूत्रिवेणी—स. स्त्री. [सं.] स्वर साधन की एक प्रणाली। (संगीत)

बिंदुमति, बिंदुमती—सं. स्त्री.—राजा शशि बिंदु की पुत्री एवं ग्रयोध्या पति मांधाता की पत्नी।

बिंदुमाधव—सं. पु. [सं] काशी के पंचनद नामक तीर्थ में स्थित एक विष्णु मूर्ति का नाम।

बिंदुळरथी—स. स्त्री [सं. विंदुल रथ्या] कुंज गलि। (ग्र. मा.)

बिंदुली—देखो 'बिंदी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिंदुसर—सं. पु. [सं.] १ कैलाश पर्वत के दक्षिण स्थित एक सरोवर, जो तीर्थ माना जाता है। (पौराणिक)

वि. वि.—यह सरोवर गंगा के जलकणों से बना था। यहीं पर बैठ कर भागीरथ ने गंगा को भूलोक में लाने हेतु तप किया था।

२ एक नदी जिसके किनारे कर्दम प्रजापति का ग्राश्रम था।

बिंदुसार—देखो 'बिंदुसार' (रू. भे.)

बिंदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बिंदोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

बिंदौ—१ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—ग्रणी सांमि ग्रागै इसै कांम इंदा। वणै ऊहड़ै वंकड़ा क्रीत **बिंदा**। —रा. रू.

२ देखो 'बंदौ' (रू. भे.)

बिंध—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—जैसें राजहंसनिसौं राजै मांनसर राज, जैसें **बिंध** भूधर विराजें गजराज सौं। —घ. व. ग्रं.

बिंधणौ, बिंधबौ—देखो 'बिंधणौ, बिंधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मोसा री मार रौ काळजै तीर नीं **बिंधतौ** तौ कदास मासी रा बोल उण रै काळजै इण भांत ग्रसर नीं करता। तीर बिंधणा रै समचै ई हिवड़ा रै विस री पोटळी फूटगी ही। —फुलवाड़ी

उ०—२ पण ग्रा बात सुणतां इ उण री मुळक रै गैं'ण लागग्यौ उण रौ उणियारौ काळौ ध्राक पड़ग्यौ। माथा में कीड़ी-नगरौ कळबळण लागौ। मोसा रौ तीर पाधरौ काळजै जाय **बिंध्यौ**। —फुलवाड़ी

उ०—३ क्रीड़ा खेलतु, सूत्कर मेल्हतउ, परबत जिम दलतउ, पवन जिम चालतउ दंताग्रि **बिंधतउ**, पाडतउ फोडतउ। —व. स.

उ०—४ मैं नही कहत कहत परिग्यांनुं, सुणि हो सबै सयांणां। मैं तैं राग दोस जुग बिंध्या, ए कळि के इहनांणां। —ग्रनुभववांणी

बिंधणहार, हारौ (हारी), **बिंधणियौ**—वि.।

बिंधिग्रोड़ौ, बिंधियोड़ौ, बिंध्योड़ौ—भू. का. कृ.।

बिंधीजणौ, बिंधीजबौ—भाव वा.।

बिंधर—वि.—ग्रशब्दश्रावी।

उ०—देवमांहि कुण हूं न स्वांमी, न दास, न मूक, न ऊतसूक, न बधिर, न **बिंधर**, न कूबड़ न वांमण, न हूंड, न छोटा, न पांगुला, न ग्रांधला, तिहां डांस मुंसा............। —व. स.

बिंधाचळ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—घर चौड़े सरवर विपन, **बिंधाचळ** दिस एक। च्यार महूरत उत्तरे, धारस मंत्र विवेक। —रा. रू.

बिंधियोड़ौ—देखो 'बिंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विंचियोड़ी)

विंध्य-सं. पु. [सं.] १ उत्तर भारत के दक्षिण में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है, विंध्याचल नामक पर्वत।

उ०—जिको पण वळा विंध्य २ रा अधीस 'रांम' भूपाळ ?
—वं. भा.

२ रैवत मनु के पुत्रों में से एक।

रू. भे.—विंभ, विंध, बिंध्य, बींभ, विंध।

विंध्यकूट-सं. पु. [सं. विंध्यकूटनं] १ अगस्त्य मुनि की एक उपाधि।

२ विंध्य पर्वत।

विंध्यगिरि-सं. पु.—विंध्यपर्वत, विन्ध्याचल।

रू. भे.—विंभगिरि।

विंध्यगिरिपादमूळ—विंध्यगिरी पर्वत की तलहटी।

रू. भे.—विंभगिरिपादमूळ।

विंध्यवासिणी, विंध्यवासिनी-सं. स्त्री. [सं. विंध्यवासिनी] १ मिर्जापुर जिले में विंध्य के एक टीले पर अवस्थित देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति, जो इन्द्र द्वारा स्थापति की गई थी।

२ दुर्गा की एक उपाधि।

विंध्यवासी, विंध्यस्थ-सं. पु. [सं] संस्कृत व्याकरणी व्याडि मुनि की उपाधि।

विंध्याचळ, विंध्याचल-सं. पु. [सं. विंध्य+अचल] मध्य भारत की दक्षिणि सीमा स्थित-पर्वत का नाम।

उ०—१ द्विजवर ! जा द्वारा वती, विंध्याचळ जल लिंग। कोटेस्वर कैलास पणि, ऊंकारि अभ्यंग।
—मा. कां. प्र.

उ०—२ तद लड़की कही-मो सूं रात का आय यक्ष मिळै सो मो नूं कहै- हुँ तो नूं विंध्याचळ लेय हालस्यूं। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ विंध्याचळ वाधै तुं घणुं, अंबर अडकै आज। आदित्य नह ऊगी सकइ, सरइ अम्हारां काज।
—मा. कां. प्र.

रू. भे.—बद्रचला, विंध्याचळ, बींभाजळ, बीभाचळ, बीभाजळि, बुंध्याचळ, वध्याचळ, वंध्याचळि, विंभाचळ, विंधाचळ।

विंध्यावळि विंध्यावळी-सं. स्त्री. [सं. विंध्यावलि] दैत्य राज बलि की स्त्री का नाम, जो बांण की माता थी। शकुनी, पूतना आदि इसकी पुत्रियां थी।

विंबार विंभार—देखो 'बंबार' (रू. भे.)

उ०—गुण सिंधु टणंक ठणंक गजै, विप छेद खणंक छणंक वजै। भुरजाळ रोसाळ उडार भरै, कर तीर विंबार बंभार करै।
—पा. प्र.

विंभौ—देखो 'वैभव'।

विंयासियौ—देखो 'बंयासियौ' (रू. भे.)

उ०—महपति आयौ मेड़ते, गढ खाटै नागौर। सिर तिण वरस विंयासियौ, आयौ वड सुख और।
—रा. रू.

विंस-वि. [सं. विंश] १ बीसवां।

२ एक राजा जो क्षुप राजा का पुत्र था।

३ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र जो विविंश का पिता था।

४ देखो 'वीस' (रू. भे.)

विंसतिबाहु-सं. पु. [सं. विंशतिबाहु] रावण का एक नाम।

विंसोत्तरी-सं. स्त्री. [सं. विंशोत्तरी] मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

वि. वि.—इसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके भाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है। (फलित ज्योतिष)

विंहचणौ, विंहचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

विंहचणहार, हारौ (हारी), विंहचणियौ—वि०।

विंहचिओड़ौ, विंहचियोड़ौ, विंहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विंहचीजणौ, विंहचीजबौ—कर्म वा०।

विंहचियोड़ौ—देखो 'बेंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विंहचियोड़ी)

वि-अव्य. [सं.] १ किसी शब्द के पूर्व लगकर विशेष अर्थ उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग।

वि. वि.—इससे इसके निम्न लिखित अर्थ होते हैं:—पार्थक्य, बिलगाव, किसी क्रिया का विपरीत, विभाग, विशिष्टता, अंक, जांच, भेद, क्रम, विरोध, तगी, विचार, आधिक्य।

२ भी।

उ०—१ करणु भणइ सच्चुं कहउं, पुणु छइ एकु वि नांणु। दुरयोधन रहि आपणां, मइं कल्पना छइं प्रांण। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ क्षात्रधरम मन हूंतउ छंडिउ, कौरवाधिपति गोग्रह मांडिउ। सैन्यराय विहु भागि वि लायउ, तउ सुसरम न्रप दक्षिण धायउ।
—सालि सूरि

३ ही।

उ०—१ झलहलिय सायर रत सुरगिरि, खिणु खिणि खडहडी। खणु एकु असरणु हुउं तिहुयणु, राय सयल वि धरहडी।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ सौ धनुखु नांमइ कीमु काटकि, धरणि धासकि धडहडी। बंभंड खंड विखंड थाइ कि, सगिग सयल वि रडवडी।
—सालिभद्र सूरि

सं. पु. [सं. वि:] १ रवि।

२ शशि।
३ दवि।
४ पक्षी।
५ गरुड़।
६ लवा। (एका.)
७ घोड़ा।
८ आंख।
९ आकाश।
१० अन्न।
११ देखो 'वी' (रू. भे.)

उ०—१ फवि बिस सहंस गयंद धज फरहर। घरै महोरि वि-सहंम बाजित्र धर। —सू. प्र.

उ०—२ कहिए माळवणी-तणइ, रहियउ साल्ह वि मास। ऊन्हाळउ ऊतारियउ, प्रगटयउ पावस-मास। —ढो. मा.

विग्रक्खण, विग्रक्खणि, विग्रक्खणु—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—मंत्रीसर घरि आविउ, सयल लोक रंजन सुलक्खण। पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिण्णि, नारि विलसइ **विग्रक्खणि**। —हीराणंद सूरि

विग्रखरी, विग्रख्यरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे.)

उ०—सोलह मात्रा पय सकळ, नहीं गुरु लघु नेम। आखा छंद **विग्रख्यरी**, इणरी पद्धति एम। —ल. पिं.

विग्रद—सं. पु. [सं. वियत्] आकाश, नभ। (ह. नां. मा.)

विग्रापणौ, विग्रापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हूं ग्रयांण ग्रणबूझ, प्रघळ कपटी वड पापी। कांमी क्रोधी कहर, विळै पर निंदा **विग्रापी**। —पी. ग्रं.

उ०—२ **विग्रापै** सत्र सदा दख व्रिंद, आग्रौ जिम जाय कहां सुर इंद। —रांमरासौ

विग्रापणहार, हारौ (हारी), विग्रापणियौ—वि०।
विग्रापिग्रोड़ौ, विग्रापियोड़ौ, विग्राप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विग्रापीजणौ, विग्रापीजबौ—भाव वा०।

विग्रापियोड़ौ—देखो 'व्यापियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विग्रापियोड़ी)

विग्रापी—१ देखो 'व्यापी' (रू. भे.)
२ देखो 'वापी' (रू. भे.)

विग्रारणम—[सं. विप्रतारणम्] पीटना, मारना। (उ. र.)

विग्रास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—'दीपौ' बाळकिसन्न पण, ऊवरै **विग्रास**। साथ लियां रिघि सांम री, नव ही रिद्ध निवास। —रा. रू.

विइगिच्छा—सं. स्त्री.—विचिकित्सा। (उ. र.)

विइत्तु—वि. [सं. विदित्वा] जानकार। (उ. र.)

विइय—वि. [सं. द्वितीय] १ दूसरा। (उ. र.)
२ विदित।

विउड—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—विउड मिउड ताडिउ, तु चपेटा ऊपाडिउ। कूंयरि मनि विराडिउ, बोल बोलइ सु ताडिउ। —सालि सूरि

विउरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

उ०—रांनल वर **विउरण** भणु, तिहुग्रणि पडिउ त्रास। वेस्या विलपति तिहां, सकल मिलिउ सहिवास। —मा. कां. प्र.

विउल—देखो 'विपुल' (रू. भे.)

विउलग्रसणपांण—सं. पु. [सं. विपुलाग्रसनपान] विपुल ग्रशन-पान, पुष्कल खान पान।

विउलतव—सं. पु. [सं. विपुलतप] विपुलतप।

विउलधण—सं. पु [सं. विपुलधन] विपुल धन, पुष्कल धन।

विउलसग्ग—सं. पु. [सं. विपुलसर्ग] व्युत्सर्ग, कायोत्सर्ग, एक तप विशेष।

उ०—ग्रणसण तप पहिलौ कह्यौ, छेलौ **विउलसग्ग** जांण। बारे भेदे तपस्या करौ, ज्यों पहुंचौ निरवांण। —जयवांणी

विउलसिरी—देखो 'मौलसिरी' (रू. भे.)

उ०—जिहां किण कमल ग्रपार रे, चांपौ मरुवौ रे दमणौ मालती रे। **विउलसिरी** सुखकार रे र, जाई जूई रे दुखड़ां पालती रे। —वि. कु.

विऊ—वि. [सं. विद्] जानकर, वेत्ता। (जैन)

विग्रोग—देखो 'वियोग' (रू. भे.)

विकंपन—सं. पु. [सं.] १ रावण पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो राम-रावण युद्ध में मारा गया था।
२ रुद्रगणों में से एक।

विकंपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—पूगळ पाळटी, थरकियौ **विकंपुर**, कहै छूटां कांहि। उदधि राजा सूर उलटौ, जादवां गढ जाहि। —हरखौ बारहठ

विकच—सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार के धूम केतु, जिनकी संख्या ६५ कही जाती है।
२ बौद्ध भिक्षुक।
३ केतु का नामान्तर।
वि. [सं.] १ खिला हुग्रा, फैला हुग्रा।

२ बिखरा हुआ।

३ जिसके बाल न हो, केश विहीन।

विकचा-सं. स्त्री. [स] विरूपक नामक नैर्ऋत्त राक्षस की पत्नी, जिस से भूमिराक्षस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

विकट-वि. [सं.] १ भयंकर. भीषण, विकराल, डरावना।

उ०—बजरंग घाट काळा **विकट**, दुरत थाट जमदूत सा। कर जोम गयण औघस करै, धोम नयण अवधूत सा। —सू. प्र.

२ चौडा, प्रशस्त।

३ विशाल, बड़ा।

उ०—१ असमर भट झपट **विकट** थट आवट, गो गाहट थट गरट गहै। ऊकट थिय काट सुभट लख आरट, खळ खट रिणवट खड़ग वहै। —गु. रू. बं.

उ०—२ एहनी-आवीयो तांम करि जोर बल फौरतौ, बब्बराधीस मन रीस आंणी। सुभट थट **विकट** साथै करी आपणा, रोस चढीयौ वदै असुभ वांणी। —स्रीपाल रास

उ०—३ इम गढ निकट **विकट** थट आया, छपन कोड़ि जांणै घण छाया। सुजळ जांणि ऊझळै समराथै, समंद सात नवसै नदि साथै। —सू. प्र.

४ जबरदस्त।

उ०—१ दट अणघट अघ **विकट** दळां रौ, राजा सांचौ रांम। बळ सोहै दिन जन निबळां रौ, नित जापो तै नांम। —र. ज. प्र.

उ०—२ **विकट** विहारी वंकड़ो, जाळंधर गढ राज। सो राठौड़ां घेरियौ, जोड़ै सेन सकाज। —रा. रू.

उ०—३ कोपमांन नरसिंघ रूप करि, **विकट** विराट वदन विक-राळ। सोसै रगत असुर हरिणाकस, प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ। —ह. नां. मां.

५ बलवान, शक्ति शाली।

उ०—१ काळ हुकम जिम काळ रा, किंकर कहरारै। होय लटां चट्टां हिचै, **विकटां** बाकारै। —सू. प्र

उ०—२ असी सहंस **विकटां** असवारां। वाग उपाड़ि लड़ै जिण वारां। —सू. प्र.

६ दुर्गम, दुरूह, दुस्साध्य।

उ०—मन जांणै सहल दीयण वित मोजां, औ दोय पण धरीयां अमठ। वेंडां री वातां इज वेंडी, वेंडा रा पेंडा इ **विकट**। —अज्ञात

७ कठिन, मुश्किल।

८ बदशक्ल, कुरूप, भोंडा, भद्दा।

९ उग्र, तीव्र।

उ०—मारै घणा चाढिया माथा, त्रिजड **विकट** तट गंग तणी। राजा जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियौ किणी। —किसनौ आढौ

१० टेढा, वक्र।

११ अहंकारी, अभिमानी।

उ०—दुरवेस **विकट** करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरौ। मम हुकम लाज राखण मुर्दै, महाराज मंडोवरौ। —रा. रू.

१२ जंगली, अभद्र।

सं. पु.—१ विस्फोटक।

२ सोमलता।

३ बाल तोड़-फोड़ा।

४ सेना, फौज। (ह. नां. मा.)

५ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

७ रावण पक्षी, एक राक्षस जो अंगद द्वारा मारा गया।

८ रुद्रगणों में से एक।

९ एक राक्षस जिसकी गंगाजल पीने के कारण मुक्ती हुई।

१० सिंह, शेर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बकट, बगट्ट, बिकट, बिकट्ट, बेकट, बेकठ, विकट्ट विकट्टी विगट।

अल्पा.—विकटौ।

विकटांणण, विकटांनन—देखो 'विकटानन (रू. भे.)

विकटा-स. स्त्री. [सं.] १ बुद्धदेव की माता का नामान्तर।

२ अशोक वन में सीता पर पहरा देते वाली राक्षसियों में से एक राक्षसी।

रू. भे.—विक्कुटा।

विकटानन-सं. पु.—धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

रू. भे.—विकटांणण, विकटांनन।

विकटौ—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—ऊडै जळ में ले चल्यौ, गज कूं **विकटौ** ग्राह। तब ततकार संमारियौ, राधानागर नाह। —गजउद्धार

विकट्ट, विकट्टी—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—१ 'विजपाळ' 'रांम' 'केहर' **विकट्ट**, 'भीमेण' 'रांम' 'फतमल' सुभट्ट। हरिभांण 'नाथ' भाराथ हांम, द्रढवंत सांम पेखै दुगांम। —रा. रू.

उ०—२ कट कट अघ दुघट **विकट्ट** थट अणघट, झट झट रट रट 'किसन' जिकौ। —र. ज, प्र.

उ०—३ भाला झलि हल्लै भिड़ण, करि फौज **विकट्टी**। खार खंधां असि खेड़िया, धावै बह घट्टी। —सू. प्र

विकणौ, विकबौ—देखो 'बिकणौ, बिकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न **बिकतौ** जोय। हरीया गाहक पेम कौ, सिर दै लेसी सोय। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ हीरौ हाटां मांहि, हरिया **बिकतौ** देखीयौ। पारिख बिन कुछि नांहि, कौडी बदलै जात है। —ग्रनुभववांणी

उ०—३ घणौ सीळ सत घणौ, भणौ लालां भटियांणी। किसूं दाव बळ कोप, ग्राव जम हत्थ **बिकांणी**। —रा. रू

बिकणहार, हारौ (हारी), बिकणियौ—वि०।

बिकिग्रोड़ौ, बिकियोड़ौ, बिक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिकीजणौ, बिकीजबौ—भाव वा०।

विकत्ता—वि० [सं. विकर्त्ता] नहीं करने वाला, ग्रकर्ता।

विकत्थन—सं. पु. [सं.] १ शेखी, डींग।

२ व्यंग्य।

३ झूठी प्रशंसा।

विकत्था—सं. स्त्री. [सं.] १ ग्रफवाह, जनश्रुति।

उ०—ग्रस्टा दस ग्रातुरै, वात विसतरै **विकत्थां**। राह थाह नरनाह, ताहि चिंता समरत्थां। —रा. रू

२ झूठी प्रशंसा।

३ व्यंग्य।

४ शेखी, डींग।

५ निरर्थक या बेहूदी बात।

६ चुगली।

रू. भे.—विकथा, विकहा, विगहा।

विकथा—देखो 'विकत्था' (रू. भे.)

उ०—१ राज कथादिक **विकथा** राग सूं, वारु कहुंग्र वणाय। समता धरि न करी मन सुद्ध सुं, सूत्र सिद्धांत सभाय। —ध. व. ग्रं.

विकप्पणा—सं. स्त्री. [सं. विकल्पना] संदेह, भ्रम। (जैन)

विकम—देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

विकमाईत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे)

उ०—तइ नरसिंघदास-का कटक-बंध चालितां सांतरि ग्रागळइ दळि पांणी पाछिलइ दळि कादम। तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ। दूसरउ **विकमाईत**। —ग्र. वचनिका

विकमायत—सं. पु. [सं. विक्रम+ग्रादित्य] १ राठौड़ों की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

विकरंद—सं. स्त्री. [सं. विकर+गंध] बदबू, दुर्गंध।

रू. भे.—बिकरंद।

विकर—सं. पु. [सं.] १ रोग, बिमारी।

२ तलवार चलाने का एक ढंग।

३ राक्षस।

४ देखो 'विकार (रू. भे.)

विकरण—सं. पु. [सं. विकर्ण] १ धातु व प्रत्यय के बीच में होने वाला वर्णागम। (व्याकरण)

२ एक शिवभक्त महर्षि।

३ धृत राष्ट्र का एक पुत्र, जो बड़ा न्यायी था।

४ कर्ण का एक पुत्र।

५ एक प्रकार का सांप।

६ एक प्रकार का तीर या बांण।

वि. [सं. वि+करणम्] १ इन्द्रिय रहित।

[सं. वि.+कर्ण] २ जिसके कान न हो, कर्ण रहित।

३ जो सुन न सके, बहरा।

विकरणक—सं. पु.—शिव का एक व्याड़ि नामक गण।

विकरतन, विकरत्तन—सं. पु [सं. विकर्तन] १ सूर्य। (डि. को.)

२ ग्राक, मंदार।

३ वह राजकुमार जिसने ग्रपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

४ एक सूर्यवंशी राजा जो कोढ़ से पीड़ित था ग्रौर साबरमती नदी में स्नान करने से मुक्त हुग्रा था।

बिकरम—सं. पु. [सं. विकर्म] वेद विहित कर्म के विपरीत कर्म, दुष्कर्म, पाप।

२ विरुद्धाचार।

३ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

विकरमादित्य, विकरमादीत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

विकरमी—वि. [सं. विकर्मन] १ निषिद्ध कर्म व कुकर्म करने वाला।

२ देखो 'विक्रमी' (रू. भे.)

विकरस—सं. पु. [सं. विकर्ष] १ बाण, तीर।

२ धनुष की प्रत्यंचा खींचने का कार्य।

३ ग्रन्तर, दूरी, फासला।

विकरसण—सं. पु. [सं. विकर्षण:] १ कामदेव के पांच बांणों में से एक।

[स. विकर्षणम्] २ ग्राकर्षण, खिंचाव।

विकरांत—देखो 'विक्रांत' (रू. भे.)

विकरांति—देखो 'विक्रांति' (रू. भे.)

विकरार—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

उ०—वार **विकरार** सिरदार विध वाहियौ, समर भर भार धर भार सूरै। सार सेलार ऊग्रार भंभार सर, पार चौधार कर पार पूगौ। —नाथौ सांदू

विकराळ, विकराल–वि. [सं. विकराल] (स्त्री. विकराळी) १ भीषण आकृति वाला, भयंकर, भयावह, डरावना।

उ०—१ भरै हिक स्रोणी पिंड भुजाळ। विढै हिक वीर हुआ विकराळ। —गु. रू. ब.

उ०—२ वौ हळफळियौ भिभकनै बैठौ व्हियौ। कांई देखै के खुद भांवण मांचा रै पसवाड़ै चंडी रौ विकराळ रूप धारचां ऊभी है। —फुलवाड़ी

उ०—३ खैड़ेचे खड़िया थाट खूर, सत्रवां काळ विकराळ सूर। —वि. सं.

उ०—४ ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलतौ, रूठौ जांणि कराल। —वि. कु.

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—१ नगां असि नाळ वजै विकराळ। धरा रजि धोम वणौ उडि वोम। —सू. प्र.

उ०—२ असुर घणा विकराळ कहौ किम मारिया। संतां-सुख उपजाय देवां-दुख टारिया। —गी. रां.

उ०—३ त्रंबक घुन ग्रदंग विकराळ रज धोम तम, ज्वाळ घख मसालां तोप ज्वाळा। —महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

उ०—४ ए नीकल्यौ किम जीवतौ, वैरी विकराल। वली मुझ थी अधिकौ थयौ हीयडे ऊठी झाल। —स्रीपालरास

३ प्रचण्ड, तीव्र, तेज।

उ०—१ भाव बताय सांमुही भाळै। अगनि झाल विकराळ उछाळै। —सू. प्र.

उ०—२ तन पौरस ग्रहियां तुरस, करग धरै किरमाळ। पावक ध्रत सजोग पुण, कोप वधै विकराळ। —मा. वचनिका

उ०—३ जांण जीह नागणी, अणी ओपै अतमाळी। तिलौ सेल फल तरल, तीर पावक विकराळी। —बखतौ खिड़ियौ

४ व्याकुल।

५ क्रोधित, क्रोध युक्त।

उ०—१ झाड़ी मांथै गोळियां री वरखा होवण लागी, तौ सेवट विकराळ व्हियोड़ौ सूर बारै' निकळियौ आंख्यां सूं आग बरसै ही अर वौ चरड़ चरड़ करतौ दातरड़िया घिसै हौ। —अमरचूनड़ी

६ जंगी, विशाल, दीर्घ, बड़ा।

उ०—१ ओ धनुस बड़ौ विकराळ रघुवर छोटौ सौ। —गी. रां.

उ०—२ दौड़िया लंका लियण दारुण, वधै कपि विकराळ। —सू. प्र.

सं. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ युद्ध। (अ. मा.)

रू. भे.—बकराळ, बिकराळ, बिक्कराळ, विकरार, वकराळ, विकरोळ, विक्कराळ, विक्कराल, विक्करु।

अल्पा.,—बकराळौ, वकराळौ, विकराळी, विकराळौ, विकरूल्यौ।

विकराळौ—देखो 'विकराळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तेजावत तिणवार, 'रूप' बौलै मछराळौ। विकराळा दळ बिचै, करूं धमचक कळिचाळौ। —सू. प्र.

उ०—२ राजा देखि तरह विकराळै। अहि चित भैचकि दीध उछाळै। —सू. प्र.

उ०—३ छत्रपतिहूंत सहंस गुण छाजै, वीरभद्र गण तठै विराजै। रोम जटा ऊभा विकराळा, काळा रोम रोम अहि काळा। —सू. प्र.

उ०—४ रींछ खाल अंगियां विकराळी। कसि जिम कसै भुजंगम् काळी। —सू. प्र.

उ०—५ तासु वयणु अवहेलइ राम्रौ, अति घणु घल्लइ जीवह घाउ। कोपि चडिउ तसु वणरखवालौ, धनुखु चडावइ जम विकरालौ। —सालिभद्र सूरि

उ०—६ पइठउ गढ नइ गिरूई खालि, सरप डस्यउ तेहं अति विकरालि। घरि आवंतउ पडिउ असार, सुर सेना गणिका नइ बारि। —हीराणंद सूरि

(स्त्री. विकराळी)

विकरी—देखो 'विकरौ' (अल्पा., रू. भे.)

विकरूल्यौ—देखो 'विकराळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तांम तेज तन सझ्यौ, विख आवध अव धूल्यौ। डग डग डैरूं वाय, नाद कै विख विकरूल्यौ। —सुरजनदास पूनियौ

विकरेता—देखो 'विक्रेता' (रू. भे.)

विकरोळ—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

उ०—विडरी असत 'विजो' थियो वांसै, वाजै हाक थई विकरोळ। —नैणसी

विकरौ—सं. पु. [सं विक्रयः] १ दाम लेकर कोई चीज देना, दाम लेकर किसी चीज के अधिकार का हस्तान्तरण करना, बेचना।

उ०—हाटां पड़ी हटनाल, हमै मद सूंगौ हुवौ। कूकै घणा कलाळ, विकरौ भागौ बाघजी। —आसौ बारहठ

२ वस्तु के बेचने से प्राप्त होने वाला धन।

रू. भे.—विकरौ, विकरौ, विक्रौ।

अल्पा.,—बिकरी, बिक्री, विकरी, विक्री।

विकळ, विकल—वि [सं विकल] (स्त्री. विकला) १ व्याकुल, बेचैन, दुखी।

उ०—१ माळवणी इणि विधि घणउ, विरह विकळ विलपंति। ढोलउ पूगळ पंथ सिरि, आणंद अधिक खड़ंति। —ढो. मा.

उ०—२ ज्योतिसियां कही ग्रहां रै योग सू इसी मालूम होय छै जे पांणी री अधिकत कर सहर विकळ होय से। —नी. प्र.

उ०—३ कत्या पासि कराकं कांमु, वयरी नुं हुं फेडउं ठांमु। कत्या आवी धाई सकल कइ मारूं कइ करूं विकल। —सालिभद्र सूरि

उ०—४ का तन आळस कर ऊंघ, का फिर सूंबा करत सूंघ। का मन मूरख विकळ जास, का हुय बैठे वेदव्यास। —अनुभववांणी

उ०—५ विकल हुवा सुक सारिका हे! चुगै न पीवै नीर मियाजी। —गी. रां.

२ उदास' खिन्न-चित्त।

उ०—व्याकुल सीता सोवत फिरतां, जो यो नैण जटाऊ जी, नारायणजी परमेसरजी। सुणनें कथा मुगत हरि दीनीं, चाल्या विकळ अगाऊजी, नारायणजी परमेसरजी। —गी. रां.

३ भयभीत, डरा हुआ, घमड़ाया हुआ, विह्वल।

उ०—अर गुजरात रौ अधीस विकळ थकौ परीवार सूं चद्रहास लेतौ ही आगै आय पड़ियौ। —व. भा.

४ क्षोभ युक्त।

५ खंडित, भंग।

६ हीन, रहित।

उ०—१ प्रथवी मंद फळ, मंत्र सवै नि: फळ, जड़ी मूळी रस विकळ। कुळ स्त्री निररगळ, न्यायी राय तुच्छ दळ। चरड बहुल, वाट पाडा तणा कल कल। —रा. मां. सं.

उ०—२ जै समजणौ हुवै तै उणनें मूरख जांणै। जै भंगी री भीटी तौ न खाधी नें भंगी री कीधी खाधी तिण सूं उणनें विवेक रो विकल जांणै। —भि. द्र.

७ कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ।

८ सड़ा हुआ।

९ प्रभाव या शक्ति से रहित, असमर्थ।

१० क्रोधित, क्रुद्ध।

उ०—ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलतौ, रूठौ जाणि कराल। —वि. कु.

११ अस्वाभाविक।

१२ मिथ्या, झूठ, असत्य। (अ. मा.)

१३ चंचल, अस्थिर।

१४ अपूर्ण, अधूरा।

१५ जिसमें कल नहीं हो, कल से रहित।

सं. पु.—१ कपट, छल। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ देखो 'बेअकल' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जद सुहागण बोली-बांमण नें मांहै बसांणै ने कथा वचाई थी सो कथा तो वांछै थोड़ी नै मांहरे सांमौ देखै। जो हुं जांणां मूरख है, विकळ है। —गाम रा धणी री वात

रू. भे.—विकळ, वेकळ, बैकळ, वकळ।

अल्पा.,—विकळौ।

विकळकांमी—सं. पु.—नारद।

उ०—कीयौ रांमायण लंक कुरखेत भारथ कीयौ. अोथ कोई पेखियौ भींच अेहौ। त्रिनयण तरण नारद पूछै त्रिण्है, कहौ भगवंत भगवंत केहौ। महारुद्र महाग्रह महामुणै, महाजुध कीया थे महादळ मारि। कहौ करणाकरण पूछजै तौ कन्हां, ऊध कौ ऊदउत तणी उणिहारि। दइत कपि झूवतां पड कुर देखीया, कहि रुद्र कहि रवि विकळकांमी। गांगहर आभरण जिसौ गजदळ गिळण, साख दै पूछियौ आख सांमी। —दुरसौ आढौ

विकळचित्त—वि.—१ अस्थिर चित्त।

२ चंचल।

रू. भे.—बिकळचत, विकळचित्त।

विकळता, विकळताई—सं. स्त्री.—१ विकल होने की अवस्था या भाव।

२ बेचैनी।

रू. भे.—बिकळता, बिकळाई।

विकळप, विकलप—सं. पु. [सं. विकल्पः] १ भ्रम, भ्रांन्ति।

उ०—जा घट पेम प्रगासीया, विखीया विकळप नांहि। हरीया छांना नां रहै, आया अंतर मांहि। —अनुभववांणी.

२ धोखा।

३ बिरुद्ध कल्पना।

उ०—अति उतिम नाभी असथांनु, मन संकळप विकळप नहीं ठांनु। अति उतिम सिवरन सरबंगा, अछर एक भया अणभंगा। —अनुभववांणी

४ योग शास्त्रानुसार पंच विधि चित्त वृत्तियों में एक, जो ऐसे शब्द ज्ञान की शक्ति है कि जिसकी वाच्य वस्तु नहीं होती।

५ मन की दुविधा!

उ०—अंतर एक लीयां रहै सदव्रत, असतन आखै बोल बचनती। करत न कौ संकलप नही विकळप, सुख दुख देह न वंछै मनती। —अनुभववांणी

६ मन में उत्पन्न होने वाली भांति-भांति की कल्पनाएं।

उ०—१ सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप घणै। संसयी नाँम मिथ्यात चोथो भणै। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ मन संकळप **विकळप** है मनही, मन जाग्रत मन सूता।
मन ही त्याग चलै बौह माया, मन ही लाग विगूता।
—अनुभववांणी

७ निर्धारण।
८ संदेह, हिचकिचाहट, संकोच।
९ इच्छा, अभिरुचि।
१० भूल चूक। ११ अज्ञानता।
रू. भे.—बिकळप, विकलप।

विकळांग, विकलांग–वि. [सं. विकल+अंग] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो, अंगहीन।

रू. भे.—बिकळांग, बिकलांग।

विकळा, विकला–सं. स्त्री. [सं. विकला] १ वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होना बंद हो गया हो।

२ कला का सातवां अंश।

३ उपद्रव।

४ कलह।

५ बुधग्रह की गति।

उ०—चंद्रकला तै **विकला** जांणौ, घटत बधत नइ लेखइ। साहिब नइ तउ सदा सुरंगी, वाधइ कला विसेखइ। —वि. कु.

६ दुर्गा देवी का नामान्तर।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सबेही रूप विरूपा। **विकळा** सकळा व्रजा, उपावण आप आपुपा। —देवि.

वि.—चंचल, अस्थिर।

रू. भे.—बिकळा।

विकलिंदी—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू. भे.)

उ०—मनुस विन नव मांहै तेऊ वाऊ बे जावै। **विकलिंदी** तै दस मांहि जावै पूठा ही आवै। —ध. व. ग्रं.

विकळी–वि.—१ चिरस्थाई, अमिट।

उ०—राजा कांम भळावियो, राखै **विकळी** कथ्थ। कहचौ वजीरां 'गजपती', तेड़ौ साऊ सत्थ। —गु. रू. बं.

२ देखो 'विकळौ' (पुं.)

विकलेंद्रि, विकलेंद्रिय–वि. [सं. विकलेंद्रिय] १ जिसकी इन्द्रिय वश में न हो।

२ जिसकी इंद्रिय में कोई दोष हो।

सं. पु.—जैन मतानुसार द्वेंद्रिय, त्रींद्रिय और चतुरेंद्रिय जीवों का समूह।

उ०—१ प्रांण **विकलेंद्रिय** भूत वनस्पति, जीव पंचेंद्रिय जात। चार स्थावर सत्वज कह्या, भगवंतै साक्षात। —जयवांणी

उ०—२ साते नरक तणौ इक दंडक, असुरादिक दस जांणजी। पांच थावर नै त्रिण **विकलेंद्रि**, उगणीस गिणती आंण जी। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—विकलिंदी, विगलिंदी, विगलिंद्रिय।

विकळौ–वि. (स्त्री. विकळी) १ अविश्वास-पात्र।

२ बदचलन, दुश्चरित्र।

३ देखो 'विकळ' (अल्पा., रू. भे.)

विकल्प—देखो 'विकलप' (रू. भे.)

विकस–स. पु. [सं. विकसः] चन्द्रमा, चान्द क. कु. बो.।

विकसणौ, विकसबौ–क्रि. अ. [सं. विकाशनं] १ विकसित होना।

उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी, लहलहै कुंज कुंज **विकसै**। —रसीलै राज रा गीत

२ खिलना, फूलना।

उ०—१ मुख दीसो **विकसै** कमळ, चंदन वचन रसाळ। हियड़ै जांण कि करतरी, धूरत चिन्ह ए माल। —पंचदंडी री वारता

उ०—२ नाह **विकसै** घणौ कमळ जिम भड़ निवेड़। भड़ घणा पाड़तौ सोभियौ महा भड़। —हा. झा.

३ वृद्धिमान होना, बढ़ना।

उ०—नवली भली कुमदिनी **विकसै**, रवि ऊगमते जेण रे। भर यौवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी विकसै एम रे। —वि. कु.

४ आगे बढ़ना, प्रगतिशील होना।

५ प्रफुल्लित होना, हर्षित होना, आल्हादित होना खुशी में फूलना।

उ०—१ उत्तम न्रप मिलियो जई, बाप भणी धरि नेह। मन **विकस्यौ** तन उल्लस्यौ, रमांचित थयौ देह। —वि. कु.

उ०—२ सखी अमीणौ साहिबौ, वांकम सूं भरियोह। रण **विकसै** रितुराज मैं, ज्यूं तरवर हरियोह। —बां. दा.

उ०—३ प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ। जेणि दीठइं उत्तम ना मन **विकसइ**। —सभा.

६ प्रकाशित होना।

विकसणहार, हारौ (हारी), विकसणियौ—वि०।

विकसिओड़ौ, विकसियोड़ौ, विकस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विकसीजणौ, विकसीजबौ—भाव वा०।

बिकसणौ, बिकसबौ, बिगसणौ, बिगसबौ, वगसणौ, वगसबौ, विकस्सणौ, विकस्सबौ, विक्कसणौ, विक्कसणौ, विगसणौ, विगसबौ, —रू० भे०

विकसाड़णौ, विकसाड़बौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

विकसाड़णहार, हारौ (हारी), विकसाड़णियौ—वि०।

विकसाड़िग्रोड़ौ, विकसाड़ियोड़ौ, विकसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकसाड़ीजणौ, विकसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विकसाड़ियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकसाड़ियोड़ी)

विकसाणौ, विकसाबौ—[राज. विकसणौ क्रि. का.प्रे. रू.] १ विकसित करना/करवाना ।

उ०—पूवां नै हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हे । —गी. रां.

२ वृद्धिमान करना, बढ़ाना ।

३ आगे बढाना/बढवाना, प्रगतिशील करना/करवाना ।

४ प्रफुल्लित करना/करवाना, हर्षित करना/करवाना, आल्हादित करना/करवाना, खुशी में फुलाना/फुलवाना ।

विकसाणहार, हारौ (हारी), विकसाणियौ—वि० ।

विकसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकसाईजणौ, विकसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिकसाड़णौ, बिकसाड़बौ, बिकसाणौ, बिकसाबौ, बिकसावणौ, बिकसावबौ, बिगसाड़णौ, बिगसाड़बौ, बिगसाणौ, बिगसाबौ, बिगसावणौ, बिगसावबौ, विकसाड़णौ, विकसाड़बौ, विकसावणौ, विकसावबौ, विकस्साणौ, विकस्साबौ, विकस्सावणौ, विकस्सावबौ, विगसाड़णौ, विगसाड़बौ, विगसाणौ, विगसाबौ, विगसावणौ, विगसावबौ—रू. भे ।

विकसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ विकसित करवाया हुआ. २ आगे बढवाया हुआ, प्रगतिशील करवाया हुआ. ३ प्रफुल्लित करवाया हुआ, हर्षित करवाया हुआ. ४ आल्हादित करवाया हुआ, खुशी में फुलवाया हुआ. ५ वृद्धिमान किया हुआ, बढ़ाया हुआ.

(स्त्री. विकसायोड़ी)

विकसावण, विसावणौ—वि.—१ विकसित करने वाला ।

२ खिलाने वाला, प्रस्फुटित कराने वाला ।

उ०—हिंदुस्थांन का छत्र, जगत छाया वरतावण । हिंदुस्थांन में सूरज, कवि कमळ **विकसावण** । —रा. रू.

३ वृद्धिमान करने वाला, बढ़ाने वाला ।

४ आगे बढ़ाने वाला, प्रगतिशील करने वाला ।

५ प्रफुल्लित करने वाला, आल्हादित करने वाला, खुशी में फुलाने वाला ।

विकसावणौ, विकसावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

विकसावणहार, हारौ (हारी), विकसावणियौ—वि० ।

विकसाविग्रोड़ौ, विकसावियोड़ौ, विकसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकसावीजणौ, विकसावीजबौ—कर्म वा० ।

विकसावियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकसावियोड़ी)

विकसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ विकसित हुवा हुआ. २ खिला हुआ, फूला हुआ (फूल) ३ आगे बढा हुआ, प्रगतिशील हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुआ हुआ, हर्षित हुवा हुआ, आल्हादित हुवा हुआ, खुशीमें फूला हुआ.

(स्त्री. विकसियोड़ी)

विकस्सणौ विकस्सबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—मेड़तिया 'हरियंद,' सूर दळ रांम **विकस्सै** । मांनसिंघ जूंझार, वेळ वोलिया विकस्सै । —रा. रू.

विकस्सणहार, हारौ (हारी), विकस्सणियौ—वि० ।

विकस्सिग्रोड़ौ, विकस्सियोड़ौ, विकस्स्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकस्सीजणौ, विकस्सीजबौ—भाव वा० ।

विकस्साणौ, विकस्साबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ (रू. भे.)

विकस्साणहार, हारौ (हारी), विकस्साणियौ—वि० ।

विकस्सायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकस्साईजणौ विकस्साईजबौ—कर्म वा० ।

विकस्सायोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सायोड़ी)

विकस्सावणौ, विकस्सावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

विकस्सावणहार हारौ (हारी), विकस्सावणियौ—वि० ।

विकस्साविग्रोड़ौ, विकस्सावियोड़ौ, विकस्साव्योड़ौ—भू० का० कृ०

विकस्सावीजणौ, विकस्सावीजबौ—कर्म वा० ।

विकस्सावियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सावियोड़ी)

विकस्सियोड़ौ—देखो 'विकसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सियोड़ी)

विकह्रा—देखो 'विकरथा' (रू. भे.)

विकाणौ विकाबौ—देखो 'बिकाणौ, बिकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एकइ वन्नि वसंतड़ा, एवड़ अंतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि **विकाइ** । —अ. वचनिका

उ०—२ तूं सरवर की माछळी, कौंण पिता कुंण माय । अलप संनेही कारणै, हाटौ हाट **विकाय** । —अनुभववांणी

विकाणहार, हारौ (हारी), विकाणियौ—वि० ।

विकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकाईजणौ, विकाईजबौ—कर्म वा० ।

विकाथिनी–सं. स्त्री. [सं.] स्कन्द की एक अनुचरी, एक मातृका।

बिकायोड़ौ–भू० का० कृ०—देखो 'बिकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिकायोड़ी)

विकार–सं. पु. [सं. विकारः] १ प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होने वाला परिवर्तन।

उ०—१ बोधक बोध एकही कहियै, निस्चय योही हमारा। है सुखरांम सदा सुद्ध केवळ, नहिं कोई माया विकारा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ ब्रह्मंड इकीस ऊपरै आसन, ज्यां पर अविगत योगी। नाद बिंदका नहीं विकारा, ब्रह्म आनंद का भोगी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

२ किसी वस्तु के आकार, गुण, रंग-रूप, स्वभावादि में होने वाला परिवर्तन जिससे वह काम देने योग्य न रहे।
३ उक्त प्रकार का परिवर्तन करने वाला तत्व।
४ क्रोधादि के कारण मुख पर हुई विकृति।

उ०—हुई दौड़ हैमरां, नरां ऊधरां करारां। सेख ज्वाळ सल्लळी, कनां सिव चक्ख विकारां। —रा. रू.

५ बीमारी, रोग।

उ०—जै जळ सीकर, तै उद्वेग कर। जउ सीतळोपचार ते करइ विकार। इणि परि प्रज्वळित, स्नेह पटळ, विरहानळ नीपजइ।
—रा. सा. सं.

६ वेदान्त व सांख्यदर्शनानुसार किसी पदार्थ के रूपादि का बदल जाना।
७ मनपरिवर्तन।
८ मनोवेग।
९ उद्वेग, विकलता।
१० दोष।

उ०—१ सींचै अम्रत अंग अति संजम, जोवन लगै विकार जरा जम। परमहंस आणंद में प्रांणी, ब्रह्म अकासि हुई तदि वांणी।
—सू. प्र.

उ०—२ दरसी जोत दिदार, तिरवेणारी ताक मैं। छूटा सकळ विकार, आया मन मांग मैं। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ सील संतोख सदा रहै सीतळ, आनंद रूप रहै जांह तांही। पेम प्रवाह भयै तन भीतरि, और बिकार लिपै नही काही।
—अनुभववांणी

११ वासना।

उ०—१ करम कचोड़ी बैस करि, निजर लगी चहुं दिस। हरीया विखै बिकार मैं, तन मन रहीयौ फिस। —अनुभववांणी

उ०—२ परियां तणै न चालै पेंडै, हाले कुपथ विकार हियै। दांना मिनख न राखै डेरै, दांनां विन कुण सीख दियै।
—कविराज बांकीदासजी

१२ अवगुण, बुराई।

उ०—१ विखयानंद मलीन बिकारा, यह मान्या सो जुग जुग हारा। विखयानंद जगत का भाखा, अब भजनानंद की केहूं साखा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ आसि पासि त्रन करम का, फळ लागा सुख दुख। माया मोह बिकार की, हरीया मिटै न भूख। —अनुभववांणी

१३ वैमनस्य, शत्रुता।

उ०—अठै रह कांसू बफादारी लेयस्यां। हालौ घरां हालां। सो सूरौ इसड़ौ रंग खींवै रौ दीसौ, जै सगा सूं विकार पैदा हो बिगाड़ हुवै। —सूरै खींवै कांधळोत री वारता

१४ परिवर्तन।

उ०—स्वाति बूंद आकास की, पासै पड़ी समंद। हरीया पेम विकार का, निज कण खोया कंद। —अनुभववांणी

१५ बदहजमी।

उ०—हांम कांम लोचणी उलाळी आकास जावै। चावळ रौ चौथौ हैंसौ खावै। तंबोल बिना खाधां अहारा विकार थावै। माडी मोडी कटारी री पड़चली समावै। —रा. सा. सं.

१६ स्वाद, जायका।

उ०—आंब स थोहरि ईख वड़, एकै धरि अवतार। सांई जिभ्या लख कहै, जिभ्या लख बिकार। —सुरजनदास पूनियौ

१७ जैन मतानुसार पांच ज्ञानेंद्रियों से होने वाले २४० विकारो में से कोई एक।
रू. भे.—बिकार, विकारु।

विकारी–वि. [सं. विकारिन्] १ जिसमें कुछ विकार हुआ हो, विकार युक्त।
२ जिसमें कुछ परिवर्तन हुआ हो या होता रहता हो, परिवर्तनशील
३ विकार उत्पन्न करने वाला।

उ०—सेली सींगी घालै नेमा, रांम भगति का नांही पेमा। भरम करम बौह करै बिकारी, साध नही औ वड संसारी
—अनुभववांणी

सं. पु.–१ साठ सवत्सरों में से तैंतीसवें संवत्सर का नाम जो विष्णु वीसी का तेरहवां संवत्सर होता है।
२ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी रचना में विकार (परिवर्तन) हुआ हो।
रू. भे.—बिकारी।

विकाद—देखो 'विकार' (रू. भे.)

उ०—बाहिर हेम रांम का वांना, भीतरि भया भंगारु। या तन कूं कारी नहीं लागै, मनवा भरचा **विकाद**। —अनुभववांणी

विकाळ—सं. पु. [सं. विकाल:] १ वह समय जब देवकार्य व पितृकार्य करने का समय बीत चुका हो।

२ देर, विलम्ब।

३ सन्ध्या का समय, शाम।

विकावणौ, **विकावबौ**—देखो 'विकाणौ, विकाबौ' (रू. भे.)

उ०—किसी सीख सायर सुतन, कौड़ **विकावण** एक कण (रा)। ताई सीख येही खरी, यौ दुरगा आसकरण रा। —सुरजनदास पूनियौ

विकावणहार, **हारौ** (**हारी**), **विकावणियौ**—वि०।

विकाविओड़ौ, **विकावियोड़ौ**, **विकाव्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

विकावीजणौ, **विकावीजबौ**—कर्म वा०।

विकावियोड़ौ—देखो 'बिकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकावियोड़ी)

विकास—सं. पु. [सं. विकाश:] १ प्रदर्शन, प्राकट्य, प्रकटन।

२ आकाश।

३ विस्तार, फैलाव।

४ प्रकाश, रोशनी।

५ प्रस्फुटन, खिलन।

६ उन्नति, बढोतरी, तरक्की।

उ०—घरटी फेरतां हरजस तौ बंद व्हैग्या अर फिलमी गीत गूंजण लाग्या-अंखियां मिलाकै-जिया भरमाकै-चलै नहीं जाना हो हो चले नहीं जाना। गांम में दो च्यार मुकद्दमा इ चालू व्हैग्या, जिणसूं लोग बाग कई दफां रा जांणाकार व्हैगा। कैंवण रौ मतलब औ कै गाम रौ मोकळौ सांस्कृतिक **विकास** व्हैगौ। —अमर चूंनड़ी

रू. भे.—**बिकास**, **बिगास**, **विगास**।

विकासणौ, **विकासबौ**—क्रि अ.—१ विकसित होना।

२ प्रकटित होना, प्रदर्शित होना।

३ प्रस्फुटित होना, खिलना।

उ०—काळी भमरावळि कळी, भूहां बांकड़ियांह। कमळ प्रभात **विकासिया**, इसड़ी आंखड़ियांह। —अज्ञात

४ उन्नत होना।

विकासणहार, **हारौ** (**हारी**), **विकासणियौ**—वि०।

विकासिओड़ौ, **विकासियोड़ौ**, **विकास्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

विकासीजणौ, **विकासीजबौ**—भाव वा०।

बिकासणौ, **बिकासबौ**, **बिगासणौ**, **बिगासबौ**, **बिक्कासणौ**, **बिक्कासबौ**, **विगासणौ**, **विगासबौ**—रू० भे०।

विकासियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रकटित हुवा हुआ, प्रदर्शित हुवा हुआ. २ विकसित हुवा हुआ. ३ प्रस्फुटित हुवा हुआ, खिला हुआ. ४ उन्नत हुवा हुआ।

(स्त्री. विकासियोड़ी)

विकिर—सं. पु. [सं. विकिर:] १ पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारों ओर फेंके जाने वाले चांवल आदि।

२ पक्षी।

३ कूप, कुआं।

४ पेड़, वृक्ष।

विकीरण—वि. [सं. विकीर्ण] १ जो चारों ओर फैला या छितराया हुआ हो।

२ प्रसिद्ध, मशहूर।

विकुंठ—वि. [सं.] १ अत्यधिक तीक्ष्ण या नुकीला।

२ अत्यधिक, भुथरा।

३ रैवत मन्वन्तर का एक देवता-समूह जिसमें चौदह देव होते थे।

वि. वि.—इस देवता समूह में निम्न लिखित देवता होते थे—१ अजेय २ कृश ३ गौर ४ जय ५ भीम ६ दम ७ ध्रुव ८ नाथ ९ यश १० विद्वस ११ वृण १२ शुचि १३ भेतृ १४ दांत।

४ देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

विकुंठा—सं. स्त्री.—एक देवी, जो रैवत मन्वन्तर में उत्पन्न विकुंठ नामक देवताओं की माता व शुभ्र की पत्नी मानी जाती है।

विकुंडभांड—सं. पु. [सं.] एक दानव का नाम। (पौराणिक)

विकुंडळ—सं. पु.—निषध नगर के एक धनी वैश्य के पुत्र का नाम।

वि. वि.—यह बड़ा पापी पुरुष था। इसने यमुना तीर वासी एक ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के सग दो बार यमुना में माघ स्नान किया था जिससे इसकी मुक्ति, हुई थी।

विकुंभ—सं. पु.—एक दानव, जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

विकुक्ख, **विकुक्खी**, **विकुक्षि**, **विकुख**, **विकुखी**—सं. पु. [सं. विकुक्षी] १ अयोध्यापति सूर्यवंशोत्पन्न इक्ष्वाकु के १०० पुत्रों में से सर्वज्येष्ठ पुत्र जिसे शशाद नामान्तर भी प्राप्त था। यह ककुत्स्थ, जिसके नाम पुरञ्जय व इन्द्रवाह भी थे, का पिता था।

उ०—१ सुत कासिप सूरज तप असाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। वइवस्तु तणौ इक्ष्वाकु वीर, संभ्रम इक्ष्वाकु **विकुख** सधीर। —सू. प्र.

उ०—२ सुत विकुख सकुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जे सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नंदन विस्टरास। —सू. प्र.

वि.—जिसकी तोंद बढ़ी हुई हो।

विकुट-सं. पु.—राजस्थानी (डिंगल) में एक गीत छन्द विशेष।

वि. वि.—इसमें प्रथम चरण में १४-१४ मात्राओं पर यति से २८ मात्रा फिर दूसरे चरण में २७ मात्रा, फिर ७-७ मात्राओं के २० चरण होते हैं।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, तिय सत वीसां सोइ। तिण थी मिळ दुव चवद वद, विकुट गीत इम होइ। —पिंगळ सिरोमणि

विकूरबौ, विकूरवौ-वि.—वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न, कृत्रिम, बनावटी। (जैन)

उ०—तिहां वळी सबळौ सिंह विकूरबी रे, तें कहै मैं दीठौ इक सीह रे। मांणस नी लेतौ वासना रे, आवे छै इण वार अबीह रे। —वि. कु.

विकेस-वि. [सं. विकेश] १ जिसके सिरके के बाल खुले हों।

२ जिसका सिर बालरहित हो, गजा।

सं. पु.—१ एक प्रकार का प्रेत।

२ पुच्छल तारा।

विकेसी-सं. स्त्री. [सं. विकेशी] सिर के खुले बालों वाली स्त्री।

२ वह स्त्री जिसके सिर में बाल न हो, गंजे सिर वाली स्त्री।

३ शिव की पत्नी का नाम।

४ अग्नि की एक पत्नी का नाम।

५ पूतना राक्षसी का एक नाम।

६ बालों की छोटी-छोटी लटों को मिलाकर बनाई हुई चोटी या वेणी।

विकोक-सं. पु. [सं.] वृकासुर का पुत्र तथा कोक का छोटा भाई।

विकोदर-सं. पु. [सं. वृकोदर] देखो 'व्रिकोदर' (रू. भे.)

उ०—१ अमरावत अजबसिंघ अमर बोल काजै, जुद्ध आए जुधिस्ठिर बंधव सा राजै। योयंद का सुंदर विकोदर सा बाहां, समर की मरजाद धरम कै राहां। —रा. रू.

उ०—२ पटहथ ऊचंडतो भुज पांणै, बाहां प्रलंभ भेदियौ वांणै। ईखै साह नयण आपांणै, जोधाहरौ विकोदर जांणै। —ईसरदास वीरमदेवोत राठौड़ रौ गीत

उ०—३ गाहेवा अजमेर गिरव्वर, सूं सादूळ मांडवा सम्मर। करग उपाडै 'भीम' किरम्मर, वधियौ वांमण जेम विकोदर। —गु. रू. बं.

विकोस-वि. [सं. विकोश, विकोष] १ म्यान से निकला हुआ, बिना म्यान का। (शस्त्र)

२ बिना छिलके या भूसी का, भूसी रहित।

३ खुला हुआ, अनाच्छादित।

विक्क-सं. पु. [सं. विक्कः] १ हाथी का बच्चा।

२ देखो 'बिक्क' (रू. भे.)

विक्कटा—देखो 'विकटा' (रू. भे.)

उ०—देवी भूनड़ां अम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजा। देवी राखसं घोमरं रक्त रूती, देवी दुरज्जटा विक्कटा जम्म दूती। —देवि.

विक्कमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—१ अभयदांणु जिणि दिनु सयल संघह विक्कमपुरि किय पयट्ठ जिण उसम भुवणि बहुविह उच्छवु भरि। —ऐ. जै. का. स

उ०—२ विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ। गणहरु जेम सुहंम सांमि भवियण दिण बोहइ। —ऐ. जै. का. सं.

विक्कय—देखो 'विक्रय' (रू. भे.)

विक्कराळ, विक्कराल—देखो 'विकराल' (रू. भे.)

उ०—१ जुट जम्म जाळं, वपै विक्कराळं। बाहूडंड पिंडं, बांणासै विखंडं। —गु. रू. बं.

उ०—२ ऊछळंत हाथ पाव, घाट सीस दाव घाव। मंड ईस रूंडमाळ, वीर नृित्त विक्कराळ। —सू. प्र.

उ०—३ कलू काल रूपी महा विक्कराळं, फणा टोप रोपै महकोप जालं। वलक्कै वलंतौ चलंतौ करालं, जिणौं फूंकि सूकै तरु माल डालं। —ध. व. ग्रं.

विक्करू—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

विक्कसणौ, विक्कसबौ—देखो 'विकसणौ, किरसबौ' (रू. भे.)

उ०—रिणमल्ल राव विसरांमियौ, कुंभा की मन विक्कसै। छळियौ छदम तें कूड़ कर, जेम सीह आगै ससै। —नैणसी

विक्कसणहार, हारौ (हारी), विक्कसणियौ—वि०।

विक्कसिओड़ौ, विक्कसियोड़ौ, विक्कस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विक्कसीजणौ, विक्कसीजबौ—भाव वा०।

विक्कसियोड़ौ—देखो 'विकसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विक्कसियोड़ी)

विक्कासणौ, विक्कासबौ—देखो 'विकासणौ, विकासणौ' (रू. भे.)

उ०—विक्कासै हासै सीसै बंध, मेलै मूंछां भ्रूंहारै। बारा लंकाळै पांणै धूणै, अभ्भं नभ्भं आधारै। —गु. रू. बं.

विक्कासणहार, हारौ (हारी), विक्कासणियो—वि०।

विक्कासिग्रोड़ौ, विक्कासियोड़ौ, विक्कास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विक्कासीजणौ विक्कासीजबौ—कर्म वा० ।

विक्कासियोड़ौ—देखो 'विकासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विक्कासियोड़ी)

विक्खं, विक्ख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—ग्रावै सघण ग्रचींत, जेम वनि ग्रगनि सिळग्गां । सरप विक्खं सोखवा, मंत्र ग्रावै सुखमंगां । —रा. रू.

२ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—चखां झाळ तूटै मुखां झाळ चंडां, परस्सौ फरस्सौ भ्रमावै प्रचंडां । वदै रांमहूँ रांम वायक विक्ख, तिकै रांम रा बांण जांणै सतिक्खं । —सू. प्र.

३ देखो 'वीख' (रू. भे.)

उ०—ग्रति सूरिति ग्रावस जेती ऊफणि, वांमण रूप जिहीं वधियौ । विढवा दळ सांम्ही दीन्ही विक्खां, जांणै ग्रंतक जागवियौ । —गु. रू. बं.

विक्खणी–सं. स्त्री—सड़क चलते समय घोडे के पैर की रगड़क लगने से उत्पन्न ग्राग की चिनगारी ।

उ०—खुरताळां विक्खणी, घणीलग्गी ग्रायासां । नह सुणीजै नीसांण, वंसू बाजी वरहासां । —गु. रू. बं.

विक्खधर—देखो 'विसधर' (रू. भे.)

उ०—सहर ग्रजैपुर जोधपुर, सोबै राख जवन्न । पूठ ग्रकब्बर वाहरां, थयौ विक्खधर मन्न । —रा. रू.

विक्खम, विक्खमी, विक्खम्म, विक्खम्मी—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—भारा ग्राक्रांत हुवंदी भूम्मी, वरतंदी सुरवार विक्खम्मी । ग्रमरू कथ भ्रहमांण ग्रखंम्मी, थंदै उथ्थल थांनूंदा । —र. ज. प्र.

विक्खहर—१ देखो 'विसधर' (रू. भे.)

२ देखो 'विसहर' (रू भे)

विक्खेव—देखो 'विक्षेप' (रू. भे.) (जैन)

विक्टोरिया–सं. स्त्री. [ग्रं.] १ प्रायः फिटन से मिलती-जुलती किन्तु उससे कुछ छोटी ग्रौर हल्की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी ।

२ एक छोटा ग्रह जिसकी खोज हैंड नामक पाश्चात्य ज्योतिषी ने सन् १८५० में की थी ।

विक्रतंड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन रौ गौरख विक्रतड बुधांन रौ गणां, सिंघां बांमदेव मांनसीरां में समंद । छोळां माधवांन बळाकार गदाधारं छाजै, न्रप भूपाळ ग्रसौ उदीपियौ नंद । —महाराज सनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

विक्रत–वि. [स. विकृत] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो गया हो, विकारयुक्त ।

२ जिसका ग्राकार, रूप ग्रादि में परिवर्तन हो गया हो, कुरूप, भद्दा

उ०—वा दो तीन वेळा मासी रै मूंडा सांम्ही जोयौ तौ उणनै ग्रैड़ो लखायौ जांणै उणरी ग्रांख्यां होठां माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं, कांन ग्रापरौ ठायौ छोड लिलाड़ माथै जुड़ग्या ग्रर नाक ठोडी रै हेटै लटूमै । इण भांत मासी रौ उणियारौ विक्रत ग्रर विडरूप क्यूं व्हैगौ ? —फुलवाड़ी

३ ग्रस्वभाविक ।

४ ग्रधूरा, ग्रपूर्ण ।

५ बीमार, रोगी ।

६ ग्रंगहीन, विकलांग ।

७ उद्विग्न ।

८ घृणाजनक ।

९ ग्ररुचिकारक ।

१० ग्रसाधारण ।

सं. पु.—१ दस लोककर्त्ताग्रों में सें दूसरे प्रजापति का नाम ।

२ विष्णुवीसी में चौथा व साठ संवत्सरों में से चौबीसवें संवत्सर का नाम ।

३ परिवर्त्त राक्षस का नाम । (पुराण)

४ ब्राह्मण वेशधारी कामदेव, जिसने इसी वेश में ग्रयोध्यापति इक्ष्वाकु के साथ संवाद किया था ।

रू. भे.—बिक्रत, वक्रत, विक्रित ।

विक्रतस्वर–सं. पु. [सं विकृत+स्वर] ग्रपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरने वाला स्वर । (संगीत)

विक्रता–सं. स्त्री. [सं. विकृता] एक योगिनी का नाम ।

विक्रति–सं. स्त्री. [सं. विकृतिः] १ विकृत होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ विकार या खराबी ।

३ विकार के उपरान्त प्राप्त होने वाला रूप, बिगड़ा हुग्रा रूप ।

४ बीमारी, रोग ।

५ परिवर्तन ।

६ परिणाम ।

७ मानसिक क्षोभ ।

८ २३ वर्णों के छन्दों की संज्ञा । (पिंगल)

९ विकार ग्राने पर होने वाला मूल प्रकृति का रूप । (सांख्य)

१० मूल धातु सें विकृत होने पर प्राप्त होने वाला शब्द का रूप ।

११ भागवत, विष्णु, एवं वायु के ग्रनुसार एक यादव राजा जो भीमरथ का पिता व जीमूत राजा का पुत्र था ।

रू. भे.—वक्रति ।

विक्रतुंड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे.)

विक्रम-वि.—बिना क्रम का, क्रमरहित।

सं. पु. [सं. विक्रमः] १ विपरीत गति।

२ कदम, डग।

३ पराक्रम, बल, शौर्य।

४ बहादुरी, वीरता।

५ चाल गति।

६ गरुड़ पर सवारी करने वाले भगवान, विष्णु भगवान्।

७ ब्रह्मवीसी या साठ सवत्सरों में से चौदवां संवत्सर।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से बलवर्धन नामक पुत्र।

९ योद्धा वीर। (अ. मा.)

[सं. विकर्म] १० दुष्कर्म, पाप-कर्म।

उ०—सुभ करमन का सुख फल स्वरगा, असुभ करै दुख भोगै नरका। करम विक्रम तणा यह साजा, कबहूं रंक कबूं हौ राजा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

११ तीन की संख्या।*

१२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

उ०—स्रीरांम कुळ रांम अवतार, जैतवारू कै जैंवार। भोज विक्रम करन तें सवाय, आचार की सोभा वरणी न जाय।
—रा. रू.

१३ देखो 'विक्रमसंवत्' (रू. भे.)

रू. भे.—बिकरम, बिक्रम, बीकम, विकम, विकरम, वीकम, वीकम्म।

विक्रमक-सं. पु—स्वामीकार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

विक्रमगढ, विक्रमनगर, विक्रमनगरि, विक्रमनगरी, विक्रमपुर, विक्रमपुरी सं. पु.—१ राजस्थान राज्यान्तर्गत बीकानेर नामक एक शहर।

उ०—अत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा स्री कल्यांणमल विक्रमनगरि रांज करै छै। —द. वि.

२ जयसलमेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन नगर विक्रमपुर।

रू. भे.—बीकपुर, बीकमपुर, बीकमपुरि, बीकमपुरी, विक्कमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी, वीकनैर, वीकपुर, वीकमपुर।

विक्रमसील-सं. पु.—एक राजा, जो कालिन्दी का पति और दुर्गम का पिता था।

विक्रमांत-सं. पु [सं. विक्रम+अंत] योद्धा, वीर। (अ. मा.)

रू. भे.—बिक्रमांत।

विक्रमाजीत, विक्रमादित, विक्रमादित्य, विक्रमादीत-स. पु. [सं. विक्रमादित्य] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनकी राजसभा में कालिदास थे और विक्रमी-संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

उ०—१ गया चौतीस वादेसाहुं, और केता भुँवाळूं। विक्रमाजीत अर भोजराज, गयौ सौ मुंज बलाळूं। —ऊदौ नैण

उ०—२ भूप विक्रमादित था ऊजेण सहर का, सभ वातां समरत्थ था दुख काटण पर का। दाता भोज पंवार था न्रप धार नगर का, लाख लाख द्रब देत था इक इक अखर का। —दुरगादत्त बाहरठ

उ०—३ विक्रमादित्य जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी। पांच पडव जिम बलवत, सीह तणी परि साहसवंत।
—ऐ. जै. का. सं.

रू. भे.—बिकरम, बिकरमाजीत, बिक्रमाजीत, बिकमारक, बीक, बीकम, बीकौ, विकमाईत, विकमायत, विकरमादित्य, विकरमादीत विक्रमारक, वीक, वीकम, वीकम्म।

विक्रमाब्द-सं. पु.—विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमी संवत्।

उ०—धारि कठिनाई धीर गुरु की चराई धेनु, इष्ट वर पाय पुनि पूरनिधि पाई तैं। विक्रमाब्द इंदु नंद द्वीप मांनमोरी मारि चित्रकूट राजधांनी जबर जमाई तैं। —क्रस्णसिंह बारहठ

विक्रमारक-सं. पु. [सं. विक्रमार्क] देखो 'विक्रमादित्य'।

विक्रमि—देखो 'विक्रमी' (रू. भे.)

विक्रमित्र-सं. पु.—वज्रमित्र शुंग राजा का नाम।

विक्रमी-वि. [सं. विक्रमिन्] १ वीर, बहादुर, शूरवीर।

२ पराक्रम वाला, पराक्रमी।

३ विक्रम सम्बन्धी, विक्रम का।

सं पु.—१ सिंह, शेर।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

३ विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ संवत्, विक्रमीसंवत्

रू भे.—बिकरमी, बिक्रमी, विकरमी।

विक्रय-सं. पु. [सं. विक्रयः] बिक्री।

रू. भे.—बिक्रय, बिक्रेय, विक्कय, विक्रेय।

विक्रांत, विक्रा-अंत-वि. [सं. विक्रान्त, विक्रान्तः] १ शूरवीर, बहादुर, वीर। (ह. नां. मा.)

उ०—क्रपा कटाच्छ गोल की, विलोल जाहि घां कमैं। रजै विक्रांत सांत में, क्रतांत अांत में रमैं। —ऊ. का.

२ विजयी, प्रतापी, तेजस्वी।

सं. पु—१ सिंह, शेर।

२ एक प्रजापति जो वालेय गंधर्वों का जनक माना जाता है।

३ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

४ एक प्रजाहित दक्ष राजा, जो दम राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम सुधृति था।

५ हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

६ राजा ऋतुध्वज (कुवलयाश्व) के उनकी पत्नी मदालसा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम। (पुराण)

[सं. वैक्रान्त] ७ वैक्रान्तमणि।

रू. भे.—विकरांत।

बिक्रांति–सं. स्त्री [सं. विक्रान्तिः] १ गति, चाल।

२ घोड़े की सरपट चाल।

३ विक्रम, बल, शौर्य।

४ वीरता, बहादुरी।

रू. भे.—विकरांति।

बिक्रित—देखो 'विक्रत' (रू. भे.)

बिक्री—देखो 'विकरौ' (रू. भे.)

बिक्रुस्ट–सं. पु.—व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर ध्वनि में बोलने की क्रिया या भाव। (संगीत)

बिक्रेता–वि. [सं.] विक्रय करने वाला, बेचने वाला।

रू. भे.—विकरेता।

बिक्रेय–वि.—१ जो बेचने के लिए या बेचने के योग्य हो, बिकाऊ।

२ देखो 'विक्रय' (रू. भे.)

रू. भे.—बिक्रेय।

बिक्रोस–सं. स्त्री. [सं. विक्रोशनं] १ गाली।

२ चीत्कार, चिल्लाहट।

बिक्रौ—देखो 'विकरौ' (रू. भे.)

बिक्लय, बिक्लव–वि. [सं. विक्लव] १ भीरु, डरपोक।

२ डराहुआ, भयभीत।

३ पीड़ित, दुखित।

४ विह्वल, बेचैन।

५ उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

बिक्षत–वि. [सं.] घायल।

बिक्षम–सं. पु.—कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार।

बिक्षय–सं. पु.—अधिक मद्यपान के कारण होने वाला रोग।

रू. भे.—विखय।

बिक्षर–सं. पु.—१ भगवान् विष्णु।

२ कश्यप एवम् दनु का एक पुत्र जो वीर और प्रतापी दैत्य था और आगे चल कर वसुमित्र राजा के रूप में अवतीर्ण हुआ था।

बिक्षात, बिक्षातमांन, बिक्षाति, बिक्षातिमांन–वि.—प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—१ समुदघात सग नर नैं पण गरभय तिरि देव। नारक वायु नैं च्यार सेम नैं तीनुं भेव। दिही दोय विगल में थावर नै मिथ्यात। सेम नै तीन दिहि जिम प्रवचन में बिक्षात। —वृस्त.

उ०—२ कीरतिथंभि करि, सारदा सरस्वती नदीए करी, देस-देसाउर वदीतूं बिक्षातमांन छइ, एहवूं एक अणहलपुर पाटण वरणवीतूं सोभइ, अहो सीआलक बोलि। —व. स.

उ०—३ अथ धरम्मप्रभाव, क्षीरसागर विस्तीरण निस्कलंक कुल, लोकमहि बिक्षाति विसुद्ध जाति, भवनोद्धारधार, सकललक्षण-प्रधांन। —व. स.

बिक्षिप्त–वि [सं.] १ घबराया हुआ, बेचैन, व्याकुल। २ खारीज किया हुआ, त्यागा हुआ. ३ भेजा हुआ. ४ खण्डन किया हुआ. ५ बिखरा या फेका हुआ।

६ पागल।

बिक्षिप्तता–स. स्त्री. [सं विक्षिप्त+ता] विक्षिप्त होने की अवस्था या भाव।

बिक्षेप–सं. पु. [सं. विक्षेपः] १ इधर उधर हिलाने डुलाने की क्रिया या भाव।

२ इधर उधर बिखेरने या छितराने की क्रिया या भाव।

३ झटका देने की क्रिया या भाव।

४ मन को इधर-उधर दौड़ाने या भटकाने की क्रिया या भाव।

उ०—माया में मिसरत मिल्या, चित्त नांम धरांणी। स्वरूप भूल स्वप्ना भयो दोस बिक्षेप दरसांणी। —स्री सुखरांमजी महाराज

५ बाधा, विघ्न।

उ०—मल बिक्षेप आवरण कर दूरा, वै सदा सुख से लेटै। सत चित आनंद मिलै हजूरा, गुरु गोदी में बैठे। —साधु जगदीसरांम

६ एक प्रकार का अस्त्र विशेष। (प्राचीन)

रू. भे.—बिक्षेप, विक्खेव, विखेप।

बिक्षोभ–सं. पु. [सं.] विशेष रूप से मन में होने वाला दुःख, उद्विग्नता।

बिक्षोभण–सं. पु.—कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक दानव पुत्र।

बिखंड–वि.—१ खंड-खंड, टुकड़े-टुकड़े।

उ०—१ खंड-खंड बिखंड बीजळां खिमतां, हय गय दळां बिहंडतां हाथ। हय वारां कूदेगा हळका, 'भारै' रौ रहियौ भाराथ। —केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ सौ धनुखु नांमइ किमु काटकि, धारणि धासकि धडहडी। बंभंड खंड बिखंड थाइ कि त्रगि सयल वि रडवडी। —सालिभद्र सूरि

२ नाश, संहार।

उ—१ जुटै जम्म जाळं वपं विक्कराळं । वाहूडंड पिंड, बांणासै विखंडं। —गु. रू. बं.

उ०—२ जिण मत्थै इसा भड़ न हुवै प्रचंड, 'बाघ'उत रिम घड़ा करै खागां विखंड। झूंझ झूंझार भड़ 'राजसी' झल्लणौ, एक अवनाड़ सींगाळ अवखल्लणौ। —हा. झा.

३ मिटाने वाला, खत्म करने वाला।

उ०—भाऊ आणंदरांम तण, उर आणंद प्रचंड। दळ आणंद प्रकासणा, खळ आणंद विखंड। —रा. रू.

रू. भे.—बिखंड।

विखंडण-वि.—१ संहार करने वाला, संहारक, नाशक।

२ तोड़ने वाला।

विखंडणौ, विखंडबौ-क्रि. अ.—१ मिट जाना, नष्ट हो जाना।

१ खण्ड-खण्ड होना, टुकड़े टुकड़े होना।

क्रि. स.—३ नाश करना, संहार करना, मारना।

४ खण्ड-खण्ड करना, टुकड़े टुकड़े करना।

उ०—घरि खबर जांणि बै बंधवां, माल बिवटा मंडियौ। आसुर तरीन राजा 'अभै', खग इण भांत विखंडियौ। —रा. रू.

५ तोड़ना, मिटाना।

उ०—१ इणइ वचनि घरणी ढलिउ, घर घर धूजइ देह। 'अै अै अस मस हास तूं, मुझ विखंडइ नेह। —मा. कां. प्र.

उ०—२ मित्र कलत्र स्युं नेह विखंडिउ, तेह तणइं परभावइं। राजकुंअरि परणीइ जि द्रेठि, जोई न सकइ भावि।

—हीराणंद मूरि

विखंडणहार, हारौ (हारी), विखंडणियौ—वि०।

विखंडिओड़ौ, विखंडियोड़ौ, विखंड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विखंडीजणौ, विखंडीजबौ—भाव/कर्म वा०।

बिखंडणौ, बिखंडबौ—रू. भे.।

विखंडा-वि. स्त्री.—नाश करने वाली, संहार करने वाली।

उ०—देवी कंटकां हाकणी वीर कंवरी, देवी मात वागेसरी महागवरी। देवी दंडणीं देव वेरी उदंडा, देवी वजया जया दैतां विखंडा। —देवि.

विखंडियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ मिटा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ खण्ड खण्ड हुवा हुआ, टुकड़े-टुकड़े हुवा हुआ. ३ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ. ५ तोड़ा हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री विखंडियोड़ी)

विख-वि. [सं. बिख, विख्य] १ जिसकी नाक कटी हुई हो, नाक रहित।

२ देखो 'विस' (रू. भे) (अ. मा., डिं. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—झाग विख अराबां आगि माथै झड़ै, लड़थड़ै अड़ै गैणागि लागौ। झपेटां भाग किलमां करै झोबरै, नाग जिम रांम रौ खाग नागौ। —राव भीमसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ हाथां रौ जहड़ौ हिलोहळ, तहड़ौ कहियौ जिकै तिकै। "जैसा" हरी जायनै जोयौ, विख अमरत हिक भाव विकै।

—नवळजी लाळस

उ०—३ विख पीजे कुंण कारणै, ता सेती मरि जाय। हरीया इंम्रत पीव करि, कळि अजरांमर थाय। —अनुभववांणी

उ०—४ साहिजिहांन बराड़ अध्रप सरप, महि अजमेर दराड मंडांण। विख बळ गुमण आसनौ बसियौ, रहियौ तेग अरूपीयौ रांण। —राव सत्रसाळ हाडा रौ गीत

उ०—५ अमियां गरुड दवार थी, ज्यौं विख निर विख होय। विसन जपंता पाप ख्यौ, बोहड़ि न करियौ कोय। —वील्होजी

उ०—६ नेम कछू नही पेम, बझ्यौ पखवाद मैं। हरिहां दास कहै हरिरांम, रच्यौ विख स्वाद मैं। —अनुभववांणी

उ०—७ इम पतसाह सुणै अकुळायौ, अहि जांणै जूवल तळ आयौ। भिळियां जांण सुरा विख भेळा, मोर अगन किर थया समेळा। —रा. रू.

उ०—८ मिस्री लै अप्रमांण, सींचौ घोळं घी सहित। विख सौ नींम वखांण, मीठौ होवै न मोतिया। —रायसिंह सांदू

३ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—रातौ रहै सदा विख रस मैं, पेम भगति नही भाय। लोक लाज काज कुळ माही, हरि पूज्यौ न सुहाय। —अनुभव वांणी

विखअंख-सं. पु.-सर्प, सांप।

उ०—मेळ थयां अगराज, हूंत गजराज दहल्लै। गुरड़पंख गजियां, झाट विखअंख न झल्लै। —रा रू

विखई-सं. स्त्री.—१ इन्द्रिय। (अ. मा.)

२ देखो 'विसयी' (रू. भे)

उ०—निज कुंभ सिभ जुग वण अनोप, उत्तंग सिखर घण सिखर ओप। कर लोल भुलत अति चपळ कांन, विखई मन जांणिक उकतिवांन। —रा. रू.

विखउ—देखो 'विखौ' (रू. भे.)

उ०—थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारु आसा लुध्ध। परदेसै घांघळ घणा, विखउ न जांणइ मुध्ध। —ढो. मा.

विखकन्या—देखो 'विसकन्या' (रू. भे.)

उ०—किलच किलमां चाढि घड़ां कणकण किया, डूबै डूंकळ कळळ मैंगळ हुवै। विखकन्या बींदणी बींद भोजौ बिकट, जोजरौ वरै मोटियार जोवै। —भोजराज खगारोत रौ गीत

विखकर–सं. पु. [सं. विषकिरि] मयूर, मोर। (नां. मा.)

विखकसेन–सं पु. [सं. विष्वक्सेनः] १ ईश्वर। (नां. मा.)

२ विष्णु।

३ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

रू. भे.—विखुकसेन।

विखगांमी–वि. [सं. विषमगामी] (स्त्री. विखगांमण) विषम गति से चलने वाला।

विखणौ, विखबौ—देखो 'वीखणौ, वीखबौ' (रू. भे.)

विखणहार, हारौ (हारी), **विखणियौ**—वि०।

विखिओड़ौ, विखियोड़ौ, विख्योड़ौ–भू० का० कृ०।

विखीजणौ, विखीजबौ—कर्म वा०।

विखदाती–सं. पु. [स. विषदान्त] नाखून। (अ. मा.)

विखधर, विखधार, विखधारी—देखो 'विसधर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—च्यार मजळ अजमेर सूं, दाझै 'अवरंग' दुक्ख। ज्यौं विखधर छच्छूंदर, गिळै न त्यागै मुक्ख। —रा. रू.

उ०—२ चूर त्रिण तर पसर वनचर, कना मेटण तिमण रवि कर। घूप चख हर ज्वाळ, विखधर धारि सुजहर। —रा. रू.

उ०—३ धर चलियौ झाळ 'बबर'हर विखधर, भर बांबी अजमेर भर। नाग दवण सत्रसल नेड़ांणौ, डसै न रांणौ तेण डर। —राव सत्रसाळ हाडा रौ गीत

उ०—४ प्रथी अणपार, धुजै विखधार। धुबै घर धोम, कसक्कत कोम। —सू. प्र.

विखनग–सं पु.—१ सींग या तेलिया नामक स्थावर विष।

२ बछनाग नामक विष।

विखनजर–सं. स्त्री.—१ कुटिल निगाह, बुरी दृष्टी।*

२ शिव, महादेव।

उ०—प्रहारै तिमर विखनजर छाकां पियै, घूमरां सत्रां खग धजर धावै। दिवाकर अजर सगरांम सम सुर दुहूं, अवर छत्रधर नकौ नजर आवै। —कविराजा करणीदांन

विखभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

विखभधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू. भे.) (अ. मा.)

विखभ्र—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

उ०—भोळी नाथ भुतेसं, संकर सिव दत रत सुररांणी। गज तुच विखभ्र चढेसं, वांमदेव तस्मै नमः। —मा. वचनिका

विखभ्रधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू. भे.)

विखम—देखो 'विसम' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ जहर विखम जारंग, भुजां धारंग भुजंगम। भाल तेज भारंग जरा हारंग लसै जम। —सू. प्र.

उ०—२ झुकै नाग रा सीस त्रांबाळ तासा झड़ै, पाटवी राग रा विखम हाका पड़ै। ओहि लागै गजब भुजा आभां अड़ै, 'जैत' मारु कटी कड़ा सिलहां जड़ै। —महादांन महड्

उ०—३ लाल वदन अंबर सिर लागौ, विक्रमादित जवनांहूं वागौ। विखम धमक साबळ खग वाहै, मुनि छुडाय लीधा पल माहै। —सू. प्र.

उ०—४ ऊंचा डूंगर, विखम थळ, लागा किर तारेहि। कूटचइ करहइ लंघिया, घोड़ा म मारेहि। —ढो. मा.

उ०—५ काळ रौ विधेय करम करण पाळा ही चलाया अर विखम दुरग ओवट घाट रै कारण आपरा घोड़ा सिपाह पाछा ही झलाया। —वं. भा.

उ०—६ वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळं। उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम, विखम हिम द्रुम विज्जळं। —रा. रू.

उ०—७ भवंग मिळै मलीयागरी, लहरि विखम की मेट। साध सदा मिळ करत है, रांम नांम सुख भेट। —अनुभववांणी

उ०—८ बांकौ कहै टळै दिन विखमा, धणियांणी नै धायां। लोवडियाळ ताप नंह लागै, ओळै थारै आयां। —बां. दा.

विखमगत, विखमगति—देखो 'विसमगति' (रू. भे.)

उ०—हियै धारियां खांन जुवांन छिबतौ निहग, अवर नर विसरै तणा अचभा। विखमगत देख 'जसराज' खग वाहतौ, रही रथ साह गज-गाह रंभा। —गु. रू. बं.

विखमजुर, विखमज्वर—देखो 'विसमज्वर' (रू. भे.)

उ०—हरि जिणहूं दांणव हण्यां, जिकण विखमजुर जाइ। विरह मिटावण बल्लहा, अब दो उहीज आइ। —र. हमीर

विखमता–देखो 'विसमता' (रू. भे.)

विखमनयण, विखमनेत्र, विखमनैण—देखो 'विसमनयण' (रू. भे.)

विखमबांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे.)

विखमबांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे.)

विखमरौ—देखो 'विसमरौ' (रू. भे.)

विखमवांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे.)

विखमाजुध' विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध—देखो 'विसमायुद्ध' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

विखमारिख—सं. पु. [सं. विषम+ऋक्ष] छोटे नक्षत्र।

उ०—तिण वार वीरारस संगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विहंगम। कळह का आगम सो विखनारिख, सार का कांटा सचां पारिख।
—रा. रू.

विखमावरण—सं. पु. [सं. विषम+वर्ण] विषमवर्ण, दग्धाक्षर।

उ०—किता हुग्रा दिग्गज कवी, समुभणहार असेस। धुर रूपक ज्यांही धरै, विखमावरण विसेस।
—र. रू.

विखमी—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ छायौ गयण रंभ रथ छाजै, विखमी पांख पांखणी वाजै। बावन वीर नचण बहबहिया, डैरू जटी चंड डहडहिया।—सू. प्र.

उ०—२ विखमी मैं सादूळ लिखमीचंद व्यास, मुरार का बाळकिसन साहंस निवास। जहां जहां आप वणी बूभवै सरीखी, कमधां के साथ वात व्यास पास सीखी।
—रा. रू.

उ०—३ वचन सुणी राजा डरपियौ, करमां री हौ घणी विखमी बात। राय रांणी दोनूं कहै घर मांहै हौ घड़ी अफली जांन।
—जयवांणी

उ०—४ विजउ विखमी चोरी पइठउ, मूंक्यउ कुंडल नाग जी। वज्रजंघन नइ भेद जणाव्यउ, साचउ साहमी राग जी।—स. कु.

उ०—५ साचौ धणीं विपत में सांमी, तैब्यां आवै तीजी ताळ। विखमी वाट तणौ वोळऊ, सांई तूं काळां तणौ सुगाळ।
—ओपौ आढौ

विखमीवार, विखमीवार—सं. पु.—१ दुर्दिन, बुरे दिन, दुख के दिन, कष्टमय समय।

२ अन्तकाल, मृत्यु समय।

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, विछटचौ विखमीवार। कीधी नारायण कहै, पुत्तर हेत पुकार।
—ह. र.

रू. भे.—विखम्मीवार, विखम्मीवार।

विखमेखु—सं. पु. [सं. विषम+ईषु] कामदेव।

विखम्मी—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ वग्गां खग्गां साह दळ, माड़ेचा पण मंड। वार विखम्मी झेलणा, आदू नेम प्रचंड।
—रा. रू.

बिखम्मीवार, विखम्मीवार—देखो 'विखमीवार' (रू. भे.)

उ०—भड़ पड़िया 'सादूळ' रा, वीस विखम्मीवार। चैत इग्यारस चांनणी, असुरां सुणी पुकार।
—रा. रू.

विखयंतकृत—सं. पु. [सं. विषयान्त कृत] शिव, महादेव। (अ. मा.)

विखय—१ देखो 'विक्षय' (रू. भे.)

२ देखो 'विसय' (रू. भे.) (अ. मां., ह. नां. मा.)

उ०—विखय विसहर डंसियां, गारूड़ी स्रीगोव्यंद। अति अंग भाजई लहर वाजई, जीवीई जगदानंद।
—रुकमणी मंगळ

विखयारस—सं. पु. [सं. विषयरस] विषयभोग, विलासिता।

विखरणौ, विखरबौ—देखो 'बिखरणौ, बिखरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरसा म्हारा भाई रे, कुण बूझै मा बिन मन री बात। ओदर रा रै साथी, कुण रे संवारै विखरचा केसड़ा।
—जीणमाता रौ गीत

उ०—२ आगै नीली झांझ लीयां वधाईदार दोड़िया छै। नगर मांहै ओछव वधावीजै छै। मंगळ गावीजै छै। गळिआं गळिआं फूल विखरीजै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—६ ना ना, ओ किसनूं हरगिज न्हीं व्है सकै। बाळ विखरयोड़ा हाथां-पगां पर मैल रा धारड़ा जम्योड़ा अर सरीर पर फगत एक मैलोसोक कुड़तियौ।
—अमरचूनड़ी

विखरणहार, हारौ (हारी), विखरणियौ—वि०।

विखरिओड़ौ, विखरियोड़ौ, विखरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विखरीजणौ, विखरीजबौ—भाव वा०।

विखरतन—सं. पु. [सं. विकर्त्तन] सूरज, सूर्य। (नां. मा.)

विखराड़णौ, विखराड़बौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

विखराड़णहार, हारौ (हारी), विखराड़णियौ—वि०।

विखराड़िओड़ौ, विखराड़ियोड़ौ, बिखराड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

विखराड़ीजणौ, विखराड़ीजबौ—कर्म वा०।

विखराड़ियोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विखराड़ियोड़ी)

विखराणौ, विखराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

विखराणहार, हारौ (हारी), विखराणियौ—वि०।

विखरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विखराईजणौ, विखराईजबौ—कर्म वा०।

विखरायोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विखरायोड़ी)

विखरावणौ, विखरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

विखरावणहार, हारौ (हारी), विखरावणियौ—वि०।

विखराविओड़ौ, विखरावियोड़ौ, विखराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विखरावीजणौ, विखरावीजबौ—कर्म वा०।

विखरावियोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विखरावियोड़ी)

विखरियोड़ौ—देखो 'बिखरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विखरियोड़ी)

विखवांन-वि. [स. विषवान्] विषयुक्त, जहरीला।

उ०—सुख सिंगार, मांनि अंगार। तिणइ अबळा (अंतरगत) फूला कीधा वेगळा। चंद तपइ पांन, थयां विखवांन। विरहानळ प्रज्वळइ अंगु, सखिजन सूं विरंगू। —रा. सा. सं.

विखवाद-वि. [सं. विषवाद] १ विष के समान, विषतुल्य।

उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक आलोटइ आडी पडी। थ्यु विखवाद पांन नइ फूलि, एक रोआवि मुहुगि मूलि।
—कां. दे. प्र.

सं. पु.—१ दुःख, पश्चाताप।

उ०—१ अजी लगै छोडं नहीं मा मोरी रै, सायर अपणी मरजाद सुता हूं तोरी रै। हरख विनोद हीयै धरां मा मोरी रै, परिहरि मन विखवाद सुता हूं तोरी रै। —स्रीपाल रास

उ०—२ किस्या कहूं गुण महाराजी, किस्या कहूं, अपवाद। जेम जेम संभारू हीयै जी, तेम तेम वधै विखवाद। —वृस्त

उ०—३ लज्जांणौ राजा घणूं, मन धरतौ विखवाद। नामंता माहरौ थयौ, लोकां विचै अपवाद। —स्रीपाल रास

२ कलह, झगड़ा।

उ०—विखम वांणि विखवाद, विखयरस अंगि न बाधइ। वखतवंत वर विबुध, वांन दिन प्रति वाधइ। —ऐ. जै. का. सं.

३ विरोध।

विखसुधार-सं. पु. [सं. विषसुधार] घृत, घी। (अ. मा.)

विखहर-वि.—विष का हरण करने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला।

सं. पु.—१ गरुड़। (नां. मा.)

२ विष का हरण करने वाली या विष का प्रभाव नष्ट करने वाली औषधी या मत्र।

३ देखो 'विसधर' (रू. भे.)

उ०—............फूल बणराय न लगै। विखहर चढै न विख्ख, जळण घ्रत होम न जगै। —चौथ बीठू

विखहा-सं. पु [सं. विषहा] गरुड़। (डि. को.)

रू. भे.—बिखहा।

विखांण—देखो 'विसांण' (रू. भे.)

विखांणण-सं. पु. [सं. बिष+आनन] जिसके मुंह में विष हो, सर्प, सांप।

विखांणू - देखो 'बखांण' (रू. भे.)

उ०—स्रीहरि जै सागरि सूइ छि, सहीए सर नवि जांणूं। नारायण आगलि नारदजी सूं ए सर नथि विखांणूं ?
—नळाख्यांन

विखांतक-सं. पु [सं विषं+अन्तकः] शिव, महादेव।

विखांन—देखो 'विसांण' (रू. भे.)

विखांनस—देखो 'वैखानस' (रू. भे.)

विखाइत – देखो 'विखायत' (रू. भे.)

उ०—पछै ग्गिाधीर रिड़मल नूं कह्यौ, समझायौ—थे विखाइत हुवा काय फिरौ, नै बाप री धरती री चींत करौ नहीं, सु कुण वासतै ? तरै रिड़मल कह्यौ—मोनुं राव चूंडै सुंस लीरायौ थौ।
—नैणसी

विखातौ—देखो 'विखायत' (रू. भे.)

विखाद—देखो 'विसाद' (रू. भे.)

उ०—अवतार अंस 'अगजीत' ग्रह वंस विखाद पलट्टियौ। रितु एण उदय चहुवांण रै, सुत 'अभमाल' प्रगट्टियौ। —रा. रू.

उ०—२ सांसा धरम विखाद वाद, विपरत विलूधा।
—केसोदास गाडण

विखादी—देखो 'विसादी' (रू. भे.)

विखायत, विखायती, विखायतौ-सं. पु—१ किसी कारण विशेष से राजसत्ता के विरुद्ध होकर बगावत करने वाला व्यक्ति, राजद्रोही, बागी।

उ०—१ 'सूरौ' 'केहर'सिंघ रौ, 'लखधीर' महेस। भाटी आइ विखायतां, चाड मुरद्धर देस। —रा. रू.

उ०—२ वात वळै असुरां विसतारी, धर दिस असट दिलासा धारी। कितराई सुण भ्रमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा।
—रा. रू.

२ संकटावस्था, विषम अवस्था।

३ वह राजा, सामन्त या जागीरदार जिसका राज्य या जागीर किसी राजा या बादशाह द्वारा जब्त कर लिया गया हो।

उ०—१ तरै यां ठाकुरां रांणाजी नुं कहयौ, "हाजीखांन भलौ मांणस छै, नै विखायत थको छै. दीवांण बडौ उपकार कीनो छै। सु हाजीखांन नुं आ बात कराड़ियां रो जुगत न छै। —नैणसी

उ०—२ इणै खरच घणौ पूजवियौ हुतौ। सु पछै रावळ घड़मी धरती वाळी, तरै सारां विखायतां नूं वधारियां। —नैणसी

उ०—३ एक कोई विखायत सूरवीर किण रै ही गढ मैं रहनै वांनै काढ आप गढ अपणाय लियौ गढ रा धणियां कयौ जावौ परा तरै कहै। — वी. स. टी.

उ०—४ दुमना थया विखायती, मरतां सांमतसीह। थळ आयां वळ ओढणा, सोई धमळ अबीह। —रा. रू.

वि.—१ संकटग्रस्त, संकट से पीड़ित, दुःखी।

उ०—१ महि दावण मेवाड, राड चाढ अकबर रचै। विखै बिखायत बाड, प्रथुळ पहाड प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

उ०—२ गाडा ३०१ सीधा रा भर चलाया सु जाय गढ पोहता, सु बारहठ रतनूं चंद्रव माला रौ बिखायत थकौ महेवै रहचौ थौ, तिण जांणियौ गढ माहरा ठाकुरां सु जाय। —नैणसी

२ लुटेरा, डाकू।

रू. भे.—बखायत, बिखाइत, बिखाई, बिखाऊ, बिखायत. वखाइत, वखात, वखायत, विखाइत विखातौ।

बिखारी—देखो 'भिखारी' (रू. भे.)

बिखावण-वि. [सं. विष्वाणः विश्वसनो भोजने इति षत्वम्] १ कष्ट पीड़ित।

२ भूखा।

सं. पु.—भोजन। (ह. नां. मा.)

बिखासइ-सं. पु.—दृढ़ विश्वास।

उ०-तउ राउ दुरयोधन ए विमासइ, हासउं हसीतुं पडिउ बिखासइ। 'ए नारिरूपि नर राउ कोई, कइ ईण रूपिइं इह पारथ होई।

—सालिसूरि

बिखिक—देखो 'बिसिख' (रू. भे.)

बिखिया—देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—१ दर स्तोक ईखद अलप, तुछ मंदाक। ओछ तुछ रंचक अणू, औ सुख बिखिया आख। —अ. मा.

उ०—२ रांम भजौ बिखिया तजौ, घर मांहीं घर एक। ता घर सूं लागा रहौ, छाडौ द्वार अनेक। —ह. पु. वां.

उ०—३ सहजै जिणि बिखिया तजी, पांचूं पसर मिटाय। सहज सोई सत्य जांणिये, सतगुर हुवै सहाय। —परमांनंदजी वणियाळ

बिखियात—देखो 'विख्यात' (रू. भे.)

उ०—१ इतै सुण सरब समराथ भड़ ऊठिया, वसु बिखियात कीरत वदीती। घात भड़ सोरसा बात सह घेरिया, वात करतां इतै रात बीती। —तिलोकदांन बारहठ

उ०—२ ओपियौ इखाग वंस आससेण अंग जात, वांमा बिखियात मात जात आवै व्रंद। एकीह अबीह सीह लोपें कुण लीह, एहो जाप घरें धरमसीह गौडीचौ जिणंद। —ध. व. ग्रं.

बिखीया—देखो 'विसय' रू. भे.)

उ०—१ जा घट पेम प्रगामीया, बिखीया विकळप नांहि। हरीया छांना नां रहै, आया अंतर मांहि। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया भाठी पेम की, इंदर दई जगाय। पेम पीयाला पीव करि, बिखीया प्यास मिटाय। —अनुभववांणी

बिखुकसेन—देखो 'विखकसेन' (रू. भे.)

बिखुटणौ, बिखुटबौ-क्रि. अ.—बिछुड़ना।

बिखुटणहार, हारौ (हारी), **बिखुटणियौ**—वि०।

बिखुटिओड़ौ, बिखुटियोड़ौ, बिखुटचोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिखुटीजणौ बिखुटीजबौ—भाव वा०।

बिखुटियोड़ौ-भू. का. कृ.—बिछुड़ा हुआ।

(स्त्री. बिखुटियोड़ी)

बिखेप—देखो 'विक्षेप' (रू. भे.)

बिखेर-सं. स्त्री.—बिखेरने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'बिखेर' (रू. भे.)

बिखेरणौ, बिखेरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळौ न बहनोई सत्रुआं नै पूगा तठै बींद वणीयेडै हीज झगड़ा रै भूखै तरवारां आगै सरीर पुरजां कर बिखेरियौ —वी. स. टी.

उ०—२ राजी भींटा बिखेरचां ताचै मांथै पकड़चोड़ी बैठी है। दातां रै कोडी अर अलैवण चढ रैयी है। ठोडी लाळचां अर थूक सूं भीज गयी है। —दसदोख

उ०—३ हुकम लेर भड़ हालिया, साह करां समसेर। जेझ न कीधी जादवां, वाजंत्र दिया बिखेर। —वी. स. टी.

उ०—४ घण चम्मर सीस गयंद घटा, जड-धारक मेर बिखेर जटा। गडडंति गुडंता मत्त-गयं, गरजंतिक जांणय गोरंमयं।

—गु. रू. बं.

बिखेरणहार, हारौ (हारी), **बिखेरणियौ**—वि०।

बिखेरिओड़ौ, बिखेरियोड़ौ, बिखेरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिखेरीजणौ, बिखेरीजबौ—कर्म वा०।

बिखेराणौ, बिखेराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

बिखेराणहार, हारौ (हारी), **बिखेराणियौ**—वि०।

बिखेरायोड़ौ—कर्म वा०।

बिखेराईजणौ, बिखेराईजबौ—कर्म वा०।

बिखेरायोड़ौ—देखो बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिखेरायोड़ी)

बिखेरावणौ, बिखेरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

बिखेरावणहार, हारौ (हारी), **बिखेरावणियौ**—वि०।

बिखेराविओड़ौ, बिखेरावियोड़ौ, बिखेराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिखेरावीजणौ, बिखेरावीजबौ—कर्म वा०।

बिखेरावियोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिखेरावियोड़ी)

बिखेरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिखेरियोड़ी)

बिखेरौ-सं. पु. [सं. विकीर्ण] १ बिखरे होने की अवस्था या स्थिति। ३ बिखरी हुई सामग्री, अव्यवस्थित दशा में पड़ा हुआ सामान या कचरा।

वि.—फैला हुआ, व्याप्त।

रू. भे.—बिखेरौ, विखोरौ।

विखै-क्रि. वि.—१ समय में।

उ०—एक दिन रौ समाजोग छै। रात रै विखै पोढिया छै। तरै रांणी चावड़ी सुहणौ लाधौ—'जु नाहर ३ आया छै। —नैणसी

२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीपुर नांम नगर, तिणरै विखै राजा सालबाहन राज करै छै। यूं ईम घणा दिन विता। तरै सालिवाहन देवगत हूवौ। —रीसालू री वारता

उ०—२ आय न्रपति पूछी विध एही, सावधांन हुय धरम सनेही। विखै अग्यांन धरम वीसारौ, सूरजकुळ चौ धरम संभारौ। —सू. प्र.

उ०—३ पिलंग पथरणा पोढणौं, सदा सहेली संग। हरीया होसी भगति विन, विखै विलासा भंग। —अनुभववांणी

उ०—४ गुर संम्रथ गुर सुख की सीरा, गुर हैं दवन विखै तन पीरा गुर अघहरण करन आनंदा, गुर तें मिटै भरम भय फंदा। —अनुभववांणी

उ०—५ करत केल वन वन विखै, मद उनमत्त गयंद। ऊभा करै अकासिया, देख देख दिस चद। —गजउद्धार

विखैआगळ-वि. [सं. विष्+अर्गला] विपत्ति में साथ देने वाला, दुख का साथी।

विखोड़-सं. स्त्री.—अप्रशंसा, निन्दा, हंसी।

उ०—१ चारण पाछौ वीसळदेजी पासै गयौ। जाय नै कह्यौ—'बाप ! मूळू आवै नहीं। तद मूळू रा राजा विखोड़ किया। —नैणसी

उ०—२ ताहरां विसोढो पाछौ आयौ। आयनै राजा नूं कह्यौ-बाप ! मूळू कोट में किसी तरह आवै ? म्हैं तौ घणौ ही कह्यौ, पण आवै नहीं। ताहरां अठै गोरै वादळ मूळू रा विखोड किया-'जु जाहरै, भला रजपूत ! आवणौ हुंतौ। —नैणसी

विखोड़णौ, विखोड़बौ-क्रि. स.—अप्रशसा करना, निन्दा करना, हंसी करना।

उ०—१ माळव देस विखोड़िया, मारू किया वखांण। मारू सोहागिण थई, सुंदरि सगुण सुजांण। —ढो. मा.

उ०—२ धंध धरै करि द्वेस, वात में हेत वितोड़ै। आप कियौ तै अवळ, वलै पर किया विखोड़ै। —ध. व. ग्रं.

विखोड़णहार, हारौ (हारी), विखोड़णियौ—वि०।

विखोड़िओड़ो, विखोड़ियोड़ौ, विखोड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

विखोड़ीजणौ, विखोड़ीजबौ—कर्म वा०।

विखोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—अप्रशंसा किया हुआ, निन्दा किया हुआ, हंसी किया हुआ।

(स्त्री. विखोड़ियोड़ी)

विखोरणौ, विखोरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)

विखोरणहार, हारौ (हारी), विखोरणियौ—वि०।

विखोरिओड़ौ, विखोरियोड़ौ, विखोरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विखोरीजणौ, विखोरीजबौ—कर्म वा०।

विखोरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोड़ौ' (रू. भे.)

(विखोरियोड़ी)

विखोरौ—देखो 'विखेरौ' (रू. भे.)

विखौ-सं.पु. [सं. विष्=घेरना, मुठभेड़ होना] १ किसी राजा, सामन्त या जागीरदार जिसमें उसका राज्य या जागीर किसी अन्य राजा या बादशाह के द्वारा जब्त कर लिये जाने पर पड़ने वाला कष्ट, संकट या दुःख।

उ०—१ राव चंद्रसेन विखै मांहै सीवांणा रै भाखरै रहतौ तद भींवला देवत कायलांणै रहता जोधपुर तुरक रहता, इतरौ घणौ विगाड़ करता। —राव चंद्रसेण री बात

उ०—२ रावळ घड़सी रांणा रतनसी रौ बेटौ मूळराज, रतनसी साकौ कर मुंवा तद कमालदी नूं आपरो बीज उबारणनूं घड़सी, ऊनड़, कांनड़ आपरा छोरू नै एक देवड़ी भांणेज कमालदी नूं सूंपिया था। कमालदी नै मूळराज इण विखा मांहै भाएला हुवा था; पाघड़ी पलटी हुती। सु कमालदी री बैर इणां नूं छांना राखै। —नैणसी

उ०—३ छत्रपती छांनौ विखै, अनपत्ती हित जोड़। दियै धरत्ती आप री, तै खत्री कुल खोड़। —रा. रू.

२ उक्त कष्टावस्था में, राज्य में संकटग्रस्त राजाओं, सामन्तों या जागीरदारों द्वारा की जाने वाली लूटखसोट या राजद्रोह।

उ०—१ तद बादसाह औरंगजेब जोधपुर तुरकांणौ कियौ जद राठौड़ दुरगदास आस करणोत विखौ कियौ —सुँदरदास विकूंपुरी भाटी री वारता

उ०—२ सो तुरक सूबायत रौ अमल नहीं होवणै दियौ। बादसाही सहर मारिया लूटिया सौ बडो विखौ हुवौ फौजां लारै लागी फिरै पण हाथ न आयौ। —सुंदरदास विकूंपुरी भाटी री वारता

उ०—३ अै तौ पांच मांणस छै सो सगळा ही महाराज रा चाकर छै आ हुवै तौ विखौ करां। —राठौड़ राजसिंह कूंपावत री बात

३ कष्ट, दुःख, विपत्ति, संकट।

उ०—१ विखम विखौ जिण वार, धोम धिखि हुवौ मुरद्धर।
दौड़ण लागा दुभ्रळ, वडा तरवार बहादर। —सू. प्र.

उ०—२ जुग धरम सूं डिगणा रै कारण म्हैं खुद अणूंतौ विखौ भुगतियोड़ौ हूं, पण अबै रोयां कांई सांधौ लागै। —फुलवाड़ी

उ०—३ जकौ विखौ नांनी, भटियांणीजी अर थूं भुगतियौ वौ म्हांनै नीं भुगतणौ पड़ैला, विस्वास राख। अन्याय रौ बदळौ हाथो-हाथ लिरीजैला। —फुलवाड़ी

उ०-४ दळै तैं बार किता दहकंध, बांध्यौ दधि देवां छोडण बंध।
विखौ तै व्रज पड़ेती बार, धरै नख बार किता गिर-बार।
—ह. र.

४ अशान्ति, क्षोभ।

उ०--धरती मांहै विखौ थौ। सगळा ठाकुरां रा गुढा भाद्राजण था। उठै राठोड़ तेजसी डूंगरसियोत रौ ही गुढौ थौ।
—राव मालदै री वात

५ संकट का समय, कष्ट का समय।

उ०—१ यां मधकर हर वजिया, आद विखै अणरेह। ज्यां उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलट्टै देह। —रा. रू.

उ०—२ इण नितनैम रौ औ नतीजौ व्हियौ के थोड़ा ई दिनां में बादळ खुदोखुद नै किसन-भगवांन री अवतार ई मांनण लागग्यौ अर काली मासी लारलौ विखौ भूलनै सांप्रत जसोदा मैया बणगी।
—फुलवाड़ी

उ०—३ तासूं भगवांन कहै भार तुम कंधे, पै आलम सूं जंग काज तेग हम बंधे। विखै के तुम नायक और सब कै मुदायत, सो जंग की ढील मैं वरस जैसी सायत। —रा. रू.

६ उपद्रव।

उ०—भाटी पिण आया दळ भेळा, मांण घणै चहुवांण समेळा।
सरसौ जोर हुवौ पतसाहै, मंद विखौ पडियौ घर मांहै। —रा. रू.

७ निर्धनता।

८ विछोह, वियोग।

उ०—१ दुनियां में उण रै नांव री कीरत आप रै कांनां सुणूं। वौ दिन देखण वास्तै ई म्हैं औ विखौ कबूल करियौ हूं। सेठां रा बोल फळै। म्हारा बेटा नैं लांठो मिनख बणियोड़ौ देखूं तौ आज रै विखा री दारू ठरैला। —फुलवाड़ी।

उ०—२ हथाळियां मसळी तौ ई निवास नीं आयौ। अैड़ी बेजा रात तौ वै कदैई नीं बिताई। रंगमेल में सिरक पथरणा रै मांय नवी लुगाई रा कंवळा कंवळा बूकिया माथै माथौ देय कैड़ा आरांम सूं सूवता जै आ पोहरा वाळी तूमत नीं व्हैती तौ। दीवांणजी नै आज ठा'पड़ी कै लुगाई रा निवास जैड़ौ वासदी रौ ई नी व्है। लुगाई रा अभाव में वांनै लुगाई री असली पिछांण व्ही। लाख मोहरां साटै ई अैड़ौ विखौ कुण अंगेजै। —फुलवाड़ी

रू. भे.—बखौ, बिखहौ, बिखौ, वखौ, विखउ।

विख्ख—देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—............फूल बणराय न लग्गै। विसहर चढै न विख्ख,
जळण घ्रत होम न जग्गै। —चौथ बीठू

विख्यात—सं. पु. [सं.] १ एक राक्षस जो तेरह सैंहिकेयों में से एक माना जाता है।

२ कवि। (अ. मा.)

वि. [सं.] (स्त्री. विख्याता) प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—१ कमधजां छात जिग वात क्रत, लख विख्यात संकळप लियौ। रिखि वयण आद वासिस्ट अग, कहिया तिम उद्यम कियौ।
—रा. रू.

उ०—२ थळ भांति गात निरतंत थाळि, भ्रम जात अतन तन रूप भाळि। जिण सक्ति परखि लजि तड़िति जात, व्रत गवन पवन मन ज्यौं विख्यात। —रा. रू.

उ०—३ वानरपति विख्यात वर, वेध्यु जांणी वालि। सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइं तिणि तालि। —मा. कां. प्र.

उ०—४ गलसेन महीपति वंस विभूसण दिनमणी। जुसु सुयसा माता, जगत विख्याता बहु गुणी। —वि. कु.

रू. भे.—बिख्यात, वखात, विखियात।

विख्याति-सं. स्त्री. [सं] १ प्रसिद्धि, शौहरत।

२ कीर्ति, सुयश।

विगंछावात-सं. पु.--एक प्रकार का वात रोग विशेष।

उ०—अथ रोगा, कास स्वास ज्वर भगंदर गुलमवात गल्लवात रक्तवात भस्मवात उस्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हरसावात आंमवात सोफवात विगंछावात कफवात साकिनीवात...।
—व. स.

विगंध-वि. [सं. वि+गन्ध] १ जिसमें किसी प्रकार की कोई गंध न हो
२ जिसमें विशेष प्रकार की सुगन्ध हो, सुगन्धदार।

विगड़णौ, बिगड़बौ—देखो 'बिगड़णौ, बिगड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ रूपक कुकवी रसणसूं, बिगडै यूं रसवंत। ज्यूं बिसफोटक रोग बस, वप सोभा बिगडंत। —बां. दा.

उ०—२ राव नूं सराप दियौ। कह्यौ—"थांहरौ गढ जाजौ। थांरी मत भ्रस्ट हुई, गढ तुरकां नूं देईस। तूं तुरकां री (बहू) नूं सेवीस, अखत पढीस, धूड़ खातौ फिरीस।" औ स्राप हुवौ। राव रौ मुंहडौ विगड़ियौ। —नैणसी

उ०—३ खांनो भोग करम छै रोग ना रे, विलसंतां **बिगड़ंत**। सुख थोड़ो नै दुख घणो अछै रे, रीझै कुण मतिवंत। —जयवांणी

उ०—४ धणी खड़ा जब खेत मैं, **बिगड़न** कुं कुछि नांहि। जन हरीया हरि सा धणी, क्यूं डरपैं जुग मांहि। —अनुभववांणी

बिगड़णहार, हारौ (हारी), बिगड़णियौ—वि०।

बिगड़िओड़ौ, बिगड़ियोड़ौ, बिगड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगड़ीजणौ, बिगड़ीजबौ—भाव वा०।

बिगड़ाणौ, बिगड़ाबौ–क्रि. स.—बिगड़ने के लिए प्रेरित करना।

बिगड़ाणहार, हारौ (हारी), बिगड़ाणियौ—वि०।

बिगड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगड़ाईजणौ, बिगड़ाईजबौ—कर्म वा०।

बिगड़ायोड़ौ–भू. का. कृ.—बिगड़ने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. बिगड़ायोड़ी)

बिगड़ायल—देखो 'बिगड़ायल' (रू. भे.)

बिगड़ियोड़ौ—देखो 'बिगड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगड़ियोड़ी)

बिगड़ी–सं. स्त्री.—दुरावस्था, बुरी अवस्था।

उ०—सुघरी में सौ वार, मदत करै मन मोडिया। **बिगड़ी** में इक वार, कोइ न रैवै, किसनिया। —अग्यात

बिगड़ैल—देखो 'बिगड़ायल' (रू. भे.)

बिगट—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—१ वाटि **बिगट** वैराट की, पहुंचैगा कोई सूर। हरीया कायर थकि रह्या, दरगह रहीया दूर। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया घट में अघट है वाकी ठोड़ **बिगट**। विन गुर गम खूल्है नही, भरम करम का पट। —अनुभववांणी

बिगड्ड–वि.—दृढ।

उ०—गिराब गड्ढ गड्ड कौ **बिगड्ड** छड्डुतीं बहै, बकारि बैरि ब्रंद कौ डकार डड्डुती बहै। बडै निसंक बंक की बिबंक कड्ढुती बहै, रहेसु संक रंक की विसंक वड्ढुती बहै। — ऊ. का.

बिगत–वि.—१ अन्तिम या बीते हुवे से पहले का।

२ जो कहीं इधर उधर चला गया हो।

३ निष्प्रभ, कान्तिहीन।

४ रहित, विहीन।

सं. स्त्री.—१ विवरण, व्यौरा, वृत्तान्त, हाल।

उ०—१ आया दूत खुम्याळी आई, साह मरण ची **बिगत** सुणाई। तातां घोड़ां हुई तयारी, अघपति सुणत कीध असवारी। —रा. रू.

उ०—२ कहियौ न्रप प्रज भय किणसूं, ज्वाळांमुखी न पूजै जिणसूं। भांणउदीप **बिगत** सुण भारी, विधवत सकति पूजि विसतारी। —सू. प्र.

उ०—३ चितातुरां दुचित, **बिगत** सुव दाखौ वातां। पुण इंद करग जोड़ै पभण, कहर कळह किसणां कियां। —मा. वचनिका

उ०—४ तै देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि। किह पीहर, किह सासरउ, **बिगतइ** कहइ विचारि। —ढो. मा.

२ हिसाब।

३ इतिहास।

४ परिचय, जानकारी।

उ०—सव सरीखी देखी रूपि, **बिगत** न लही तेहनी भूपि। तै देखी चतुरपणउं ए इस्यं, राजा हियडा भीतरि हस्यं। —हीराणंद सूरि

५ सूची, नामावली।

उ०—संवत १६१३ हाजीखांन सूं राजाजी रै अदावदी हुई जद राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीखां री मदद मेलिया ज्यांरी **बिगत**–राठौड़ देवीदास जैतावत, रावळ मेहराज हाफावत...। —बां. दा. ख्यात

६ वर्णनसूची, तफसील।

७ घटना।

८ संख्या, गिनती।

[सं वि.=विशेष+गति=मोक्ष] ९ विशेष मुक्ति या मोक्ष।

[सं. वि=रहित+गति=मोक्ष] १० वह प्राणी जिसकी मरणोपरान्त गति या मुक्ति नहीं हुई हो।

रू. भे.—बिगत, बिगति, बिगती, बिगत्त, बिगत्ति, बिगत्ती, बिगय बिगिति।

बिगतरणौ, बिगतरबौ–क्रि. स.—निंदा करना, अपकीर्ति करना।

बिगतरणहार, हारौ (हारी), बिगतरणियौ—वि०।

बिगतरिओड़ौ, बिगतरियोड़ौ, बिगतर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगतरीजणौ, बिगतरीजबौ—कर्म वा०।

बिगतरियोड़ौ–भू. का. कृ.—निंदा किया हुआ, अपकीर्ति किया हुआ।

(स्त्री. बिगतरियोड़ी)

बिगतवार–क्रि. वि.– ब्यौरेवार।

उ०—या समैं आजांनबाह जेतै सरदार, कवि जेतै जांनै सो बखांनै **बिगतवार**। पहलै सोनंग साह विखै के सहायक, जोड़ै दुरगसाह हंस वंस का जो नायक। —रा. रू.

वि.—विस्तार के साथ, विस्तारपूर्वक, विस्तारयुक्त।

उ०—१ म्हैं पूछ्यौ–बाबा, वौ जाट कीकर कुत्ता री कड़ियां भांगी। म्हनै सावळ **बिगतवार** बात मांडनै बतावौ। थारै मूंडै बात ओपै घणी। —फुलवाड़ी

उ०—२ दीवांणजी तुरत जबाब नीं दे सक्या तौ राजाजी वांनै पूरी बात **विगतवार** बताई । तद दीवांणजी कह्यौ – अंनदाता, अै सगळी जूंनी बातां अंगे ई मिटावणा सूं तौ राज में रूळियौ मच जावैला । —फुलवाड़ी

३ क्रमशः ।

उ०—१ इण वास्तै म्हारा मूंडा सूं थनै सगळी वातां **विगतवार** बताई । दूजा तौ सगळा म्हारौ ई कसूर बतावै । अबै थूं ई बता म्हैं कांई बेजा कांम करियौ । —फुलवाड़ी

उ०—२ इंटरव्यू रा **विगतवार** समाचार तौ पछै सूरज रै मूंडा सूं इज सुण्या । बणनैं इंटरव्यू वास्तै जिकण कमरा में बुलायौ वौ एक छोटी-सोक कमरौ हौ । —अमर चूंनड़ी

रू. भे.—बगतवार, बिगतवार, वगतवार ।

विगताणौ, विगताबौ—क्रि. स.—१ सूचित करना, सूचना देना ।

२ समझाना, सतर्क करना ।

३ जानकारी देना, समझाना ।

उ०—रगण जगण गण रगण रचाइ, वरै जगण गुर लुध विगताइ आखर चउदह एण उपाइ, सुणिजौ रूप कहां विधिसाइ ।

—ल. पिं.

विगताणहार, हारौ (हारी), विगताणियौ—वि० ।

विगतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगताईजणौ, विगताईजबौ—कर्म वा० ।

विगताणौ, बिगताबौ, बिगतावणौ, बिगतावबौ, विगतावणौ, विगतावबौ । —रू० भे०

विगतायोड़ो—भू. का. कृ.—१ सूचित किया हुआ, सूचना दिया हुआ. २ समझाया हुआ, सतर्क किया हुआ. ३ जानकारी दिया हुआ ।

(स्त्री. विगतायोड़ी)

विगताळ, विगताळू, विगताळौ, विगतालौ—वि. (स्त्री. विगताळी)

१ चरित्र वाला, लीलाधारी ।

उ०—१ किसन धवै कूकड़ा, बाट बांधै **विगताळौ** । दही तणौ लै दांण, छाछि ढोळै छोगाळौ । —पी. ग्रं.

उ०—२ ताढि नको नको जदि तावड़, आभ न उडगण अरस न अंनड़ । क्रम्म न ध्रम्म नको जदि काळी, ब्रह्मंड रूप नमौ **विगताळी** ।

—मा. वचनिका

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—तौ वारू राजा रै अहि डसीयां, पछी मांहरा साहिबा, अनंगसेना इण नांम रै, वेस्या **विगताळी** । —वि. कु.

३ अपवित्र, अशौच ।

उ०—अनि नर नारि पसू पंखि वाळी, वप छाया न पड़ै **विगताळी** । करि सिनांन अस्टम दिन काढै, चंचळ सोळ मास मझि चाढै ।

—सू. प्र.

४ सुरुचिपूर्ण ।

उ०—साहिबा कांइ मउज करौ नई, साहिबा कांइ मउज करउ । मउज करउ कांइ अंग सुहाता, सुणि सुणि नै **विगताली** बातां ।

—वि. कु.

५ शौर्यपूर्ण, वीरतायुक्त ।

उ०—तौ 'केहर' कहिजै सताब, वाइक **विगताळा** । कूदि पड़ां गज कटहड़ां चढि गौख विचाळा । —सू. प्र.

६ प्रिय, प्यारा ।

उ०—'बांकीदास' कळह **विगताळौ**, वाधै करां रिणम्मल वाळौ । सांमावत खग चंद सवायौ, दूजां अणी दिसौ दरसायौ । —रा. रू.

७ वीर, बहादुर ।

उ०—हू पिरणासू हिंदवां, तुरकां हर टाळै । सै कुण हिंदू हम सुणां, जिसकूं पिरणाळै । पिरणा सू सगपण करै, वीरम **बिगताळै** । जद पाचौ कहियौ 'जसू' आगम अकलाळै । —वी. मा.

रू. भे.—बिगताळ, बिगताळू ।

विगतावणौ, विगतावबौ—देखो 'विगताणौ, विगताबौ' (रू. भे.)

विगतावणहार, हारौ (हारी), विगतावणियौ—वि० ।

विगताविओड़ो, विगतावियोड़ौ, विगताव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगतावीजणौ, विगतावीजबौ—कर्म वा० ।

विगतावळी—सं. स्त्री.—सूचि ।

विगतावियोड़ौ—देखो 'विगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगतावियोड़ी)

विगति, विगती—सं. स्त्री.—१ अवस्था व हालत ।

उ०—कहां वसे मन उनमनी कहां, कहां क्रम वासौ करै । ब्रह्मंड पिंडि एका **विगति**, उपख्यांन वेद किम उचरै ?

—सुरजनदास पूनियौ

२ फर्क, अन्तर, भेद ।

उ०—२ जौ सोळह कळा सूं पूरण पूरणिमा कौ चंद्रमा थौ । सु पणि आपणी उजळता करि आकास सौ मिळि गयौ है । एती **विगति** नहीं लाभै छै । जु इह आकास छै कि चंद्रमा छै ।

—वेलि टी.

३ देखो 'विगत' (रू. भे.)

उ०—१ पंच **विगति** सुत पंच प्रांण तुझ, पंच तत्व अम्हे दाखुं । पंचमी ले नइ जै क्रम करता, सिधि सब दई ईम भाखुं ।

—रुकमणी मंगळ

उ०—४ आवी खबर अचिंत, प्रगट चिंता भूपाळां । दळ असेस दुरवेस, सुणै **विगती** अड़साळां । —रा. रू.

उ०—३ वेगि लिखीजै विगति, रवद जिम सफै दुरंगां । एक उतन ऊपनां, जुड़ां द्वापुर जिम जगां । —सू. प्र.

उ०—४ अति प्रकास गति भेद अति, विगति एह विसतार । आदि आदि कहिया इता, सति प्रवंध ततसार । —सू. प्र.

उ०—५ प्रगट गांम पुर ग्रखै अप्रवळ, मार-लियौ वहतां पुर मंडळ । ओपत माथां मिळै अलेखै, लूट तणी विगति कुण लेखै । —रा. रू.

उ०—६ पखा पखी मबको मिलै, जहर भरचा मुख नाग । जन हरिदास बोल्यां विगति, कहां कोयल कहां काग ।

—ह. पु. वां.

उ०—७ मुहर विगति कीजै दस मात्र, पछै वळै दस दस कविपात्र। सुण चौपै फेरै कल सात्त, वंदिव चरण पुलण विख्यात ।

—पिं. प्र.

उ०—८ भणि तेरह सौ छासठि भेद, विगति मात्र सोळह ध्रू वेद । आखर लुघू गुरु इगिग्रार, वदां सुभंकर छंद विचार ।

—ल. पिं

उ०—९ विगति लहै विरहां तणी, विरही मांणम तेह । 'लालचंद' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रै । —पं. च. चौ.

उ०—१० अध्यातम मरम बिसतार बावन अखर, संसाक्रित सकत्ति बिगति सूफै । पाड़गति गीत संगीत समफण पौंहचि, बहतरी कळा खट भाख बूफै । —ल. पिं.

विगत्त, दिगत्ति, विगत्ती—वि. [सं. वि=विशेष+गति, चाल] १ तेज गति वाली, तीव्रगामी ।

उ०—मतसागर उनमती, वीणा सुर मधुरै वावत्ती । वाहण हंस विगत्ती, साय सुप्रसंन हुग्रौ सरसत्ती । —गज उद्धार

२ देखो 'विगत' (रू. भे.)

उ०—१ उल्लसै वेळ परसे अरस, ग्यांन न लोक विगत्त रौ । जग करण लोप अंतक जिसौ, इसौ कोप असपत्त रौ । —रा. रू.

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति, वाढेल कहाया इण विगत्ति । इम लीध मंडळओखौ उदार, घर समंद वीटि गढ संखोधार । —सू. प्र.

उ०—३ तइं हींदू किया तुरक, विप्र तौ मूल विटाल्या । वरणकै गई बिगत्ति, रांक करि लंगरि राल्या । —स. कु.

उ०—४ एक हस्ति आरुही, व्रखभ अस उस्ट्र बिगत्ती । सरभ चील सादूळ, रीछ बंदर तर रत्ती । —रा. रू.

विगन—'विघ्न' (रू. भे.)

विगनांन, विगन्यांन – देखो 'विग्यांन' (रू. भे.)

उ०—विगन्यांन ग्यांन तुं हिज विपति तुं अछेद अभेद तन । अविगत नाथ केवळ अलख, पाप निही तुं कोइ पन । —पी. ग्रं.

विगपति—देखो 'विग्यति' (रू. भे.)

उ०—कारण कवण वयण लघु काया, महमा प्रबळ ईस्वरी माया । पुणै भड़ां विगपति घरि पौरस, जुध होसी तौ विजै हुसी जस ।

—सू. प्र.

विगय—देखो 'विगत' (रू भे.)

उ०—खेचर चरम रोमपंखी चमचेड कपोत, मनुज लोक थी बाहिर समुग विगय पंख होत । सरवै जळ थळ खचर समुच्छिम गम्भय दोय, कम्म अकम्म भूमि अंतर दीव मणुजोय । —वृ. स्त.

विगर—देखो 'वगैर' (रू. भे.)

उ०—१ बाहां वाघै राठवड़, विगर सनाहां अंग । बागा केसर भारिया, हयगा स्रोण सुरंग । —रा. रू.

उ०—२ कवण अखैवड़ विगर, प्रळै सागर सिर सोभै । कवण बिनां सुखदेव, देव माया नह लोभै । —रा. रू.

उ०—३ हिव कै गाढ घणौ करै । जीमै मत ही । अर तूं जोर घातै, म्हारी बहू हुं ले नै जाइस्यूं । अर जै न मेल्है तौ लाकड़ी वहाड़ै । पिण वहू विगर लीयां घरै मतां आए ।

—कांवळौ जोइयौ नै तीडी खरळ री वात

विगल—देखो 'बिगुल' (रू. भे.)

विगलिंदीय विगलिंद्रिय—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू. भे.)

विगलित—वि. [सं.] १ जो चूकर या टपक कर निकल या गिर गया हो ।

२ जो पिघल या घुल गया हो ।

३ शिथिल ।

४ बिगड़ा हुआ ।

५ म्लान ।

उ०—पति पवन प्रारथित त्री तत्र निपतित, सुरत अंत केहवी स्त्री । गजेंद्र क्रीडता सु विगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी । —वेलि.

६ विसर्जित ।

७ अस्तव्यस्त, बिखरा हुआ ।

विगवंत—वि.—लम्बी यात्रा करने में समर्थ ।

उ०—···घरणि ते जे सीलवंति, छइल ते जे कलावंत, वेस्या ते जे रूपवंति, वस्त्र ते जे पखालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवंत, साधु ते जे क्षांतिवंत, करह [ते] जे विगवंत, तुरंग ते जे वेगवंत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मंत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीरयवंत, राय ते जे प्रसस्य जातिवंत । —व. स.

विगसणौ, विगसबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुंडाळ भिड़िया आवि अड़िया, सुहड़ अंगो अंगि । नर सीस विहसई वदन, विगसई, सेल वाहई संगि । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ हंस बोलै खेलै ससि हंसि, विगसै कमळ घणा चंद्रबंसी ।

जोत वाग भळकै मिळ नदि जळ, चमकै मंगर उछळै चंचळ ।
—सू. प्र.

उ०—३ आवत मुख विगसै नहीं, जावत नहिं कमळाइ । 'सम्मन' अैसै नीचकै, नीच हुवै सो जाइ । —सम्मन

उ०—४ भांणजा नै देख्यां, म्हां री कंवळ विगसै, भतीजां ने देख्यां म्हां री मन हंसै, वीरै रै आंगण आंबौ मोरियौ । —लो. गी.

उ०—५ पोह विगसी पगड़ौ हुवौ, कूकड़ै दीन्ही बांग । उठ बंदा कर बंदगी, क्यौं साहिब पास्यौ मांग । —ऊदौ नैंण

उ०—६ धोक पूज में दिन गया, आंन देव कै नांय । जौ' रौ देख' र विगसियौ, जाय हमारै गांय । —अनुभववांणी

उ०—७ चंगा रूप देख मत विगसौ, मल मंतर की देहा । जन-हरिरांम भसम हुय जासी, नांव विनां सब नेह। । —अनुभववांणी

विगसणहार, हारौ (हारी), विगसणियौ—वि० ।
विगसिओड़ौ, विगसियोड़ौ, विगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विगसीजणौ, विगसीजबौ—भाव वा० ।

विगसाड़णौ, विगसाड़बौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

विगसाड़णहार, हारौ (हारी), विगसाड़णियौ—वि० ।
विगसाड़िओड़ौ, विगसाड़ियोड़ौ, विगसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विगसाड़ीजणौ, विगसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विगसाड़ियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विगसाड़ियोड़ी)

विगसाणौ, विगसाबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

उ०—घूंघट ओट सलांम गह, कवलि कवलि विगसाय । हसती लजति उमंगति, ऊभी सनमुख आय । —पनां

विगसाणहार, हारौ (हारी), विगसाणियौ—वि० ।
विगसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विगसाईजणौ, विगसाईजबौ—कर्म वा० ।

विगसायोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विगसायोड़ी)

विगसावणौ, विगसावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

विगसावणहार, हारौ (हारी), विगसावणियौ—वि० ।
विगसाविओड़ौ, विगसावियोड़ौ' विगसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विगसावीजणौ, विगसावीजबौ—कर्म वा० ।

विगसावियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विगसावियोड़ी)

विगसियोड़ौ—देखो 'विकसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विगसियोड़ी)

विगहा—देखो 'विकत्था' (रू. भे.) (जैन)

विगांनौ—देखो 'बेगांनौ' (रू. भे.

उ०—लैरां लैरां रै लै चल रांभणा, लोक धिगांना वांरी मुल्क विगांना, अपना नहीं कोई साजणां । —रसीलै राज रा गीत

विगाड़—देखो 'बिगाड़' (रू. भे)

उ०—१ रावळ भोजदे नूं कहाड़ियौ, आगै आदमी मेल—म्है पंवारां ऊपर आबू जावां छां, तूं आगे खबर मत देई । म्है थारौ विगाड़ क्यू नहीं करां, तूं थारा लुद्रवा मांहै बैठी रहै । —नैणसी

उ०—२ ऊदौ ऊगमणावत ईंदौ महेवै रावळ मलीनाथजी री चाकरी करै । तद वाघ एक गोयांणा रै भाखरां रहै सौ देस मांहै विगाड़ करै । ताहरां रावळ जी राजपूतांनूं हुकम दियौ—'चौकी द्यौ' ।
—नैणसी

उ०—३ तद कुंवरसी कही, "जौ थांहरै दाय आवै, सौ खरी । वात छांनी न रहिसी, जद विगाड़ हूसी । म्हारौ तौ जीव हमैं थांहरै हाथ छै । चित में आवै त्यूं करौ" । —कुंवरसी सांखला री वारता

विगाड़णौ, विगाड़बौ—देखो 'बिगाड़णौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ अजमाल कमंधरा, वळिया देस विगाड़ । खागै एतां खंडिया, जेतां मंडी राड़ । —रा. रू.

उ०—२ पाप वधै तिण हीण प्रवाड़ै, वळियौ मुहकम वदन विगाड़ै । आलम खड़िया दक्खण ऊपर, कांमबगस ऊपर चढ़ कुंजर ।
—रा. रू.

उ०—३ विगाड़ी ठौड़ जब भिस्टी, अज हूं मरै नहीं दुस्टी । टूकौ स्वांन ज्यूं देवै, दुख सुख खबर नहीं लेवै । —ऊदौ नैंण

उ०—४ सु उठै जांगळू रा कोट नजीक गूढौ छै तठै रहै छै, नै रूण रा विगाड़ नूं दौड़ै छै । नै अठै सांखलां री बेरां पांणी नै जाय सु दहियां रा कंवर ४० तथा ५० भेळा हुआ फिरै छै ।
—नैणसी

उ०—५ रांम विनां कुंण राखसी, कुण खेती किरसांण । नही तौ चिड़ै विगाड़िसैं, हरीया चेत अनांण । —अनुभववांणी

उ०—६ सो वा सुरग री वेस्या तिकण सोक रौ चार मईना कुसंग रहसी ४ महीना क्यू कि पेट में आधांन है सो च्यारा मइनां जनमियां पछै सत कर सुरगा में जाय पती नै पाछौ लेसूं जितरै कुलटा आदत विगाड़ देसी । —वी. स. टी.

विगाड़णहार, हारौ (हारी), विगाड़णियौ—वि० ।
विगाड़िओड़ौ, विगाड़ियोड़ौ, विगाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विगाड़ीजणौ, विगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विगाड़ियोड़ौ—देखो 'बिगाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विगाड़ियोड़ी)

बिगाड़ू—वि.—१ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला, बिगाड़ने वाला।

उ०—कुळ न्यात हीरा फीटा कुटळ, जिकै बिगाड़ू जात रा। मम सेंग बात सुणज्यौ मती, रहण न दीज्यौ रात रा। —ऊ. का.

२ विध्वंस करने वाला, विध्वंसक।

रू. भे.—बिगाड़ू, बिगारु, बिगारू।

बिगाड़ौ—देखो 'बिगाड़' (अल्पा., रू. भे.)

बिगाथा—देखो 'बिगाहा' (रू. भे.)

बिगार—देखो 'बिगाड़' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया मन मिरघ ज्युं, वरज्यौ देती वार। काया वारी बीच मैं, करि करि जाहि बिगार। —अनुभववांणी

बिगारणौ, बिगारबौ—देखो 'बिगाड़णौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)

बिगारणहार, हारौ (हारी), बिगारणियौ—वि०।

बिगारिओड़ौ, बिगारियोड़ौ, बिगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगारीजणौ बिगारीजबौ—कर्म वा०।

बिगारियोड़ौ—देखो 'बिगाड़ियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिगारियोड़ी)

बिगारु, बिगारू—देखो 'बिगाड़ू' (रू. भे.)

उ०—रधू के घमसांण जिसकूं देख लजावै सुधाभुंजू के बिमांण, अवरही कारखांनै तिस तिस कै ओभायत अपनी अपनी जिनसूं ले आय, जिस सायत परदळ कै बिगारू निज दळ कै किवाड। —र. रू.

बिगास—देखो 'विकास' (रू. भे.)

बिगासणौ, बिगासबौ—देखो 'विकासणौ, विकासबौ' (रू. भे.)

उ०—ओउ सर सोउं देख्या दोउं, पारब्रह्म परछंदा है। ममाहुय पासै कवळ बिगासै, अरध नांव आखंदा है। —अनुभववांणी

बिगासणहार, हारौ (हारी), बिगासणियौ—वि०।

बिगासिओड़ौ, बिगासियोड़ौ, बिगास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगासीजणौ, बिगासीजबौ—भाव वा०।

बिगासियोड़ौ—देखो 'विकासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगासियोड़ी)

बिगाह—देखो 'बिगाहा' (रू. भे.)

उ०—गाहा मात्र सतावन गावै, गाहौ उलट बिगाह गिणावै। चौपन मत गाहू उचरीजै, उगाहौ मत्त साठ अखीजै। —र. ज. प्र.

बिगाहन—सं. पु.—मुकुटवंश में उत्पन्न एक कुलांगार राजा, जिसने अपने दुर्व्यवहार के कारण अपने जाति बांधवों का एवं स्वजनों का नाश किया था।

बिगाहा—सं. पु. [सं. विगाथा] आर्या छन्द का उद्गीति नामक एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण में १२ मात्राऐं, द्वितीय चरण में १५ मात्राऐं, तृतीय चरण में १२ मात्राऐं और चतुर्थ चरण में १८ मात्राऐं होती है।

उ०—प्रथम बिगाहा अरध प्रति, वहिकल सत्रावीस। परदळ मांहि त्रीस परिण, तविजै मात्रा तीस। —पि. प्र.

रू. भे.—बिगाथा, बिगाह, बिगाहा।

बिगिति—देखो 'बिगत' (रू. भे.)

उ० पणां है मैं मात्रा प्रसतार, बिगिति विधोगति वैंत विचार। धुर ले गुर हेठैं लुघ धारि, आगळि हुवै तिसी अणुहारि। —ल. पिं.

बिगुण—वि.—गुणरहित, निर्गुण।

बिगुल—देखो 'बिगुण' (रू. भे.)

बिगूंचणौ, बिगूंचबौ—देखो 'बिगूचणौ, बिगूचबौ' (रू. भे.)

उ०—तम्हो वनमांहां बिगूंचु, हूँ करू पीहरि राज। कंथ, तैं किम नीपजि, कुलवती थी ए काज। —नळाख्यांन

बिगूंचणहार, हारौ (हारी), बिगूंचणियौ—वि०।

बिगूंचिओड़ौ, बिगूंचियोड़ौ, बिगूंच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगूंचीजणौ, बिगूंचीजबौ—भाव वा०।

बिगूंचियोड़ौ—देखो 'बिगूचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूंचियोड़ी)

बिगूचणौ, बिगूचबौ—देखो 'बिगूचणौ, बिगूचबौ' (रू. भे.)

बिगूचणहार, हारौ (हारी), बिगूचणियौ—वि०।

बिगूचिओड़ौ, बिगूचियोड़ौ, बिगूच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगूचीजणौ, बिगूचीजबौ—भाव वा०।

बिगूचियोड़ौ—देखो 'बिगूचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूचियोड़ी)

बिगूत—वि. [सं. विगुप्त] १ छुपा हुआ, गुप्त।

बिगूतणौ, बिगूतबौ—क्रि. अ.—१ कष्टमय होना, दुःखित होना।

उ०—१ वैदरभी विरहि बिगूती, वनमांहां बोलि बाली। 'आंम एकली मूकी न जाइ, नैखध रा, तम टाळी। —नळाख्यांन

उ०—२ मन ही संकळप विकळप है मन ही, मन जाग्रत मन सूता। मन ही त्याग चलै बौह माया, मन ही लाग बिगूता। —अनुभववांणी

२ निन्दित होना।

उ०—१ किया उपाय पोखण के तांई, त्रपति कदै न सूता। लोकी लाज मरै जां वातै, बोहळि बार बिगूता। —वील्होजी

उ०—२ "गजबंधी" सीह विरत्ता, दखणी दळ भाजि **विगूता** । वालापुर महिक्कर छोडै, दखणी दळ भागा होडै । —गु. रू. बं.

३ बर्बाद होना, नष्ट होना ।

उ०—गावै राघौ सोभणौ पात गाढौ, आवै वांणी यूं 'किसन्नेस' आढौ । तै भूला राघौ, **विगूतौ** भवि त्यांरी, जांणसी पीछै वडो भाग ज्यांरौ । —र. ज. प्र.

उ०—२ चंद्र क्षयी, शुक्र कांणउ, सनीस्चर कूबडउ, आदित्य तापकर, अरुण पांकुलउ, मंगल वक्र, समुद्र खारु, रावण परस्त्री कारणि **विगूतउ**, स्रीरांम रहइं वनवासु, सीता रहइं वियोग, पांडव कौरव विरोध... ...। —व. स.

४ छुपना, लुकना ।

५ कोसना ।

उ०—विस्व मिलिउ विधि विधि तणउ, हुउ तै हाहाकार । विधि **विगूती** विलपती, नारि रही निरधार । —मा. कां. प्र.

६ ढका हुवा होना (ओढा हुवा होना) ।

उ०—जिम नीद्र भरि हुई सुखि सूता, तेम कौरव ति नीद्र **विगूता** । करण मुख्य न्रप मौलि पटउलां, वेगि उत्तरि लींयां तिणि हेलां । —सालिसूरि

विगूतणहार, हारौ (हारी), **विगूतणियौ**—वि० ।

विगूतिश्रोड़ौ, विगूतियोड़ौ, विगूत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगूतीजणौ, विगूतीजबौ—भाव वा० ।

वगूतणौ, वगूतबौ—रू० भे० ।

विगूतियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कष्टमय हुवा हुआ, दुःखित हूवा हुआ. २ निन्दित हुवा हुआ. ३ बर्बाद हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. ४ छुपा हुआ, लुका हुआ. ५ कोसा हुआ. ६ ढका हुआ (ओढ़ा हुआ) ।
(स्त्री. विगूतियोड़ी)

विगूवणौ, विगूवबौ—देखो 'विगोणौ, विगोबौ' (रू. भे.)

उ०—विहि !इ रहिइ वारी वली, मुझ सिउ मंडि म आडि । माधवनइं तूं नहीं गमइ, घणूं **विगूविसि** घाडि । —मा. कां. प्र.

विगूवणहार, हारौ (हारी), **विगूवणियौ**—वि० ।

विगूविश्रोड़ौ, विगूवियोड़ौ, विगूव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगूवीजणौ, विगूवीजबौ—कर्म वा० ।

विगूवियोड़ौ—देखो 'विगोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगूवियोड़ी)

विगै—स. पु.—भोजन के साथ खाये जाने वाले छः पदार्थ ।

१ दूध २ दही ३ घृत ४ तेल ५ मिष्ठान ३ कड़ाई ।

वि. वि.—उपर्युक्त छः पदार्थों में से एक-एक कर छुड़ाया जाने वाला पदार्थ ।

उ०—२ जद स्वांमीजी आठ रोटी काढ दीधी । मयारांम जी साधां नें थांमी पिण कोइ लै नहीं । जब बोल्यौ—परठ देवा रा भाव है । स्वांमी बोल्या—परठ नें दूजै दिन **विगै** टालज्यौ । —भि. द्र.

उ०—२ वलि गुरां निखेध्यौ, आगै थांनै वरज्यौ थौ नी । जद वलै बोल्यौ—महाराज ! उपयोग चूक गयौ । जद गुरु बोल्या—अबै पग लागै है तौ सवेरै **विगै** रा त्याग है । थोड़ी वेला सूं फिरतां फिरतां वलै पग दे दियौ । इम उपयोग चूक नें वार वार पग लागौ तौ तै कुणाका उपर पग देवाथी नें विगै टालवा थी राजी नहीं । —भि. द्र.

विगोचणौ, विगोचबौ—देखो 'बिगोचणौ, बिगोचबौ' (रू. भे.)

विगोचणहार, हारौ (हारी), **विगोचणियौ**—वि० ।

विगोचिश्रोड़ौ, विगोचियोड़ौ, विगोच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगोचीजणौ, विगोचीजबौ—कर्म वा० ।

विगोचियोड़ौ—देखो 'बिगोचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगोचियोड़ी)

विगोणौ, विगोबौ—क्रि. स.—१ नष्ट करना, बरबाद करना ।

उ०—किया रवाना दोलती, वीसलनंद **विगोय** । क्रपण हिय मह कांगसी, नहिं फेरै नर-लोय । —बां. दा.

उ०—२ खोयौ आसुरी धरम आपौ **विगोयौ** तें मीरखांन, जोयौ नहीं तारकी न आग लौ जबाब । "सवाईसींग" मारियौ धागा सूं धगाखोर सिंधु, नीत छाडै किता दीह जीवसौ नीबाब । —नवळजी लाळस

२ नाश करना, विध्वंस करना ।

३ दुःख देना, कष्ट देना ।

उ०—१ मोटउं कुडउं मागामिरि, वली विचारी जोड । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी कांइ **विगोड़** । —मा. कां. प्र.

उ०—२ धांन न भावै चोंच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी **विगोई** । तौ मों वात कहूं मैं कैमी, मेरै मन में वीचत जैसी । —कंवरसी सांखला री वारता

४ वदनाम करना, निन्दा ।

उ०—१ संपति सहु लेई रही, वली **विगैयु** सेठी । सात खणइ सात जि दिवस राखी, नाखिउ हेठि । —मा कां. प्र.

उ०—२ स्रीवयराट न्रप साहसूं जोई, विप्ररूपि न्रप बोलई सोई । ताहरइ नयरि नासि न कोई, ए अगाह नारि **विगोई** । —सालिसूरि

५ दुर्दशा करना ।

६ छिपाना ।

७ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।

उ०—आखि पलव करसाख आंगळी, उधरियौ तिरिण सिर अनड़ व्रज राखियौं विगोयौ वासव, वडौ अवर कुण विसन वड ।
—ह. नां. मा.

८ खराब करना, गन्दा करना ।

उ०—जीभ न जीभ विगोयनौ, दव का दाधा कुपळी भेल्ही । जीभ का दाधा नु पाँगुरई, "नाल्ह" कहइ सुणजइ सब कोई ।
—बी. दे.

विगोणहार, हारौ, (हारी), **विगोणियौ**—वि० ।

विगोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगोईजणौ, **विगोईजबौ**—कर्म वा० ।

बिगोणौ, बिगोबौ, बिगोवणौ, बिगोवबौ, विगूणौ, विगूबौ, विगोवणौ, विगोवबौ—रू० भे० ।

विगोनौ–सं. पु.—**१** कलह, टंटा-फिसाद ।

२ देखो 'बेगांनौ' (रू. भे.)

विगोयोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ, बरबाद किया हुवा. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. ३ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ. ४ बदनाम किया हुआ, निन्दा किया हुआ· ५ दुर्दशा किया हुआ. ६ छिपाया हुआ. ७ खराब किया हुआ, गन्दा किया हुआ. ८ लज्जित किया हुआ, शर्मिन्दा किया हुआ । (स्त्री. विगोयोड़ी)

विगोरणौ, विगोरबौ—देखो 'वगोरणौ, वगोरबौ' (रू. भे.)

विगोरणहार, **हारौ** (**हारी**), **विगोरणियौ**—वि०

विगोरिओड़ौ, **विगोरियोड़ौ**, **विगोरचोड़ौ**—भू० का० कृ० ।

विगोरीजणौ, **विगोरीजबौ**—कर्म वा० ।

विगोरियोड़ौ—देखो 'वगोरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगोरियोड़ी)

विगोवणौ, विगोवबौ—देखो 'विगोणौ, विगोबौ' (रू. भे.)

उ०—**१** आपणौ लोग सगळो एक मतै छै सु मांन नुं इण आपरी मतना करौ । पूत रजपूती न **विगोवै** ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ आ वडै घर री बहु हुवै तिसड़ी सीळवंत छै सु मांन नुं इण आपरी धाय मेंल कहाड़ियौ "तूं रावळ रौ घर वगोहा **विगोवै** छै । नै तू मांणस छै तौ म्हारौ नांम मत लेई" आ चकोर थकी रहै छै मांन आंधौ हुवौ बहै छ सु एक दिन सज नै इण रै घर मांहै आयौ । इण दीठौ म्हारौ धरम न रहै तद आ हाडी पेट मार मूई ।
—नैणसी

विगोवणहार, हारौ (**हारी**), **विगोवणियौ**—वि० ।

विगोविओड़ौ, विगोवियोड़ौ, विगोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगोवीजणौ, विगोवीजबौ—कर्म वा० ।

विगोवावणौ, विगोवावबौ–क्रि. स. [विगोणौ क्रि. का प्रे. रू.] **१** नष्ट कराना/करवाना, बरबाद कराना/करवाना ।

२ नाश करवाना, विध्वंस करवाना ।

३ कष्ट दिलवाना, दुःख दिलवाना ।

४ बदनाम करवाना, निन्दा करवाना ।

उ०—सुणि, राजा ! रांणी वदइ, 'राजकुमरि घरि आंणि । वली विगोवावि घणुं ब्राह्मण-केरइ पांणि ।
—मा. कां. प्र.

५ दुर्दशा करवाना ।

६ छिपवाना ।

७ लज्जित करवाना, शर्मिन्दा करवाना ।

८ खराब करवाना, गन्दा करवाना ।

विगोवावणहार, हारौ (**हारी**), **विगोवावणियौ**—वि० ।

विगोवाविओड़ौ, विगोवावियोड़ौ, विगोवाव्योड़ौ—भू० का० कृ ।

विगोवावीजणौ, विगोवावीजबौ—कर्म वा० ।

विगोवावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नष्ट करवाया हुआ, बरबाद करवाया हुआ. २ नाश करवाया हुआ, विध्वंस करवाया हुआ. ३ दुख दिलवाया हुआ, कष्ट दिलवाया हुआ. ४ बदनाम करवाया हुआ, निन्दा करवाया हुआ. ५ दुर्दशा करवाया हुआ. ६ छिपवाया हुआ. ७ लज्जित करवाया हुआ, शर्मिन्दा करवाया हुआ. ८ खराब करवाया हुआ, गन्दा करवाया हुआ.

(स्त्री. विगोवावियोड़ी)

विगोवियोड़ौ—देखो 'विगोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगोवियोड़ी)

विगौ—देखो 'बिगौ' (रू. भे)

विग्गाहा—देखो 'विगाहा' (रू. भे.)

विग्घ—देखो 'विघ्न' (रू. मैं.)

उ०—प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि व्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वदतं सनूर ए । विजोग सोग रोग **विग्घ** अग्घ सिग्घ घायकं । प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायकं ।
—ध. व. ग्रं.

विग्य–सं. पु. [सं. विज्ञ] ब्रह्मा ।

वि.—१ बुद्धिमान, समझदार ।

२ विद्वान, पंडित ।

३ विशेष जानकार ।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, **विग्य** चतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वक्रन व्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक ।
—वेलि.

विग्यता–सं. स्त्री. [सं. विज्ञता] **१** बुद्धिमता, समझदारी ।

२ पांडित्य, विद्वता ।

३ विशेष जानकार होने की अवस्था या भाव ।

विग्यप्त–वि. [सं. विज्ञप्त] जो बतलाया या सूचित किया गया हो ।

विग्यप्ति, विग्यप्ती–सं. स्त्री. [सं. विज्ञप्ति] १ बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ इश्तहार, विज्ञापन ।

रू. भे.—विगपति, विग्याप्ति ।

विग्यांन–सं. पु. [सं. विज्ञान] १ जानकारी, ज्ञान ।

२ आविष्कृत सत्यों व प्राकृत नियमों पर आधारित क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान ।

३ विशेषतः भौतिक जगत् से संबंधित उक्त प्रकार का ज्ञान ।

उ०—धरम, विग्यान, इतियास, पुरांण, राजनीति, आचार, विवहार, कळा, साहित, वेसभूसा, परब—त्यूंहार' कारीगरी नै खेती-वाड़ी औ सैंग परंपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै । —फुलवाड़ी

४ किसी विशिष्ट विषय के तत्वों या सिद्धान्तों आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संग्रहीत हो ।

ज्यूं—सरीरविग्यांन, समाजविग्यांन, राजनीतिविग्यांन ।

५ आत्मा के स्वरूप का ज्ञान । (बौद्ध)

६ आत्मा ।

७ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक । (व. स.)

८ कर्म ।

९ कला । (व. स.)

१० विशेषतया ब्रह्मसाक्षात्कार से प्राप्त हुवा हुआ ज्ञान ।

११ एक शास्त्र विशेष ।

१२ निश्चयात्मिक बुद्धि ।

उ०—परिपूरण प्रेम, निज न्याय नेम, **विग्यांन** विग्य, पूरण प्रतिग्य गभीर ग्यांन, विस्मय विग्यांन उद्योग आस्य, एकौ उपास्य ।
—ऊ. का.

रू. भे.–विगनांन, विगन्यांन, विग्यांन, विगनांन, विगन्यांन, विग्यांनी ।

विग्यांनकोस—देखो विग्यांनमयकोस'

विग्यांनपाद–सं. पु [सं. विज्ञानपाद] वेदव्यास का एक नाम ।

विग्यांनमयकोस–सं. पु. [सं. विज्ञानमयकोश] १ पांचज्ञानेन्द्रिय सहित बुद्धि । (वेद)

२ आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोश ।

विग्यांनवाद–सं. पु. [सं. विज्ञानवाद] १ ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करने वाला वाद या सिद्धान्त ।

२ वह वाद या सिद्धान्त जिसमें केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो ।

विग्यांनवादी–सं. पु. [सं. विज्ञानवादिन्] १ योग के मार्ग का अनुसरण करने वाला योगी ।

२ आधुनिक विज्ञानशास्त्र का समर्थक ।

विग्यांनी–सं. पु.—वह देवी जो किसी विशेष ज्ञान से जानी जाती है ।

वि. [सं. विज्ञानिन्] १ जिसे विज्ञान का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक ।

२ जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, ज्ञानी ।

३ देखो 'विग्यांन' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन विग्यांनीय जांनि सबै, विश्वरूप तपौ मन मोह धूतारी । दास कहै हरिरांम विनां हरि, होय नहीं नरकौ निसतारौ ।
—अनुभववांणी

विग्यापक–वि० [सं. विज्ञापक] १ दूसरों को जानकारी करवाने या जानकारी देने वाला ।

२ समाचार पत्रों आदि में विज्ञापन निकलवाने वाला, विज्ञापन-दाता ।

विग्यापन–सं. पु–[सं. विज्ञापन] १ किसी को जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ वह पत्र या सूचना जिसके द्वारा किसी बात की सूचना दी जाय अथवा जानकारी कराई जाय, इश्तिहार ।

विग्यापणौ, विग्यापबौ–क्रि. स. [स. विज्ञापनं] विज्ञप्त करना, बतलाना या सूचित करना ।

विग्यापियोड़ौ–भू. का. कृ.—विज्ञप्त किया हुआ, बतलाया हुआ या सूचित किया हुआ ।

विग्याप्ति—देखो 'विग्यप्ति' (रू. भे.)

विग्रह–सं. पु. [सं. विग्रहः] १ व्याकरण के अनुसार यौगिक शब्दों या समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग या पृथक करने की क्रिया या भाव ।

२ वैर-विरोध ।

उ०—बस्यौ लिलाट राहु विग्रह तै, संकर मयंक न राखि सकेह । सरणाई 'खेता' सीसोदा, लाल केणी नह कीधी लेह ।
—लाला हाडा रौ गीत

३ लड़ाई, झगड़ा

उ०—जाइ नै आगली रजपूतांणी नुं तेड़िनै कह्यौ, मैं आ-रजपूतांणी म्हारै माथै सटै आंणी छै । ईयै सुं वाद विग्रह मत करिज्यौ । —कांवळै जोईयै नै तीडौ खरळ री वात

३ युद्ध, समर । (ह. नां. मा.)

उ०—१ करण तुच्छ केवियां अभै कर मुंछ उभारै, आरुहिवा नरइंद पाव धारै पाधारै । वीख सगह अप्पतै सोभ विग्रह कवि संभरि, क्रिसन डांणि हल्लियौ जांण बांणासुर ऊपरि ।
—रा. रू.

उ०—२ मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट घुजाई लंका। वाळ सुतण रचायौ विग्रह, आयौ राघव करनै असंका। —र. रू.

उ०—३ रावळ दूदौ तिलोकसी जसहड़ोत जेसळमेर गढ ऊपर छै। पातसाही फोज तळहटी छै। वरस १२ विग्रह नै हुवा छै। मांमला घणा ही हुवा, पण गढ हाथ आवै नहीं। —नैणसी

उ०—४ अजमखां वांसै लागौ आय गढ गिरनार घेरियौ। वरस ३ विग्रह हुवौ। अमीरखांन गढरोहा मांहै मौत मुंवौ। —नैणसी

४ नीति के छः गुणों में से एक।

५ सेना, फौज।

६ किसी के प्रति किया जाने वाला हानिकारक उपाय का प्रत्यक्ष प्रयोग।

उ०—इम देखि अमल जळिया असह, घरा लिये इम धारियौ। जुध करण न व्है आसंग जदि, विग्रह चूक विचारियौ। —सू. प्र.

७ शिव का एक नाम, शिव-लिंग।

८ प्रतिमा, मूर्ति।

९ कोई तत्व विशेष। (सांख्य)

१० श्रृंगार, सजावट।

११ समुद्र के द्वारा स्कंद को दिये जाने वाले दो पार्षदों में से पहला पार्षद।

१२ कष्ट, पीड़ा, दुखी।

उ०—वीछड़ियां विग्रह घणां, भव अंतरा पड़ाहि। नदी विछुटा वाहळा, अवसर कहीं मिळाहि। —परमानदजी वैणियाळ

रू. भे.—बिग्रह।

विग्रह-चारौ—सं. पु.—टटा-फिसाद, लडाई-झगड़ा।

उ०—पांचमा आरा ना राजवी, होसी विग्रहचारौ रे। वचन कही फिर जावसी, एहवौ जांण विचारौ रे। —जयवांणी

विग्रहणौ, विग्रहबौ—क्रि. स.—१ युद्ध करना, लड़ाई करना।

उ०—कमधज्ज सकज्जां कारणां, कळा भुजा मापै कवण। विचित्रांण घणी इम विग्रहै, गहियौ फिर पड़तौ गयण। —रा. रू.

२ संहार करना, मारना।

उ०—गह घरती रिणमल जिण गादी विग्रहिया, खागै समवादी। रिड़मल पाट जोध रिववंसी, इळ रखवाळ थयौ प्रम अंसी। —रा. रू.

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ षड़यन्त्र करना।

५ श्रृंगार करना, सजावट करना।

६ घेरा डालना, घेरना।

उ०—कमालदी घोड़ा हजार असी ले आयौ। गढ घेरियौ। दिहाड़ै ढोवा हुवा छै, सु परधांन वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवौ थौ, सु गढ विग्रहियौ सांभळ नै आयौ। —नैणसी

उ०—२ पछै मूळराज रावळ हुवौ। रतनसी नूं रांणाई री विरद। मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियौ। वरस १२ बा'रै गढ विग्रहियौ रह्यौ। —नैणसी

उ०—तरै तेजसी तौ गढ चढीया। पीरोजी लाख कोठार रावळा थी तेजसी रा हुजदारां नूं सुहलां सा गिण दीया। सीवांणौ विग्रहियौ। —राव मालदे री बात

७ दूर करना, हटाना।

८ कलह करना, झगड़ा करना।

९ वीरगति प्राप्त होना।

विग्रहणहार, हारौ (हारी), **विग्रहणियौ**—वि०।

विग्रहिओड़ौ, विग्रहियोड़ौ, विग्रह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विग्रहीजणौ, विग्रहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वग्रहणौ, वग्रहबौ, वीग्रहणौ, वीग्रहबौ—रू० भे०।

विग्रहियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लड़ाई किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ.४ षड़यन्त्र किया हुआ. ५ श्रृंगार किया हुआ, सजावट किया हुआ. ६ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ७ दूर किया हुआ, हटाया हुआ. ८ कलह किया हुआ, झगड़ा किया हुआ. वीर गति प्राप्त।

(स्त्री. विग्रहियोड़ी)

विग्रही—वि. [सं. विग्रहिन्] १ लड़ाई-झगड़ा करने वाला, युद्ध करने वाला।

२ संहार करने वाला, मारने वाला।

३ नाश करने वाला, नष्ट करने वाला।

४ षड़यन्त्र करने वाला।

५ श्रृंगार करने वाला, सजावट करने वाला।

६ घेरा डालने वाला।

७ दूर करने वाला, हटाने वाला।

विघटण, विघटन—सं. पु. [सं. विघटनं] १ संयोजक अंगों को अलग अलग करने की क्रिया।

२ तोड़ने-फोड़ने की क्रिया या भाव।

विघटिका—सं. स्त्री. [सं.] घड़ी का ६० वां अंश, २४ सैकण्ड।

विघटित—वि. [सं.] १ जिसके संयोजक अलग-अलग कर दिये गये हों।

२ तोड़ा-फोड़ा हुआ, नष्ट किया हुआ।

विघन—सं. पु.[सं. विघनः] १ घन, हथौड़ा।

२ देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ जग बीच जाग्रत ज्यास, ग्रति विघन सुपन उदास। सब चीज रीझ असार, व्रत चीत मौत विचार। —रा. रू.

उ०—२ रीत ग्राद जदुवंस घरांणौ, जंगां विघन जिगन सम जांणौ। 'जीवण' हरनाथौत सजोसौ, ग्रासुर व्याधि हरण किर ग्रोसौ। —रा. रू.

उ०—३ जो मोनूं घपाइस्यौ तौ भली करिस्यौं, नहीं तौ हूं सहर रा लोकां नुं विघन करीस। ताहरां कह्यौ, "कहीं विघन न करै ही ? —स्यांमसुंदर री वात

उ०–४ वेलि पढतां कोई न होइ। कोई विघन करि सकै नही। थळि जळि ग्राकासि कोई न कोई छळ छिद्र होंण न पावै। —वेलि टी.

उ०—५ गाडौ वहीर व्हैती वेळा ई उणरौ सपनौ उणी भांत चालतौ हौ। ग्रर नीं बादळ रा सपना में ई किणी बात रौ विघन पड़चौ। —फुलवाड़ी

उ०—६ दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचंद्र चतुराई। सुणिज्यौ ग्रागलि कुमर कुतूहल, तजि मन विघन बुराई। —वि. कु.

उ०—७ तपस्वी कही—दरसण रूप तौ तुम ही हौ। पण राजा रूप छोड कर एकला फिरौ सौ उचित नही। विघन ग्राय पड़ै तौ राज-देह दुरलभ है। —सिंघासण बत्तीसी

विघनक—देखो 'विघ्नक' (रू. भे.)

विघनकरण—देखो 'विघ्नकरण' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

विघकारी—देखो 'विघ्नकारी' (रू. भे.)

उ०—तठै पंडित बोलिया–स्रीमहाराज ! ग्रो बाळक करडा नक्षत्र मैं जनम्यौ छै नै कुंडळी मांहै ग्रह खोटा ग्राया छै, वेळा पिण खोटी छै, सो माता पिता नै विघनकारी छै, मौत-घात ज्यू छै। —रिसाळू री वात

विघनजीत—देखो 'विघ्नजीत' (रू. भे.)

विघननायक—देखो 'विघ्ननायक' (रू. भे.)

विघननासक—देखो 'विघ्ननासक' (रू. भे.)

विघनपत, विघनपति, विघनपती—देखो 'विघ्नपति' (रू. भे.)

विघनप्रांण—देखो 'विघ्नप्रांण' (रू. भे.) (नां. मा.)

विघनराज—देखो 'विघ्नराज' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

विघनविनायक—देखो 'विघ्नविनायक' (रू. भे.)

विघनहरण—देखो 'विघ्नहरण' (रू. भे.)

उ०—पूरण-पुनीत स्रीरांम पद, विघनहरण त्रैलोक्य वर। परणांम सुकवि ईसर पुणै, तंत नांम भव-सिंधु तर। —ह. र.

विघनेस—देखो 'विघ्नेस' (रू. भे.)

विघन्न—देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ बळता तौ दीपक भला, टळता भला विघन्न। गळता तौ वैरी भला, वळता भला सुदिन्न। —ग्रग्यात

उ०—२ फजरै विकराळ सरूप करै, किम व्याव विचाळ विघन्न करै। सब घाविय 'पाल' कनै सिधियां, पुणावां तुमनै नथि पारथियां। —पा. प्र.

विघन्नणौ, विघन्नबौ–क्रि. ग्र.—नष्ट होना, मिटना (मरना)

उ०—यां दाखै तरवार उठाई मौरां प्रगटी पीड़ ग्रमाई। वधियौ दरद, सु देह विघन्नी, प्रस्ठ दुस्ट चांदी ऊपन्नी। —रा. रू.

विघन्नणहार, हारौ (हारी), विघन्नणियौ—वि०।

विघन्निग्रोड़ौ, विघन्नियोड़ौ, विघन्नचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विघन्नीजणौ, विघन्नीजबौ—कर्म वा०।

विघन्नियोड़ौ–भू. का. कृ.—नष्ट हुवा हुग्रा, मिटा हुग्रा।

(स्त्री. विघन्नियोड़ी)

विघन्नी–वि.—विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला।

विघात–सं. पु. [सं. विघातः] १ नाश।

२ ग्राघात, प्रहार, चोट।

३ बाधा, विघ्न.

विघातक–वि.—१ विघ्न डालने वाला, बाधक।

२ ग्राघात करने वाला, प्रहार करने वाला।

३ नाश करने वाला।

विघातकारिणी–सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार की विद्या विशेष।

उ०—ग्राकासगांमिनी सौदांमिनी कांमगांमिनी कांमसांमिनी भुवनक्षोभिनी कांमरूपिणी मनस्तंभिनी जलस्तंभिनी ग्राग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी ग्रवलोकिनी······। —व. स.

विघातन–सं. स्त्री. [सं.] १ नाश करने की क्रिया या भाव।

२ हत्या करने की क्रिया या भाव।

३ बाधा डालने की क्रिया या भाव।

४ प्रहार करने की क्रिया या भाव।

विघाती—देखो 'विघातक'

विघ्न–सं. पु. [सं.] १ विघ्न, बाधा।

२ रोक रुकावट,।

३ समर।

४ ग्रमंगल, ग्रशुभ।

५ नरमांसभक्षक एक राक्षस, जो कालि एवं ग्रयोमुखी नामक राक्षस का पुत्र था।

६ वध नामक राक्षस का पुत्र।

रू. भे.—विघन, विघ्न, विगन, विग्न, विघन, विघन्न ।

विघ्नक—वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू. भे.—विघनक ।

विघ्नकरण—वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू. भे.—विघनकरण ।

विघ्नकारी—वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू. भे.—विघनकारी, बिघ्नकारी, विघनकारी ।

विघ्नजित, गिघ्नजीत—सं. पु. [सं.] श्रीगणेशजी ।

रू भे.—विघनजित, विघनजीत ।

विघ्ननायक—सं. पु. [सं. विघ्न+नायक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू. भे.—विघननायक ।

विघ्ननासक—सं. पु. [सं. विघ्नः+नाशक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू. भे.—विघननासक ।

विघ्नपत, विघ्नपति, विघ्नपती—सं. पु. [स. विघ्नः+पति] श्रीगणेश जी ।

रू. भे.—विघनपत, विघनपति, विघनपती ।

विघ्नप्रांण—स. पु. [सं.] कृष्ण के बड़े भाई बलभद्र, हलधर ।

रू. भे.—विघनप्रांण ।

विघ्नराज—सं. पु. [सं. विघ्नः+राज] श्रीविनायकजी ।

रू. भे.—विघनराज ।

विघ्नविनायक—सं. पु. [सं. विघ्नः+विनायकः] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे.—विघनविनायक ।

विघ्नसंतुस्ट—सं. पु. [सं. विघ्नसंतुष्ट] चौसट भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

विघ्नहरण—सं. पु. [सं. विघ्नः+हरण] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू. भे.—विघनहरण ।

विघ्नेस—स. पु. [सं. विघ्नः+ईश] श्रीगणेशजी महाराज, ब्रह्मांड में इसके इक्कावन नामान्तर दिये गये हैं ।

रू. भे—विघनेस ।

विड़ंग—१ देखो 'विडग' (रू. भे.)

उ०—१ सूरजमाल दुभाल, नेज गज ढाल निहारै । फळ सावळ फोरियौ, विड़ंग ग्रोरियौ वधारै । —रा. रू.

उ०—२ उभै तरफ ऊपड़ी, वाग तिण वार विड़ंगां । ग्रम्हौ सम्हा सुर ग्रसुर, जुडै सर संभर जंगां । —सू. प्र.

उ०—३ विड़ंगण केसर पाखर भीड़. भुजाळोय बांधव ग्रावध भीड़ । ग्रहै कर सावळ ग्रंग गरीठ, 'पबौ' चढतौ जद केसर पीठ । —पा. प्र.

(स्त्री. विड़गण)

विड़ंगि, विड़ंगी—देखो 'विडंग' (रू. भे.)

उ०—ग्रगरांण न हालइ उवरि ग्रंभ, बाहू ग्रसोस जिम तेवि बंभ । जड़लग्ग साहि खेतसी जंगि, वइरां वराह चडियउ विडंगि । —रा. ज. सी.

विड़—स. पु.—१ बीहड़, वन ।

उ०—१ वाटि वटाऊ सब चले, विड़ मैं वासा होय । जनहरीया सांई विनां, यार न ग्रपणा कोय । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ वाट विड़ांणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववांणी

२ विषय, काम, भोग ।

उ०—१ हरीया जुग विड़ नीदीयै, जा कुं भगति न भाय । से रता रहमांण सुं, ग्रौर न ग्रावै दाय । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ वाट विड़ांणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववांणी

३ शत्रु, दुस्मन ।

वि. [सं. विट] विषयी, कामी, भोगी ।

उ०—वाट विड़ांणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववांणी

रू. भे.—बिड़, विड ।

मह.,—विडांण ।

विड़ग्रौजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे.)

विड़ग्रौजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू. भे.)

विड़णौ, विड़बौ—देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे.)

विड़णहार, हारौ (हारी), विड़णियौ—वि० ।

विड़िग्रोड़ौ, विड़ियोड़ौ, विड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विड़ीजणौ, विड़ीजबौ—भाव वा० ।

विड्ड—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—१ मूळी रौ पापा रजवाड़ां में रैवणियौ स्यांणौ हाजरियौ, राजनीत सूं रंग्योड़ौ—सुघरचोड़ौ मिनख । ख्यात ग्रर जात नै जांणै, विड्द ग्रर वडाई वखांणै । —दसदोख

उ०—२ सरणागत सुख करन कु, तुमरौ बिड़द, बिराज । अपनौ ही जन जांन कै, क्रपा करौ महाराज । —अग्यात

उ०—३ निरवाह करत ज नारियण, असरण सरण बिड़द सूं । कोल कर जोड़ियां ओचरै, संहंस कळा गुर जंभ सूं । —कोल्हजी चारण

उ०—४ बिड़द तमारौ रांमजी, लै वहीयै म्हाराज । हरीयै गुण औगुण कीया, तौई तमां कुं लाज । —अनुभववांणी

२ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

बिड़दड़ी-सं. स्त्री.—१ वृद्धि, बढ़ोतरी ।

उ०—गढ रणतभंवर सूं आवौ विनायक, करौ नी अणचींती बिड़दड़ी । बिड़द-विनायक दोनूं जी आया, आय तौ उतरिया हरियै बाग में । —लो. गी.

२ वह स्त्री. जिसके घर में पुत्र या पुत्री के विवाह के मांगलिक कृत्य होते हों ।

रू. भे.—बिड़दड़ी, बिडदड़ी, विडदड़ी ।

बिड़दबड़ी-सं. स्त्री. [सं. वृद्धि-वटी] विवाहारंभ में मातृका पूजन के समय दी गई बड़ी, जो वर-वधू को सीख देते समय पका कर भोजन के साथ खिलाई जाती है ।

रू. भे.—बिड़दबड़ी, बिडदबड़ी, विडदबडी ।

बिड़दविनायक-सं. पु. [सं. वृद्धिविनायक] मांगलिक अवसरों पर प्रथम पूजे जाने वाले विनायक, वृद्धिविनायक ।

उ०-**बिड़दविनायक** दोनूं जी आया, आय तौ उतरिया हरिया बाग में । ढूंढत ढूंढत नगरी जी ढूढी, कोई घर तौ बतावौ लाडल रै बाप रौ । —लो. गी.

रू. भे.—बिड़दविनायक, बिडदविनायक, विडदविनायक ।

बिड़दाणौ, बिड़दाबौ—देखो 'बिरुदाणौ, बिरुदाबौ' (रू. भे.)

बिड़दाणहार, हारौ (हारी) बिड़दाणियौ—वि० ।

बिड़दायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिड़दाईजणौ, बिड़दाईजबौ—कर्म वा० ।

बिड़दायोड़ौ—देखो 'बिरुदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिड़दायोड़ी)

बिड़दावणौ, बिड़दावबौ—देखो 'बिरुदाणौ, बिरुदाबौ' (रू. भे.)

उ०—बीरा बीरा भड़ दोळा **बिड़दावै**, धीरा धीरा पड़ धोळा मत धावै । बेळू बैतड़ री ताती बळवाळी, रेणा धोळी री राती कर राळी । —ऊ. का.

बिड़दाव—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—बीच-बिचाव कर परा'र लिख्या मुजब पांच सौ जमा कर देवण रौ हुकम दाखै, ब्याज न्यारौ राखै है । साग-सागै आपरी बात मांन ज्यांरौ वेगी मारजा री तारीफ अर भरोसै रा ही **बिड़दाव** उड़ावै है । —दसदोख

बिड़लौ-स. पु.—१ ढेर, समूह ।

उ०—१ माता कै भवन में जी औ नारेळां रौ **बिड़लौ**, जी औ नारेळां रौ बिड़लौ सुपारयां रे बिड़लै म्हांरी आद भवांनी वस रही । —लो. गी.

उ०—२ माता कै भवन में जी औ चावळियां रौ **बिड़लौ**, जी औ चावळियां रौ बिड़लौ, मूंगां रै बिड़लै म्हांरी आद भवांनी वस रही । —लो. गी.

उ०—३ माता कै भवन में जी औ काजळिया रौ **बिड़लौ**, जी औ काजळिया रौ बिड़लौ, रोळी रै बिड़लै म्हांरी आद भवांनी वस रही । —लो. गी.

उ०—४ माता कै भवन में जी औ मौळी रौ **बिड़लौ**, जी औ मौळी रौ बिड़लौ, महदी रै बिड़लै म्हांरी आद भवानी वस रही । —लो. गी.

२ देखो 'सुहागदार बिड़लौ' ।

बिड़ांणौ—देखो 'बिडांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांम नांम नही चेतीयौ, करी **बिड़ांणी** आस । जन हरीया घर गोरिवै, सरिक्यां सेती वास । —अनुभववांणी

उ०—२ दुनियां रोवै रोवणा, देख **बिड़ांणी** खाल । नांव संनेही बाहिरौ, हरीया होय विहाल । —अनुभववांणी

उ०—३ माया भई **बिड़ांणीयां**, भार बिड़ांणै लोग । जनहरीया नहीं आपना, विखै बिलासा भोग । —अनुभववांणी

उ०—४ जांणि बूझि गहली भई, प्यारी पिव कै जोग । हरीया गुझि करतार सु, भमौ **बिड़ांणै** लोग । —अनुभववांणी

उ०—५ वाट **बिड़ांणी** लोक बिड़, बिड़ ही बिड़ मैं वास । हरीया हरि बिन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —अनुभववांणी

(स्त्री. बिड़ांणी)

बिड़ाळ, बिड़ाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

बिड़ाळव्रग—देखो 'बिडाळव्रग' (रू. भे.)

बिड़ाळव्रत्तिक—देखो 'बिडाळव्रत्तिक' (रू. भे.)

बिड़ियोड़ौ—देखो 'बिढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिड़ियोड़ी)

बिड़ूजा—देखो 'बिड़ूजा' (रू. भे.)

बिड़ूजावाह—देखो 'बिड़ूजावाह' (रू. भे.)

बिड़ोजा—देखो 'बिड़ूजा' (रू. भे.)

उ०—तेज ताप मुनीपूर पाड़िया पाथोघ तास, नागेस झाड़िया

ज्यूं खगेस बंधै नेत । पव्वै पख **विड़ोजं** भाड़िया वज्र बीम वाट, खळां थाट दूजे 'दळै' विभाड़िया खेत । —हुकमीचद खिड़ियौ

विड़ोजावाह—देखो 'विड़ूजावाह' (रू. भे.)

विड़ौ-सं. पु.—थोहर के नीचे का भाग ।

उ०—घोड़ा दौड़ रह्या छै ! होकारा हगांमौ हुय रह्यौ छै । जितरै बीच थोहर भाड़ां रा **विड़ा** मांहां खरगोस उठिया छै ।
—रा. सा. सं.

रू. भे.—विडौ ।

विचंमा-क्रि. वि.—बीच में, मध्य में ।

उ०—राय देह पधराय, वार तरण चेह **विचंमा** । भळ अग्गी फूलिवा, करण लग्गी परकम्मा । —रा. रू.

विच, विचइ—देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ धारण सलज चखां 'चंद' धारै, आच उठाय वडिम उच्चारै । **विच** पुर धसै विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चंदराजा । —सू. प्र.

उ०—२ पूछचां बिना पयपै पापी, थट **विच** कहै लात सिर थापी । वदन मत दिखालै वंस द्रोही वळै । —र. रू.

उ०—३ भाखि सतोगुण भलौ, खरौ कोई कहिजै खोटौ । त्रिविध तणी **विच** तीन, त्रिविध तांमस गुण त्रोटौ । —पी. ग्रं.

उ०—४ जउ साहिब तूं नावियउ, मेहां पहलइ पूर । **विचइ** वहेसी वाहला, दूर स दूरै दूर । —ढो. मा.

उ०-५ दिलीवै कहर पतसाह रा भांज दळां, सोहियां दळां **विच** वीर साजा । सदा जोरावरां तणा नव-साहसौ, राह सिर ऊपरै हुअै राजा । —देवराज रतनू

विचकणौ, विचकबौ—देखो भिचकणौ, भिचकवौ' (रू. भे.)

विचकणहार, हारौ (हारी), **विचकणियौ**—वि० ।

विचकिश्रोड़ौ, विचकियोड़ौ, **विचक्योड़ौ**—भू० का० कृ० ।

विचकीजणौ, विचकीजबौ—भाव वा० ।

विचकाड़णौ, विचकाड़बौ—देखो 'विचकाणौ, विचकाबौ' (रू. भे.)

विचकाड़णहार, हारौ (हारी), **विचकाडणियौ**—वि० ।

विचकाड़िश्रोड़ौ, विचकाड़ियोड़ौ, विचकाड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचकाड़ीजणौ, विचकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विचकाडियोड़ौ—देखो 'विचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचकाड़ियोड़ी)

विचकाणौ, विचकाबौ-क्रि. स.—१ चौंकाना ।

उ०—बापड़ौ छोरौ रोवण-खारौ हो'र लकड़ियां भेळी करण लागौ । इत्ती में गळी रै छोरां ताळियां वजा वजा'र सांड नै **विचकाय** दी । सांड नाठी । छोरा कणांई सांड पासी दौड़ै कणांई लकड़िया सांमैं। —वरसगांठ

२ विगाड़ना, विकृत करना । (मुख)

विचकाणहार, हारौ (हारी), **विचकाणियौ**—वि० ।

विचकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचकाईजणौ, विचकाईजबौ—कर्म वा० ।

बिचकाड़णौ, बिचकाड़बौ, बिचकाणौ, बिचकाबौ, बिचकावणौ बिचकावबौ, विचकाड़णौ, विचकाड़बौ, विचकावणौ, विचकावबौ —रू० भे०

विचकायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चौंकाया हुआ. २ बिगाड़ा हुआ, विकृत किया हुआ (मुख) ।

(स्त्री. विचकायोड़ी)

विचकावणौ, विचकावबौ—देखो 'विचकाणौ, विचकाबौ' (रू. भे.)

विचकावणहार, **हारौ (हारी), विचकावणियौ**—वि० ।

विचकाविश्रोड़ौ, विचकावियोड़ौ, विचकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचकावीजणौ, विचकावीजबौ—कर्म वा० ।

विचकावियोड़ौ—देखो' विचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचकावियोड़ी)

विचकाक्ष-सं. पु.—एक राजा, जिसने मांस-भक्षण त्याग किया था ।

विचकियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचकियोड़ी)

विचकिल-सं. पु.—१ कुसुम विशेष २ सुगन्धी वृक्ष विशेष ।(सभा)

(मि.—'बिचकल' ।)

विचक्खण-सं. पु.—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचक्र-सं. पु.—एक दानव का नाम । (पुराण)

विचक्षण-वि. [सं. विचक्षण] [स्त्री. विचक्षणा] १ पारदर्शी ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ बुद्धिमान, चतुर ।

उ०—पट्टकूल पट्टणी देस भोगीघर दक्षण । कुंजर कदळी खंड विप्र तेरोतरी विचक्षण । —ढो. मा.

४ पंडित, कवि ।

५ निपुण, योग्य, काबिल ।

६ अद्‌भुत, अपूर्व, विचित्र ।

उ०—उत्तम कुलनी ऊपनी, मयण तणउ अवतार । वली **विचक्षण** परिण घणा, भरिया धन भंडार । —मा. कां. प्र.

७ पुरुष के बत्तीस लक्षणों में से तेरहवां शुभ लक्षण ।

रू. भे.—बिचच्छण, वचखण, वचिक्षण, विग्रक्खण, विग्रक्खणि, विग्रक्खणु, विचक्खण, विचक्षिण, विचखण, विचखणी, विचख्खण, विचख्यण, विचच्छण, विचछन, विच्चखण ।

विचक्षणतांडव-सं. पु.—एक आचार्य जो गर्दभी मुख शांडिल्यायन का शिष्य व शाकदास भाडितायन का गुरु था।

विचक्षणता-सं. स्त्री. [सं. विचक्षण+ता प्र.] १ निपुणता, दक्षता, चतुराई, विद्वत्ता।

२ विचित्रता, अद्भुतता।

विचक्षणा-सं. स्त्री.—१ कुंभा नामक औषधि, नागदंती।

२ चतुर स्त्री।

उ०—चौसठ कला **विचक्षणा**, रूप गुणें करी रंभा रे। देवगुरु धरम दी पावती, व्रतधारी द्रढवभा रे। —वृस्त.

विचक्षिण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—पटकूळ पट्टणी, देस भोगी धुर दक्षिण। कुंजर कदळी खंड, विपरीत नीति **विचक्षिण**। —ढो. मा.

विचक्षु-सं. पु.—एक राजा, जो 'यज्ञकर्म में अहिंसाव्रत का पालन करना चाहिए' इस तत्व का प्रतिपादन कर इसी मत पर 'विचरवनु गीता' की रचना की जो भीष्म द्वारा युधिष्ठर को सुनाई गई थी।

रू. भे.—विचख्नु।

विचक्षुत-सं. पु.—वसिष्ठकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

विचखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

विचखणी—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचख्खण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ वसहंतरि वड पात **विचख्खण**, वीर कळोधर गरथ विचार। सिगळौं सुजस लियौ राइ सींधळ, खट व्रन कीया······खगार।

—खंगार रायपाळोत री गीत

उ०—२ बुद्धिवंत बळवंत राज, सनमांन **विचख्खण**। भोग जोग गुर भगत, भाग परमांण भुजायंण। —रा. सा. सं.

विचख्नु—देखो 'विचक्षु' (रू. भे.)

विचख्यण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचड़ण—देखो 'बिछुड़ण' (रू. भे.)

उ०—मिळण भलौ **विचड़ण** बुरौ, मिळ बिचड़ौ मत कोय।

—अग्यात

विचड़णौ, विचड़बौ—देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

विचड़णहार, हारौ (हारी), विचड़णियौ—वि०।

विचड़िओड़ौ, विचड़ियोड़ौ, विचड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

विचड़ीजणौ, विचड़ीजबौ—भाव वा०।

विचड़ियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचड़ियोड़ी)

विचच्छण, विचछण, विचछणी, बिचछन—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ बरणी उपमा सार, विचारि **विचच्छणां**। लिया सही अवतार, बतीसां लच्छणां। —बां. दा.

उ०—२ अथ कंवरी रै पत्री सिद्धसी लग्न री लड़ी जीव री जड़ी सजीली फबीली लजीली छबीली रमकीली लंकीली कमककीली छकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लछणी चौसट कला **विचछणी** केल रस क्यारी प्रांणप्यारी जिणसूं सांहरौ निज नेह उरस भांत राखजै देह। —र. हमीर

विचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—१ खग झपट बे थपट छुट खल खट, विकट अविग्रट विढें रिणिवट। पड़ें घट कटि उलट पालट गरट समरट पहट, गाहट **विचत्र** खंड खट तणां दहवट। —ल. पिं.

उ०—२ नृप मोराय 'पाल' घड़ी कनरैं, पतसा हिय फौज सिवांण परै। रवदां वळ लूंटत गांम रटै, **विचत्रां** दळ धेख लाख वटै।

—पा. प्र.

उ०—३ केसरी सिंघ राव 'मालदे' कळोधर, चाडआं गुर सदा लग वडां चेळौ। **विचत्र** साह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिळियै कियौ ताळ-मेळौ। —माधौदास गाडण

उ०—४ **विचत्रां** देखेय सोच विरांम, तरां हिक रावत बोल्यौ तांम। उबारण रांका चीत उदार, बसै औ वीरम जूह विडार।

—गो. रू.

उ०—५ मच्छर और न संग्रहै, आ मछरीकां आद। अड़ै कमंधां अग्गळी, **विचत्रां** हूंता वाद। —रा. रू.

विचत्रांण—देखो 'विचित्र' (मह., रू. भे.)

उ०—१ वधिया कराग खग वाहतै, रूक जाग चतुरंगिणी। **विचत्रांण** जुवांणा वज्जियौ, इंद्रभांण पहलै अणी। —रा. रू.

उ०—२ जुध जीप पति जोधांण, तड़ भांज भड़ **विचत्रांण**। पाधारियौ सिंघ पाय, 'अभसाह' धांम अकाय। —रा. रू.

विचबिबभू-स. पु.—चांद, चन्द्रमा। (नां. मा.)

विचमां—देखो 'बीच' (रू. भे.)

विचरण—सं. पु.—१ पैर, चरण। (अ. मा.)

स. स्त्री.—२ चलने की क्रिया या भाव।

३ पर्यटन करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—विचरन।

विचरणौ, विचरबौ-क्रि. अ.—१ व्यापक होना।

उ०—१ हम से सरव मो व्यापक, मो मैं सरव **विचरता**। जो देखूं सो दीसत मुझ मैं, हूं सरव ब्रह्म सरवगता।

—श्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ देवी जग्त करतार भरता संहरता, देवी चराचर जग्ग सब में **विचरता**। देवी चार धांम स्थलं ग्रस्ट साठं। देवी पावियै एकसौ पीठ ग्राठं। —देवि.

२ गमन करना, घूमना।

उ०—मरजीवा होय जग मैं विचरूं, स्वाल करूं नहिं कीना। जिनकी कळा सकळ में बरतै, सो साहब हम लीना। —स्रीहरिरांमजी महाराज

३ गुजरना, गमन करना, जाना।

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति ग्रतरा मांहै पातसाह महमद मुसतफाखांन रा चार दूत **विचरिग्रा** हूंता त्यां हकीकत राजान रा पातसाह ग्रागै पोहचाई। —रा. सा. सं.

४ ग्रवलोकन करना, देखना।

उ०—माईत तौ पाछा ग्रापरै मंसोबां मे रु'धग्या ग्रर टाबर ग्रापरी ग्रबूभ बाळ-प्रीत में तारां रै सागै **विचरतां** विचरतां वांनै ऊंघ ग्रायगी। —फुलवाड़ी

५ जैन साधुग्रों का भिक्षा मांगने हेतु जाना।

उ०—'राजग्रही' नगरी हो ग्रति रलियांमणी 'गुणसिल' नांमै वाग जिणेसर। '**विचरता**' वीर जिणंद समोसरचा, भव जीवां रै भाग जिणेसर। —जयवांणी

विचरणहार, हारौ (हारी), विचरणियौ—वि०।

विचरिग्रोड़ौ, विचरियोड़ौ, विचरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचरीजणौ, विचरीजबौ—भाव वा०।

विचरवणौ, विचरवबौ, विछरणौ, विछरबौ—रू० भे०।

विचरन—देखो 'विचरण' (रू. भे.)

विचरवणौ, विचरवबौ—देखो 'विचरणौ, विचरबौ' (रू. भे.)

उ०—सुत तुं सुकमाल सुगात, मत कहिजौ संजम वात। इणि गरुग्रइ संजम भारइ, **विचरेवउ** खडडां धारइ। —जिनराज सूरि

विचरवियोड़ौ—देखो 'विचरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचरवियोड़ी)

विचरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ व्यापक हुवा हुग्रा. २ गमन किया हुग्रा, घुमा हुग्रा. ३ गुजरा हुग्रा, गमन किया हुग्रा, गया हुग्रा. ४ ग्रवलोकन किया हुग्रा, देखा हुग्रा. ५ जैन साधु का भिक्षा मांगने हेतु गया हुग्रा.

(स्त्री. विचरियोड़ी)

विचळ, विचल-वि. [सं. विचल] १ जो स्थिर न हो, ग्रस्थिर, डिगा हुग्रा।

२ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुग्रा।

विचळकौ-क्रि. वि.—बीच में।

उ०—तेल **विचळकै** ग्राय रह्यौ, लूम्यां री डोरी। नणदल कूल्हर खाय, वारी ऐ लूम्यां री डोरी। —लो. गी.

विचळणौ, विचळबौ-क्रि. ग्र.—१ विचलित होना।

२ पदच्युत होना।

३ हिम्मत हारना, निरुत्साह होना।

४ कहकर इन्कार होना, मुकरना।

५ प्रतिज्ञा या संकल्प से विमुख होना।

६ विकृत होना, खराब होना।

७ तितर-बितर होना, बिखरना, भाग जाना।

उ०—१ तेथि कछवाहो भोपत राजा भारमल रो दीकरो कांम ग्रायो। मिरजै इब्राहम री फोज **विचळी**। पीण मिरजै रै तरग-सबंधे कहियौ पातिसाह थोड़ै साथ सेती छै। ग्राग्रो जिम मारिल्यां। —द. वि.

उ०—२ लोक सारो गोळां सुं फूट गयौ। सो सांकड़े घेर में लागी। सो एकै-एकै सुं दोय-दोय तीन-तीन फूट गया। वांण लागा, सो घोड़ा ग्रादमी फूट गया फोज **विचळ** गई। पग छूट गया। सो भाजतां रै पूठै लोक लागो। —कुंवरसी सांखला री वारता

८ ग्रस्थिर होना, डिगना।

९ घबराना, भयभीत होना।

उ०—१ इयै समइयै हमाऊं पातिसाह काबिल हुंता ग्रायौ। ग्रापस मै ममरेजसाह री फोज हुतां वेढि हुई। फोज भागी। पठांण **विचळिया**। पंजाब ली। हमाऊं पातिसाह सींहनद ग्रायौ। —द. वि.

उ०—२ वांसा पठांणां चंप की तीरां री। ताहरां मुगळ **विचळतै** ही ज मार की। तितरै बीजी फोज मुगळां री पठांणां ग्राडी ग्राई। —द. वि.

उ०—३ इतरै मांहीं मारवाड़ री धरती में कहत पड़ियौ लोग सारो **विचळियौ**। —नापै सांखलै री वारता

उ०—४ ताहरां कोटवाळ पूछियौ—क्योंकर मोटियार, कासूं कहै छै? ताहरां कुंवर कह्यो—बेटो तो इयां रो ही छूं। तितरै साह कह्यौ—रै कपूत, कासुं कहै छै, कै रो बेटो छै? ताहरां फेर कह्यौ—थांहरो बेटो छूं। ताहरां कोटवाळ कह्यौ—रै मोटियार, यूं **विचळियौ** क्यूं बोलै छै। —पलक दरियाव री बात

विचळणहार, हारौ (हारी), विचळणियौ—वि०।

विचळिग्रोड़ौ, विचळियोड़ौ, विचळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचळीजणौ, विचळीजबौ—भाव वा०।

बिचळणौ, बिचळबौ, विचलणौ, विचलबौ, विचळाणौ, विचळाबौ, विचलाणौ, विचलाबौ, विचळावणौ, विचळावबौ, विचलावणौ, विचलावबौ, विछळणौ, विछळबौ—रू० भे०।

विचलणौ, विचलबौ—देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

उ०—हुकम कीयौ हल्लां करी रे, **विचल्यौ** साह वचन्न । जूझारै जाइ झालियौ रे, कपटइ रांण रतन्न । —प. च. चौ.

विचलणहार, हारौ (हारी), **विचलणियौ**—वि० ।

विचलिग्रोड़ौ, विचलियोड़ौ, विचल्योड़ौ—भू० का० कृ०

विचलीजणौ, विचलीजबौ—भाव वा० ।

विचळता, विचलता–सं. स्त्री.—१ चंचलता ।

२ अस्थिरता ।

३ घबराहट ।

४ भयभीत होने की अवस्था या भाव ।

विचलाड़णौ, विचलाड़बौ—देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे.)

विचलाड़णहार, हारौ (हारी). **विचलाड़णियौ** – वि० ।

विचलाड़िग्रोड़ौ, विचलाड़ियोड़ौ, विचलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचलाड़ीजणौ, विचलाड़ीजबौ—कर्म वा०/भाव वा० ।

विचलाड़ियोड़ौ—देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचलाड़ियोड़ी)

विचळाणौ, विचळाबौ—१ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे.)

उ०—घननाद करै घमसांण घणौ, **विचळाय** दियौ दळ रांम तणौ । हनुमंत निसाचर नांम किया, खल-व्रंद खपावण में मुखिया । —गी. रां.

२ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

विचळाणहार, हारौ (**हारी**), **विचळाणियौ**—वि० ।

विचळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचळाईचणौ, विचळाईजबौ—कर्म/भाव वा० ।

विचलाणौ, विचलाबौ–क्रि. स.—१ विचलित करना ।

२ भयभीत करना ।

३ तितर बितर करना. बिखेरना ।

४ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घनु-भंजन रौ रव घोर घणौ, **विचलायौ** है मंड ब्रह्मांड तणौ । हरि-नाभिय सूं विधि जाय ढल्यौ, रथ सूरज रौ तज राह चल्यौ । गी. रां.

उ०—२ अंबरीस सुध्यायौ, तुज अपणायौ, भजन सवायौ, मन भायौ । दुरवासा आयौ, आय डरायौ, चकर चलायौ, **विचळायौ** । —भगतमाळ

उ०—३ भींव कल्यांणदासौत लोहां पड़नै उपड़ियौ फौज **विचळाई** । —गोपालदास गोड़ री वारता

विचलाणहार, हारौ, (**हारी**), **विचलाणियौ**—वि० ।

विचलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विचलाईजणौ, विचलाईजबौ—कर्म/भाव वा० ।

बिचलाणौ, बिचलाबौ, बिचलावणौ, बिचलावबौ, विचळाणौ, विचळाबौ, विचलावणौ, विचलावबौ—रू० भे० ।

विचळायोड़ौ—१ देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विचळायोड़ी)

विचलायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ विचलित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ. ३ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ।

४ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचलायोड़ी)

विचळावणौ, विचळावबौ—१ टकराना, आपस में भिड़ना (वर्तन) ।

उ०—कर करहूं भाड़ा सासण किचळावै, वाजै भंभाड़ा बासण **विचळावै** । चमकंता डागळ गोडा चिक चिकता, जंतू जळ रिकता सिकता में सिकता । —ऊ. का. ।

२ ध्वनि करना ।

३ बीच में आना ।

४ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे.)

५ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

विचळावणहार, हारौ (हारी), **विचळावणियौ**—वि० ।

विचळाविग्रोड़ौ, विचळावियोड़ौ, विचळाव्योड़ौ – भू० का० कृ० ।

विचळावीजणौ, विचळावीजबौ—कर्म/भाव वा० ।

विचलावणौ, **विचळावबौ**—रू० भे० ।

विचलावणौ, विचलावबौ—१ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ (रू. भे.)

२ देखो 'विचळावणौ, विचळावबौ (रू. भे.)

३ देखो 'विचळणौ, विचळबौ (रू. भे.)

विचलावणहार, हारौ (हारी), **विचलावणियौ**—वि० ।

विचलाविग्रोड़ौ, विचलावियोड़ौ, **विचलाव्योड़ौ**—भू० का० कृ० ।

विचलावीजणौ विचलावीजबौ—कर्म/भाव वा० ।

विचळावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ आपस में टकराया हुआ. २ ध्वनि किया हुआ. ३ बीच में आया हुआ ।

४ देखो 'विचळायोड़ौ' (रू. भे.)

५ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. विचळावियोड़ो)

विचलावियोड़ौ—१देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचळावियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचलावियोड़ी)

विचळित, विचलित–वि. [सं. विचलित] १ घबराया हुआ, भयभीत।
२ पदच्युत।
३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह।
४ कहकर इन्कार हुवा हुआ।
५ खराब हुवा हुआ, विकृत।
६ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ।
७ अस्थिर, डिगा हुआ, चचल।
८ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख।

विचळियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ विचलित हुवा हुआ. २ पदच्युत हुवा हुआ. ३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह हुवा हुआ. ४ कह कर इन्कार हुवा हुआ, मुकरा हुआ. ५ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख हुवा हुआ. ६ विकृत हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ. ७ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ. ८ अस्थिर हुवा हुआ, डिगा हुआ. ९ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ.
(स्त्री. विचळियोड़ी)

विचलियोड़ौ—देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विचलियोड़ी)

विचलौ–वि. (स्त्री. विचली) मध्य का, बीच का।
उ०—कितरेक भरण इण खंदके, उतारी हौ काचर तणी खोल। **विचलौ** गिर काढी लियौ, सरायौ हौ घणी करी किलोल। —जयवांणी
उ०—२ ओळंग थारै विचलै वीरै ने भेज, वारी घण वारी औ हंजा, चतर चोमासै, ओ राजन, घर वसौ जी, म्हारा राज। **विचलै** वीरै के गोद झड़ला री जात, वारी घण वारी औ हंजा, गठजोड़ै से औ जात उतारसी जी, म्हारा राज। —लो. गी.
उ०—३ हाली हाली मोत्यां **विचली** लाल, कोई, कांनां केरा हाल्या वाळी-झूंटणा, अै मोरी सइयां। हाल्या हाल्या छाती परला-हार, कोई, पायलड़ी तौ खुड़की विछिया वाजिया, अै मोरी सइयां। —लो. गी.
उ०—४ **विचली** वात छै—देवड़ै विजै सूजा नें मारनै सूजा री वसी ऊपर साथ मेलियौ, उठै मालौ सूजा रौ मरायौ, वसी सारी लूटी। —नैणसी

विचलौ-वासौ—देखो 'बिचलौ-बासौ' (रू. भे.)
उ०—भेला मिली सजन लै चाल्या, सीडी मांय जोड़ी रै। **विचलौ-वासौ** विचमैं लैरायौ, गावड़ हुवै छै दोरी रै। —जयवांणी

विचवला, विचवल्ला–सं. स्त्री.—मध्यस्थता।
उ०—वीरम तौ जोईया विचै, भ्यासै रिणमल्ला, सावज जांणौ सांकड़ै घड़ कूंजर घला। पला विछातां पालतां-दिन कढता 'दला', वे दला अळगा रहा, करता **विचवल्ला**। —वी. मा.

विचवाळौ–वि.—बीच बचाव करने वाला।
उ०—इतै **विचवाळौ** सूर अपाल, मिणवर आयौ रावळ माल। संतोखै वातां वागां साय, जुदा दळ कीधा वेहूं जाय। —गो. रू.
२ बीच का, मध्य का, मध्यस्थ।
सं. पु.—मध्यस्थता।
उ०—तरै भाटी कल्यांणदासजी कयौ थै महाराज रा कांमदार छौ नै भडारी रूपचंदजी रा बेटा छौ सौ मेडतियौ बदळै थांनु कोइ मारां नही। इतरै धांधळ गोयंदासजी आयनैं कयौ भंडारी रतन चंदजी **विचवाळौ** करै छै ने स्रीजी रौ निसांण छै तरै भाटियां नुं लोथ मंगाय दीनी। —रा. वं. वि.

विचा—देखो 'बीच' (रू. भे.)
उ०—'सेर' रा करारा वचन 'कुसलौ' सुणै, अवनीमौ 'पाल' वीरदां उजाळौ। वादळां दळां नागोरा **वीचा** सु, अरक जीऊं भळकियौ 'हरा' वाळौ। —सेरसिंघ मेड़तिया अौर कुसळसिंघ चांपावत रौ गीत

विचार–स. पु. [सं. विचार:] १ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श करने, सोचने या सोच कर निश्चित करने की क्रिया या भाव।
उ०—१ पिंडत वेद पुरांन कुं, वाचैं करै **विचार**। 'हरीया' औरां अकलि द्यै, आप न सुधि बुधि सार। —अनुभववांणी
उ०—२ राजां **विचार** करण लागी—आज धनतेरस है अर कालै रूपचवदस। आ सूनम (असाढ सुद नम) गई तौ उणनैं परणियां नै पूरा तीन बरस ह्विया अर चौथौ बरस लागग्यौ।—अमरचूंनड़ी
उ०—३ गांम वाळां मिळनैं **विचार** कियौ—मास्टर परदेसी पंछी—आंपणै गांम में आयौ है, कुण तौ इणरै पीसैला अर कुण इणरै पोवैला। —अमरचूंनड़ी
२ मन में उठने वाली भावना, ख्याल, इरादा।
उ०—सांवण जळहर गाज सुण, खीजै उर घर खार। जग सूं उलटा जांणणा, वाघां तणा **विचार**। —बां. दा.
मुहा.—विचार में पड़णौ=चिन्ता में पड़ना, चिन्तायुक्त होना।
३ किसी मुकदमे की सुनवाई करने की क्रिया या सुनाई करने के बाद किया जाने वाला फैसला या निर्णय।
४ विचरने, घूमने या फिरने की क्रिया या भाव।
५ ज्ञान।
उ०—१ वहि वहि मूवा मांनवी, करि करि लोकाचार। भेद न पायौ भगति कौ, हरीया विनां **विचार**। —अनुभववांणी
उ०—२ मन तै ऊंच न नींच गिन, तन तैं लोकाचार। हरीया तन मन मिट गई, पाया ब्रम **विचार**। —अनुभववांणी
६ ध्यान देने की क्रिया या भाव, अमल करने की क्रिया या भाव।
उ०—भतीजौ उण नै समझाई—इण में आप रौ कीं चूक कोनीं।

भोळप सूं कीं भूल ई व्है जावै तौ भगवांन इण साथै कीं **विचार** नीं करै। —फुलवाड़ी

७ निर्माण बनावट, रचना।

उ०—............राज लोक सिणगार। च्यारै प्रस्तावै चतुर, वणियौ भलौ **विचार**। —रा. सा. सं.

८ निर्णय, फैसला।

९ निश्चय, संकल्प।

उ०—जनवासा में सुख सुविधा रौ पूरौ इंतजाम हो। म्हैं स्नांन ध्यांन सूं निपटनैं कपड़ा पलटिया अर थोड़ी ताळ आरांम करण रौ **विचार कियौ**। कारण कै लगन गोधूळिक हो अर उण वखत उठै म्हनैं हाजर रैवणौ हो। —अमरचूनड़ी

१० सन्देह, शंका, हिचकिचाहट।

रू. भे.—बिचार, बिचारि, बीचार, वचार, विचारु, विचारौ, विच्चार।

विचारक—वि. [सं. विचारकः] १ विचार करने वाला।

२ विचरने वाला, घूमने वाला।

३ ध्यान देने वाला, अमल करने वाला।

उ०—कळा तिमंगळ किता, वरण गुण दोस **विचारक**। पबै सिखर इम गुपत, किता गुण औगुण कारक। —रा. रू.

४ निर्माण करने वाला, रचनाकर्त्ता।

५ निर्णय या फैसला करने वाला, न्यायकर्त्ता।

६ बुद्धिमान, विद्वान।

७ निश्चय या संकल्प करने वाला।

८ शंका या हिचकिचाहट करने वाला, सन्देहकर्त्ता।

विचारकरता—वि. [सं. विचारकर्त्ता] १ वह जो विचार करता हो, सोचने-विचारने वाला।

२ न्यायालय में न्याय करने वाला, न्यायाधीश।

विचारग्य—वि. [सं. विचारज्ञ] १ जो विचार करने में निपुण हो।

२ अभियोग आदि की सुनवाई कर निपटारा करने वाला।

विचारचतुर—वि.—जो विचार करने में निपुण हो, बुद्धिमान।

उ०—१ प्रजांनइ सुखकारीउ, माइ पिता समांन। **विचारचतुर** डाहु भलु ए, दिइ यथोचित दांन। —नळदवदंती रास

उ०—२ **विचारचतुर** डाहा भला, डाहा गुणवंत रे। भवितव्यता तेहनइ नडइ, जे हुइ बलवंत। —नळदवदंती रास

विचारणीय—वि. [सं.] जो विचार करने योग्य हो।

विचारणौ, विचारबौ—क्रि. स.—१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार-विमर्श करना, सोचना या सोचकर निश्चित करना।

उ०—१ हियै होळी हुआं दीध दुख हजारां, **विचारै** नित मुख सूं वाखांणै। सूरपण "जसा" महराज री जगत सिर, जिसौ है तिसौ अवरंग जांणै। —नरहरदास बारहठ

उ०—२ वीर महाबळ धीर उर, सूरम सूरत धार। आवी आदर ऊठियौ, भावी सीस **विचार**। —रा. रू.

उ०—३ खारी में सोगरा अर राब धरनैं वौ हाळियां सारू भातौ ले जावण नै त्यार व्हियौ उण वगत दूजोड़ौ कुत्तौ खारी में मूंडौ मारण सारू जुगत **विचारण** लागौ। —फुलवाड़ी

उ०—४ ठकरांणी तौ आ इज चावती हीं। ठाकर नै वत्ता खरा-वण सारू वळै पूछ्यौ—कौल दोरौ है, राज सूं निभैला नीं। पछै पलटणा बिचै अबारूं पाछौ **विचार** कर लिरावौ। —फुलवाड़ी

२ किसी मुकदमें की सुनवाई करना या सुनवाई करने के बाद फैसला या निर्णय करना।

३ समझना, सोचना-समझना।

उ०—१ अकबर अगम अगाध गह, तै रहिया अजतन्न। वाचै त्यूं ही **विचारियौ**, कमधै साचै मन्न। —रा. रू.

उ०—२ चिहुं पखि दल मांडी कांइं हौ राउ छांडी, हरखि हसीय नारी बोल बोलइ **विचारी**। —सालिसूरि

४ ध्यान देना, अमल करना।

उ०—१ आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार। दादू मूळ **विचारियै**, तौ दूजा कौन गवार। —दादूबांणी

उ०—२ थें तौ म्हारै दुख री परवा नीं करौ, पण म्हनैं तौ थांरौ भलौ-भूंडौ **विचारणौ** ई पड़ै। म्हारौ कैणौ मांनौ, गंगाजी पाळा मत जावौ, नामी बळदां री कोई गाडी भाड़ै करलौ। —फुलवाड़ी

उ०—३ औरंगसा पातसाह आलम कूं चितारै, अकबर कै त्रास की चिंता नां **बिचारै**। साह अवरंग कै पास या समै आवै, सौ तौ मनसब रीझ इनांम मनवछ्या पावै। —रा. रू.

५ निर्माण करना, रचना करना।

६ निश्चय करना, संकल्प करना।

उ०—१ फजल सेख खुलंती फज्जर, असुर घसै लागौ अति आतुर। अस न खड़ै रिणछोड़ उताळौ, चूरण खळां **विचारै** चाळौ। —रा. रू.

उ०—२ थापनां मंन मांहि **विचारी**, साध रहै याकै पूजारी। अपणै पूजा कछुव न आवै, साध पथ कै गुरू कहावै। —मेहोजी गोदारौ थापन

७ सन्देह करना, शंका करना।

उ०—राउ भणइ नइं किसउं पवारउ, हिव तुम्हि मइं सु घरि

पाउधारौ। राजु तुम्हारउं पूत्तू तुम्हारउ, अजीउ गंगे किसुं विचारउ
—सालिभद्र सूरि

८ चिन्तन करना, मनन करना।

उ०—जळ थळ महीयल पेखतां, संसार सुधारै, ब्रह्माग्यांनी सो वडा, जो ब्रह्म विचारै। कुदरती किरतार की करणी बळिहारै, रिजक पांणी हयात मोत, उस अला सारै। —केसोदास गाडण

९ अनुसन्धान करना, खोज करना।

उ०—सतगुर का सिख जांणि, विचारै ग्यांन कूं। तन मन सौंपे सीस, धरै उर ध्यांन कूं —अनुभववांणी

१० सोचना।

उ०—१ हमैं कूंवरसी मोहलां में गयौ। सो मन न लागै, रात दिन भरमल मैं जीव वसै। तद वीठू रावजी नुं कही, जो सांवण री तीज रौ कोल कर आयौ छै, सो उठै गयौ रहसी। जिणसुं जतन विचारणौ हुवै सु विचारौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुं पण जांणूं छूं जो बीजौ तौ मैं सुं पोहचा नाया। तद औ घाट विचारीयौ छै, जो आंधी छोहरी घर सुं काढसां, उण नुं मारसां। सो हुं सरब जांणूं छूं।—कुंवरसी सांखला री वारता।

विचारणहार, हारौ (हारी), **विचारणियौ**—वि०।

विचारिओड़ौ, विचारियोड़ौ, विचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचारीजणौ, विचारीजबौ—कर्म वा०।

बिचारणौ, बिचारबौ, बीचारणौ, बीचारबौ, वचारणौ, वचारबौ
—रू० भे०

विचारमांन, विचारवांन–वि. [सं. विचारवान्] जिसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो।

रू. भे.—बिचारमांन, बिचारवांन।

विचारसकति, विचारसकती, विचारसक्ति, विचारसगति, विचारसगती–स. स्त्री. [स. विचारशक्ति] भला-बुरा पहचानने व सोचने-विचारने की शक्ति, बुद्धि।

विचारसासतर, विचारसास्त्र–सं. पु. [सं. विचारशास्त्र] मीमांसा शास्त्र या मीमांसा दर्शन।

विचारसील–वि. [सं. विचारशील] जिसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो, विचारवान।

विचारसीलता–सं. स्त्री. [सं. विचारशील+ता प्र.] विचारशील या विचारवान् होने का भाव, बुद्धिमता, अक्लमंदी।

विचारस्थळ–सं. पु. [सं. विचारस्थल] १ वह स्थान जहां किसी विषय पर विचार किया जा रहा हो।

२ न्यायालय।

विचाराध्यक्ष–सं. पु. [सं. विचारः+अध्यक्ष] १ वह प्रमुख व्यक्ति जो किसी विषय पर विचार करता हो।

२ न्यायालय में किसी विषय पर विचार करने वाला प्रमुख व्यक्ति, न्यायाधीश।

विचारालय–सं. पु. [सं. विचारः+आलय] १ विचार किया जाने वाला स्थान।

२ न्यायालय।

(मि.—'विचारस्थळ'।)

विचारि—देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—१ निसुणि नारि विचारि ठा पयसियइ, प्रीय तणी तडि कडतिगि बयसियइ, सिरि पडिइं भड नइं घड धाउतइं, सुहउ कोडि हणी तुझ राउतिइं। —सालिसूरि

उ०—२ पहिउलउ वेटउ करमदोसि बालपणि विवनउ, विचित्र-वीरयु बीजउ कुमारु बहुगुणसंपन्नउ। राउ पहूतउ सरगलोकि गंगेयकुमारि, तउ लघु बंधक ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि।
—सालिभद्र सूरि

विचारिका–सं. स्त्री.—दासी, नौकरानी।

विचारित–वि.—१ जिस पर विचार किया जा चुका हो।

२ जो अभी विचाराधीन हो।

विचारियोड़ौ–भू का. कृ.—१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श किया हुआ, सोचा हुआ या सोच कर निश्चित किया हुआ. २ किसी मुकदमे की सुनवाई किया हुआ या सुनवाई करने के बाद फैसला या निर्णय किया हुआ. ३ समझा हुआ. ४ ध्यांन दिया हुआ, अमल किया हुआ. ५ निर्माण किया हुआ, रचना किया हुआ. ६ निश्चय किया हुआ, संकल्प किया हुआ. ७ सन्देह किया हुआ, शका किया हुआ. ८ अनुसन्धान किया हुआ, खोज किया हुआ. ९ सोचा हुआ. १० चिन्तन किया हुआ, मनन किया हुआ.

(स्त्री. विचारियोड़ी)

विचारी–सं. पु [सं. विचारिन्] १ कबंध राक्षस का एक पुत्र।

सं. स्त्री.–२ जिस पर चलने के लिए बड़े बड़े मार्ग बने हों, पृथ्वी।

३ देखो 'बेचारौ' (पु०)

विचारु–सं. पु. [सं.] १ श्री कृष्ण और रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक वासुदेव का पौत्र।

२ देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—पांचइ गाईय सुर सुरलोकि सुरवाट सिरु धूणाविया ए, महीयलै महिलीय करइं विचारु 'कवणु कीउ तपु द्रूपदिय'।
—सालिभद्र सूरि

विचारौ—१ देखो 'वेचारौ' (रू. भे.)

उ०—१ नैनवा कौ चूक कन्हईया, मन विचारौ पाय रह्यौ दुख। रसीलाराज करै सो पावै, रै यौ तौ अनोखौ न्याव कन्हईया।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊबरै वचन्नां हीरण टाळो देर हुवौ आधौ, साधौ सारौ मेलगौ संग्रांम हेकै साथ। सोढी काज लपेटौ भालाळै सताबी सूंप्यौ, विचारौ सु'रद्रां लोक बणी आ विख्यात।—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ हरीया पीर परापती, तन तैं दई लगाय। वेद विचारा क्या करै, बिन भुगत्यां नही जाय। —अनुभववांणी
(स्त्री. विचारी)

विचाळ, विचाल, विचाळा, विचाळि, विचाळी, विचाळ, विचाळे, विचाळै—देखो 'विचै' (रू. भे.)

उ०—१ चक्री विचाळ, रघुवर विसाळ, जंपै जरूर, सुण भरथ सूर। हणमंत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव किनी कपेस।
—र. रू.

उ०—२ बीजौ निग्रह जुध जितूं कोप करि नांखै, 'बीदा' असि अरि घड़ां विचाळ। इळ पुड तैण आकंपै आहुंस, पनंग कंध रुखै पायाळ।
—गेहौ मीसण

उ०—३ साथी छाडि गयौ'सूजा' सुत,तिसियौ लोह तरणि रिणताळ। दांमणि चमकि झमकितै दुजड़ै, वणीयौ गूजर घड़ा विचाळ।
—खेतसी गाडण

उ०—४ चोथौ प्रस्न रसाल रे, सुण 'केसी' स्वांमी, भरी परिसदा विचाल रे। —जयवांणी

उ०—५ परन्हैं गया पाधरा रे. सांभल्यउ जेथ सुकाल। मांणस संबल विण मूआ रे, मारग मांहि विचाल। —स. कु.

उ०—६ दावानल बलतौ झलहल नीकलै झाल, बहु व्रक्ष सघन वन बलै पसु पखी बाल। किण हीक कारण नर आयौ अग्नि विचाल, जिण नांम जलैं अगि ओल्हाये तत्काल।
—ध. व ग्रं.

उ०—७ पतिसाह फउज फूटंति पाळि, व्रहमंड 'जइत' गाजइ विचाळि। अंबहर जइत वरसइ अवार, घुड़ुकिया मोर मुहि खग्ग धार। —रा. ज. सी.

उ०—८ भागां सूर न भजई, भागां गुर नै गाळि। इणीयां एकलमलड़ौ, दोउ दळां विचाळि। —अनुभववांणी

उ०—९ मछा मतै गुमांन करि. तम ही जळ का जीव। तम ऊगण हम आथवण, इती विचाळी पीव। —अनुभववांणी

उ०—१० रिळिया रिणताळां, कट किरमाळां, सीस भुजाळां सूंडाळां, चाले रत खाळां, तेण विचाळां, पंखणियाळां पोखंतूं।
— भगतमाळ

उ०—११ पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ, वेगमां धसै पड़दा विचाळ।
—वि. सं.

उ०—१२ 'मदू' ऊपर 'माधड़ै' बळ, मूंछां वाळी, 'बीरम' आगळ वीरवर समसेर संभाळी। ऐकण घाव ऊडाड़ियो, अजड़ त्रिहूँताळी, 'मदू' पौढै मारकी, रिणखेत विचाळी। —वी. मा.

उ०—१३ अति घख क्रोध दुहूं दळ आंणै, जूटा खगां डडेहड़ जांणै। घण खग गजरि जांण घड़ियाळां, वागी फजर कनोज विचाळां। —सू. प्र.

उ०—१४ तौ 'केहर' कहिजै सताब, वाइक विगताळा। कूदि पड़ां गज कटहड़ां, चढि गोख विचाळा। —सू. प्र.

उ०—१५ वात विचाळै आवियौ, आसत खांन दिवांण। फिर अजमेर अजीमदी, तिण विच दयौ कुरांण। —रा. रू.

उ०—१६ भूम 'वहतौ' कौ जण भाळै, वाडवाग निभ समद विचाळै। कमंध खड़ा आगै दस कोसां, दाखै कथ निरदोसां दोसां।
—रा. रू.

उ०—१७ हरीया नीकी नां डरू, वदी खरौ डराय। दोय विचाळै जौवड़ौ, करणी काय न आय। —अनुभववांणी

उ०—१८ तद कुंवर कही, म्है खरळां परणीयां पछै तीज दोय विचाळै गई। जितरै सारौ साथ आंण पूहतौ। तद फुरमावण लागा, म्हां खरळां परणियां पछै आ तीसरी तीज छै।
— कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—१९ तैं ऊपरि पातिसाह अकबर वासौ कियौ। बि फौजां कियां। मिरजै रै वांसै आप पातिसाह पधारिहा। मिरजौ बिहूं फौजां विचाळा अर पातिसाह रा गोडां होइ नीसरियौ। —द. वि.

विचाळौ—वि.—१ मध्यस्थ।

सं. स्त्री—२ मध्यस्थता।

क्रि. वि'—बीच में से।

विचि—सं. स्त्री [सं.] १ तरंग, लहर।

२ कटि, कमर।

उ०—चंपा वरनी, नाक सळ, उर सुचंग विचि हीण। मंदिर बोलौ मारुवी, जांणि भणक्की वीण —ढो. मा.

३ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ करि घड़ वेहड़ गरा केवियां, हाथू कै गळवाह हिचि। हंस वप हूंत विछूटि हालियो, वांटियौ सुरां विमांण विचि।
—तीकमदास खिड़ियौ।

उ०—उपजै प्रेम मन उलसै, वाला लागै लछिवर। माहरै रिदै विचि मिंडिया, चरण तुहारा चक्रधर। —पी. ग्रं.

उ०—३ माहव एक मरद, देव कोई और न दीसै । लाख चौरासी जीव, परम दाढां बिचि पीसै । पी. ग्रं.

उ०—४ तुम मूं विचि अंतर थराउ, किम करूं तोरी सेव । देव न दीधि पांखड़ी, परिण दिल मई तुं इक देव । —स. कु.

उ०—५ निग्र वंस चाढै नूर, करै महाजुध कूंभउत । बगड़ी घणी विराजिओ, सूर सभा बिचि सूर । —र. वचनिका

उ०—६ ऊभी सहु सखिए प्रसंसिता अति, किंतारथी प्री मिळण क्रत । अटत सेज द्वार विचि आहुटि, स्रुति दे हरि घरि समन्वित । —वेलि.

रू. भे.—विचि, बीचि, विची ।

विचित, विचित्त–वि. [सं.] १ अचेत, बेहोश ।

२ आनन्द-मग्न ।

उ०—रांम नांम सुख सागर भरीया, चाख्या चित विचित हुय रहीया । चाखि चाखि मैं भया निहाला, पांयु जे कोई पीयें पीयाला । —अनुभववांणी

३ देखो 'विचत्र' (रू. भे.)

उ०—वांका **विचित्त** पाधोर वक, तांणइ कमांण पइंतीसटंक । आयासि पखि पाड़इ अभुल्ल, मांकड़ामुक्ख मुंडा मुगुल्ल । —रा. ज. सी.

विचित्र–वि. [सं.] १ कई प्रकार के रंगों या वर्णों वाला ।

२ अद्भुत, अनोखा, विलक्षण, विस्मयकारक ।

उ०—१ दूत तिहां एक आवियौ, जास वचन सुपवित्र । कर जोड़ी न्रप आगलै, मेल्हौ लेख विचित्र । —वि. कु.

उ०—२ जिनवर दीधी देसना, **बिचित्र** प्रकार ना भावौ जी । आगार नै अणगार नौ, चतुरां सुण्यौ धरि चावौ जी ।—जयवांणी

३ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—१ प्रजंक ओप तें अनोप रूप चूंर पार में, हुए विछात सूळि लूंब झूल फूल हार में । अनूप ताक गोख स्त्रीविचित्र चित्र सूं अटा, घणूं उतंग अंग जांणि स्रंग मेघ ची घटा । —रा. रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति तिण राजांन कुंअर राजाउत माहू ठाकर रै च्यार पटरांणी छै । नांम सिणगार सुंदरी सोभाग सुंदरी, सरूप सुंदरी, मदन सुंदरी, साख्यात देवांगनां पदमणी बिचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जांणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसती रौ अवतार बारह आभूखन विराजमांन हुआ छै । —रा. सा. स.

४ चतुर, बुद्धिमान, होशियार ।

उ०—मदिरंतरि किया खिणंतरि, मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत । कीधै तिणि वीवाह संतक्रित, करण सु तणु रति संस्क्रत । —वेलि.

सं. पु.—१ रौच्य मुनि के कई पुत्रों में से एक पुत्र का नाम । (पुराण)

२ देवसावर्णि मनु के पुत्रों में से एक पुत्र ।

३ महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष का एक राजा, जो क्रोधवश नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था ।

४ धर्मराज (यम) का एक लेखक ।

५ एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसके द्वारा किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है ।

६ मुसलमान, यवन ।

उ०—१ सेना सितर हजार सूं, बिचित्र अमित्र बळवांन । कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखांन । —रा. रू.

उ०—२ इण पर तहवर खांन अछायौ, **बिचित्र** हुवौ लड़तां रस बायौ । निर हिंदवांण तणौ रीसायौ, 'औरंग' पीठ लगे हिज आयौ । —रा. रू.

उ०—३ वात हुई ग्रीखम बौळाई, ऊपर धुर वरखा रुत आई । असतखांन उर थयौ अचींतौ, **बिचित्रां** तणौ सोच सुण बीतौ । —रा. रू.

उ०—४ **विचित्रां** आदर दाख बमेक, आपै दोय तेग अनै अस एक ईखै अस सुद्रव चीज अथाळ, 'मालावत' लोभ धरै जगमाल । —गो. रू.

उ०—५ वेसै विचित्र सिंदूर वन्न, कूंडी कपाळ के छाज कन्न । कद्दी करगि वाचइ कुरांण, मुसकीण मुलां के मुसळमांण । —रा. ज. सी.

रू. भे.—बिचित्र, वचत, वचत्र, विचत्र, विचित, विचित्त, विचित्रांण, विचित्रायळ, विच्यत्रि ।

विचित्रता–सं. स्त्री. [सं. विचित्र+ता, प्र.] विचित्र होने की अवस्था या भाव ।

उ०—मित्रता मिळापी मेळ प्रीति की पवित्रता त्यौं, विविध **विचित्रता** विधांन बडरन कै । रहन अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधौ, कहण सुणण कथा यथा तौर तन कै । —ऊ. का.

रू. भे.—बिचित्रता ।

विचित्रवीरज, विचित्रबीरय, विचित्रवीरयु, विचित्रवीरय्य–सं. पु. [सं. विचित्रवीर्य] १ चंद्रवंशी राजा शांतनु का सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र जिसका विवाह काशीराज की राजकुमारियां अंबिका एवं अंबालिका के साथ हुआ था । (महाभारत)

उ०—१ पहिलउ बेटउ करमदोसि बालप्पणि विवनउ, **विचित्र**-विरयु बीजउ कुमारु बहुगुणसंपन्नउ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अंबानंदणु विदुरु नांमु नांमि जि सरीखउ, खइ खीणइ पुणु विचित्रविरयु पंडु राजि प्रतीठिउं। —सालिभद्र सूरि

वि. वि.—यह चित्रांगद का कनिष्ठ भ्राता था। चित्रांगद गंधर्व युद्ध में मारा गया, इसलिए भीष्म ने इसे राजगद्दी पर बैठाया। भीष्म ने काशीराज की कन्याऐं अंबा, अंबिका एवं अंबालिका को स्वयंवर में जीत लिया एवं उनका विवाह इससे करना चाहा। किन्तु उनमें से अंबा ने इससे विवाह करने से इन्कार कर दिया। शेष दोनों राज- कुमारियों अंबिका एवं अंबालिका के साथ इसका विवाह हो गया। असंयमपूर्ण जीवन के कारण, यह राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, एवं अल्पवय में ही अनपत्य अवस्था में इसकी मृत्यु हुई। इसकी मृत्यूपरान्त भीष्म ने अंबिका एवं अंबालिका को नियोग-पद्धति से संतान उत्पन्न करने की आज्ञा दी। तदनुसार सत्यवती के कौमार्यावस्था के पुत्र कृष्णद्वैपायन (व्यास) से अंबिका एवं अंबालिका के क्रमशः धृतराष्ट्र एवं पाण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुए और अंबिका की दासी से विदुर उत्पन्न हुआ। धृतराष्ट्र जन्मांध एवं पाण्डु का रंग पीला था।

२ एक शिव भक्त, जो शिव की उपासना के कारण जीवनमुक्त हुआ था।

३ वीर भद्र नामक एक शिवगण, जिसने दक्षयज्ञ का विध्वंसन किया था।

वि. वि.—यह चित्रांगद(गंधर्व)का पुत्र था जो पूर्वजन्म में एक विधवा ब्राह्मणी तथा चांडाल का पुत्र था, पर अनायास शिवरात्रि व्रत के करने से चित्रांगद का पुत्र हुआ। जन्मान्तर में शिवसायुज्य को प्राप्त हो कर यही शिवगण वीरभद्र हुआ। (यह शांतनु के पहले की बात है।)

विचित्रसाळा—सं. स्त्री. [सं. विचित्रशाला] जहां अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थों का संग्रह हो, अजायबघर।

विचित्रांण—देखो 'विचित्र' (६) (रू. भे.)

उ०—कमधज्ज सकज्जां कारणां, कळा भुजा मापै कवण। विचित्रांण घणो इम विग्रहै, गहियौ किर पड़तौ गयण। —रा. रू.

उ०—२ विचित्रांण निवड घड़ महण वेळ, मुरधरां हुय नजर मेळ। —रा. रू.

विचित्रा—सं. स्त्री.—भैरव राग की एक रागिनी। (संगीत)

विचित्रायळ—देखो 'विचित्र' (६) (रू. भे.)

उ०—कलमी अस देवळ दैण कीयूं, लोवड़ी प्रतपाळ यूं रावै लियूं। विचित्रायळ लूंटत चार वळा, रन मांभळ म्है वन वाळ रुळा। —पा. प्र.

विचित्रित—वि. [सं.] १ विभिन्न प्रकार के रंगों से वचित्रित, रंग-विरंगा।

२ अनोखा, अद्भुत।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य, आरण्य-रुदन वत भी अयोग्य। प्रिय जाट पुत्रि वत प्रस्नपेस, पितु कति पपीलिका बिल प्रवेस। —ऊ. का.

रू. भे—बिचित्रित

विची—१ देखो 'विचि' (रू. भे.)

२ देखो 'बीच' (रू. भे.)

विचेत—देखो 'वेचेत' (रू. भे.)

विचेतन—वि. [सं.] १ जिसमें चेतना न हो, विवेकहीन, बेहोश।

२ जिसमें जीव न हो, जीवरहित, मृत।

विचेटियौ—देखो 'बिचेटियौ' (रू. भे.)

विचेतस—सं. पु. [सं.] भव्य देवों में से एक

विचेरण—क्रि. वि.—मध्य में, बीच में।

उ०—क्या फेरैं कर काठ की, मन की माळा फेर। जनहरिया माळा फिरै, विनां विचेरण मेर —अनुभववांणी

विचेस्ट—वि. [सं. विचेष्ट] जो किसी प्रकार की चेष्टा न करता हो, निश्चेष्ट।

विचै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ अंबखास विचै बांणास आछटै, कहर 'पदम' धमजगर करि। 'मोहण'-मरण किया मारहथ, अेकण घाय छ-टूक अरि। —पदमसिंघ करणसिंघोत राठौड़ रौ गीत

उ०—२ दिन ३ गढ नूं ढोवौ हुवौ। पछै गढ माहिलां रा प्रांण छूटा। पछै रा. गोपाळदास, रा. वीठळदास, रा. नाहरखांन विचै रावळ सबळसिंघ, भाटी रांमसिंघ पंचाइणोत फेर नै वात कीवी। —नैणसी

उ०—३ खंगार पण मोटौ हुवौ। वरस २० तथा २२ मांहै हुवौ। साहबी संभाही। तरै साथ करनै रावळ नै यां विचै सीप नदी छै, तठै आयौ। पैली कांनी सूं रावळ मांणस हजार सात-आठ सूं आयौ। —नैणसी

उ०—४ सवार हुवै वळै वेढ हुवै। यूं बारै बरस वेढ कीवी। आसापुरा देवी विचै दी नै लीवी, तिण सूं दिन दिन रावळ नूं हार आवती जाइ। —नैणसी

उ०—५ विचत्रां रज धू धर विचै, ऊलां कोध प्रमांण। बहुरंगी चीधां लखी, 'अवरंगी' नीसांण। —रा. रू.

उ०—६ गावड़ जांणें खरादी खराद उतारी छै । कमळ नाळसी बांहां लाल चूड़ौ वणिग्रौ छै । विचै सोव्रन चूड़ी विराज रही छै ।
—रा. सा. सं.

मुहा.—विचै देणौ=(१) शपथ लेना, सोगन लेना ।
(२) मध्यस्थ करना ।

विच्चखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)
उ०—वीर **विच्चखण** क्रीत तणौ वर, ढाहण खाग ग्ररिंदा ढूको । 'नाथ' तणौ सुरतेस ग्रभै नर, चित ठीक नहीं कुळ रीत न चूको ।
—सूरतसिह चहुवांण रौ गीत

विच्चार—देखो 'विचार' (रू. भे.)
उ०—पातसाह ग्राळोज, मन्न **विच्चार** विमासै । बळ छळ दळ दक्खवै, पांण विन्नांण कळासै ।
—गु. रू. वं.

विच्छवांन—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)
उ०—सुरंग रंगभोमि में तरंग है न तांन की, ढमंक ढोलकी न त्यूं घमंक घुग्घरांन की । छमंक **विच्छवांन** की दमंक ना दरीन की, झमंक जेहरांन की चमंक नां चुरीन की ।
—ऊ. का.

विच्छाय, विच्छाया–सं. पु. [सं. वि.+छाया] १ पक्षियों की छाया ।
[सं. वि.=विगत+छाया] २ वह जिसकी छाया नहीं पड़ती हो, भूत, प्रेत, देवता, दानव ग्रादि ।
वि. [स. वि=रहित+छाया=कान्ति] कान्तिहीन, चमकरहित ।

विच्छिग्र–सं. पु. [सं. वृश्चिक] बिच्छू ।

विच्छिण, विच्छिण्ण–वि. [सं. विस्तीर्ण] १ फैला हुग्रा, विस्तृत ।
२ देखो 'विच्छिन्न' (रू. भे.)

विच्छित्ति, विच्छित्ति–सं. स्त्री. [सं. विच्छितिः] १ काट कर ग्रलग करने की क्रिया या भाव, टुकडे करने की क्रिया या भाव ।
२ कविता में या वेशभूषा ग्रादि में होने वाली लापरवाही या बेढंगापन ।
३ स्त्री द्वारा थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा का साहित्य में एक भाव ।
४ साहित्य का चमत्कार ।
५ एक स्वाभाविक ग्रलकार विशेष जिसके ग्रनुसार माला, वस्त्रा-भूषणादि के ग्रस्तव्यस्त धारण करने से सौन्दर्यवृद्धि ग्रोर मतान्तर से कान्ति के पोषक किंचित् रचना-कलाप ।
रू. भे.—बिच्छिति, बिच्छित्ति ।

विच्छिन, विच्छिन्न–वि. [स. विछिन्न] १ जुदा, पृथक, ग्रलग ।
२ जिसका विच्छेद हुग्रा हो ।
३ समाप्त किया हुग्रा ।

विच्छु–१ देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)
२ देखो 'विछू' (रू. भे.)

विच्छुड़णौ, विच्छुड़बौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)
उ०—पड़ी **विच्छुड़ी** दाड़मी जांणि पक्की, दिपै ग्रारपारां हजारां दरक्की । वधै ग्रग्र सूरां 'ग्रभौ' खग्ग वाहै, सुतौ वाह सी वाह चंडी सराहै ।
—रा. रू.
विच्छुड़णहार, हारौ (हारी), विच्छुड़णियौ—वि० ।
विच्छुड़िग्रोड़ौ, विच्छुड़ियोड़ौ, विच्छुड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विच्छुड़ीजणौ, विच्छुड़ीजबौ—भाव वा० ।

विच्छुड़ियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विच्छुड़ियोड़ी)

विच्छुड़ी—देखो 'बिच्छुड़ी' (रू. भे.)

विच्छुड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. विच्छुड़ी)

विच्छू—देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)

विच्छूड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. विच्छूड़ी)

विच्छेद–सं. पु. [सं. विच्छेदः] १ छेद कर या काट कर ग्रलग करने की क्रिया ।
२ बीच में ही किसी क्रम के टूट जाने की क्रिया या भाव ।
३ नाते या रिश्तों को तोड़ने की क्रिया ।
४ किसी प्रकार ग्रलग या टुकडे टुकड़े करने की क्रिया ।
५ ग्रध्याय, परिच्छेद या कविता में यति ।
रू. भे.—बिच्छेद, विछेद, विछेद ।

विच्छेदक–वि. [सं.] १ काट कर ग्रलग करने वाला ।
२ नाते-रिश्ते तोड़ने वाला ।
३ विभाग करने वाला ।

विच्छेदण–सं. पु. [सं.] काट कर या छेद कर ग्रलग करने की क्रिया ।
रू. भे.—विच्छेदन ।

विच्छेदणौ, विच्छेदबौ–क्रि. स.—१ छेद कर या काट कर ग्रलग करना ।
२ नाते-रिश्ते तोड़ना ।
३ किसी प्रकार ग्रलग-ग्रलग या टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना ।
४ छोड़ना, मुक्त करना ।
५ खोलना ।
६ बीच में ही किसी क्रम को तोड़ देना ।
विच्छेदणहार, हारौ (हारी), विच्छेदणियौ—वि० ।
विच्छेदिग्रोड़ौ, विच्छेदियोड़ौ, विच्छेद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विच्छेदीजणौ, विच्छेदीजबौ—कर्म वा० ।
बिच्छेदणौ, बिच्छेदबौ, बिछेदणौ, बिछेदबौ, वच्छेदणौ, वच्छेदबौ, वछेदणौ, वछेदबौ, विछेदणौ, विछेदबौ—रू० भे० ।

विच्छेदन—देखो 'विच्छेदण' (रू. भे.)

विच्छेदियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ छेद कर या काट कर ग्रलग किया

हुआ. २ नाते-रिश्ते तोड़ा हुआ. ३ किसी प्रकार अलग-अलग या टुकड़े-टुकडे किया हुआ, विभक्त किया हुआ. ४ छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ. ५ खोला हुआ. ६ बीच में ही किसी क्रम को तोड़ा हुआ।

(स्त्री. विच्छेदियोड़ी)

विच्छेदी-वि. [सं. विच्छेदिन्] छेद कर या काट कर अलग करने वाला।

विच्छोड़णौ, विच्छोड़बौ—देखो 'बिछोड़णौ, बिछोड़बौ' (रू. भे.)

विच्छोड़णहार, हारौ (हारी), विच्छोड़णियौ—वि०।

विच्छोड़िग्रोड़ौ, विच्छोड़ियोड़ौ, विच्छोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विच्छोड़ीजणौ, विच्छोड़ीजबौ—कर्म वा०।

विच्छोड़ियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विच्छोड़ियोड़ी)

विच्छोटणौ, विच्छोटबौ—देखो 'बिछोड़णौ, बिछोड़बौ' (रू. भे.)

विच्छोटणहार, हारौ (हारी), विच्छोटणियौ—वि०।

विच्छोटिग्रोड़ौ, विच्छोटियोड़ौ, विच्छोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विच्छोटीजणौ, विच्छोटीजबौ—कर्म वा०।

विच्छोटियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विच्छोटियोड़ी)

विच्छोह—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

उ०—मित्र अनइ मित्रह नी घरणी हूंतउ अधिकउ मोह। कुणहिं कु बोलइ माहोमाहि कीधउ वाग विच्छोह। —हीराणंद सूरि

विच्छोहणौ, विच्छोहबौ—देखो 'विछोहणौ, विछोहबौ' (रू. भे.)

उ०—धरा मोर खेंगां खुरां जोर धूजे, मरै वग्ग विच्छोहिया अग्ग मूजै। हमल्लां असां सेस चा सीस हल्लै, दिसा अग्र बाजू सकाजू दहल्लै। —रा. रू.

विच्छोहणहार, हारौ (हारी), विच्छोहणियौ—वि०।

विच्छोहिग्रोड़ौ, विच्छोहियोड़ौ, विच्छोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विच्छोहीजणौ, विच्छोहीजबौ—कर्म वा०।

विच्छोहियोड़ौ—देखो 'विछोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विच्छोहियोड़ी)

विच्यत्रि—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—अम्हारी सासू तणु सणगार वरणवू, पणि कसिउ एक छि जे सासू तणु सणगार ? करि कंकण सोवरणमि चूडी, रूपइ रंभा अनि रूअडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउलिहार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार,······। —व. स.

विछंडणौ, विछंडबौ-क्रि. स.—१ मारना, संहार करना।

उ०—जद जावै रे जद जावै, झठ सेस गयौ समझावै। रे मीत नचित हुवौ कपराजिद, याद हरी नंह आवै। तोरौ वीर विछंडे तीरां, थां गत सो हिव थावै।—र० रू०

२—देखो 'बिछोड़णौ, बिछोड़बौ'—रू. भे.

विछंडणहार, हारौ (हारी), विछंडणियौ—वि०।

विछंडिग्रोड़ौ, विछंडियोड़ौ, विछंड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विछंडीजणौ, विछंडीजबौ—कर्म वा०।

विछंडियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ।

२ देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विछडियोड़ी)

विछड़णौ, विछड़बौ—देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ सतुगुरु मिल्या सहज घर पाया, विछड़्या हंस मिळाया। उलटा सहज आपमें मिळग्या, पद निरवांणी पाया। —स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ तठा उपरांत करिनै राजांन सिलांमति सिकारी ठौड़ पहाड़ां री पाखती वनां रा झंगार मिळिनै रहिया छै, जांणै घणां दिनां रा विछड़ी मीत मिळै तिण भांति रा रूंख मिळि नै रहिया छै —रा. सा. सं.

उ०—३ सुंदर आठै मुळकंती, ऊभी महलां रै माह। इण उणियारै लोयणां, निरख्यौ नवला नाह। रहौ रहौ बलहा विछड़ौ क्यूं इण बार। —जयवांणी

विछड़णहार, हारौ (हारी), विछड़णियौ—वि०।

विछड़िग्रोड़ौ, विछड़ियोड़ौ, विछड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विछड़ीजणौ, विछड़ीजबौ—भाव वा०।

विछड़ाणौ, विछड़ाबौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)

विछड़ाणहार, हारौ (हारी), विछड़ाणियौ—वि०।

विछड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विछड़ाजईणौ, विछड़ाईजबौ—कर्म वा०।

विछड़ायोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछड़ायोड़ी)

विछड़ावणौ, विछड़ावबौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)

विछड़ावणहार, हारौ (हारी), विछड़ावणियौ—वि०।

विछड़ाविग्रोड़ौ, विछड़ावियोड़ौ, विछड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विछड़ावीजणौ, विछड़ावीजबौ—कर्म वा०।

विछड़ावियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछड़ावियोड़ी)

विछड़ियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछड़ियोड़ी)

बिछटणौ, बिछटबौ—१ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, बिछट्यौ बिखमी धार। कीधी नारायण कहै, पुत्तर हेत पुकार। —ह. र.

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—अैसें छाया विरख सुं, हरीया रही लपटि। जैसें माया बह्म सुं, कैसें जाय बिछटि। —अनुभववांणी

बिछटणहार, हारौ (हारी), बिछटणियौ—वि०।

बिछटिओड़ौ, बिछटियोड़ौ, बिछट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछटीजणौ, बिछटीजबौ—भाव वा०।

बिछटियोड़ौ—१ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछटियोड़ी)

बिछट्टणौ, बिछट्टबौ—१ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडां भालोड करंत भंभार। एकूकी मूठ बिछट्ट असंख, परै सर फूटै कोरी पंख। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

बिछट्टणहार, हारौ (हारी), बिछट्टणियौ—वि०।

बिछट्टिओड़ौ, बिछट्टियोड़ौ, बिछट्टयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछट्टीजणौ, बिछट्टीजबौ—भाव वा०।

बिछट्टियोड़ौ—१ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछट्टियोड़ी)

बिछण-सं. पु.—दूध दूहते समय, दूध देने वाले पशु के स्थनों को धोने के लिए, दूध दूहने के बर्तन में, ले जाया जाने वाला पानी।

रू. भे.—बिछण।

बिछणौ, बिछबौ—देखो 'बिछणौ, बिछबौ' (रू. भे.)

उ०—हाथ पग मिटी सूं उजळा कीजै छै। कुरळा कीजै छै। सिझ्यावांदण रौ वखत हुवौ छै, वनाती आसण बिछै छै। पीतळ रा भरत रा धूपिया आगै आंण मेलजै छै। —रा. सा. सं.

बिछणहार, हारौ (हारी), बिछणियौ—वि०।

बिछिओड़ौ, बिछियोड़ौ, बिछयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछीजणौ, बिछीजबौ—भाव वा०।

बिछरणौ, बिछरबौ—१ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ सखि आरति चिंता अपहरइ, बिछरया वाल्हेसर मेलइ रे। रोग सोग गमाड़इ कीनर, दुसमणि नइ ठेलइ रे। —स. कु.

उ०—२ काहै कूं अंखियां लगाई नटनायक। समज मिजाल रूप मन मोह्यौ, मिळी बिछरै दुखदायक। —रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'विचरणौ, विचरबौ' (रू. भे.)

३ गमन करना, चलना-फिरना।

उ०—३ जंभ गुरु जग देव भेव कोई विरळा पावै, रहै सरण जो जीव बहुर भव जळ नहीं आवै। विस्णु रूप अवतार परगट पोहमी में आए, सतजुग बिछरै जीव उनकूं ग्यांन चिताए। —कोल्हजी चारण

बिछरणहार, हारौ (हारी), बिछरणियौ—वि०।

बिछरिओड़ौ, बिछरियोड़ौ, बिछरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछरीजणौ, बिछरीजबौ—भाव वा०।

बिछरियोड़ौ—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछरियोड़ी)

बिछळणौ, बिछळबौ-क्रि. स.—१ साफ करना, धोना।

२ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

बिछळणहार, हारौ (हारी), बिछळणियौ—वि०।

बिछळिओड़ौ, बिछळियोड़ौ, बिछळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछळीजणौ, बिछळीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

बिछळाणौ, बिछळाबौ—१ देखो 'विचलाणौ, विचलाबौ' (रू. भे.)

उ०—नार घर की दे रही तांनौ, राज नै लिखती परवांनौ। जावतां समझाया थांनै, फेर मन बिछळाया क्यांनै। —लो. गी.

२ देखो 'विचळणौ, विचळबौ' (रू. भे.)

बिछळाणहार, हारौ (हारी) बिछळाणियौ—वि०।

बिछळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछळाईजणौ, बिछळाईजबौ—कर्म/भाव वा०।

बिछळायोड़ौ—१ देखो 'विचलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछायळोड़ी)

बिछळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ साफ किया हुआ, धोया हुआ।

२ देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछळियोड़ी)

बिछवाणौ, बिछवाबौ-क्रि. स. [बिछाणौ, बिछाबौ क्रि. का प्रे. रू.] बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाना।

उ०—तब दूसरे रोज रघुनाथसिंघ नै दरीखांना बणाया, रजवाड़ूं का मुरतब और दस्तूर सब जणाया। पुरांणीसी विछायत गादी बिछवाई, फाटीसी मसनद रखी पिछवाई। —दुरगादत्त बारहठ

बिछवाणहार, हारौ (हारी), बिछवाणियौ—वि०।

बिछवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विछवाईजणौ, विछवाईजबौ—कर्म वा० ।

विछवायोड़ौ–भू. का. कृ.—बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाया हुआ ।
(स्त्री. विछवायोड़ी)

विछवावणौ, विछवावबौ–क्रि. स. (विछाणौ, बिछाबौ क्रि. का प्रे. रू.) किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराना ।

उ०—उपवन करि अति ग्रेह उसीरां, नोख गुलाब छड़क घण नीरां । जळ गुलाब वेळका जमावै, विमळ पटी सीतळ **विछवावै** । —सू. प्र.

विछवावणहार, हारौ (हारी), **विछवावणियौ**—वि० ।

विछवाविओड़ौ, विछवावियोड़ौ, विछवाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विछवावीजणौ, विछवावीजबौ—कर्म वा० ।

विछवावियोड़ौ–भू. का. कृ.—किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराया हुआ ।
(स्त्री. विछवावियोड़ी)

विछवौ—१ देखो 'बिछवौ' (रू. भे.)
२ देखो 'विछोह' (रू. भे.)

उ०—मरजौ रै राईका, थारोड़ी जी नार, सैणां रौ **विछवौ** दुसमी पाड़ियौ, जी म्हांरा राज । —लो. गी.

विछहौ—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

विछांणौ, विछांनौ—देखो 'बिछांणौ' (रू भे.)

उ०—इळा पिंगळा नाड़ी मिळकर, सुखमनि किया **विछांनी** । अरस परस पीया सुं खेली, मगनां भई दिवांनी । —अनुभववांणी

विछाइत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरांति करिनें राजांन सिलांमति उवां हमांमां महलां बाहरि बाग-बगीचां रा रसता लागा छै । चोकीए **विछाइत** वणी छै । पाखती जळ कूल छूटि नै रही छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ घणं मगाय पांन तांबोल रा रस लीजै छै । ऊजळी सपेत **विछाइत** ऊपरे ऊजळै वणाव कियां ऊजळी रुसनाई लाग रही छै । इण भांति सूं हेमंत रित मांहै रात रा सुख विलास मांणीजे छै । —रा. सा. सं.

विछाणौ, विछाबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चौकी रूप पिलंग चढाए, विमळ पुहप घण सेज **विछाए** । सेझ पहुप प्रफुलित इम सोहै, मदन वसंत इंद्र मन मोहै । —सू. प्र.

उ०—२ जनहरीया चढि ग्यांन गज, जाजम अधर **विछाय** । जगत सरूपी कूकरा, भुसळि मरौ भसि जाय । —अनुभववांणी

उ०—३ हरीया अपनै पीव सुं, सूती सेझ **विछाय** । जौ राखै मन ओर सुं, तौ विभचार कहाय । —अनुभववांणी

उ०—४ एक बोलै करड़ा बोल ए, खेद उपजाय सटकै दे खोल ए । मांगै दूजा कनै जाय ए, तरै गिदरौ देवै **विछाय** ए । —जयवांणी

उ०—५ जिकै दिगपाळ रजपूत सांमंत अजांनबांह ठाकुर अड़ा-बीड़ दरबारै आइ खड़ा रहिआ छै । दरबार दुलीचा **विछाइजै** छै । —रा. सा. सं.

विछाणहार, हारौ (हारी), **विछाणियौ**—वि० ।

विछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विछाइजणौ, विछाइजबौ—कर्म वा० ।

विछात, विछाति, विछायत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ प्रजंक ओप तें अनोप रूप चूंप पार में, हुए **विछात** सूलि लूंब-झूल फूल हार में । अनूप ताक गोख स्री-विचित्र चित्र सूं अटा, घणूं उतंग अंग जांणि स्रंग मेघ ची घटा । —रा. रू.

उ०—२ सह बैठत जांन **विछात** सरै, बकियौ सुत सारंग पूरव रै । विप सोध जड़ां वसु वासव मैं, वरतै मुख वायक आसव मैं । —पा. प्र.

उ०—३ जिकै दिगपाळ रजपूत सांमंत अजांनबाह ठाकुर अड़ाबीड़ दरबारै आइ खड़ा रहिआ छै । दरबार दुलीचा विछाइजै छै । विछात वणि नें रही छै । दरबार वणियौ छै । —रा. सा. सं.

उ०—४ तठै विलाइत री गंथी चटाइ अमोलक विछाइ रही छै । तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरै ढोलिआ गिलमां री **विछाति** बणिनें रही छै । —रा. सा. स.

उ०—५ **विछायत** पर बैठे, सरब ही कबीसर, अवरी का केड़, जिसकूं सरस्वती का वर । जिस विछायत पर, थटाव चरचा कै थहै । और भी कवीसुरां नै, क्या क्या ग्रंथ कहै । —बां. दा.

उ०—६ अबदुल्ला उर मंडळ आयत, वणी मिळण कज सौज **विछायत** । सैदां मिळण लियां दळ साजा, रीझै गयौ [अजो] महा-राजा । —रा. रू.

विछायतु–सं. पु.—बिछाने का वस्त्र ।

विछायोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विछायोड़ी)

विछाळ, विछाल—देखो 'विसाल' (रू. भे.)

उ०—छाड्यौ नयर विछाल छौ, छाड़चा सांभरि का रिणवास । येक बलावै बाहुड़चा, नाह उतरीगौ नदीय बनास । —बी. दे.

विछावण, विछावणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

उ०—२ वसंत रै विखै स्रीक्रस्ण रै घर पुहुप ही का छै । ओढणा **विछावणा** पणि पुहपां ही का छै । पुहपांहि कै हींडोळै स्रीक्रस्ण हींडइ छै । सखी छैं सो भी सब पुहपां माहैं छै । —वेलि टी.

उ०—२ विधि सूं करी बिछावणा, बिच मैं मेल्यौ थाल । भोजन की वेला हुई, ग्राय बैठो भूपाल । —जयवांणी

उ०—३ तठा उपरांयंत जाजमां गिलमां रा बिछावणा हुयनै रह्या छै। ऊपरा गदरा चांदणी बिछायजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—४ ज्यां रै खाख बिछावणौ, ग्रोढण नूं ग्राकास । ब्रह्म पोख संतोख वित, पूरण सुख त्यां पास । —बां. दा.

बिछावणौ, बिछावबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिवकै गाढ घणी करै। जीमै मत ही । ग्रर तूं जोर घातै, म्हारी बहू हुं लेनै जाइस्यूं। ग्रर जै न मेल्है तो लाकड़ी वहाड़ै। पिण वहू विगर लीयां घर मतां ग्राए। ढांच बिछाई ग्रर कहुं छुं । —कांवळौ जोईयौ नै तीडौ खरळ री वात

उ०—२ एक दिन रजपूत राजा रौ कुंवर वरस ५.६ रो हतौ, तिकै नुं रांमति लगाईनै डेरै लायौ। ग्रांणि कुंवर नुं नै ढोलियौ बिछाई बिछांवणा करि कुंवर नुं वैसांणियौ।
—बाप री सीख री वात

उ०—३ देव तेरी वाटड़ियां बलि जांव, जांह म्हारौ सांई सतगुर ग्रावियौ । पगि पगि घरूं तंबोल, वाटड़ियां म्हारै गुर कै फूल बिछावियै। —ऊदौजी नैण

बिछावणहार, हारौ (हारी), बिछावणियौ—वि० ।
बिछाविग्रोड़ौ, बिछावियोड़ौ, बिछाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछावीजणौ, बिछावीजबौ—कर्म वा० ।

बिछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछावियोड़ी)

बिछिग्रौ—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)

उ०—पग री राती पींडी खालिमी कूतरा री जीभ सारिखी, लाल कमळ चरण जावक महिदि रंग सूं विराज रहिग्रा छै। पग ग्रंगुळी राईवेलि री कळी हीरा सा नख ग्रारीसा ज्यौं झांखि रहिग्रा छै। ऊपरै ग्रणोट पोल पावटां बिछिग्रां रो वणाव वणि नै रहिग्रौ छै। —रा. सा. सं.

बिछियोड़ौ—देखो 'बिछियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछियोड़ी)

बिछियौ, बिछीयौ—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाजन लागे ग्राज मनमोहनी, मधुर धुन नूंपर बिछिया किंकनी। चमकन लागे चीर जरी कै, सीसफूल नथ सोहनी ।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ छुद्रघंटा बिछियों का छूटे छणछणाव, ज्यो हंसे बच्चों की बांणी का बणाव। जांभरू का झणकार व्है जोरै पर जोर, सांवण कै मौसम ज्यौं झिल्ल्यां का सोर —रा. सा. सं.

उ०—३ सती माता, तेरा बिछिया रांणी, घड़िया छै मंगळ वारां जी। ग्रेक ज बार ज पैरिया, रांणी, लीना छै बांमण्यां उतार जी।
—लो. गी.

उ०—४ चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहण-हार सोळै सिणगार ठवियां थकां फूलां रा चौस पैहरियां थकां टोय ग्रणियाळां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणां री झोक नांखती पायलै रै ठमकै सूं घूघरै रै घमकै सूं बिछीयां रै छमकै सूं रमझोळ करती ग्रंगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चाली जाए छै।
—रा. सा. सं.

उ०—५ भूखण जांणि भुजंग सा, चउकी चाक समांन । बीछु सम ए बिछिया, सिज्या ग्रगनि समांनो रे। —प. च. चौ.

बिछुड़णौ, बिछुड़बौ—देखो 'बिछुड़णौ बिछुड़बौ' (रू. भे.)
बिछुड़णहार, हारौ (हारी), बिछुड़णियौ—वि० ।
बिछुड़िग्रोड़ौ, बिछुड़ियोड़ौ बिछुड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछुड़ीजणौ, बिछुड़ीजबौ—भाव वा० ।

बिछुडाड़णौ, बिछुडाड़बौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)
बिछुडाड़णहार, हारौ (हारी), बिछुडाड़णियौ—वि० ।
बिछुडाड़िग्रोड़ौ, बिछुडाड़ियोड़ौ, बिछुडाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछुडाड़ीजणौ, बिछुडाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिछुड़ाड़ियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछुड़ाड़ियोड़ी)

बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)
बिछुडाणहार हारौ (हारी), बिछुड़ाणियौ—वि० ।
बिछुड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछुड़ाईजणौ, बिछुड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

बिछुड़ायोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछुड़ायोड़ी)

बिछुड़ावणौ, बिछुड़ावबौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)
बिछुड़ावणहार, हारौ (हारी), बिछुड़ावणियौ—वि० ।
बिछुड़ाविग्रोड़ौ, बिछुड़ावियोड़ौ बिछुड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछुड़ावीजणौ, बिछुड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

बिछुड़ावियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. बिछुड़ावियोड़ी)

बिछुड़ी—देखो 'बिच्छुड़ी' (रू. भे.)

बिछुड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा, रू. भे) (स्त्री बिछुड़ी)

बिछुटणौ, बिछुटबौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)
बिछुटणहार, हारौ (हारी), बिछुटणियौ—वि० ।

विछुटिग्रोड़ौ, विछुटियोड़ौ, विछुव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विछुटीजणौ, विछुटीजबौ—भाव वा० ।

विछुटाणौ, विछूटाबौ—१ देखो 'विछूटाणौ, बिछूटाबौ' (रू. भे)
२ देखो 'बिछुड़ाणौ, विछुड़ाबौ' (रू. भे.)
विछुटाणहार, हारौ (हारी), विछुटाणियौ—वि० ।
विछुटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विछुटाईजणौ, विछुटाईजबौ—कर्म वा० ।

विछुटायोड़ौ—१ देखो 'विछूटायोड़ौ (रू. भे.)
२ देखो 'विछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विछुटायोड़ी)

विछुटियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विछुटियोड़ी)

विछुट्टणौ, विछुट्टबौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे)
उ०—१ राव राय रांणै सहित, सको थया स्वाधीन । यां छूटा जग जाळ ज्यौं, जाळ विछुट्टा मीन । —रा. रू.
उ०—२ आजम दक्खण हूंत उलट्टौ, विकट धनुख सर जांण विछुट्टौ । उत्तर धरा सु आलम आयौ, सौंज नौज दळ तेज सवायौ । —रा. रू.
उ०—३ प्रोहित केसरसिंघ, सिंघ किर संकळ छुट्टौ । अरि सिर अख-मालौत, जांणि रिख गोत विछुट्टौ । —रा. रू.
विछुट्टणहार, हारौ (हारी), विछुट्टणियौ—वि० ।
विछुट्टिग्रोड़ौ, विछुट्टियोड़ौ, विछुट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विछुट्टीजणौ, विछुट्टीजबौ—भाव वा० ।

विछुट्टियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विछुट्टियोड़ी)

विछुळणौ, विछुळबौ—क्रि. स.—धुलाई करना, धोना ।
उ०—तरै सरव ठाकुर आरोगै छै–औ ठाकुर हाथ नीचौ करै तो बाज नहीं । तरै औ बोलियौ—ठाकुरे ! अजूं बाज ही नहीं आयौ छै, कांहूं आरोगां ? तरै परिहार बोलिया-राज ! बाज उरै है, ठाकुर पण विछुळता हुता सू अपूठा फिरिया नहीं ।
—प्रतापमल देवड़ा री वात
विछुळणहार, हारौ (हारी), विछुळणियौ वि० ।
विछुळिग्रोड़ौ, विछुळियोड़ौ, विछुळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विछुळीजणौ, विछुळीजबौ—कर्म वा० ।

विछुळाणौ, विछुळाबौ—क्रि. स.—धुलाई करवाना, धुलवाना ।
विछुळाणहार, हारौ (हारी), विछुळाणियौ—वि० ।
विछुळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विछुळाईजणौ, विछुळाईजबौ—कर्म वा० ।
विछुळावणौ, विछुळावबौ—रू. भे.० ।

विछुळायोड़ौ—भू० का० कृ०—धुलाई कराया हुआ, धुलाया हुआ ।
(स्त्री. विछुळायोड़ी)

विछुळावणौ, विछुळावौ—देखो 'विछुळाणौ, विछुळाबौ' (रू. भे.)
विछुळावणहार, हारौ (हारी), विछुळावणियौ—वि० ।
विछुळाविग्रोड़ौ, विछुळावियोड़ौ, विछुळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विछुळावीजणौ, विछुळावीजबौ—कर्म वा० ।

विछुळावियोड़ौ—देखो 'विछुळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विछुळावियोड़ी)

विछुळियोड़ौ—भू. का. कृ —धुलाई किया हुआ, धोया हुआ ।
(स्त्री. विछुळियोडी)

विछुवौ, विछुहौ—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

विछू—सं. पु.—१ विशाखा नक्षत्र का एक नाम ।
२ एक प्रकार का घोड़ा जिसकी पूंछ का अग्र भाग वक्र होता है । (शा. हो.)
अल्पा.—विछूड़ौ ।
३ देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)

विछूड़ौ—१ देखो 'बिच्छू' (अल्पा, रू. भे.)
२ देखो 'विछू' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. विछूड़ी)

विछूट—स. स्त्री.—छूटने की क्रिया या भाव ।

विछूटणौ, विछूटबौ—१ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरीया हंसन कौ कहै, जोड़ विछूटि जांणि । सायर का सांसा पड़्य, छीलर वसीयौ आंणि । —अनुभववांणी
उ०—२ मछ विछूटौ टोळीयां, ताहि न घातौ घात । आप मतौ मरि जावसी, तळफ तळफ जीव जात । —अनुभववांणी
२ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)
उ०—१ को लाहै लोभियां, मौत चाहै अणखूटी । कमण पांण पाकड़ै, बीज असमांण विछूटी । —रा. रू.
उ०—२ जमदूतां री जमात उठीया छै, जांणे सांकळां हूती सीह विछूटिया छै । घोड़ां राउ छटा लीजै छै । अमल पीजै छै —पनां
उ०—३ कुटुंबी लोक माचइं, महात्मा बैठा पुस्तक वाचइं । परवत तउ नीझरण विछूटइं, भरिया सरोवर फूटइ । इसिइं वरसा कालि । —रा. सा. सं.
उ०—४ जठै जादव रांम रै संबंधी भ्राता जादव देव रा किवांण करि चालुक्य राज रा गज रौ सुंडाडंड वाहित्य देस सूं विछूटि झड़ियौ । —वं. भा.

उ०—५ जांणु तिलहि न बिछूटूं रे, जनि पछतावा होई । गुण तेरे रसना जपू, सुणसी सांई सोई रे। —दादूबांणी

उ०—६ समय घणउं स्रम स्रांत थ्या, सयरि बिछूटि स्वेद । अडप घणी अळगां थयां, सांसइ पड़ियां दुभेद । —मा. कां. प्र.

उ०—७ असमांन बिछूटै सर असंख । धूंकारव गाजै गुण घनख । सूरज्ज वोम छायौ सरेय, किरि जांण काळ छाया करेय ।
—गु. रू. बं.

उ०—८ कुदरत्त बिछूटा कुहकबांण, आकंप इळा पुड आसमांण। गोळियां ताड विपरीत गत्त, ओग्रडै गडै किरि मेह अत्त ।
—गु. रू. बं.

उ०—९ पूठिली परि तै गलगलै, पिण नहीं कोई उपाय । सगलै जी कहै जल नै बिना, जीव बिछूटौ जाय । —वि. कु.

उ०—१० मुख साह मुहां मुहि हुकम बिछूटा, खूटा पड़ियाळां खंजर । समकै गजां सांकळां तूटा, जूटा 'अरजण' अनै 'अमर' ।
—अरजण गौड वीठळदासोत री गीत

बिछूटणहार, हारौ (हारी), बिछूटणियौ—वि० ।
बिछूटिओड़ौ, बिछूटियोड़ौ, बिछूट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछूटीजणौ, बिछूटीजबौ—भाव वा० ।

बिछूटाणौ, बिछूटाबौ—१ देखो बिछूटाणौ, बिछूटाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिछुड़ाणौ बिछुड़ाबौ' (रू. भे)
बिछूटाणहार, हारौ (हारी), बिछूटाणियौ—वि० ।
बिछूटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछूटाईजणौ, बिछूटाईजबौ—कर्म वा० ।

बिछूटायोड़ौ—१ देखो 'बिछूटायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछूटायोड़ी)

बिछूटियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछूटियोड़ी)

बिछूट्टणौ, बिछूट्टबौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)
उ०—हुए मीर संघार, सोक सर पूर बिछूट्टै । प्रळै-काळ आव्रत, फौज फौजां मुहि जुट्टै । —गु. रू. बं.
बिछूट्टणहार, हारौ (हारी), बिछूट्टणियौ—वि० ।
बिछूट्टिओड़ौ, बिछूट्टियोड़ौ, बिछूट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछूट्टीजणौ, बिछूट्टीजबौ—भाव वा० ।

बिछूट्टियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिछूट्टियोड़ी)

बिछेड़ौ—सं. पु.—बिछोह, वियोग, जुदाई ।

बिछेद—सं. पु.—१ बिछोह, वियोग, जुदाई ।
२ देखो 'विच्छेद' (रू. भे.)
उ०—सुरमौ लूंण जात ए, पुढवी काय बिछेद । भूमि आकास अोम हिय, करग आऊ ना भेद । —वृ. स्त.

बिछेदौ—सं पु.—भंग होने की क्रिया, नाश ।
उ०—'देव विमांण वल्यौ' छठै, तिणरौ सुणौ राय भेदौ रे । जंघा विद्या चारणी, जासी लब्धि बिछेदौ रे । —जयवांणी

बिछेरियौ—देखो 'बछेरौ' (अल्पा., रू. भे.)

बिछेरौ—देखो 'बछेरौ' (रू. भे.)
उ०—सिखरै-रौ घोड़ौ अर ऊदै री घोड़ी वेऊं अेक छांन में बंधै । सू उवा घोड़ी री उवा बिछेरी मास इग्यारह री । सू घोड़ै ही आगै चरै । सिखरौ चढि अर नीसरियौ ताहरां बिछेरी घोड़ै रै लार हुयी । —ऊदै उगमणावत री वात
(स्त्री. बिछेरी)

बिछोई—वि.—वियोगी ।
रू. भे.—बिछोई ।

बिछोड़णौ, बिछोड़बौ—क्रि.स.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियों या प्राणियों को एक दूसरे से पृथक कर देना ।
उ०—मां थी बिछोड़चा बाछड़ा, नीरी नहीं चारि । ऊनालै तिरस्या मूआ, कीवी नहीं सारि । —स. कु.
२ वियोग में डालना ।
३ साथी से अलग कर देना ।
४ काटना ।
उ०—पड़ै रीठ पांडीसां गरीठ वज्र भालां पूर, घीठ सूर जड़ै बज्र आवधां क्रोधार । ऊधड़ै बरम्मां कड़ां नत्रीठा बिछोड़ै अंगां, जठै आकारीठ 'बूदौ' आहुड़ै जोधार ।
—ठाकर जवांनीसिंघ पालड़ी री गीत
बिछोड़णहार, हारौ (हारी), बिछोड़णियौ—वि० ।
बिछोड़िओड़ौ, बिछोड़ियोड़ौ, बिछोड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिछोड़ीजणौ, बिछोड़ीजबौ—कर्म वा० ।
बिछोडणौ, बिछोड़बौ—रू० भे० ।

बिछोड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियों या प्राणियों को एक दूसरे से पृथक किया हुआ. २ वियोग में डाला हुआ. ३ साथी से अलग किया हुआ. ४ काटा हुआ.
(स्त्री. बिछोड़ियोड़ी)

बिछोटौ—सं. पु.—छुटकारा, मुक्ति ।
उ०—दीयें कोरड़ा देह दोला दबोटा, वदै बोल बांका भंभै मंत भोटा । पड्या बंदिखानें महा दुक्ख मोटा, प्रभू नांम थी वेग थायें बिछोटा । —ध. व. ग्रं.

विछोडणौ, विछोडबौ—देखो 'विछोड़णौ, विछोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—उण वेळा 'ग्रभसाह' दुगम वळ वांह दरस्सै, चक्र ग्राह चूरिवा ति किर चत्रवाह तरस्सै। ग्रथग पियण ग्रंजळी जांणि ग्रगस्त घरै पण, कना 'पत्थ' कोपियौ मत्थ 'जैदत्थ' विछोडण। —रा. रू.

विछोडणहार, हारौ (हारी), विछोडणियौ—वि०।

विछोडिग्रोडौ, विछोडियोडौ, विछोड्योडौ—भू० का० कृ०।

विछोडीजणौ, विछोडीजबौ—कर्म वा०।

विछोडियोडौ—देखो 'विछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछोडियोड़ी)

विछोणौ—देखो 'विछोणौ' (रू. भे.)

विछोणौ, विछोबौ—देखो 'विछाणौ, विछाबौ' (रू. भे.)

विछोणहार, हारौ (हारी), विछोणियौ—वि०।

विछोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विछोईजणौ, विछोईजबौ—कर्म वा०।

विछोयोड़ौ—देखो 'विछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछोयोड़ी)

विछोव—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

विछोवणौ, विछोवबौ—देखो 'विछाणौ, विछाणौ' (रू. भे.)

विछोवणहार, हारौ (हारी), विछोवणियौ—वि०।

विछोविग्रोडौ, विछोवियोडौ विछोव्योडौ—भू० का० कृ०।

विछोवीजणौ, विछोवीजबौ—कर्म वा०।

विछोवियोड़ौ—देखो 'विछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विछोवियोड़ी)

विछोवौ—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

उ०—१ नागजी, भली निभायी प्रीत, रे वैरी, रैण विछोवौ कर चल्यौ ग्रो नागजी। —लो. गी.

उ०—२ प्रीतम दुखिया कर गया, सुख कूं लेग्या साथ। रैण विछोवा कर गया, मळती रह गई हाथ। —ग्रग्यात

विछोह-सं. पु.—१ जुदाई, वियोग, विरह।

उ०—१ रजीनि भांन रुक्कयौ, मनु ग्रंधकार मुक्कयौ। विछोह चक्क चक्कयं, ग्रनेक वीर बक्कयं। —ला. रा.

उ०—२ खिण इक जउ तुझ नइ तजुं रे जि० तउ उपजै ग्रंदोह। धरती पिण फाटइ हियो रे जि० पांणी तणय विछोह। —वि. कु.

उ०—३ झूरई सहोवर राव का, कुली छतीसइ झूरइ सोही। धार झूरई राजा भोज सूं, सांमरया राव सौ पड़चौ विछोह। —बी. दे.

उ०—४ फटि रे हिया! नीवालुवा, पाथरी घड़ियो, के ग्रीघट लोह। झरचझलीयो फूटइ नहीं, सगुणां प्रीतम तणौ विछोह। —बी. दे.

२ वियोग का समय।

रू. भे.—विछवौ, विछाग्रौ, विछेवौ, विछैवौ, विछोड़ौ, विछोव, विछोवौ, विछोह, विछोहौ, विच्छोह, विछवौ, विछहौ, विछुवौ, विछुहौ, विछोव, विछोवौ, विछोहौ।

विछोहणौ, विछोहबौ-क्रि. ग्र.—बिछुड़ना, दूर होना, जुदा होना।

उ०—१ टोळी सूं टळियांह, वाला हर हुं विछोहियां। थोरी हाथ थयांह, सो किम जीवै जेठवा। —जेठवा

उ०—२ पनरह वरस विछोहउ हूग्रौ घणइ कस्टि मेळावउ। थयउ। वळै विछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एह ज नारि। —ढो मा.

उ०—३ वली मत पडिज्यौ एहवौ दुकाल, जिणै विछोहया मा बाप बाल, जिणै भागा सबल भूपाल। —स. कु.

उ०—४ रांम विछोही विरहनी, फिर मिलन न पावै। दादू तलफै मीन ज्यौं, तुझ दया न ग्रावै। —दादूबांणी

विछोहणहार, हारौ (हारी), विछोहणियौ—वि०।

विछोहिग्रोडौ, विछोहियोडौ विछोह्योडौ—भू० का० कृ०।

विछोहीजणौ, विछोहीजबौ—भाव वा०।

विछोहणौ, विछोहबौ, बछोहणौ, बछोहबौ—रू० भे०।

विछोहियोड़ौ-भू. का. कृ.—बिछुड़ा हुग्रा, दूर हुवा हुग्रा, जुदा हुवा हुग्रा।

(स्त्री. विछोहियोड़ी)

विछोही-वि.—वियोगी, बिरही।

उ०—टोला विछोही यम ग्रगली तिम करि ग्राक्रंद, वन वन जोतां कंथ न देखि दीन द्यांमणी मंद। —नळांख्यांन

विछोहौ—देखो विछोह' (रू. भे.)

उ०—१ इक चलै सूंड ग्रंदोळतां ग्रथ ऊरव सावळ ग्रविळ। तम सुभट विछोहौ जांणि तिम दिवस वहै करि डंग बळि। —रा. रू.

उ०—२ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळचा, हूं लागी गळि रोइ। डरपत पलक न खोलही, मतिहि विछोहउ होइ। —ढो. मा.

उ०—३ पनरह वरस विछोहउ हूग्रौ, घणइ कस्टि मेळावउ थयउ। वळै विछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एह ज नारि। —ढो. मा.

उ०—४ केसर कादू कुकडा, बोल्यौ मुझ ग्रभाग, सेजां थारा सजन रे, सूति छी गळ लाग। मोताहळ सीतळ हुवा रैण गळंती दीठ, प्रात विछोहौ सजनां ऊठी विरह ग्रंगीठ। —पनां

उ०—५ वाली वाली रै मेरा इलाही तुं, रसराज एक रांझै दा विछोहा, दूजी वेस मतवाळी रे। —रसीलै राज रा गीत

उ०—६ जांण देस्यां जी नहीं थांनै आलीजा जी मैलौ बिछोहौ मारु म्हांसू नहीं नीसरै । —लो. गी.

बिछोनौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

उ०—हरिन्हैं संकेत करी राधिकै बिलोकै मग, ग्रैसै आई बैठी सखी एक ही बिछौन है । राधै बोली सुनि खेल मोमूं नैन बाद जोवैं, अनिमेख दौ मैं हारी साई दासी हौन है । —ब. व. ग्रं.

बिज—१ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—गडि गडि गोळा नाळि, बिज खड्डु किरि ग्रंबर। ग्रगन वांण ऊछळै, घोम धूंहा रव डंम्भर । —गु. रू. बं.

२ देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बिजई—देखो 'विजयी' (रू. भे.)

बिजउरौ—देखो 'बिजोरौ' (रू. भे.)

उ०—करहा, नीरूं सोइ चर, वाट चलंतउ पूर । द्राख बिजउरा नीरती, सौ घण रही स दूर । —ढो. मा.

बिजकणौ, बिजकबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

उ०—साधू संगति क्या करै, जो मन बिजक्यौ होय । ज्यूं हरीया हरीवघण, वाग न भालै कोय । —अनुभववांणी

बिजकणहार, हारौ (हारी), बिजकणियौ—वि० ।

बिजकिग्रोड़ौ, बिजकियोड़ौ, बिजक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिजकीजणौ, बिजकीजबौ—भाव वा० ।

बिजकाणौ, बिजकाबौ—देखो 'भिचकाणौ, भिचकावौ' (रू. भे.)

बिजकाणहार, हारौ (हारी), बिजकाणियौ—वि० ।

बिजकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

जिकाईजणौ, बिजकाईजबौ—कर्म वा० ।

बिजकायोड़ौ—देखो 'भिचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकायोड़ी)

बिजकावणौ, बिजकावबौ—देखो 'भिचकाणौ, भिचकाबो' (रू. भे.)

बिजकावणहार, हारौ (हारी), बिजकावणियौ—वि० ।

बिजकाविग्रोड़ौ, बिजकावियोडौ बिजकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिजकावीजणौ, बिजकावीजबौ—कर्म वा० ।

बिजकावियोड़ौ—देखो 'भिचकाबोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकावियोड़ी)

बिजकियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकियोड़ी)

बिजड़—१ देखो 'बीजळा' (ना. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—पांच कलै परवार सूं, रावळ आलोचेह । ग्रांपै मर गढ ग्रापस्यां, बिजड़ां वार करेह । —नैणसी

२ देखो 'बीजळी' (मह., रू. भे.)

बिजड़ली—१ देखो 'बीजळा' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिजड़हत, बिजड़हती, बिजड़हतौ, बिजड़हत्थ, बिजड़हत्थी, बिजड़हत्थौ, बिजड़हथ, बिजड़हथी, बिजड़हथौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—१ धूंणे भुज खगा धोड पांण दर्थ मूंछौ परै । रण जूंभो राठोड़ बिजड़हथौ फिर बोलियौ । —पा. प्र.

उ०—वीक विदेसज चालियौ, बिजड़हथौ बळ बांध । मूळै तोड़ी मुण सुगुर, साहि ग्रालम मूं सांध । —नैणसी

बिजड़ाहत, बिजड़ाहती, बिजड़ाहतौ, बिजड़ाहत्थ, बिजड़ाहत्थी, बिजड़ाहत्थौ, बिजड़ाहथ, बिजड़ाहथी, बिजड़ाहथौ, बिजड़ाहथ्थ, बिजड़ाहथ्थी, बिजड़ाहथ्थौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—बिजड़ाहत थांबळ पूत बकै, सत्र कोण बकै पग मांड सकै । घट सूर ढहै विप खड घणा, तत चक्र वहै नव लाख तणा ।

—पा. प्र.

बिजड़ो—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—हव वेरन कीजिय वेग हकै, धुणियाळ मिळौ भड़ 'पाल' धकै । बिजड़ी जड़ भाथल बांध विनै, कड़ भीड़ कठठ्ठत 'पाल' कनै । —पा. प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजड़ौहथ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—लखियौ हथळेव प्रमांण लघौ, बिजड़ौहथ थांघल मोड़बंधौ, विघना ग्रंक मेटण की वरणै, पह 'पाळ' जतिंद्र जको परणै ।

—पा. प्र.

बिजड—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.) (ग्र. मा., ना. डिं. को.)

उ०—१ सूर धीर सांमंत, बिजड जूटण बंगाळां । रागां हाथळ टोप, पैहरि जरदां छकडाळां । —गु. रू. बं.

उ०—२ तात वैरि ततकाळ, लियौ जिण चालुक लीहै । जिण 'मोहण' मारियौ, बिजड बूंदी घड डोहै । —गु. रू. बं.

उ०—३ घावां घाव ग्राहाडां घायै, बिजडां वाढै चाढ बज-बंध । लेगौ सुरग वरै रंभ लारां, कमधज सारां करै कबंध ।

—ग्रमरौ बारहठ

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजडी—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—१ पायकां भिलमां पर तेग पडै, भलहौ दुरियां जड मूल गडै । दुलहौ फरकी चख दूति फिरै, बिजडी रत चाकिय 'पाल' बरै । —पा. प्र.

उ०—२ लेय वावत वेर नवै लखरौ, सांवळां पर रूप बंधे सखरौ।
बिजड़ी हुय खांपांय चीह़ वकी, भिड़जां चढ टोप कढे भभकी।
—पा. प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

विजति-वि.—जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

उ०—छली **विजति** तत्तिकी, सुछत्ति छोलती वहै। विजेत नंत
रेत पे, सजेत बोलती वहै। —ऊ. का.

विजन-वि. [सं.] एकान्त, जनशून्य।

[सं. व्यजनं] १ हवा करने का पंखा, वीजन।

२ देखो 'व्यजन' (रू. भे.)

रू. भे.—बिजन।

विजनस-सं. पु. [अं. बिजिनिस] १ व्यवसाय, व्यापार।

२ व्यापारिक संगठन, व्यावसायिक संगठन।

३ दृढ निश्चय।

उ०—कवरांणी सभियो किलो,**विजनस** मरण विचार। किलौ रह्यां
रहसी कलम, लाज किला रै लार। —लिखमीदांन बारहठ

वि.—वास्तविक, बिल्कुल।

(क्रि. वि)—निश्चय ही, अवश्य ही।

उ०—१ नैणां हूँ आई निरख, जिण री तौ हूं जीव। ऊतौ
विजनस आव ही, प्रीतम प्यारौ पीव। —र० हमीर

उ०—२ कळजुग री मांनै कहर, **विजनस** लागै वाव। रिखां
कह्यौ अण देह रौ, परत करां पलटाव।
—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ इतरै एक चारण बोलियौ, तीज तौ पूंगळ री देखीजे। अठ
लोक आय नै सुरलोक रीझीजै। जद कंवर बोलियौ, इसीछै तौ
विजनस देखवा चालसां। एक वार पूंगळ रा बागां में मालसां।
फजर पूंगळ में चालसां इतरी कह नै महिलां पधारिया। —पनां

रू. भे.—बिजनस, बिजनिस, बिजनेस, बिजिनस, बिजिनिस,
विजनेस, विजनिस, विजनेस, विजिनस, विजिनिस, विजिनेस।

विजनांळियौ-सं. पु.—एक प्रकार का नकुल की जाति का जानवर।

विजनिस, विजनेस—देखो 'विजनस' (रू.भे.)

उ०—वरखौं चढ किरगांठ विराजै, स्याह सफेत लालरंग साजै।
विजनिस वाव सूरियौ बाजै, घड़ी पलक मांय मेहा गाजै।
—वरसा विग्यांन

विजपंजर—देखो 'विजयपंजर' (रू. भे.)

उ०—थरहरिय प्रजा जिम नीर थाळ, भाखरै भाजि चड़िया भुवाळ
आगळी प्रजा आई अबीह, सरणइ **विजपंजर** 'जइतसीह'।
—रा. ज. सी

विजय-सं. पु. [सं. विजयः] १ पराजय का विपरीत, जय, जीत।

उ०—फतेसाह साह आए बांह गैण धारै, विजावत **विजय** रूप
पराजय निवारै। 'मधकर' 'दयाल' का सौ साह भै न धारै,
अंधकार जात जैसै भांण के उजारै। —रा. रू.

२ विवाद, युद्धादि में जीत।

३ विष्णु के जय-विजय नामक दो पार्षदों (द्वारपालों) में से दूसरा।

४ कुंति-पुत्र अर्जुन के दस नामों में से एक, जो उसने अज्ञातवास
के समय धारण किया था।

५ यमराज।

६ देवरथ, स्वर्गीय रथ।

७ वृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष।

८ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

९ मगध निवासी एक ब्राह्मण, जिसने महीसागर-संगम तीर्थ में
अनेकों सिद्धियां प्राप्त की थी और बाद में सिद्धसेन के नाम से
प्रसिद्ध हुआ।

१० राजा रोमपाद के वंशज जयद्रथ और शम्भूति के संसर्ग से
उत्पन्न एक पुत्र जो धृति का पिता था।

११ महाराज दशरथ के एक मन्त्री का नाम।

१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

१३ एक राजा, जो पुरुरवस एवं उर्वशी का पुत्र एवं भीम या
कांचन का पिता था।

१४ शिवजी के त्रिशुल का एक नाम।

१५ एक दिव्य धनुष जो परशुरामजी द्वारा कर्ण को दिया गया था

१६ हरिश्चन्द्र के वंशज सुदेव के पुत्र एवं भुरुक का पिता।

१७ एक राजा, जो वृहन्मनस एवं सत्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ
था।

१८ भागवतानुसार जय राजा का पुत्र एवं ॠतु का पिता।

१९ भागवतानुसार संजय का पुत्र और वायु के अनुसार संजय
का पौत्र, और जय राजा का पुत्र था।

२० एक यादव राजा, जो वसुदेव एवं उपदेवी के गर्भ से उत्पन्न
हुआ था।

२१ एक क्षत्रिय विजेता सम्राट, जो भागवतानुसार चंप राजा का
एवं वायु तथा विष्णु के अनुसार चंचु राजा का पुत्र था।

२२ कृष्ण एवं जांबवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

२३ यज्ञश्री राजा का पुत्र एवं चंद्रविज्ञ का पिता एक आन्ध्रवंशीय
राजा।

२४ पृथुक देवों में से एक।

२५ मणिवर एवं देवजनी का पुत्र एक यक्ष।

२६ लोकाक्षि नामक शिवावतार का एक शिष्य।

२७ भैरववंश में उत्पन्न एक वाराणसी नगरी का राजा, जो

उपरिचर का पिता था और जिसने खाण्डवी को नष्ट कर खांडव वन का निर्माण किया था।

२८ छप्पय छंद का द्वितीय भेद जिसमें ६६ गुरु १४ लघु से ८३ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। मतान्तर से १४८ मात्राएँ होती हैं। (र. ज. प्र.)

वि. वि.—जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २६, २६ मात्राओं के होते हैं, उसमें १४८ मात्राएँ होती हैं। अर्थात २४×४=९६+२६×२=५२ कुल १४८ और जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २८, २८ मात्राओं के होते हैं, उसमें १५२ मात्राएँ होती हैं अर्थात २४×४=९६+२८×२=५६ कुल १५२ मात्राएँ।

रू. भे.—विजय, बिजै, विजयु विजै, विज्जै।

विजयएकादसी—देखो 'विजयाएकादसी' (रू. भे.)

विजयक—वि. [सं. विजय+क्कन] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयकुंजर—सं. पु.—१ राजा की सवारी के काम आने वाला हाथी।

२ युद्ध में काम आने वाला हाथी।

विजयकेतु—सं. पु. [सं.] विजयपताका।

विजयखार—देखो 'विजयसार' (रू. भे.)

विजयघंट—सं पु.—१ मन्दिरों में लटकाया जाने वाला घण्टा।

२ हाथी की झूल के साथ बंधा रहने वाला घंटा।

विजयछंद—सं. पु. [सं. विजयः+छन्द] पांच सौ लड़ियों का हार।

विजयजात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

विजयडिंडिम—सं. पु. [सं] युद्ध के समय युद्ध क्षेत्र में बजाया जाने वाला एक ढोल।

रू. भे.—विजयदुंदुभ विजयदुंदुभि।

विजयतीरथ—सं. पु. [सं. विजयतीर्थ] एक तीर्थ विशेष। (पुराण।

विजयदंड—सं. पु. [सं. विजयदण्ड] सैनिकों का एक विभाग विशेष जो हमेशा विजयी रहता है।

विजयदसम, विजयदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—१ सन विजयदसम वधियौ संग्रांम, धिखियौ अहमदपुर घांम घांम। सजियौ क्रोधांनळ बियौ 'सीह,' दावानळ दमगळ तीन दीह।
—वि. सं.

उ०—२ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगिजीत सरव विद्या जिनैं। विजयहरस विद्यमांन सिस्य तिनकै सही, परिहां कवि धरमसी उपगारै दंभ क्रिया कही। —ध. व. ग्रं.

विजयदुंदुभ, विजयदुंदुभि—देखो 'विजयडिंडिम' (रू. भे.)

विजयनंदन—सं. पु. [सं.] भागवतानुसार, अयोध्यापति इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न राजा जय का नामान्तर।

विजयपंजर—सं. पु. [सं. विजयः+पञ्जर] विजय प्राप्ति हेतु पढा जाने वाला स्तोत्र।

रू. भे.—विजपंजर, विजयपंजर, बिजैपंजर, विजपंजर, विजैपंजर।

विजयपताका—सं. स्त्री. [सं] विजय की सूचक फहराई जाने वाली ध्वजा या इसी का सूचक कोई चिन्ह।

विजयपरपटी—सं. स्त्री. [सं. विजयपर्पटी] वैद्यक में, संग्रहणी रोग के लिए दी जाने वाली एक प्रकार की औषधि विशेष।

विजयपूनम, विजपूरणिमा—सं. स्त्री. [सं. विजयपूर्णिमा] विजयादशमी के बाद आने वाली पहली पूर्णिमा, जिस दिन बंगाल में लक्ष्मी का पूजन होता है। (पुराण)

विजयभैरव—सं पु.—वैद्यक में, सब प्रकार के रोगों और दुर्बलता को दूर करने वाला एक प्रकार का रस।

विजयभैरवतेल—सं. पु.—वैद्यक में, मालकंगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को पेर कर निकाला जाने वाला एक प्रकार का तेल विशेष, जो सब प्रकार के वायु रोगों का नाशक माना जाता है।

विजयमंड—देखो 'विजैमंड' (रू. भे.)

विजयमरदल—सं. पु. [सं. विजयः+मर्द्दल] प्राचीन काल में होने वाला एक प्रकार का ढोल।

विजयमाळा, विजयमाला—सं. स्त्री. [सं. विजयमाला] विजय प्राप्त करने वाले को पहनाई जाने वाली माला।

रू. भे.—बिजयमाळा, विजैमाळा, विजैमाळा।

विजयमेरु—सं. पु. [सं.] सुमेरु पर्वत का एक नाम।

उ०—पूरब पच्छिम घात की, खंड गिणीजै दोइ। विजयमेरु पूरब दिसै, पच्छि अचलमेरु जोइ। —ध. व. ग्रं.

विजययात्रा—सं. स्त्री. [सं.] किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा।

उ०......नीली रहरही इक्षुवाडमंडली, फूलिइ उज्ज्वल कास, दीसइं सप्तच्छद पुस्फविकास, करइं नरेंद्र विजययात्रा रंभ।
—व. स.

रू. भे.—बिजययात्रा, बिजैयात्रा, विजयजात्रा विजैजात्रा, विजैयात्रा।

विजयरत्नाकरि—सं. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयरस—सं. पु. [सं.] वैद्यक में एक प्रकार का रस विशेष जो पारे,

गंधक और सीसे के योग से बनता है और प्रायः अजीर्ण रोग में दिया जाता है।

विजयरूपपदम–सं. पु. [स विजयरूपपद्म] एक प्रकार का घोड़ा जिसके दो पैर सफेद व शिर में तिलक होता है। (शा. हो.)

विजयलक्ष्मी, विजयलखमी, विजयलच्छी, विजयलिखमी, विजयलिच्छमी–स.स्त्री. [स.विजयलक्ष्मी] एक देवी जो विजय की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

रू. भे.–बिजयलक्ष्मी, बिजयलखमी, विजयलच्छमी, बिजयलिखमी, ब्रिजयलिच्छमी, बिजैलक्ष्मी, बिजैलखमी, बिजैलच्छमी, बिजैलिखमी, बिजैलिच्छमी, विजैलक्ष्मी, विजैलखमी, विजैलच्छमी, विजैलिखमी, विजैलिच्छमी।

विजयवसंत–सं.पु. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनि विशेष (संगीत)

विजयसप्तमी—देखो 'विजयासप्तमी' (रू. भे.)

विजयसरसती, विजयसरस्वती–सं. स्त्री. [सं. विजयसरस्वती] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयसातम—देखो 'विजयासप्तमी' (रू. भे.)

विजयसामंत, विजयसारंग–सं. पु. [सं.] कर्नाटकी पद्धति का एक राग विशेष। (संगीत)

विजयसार–सं. पु. [सं.] १ एक प्रकार का अत्युत्तम लोहा, जिससे तलवारें बनती हैं।

२ एक वृक्ष विशेष, जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।

रू. भे.—बिजयसार, बिजैसार, विजयखार, विजैखार, विजैसार।

विजयसाही–सं. पु.—मारवाड़ राज्यान्तर्गत चलने वाला, जोधपुर के राजा विजयसिंह के द्वारा प्रचलित एक चांदी का सिक्का विशेष। (मा. म.)

रू. भे.–बिजयसाही, बिजैसाही, बीजैसाही, विजैसाहई, विजैसाही।

विजयसिद्धि–सं स्त्री. [सं. विजयः+सिद्धी] विजय, जीत, सफलता।

विजयसील–सं. पु. [सं. विजयशील] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयसूर–सं. पु. [सं.] एक सूर्यवंशी राजा, जो चंचु का प्रथम पुत्र था। (पुराण)

उ०—रोहितास तणौ ह्वित चंचुराय, तप सुत सुदेव तपभांण ताय। संभ्रम सुदेव न्रप विजयसूर, पुत्र जास रुरक तप तेज पूर। —सू. प्र.

विजयस्री–सं. स्त्री. [सं. विजयश्री] १ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

२ देखो 'विजयलक्ष्मी'

विजयहरि, विजयहरी, विजयहारी–सं. पु.—सुदृढ़ एवं सुरक्षित मोर्चा, शत्रुओं के लिए दुर्गम्य मोर्चा।

उ०—गढ कैलास जिम ऊंचउ, गुरूई पौलि, सधर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, यंत्र तणी सेणि, ढींकली तणी परंपरा, खाई गढ,······। —व. स.

रू. भे.—विजाहरी, विजहारी।

विजया–सं. स्त्री. [स.] १ गौतम की एक कन्या का नाम।

२ पार्वती की एक सखी, जिसे पार्वती का मानसपुत्र वीरक को लाने हेतु भेजा गया था। (पुराण)

३ दुर्गादेवी का एक नाम।

उ०—सं कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया, ओह सोहं अखया अभया, आई अजया विजया उमया। —देवि.

४ यम की पत्नी का नाम।

५ हरड़े, हर्रे।

६ सात प्रकार की हरड़े में से एक प्रकार की हरड़े।

७ एक योगिनी।

८ दक्ष की एक कन्या का नाम।

९ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत् की माता का नाम।

१० श्रीकृष्ण के पहनने की एक माला।

११ भांग।

१२ दुर्गा देवी की एक सहचरी।

१३ एक विद्या विशेष, जो श्रीरामचन्द्र जी को महर्षि विश्वामित्र ने सिखाई थी।

१४ शल्य राजा की कन्या का नाम, जो पाण्डु पुत्र सहदेव की पत्नी और सुहोत्र की माता थी।

वि० वि०–इसके लिए मतैक्य नहीं है महाभारत के अनुसार यह मद्रदेश के द्युतिमत् राजा की कन्या थी और भागवत के अनुसार यह पर्वत राजा की कन्या थी।

१५ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

१६ सम्राट भुमन्यु की पत्नी और सुहोत्र की माता, जो दशार्ह राजा की कन्या थी।

१७ श्रीकृष्ण की एक माता का नाम।

१८ कश्मीर में स्थित एक पवित्र तीर्थ का नाम।

१९ एक शुभ मुहूर्त विशेष।

२० एक प्रकार का शमी वृक्ष।

२१ आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त विशेष, जिसके अन्त में लघु और गुरु या नगण भी होते हैं।

२२ एक सम-मात्रिक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में १०-१०

की यति पर ४० मात्राएं होती हैं और अंत में रगण भी होता है । मतान्तर से प्रत्येक चरण में १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएं होती हैं।

२३ देखो 'विजयादसमी'

२४ देखो 'विजयाएकादसी'

रू. भे.—बिजया, बिजिया, वज्जया

विजयाएकादसी–सं. स्त्री. [सं. विजयाएकादशी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

२ फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

रू. भे.—विजयएकादसी।

विजयाणंद–सं.पु [सं. विजयानन्द] सगीत के मुख्य साठ तालों में से एक ताल विशेष।

रू. भे.—विजयानंद।

विजयादसम, विजयादसमी—सं. स्त्री. [सं. विजयादशमी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।

२ उक्त दशमी को मनाया जाने वाला पर्व जिसकी गणना हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौंहारों में की जाती है।

वि० वि०—आश्विन शुक्ला दशमी को श्रवण का सहयोग होने से विजयादशमी होती है। यह पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध तथा श्रवणयुक्त सूर्योदय व्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। यह हिन्दुओं, विशेषकर क्षत्रियों का बड़ा त्यौंहार है। इसे नवरात्री या दशहरा के नाम से भी पुकारा जाता है और आश्विन शुक्ला प्रथमा से दशमी तक मनाया जाता है। इन दिनों देवी, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा होती है। क्षत्रिय इस दिन देवी घोड़े,हाथी. खड़ग, आदि की पूजा करते हैं और नीलकंठ पक्षी के दर्शन करते हैं और हिन्दू,दुर्गा आदि देवी के साथ अपने कुलदेवता की पूजा करते हैं और कहीं कहीं पर शमी वृक्ष की पूजा भी करते हैं। कहते है इस दिन श्री रामचंद्र ने लंकापति रावण को मार कर लंका- विजय की थी इसी लिए इसे विजयादशमी कहते हैं। और इसी दिन दुर्गा ने महिषासुर का बध कर विजय प्राप्त की थी इस लिए भी यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन को एक शुभमुहूर्त भी मानते हैं और इस दिन प्रारम्भ किया हुआ हर कार्य सिद्ध होता है। नवरात्रि के प्रथम दिन जौ या गेहूँ घरों में बो दिये जाते हैं। और इस तिथि को 'जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।।' यह मंत्र पढ कर कान पर रखते हैं। इस दिन दश महाविद्याओं की पूजा होती है।—घोड़ी, शमी, पुस्तक, लेखनी, अस्त्र, शस्त्र, आदि की भी पूजा करते हैं।

रू. भे.—बिजयदसम, बिजयदसमी, बिजयादसम, बिजयादसमी, बिजैदसम, बिजैदसमी, विजयदसम, विजयदसमी, विजैदसम, विजैदसमी, विजैदसम्मी विज्जैदसम, विज्जैदसमी।

विजयानंद—देखो 'विजयाणंद' (रू. भे.)

विजयाभखी—देखो 'विजियाभखी' (रू. भे.)

विजयाभरणी–सं. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयारथ–सं. पु. [सं विजयार्घ] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

विजयासप्तमी,विजयासातम–सं.स्त्री. [सं.विजयासप्तमी] फलित ज्योतिष के अनुसार, किसी मास की, रविवार के दिन पड़ने वाली शुक्ल पक्षकी सप्तमी। इस दिन श्रीरामचन्द्र की पूजा की जाती है। (पुराण)

रू.भे.—विजयसप्तमी, विजयसातम, बिजयासप्तमी, बिजयासातम, बिजैसप्तमी, बिजैसातम, विजयसप्तमी. विजयसातम, विजैसप्तमी, विजैसातम।

विजयी–वि०—जिसने विजय प्राप्त की हो, विजय प्राप्त करने वाला।

विजयु—देखो 'विजय' (रू. भे.)

उ०—एतलं ए पंडु नरिंदौ जूठिलौ पाटि प्रतिठिउ ए। बंधवि ए विजयु करेवि राय सर्वे वसि आंणिया ए। —सालिभद्र सूरि

विजयेस–सं. पु. [सं. विजय+ईश] १ शिव, महादेव।

२ विजय के अधिष्ठाता देवता।

विजयोत्सव–सं. पु. [सं. विजय+उत्सव] आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाने वाला उत्सव।

विजर–सं. पु.—अनायुषा नामक राक्षसी का पुत्र और खर एवं कालक नामक राक्षसों का पिता, एक राक्षस।

रू. भे –विज्वर।

विजरा–सं. स्त्री. [सं.] ब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्मलोक की एक नदी।

विजराज–देखो 'ब्रजराज' (रू. भे)

उ०—१ तूं हीज अकाज काज भगतां री लाज तनां, विसरियौ केम परौ **विजराज** वाज। आविस्यै अनंत आज गजराज उधारिवा, निध माथै गाज करै निपाइयौ नाज। —पी. ग्रं.

उ०—२ भूजिज्यौ मति कदेई भूधर, जोइ लेखै राखै **विजराज**। तूझ तणौ निसदीह त्रीकमा, मुजरौ पीर करै महाराज। —पी. ग्रं.

विजळ—१ देखो 'बीजळा' (मह,. रू. भे)

२ देखो 'बीजळी' (मह,. रू भे.)

विजळड़ी—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा,. रू. रू.)

२ देखो 'बीजळी' (अल्पा,. रू. भे.)

बिजळी—देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—दरवाजौ तूटण सूं किला में खळबळी माचगी। जेज व्हियां नांकाबंदी होवण रौ भौ हौ सौ भीमड़ौ बिजळी रै पळाका रै ज्यूं किलारै मांयनैं वळियौ। पण सिरै ड्योढी पूगतां पूगतां चांफेर सूं घेरीजग्यौ। —अमर चूंनड़ी

बिजहारी—देखो 'बिजयहरी' (रू. भे.)

उ०—गढ गरुउ अनइ बिसमौ जीह तणौ पाय पातालि पइठउ, परवतनइ स्रंग बइठउ, उच्चतर पोलि लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, बिजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणी, ढींकुली तणी परंपरा,...... । —व. स.

बिजांनु-सं. पु.[सं. विजानु] तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक।

बिजा-सं. स्त्री—विद्या।

बिजाई स. पु. [सं. विजात] १ वंशज।

उ०—१ संग्रांमां संभावै बीजुजलां कसां आय सांमैं, रैण अेक थोड़ा नांमै थावै असी रीत। न मावै फिरंगी हिंदूथांन कीधौ पायनांमैं, आपनांमैं नाज खाधौ बिजाई 'अजीत' —नवलजी लालस

उ०—२ मिळै दंताळां फवजां जोड़ै नेजाळां घटा ज्यूं मेघ, नेजालां संपोड़ौ हलै तेण धुपयाल। सचाळां छड़ाळां आभ छाजतौ 'सवाईसींघ', गाजतां त्रंबालां रूठौ बिजाई 'गोपाळ' —नवलजी लाळस

वि.—विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

रू. भे.—बिजाई, वजाई।

बिजात-वि. [सं.] १ जिसके माता पिता की जाति अलग २ हो, वर्णसंकर, दोगला।

२ जन्म लिया हुआ।

३ प्रत्येक चरण में ५, ५, ४ के विश्राम से १४ मात्राओं का; सखी छन्द का एक भेद विशेष जिसके अंत में मगण या यगण होता है और पहली और आठवीं मात्राएें लघु होती हैं।

बिजाता-सं. स्त्री. [सं] १ वह युवती जिसने हाल ही में बच्चे या बच्ची को जन्म दिया हो।

२ वर्णसंकर या दोगला की स्त्री।

बिजाति-सं. स्त्री. [सं.] १ भिन्न या दूसरी जाति।

उ०—१ नाहीं है के मघ है सोई, ज्यां कौ आदि अंत नहिं कोई। जाति **बिजाति** न भेदाभेद, कहां ग्यांन अग्यांन की खेदा खेद। —स्रीसुखरांमजी महाराज

२ देखो 'बिजातीय'।

बिजातीय-वि. [सं.] १ जो भिन्न या दूसरी जाति का हो।

२ पौष्टिक पदार्थों का अधिक सेवन करने पर शरीर में अधिक बढ़ने वाला चर्बी आदि पदार्थ।

बिजावत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

बिजासण, बिजासणी—देखो 'मावलियां'।

उ०—जठै गुवाळ री माउ अणी नै घणौ ई समजावै पण यो, गुवाळ घर मांहै आवै नहीं। कहैं सो आपणा तौ घर मांहै **बिजासण** बैठी रहै है सों हूं घर मांहै आवुं तौ मोनैं खाय जाय। —गांम रा धणी री वात

बिजिट्-सं. स्त्री. [अं] १ भेंट, मुलाकात।

२ किसी चिकित्सक द्वारा किसी रोगी को देखने जाने का कार्य।

३ उक्त कार्य हेतु दी जाने वाली फीस।

बिजिटरसबुक-सं. स्त्री [अं. विजिटर्स बुक] किसी संस्था की वह पुस्तक जिसमें वहां आने जाने वाले अपना नाम अथवा सम्मति लिख सकें।

बिजिटिंगकारड-सं. पु. [अं. विजिटिंग कार्ड] किसी से मिलने जाने पर अपने आगमन की सूचना देने या परिचय देने का एक कार्ड जिस पर अपना नाम, पता, पद आदि छपे होते हैं।

बिजितास्व-सं. पु. [सं. विजिताश्व] राजा पृथु के पांच पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र।

वि. वि.—राजा पृथु और अर्चि के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जिसके शिखण्डिनी एवं नभस्वती नामक दो पत्नियां थी और शिखण्डिनी से पावक, पवमान और शुचि नामक तीन पुत्र और नभस्वती के गर्भ से हविर्धान और मारीच नामक दो पुत्र हुवे थे। मतान्तर से हविर्धान शिखण्डिनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ बताते हैं। इसने सौ अश्वमेघ यज्ञ करने का निश्चय किया और निन्यानवे अश्वमेघ यज्ञ पूरे कर लिये। इससे इन्द्र को अपने पद की चिन्ता हुई और उसने अश्वमेधीय अश्व चुरा लिया। तब इसने इन्द्र से युद्ध कर उसे परास्त कर अश्व वापिस ले आया। ऐसा कई बार करने से इसे 'विजिताश्व' नाम प्राप्त हुआ। इन युद्धों से इन्द्र ने प्रसन्न हो कर इसे अन्तर्धान होने की विद्या सिखायी इससे इसे 'अन्तर्धान' नाम प्राप्त हुआ। इन्हें अग्नि देवता मानते हैं और वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लिया ऐसा मानते हैं।

बिजित्वरा-स. स्त्री. [सं.] भगवती का एक नाम विशेष।

बिजिनस, बिजिनिस, बिजिनेस—देखो 'बिजनस' (रू. भे.)

बिजियाभखी-सं. पु.—शिव, महादेव।

रू. भे.—बिजयाभखी।

बिजुजळ, बिजुजळा, बिजुझळ, बिजुझळा—१ देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजुळा—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—केसरी सिघ राव 'मालदे' कळोधर, चाडग्रां गुर सदा लग वडां चेळो। विचत्रसाह ग्रालमी जालमी विजुळा, मरण मिळियै कियौ ताळ- मेळो। —माधोदास गाडण

विजुळी-सं. स्त्री.—१ एक देवी का नाम। (पौराणिक)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

विजू—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

उ०—कोडां ग्रतज काढिया, पिंड थाको ग्रापांण। दुरसो विजू डंकियो, बैठ गयो सुरतांण। —रंगरैळो बीठू

विजूजळ, विजूजळा, विजूझळ, विजूझळा—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.) (नां. डि. को.)

उ०—१ रत खाळ रळ-तळ पालर प्रग्घळ, हो हुं हूकळ थट्ट हुवै। वळकत **विजूजळ** वीजक वद्दळ, ढोल त्रिमगळ वोम धुवै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ सांमठी धाक पड साबळांह, वळवळै धार **विजूजळांह**। गजवाज गडो-थळ भड गुडंत, निरलग ग्रंग धड नीजुडंत।

—गु. रू. बं.

उ०—३ करै करिमाळ झटां पति कांम,जळाहळ 'रांम'तणौ 'जगरांम' **विजूजळ** झाट करै जिण वार, सुरो 'ग्रणंदेस' तणौ' सिरदार।

—सू. प्र.

उ०—४ वाजै त्रंबाळ सिंधू विखम दुमग हाक वाजै दळां। वाजियां 'ग्रभौ' सिर विलंदखां, जळांबोळ विजूजळां। —बखतो खिड़ियो

विजूदूहो-सं. पु.—दूहे-छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ३ गुरु ग्रौर ४२ लघु होते हैं।

उ०—**विजू** नेत्रां सिव वदौ, मास दिवस ग्रर मास। इण विधि छंदौ ग्राखियै, भणौ महा बुध भास। —पिंगळ सिरोमणि

वि. वि.—देखो 'विडाळ'।

विजेत, विजेता-वि.—विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

उ०—१ छळी विजति तत्तिकी, सुछति छोलती वहै। **विजेत** नेत रेत पै, सजेत बोलती वहै।

—ऊ. का.

उ०—२ रिपुग्ग देत्य कंस सी, ग्रजेत सुल्लती रहै। **विजेत** वीर वंश की, **विजेत** घल्लती बहै।

—ऊ. का.

उ०—३ ग्रो तौ सदा सियावर रौ संगी, ग्रो तौ विस्व **विजेता** बजरंगी। इण रौ किण ही पार न पायौ रे, हनुमत हरि मन भायौ रे।

—गी. रां.

विजै—देखो 'विजय' (रू. भे.)

विजैउच्छव, विजैउच्छब, विजैउछब, विजैउछव—देखो 'विजयोत्सव'।

विजैकारी-वि.—विजय कराने वाला।

उ०—देवी कौमारी चांमुंडा **विजैकारी**, देवी कुबेरी भैरवी क्षेम-कारी। देवी ग्रगस व्रख्ख हस्ती मयंखै, देवी पंख केकी गरुड विरट पंखै। —देवि.

विजैखार-सं. पु. [सं. विजय+क्षार] १ विजयसार का क्षार निकाल कर बनाई गई ग्रौषधि।

२ देखो 'विजयसार' (रू. भे.) (ग्रमरत)

विजैजात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

विजैदसम, विजैदसमी, विजैदसम्मी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—ग्राहनपुर दसरावौ थप्पै, जोसी तिलक मुहूरत ग्रप्पै। **विजै-दसम्मी** होम करावै, विप्रां कन्ना वेद वचावै। —गु. रू. बं.

विजैमंड-सं. स्त्री. [सं. विजय + मण्ड] विजय की शोभा।

रू. भे.—बिजयमंड, विज्ञैमंड, विजयमंड।

विजैमाळा—देखो 'विजयमाळा' (रू. भे.)

विजैयात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

विजैलक्ष्मी, विजैलखमी, विजैलख्मी, विजैलिखमी, विजैलिख्मी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रू. भे.)

विजैसप्तमी—देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

विजैसाई—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

उ०—जैड़ी खुराक व्हैड़ा ई करार। जांणौ ईज हौ छिमटी सूं **विजैसाई** रिपिया रा ग्राकर मिटाय देता। —फुलवाड़ी

विजैसातम—देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

विजैसार—देखो 'विजयसार' (रू. भे.)

विजैसाही—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

विजोग-सं. पु.—१ तप्त, गरम। * (डि. को.)

२ देखो 'बिजोग' (रू. भे.)

उ०—ग्राठूं दिस पुर ऊजड़ै, चड़ै तड़ै सब लोग। सझियौ गढ बंकै भड़ै प्रज ग्रांमड़ै **विजोग**। —रा. रू.

३ देखो 'वियोग' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ थारौ वच्छ वांछु नहीं रे, खिण मात्र नो **विजोग** तिण कारण माहरा डीकरा रे, विलस कांम नै भोग रै। —जयवांणी

उ०—२ प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि व्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वद्धतै सनूर ए। **विजोग** सोग रोग विग्घ ग्रग्घ सिग्घ घायक, प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायकं। —ध. ब. ग्रं

उ०—३ हूं सेवक वौ साहिबौ हौ, सदा रह्यो संजोग । कोइक म्हारा पाप सूं हो, उपज्यौ विसम **विजोग** ।
—गी. रां.

उ०—४ ढलतां आधी रातड़ी, जागै ग्रौर न लोग । कै तौ जागै सत जन, कै तिय पियै बिजोग । —अग्यात

उ०—५ कंवर रै सांम्ही मूंडौ करनै रूखा सुर में बोली—हकनाक बापड़ा जीव री थेह रौ ठायौ छुडायौ, भोळा भाचरियां नै मां री **विजोग** दियौ ग्रर सूवर नै इण विध लोह सूं पूर करियौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—६ कांमी तै कूकर भलो, रुति बिन रहै **विजोग** । कांमी नर कै कांम कौ, हरीया सदा संजोग । —अनुभववांणी

उ०—७ साचौ धणी व्हैतौ तौ बिणज रा लोभ में लुगाई री ग्रा माया छोड़तौ भळां । कांई ग्रौ विजोग देवण साहू ई वौं चंवरी में हाथ भाल ग्रापरै लारै लायौ । —फुलवाड़ी

विजोगड़ै—क्रि वि.—निमित्त, लिए ।

विजोगण, विजोगणी—देखो 'वियोगणी' (रू. भे.)

उ०—१ जोबन पिणघट घट भर दोय, **विजोगण** ऊभी ग्रा पिणिहार डुबोवै घर सूरज घट ग्रेक, संभाळै किम धण दूणौ भार ।
—सांझ

उ०—२ जरै मनसा मथणी मथ जांण, करै कथणी कथ कै गुजरांण । कुजीव कुसंग कहां कुसळात, **विजोगण** पीव सजोगण बात । —ऊ. का.

उ०—३ उत्तर ग्राज स उत्तरइ, वाजइ लहर ग्रसाधि । संजोगणी सोहांमणइ, **विजोगणी** ग्रंग दाधि । —ढो. मा.

विजोगांत—देखो 'वियोगांत' (रू. भे.)

विजोगिण, विजोगिणी, विजोगिन, विजोगिनी—देखो 'वियोगणी' (रू.भे.)

विजोगी—देखो 'वियोगी' (रू. भे.)

विजोरी—सं. स्त्री.—खजूर का फल या वृक्ष ।

उ०—सत्तम प्रहरं दिवस कं, घण जु वाड़ियां जाइ । ग्रांणौ द्राख-**विजोरियां**, घण छोलइ, प्रिउ खाइ । —ढो. मा.

विजोरौ—देखो 'बिजोरौ' (रू भे.)

उ०—रसं माधुरै पी जंभीरी **विजोरा**, झुकै साख फूलां भारि भोरा । सनी सी मधु दाख ग्रनार सेवा, दियौ ग्रांणि लंचै सुधा जांणि देवा । —रा. रू.

विजोळियौ—देखो 'बीजोळियौ' (रू. भे.)

विजोहा—सं. पु. [सं. विमोहा] प्रत्येक चरण में दो रगण सहित छः वर्णों का एक छंद विशेष । (र. ज. प्र)

रू. भे.—विझोहा ।

विज्ज—१ देखो 'बीजळी' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

विज्जड़—देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

विज्जमाल, विज्जमाळा, विज्जमालि, विज्जमाली—देखो 'विद्युन्माली' (रू. भे.)

उ०—इंद्रु ग्रछइ रहतू पुर राउ, **विज्जमालि** तै लहुडउ भाउ । चपलु भणी नइ काढिउ राइ, रोसि चडिउ राखसपुरि जाइ ।
—सालिभद्र सूरि

विज्जळ, विज्जल—१ देखो 'बीजळा' (मह., (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ वपि ग्रसह जळ सुख उसण वल्लभ, सूर कर हुइ सीतळं । उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम, विखम हिम द्रुम **विज्जळं** ।
—रा. रू.

उ०—२ प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टं, इत तल थल उदवट्टं । झलहल **विज्जल** खड़ग झपट्टं, छट्टा वांण ग्राछट्टइं हौ । —वि. कु.

विज्जा—देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—१ गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, **विज्जा** वास पसिद्ध घर । परिहरवि ग्रावि विहि पयड़ कइ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि ।
—ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ ग्रहै क्रमि ग्रागम वेद छंद, नाटक गण लक्खण । पंच वरिस **विज्जा** विचार, भणि हुग्र वियक्खण ।
—ऐ. जै. का. सं.

विज्जादोस—सं. पु.—१ विद्या या सिद्धि द्वारा प्राप्त किये जाने वाले ग्राहार पर लगने वाला दोष । (जैन)

२ विद्या या सिद्धि द्वारा रूप बदल लेने पर लगने वाला दोष ।
(जैन)

विज्जाहर—देखो 'विद्याधर' (रू. भे)

उ०—१ नमिर सुरासुर खयर राय किन्नर **विज्जाहर**, महुय राइ विराय मांण पय पंकय सुंदर । महिग्रल महिमामेय मण वंछिग्र दायक, जय जय थंभण पासनाह भुवणत्तय नायग । —स. कु.

उ०—२ दुरयोधन चित्रंगदह; मेल्हावी उहिं पत्थि । **विज्जाहर** रायहं नमइ, दुरयोधनु लेउ सत्थि । —सालिभद्र सूरि

विज्जु, विज्जू—१ देखो बिज्जु' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

विज्जूमाली—सं. पु. [सं. विद्युन्माली] १ पश्चिम में स्थित एक पर्वत विशेष ।

उ०—ग्राधं पुस्कर में पूरब दिसं, मदर नांमै मेरु तिहां वसं । पच्छिम **विज्जूमाली** मेरु ए, इहां किण इतरौ नाम फेर ए ।
—ध. व. ग्र.

विज्जूर—स. पु.—खजूर का पेड़। (सभा)

विज्जै—देखो 'विजय' (रू. भे.)

उ०—राठौड कुंग्रर पक्खर रवद, कवरण (भ) समवड करै। जमदाढ छोड विज्जै लई, कना राउ ग्ररबट्ट रै। —गु. रू. बं.

विज्जैदसम, विज्जैदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे)

उ०—देवी मनाई **विज्जैदसम**, चतुरंग दळां चढियौ भरणि। कह ताज मेर माझी, 'कमौ, गयौ भाजि मेरां सरणि। —गु. रू. बं.

विज्या-सं. स्त्री.—ग्रार्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम चरण में २३ दीर्घ वर्ण सहित ४६ मात्रायें ग्रौर ११ ह्रस्व वर्ण सहित ११ मात्राएँ इस प्रकार कुल ५७ मात्राएँ होती हैं। —ल. पिं.

विझगिर, विझगिरि-सं. पु.—विंध्याचल पर्वत।

उ०—घरि वौह मंत्र जंत्र चित धारणि, कर इलाज देवी वर कारणि। चव इम सुणी दियै वर चाहै, माला-देवी विझगिर माहै। —सू. प्र.

विझासणि, विझासणी—१ देखो 'मावलियां'

२ देखो 'ग्रावड़'

विझोहा—देखो 'विजोहा' (रू. भे.)

उ०—दोइ रगण गण देखिजे, पाय जंग संप्रत्त। विझोहा एही विगत्ति, तवां रांमगुण तंत। —पिं. प्र.

विटंब—देखो 'बिटंब' (रू भे.)

उ०—१ जे कबहु स्रतक चलै, तौ बीचि विटंब कोई ग्रोर। जन हरिदास मूंवां पछै, नहीं कुटुंब में ठोर। —ह. पु. वां.

उ०—२ मया करीनइ मूंहनइं, दीधउ देस नीकाल। तिणि क्षणिथी क्षीण थयु, विरह विटबइ व्याल। —मा. कां. प्र.

विटंबण, विटंवणा, विटंबन, विटंबना—स. स्त्री.—१ कष्ट, दुःख, पीड़ा।

उ०—१ विरह विटंबन विधि घणी, सो मइं सहीय न जाय। मुझ मरवांनुं सोहिलुं, वाडव म मारै, माय। —मा. का. प्र.

उ०—२ मयण सरीखइ माधवइ, चिंति लगाडी चाख। वली विटंबनतूं करइ, वारु भई वैसाख। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'विडंबना' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रांणी सीत ज मुंध ग्रनेसौ, कीध विटंबण कारण केसौ। कहंती कोय कुवैण केहेसौ, रोह मंदोवरि कांय रहे सौ। —सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ प्रियु मोरा ग्रचरिज पांम्यउ रांम, प्रियु मोरा ग्रहो ग्रहो कांम विटंबणा हो। प्रियु मोरा त्रिव हुं सारू कांम, प्रियु मोरा ध्यांन सुकल हियड़इ धरचउ हो। —स. कु.

उ०—३ चंचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप। कांम विटंबन सी कहूंजी, तैं तूं जांणइ सरूप। —स. कु.

विटंबी—वि.—१ दुःखी, पीड़ित।

उ०—विरह विटबी वीनवउं, मुणि किरणागर क्रूर। मेखिइं रासि वांचयु, तु किम चालइ सू? —मा. कां. प्र.

२ लंपट।

विट—वि. [सं. विट] १ ग्रधिक काम वासना रखने वाला, कामुक।

२ वेश्याग्रों से सम्बन्ध रखने या उन्हीं के साथ रहने वाला, लंपट।

उ०—वांणिजां वधू गौ वाछ ग्रसइ विट, चोर चकव विप्र तीरथ वेळ। सूर प्रगटि एतला समापिया, मिळियां विरह विरहियां मेळ। —वेलि

३ बहुत बड़ा धूर्त या चालाक।

उ०—मोटा छोटा माछळा, ग्राप भखै ग्रणपार। विट वाची वांकम घणी, ग्राप धरै ग्रहंकार। —गजउद्धार

४ वह जो मैथुन करवाने का ग्रादि हो।

सं.पु—१ साहित्य में एक प्रकार के नाटक का नायक, जो विषयभोग में ग्रपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर किसी भोगविलासी राजा या धनवान व्यक्ति के साथ रह कर ग्रपनी वासना भी मिटाता हो।

२ नारंगी का पेड़।

३ मल, विष्ठा।

४ एक प्रकार का वर्ग विशेष।

उ०—१ नट विट नाडी त्रोडणा, ति ग्रावइ तु म वारि। धूती जाइ धूत कौ, उत्तिमनी उगारी। —मा. कां. प्र.

उ०—२ नाचकर, भोजकर, कवीग्रर, करीग्र वेस्यादि वंत, योगि, भोगि, विरागी, नट, विट, खुंट, खरट, लाट, मीठा, जूगनूं सिगार, वातहड़ा, रसिक···। —सभा

रू. भे.—ब्रिट, बिट, बिड।

विटक—सं. पु. [सं] १ ग्रार्यावर्त्त के दक्षिण में स्थित नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश। (पुराण)

२ उक्त प्रदेश में रहने वाली एक जाति विशेष।

विटचर—सं. पु. [सं. विट:=विष्ठा+चर=खाने वाला] गडसूरि, ग्रामशूकर।

रू. भे.—बिटचार।

विटणो, विटबौ—क्रि. ग्र.—ग्रावेष्टित होना।

उ०—तितरै चोर ग्राया। सो तीन तौ तरवार सुं पाड़ीया नै इण भांत लोह वायौ, ग्रागलै जांणीयौ नहीं। पछै चौथौ पेई वाळौ नाठौ, तिण नुं छूटी गेडी वाही सु कड़ियां मांहै भागौ। गेडी दोळौ विटांणौ। —राव मालदे री वात

विटणहार, हारौ (हारी), विटणियौ—वि० ।

विटिश्रोड़ौ, विटियोड़ौ, विट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विटीजणौ, विटीजबौ—कर्म वा० ।

विटप-सं. पु. [सं. विटप:] १ वृक्ष, पेड़ । (अ. मा; नां. मा.)

उ०—सिल विकट फरस सुखेण रै, तिरसूल ग्वायख तेण रै। भिडपाल गजगव **विटप** भड़, विख गदा वभीखण उवरधर ।
—र. रू.

२ पेड़ या लता की शाखा ।

उ०—विस्णु रूप अवतार परगट पोहमी में आए, सतजुग विछरै जीव उनकूं आंन चिताए। विस्णु धरम परगट कियौ आंन धरम **विटप** विहंडनं, संभरथळ परगट सही जोत रूप जग मंडनं ।
—कोल्हजी चारण

३ अण्डकोष का मध्यस्थ परदा ।

रू. भे.—बिटप ।

विटपतटी-सं. स्त्री.—कुंज गली । (अ. मा.)

विटपी-सं. पु. [सं. विटपिन्] १ जिस वृक्ष में नई शाखायें या कोंपलें निकली हों।

२ पेड़, वृक्ष । (ह. नां. मा.)

उ०—छिति रजपूतन छाइ रचें, घर घर बितरन रन । जिनमें बहु रांन जिम, बढत बहु जिम **विटपी** वन । —वं. भा.

३ वन, जंगल ।

४ वट वृक्ष ।

५ अंजीर का वृक्ष ।

रू. भे.—बिटपी ।

विटब-सं. पु.—प्रपंच, अफंडा ।

उ०—घरीया भेख भगति सुं भागा, और भरम अघकेरा लागा । पेम भगति का कठण पेंडा, **विटब** न कोई मावै फेंडा ।
—अनुभववांणी

विटभूत-सं. पु. [सं] वरुण की सभा में रहकर उनकी उपासना करने वाले एक असुर का नाम ।

विटळ, विटल-वि.—१ विगड़ा हुआ, विकार युक्त ।

२ पतित, पथ भ्रष्ट, भ्रष्ट ।

उ०-१ भक्त संन्यासी सेवड़ा ए, लग्या परिग्रह री लार के । **विटल** हुवा घणा ए, गया जमारौ हार कै । —जयवांणी

उ०—२ अकबर कुटिळ अनीत, और **विटळ** सिर आदरै। रघुकुळ उत्तम रीत, पाळै रांण 'प्रतापसी'। —दुरसौ आढौ

३ व्यभिचारी ।

उ०—ते रात्रेचर अति **विटल**, विकल वदन विकराल । विखम वचन मुख बोलतौ, रूठो जांणि कराल । —वि. कु.

४ दुष्ट ।

उ०—वेलि विहूणां पत्र परि, हूं हुइ छउं हीण। **विटल** रहि रे वेगलु, आगलि थिका अमीण । —मा. कां. प्र.

५ बिगड़ा हुआ, बिगड़ैल ।

उ०—१ अबै लोक हंससि कैहसी सो ठकुरांणी **विटळ** है सो ख्याल तमासौ देखता थकां ठाकुर नै मांहै बुलाय लीयौ है आप पधारजै ।
—राजा रा गुर रा बेटा री वात

उ०-२ परभातां हरि पैल, बगड़ावत गावै **विटळ** । चूंथै काती छैल, मैल जगत रौ मोतिया । —रायसिंह सांदू

रू. भे.—बिटळ ।

अल्पा.—बिटळौ, विटळियौ, विटळौ, वियटल ।

विटळणौ, विटळबौ-क्रि. अ.—१ विचलित होना, अस्थिर होना ।

उ०—अर उठीनै मगरै ढळतां ई असवार रो मन **विटळियौ** । सोच्यौ कैड़ो अबूभपणो करियो । हाथै आयोड़ी संपत नै ठुकराय दी । बापड़ी डोकरी तौ नांवधांव कीं नीं पूछ्या । —फुलवाड़ी

२ मर्यादा रहित होना, कुनीतिपूर्ण होना ।

उ०—अर बात नै सावळ समझतां ई राजाजी घांटी रौ लटकौ करता कैवण लागा—तो यूं बता, सावळ समझायां बिना कीकर समझ में आवै । देखौ जमांनौ **विटळियौ** । सगौ बेटौ ई मां रै साथै धोखौ करग्यौ । —फुलवाड़ी

३ पथ भ्रष्ट होना, धर्मच्युत होना ।

विटळणहार, हारौ (हारी), विटळणियौ—वि० ।

विटळिश्रोड़ौ, विटळियोड़ौ, विटळचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विटळीजणौ, विटळीजबौ—भाव वा० ।

बटळणौ, बटळबौ, बिटळणौ, बिटळबौ, वटळणौ, वटळबौ, विटलणौ, विटलबौ—रू० भे० ।

विटलणौ, विटलबौ—देखो 'विटळणौ, विटळबौ' (रू. भे.)

विटलणहार, हारौ (हारी), विटलणियौ—वि० ।

विटलिश्रोड़ौ, विटलियोड़ौ, विटल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विटलीजणौ, विटलीजबौ—भाव वा० ।

विटळाणौ, विटळाबौ-क्रि. स. (विटळणौ, विटळबौ क्रिया का प्रे. रू.)

१ विचलित करना या कराना, अस्थिर करना या कराना ।

२ मर्यादारहित होने को प्रेरित करना या कराना, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित करना या कराना ।

३ पथ भ्रष्ट होने को प्रेरित करना या कराना, धर्मच्युत होने को प्रेरित करना या करना ।

विटळाणहार, हारौ (हारी), विटळाणियौ—वि० ।
विटळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विटळाईजणौ, विटळाईजबौ—कर्म वा० ।
विटळाणौ, बिटळाबौ, विटळावणौ, बिटळावबौ, विटळोवणौ, विट-ळावबौ—रू० भे० ।

विटळायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विचलित किया या कराया हुआ, अस्थिर किया या कराया हुआ. २ मर्यादारहित होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित किया या कराया हुआ. ३ पथभ्रष्ट होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, धर्म-च्युत होने को प्रेरित किया या कराया हुआ ।
(स्त्री. विटळायोड़ी)

विटळावणौ, विटळावबौ—देखो 'विटळाणौ, विटळाबौ' (रू. भे.)
विटळावणहार, हारौ (हारी), विटळावणियौ—वि० ।
विटळाविश्रोड़ौ, विटळावियोड़ौ, विटळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विटळावीजणौ, विटळावीजबौ—कर्म वा० ।

विटळावियोड़ौ—देखो 'विटळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विटळावियोड़ी)

विटळियोड़ौ-भू का. कृ.—१ विचलित हुवा हुआ, अस्थिर हुवा हुआ. २ मर्यादारहित हुवा हुआ, कुनीतिपूर्ण हुवा हुआ. ३ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, धर्मच्युत हुवा हुआ ।
(स्त्री. विटळियोड़ी)

विटलियोड़ौ—देखो 'विटळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विटलियोड़ी)

विटळियौ, विटळौ—देखो 'विटळ' (रू. भे)

विटाणौ, विटाबौ-क्रि. अ.—सिकुड़ना ।
उ०—तेह पुरुस जरजर हुवौ जी, सिथिल पड़ी छै जी काय । लीलरी पड़े सरीर में जी, चांमड़ी हाड विटाय । —जयवांणी
विटाणहार, हारौ (हारी), विटाणियौ—वि० ।
विटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विटाईजणौ, विटाईजबौ—भाव वा० ।

विटायोड़ौ-भू. का. कृ.—सिकुड़ा हुआ ।
(स्त्री. विटायोड़ी)

विटाळण, विटाळणौ-वि.—१ लज्जित करने वाला, कलकित करने वाला ।
उ०—सीहणि हेकौ सीह जणि, छापरि मडै आळि । दूव विटाळण कापुरस, बोहळा जणै सियाळि । —हा. झा.
२ भ्रष्ट करने वाला ।

विटाळणौ, विटाळबौ-क्रि. स.—१ विचलित करना, अस्थिर करना ।
उ०—वीरम चित विटाळियौ, उलटी मत आंणी । सात हजारह सांढियां, दिन हेक दगांणी । आवै उण री ओठियां, कळ कूक करांणी । भ्रीगां भ्रीगां ढोलकी, सहवांण वजांणी । —वी. मा.
२ पथ भ्रष्ट करना, धर्मच्युत करना ।
उ०—लाजइ राजगोत्र अहिठांण, लाजइ चाचिगदे चहूंआंण । हूं तां नही विटाळं आप, हिव लाजइ कान्हड़दे बाप । —कां. दे. प्र.
३ कलकित करना ।
४ बदनाम करना, निन्दित करना ।
विटाळणहार, हारौ (हारी), विटाळणियौ—वि० ।
विटाळिश्रोड़ौ, विटाळियोड़ौ, विटाळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विटाळीजणौ, वीटाळीजबौ—कर्म वा० ।
बटाळणौ, बटाळबौ, बिटाळणौ, बिटाळबौ, वटाळणौ, वटाळबौ, विटालणौ, विटालबौ, विट्टालणौ, विट्टालबौ—रू० भे० ।

विटालणौ विटालबौ—देखो 'विटाळणौ विटाळबौ' (रू. भे.)
उ०—१ तइं हिंदू किया तुरक, विप्र तो मूल विटाल्या । वणिकै गइ विगति, रांक करि लंगरि राल्या । —स. कु.
उ०—२ पिण हुं सीलवती सती रे हां, केम विटालुं देह । जिम तिम करी ए भोलवी रे हां, राख्यो सील अभंग । —वि. कु.
उ०—३ दिवस कित लेकै गयं, गोखै बेठौ भूप । मल भूखित कृस-काय मुनि, दीठौ एहवौ रूप । सीख वयण गयौ वीसरी, सेवक नै कहै राय । नगर विटाल्यौ डूबडे, काढौ परौ धकाय ।—स्रीपालरास
विटालणहार, हारौ (हारी) विटालणियौ—वि० ।
विटालिश्रोड़ौ, विटालियोड़ौ, विटाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विटालीजणौ, विटालीजबौ—कर्म वा० ।

विटाळियोड़ौ-भू का. कृ.—१ विचलिचत किया हुआ, अस्थिर किया हुआ. २ पथभ्रष्ट किया हुआ, धर्मच्युत किया हुआ. ३ कलं-कित किया हुआ. ४ बदनाम किया हुआ, निन्दित किया हुआ ।
(स्त्री. विटाळियोड़ी)

विटालियोड़ौ—देखो 'विटाळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विटालियोड़ी)

विटाळौ-वि.—देखो 'वटाळौ' (रू. भे.)
(स्त्री विटाळी)

विटियोड़ौ-भू. का. कृ.—आवेष्टित हुवा हुआ ।
(स्त्री. विटियोड़ी)

विटोप-सं. पु.—रण क्षेत्र में सिर पर धारण किया जाने वाला लोह का टोप ।
उ०—जिणसाल जुआंण करंत जरादी, जूसण बाधै जम्मजडा ।

हद ग्रोप विटोप रंगावळि हाथळ, सूमात्रा करि सिद्ध खडा ।
—गु. रू. बं.

विट्टाळणौ, **विट्टाळबौ**—देखो 'विटाळणौ, विटाळबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

विट्टाळणहार, हारौ (हारी), **विट्टाळणियौ**—वि० ।

विट्टाळिग्रोड़ौ, **विट्टाळियोडौ**, **विट्टाळयोड़ौ**—भू० का० कृ० ।

विट्टाळीजणौ, **विट्टाळीजबौ**—कर्म वा० ।

विट्टाळियोड़ौ—देखो 'विटाळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विट्टाळियोड़ी)

विट्ठळ–सं. पु.—१ विष्णु की एक मूर्ति का नाम जो दक्षिणी भारत में स्थित है ।

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

३ श्री कृष्ण ।

रू. भे. - बिट्ठळ, बीठळ, बीठ्ठळ, विठळ ।

ग्रल्पा —विट्ठळौ, विट्ठलौ ।

मह.—विठळेसवर, विठळेस्वर ।

विट्ठळनाथ, **विट्ठलनाथ**–स. पु.—१ भगवान श्री विष्णु का नाम ।

२ पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी एवं 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के रचयिता, प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य बल्लभाचार्य के पुत्र ।

रू. भे.—बीठळनाथ, वीठळनाथ ।

विट्ठळौ, **विट्ठलौ**—देखो 'विट्ठळ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—वइरी माहारा **विट्ठळा** ! कां सिर कापिउं राहु ? इंदु गलिउ रहितु उदरि, तु मुझ देत न दाहु । —मा. कां. प्र.

विठळ—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)

उ०—ए जो पांडव थया ग्रमेळा, **विठळ** घाव तौ जिसी वेळा ।
—सिवदांन बारहठ

विठळेसवर, **विठळेस्वर**—देखो 'विट्ठळ' (मह., रू. भे.) (ग्र. मा.)

विठायत–सं. पु.—बैठने का स्थान, बैठक ।

उ०—हुवै चारमंगळां, नाद सुर हुवै त्रंबाळां, हरख **विठायत** हुवै हुवै दरबार भूजाळां । हय हूक लजांगडां, हुवै ग्रोछाह ग्रमलां, हुवै वांण रूपगां, हुवै सिणगार महलां । —बखतौ खिड़ियौ

विडंग, **विडंगक**–सं. पु. [स. वितुण्ड] १ ग्रश्व, घोड़ा ।
(ग्र. मा., ना. डिं. को.)

उ०—१ घोळै दिन वागा घकै, तोलै कूंत खडग्ग । ग्रांम्हा सांम्हा ग्राहुड़े, **विडंग** उपाड़ै वग्ग । —रा. रू.

उ०—२ पांच सोबायतां गिळै ऊभौ सुपह, विरोळै धौंकळै करै बाहां । **विडंग** ग्रादेसियौ दळै बहळायतां, सार ग्रादेसियौ पातसाहां ।
—ठाकर हरनाथसिंघ करमसौत रौ गीत

उ०—३ गई धखि क्रोध झळाहळ जागि, उभै चख छूटि झळाहळ ग्रागि । **विडंगक** झालि पवत्रिय वाग, झळाहळ सेल ग्रहै मध्य भाग । —सू. प्र.

उ०—४ छछग्रा मद रा छाकिया, रहौ ग्राछा सिरदार । **विडंगां** चढीया वीर बळ, लडंगां ग्राया लार । —पनां

२ ऊंट । (ह. नां. मा.)

उ०—तुरत ग्रेक खरचै रतन, लंगस तोड़ लडंग । ग्रभंग भूप उबांग्ररां, वड़ गज बाज **विडंग** ।
—कल्यांणसिंघ नगराजौत वाढेल री वात

३ बायबिडग नामक एक जड़ी विशेष ।

वि.—१ मस्त, उन्मत्त ।

२ बेपरवाह निशंक ।

३ ग्राजाद, स्वतंत्र ।

४ उदासीन ।

५ वीर, बहादुर ।

रू. भे.—बडंगी, विड़ंग, विड़ंगि, विड़ंगी, विडंगि, विडंगी, विणंग ।

मह.—बडंग, विडंगाळ ।

ग्रल्पा —विडगौ ।

विडंगळी–सं. स्त्री.—गाड़ी के ग्रग्र भाग (ऊध) से लगे ग्रौर लटकते हुए वे दो लम्बे लकड़ी के डंडों में से एक जो जमीन पर लगकर गाड़ी को जमीन से ऊंची रखते हैं ।

विडंगाळ–सं. स्त्री.—१ घोड़ी ।

उ०—धखै फेट ग्रौ स्रोण सू सेल धोवै, जठी वाग व'ळै तठी 'पाल' जोवै । **विडगाळ** झांकै करै ग्राठ वाटां, चलै वायरै दोट सूं मेघ छांटां ।
—पा. प्र.

२ देखो 'विडग' (मह., रू. भे.)

विडंगि, **विडगी** देखो 'विडंग' (रू. भे.)

विडंगौ—देखो 'विडंग' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—ग्रला विडंगां तिणौ फौजां वणावौ, ग्रला ग्रादमां दळ मुसां ग्रणावौ । ग्रला चंचळा ऊपरां मीर चाढौ, ग्रला दांणवां दिसै वागां उपाड़ौ । —पी. ग्रं.

विडंब–सं पु [सं. विडंबः, विडम्बः] १ नकल ।

२ कष्ट, पीड़ा, सन्ताप ।

३ हंसी, उड़ाने की क्रिया ।

रू भे.—बिडंब ।

विडंबक–वि. [सं.] १ समान ग्रनुकरण करने वाला, नकल करने वाला ।

२ अपमानित करने या निन्दा करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने वाला ।

३ हंसी उड़ाने वाला ।

४ कष्ट देने वाला, सन्ताप देने वाला ।

रू. भे.—बिडंबक ।

विडंबणौ, विडंबबौ—क्रि. स.—१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारना ।

२ चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारना ।

३ उपहास करना, हंसी-मजाक करना ।

४ प्रपंच या जाल फैलाना ।

५ उद्वेग या दुःख उत्पन्न करना ।

६ वेष बदलना ।

उ०—१ मत्स्यदेसि जाई नइ रमउ, ए तेरमउ वरसु निगमउ । ग्या वइराटह राय अमथांनि, वेस **विडंब्या** नीय अभिमांनी ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राइ बोलावि वहू हिडंब, अम्हि वसीसइ वेस विडंबि । तुम्हि सिघावउ तायह राजि, समरी आवे अम्हउ काजि ।
—सालिभद्र सूरि

विडंबणहार, हारौ (हारी), **विडंबणियौ**—वि० ।

विडंबिओड़ौ, विडंबियोड़ौ विडंब्योडौ—भू० का० कृ० ।

विडंबीजणौ, विडबीजबौ—कर्म वा० ।

विडंबन, विडंबना—सं. स्त्री. [सं. विडंबनं, विडम्बनम्, विडम्बना]—१ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने की क्रिया ।

२ चिढ़ाने या अपमानित करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने की क्रिया ।

३ उपहास, हसी-मजाक ।

४ प्रपच, जंजाल ।

५ उद्वेग, दुःख ।

रू भे.—विडंबना, विटंबण, विटबणा, विटंबन, विटंबना ।

विडंबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारा हुआ. २ चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारा हुआ. ३ उपहास किया हुआ, हंसी-मजाक किया हुआ. ४ प्रपंच या जाल फैलाया हुआ. ५ उद्वेग या दुःख संपन्न किया हुआ. ६ वेष बदला हुआ ।

(स्त्री. विडंबियोड़ी)

विडंबी—वि. [सं. विडम्बिन्] १ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारने वाला ।

चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल करने वाला ।

३ हंसी उड़ाने वाला, उपहास करने वाला ।

विड—देखो 'विड़' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ खसम विसारचा विड भज्या, विचार न जोया ।
—केसोदास गाडण

उ०—२ जठै पनां बोली अै तौ पांन को बीडो छै, रखावस्यौ ही । मन का मनोरथ हुवां थकां, वधाइ पावसौ हीज । खवास आय कंवर ने हकीकत कही । बावनां चंनण के विडें, अैहै रूप मिलजै तौ सही ।
—पनां

विडओजा—देखो 'विड्रजा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

विडणौ, विडबौ—देखो 'बिढणौ, बिढबौ' (रू. भे.)

विडणहार, हारौ (हारी), **विडणियौ**—वि० ।

विडिओड़ौ, विडियोड़ौ, विड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विडीजणौ, विडीजबौ—भाव वा० ।

विडद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—होइ लोह गोला मुगल, दोला जोर जुड़िया जंग । हैंवरा गलि गज गाह बांधै रह्या विडद अभंग ।
—प. च. चौ.

विडदड़ी—देखो 'विड़दड़ी' (रू. भे.)

विडदबड़ी—देखो 'विड़दबड़ी' (रू. भे.)

विडदविनायक—देखो 'विड़दविनायक' (रू. भे.)

विडदाव—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

विडदावळ, विडदावळी—देखो 'विरुदावळी' (रू. भे.)

विडरणौ, विडरबौ—क्रि अ.—१ क्रोध होना, गुस्सा होना ।

२ नाश होना, नष्ट होना ।

३ डरना, भयभीत होना ।

उ०—**विडरी** असज 'विजौ' थियौ वांसै, वाजै हाक थई विकरोळ । चालां चालणहार न चूकौ, खत्रवट खगवाहौ खेसोल ।
—नैणसी

विडरणहार, हारौ (हारी), **विडरणियौ**—वि० ।

विडरिओड़ौ, विडरियोड़ौ, विडरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विडरीजणौ, विडरीजबौ—भाव वा० ।

बिडरणौ, बिडरबौ—रू० भे० ।

विडराणौ, विडराबौ—क्रि. स.—डराना, भयभीत करना ।

उ०—१ रोवत-कूकत धूजी माताजी रै गेया, माता लै धूजी नै कंठ लगाया । कांई कांई रे धूजी तनै कण रुसायौ, कांई कांई रे धूजी तनै कण **विडरायौ** ।
—लो. गी.

उ०—२ मनै म्हारा पिताजी गोद खेलायौ, मनै म्हारी माई-मा **विडरायौ** । तें नहिं भजियौ वाला मैं नहिं भजियौ, भजियां विनां सुख कांय सूं होवै ।
—लो. गी.

विडराणहार, हारौ (हारी), **विडराणियौ**—वि० ।

विडरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विडराईजणौ, विडराईजबौ—कर्म वा० ।

बिडराणौ, बिडराबौ, बिडरावणौ, बिडरावबौ, विडरावणौ, विडरावबौ—रू० भे० ।

विडरायोड़ौ—भू. का. कृ.—डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री. विडरायोड़ी)

विडरावणौ, विडरावबौ—देखो' विडराणौ, विडराबौ' (रू. भे.)

विडरावणहार, हारौ (हारी), विडरावणियौ—वि. ।

विडराविश्रोड़ौ, विडरावियोड़ौ, विडराव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

विडरावीजणौ, विडरावीजबौ—कर्म वा. ।

विडरावियोड़ौ—देखो 'विडारायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. विडरावियोड़ी)

विडरियोड़ौ- भू.का.कृ.—१. क्रुद्ध हुवा हुआ, गुस्सा हुवा हुआ. २. डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ. ३ नष्ट हुवा हुआ ।

(स्त्री. विडरियोड़ी)

विडरी—वि.—१. कायर, डरपोक ।

२. दुखी, व्याकुल ।

रू.भे.—बिडरी

विडरूप—वि.—१ कुरूप, बदसूरत, सुन्दरता-रहित ।

उ०—१ बादळ सबसूं पै'ला सूवटां रा पींजरां रै गोडै गियौ । सूवटा उणनै कागलां सूं ई वत्ता विडरूप निगै आया । आखी गवाड़ी री भळाकौ दियौ । कीं चीज दाय नीं आई । —फुलवाड़ी

उ०—२ उण ठेलमठेल मेळा रै सागै बादळ राज-दरबार में पूगौ जणा राजाजी कोजी अर विडरूप लुगायां री परख करणा में मगन हा । हेड़ री हेड़ ऊभी ही । —फुलवाड़ी

उ०—३ वांनै खुद हाथां तगतगाय बारै काढी । पछै डावड़ियां नै कह्यौ कै सगळी विडरूप लुगायां नै राज-मैल सूं बारै तगड़ दै । —फुलवाड़ी

२ भयंकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ वा दो तीन वेळा मासी रै मूंडा सांम्ही जोयौ तौ उणनै ग्रैड़ौ लखायौ जांणै उणरी आंख्यां होठां माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं, कांन आपरौ ठायौ छोड लिलाड़ माथै जुड़ग्या अर नाक ठोडी रै हेटै लटूंबै । इण भांत मासी रौ उणियारो विक्रत अर विडरूप क्यूं व्हैगौ ? —फुलवाड़ी

उ०—२ विडरूप चलै असि चढि कुबांणि, जागिया प्रेत रणखेत जांणि । दरयाव रूप हूं कोस दोय, जगमुकट कीध डेरास जोय । —सू. प्र.

रू. भे.—बिडरूप, बिडरूपी, बीरूप, वडरूप, विडरूपी, ।

विडरूपता—सं. स्त्री.—१ कुरूपता, बदसूरती ।

उ०—तद काली मासी हंसनै कंवण लागी—बेटी, औ कुदरत रौ नेम के भाटौ ई रूपाळी चीज सूं मोह् करै अर विडरूपता सूं चिमकै । —फुलवाड़ी

२. भयानकता, भयंकरता ।

उ०— निपट अबूझ अर अग्यांनी व्हैतां थकां ई बेटा नै थारै रूप री परख है अर वौ म्हारी विडरूपता सूं डरपै । —फुलवाड़ी

विडरूपी—देखो 'विडरूप' (रू. भे.)

विडलूंण, विडलूण—सं. पु. [सं. विडलवण] एक प्रकार का सांचर नामक नमक । (अमरत) (उ. र.)

विडलौ—देखो 'बिड़लौ' (रू. भे.)

विडस—सं. पु. [सं. वडिश] मछली फंसाने का यंत्र विशेष । (अ. मा.)

रू. भे.—वडस ।

विडांण—देखो 'विड़' (१) (रू. भे.)

उ०—चित बाल डरचौ तक देख सही, मिळियौ सिधराव विडांण मही, भ्रण लेसिय जोगिय माग भगां, पडियौ भरडो डर दोड पगां । —पा. प्र.

विडांणौ—वि. (स्त्री. विडांणी) १ भयंकर, भयावह ।

२ पराया, दूसरों का ।

उ०—१ आंखड़ियां डंबर हुई, नयण गमाया रोय । सै साजण परदेसमइं, रह्या विडांणा होय । —ढो. मा.

उ०—२ सारा विडांणा ह्विव हूवा, जासी हमारा सीस बै । सीस घणा रा हूंचीया, अब आया मुझ चोर बै । —रीसालू री बात

उ०—३ राम नांम निस दिन भजै, तजौ विडांणी तात । जनहरिया नर देह कौ, ओसर वीतौ जात । —अनुभववांणी

२ नाशवान ।

उ०—गाफल मूढ न चेतिया, आ देह विडांणी । —केसौदास गाडण

३ अन्य ।

उ०—कंता फिरज्यौ एकला, किसा विडांणा साथि । थारी साथी तीन जण, हियौ कटारि हाथि । —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

४ दुश्मन की, शत्रु की ।

उ०—१ सादूलौ आपा समौ, बियौ न कोय गिणंत । हाक विडांणी किम सहै, घण गाजियै मरंत । —हा. भा.

उ०—२ खहर गमै व्रत दुज्जड़ा, सहर करै दहवाट । आया थांणा 'अजन' रा, लूट विडांणा राट । —रा. रू.

रू. भे.—बिडांणौ, विड़ांणौ, विरांणौ ।

विडांमण—वि.—भयंकर, भयावह ।

उ०—रेवंतां बाजिया पोड़ रडक, धराधर धुजीय कोम धड़क। विडांमण डंबर दीह विचाळ, मिळै निस भाद्रव नी मेघमाळ।
—गो. रू.

विडार-सं. पु.—नाश, संहार।

वि.—नाश करने वाला, संहार करने वाला।

उ०—ग्रेकण पसर तखत बै ऊपर, हींसल मला मनावौ हार। पंगी तणा वाजिया प्रघळा, वडै दुरंग सिर राय विडार।—द. दा.

विडारक-स. पु.—बिल्ली, विड़ाल। (वं. भा.)

वि.—नाश करने वाला, संहार करने वाला।

विडारणौ, विडारबौ-क्रि. स.—१. चीरना, फाड़ना।

उ०—करकै तरवार ग्रहै हिरणाकुस, मूढ निरोस निवारमुड़ै। सुत कै बळ एक मुरार तणौ सज, थभ विडार गिलार थड़ै। —भगतमाळ

२ नाश करना, ध्वंस करना, मिटाना।

उ०—१ तौ पिण आपणी सकति सार, असुरां विडार, धूमर संघार, चंड मुंड चंगाळ, रगतबीज, खैंगाळ संभ निसंभ संहारण, भारथ खग खेरण, तिण रौ वखांण देवी दीवांण, सुकवि कहै सुणावै, परम मन वंछित पावै। —मा. वचनिक

उ०—२ जैमल कारण मंड जुध, वड सेन विडारै। गिनका कीर पठावगी, वैकुंठ दवारै। —भगतमळ

उ०—३ निय निय तेज सुरां तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर। अप्रंम सुज तेज प्रगट धुर आंगण, विसन तेज भुज दंयत विडारण। —मा. वचनिका

उ०—४ रिणमालोत कहै रिण रुधां, अचड़ तियागी बोल इसो, जूह विडार किसौ जीव-रखौ, केहर रुधां साथ किसौ। —द. दा.

उ०—५ प्रति दिन मंगळ गीत, देवतां तणा गुवावै। विघन विडारण काज, विनायक नूंत बुलावै। —दसदेव

ऊ०—६ एकलड गुरुड पन्नग खाइ, सीह एक गज ना सइ घाइ। पारथ एक दल कोडि विडारइ, ईणह सिउ कौ नवि मलइ अखाडइ।
—सालिसूरि

३ निवारण करना, मिटाना।

उ०—१ हरीया हसती दत सुं। तोड़ै कोट किवार। साध विडारै सबद सुं, भरम करम का डार। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया भांजै क्यार कुं। हसती मातौ मद। साध विडारै भरम कुं सौ रातौ अनहद। —अनुभववांणी

४ बर्बाद करना, बिगाड़ना।

उ०—मीरां नै रांणांजी बरजै, मितना जन्म विडारै। थै संगत साध की सीख्या, मत आवौ म्हैल हमारै। —मीरां

५ मारना।

उ०—१ काठ कांण करवत्त, वंट किय दंत विहारै। पछट वीर भुज पांण, चीर जुरसंघ विडारै। —रा. रू.

उ०—२ देवी दसरथं रुप स्रवणं विडारी, देवी स्रव्वणं रुप पितु मात तारी। देवी केकयी रूप तैं कूड कीधा, देवी रांम रैं रुप वनवास लीधा। —देवि.

उ०—३ सिंहमल सिलकिया करमट कूदिया, कटकां हुई ज हालौहाल। सेखा दुरजनसाल समोभरम, रोपौ पग विडारण माल।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

६ तोड़ना।

उ०—१ करीउ प्रतिग्या चडीउ झूझि जयद्रथु रणि पाडइ। भूरिस्रवा नउ तीण समइ सरि बाहु विडारइ —सालिभद्रसूरि

उ०—२ वीर कोडि चिहु पांडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि विड़ारी। तु विराटन्नप भीमि ऊहालिउ, दाउ देविणु विलेच्छु सुवालिउ। —सालिसूरि

७ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक करना, दूर हटाना, दूर करना, चीर देना, विभक्त करना।

उ०—वन थाहर नाहर वसै, बाहर थाट विडार। तरवर गुलम समीर विण, न कौ नमावणहार। —बां. दा.

८ कुपित करना, क्रोधित करना।

९ तितर-बितर करना, बिखेरना।

१० त्याग करना, छोड़ना।

उ०—१ करिस्यां भरम करम कुं कांनै, भरिस्यां भगति भंडारी। खरचत खावत सहज खजीना, लालच लोभ विडारी।
—अनुभववांणी

उ०—२ जांमण रा रै जाया, किस विध विडारी रै छोटी भांण नै। —जीण माता रौ गीत

उ०—३ हरसा वीर मेरा रै, जै मेरी होती जुग तें माय। जांमण का रै जाया, अखन कंवारी नै नांय विड़ारती।
—जीण माता रौ गीत

११ उजड़ करना, निराबाद करना।

उ०—चुण्या संवारचा ढह पड़ै, ढहिया संवारै, भरिया सरवर रीतवै, रीता जळ भारै। सूना देस वसावही, वसिया विडारै, सीत रखंदा जळ कवळे, थळ आक सधारै। —केसौदास गाडण

विडारणहार, हारौ (हारी), विडारणियौ—वि०।

विडारिग्रोड़ौ, विडारियोड़ौ, विडारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विडारीजणौ, विडारीजबौ—कर्म वा०।

विड़ारणौ, विड़ारबौ, बिडारणौ, बिड़ारबौ, विड्डारणौ, विड्डारबौ
—रू० भे०।

विडारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ निवारण किया हुआ, मिटाया हुआ. ४ बर्बाद किया हुआ, बिगाड़ा हुआ. ५ मारा हुआ. ६ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, दूर किया हुआ, चीरा हुआ. ७ कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ. ८ तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ. ९. त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ, १० निराबाद किया हुआ, उजड़ किया हुआ ।

(स्त्री. विडारियोड़ी)

विडाळ, विडाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—१ चख चोळ भाल विकराळ चंच, कळ चाल प्रकट दाढाळ कूंच । रोसाळ मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता विडाळ नाहर चसम्म । —वि. सं.

उ०—२ वद विडाळ वदि सुणाह वलि, सह इकवीस सुणाइ । हार घटै हुइ लुघ हुअै, तिम तिम नांम वत्ताइ । —पिं. प्र

विडाळद्रग-वि.—बिल्ली के समान आंखों वाला ।

सं. पु.—यवन, मुसलमान ।

उ०—असलां चढि भाळ कराळ तकै, धड़कै नंह चित्त लंकाळ धकै बिकसै रणताळ अमाळ बगां, दमकै खिजि ज्वाळ विडाळ-द्रगां । —मे. म.

रू. भे.—बिडाळद्रग, विड़ाळद्रग

विडालव्रत्तिक-वि.—बिल्ली के समान वृत्ति वाला ।

रू. भे.—बिडाळव्रत्तिक, विड़ाळव्रत्तिक

विडालाक्ष-सं. पु. [सं] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा ।

विडाळी—देखो 'बिडाळ' (अल्पा., रू. भे)

विडाव-सं. पु.—विशेष प्रकार का दांव ।

उ०—मैं इम जांणियो महाराज, कोइक डाव-विडाव करूं । मार महैवै बंदकी मीरजै, मीरजो मार'र पछै मरूं ।

—बगतो खिड़ियो

विडावणौ-वि.—जो सुहावना न हो, अप्रिय, अरुचिकर।

उ०—भावै नहीं ज भात, लागै विणज विडावणौ । रीरावै दिन-रात, रोटचां कारण, राजिया । —किरपारांम

विडियोड़ौ—देखो 'विढियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. विडियोड़ी)

विडुद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

विडूजा-सं. पु [सं. विडौजस्] इन्द्र । (अ. मा., नां. मा.,)

रू. भे.—बडूजा, बिड़ौजा, बिडूजा, वडूजा, विड़ओजा, विड़ूजा, विड़ोजा, विडओजा, विडोजा, विडौजा ।

विडूजावाह-सं. पु. [सं. विडौजस्+वाहनं] इन्द्र का वाहन, हाथी, एरावत ।

रू. भे.—बडूजावाह, बिड़ौजावाह, बिडूजावाह, वडूजावाह, विड़-ओजावाह, विड़ूजावाह, विड़ोजावाह, विडओजावाह, विडोजावाह, विडौजावाह ।

विडूरथ-सं. पु.—१ एक यादववंशी जो श्वफल्क के भाई तथा चित्ररथ के पुत्र थे ।

२ दन्तवक्त्र का भाई जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

३ एक पुरुवशीय सम्राट्, जिसे उसकी माता ने, जब परशुरामजी पृथ्वी निःक्षत्रिय कर रहे थे, उस समय ऋष्वत् पर्वत पर एक ऋषि के आश्रम में छिपा कर रखा था ।

४ अनश्वन का पिता, मधुकुल में उत्पन्न संप्रिया का पति और कुरु राजा एवं दाशार्ही शुभांगी के संसर्ग से उत्पन्न, एक राजा ।

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

विडोळ-वि.—आकार रहित, बिना आकार का ।

विडोळणौ, विडोळबौ-क्रि. स.—कम्पायमान करना, कम्पित करना, भय-भीत करना ।

उ०—अमोल तोल मोल कै, प्रचोळ चोळ अंख कै । अडोळ डोळ कध कै, विडोळ नै असंक कै । —ऊ. का.

विडोळणहार, हारौ (हारी), विडोळणियौ—वि. ।

विडोळिओड़ौ, विडोळियोड़ौ, विडोळचोड़ौ—भू. का. कृ. ।

विडोळीजणौ, विडोळीजबौ—कर्म वा. ।

विडोळियोड़ौ-भू. का. कृ.—कम्पायमान किया हुआ, कम्पित किया हुआ भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री. विडोळियोड़ी)

विडौ—देखो 'विड़ौ' (रू. भे.)

विडौजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे.)

विडौजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू. भे.)

विडुारणौ, विडुारबौ—देखो 'विडारणौ विडारबौ' (रू. भे.)

उ० —१ राव राय रखपाळ, राव रहड़ण रिम राहां । राव कुरूप हराय, राव वैरी पतसाहां । राव रोर विडुार, राव संसार उधारै । राव ध्रम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै । —नैणसी

उ०—२ सळखहर राउ सिरि वधी सेस, दळपत्ति हुअउ सिरि दसां देस । मडोवर लियउ मल्लेछ मारि, विडुारि सत्र मिरियां वहारि । —रा. ज. सी.

विडुारणहार, हारौ (हारी), विडुारणियौ—वि० ।

विडुारिओड़ौ, विडु रियोड़ौ, विडुारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विडुारीजणौ, विडुारीजबौ—कर्म वा० ।

विड्डारियोड़ौ—देखो 'विडारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विड्डारियोड़ी)

विड्डणौ, विड्डबौ—देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे.)

उ०—मुडिया पिंड मैगळ असि उछंछळ, रावत विम्मळ लडि पडियं। दुजडा दूनैं दळ विड्डै सब्बळ, कदळ पेखै रिव खडियं।

—गु. रू. बं.

विड्डणहार, हारौ (हारी), विड्डणियौ—वि०।

विड्डिग्रोड़ौ, विड्डियोड़ौ, विड्ड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विड्डीजणौ, विड्डीजबौ—भाव वा०।

विड्डियोड़ौ—देखो 'विढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विड्डियोड़ी)

विढ, विढक, विढण, विढणि—सं. पु.—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ छिळ बहत धक धक अछक छक, अंतराळ गरळक ढुळ इधक। फीफरडक नद फरक, हुय विढक हक हक, वीरहक।

—र. रू.

उ०—२ थर थक्का बलवार विढण क्यूं वीसरै, लग्ग लोह लकीर नमंता नीसरै। वाव फरूकै वेढ वळै नह वापरै, पांणां चढियां किलम जिकै 'परताप' रै।

—किसोरदांन बारहठ

उ०—३ असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेड़ेचै वाही करि खीज सुकरि आकास हूंत सेलारां, वीजुल विढण क वुही वीज।

—केसोदास गाडण

उ०—४ इम कहि विढण दीध न्रप आयस, दळ हालिया वाग पद-मणि दिस। रोस चढै विढिया रखवाळा, अठ छ हजार तेजमिण वाळा।

—सू. प्र.

उ०—५ वडौ सूर सुदतार रायसिंघ विसरांमियां, विढण कुण कंवारी घड़ा वरसी। कूंजरां तणी मौहताद करसी कवण, कवण कोड़ां तणी मोज करसी।

—दुरसौ आढौ

उ०—६ आलम तइ आयाह विग्रह हुवइ कीधइ विढणि। अचळेसर गढ अवछड़ै जिव लै मोकळि जाह।

—अ. वचनिका

उ०—७ बूर पड़ि जंबूर विहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै खड़भड़। विढण धरि अड़ सुहड़ समवड़, वड़वडै पिंड चार।

—रा. रू.

विढणौ, विढबौ—क्रि. अ.—१ युद्ध करना, संग्राम करना।

उ०—१ आठुआं चाढतां वकै साब्बळ अणी, खेलतां घसळ खत्रवाट आखेट। विढंतां सेस मणगयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट।

—नाथौ सांदू

उ०—२ परठि पांच पौरिस तणी भणणियौ पाचरै, चमरबंध करण नमि वंति चेजौ। विधूसै सेंद फुलवादि रूकां विढण, त्रविध घड़ बाग विचि भमर 'तेजौ'।

—तेजसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—३ आया साह अलावदी, विढ कटकां सूं वीर। मांझी रिणथंभर मुआ, हठ निरवाह हमीर।

—बां. दा.

उ०—४ सहै खग संभ्रम 'सांमतसाह', विढै 'अनपाळ' करै हथ-वाह। सभै करिमाळ झटां समरेस, विढै 'करनेस' तणौ 'वखतेस'।

—सू. प्र.

२ लड़ना, झगड़ना।

उ०—एकदा प्रस्ताव। जोईयौ दलौ गुजरात चाकरी गयौ हुतौ भाईयां सूं विढनै। उठै गुजरात घणा दिन रह्यौ। अोथ वीमाह कियौ, घणा दिन रह्यौ।

—नैणसी

३ भिड़ना, टक्कर लेना।

उ०—रे राखस मुझ आगलि बाल, मारिसि तउ तूं पूगउ कालु। रूंख ऊपाडी वेई विढई, दह दिसि गाजइं डूंगर रढइं।

—सालिभद्र सूरि

४ युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुवे मारा जाना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ घसै वरियांम वहै खग-धार, विढति सुवप्प पडंत विहार। लडै हिक सांमां लोह लियंत, दियै हिक पाव चडे गज-दंत।

—गु. रू. बं.

उ०—२ कोटां ओट घणा जुध कीया, फौजां घणा किया पग-फेर। राउ राठोड जिही सूं रौद्रां, अध-पत विढियौ न कौ अनेर।

—केसोदास गाडण

उ०—३ केती बार हुई कछवाहा, घाय मचतां घमसांणां। दाखै परी हरी-चंद दूजा, विढ पोढौ आव विवाणां।

—जैसिंघ नरुका कछवाहा रौ गीत

उ०—४ भागां साथि न भागौ अणभंग, आप विढै भांजिया अरि। केहरि सरगि पहूतौ अणकळ, 'करन' हरौ अखियात करि।

—नाहरखांन चौहांण रौ गीत

५ फटना।

६ कटना।

उ०—भुहां भिड़ि मूंछ चखां विकराळ, काळै असि ओरवियौ कळिचाळ। दियै खग झाट 'गिरद्धरदास', विढै असवार सहेत व्रहास।

—सू. प्र.

विढणहार, हारौ (हारी), विढणियौ—वि०।

विढिग्रोड़ौ, विढियोड़ौ, विढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विढीजणौ, विढीजबौ—भाव वा०।

विढणौ, बिढबौ, बिढवणौ, बिढवबौ, विड़णौ, विड़बौ, बिडणौ बिडबौ, विड्डणौ, विड्डबौ—रू० भे०।

विढाळ—स. पु.—योद्धा।

विडारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ निवारण किया हुआ, मिटाया हुआ. ४ बर्बाद किया हुआ, बिगाड़ा हुआ. ५ मारा हुआ. ६ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, दूर किया हुआ, चीरा हुआ. ७ कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ. ८ तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ. ९. त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ, १० निराबाद किया हुआ, उजड़ किया हुआ ।

(स्त्री. विडारियोड़ी)

विडाळ, विडाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—१ चख चोळ भाल विकराळ चूंच, कळ चाल प्रकट दाढाळ कूंच । रोसाळ मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता **विडाळ** नाहर चसम्म ।
—वि. सं.

उ०—२ वद **विडाळ** वदि सुणह वलि, सह इकवीस सुणाइ । हार घटै हुइ लुघ हुअै, तिम तिम नांम वत्ताइ ।
—पिं. प्र

विडाळद्रग-वि.—बिल्ली के समान आंखों वाला ।

सं. पु.—यवन, मुसलमान ।

उ०—असलां चढि भाळ कराळ तकै, धड़कै नंह चित्त लंकाळ धकै विकसै रणताळ अमाळ वगां, दमकै खिजि ज्वाळ **विडाळ-द्रगां** ।
—मे. म.

रू. भे.—बिडाळद्रग, विड़ाळद्रग

विडालव्रत्तिक-वि.—बिल्ली के समान वृत्ति वाला ।

रू. भे.—बिडाळव्रत्तिक, विड़ाळव्रत्तिक

विडालाक्ष-सं. पु. [सं] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा ।

विडाळी—देखो 'बिडाळ' (अल्पा., रू. भे)

विडाव-सं. पु.—विशेष प्रकार का दांव ।

उ०—मैं इम जांणियो महाराज, कोइक डाव-**विडाव** करूं । मार महूंवे बंदकी मीरजै, मीरजो मार'र पछै मरूं ।
—बगतो खिड़ियो

विडावणौ-वि.—जो सुहावना न हो, अप्रिय, अरुचिकर ।

उ०—भावै नहीं ज भात, लागै विणज **विडावणौ** । रीरावै दिन-रात, रोट्यां कारण, राजिया ।
—किरपारांम

विडियोड़ौ—देखो 'विढियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. विडियोड़ी)

विडुद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

विडूजा-सं. पु [सं. विडौजस्] इन्द्र । (अ. मा., नां. मा.,)

रू. भे.—बडूजा, बिड़ौजा, बिडूजा, वडूजा, विड़ओजा, विड्जा, विड़ोजा, विडओजा, विडोजा, विडौजा ।

विडूजावाह-सं. पु. [सं. विडौजस्+वाहनं] इन्द्र का वाहन, हाथी, एरावत ।

रू. भे.—बडूजावाह, बिड़ौजावाह, बिडूजावाह, वडूजावाह, विड़ओजावाह, विड्जावाह, विड़ोजावाह, विडओजावाह, विडोजावाह, विडौजावाह ।

विडूरथ-सं. पु.—१ एक यादववंशी जो श्वफल्क के भाई तथा चित्ररथ के पुत्र थे ।

२ दन्तवक्त्र का भाई जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

३ एक पुरुवंशीय सम्राट्, जिसे उसकी माता ने, जब परशुरामजी पृथ्वी निःक्षत्रिय कर रहे थे, उस समय ऋष्वत् पर्वत पर एक ऋषि के आश्रम में छिपा कर रखा था ।

४ अनश्वन का पिता, मधुकुल में उत्पन्न संप्रिया का पति और कुरु राजा एवं दाशार्ही शुभांगी के संसर्ग से उत्पन्न, एक राजा ।

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

विडोळ-वि.—आकार रहित, बिना आकार का ।

विडोळणौ, विडोळबौ-क्रि. स.—कम्पायमान करना, कम्पित करना, भयभीत करना ।

उ०—अमोल तोल मोल कै, प्रचोळ चोळ अंख कै । अडोळ डोळ कध कै, **विडोळ** नै असंक कै ।
—ऊ. का.

विडोळणहार, हारौ (हारी), विडोळणियौ—वि. ।

विडोळिओड़ौ, विडोळियोड़ौ, विडोळयोड़ौ—भू. का. कृ. ।

विडोळीजणौ, विडोळीजबौ—कर्म वा. ।

विडोळियोड़ौ-भू. का. कृ.—कम्पायमान किया हुआ, कम्पित किया हुआ भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री. विडोळियोड़ी)

विडौ—देखो 'विड़ौ' (रू. भे.)

विडौजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे.)

विडौजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू. भे.)

विड्डारणौ, विड्डारबौ—देखो 'विडारणौ विडारबौ' (रू. भे.)

उ० —१ राव राय रखपाळ, राव रहड़ण रिम राहां । राव कुरूप हराय, राव वैरी पतसाहां । राव रोर **विड्डार**, राव संसार उधारै । राव ध्रम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै ।
—नैणसी

उ०—२ सळखहर राउ सिरि वधी सेस, दळपत्ति हुअउ सिरि दसां देस । मडोवर लियउ मल्लेछ मारि, **विड्डारि** सत्र मिरियां वहारि ।
—रा. ज. सी.

विड्डारणहार, हारौ (हारी), विड्डारणियौ—वि० ।

विड्डारिओड़ौ, विड्डारियोड़ौ, विड्डारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विड्डारीजणौ, विड्डारीजबौ—कर्म वा० ।

विड्डारियोड़ौ—देखो 'विडारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विड्डारियोड़ी)

विड्डणौ, विड्डबौ—देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे.)
उ०—मुडिया पिंड मैंगळ असिस उछंछळ, रावत विम्मळ लडि पडियं। दुजडा दूनै दळ विड्डै सव्वळ, कंदळ पेखै रवि खडियं।
—गु. रू. बं.

विड्डणहार, हारौ (हारी), **विड्डणियौ**—वि०।
विड्डिश्रोड़ौ, विड्डियोड़ौ, विड्डयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विड्डीजणौ, विड्डीजबौ—भाव वा०।

विड्डियोड़ौ—देखो 'विढियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विड्डियोड़ी)

विढ, विढक, विढण, विढणि-सं. पु.—देखो 'वेढ' (रू. भे.)
उ०—१ छिळ बहत थक थक अछक छक, अंतराळ गरळक डुळ इथक। फीफरडक नद फरक, हुय विढक हक हक, वीरहक।
—र. रू.

उ०—२ थर थक्का बलवार **विढण** क्यूं वीसरै, लग्ग लोह लकीर नमंता नीसरै। वाव फरूकै वेढ वळै नह वापरै, पांणां चढियां किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोरदांन बारहठ

उ०—३ असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेड़ेचै वाही करि खीज सुकरि आकास हूंत सेलारां, वीजुल **विढण** क वुही वीज।
—केसौदास गाडण

उ०—४ इम कहि **विढण** दीध न्रप आयस, दळ हालिया वाग पद-मणि दिस। रोस चढै विढिया रखवाळा, अठ छ हजार तेजमिण वाळा। —सू. प्र.

उ०—५ वडो सूर सुदतार रायसिंघ विसरांमियां, **विढण** कुण कंवारी घड़ा वरसी। कूंजरां तणी मोहताद करसी कवण, कवण कोड़ां तणी मौज करसी। —दुरसौ आढौ

उ०—६ आलम तइ आयाह विग्रह हुवइ कीधइ **विढणि**। अचळेसर गढ अवछड़े जिव लै मोकळि जाह। —अ. वचनिका

उ०—७ बूर पड़ि जंबूर विहुं घड़, भुरज बीछड़ि पड़ै खड़भड़। **विढण** धरि अड़ सुहड़ समवड़, वड़वडै पिंड चार। —रा. रू.

विढणौ, विढबौ-क्रि. अ.—१ युद्ध करना, संग्राम करना।
उ०—१आठुआं चाढतां धकै साबळ अणी,खेलतां धसळ खत्रवाट आखेट। **विढंतां** सेस मणगयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट। —नाथौ सांदू

उ०—२ परठि पांच पौरिस तणी भणणियौ पाघरै, चमरबंध करण नमि वंति वेजौ। विधूसै सेद फुलवादि रूकां **विढण**, त्रविध घड़ बाग विचि भमर 'तेजौ'। —तेजसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—३ आया साह अलावदी, **विढ** कटकां सूं वीर। मांझी रिणथंभर मुआै, हठ निरवाह हमीर। —वां. दा.

उ०—४ सहै खग संभ्रम 'सांमतसाह', **विढै** 'अनपाळ' करै हथ-वाह। सझै करिमाळ झटां समरेस, **विढै** 'करनेस' तणौ 'वखतेस'।
—सू. प्र.

२ लड़ना, झगड़ना।
उ०—एकदा प्रस्ताव। जोईयौ दलौ गुजरात चाकरी गयौ हुतौ भाईयां सूं **विढनै**। उठै गुजरात घणा दिन रह्यौ। अोथ वीमाह कियौ, घणा दिन रह्यौ। —नैणसी

३ भिड़ना, टक्कर लेना।
उ०—रे राखस मुझ आगलि बाल, मारिसि तउ तूं पुगउ कालु। रूंख ऊपाडी बेई **विढई**, दह दिसि गाजइं डूंगर रढइं।
—सालिभद्र सूरि

४ युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुवे मारा जाना, वीरगति प्राप्त होना।
उ०—१ धसै वरियांम वहै खग-धार, **विढति** सुवप्प पडंत विहार। लडै हिक सांमां लोह लियंत, दियै हिक पाव चडे गज-दंत।
—गु. रू. बं.

उ०—२ कोटां ओट घणा जुध कीया, फौजां घणा किया पग-फेर। राउ राठोड जिही सूं रौद्रां, अध-पत **विढियौ** न को अनेर।
—केसौदास गाडण

उ०—३ केती वार हुई कछवाहा, घाय मचतां घमसांणां। दाखै परी हरी-चंद दूजा, **विढ** पोहौ आव बिवाणां।
—जैंसिघ नरुका कछवाहा रौ गीत

उ०—४ भागां साथि न भागौ अणभंग, आप **विढै** भांजिया अरि। केहरि सरगि पहूतौ अणकळ, 'करन' हरौ अखियात करि।
—नाहरखांन चौहांण रौ गीत

५ फटना।
६ कटना।
उ०—भुहां भिड़ि मूंछ चखां विकराळ, काळै असि औरवियौ कळिचाळ। दियै खग झाट 'गिरद्धरदास', **विढै** असवार सहेत व्रहास। —सू. प्र.

विढणहार, हारौ (हारी), **विढणियौ**—वि०।
विढिओड़ौ, विढियोड़ौ, विढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विढीजणौ, विढीजबौ—भाव वा०।

बिढणौ, बिढबौ, बिढवणौ, बिढवबो, विड़णौ, विड़बौ, बिडणौ बिडबौ, विड्ढणौ, विड्ढबौ—रू० भे०।

विढाळ-स. पु.—योद्धा।

उ०—झड अनड़ झाड आंगौ उपाड, दळ मिळै दूठ रिण भिडै रूठ, तेगां अताळ बागौ विढाळ, तिण बखत तात भड लखण आत, चल सगत चोट लग पड़ै लोट,······। —र. रू.

विढियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. २ लड़ा हुआ, झगड़ा हुआ. ३ भिड़ा हुआ, टक्कर लिया हुआ. ४ युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुवे मरा हुआ, वीरगति प्राप्त हुवा हुआ. ५ फटा हुआ. ६ कटा हुआ।
(स्त्री. विढियोड़ी)

विरांग—देखो 'विडंग' (१) (रू. भे.)

उ०—लै ऊंडळियां 'पाल' नै, भूप तणौ तप भाळ। विणंग चढै वीखविया, कोळ दिस ततकाळ। —पा. प्र.

विणंगणी—देखो 'बिणगणी' (रू. भे.)

विणंठणौ, विणंठबौ—देखो 'बिणठुणौ, बिणठुबौ' (रू. भे.)

उ०—रांम नांम विण जांणियां, वात विणंठी मूळ। हरीया जब होसी कहा, अंत भयौ असथूळ। —अनुभववांणी

विणंठणहार, हारौ (हारी), विणंठियौ—वि०।

विणंठिओड़ौ, विणंठयोड़ौ, विणंठयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विणंठीजणौ, विणंठीजबौ—भाव वा०।

विणंठियोड़ौ—देखो 'बिणठ्ठियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विणंठियोड़ी)

विण—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ कंध वसन रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह। घर रुखाळौ विण धरण, गिणै न त्रण सम देह। —जैंतदांन बारहठ

उ०—घट तेज अनोपम वेग घणूं, विण कारज तुज्ज विड़ग वणूं। रखसूं कर मोद घणी रळियां, उण नूं असमांन री ऊंडळियां। —पा. प्र.

उ०—३ कोकिल सोर मोर तंडवि क्रत, नटवर गांन संगीत करै व्रत। गांन पांन इम्रत सम गावै, ईस्वर विण दुतिया नह आवै। —सू. प्र.

उ०—४ दीपक विण मंदिर किसौ, योवन विण सिणगार। नेह विना सो प्रीति जिम, तिम कंता विण नार। —वि. कु.

उ०—५ असुर बोलियौ कुबोल पतसाह मुह आगळी, राज विण खत्री धरम कुण राखै। दूसरा 'माल' वरदांन तो नूं दिवूं, 'अमर' मो काढ जम-दाढ आखै। —केसोदास गाडण

२ देखो 'वण' (रू. भे.)

उ०—१ रज बटधर कट रज मिल्या, विण रज भरियौ बट्ट। रज उछाळ गजराज घण, रण बांटै रजवट्ट। —रेवतसिंह भाटी

उ०—२ देवीदास स्री ठाकुरां तै परणांम कियौ। तद भीतर सूं आवाज हुई–पलक दरियाव तमासौ दीठौ? कुंवर कहै–आपरी किरपा सूं। फेर अवाज हुई–तै आ भगवांन री बात किणी नै कही तौ विण-सांयत थांहरी देह छूटसी, तैंसूं खबरदार रहै। —पलक दरियाव री बात

उ०—३ कुळ हाडां कूरमां, किया विण आडा कारण। ज्यां आगै अगराज, धरै गजराज न धारण। —रा. रू..

विणग—देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

उ०—कारिज कीधूं जोईइ, [विक्रम करइ विचार]। विणग विचक्षण मोकलूं, साथइ संपति सार। —मा. कां. प्र.

विणज–सं. पु.—१ पकाए हुए मीठे चांवल।
२ मिष्ठान, मिठाई। (बीकानेर का उत्तरी पूर्वी भाग)
३ देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

उ०—१ ठकुरौ साह सरसै माहै रहै। सु इय रै मताह रौ छेह कोइ नहीं। अर ईयै रै वीजौ विणज कोई जिकै समुद्र माहै जिहाज ठेलै तिकां री जोखम औ लेवै। इण भांत रहे। —ठकुरै साह री वात

उ०—२ दांन भोग विन धन ज संच्यौ, खेती विणज में पाई रे अंतकाल में कुटुंब कबीलो, लगा झगड़ नै जोई रे। —जयवांणी

उ०—३ गुर सिख मिळीयां क्या हुवै, मिळ अर पाड़ी वाटि। हरीया खोटा विणज कै, ठग मिळ ल्यावै खाटि। —अनुभववांणी

उ०—४ लख चौरासी हाट मैं, वसत अमोलिक एक। हरीया खोटा जांणी विणज कै, लीया लाभ अनेक। —अनुभव वांणी

रू. भे.—बणज, बनज, बिणज, बिनज, बिरज, वणज, विणज।

विणजणौ, विणजबौ–क्रि. स.—१ व्यापार करना, व्यवसाय करना।

उ०—१ विणजै सासू अर बहू, धंधै ततपर धूत। ठग नंह जो गणिका ठगै, वणियांणी रा पूत। —बां. दा.

उ०—२ अणहूंत भाठै सूं काठी हुवै। विरियां देख' र विणजै नीं सौ वांणियौ ही गिवांर। छाती काठी करी है। जै जिसौ दिन नहीं आवै। —दसदोख

उ० —३ एक अमोलिक वसत का, विरळा विणजणहार। जनहरीया सो विणजसी, लाहै अंत न पार। —अनुभव वांणी

उ०—४ तन तोला मन ताकड़ी, विणजणहार वचंन। रांम रतन कूं छाडि कै, साध न संचै धन। —अनुभववांणी

२ रुपये कर्ज देना, उधार देना।

३ रुपये का व्यापार में या अन्य कहीं विनियोग करना।

उ०—विणजै व्यापारं वलि विवहारं, लक्ष्मी आप वहै लारं। परिघल परिवार पुण्य प्रकारं, बोलै बहु जस बाजारं। —ध. व. ग्रं.

विणजणहार, हारौ (हारी), **विणजणियौ** —वि. ।
विणजिग्रोड़ौ, विणजियोड़ौ, विणज्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
विणजीजणौ, विणजीजबौ,—कर्म वा. ।
वणजणौ, वणजबौ, बिणजणौ, विणजबौ, वणजणौ वणजबौ, वन्निजणौ, वन्निजबौ —रू. भे. ।

विणजार—१ देखो 'विणजार' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणजारौ' (मह, रू.भे.)

विणजारड़ौ—देखो 'विणजारौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—अला हम विणजारा पूरे साह का, विणज करण वोपारौ । हम विणजारड़ियां । —दीन सुदरदी

(स्त्री. विणजारडी)

विणजारण-सं. स्त्री.—१ एक प्रकार की भैंस विशेष ।

उ०—सूघी सींघणियां च्यारुं थण सोधै, विमनीं **बिणजारण** कारण परबोधै । बाल्ही बेगड़ नें थेगड़ दे बाळै, भोळी भाळी नें भींडी नें भाळै । —ऊ. का.

२ देखो 'बिणजारौ' (स्त्री.)

रू. भे —वणजारण, बिणजारण, वणजारण ।

बिणजारा—देखो 'बिणजारा' (रू. भे.)

विणजारियौ-सं. पु.—१ देखो 'बिणजारौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ च्यार पहरदा कांम है **विणाजरिया**, तेरा जागण दा छक एहवै । सोवण दी विरियां नही **विणजारिया**,तुं नांव निरंजन लेहवै । —रैदास घत्तरवाळ

उ०—२ तीजे पहर रैण के **विणजारिया**, तेरा ढीला पडया पुरांण वे । काया लीवोनी क्या करे **विणजारिया**,गढ भीतरि वस्यौ अजांण वे । —दीन सुदरदी

२ देखो 'बिणजार' (अल्पा., रू. भे.)

विणजारौ-सं. पु.—१ कमजोर जीवात्मा ।

उ०—१ रे **विणजारा** चूकौ तूं, फिर फिर क्यूं दे कूकौ । वस्तु भरी पर देस न रै, वेला बिन लद जाय । दुरमत डांणी आगै खड़ौ, लेसी माल लुटाय । —श्रीहरिरांमजी महाराज

२ देखो 'बिणजारौ' (रू. भे.)

उ०—१ पीछोलो रांणा लाखा री वार मांहै किण ही **विणजारै** बंधबायौ, पांणी कोस च्यार रै फेर में छै । —नैणसी

उ०—२ कालो मासी रै पंछी जिनावरां रा इण लांठा कडूंबा में फगत इण घोड़ा री इज खांमी ही । मारग वेवता **विणजारां** कना सूं मासी केई कुत्ता वपराय लिया हा । —फुलवाड़ी

उ०—३ घुर तौ जावै बोहरा रे, मिलिया ठोडां ठोडां रे । हाकम लटारा रे, **विणजारा** सोदारा रे । —जयवांणी

उ०—४ **विणजारण** भ्रै लोभण, ओरां के पल्लै छै दांम । म्हा रै तो पल्लै कोय नहीं, **विणजारी** भ्रै । —लो. गी.

(स्त्री. विणजारण, विणजारी)

विणज्ज—१ देखो 'विणज' (रू. भे.)

२ देखो 'वांणिज्य' (रू. भे.)

उ०—क्रखी **विणज्ज** आकरांणि, पसू चौपदी घणी । अनेक संपदा उपाउ, लाछि चतुरंगणि । —गु. रू. बं.

विणट्टणौ, **विणट्टबौ**—देखो 'बिणट्टणौ, बिणट्टबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जीव **विणट्टा** विणास हुवां पछै गढ बारै नीकळै जिकां रा नेक नांम वै है, अरथात जीव रै तन है ज्यूं रजपूतां रै गढ है सो मरियां गढ छोडै । —वी. स. टी.

उ०—२ जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नांही अज्ज । माथि त्रिसूळउ, नाक सळ, कोइ **विणट्टा** कज्ज । —ढो. मा.

विणट्टणहार, हारौ (हारी), **विणट्टणियौ**—वि० ।
विणट्टिग्रोड़ौ, विणट्टियोड़ौ, विणट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विणट्टीजणौ, विणट्टीजबौ—भाव वा० ।

विणट्टियोड़ौ—देखो 'बिणट्टियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणट्टियोड़ी)

विणट्ठौ—देखो 'विणठौ' (रू. भे.)

उ०—है संवळी आंखियां कंवळी जांण मत्त खायै कारण कै म्हारै पती सूं प्रण (वचन) करीयोड़ौ हो कै-आपनै एकला छोडूं नहीं आप जुद्ध में मारीज सो तो हूं लारै सत करसूं सो आज औ मोको है तू आंख खायजासी तो नैण आंख **विणट्ठौ** विनां म्हारौ प्रण कीकर देखैला इण सारू आंखियां नही खाण रौ कहै है । —वी. स. टी.

(स्त्री. विणट्ठी)

विणठणौ, **विणटबौ**—देखो 'बिणट्टणौ, बिणट्टबौ' (रू. भे.)

उ०-रजा साधवी रोग ऊपनौ, विणठौ कोढ सरीर जी । भव अनंत भमी दुख सहती, दोख दिखाड़यउ नीरि जी। —स. कु.

विणठणहार, हारौ (हारी), **विणठणियौ**—वि० ।
विणठिग्रोड़ौ, विणठियोडौ विणठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विणठीजणौ, विणठीजबौ —भाव वा० ।

विणठियोड़ौ—देखो 'बिणट्टियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणठियोड़ी)

विणठौ-वि. (स्त्री. विणठी)—१ खराब, बुरा ।

उ०—वलि विणठी वारं सांझ सवारं, दंडाकारं कांतारं । सात्रव सिरकारं, सिंह सिकारं, दावोदारं दरबारं । गिण बैठि वेगारं कारागारं, जय सहु ठांमैं जयकारं । —घ. व. ग्रं.

२ विनष्ट, नाश हुवा हुआ ।

रू. भे.—विणट्ठो ।

विणणो, विणबो—१ देखो 'बिणणो, बिणबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बणणो, बणबो' (रू. भे.)

उ०—१ अजंपा जाप ओंकार एक, ओळखै कमण **विणयो** अनेक । अजंपा जाप आतम उद्यास, मुर-भुवण माहि सब भूत सास ।
—पी. ग्रं.

उ०—२ असंख बाब रिखि भांप रिखि, धोम रिखां घनधन । मेघ रिखां रै मांडहै, **विणियो** वींद विसन ।
—पी. ग्रं.

उ०—३ सरसती हुंति विद्या सिरै, विमळ अकळ कहिजै विसन । सूर सां तेज **विणियो** सरस, कोड़ि कोड़ि वधतौ किसन ।
—पी. ग्रं.

विणणहार, हारो (हारी), विणणियो—वि. ।

विणिओड़ो, विणियोड़ो, विण्योड़ो—भू. का. कृ. ।

विणीजणो, विणीजबो—कर्म वा. ।

विणति, विणती—देखो 'वीणती (रू. भे.)

विणपख्य—सं. पु. [सं. वेणु–पक्ष]—बांण, तीर । (डिं. नां. मा.)

विण-मणा—वि.—जिसमें किसी प्रकार की कमी न हो, पूर्ण ।

उ०—तवो राघो राघो करम अघ दाघो तन तणा, महाराजा सीता–वलभ कुळ–मीता **विण–मणा** । यरां जैता जगां अडर यक–रंगां जग अखै, सको गावो जीहा अवस निस–दीहा अज सखै ।
—र. ज. प्र.

विणय—देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—इकु अरजुन आगलऊ अनइ करणु हीयइ हरालउ, गुर कूवइ **विणयह** लगइ धणुहवेदु दीधउ सरालउ ।
—सालिभद्र सूरि

विणयांणी—देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां वळद उपर सखरा वीछावणा, तिण उपर **विणयांणी** नूं सोहरी बैसांणी । चालीया जावै छै । चालता-चालता आगै मजल जाय डेरो कीयो ।
—रळै गढवै री वात

विणवाट, विणवाठ—वि.—मूर्ख । (अ. मा.)

विणसणकाळ—देखो विणसिणकाळ' (रू. भे.)

उ०—अकबर लेख प्रमांणं, तहवर सहत राज लोभांणं । आवी चित अचीती, **विणसण** गा (का) ळ बुद्धि विपरीत ।
—रा. रू.

विणसणो, विणसबो—क्रि. अ.—१ नाश होना, नष्ट होना, मिटना ।

उ०—जिमि विलंब **विणसइ** काज, कुठाकुरी **विणसइ** राज । कुसंगति विणसइ संतान, स्वर पाखइ **विणसइ** गांन ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ दीयौ नीं व्है जित्तै तौ अंधारो रै'वै, पण दीया रै चांनणै अधारा नै **विणसतां** कोई जेज थोड़ी ई लागै । चांनणा रै समचै ई अंधारो विणस जावै । फगत इत्ती जेज ई बेटी रै समझणा में लागी ।
—फुलवाड़ी

उ०—जीहो काया माया कारमी, जीहो मांनो सतगुरु वेण । जीहो जेसो सुपणो रेण । जीहो **विणसतां** देर लागै नहीं ।
—जयवाणी

उ०—४ जग सोई रग पतग है, **विणसत** लगै न वार । नांम रूप जड़ जांणीयै, ख्याली खबर कर धार ।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—५ जाग्रत में स्वप्न नहीं पावै, स्वप्न में जाग्रत बिसरैरी । स्वप्न में जावै न जाग्रत में **विणसै**, अनुभव सता करेरी ।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

२ बिगड़ना, खराब होना ।

उ०—१ जिमि विलंब **विणसइ** काज, कुठाकुरी **विणसइ** राज । कुसंगति **विणसइ** संतान, स्वर पाखइ **विणसइ** गांन ।
—रा. सा. सं.

उ०—२ जो मत पाछै संचरै, सो मत पहली होय । काज न **विणसै** आपणो, दुरजण हसै न कोय ।
—अग्यात

३ मरना, खत्म होना ।

उ०—सौ दीसै सो **विणससी**, ऊगै आथमि जाय । जनहरीया सो जनमसी, जम लै जासी आय ।
—अनुभववांणी

क्रि. स.—४ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—१ तम **विणसण** व्हैं बो त्वरित, तेज किरण वण ताप । त्यां दरसण पातल तणै, सबै हरण संताप ।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ च्यार जणां नै सुणि चतुर, सोहै जरा सिंगार । राजा मुहतो वैद रिखि,गरढ पणै गुणकार । गरढ पणै गुणकार, सार बहु बुद्धि रसायण । **विणसै** मल्ल वेसीया, गिणौ तिम चाकर गायन । करै घणी जो कला, मन्न तोइ किणै न मांनै । कहै धरमसी यूं करै. जरा आइ च्यार जणां नै ।
—ध. व. ग्रं.

उ०—३ दैवज घणु **विणासियो**, कियो ज पाप अपार । मारू तन **विणसियो**, कंत रहचो निरधार ।
—ढो. मा.

५ मारना, सहार करना ।

उ०—**विणसतां** जीव न गिनर न करै जिको, **चौथो** उट्टीआ दोख ऊपजै तिको । अनुक्रमै च्यार ए अधिक इक एकथी, दोख धरि प्राय-चित लेइ विवेक थी ।
— ध. व. ग्रं.

६ बिगाड़ना, खराब करना ।

विणसणहार, हारो (हारी), विणसणियो—वि. ।

विणसिओड़ो, विणसियोड़ो, विणस्योड़ो—भू. का. कृ. ।

विणसीजणो, विणसीजबो—भाव वा., कर्म वा. ।

बिणसणौ, बिणसबौ, बीणसणौ, बीणसबौ, बणसणौ, बणसबौ, — रू. भे.।

विणसाड़णौ, विणसाड़बो - देखो 'विणसाणौ, विणसाबौ' (रू. भे.)

विणसाड़णहार, हारौ (हारी), **विणसाड़णियौ** — वि.।

विणसाड़िग्रोड़ौ, विणसाड़ियोड़ौ, विणसाड़योड़ौ — भू. का. कृ.।

विणसाड़ीजणौ, विणसाड़ीजबौ — कर्म वा.।

विणसाड़ियोड़ौ — देखो 'विणसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणसाड़ियोड़ी)

विणसाडणौ, विणसाडबौ — देखो 'विणसाणौ, विणसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हीरादेवि भणइ चंडाळ, सूं मुख देखाडइ तुं काळ। जेह पसाइ कीधां राज, तेह तणाउं **विणसाडिउं** काज। —कां. दे. प्र.

उ०—२ छक देखि खेलीजें एम कहो छ छै, पछतावौ जिण काज सही न हुवै पछैं। आखर जै धरमसीह हुवै उतावला, परिहां **विणसाडै** निज काज सही तै बाउला। —ध. व. ग्रं

विणसाडणहार, हारौ (हारी), **विणसाडणियौ** — वि०।

विणसाडिग्रोड़ौ, विणसाडियोड़ौ, विणसाडयोड़ौ — भू० का० कृ०।

विणसाडीजणौ, विणसाडीजबौ — कर्म वा०।

विणसाडियोड़ौ — देखो 'विणसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणसाडियोड़ी)

विणसाणौ, विणसाबौ-क्रि.स.—१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।
२ बिगाड़ करना, खराब करना।
३ मारना, खत्म करना।

विणसाणहार, हारौ (हारी), **विणसाणियौ** — वि.।

विणसायोड़ौ — भू. का. कृ.।

विणसाईजणौ, विणसाईजबौ — कर्म वा.।

बिणसाणौ, बिणसाबौ, बिणसावणौ, बिणसावबौ, बीणसाणौ, बीणसाबौ, विणसाड़णौ, विणसाड़बौ, विणसाडणौ, विणसाडबौ, विणसावणौ, विणसावबौ, विसणाड़णौ, विसणाड़बौ, विसणाडणौ, विसणाडबौ —रू. भे.।

विणसायोड़ौ-भू. का कृ.—१ नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. २ बिगाड़ किया हुआ, खराब किया हुआ. ३ मारा हुआ, खत्म किया हुआ।

(स्त्री. विणसायोड़ी)

विणसावणौ, विणसावबौ — देखो 'विणसाणौ, विणसाबौ' (रू. भे.)

विणसावणहार हारौ (हारी), **विणसावणियौ** — वि.।

विणसाविग्रोड़ौ, विणसावियोड़ौ, विणसाव्योड़ौ — भू. का. कृ.।

विणसावीजणौ, विणसावीजबौ — कर्म वा.।

विणसावियोड़ौ — देखो 'विणसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणसावियोड़ी)

विणसिणकाळ-सं. पु. [सं. विनाशकाल] — बुरा समय, विनाशकाल।

उ०—कुरु पिंड वेध वसुधा, अपणा मंफेण कुम्फयौ उभए। कुरखेत जुद्ध समयौ, **विणसिणकाळ** बुद्ध विपरीतौ। —गु. रू. बं.

रू. भे.—विणसणकाळ।

विणसियोड़ौ-भू. का. कृ—१ नाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ. २ बिगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ. ३ मरा हुआ, खत्म हुवा हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, ५ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ६ बिगाड़ा हुआ, खराब किया हुआ।

(स्त्री. विणसियोड़ी)

विणा — देखो 'विना' (रू. भे.)

विणाठणौ, विणाठबौ — देखो 'बिणाठणौ, बिणाठबौ' (रू. भे.)

उ०—खड़िय न खाटी देह **बिणाठि** थिरि न पवणां पारूं। अहनिस आवा जाय घटंती, तेरी सास ही कसवारूं। —अग्यात

विणाठणहार, हारौ (हारी), **विणाठणियौ** — वि०।

विणाठिग्रोड़ौ, विणाठियोड़ौ, विणाठयोड़ौ — भू० का० कृ०।

विणाठीजणौ, विणाठीजबौ — भाव वा०।

विणाठियोड़ौ — देखो 'बिणाठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणाठियोड़ी)

विणायक — देखो 'विनायक' (रू. भे.)

उ०—......चमन दिइ, जीमूत रिखि छोरु खेलावइ, कांमदेव कटारु बंधावइ, वैस्वानर वस्त्र पखालइ, कारत्तिकेय तलारु करइ, चांमुंडा चाउरि संचारि, **विणायक** गादह चारि, अनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ, इसिउ त्रिभुव [न] मल्ल महामल्ल रखण। —व. स.

विणावट, विणावटी — देखो 'बनावटी' (रू. भे.)

उ०—पीछै गोपाळदास असवार बूंदी रा वा आपरा हजार च्यार लेय नै मुगळां री फोज मैं गया। अर वां पूछियौ तद कयौ मामलत रा रुपिया लाया छां घोड़ां पर **विणावट** थैली दिखायी। तरां मुगळां रै तंबू ताईं गया। —द. दा.

विणास — देखो 'विनास' (रू. भे.)

उ०—१ गोत्र द्रोह थी जस नहीं, नृपद्रोह नीति **विणास**। बाल द्रोह थी गति नहीं, त्रिण्है करचां अभ्यास। —स्रीपालरास

उ०—२ सांमी सिर दावा किसा, दावै मांहि **विणास**। जुग निर-दावै जांणीयै, सोई हरि का दास। —अनुभववांणी

उ०—३ पाछा नि घरौ ठाकुरै, घिरीया हुवै **विणास**। घिरीया वेवू काढिया, दूदौ देवीदास। —जैतमाल पुमार री वात

उ०—४ कै तौ डर अर लोभ रै कारण पेटा री बात होठां चढै कोनीं अर कै मांयलौ अतस ई अेक-मेक व्हैगौ । मिनखीचारा री सिरै भावनावां रौ विणास व्हैगौ । —फुलवाड़ी

उ०—५ डोकरी वांनै आडै हाथां लेवती धकै केवण लागी-लुगायां रौ विणास करियां तौ थां मिनखां रौ पै'ला विणास व्है जावै इण वास्तै खुद री स्वारथ पूरण सारू थैं वांनै जीवती राखौ, खुदरै मन री आणद पोखण सारू वांनैं सिणगारियोड़ी राखौ । —फुलवाड़ी

विणासणौ, विणासबौ—क्रि. स.—१ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ लोक आछो कहै नहीं, लड़तां लिछमी नासै रे । दुख दारिद्र घर में धसै, गुण रा पूर विणासै रे । —जयवांणी

उ०—२ चिंतइ चतुर स चिंततउ, घरतउ अरति अपार । विखय विणोदि **विणासिइं**, हासइ जीव गमारु । —जयसेखर सूरि

२ मारना, संहार करना ।

उ०—१ बल थी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल । बांनर बाध **विणासियौ**, एकलड़इ सीयाल ।

—प. च. चौ.

उ०—२ खिण इक मां तैं पकड़ि **विणास्यौ**, तीखण कठिन कुड़ाड़ै । याद्रस आचरणादिक ताद्रस, फल तेह्नै न गमाड़ै ।

—वि. कु.

उ०—३ इतरा भे पुळसत रिख रौ कुळोधर, उतराध रौ वजीर, लिछमी रौ निवास, मांझी दिगपाळ, कुमेर बौलियौ—आगै ही लंकापति रांवण सीता री चोरी करी ले गयौ । तरै आप चत्रभुज मांनवी देह धार नै **विणासियौ** । —मा. वचनिका

उ०—४ असुर **विणासी** किउ उपगारू, इंद्रि लोकि हूउ जयजयकारु । इंद्र तणु ए कीधुं काजु, असुर **विणासी** लीधउं राजु ।

—सालिभद्र सूरि

३ बिगाड़ करना, नुकसान करना ।

उ०—ताहरां राजाजी भोपत ऊपरि चढण लागा । ताहरां रांणीजी जसवंतदेजी राजि नूं वीनमियौ । राजि दोहरा की हुवौ, हूं जाइ अर भोपति नूं ले आविस । ताहरां रांणीजी चढि खड़िया । खड़ि नै नागोर पधारिया । आगै देखै तौ भोपतिजी किण ही रौ **विणासियौ** क्यूं नहीं उजाड़ियौ बैठा छै । —द. वि.

४ बुरा करना ।

उ०—दैवज घणु **विणासियौ**, कियौ ज पाप अपार । मारु तन विणासियौ, कंत रह्यौ निरधार । —ढो. मा.

विणासणहार, हारौ (हारी), विणासणियौ—वि० ।

विणासिओड़ौ, विणासियोड़ौ, विणास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विणासीजणौ, विणासीजबौ—कर्म वा० ।

विणासणौ, विणासबौ—रू० भे० ।

विणासियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ. नाश किया हुआ. २ मारा हुआ. ३ बिगाड़ किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ ।

(स्त्री. विणासियोड़ी)

विणासी—देखो 'विनासी' (रू. भे.)

विणासु—देखो 'विनास' (रू. भे.)

उ०—पंडव तणउं चरीतु जौ पढए, जौ गुणइ संभलए । पाप तणउ **विणासु** तसु रहइं, ए हेलां होइसि ए । —सालिभद्र सूरि

विणि—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ विणि रोटी विणि लाकड़ी, विणि पांणी विणि पाळ । परचौ पसु पंखेरवां, थल्य बैठौ प्रतपाळ । —सुरजन जी

उ०—२ नल राजा **विणि**, सरवि विख्यात मा [हारि] पिता अनि तां भ्रात । मद हास्य करी रा उच्चरि 'नारी, मूरखता आदरि ।

—नळाख्यांन

उ०—३ किणि ठौड़ि रहै जायौ कठै, घणी पहुचि दातार घण । विणि रूप रेख किणि दिसि वसै, निमौ निमौ तु नारीयण ।

—पी. ग्रं.

उ०—४ हेतम दान कवि मल्न कहि, अमर बुन्नि बे वखत गनि । दीठौ न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतांन **विणि** ।

—प. च. चौ.

रू. भे.—वणी, विणी ।

विणियांणी—देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

उ०—मारू इण मनवार मैं, रंग वीतै रात । परतांनै दारु पीवसां, मैं **विणियांणी** जात । —पनां

विणियोड़ौ—१ देखो 'बणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विणियोड़ी)

विणी—देखो 'वणी' (१) (रू. भे.)

उ०—छेवट री लार म्हैं तौ खुणियां सूधा हाथ जोड़नै कह्यौ धायी थारै वेस सूं **विणियां** रै खेत बारै काढ । —फुलवाड़ी

२ देखो 'विणि' (रू. भे.)

विणीयांणी—देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

उ०—वांणियौ तौ सुय रहयौ । सूतां भाख फाटी । तद उठिया । तणै सारां सु पैहली रळौ उठि नै पौठियौ एकलै हीज लादियौ ।

पछे वांणियां ही लादियौ। हूमैं विणीयांणी कहै,बेटा, पोठियें चाढौ।
—रळै गढवै री वात

विणु, विणू—देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—१ निहसै वूठौ घण विणु नीळांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधै किरि ग्रहणा लसइ।
—वेलि

उ०—२ जिण दीध जनम जगि मुखि दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, स्रम कीधा विणु केम सरै।
—वेलि

उ०—३ विरह बियापी रयण भरि, प्रीतम विणु तन खीण। वीण अलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही वीण।
—ढो. मा.

उ०—४ कुंती अनु द्रौपदी अ कंधि करीउ मारगि चलावइ, कुंती जल विणू तूंछीइ तेहि हिडंब जलु लेउ आवइ। —सालिभद्र सूरि

विणोकड़ी, विणोखड़ी—सं. स्त्री. [सं. वाणियष्टि] कपास का पौधा।

रू. भे.—बिणोकड़ी, विणोखड़ी।

विणोद, विणोदि—सं. पु.—१ एक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं।

उ०—आठ रगण आवें उचित, पायं एह प्रमांण। गुण विणोद इणि भांति, गणि वदि लखपति बखांण।
—ल. पिं.

२ देखो 'विनोद' (रू. भे)

उ०—१ फाग गाइजै छै। फाग खेलीजै छै। नाचीजै छै। हास विणोद कीजै छै। हास रस हुइ नै रहीयौ छै। फागोटां रा मुख सवाद लीजै छै। घरि घरि बसंत राग हुलरावीजै छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ रंग राग विणोद विसातरयं बहुयं, चडि चाडति सुंदर मिंदरयं सहुयं। मिण मांणक कुंदण कंकणमं दिपतं, मोताहळ हार विभूखणय वणितं।
—गु रू. बं.

उ०—३ राग छतीस तरंग अनंग, रूप अनूप अनोपम रंग। बोलीजै सुख निस-वासर, आणद गीत विणोद अवसर।
—गु. रू ब.

उ०—४ चिंतइ चतुर स चिततउ, धरतउ अरति अपार। विखय विणोदि विणासिइ, हासइ जीव गमारु।
—जयसेखर सूरि

वितंड—स. पु. [सं.] १ हस्ती, हाथी।

२ घोड़ा, अश्व। (अ मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—तेजी वितंड ऊडंड तेव, विख्यात वाग अख्यात वेव। परबत पंख पक्खर प्रचंड, एराकी पिठ खुरसांण खंड।
—गु. रू. बं.

३ सूरज, सूर्य।

४ चटखनी।

वि.—१ जबरदस्त, जोरावर।

२ मनमौजी, मस्त।

३ मूर्ख।

४ पागल।

५ उद्दण्ड, झगड़ालू।

उ०—वसू प्रवंड दंडतें प्रचंड दंडतें वहैं, वितंड चंड दंड दें अदंड छडतें वहैं। विमोह मोह मोह मैं विद्रोह द्रोहिपै वढै, कतांत भांत कोह मैं कुकोह कोहिकौ कढैं।
—ऊ. का.

रू. भे.—बयंड, बितंड, बितुंड, वेतंड, वेतुंड, वइड, वयंड, वितुंड।

वितंडमुख—सं. पु. [सं. वितण्ड:+मुख] गजानन, विनायक।

रू. भे.—मुखवयंड, वयंडमुख।

वितंडा—सं. स्त्री. [सं. वितण्डा:] १ अपने मत की स्थापना करने हेतु दूसरे पक्ष को दबाने की क्रिया।

२ व्यर्थ का झगडा या कहा सुनी।

यौ —वितंडावाद।

वितंडावाद—सं. पु. [सं वितण्डा+वाद] १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व. स)

२ दूसरों के पक्ष को दबा कर अपने मत की स्थापना करने की क्रिया।

३ व्यर्थ का झगड़ा या कहा सुनी।

रू. भे.—वितुंडावाद।

वितंती—देखो 'वितत' (रू. भे)

उ०—सुराचार घंटारवं तार साजै, वणै नौबती सोभती रीत बाजै। विराजै मुखाघाय तंती वितंती, वदै आरती राग वांणी वणंती।
—रा. रू.

वित—वि. [सं.] चतुर, निपुण, ज्ञाता।

सं पु. [सं. वित्त] १ मवेशी, पशुधन।

उ०—१ ओजौ हुं आज चूकूं अवसांण, वकै नह वेद मुखां ब्रह-मांण। जावै वित ऊभां मूंझ जीयार, धरा नह छोळ दियै इंद्रधार।
—गो. रू.

उ०—२ सं. १७५३ रा वरसाद काळ पड़ीयौ। घास चारौ नहीं मेह थोड़ौ वूठौ। वित घणौ मुवौ। पड़ रा गांवां में तथा थळ में मिनख गोळ कर नै ढोर चारवा नै नई पड़ रा घाम चार में आवै, उणां ऊनाळू रा गांवा में कोसीटा, नै साख बाजरी।
—मारवाड़ री ख्यात

उ०—३ रावळ भीम जेसळमेर पाट छै। ऊहड़ गोपाळदास रै बेटै उरजन, भोपत, मांडण, पोकरण रा गांव घणा मारनै वित लै नीसरिया।
—नैणसी

उ०—तरक न अतरक्य कपि करत बितरक यांमें, थरक गिरि अरक उर थरक अमरेस कै। दलित पहार हलमलित सुमेरुधार, दिघ्घस-पतस्व अस्वचलित दिनेस कै। —ना. द.

२ संदेह, शक।

३ एक राजा जो कुरुवंशीय धृतराष्ट्र का पुत्र था।

बितरण–सं. पु. [सं.]—१ दान। (ह. नां. मा.)

२ अर्पण करने की क्रिया।

३ बांटने की क्रिया।

४ दान देने की क्रिया।

रू. भे.—बितरण, वितरन।

बितरणदांन, बितरणदांनी–सं. पु.—दातार, दानी। (अ. मा.)

बितरणौ, बितरबौ–क्रि. स.—१ अर्पण करना।

३ बांटना, वितरण करना।

४ दान देना।

५ पुण्य करना।

बितरणहार, हारौ (हारी), बितरणियौ—वि०।

बितरिग्रोड़ौ, बितरियोड़ौ, बितरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बितरीजणौ, बितरीजबौ—कर्म वा०।

बितरणौ, बितरबौ, वित्तरणौ, वित्तरबौ—रू० भे०।

बितरदन–सं. पु. [सं. वितर्दन]—रावणपक्षीय एक राक्षस।

बितरन—देखो 'बितरण' (रू. भे.)

बितरां–क्रि. वि.—इतने में।

उ०—बितरां मांहै मारवणीजी विलंब करता पांन बीड़ो आरोगता सहेलीयां संघातै आवण लागी। —ढो. मा.

बितरित–वि. [सं.] १ बांटा हुआ।

२ दान दिया हुआ।

३ अर्पण किया हुआ, अर्पित।

बितरेक–सं. पु.—एक उपमालंकार विशेष जिसमें उपमेय में (उपमान की अपेक्षा) उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाने के द्वारा उपमेय की उत्कृष्टता (विशेषता) का वर्णन हो।

क्रि. वि. [सं. व्यतिरिक्त]—छोड़ कर, सिवा, अतिरिक्त।

बितरेकजथा–सं. पु. स्त्री.—डिंगल में गीत रचना का वह नियम जिसमें व्यतिरेक अलंकार हो। (क. कु. बो.)

बितळ, बितल–सं. पु. [सं. वितल]—१ सात पातालों में से तीसरा पाताल। (पौराणिक)

उ०—१ सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठ नि पिठ्ठि भर। धर धुज्जि तळातळ तळ बितळ सेस सलस्सल छड्डि धर। —ला. रा

वि वि.—उक्त पाताल में शिवजी को हाटकेश्वर कहते हैं। इन्हीं की शक्ति से हाटकी नदी निकलती है जिसे वहां की वायु से उत्पन्न अग्नि देव पीते हैं और पुनः फुफकारने से हाटक (सोना) निकलता है।

२ पाताल।

उ०—बहळ ससियळ धमक सावळ, वहै कळकळ प्रबळ वीजळ। वहै चकळ इळतळ बितळ चळचळ,, मंगळ भळ घमळ मंगळ। विढै सूर व्रजागि। —सू. प्र.

वि.—नीच, अघ, पतित। (अ. मा.)

बितसारू–अव्य.—यथाशक्ति।

उ०—अवनी में जिकै भलांई आया, करै सदा सुकरत रा कांम दांन सदा बितसारू देवै, नित रसणा लेवै हरिनांम। —र. रू.

बितस्ता–सं. स्त्री. [सं.] पंजाब की झेलम नदी का एक नाम।

बितांन. बितांनक–सं. पु. [सं. वितानं या वितानः] १ बिस्तार, फैलाव।

उ०—१ उठै बै दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा। कहि गंगा तन मंजन कीधा, दांन बितांन मांन करि दीधा। —रा. रू.

उ०—२ चीखलि चालतां सकट स्खलइं, लोक तणा मन धरम ऊपरि वलइ। नदी महा पूरि आवइं, प्रथ्वी पीठ प्लावइं नवा किसलय गहगहइं, वल्ली बितांन लहलहइं। —रा. सा. सं.

२ बड़ा चन्दोवा।

उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन बितांन वणाए। चिग पड़दासू पाल चमंकै, दांमण जांण सिळाउ दमंकै। —सू. प्र.

उ०—२ मिळ थाट लुटै अमीर. हिम जड़ित भूखण हीर। तारख सरखत बितांन, मूकेस जरियसि मांन। —सू. प्र.

३ यज्ञ, हवन। (अ. मा, ह. नां. मा.)

४ सूर्य, सूरज। (नां. मा.) (क. कु. बो.)

बितांना–सं. स्त्री. [सं. विताना] भौत्य मन्वन्तर के वृहद्भानु अवतार की माता।

बिताणौ, बिताबौ—देखो 'बिताणौ, बिताबौ' (रू. भे.)

उ०—अरण आग्याकरी सूभ नायक अवध, अवध बितानै वेग आवां जांनकी ! रहोला अठै मो जनक रै, जनक रै कनां पोंहचाय जावां। —र. रू.

बिताणहार, हारौ (हारी), बिताणियौ—वि०।

बितायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिताईजणौ, बिताईजबौ—कर्म वा०।

बितायोड़ौ—देखो 'बितायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बितायोड़ी)

वितव-वि. [सं. वि+ताव]—मंद, ठंडा, नम्र, जोश या क्रोध रहित ।

उ०—अति सोचै पतसाह अछांनै, खिण सज्या खिण तारतखांनै उड रहियौ मन लाग अलंगै, गुड्डी जांण भ्रमै गयणंगै । ऊभा दास खिजमती अग्गी, ताव **वितव** लखै टगटग्गी । —रा. रू.

वितावणौ, वितावबौ—देखो 'बितारणौ, बितावौ' (रू. भे.)

वितावणहार, हारौ (हारी), **वितावणियौ**—वि० ।

विताविप्रोड़ौ, विताविपोड़ौ, बिताव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वितावीजणौ, वितावीजबौ—कर्म वा० ।

विताबियोड़ौ—देखो 'बितायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विताबियोड़ी)

विति-सं. पु. [सं.] १ तुषित अथवा साध्य देवों में से एक ।

उ०—समुद्र भुजादंडि तरीइ, तीक्ष्ण खड्गधारा संचरीइ, निरास्वाद वालुकापिंड कवलीइ, पंचमेरु पंचांगुलि तोलीइ, लोहमय चिणा दांत **विति** चावीइ, वज्रानलज्वाला मुखि पीजइ, आकास निरालंब चडेवउं,...... । —व. स.

वितिक्रम—देखो 'व्यतिक्रम' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिंस लच्छ अच्छ में कलित भई, रिन विच राजधांनी मांनी मन मापी कौं । करम्मचारी वितिक्रमी करम्मसब **वितिक्रम** थिराथंब थंबन वितिक्रम ऊथापी कौं । —ऊ. का.

वितिक्रमी—देखो 'व्यतिक्रमी' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिंस लच्छ अच्छ में कलित भई, रिन विच राजधांनी मांनी मन मापी कौं । करम्मचारी **वितिक्रमी** करम्म सब वितिक्रम, थिराथंब थंबन वितिक्रम ऊथापी कौं । —ऊ. का.

वितिपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

वितिहोतर, वितिहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.)

वितीत, बितीति—देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—१ तद दिन तो **वितीत** हुवो, रात पड़ी । तठै ठकुरै रै बेटै नूं सूतै नूं जांनीयां उठाय नांखीयो समुद्र । तिको ईयै नुं एकै मछी गिलीयो । —ठकुरै साह री वात

उ०—२ सैसव सु जु सिसिर **वितीत** थायौ सहु, गुण गति मति अति एह गिणि । आप तणौ परिग्रह लै आयौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि । —वेलि

उ०—३ प्रभां कहतां जोति सो चंद्रमा की गई । जब राति **वितीत** होण लागी । तब चंद्रमा किनो दीसै छै । जिसो भरतार असमाध्यां थकां सती को मुख देखिज्यें । —वेलि टी.

उ०—४ त्हांरो सुजस अमर, 'करणावत', वासुर जग वहु हुवै **वितीत** वाधारियो पाघड़ो विढतै, चैराड़ियौ नहीं बडचीत । —द. दा.

उ०—५ यौं वहतां मग आवतां, ग्रीखम हुवौ **वितीत** । मिटिया सुख महराब रा, आयौ घरा 'अजीत' । —रा. रू.

वितीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

उ०—सांचरै मेल सिसपालनां सांमटा, अपसकुन अनै अवजोग थया एकटा । दसासूळ भद्रा **वितीपात** महूरत दीयो, क्रमियौ काळ चंद्रकाल सनमुख कीयौ । —रूखमणी हरण

वितीपाती—देखो 'व्यतीपाती' (रू. भे.)

वितुंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

उ०—प्रचंड लोट पिंड कै धकै प्रचंड कै परै, **वितुंड** तुंड लौं भगै त्रभड व्है भरै । प्रजोध कुप्पि कै प्रधात्र धप्पि देपरैं, महा गरूरपूर सूर दूर दूर तें मरैं । —ऊ. का.

वितुंडावाद—देखो 'वितंडावाद' (रू. भे.)

वितु—देखो 'वित' (रू. भे.)

उ०—वाहण वखारि आपणी, ऊतरिनां तै सेठि । आवि देवारु आंगणइ, **वितु** करंतां वेठि । —मा. कां. प्र.

वितोड़णौ, वितोड़बौ—क्रि. स.—तोड़ना ।

उ०—धंध धरै करि द्वेस, वात में हेत **वितोड़ै** । आप कियौ तै अवल, वलै पर किया विखोड़ै । —ध. व. ग्रं.

वितोड़णहार, हारौ (हारी), **वितोड़णियौ**—वि० ।

वितोड़िग्रोड़ौ, वितोड़ियोड़ौ, वितोड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वितोड़ीजणौ, वितोड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वितोड़ियोड़ौ—भू. का. कृ—तोड़ा हुआ ।

(स्त्री वितोड़ियोड़ी)

वितोल—वि. [स.वि.+तुल्]अतुल्य, बलशाली ।

उ०—घुमाव लोल गोल की प्रघत्त बोलती घलें, हरोळ गोल घोलदें चंदोळ चोलती हलें । विध्यं जनेच्छनी प्रचोळ गोळ घोलही वहैं, सतोल तोल तोल सें **वितोल** तोलती वहैं । —ऊ. का.

वित्त-सं. पु. [सं.] १ कुशुभि नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य ।

२ प्रतर्दन देवों में से एक ।

३ सुख देवों में से एक ।

४ देखो 'वित' (रू. भे.)

उ०—१ क्याहीं कर बोहरौ हुवै, क्याहीं कर व्है मित्त । क्याहीं कर चाकर हुवै, बणिक हरेवा **वित्त** । —बां. दा.

उ०—२ तिण समय मांहे तेजसी उठै गयौ । तरै उण तीनै ही उमरावै आपथा हीज विचार नै उण **वित्त** रा च्यार हिस्सा कीया । एक हिस्सौ लै तेजसी नुं दीयौ । —राव मालदे री बात

उ०—३ खित जासिय ऊमर पाय सही, नभ सूरज चंद भुगोळ नहीं । जिंदराव लेजासिय **वित्त** जठै, कह 'पाल' वत्तासिय मूंह कठै । —पा. प्र.

उ०—४ परभात चढ़िया सो गांव दूजौ वळै जाय मारियौ । पछै बीजा गांवां नूं पासरणा छूटा सो वित्त सारौ घेर ले आया । गांव दोय री तौ जमा ऊठण दीवी । —अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—५ खेवै लाग राव खीची चारणां वित्त नूं खंच्यौ, संच्यौ मनां चायौ इसौ आयौ यूं औसांण । पूकारौ देवळा अवै आपरा पखेत पावू, पांणां जोस हूं तौ आथ लै जाऊ अमांण । —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०— डोकरी कहची-गूजरां रै घरै आयोड़ा नै दूध पायां आपं ई वित्त अर दूध री बधापौ व्है । म्हारी बेटी नै घरै आयोड़ा री सर-वरा री ध्यांन है इज घणौ । —फुलवाड़ी

वित्तगोप्ता-सं. पु. [सं.] कुबेर के भण्डारी का नाम ।

वित्तग्यांन-सं. पु. [सं. वित्त+ज्ञानं] ७२ कलाओं में से एक ।

वित्तणौ, वित्तबौ—देखो 'बीतणौ, बीतबौ' (रू. भे.)

उ०—लगी हांम विलासं, वित्ती अग्यात प्रात मध्यांनं । सायंकाळ निसीतं, रतं भूप चूपं मदनायं । —रा. रू.

वित्तणहार, हारौ (हारी), वित्तणियौ—वि० ।

वित्तिओड़ौ, वित्तियोड़ौ, वित्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्तीजणौ, वित्तीजबौ—भाव वा० ।

वित्तदा-सं. स्त्री. [सं.] स्वामी कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका ।

वित्तनाथ-सं. पु [सं. वित्त+नाथं]—कुबेर ।

वित्तप, वित्तपत, वित्तपति, वित्तपती-सं. पु. [सं. वित्तप, वित्तपति] धन की रक्षा करने वाला, कुबेर, धनपति । (डिं को.)

वित्तपाळ, वित्तपाल-सं. पु. [सं. वित्त+रा पाळ] कुबेर का एक नाम ।

वित्तपुरी-सं. स्त्री. [सं.] कुबेर की अलकापुरी ।

वित्तरणौ, वित्तरबौ—१ देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—इंदबधू अणपार, क बसुधा वित्तरी । मनु तूटी मणिमाळ, मदन महिपत्त री । —कविवर सिवबक्स पाल्हावत

२ देखो 'वितरणौ, वितरबौ' (रू. भे.)

वित्तरणहार, हारौ (हारी), वित्तरणियौ - वि० ।

वित्तरिओड़ौ, वित्तरियोड़ौ, वित्तरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्तरीजणौ, वित्तरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

वित्तरियोड़ौ—१ देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वितरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्तरियोड़ी)

वित्तहीण, वित्तहीन-वि. [सं. वित्तहीन] दरिद्र, निर्धन, गरीब ।

वित्ति—देखो 'वीति' (रू. भे.)

वित्तिकरु-वि. [सं.] वृत्ति कर्ता ।

उ०—अभयदेव नव अंग वित्तिकरु, पासु पसायणु, पउमएवि घरणिंद पमुह, सुर साहिय नासणु । —ऐ. जै. का. सं.

वित्तेस-सं. पु. [स. वित्त+ईशः] धन का पति, कुबेर ।

वित्तेसर, वित्तेसुर, वित्तेस्वर-[स. वित्त+ईश्वर] कुबेर ।

वित्तौ-सर्व.—उतना ।

उ०—बस केवळ नांम सही है, वौ मोटौ रांम सही है । जित्तौ तप में म्हैं तपस्यां, वित्तौ ही कांम सही है । —करणीदांन बारहठ

वित्थर, वित्थरि—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—गंगतडा तडि अछइ ओयणु, वित्थरि दीरघि बारह जोयणु । पासहरा वागुरीय बहूय, पइठा वणि कोलाहलू हूय । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्तर' (रू. भे.)

वित्थरणौ, वित्थरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दंत कुळी अंगुळी, करी कोपरी कपाळां । बीच खेत वित्थरी फरी विहरी किरमाळां । —रा. रू.

उ०—२ पांनां मुख वाजित्र हिलै वांनां वैरक्कां, मेघ रंग मातंग बीढ ऊढंग कटक्कां । पली जेम्ह सादळां हिली फौजां घमसांणां, व्योम रजी वित्थरी घमस वज्जी केकांणां । —रा. रू.

उ०—३ सेर खांन भर समर कहर परखै घर कंदळ, लोथ लोथ ऊपरा गरा भिड़जां गज तडळ । दंत कुळी अंगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा, अंत तंत्र वित्थरी, हूत दाढ़ाळ हठाळा । —रा. रू.

वित्थरणहार, हारौ (हारी), वित्थरणियौ—वि० ।

वित्थरिओड़ौ, वित्थरियोड़ौ, वित्थरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्थरीजणौ, वित्थरीजबौ—भाव वा० ।

वित्थरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्थरियोड़ी)

वित्थार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वित्थारणौ, वित्थारबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाहोर नयर उच्छव हुया, चिहुं खंडि जस वित्थारिया । कर जोड़ि समयसुंदर भणइ, स्त्रीपूज्य भलइं पधारिया । —स. कु.

उ०—२ पण सग वेय मयंक वरसि माहह छण वासरि, भांगु-सल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि । नंदी ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचंद गणहरि, सूरि मंतु जसु दिद्धि किद्धु मंगलु विवहु प्परि । —ऐ. जै. का. सं.

वित्थारणहार, हारौ (हारी), वित्थारणियौ—वि० ।

वित्थारिओड़ौ, वित्थारियोड़ौ, वित्थारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्थारीजणौ, वित्थारीजबौ—कर्म वा० ।

वित्थारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्थारियोड़ी)

वित्थुरणौ, वित्थुरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—धसी अकास धूसरी, कि वांन सेन वित्थुरी। निमांण पांण नद्दयं, सुघोर जोर सद्दयं। —रा. रू.

उ०—वसुधा स्रोण सुरंगी, तुरियां धसळ वित्थुरी रैणा। आदू चपळ सहावौ, हुंइ रत्ती हुइ अणरतह। —गु. रू. ब.

उ०—३ बिसाळ भाल तोप कौ विसाळ जाळ वित्थुरै, धमंक भू धुजावणी धमंक मेघ लौं धुरै। महांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बुनी महीं, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही। —ऊ. का.

वित्थुरणहार, हारौ (हारी), **वित्थुरणियौ**—वि०।

वित्थुरिग्रोड़ौ, वित्थुरियोड़ौ, वित्थुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वित्थुरीजणौ, वित्थुरीजबौ—भाव वा०।

वित्थुरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्थुरियोड़ी)

वित्रप्त—वि. [सं. वितृप्त] जो तृप्त न हुआ हो, असन्तुष्ट।

वित्रभव—सं. स्त्री.—पूर्व और ईशान दिशा के मध्य की दिशा जिस ओर कृत्तिका नक्षत्र उदय होता है। इसका दूसरा नाम 'लांणी' भी हैं।

वित्रस—वि. [सं. वितृष] जिसमें किसी प्रकार की तृषा न रह गई हो, तृप्त।

वित्रसण—वि. [सं. वितृष्ण] १ जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न हो, तृप्त २ निष्पृह, उदासीन।

वित्रहोत, वित्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (अ. मा.)

वित्रा, वित्रासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—गुमर तजै वित्रा गळिण, हुलसै जोड़े हथ्थ। धेठौ असुरां चौ धणी, कहै सुणाई कथ्थ। —मा. वचनिका

विथ—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

विथक—वि —थका हुआ।

विथकणौ, विथकबौ—क्रि. अ.—थकना, थकावट महसूस करना।

उ०—ग्रेळ पख चंद जंही अनेकारां, हेळ कळा छांडै चित हेत। विथकै नहीं उगंतां अवतां, हुत कासिव नर रयण सुबेत। —बीरमदे राठौड़ रौ गीत

विथकणहार, हारौ (हारी), **विथकणियौ**—वि०।

विथकिग्रोड़ौ, विथकियोड़ौ, विथक्योड़ौ—भू० का कृ०।

विथकीजणौ, विथकीजबौ—भाव वा०।

विथकियोड़ौ—भू. का. कृ.—थकावट महसूस किया हुआ, थका हुआ। (स्त्री. विथकियोड़ी)

विथत—देखो 'वितथ' (रू. भे) (अ. मा.)

विथरणौ, विथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कळि मचंड असात उठै मेजक कुहर, रेण भैचक संक व्ही राव रांणै। विथरतौ तेण दिन जाप 'सूजा' विया, जग दुड़िद तणै आताप जांणै। —ऊमेद सिंघ सिसोदिया रौ गीत

उ०—२ दंताळां दड़काय, मोताहळ विथरै मही। स्याळां मती संताय, लंकाळां गज भख 'लछा'। —भगवानजी रतनू

विथरणहार, हारौ (हारी), **विथरणियौ**—वि०।

विथरिग्रोड़ौ, विथरियोड़ौ विथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथरीजणौ, विथरीजबौ—भाव वा०।

विथराणौ, विथराबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

विथराणहार, हारौ (हारी), **विथराणियौ**—वि०।

विथरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथराईजणौ, विथराईजबौ—कर्म वा०।

विथरायोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथरायोड़ी)

विथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथरियोड़ी)

विथा—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

उ०—१ जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मउसरि साह। तिण दिन थी पदमिणि मन बसिउ तुम्ह मांहौ रे। सुण आलिम धणी, विरह विथा न खमायो रे, बात किसी धणी। —प. च. चौ

उ०—२ हरि सुमरण हिरदै धरौ, विथा न पहुँचै वीर। कायर टळि कांनै चल्या, लग्या न सुख की मीर। —ह. पु. वां.

उ०—३ जैसे अगनि कास्ट में रहै काटि कटै न काठै दहै जन हरिदास अब ऐसी भई, भजतां राम विथा सब गई। —ह. पु. वां

उ०—४ पग परसै पावन हुवौ, गई विथा सब भाज। राज बडै ही रांमजी, गहर गरीबनिवाज। —गजउद्धार

उ०—५ करता करण सदा सगि जाकै, चितवनि कहौ कहां धूं ताकै। करम कुठार विथा हरि कापै, जन हरिदास नरहरि जापै। —ह. पु. वां.

विथार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

विथारण—वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

विथारणौ, विथारबौ—देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

विथारणहार, हारौ (हारी), **विथारणियौ**—वि०।

विथारिग्रोड़ौ, विथारियोड़ौ, विथारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथारीजणौ, विथारीजबौ—कर्म वा०।

विथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथारियोड़ी)

विथित—देखो 'व्यथित' (रू. भे.)

विथुरणौ, विथुरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तेल सिंदूर विथुरियं, सुनही असवार मसत अंराकं। चामुंड सुत उथरियं, खेत्राबीसर तुभ्यौ नमः। —मा. वचनिका

उ०—२ प्यारी के चिहुर विथुरे मांनो मांनो धाराधर की स्यांम घटा उनई, ता मध्य पहुप छुटि परे तें सें बडी बडी बूंदे। लाल सारी पहिरै हरी कोर मघायनिसी घूंघट करि चली, पीठ पाछै तें तरकै कंचुकी तनीकी फूंदें। —मीरां

उ०—३ दूनौं तटां जु नदी उपरि वही छै सु जांणे चोटी विथुरी छै। विथुरी कहै तै। प्रथी जु स्त्री त्यें नै धाराहर मेघ जब भरतार मिळीयौ छै। तब चोटी विथुरी। —वेलि टी.

उ०—४ पाका दाड़िमां का बीज। यु छिटकि पड़्या छै। एही वसंत पाट बैठे नै निवछावळि कीया छै। सु ए मांनूं नग जवाहर विथुरे छै। और चु भांति भांति का फळ व्रखां के विखै लागा छै। —वेलि टी.

विथुरणहार, हारौ (हारी), विथुरणियौ—वि०।

विथुरिओड़ौ, विथुरियोड़ौ, विथुर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विथुरीजणौ, विथुरीजबौ—भाव वा०।

विथुरियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथुरियोड़ी)

विथ्य–सं. पु. [सं. वीथि] पथ, मार्ग, रास्ता।

उ०—घुमाव लोल गोळकी प्रघत्त बोलती घलें, हरोळ गोल घोल दें चंदोल चोलती हलें। विथ्य जनेच्छती प्रचोळ गोळ घोलही वहैं, सतोल तोल तोल सें वितोल तोलती वहैं। —ऊ. का.

विदंड–सं. पु.—द्रोपदी स्वयवर में अपने पुत्र दण्ड के साथ उपस्थित एक राजा।

विद–सं. स्त्री. [सं. विदः] १ जानकार, पंडित, कवि। (अ. मा.)

२ वेद ऋषि के पिता, एक प्राचीन ऋषि।

३ देखो 'विध' (रू. भे.)

विदकणौ, विदकबौ–क्रि. अ.—चौंकना, चमकना।

उ०—मूळी कोभी, कटरूप, ओगणां री खांण! जावै जठीनै ही रात मिळै। हूंसै जद चीढ सो चीरै। चालै तौ खोलो सो भाजै, दड़बड़ाट ऊपड़ै। बोलै तौ गधा विदक जावै। —दसदोख

विदकणहार, हारौ (हारी), विदकणियौ—वि०।

विदकिओड़ौ, विदकियोड़ौ, विदक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विदकीजणौ, विदकीजबौ—भाव वा०।

विदकाउ—देखो 'विदकौ' (रू. भे.)

विदकियोड़ौ–भू. का. कृ.—चौंका हुआ, चमका हुआ।

(स्त्री. विदकियोड़ी)

विदकौ–वि. (स्त्री. विदकी) बढिया, उत्तम, श्रेष्ठ।

रू. भे.—विदकाउ।

विदग, विदग्ध—देखो 'वीदग' (रू. भे.)

विदग्धछपय, विदग्धछप्पय–सं. पु.—पयोधर छप्पय का दूसरा नाम, जो ४४ गुरु और ६४ लघु अर्थात् १५२ मात्राओं का होता है। (पिं. सि.)

विदग्धता–सं. स्त्री. [सं. विदग्धः+ता. प्र.] पांडित्य, विद्वता।

विदग्धसाकल्य–सं. पु. [सं. विदग्धशाकल्य] १ विदेह जनक की राजसभा में, याज्ञवल्क्य के साथ वाद-विवाद करने वाला एक आचार्य, जो पूर्व नियोजित शर्तानुसार, वाद-विवाद में पराजित होने के कारण, मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

२ एक आचार्य, जो वायु के अनुसार व्यास की यजु:शिष्य परंपरा में से याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य था।

विदग्धा–सं. स्त्री. [सं.] १ होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली परकीया नायिका।

२ चातुर्य से युक्त देवी।

विदग्धाजीरण–सं. पु. [सं. विदग्धाजीर्ण] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

विदण–सं. पु. [सं. विदग्धः] १ कवि।

उ०—जै जया सबद विदण भणै, वयणै राजा वांमहा। लाखीक खड़ै अकबर लियां, 'दुरगै' दक्खण सांमहा। —रा. रू.

२ पंडित।

रू. भे.—विदग्ण

विदत—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

विददसव, विददस्व–सं. पु.—तरंत एवं पुरमीढ नामक राजाओं का पिता, एक राजा।

विदमांन—१ देखो 'विद्यमांन' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्वांन' (रू. भे.)

उ०—मोटोड़ौ माखौ ई नाक में गुणगुणावतौ—क्यूं नी सा इंगरेजी बोलणौ कांई बडी बात है, मास्तर बडा विदमांन है। कितरा तौ इणां नै फलमी गाणा आवै अर कितरा इणां नै नाच आवै। —अमरचूंनड़ी

विदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

उ०—मत कर, मत कर विदरंग थारौ भेस, खुलै रै केसां ना फिरै।

वित्थुरणौ, वित्थुरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—धसी अकास धूसरी, कि वांन सेन वित्थुरी। निमांण पांण नद्दयं, सुघोर जोर सद्दयं। —रा. रू.

उ०—वसुधा स्रोण सुरंगी, तुरियां धसळ वित्थुरी रैणा। आदू चपळ सहावौ, हुंइ रत्ती हुइ अणरतह। —गु. रू. ब.

उ०—३ बिसाळ भाल तोप कौ विसाळ जाळ वित्थुरै, धमंक भू धुजावणी धमंक मेघ लौं धुरै। महांन रंज दव्वुनी अरीन दव्वुनी मही, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही। —ऊ. का.

वित्थुरणहार, हारौ (हारी), वित्थुरणियौ—वि०।

वित्थुरिओड़ौ, वित्थुरियोड़ौ, वित्थुरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वित्थुरीजणौ, वित्थुरीजबौ—भाव वा०।

वित्थुरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्थुरियोड़ी)

वित्रप्त–वि. [सं. वितृप्त] जो तृप्त न हुआ हो, असन्तुष्ट।

वित्रभव–सं. स्त्री.—पूर्व और ईशान दिशा के मध्य की दिशा जिस ओर कृत्तिका नक्षत्र उदय होता है। इसका दूसरा नाम 'लांणी' भी हैं।

वित्रस–वि. [सं. वितृष] जिसमें किसी प्रकार की तृषा न रह गई हो, तृप्त।

वित्रस्ण–वि. [सं. वितृष्ण] १ जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न हो, तृप्त २ निष्पृह, उदासीन।

वित्रहोत, वित्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (अ. मा.)

वित्रा, वित्रासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—गुमर तजै वित्रा गळिण, हुलसै जोड़ै हथ्थ। धेठौ असुरां चौ धणी, कहै सुणाई कथ्थ। —मा. वचनिका

विथ—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

विथक–वि —थका हुआ।

विथकणौ, विथकबौ–क्रि. अ.—थकना, थकावट महसूस करना।

उ०—अेळ पख चंद जंही अनेकारां, हेळ कळा छांडै चित हेत। विथकै नहीं उगंतां अवतां, रुत कासिव नर रयण सुवेत। —बीरमदै राठौड़ रो गीत

विथकणहार, हारौ (हारी), विथकणियौ—वि०।

विथकिओड़ौ, विथकियोड़ौ, विथक्योड़ौ—भू० का कृ०।

विथकीजणौ, विथकीजबौ—भाव वा०।

विथकियोड़ौ–भू. का. कृ.—थकावट महसूस किया हुआ, थका हुआ।

(स्त्री. विथकियोड़ी)

वियत—देखो 'वितथ' (रू. भे) (अ. मा.)

विथरणौ, विथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कळि मंचंड असात उठै मेजक कुहर, रेण भेचक संक व्ही राव राणै। विथरतौ तेण दिन जाप 'सूजा' विया, जग दुड़िद तणै आताप जाणै। —ऊमेद सिंघ सिसोदिया रौ गीत

उ०—२ दंताळां दड़काय, मोताहळ विथरै मही। स्याळां मती संताय, लंकाळां गज भख 'लछा'। —भगवांनजी रतनू

विथरणहार, हारौ (हारी), विथरणियौ—वि०।

विथरिओड़ौ, विथरियोड़ौ विथरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथरीजणौ, विथरीजबौ—भाव वा०।

विथराणौ, विथराबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

विथराणहार, हारौ (हारी), विथराणियौ—वि०।

विथरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथराईजणौ, विथराईजबौ—कर्म वा०।

विथरायोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथरायोड़ी)

विथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथरियोड़ी)

विथा—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

उ०—१ जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मउसरि साह। तिण दिन थी पदमिणि मन बसिउ तुम्ह मांहो रे। सुण आलिम धणी, विरह विथा न खमायौ रे, बात किसी घणी। —प. च. चौ

उ०—२ हरि सुमरण हिरदै धरौ, विथा न पहुँचै वीर। कायर टळि कांनै चल्या, लग्या न सुख की मीर। —ह. पु. वां.

उ०—३ जैसे अगनि कास्ट में रहै काटि कटै न काठै दहै जन हरिदास अब ऐसी भई, भजतां राम विथा सब गई। —ह. पु. वां

उ०—४ पग परसै पावन हुवौ, गई विथा सब भाज। राज बडै हौ रांमजी, गहर गरीबनिवाज। —गजउद्धार

उ०—५ करता करण सदा सगि जाकै, चितवनि कहो कहां धूं ताकै। करम कुठार विथा हरि कापै, जन हरिदास नरहरि जापै। —ह. पु. वां.

विथार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

विथारण–वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

विथारणौ, विथारबौ—देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

विथारणहार, हारौ (हारी), विथारणियौ—वि०।

विथारिओड़ौ, विथारियोड़ौ, विथारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विथारीजणौ, विथारीजबौ—कर्म वा०।

विथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विथारियोड़ी)

विथित—देखो 'व्यथित' (रू. भे.)

विथुरणौ, विथुरबौ –देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०–१ तेल सिंदूर विथुरियं, सुनहो असवार मसत अरांकं । चांमुंड सुत ऊवरियं, खेत्राबोसर तुभ्यौ नमः । —मा. वचनिका

उ०—२ प्यारी के चिहुर विथुरे मांनो मांनो धाराधर की स्यांम घटा उनई, ता मध्य पहुप छटि परे तें सें बडी बडी बूंदे । लाल सारी पहिरे हरी कोर मधायनिसी घूंघट करि चली, पीठ पाछे तें तरके कंचुकी तनीकी फूंदें । —मीरां

उ०—३ दूनौं तटां जु नदी उपरि वही छै सु जांणे चोटी निथुरी छै । विथुरी कहै तै । प्रथी जु स्त्री त्यें नै धाराहर मेघ जब भरतार मिळीयो छै । तब चोटी विथुरी । —वेलि टी.

उ०—४ पाका दाड़िमां का बीज । यु छिटकि पड़्या छै । एही वसंत पाट बैठे नै निवछावळि कीया छै । सु ए मांनूं नग जवाहर विथुरे छै । ग्रौर चु भांति भांति का फळ व्रखां के विखै लागा छै । —वेलि टी.

विथुरणहार, हारौ (हारी), विथुरणियौ—वि० ।

विथुरिग्रोड़ौ, विथुरियोड़ौ, विथुरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विथुरीजणौ, विथुरीजबौ—भाव वा० ।

विथुरियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विथुरियोड़ी)

विथ्य–सं. पु. [सं. वीथि] पथ, मार्ग, रास्ता ।

उ०—घुमाव लोल गोळकी प्रचत्त बोलती घलें, हरोळ गोल घोल दें चंदोल चोलती हलें । विथ्य जनेच्छनी प्रचौळ गोळ घोलही वहैं, सतोल तोल तोल सें वितोल तोलती वहैं । —ऊ. का.

विदंड–सं. पु.—द्रोपदी स्वयवर में अपने पुत्र दण्ड के साथ उपस्थित एक राजा ।

विद–सं. स्त्री. [सं. विदः] १ जानकार, पंडित, कवि । (अ. मा.)

२ वेद ऋषि के पिता, एक प्राचीन ऋषि ।

३ देखो 'विघ' (रू. भे.)

विदकणौ, विदकबौ–क्रि. अ.—चौंकना, चमकना ।

उ०—मूळी कोभी, कटरूप, ओगणां री खांग ! जावै जठीनै ही रात मिळै । हूंसै जद चीढ सो चीरै । चालै तौ खोलो सो भाजै, दड़बड़ाट ऊपड़ै । बोलै तौ गधा विदक जावै । —दसदोख

विदकणहार, हारौ (हारी), विदकणियौ—वि० ।

विदकिग्रोड़ौ, विदकियोड़ौ, विदक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विदकीजणौ, विदकीजबौ—भाव वा० ।

विदकाउ—देखो 'विदकौ' (रू. भे.)

विदकियोड़ौ–भू. का. कृ.—चौंका हुआ, चमका हुआ ।

(स्त्री. विदकियोड़ी)

विदकौ–वि. (स्त्री. विदकी) वढिया, उत्तम, श्रेष्ठ ।

रू. भे.—विदकाउ ।

विदग, विदग्घ—देखो 'वीदग' (रू. भे.)

विदग्धछपय, विदग्धछप्पय–सं. पु.—पयोधर छप्पय का दूसरा नाम, जो ४४ गुरु और ६४ लघु अर्थात् १५२ मात्राओं का होता है । (पिं. सि.)

विदग्धता–सं. स्त्री. [सं. विदग्धः+ता. प्र.] पांडित्य, विद्वता ।

विदग्धसाकल्य–सं. पु. [सं. विदग्धशाकल्य] १ विदेह जनक की राजसभा में, याज्ञवल्क्य के साथ वाद-विवाद करने वाला एक आचार्य, जो पूर्व नियोजित शर्तानुसार, वाद-विवाद में पराजित होने के कारण, मृत्यु को प्राप्त हुआ था ।

२ एक आचार्य, जो वायु के अनुसार व्यास की यजुःशिष्य परंपरा में से याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य था ।

विदग्धा–सं. स्त्री. [सं.] १ होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली परकीया नायिका ।

२ चातुर्य से युक्त देवी ।

विदग्धाजीरण–सं. पु. [सं. विदग्धाजीर्ण] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का अजीर्ण रोग ।

विदण–सं. पु. [सं. विदग्ध:] १ कवि ।

उ०—जै जया सबद विदण भणै, वयणै राजा वांमहा । लाखीक खड़े अकबर लियां, 'दुरसै' दक्खण सांमहा । —रा. रू.

२ पंडित ।

रू. भे.—विदरण

विदत—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

विददसव, विददस्व–सं. पु.—तरंत एवं पुरमीढ नामक राजाओं का पिता, एक राजा ।

विदमांन—१ देखो 'विद्यमांन' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्वांन' (रू. भे.)

उ०—मोटोड़ौ माखो ई नाक में गुणगुणावतौ—क्यूं नी सा इंगरेजी बोलणौ कांई बडी बात है, मास्तर बडा विदमांन है । कितरा तो इणां नै फलमी गाणा आवै अर कितरा इणां नै नाच आवै । —अमरचूंनड़ी

विदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

उ०–मत कर, मत कर विदरंग थारो भेस, खुलै रे केसां ना फिरै ।

आय मिळैगो थारो स्यांम, दिन दसनैं, भूरफुर ना मरै ।
—लो. गी.

विदर—१ देखो 'विदरी' (रू. भे.)

२ देखो 'विदुर' (रू. भे.)

उ०—१ बोलां में ओछा **विदर**, मोलां में नह मोट । पोलां में 'परताप' रै, गोलां वाळौ गोट । —ऊ. का.

उ०—२ ब्रह्मा जो न करत **विदर**, जग मांहै जगजीत । असल नसल रो ऊघड़त, रूड़ापौ किण रीत । —बां. दा.

उ०—३ **विदर** बहादर बाजवा, कड़ बांधै केवांण । कर जोडण लटका करण, **विदर** न छोडै वांण । —बां. दा.

उ०—४ प्रथम **विदर** पूजिया, मात केकइ मनां मैं, पीव मरण पांमिया, पूत चालिया वनां में । पछै **विदर** पूजिया पंडव कैरवां सदाइ, माह माह कट मुवा, दिली जीवतां न पाइ । विदर नूं पूज वगड़ाबतां,जैचंद 'पीथल' जूंभीया, 'मोकमा' कमंध मोटा मिनख, जिकै विदर तै पूजिया । —अरजुनजी बारहठ

उ०—५ पैंलां पेट वधाय पछै **विदरी** परणीजे, दुलहो नावै दाय फेर फस जावै बीजै । दुख चूड़ै दोवड़े कदै नह लागो काय, नाकारो नह करै जेण कुळ पद जी जाय । —अरजुनजी बारहठ

(स्त्री. विदरांणी, विदरी)

विदरण—देखो 'विदीरण' (रू. भे.)

विदरणौ, विदरबौ—देखो 'विदीरणौ, विदीरबौ' (रू. भे.)

विदरणहार, हारौ (हारी), **विदरणियौ**—वि० ।

विदरिओड़ौ, विदरियोड़ौ, विदरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विदरीजणौ, विदरीजबौ—भाव,कर्म वा० ।

विदरभ—सं. पु. [सं. विदर्भ] १ नौखंडाधिपति ऋषभदेव के नौ पुत्रों में से एक, जो राजा भरत के भाई और निमि के पिता थे । अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा को इसी की कन्या मानते हैं ।

२ आधुनिक बरार प्रदेश का एक प्राचीन नाम । (सभा)

उ०—दक्खिण दिसि देस **विदरभति** दीपति अति कंदणपुर । राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर असुर सुर । —वेलि

वि. वि.—यहां के राजा भीष्मक थे । रुक्मिणी उनकी पुत्री थी । जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी । राजा नल की पत्नी दमयन्ती का पिता भी इसी प्रदेश का राजा था ।

३ एक राजा, जो यदुवशीय ज्यामघ राजा का पुत्र था ।

वि. वि.—नारदपुराणानुसार इसका पैतृक नाम 'काश्यप' था और इसकी माता का नाम 'शैव्या' या 'चैत्रा' औशिनरी था । इसका विवाह भोजराज कन्या उपदानवी या भोज्या से हुवा था, इसी से इसे कुश, क्रथ, रोमपाद आदि पुत्र और कौशिनि एवं सुमति नामक दो पुत्रियां प्राप्त हुई थी जो सगर राजा को ब्याही गई थी ।

४ कार्तवीर्य अर्जुन का मित्र एक राजा, जो परशुराम द्वारा मारा गया था ।

५ एक ऋषि का नाम । (पुराण)

रू. भे.—बिदर, विदरभ, विदरभति, विद्रभ, विद्रब ।

विदरभजा—सं. स्त्री. [सं. विदर्भजा] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का एक नाम ।

२ विदर्भ नरेश भीष्म की पुत्री और निषधदेश के राजा वीरसेन के पुत्र नल की पत्नी दमयंती का एक नाम ।

३ श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणि का एक नाम ।

विदरभति—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

विदरभराजतनया—सं. स्त्री. [सं. विदर्भराजतनया] दमयन्ती और रुक्मणी का एक नाम ।

विदरभा—सं. स्त्री. [सं. विदर्भा] विदर्भ देश की राजधानी ।

उ०—निमख रौ विलंब रौ नाथ अवसर नथी, स्रीकस्ण मांगीओ आंण रथ सारथी । स्रीकिसन ब्राह्मण तीसरौ सारही, **विदरभा** नगर ततकाळ आया वही । —रुखमणी हरण

रू. भे.—वइद्रभा ।

विदरभि—सं. स्त्री. [सं. विदर्भि] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

विदरभि कौंडिन्य—सं. पु [सं. विदर्भिन्+कौंडिन्य] वत्सनपात बाभ्रव्य का शिष्य और गालव का गुरु, एक आचार्य ।

विदरांणी—सं. स्त्री.—दासी, सेविका ।

उ०—रजपूतांणी रहै रिजक बिन, धरम पतिव्रत धारी रै । **विदरांणी** पड़दां में बैठी, किसब कमावै सारी रै । —ऊ. का.

विदरियोड़ौ—देखो 'विदीरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विदरियोड़ी)

विदरी—सं. स्त्री.—१ हुक्का ।

उ०—तठा उपरांयत हुकां री होंस कीजै छै । चाकरां नै हुकम हुवौ छै । हुका तयार कीजै छै । किण भांतरा हुका छै ? सोनै रा, रूपै रा, **विदरी**, खांखोळ ठाढा पांणी सूं भरजै छै । नीचै सुथरा विछायजै छै । ऊपर हुका मेल्हजै छै । नमचा सरद कीजै छै । —रा. सा. सं.

२ देखो 'विदुर' (स्त्री.) (अ. मा.)

विदरोह—देखो 'विद्रोह' (रू. भे.)

विदरोही—देखो 'विद्रोही' (रू. भे.)

विदळ, विदल—सं. पु. [सं. वि.+दल] १ पेशेवर हींजड़ा ।

२ शत्रु-सेना।

उ०—धाड़ं पुकार पड़ लाखि धाड़, रवि उदय ग्रस्त लग पंच राड़ सालुळं विदळ कंदळ ससत्र, रंग सेल खगं न मिटै रगत्र।
—रा. रू.

३ एक राक्षस, जो काशीनगर में पार्वती द्वारा गेंद प्रहार से मारा गया था।

[सं.] लाल रंग का सोना।

विदळणौ, विदळबौ—क्रि. स.—दलित करना, नष्ट करना।

विदळणहार, हारौ (हारी), विदळणियौ—वि०।

विदळिग्रोडो, विदळियोड़ौ, विदळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विदळीजणौ, विदळीजबो—कर्म वा०।

विदळियोड़ौ—भू. का. कृ.—दलित किया हुग्रा, नष्ट किया हुग्रा।

(स्त्री विदळियोडी)

विदल्ल—सं. पु—ध्रुवसन्धि नामक राजा का मन्त्री।

विदवता—देखो 'विद्वता' (रू. भे.)

विदवांन—देखो 'विद्वांन' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

विदवीं—वि—सुन्दर, मनोहर।

उ०—जंगळ जालां माथ, छा रची विदवीं वेलां। फूलां चियां फळीज, झिळोरां झिलवं केलां। गूंदी रंग गिलोय, पिलूंदी पसरै चढणं। ऊंट फोग जड़ ऊग, पगोठा देवं वढणं।
—दसदेव

रू. भे—विदवी।

विदवेस—देखो 'विद्वेस' (रू. भे.)

विदवेसक—देखो 'विद्वेसक (रू. भे.)

विदवेसणी, विदवेसिणी—देखो 'विद्वेसिणी' (रू. भे.)

विदवेसी—देखो 'विद्वेसी' (रू. भे)

विदांत, विदांतौ—देखो 'वेदांत' (रू. भे.)

उ०—दिगंतां लौं दोरें मचन्न मन मोरें मुदमुदी, विदांतौ भंभोरें विसय विष वोरें बुदबुदी। पछारें पापां को त्रितप भव तापां त्रुटि तलै, मिळावै मेवा को विधि विधि निसेधा फत मलै।
—ऊ. का.

विदांम—सं. पु.—१ मारवाड़ी (महाजनी) का एक छोटा सिक्का।

२ देखो 'बिदांम' (रू. भे.)

३ देखो 'बादांम' (रू भे.)

उ०—साग साल मलियागरी, वळि नाळेर विदांम। सोपारी खिरणी सरस, हेम हवा तिहि ठांम।
—गजउद्धार

विदांमी—देखो 'बादांमी' (रू. भे.)

विदा, विदाई, विदायी—सं. स्त्री. [ग्रं. वदाग्र] १ प्रस्थान, रवानगी, रुखसत।

उ०—१ ग्ररि पालण राखण ग्रवनि, विध मुण सरब विचार। भीम सुनण भर भार भळ, विदा हुग्रौ तिण वार।
—रा. रू.

उ०—२ ताहरां पातसाहजी सूं सिवै ग्ररज कीवी—'ग्रांमंद देस में ग्रांतरी रौ परगनौ छै सु माहरौ उतन छै।' तिण उपर सिवा नूं उतन रौ पटौ कराय दियौ। घोड़ौ सिरपाव दियौ। घणौ दिलासा देनै देस नं विदा कियौ।
—नैणसी

उ०—३ तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति उणि भांत सूं राजांन री वात सुण ने ग्रजमेर रै थांणं री हकीकत सांभळ नै ग्रादि वैर उगराह नूं ग्रसुरांण तुरकांण रा दळ राजांन ऊपरै विदा हुग्रा सौ किण भांत रा कहीजै छै।
—रा. सा. सं.

क्रि. प्र.—करणी, देणी, होणी।

२ कहीं मे रवाना होने या प्रस्थान करने को ग्रनुमति।

उ०—१ ताहरां पाबूजी गोगोजी भेळा हुयनै घोड़ां नूं गया। ग्रागै देखै तो कासूं? ऊभा छूटा चरै छै। तद ग्रै घोड़ा लेय लगांमां देनै ग्रसवार हुयनै गोगोजी री कोटड़ी ग्राया। पछै पाबूजी नूं भगत जीमाय नैं विदा दीवी।
—नैणसी

उ०—२ उठा जोधपुर हुंता राव कल्यांणमल जी कन्हा विदा करि नै कुंवर पदवी थका महाराजाधिराज महाराजा स्रीराय-सिंघजी मिरजै इब्राहम रौ वांसौ कियौ।
—द. वि.

उ०—३ साथै मुधरौ पवन बहंतां मन विलमावै, डावा चातक बोल सुरंगा मोद जतावै। गरभीजण ग्रसमांन बुगलियां मिळवा ग्राई, इदका हुवा सुगन लेवतां मेघ विदाई।
—मेघ

क्रि. प्र.—करणी, लैणी, दैणी।

३ कहीं से प्रस्थान करने की क्रिया।

उ०—१ ताहरां पातिसाह उमरावां सगळां नूं विदा करण लागा सु उमराव को बीड़ो झालै नही। ताहरां महाराजाधिराज महाराजा स्रीरायसिंघजी बीड़ौ झालयौ। राजि विदा हुग्रा।
—द. वि.

उ०—२ दुहाग वाळी उण रात तौ कवरांणी नै नींद ग्रायगी ही, पण ग्राज इण विदाई री रात उणनैं नींद नीं ग्राई। ढोलिया माथै सूनी सूनी पसवाडा पलटती री पण उणरी नींद तौ जांणै तारां रै मांय ई चापळगी ही।
—फुलवाड़ी

४ विदा करने या होने पर, दिया जाने या प्राप्त होने वाला, धन पुरस्कार, रुपया ग्रादि।

उ०—नारेळ नरसंघ रौ हंतौ नरसंघ रै हाथ दीयौ। वडौ हरख हूवौ। प्रोहित साहौ पूछियौ। प्रोहित साहौ लिख दीनौ। प्रोहित नं वडी विदा दीवी, घोड़ौ सिरपाव। तूटा तौ पण ग्रजमेर रा

घणी। घणी मनोहार कर प्रोहित नूं वडी विदा दे सीख दीवी।
—राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—लैणी, दैणी।

५ भेजने या रवाने करने की क्रिया।

उ०—१ वात अकब्बर आगली, अक्खी हाथ मिळाय। दूत विदा करके लियौ, नारू 'दुरग' बुलाय। —रा. रू.

उ०—२ आसतखां सुण कमंध अमांमा. सुत सिर विदा कियौ घर सांमा। हनिया जवन अजेगढ़ हूंता, दारुण सहस वीस जमदूता। —रा. रू.

उ०—३ राजांन राजावत। मारू घरै पधारिआ छै। चौकि कळळ फूटि नै रही छै। माया रा ऊबराव वहोड़ावीजै छै। कवि राजांनां विदा कीजै छै। —रा.सा. सं.

रू. भे.—बिदा, बिदाई, बीदा, विद्द, विद्दा, विद्या, विधा।

विदारक–वि.—१ विदीर्ण करने वाला, फाड़ने वाला।

२ नाश करने वाला, संहार करने वाला।

रू. भे.—बिदारक।

विदारण–सं. पु. [सं.विदारणः] १ अधर्मियों को नष्ट करने वाले भगवान विष्णु।

२ सिंधुनरेश जयद्रथ राजा के भाइयों में से एक।

३ युद्ध संग्राम।

विदारणौ, विदारबौ–क्रि. स. [सं. विदारणं] १ मारना, संहार करना।

उ०—केहर कुंभ विदारियौ, गजमोती खिरियाह। जांणे काळा जळद सूं, ओळा ओसरियाह। —बां. दा.

२ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—रिखि पत्नी पर किरपा कीन्हीं, विप्र सुदांमा की विपति विदारण। मीरां के प्रभु मौ बंदी परि, एती बेरि भई किण कारण।
—मीरां

३ चीरना, फाड़ना, विदीर्ण करना।

उ०—१ द्रुपदसुता को चीर बढायौ, दूसासन को मांन-मद-मारण। प्रहलाद की प्रतिग्या राखी, हिरणाकुस नख उदर विदारण।
—मीरां

उ०—मगर गलतौ कांठो आयौ धीवर पायौ, काढयौ पेट विदारी रे लो। तुझ पुत्रि घर देखि नीपजतौ आयौ चलतौ, परणायौ तिण वारी रे लो। —वि. कु.

विदारणहार, हारौ (हारी), विदारणियौ—वि०।

विदारिओड़ौ, विदारियोड़ौ, विदारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विदारीजणौ, विदारीजबौ—कर्म वा०।

बिदारणौ, बिदारबौ—रू० भे०।

विदारिकंद—देखो 'विदारीकंद' (रू. भे.)

विदारिका–सं. पु.—बगल, जंघा आदि के संधि स्थान पर होने वाला फोड़ा विशेष। (अमरत)

विदारिगंधा—देखो 'विदारीगंधा' (रू. भे.)

विदारियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

(स्त्री. विदारियोड़ी)

विदारीकंद–सं. स्त्री. [सं.] एक प्रकार की लता और उक्त लता का कंद, जो औषधि के काम आता है, भुँईकुम्हड़ा।

रू. भे.—बिदारीकद, विदारिकंद।

विदारीगंधा–सं. स्त्री. [सं.] शालपर्णी नामक एक क्षुप विशेष, जिसके फलियां लगती है।

रू. भे.—विदारिगंधा।

विदारुण–सं. पु.—चंपकनगरी का एक दुष्ट राजा।

वि. वि.—इसने ब्राह्मणों व वेदों की निंदा की थी. इस कारण से इसके शरीर में कोढ़ उत्पन्न हुआ था, जो वेत्रवती नदी में स्नान करने के कारण नष्ट हुआ।

विदावत–सं. पु.—१ कुटिल युक्ति, पेच, कपट, छल, गुप्त रहस्य।

उ०–'अरजन' प्रछन मिळै उमरावां, दाव विदावत घणा दरियावां। वातां 'मुहकम' तणी वणावै, साह दियौ अति कुरब सुणावै।
—रा. रू.

२ राठौड़ वंश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

विदाह–सं. पु. [सं.] १ पित्त के प्रकोप से शरीर में उत्पन्न जलन।

२ किसी अन्य कारण से हाथ पैर में होने वाली जलन।

३ उत्सर्ग, दान। (डि. को.)

विदाहक–वि. [सं.] विदाह उत्पन्न करने वाला।

विदाही–सं. पु. [सं. विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन उत्पन्न हो, दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ।

विदित–सं. पु. [सं.] अवगत, ज्ञात।

उ०—१ विप्र वलतु बोलियु, 'वैदरभ देस विसाल। घरमात्मा एक भीम नांमि, विदित तां भूपाल। —नळाख्यांन

उ०—२ सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, झीनातिझीन चित विदित

चीन। पद परम पून्य संकल्प सून्य, निरबांण नित्य अंतर अनित्य।
—ऊ. का.

वि.—१ सूचित किया हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

उ०—पैंतीस जुध लै जय प्रकट, हत्थी सत्तरि रीझ हत्ति। सांमण पचास दीधा सहज, बगसरिया कीधा विदित। —वं. भा.

३ इकरार किया हुआ।

रू. भे.—बदीत, विदित, वदीत, वदीतउ, वदीतै, विदत।

विदिया—देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—भूपति पूंजतणौ दुति अद्भुत, सजणविनोद नांम पत्तन सुन। उग्रबोधि पितरै अहिनांणौ, जोध जोध विदिया सब जांणै।
—सू. प्र.

विदियाधर—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.)

उ०—पूछै भोपां वांभणां, विरमोटी वीरतंत। विदियाधर वीरोटिया, चेला होय चालत। —अग्यात

विदिस—१ देखो 'विदिसा' (रू. भे.)

२ देखो 'विदेस' (रू. भे.)

विदिसा, विदिसि—सं. स्त्री. [सं. विदिशा] १ मालवा में स्थित परियात्र पर्वत से निकली एक नदी। (पौराणिक)

२ दशार्णव देश की राजधानी।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जातां, सगळा भोग विलास पावसौ प्रीत जतातां। वेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजंतां, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर घण पांन करंतां। —मेघ

३ दो दिशाओं के बीच की दिशा, उपदिशा।

उ०—१ पहिलौ जंबू द्वीप समइ विचि थाल आकार, लांबउ पिहुलउ इक लख जोइण नैं विस्तार। मोटौ तेहनै मध्य सुदरसण नांमै मेर, तिण थी दस विदिसांनी गिणती च्यारै फेर।
—ध. व. ग्रं.

उ०—२ कठठ्यौ घमसांण प्रमांण किसा, दहल्यौ हिंदवांण दिसा विदिसा। त्रिदसालय चाव चढया तरुण्यां, समचार थळी छत्रधार सुण्यां। —मे. म.

उ०—३ अण चपळ नैण लघु जोम अत्ति, संगि अहूं विदिसि चेतन सकत्ति। दीपंत जुगळ कळ अमळ दंत, सुत अरक पांणि लखि जांणि संत। —रा. रू.

रू. भे.—बिदिस, बिदिसा, विदिस।

विदीया—देखो 'विद्या' (रू. भे.) (वं. भा.)

विदीरण—वि. [स. विदीर्ण] १ बीच से चीरा हुआ, फाड़ा हुआ। २ तोड़ा हुआ, नाश किया हुआ। ३ मारा हुआ, संहार किया।

रू. भे.—विदीरण, विदरण।

विदीरणौ, विदीरबौ—क्रि. स. [सं. विदीर्णम्] १ फाड़ना, चीरना।

२ मारना, संहार करना।

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ मिटाना।

उ०—पर पीर विदीरन पीर प्रथा, तुलसी तसबीर कबीर कथा। सुधि नांनक बांनक मी सरसी, दुति दादुदयाळ समी दरसी।
—ऊ. का.

विदीरणहार, हारौ (हारी), विदीरणियौ—वि०।

विदीरिग्रोड़ौ, विदीरियोड़ौ, विदीरघोड़ौ—भू० का० कृ०।

विदीरीजणौ, विदीरीजबौ—कर्म वा०।

बिदरणौ, बिदरबौ, बीदरणौ, बीदरबौ, बिदरणौ, बिदरबौ
—रू. भे.।

विदीरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ फाड़ा हुआ, चीरा हुआ। २ मारा हुआ, संहार किया हुआ। ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ।

४ मिटाया हुआ।

(स्त्री. विदीरियोड़ी)

विदु—सं. पु. [सं.] १ घोड़े के कान के नीचे का हिस्सा।

२ हाथी के मस्तक के बीच का भाग।

वि.—विद्वान, पंडित।

उ०—अतवार वहै आपै अनंत, सह विदु हुय जावै सगा। तक विट नांम स्रीरांम रो, जग समंद तिर तूं 'जगा'। —जगौ खिड़ियौ

विदुख—देखो 'विदुस' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ उचारै वेद विदुख अनेक। —रांमरासौ

उ०—२ दूसरा द्रस्टांत जिसउ कैलि कौ पेड़ होय। विपरीत रुख कहतां उलटउ कीयउ। आगइ पींडी कइसी जैसौ केलि कौ गरभ। विदुख कहतां पंडित सुवचना करि वखांणै। वेलि टी.

उ०—३ औ त्रसपत दसमै ग्रह आयौ, विदुख तिकां दुण लाभ बतायौ। कुळ न्रप उग्र थयौ व्है कोई, सुतन प्रताप चौगुणौ सोई।
—रा. रू.

(स्त्री. विदुखी)

विदुत, विदुति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

विदुत्तम—सं. पु.—विष्णु भगवान का एक नाम।

वि.—सब बातों का जानकार, सर्वज्ञाता।

विदुर, विदुरु—सं. पु. [सं विदुर] १ कौरवों व पांडवों के प्रसिद्ध मंत्री, जो राजनीति, अर्थनीति व धर्मनीति में निपुण थे और महाराज धृतराष्ट्र के भाई थे।

वि. वि.—इन्हें धर्मराज का अवतार मानते हैं। इनका जन्म विचित्रवीर्य की पत्नी की दासी और व्यास ऋषी के संसर्ग द्वारा हुआ था। ये श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त और निष्पक्षी थे। इन्होंनें भीम से शस्त्रास्त्र, आयुधाभ्यास, धनुर्विद्या और वेदाभ्यास किया था। पाण्डवों के द्वारा सही नीति का मार्ग अपनाने के कारण इन्होंने उनकी रक्षा करने के अनेक बार प्रयत्न किये। चन्द्रवंश की रक्षार्थ दुर्योधन की कुटिलताओं का उल्लेख धृतराष्ट्र के सामने करते हुए उसे अपने पुत्रों (दुर्योधन आदि) का त्याग करने को कहा था इसी कारण धृतराष्ट्र ने इन्हें देश से निष्कासित किया था। भीष्म की मृत्यु और श्रीकृष्ण बलराम के स्वर्गारोहण के पहले ही ये धृतराष्ट्र, संजय व गान्धारी के साथ तपस्या करने वन में चले गये और वहीं यदुवंश के नाश की बात सुनकर पार्थिव शरीर छोड़ कर धर्मदेव का रूप धारण किया।

उ०—१ आइसं विदुरह दीधउं राइ. दह दिसि जणवइ जोवा धाइं। सोवनथंभे मंच चडावइ, रांणी राणि तें सहू य आवइ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राखिउ ए राउ जुठिलु विदुरह वयणु न मांनीउं ए। हारीयां ए हाथियं थाट भाईय हारीय राजि सउं ए।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ अंबानंदणु विदुरु नांमु नांमि खजि सरीखउ। इ खीणइ पुणु विचित्रवीरघु पंडु राजि प्रतीठिउं। —सालिभद्र सूरि

२ बहुला नामक स्त्री का पति एक वेश्यागामी ब्राह्मण, जिसने अपनी पत्नी के द्वारा किये गये पुण्यकर्मों के कारण मुक्ति प्राप्त की थी।

३ सोमवती अमावस्या के दिन प्रयाग के गंगासंगम में स्नान करने से ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हुआ, पांचाल देश का एक क्षत्रिय।

४ पंडित या ज्ञानी पुरुष।

५ दासी-पुत्र, सेवक।

६ स्वांग बनाने वाला विदूषक।

उ०—विधि पाठक सुक सारस रस वंछक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।

—वेलि

रू. भे.—बिदर, बिदुर, विदर।

विदुला—सं. स्त्री. [सं.] सौवीर देश के राजा की पत्नी और संजय की माता।

वि. वि.—यह बड़ी ही वीर स्त्री थी। इसका पति, इसके पुत्र की बाल्यावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसी कारण से सिन्धु-नरेश ने सौवीर देश पर चढ़ाई की थी और संजय को रणभूमि से भागना पड़ा था। मगर इसने अपने पुत्र संजय को घर में नहीं घुसने दिया और कड़ी फटकार सुना कर पुनः युद्धार्थ प्रोत्साहित किया था।

विदुस—वि. [सं. विदुष] (स्त्री. विदुसी) १ विद्वान, पंडित। (डिं. को.)

२ कवि। (अ. मा.)

३ चतुर, होशियार।

४ अंगराज वंशीय एक राजा।

५ मत्स्यानुसार, घृत राजा का पुत्र, एक राजा।

६ ज्योतिषी।

रू. भे.—विदुख, विदूस।

विदुसणौ, विदुसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ (रू. भे.)

विदुसणहार, हारौ (हारी), विदुसणियौ—वि०।

विदुसिओड़ौ, विदुसियोड़ौ, विदुस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विदुसीजणौ, विदुसीजबौ—कर्म वा०।

विदुसियोड़ौ—देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विदुसियोड़ी)

विदूण—सं. पु.—रावण के छोटे भाई विभीषण का एक मंत्री।

विदूर—वि. [सं.] बहुत दूर।

सं. पु.—१ पुरु राजा विदूरथ का एक नामान्तर।

२ महाराज कुरु द्वारा दशार्ह कुलोत्पन्न कन्या शुभांगी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो मधुवंशीय कन्या संप्रिया का पति था, जिसके गर्भ से अनश्वा नामक पुत्र हुआ था।

३ एक पर्वत, जहां वैदूर्य मणि मिलती है।

विदूरथ—सं. पु. [सं.] १ यदुवंशीय श्वफल्क के भाई चित्ररथ का पुत्र, जिसके पुत्र का नाम शूर था।

२ पुरुवंश का एक राजा, जिसके पुत्रों का पालन-पोषण ऋक्षवान नामक पर्वत पर रींछों द्वारा किया गया था।

३ भजमान राजा का पुत्र एक यदुवंशीय राजा।

४ सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

५ सुरथ राजा का पुत्र व सार्वभौम राजा का पिता एक राजा।

६ चंपक नगरी के हंसध्वज राजा का भाई।

७ दक्षिण भारत का एक राजा, जिसने अपनी कन्या का विवाह दिष्टवंशीय राज्यवर्धन राजा के साथ किया था।

८ उपदर्व व दाशार्ह नामक एक यादव राजा, जो लोमपादवंशीय विधृति राजा का पुत्र था।

वि. वि.—मत्स्यानुसार ये निर्वृत्ति राजा का पुत्र तथा दशार्ह राजा का पिता था।

९ रुक्मिणी व द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित एक वृष्णिवंशीय

क्षत्रिय, जो वृद्धशर्मन व वसुदेव भगिनि श्रुतदेवा का पुत्र एवं दन्तवक्र का भाई था।

वि. वि.—इसके भाई दन्तवक्र, शाल्व, शिशुपाल आदि का वध श्रीकृष्ण द्वारा किये जाने पर इसने अपने भाईयों का बदला लेने हेतु श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया था मगर श्रीकृष्ण ने इसका वध कर दिया था।

१०—भलंदन ऋषि का मित्र एक राजा, जिसके सुनीति एव सुमति नामक दो पुत्र थे, एवं मुदावती नामक एक कन्या थी।

वि. वि.—कुजंभ राक्षस का वध करने हेतु, इसके दोनों पुत्र निकले थे मगर कुजंभ राक्षस ने उन्हें कैदी बना लिया और इसकी पुत्री का हरण भी कर लिया था। इसके दोनों पुत्रों व पुत्री मुदावती को, इसके मित्र भलंदन ऋषि के पुत्र वत्सप्रि ने कुजंभ राक्षस का वध करके मुक्त कराया था। इसी कारण से इसने अपनी पुत्री मुदावती का विवाह वत्सप्रि के साथ कर दिया था।

११ राम-रावण युद्ध के समय राम की सेना का एक बन्दर।

बिदूसक–सं. पु. [सं. विदूषक] (स्त्री. विदूसिका) १ दूसरों के दोष बतला कर हंसी उड़ाने वाला व्यक्ति।

२ विभिन्न प्रकार की नकलें, वेशभूषा बनाकर अथवा बातचीत द्वारा लोगों को हंसाने वाला व्यक्ति, मसखरा।

३ साहित्य में चार प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक, जो अपने कौतुक और परिहास आदि के द्वारा कामकेलि में अधिक आनन्द उत्पन्न कर देता है।

४ कामुक या विषयी व्यक्ति।

बिदूसण–सं. पु [सं. विदूषण] विशेष रूप से किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव।

बिदूसणौ, बिदूसबौ–क्रि. स.—१ कलंकित करना, दोष लगाना।

२ कष्ट देना, दुखः देना, सताना।

बिदूसणहार, हारौ (हारी), **बिदूसणियौ**—वि०।

बिदूसिप्रोड़ौ, बिदूसियोड़ौ बिदूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिदूसीजणौ, बिदूसीजबौ—कर्म वा०।

बिदूखणौ, बिदूखबौ, बिदूसणौ, बिदूसबौ, वदूसणौ, वदूसबौ, विदुसणौ, विदुसबौ, विदोखणौ, विदोखबौ, विदोसणौ, विदोसबौ

—रू० भे०।

बिदूसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ कलंकित किया हुआ, दोष लगाया हुआ.

२ कष्ट दिया हुआ, दुख दिया हुआ, सताया हुआ।

बिदेघ–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बिदेघमाथव–सं. पु.—विदेघ लोगों का प्रमुख मधुवंशीय एक राजा। विदेघ लोग भी आगे चलकर विदेह कहलाये।

वि. वि.—इसने अपने मुख में अग्नि को बंधकर रखा था और इस भय से कि बोलने से अग्नि बाहर आयेगी, वह किसी से बात भी नहीं करता था। इसके पुरोहित रहूगण गौतम ने अनेक प्रकार से अग्नि स्तुति करके इस अग्नि को बाहर निकालने का प्रयत्न किया मगर कुछ असर नहीं हुआ।

एक बार गौतम के मुंह से 'घृत' शब्द का उच्चारण हो गया और इसके मुख में बंध अग्नि अपनी अनेक जिव्हायें फैलाकर बाहर निकला और सारे संसार के साथ २ विदेघ एवं गौतम को जलाने लगा। साथ ही साथ सृष्टि की नदियों को भी जलाने लगा। अग्नि के इस दाह से मुक्ति कराने के लिए विदेघ राजा ने अपने राज्य की सीमा पर बहने वाली नदी में कूद गया यहां आकर अग्नि का दाह शान्त हुवा।

बिदेस–सं. पु. [सं. विदेश] अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश, परदेश। (अ. मा.)

उ०—१ वूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस **बिदेस** नी वाट भागी। जळ भरिया निवांण, प्रथ्वी प्रवरती मेह नी आंण। आदि। —रा. सा. सं.

उ०—२ देवी निरझरै तरवरै नगै नेसै, देवी दिसै अवदिसै देसै विदेसै। देवी सागरं बेटडै आप संगै, देवी देहरै घरै देवी दुरंगै। —देवि.

रू. भे.—विदेस, विदिस, विदेसि, बिदेसी।

बिदेसि, बिदेसी–वि.—परदेश का, परदेश सम्बन्धी।

सं. पु.—१ परदेश का निवासी व्यक्ति, परदेशी।

२ देखो 'बिदेस' (रू. भे.)

उ०—१ लोभी ठाकुर, आवि घरि, कांई करइ **बिदेसि**। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि। —ढो. मा.

उ०—२ रांम लक्ष्मण मही दुखि पाड्या, पांच पांडव **बिदेसि** भमाड्या। डूंब नइं घरि जल वहिउं हरचंदिइं, भालडी मरण लाघ मुकुंदिइं। —सालिसूरि

अल्पा.—बिदेसीड़ौ।

बिदेसीड़ौ—देखो 'बिदेसी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ घरां नै पधारौ **बिदेसीड़ा**, छोटी सी नाजक घण रा पीव। यौ सांवणियौ उमड़ रह्यौ छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव। —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ **बिदेसीड़ा** बेटा राव हो, ऊतरधा कोठै सूं आय। चुकल्या सात सीस पर म्हांरै, छुटतौ दे गजरौ बांध।

—रसीलै राज रा गीत

बिदेह–सं. पु. [सं.] १ मिथिलानरेश सीरध्वज जनक का एक नाम।

उ०—१ मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजंगेस देवेस सव्वेस मेळा। विदेहं प्रतंग्या कहै एम वाकं, पुत्री जो वरै सो ज तांणै पिनाकं। —सू. प्र.

उ०—२ ब्रह्मानंद नैं विसरचौ विदेह हौ रघुवरजी, कोई प्रेमानंद पूरण छायौ, छक रह्यौ हौ राज। मुनिवरजी नैं बूझै विदेह हौ मुनिवरजी; कांई ए कुण प्रांणां रा प्यारा पांवणा हौ राज। —गी. रां.

२ मिथिला नरेश निमि का नाम।

३ विदेह नगरी, जनकपुरी, मिथिलापुरी। (सभा)

उ०—१ मगध कोसल अंग बंग कलिंग कासी कुरु देस, सोरठ कच्छ विदेह जांगल कुसावरत्त कहेस। भंग सोबीर वैराट मलय सांडिल सूरसेन। वरण पंचाल दसारण कुंणाल देस में चैन। —वृस्त.

उ०—२ मगध मंडल अंग बंग कलिंग कासी [कोसल कुरु] कुसट्ट पंचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह संडिल्ल मलय······। —व. स.

४ विदेहवंशीय राजाओं द्वारा प्रशासित एक लोक समूह जिसे पाण्डु राजा ने दिग्विजय के समय अपने अधीन कर लिया था। इसी विदेह वंश में हयग्रीव व कुलांगार नामक राजा उत्पन्न हुवे थे।

५ मिथिला-निवासी, विदेह देश के नागरिक।

६ देह-परिवर्तन, दूसरी देह।

उ०—इतरौ कहतां तुरत दोनूं भाई गदगद कंठ होय सिलांम करण लागा, फिस पड़िया। देवीदास पण ऊभौ-ऊभौ देखी अर ऊळखिया। देह रौ विदेह होय गयौ पण नांक री टीसी सूं ओळख लियौ। तांहरै देवीदास कह्यौ—आंख्यां आगळ देह री विदेह होय गयौ। ओळखणी आयै नहीं, ताहरां आंख्यां सूं ही सलांम कीवी। —पलक दरियाव री बात

वि.—१ देह-रहित, शरीर-रहित।

२ अचेत, बेहोश, चेतना-रहित।

३ शारिरिक चिंताओं से मुक्त।

४ मरा हुआ, मृत।

विदेहक–सं. पु. [सं.] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

विदेहकुमारी–सं. स्त्री. [सं. विदेहः+कुमारी] राजा जनक की पुत्री सीता।

विदेहधी–सं. स्त्री. [सं. विदेहः+धीता] जनकसुता, जानकी, सीता। (डिं. को.)

विदेहपुर, विदेहपुरी–सं. स्त्री. [सं. विदेहः+पुर या पुरी] जनकपुर, मिथिलापुरी।

विदेहा, विदेही,–सं. स्त्री. [सं.] १ जनकपुरी, मिथिलापुरी।

उ०—विदेही तणैं दिवांण, ईस चाप धरै आंण। तोड़वा अनेक तांण, ऊठिया करै अपांण। —र. रू.

२ जानकी, सीता।

उ०—आली रंग भूमि पै विदेही कौ अनूप रूप, आज अविलोक्यौ देवदृगनैं अलख में। नयन निकाइ सौ जुन्हाइ कै कुरंगमेंन, खंज में 'हमीर' झखकेतु कै न झख में। —हमीरदांन मोतीसर

[सं. विदेहिन्] ३ ब्रह्म।

रू. भे.—बिदेही।

विदेहेस–सं. पु. [सं. विदेह+ईश] राजा जनक।

उ०—अवद्धेस राजेस जांनेस आया, विदेहेस सांम्हैस आंणै वधाया। कुंवारां बिन्है आय जूहार कीधा, लगै प्रीत छाती पिता भीड़ि लीधा। —सू. प्र.

विदैवत–सं. पु.—हरिवीर नामक क्षत्रिय जो अगले जन्म में पिशाच बना क्यों कि वह नास्तिक था।

विदोखणौ, विदोखबौ–क्रि. स.—अवलोकन करना, देखना।

उ०—ओखद दांन देसी कवण, कवण नेणां विदोखियै। हय हय सरीर छूटो नही, रायसिंघ आपरोखियै। —नैणसी

२ देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे.)

उ०—सूरज रौ मूंढौ दीठा बिना जीमण री आखड़ी। मूंहडा सूं किणनैं गाळ काढण री आखड़ी। चारण भाट नै बिना कांम विदोखण री आखड़ी। लुगाइ नै बिना खुंन मारवा री आखड़ी। —रा. सा. सं.

विदोखणहार, हारौ (हारी), विदोखणियौ—वि०।

विदोखिओड़ौ, विदोखियोड़ौ, विदोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विदोखीजणौ, विदोखीजबौ—कर्म वा०।

विदोखियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ।

२ देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विदोखियोड़ी)

विदोगत, विदोगति—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—पछै वरस चवदै रो हुवो जदी राजा रा गुरा रा बेटा नैं परणायो। जठै सारी विदोगत करै नैं बेटां बहुं नैं घरै लै आयो। —राजा रा गुर रा बेटा री बात

विदोसणौ, विदोसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे.)

विदोसणहार, हारौ (हारी), विदोसणियौ—वि०।

विदोसिओड़ौ, विदोसियोड़ौ, विदोस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विदोसीजणौ, विदोसीजबौ—कर्म वा०।

विदोसियोड़ौ—देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विदोसियोड़ी)

विद्द—१ देखो 'विदा' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्ध' (रू. भे.)

उ०—नरांक कोप झल्ल रा, कोटिक्क भीत कांकरां। रजी अरक्क विद्द ऐं, पूरण (मा) कै चंद ऐं। —गु. रू. बं.

विद्दत-सं. पु. [अ. वहदत] अद्वैत-भाव।

उ०—महदी री औलाद सूं आल बहोत है। महदी रै वंश रा पीरजादां कनै महदवियां रा दीन री किताब है। पठांण महदवी विसेस है। कुरांण रा हदीस रा मरा री विद्दत मेटण महदी जनमियौ मह दवी कहै। —बां. दा. ख्यात

विद्दमांन—देखो 'विद्यमांन' (रू. भे.)

विद्दा—देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—सत्तोलं बोलं मुक्खै दक्खै, सेलेवा खत्रं-धोडं। साहिजादै माथै विद्दा हूऔ, हिंदू-पत्ती राठोडं। —गु. रू. बं.

विद्दस-वि.—१ जो कठिनता से सहा जा सकै।

२ देखो 'विदुस' (रू. भे.)

उ०—गुंण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण। वेळ निजर विद्दसां, असह कवि भ्रमर अकारण। —रा. रू.

विद्धंस—देखो 'विध्वंस' (रू. भे.)

विद्धंसण—देखो 'विधूंसण' (रू. भे.)

विद्ध-सं. पु.—१ कलह, झगड़ा।

उ०—'सेख' तजौ दळ समर, रैण वंट कहिक रखावौ। तजै विद्ध कुळ तणौ, मिळौ चित खत मिटावौ। —सू. प्र.

२ युद्ध, समर।

उ०—गया राव राठौड, विद्ध देखै परपूरण। प्रेत सिला भरि पिंड, पीर रिण हूहुइ ऊरण। —गु. रू. बं.

वि. [सं.]—१ बीच में से छेद किया हुआ।

२ जिसमें बाधा पड़ी हो, बाधाग्रस्त।

३ जिसको चोट लगी हो।

४ देखो 'विध' (रू. भे.)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जळद विद्युति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध। पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा. रू.

विद्धि—१ देखो 'विध' (रू. भे.)

उ०—करि अठ जगण बत्रीस कल, वरण वीस चत्र विद्धि। गति इणि मोतीमाळ गुण पणि लखपत्ति प्रसिद्ध। —ल. पिं.

२ देखो 'विधि' (रू. भे.)

विद्यमांन-वि. [सं. विद्यमान] उपस्थित, मौजूद।

उ०—१ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगि जीत सरव विद्या जिनै। विजयहरख विद्यमांन सिस्य तिनकै सही, परिहां कवि धरमसी उपगारै दश क्रिया कही। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ कल्यांणमल पुत्र महाराजधिराज स्रीरायसिंघजी विद्यमांन, तत्पट्टाभिसेक महाराकुमार चिरंजीवी कुंवर'स्रीदळपतजी विजयराज्यै तत्स्यात्मज सभात्र'गारहार कुंवर स्रीउदयसिंघ, कुंवर स्रीसबळसिंघ, कुंवर तुळछीदास सहित सरवे चिरंजीयात्। —द. वि.

रू. भे.—बिदमांन, विदमांन, विद्दमांन।

विद्यमांनता-सं. स्त्री. [सं. विद्यमानता] विद्यमान होने का भाव, उपस्थिति, मौजूदगी।

विद्य-सं. पु—१ महर्षि विश्वामित्र के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार, २ देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—द्रुपदी नु नचावणहार, ए वृहन्नट कलासिणगार। अस्वबंध एह वीर नकीजइ, अस्व विद्य मधनी हरइ हईह। —सालिसूरि

विद्या-सं. स्त्री. [सं.] १ शिक्षा आदि के द्वारा मिलने वाला ज्ञान।

२ मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि दिलाने वाला ज्ञान।

३ दुर्गा देवी का नामान्तर।

४ दुर्गा देवी का मंत्र।

५ सीता की एक सखी का नाम।

६ वैदिक साहित्यानुसार तीन वेदों के ज्ञान का एक देवता।

७ चौदह की संख्या।

८ इल्म, हुनर, कला।

उ०—च्यारूं सिरदार उण सूं धीजग्या हा। पूछ्यौ, केस गुरड़ण तौ थां रौ पीढ्यां रौ अेलम, पछै उठै कांई नवी विद्या सीखण सारू गियौ। ऊंवां पाचणा सूं मूंडण रौ सीखनै आयौ दीसै।

—फुलवाड़ी

८ जादू, मंत्र।

उ०—१ हिवै थे राज भली भांत राखीया। ठांम ठांम आपो आप री खिजमत मैं सावधान रह्या। धरती रजपूतां नुं भळाई छै। म्हां मैं विद्या छै म्है खबरि करि आवां। लोकां कह्यौ भलां, म्है वांसली जाबता करिस्यां उवे बिन्है सांवळ्यां हुइ नै उडीया उड़त्यां उड़त्यां ऊवै गांम आया जेथ स्यांमसुंदर परणीज नै रह्यो तौ, तेथ तीयै घर ऊपरि आय बैठ्यां। —स्यांमसुंदर री वात

उ०—२ जंतर-मंतर टांणा टूंणा, कांमण टूंमण जांणै। वीर मूठ विद्या बोहतेरी, आतम देव अजांणै। —अनुभववांणी

९ किसी विशेष व गम्भीर विषय का विभाग या शाखा।

१० किसी विषय का व्यवस्थि ज्ञान।

११ व्यापार या विशेष कार्य को संचालन करने का ज्ञान ।

१२ आर्य छन्द का भेद विशेष, जिसमें २३ गुरु और ११ लघु अर्थात ३४ वर्ण या ५७ मात्राऐं होती हैं ।

१३ निसांणी छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें प्रत्येक चरण में ३ गुरु और १७ लघु अर्थात २० वर्ण या २३ मात्राऐं होती हैं।

उ०—कीला, लीला, थिरा, कुंआरी, वीणा, रंगी, चंगी, वारि। विद्या, माळा, बाळा, बांम, नीसांणी रा बारा नांम । —पिं. प्र.

रू. भे.—बिद्या, विज्जा, विदिया, विदीया, विधा, विध्या ।

१४ देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीकैजी वा कांधळजी मुजरौ कर जोधपुर सूं विद्या हुवण री त्यारी करी । तारां मंडळैजी अरु वीदैजी वा कांमदारां आय रावजी नूं कयौ, "महरबांन, म्हारै तौ आपरी ठौड़ कंवर वीकौ है, सू म्है तौ वीकै सागै रहस्यां । —द. दा.

उ०—२ गांव ४१ वरसळपुर लारै रया । गंव ८४ वीकूंपुर लारै राखिया । पीछै यां च्यारांई ठाकरां नूं सीख रा सिरपाव देयनै विद्या कीया । च्यार घोड़ा दिया । —द. दा.

उ०—३ वडारण उदास सी जाय भीतर भरमल नुं कह्यौ, जो प्रोहित अरज कराई छै-हलांणी कोई करै नहीं । मनै विद्या हुई छै, सो कागद लिखावज्यौ । इत री सुण भरमल अति उदास हुई । —कुंवरसी सांखला री वारता

विद्यागाथा—देखो 'विद्या' (१२)

विद्यागृह–सं. पु. [सं. विद्या+गृह] विद्या पढ़ाने का स्थान, पाठशाला ।

विद्याचंड–सं. पु. [सं. विद्याचण्ड] सुदरिद्र नामक ब्राह्मण के एक पुत्र का नाम ।

विद्याचारण–सं. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों में से दसवीं लब्धी का नाम ।

उ०—१ जिण लबधि प्रभावै उडी जाय अकास, तै जंघा **विद्याचारण** लबधि प्रकास । जसु वचन सरापै खिण में खेरु थाय, ए लब्धि इग्यारमीं आसी विखय कहाय । —वृन्त.

उ०—२······संभिन्न स्रोतौ लब्धि, जंघाचारण **विद्याचारण** लब्धि अक्षीणमहांणसी लब्धि, क्षीरास्रव लब्धि, मध्वास्रव लब्धि, जीव-बुद्धि, कोस्टबुद्धि, पादांनुसारिणी लब्धि । —व. स.

विद्याता—देखो 'विधाता' (रू. भे)

विद्यातानाथ—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०— वस सपतास छब गात दीठां वणै, बयांनै जगत गज लाख वातां । अरोहक दुवौ भाराथ नीली ऊडंड, हद घड़ै **विद्यातानाथ** हाथां । —माधौसिंह सिसोदिया रो गीत

विद्यातीरथ–सं. पु. [सं.] वह प्राचीन तीर्थस्थान जहां स्नान करने से विद्या की प्राप्ति होती है ।

विद्यादांन–सं. पु. [सं. विद्यादान] विद्या पढ़ाने का कार्य ।

विद्यादाता–सं. पु. [सं. विद्यादातृ] विद्या पढ़ाने वाला, शिक्षक ।

विद्यादेवी–सं. स्त्री. [सं.] १ सरस्वती ।

२ सोलह जिन देवियों में से एक । (जैन)

विद्याधन–सं. पु. [सं.] १ विद्या रूपी धन ।

२ अपनी विद्या द्वारा उपार्जित धन ।

विद्याधर–सं. पु. [सं.] १ एक देवयोनि विशेष । (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ जिण सभा रै मांहै ब्रह्मादिक सिवादिक इंद्रादिक आद तेंतीस क्रोड देवता इठ्यासी हजार रिख **विद्याधर** गंध्रप जक्ष आद देस देस रा राजा बैठा है तिण बखत स्रीरघुनाथजी लिखमणजी रा वखांण स्रीमुख सूं किया । —र. रू.

उ०—२ धरत ध्यांन चारन **विद्याधर**, करत गांन गुन अप्सर किन्नर । गुह्यक यक्ष रक्ष गंधरबह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरवह । —मे. म.

२ कवि, पंडित । (अ. मा.)

उ०—१ **विद्याधर** वड वखतावरु, महियल मैं हो महिमा महिमाय । राउ रांणा मोटा राजीया, पुहवीपति हो लागै जसु पाय । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ गुण गजबंध तणा कब गावै, दुरस परायण श्री दरसावै । आस धरै **विद्याधर** आया, कवि सुज हसतीबंध कहाया । —रा. रू.

उ०—३ दांन कै प्रमांण दुहुँ राजा नं कै पांण, मेघ कै मंडांण कहा सातूं मैहरांण देस देस के **विद्याधर** सूत मागध बदीजण, आसा धर आए सो भए पूरण । —रा. रू.

३ एक रसौषधि विशेष । (वैद्यक)

४ काम शास्त्रानुसार एक आसन, रति-बन्ध ।

५ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं और कुल बारह अक्षर होते हैं ।

उ०—मगण च्यारि पायै मंही, बूझव आखर बार । सेस कहै रूपक सरस, **विद्याधर** विसतार । —पिं. प्र.

रू. भे.—विज्जाहर, विदिआधर, विद्याधरु, विद्याधारी ।

विद्याधररस–सं. पु. यौ. [सं.] वैद्यक में एक प्रकार का रस विशेष, जो कि पारे, गंधक, तांबे, सोंठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि के सम्मिश्रण से बनता है ।

विद्याधराज—वि.—विद्वान, पंडित, चतुर।

उ०—कांमेति करै सब राज काज, धुन कायथ वड़ **विद्याधराज**। सला रै कांम ग्रेहा सधीर, वुधवत वीरबळ सा वजीर। —पे. रू.

विद्याधरेंद्र—सं. पु. [सं. विद्याधरेन्द्र] जाम्बवान् नामक रींछ, जो सुग्रीव का मंत्री तथा रींछों का राजा था।

वि. वि.—इसे ब्रह्मा का पुत्र मानते हैं तथा भागवतानुसार इसकी पुत्री जाम्बवती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ किया गया था। राम-रावण युद्ध में इसने राम की सहायता की थी।

विद्याधरेसुर, विद्याधरेस्वर—सं. पु. [सं. विद्याधर+ईश्वर] शिव की एक मूर्ति का नाम। (पुराण)

विद्याधरु—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.)

उ०—**विद्याधरु** वनि कुणिहिं एकु मेल्हिउ छइ बांधी। छोडिउ पंडुकुमारि पासि तसु मुद्रा लाधी। —सालिभद्र सूरि

विद्याधारी—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.)

विद्याधिदेवता—सं. स्त्री. [सं.] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधीस—सं. पु. [सं. विद्याधीश] सौराष्ट्र नरेश के प्रधान का नाम।

विद्यानुवाद—सं. स्त्री. [सं.] ७२ कलाओं में से एक।

विद्यापति—सं. पु.—१ गुरु, शिक्षक।

विद्यापात्र—वि.—विद्वान, पण्डित।

उ०—१ राणा रौ पुरोहित पालीवाळ १ नै सिवड़ पुरोहित अठी सूं और ४ ब्राह्मण जूना **विद्यापात्र** वेद पढै छै। लागवाग दीजै छै। —राव रिणमल री बात

उ०—२ ......पंचोली डवगर बाबर फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया भोई कंदोई देसाली वलाली गोली गवाल पसूयाल राजपात्र **विद्यापात्र** विनोदपात्र। —व. स.

विद्यापुरी—सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ; गुडीआं, सणीआं, कस्तूरीआं,......चंपकदुर्गीआं, **विद्यापुरीआ**, देकापाटकीआं, कास्मीरीआं, धूमराई, खीरोक...... —व. स.

विद्यापीठ—सं. पु.[सं.] १ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र।

२ महाविद्यालय।

विद्यामंदिर—सं. पु. [सं.] विद्यालय, पाठशाला।

विद्यामय—वि.—विद्वान, पंडित।

विद्यामहेसुर, विद्यामहेस्वर—सं. पु. [सं. विद्यामहेश्वर] शिव, महादेव।

विद्यारंभ—सं. पु. [सं. विद्यारम्भ] विद्या पढ़ाना प्रारम्भ करने के पूर्व किया जाने वाला एक प्रकार का संस्कार।

विद्याराज—सं. पु. [सं.] भगवान विष्णु की मूर्ति।

विद्यारथी—सं. पु. [सं. विद्यार्थिन्] विद्या का अध्ययन करने वाला, शिष्य।

उ०—१ सुखारथी स्वारथी जै स्वमुख दुख प्रारथी वच सदैं, बढै जो **विद्यारथी** विसद परमारथी वच वदै। प्रचंड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमड प्रद विभौ, वितड प्रोदड प्रनत दुख खड प्रद विभौ। —ऊ. का.

उ०—२ सूरजमल लिछमी रा लाडका सेठ फूलचंद रौ एकाएक बेटौ हौ अर म्हारा छाकटा सूं छाकटा **विद्यारथियां** में सूं एक टाळमी रकम। जरूरत सूं ज्यादा हूंसियार। कारण कै चढती जवांनी अर पैसौ पल्लै रांमजी चलावै तौ इज गेलै चलै। —अमर चूंनड़ी

विद्यारासि—सं. पु. [सं. विद्याराशि] शिवलिंग।

विद्यालय—सं. पु [सं.] वह स्थान जहां पर विद्या पढ़ाई जाती है, पाठशाला।

विद्यावांन—वि. [सं. विद्यवान्] विद्वान, पंडित।

उ०—१ महाराज सामोरां री जात सूं ऊदावत हुवा। महेसदास री भतीजौ हेमौ गणेसदास रौ बेटौ जोबनेर जाळपादेवी री क्रिपा सूं **विद्यावांन** हुवौ। भाखा- चत्र-रूपग महाराज रौ वणायौ। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ तद उण री लुगाई कयौ पदमसिंघजी जिसा हमार री वखत मैं दातार अर आपां भूखा मरां। तद गोगादांन लुगाई नैं कयौ के मा'राज तौ **विद्यावांन** नूं देवै है सू हूं तौ भणियौ नहीं। —द. दा.

विद्याविलास—वि.—विद्यारसिक।

उ०—**विद्याविलास** नरिंद पवाडउ, हीयडाभितारि जांणी। अतराय विणु पुण्य करउ, तुम्हि भाव घणेरउ आंणी। —हीराणंदसूरि

विद्यावेता—वि. [सं. विद्या+वेता] विद्वान, पण्डित।

उ०—निंदा नेता री भवभव में भूंडी, **विद्यावेता** बिण अवगत गत ऊंडी। वसुधा बीजांकुर बिध बिध बिसतारै, न्याईसुर आसुर बिध बिध निसतारै। —ऊ. का.

विद्याव्रत—सं. पु. [सं.] १ विद्या अध्ययन के उद्देश्य से, गुरु के घर रह कर, किया जाने वाला व्रत या तपस्या।

२ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—यह १२ महीने तक प्रत्येक शुक्ल पक्ष की एकम को किया जाता है और इस दिन गौ-दान भी किया जाता है। इसके

बाद १२ वर्ष तक अध्ययन किया जाता है। इस व्रत को करने से महाविद्वान बन जाता है।

विद्यासंजीवन–सं. पु. [सं. विद्या+सञ्जीवन] दैत्य-गुरु, शुक्र। (अ. मा.)

विद्यासिद्धि, विद्यासिद्धी–सं. स्त्री. [सं.] विद्या का निष्पादन करने की क्रिया।

उ०—बहुया सांभलि बांभणु भणइ, ए विवहारु नयरि अम्ह तणी। **विद्यासिद्धी** राखसु हूउ, बकनांमि छइ जम नउ दूउ। —सालिभद्र सूरि

विद्युजिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे.)

विद्युजिव्हा—देखो विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युज्जिव्ह–सं. पु. [सं.] १ खशा राक्षसी का पुत्र और रावण की बहन सुर्पणखा का पति जो पूर्वजन्म में कालकेंद्र नामक दानव था और राम के द्वारा मारा गया था।

२ रावण का एक प्रधान, जिसने अपनी माया-जाल से राम का टूटा हुआ मस्तक व धनुष सीता के सामने प्रस्तुत कर रावण को पति स्वीकार करने का अनुरोध किया।

३ एक यक्ष का नाम।

४ महातल नामक पाताललोक में स्थित अर्वकतलम् नामक नगर का निवासी एक राक्षस जो विश्रवस् व वाका के पुत्रों में से एक था।

५ भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का साथी एक राक्षस जिसका वध दुर्योधन ने किया था। मतान्तर से यह घटोत्कच का पुत्र था।

६ विद्युत के समान जिव्हा वाले, अमृत की रक्षा करने वाले, दो सर्प।

रू. भे.—विद्युजिव्ह, विद्युतजिव्ह, विद्युतज्जिव्ह, विद्युदिजव्ह, विद्युत्जिव्ह।

विद्युज्जिव्हा–सं. स्त्री. [सं.] १ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

रू. भे.—विद्युजिव्हा, विद्युतज्जिव्हा, विद्युत्जिव्हा, विद्युदिजव्ह,

विद्युच्छत्रु–सं. पु.—मार्गशीर्ष माह में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक राक्षस।

विद्युत–सं. स्त्री. [सं. विद्युत्] १ बिजली।

उ०—१ वारद **विद्युत** वरण, पीत अरु धरण नीलपट। तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट। —र. रू.

उ०—२ आसन स्यंध घटा तन स्यांम, पटंबर पीत सु **विद्युत** है। चाप सिलीमुख पांन विमोह सु, बांम विभाग सिया जुत है। —र. ज. प्र.

२ एक प्रकार की वीणा।

३ वज्र।

४ सहिष्णु नामक शिवावतार का एक शिष्य।

५ यातुधान नामक राक्षस का पुत्र व रसन नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

६ एक छंद विशेष, जिसमें दो नगण, दो तगण व अन्त में एक गुरु होता है तथा सात व छः वर्णों पर यति होती है।

वि. वि.—इसको चंद्रिका, उत्पलिनी, व कुटिलगति भी कहते हैं।

वि.—जिसमें बहुत अधिक दीप्ति हो।

रू. भे.—विदत, विदुत, विदुति, विद्युता, विद्योत, विद्योता, विद्वति, विधुत।

विद्युतकुमार–सं. पु.—दस भुवनपतियों में से एक भुवनपति। (जैन)

वि. वि.—इनके शरीर का वर्ण लाल और वस्त्र का वर्ण हरा तथा मुकट का चिन्ह वज्र का होता है।

विद्युतकेस—देखो 'विद्युत्केस' (रू. भे.)

विद्युतजिव्ह, विद्युतज्जिव्ह—'देखो विद्युज्जिव्ह' (रू. भे.)

विद्युतजिव्हा, विद्युतज्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युतपताक—देखो 'विद्युत्पताक' (रू. भे.)

विद्युतपरणा—देखो 'विद्युत्परणा' (रू. भे.)

विद्युतप्रभ—देखो 'विद्युत्प्रभ' (रू. भे.)

विद्युतप्रभा—देखो 'विद्युत्प्रभा' (रू. भे.)

विद्युतलता—देखो 'विद्युत्लता' (रू. भे.)

विद्युता–सं. स्त्री. [सं.] १ कुबेर की सभा में नृत्य करने वाली एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनि के स्वागत समारोह अवसर पर नृत्य किया था।

२ देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू. भे.—विद्योता।

विद्युताक्ष–सं पु. [सं.] कुमार कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

विद्युति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (नां. मा.)

विद्युत्केस–सं. पु. [सं. विद्युत्केश] १ हेति नामक राक्षस जो मयासुर की पुत्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

वि. वि.—सन्ध्या की सालकटंकटा इसकी पत्नी थी। इससे उत्पन्न गर्भ मंदर-पर्वत पर छोड़ दिया गया था जिसका पालन-पोषण शिव ने किया था। कहीं २ इसकी पत्नी का नाम पौलोमी भी मिलता है।

२ सुकेशी नामक राक्षस का पिता, एक राक्षस राजा।

रू. भे.—विद्युतकेस।

विद्युत्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे.)

विद्युत्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युत्ज्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे.)

विद्युत्ज्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युत्पताक–सं. पु. [सं.] प्रलय-काल के सात मेघों में से एक मेघ का नाम।

रू. भे.—विद्युतपताक।

विद्युत्परणा–सं. स्त्री. [सं. विद्युत्पर्णा] कश्यप ऋषि व प्राधा के गर्भ से उत्पन्न एक अप्सरा, जिसने अर्जुन के जन्ममहोत्सव पर नृत्य किया था।

रू. भे.—विद्युतपरणा।

विद्युत्पात–सं. पु. [सं.] बज्रपात होने की क्रिया, बिजली गिरने की क्रिया।

विद्युत्प्रभ–सं.पु. [सं.] १ एक दानव, जिसे रुद्रदेव से वरदान स्वरूप,एक वर्ष तक तीनों लोकों का आधिपत्य, शिव का नित्यपार्षदपद, एक करोड़ पुत्र एवं कुशद्वीप का राज्य आदि मिले थे।

२ 'पापमोचन' एवं "सूक्ष्म-धर्म" के सम्बन्ध में इन्द्र से चर्चा करने वाला एक ऋषि।

रू. भे.—विद्युतप्रभ।

विद्युत्प्रभा–सं. स्त्री. [सं.] १ उत्तर दिशा में रहने वाली दस अप्सराओं का गण।

२ दैत्यराज बलि की एक पोती का नाम।

रू. भे.—विद्युतप्रभा।

विद्युत्प्रिय–सं. पु. [सं.] १ कांसा नामक धातु।

२ उक्त धातु का बना कोई बर्तन।

वि. वि.—उक्त कांसा या उक्त धातु से बना हुआ कोई बर्तन बीजली को अपनी ओर जल्दी खींचता है।

विद्युत्माळा—देखो 'विद्युन्माळा' (रू. भे.)

विद्युत्माळी—देखो 'विद्युन्माळी' (रू. भे.)

विद्युत्लता–सं. स्त्री. [सं.] बिजली की क्रौंध या चमक।

रू. भे.—विद्युतलता।

विद्युदगौरी–सं. स्त्री. [सं. विद्युद्गौरी] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युदध्वज–सं. पु. [सं. विद्युद्ध्वज] एक असुर का नाम।

विद्युदक्ष–सं. पु. [सं] स्कन्द का एक सैनिक।

विद्युदाक्ष–सं. पु. [सं.] एक राक्षस का नाम। (पुराण)

विद्युद्‌द्स्ट्र–सं. पु. [सं. विद्युद्‌द्ंष्ट्र] राम-रावण युद्ध में राम की सेना का एक वानर।

विद्युद्रुप, विद्युद्रूप–सं. पु. [सं. विद्युद्रूप] १ लंका का एक राक्षस।

२ कुबेर का सेवक, एक यक्ष।

वि. वि.—मेनका की पुत्री मदनिका इसकी पत्नी थी। यह एक बार अपनी पत्नी के साथ कैलास पर्वत पर मद्यपान कर रहा था। वहां कंक नामक गरुड़ वंशीय पक्षी से इसका झगड़ा हुआ और इसने उसे मार दिया। कंक के भाई कंदर ने आकर इससे युद्ध किया और इसका वध किया। इसके वध कर दिये जाने के कारण इसकी पत्नी ने कंदर के साथ विवाह कर लिया।

विद्युद्वरचस–सं. पु. [सं. विद्युद्वर्चस्] एक सनातन विश्वदेव।

विद्युन्माळ–सं. पु.—राम-रावण युद्ध के समय राम के पक्ष का एक बन्दर।

विद्युन्माळा–सं. स्त्री. [सं.] १ एक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में आठ-आठ गुरु वर्ण अथवा दो मगण और दो गुरु होते हैं तथा चार-चार वर्णों पर यति होती है।

२ बिजली की क्रौन्ध या चमक।

रू. भे.—बिज्जूमाळा, बीजूमाळा, वादूमाळा, विद्युत्माळा।

विद्युन्माळि, विद्युन्माळी–सं. पु. [सं. विद्युन्मालिन्] १ तारकासुर राक्षस के तीन पुत्रों में से मझला पुत्र। (पुराण)

वि. वि.—इसके अन्य दोनों भाईयों का नाम ताराक्ष एवम् कमलाक्ष था। इसने भगवान् शंकर की आराधना कर एक सोने का विमान प्राप्त किया था जिस पर चढ़ कर यह रोजाना सूर्य के पीछे-पीछे घूमता रहता था। इसलिए उस विमान में कभी अन्धेरा नहीं होता था। सूर्य ने उस विमान को अपने तेज से गला दिया। इसने धर्म के पुत्र सुषेण से भी युद्ध किया था।

इसने अपने दोनों भाइयों के साथ ब्रह्मा को तपस्या कर सन्तुष्ट किया और यह वर प्राप्त किया कि सोने, चांदी व लोहे के तीन नगर में हम तीनों एक बार पास-पास और हजार साल अलग-अलग रहेंगे तथा हमारा वध उसी समय किया जा सकेगा जब कि हम तीनों पास-पास हों। मगर वध के लिए इन्होंने मांगा कि हम तीनों का एक साथ वध एक ही बार में हो। इस वर प्राप्ति के बाद इन्होंने देवताओं व मनुष्कों को बहुत सताया। इस लिए देवताओं ने शिव की स्तुति की और इनका वध करने हेतु कहा। शिव ने अपने त्रिशूल से इनके तीनों नगरों को छिद्रित कर दिया और विष्णु बांण, जिसकी नोक पर अग्नि और पीछे वायु थी और मन्दर पर्वत धनुष से, जब ये तीनों एक साथ थे, इनके नगरों सहित इन्हें भस्म कर दिया।

२ राम-रावण युद्ध में रावण-पक्षीय राक्षस जिसे राम-पक्षीय सुषेण नामक वानर ने मारा था।

३ एक राजा (प्राचीन)

४ तारका-मय युद्ध में मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पार्षद नन्दिन के द्वारा हुआ था।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल में रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था।

रू. भे.-विद्युत्माळी, विजमाळ, विजमाळा, विजमाळि, विजमाळी।

विद्योत-सं. पु [सं.] १ धर्मऋषि एवं दक्षकन्या लंबा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि।

२ एक अप्सरा का नाम।

३ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

विद्योतन-सं. पु. [सं.] सूर्य्य, सूरज। (नां. मा.)

विद्योता—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्युता' (रू. भे.)

विद्योपरिचर-सं. पु. [सं.] वायु के अनुसार, कृत नामक वसु का पुत्र।

विद्रधि, विद्रधी-सं. पु [सं. विद्रधिः] १ एक प्रकार का फोड़ा।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घातक फोड़ा। (अमरत)

विद्रभ—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

विद्रम—देखो 'विद्रुम' (रू. भे.)

उ०—१ नासिका सुक चंच सरिखी, मुगतफळ संजोति। अहिर **विद्रम** ओपमां, जेहा डसण हीरा जोति। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ गति गयंद, जंघ केळिग्रभ केहरि जिम कटि लंक। हीर डसण, **विद्रम** अधर, मारू-भ्रकुटि मयंक। —ढो. मा.

उ०—३ (जांणें) मोती लड़ पोई धरचारें, अधर **विद्रम** विचिदंत रे। चमकें चूनी सारिखा रे, दाड़िम कूलीय दीपंत रे।—प. च. चौ.

विद्रमांन—देखो 'विद्यमांन' (रू. भे.)

विद्रमी—देखो 'विद्रुमी' (रू. भे.)

विद्रव—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

उ०—मिळें कोडि तेत्रीस सुर भीम रै मांडहो, अधिकि आंणां कनां अधकि ओछाह। जांनि उग्रसेन बळिभद्र जिसा जांनिया, **विद्रवां** तणो घर हुओ वीमाह। —पी. ग्रं.

विद्रवण-वि.—देने वाला।

उ०—अपणी खाटी संपति जगत कूं खुलावै, लख लहण सवालख **विद्रवण** का विरद बुलावै। वडै जंगूं में विरद बोल लोह बाहूं कौं जोम चढि लड़ावै। आप सबसैं आगूं वीजूजळ वांहै। —सू. प्र.

विद्रवणौ, विद्रवबौ-क्रि. स.—१ दान देना, धन लुटाना।

उ०—उंदर दर खण मरै पैस भोगवै भुयंगह, हल वहि मरै वहिल्ल हरी जव चरै तुरंगह। सूंब धन्न संच मरै वीर **विद्रवै** विवहं पर, पंडित पढ गुण मरै मूढ भूच रायांहर। —नैणसी

२ बांटना, देना।

उ०—जोगी तेल माहै पडीयौ। सोनै रौ पोरसौ हुवौ। हिवै ईयां पोरसौ घर मैं आंणि राखियौ। सोनौ वेचीजै। खाईजै **वीद्रवीजै**। हिवै दारु काढीजै। भठचां राति दिन तपत्यां रहै। —देवजी बगड़ावतां री वात

क्रि. अ.—३ द्रविभूत होना।

४ दौड़ना, भगना।

विद्रवणहार, हारौ (हारी), विद्रवणियौ—वि०।

विद्रविओड़ौ, विद्रवियोड़ौ, विद्रव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विद्रवीजणौ, विद्रवीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विद्रवियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ दान दिया हुआ, धन लुटाया हुआ. २ बांटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुवा हुआ. ४ दौड़ा हुआ, भागा हुआ।

(स्त्री. विद्रवियोड़ी)

विद्रावण-सं. पु.—कश्यप एवं दनु के पुत्रों में एक।

विद्रावी-सं. पु. [सं. विद्राविन्] १ भागने वाला।

२ फाड़ने वाला।

विद्रुत-सं. पु.—ययाति वंशीय एक राजा।

विद्रुम-सं. पु. [सं. विद्रुमः] १ नव रत्नों में से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल। (अ. मा.)

उ०—१ पाका बिंब मधु समा रे, ओपित **विद्रुम** जांण रे। मामोल्यां जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खांण रे। —प. च. चौ.

उ०—२ फिटक-रयण मणि **विद्रुम** हिंगुल वलि हरियाल, मणसिल पारौ सुवरण आदि धातु नीहाल। सेढी बन्नी अरणोटौ पलेवौ पाखांण, भोडल तुरी ओस भूमि पाहण जे खांण। —वृस्त.

२ मूंगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष।

३ कोंपल।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

रू. भे.—विद्रम।

विद्रुमलता-सं. स्त्री. [सं. विद्रुमः+लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य।

२ मूंगा।

विद्रुमाभा-सं. स्त्री. [सं.] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी।

२ ज्ञान रूपी देवी।

विद्रुमी-वि.—१ मूंगे का, प्रवाल का।

२ लाल रंग का।

रू. भे.—विद्रमी, विद्रुमी, विद्रमी ।

विद्रोह–स. पु. [सं.] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है।

उ०—वसू प्रचंड दंडतें प्रचंड दंडतें वहैं, वितंड चंड दंड दें अदंड छंडते वहै। विमोह मोह मोह में विद्रोह द्रोहि पें बढे, क्रतांत भांत कोह मैं कुकोह कोहि कौ कढें। —ऊ. का.

२ वह आचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जाता है।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव।

रू. भे.—विदरोह।

विद्रोही–वि.—१ विद्रोह से सम्बन्धित।

२ विद्रोह करने वाला।

रू. भे.—विदरोही।

विद्वता–सं. स्त्री. [सं.] १ विद्वान या पंडित होने का भाव।

२ जानकारी, ज्ञान।

रू. भे.—विदवता, विद्वत्ता।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तासु, प्रति नवळ जळद विद्वति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा. रू

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू. भे.)

विद्वस–वि. [सं. विद्वस] १ पंडित, विद्वान।

२ कवि।

३ चतुर, होशियार।

विद्वान, विद्वांस–सं. पु. [सं. विद्वान, विद्वस] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला।

२ बहुत अधिक विद्या पढ़ा हुआ, सर्वज्ञ।

उ०—······छपंन लिपि तणी अलवि करइ, पांत्रीस महाकाव्य तणां सुभासित भणइं, स्वदरसन परदरसन तणा भाव प्रकासइ, आगमारथ ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्स्यायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुरवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नसागर करचालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वांस। —व. स.

३ पंडित।

उ०—टाबर आगें नीं तौ मोट्यार रै डील रौ करार कांम आवै, नीं किणी चकवा राजा री जोर हाले अर नीं किणी विद्वांन री समझ के अकल ई कांम देवै। अबूझ बाळक सूं दुनियां री कोई ताकत जीत नीं सकै अर जै कोई अकलहीण उण सूं जीतणरौ थोथौ गुमांन ई करै तो हारणिया नै आपरी हार री अंगै ई वेरौ नीं व्है। —फुलवाड़ी

रू. भे.—विदमांन, विदमांन, विदवांन।

विद्विस–सं. पु. [सं. विद्विषः, विद्विष] शत्रु, रिपु।

विद्वेस–सं. पु. [सं. विद्वेष] शत्रुता, दुश्मनी, वैर।

रू. भे.—विदवेस।

विद्वेसक–सं. पु. [सं. विद्वेषक] शत्रुता करने वाला, शत्रु।

रू. भे.—विदवेसक।

विद्वेसणी, विद्वेसिणी–सं. स्त्री. [सं. विद्वेषिणी] दुःसह नामक यक्ष की निर्माष्टि के गर्भ से उत्पन्न आठवीं और अन्तिम कन्या। (पौराणिक)

वि.—विद्वेस करने वाली या रखने वाली।

रू. भे.—विदवेसणी, विदवेसिणी।

विद्वेसी–वि. [सं. विद्वेषित्] विद्वेष करने वाला, शत्रु।

रू. भे.—विदवेसी।

विधंस—देखो 'विध्वंस' (रू. भे.)

उ०—जांणौं बादळा माहै वीजड़िआं रा सिला ऊपड़िया पाखरां ऊपरै सारवांरा फूलवारां वाजी सु ठणणणण जांणै परभात री झालर ठंणकी, नर वगतर विधंस हुआ। —रा. सा. सं.

विधंसक—देखो 'विध्वंसक' (रू. भे.)

विधंसण–वि.—नाश होने वाला, नाशवान्।

उ०—सड़ण पड़ण विधंसण देहणी, तिण री किसड़ी रे आस। खिण एक मांही रे जासी विगड़ी, जिम पांणी मांहै पतास। —जयवांणी

२ देखो 'विधूंसण' (रू. भे.)

विधंसणौ–वि.— नाश करने वामा, विध्वंस करने वाला।

विधंसणौ, विधंसबौ—देखो 'विधूंमणौ, विधूंसबौ' (रू. भे.)

विधंसणहार, हारौ (हारी), विधंसणियौ—वि०।

विधंसिओड़ौ, विधंसियोड़ौ, विधंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विधंसीजणौ, विधंसीजबौ—कर्म वा०।

विधंसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री विधंसियोड़ी)

विध–सं. पु. [सं. विधः] १ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—१ अटकाई नह आय बळ, आई जरा अगूढ। आसी जद तू अटकसी, मांन किसी विध मूढ। —बां. दा.

उ०—२ भड़ां वात संभळै, एण विध हूंत अकारां। बहसि 'गजण' बोलियौ, वधै पौरस जिण वारां। —सू. प्र.

उ०—३ अगसत जेम नेम बळ ओडां, छात दिली दळ जळ विण छोडां। 'लखौ' 'महेस' कहै विध लाखां, रवद अबंध बंध जिम राखां। —रा. रू.

उ०—४ असपत राव ओलीभियौ, विध जिण वांकम होइ। कुमति पग ऊपर कहै, कहौ सुमंती कोइ। —गु. रू. बं.

२ ढंग, तरीका, प्रकार।

उ०—१ नारि न कौ पुरखा, चतर न मूरखा, वेद न च्यारि वचंदा है। अणभै पद बोल्या, अंतर खोल्या, विध विरळा बूझंदा है। —अनुभववांणी

उ०—२ वार विकरार सिरदार विध वाहियौ, समर भर भार घर भार सूरै। सार सेलार ऊभार भंभार सर, पार चौधार कर पार पूरै। —नाथौ सांदू

उ०—३ हिवै ईयै एक कोट करायौ। साथ सरब लोक हुता, सु अठै ही ज रहचा। ईयै री साहिबी हुई। सांढ्यां रा वरग कीया। सु सांढचां रै प्रिथीराज रौ दाग दीयौ। सांढचां रा वरग घणा हुवा इयै विध एथ रहै। —जांगळू री वात

३ वृतान्त, हकीकत।

उ०—१ आखी 'गौदै' 'इंद्र' सूं, विध सारी वयणौर। तुरत विचारी कूच री, सोच न धारी और। —रा. रू.

उ०—२ सो वाचिया सुणी विध सारी, भाई लिखी अवस्था भारी। साह मुगळ पूछै सरसावै, अवर 'सवाई' वेध उठावै। —रा. रू.

४ कारण।

उ०—सुणै हास्य विध कहै नरेसुर, गनिका ग्रेह आसण जोगेसुर। वनखंड गिर भंगर नह वसियौ, हूं औ देख कतूहळ हसियौ। —सू. प्र.

५ शंख। (अ. मा.)

६ समूह, व्यूह। (अ. मा.)

७ देखो 'विधि' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ कहै तांम कमधज, सुणै साहिब छत्रपत्ती। विध विचार धारियौ, सकौ तिण आर सुमत्ती। —रा. रू.

उ०—२ अवनी रोग अनेक, ज्यांरा विध कीना जतन। इण प्रकृति री अेक, रची न ओखद राजिया। —किरपारांम

उ०—३ कवि प्रोहित मत्री प्रधांन, विध मंत्र विचारै। रहौ मात चहुवांण, अरज हत वात उचारै। —रा. रू.

उ०—४ विध रा जांण गाथ रा वीकम, पारिख बांण हाथ रा पाथ। जुध रा भीम खळां रा गंजण, 'नाथ' रा बुध गणनाथ। —आईदांन पाल्हावत

८ देखो विधु' (रू. भे) (अ. मा.)

रू. भे.—बिद्ध, बिध, बिधि, विद, विद्ध, विद्धि।

विधअंक-सं. पु.—देखो 'विधिअंक' (रू. भे.) (अ. मा.)

विधकर—देखो 'विधिकर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

विधचूड़, विधचूड-सं. पु. [सं.-विधाचुण्ट] कपट, धोखा। (अ. मा.)

विधत—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—वप ब्रहंम विधत री सरव वुसुत री तूं गंगा गावतरी। पारबती निमौ हेम री पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी. ग्रं.

विधनयण—देखो 'विधिनयण' (रू. भे.) (क. कु. बो.)

विधना-सं. पु. [सं. विधि] ब्रह्मा, विधाता। (डिं. को.)

उ०—१ नहचै होय निसंक, चित नह कीजै चळ-विचळ। अै विधना रा अंक, राई घटै न राजिया। —किरपारांम

उ०—२ सुंदर बदन नयन अग मांनौ, विधना आप संवारी। मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, तुम जीतै हम हारी। —मीरां

उ०—३ अब तौ जिय ऐसी बनि आई, विधना रची सोइ होय री। अरी जै मेरौ यह लोक जात हैं, वह परलोक जिन जाव री। —मीरां

उ०—४ कै आ पटकी ऊपर पड़गी, कैआ भावी रच्ची रांम। कै आ विधना लेख लिखायौ, कै आ तन्नै जच्ची रांम। —करणीदांन बारहठ

रू. भे.—बिधना।

विधरम—देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

विधरमी—देखो 'विधरम्मी (रू. भे.)

विधरम्म-सं. पु. [सं. विधर्म्म] पराया या दूसरा धर्म।

वि.—१ जो धर्मशास्त्र में निन्दित हो।

२ जिसका कोई धर्म न हो।

रू. भे.—बेधरम, विधरम, विध्रम, विध्रम्म।

विधरम्मी-वि. [सं. विधर्म्मिन्] १ अपने धर्म के विपरीत आचरण करने वाला।

२ पराये धर्म का अनुयायी, धर्मभ्रष्ट।

रू. भे.—विधरमी, विध्रमी, विध्रम्मी।

विधरेख, विधरेखा-सं. स्त्री. [सं. विधि+रेखा] भाग्य में लिखा हुआ लेख, विधाता की रेखा, कर्मरेख।

उ०—पिण भावी अति प्रबळ, सकळ बस प्रांण असेखा। हुअणहार सिध करै, वार न धरै विधरेखा। —रा. रू.

विधवत—देखो 'विधिवत' (रू. भे.)

उ०—१ कहियौ न्रप प्रज भय किण सूं, ज्वाळामुखी न पूजै जिण सूं। भांणउदीप विगत सुण भारी, विधवत सकति पूजि विसतारी।
—सू. प्र.

उ०—२ नाखित्र सूर ससि अर मुनिंद्र, आविया वरुण कुम्मेर इंद्र। विप्र वेद मंत्र विधवत विचार, आहूत वेद सुरमुख अपार।—सू. प्र.

विधवा–सं. स्त्री. [सं] वह स्त्री, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया हो, पतिहीना स्त्री।

उ०—१ वांरी अेक विधवा भूवा अणूंती धनवंती ही। वै उण माथै ठगाई री पासौ फेंकणौ चायौ। अेक भाई मौको देखनै छांनै भूवा रै पाखती गियौ। भूवा री हाजरी में अेक पग रै पांण ऊभौ रै'तौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ उण विधवा बांमणी री गळाई कळजुग रौ धरम निभायां ई आपांरौ जमारौ सुधरैला अर सतजुग रै मरियोड़ा ढोर री पूंछ झालियां धन अर बेटा दोनां सूं हाथ धोणा पड़ैला। —फुलवाड़ी

उ०—३ सयळा मिनख अर बस्ती रौ तूमार जोयां पछै ई म्हैं फगत धन माथै आस गडाय राखी ही। बेटी ! विधवा रौ सासरौ, पीवर, माईत अर भगवांन फगत धन इज है। —फुलवाड़ी

उ०—४ बापड़ी भोळी- डाळी किन्यावां नै कुड़कै में नांख'र वेगीसी विधवा वणा देवै। सुवाग री नीं रडापै री चंवरी चाढै।
—दसदोख

रू. भे.—बधवा, बिदवा, बिधवा।

विधवापण, विधवापणूं, विधवापणौ–सं. पु.—विधवा होने की अवस्था वैधव्य।

उ०—१ आप एकलौ मरनै फकत म्हनै हीज विधवापणौ नहीं देसी घणी जणियां विधवा हुसी तद म्हारौ ही चूड़ौ ले जासी। चूड़ा रौ दूसरौ प्रयोजन लेजावणौ सो हूं सती होवसूं सो चूड़ा सहत साथै ले जासी। —वी. स. टी.

उ०—२ गाढै विधवापण ग्रहूं, हूं न करूं तन हांण। पौंह जिण लाजै अमरपुर. सूरजमल सुरतांण। —पा. प्र.

रू. भे.—बिधवापण, बिधवापणूं, बिधवापणौ।

विधवा-वियां, विधवाविवाह–सं. पु.—पुनर्विवाह।

उ०—"तो कोई परणीजियोड़ी ई परणीजै है क्या ! धरम डूब को जावैं नीं ?" "थोंनै धरम री टांग पूंछ री तौ ठा ई कोयनी, पराया घर ऊनै पांणी-सूं बाळता फिरौ हौ।" "तौ थैं कराय दिया विधवा-वियां ? हूं भी देखूला ?
—वरसगांठ

विधवासरम, विधवास्रम–सं. पु. [सं. विधवा+आश्रम] वह स्थान, जहां विधवा स्त्रियों के पालन-पोषण एवं शिक्षा आदि की व्यवस्था हो।

विधविधांन–क्रि.—विधिपूर्वक, विधिवत्।

उ०—वांणातरां साह नैं परणायौ। जठै सारौ विध-विधांन करतैं सगां डायचौ दीधौ। —साहूकार री वात

विधव्रख–सं. पु. [सं. विधि-वृक्ष या वृक्ष-विधि] पलास नामक वृक्ष।
(अ. मा.)

विधसरवा, विधस्रवा–सं. पु. [सं. वृद्धश्रवस्, वृद्धश्रवा] इन्द्र।
(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

विधांण, विधांन–सं. पु. [सं. विधान] किसी कार्य का आयोजन।

२ कार्य करने की रीति, व्यवस्था व सम्पादन।

३ ढंग, तरीका।

उ०—मालती सेवती केतकी प्रफूलमांन। फूलूं की सोभा असमांन के तारूं का विधांन। केवड़ूं की वाड़ी सिरूं का विकास। नाफरमां हजारा और गुलहूवास। — सू. प्र.

४ तरकीब, उपाय।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा।

उ०—छत्रप्पती उछाह में, धनेस माल ऊद्धमैं। वेदोगतं विधांनयं, दुजां अनेक दांनयं। —सू. प्र.

उ०—२ तपवंत भूप निज धांम तत्र, छज कनक सिंधासण चमर छत्र। दुतिवंत करै सन्नांन दांन, विध राज रीत सास्त्र विधांन।
—सू. प्र.

६ हाथी को मस्ती में लाने हेतु खिलाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

७ धन, सम्पत्ति।

८ पूजा, अर्चन।

उ०—विदा हुए पाधारियौ, पुहकर मुरधर-पत्त। दांन सिनांन विधांन दिन, पुनि मनि इंद्र प्रकृत्त। —रा. रू.

९ आज्ञा, आदेश।

१० किसी देश के सर्वोच्च कानूनों का संग्रह।

११ वाद्य।

१२ रचना, बनावट।

१३ सुख देवों में से एक।

१४ निमय, कानून।

१५ कारण।

उ०—आहार मांहै आवतां हो, जीव इता दिन ज्यांन। कीड़ी तो निरबुद्धि करै, वलि माखी वमन विधांन। —ध. व. ग्रं.

उ०—विन्है पख क्रस्ण सुकल विधांन, विन्है वपु अंग सुदक्खिण वांम। ब्रह्मा दक्षण अंग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।
—रा. वं.

१६ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (ना. द.)

वि.—१ समान, तुल्य।

२ रचनाकर्त्ता, रचयिता।

उ०— म्हैं अवळ सकळ जगती प्रांणी, तूं सबळ सख है सक्तिवांण। म्है दास सदा तेरा स्यांमी, आखै जग रो है तूं विधांन।
—करणीदांन बारहठ

रू. भे.—बिधांन, विध्यांन, विहांण।

विधांनसपतमी, विधांनसप्तमी, विधांनसातम—सं. पु. [सं. विधानसप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी से आरंभ करके अगले वर्ष की पौष शुक्ल सप्तमी तक पूरे एक वर्ष तक किया जाने वाला सूर्यदेव का व्रत विशेष।

विधांनीक—स. पु.— डिंगल गीतों की रचना का ढंग विशेष जिसमें क्रम-क्रम से प्रथम द्वाले के तीन चरण में जो बात कही जाती है उसका स्पष्टीकरण चतुर्थ चरण में किया जाता है।

उ०—तुक तुक में क्रम सो तवै, अवर अवर विध जांण। सझ चौथी तुक नांम सौं, विधांनीक वाखांण। —रा. रू.

विधांसणौ, विधांसबौ—देखो विधूंसणौ, विधूंसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरांत करि नै राजान सिलांमति मांखिरा उकासिआ सूअर भाखरां रा मोढा फाड़ फाडनै निकळिआ छै। सूअरें रातै खून किओ छै। सूरे गुलवाड़ि विधांसिया छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ भूधर तूं भाइयौ भगतां रौ, तूं दातार नहीं डिगतां रौ। ब्रिज रै देस बजाड़ी वांसी, बड़ै भगत कजि वावि विधांसी।
—पी. ग्रं.

उ०—३ वडो वड आरभु ज कुळ भार, धरा सिणगार इसो लख-धीर। वहे सत्र-वाट नमावण नाट, विधांसण थाट सत्रां वर वीर।
—ल. पिं.

उ०—४ विधांसइ रेसइ राकस वंस, कीयौ तै कंस। दहूकंध कियौ घड़ै सुरलोक तणौ सहि घट, वडो कोइ डील नमो वैराट।
—पी. ग्रं.

विधांसणहार, हारौ (हारी), विधांसणियौ—वि०।

विधांसिओड़ौ, विधांसियोड़ौ, विधांस्योड़ौ—भू० का कृ०।

विधांसीजणौ, विधांसीजबौ—कर्म वा०।

विधांसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री॰ विधांसियोड़ी)

विधा—सं. स्त्री. [सं.] १ ढंग, तरीका।

२ तरह, प्रकार, भांति। (सभा)

३ किस्म, जाति।

४ धन, सम्पत्ति।

५ हाथी या घोड़े का चारा।

६ किराया, भाड़ा।

७ मजदूरी।

८ रचना।

उ०—नारी, सोवै हैं अपणै घर, सांई रै साथ सुहांणी है। नारी है विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहांणी है।
—करणीदांन बारहठ

९ देखो 'विद्या' (रू. भे.)

१० देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—अरि साझै हरि पंखां आवै, जोध विधा अकबर छळ जांण। बिहूं चौतीस कुळां क्रम बंधण, भागा भांण-हरै कुळ भांण।
—गोपाळ मीसण

विधातनताका—सं. पु. [सं. विद्योतन+ताका या विद्या+तन+ताका] चन्द्रमा। (डि. को.)

विधाता—वि. [सं. विधातृ] १ रचना करने वाला, सृष्टिकर्त्ता।

उ०—पें'ली परमेसर याद करचौ, 'हैं जगत पिता है जगदीसर। तू अग जग भाग विधाता है, तू ही बाहर तू ही भीतर।
—करणीदांन बारहठ

२ देने वाला, दाता।

उ०—गुर दयाळ दीन गुर दाता, गुर सबहन कै ग्यांन विधाता। गुर हैं दया पाल गुर देवा, या गुर की मिळ करीयै सेवा।
—अनुभववांणी

३ प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला।

सं. पु.—१ ब्रह्मा। (नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ अंजसै कनक भूखण पहर नव अवर, कनक में विधाता त्रकुट कीधी। लहर हिक सरण हित भभीखण रंक लख, दांन गढ लक अणसंक दीधी। —र. ज. प्र.

उ०—२ इण भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारे आभूखण विराजिया छै। जांणै इंद्र-लोक री अपछरा, रूप री रंभा, आसमांन री ऊतरी पड़ी। चित्रांम री पूतळी, विधाता हाथ सूं समारी। —रा. सा. सं.

उ०—३ देवी मनच्छा माइया जग्ग माता, देवी ब्रह्म गोवींद संभु विधाता। देवी सिध्धि रै रूप नव-नाथ साथै, देवी रिध्धि रै रूप धनराज हाथै।
—देवि.

उ०—४ दसकंधर भ्राता बुध कै दाता, वचन विधाता कैवाता। सो नाह सुहाता, परजळ गाता, उरलै, लाता, मुरझाता।
—भगतमाळ

२ विष्णु।

३ शिव, शंकर।

४ कामदेव।

५ विश्वकर्मा।

६ भृगु एवं ख्याति के संसर्ग से उत्पन्न पुत्र।

वि. वि.—इसके दूसरे भाई का नाम धाता था। इन दोनों ने

नियति और आयति नामक मेरु पुत्रियों से विवाह किया था। विधाता व नियति के गर्भ से मृकण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। कमलों में निवास करने वाली विष्णु पत्नी लक्ष्मी इनकी बहिन थी। मतान्तर से विधाता व नियति के गर्भ से प्राण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

७ प्रारब्ध, भाग्य।

८ पंचचित नामक अग्नि का पिता व क्रिया का पति एक आदित्य, जो आषाढ या मार्गशीर्ष मास में प्रकाशित होता है।

सं. स्त्री. [सं. विधातृ] ९ मदिरा, शराब।

१० ब्रह्मा की पत्नी सरस्वतीरूपा।

रू. भे.—बिधाता, वेहा, विद्याता, विद्यातानाथ, विवत, विधातानाथ, विधात्र, विधात्रा, विधात्री, विध्याता वेह, वेहा।

विधातानाथ—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—**विधातानाथ** वरण लेख अवरी वरी, बिया राघव करी अचळ बातां। हार ग्रीवां तरण देख झाला हियै, हार वारंग लियां रही हांतां। —कल्याणसिंह झाला रौ गीत

विधात्र, विधात्रा, विधात्री—२ देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ श्रेणी ख्याति नारद हवउ, उत्तम अवर **विधात्र**। जिहां जिमतु तिहां ऊठतु, भांजी भोजनपात्र। —मा. कां. प्र.

उ०—कुंअरी कारण हीयडइ घरइ, थई ऊपराठी आंसू भरइ। कुंअरी तणउं अंग खळभळइ, लिख्यउं **विधात्रा** तै किम टळइ। —कां. दे. प्र

विधायक-वि. [सं. विधाकः] १ कानून बनाने वाला।

२ व्यवस्था करने वाला।

३ रचना करने वाला, सृष्टि कर्त्ता।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग **विधायक**। सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि.

सं. पु.—विधान सभा का सदस्य।

रू. भे.—वधायक।

विधारा-सं. स्त्री.—दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलने वाली एक प्रकार की लता।

विधि-सं. पु. [सं. विधिः] १ काम करने की रीति, क्रिया या व्यवस्था।

उ०—१ आगळि पित मात रमती अंगणि, कांम विरांम छिपाड़ण काज। लाजवती अंगि एह लाज **विधि**, लाज करंती आवै लाज। —वेलि.

उ०—२ प्रतिदिन होत वेद **विधि** पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्य फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ। —मे. म.

२ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—१ दिओ सेत वरदांन तू, परमेसरि प्रस्ताव। राजांन री रस-कथा, **विधि** कहि बात वणाव। —रा. सा. सं.

उ०—२ दुविधि अन पल त्रिधा, साग पंच मांस धारण। गौ रस जुग **विधि** गिणित, मिस्ट गति ए कवि चारण। —रा. सा. सं.

उ०—३ आप इसी हित चित इकतारी, न्रपती कहौ आंण सुजि नारी। देतां द्रव करतां जुध दावै, आंणी जेण तेणि **विधि** आवै। —सू. प्र.

३ आज्ञा, आदेश।

४ कार्यक्रम, प्रणाली, ढंग, नियम, कायदा।

उ०—१ मिळि मंत्री परधांन मैं, **विधि** दक्खै विच्चार। जळ रखण गढ जोधपुर, कै रक्खौ जोधार। —गु. रू. बं.

उ०—२ तब रुखमणीजी डावै पासै वैसांण्यां। ज्यौं **विधि** छै त्यौं बोल वाचां लै। ज्यौं कही छै त्यौं करि नै विवाह पूरण कीयौ। तिहि वेळां वेद का पठणहारां। मुंहमांगी सु नवही निधि पाई। —वेलि टी.

उ०—**विधि** सहित वधावै वाजित्र वाजै, भिन भिन अभिन बांणि मुख भाखि। करै भगति राजांन क्रिसन री, राजरमणि रूखमिणि ग्रह राखि।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा।

६ ढंग।

उ०—सहिजि उल्लंघइ सुर सरी, नीकन नेडी थाइ। बज्र तणी **विधि** अंगमइ, कुसुम सरीखी काय। —मा. कां. प्र.

७ धार्मिक विधान।

८ भेद, रहस्य।

उ०—ताहरां आ बोली, "न हुं सासरै वहू, नां पीहर बेटी, अय विचाळै ऊभी छूं। ताहरां औ बोलियौ, 'ईयै री जाब कीसूं ? यूं क्यूं ऊभा ? मोनुं थांहरै मन री **विधि** कहौ।" —कांवळौ जोईयौ नै तीडौ खरळ री वात

९ सृष्टि, रचना।

१० सृष्टिकर्त्ता, विधाता, ब्रह्मा। (ह. नां. मा.)

उ०—१ बोल नवाब सरस द्रढ बंधै, सुत पितु हूंत महा छळ संधै। यूं रिम सूरत सूत प्रबंधै, नेम लियौ **विधि** जेम निमंधै। —रा. रू.

उ०—२ जोग नींद बस भये निरंजन, गज्जे असुर पितामह गंजन। आकृति विकट निकट चलि आये, काढि दसन **विधि** ग्रसन धिकाये। —मे. म.

उ०—३ नारी सोवै है अपणै घर, सांई रै साथ सुहांणी है। नारी है विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहांणी है।
—करणीदांन बारहठ

११ भाग्य, प्रारब्ध।
१२ वैद्य, हकीम।
१३ विष्णु का नामान्तर।
१४ विधान, नियम।

उ०—१ उरदेव समरथ एक, उतपात पेख अनेक। असहाय थांन आपार, विधि भरम क्रम विसतार। —रा. रू.

उ०—२ करता अरु अकरता तिरगुण, खंग ब्रह्मा मांई सगुणनिरगुण। विधि निखेध खंगम होई, सब्द ब्रह्म द्रस्टा निज सोई।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ विधि निखेध करम नहिं क्रिया, बुद्धि उगत थकांणी। संत सुखरांम परम प्रकासी, आपी कूं आप पिछांणी।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—४ मयणा कहै कर जोडि नै,भगवत् ! पूछूं तुझ, ऊजमणां नी विधि कह्यौ, समझावीनै मुझ। मुनि कहै सांभळ स्राविका, एह नी विधि छै भुरि,नांम मात्र तुझ नै कहूं,पांमिस सुख भरपूरि।
—स्रीपाल रास

१५ कानून, कायदा।
१६ साहित्य में एक अर्थलंकार।
१७ व्याकरण में किसी को कुछ करने के लिए दी गई आज्ञा का स्वरूप।
१८ पीला।* (डिं. को.)
१९ श्वेत।* (डिं. को.)
२० देखो 'विध' (रू. भे)
२१ देखो 'विधु' (रू. भे.)

रू. भे.—बिद्ध, बिध, बिधि, बिद्धि, ब्रधी, विद्धि, विध्य विह।

विधिअंक-सं. पु. [सं. विधि+अक] प्रारब्ध, भाग्य।
रू. भे.—विधअंक।

विधिकर-सं. पु.—चाकर, नौकर, सेवक। (अ. मा., ह. नां. मा.)
रू. भे.—विधकर।

विधिग, विधिग्य-सं. पु. [सं. विधिज्ञ] शास्त्रोक्त एवं विधि के विधांन को जानने वाला, पंडित। (ह. नां. मा)

विधिनयण-सं. पु. [सं. विधिनयन] सूरज, सूर्य। (ह. नां. मा)
रू. भे. –विधनयण।

विधिपाट-सं. पु. [सं.] मृदंग के चार वर्णों में से एक।
वि. वि.—इसके चारों वर्णों के नाम-पाट, विधिपाट, कूटपाट, और खंडपाट है।

विधिपाठक-सं.पु.[सं.]शास्त्ररीति का पाठ करने वाला या बताने वाला।
उ०—विधिपाठक सुक सारस रस वंछक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार। —वेलि.
२ आधुनिक कानून का अध्ययन करने वाला या कानून बताने वाला, वकील।

विधिपुत्र-सं पु. [सं. विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि।

विधिपुर, विधिपुरी-सं. पु. [सं. विधि+पुरी] ब्रह्मलोक।

विधिपूजा-सं. स्त्री. [सं.] धन प्राप्ति हेतु पौष मास की शुक्ल पक्ष की द्वितिया को की जाने वाली ब्रह्मा की पूजा, नक्त व्रत।

विधिभेद-सं. पु. [सं. विधि+भेद] साहित्य में उपमा-अलंकार का एक दोष विशेष जो उपमेय और उपमान के धर्म, गुण आदि का मेल ठीक नहीं बैठने पर माना जाता है।

विधरांणी, विधिरांनी-सं. स्त्री. [सं. विधिरानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिलोक-सं. पु. [सं. विधि+लोक] ब्रह्मलोक, सत्यलोक।

विधिवत-क्रि. वि. [सं. विधिवत्] उचित पद्धति के अनुसार, विधिपूर्वक।
रू. भे.—विधवित।

विधिवदन-सं. पु [सं.] चार की संख्या।*

विधिवधू-सं. स्त्री. [सं. विधि+वधू] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवाहन-सं. पु. [सं. विधि+वाहनम्] ब्रह्मा की सवारी, हंस।

विधिसार-सं. पु.—बिन्दुसार नामक राजा, जो क्षेत्रज राजा और मतान्तर से क्षत्रौजस् राजा का पुत्र था।

विधी—१ देखो 'विधि' (रू. भे.)
२ देखो 'विधु' (रू. भे.) (अ. मा)

विधुंसणौ, विधुंसबौ—देखो 'विधूंसणौ, विधूंसबौ' (रू. भे.)
विधुंसणहार, हारौ (हारी), विधुंसणियौ—वि०।
विधुंसिओड़ौ, विधुंसियोड़ौ, विधुंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विधुंसीजणौ, विधुंसीजबौ—कर्म वा०।

विधुंसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विधुंसियोड़ी)

विधु-सं. पु [सं.] १ चन्द्र, चन्द्रमा। (नां. मा., ना. डिं. को.)
उ०—१ अमरत दध नह तिम अधर, विधु यिमरत न वखांण। कै जन अजरांमर करण, जस हर यिमरत जांण। —र. ज. प्र.

उ०—२ विधु झळनळ मणि वासं, त्रिय त्रिपुरारि तुभ्यौनम ।
—रांमरासौ

२ ब्रह्मा ।

३ विष्णु ।

४ ब्राह्मण ।

५ एक राक्षस का नाम ।

सं. स्त्री. [सं. वधु] ६ नवविवाहित दुल्हन ।

रू. भे.—विधु, विध, विधि, विधी, विधू ।

विधुक्रांत–सं. पु. [सं.] संगीत का एक ताल ।

विधुत—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (अ. मा.)

विधुतुंद–सं. पु. [सं.] राहु का एक नामान्तर ।

विधुप्रिया–सं. स्त्री. [सं.] चन्द्रमा की स्त्री, रोहिणी ।

विधुम–सं. पु. [सं.] अष्टवसुओं में से एक वसु जो अलंबुसा का पति था ।

विधुर–सं. पु. [सं.] कष्ट, दुख । (अ. मा.)

वि.—१ व्याकुल, दुखी ।

२ वह जिसकी पत्नी का देहान्त हो गया हो ।

रू. भे.—बिधुर।

विधुरा–सं. स्त्री. [सं.] कानों के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि ।

विधुवदनी–सं. स्त्री. यौ. [सं. विधु+वदनी] चंद्रमुखी, सुन्दर-मुख वाली स्त्री ।

विधूंस—देखो 'विध्वंस' (रू. भे)

उ०—१ चावदंतदीह अगां दीह समां जूझ लाग चाळै, नरा ताळै सामध्रमी तणै साचौ नेम । क्रोध वाळै रूप गनीमांण रौ विधूंस कीधौ, 'जोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम । —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०–२ वारधीस-गात जौम गाळिया त्रिकूट वासी, राजचौळ जाळिया तारखी तेज रूंस । कोपंखी कुलेसां इंद्र ढाळिया पहाड़ काळा, वीर 'सिवा' वाळै सत्रां राळिया विधूंस । —हुकमीचंद खिड़ियौ

विधूंसण–सं पु. [सं. विध्वंसनं] नाश, संहार ।

उ०—ज्यां प्रतपाळण हात निज, वहा रुखवाळण आप । कवण विधूंसण कर सकै, तौ जै सरण 'प्रताप' ।
—जैतदांन बारहठ

रू. भे.—बिधूंसण, विधूसण, विद्वंसण, विधंसण, विध्वंसण ।

विधूंसणौ, विधूंसबौ–क्रि. स. [सं. विध्वंसनम्] १ नाश करना, विध्वस करना ।

उ०—१ बासठि हजार फौजा रा भांजणहार । छ खंड खुरसांण रा विधूंसणहार । मैमंत हाथिआं रा मारणहार । पातिसाहां रा विभाड़णहार । पातिसाहां रा पड़िगाहण । —र. वचनिका

उ०—२ सू मब जेठ कळाधर सारी, आयौ रवि ज्यौं किरण अकारी । पंड कोपियौ किनां धार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूंसण । —रा. रू.

२ मारना, संहार करना ।

उ०—१ सारां मौहर दुजौ 'सबळावत', रिण गज घड़ा विधूंसण रावत । सुत 'जालम' दोनूं अड़साळा, 'सूजौ' 'अनौ' 'विनौ' 'सिव' ज्वाळा । —रा. रू.

उ०—२ पातल घड़ पतसाह री, अेम विधूंसी आंण । जांण चढी कर वंदरां, पोथी वेद पुरांण । —महाराज मांनसिंह

उ०—३ ओपम तिकां भमंता अच्छर, पमंगां जांण फेर आई पर । जंग छत्रदळां विधूंसे 'चंद' जुड़ि, महिपुड़ि भार गया अहि फुण मुड़ि । —सू. प्र.

३ तोड़ना, भंग करना ।

उ०—सगै केहर रांम रै, मिळियौ जंगै भीम । 'सबळांणी' सोबां तणी, सार विधूंसे सीम । —रा. रू.

४ लूट-खसोट करना ।

उ०—विधूंस्यौ देस किया सहि चक्कि, कमध्ध न दिट्ठा मेच्छ कटक्कि । महम्मद मारण मोटिममल्ल, ढढोलण ढिल्लिउ अेकम-ढल्ल । —राउ जैतसी रौ रासौ

५ वर्बाद करना, तहस-नहस करना ।

उ०—पांन विधूंस्या रसपियै, सुख पायौ इण डाळ । तुम जळौ'र हम उड चलें, जीणौ कितेक काळ । —अग्यात

६ रति क्रीड़ा करना, मैथुन करना ।

विधूंसणहार, हारौ (हारी), विधूंसणियौ—वि० ।

विधूंसिओड़ौ, विधूंसियोड़ौ, विधूंस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विधूंसीजणौ, विधूंसीजबौ—कर्म वा० ।

बिधंसणौ, बिधंसबौ, बिधूंसणौ, बिधूंसबौ, बिधूसणौ, बिधूसबौ, बीधूंसणौ, बीधूंसबौ, बीधूसणौ, बीधूसबौ, विधंसणौ, विधंसबौ, विधांसणौ, विधांसबौ, विधुंसणौ, विधुंसबौ, विधूसणौ, विधूसबौ, विध्वंसणौ, विध्वसबौ—रू० भे० ।

विधूंसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. २ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ३ तोड़ा हुआ, भंग किया हुआ. ४ लूट-खसोट किया हुआ, ५ बरबाद किया हुआ, तहस-नहस किया हुआ. ६ संभोग किया हुआ ।

(स्त्री. विधूंसियोड़ी)

विधू–१ देखो 'विधु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

२ देखो 'वधु' (रू. भे.)

उ०—१ मन भाव स्रंगारुअ वीर मढै, कमधां गुर तांम रिकांम

चढै। वरवावर पावुग्र राज विधू, सिरणगारित सूरजमाल सिधू।
—पा. प्र.

विधूसणौ, विधूसबौ—देखो 'विधूंसणौ, विधूंसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम धायौ जोगेस, वसुह दिख ज्याग विधूसण। जिम धायौ ग्रह ग्रांण, पत्थ गौ ग्रह छाडावण। —गु. रू. बं.

उ०—२ वाजै बंकी रोड़ कै ग्रखाड़ै रूधौ खासवाड़ा, जंगी होदां सूधा कै पनागां पाड़ै जूथ। जोम ग्राड़ै लागौ चौड़ै धाड़ै भाड़ै बिजू-जळां, विधूसै बिभाड़ै ताड़ै गनीमां बिरूथ। —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ दिली साहां भंजणौ गंजणौ दिली लाग दावै, टाळै न को जीव लागां बादौबाद टेक। केकां घड़ां विधूसै कबांणां चिलै ग्रहै केकां, ग्रासंगै ग्रनेकां ग्रेहौ भूरौ वाघ हेक।
—किरपारांम कवियौ

उ०—४ लोयणां पळाकां नग्गां सावळां भळाका लेती, सुढंगां ग्रोयणां बाजां पाखरां सांनैत। चीर ग्रंगां पीन ग्रंगां नीसांण मेछ घड़ा चगी, विधूसै पिलगां चा ग्रगां 'चद' रौ वांनैत।
—राव देवीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ० – ५ रीभ रीभ हूगं बरां बारंगां रम्माड़ै रंगां, जोगणी ग्रखाड़ै जंगां जम्माड़ै स जूथ। तेग ग्राड़ै लागौ चौड़ै-धाड़ै खळां भाड़ै तूंही, बीभाड़ै विधूसै पाड़ै पट्ठांणां बरूथ। —हुकमीचंद खिड़ियौ

विधूसणहार, हारौ (हारी), विधूसणियौ—वि०।
विधूसिग्रोड़ौ, विधूसियोड़ौ, विधूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विधूसीजणौ विधूसीजबौ—कर्म वा०।

विधूसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री विधूसियोड़ी)

विधेय-वि [सं.] १ जिसका करना उचित हो, विधान के योग्य, कर्त्तव्य।
२ जिसे जानने का विधान हो।
३ ग्राज्ञा के वशीभूत, ग्राज्ञापालक।
४ व्याकरणानुसार वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय।
५ योग्य। (वं. भा.)
६ प्रेयसी के द्वारा प्रिय के मान-मोचनार्थ किये जाने वाले दो उपचार विशेष, जिसमें उपेक्षा, धृष्टता, भय, हर्ष ग्रादि दिखला कर प्रकारान्तर से ग्रनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है। (साहित्य)
रू. भे.—विधेय।

विधेयक-सं. पु. [सं विधेय+कन्] विधान बनाने वाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला विधान या कानून का प्रस्तावित रूप।
रू. भे —वधायक।

विधेयकरम-सं. पु. [सं. विधेय+कर्म] १ उचित कार्य, कर्त्तव्य।
२ नियमपूर्वक कार्य, वैधानिक कार्य।
३ शास्त्रोक्त नियमानुसार कर्म।

उ०—दोही सहोदरां एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सांयंकाळ रौ विधेयकरम करण पाळा ही चलाया। —वं. भा.

विधेयाविमरस-सं पु. [सं विधेय+ग्रविमर्शः] साहित्य में, विधेय ग्रंश को ग्रप्रधान ग्रंश प्राप्त होने पर उत्पन्न होने वाला वाक्य दोष।

विधोगत, विधोगति-सं. पु.—१ ढंग, तरह, प्रकार।

उ०—वाचिग्रा जिकै इतरा विचार, समभै लखपत्ति समभवार। प्रसतार कहां गाहा प्रकार, हवि सुणौ विधोगति सुणणहार।
—ल. पिं.

२ विधिपूर्वक, नियमपूर्वक।

उ०—१ पुत्र जिणिइ जै जै हुइ, तै परि सघली कीद्ध। कोडि भरिउ कुरंगदत्त; दांन विधोगति दीद्ध। —मा. कां. प्र.

उ०—२ व्रद्धपणउं गणि व्यासनुं, माधव महीपति बासि। कथा विनोद विधोगति, रीभवितु गुण- रासि। —मा. कां. प्र.

उ०—३ ऊभिउ थिउ ग्रादर करी, भूप करइ ग्रभिवाद। वलतु दीइ विधोगतिइ, माधव ग्रासीरवाद। —मा. कां. प्र.

उ०—४ वैद्य विधोगति जै लहइ, तै तै करइ उपाय। काचा सोनां कापीइ, रंजवीइ रस-राय। —मा. कां. प्र.

विधोरणौ, विधोरबौ—क्रि ग्र.—मिट जाना, मिटना।

उ०—ग्राखर पिय रै नांम कै, लिखै कळेजा मांहि। डरती पांणी ना पिऊं, मतहि विधोरा जांहि। —जलाल-बूबना री बात

विधोरणहार, हारौ (हारी), विधोरणियौ—वि०।
विधोरिग्रोड़ौ, विधोरियोड़ौ, विधोरचोड़ौ—भू० का० कृ०।
विधोरीजणौ, विधोरीजबौ—भाव वा०।

विधोरियोड़ौ-भू. का. कृ.—मिटा हुग्रा।
(स्त्री. विधोरियोड़ी)

विधोविध, विधौविध-क्रि. वि.—१ विविध प्रकार से, भिन्न-भिन्न प्रकार से।

उ०—१ राखूं नह ग्राद खत्री ध्रमरीत, सतीसत छोड मैं कूंता, सीत। विधोविध धूहड़ दाख वचन, मेलै नह चाल रांणी वडमन।
—गो. रू.

उ०—२ विधौविध दीठो मांय बिभूत, घुताई छोड़ परी सब धूत। मांहिलौ ठाकुर लाधौ मांय, पुजावै ग्रापौग्राप ही पांय। —ह. र.
२ यथाविधि, विधिवत्।

३ यथार्थ ।

रू. भे.—विधोबिध ।

विध्य—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—तेहनूं रूप तैं तुह ज खरूं, जु थाइ तुझ पटरांणी । ब्रह्मा विध्य नु स्रम थाइ साचु, चतुरपणि रहि पांणी । —नळख्यांन

विध्यांन—देखो 'विधांन' (रू. भे.)

उ०—खट भासा नव व्याकरन, विद्या वेद विध्यांन । हरीया अछर एक विन, सब ही थोथा ग्यांन । —अनुभववांणी

विध्या—देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—भांग तेजगींरां तीरां विध्या मेधा जै भाखा, जांग मछंद्रांणी जोग मत्ती रौ बोधांग जौ भार । जम्मीरां जोखीरां वीरां वीरभद्र जेम, जोयजौ हम्मीरां भ्रेम 'खेम' रौ जौधार । —हुकमीचद खिड़ियौ

विध्याता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—नैसध नर नि जु तूं नारी, सरखी सरखी जोड । नहीं तरि विध्यातानि लागि, रूप रच्यांनी खोड । —नळाख्यांन

विध्रत, विध्रति–सं. पु [सं. विधृति] एक सूर्यवंशीय राजा, जो खगन का पुत्र और हरिण्यनाभ का पिता था ।

उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तैं सुत विध्रत नरेस उग्र तप । सुत जय हरिणनाभ सुभियांणी, पुख न्रप जै सुत इंद्र प्रमांणी । —सू. प्र.

२ अभूतरजस् देवों में से एक देवता ।

सं. स्त्री.—३ वैधृति नामक देवता समूह की माता ।

विध्रम—देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

विध्रमी—देखो 'विधरम्मी (रू. भे.)

विध्रम्म—देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

विध्रम्मी—देखो 'विधरम्मी (रू. भे.)

विध्वंस–सं. पु. [सं.[१ विनाश, नाश ।

उ०—बहै जु बाट बाट में पिता पिता महा वदैं, सुखौ सुबाट तैं सदा दुखी दुबाट मैं दहैं सरीर संसकार सार वीर छीर सैं सनैं, विध्वंस वेरि वंस को प्रसंसनीय तै बनैं । —ऊ. का.

२ तहस-नहस, बर्बाद ।

३ संहार, नाश ।

रू. भे.—बिध्वंस, भंस. विद्धंस, विधंस, विधूंस ।

विध्वंसक–वि. [सं.] १ विनाश करने वाला, नाश करने वाला ।

२ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

३ संहार करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला ।

रू. भे.—विधंसक ।

विध्वंसण—देखो 'विधूंसण' (रू. भे.)

विध्वंसणौ–वि.—(स्त्री. विध्वंसणी) १ नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सड़न पड़न विध्वंसणीए, जतन करंतां जाय । कुण जांणै पेहली पछै ए, दौ अनुमत सुख दाय । —जयवांणी

२ मरने वाला ।

३ तहस-नहस होने वाला, बर्बाद होने वाला ।

४ नाश करने वाला, संहार करने वाला, मारने वाला ।

५ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

विध्वंसणौ विध्वंसबौ—देखो 'विधूंसणौ, विधूंमबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मांहौ मांही नगर विध्वंस्या, पांडव दवदंत राय जी । मुनि दवदंत इंटालै मारयौ, कौरव न तज्यौ करवाय जी । —स. कु.

उ०—३ ताहरां वडी फोज कर मालदैजी आया हीज । गांम गंगा-रड़ै आय डेरा किया । फोज च्यारूं ही तरफ दोड़ी छै । मेड़तै री रैत लोग खसीजै छै । देस मारीजै छै । देस विध्वंसीजै छै । —नैणसी

विध्वंसणहार, हारौ (हारी), विध्वंसणियौ—वि० ।

विध्वंसिओड़ौ, विध्वंसियोड़ौ, विध्वंस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विध्वंसीजणौ, विध्वंसीजबौ—कर्म वा० ।

विध्वंसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विध्वंसियोड़ी)

विध्वस्त–वि. [सं.] १ नाश हुवा या किया हुआ ।

२ संहार हुवा या किया हुआ, मरा या मारा हुआ ।

३ तहस-नहस हुवा या किया हुआ, बर्बाद हुवा या किया हुआ ।

विनंत—देखो 'वनिता' (रू. भे.)

उ०—भणीजै र जसोमति माता, बलिभ्भद्र भाई भुजाळौ । विनंत स्त्रिया जांणिजै, नंद पिता धणी व्रभ वाळौ । —पिं. प्र.

विन—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—जन हरीदास हरि सूं कहै, तुम विन तन छीजै । 'प्रेम' पियाला पाय करि, अपणां करि लीजै । —ह. पु. वां.

उ०—२ जोबनियां रौ जोरौ छै जी म्हांरा राज, नैण भळक्यौ नेहरौ तोरौ । यांरै मिळण विन जी म्हांरौ दोरौ, रसराज थैं मत म्हां सुं दिल मत चोरौ । —रसीलैराज रा गीत

उ०—३ प्रथम सेव गुरुदेव की, पीछै हरि की सेव । जनहरीया गुरुदेव विन, भगति न उपजै भेव । —अनुभववांणी

उ०—४ नांव लीया गुण नां मिट्या, तिवर न भागा तेज। हरीया ग्यांन विचार विन, रही जेज की जेज। —अनुभववांणी

विनउ—देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—कुंभां, द्यउ नइ पंखड़ी, थांकउ विनउ वहेसि। सायर लंघी प्री मिळउं, प्री मिळि पाछी देसि। —ढो. मा.

विनड़णौ, विनड़बौ–क्रि. अ.—१ विनम्र होना।

उ०—विरचै नही पदम विनड़ंतां, घणी वात जस भोम घणी। दे सांसण पूठेचा देवै, धर जंगळ जांगळ-धणी। —द. दा.

२ देखो 'विन्नड़णौ, विन्नड़बौ' (रू. भे.)

विनड़णहार, हारौ (हारी), विनड़णियौ—वि०।

विनड़िग्रोड़ौ, विनड़ियोड़ौ, विनड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

विनड़ीजणौ, विनड़ीजबौ—भाव वा०।

बिनड़णौ, बिनड़बौ, विनडणौ, विनडबौ—रू० भे०।

विनड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विनम्र हुवा हुआ।

२ देखो 'विन्नड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विनड़ियोड़ी)

विनडणौ, विनडबौ–क्रि. अ.—१ दुःख देना, कष्ट देना।

उ०—१ बालउ ज माय मुझ क्युं कह्यउ, अवर राय रखउं जीउ। सुलतांण सेन विनडउं नही, तब रै माय फुट्टइ हीउ। —प. च. चौ.

उ०—२ अनेकि परिछइं तैं विनडंत, दीणवयण जीव विलवंत। नरग तणां दुक्ख अनी निहालि, तैं मेल्हइ करवत कपालि। —वस्तिग

२ वेष बदलना।

उ०—कवण तउं कवण भूपति राउ, कवण नांमु कवण भूपति जाउ। कवण काजि विनडिउ तइं सयर, कवण भूपति सिउ तुझ वयर। —सालिसूरि

३ देखो विनड़णौ, विनड़बौ' (रू. भे.)

४ देखो 'विन्नड़णौ, विन्नड़बौ' (रू. भे.)

विनडणहार, हारौ (हारी), विनडणियौ—वि०।

विनडिग्रोड़ौ, विनडियोड़ौ, विनड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विनडीजणौ, विनडीजबौ—भाव वा०।

विनडियोड़ौ–भू. का. कृ—१ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ.

२ वेष बदला हुआ।

३ देखो 'विनड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो विन्नड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विनडियोड़ी)

विनत-सं. पु. [सं.] १ एक बन्दर का नाम, जो सुग्रीव की सेना में सेनापति था।

वि. वि.—यह सीता की खोज हेतु पूर्व दिशा की ओर गया था। इसके पिता का नाम श्वेत था। यह स्वयं पर्वताकार था। इसकी गर्जना मेघ गर्जना के तुल्य थी और इसकी सेना में साठ लाख वानर थे।

२ वैवस्त मनुपुत्र इल का पुत्र।

३ पुलह एवं श्वेता के पुत्रों में से एक दिग्गज।

४ देखो 'विनीत' (रू. भे)

वितनक-सं. पु. [सं] एक पर्वत का नाम।

विनतड़ी—देखो 'विनती' (अल्पा., रू. भे.)

विनतवंत–वि. [सं.] विनय से युक्त, विनयवान्।

उ०—कहिज्यौ अरथ हियाली केरउ, वहिलउ हियइ विमासी। विनतवंत गुणवंत तुम्हारी, नहिं तउ थास्यइ हांसी रे। —स. कु.

विनता–सं. स्त्री. [सं.] १ व्याधि लाने वाली एक राक्षसी।

२ अशोक वाटिका में, रावण द्वारा, सीता को समझाने हेतु नियुक्त एक राक्षसी।

३ प्राचेतस दक्ष प्रजापति व उसकी पत्नी असिक्नी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्री जो अरिष्टनेमी कश्यप ऋषि की पत्नी थी और पक्षियों की माता थी।

वि. वि.—कश्यऋषि ने इसे वरदान दिया था कि तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होंगे जो तुम्हारी शौत कद्रु के नाग पुत्रों से भी बलशाली होंगे। इसी वरदान के फलस्वरूप इस के गरुड व अरुण नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। ये दोनों पुत्र अण्डों से उत्पन्न हुए थे। एक अण्डा समय से पूर्व फूट जाने के कारण आधे शरीर का पुत्र उत्पन्न हुआ था जो अरुण था। इसी कारण से अरुण ने इसे अपनी शौत की पांच सौ वर्षों तक दासी रहने का शाप दिया। इस शाप से गरुड़ स्वर्ग से अमृत लाकर मुक्त किया था। गरुड़ व अरुण के सिवा इसके अरिष्टनेमि तार्क्ष्य व आरुणि नाम दो पुत्र व छत्तीस पुत्रियां थी।

[सं. वनिता] ४ स्त्री, औरत। (डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ वचन विनता उच्चरि रै, विद्वंग तूं विरी थयु। गुण कह्या नलराय निभावमनउ तांहां गयु। —नळाख्यांन

५ स्त्री, पत्नी।

६ प्रेमपात्री, स्त्री।

रू. भे.—विनिता, विनियां, विनीता।

विनताक, विनताग–सं. पु. [सं. वृन्ताकि] एक प्रकार का शाक, बैंगन।

रू. भे.—बिनताक, बिनताग।

विनतासुत, विनतासुतु–सं. पु. [सं.] विनता के पुत्र गरुड़ व अरुण।

रू. भे.—बिनतासुत, विनितासुत।

विनतास्व—देखो 'विनत' (रू. भे.) (२)

विनति, विनती– सं. स्त्री. [सं. विनतिः] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

उ०—सत्तनारांण सिंवरियै, सिंवरां सदा सहाय। ब्रह्म सुता सुं विनती, अक्षर द्यौ समझाय। —अग्यात

२ नम्रता, विनम्रता।

रू. भे.—विनती, बीणती, बीनती ।

अल्पा.—विनतड़ी

विनम्र–वि. [सं.] नम्रता से युक्त, नम्र ।

विनय–सं. स्त्री. [सं. विनयः] १ नम्रता, विनम्रता ।

२ अनुनय-विनय, प्रार्थना ।

३ ७२ कलाओं में से एक कला । ४ शील, सतीत्व । ५ शिष्टोचित व्यवहार । ६ जितेन्द्रिय पुरुष ।

७ गुरु आदि पूज्य पुरुषों का भक्ति से अभ्युत्थानादि के द्वारा आदर-सत्कार देने की क्रिया । (जैन)

रू. भे.—बीन, विराय, विनउ, विना, विनै ।

विनयवंत–वि. [सं] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत ।

उ०—१ जग मांहै सुभद्रा सती रे, सती रे सिरोमणि जांण । विनयवंत स्रावक सुगाउ जी, सील रयण गुण खांण । —स. कु.

उ०—२ तास सीस अति दीपतां रे, **विनयवंत** जसवंत । आचारिज चडती कला रे, स्री जिनसिंघ सूरि महंनौ रे । —स. कु.

उ०—३ तसु बंधव डुंगरसी तै पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भांण । **विनयवंत** गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड़ दाता गुण जांण । —प च. चौ.

विनयवांन-वि. [सं. विनयवान] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत ।

विनयशील–वि. [सं. विनयशील] विनयवांन, विनम्रता से युक्त, विनीत ।

विनयी–वि. [सं. विनयिन्] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत ।

विनयोक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू. भे.)

विनरावन, विनराविन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

विनवणौ, विनवबौ–क्रि. स.—विनय करना, प्रार्थना करना ।

विनवणहार, हारौ (हारी), **विनवणियौ**—वि० ।

विनविओड़ौ, विनवियोड़ौ, विनव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विनवीजणौ, विनवीजबौ—कर्म वा० ।

बिनवणौ, बिनवबौ, बीनवणौ, बीनवबौ—रू० भे० ।

विनवियोड़ौ–भू. का. कृ.—विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ ।
(स्त्री. विनवियोड़ी)

विनस–सं. पु.—सरस्वती के अदृश्य रहने का स्थान, जो पुण्य तीर्थ माना जाता है ।

विनसण–सं. पु. [सं.] १ विनाश, बर्बादी ।

२ संहार ।

विनसणौ–वि.—विनष्ट होने वाला, बर्बाद होने वाला, नाशवान् ।

विनसणौ, विनसबौ–क्रि. अ.—१ विनाश होना, नष्ट होना, मिट जाना ।

उ०—१ जै उपज्या सो विनस है, जै दीसै सो जाइ । दादू निरगुण रांम जप, निस्चल चित्त लगाइ । —दादूवांणी

उ०—२ तन तौ राख्यौ नां रहै, जतन करंतां जाय । यु हरीया पांणी ओस का, विनसत वार न लाय । —अनुभववांणी

उ०—३ सबद संत का आगिला, हसती का सा दंत । ताग न टूटैं भरम का, में देही विनसंत । —अनुभववांणी

२ संहार होना, मरना ।

३ तहस-नहस होना, बर्बाद होना ।

विनसणहार, हारौ (हारी) **विनसणियौ**—वि० ।

विनसिओड़ौ, विनसियोड़ौ, विनस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विनसीजणौ, विनसीजबौ—भाव वा० ।

बिनसणौ, बिनसबौ—रू० भे० ।

विनसति, विनसती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया उंन देमड़ै, बारै मास वसंत । सदा फळैगी **विनसती** विलंव्या जीव निचंत । —अनुभववांणी

विनसाड़णौ, विनसाड़बौ—देखो 'विनसाणौ, विनसाबौ' (रू. भे.)

विनसाड़णहार, हारौ (हारी), **विनसाड़णियौ**—वि० ।

विनसाड़िओड़ौ, **विनसाड़ियोड़ौ, विनसाड़्योड़ौ**—भू० का० कृ० ।

विनसाड़ीजणौ, विनसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विनसाड़ियोड़ौ—देखो 'विनसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विनसाड़ियोड़ी)

विनसाणौ, विनसाबौ–क्रि. स.—१ नाश करना, नष्ट करना ।

२ संहार करना, मारना ।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

विनसाणहार, हारौ (हारी), **विनसाणियौ**—वि० ।

विनसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विनसाईजणौ, विनसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिनसाड़णौ, बिनसाड़बौ, बिनसाणौ, बिनसाबौ, बिनसावणौ, बिनसावबौ विनसाड़णौ, विनसाड़बौ, विनसावणौ, विनसावणौ—रू० भे० ।

विनसायोड़ौ–भू. का. कृ—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगाड़ा हुआ । २ संहार किया हुआ, मारा हुआ । ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ।
(स्त्री. विनसायोड़ी)

विनसावणौ, विनसावबौ—देखो 'विनसाणौ, विनसाबौ' (रू. भे.)

विनसावणहार, हारौ (हारी), विनसावणियौ—वि० ।

विनसाविओड़ौ, विनसावियोड़ौ, विनसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विनसावीजणौ, विनसावीजबौ—कर्म वा० ।

विनसावियोड़ौ—देखो 'विनसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विनसावियोड़ी)

बिनसियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ विनाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ संहार हुवा हुआ, मरा हुआ । ३ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

(स्त्री. बिनसियोड़ी)

बिनस्ट–वि. [सं. विनष्ट] १ जो नाश को प्राप्त हो गया हो, नष्ट हुवा हुआ ।

२ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

३ मरा हुआ, मृत्त ।

४ बिगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ ।

बिनस्वर–वि. [सं. विनश्वर] १ नष्ट होने वाला, नाशवान् ।

२ जो बहुत दिनों तक न रह सके, अनित्य ।

बिनस्वरता–सं. स्त्री. [सं. विनश्वरता] १ नाशवान् होने की अवस्था ।

२ अनित्यता, अचिरस्थायित्व ।

बिनां—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरीया सांई **बिनां**, खाली खलक न कोय । एक धरे तांह एक है, दूज करे तांह दोय । —अनुभववांणी

उ०—२ कवण अखैवड़ बिगर, प्रळै सागर सिर सोभै । कवण **बिनां** सुखदेव, देव माया नह लोभै । —रा. रू.

उ०—३ अब तो मेरो बळ घटचौ, हटचौ संग को साथ । राखण-हारो को नहीं, राज **बिनां** रुघनाथ । —गजउद्धार

उ०—४ सुर-तरवरां रूखां रा ओला ताकै छै । तरवरां रा पांन झड़िया छै । सु जांणै वस्त्र **बिनां** नागा डिगंबरां सरीका नजर आवै छै । निवांण रा पांणी नीठिआ छै । —रा. सा. सं.

बिनांण, बिनांणि, बिनांणी—सं. पु.—१ विचार ।

३ तरकीब, उपाय ।

४ चिह्न. लक्षण ।

५ रूपक ।

६ व्याख्या, विवेचन ।

उ०—त्रकाळ ग्यांन दरसी निज ब्रम कूं पहिचांनै । भूत, भवस्त, वरतमांन जुगति सौं जांणै । च्यार वेद नौ व्याकरण खट सासत्रं के **बिनांण** । पिंडत विद्या मैं पारावार जांणै नवदूण पुरांण । —सू. प्र.

७ विध्वंस, नाश ।

उ०—धन लूट कीधौ घांण, वधि नारनोळ **बिनांण** । चंडनयर रा परचंड, दौ नगर अै भुजदंड । —सू. प्र.

८ रहस्य, भेद ।

उ०—परब्भोम धूंसै जिकै आप प्रांणं, वडा जुद्ध रा बंध जांणै **बिनांणं** । हणै मारि पाड़ै पंखी वोम हूंता, साहैं त्राळि सूं जागवै काळ सूता । —र. वचनिका

[सं. विज्ञान] ६ ज्ञान, जानकारी ।

उ०—मछतुंब जळमां तरै जी, बूडै काग पाहांण । पंख जाजि गयणैं फिरैजी, इण परै सहिज **बिनांण** । —वृस्त

६ भेद, प्रकार ।

उ०—मुहरि अंति लुघवि गुर मझि, बार चिआर **बिनांण** । पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनांण । —ल. पिं.

१० तरह, प्रकार ।

उ०—१ अंत्रां खग झाट निराट अलग्ग, पड़ै बि बि जंघ पड़ै झड़ि पग्ग । पड़ै रिणि उच्छळि अेम प्रवंग, कुंडां चढि जांणि **बिनांणि** कुरंग । —र. वचनिका

उ०—२ जिम जिम गुरु घटंती जाइ, तिम तिम दोइ वधै लुघताइ । नांम जूजूयी एण **बिनांणि**, वधतौ अेसौं जि वखांणि । —ल. पिं

वि.—१ समान, तुल्य ।

उ०—भुजां दुय च्यारि भुजां बळ भूप, रचै गजग्राह सियावर रूप । वहै खग सावंण तांत बिनांण, कटै जरदांण जुवांण केकांण । —सू. प्र.

२ अद्‌भुत, अनोखा ।

[सं. वैज्ञानिक] ३ ज्ञानी, जानकार ।

उ०—सो सुख सुणियां संत **बिनांणी**, बिजळी चमकै वादळ गरजै, चढचा अपूठा पांणी । —ह. पु. वां.

५ देखो 'बैनांणी' (रू. भे.)

उ०—१ रहमांण **बिनांणी** हत्थ तैं, भंजण घडण संसार जग । सुरतांण हुओ खुरसांण सिरि, खेडपती हुआ खडग । —गु. रू. बं.

उ०—२ कुंण तेजमहाढ अणी काढावै, वाढाळां मुंहि वाढ पडै । जिणसाल तियार करंत जरादी, घाय **बिनांणिय** लोह घडै ।

—गु. रू. बं.

रू. भे.—बिनांण, बिनांणी, बीनांण, बीनांणी, विनांन, विन्नांण, विन्नांणी ।

बिनांन—देखो 'विनांण' (रू. भे.)

उ०—मैं जांण्यो मन एक था, मन का बोहत **बिनांन** । हरीया मन छिनछिन फिरै, डाळी डाळी पांन । —अनुभववांणी

बिनांनी—देखो 'विन्यांनी' (रू. भे.)

बिनांम–वि.—जिसका कोई नांम न हो, बिना नाम का ।

बिना—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—पूछ्यां **बिना** पयंपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी । वदन मत दिखाळै वंस द्रोही वळै । —र. रू.

उ०—२ सरस तणौ पसाव सोधिया, बयण बिना बाखांगण बग। "चूंड" हरा आकास चित्रणौ, खेडेचा तहरौ खग।

—केसोदास गाडण

उ०—३ हिंदवाराव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां। गई स्रग विवांण वैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना वींदां। —महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

उ०—४ हांम कांम लोचणी उलाळी आकास जावै। चावळ रौ चौथौ हैंसौ खावै। तंबोळ बिना खाधां आहारा विकार थावै। माडी मोडी कटारी री पड़दड़ी समावै। —रा. सा. सं.

उ०—५ जसवंत बिना जिहांन, पांन चळ जांणे पवनै, कना केतु साकंप, थया मन हिंदमथांनै। घटै क्रिया बांभणां, मिटै भालर पर-सादां, ईत प्रभा ऊपजै, निरख दुर रीत निसादां। —रा. रू.

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—तरां जगमाल दीठौ, "हूं उजर करूं, रांणौ वांसै साथ चाढै, वै कठै ही उतरिया होय तौ कांई कावाइत होय, "तरै जगमाल घणा विना सूं बोलियौ "मांनसिंघ दीवांण रौ चाकर छै म्हांनु किसौ उजर छै, जांणै सु धरती दीवांण नै, जांणै सु मांनसिंघ नुं दे। —नैणसी

विनाइक—देखो 'विनायक' (रू. भे.)

उ०—१ लील विलास सुरां मां लाइकि, नियौ पुलंदर देव विना-इकि। संकर नां पिणि करां सलांमा, गोविंद रा आदेस गुलांमा।

—पी. ग्रं.

उ०—२ हूं मांगां देवी हुयौ, अविरळ वांणि उकत्ति। वळै विनाइक वीनवूं, सिद्ध बुद्ध द्यौ सुमत्ति। वह विनाइक देवता, नमौ विनाइक नाथ। तूं सिद्धदायक रूप सुभ, तूं सत्गुर ससिमाथ। —पी. ग्रं.

विनाई—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—राजी राव रंक भूप, नारि ही पुरख राजी, भूठ सी विनाई वाजी, खुसी आप खाल मैं। सिन्यासी दुहा दत, जोगी आदिनाथ जांनै, जती ही वखांनै जैंन, रता मता व्हाल मैं। —अनुभववांणी

विनाथ—वि [सं] जिसका कोई रक्षक न हो, अनाथ।

सं. पु.—वह बैल, जिसके नाथ न डाली गई हो।

विनादी—क्रि. वि.—आदि काल से।

उ०—बादसाह हूंत कह्यौ छोड जै इणांनै वेधा, ऐ न छंडै हिंदू धरम विनादी आफेक। कह्यौ साज भांण नंद पातवां छुडावौ किसां। एक एक प्रती चहां माथौ एक-एक।

—गोकळदास सक्तावत रौ गीत

विनायक—सं. पु. [सं. विनायकः] १ गणों के ईश व विघ्नविनाशक गणेश जी। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—एक दंतौ महाबुद्धि. सरब गुणौ गणनायक। सरब सिद्धि करौ देव, गवरी पुत्र विनायक। —अग्यात

वि. वि.—पुराणानुसार, विनायक चार प्रकार के होते हैं (१) दवढि विनायक, (२) कोण विनायक (३) हस्ती विनायक (४)सिन्दूर विनायक।

२ गरुड़।

३ सिंह, शेर आदि के समान मुखाकृति वाले शिवगणों का समूह जिसमें कुष्मांड. गजतुंड, जयंत और रुद्रगण समाविष्ट हैं।

४ कपड़ा बुनने का एक ओजार। (जुलाहा)

५ सुथार, बढ़ई।

६ विवाह अवसर पर कुम्भकार द्वारा लाई गई मिट्टी की बनी गणेश की मूर्ति।

७ विवाह आदि मांगलिक शुभ अवसरों पर गणेश जी को सम्बोधित कर गाये जाने वाले गीत।

८ यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार के शुभ अवसर पर गृह शान्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ एवं इस दिन किया जाने वाला भोज।

(मा. म.)

उ०—विरध वधाई नांव समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा-पाठ निराठ, वरै व्रनमाळां मोखी। जागण रातीजगां, दसुटण दायजां चोखी। —दसदेव

९ बौद्ध, आचार्य।

रू. भे.—बणाक, बिनाइक, बिनायक, बिन्नायक, वणाक, विणायक, विनाइक, विन्यायक।

विनायकचतुरथी, विनायकचौथ—सं. स्त्री. [सं. विनायकचतुर्थी] १ माघ मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, जिस दिन गणेशजी की पूजा की जाती है।

२ भादौ मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

३ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

विनायकण—स. स्त्री.—बढ़ई जाति की स्त्री।

विनायकथाटियौ, विनायकथाटौ—देखो 'थाटियौ' (जैतारण)

विनायकहेतु—सं. पु. यौ. [सं] गरुड़ध्वज, श्रीकृष्ण।

विनायकियौ—सं. पु.—१ विवाह के समय दुल्हा के साथ रहने वाला दुल्हे का छोटा भाई।

२ देखो 'विनायक' (अल्पा., रू. भे.)

विनायिका—सं. स्त्री. [सं.] १ विनायक की पत्नी।

२ गरुड़ की पत्नी का नामान्तर।

विनास—सं. पु. [सं. विनाश] १ नाश, ध्वंस।

२ बिगाड़ने का भाव, बिगाड़।

३ हानि, नुकसान ।
४ कलह, झगड़ा ।
५ एक असुर, जो कश्यप एवं उसकी पत्नी काला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था एवं यह अपने अन्य भाईयों की तरह अस्त्र-शस्त्र विद्या में यम के समान था ।
रू. भे.—बनास, बिणास, बिनास, वणास, विणास, विणासु ।

विनासक–वि. [सं. विनाशक] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।
२ मिटाने वाला, हटाने वाला । (प्रथा)
३ हानि, नुकसान या बिगाड़ करने वाला ।
४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।
५ संहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासकारी–वि. [सं. विनाश+कारिन्] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।
२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)
३ हानि, नुकसान, बिगाड़ करने वाला ।
४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।
५ संहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासणौ–वि. [सं. विनाशनम्] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।
२ मिटाने वाला; हटाने वाला (प्रथा)
३ हानि, नुकसान, या बिगाड़ करने वाला ।
४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।
५ संहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासणौ, विनासबौ–क्रि. स. [विनाशनम्] १ नष्ट करना, ध्वंस करना, २ मारना, संहार करना ।
उ०–१ देस बिगाड़चौ राव री, फेर **विनासी** फौज । डर बैठां कासूं हुवै, राजा लाग्या खोज । —डाढाळा सूर री वात
उ०–२ आगे देखै तौ छपरै हेठै पालणौ राखीयौ तौसु सीहणी आय चूंघावण लागी । ताहरां माता साह्रू दीठौ । ताहरां कहै है सीहणी तै म्हारौ बाळक **विनासीयौ** । ताहरां सीहणी अळगी हुई ऊभी रही । ईय जाय टाबर उरहौ लीयौ । पालणौ भीलां रै कांधै दीयौ । आधा हालिया । पीहर गई उथ सुख सु रहै ।
—देवजी बगड़वतां री वात
३ बिगाड़ करना, नुकसान करना ।
४ बुरा करना ।
५ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।
बिणासणहार, हारौ (हारी), बिणासणियौ—वि० ।
विणासिश्रोड़ौ, विणासियोड़ौ, विणास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विणासीजणौ, विणासीजबौ—कर्म वा० ।
बिणासणौ, बिणासबौ, बिनासणौ, बिनासबौ, वणासणौ, वणासबौ —रू० भे० ।

विनासियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ, ध्वंस किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नुकसान किया हुआ, बिगाड़ किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ, ५ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ.
(स्त्री. विनासियोड़ी)

विनासी–वि. [सं. विनाशिन्] १ नष्ट होने या करने वाला, विध्वंस होने या करने वाला ।
२ मारने वाला, संहार करने वाला ।
३ बुरा करने वाला ।
४ बिगाड़ करने वाला, नुकसान करने वाला ।
५ मरने वाला, मिटने वाला, नाशवान् ।
६ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।
७ मिटाने वाला, हटाने वाला ।
रू. भे.—विणासी ।

विनाह–स. पु. [सं.] कुए के मुख का ढकना ।

विनिग्रह–सं. पु. [सं.] १ संयम, दमन प्रतिबंध ।
२ बाधा, अवरोध ।
३ परस्पर-ईर्ष्या ।

विनिता—देखो 'विनता' (रू. भे.)

विनितासुत—देखो 'विनतासुत' (रू. भे.)

विनिद्र–सं. पु. [सं.] १ वह व्यक्ति जिसे निंद्रा नहीं आती हो ।
२ निद्रित या मूर्छित व्यक्ति की निंद्रा या मूर्छा को दूर करने का एक अस्त्र विशेष ।

विनिपात–सं. पु. [सं.] १ विनाश, ध्वंस ।
२ अपमान, अनादर ।
३ मृत्यु ।
४ नाश, बर्बादी ।
५ नरक ।
६ कष्ट, पीड़ा ।
७ बड़ा कष्ट; या संकट पैदा करने वाली स्थिति ।
८ गर्भपात ।

विनिपातक–वि. [सं.] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।
२ अपमान करने वाला, अनादर करने वाला ।
३ कष्ट उत्पन्न करने वाला ।

विनिमय–सं. पु. [सं.] १ किसी एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेने का व्यवहार, दो वस्तुओं का एक दूसरी के बदले अदल-बदल।

विनियां—देखो 'विनता' (रू. भे.)

उ०—विड़दसिंह उण देस विच, रीतविया राजंद। सात सलांमां नित सजै, विनियां अग्गा विंद। —जतीरासौ

विनियुक्त–वि. [सं.] १ लगा हुआ, नियुक्त।

२ आदेशित।

विनियोग–सं. पु. [सं.] १ किसी वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग।

२ व्यापार आदि में पूंजी लगाना।

३ त्याग।

४ भक्त द्वारा इष्टदेव का ध्यान कर दायें हाथ में लेकर मंत्र बोल कर जमीन पर छोड़ा जाने वाला पानी जो पूजा करने हेतु बैठने के बाद सबसे पहले छोड़ा जाता है।

विनियोजन–सं. पु. [सं.] १ विनियोग करने की क्रिया।

२ अर्पित करने की क्रिया, अर्पण।

३ नियुक्ति।

विनिहत, विनिहीत–सं. पु. [सं. विनिहतः] १ देवप्रेरित या भाग्यदोष से आया हुआ कष्ट, या संकट।

२ अपशकुन, बुरे शकुन।

विनीत–वि. [सं.] १ जिसमें शिष्टता व नम्रता हो, शिष्ट, नम्र।

२ जितेन्द्रिय, संयमी।

३ प्रिय, मनोहर।

४ ग्रहण किया हुआ।

सं. पु.—१ उत्तम मनु का एक पुत्र।

२ पुलस्त्य का प्रीति के गर्भ से उत्पन्न तीन पुत्रों में से एक पुत्र।

रू. भे.—बिनीत, विनत।

विनीतता–सं. स्त्री.—विनीत होने का भाव, नम्रता।

विनीता—देखो 'विनता' (रू. भे.)

विनूर–वि.—कायर, भीरू।

उ०–धारां रति धरहर, दळपळ डाल्हर, झटकै पै कर सीस झडै। बडडै घाइ बगतर, फाटै बडफर, रुकै विनूर रीठ पडै। —गु. रू. ब.

विनेत–सं पु. [सं. विनेतृ] १ आज्ञा, आदेश, हुक्म।

२ सिखाने वाला, शिक्षक।

३ दण्डविधान का निर्माण करने वाला।

[सं. विज्ञप्ति] ४ सूचना।

विनै–सं. स्त्री. [सं. विनयः] १ कृपा महरबानी।

उ०—तीन लक्ष द्रब रोकड़ा, चंचल उच्च पचीस। निपट विनै धारी निजर, न्रपति निवारी रीस। —रा. रू.

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—यां साहिजादै आखियौ, सहित विनै हित संध। मेरै काज निवाह की, लाज कमंधां कंध। —रा. रू.

३ देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—विकट करौ तीरथ वरत, धरा भेख कै धार। विनै नांम रघुवीर रै, परत न उतरै पार। —र. रू.

४ देखो 'विनै' (रू. भे.)

उ०—१ अठी रांम रा सुभड़ नैं सुभड़ रांवण उठी; लंक रै जोरवर खेत लड़वा। तीर सेलां छूरां झीक तरवारियां, बाजिया विनै ही रंभ बरबा। —र. रू.

उ०—२ समंधी औरंगसाह रौ, विनै मुगळ विसतार। महाराजा उण सूं मिळै, आदर कियौ अपार। —रा. रू.

विनैनी–सं. स्त्री.—विनम्रता, नम्रता।

उ०—साख्यात देवांगनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जांणणहार **विनैनी** करणहार लिखमीं पारवती गंगा सरसती रौ अवतार बारह आभूखन विराजमांन हुआ छै। आठै पोहर सोळ सिणगार किआ रहै छै। —रा. मा. सं.

विनोक्त, विनोक्ति–सं. पु. [सं. विनोक्ति] एक अलंकार विशेष, जिसमें, किसी वस्तु के बिना अशोभन या किसी के बिना शोभन कहा जाय यानि किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता का वर्णन किया जाय।

रू. भे.—विनयोक्ति, विग्योक्ति।

विनोद–सं. पु. [सं. विनोदः] १ ऐसा कार्य जिसका प्रमुख उद्देश्य मनबहलाव करना होता है।

२ उक्त कार्य से होने वाला, मनबहलाव, आनन्द।

३ हंसी-मजाक।

उ०—प्रधांन मनोहर परिखत, सुभट स्रेणि, विनोदीया ना **विनोद** साहस सो बोलांना समूह, उचितबोलांनी ओलि, कलावंत नी क्रीडाभूमि, कूबडांनी कोडि,······। —व. स.

४ आनन्द, आल्हाद, हर्ष, प्रसन्नता। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ जळ जाळ माळ विमाळ नभ जुत, उरड़ झड़ अणपार ए। मिटि जळण धरणि **विनोद** मांनव, भूरि सर जळ भार ए। —रा. रू.

उ०—वहै बीजूजळ हद्द-विहद्द, नचंत **विनोद** करंत नारद्द। तमासै भांण हुऔ रथ तांण, कहक्कह वीर हंसै कतियांण। —गु. रू. बं.

उ०—कवितु व्रिनोदिहि सिरिजय, सिरिजय सेहरसूरि जै। खेलइ तै अरह पद, संपद पांमइ पूरि। —जयसेखर सूरि

५ उत्सुकता, उत्कण्ठा।

६ खेल-क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।

उ०—१ किहीं रै कांधै चढै, किही रा हाथ खेंचै, चपळता आसंगगिरी करबौ करै। सो लोग राजूखां री खुसामद रा पगां सहबौ करै। टाबर नै किहीं कहै-सुणै नहीं। सगळा हाथां ऊपर विनोद कराबौ करै। टाबर लाड सूं बडो अनीतो।

—सूरै-खींबै कांधळोत री वात

उ०—२ उचित बोलांनी ओलि, कलावंतनी क्रीडाभूमि, कूबडांनी कोडि, वांमणांनां विनोद, पुण्यवंत रहइं प्रमोद, बयरीहं विखाद, कविना कल्लोल, वादीनउ विवाद, वैदेसिक विलास। —व. स.

७ सोलह प्रकार के शृंगारों में से एक प्रकार का शृंगार विशेष। (रा. सा. सं.)

८ एक प्रकार की राग विशेष। (संगीत)

उ०—भणंत स्री विनोदयं, कल्यांण केक मोदयं। खंभायची पटंगयं, वगैसरी विहगयं। —रा. रू.

९ गायन, संगीत।

उ०—विनोद गीत नाद भेद, सद्द घंट झालरी, प्रसाद देव पुंजिइत, अंबिका हरीहरी। निसा जळंत दीपजोत, मिंदरं उजाळ ए। सदा सरब्बदा हुवत्त, जांण दीपमाळ ए। —गु. रू. बं.

१० रतिक्रिया का एक आलिंगन विशेष। (कामशास्त्र)

रू. भे.—वणोद, वनोद, विणोद, विणोदि, विनोदन, विन्नोद।

विनोदक—वि. [सं.] विनोद करने वाला, खेल-क्रीड़ा करने वाला।

विनोदन—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

विनोदित—वि. [सं.] १ हर्षित, खुश, आल्हादयुक्त।

२ हंसी-मजाक किया हुआ।

३ ऐसा कार्य किया हुआ, जिससे आनन्द उत्पन्न हो।

४ विनोद शृंगार से युक्त।

विनोदी—वि. [सं. विनोदिन्] १ खुद का व दूसरों का मनबहलाव करने वाला।

२ हंसी-मजाक करने वाला।

३ विनोद सम्बन्धी।

४ आनन्द व हर्ष उत्पन्न करने वाला।

५ खेल-क्रीड़ा करने वाला।

६ विनोद शृंगार करने वाला।

७ गाने वाला, गायक।

अल्पा.—विनोदीयो।

विनोदीयो—देखो 'विनोदी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—प्रधांन मनोहर परिखत्, सुभट स्रेणि, विनोदीया ना विनोद, साहस सो बोलांना समूह, उचित बोलांनी ओलि, कलावंतनी क्रीडाभूमि, कूबडांनी कोडि, वांमणांना विनोद, पुण्यवंन रहइ प्रमोद,......। —व. स.

विन्नक—सं. पु. [सं. विन्नक:] अगस्त्य का एक नामान्तर।

विन्नड़ियोड़ो—भू. का. कृ.—कष्ट दिया हुआ।

विन्नवणा—सं. स्त्री. [सं. विज्ञापना] काम वासना पूर्ण करने हेतु कामी पुरुष के सम्मुख अपना अभिप्राय प्रकट करने वाली स्त्री।

वि. वि.—कामी पुरुष जिसके प्रति वह अपना अभिप्राय प्रकट करती है "विन्नवणा" कहलाता है। (जैन)

विन्नांण, विन्नांणि विन्नांणी—देखो 'विनांण' (रू. भे.)

उ०—१ पातसाह आळोज, मन्न विच्चार विमासै। बळ छळ दळ दक्खवै, पांण विन्नांण कळासै। —गु. रू. बं.

उ०—२ महिकर वेरी सबळ, कियौ दखणाधि कटक्कां। गढ दुरंग वेरियौ, प्रजा भागी परिचक्कां। नको प्रांण विन्नांण, नेस फीका खुरसांणी। गयणंगण डोलियौ, सीम चंपी सुरतांणी। —गु. रू. बं.

उ०—३ लसण्णांण विन्नांण सन्नांण मेंह, कलाभि कलाभिरयुतात्मीय देहं। मगुण्णं कला केलि रुवांणुगारं, स्तुवै पारस्वनाथं गुण स्रेणि सारं। —स. कु.

उ०—४ "हरीया मन लागो" एहनी कन्या दोइ भणावियै, भणि वा अवसर एह रै। दोइ कन्या (भणावीयै) भणै, बालपणै सहु आवडे, नांण विन्नांण अछेह रै। —स्रीपाळ रास

उ०—५ पंखी जिम विण पंखडी, फोरी न सकै प्रांण। प्रीतम दरीया में पड्यौ, कीजै किसौ विन्नांण। —स्रीपाळ रास

उ०—६ हिवे नांण विन्नांन न सूजै, छाती धहडहड इम धूजै। अम्ह थी दादुर गुण जांण, पांणी सरिसा जसु प्रांण।

—स्रीपाळ रास

उ०—७ गरुउ गणइ न नात्र कुपात्र ज पात्र न जांण, स धरइ ए भक्ति न लीजइ ए भीजइ ए भक्ति विन्नांणि। —जयसेखर सूरि

विन्नोद—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

उ०—किसा दीह आंणंद विन्नोद कीधा, लहै भूय आग्या वनोवास लीधा। जती रांम साथै सिया बांम जोड़ै, तिकां नांम लेतां अघां ओघ तोड़ै। —सू. प्र.

विन्यांनी—वि. [सं. वैज्ञानिक] जानकार, ज्ञानी। (उ. र)

रू. भे.—विनांनी।

विन्यायक—देखो 'विनायक' (रू. भे.)

उ०—तद घणा हरख कर नै ईयां नूं नाळेर झलाया। सात दिन

रौ विन्यायक वैठौ। परणीया, घणा हरख-कोड कीया। दिन १५ राखीया। विदा किया। —पीठवै चारण री वात

विन्यायकौ—देखो 'विनायक' (अल्पा., रू. भे.)

विन्यास-सं. पु. [सं.] १ स्थापित करने की क्रिया।

२ समूह, संग्रह।

३ यथास्थान रखने की क्रिया, सजावट।

४ जड़ने की क्रिया।

विन्योक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू. भे.)

विन्ह, विन्हइ, विन्है—१ देखो विनै' (रू. भे.)

उ०—१ माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हां सीख करेह। ऊन्हाळउ, वरखा **विन्है**, रहिया तुझ्झ सनेह। —ढो. मा.

उ०—२ प्रेमो 'अणंद' अमायै पांणी, अथवत सूछळि विन्है 'अमरांणी'। 'माहव' तणौ 'विजो' रण मोटां, कळहै ढाल थकौ नवकोटां। —रा. रू.

उ०—सुतन 'सुजांण' 'अनौ' 'प्रिय' संभ्रम, 'अखौ' विन्है आया जम ओपम। 'अनै' तणौ करि कोप अकारौ, 'गजन' आवियौ चाळा-गारौ। —रा. रू.

उ०—४ 'ऊदौ' 'अनौ' विकट ऊदावत, जोड़ मोड़ दळ विन्है 'जगावत। 'रतन' जगावत वांकिम रातौ, 'रांम' 'सुभावत' मेळ अरातौ। —रा. रू.

उ०—५ रिणमल 'कुंभा विन्है रायंगणि घणै चीतवै ध्रोह घणा। फूटां लोह पछां फिटकारां, ताइवां राघव देव तणा।

—हरीसूर बारहठ

उ०—६ **विन्है** पख क्रस्ण सुकळ विधांन, विन्है वपु अंग सुदक्षिण वांम। ब्रह्मा दक्षण अंग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।

—राठौड़ वंशावळी

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

विपंचिका, विपंची-सं. स्त्री. [सं.] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो वीणा की तरह का होता है।

२ क्रीड़ा-खेल, आमोद-प्रमोद।

विप—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—१ सेवगां दुखियां री कूक सुणी, काळवी असवार गौ दीपकणी। राखौ जद खांवद लाज रहै, **विप** डूबां ऊपर वांस वहै। —पा. प्र.

उ०—२ किलमांपति भेंटै कारीगर, कारी घाव निहाव कर। बाळ बाळ जुड़ियो थारौ **विप**, पैवंद आइस तणी पर।

—जगतसिंघ सिसोदिया रौ गीत

२ देखो 'विप्र' (रू. भे.)

विपक्क-वि. [सं.] १ पूर्ण रूप से पका हुआ, परिपक्व।

२ पूर्ण उबला हुआ, रंधा हुआ।

३ उन्नति की चर्मसीमा तक पहुँचा हुआ।

४ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

विपक्ख—देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

विपक्खी—देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

विपक्व-वि. [सं.] १ अच्छी तरह या पूर्ण रूप से पका हुआ।

२ अधपका या कच्चा।

सं. पु.—एक देवता, जो मरीचिगर्भ देवताओं में से गिने जाते हैं।

विपक्ष-वि. [सं.] १ विरुद्ध, खिलाप प्रतिकूल।

२ उलटा, विपरीत।

सं. पु.—१ दूसरा पक्ष। २ विरोधी पक्ष।

रू. भे.—बिपक्ख, बिपख, विपच्छ, विपक्क, विपक्ख, विपख, विपच्छ।

विपक्षी-सं. पु. [सं] १ दुश्मन, शत्रु।

२ दूसरे पक्ष का, विरोधी या प्रतिपक्षी व्यक्ति।

उ०—बलिम्ट धूम्र अक्ष की तुहीं **विपक्ष** नी, भई तुही महिख्ख रक्त-बीज भक्षनी। निसुंभ शुंभ चंड मुंड तू निकंदनी,नमांमि मात 'इंदरा' 'समद' नंदनी। —मे. म.

वि.—दूसरे पक्ष का, विरोधी पक्ष का।

रू. भे.—बिपक्खी, बिपच्छी, विपक्खी, विपख, विपखी, विपच्छ विपच्छी।

विपख—१ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

विपखी-सं. पु.—१ अश्व, घोड़ा। (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे.)

विपखणी-सं. स्त्री.—विरोधी की स्त्री।

वि.—विरोधी पक्ष की, प्रतिद्वंदिनी।

विपच्छ—१ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

उ० – गनीम गड्ढ गव्वतीय गब्भ कौ गमावनी, ज़हांन आंन मांन जोर सोर तै जमावनी। रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-बनी, लगै **विपच्छ** लच्छ पै भुजाग वच्छ भच्छनी। —ऊ. का.

विपच्छी—देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

विपण-सं. पु. [सं. विपणः] १ छोटा व्यापार।

२ बिक्री।

विपणक-वि. [सं.] क्रय-विक्रय करने वाला, व्यापार करने वाला, व्यापारी।

रू. भे.—बिपराक ।

विपणन–सं. स्त्री. [सं. विपणनम्] क्रय-विक्रय करने की क्रिया, व्यापार करने की क्रिया।

रू. भे.—बिपरान ।

विपणी–सं. स्त्री. [सं.[विपणीः, विपणी] १ बाजार २ हाट, दुकान । ३ व्यापार हेतु रखा हुआ माल ।

सं. पु॰ [सं. विपणिन्] ४ व्यापार करने वाला, व्यपारी ।

रू. भे.—बिपणी, वपणी ।

विपत, विपता, विपति, विपती, विपत्त, विपत्ता, विपत्ति विपत्ती–सं. स्त्री. [सं. विपत्तिः] १ आपत्ति, संकट । (डिं. को.)

उ०—१ सगा सनेही ओर नर, सुख में मिळै अनेक । **विपत** पड़यां दुख वांटलै, सो लाखन में अेक । —अग्यात

उ०—२ आगळ सुरग कपाट अघ, दोजग अगुओ देख । संपत लता कुठार सम, **विपत** लता घण वेख । —बां. दा.

उ०—३ दूधां न्हासी, पुतरां फळसी, **विपता** वढसी, सुखड़े रळसी । थांरी काळी जीभ नै थोड़ी चांको, मूंढै सू सगा थोड़ो थूक नाखो । भळै इसो नांवो कदै ही मूंढै सूं मती काढचा । म्हांनै कीं ही ना देया । बींन रै बाप कंयो । —दसदोख

उ०—४ नदी पार संपजैं, पोत द्रढ खेवट पायां । **विपति** विलै हुय जाय, जेम घर सपत आयां । —रा. रू.

उ०—५ दिसा दिसांन मांन तोप मांननीय की दगै, अडोळ चक्र नक्र मक्र मांननीय व्है अगै । विपत्थ पत्थ पत्थ से **विपत्ति** को बहावनी, खिजै समत्थ मत्थ पें समत्थ अत्थ खावनी । —ऊ. का.

उ०–६ प्रहलाद की प्रतिग्या राखी,हिरणाकुस नख उदर विदारण । रिखि पत्नी पर किरपा कीन्हीं, विप्र सुदांमा की **विपति** विदारण । —मीरां

उ०–७ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख संपति, व्यापत नांहि **विपत्ती** । —मे. म.

मुहा.—१ विपत्ति आणी=आपत्ति आना, संकट आना। २ विपत्ति उठाणी=संकट या दुःख सहना । ३ विपत्ति काटणी= संकट मिटाना, संकट में समय व्यतीत करना। ४ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति उठाणी' । ५ विपत्ति टळणी=सकट या आपत्ति टलना । ६ विपत्ति ढाणी=देखो 'विपत्ति आणी' । ७ विपत्ति पड़णी=देखो 'विपति आणी' । ८ विपत्ति मोल लेणी= 'आपत्ति मोल लेना । ९ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी ।

२ कष्ट, पीड़ा ।

मुहा.—१ विपत्ति भुगतणी=कष्ट और पीड़ा सहन करना । २ विपत्ति सहणी=कष्ट और पीड़ा सहन करना । ३ विपत्ति होणी=कष्ट व पीड़ा होना ।

३ झंझट, बखेड़ा ।

उ०—जाव खंड संख्याता किया ए, दिए अग्नि देखाला ना दिया ए । कहै फाटोफिटो होय ए, आ किसी **विपत** सूंपी मोय ए । —जयवांणी

मुहा.—१ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी' । २ विपत्ति मोल लेणी=व्यर्थ में झंझट या आफत मोल लेना । ३ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी' ।

४ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन ।

उ०—१ लोक चुगळ कांनै लगै, घू घू बोल्यो गेह । भायां सूं भेळप नहीं, **विपत** लिखी त्यांव वेह । —बा. दा.

उ०—२ मिनख मौत आवै है, जकी घड़ी ऊमर भर री आछीमाड़ी लारली सारी वातां काच दाई साफ होय जाया करै है । दुख अर **विपती** में भी । आपरै भला-बुरा कांमा री ठा पड़ै बिना नीं रैवै । —दसदोख

मुहा.—१ विपत्ति आणी=बुरे दिन आना । २ विपत्ति काटणी=बुरे दिन काटना या बिताना । ३ विपत्ति टळणी= बुरे दिन खत्म होना । ४ विपत्ति भुगतणी या भोगणी=देखो 'विपत्ती काटणी' ।

५ मृत्यु, मौत ।

उ०—सबळा खळ सूं सांधियां, निबळ जाय खळ नास । मूंसो मेळ मंजार कर, वचियो **विपत** विलास । —बां. दा.

मुहा.—१ विपत्ति आणी=मौत आना । २ विपत्ति टळणी= मौत से बचना, मौत टलना ।

६ थकान से उत्पन्न पीड़ा, थकान ।

उ०—जाळ खेजड़ा झाड़खा झट, खनै बुला स्वागत करै । मरु दातार देव वनां विच, छांय सुला **विपता** हरै । —दसदेव

रू. भे.—बपत, बपता, बिपत, बिपता, बिपति, बिपती, बिपत्त, बिपत्ता, बिपत्ति, बिपत्ती, बिपद, बिपदा, बीपत, बीपता, बीपति बीपती, बीपत्त, बीपत्ता, बीपत्ति, बीपत्ती, ।

विपत्थ, विपथ–सं. पु —१ भयंकर मार्ग ।

उ०—दिसा दिसांन मांन तोप मांननीय की दगै, अडोल चक्र नक्र मक्र मांननीय व्है अगै । **विपत्थ** पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, खिजै समत्थ मत्थ में समत्थ अत्थ खावनी । —ऊ. का.

२ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

विपद, विपदा, विपदि, विपदी–सं. स्त्री. [सं. विपद्, विपदा] १ आपत्ति, सकट, कष्ट ।

उ०–१ अर पछै ठकरांणी ठाकर माथै आयोड़ी **विपदा** री सगळी

घरामूळ सूं मांडनैं सुणाय दी। बात री गंभीरता नैं समझ नैं उणां ईं ठकरांणी नैं अरज करी—आप म्हांनैं इण जोग समझिया औ आपरौ बडपणौ है। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ सियावर नैं तू वन में निकार मती, म्हारा जिवड़ा नै विपदा में डार मती। राज तिलक रौ म्है साज सजायौ, बणती वात विगार मती। —गी. रां.

२ मानसिक दुख या सन्ताप।

उ०—१ मांनखा देही माथै इसी आफत आय जावै तौ इण आफत रौ कांई माप ? इण विपदा रौ कांई थाग ? कोई रौ एकाएक मोट्यार बेटौ भूडापा में दगौ देय जावै तौ उण जांमण रौ कांई हवाळ ? उण बाबल रौ कांई भवस ? मायड़ रा उण दुख नै कुण माप सकै। बाप री उण विपदा नै कुंण जांण सकै ? —अमरचूंनड़ी

उ०—२ घरवाळा घणा ई रोय, घणा ई कळपिया। पण होणहार रै कांन कठै, नैंण कठै ! जीयौ जितरै बेटौ, मरियां पछै माटी। बाप थकां बेटौ जावै, इण विपदा रौ पार कुण पावै। —फुलवाड़ी

३ कष्ट, पीड़ा।

४ झंझट, बखेड़ा।

५ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन।

६ मृत्यु, मौत।

७ थकान से उत्पन्न, पीड़ा, थकान।

रू. भे.—बपत, बपता, विपद, बिपदा।

विपदेस—सं. पु. [सं. व्यपदेश] कपट, छल, धोखा। (ह. नां. मा.)

विपन—देखो 'विपिन' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ घर चौड़ै सरवर **विपन**, विंधाचळ दिस एक। च्यार महूरत उत्तरै, धारस मंत्र विवेक। —रा. रू.

उ०—२ अंब आद अख जात अपारां, आप रूप किर भार अठारां। सुपह समेत भडां मिळ सारां, राज **विपन** जोयौ राजा रां। —रा. रू.

उ०—३ मंदार पारजाती कलप, हरिचंदन संतांन तर परसियौ 'अभै' व्रंदा **विपन**, कुंज पुंज तरवर निकर। —रा. रू.

उ०—४ कीं सरमावै फिर लुक ज्यावै, पग थांम पट सांम जप ज्यावै। जे दिख ज्याव् तौ हंस ज्यावै, जद **विपन** गुदगुदी बिखरावै। —करणीदांन बारहठ

विपनतिलका—देखो 'विपिनतिलका' (रू. भे.)

विपनविहारी—वि.—वन में घूमने वाला, वन-विहार करने वाला।

उ०—हेमांणी मरु हाट, नरम तनड़ौ उपकारी। ऊपर चढ देखै, दूर तक **विपनविहारी**। ना ऊभळणं जोग, बाळका ग्रत कर खेलै। हिवडै सेवै चोट, कदै ना पाछी मेलै। —दसदेव

सं. पु.—श्रीकृष्ण का एक नाम।

रू. भे.—विपिनविहारी।

विपर—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—१ पातुर नाचए घरम दुवार, मेरी माय भलो ए राजन पार उतार। **विपर** पोथी बांचिया-तेरै भवन बिच होय पूजा बार……। —लो. गी.

उ०—२ सूद्र वैस्य क्षत्री **विपर**, कहुं मछली कहुं नीर। कहुं निरभै निर बैरता, कहुं जाळी कहुं नीर। —ह. पु. वां.

उ०—३ जद हरियाळी वनड़ौ फेरां पधारचौ अै, फेरां में **विपरां** सरायौ, अै बाई जी म्हारा राज। —लो. गी.

विपरजय—देखो 'विपरय्य' (रू. भे.)

उ०—सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारांत विहुं जांण। संख्य **विपरजय** संख्य थळ, उलट पच्छ लघु आंण। —र. ज. प्र.

विपरत—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

विपरब—स. पु. [सं. विपर्व] बुरा दिन।

उ०—कांम क्रोध लोभ मोह पास में परचौ, आसको बिनास कैं निरास नां अरचौ। गरव में अखरब खरब गरब नां गरचौं, परब में **विपरब** परब वासनां भरचौ। —ऊ. का.

विपरयय, विपरय्य, विपरय्यय—सं. पु. [सं. विपर्ययः] १ व्यत्तिक्रम।

२ उलट-पलट, हेर-फेर।

३ विरुद्धता, प्रतिकूलता।

४ भूल, गल्ती, अशुद्धि।

५ अव्यवस्था, गड़बड़ी।

६ वैमनस्य, शत्रुता।

७ भ्रम, सन्देह।

८ सन्देह के कारण विचार बदलने की क्रिया।

रू. भे.—विपरजय।

विपराणौ, विपराबौ—देखो 'वपराणौ, वपराबौ' (रू. भे.)

विपराणहार, हारौ (हारी), विपराणियौ—वि०।

विपरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विपराईजणौ, विपराईजबौ—कर्म वा०।

विपरायोड़ौ—देखो 'वपरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विपरायोड़ी)

विपरावणौ, विपरावबौ—देखो 'वपराणौ, वपराबौ' (रू. भे.)

विपरावणहार, हारौ (हारी), विपरावणियौ—वि०।

विपराविग्रोड़ौ, विपरावियोड़ौ, विपराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विपरावीजणौ, विपरावीजबौ—कर्म वा०।

विपराविगोड़ौ—देखो 'वपरायौड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विपराविगोड़ी)

विपरित, विपरितौ, विपरीत–वि. [सं. विपरीत] १ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध ।

उ०—१ राग रंग हुवै छै, छुडबडा खिलबत रा साथ सुं बैठा छै। तिण समै चाचोमेरौ आपरौ साथ लै साजबाज सुं चढीया । रांणाजी दिसा ऊनाळी, ऊभी मांहै चालीया । तरै रांणौ मोकलजी देख कह्यौ—आंज खातण वाळा विपरीत दीसै, मेळ में तौ नहीं ।
—राव रिणमल री बात

उ०—२ ओईड अथव्वण भाद्रव स्रावण, कस्सस कोरण कंठळियं। विपरीत करस्सण कट्टक कोग्रण, सेन महाघण सम्मळियं।
—गु. रू. बं.

उ०—३ घड मोर नवी परि नाचियौ, दक्खण फौजां आइयां। 'गजबंध" मेह विपरीत गति, वूठौ सिरि वेराइयां । —गु. रू. बं.

उ०—४ पातिसाह पासि कागळ गए, सुणी वात विपरीत परि । सुरतांण सेर वूंहा खुरम, कासमीर आई खबरि । —गु. रू. बं.

२ उलटा, विलोम, विपरीत ।

उ०—१ जेथि दीप दीपता तेथि प्रजळै हुत्तासण । जेथि हसति गूंजता, तेथि गुंजै पंचाइण । जेथि रंग-आंमास, तेथि क्रीडंति कुरं गंह । जेथि नृपति बैसता, तेथि उडुंत विहुंगह । त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, भुअण तेथि भरिया भसम । खेडपति कीध खिडकी-तखत, वसुह रीत विपरीत इम । —गु. रू. बं.

उ०—२ कुदरत्त विछूटा आकंप कुहकबांण, इळा पुड आसमांण। गोळियां ताड बिपरीत गत्त, ओअठै गडै किरि मेह अत्त ।
—गु. रू. बं.

३ अनिष्ट साधन में तत्पर, रुष्ट ।

४ जो उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त ।

५ उल्टा, कुटिल ।

उ०—हियै तहव्वर खांन रै, व्यापी यौं विपरीत । दाह अकव्बर भोगयौ, 'नौरंग' साह नचीत । —रा. रू.

६ असत्य, झूठा, मिथ्या ।

उ०—जेह एकांत नय पक्ष थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती तै कहै । ग्रंथ ऊथापि थापै कुमति आपणी, कहै विपरीत मिथ्यामती तै भणी । —ध. व. ग्रं.

७ अप्रिय, अशुभ ।

८ भयंकर, भयावह ।

उ०—ताहरां झोटिंग भैंसै रौ रूप कर आयौ । ओ ठाकुर बोलियौ हीज नहीं । सिखरौ पाछौ आयनै तरवार लै बाकरौ मारियौ । बाकरौ मारियां पछै झोटिंग एक विपरीत रूप करनै आयौ । अकास सीस, पग धरती, इसौ भूत आवतौ दीठौ । —नैणसी

९ नियम-विरुद्ध, परम्परा के विरुद्ध ।

उ०—१ विकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तौ। विपरीत कुळह व्रती, इजगूरं या डिभरु गिळ ए । —गु. रू. बं.

उ०—२ जद स्वांमीजी कह्यौ—सासरै आंणौ लेवा जमाई जावै जद स्त्री तौ रोवै । पिण उण रै देखा देख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक में भूंडी लागै । ज्यूं साधपणौ लेवै जरै उण रा न्यातीला रोवै तै तौ आपरै स्वारथ पिण उण री देखा देख दीक्षा लेणा वाळौ रोवा लाग जावै तौ बात विपरीत । —भि. द्र.

उ०—३ कोढी पति छोडी करी, अवर पुरुख सुं प्रीत । तजि आचार सतीतणौ, कीधौ इण विपरीत । —स्रीपाल रास

१० चित, सीधा ।

उ०—स्रोण झील कमकमै, किये करिमरां चडाए । रचै सैज रिणभोम, कुसम अरि कमळ विछाए । नखत तिक्ख सर कूंत, सहै अन-मंघ अचग्गळ । पांण पयोहर कठण मथै मैंगळ कुंभा-थळ । विपरीत रहसि वीरारसहि, रिण दूभळ हुइ रट्टवड । सूतौ संग्रांम करि स्रोण-हर, भूप मांण सग्रांम घड । —गु. रू. ब.

रू. भे.—बिपरीत, वपरीत, विपरत, विपरीति, विपरीती, विपरूत ।

विपरीत-रति–सं. स्त्री. [विपरीतः+रति] रति-क्रीड़ा का एक ढ़ग विशेष, जिसमें संभोग करते समय पुरुष चित्त लेटकर स्त्री को अपने ऊपर उल्टी लेटाता है ।

विपरीत लक्षण–सं. स्त्री.—ऐसी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति, जिसमें परस्पर विरोधी गुणों, लक्षणों आदि का उल्लेख हो ।

विपरीता–स. स्त्री [सं.] दुश्चरित्रा स्त्री, बदचलन स्त्री ।

विपरीति, विपरीती—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—१ अकबर लेख प्रमांणै, तहवर सहत राज लोभांणै । आवी चित अचीती, विणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीती । —रा. रू.

उ०—२ किण परि राखै मुख चीत रे, भय मरण तणौ विपरीति रे । तिहां दूरि रही तै प्रीति रे, पछै सहु कौ नी रीति रे । —वि. कु.

विपरूत– देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—पख जंग कूंत केतां धरम पालटै, हटै विपरूत गत सूं तंग हीयौ । कळह विच मजबूत अडिग रोकै कदम । राह रजपूत साबूत रहियौ । —रावत संग्रांमसिंह सक्तावत रौ गीत

विपळ, विपल–सं. पु. [सं. विपल] १ एक पल के साठवें अंश के बराबर समय का एक बहुत छोटा विभाग ।

सं. स्त्री.—२ समय की गणना की एक इकाई ।

विपळव, विपलव—देखो 'विप्लव' (रू. भे.)

विपळा, विपला—देखो 'विपुला' (रू. भे.)

(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

विपळी, विपलो–वि.—जिसका विश्वास न किया जाय, अविश्वास पात्र।

सं. पु. [सं. विप्लव] १ भूत-प्रेत आदि के उपद्रव।

२ भूत-प्रेत।

उ०—पळा भरतै गळा बांमणी प्रजाळी, रुदन करतौ छळा वयण रहटौ। कैइ विकळा कळा वळवळा करंतौ, छळा विपळा जीउही आंण चैंटौ। —भैरुदांन बारहठ

विपसंचित, विपसंचि–सं. पु. [सं. विपश्चित] कवि, पंडित।
(अ. मा., ह नां. मा.)

विपस्चित, विपस्चित–सं. पु. [सं पश्चित] १ स्वारोचिष मन्वन्तर का इन्द्र।

२ एक राजा, जो अपनी पत्नी के साथ पापकर्म किये जाने के कारण नरक में गया था। इसकी पत्नी का नाम पीवरी था जो विदर्भराज की कन्या थी।

३ दक्षजयन्त लौहित्य का वंशज एवं शिष्य, जो स्वयं आचार्य था।

४ आषाढ उत्तर पाराशर्य नामक आचार्य का वंशज एवं शिष्य, जो एक आचार्य था।

विपांडु, विपांडुर–वि. [सं.] पीला, पीत।

विपाक–सं. पु. [सं. विपाकः] १ किये हुए कर्मों का फल, परिणाम, नतीजा।

उ०–१ सूत्र सिद्धांत वखांणंता जी, सुणतां करम **विपाक**। खिण इक मन माहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग। —स. कु.

उ०—२ कांम, भोग संयोग सगला, जांण फल किंपाक रे। दीसतां रमणीक दीसइ, अति कटुक **विपाक** रे। —स. कु.

२ स्वाद, जायका।

३ कठिनाई, तकलीफ।

४ परिपक्व होना, पकना।

५ पूर्ण दशा को पहुंचने की क्रिया, चरम उत्कर्ष।

विपाकसूत्र–सं. पु.—एक सूत्र ग्रन्थ का नाम। (जैन)

वि. वि.—ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों के शुभ-अशुभ परिणामों को विपाक कहते हैं और ऐसे कर्मविपाक का वर्णन जिस सूत्र में किया जाता है वह विपाक सूत्र कहलाता है। यह ग्यारवां अंगसूत्र है।

विपाट–सं. पु. [सं. विपाटः] १ एक प्रकार का लंबा तीर या बाण विशेष।

२ कर्ण के एक भाई का नाम जो महाभारत-युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—विपाठ।

विपाटल–वि.—गहरा लाल।

विपाठ—देखो 'विपाट' (रू. भे.)

विपाठा–सं. स्त्री.—दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

विपाद–सं पु —१ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव।

२ एक पिशाचगण।

विपादिका–स. स्त्री. [सं.] एक प्रकार का कुष्ठ रोग। (अमरत)

विपाप–सं. पु —शिवावतार के एक शिष्य का नाम जिसको दमन के नाम से भी पुकारा जाता है।

विपापमन, विपाप्मन–सं. पु. [सं. विपाप्मनः] १ अग्नि का एक पुत्र, जिसका एक नाम विश्ववन भी था। यह वास्तुकार्य में अधिष्ठाता देवता माना जाता है।

२ मत्स्यानुसार, आयु राजा का एक पुत्र।

विपास, विपासा–सं. स्त्री [सं. विपाश] पंजाब में बहने वाली व्यास (आधुनिक शतलज) नदी का एक नामान्तर।

वि. वि.—इस नदी को विपास या विपासा नाम प्राप्त होने का कारण है कि एक बार वशिष्ठ ऋषि आत्महत्या के उद्देश्य से अपने हाथ-पैर बांध कर उक्त नदी में गिर गये। नदी ने उन्हे पाशमुक्त कर किनारे पर फेंक दिया।

विपिन, विपुन–सं. पु. [सं. विपिनं] १ वन, जंगल। (नां. मा.)

उ०—१ अत असतुत घर परस अधारै, चलै **विपिन** तप चाहे। इम थट सहित सुवेस उमाहै, पुर अवधेस पधारै। —र. रू.

उ०—२ ग्रीखम गिर लास्यां जरन, सरवर निकट पुलीन। बूफैगो कैसे बिपिन, परस्यां विना प्रवीण। —प्रवीणसागर

२ उपवन, वाटिका।

उ०–विरचइ बिपिनि विचक्षण तक्षण दस वि दसार, नव नव निरमल भूखण दूखण रहिय सिंगार। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—विपन।

विपिनचर–वि. [सं] वन में रहने वाला या विचरण करने वाला, जंगली।

विपिनतिलका–सं स्त्री.—१ प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण वाली वर्णवृत्ति।

२ एक प्रकार का मात्रिक छंद विशेष जिसमें १०, १० मात्रा पर यति हो और अंत में रगण हो।

रू. भे.—बिपनतिलका।

विपिनपत, विपिनपति, विपिनपती–सं. पु. [सं. विपिनं+पति] वन का राजा, सिंह।

बिपिनविहारी—देखो 'विपनविहारी' (रू. भे.)

विपुळ, विपुल–वि. [सं.] १ बहुत बड़ा, विशाल।

२ अधिक, प्रचुर।

उ०—सीत काळ ऊत्तरै, अंब मवरै रित आगम। रस आयौ तरवरै, भयौ भमरै सुर संगम। द्रुम्म चरम मधु भरै, पत्र अंकुरै विपुल वन। फाग राग माधुरै, सुरै नर नारि हरै मन। —रा. रू.

३ अगाध, गहरा।

४ रोमांचित।

सं. पु—१ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग।

२ महाभारत युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया, सौवीर देश का एक राजा, जिसे देत्तमित्र व सुमित्र नाम भी प्राप्त थे।

३ रोहिणी एवं वसुदेव के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, बलराम व कृष्ण का भाई।

४ एक पर्वत, जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला है।

५ देवशर्मन ऋषि का शिष्य एक भृगुवंशीय ऋषि।

वि. वि.—इसकी गुरुपत्नी 'रुचि' पर इंद्र आसक्त हुआ, उस समय इसने रुचि की इन्द्र से रक्षा की थी। इसी कारण प्रसन्न होकर देवशर्मन ने इसे अनेक वर प्रदान किये।

६ एक पर्वत विशेष, जो मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास है।

रू. भे.—विउल।

विपुळता, विपुलता–सं. स्त्री.—२ प्रचुरता, बहुतायत।

२ महानता, विशालता।

विपुळमति, विपुलमती–सं. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों में से नवमी लब्धि का नाम।

उ०—सूंपरण मांनुखक्षेत्रे संग्यावंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मनवातां तंत। सूखमपरजायें जांणै सहु परिणांम,ए नवमी कहिये विपुलमती सुभ नांम। —वृ. स्त.

विपुळस्वांन–सं. पु.—सुकृष एवं तुंबुरु के पिता, एक ऋषि।

विपुळा, विपुला–सं. स्त्री. [सं. विपुला] १ जमीन, पृथ्वी, भूमि। (डिं. नां. मा)

२ विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी।

३ एक प्रसिद्ध बहुला सती का नामान्तर।

४ विपुला देवी का सिद्ध पीठस्थान।

५ एक प्रकार का छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं।

६ आर्याछन्द का एक भेद विशेष, जिसके चारों चरणों में १८, १२ १४ और १३ के क्रम से ५७ मात्रायें होती हैं।

रू. भे.—बिपुला, विपळा, विपला।

विपोहणौ, विपोहबौ–क्रि. स. [सं. वि=विगत, रहित+पोषणं]

१ मिटाना, नाश करना, समाप्त करना।

उ०—समोसरण सांमीं दयइ देसरण, भविक जीव पडिबोहइ। केवलग्यांनी धरम प्रकासइ, वयर विरोध विपोहइ। —स. कु.

२ दूर करना, हटाना।

विपोहणहार, हारौ (हारी), विपोहणियौ—वि०।

विपोहिओड़ौ, विपोहियोड़ौ, विपोहयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विपोहीजणौ, विपोहीजबौ—कर्म वा०।

विपोहियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मिटाया हुआ, नाश किया हुआ, समाप्त किया हुआ. २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ.

(स्त्री. विपोहियोड़ी)

विप्प—१ देखो 'विप्र' (रू. भे.)

२ देखो विप्पळौ।

उ०—विप्पळां पळां आवळां वाढ, ग्रीधळां खळां सावळां गाढ। सावळां हुळां मेगळां सल्ल, ढेचळां ढळां तूलांह ढल्ल। —गु. रू. बं.

विप्पोसहि, विप्पोसही–सं. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों में से दूसरी लब्धी।

उ०—१ आंमोसहि विप्पोसहि खेलोसहि जल्लौसहि सव्वोसहि लब्धि वैक्रिय लब्धि, पुलाक लब्धि, तेजोलेस्या लब्धि, आसीविख लब्धि, सभिन्नस्रोतो लब्धि······। —व. सं.

उ०—२ जासु मळमूत्र उखध समा जांणीयै, बीय विप्पोसही लबधि वखांणियै। स्लेखम उखधि सारिखौ जेहनौ, तीजी खेलोसही नांम तेहनौ ठवै। —वृ. स्त.

विप्फरणौ, विप्फरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे)

विप्फरणहार, हारौ (हारी) विप्फरणियौ - वि०।

विप्फरिओड़ौ, विप्फरियोड़ौ, विप्फरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विप्फरीजणौ, विप्फरीजबौ—भाव वा०।

विप्फरियोड़ौ—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विप्फरियोड़ी)

विप्फुरणौ, विप्फुरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)

उ०—जासु सुजंसु जगि झिगमिगै ए, चंदुज्जल निकलंक। प्रभु प्रताप गुण विप्फुरइ, हरइ डमर अरि संक। —पुण्यसागर

विप्फुरणहार, हारौ (हारी), विप्फुरणियौ—वि०।

विप्फुरिओड़ौ, विप्फुरियोड़ौ, विप्फुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विप्फुरीजणौ, विप्फुरीजबौ—भाव वा०।

विप्फुरियोड़ौ–भू. का. कृ.—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विप्फुरियोड़ी)

विप्र-सं. पु. [सं.] १ ब्राह्मण ।

उ०—१ नहीं तूं विप्र नहीं तू बैस, नहीं तू खत्रिय सूद्र न खैस ।
नही तू मूल नहीं तू डाळ, नहीं तू पत्र नहीं जु पराळ । —ह. र.

उ०—२ चित मांहि इम चितवैजी, निरदय विप्र चडाल । करै
परीसौ साधनै जी, दे मुख सूं घणी गाल । —जयवांणी

उ०—३ ब्राहनपुर दसरावौ थप्पै, जोसी तिलक मुहूरत अप्पै । विजै
दसम्मी होम करावै, बिप्रां कन्नां वेद वचावै । —गु. रू. वं.

उ०—४ तिलक दुआ-दस वसत्र कखंबर, करै सदा खट करम निरं ।
तर राजा वदन कीध उभै कर, आसी-वाच विप्रां इम उच्चार
—गु. रू. वं.

२ ब्राह्मण या पुरोहित जाति ।
३ उक्त जाति का पुरुष ।
४ कर्मनिष्ठ पुरुष ।
५ पीपल, सिरस आदि पेड़ों का नामान्तर ।
६ ध्रुव वंशीय एक राजा ।
७ मगध नरेश सृञ्जय के पुत्र व शुचि के पिता एक राजा ।
८ डगण के पांचवे भेद का नाम ।
९ विद्वान या मेधावी व्यक्ति ।

रू. भे.—विपर, बिप्र, विप, विपर विप्र ।

विप्रक-सं. पु [सं.] नीच या धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण ।

विप्रकार-सं. पु. [सं] १ हार, पराजय ।

२ अनादर, तिरस्कार ।
३ अपकार ।

विप्रचरण-सं. पु [सं.] भगवान् विष्णु के हृदय पर अंकित भृगु मुनि की लात का चिन्ह । (पुराण)

विप्रचित्त, विप्रचित्ति, विप्रजित्त, विप्रजित्ति-सं. पु. [सं. विप्रचित्ति]

१ व्यष्टि नामक आचार्य का एक शिष्य ।
२ हिरण्यकशिपु का सेवक एक राक्षस ।
३ एक दानव राजा ।

वि. वि.—यह कश्यप एवं दक्षपुत्री दनु के सौ पुत्रों में से एक पुत्र था । इसका विवाह हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका से हुआ था । सिंहिका के गर्भ से इसे सौ पुत्र प्राप्त हुऐ थे जिनमें राहु ज्येष्ठ-पुत्र था जो कि आजकल ग्रह माना जाता है । कहीं-कहीं इसके पुत्रों की संख्या चौंतीस या तेरह भी दी जाती है । इसने असुर-इन्द्र युद्ध व अमृतमन्थन आदि में भाग लिया था । इसके पुत्रों का सैंहिकेय नामक समूह था जिसमें एक सौ राक्षस थे जो सभी इसके पुत्र थे । उक्त समूह में एक राहु एवं सौ केतु थे ।

४ राहुग्रह । (डिं. को.)

विप्रणी—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

उ०—पीत दुकूळ वैमणी पहरण, गाह सुद्रणी स्यांम वसन गण ।
गौरे वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा ।
—र. ज. प्र.

विप्रता-सं. स्त्री.—ब्राह्मण होने की अवस्था, ब्राह्मणत्व ।

उ०—जै छइं गहन विचार रै सुकनै पूछीजै, निस्चय ए कीजै । सूं
विप्रता रै अम्हनै सूवटा, जेहवौ छै तेहवौ दाखि रै । —वि. कु.

विप्रविसार, विप्रतीसार-सं. पु. [सं.] १ रोष, क्रोध, गुस्सा ।

२ दुष्टता ।

विप्रपद—देखो 'विप्रचरण' ।

विप्रबंधु-सं. पु [सं.] १ धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण ।

२ मंत्रद्रष्टा मुनि ।

विप्रबुद्ध, विप्रबुध—वि. [सं] ज्ञानी, जानकार ।

विप्ररांम-सं. पु. [सं.] परशुराम का एक नामान्तर ।

विप्रलंभ-सं. पु. [सं. विप्रलम्भ] १ धोखा, कपट ।

२ विछोह, वियोग ।
३ प्रेमी, प्रेमिकाओं का विछोह ।
४ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाओं के विरह का वर्णन होता है ।

वि. वि.—यह श्रृंगार रस का एक भेद है, जिसमें अनुराग तो अति-उत्कंट होता है किन्तु नायक नायिका का समागम नहीं होता है । पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, आदि इसके चार भेद हैं । इसमें अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मृति (मरण) आदि दश काम दशायें होती हैं और इन सारी काम दशाओं के लक्षण भिन्न भिन्न होते हैं ।

विप्रलब्ध-वि. [सं.] १ धोखा दिया हुआ, छला हुआ ।

२ हताश, निराश ।

विप्रलब्धा-सं. स्त्री. [सं] वह नायिका जो अपने प्रेमी द्वारा बताये सकेत स्थान पर प्रेमी के न पहुंचने पर निराश या दुःखी हुई हो ।

विप्रलाप, विप्रवाद-सं. पु. [सं.] १ व्यर्थ की बकवास ।

२ विवाद, झगड़ा ।

विप्रस्ट-सं. पु [सं. विप्रष्ट] वसुदेव एवं धृतदेवी के पुत्रों में से एक पुत्र, बलराम का छोटा भाई ।

विप्रस्न-सं. पु. [सं. विप्रश्न] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय ।

विप्रि, विप्री-सं. स्त्री.—आर्याछन्द में एक गाथा जिसमें १३ लघु वर्ण होते हैं ।

उ०—१ विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु यकवीस खित्रणी लीजै सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।—र. ज. प्र.

उ०—२ भीनै रंग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी स्यांम रंग लायक। मुगता भूखण विप्री मोहत, सुज खित्रिणि हिम भूखण सोहत।
—र. ज प्र.

रू. भे.—विप्रणी।

विप्लव-सं. पु. [स.] १ उपद्रव, बलवा, हंगामा, विद्रोह।
२ युद्धकाल में उत्पन्न अशांति, उथल-पुथल।
३ आपत्ति, विपत्ति।
४ घोड़े की अत्यधिक तेज चाल।
५ सीमोल्लंघन, अतिक्रमण।
रू. भे.—विपळव, विपलव।

विप्लुत-वि. [सं.] जिसके उच्चारण में प्लुत से भी अधिक समय लगे।
उ०—गुरु लघु प्लुत विप्लुत करी, व्यंजन वरण विसेख। धूया माठा पडमठा, ताल-तरणा तिहां तेख। —मा. कां. प्र.

विप्सा—देखो 'वीपसा' (रू. भे.)

विफंद, विफंदौ-सं. पु.—जाल, पाश, फन्दा, फांस।
उ०—राज के विहीन सत्यसिंधु तें रह्यौ। आज कै अधीन दीन-बंधु के भयौ। छंद व्है सुछंद औ अनंद कौ कह्यौ, मदमती "ऊमरौ" विफंद में फयौ। —ऊ. का.

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू. भे.)

विफरणौ, विफरबौ-क्रि. अ. [सं. विस्फुरणम्] १ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगड़ना।
उ०—विफरै जैमाळ तड़ बनै बड़ बावळा, सुधारै जावळा बेल सारां। ऊपटै अठी रूपांण थड आवळा, भड़ण उतावळा हति भारां। —प्रतापसिंघ री गीत
२ गरजना, दहाड़ना।
३ फैलना, बिखरना।
४ प्रगट होना, स्फुटित होना।
विफरणहार, हारौ (हारी), विफरणियौ—वि०।
विफरिओड़ो, विफरियोड़ो, विफरयोड़ो—भू० का० कृ०।
विफरीजणौ, विफरीजबौ—भाव वा०।
बिप्फरणौ, बिप्फरबौ, बिफरणौ, बिफरबौ, बीफरणौ, बीफरबौ, बीभरणौ, बीभरबौ, भीफरणौ, भीफरबौ, विप्फरणौ, विप्फरबौ, विप्फुरणौ, विप्फुरबौ, वीफरणौ, वीफरबौ—रू० भे०।

बिफरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ क्रोधित हुवा हुआ, गुस्से से युक्त हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ। २ गरजा हुआ, दहाड़ा हुआ। ३ फैला बिखरा हुआ हुआ, ४ प्रगट हुवा हुआ, स्फुटित हुवा हुआ.
(स्त्री. विफरियोड़ी)

विफलरै, विफरैळ-वि.—क्रोधित, क्रुद्ध, गुस्से से युक्त।
रू. भे.—बिफरैल, बिफरैल, बीफरेल बीफरैल।

विफळ, विफल-वि. [सं. विफल] (स्त्री. विफळा, विफला) १ जिसके फल न लगते हों।
२ व्यर्थ, निरर्थक।
३ असफल, नाकामयाब।
४ हताश, निराश।
५ परिणाम रहित।
सं. पु.—पान, ताम्बूल। (अ. मा.)
रू. भे.—बिफळ।

विफळणौ, विफळबौ-क्रि. अ.—१ हताश होना, निराश होना।
उ०—तद कुंवरसी कह्यौ, जो मोनुं फेर वरजियौ तौ हूं पेट में मार कटारी मरीस, का राग घात सांमी हुय जाईस। तद वीठू रंग देख विफळियौ, पाछौ खींवसीजी नुं कह्यौ, मांनै कोई नहीं।
—कुंवरसी सांखला री वारता
२ घबराना, भयभीत होना।
विफळणहार, हारौ (हारी), विफळणियौ—वि०।
विफळिओड़ो, विफळियोड़ो, विफळयोड़ो—भू० का० कृ०।
विफळीजणौ, विफळीजबौ—भाव वा०।

विफळता, विफलता-सं. स्त्री. [सं विफलता] १ व्यर्थता, निरर्थकता।
२ असफलता, नाकामयाबी।
३ हताश, या निराश होने की अवस्था या भाव।

विफळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ हताश, निराश। २ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ।
(स्त्री. विफळियोड़ी)

विबंक-सं पु.—१ वीरता, बहादुरी, बांकापन।
उ०—गिराब गड्ढ गड्ड को विगड्डु छड्डुतो बहै, बकारि बैरि अंद को डकार डड्ढतो बहै। बडे निसंक बंक की त्रिबंक कढ्ढती बहैं, रहेसु सक रंक की विसंक बढ्ढती बहै। —ऊ. का.
२ कुटिलता।
३ टेढ़ापन, तिरछाई, वक्रता।
४ वीर, बहादुर।

विबंध-सं. पु [स] १ कब्जी होने की अवस्था, कब्जी, मलावरोध।
२ अवरोध, रुकावट।
३ बन्धन, हथकड़ी।

विबंधवरत्ति-सं. स्त्री. [सं. विबधवर्त्ति] घोड़ों का रोग विशेष जिसके कारण उनका पेशाब बद हो जाता है।

विबरजित—देखो 'विबरजित' (रू. भे.)

विवरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

विबळ, विबल–वि. [सं. विबल] १ अशक्त, शक्तिहीन, बलहीन।
२ विशेष बलवान, शक्तिशाली।
रू. भे.—विबळ।

विबहथरणौ, विबहथरबौ–क्रि. अ.—लहराना, फहराना।
उ०—पसरि पख हैं पाई, इळा उडुं आधतरि। जरद लाल इक स्याह, वरन वांना विबहथरि। —गु. रू. वं.
विबहथरणहार, हारौ (हारी), विबहथरणियौ—वि०।
विबहथरिश्रोड़ौ, विबहथरियोड़ौ, विबहथरचोड़ौ—भू० का० कृ०।
विबहथरीजणौ, विबहथरीजबौ भाव वा०।
विवहथरणौ, विवहथरबौ—रू० भे०।

विवहथरियोड़ौ–भू. का. कृ.—लहराया हुआ, फहराया हुआ।
(स्त्री. विबहथरियोड़ी)

विबाई, विबाही—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

विबिखण, विबिसण, विबीखण, विबीसण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

विबुद्ध, विबुध–वि. [सं. विबुद्धः] १ जाग्रत, सचेत।
२ ज्ञानप्राप्त, जानकार।
३ चतुर होशियार।
सं. पु. [सं. विबुधः] १ चन्द्रमा, चांद।
२ देवता।
उ०—तिथ चतुरदसी सनवार तव, रयण पहर वीतां अरव। 'अग-जीत' ग्रेह जनम्यौ 'अभौ', बांण वेद हरखै विबुध। —रा. रू.
३ विद्वान पुरुष, बुद्धिमान जन, पंडित।
उ०—पूरण ग्यांन दसा मन आंणी, वेधक वांणी वखांणीजी। विबुध भणी अवबोध समांणी, मूरख मति मूझांणीजी।—वि. कु.
४ कृति राजा का मतान्तर से देवमीढ राजा का, विसृत मतान्तर से विश्रुत नामक पुत्र, एक राजा।
५ शिव, महादेव।
रू. भे.—बिवुध, विवध, विवधा, विवह, विवुध, विवुह।

विबुधतटणी, विबुधतटनी, विबुधतटिणी, विबुधतटिनी–सं. स्त्री. [सं. विबुध+तटिनी] १ देवताओं की नदी, आकाश गंगा। २ गंगा नदी।

विबुधतर, विबुधतरु–सं. पु. [सं. विबुधतरु] कल्प-वृक्ष का एक नाम।

विबुधधेन, विबुधधेनु–सं स्त्री. [सं. विबुधधेनु] काम-धेनु।

विबुधनद, विबुधनदी–सं. स्त्री. [सं. विबुधनदी] १ आकाश-गंगा।
२ गंगा।
उ०—जिण री मैं 'मा जोय, नर मूरख नावै नहीं। हाड पड्यां गत होय, विबुधनदी में 'बसतिया'। —समेळजी बारहठ

विबुधपत, विबुधपति, विबुधपती, विबुधपत्त, विबुधपत्ति विबुधपत्ती–सं. पु. [सं. विबुधपति] सुरपति, देवराज इन्द्र।

विबुधप्रिय विबुधप्रिया–सं. स्त्री. [सं. विबुधप्रिया] चंचरी या चर्चरी नामक छंद का नामान्तर।
रू. भे.—विवुधप्रिय, विवुधप्रिया।

विबुधबन—देखो 'विबुधवन' (रू. भे.)

विबुधलता–सं. स्त्री. [सं.] कल्प-लता।

विबुधवेल, विबुधवेलि, विबुधवेली—देखो 'विबुधवेलि' (रू. भे.)

विबुधवन–सं. पु. [सं.] देवराज इन्द्र का वन।
रू. भे.—विबुधबन, विवुधबन विवुधवन।

विबुधविलासण, विबुधविलासणि, विबुधविलासणी विबुधविलासिणि, विबुधविलासिणी– सं. स्त्री. [सं. विबुधविलासिनी] १ देवता की स्त्री, देवांगना।
२ अप्सरा।

विवुधवेल, विबुधवेलि–सं. स्त्री. [सं. विबुधवेलि] कल्प- लता।
रू. भे.—विबुधवेल, विबुधवेलि, विबुधवेली।

विबुधवैद्य–सं. पु [सं.] देवताओं के वैद्य, अश्विनी कुमार।

विबुधांन–सं. पु. [सं. विबुधान] १ देवता।
उ०—धांनंखी रथांग धार मेर विबुधांन पांणां, किन्नरां अम्मरां नरां धरा ओपवै सुधाक। अंग रज्जै राजवै सुपाट धांम येण पांणां, जटीस वसु स्यांम धांम 'छतारौ' जोधाक। —भगतरांम हाडा री गीत
२ पंडित, विद्वान।

विबुधाचारय, विबुधाचारिय–सं. पु. [सं. विबुध+आचार्य] देवताओं के आचार्य, वृहस्पति।

विबुधाधिप, विबुधापत, विबुधापति, विबुधापती–सं. पु. [सं. विबुध+अधिप, पति] देवराज इन्द्र।

विबुधापगा–सं. स्त्री. [सं.] १ आकाश-गंगा। २ गंगा नदी।

विबुधालय–सं. पु. [सं. विबुध+आलय] देवता का मन्दिर।
२ स्वर्ग।
रू. भे.—विबुधालय, बिवुधालय, विवुधालय,।

विबुधावास–सं. पु. [सं. विबुध+आवास] १ देवताओं का निवास स्थान स्वर्ग।
२ मन्दिर।

विबुधेंद्र–सं. पु. [सं. विबुध+इन्द्र] देवराज इन्द्र का नामान्तर।

विबुधेस–सं. पु. [सं. विबुध+ईशः] १ देवताओं के स्वामी भगवानन्

विष्णु ।

उ०—विमळांनन **विबुधेस**-विहारी, संख चक्र धारी सुमरण । भव तारण भूधर भय-भंजण, हिरणगरभ त्रय-ताप हरण ।

—र. ज. प्र.

२ देवराज इन्द्र ।

रू. भे.—बिबुधेस, विवुधेस ।

विबोध-सं. पु. [सं. विबोधः] १ जागृति, जागरण ।

२ चेतना, होश ।

३ अलंकार साहित्य के अनुसार व्यभिचारी भाव ।

४ चैतन्यलाभ जो निद्रा दूर करने वाले कारणों से उत्पन्न होता है।

५ निर्वहणसन्धि के चौदह अंगों में से एक ।

६ कार्य का अन्वेषण करने की क्रिया ।

विबोधन-सं. स्त्री. [सं: विबोधन्] १ जागृति या जागरण पैदा करने की क्रिया ।

२ चेतना या होश में लाने की क्रिया या भाव ।

३ व्यभिचार करने की क्रिया ।

विब्भाड़णौ, विब्भाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाड़बौ' (रू. भे)

उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर । आंणं कित्ति नव खंड, अदल कीधी दुनीयप्पर । मल वीनल **विब्भाड़ि** उदधि कर पाउ पखाळिय । अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टाळीय । हेतम दांन कवि मल्ल कहि, अमर धुन्नि बे वखत गनि । दोठी न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतांन विणि ।

—प च. चौ.

विब्भाड़णहार, हारौ (हारी), विब्भाड़णियौ—वि०— ।

विब्भाड़िओड़ौ, विब्भाड़ियोड़ौ, विब्भाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विब्भाड़ीजणौ, विब्भाड़ीजबौ—कर्म वा. ।

विब्भाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भाड़ियोड़ी)

विब्भाडणौ, विब्भाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाड़बौ (रू. भे.)

उ०—पछिम देस पारंभ, लियौ लोहां उप्पाडै । पूरब दिस पतिसाह, लियौ खग दळ **विब्भाडै** —गु. रू. बं.

विब्भाडणहार, हारौ (हारी), विब्भाडणियौ—वि० ।

विब्भाडिओड़ौ, विब्भाडियोड़ौ, विब्भाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विब्भाडीजणौ, विब्भाडीजबौ—कर्म वा० ।

विब्भाडियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भाडियोड़ी)

विब्भाणौ, विब्भाबौदेखो 'विभाणौ, विभाबौ' (रू. भे.)

विब्भाणहार, हारौ (हारी), विब्भाणियौ—वि० ।

विब्भायोड़ौ—भू० का० कृ०— ।

विब्भाईजणौ, विब्भाईजबौ—कर्म वा० ।

विब्भायोड़ौ—देखो 'विभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भायोड़ी)

विभंग-सं. पु. [सं.] १ भौंहों द्वारा की जाने वाली चेष्टा, भ्रू-भंग ।

२ किसी चीज को यथास्थान रखने की क्रिया, विन्यास ।

३ खंडित होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

विभंज, विभंजण-सं. पु. [सं. वि+भंज्] १ नाश, विनाश ।

२ संहार, नाश ।

रू. भे.—बिभंजण ।

विभंजणौ, विभंजबौ-क्रि. स. [सं. विभंजनम्] १ नाश करना, विनाश करना ।

२ संहार करना ।

३ मारना, वध करना ।

उ०—१ रघुराज सिहायक संत रहै, कथ भेद जिको अज वेद कहै । दसमाथ **विभंज** भराथ दखं, पहनाथ समाथ अनाथ पखं ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणां खळ घायक सेवग-पाळ । वढै दसमाथ **विभंजण** तंक, लछीवर देण भभीखण लंक ।

—र. ज. प्र.

४ मिटाना ।

उ०—धर सुकर सायक धांनुखं, लड़ समर रहचण लखं । दुजराज गरब **विभंज** दस्सत, सरब जग सरणं । —र. ज. प्र.

विभंजणहार, हारौ (हारी), विभंजणियौ—वि० ।

विभंजिओड़ौ, विभंजियोड़ौ विभंज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विभंजीजणौ, विभंजीजबौ—कर्म वा० ।

बिभंजणौ, बिभंजबौ—रू० भे० ।

विभंजियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, विनाश किया हुआ ।

२ संहार किया हुआ ३ मारा हुआ, वध किया हुआ । ४ मिटाया हुआ ।

(स्त्री. विभंजियोड़ी)

विभ—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—भड़ रांम दससिर भंजिया, दत लंक सरणागत दिया । **विभ** अवध सिय लै आविया, कळ चंदनांम किया । —र ज. प्र.

विभकर-स. पु.—एक प्रकार का रत्न विशेष । (व. स.)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकांत चंद्रकांत, नील, महानील, इंद्रलील, सवकर **विभकर** ज्वरहर रोगहर

लेलहर, विखहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरभ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतामणि। —व. स.

विभक्त-वि. [सं.] अलग-अलग किया या हुवा हुआ, बंटा या बांटा हुआ।
सं. पु. [सं. विभक्तः] स्वामी कार्त्तिकेय का नामान्तर।
रू. भे.—विभगत।

विभक्ति-सं. स्त्री. [सं.] १ विभक्त करने या होने की क्रिया या भाव, पार्थक्य, अलगाव।
२ व्याकरण के अनुसार शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिन्ह जिससे उस शब्द का क्रिया पद के सम्बन्ध का पता चलता है।
रू. भे.—विभगति।

विभगत—देखो 'विभक्त' (रू. भे.)

विभगति—देखो 'विभक्ति' (रू. भे.)

विभगन, विभग्न-वि. [सं. विभग्न] १ टूटा फूटा हुआ।

विभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू. भे.)

उ०—१ विभचारी **विभचार** कर, कुळ-ध्रम खोय कुमोज। खूट गया इण खळक में, खुड़को हुवो न खोज। —ऊ. का.

उ०—२ चपळ मती दुरचारणी; चित्त भाव **विभचार**। सीघ्र त्याग कर सुर सभा, कर नर अंगीकार। —पा. प्र.

उ०—३ भाग जागै कहै किसी भांत सूं. दांमोदर मांय चित राख दीधां। रुकमणी आदि तौ पतिवरत सूं ऊधरी, कूबड़ी आदि **विभचार** कीधां। —भगतमाळ

उ०—४ हरीया अपनै पीव सुं, सूती सेझ विछाय। जो राखै मन और सुं, तौ **विभचार** कहाय। —अनुभववांणी

विभचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू. भे.)

उ०—१ **विभचारी** विभचार कर, कुळ-ध्रम खोय कुमोज। खूट गया इण खळक में, खुड़को हुवो न खोज। —ऊ. का.

उ०—२ चांद किरण संकुड़ी थी सु पसरी। कुलटा कहतां **विभचा-रिणी** की द्रस्टि संकुड़ी थी सु पसरी। निसाचर कहतां राति कै विखै जु विचरै छै। त्यांह की द्रस्टि पसरी। अभिसारिका कहतां जिह नै सहेट वदी थी। त्यांह की द्रस्टि पसरी। —वेलि टी.

उ०—३ पतिवरता **विभचारिणी**, संगति सुख नहि कोय। तैल नीर सूं ना मिळै, ल्हसण चंदन भी दोय। —ह. पु. वां.

उ०—४ पतिवरता **विभचारिणी**, दोऊ अनत न बैसै एकै साथी। फट-किमणि तब लग भली, जब लग हीरा आवै न हाथी। —ह. पु. वां.

उ०—५ होय दिसावर एक वर, कहौ कोण दिस जाय। जनहरीया **विभचारणी**, पति विन गोता खाय। —अनुभववांणी

(स्त्री.—विभचारण, विभचारणी, विभचारिणी)

विभच्छ, विभछ, विभत्स—देखो 'वीभत्स' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

विभत्सरस—देखो 'वीभत्स' (१) (रू. भे.)

विभत्सु—१ देखो 'वीभत्सु' (रू. भे.)
२ देखो 'वीभत्स' (रू. भे.)

विभनो, विभनौ, विभन्नो, विभन्नौ-[सं. वि+भंज] मरा हुआ मृत।

उ०—१ **विभनौ** तूं गज गांम बरीसण, हुई तेण खट बरणां हांण। अणमिळणूं सौ हुवौ एम तौ, मिटसी किम मोजां महरांण। —बां. दा.

उ०—२ घमळ **विभन्नौ** धुर तजै, देख दुमन्नो साथ। उण वेळा तांडै 'अजो' मूछां घालै हाथ। —रा. रू.

उ०—३ 'अजबै' वीठळदास रै, देख **विभन्नौ** वंघ। भुजडंडै बळ झल्लियौ, तिण धुर ओडै कंध। —रा. रू.

उ०—४ यूं कमंधां सुण अखियौ, माड़ेचो अर मोड़। रांम **विभन्नौ** को कहै, जां ऊभौ रिणछोड़। —रा. रू.

उ०—५ कमंध अगंजी **विभन्नौ** कहियौ, वड दाता कीरत चौ वींद। वाक तुआळी करंडी-वाळौ, काळौ भूंबाऊं कासींद। —ओपो आढौ

विभरणौ, विभरबौ-क्रि. अ.—१ चमकना, चौंकना।
२ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगड़ना।
३ भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना।
विभरणहार, हारौ (हारी) विभरणियौ—वि०।
विभरिओड़ौ, विभरियोड़ौ, विभरचोड़ौ—भू० का० कृ०।
विभरीजणौ, विभरीजबौ—भाव वा०।

विभरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, चौंका हुआ. २ क्रोधित हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ. ३ भ्रम में पड़ा हुआ, भ्रमित हुवा हुआ.
(स्त्री. विभरियोड़ी)

विभळ, विभळी-सं. स्त्री.—१ बिल, गुफा।
१ आंख, नयन, नैत्र। (ना. डि. को.)
वि.—१ निर्मल, साफ, स्वच्छ।
२ सुन्दर, मनोहर।
रू. भे.—बिभळ, बिभळी, भिभळ, भीभळ, भीभळी, वींभळ, वींभळी, वीभळ, वीभळी।

विभव-सं. पु. [सं.] १ छत्तीसवें संवत्सर का नामान्तर।
२ देखो 'वैभव' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ बरस दोय होतां छतां सारी **विभव** खिच गई।
—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ रूप हुइ तू चतुर नुहि, अथवा नहीं उदार । तै हुइ तु विभव नुहि, कै लंपट हुइ अपार । —नळाख्यांन

विभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

विभववांन—देखो 'वैभववांन' (रू. भे.)

विभवसाळी विभसाली—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे.)

विभांड-सं. पु. [सं.] सरशय्या पर लेटे हुए भीष्म से मिलने हेतु उपस्थित जनों में से एक ऋषि ।

विभांडक-सं. पु. [सं.] एक ऋषि का नाम जो कश्यय का पुत्र तथा ऋश्यशृंग ऋषि का पिता था ।

वि. वि.—इसके पुत्र ऋश्यशृंग ऋषि के जन्म एवं अंग देशाधिपति चित्ररथ की कन्या शान्ता से उसके विवाह के सम्बन्ध में अनेक चमत्कारपूर्ण कथाऐं मिलती हैं । कश्यय के पुत्र के नेत्र-पीले रंग के थे एवं इसे ब्रह्मज्ञान की शिक्षा हिमालयवासी सनत्कुमार ने दी थी ।

विभांडक कास्यप-सं. पु. [सं. विभांडक काश्यप] ऋश्यशृंग ऋषि का पुत्र एवं शिष्य ।

विभांत, विभांति,-सं. स्त्री. [सं. विभांति] १ प्रकार, भेद, किस्म ।

वि.—अनेक प्रकार का ।

विभा-सं. स्त्री. [सं.] १ दीप्ती, प्रभा, कान्ति ।

२ छवि, शोभा, सौंदर्य ।

३ किरण, रश्मि । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

४ अग्नि, आग । (अ. मा.)

५ कावेरी की पुत्री एवं दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम ।

रू. भे.—बिभा ।

विभाकर-सं. पु. [सं. विभा+करः] १ सूरज, सूर्य । (ह. नां. मा., क. कु. बो.)

२ चान्द, चन्द्रमा ।

३ राजा ।

४ अर्क, मदार ।

५ अग्नि, आग ।

वि.—प्रकाश करने वाला, अन्धेरा मिटाने वाला ।

रू. भे.—बिभाकर ।

विभाग-सं. पु. [सं. विभागः] १ बंटवार, अंश, हिस्सा ।

२ अंश, प्रकरण ।

३ कार्यक्षेत्र ।

४ कार्यालय, महकमा ।

५ परिच्छेद, खण्ड ।

रू. भे.—बिभाग, व्यभाग ।

विभागात्मकनक्षत्र, विभागात्मकनखत्र-सं. पु. [विभगात्मकनक्षत्र] प्रकाशमय आठों नक्षत्रों का नाम।

वि. वि.—उक्त आठों प्रकाशमय नक्षत्रों के नाम निम्नलिखित हैं —१ रोहिणी, २ आर्द्रा, ३ पुनर्वसु, ४ मघा, ५ चित्रा, ६ स्वाती, ७ ज्येष्ठा और ८ श्रवण ।

विभागी-सं. पु. [सं. विभागिन्] हिस्सेदार, भागीदार ।

वि.—विभाग करने वाला ।

रू. भे.—बिभागी ।

विभाड़-सं. पु.—१ नाश, ध्वंस ।

२ बिगाड़, हानि ।

३ कळह, झगड़ा ।

४ मारने की क्रिया, संहार ।

५ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया ।

वि.—१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—हणू जिसा किंकरा पधोर के वंकरा हल्लां, जूधां जीत अनंक रा रोड़णा जोधार, । रोळै लैंण लंक रा निसंक रा विभाड़ रांम, हाथां झोक रंक रा लंक रा दैणहार । —र. ज. प्र.

२ विनाश करने वाला ध्वंस करने वाला ।

३ चीरने वाला, फाड़ने वाला, विदीर्ण करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

उ०—१ नाळेरउ आपइ त्रिणे नक्ख, सूरउ सतेज सूरिज सक्ख । पाखरि पलांणि काळउ पहाड़, वरिजांग चडिय वइरां विभाड़ । —रा, ज. सी.

उ०—२ जुड़े खग गेंद जहीं तळजोड़, 'अनावत' सींधउमेद अरोड़ । वहै धज साबळ रोद विभाड़, 'अजावत' साह वखां अवनाड़ । —सू. प्र.

उ०—३ तुजी-अठार असली तुरस, दीप धूप आगळ दिया । सात्रव विभाड़ रछक सुवप, कर खवास हाजर किया । —वखतौ खिड़ियौ

५ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला ।

६ कळह करने वाला, झगड़ा करने वाला ।

७ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

८ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

९ मारने वाला, वध करने वाला ।

१० तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला ।

११ त्यागने वाला, छोड़ने वाला ।

रू. भे.—बिभाड़, वभाड़, विभाड ।

अल्पा.—विभाड़ौ, विभाडौ

विभाड़ण, विभाड़णि विभाड़णी विभाड़णौ–वि.—१ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ हानि करने वाला, बिगाड़ करने वाला।

३ कलह करने वाला, झगड़ा करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ संहार करने वाला, मारने वाला।

उ०—'सुरतौ' 'अनै' तणौ पण साचै, जुध कजि सदा सकतिवर जाचै।
'किरतावत' वुधसिंघ करारौ, गजां विभाड़णि राढी (ड़ी) गारौ।
—रा. रू.

६ चीरने वाला, फाड़ने वाला, विदीर्ण करने वाला।

७ पराजित करने वाला, लूटने वाला।

८ तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला।

१० त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

रू. भे.—विभाडण, विभाडणि, विभाडणी, विभाडणौ।

विभाड़णौ, विभाड़बौ–क्रि. स.—नाश करना, ध्वंस, करना नष्ट करना।

उ०—वड़वीर सधीर रेणपुर राजिद, धोम उजागर धाड़ि। पहाड़ ग्रोनाड़ विभाड़ पबोरै, राहां चक्कर राड़ि। —मा. वचनिका

२ संहार करना, (मारना)।

उ०—१ उठै रिणछोड़ सुजाव अरोड़, घड़ां खळ वेधत सेल घमोड़। विभाड़त रोद घड़ा 'हळवाह', सराहत राह दुहूं दळ साह। —सू. प्र.

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं, नहं घायल बरड़ाय, वाळूं सखी ऊ द्रगड़ौ, भड़ बापड़ा कहाय। बाळूं ऊ द्रंगड़ौ, बसै भड़, बापड़ा घाव अंग सहै नहं विभाड़ै अरि घड़ा। घणा जसवत रा, जोध विहसै घणा, मांडिसी सही, मतिवाळा वेढीमणा। —हा. झा.

उ०—३ ऊगमण धराहूं एम आय, जुध कीध आथमण धरा जाय।
वाहै खग गोहिल दळ विभाड़ इम लीध खेड़ धर मारवाड़।
—सू. प्र.

उ०—५······बत्तीस आखडी रौ निवाहणहार, वैरियां विभाड़णहार, परभोम पंचायण, घण दियण, जस लियण, कळायरौ मोर, सूंधै भीनै गात, केसरिया पौसाख कियां, पांच हथियारां बाधां आंण घोड़ै असवार हुवै छै। —रा. सा. सं.

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

५ हानि करना, बिगाड़ करना।

५ चीरना, विदीर्ण करना।

उ०—१ चौधारां लाखीक चाडतौ, किलम पचाहर कीयां कर। राड़ विभाड़ सोहियौ राजा, अरक ज्यूंई दळ फाड अर।
—चांवडदांन बारहठ

उ०—२ जेज न कीध ऊंतावळ जूटौ, बावळ फौजां ही थाट विभाड़ै। आयौ कांम महि थट ऊपर, चावळ वंस चुहांणां चाडै।
—ठाकुर सूरतसिंह चहुवांण रौ गीत

६ टुकड़े टुकड़े करना, काटना।

उ०—लोहां झट बाढत रोद लग्गस्स, 'वहादर' 'नीथळऊत' वंगस्स। 'रावावत' आंणंदसिंघ दुबाह, विभाड़त मुग्गळ वीजळ वाह।
—सू. प्र.

७ तितर-बितर करना, बिखेरना।

उ०—सूर वाहर चढै चारणां सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आंबू। विहंड खळ खींचियां तणा दळ विभाड़ै, पोढियौ सेज रण भोम "पाबू"। —बां. दा.

८ मारना, वध करना।

उ०—१ जळ मांहै जगदीस. विढै मघकीट विभाड़ै। बतळावै वेसासि, पछै दांणवां पछाड़ै। —पी. ग्रं.

उ०—३ भगत थारा जिकै तिकां दरसण भयौ, जमदगन तणा जगदीस तुंना जयौ। विभाड़ी रेणका वडौ कीधौ विधन, जमदगिनि तणौ परमेस माडै जिगिन। —पी. ग्रं.

उ०—३ विभाड़ पंचद्रणमाथ आथ देण वेस रे, मझार ध्यांन कंज सो वसै रदा महेस रे। सदा नमंत ओधराय पाय धू सुरेस रे, वदां नरेस आंन कूण जोड़ राघवेस रे। —र. ज. प्र.

९ युद्ध के सम्बन्ध में कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीत कर अधिकार में लेना।

उ०—विभाड़ै जादवां-कोट धरकीध वस, सबळ व्रद खाटिया भवां साहू। तप-वळी अभनमां "माल" "गंगेव" तौ, ममारक पोकरण राव मारू। —गु. रू. बं.

१० मिटाना।

११ विजय करना, जीतना।

उ०—आवै दाव कळहण दुनियांन सौह ऊचरै, बडौ वर राव रूकां विभाड़ी। उधारी राड़ि रजपूत आंबेरि धरि, पहाड़ी कांमां लै भोग पाड़ी। —राव राजा फतैसिंघ नरूका कछवाहा रौ गीत

१२ त्याग करना, छोड़ना।

उ०—गिरां न जळ थळ विकट गिर, आंवी रयण उजाड़। भय विभाड़ 'पाताल' वहै, पमगां वगां उपाड़। —जैतदांन बारहठ

१३ सजा देना, दण्डित करना।

१४ पराजित करना, हराना।

उ०—बासठि हजार फौजां रा भांजणहार। छखंड खुरसांण रा विधूंसणहार। मैमंत हाथिग्रां रा मारणहार। पतिसाहां रा विभाड़णहार। पतिसाहां रा पड़िगाहण। —र. वचनिका

विभाड़णहार, हारौ (हारी), विभाड़णियौ—वि० ।
विभाड़िओड़ौ, विभाड़ियोड़ौ, विभाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विभाड़ीजणौ, विभाड़ीजबौ—कर्म वा० ।
बिभाड़णौ, बिभाड़बौ, बीभाड़णौ, बीभाड़बौ, वभाड़णौ, वभाड़बौ, विब्भाड़णौ, विब्भाड़बौ, विब्भाडणौ, विब्भाडबौ, विभाडणौ विभाडबौ—रू० भे० ।

विभाड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, ध्वस किया हुआ, नष्ट किया हुआ. २ सहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. २ हानि किया हुआ, बिगाड़ किया हुआ. ५ विदीर्ण किया हुआ. ६ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, काटा हुआ. ७ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ. ८ मारा हुआ, वध किया हुआ. ९ युद्ध के सम्बन्ध में कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीत कर अधिकार में लिया हुआ. १० मिटाया हुआ. ११ त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ. १२ दण्डित किया हुआ, सजा दिया हुआ. १३ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १४ विजय किया हुआ, जीता हुआ.
(स्त्री. विभाड़ियोड़ी)

विभाड़ौ—देखो 'विभाड़' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—घट्टा धूम जोयणां अमंदां वेण जोन घट्टं, थट्टं थाट सोयणां समंदां लेण थाह । भलै धाडो गाहणी जला रौ ज्यूं लोयणां भीनौ, दोयणां विभाड़ौ हल्लै दळां रौ दाह । —र. हमीर

विभाजक–वि. [सं.] विभाजन करने वाला, बांटने वाला ।
सं. पु.—वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या को विभाजित किया जाता है, भाजक । (गणित)

विभाजण—देखो 'विभाजन' (रू. भे.)

विभाजणौ, विभाजबौ–क्रि. स.—१ अलग-अलग करना ।
२ बंटवारा करना, हिस्से करना ।
विभाजणहार, हारौ (हारी), विभाजणियौ - वि० ।
विभाजिओड़ौ, विभाजियोड़ौ, विभाज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विभाजीजणौ, विभाजीजबौ—कर्म वा० ।

विभाजन–सं. पु. [सं.] १ विभाग या हिस्से करने की क्रिया या भाव ।
२ पात्र, बरतन ।
रू. भे.—विभाजण ।

विभाजित–वि. [सं.] जिसके विभाग, हिस्से या खण्ड किये गये हों ।

विभाजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ अलग-अलग किया हुआ. २ बंटवारा किया हुआ, हिस्से किया हुआ ।
(स्त्री. विभाजियोड़ी)

विभाज्य–वि. [सं.] जिसका विभाजन करना हो या कर दिया गया हो, विभाजन करने योग्य ।

विभाडण, विभाडणि, विभाडणी, विभाडणौ—देखो 'विभाड़ण' (रू. भे.)
उ०—कन्हराव कुळ तिलक, जोध जग जेठी 'जाल्हव', 'छाडौ' 'तीडौ' 'सलख', वीर वैरी विभाडण । —गु. रू. बं.

विभाडणौ, विभाडबौ—देखो 'विभाड़बौ, विभाड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ विभाड गयंद मयंद विध, महि सांमंद इधकै मच्छरि । 'सूरउत' प्रगट नवनंद सिर, गरुअति मेर गिरंद सिरि । —गु. रू. बं.
उ०—२ जिम धायौ हणमंत, द्रोण पव्वै उप्पाडण । जिम धायौ भीमेण, दैत लंक मीर विभाडण । —गु. रू. बं.
उ०—३ रूठौ सीस विहारियां, दिल्लीपति सुरतांण । खांन पहाड विभाडियौ, बैठा फिरै पठांण । —गु. रू. बं.
उ०—४ इग्यारै खोहणी, खांन बारेह विभाडै । अरि उलाळ रिणताळ, गज्ज गयणाग भमाडै । —गु. रू. बं.
विभाडणहार, हारौ (हारी), विभाडणियौ—वि० ।
विभाडिओड़ौ, विभाडियोड़ौ, विभाड्योड़ौ—भू० का० कृ ।
विभाडीजणौ, विभाडीजबौ—कर्म वा० ।

विभाडियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विभाडियोड़ी)

विभाणौ, विभाबौ–क्रि. अ.—१ चमकना, झलकना ।
२ शोभा युक्त होना, शोभा पाना ।
विभाणहार, हारौ (हारी), विभाणियौ—वि० ।
विभायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विभाईजणौ, विभाईजबौ—भाव वा० ।
विब्भाणौ विब्भाबौ—रू० भे० ।

विभाभांनु, विभाभांनू–सं पु. [सं. विभा+भांनु] अग्नि, आग । (अ. मा.)

विभायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, झलका हुआ. २ शोभा-युक्त हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ ।
(स्त्री. विभायोड़ी)

विभाव–स. स्त्री. [सं. विभावः] १ रति या रस-विधान (साहित्य) में भावों का शरीर या मन को किसी विशेष परिस्थिति में पहुंचाने वाली अवस्था विशेष ।
वि. वि.—आलंबन और उद्दीपन इसके दो भेद हैं ।
२ देखो 'वैभव' (रू.भे.)

विभावन–सं. पु. [सं.] १ विवेक, विचार ।
२ वाद विवाद ।
३ साहित्य में वह अवस्था जिसके कारण पात्र में प्रदर्शित भाव पाठक या दर्शक अनुभव करता है ।

विभावना-सं. स्त्री. [सं.] साहित्य में एक अर्थालंकार विशेष इसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबंध होने से भी कार्य की सिद्धि प्रदर्शित की जाती है।

वि. वि.-इसके छः भेद कहे गये हैं—(१) जिसमें कारण के अभाव में भी कार्योत्पत्ति हो. २ जिसमें कारण की अपूर्णता में भी कार्योत्पत्ति हो, ३ जिसमें प्रतिबंधक तत्व के उपस्थित होते हुए भी कार्योत्पत्ति हो (४) जिसमें कारणांतर से जिस कार्य का जो कारण हो, उसके अभाव में किसी अन्य कारण के द्वारा कार्योत्पत्ति हो। (५) जिसमें विपरीत कारण से कार्योत्पत्ति हो। (६) जिसमें कार्य से कारण की उत्पत्ति हो।

विभावरि, विभावरी-सं. स्त्री. [सं. विभावरी] १ रात, रात्रि।
(अ. मा., नां. मा, ह. नां. मा.)

उ०—रज डंबर अंबर मग्ग चढ़ै, भ्रम कोक विभावरि सोक बढ़ै। नभ देव विमांन न की अवली, उडि गिद्धनि के गन संग चली।
—ला. रा.

२ वेश्या। ३ चतुर व मुखरा स्त्री। ४ कुटनी, दूती स्त्री ५ पतिता स्त्री, पथभ्रस्ट स्त्री। ६ व्यभिचारिणी स्त्री। ७ पहली पत्नी के जिन्दावस्था में लाई गई दूसरी स्त्री, रखैल।

रू. भे.—बिभावरी।

विभावरिस, विभावरीस-सं पु [सं विभावरी+ईश] १ चन्द्रमा, चान्द। २ उल्लु घुग्घु।

विभावसु, विभावसू-स पु [सं. विभा+वसु] १ वह वस्तु जो अधिक प्रकाशमय हो।

२ सूरज, सूर्य। (नां, मा., ह. नां. मा., क. कु वो.)

३ चान्द, चन्द्रमा।

४ अग्नि, आग। (ह. नां. मा.)

५ गले का आभूषण, हार।

६ आठ वसुओं में से एक वसु, जो दक्षपुत्री वसु तथा धर्म के आठ पुत्रों में से अन्यतम थे। ये व्युष्ट, रोचि, आतप आदि के पिता व उषा के पति थे।

७ विवस्व का एक पुत्र।

८ युधिष्ठर को विशेषादर देने वाला एक ऋषि।

९ मुर नामक दैत्य का पुत्र, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।

१० नरकासुर के सात पुत्रों में से एक।

११ सुप्रतीक ऋषि का एक भाई जो स्वभाव से क्रोधी था, उक्त महर्षि के शाप के कारण कछुआ हुए थे, और इसी अवस्था में गरुड़ ने इसका भक्षण किया था।

१२ एक गंधर्व, जिसने गायत्री से देवताओं का सोम छीन लिया था।

१३ वृत्र-इन्द्र युद्ध के समय वृत्र-पक्ष का एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

१४ द्युति का पति एक वसु। सोम से प्रीति के कारण द्युति ने इसका त्याग किया था।

१५ एक वैश्य, जिसे पूजापाठ के समय अभद्र घंटा का निनाद करने के कारण मृत्युपरान्त घटा के आकार का मुख प्राप्त हुआ था।

रू. भे.—विभावसु, बिभावसू, विभोवस, विभोवसु।

विभास सं. पु [सं.]-१चमक, तेज, प्रकाश, दीप्ति।

२ सवेरे के समय गाया जाने वाला एक राग विशेष। (संगीत)

उ०-१ छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोवती। भजे **विभास** भैरवी, रळी कळी कळी रवं।
—रा. रू.

उ०—२ दोय घड़ी रात लारली रहै सो ब्रह्म मुहूरत। इण वेळा **विभास** वेळावळ में लाखो-फूलांणी गवीजै—प्रह लाखौ सु विहांण।
—बां. दा. ख्यात

उ०—३ रात तौ इण रंग मैं विदित हुई। इतरै परभात हुवौ। भैरु **विभास**। विलावलि को वखत आयौ। गुणीजनां राग भिलायौ।
—पनां

३ एक देवयोनि विशेष।

विभासक-वि. [सं] १ चमकने वाला, प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्। २ चमकाने वाला, प्रकाश युक्त करने वाला।

विभासणौ, विभासबौ-क्रि. अ.—१ चमकना, झलकना।

क्रि. स.—२ चमकाना, झलकाना।

विभासणहार, हारौ (हारी); विभासणियौ—वि०।

विभासिओड़ौ, विभासियोड़ौ, विभास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभासीजणौ, विभासीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभासा-सं स्त्री. [सं.] चमक, आभा, कान्ति, दीप्ति।

विभासियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, झलका हुआ. २ चमकाया हुआ, झलकाया हुआ।

(स्त्री. विभासियोड़ी)

विभिंदु, विभिंदुक-सं. पु [सं.] एक दानशूर राजा, जिसने मेधातिथि काण्व नामक आचार्य को ४८ हजार गायें दान में दी थी।

विभिखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

विभिन्न-वि. [सं.] १ तोड़ा या टूटा हुवा, छिदा या छेदा हुआ।

२ पृथक, जुदा।

३ घायल, विधा हुआ, विद्ध।

४ उद्विग्न, विकल, हताश।

५ अनेक प्रकार का, कई प्रकार का।

विभिसण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

विभीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

उ०—१ धरी दधि पाज पहाड़ां धार, पदम्म अढार उतारे पार। पड़े तद आंगा विभीखण पाय, लियौ जद राघव कंठ लगाय।
—ह. र.

उ०—२ नमो रण रावण-मारण-रांम, नमौ किय लिद्ध विभीखण कांम। नमो कन्ह रूप निकंदण कस, नमौ ब्रजराज नमौ जदुवस।
—ह. र.

विभीत-वि. (स्त्री. विभीता) डरा हुआ, भयभीत।

सं. पु.—बहेड़ा या बहेड़े का वृक्ष।

विभीतक-सं. पु.-[सं. विभीतकी, विभीता] बहेड़ा या बहेड़े का वृक्ष।

विभीसण-वि. [सं विभीषण] डरावना, भयावह।

सं. पु.—१ एक यक्ष।

२ रावण का कनिष्ठ भाई, जो ब्रह्मा के महामति विद्वान पुलस्त्य ऋषि का पुत्र विश्रवस् ऋषि एवं सुमालि राक्षस की लक्ष्मी देवी के समान रूपवती पुत्री कैकसी के तीन पुत्रों में से एक पुत्र।

वि. वि.—यह धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार एवं जितेन्द्रिय था। इसने अपने बड़े भाई रावण को राम की पत्नी सीता को वापिस लौटाने का अनुग्रह करने पर रावण ने क्रुद्ध हो कर इसे अपमानित किया था। इसीलिए यह अपने अनल, संपाति, पनस और प्रमाति नामक राक्षस मित्रों के साथ राम की शरण में आगया था। इसने राम को रावण का वध करने के लिए अनेक परामर्श दिये एवं रावण के कार्यों व गुप्त सूचनाओं का परिचय राम को देकर युद्ध में सहायता प्रदान की थी। इसने ब्रह्मा की अनन्य भक्ति की थी। शैलूष गन्धर्व की पुत्री सरमा इसकी पत्नी थी जिसके गर्भ से कला नामक पुत्री उत्पन्न हुई थी। रावण वध के बाद राम ने इसे ही लंका का राजतिलक किया था।

३ विभीषणवंशीय लका का एक नरेश जिसे पाण्डवों ने अपने दक्षिण दिग्विजय के समय परास्त किया था।

रू. भे.—बब्भीखण, बब्भीछण, बब्भीसण, बभीख, बभीखण बभीसण बभ्भीखण, बभ्भीछण, बभ्भीसण, बिभीखण, बिभीसण, वीभीछन, भभीखण, भभीसण, भभ्भीखण, भभ्भीसण, वब्भीखण, वब्भीसण, वभीखण, वभीसण, विबिखण, विबिसण, विबीखण, विबीसण, विभिखण, विभिसण।

अल्पा.,—वब्भीखणौ।

विभीसणा-सं. स्त्री. [सं. विभीषणा] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

विभीसिका-स. स्त्री. [सं. विभीषिका] १ भय प्रदर्शन।

२ भयंकर बात या भयानक कांड।

विभु, विभू-वि. [सं. विभु] १ जो सर्वगत एवं सर्वव्यापक हो।

२ बहुत बड़ा, महान्।

३ अटल, दृढ़।

४ बलवान्, शक्तिशाली।

५ आत्मसंयमी, जितेन्द्रिय।

सं. पु. [सं. विभुः] १ उड़ायी तरल पदार्थ विशेष।

२ आकाश, व्योम।

३ ब्रह्मा।

४ भगवान् श्रीविष्णु।

५ शिव, महादेव।

६ प्रभु, ईश्वर, स्वामी।

उ०—नमौ अग्राहचाह स्रवन पुट सारु सत नमौ, नमौ लोकाध्यक्षा-भ्रत विजयलक्ष्या पत नमौ। नमौ विस्वाधारी अनल अघहारी विभु नमौ, नमौ भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वंभर नमौ। ---ऊ. का.

७ नौकर, सेवक।

८ काल, समय।

९ सौवीर देश के राजा शकुनि का भाई जो अपने चार भाइयों सहित भीम के साथ हुए रात्रि युद्ध में मारा गया था।

१० रैवत मन्वन्तर का इन्द्र।

११ स्वायंभुव मन्वन्तर में हुआ भगवान् श्रीविष्णु-अवतार।

१२ स्वायंभुव मन्वन्तर के तुषित देवों में से एक।

१३ साध्य देवों में से एक।

१४ ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंशज प्रस्ताव और नियुत्सा के पुत्रों में से एक जिसकी पत्नी का नाम रति और पृथुसेन का पिता था।

१५ यज्ञदेव एवं दक्षिणा के पुत्रों में से एक देव।

१६ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक दानव।

१७ एक राजा जो सुविभु का पिता एवं सत्यकेतु का पुत्र था।

१८ वरेण्य नामक ऋषि, जो भृगु वारुणि का पुत्र था।

१९ भग एवं सिद्धि के पुत्रों में से एक भव देव।

२० जिताजित देवों में से एक देव।

२१ अभिताप देवों में से एक देव।

२२ मगधवंशीय महाबाहु राजा का नामान्तर।

२३ स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम जिसे कहीं-कहीं पर स्वयंभुव मनु का पौत्र भी मानते हैं।

२५ नृप, राजा। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बिभु, बिभू।

विभूखण— देखो 'विभूसण' (रू. भे.)

उ०—१ कापड माल असंख, हेम मिरण रयरण विभूखरण । परिमळ चंदन अगर, पांन कप्पूरह अस्सरण । —गु. रू. बं.

उ०—२ रंग राग विरणोद विसातरय बहुयं, चडि चाडति सुंदर मिंदरयं सहुयं । मिरण मांणक कुंदरण ककरणमं दिपतं, मोताहळ हार विभूखरणय वरिणतं । —गु. रू. बं.

विभूखरणौ, विभूखबौ—देखो 'विभूसरणौ, विभूसबौ' (रू. भे.)

विभूखणहार, हारौ (हारी), **विभूखणियौ**—वि० ।

विभूखिग्रोड़ौ, विभूखियोड़ौ, विभूख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विभूखीजणौ, विभूखीजबौ—कर्म वा० ।

विभूखा—देखो 'विभूसा' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

विभूखित—देखो 'विभूसित' (रू. भे.)

विभूखिग्रोड़ौ—देखो 'विभूसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विभूखियोड़ी)

विभूत—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

उ०—असटंग **विभूत** सनाह उपावै, लोह छत्तीस सिघार लियं । सिघ बारह पंथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप कियं ।
—गु. रू. बं.

विभूतसिद्ध, विभूतसिध, विभूतासिद्ध, विभूतासिध–सं. पु. [सं. विभूति+सिद्ध] १ शिव, महादेव ।

२ सिद्धिप्राप्त महात्मा ।

३ एक लोक देवता विशेष ।

वि. वि.—यह विभूतासिद्ध पश्चिमी राजस्थान के चारणवासी नामक गांव का निवासी सोलंकी राजपूत था । यह जंगल में रेवड़ (भेड़ व बकरियों का झुण्ड) चराया करता था एक बार जंगल में इसे 'पंरणो' सर्पने डस लिया । जिससे यह मर गया । मरने के बाद इसने अपनी बहन को ससुराल से पीहर पहुंचाई थी और भी कई चमत्कार बताये थे । इस कारण इसे देवता मान कर पूजा जाने लगा । बीकानेर डिवीजन के नोहर सरदार शहर और महाजन के क्षेत्र में इसकी बड़ी मान्यता है । सांप के काटे जाने पर घायल को इसके स्थान पर ला कर ढोल वादन के साथ उसकी मनोती मनाते है व रात्रि जागरण देते है जिसमें इसका सिरलोका गाते हैं। रेवड़ के ग्वाले एक गीत भी गाते हैं जिसमें अकाल मृत्यु और चमत्कारों का वर्णन एवं प्रशंसा है ।

रू. भे.—बभूतसिद्ध, बभूतसिध, बभूतासिद्ध, बभूतासिध, भभूतासिद्ध भभूतासिध, वभूतासिद्ध, वभूतासिध ।

विभूति–सं. स्त्री. [सं विभूतिः] १ बड़ा होने की अवस्था, बड़प्पन ।

२ स्वस्थ होने की अवस्था, ।

३ समवृद्धि, बढ़ोतरी ।

४ वैभव, ऐश्वर्य ।

५ धन, दौलत, सम्पत्ति ।

६ अधिकार, प्रभुत्व ।

७ कान्ति, दीप्ति, चमक ।

८ भगवान् श्रीविष्णु का नित्य और स्थायी माना जाने वाला ऐश्वर्य ।

९ दिव्य या अलौकिक शक्तियां, जिसके अन्तर्गत अरिणमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व, आदि आठ सिद्धियां मानी जाती है ।

उ०—निमो निमो नांराइरण, भगवंत निमो **विभूति** । तुझ तरणी वसदेव तरण, कुरण जांणै करतूति । —पी. ग्रं.

१० शिव और शैव आदि लोगों के शिर व शरीर पर लगाई जाने वाली वह राख या भस्म जो यज्ञादि के बाद बचती है ।

उ०—कांनै मुद्रा कनक की, आसरण चीता चरम । लगाय **विभूति** तप जप करें, तै साधै सिव धरम । —प. च. चौ.

११ भस्मी या राख ।

उ०—१ जगत विदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल । अंग **विभूति** मळे मृगछाळा, तू जन गुढियां खोल । —मीरां

उ०—२ बदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊ कपोळ । सेली-नाद **विभूति** न वटवा, अजुं मुनी मुख खोल । —मीरां

१२ सिद्ध पुरुषों के अग्निकुण्ड (धूंणी) की वह भस्मी जो रोग निवारणार्थ शरीर पर लगाई जाती है ।

१३ राम का एक दिव्य अस्त्र जो विश्वमित्र ने दिया था ।

१४ चमत्कार युक्त पुरुष ।

१५ मूर्खों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक व्यंग्य एवं सम्बोधन सूचक शब्द ।

१६ एक प्रकार का शारीरिक क्षुद्र रोग जिसमें शरीर पर हलके भूरे-भूरे दाग या चिन्ह बन जाते है । (शुभ-अशुभ)

१७ विश्वामित्र का एक ब्रह्मवादी पुत्र ।

रू. भे.—बभूत, बभूति, बभूती, बिभूत, बिभूति, बिभूती, भबूत, भवूति, भबूती, भभूत, भभूति, भभूती, वभुत, वभूत, वभूति, वभूती, विभूत, विभूती ।

विभूतिद्वादस, विभूतिद्वादसी–सं. स्त्री. [सं. विभूति+द्वादशी] प्रत्येक शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष ।

विभूतिमांन, विभूतिवांन–वि. [सं. विभूतिमान] १ शक्तिशाली, बलवांन ।

२ वैभवशाली, ऐश्वर्ययुक्त ।

३ धनी, सम्पत्तिशाली ।

४ कान्तियुक्त, चमकीला ।

विभुतिसिद्ध, विभुतिसिध—देखो 'विभूतासिद्ध' (रू. भे.)

विभूती—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

उ०—पीनाकी चक्रधारियां ज्यूं ग्रेम ग्रोपै तेगां पांणां, गणां मध्य देवां बीचा राजवं उपेग। विभूति अग पीतपट सुधारे जेहो बनौं, संभूनाथ माधव ज्यूं दुवौ इद तेग।

—महाराज भगतरांम हाडा रौ गीत

विभूतौ-वि.—१ राख या भस्मी लगाया हुआ।

२ देखो 'विभूतासिद्ध'।

रू. भे.—भभूतौ।

विभूवस, विभूवसु-सं. पु.—जिन ऋषि के पिता, एक ऋषि।

विभूसण-सं. पु. [स. विभूषणम्] १ अलंकार, आभूषण, जेवर।

२ अलंकृत, या आभूषित करने की क्रिया।

विभूषणकरता, विभूसणकार-सं. पु. [सं. विभूषणं+कर्ता] १ आभूषण जेवर आदि बनाने वाला, स्वर्णकार।

उ०······पाडकार तुडिकार आरामकार सास्त्रकार मंत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षीरकार शस्यकार वस्त्रकार **विभूसणकार** पुंतार अस्वसिक्षाकार रथकार साव्यकार······। —व. स.

वि.—अलंकृत या आभूषित करने वाला।

विभूसणौ, विभूसबौ-क्रि: अ.—१ अलंकृत होना, शोभित होना।

क्रि. स.—२ अलंकृत करना, शोभित करना।

विभूसणहार, हारौ (हारी), विभूसणियौ—वि०।

विभूसिग्रोड़ौ, विभूसियोड़ौ, विभूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभूसीजणौ, विभूसीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभूखणौ, विभूखबौ—रू० भे०।

विभूसा-सं. स्त्री. [सं विभूषा] १ शोभा, सुन्दरता।

२ शोभित होने वाली स्त्री, सुन्दरी।

रू. भे. —बिभूसा, विभूखा।

विभूसित-वि. [सं. विभूषित] (स्त्री. विभूसिता) १ अलंकृत, सुशोभित।

२ सजाया हुआ, सुसज्जित।

३ कान्ति युक्त, आभा युक्त।

उ०—महाराय स्रीकल्यांणमल जी जन्म महोच्छव मांगळीक वधावणा कराया। महाराजकुमार स्री दळपतिजी दिन-दिन स्वेत पक्ष चंद्रमा री ज्यूं परिवधवंत होता पूर्णिमा रे चद्रमा री परिसकळ कळा भरित **विभूषित** गात्र नीपना छै। —द. वि.

रू. भे.—विभूखित।

विभूसियोड़ौ-भू. का. कृ. १—अलंकृत हुवा हुआ. २ अलंकृत किया हुआ, शोभित किया हुआ।

(स्त्री. विभूसियोड़ी)

विभेद-सं. पु. [सं.] १ विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला तत्व, अन्तर, फर्क।

२ अनेक भेद-प्रभेद।

३ अंश, खण्ड, विभाग।

४ काटने की क्रिया, छेदने या तोड़ने की क्रिया।

विभेदक-वि. [सं.] १ खण्डन, छेदन या भेदन करने वाला।

२ अन्तर, फर्क, विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला।

विभेदण-सं. पु. [सं. विभेदनं] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने की क्रिया।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने की क्रिया।

३ अंश, खण्ड या विभाग करने की क्रिया।

४ काटने छेदने या तोड़ने की क्रिया।

वि. (स्त्री. विभेदणी, विभेदिणी) १ अन्तर, फर्क या विभन्नता प्रकट करने वाला।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने वाला।

३ खण्डन या विभाजन करने वाला।

४ काटने वाला, छेदने वाला, तोड़ने वाला।

रू. भे.—विभेदण, बिभेदन।

विभेदणौ, विभेदबौ-क्रि. स. [सं. विभेदनम्] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करना।

२ अनेक भेद-प्रभेद करना।

३ खण्डन या विभाजन करना।

४ काटना, छेदना, तोड़ना।

५ घुसाना, धंसाना।

६ ईर्ष्या उत्पन्न करना।

विभेदणहार, हारौ (हारी), विभेदणियौ—वि०।

विभेदिग्रोड़ौ, विभेदियोड़ौ, विभेदचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विभेदीजणौ, विभेदीजबौ—कर्म वा०।

विभेदियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ अन्तर फर्क या विभिन्नता प्रकट किया हुआ. १ अनेक भेद-प्रभेद किया हुआ. ३ खण्डन या विभाजन किया हुआ. ४ काटा हुआ, छेदा हुआ, तोड़ा हुआ. ५ घुसाया हुआ, धंसाया हुआ. ६ ईर्ष्या उत्पन्न किया हुआ।

(स्त्री. विभेदियोड़ी)

विभेदी—देखो 'विभेदक'।

विभोग-सं. पु.—१ राज्य कर।

२ जागीरदारों द्वारा कर स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अंश, हिस्सा, हासिल।

३ प्रेमपूर्ण आमोदप्रमोद, विलास।

उ०—राति दिवस रंगै रमै, नवरस भोग **विभोग**। सारीखी जोड़ी मिळी, देव तणै संजोग। —ढो. मा.

रू. भे.—बीभोग।

अल्पा.—विभोगौ।

विभोगौ—देखो 'विभोग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—देलवाड़ौ विभोगौ लेतौ सु नहीं लै, दांण लेतौ सु लेसी।
—नैणसी

विभोर-वि [सं] १ आनन्द मग्न, लीन।

२ मदमस्त, मत्त।

३ विकल, विह्वल, व्याकुल।

विभोवस, विभोवसु—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

विभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—१ जर जवहर घर जोरुवां, लूंटांणी सम लाज। मेछां नीमड़ियौ विभौ, सुण चडियौ महाराज। —रा. रू.

उ०—२ हिंदुवै छात लायौ हियै, वडौ जतन पायौ विभै। नवकोट सोच मिटियौ नरां, इसी भांत मिळतां 'अभै'। —रा. रू.

३ परसी कमधां मधुपुरी, जंमण किया सिनांन। वूठा झड़ मंडै विभै करै उमंडै दांन। —रा. रू.

उ०—४ दसरत्थ विभै इम नजर दीघ, कांमना पुत्र घरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अमाप, आविया ब्रह्म सिव विसन आप। —सू. प्र.

उ०—५ विभचार मांय पायौ विभौ, जातां जुगां न जावसी। नित स्वाद लियौ पर नार में, याद घणा दिन आवसी। —ऊ. का.

उ०—६ दीर्जं जोड किसौ न्रप दौलत, राज विभौ अवरेख। सात सुखां भुगतै दिन साजा, वासव हूत विसेख। —र. रू.

उ०—७ इद्र प्रभत इंद्रह विभौ, इंद्र छभा अैनांण। इद्र समीवड रट्ठवड, हिंदूवै सुरतांण। —गु. रू ब.

उ०—८ हीर चीर हेम तार घड़ी मैं विरांण होसी, लाखां द्रव्य विभौ सबै हाथी घोड़ा लांठ। गांम धांम झूठा जांणै धंधै झूठा लागा नरां, गार रा मिरग रै पड़ी वायरा री गांठ। —ओपौ आढौ

विभ्रंस-सं. पु [सं. विभ्रंश] १ अवनति, पतन।

२ बिनाश, विध्वंस।

३ हानि, नुकसान।

४ ऊंचा कगार।

५ पहाड़ के शिखर पर का चोरस मैदान।

विभ्रंसण-सं. पु. [सं. विभ्रंशन्] १ विनाश करने की क्रिया, विध्वंस करने की क्रिया।

२ हानि करने की क्रिया, नुकसान करने की क्रिया।

३ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया।

विभ्रंसणौ, विभ्रंसबौ—क्रि. स. [सं. विभ्रंश] १ विनाश करना, विध्वंस करना।

२ हानि करना, नुकसान करना।

३ तहस-नहस करना, वर्वाद करना।

४ संहार करना, मारना।

विभ्रंसणहार, हारौ (हारी), विभ्रंसणियौ—वि०।

विभ्रंसिओड़ौ, विभ्रंसियोड़ौ, विभ्रंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभ्रंसीजणौ, विभ्रंसीजबौ—कर्म वा०।

विभ्रंसियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विनाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. २ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ संहार किया हुआ, मारा हुआ।

(स्त्री. विभ्रंसियोड़ी)

विभ्रम-सं. पु. [सं. विभ्रमः] १ घूमने की क्रिया, भ्रमण, चक्कर।

२ भूल, गलती।

३ उतावलापन, उद्विग्नता।

४ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—१ उमा कह्यौ इम ईस नै, उपज्यौ विभ्रम एह। किंकरि ऊपर महर कर, संकर! मेट संदेह। —र. रू.

उ०—२ भूपति हसैं देखि सिधभेसां, असि कसि वाग कीध आदेसां हसतौ न्रप देखै सिध हसियौ, विभ्रम तांम न्रपति उर वसियौ।
—सू. प्र.

उ०—३ करि सनांन श्रम करै, धरै प्रमध्यांन स्यांमध्रम। काया जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम। —सू. प्र.

५ वह क्रिया जिससे काम वासना उत्प्रेरित हो, प्रीतिद्योतक हाव-भाव।

६ आश्चर्ययुक्त, चकित।

उ०—१ गज कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतंग महल अटाळा। सपेखं धांम वांम, विसक्रमा विभ्रम भवेत। —गु. रू. बं.

उ०—२ विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणियं सविता। वासर विसाळ लहियं, चक-वांणै मंगळ भवण। —गु. रू. बं

७ संयोग शृंगार के प्रसंग में स्त्रियों का एक हाव-भाव जिसमें वह कभी क्रोध, कभी हर्ष प्रकट करती है और उत्सुकतावश उलटे-पुलटे वस्त्राभूषण पहन लेती है (साहित्य)

उ०—चित्रसालि चउमास रहै लहै गुरु आदेसा, कोसि कांमिनी न्रत्य करइ सुर सुंदरी जैसा। हाव भाव बिभ्रम करइ कुं भयै निठुर निटोल, पूरब प्रेम संभाल प्रियु तूं मांन हमारौ बोल कै।
—स. कु.

रू. भे.—विभ्रम्म।

विभ्रमणौ, विभ्रमबौ–क्रि. अ. [सं. विभ्रमणं] १ घूमना, चक्कर लगाना।

२ चिंतातुर होना, चिंतित होना।

उ०—भूपति आयौ पुर विभ्रमियं, सारंगविजै मिळै तिण समियै आसीवाद करै इम अक्खे, राजा किण कारण भ्रम रक्खे।

—सू. प्र.

३ भूल या गलती में आना।

४ भ्रमित होना, शंकायुक्त होना।

५ आश्चर्ययुक्त होना, चकित होना।

६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित होना।

७ उतावला या उद्विग्न होना।

क्रि. स.—८ भ्रमित करना, शंकित करना।

९ आश्चर्यान्वित करना, चकित करना।

१० चिंतातुर करना, चिंतित करना।

११ गल्ती करना, भूल करना।

विभ्रमणहार, हारौ (हारी), विभ्रमणियौ—वि०।

विभ्रमिओड़ौ, विभ्रमियोड़ौ, विभ्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभ्रमीजणौ, विभ्रमीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभ्रम्मणौ, विभ्रम्मबौ—रू. भे.।

विभ्रमा–सं. स्त्री.—१ आभा, कान्ति, शोभा, सुन्दरता। (अ. मा., नां.-मा., ह. नां. मा.)

२ बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

विभ्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ घूमा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. २ चिंतातुर हुवा हुआ, चिंतित हुवा हुआ. ३ भूल या गलती में आया हुआ. ४ भ्रमित हुवा हुआ, शकायुक्त हुवा हुआ. ५ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ, चकित हुवा हुआ. ६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित हुवा हुआ. ७ उतावला या उद्विग्न हुवा हुआ ८ भ्रमित किया हुआ, शंकित किया हुआ. ९ आश्चर्यान्वित किया हुआ, चकित किया हुआ. १० कामवासना की ओर उत्प्रेरित किया हुआ. ११ चिंतातुर किया हुआ, चिंतित किया हुआ. १२ गल्ती किया हुआ, भूल किया हुआ।

(स्त्री. विभ्रमियोड़ी)

विभ्रम्म—देखो 'विभ्रम' (रू. भे.)

उ०—पडै पूर लोह, महा जुद्ध मोहं। घोरं घार तम्मं, सविता विभ्रम्मं।

—गु. रू. बं.

विभ्रम्मणौ, विभ्रम्मबौ—देखो 'विभ्रमणौ, विभ्रमबौ' (रू. भे.)

विभ्रम्मणहार, हारौ (हारी), विभ्रम्मणियौ—वि०।

विभ्रम्मिओड़ौ, विभ्रम्मियोड़ौ, विभ्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभ्रम्मीजणौ, विभ्रम्मीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभ्रम्मियोड़ौ—देखो 'विभ्रमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विभ्रम्मियोड़ी)

विभ्रस्ट–वि. [सं. विभ्रष्ट] १ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, पतित।

२ नष्ट किया हुआ, ध्वस्त।

विभ्रांत–वि. [सं.] १ घूमाहुआ, चक्कर खाया हुआ।

२ भ्रमित हुवा हुआ, शंकित।

३ चिंतातुर, चिंतित।

४ आश्चर्यान्वित, चकित।

५ उद्विग्न।

विभ्रांतसील–वि. [सं. विभ्रान्त+शील] १ चिंतातुर, खिन्नचित्त व्याकुल।

२ नशे में चूर।

सं. पु. [सं. विभ्रान्त+शीलः] १ बन्दर, बानर।

२ सूर्य मण्डल।

३ चन्द्रमण्डल।

विभ्रांति–सं. स्त्री. [स. विभ्रान्ति] १ भ्रमण, चक्कर।

२ भूल, गलती।

३ सौन्दर्य, शोभा।

४ शंका, शक, सन्देह।

५ भ्रान्ति, धोखा।

६ घबराहट, उद्विग्नता।

विभ्राज–सं. पु. [सं.] १ ययाति वंशज एक राजा।

२ सुकृत या सुकृति राजा का पुत्र एक राजा।

३ अनघ नामक पांचाल देश का राजा, जो ब्रह्मदत्त राजा का पिता था।

विभ्राजसोरय–सं. पु. [सं. विभ्राजसोर्य] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नामान्तर।

विमंत्री–सं. पु–आर्या गीति या खंधांण (स्कंधक) का एक भेद विशेष।

उ०—नंद भइ भणि नांम सेस सारंग सिव बंभह, वारण वरण वखांणै नील मंदनहं ताटकह। सेखर सरपिणि सोइ गगन गिणि सरभ विमंत्री, खीर नयर नर निधि भाखि निहल इण भती।

—पिं. प्र.

विमगौ–वि.—१ अद्भुत, अनोखा।

२ बिना मांगा हुआ।

उ०—सुणां नाग नर देव सकोई, विमगौ दांन अछूती वात। कीवी किणी न कोई करसी, 'पदम' जिसी लैंणायत पात।

—पदमसिंघजी रौ गीत

विमची-सं. स्त्री.—एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष ।

रू. भे.—विव्ची ।

विमणउ, **विमणौ**-सं. पु.—१ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष विशेष ।

२ देखो 'दूंणौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विमन' (रू. भे.)

उ०—पहिली होय दयांमणउ, रवि आथमणउ जाइ । रवि ऊगइ विहसइ कमळ, खिण इक **विमणउ** थाइ । —ढो. मा.

विमता-सं. स्त्री.—१ आपत्ति, विपत्ति ।

२ नम्रता, धैर्य ।

[सं. वि=रहित+रा. मता=धन, दौलत] ३ कंगाली, गरीबी, निर्धनता ।

उ०—**विमता** का बाग, भूतूं का भंडार, सिकोतरियूं का सहायक, डाकणियां का दार : रोग का रजवाड़ा, सोग की सिरकार. कायरां की कुटी, चोरूं का आवार । —दुरगादत्त बारहठ

विमति-वि. [सं.] बुद्धीरहित, मूर्ख ।

विमद-वि. [सं.] जो मतवाला न हो, मद-रहित ।

स. पु.—सत्यसन्ध राजा ।

विमधु-सं. पु. [सं. वि=विशेष+मधु=मीठा] अमृत, पियूष ।

उ०—लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानंतर । वेद चंद्र मिण किया, भूम रंभा बळ कुंजर । धेन पूज सुरधेन, **विमधु** चरणांम्रत वंदां । धनुख मांण न्रप कळप, संख जस मद् विरद्दां । —रा. रू.

वि.—१ विशेष मीठा ।

[सं. वि.रहित+मधु=मीठा] २ कड़वा ।

[सं. विमुग्ध] ३ अज्ञानी, मूर्ख ।

४ विशेष मोहित, उन्मत्त ।

५ विकल, व्याकुल ।

[सं. विमुद] ६ उदासीन, खिन्न ।

विमन-वि.—१ उदासीन, खिन्नचित ।

२ व्याकुल, उद्विग्न ।

३ चिंतित, दुःखी ।

४ क्रूर, क्रुद्ध, निर्दयी ।

रू. भे.—बिमन, **बिमनौ**, बिमन्न, बिमन्नौ, विमणउ, विमणौ, विमनौ, विमन्न, विमन्नौ ।

विमनुस्या-सं. स्त्री. [सं. विमनुष्या] कश्यप एवं दनु की कन्याओं में से एक कन्या, अप्सरा ।

विमनौ, **विमन्न**, **विमन्नौ**—देखो 'विमन' (रू. भे.)

विमर—१ देखो 'विवर' (रू. भे.)

उ०—१ पछै देवी सैंणी चारणी दिल्ली आई तरै मालदे ही देवी साथै दिल्ली आयौ, पछै देवी सैणी **विमर** मांहै पैठी तठै मालदे ही विमर मांहै साथै पैठौ । —नैणसी

उ०—२ पक्खे गोरखनाथ, कमण जाइ पैसे **विमर** । पक्खे रांम दहकंध, कमण वेधे एकै सर । —गु. रू. बं.

उ०—३ उतराधौ वाउ वाजियौ । हेमत रा बरफ ऊपड़िया टाढौ टमकियौ, प्राळौ पडण लागौ । जिकै धरती रा धणी पताळ वासी भुयंग नै घण रा धणी दौलतवंत औ विन्है एकै वग हूंता सु धरती री पुड़ भेद नै **विमरै** पैठा । उठै रहण लागा । —रा. सा. सं.

उ०—४ तै 'भांण' तणौ अवसांण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण **विमर** । जोधार पखर लक्ख जिसौ, निरौ एक पक्खर निडर ।

—गु. रू. बं.

उ०—५ 'अमरमी' **विमर**' पैठौ अरांण, 'रासाउत' साधक रूक पांण । साहिब्ब-खांन 'नाहर' सुजाव, धण भूंभो वाहै सत्रां धाव ।

—गु. रू. बं.

उ०—६ बैरो हुओ **विमर** में बैठौ, पल लागी सूतौ सुख पोढ । थाकौ गुरड़ डोकरौ थूं थयौ, ऊपर लीवी रजाई ओढ ।

—टीकमदास

२ देखो 'विमळ' (रू. भे.)

उ०—रुघवंसी राठौड हर, तेरह साख कमध । **विमर** सकत्ती वरणावां, वंधै रूपक बंध । —गु. रू. बं.

विमरद-सं. पु. [सं. विमर्दः] १ अच्छी तरह मलने, मसलने की क्रिया, उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने की क्रिया, स्पर्श ।

३ रगड़ने या रौंदने की क्रिया ।

४ युद्ध, संग्राम ।

५ नाश या बरबादी ।

६ मारने, संहार करने की क्रिया ।

७ कष्ट देने की क्रिया, दुःख देने की क्रिया ।

८ खग्रास नामक ग्रहण का नामान्तर ।

९ वह व्यक्ति जिसकी मूत्रेन्द्रिय बेकार हो या नहीं भी हो, नपुंसक हिंजड़ा ।

१० सामर्थ्यहीन व्यक्ति ।

११ किरात राजा ।

१२ सूर्य-चन्द्र समागम ।

रू. भे.—विमरद्द ।

विमरदक-वि. [सं. विमर्दकः] १ मर्दन करने वाला, मसलने वाला, उबटन करने वाला ।

२ रगड़ने या रौंदने वाला, कुचलने वाला ।

३ नाश या बरबाद करने वाला ।

४ मारने वाला, संहार करने वाला ।

५ युद्ध करने वाला, संग्राम करने वाला ।

सं. पु.—चन्द्र-सूर्य ग्रहण या समागम ।

विमरदण—सं. पु. [सं. विमर्दनः] १ मलने, मसलने या उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने या स्पर्श करने की क्रिया ।

३ रगड़ने, रौंदने या कुचलने की क्रिया ।

४ युद्ध, संग्राम ।

५ नाश, बरबादी ।

६ मारने या संहारने की क्रिया ।

७ दुःख या कष्ट देने की क्रिया ।

विमरदित—वि. [सं. विमर्दित] १ मला हुआ, उबटन किया हुआ ।

२ छूआ हुआ, स्पर्श किया हुआ ।

३ कुचला या रौंदा हुआ ।

४ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया ।

५ नाश किया हुआ, बरबाद किया हुआ ।

६ मारा हुआ, संहार किया हुआ, मृत्त ।

७ पीड़ित, दुःखी ।

देखो 'विमरद' (रू भे.)

विमरस—सं. पु. [स. विमर्श] नाटक की पांच सन्धियों में से एक सन्धि विशेष, मुख्यफल का उपाय गर्भसन्धि की अपेक्षा अधिक उद्भिन्न होता है किन्तु शापादि के कारण अन्तराय युक्त होती है ।

वि. वि.—इस सन्धि के तेरह अंग अर्थात भेद होते हैं जो निम्न-लिखित है—अपवाद, सकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान, और छादन ।

विमरीर—वि.—जबरदस्त, महान्, शक्तिशाली ।

उ०—१ गाजै घण वाजै त्रबागळ, दुगम रूप **विमरीर** सफै दळ । हरख सनेह करै भ्रम हित नूं, पट्टण राज दीध प्रोहित नूं —सू. प्र.

उ०—२ अति भूळ गहमह आवळा, **विमरीर** भड़ रिण बावळा । खग धार आछट है खुरा, धर भोगवंतां मुरधरा । —सू. प्र.

उ०—३ इम कहै पोरस ऊफणे, **विमरीर** झळहळ दळ वणे । चढि तुरंग थाट चलाविया, इम कही गढ पुर आविया । —सू. प्र.

उ०—४ बह मडै गजां मेघाडंबर, कठठै आराबा सकळ । तन ससत्र कसै चढिया तुरां, दुगम सूर **विमरीर** दळ । —सू. प्र.

विमळ, विमल—वि. [सं. विमल] १ मल रहित, निर्मल ।

२ सफेद, साफ, स्वच्छ, चमकीला, उज्जवल ।

उ०—जिण हिज वार तेजमणि जादव, घर बुगलांण पुरी नव लाधव । इम निसि सुकळ वाग न्रप आए, **विमळ** छंद्रका साज वणाए । —सू. प्र.

३ जिसमें आर-पार देखा जा सकता हो, पारदर्शक ।

४ जिसमें कोई दोष न हो, दोष रहित, निर्दोष ।

५ सुन्दर, मनोहर, शोभायुक्त ।

उ०—१ अधरां डसणां सूं उदै, **विमळ** हास दुतिवंत । जो संध्या सूं चद्रिका, फैली जांण फबंत । —बां. दा.

उ०—२ मूंछां बाय फुरूकिया. रसण झत्रूकै दंत । सूतो सैलां धोकरै हूँ बळिहारी कंत । कत बळिहारी लै मनाविय कांमणी । घरै मन धू-धड़ साथि सकळा धणी । पाड़ि सत्र लोहड़ां धोकरै पोढियो, **विमळ** मूछां मिळै फरूकै बावियो । —हा झा.

६ पावन, पवित्र ।

उ०—१ ओखामंडळ **विमळ** थळ, जळ आव्रत जगवंद । धुज उज्जळ देवळ अमळ, निरख नमै नरयंद । —रा. रू.

उ०—२ पेखै कोइ कहति एक एक प्रति, **विमळ** मंगळ ग्रह एक वगि । एणि कवण सुभ क्रम आचरतां, जांणियै वेलि जपति जगि —वेलि

उ०—३ नाथ अनाथ निराळंब तु नारीयण सदा सिवि तूं हीज तुं भगत कीधो सधण । चक्रधर निमो चक्रभुज तुं हीज, चिदांनंद, **विमळ** ब्रह्मग्यांन सब ग्यांन तुं गोपि विदि । —पी. ग्रं.

उ०—४ छत्रपत्ति प्रेम भाव सुख छाजै, **विमळ** इसा मुनि तठै विराजै । थिर करि पाइ मिस्ट जळ थाटै, चंदणादि लै पर बह चाटै । —सू. प्र.

उ०—५ लोहित चदण देव वलभा धरकाळेय कहै कवि धीर । केसर तणो तिलक नित कीजै, **विमळ** भजन कीजै बळिवीर । —ह नां. मा.

७ स्वच्छ, साफ ।

उ०—१ त्रपति होइ मुख **विमळ** करै तदि, जुत मुखवास अग्र धारै जदि । मिरच सीत एळच मधि पावै, खितपति पांन कपूर खुवावै । —सू. प्र.

उ०—२ आंनन **विमळ** मुखोप अपारां, तांबूलादि दियै तिण वारां । एहिज सदन सिखर हिमवंतां, आसण पंखी पसम अनंतां । —सू. प्र.

८ शुद्ध । (वांणी)

उ०—ऐसी विध पंडतराज चातुरच कळा प्रवीण त्रिलोकूं का प्रबंध अनेक विध **विमळ** बांणी सै उच्चरै जिनूं से रीझ स्रीमहाराज कनक जग्योपवीत चढाया । —सू. प्र.

सं. पु.—१ चांदी ।

२ सेंधा नमक ।

३ मणिवर एवं पुण्यजनी के पुत्रों में से एक यक्ष ।

४ जीमूत राजा का पुत्र एवं भीमरथ राजा का पिता, एक राजा।

५ इल राजा का पुत्र, जो दक्षिणापथ का राजा था।

६ राम के अश्वमेधीय यज्ञ के समय शत्रुघ्न का सहायक रत्नातट नगरी का एक राजा।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें छत्तीस मात्राएँ होती हैं।

उ०—ताइ सातसौ छैनालीस, बदिग्रा रूप बरणवा बीस। मात्रा छत्रीस एह अनमांन, विमळ छंद सुणिजौ गुणवांन। —ल. पिं.

८ देखो 'विमलनाथ'

उ०—१ विमल जिनेसर सुणि ग्रलवेसर, माहरा वचन ग्रनूप। मनड़ौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधौ रे कमल मधूप।-वि. कु.

उ०—२ केवलग्यांनी नइं निरवांणी, सागर महायस विमल वर वांणी। सरवानुभूति स्रीधर दत्त नांमी, दामोदर स्री सुतेज स्वामी। —स. कु.

उ०—३ रिसहु थप्पिउ जेण सु निरम्मलौ, विमल नांमु वहइ गुणि उज्जलो: ठविउ नेमि जिणिइ जगवल्लहउ, परमतेजिहिं तेजलु तै कहउ। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—बिमळ, बिमल, बिमळा, विमर, विम्मळ, विम्मल।

विमलक-सं. पु. एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, नग।

विमलकथ-वि.—सुयशधारी, कीर्त्तिवान।

विमलगिरिंद, बिमलगिरि—शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम।

उ०—१ तासु दुरगति न व्हैं नरक त्रियंच री, सुगति सुर नर लहै सुगति सारी। विमल ग्रातम तिकौ विमलगिरि निरखसी, घनौ धन स्रीधरमसील धारी। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ संघ ग्रनेक तिहां ग्राविया, भेटण विमलगिरिंद। लोकतणी संख्या नहीं, साथि गुरु जिणचद। —ऐ. जै. का. सं.

विमलजिन—देखो 'विमलनाथ'।

उ०—दिव्य नाद सुर दुंदुभि वाजइ, पुस्प व्रस्टि सुर विरचीजइ री। समयसुंदर कहइ तेरै विमलजिन, प्रातीहारज पेखीजइ री। —स. कु.

विमळता, विमलता-सं. स्त्री. [सं. विमल+रा. प्र. ता.] १ निर्मलता स्वच्छता, उज्जवलता।

२ पावनता, पवित्रता।

३ सुन्दरता, मनोहरता।

४ मधुरता, मीठापन।

विमलतीरथ-सं. पु. [सं. विमलतीर्थ] एक पवित्र तीर्थ स्थान, जहां तालाबों में स्वर्ण एव रजत वर्ण की मछलियां पाई जाती हैं। उक्त तालाबों में स्नान ग्रादि करने से इन्द्रलोक की प्राप्ति होती है।

विमळदांन-सं. पु. [विमल+दान] १ देवताग्रों का चढ़ावा, प्रसाद।

२ नित्य नैमैतिक के ग्रतिरिक्त केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाने वाला दान। (पुराण)

विमळध्वनि-सं. पु. [सं.] १ सिंहावलोकित रीति से रखे हुए दोहे ग्रोर समान सवैये से मिलकर बनने वाला एक छन्द, जिसमें छः चरण होते हैं।

सं. स्त्री.—२ मधुर ग्रावाज, सुरीली ग्रावाज।

विमलनाथ-स पु.—एक तीर्थंकर, जो उत्सर्पिणी के पांचवे व ग्रवसर्पिणी के तेहरवें ग्रर्हत् माने जाते हैं।

वि. वि.—इनका जन्म कम्पिलपुर नगर में हुग्रा था। इनके पिता का नाम कृतवर्य राजा था तथा माता का नाम श्यामा देवी रानी था।

विमलपिंड, विमलपिंडक-सं. पु. [सं] कश्यप एवं कद्रू के नाग पुत्रों में से एक नाग पुत्र।

विमळरूप-सं. पु.—हंस। (नां. मा.)

विमळा, विमला-सं. स्त्री [सं. विमला] १ वासुदेव की नायिका एक देवी।

२ सुरभि की पुत्री रोहिणी की दो कन्याग्रों में से एक कन्या, गाय।

वि. वि—दूसरी कन्या का नाम ग्रनला था जिससे पिण्डाकार फल देने वाले सात वृक्ष हुए।

३ देवी का एक विशेषण।

उ०—धवा धवळागर धव धू धवळा, क्रसना कुबजा कचत्री कमळा चळाचळा चांमुंडा चपळा, विकट विकट भ्रू बाळा विमळा। —देवि.

४ पुरोत्तम नामक तीर्थ की ग्रधिष्ठात्री देवी।

५ सरस्वती देवी का नामान्तर।

६ एक ग्रह का नाम।

वि. स्त्री.—निर्मल, साफ, स्वच्छ।

विमळाचळ, बिमलाचळ, विमलाचल-सं. पु. [सं. विमलाचल] शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम। (डिं. को.)

उ०—हां रे मोरा लाल गिरि तल सेत्रुंजी नदी, जोवौ ग्रांणि विवेक। इणि परि विमलाचल तणी, तीरथ भूमि ग्रनेक मोरा लाल। —वि. कु.

विमलात्मा-वि. [सं. विमल+ग्रात्मा] जिसकी शुद्ध ग्रात्मा हो।

सं. पु.—चन्द्रमा, चांद।

विमलादरी, विमलाद्रि, विमलाद्री—देखो 'विमळाचळ'।

विमळापत, विमळापति, विमळापती विमलापत, विमलापति,-विमलापती—सं. पु. [सं. विमलापति] १ ब्रह्मा।

२ स्वायंभूव मनु।

३ दधीचि ऋषि।

४ आदित्य।

५ रन्ति राजा।

विमली-सं. स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

विमलेसर, विमलेसुर, विमलेस्वर-सं. पु. [सं. विमलेश्वर] एक पवित्र तीर्थ का नाम विशेष।

उ०—पुस्कर पेखि प्रभास पण, कालिजर कासमीर। **विमलेस्वर** वरजा वली, गंगा-सागरतीर। —मा. कां. प्र.

विमांण-सं. पु. [सं. विमान्] १ देवताओं अप्सराओं आदि का वह यान, रथ या उड़नखटोला जो आकाशमार्ग से चलता है।

उ०—१ चम्मरां ढुळंतां चौजां अम्मरां **विमांणां** चढै, वढै कीत प्रथी सारी करंतां वाखांण। इंद्र रा आवास सुरां लोक में आंणंद आयौ, पायौ देव अंसी सारां देवां में प्रमांण। —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—२ च्यार घड़ी वाजी सुजड़, भड़ मत्तौ सर वांण। पड़िया हिंदू धार मुंह, चड़िया अच्छर **विमांण**। —रा. रू.

उ०—३ देवां रथ्थ रेवंत सारंग राजै, देवी **विमांण** पालखी पीठ व्राजै। देवी प्रेत आरूढ आरूढ पद्म, देवी सागरं सुमेरू गूढ सद्मं। —देवि.

उ०—४ सुंडाला सुमेर सा सजिया. अमर **विमांण** सी अंबारी रे। चंचळ हय चित चाल चुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे। —गी. रा.

उ०—५ जूसरां धवळ अप्रमांण जव, की **विमांण** पवमांण कथ। सुलतांण मुगल माथै सज्या, राजथांन बीकांण रथ। —मे. म.

२ आधुनिक वायुयान जो आकाश में उड़ते हैं और पेट्रोल से चलते हैं।

३ मृत्त व्यक्ति के शव की वह अरथी जो फूलमाला आदि से सुसज्जित होती है।

४ सोने, चांदी या भोल की लकड़ी से बना हुआ पालकीनुमा वाहन जिसमें प्रायः भगवान् की सवारी निकाली जाती है।

५ ऐसा मकान जिसमें सात खण्ड हों।

६ वह देव मंदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊंचा व लम्बोतरा हो।

७ वाहन और सवारी।

उ०—अऊत रौ बन लेवा री आखड़ी खटवन रौ माल लेवा री आखड़ी। गांव फिलसौ देवा री आखड़ी। सीव मांह सुं बळद गांव में लावा री आखड़ी। विखै **विमांण** गांव छांडवा री आखड़ी। —रा. सा. सं.

रू. भे.—बमांण, बिवांण, बिमांण, बिमांणग, बिमाणगी, बिमांणण, बिमांन, बिवांण, बीमांण, बेवांण, ववांण, विमांणग, विमांणौ, विमांन विवांण, विवांणि, विवांणी, विव्वांण, विव्वांणी।

विमांणग—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—बांरगां उमंगां रंगां **विमांणगां** सोक बाज, रारंगां अभंगां भड़ां दमंगां रौ सार। पनंगां विहंगां ढंगां नारंगां अभीच पड़ा, सारंगां खतंगां अंगा मातंगां दू सार। —बद्रीदास खिड़ियौ

विमाणवी-सं. स्त्री.—एक लोक देवी जिसके प्रकोप से वातरोग होना माना जाता है। (अमरत)

विमांणिक—देखो 'वैमांनिक' (रू. भे.)

उ० –'भवनपति' 'व्यंतर' नै जोतिमी, 'भेद' **विमांणिक** पावै। सुर वर तै मिलनै सगला, नाम 'निनांणू' आवै। —जयवांणी

विमांणी, विमांणीक, विमांणीय—देखो 'वैमांनिक' (रू. भे.)

उ०—१ भवनपती इद्र वीसै भिल्या जी, सोल दू वितर सार। जोइस दु दस **बिमांणी** जुड्या जी, चउसट्ठि इद्र सुविचार। —ध. व. ग्रं.

उ० –२ त्रिहुं तणा पति वायु कूण में जांण ए, सुर **विमांणीय** नर नारि ईसांण ए। वार परिखद मद मच्छर छोड ए, भूख त्रिख वीसरै सुणै कर जोड़ ए। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ प्रदिक्षणा रूप थी अगनि कूणें करी, गणधर साधवी तिम **विमांणी** सुरी। ज्योतिवी लुवणिनी वितरी त्री पणैं, नैरित कूण जिण वांणि ऊभी सुणै। —ध. व. ग्रं.

विमांणौ - देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०—१ सुर भणी सुरलोक स्यूं, ऊतरै अमर **विमांणौ** रे। अपछर आरतीयां करइ, कांमणि कंचन वांनौ रे। —प. च. चौ.

उ०—२ जासी सवारथ सिद्ध **विमांणौ**, चवि महाविदेह वखांणौ जी। मनुम हुसी बहु चतुर सुजांणौ, दढपइण्णा नौ परिमांणौ जी। —जयवांणी

विमांन—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—१ निजर परक्खै राठवड़, अकबर तेज दिणंद। जांणै व्योम **विमांन** सम, भोम प्रगटचौ इंद। —रा. रू.

उ०—२ सांभलउ सौधरमेंद्र तणी स्थिति, सौधरमी रत्नमय भूमि सिक्र सिंहासन सूरय जम भलकतउ तिहां बसइ सक्र इसि नांमिइ सौधरमेंद्र दक्षिण लोकारद्धस्वांमी, एरावणवाहन, बत्रीस लाख **निमांनसउ** आधिपत्य पालइ लीला लगइं······। —व. स.

उ०—३ ''''''दिसदिसइं बहकइ कस्तूणागर, इसिउ विमांन, माहि सुवरणमय स्तंभ, ऊपरि रत्नमय पूतलीना संरंभ, असख्य गवाक्ष मत्तवारण मगरमुहां'''''', । —व. स.

विमांनिकदेव—देखो 'वैमांनिकदेव' (रू. भे.)

विमांस–सं. पु. [सं.] वह मांस जो खाने योग्य न हो, अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित मांस।

विमांह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति रितिराज वसंत वैसाख मास रा मंगळाचार **विमांह** रा सुख विलास करतां सरद रित आई छै। आसोज मास आइ संप्रापति हूआै छै। —रा. सा. सं.

विमात, विमाता, विमात्र, विमात्री–सं. स्त्री. [सं. विमातृ] जन्म देने वाली माता के जीवित अवस्था में या मृत्युपरान्त अपने पिता द्वारा परणीता दूसरी नारी, सौतेली मां।

विमारग–सं. पु. [सं. विमार्ग] १ बुरा रास्ता, कुमार्ग।

२ बुरे आचरण, कुआचरण।

विमाळ, विमाल–सं. स्त्री.—देरी, विलम्ब।

उ०—चडिया कटक्क त्रांबक्क चाळ, वेढिसी 'जइत' न करइ **विमाळ**। असराळां ताजी ऊमगेहि, पन्नगां नेस घूजइ पगेहि। —रा. ज. सी.

सं. पु.—विचार।

वि.—चुप, शान्त।

उ०—मिरजें खबर निवाब नूं पहुंचाई ततकाळ। आयौ फिर महमदअली, सुण नह रह्यौ **विमाळ**। —रा. रू.

रू. भे.—विमाळौ।

विमाळणौ, विमाळबौ–क्रि. स.—विचार करना।

उ०—उण वात **विमाळै** अक्खियां, चाळै कज हल चल्लिला। भूपाळ भलै मोटां भुजां, नवकोटै छळ झल्लिया। —रा. रू.

विमाळणहार, हारौ (हारी), विमाळणियौ—वि०।

विमाळिओड़ौ, विमाळियोड़ौ, विमाळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विमाळीजणौ, वीमाळीजबौ—कर्म वा०।

विमाळियोड़ौ–भू. का. कृ.—विचार किया हुआ।
(स्त्री. विमाळियोड़ी)

विमाळौ—देखो 'विमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दुस्सह भांण भला जूध देखै, पाली गौ थांणौ गिर पेखै। विढवा नह कौ ताळ **विमाळै**, चाळो खग मातो गुणथाळै। —रा. रू.

उ०—२ माहव मांन तणौ पट मोटै, कियौ सवाय 'अभै' नवकोटै। भगवत 'मुहकम' तणौ भुजाळौ, विढतां न धरै ताळ **विमाळौ**। —रा. रू.

विमास, विमासण–सं. पु.—विचार।

उ०—१ जोरइ पिण हिव ताहरइं सखी, गलि मांहि घालिस बाह। जे मिलवा नें उल्हसै सखी, किसी **विमासण** ताहिरै। —वि. कु.

उ०—२ कहतां वै हाथै करि नांखियौ रे, वांनर ऊडि गयौ आकास रे। सीह अरूपी लागौ मारगें रे, रहीयौ मन मां **विमास** रे। —वि. कु.

उ०—३ भारत खेतर में सांमठा, किण मां वेटा जाया रे। तीन सघाडै आविया, मैं हाथा सूं वेहराया रे। करै **विमासण** देवकी। —जयवांणी

उ०—४ कुण कहिस्यें मुज मायड़ी जी, घड़ी घड़ी नें छेह। कहसूं केहनें नांनड़ोजी, सबल **विमासण** एह-रे जाया। —जयवांणी

उ० —५ विरत्तो वेग न काइ **विमास**, विढेवा राउ खड़ै वरहास खुरां रवि फीण उमट्ट्यो खांणि, लगोड़ै लागै लाल लंगांणि। —राव जैतसी रौ रासौ

विमासणौ, विमासबौ–क्रि. स.—१ विचार करना।

उ०—१ तै ऊपरि ए पदमणी, आई आपां पासि। स्युं करिवौ सूधौ मतौ, वेघौ कहौ **विमासि**। —प. च. चौ.

उ०—२ सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार। रांणी राय **विमासियउ**, तेड़इ साल्हकुमार। —ढो. मा

उ०—३ ढोलइ मनह **विमासियउ**, एक करीजइ एम। करहइ चढि आपां खड़ां, नरवर पहुंचां जेम। —ढो. मा.

उ०—४ विद्या हीणा विप्र, तूं हीइ **विमासी जोइ**। तुरकां-केरइ बोलड़ै, चिण न खूंटइ कोइ। —मा. कां. प्र.

उ०—५ पाताळ जाती सेम राखी, मंनि **विमास्यं** आहि। देवतां नी दया आंणी, मूकी ई माहि मांहि। —रूकमणी मंगळ

२ समझाना।

उ०—ढोलइ करह **विमासियउ**, देखै वीस वसाळ। ऊंचै थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ। —ढो. मा.

विमासणहार, हारौ (हारी), विमासणियौ—वि०।

विमासिओड़ौ, विमासियोड़ौ, विमास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विमासीजणौ, विमासीजबौ—कर्म वा०।

विमासियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ विचार किया हुआ. २ समझाया हुआ।
(स्त्री. विमासियोड़ी)

विमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ ईख रस्स अहिफेण, अरथ आगम डर ठाहै। पांनां चंग, मजीठ रंग, उछरंग **विमाहै**। —ह. र.

उ०—२ इळ धुकि लचक सीस अहिवाळा, चंद कटक खड़िया कळ चाळा। जगत छत्रदिस लिखै जबाबां, सफो विमाह कि समर सताबां। —सू. प्र.

उ०—३ जाइ राजा सुं मुजरौ कीयौ। कहियौ महाराज घरां री खबर आई छै। बेटी रौ विमाह छै। राजा सिरपाव दे बिदा दी उवै चोर कन्है गया कहचौ ईंडौ विहचौ। —चौबोली

उ०—४ महाराज विमाह रै आगम मंगळ धमळ खंभाइची कीजै। पिण औ महाभारथ रौ आगम। अेक बार सूरां पूरां अवसांणसिध खित्रिआं रा वडा राग माहै वडा दूहा गवाड़ौ। —र. वचनिका

विमाहणौ, विमाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

विमाहणहार, हारौ (हारी), विमाहणियौ—वि०।

विमाहिओड़ौ, विमाहियोड़ौ, विमाहचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विमाहीजणौ, विमाहीजबौ—कर्म वा०।

विमाहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विमाहियोड़ी')

विमाहौ—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—वसतपचमी करो विमाहौ, सुध निरदोख वेद विध साहौ। इम ठहराय महल न्रप आए, पदमणि तांम महासुख पाए। —सू. प्र.

विमुंहौ—२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

विमुक्त–वि. [सं.] १ छूटा हुआ, मुक्त। २ आजाद, स्वतंत्र। ३ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ. ४ फेंका हुआ. छोड़ा हुआ. ५ दायित्व या कार्यभारादि से मुक्त।

रू. भे.—विमुगत।

विमुक्ति–सं. स्त्री. [सं.] १ छूटने या मुक्त होने की अवस्था, छुटकारा।

२ आजादी या स्वतंत्रता।

३ अलगाव, विछोह।

४ मूक्ति, मोक्ष।

रू. भे.—विमुगति।

विमुख–वि. [स.] १ जो किसी कार्य, विषय या बात आदि पर दत्त-चित्त न हो।

उ०—मैं लख चौरासी धारि जोनि, का बोलत का गहत मोनि। जनम जनम दुख बौहत पाय, जब रांम नांम ते विमुख थाय। —अनुभववांणी

२ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध।

उ०—१ हरीया गुर तें विमुख नर, पाछा दरगै मांहि। अैसे भागा सूरवा, दफतर चढ़िसी नांहि। —अनुभववांणी

उ०—२ आप गुरदेव का दसत राखै नहीं, और कुं ग्यांन उपदेस देवै। आठ ही पौहर हरिनांव कुं उचरै, साच नही जांणि गुर विमुख सेवै। —अनुभववांणी

उ०—३ रांमजी री माळा रै वासदी लगाय धणी सूं छांनै बचायोड़ी गूंजी हाथ में राखती तौ म्हनै अै दिन नीं देखणा पड़ता। आज म्हारा बेटा ई म्हारा सुं विमुख व्हैगा। मां रै बिना कोई इण दरद नै समझ नीं सकै। —फुलवाड़ी

उ० —४ जिसा स्वांमीजी कहता था जिसाइ निकळिया। पछै सिवरांमदासजो संतोकचंदजी दोनूं सुलभ पणें रहचा। उवै दोनूंइ विमुख रहचा तौ पिण स्वांमीजी उणांरी गिणत राखी नहीं। —भि. द्र.

३ उल्टा, विपरीत।

४ पुनरावर्तन, प्रत्यावर्तन।

५ उलटा, औंधा।

६ रहित, बिना।

७ जिसके मुंह न हो, मुख-रहित।

स. पु.—दक्षिणी भारत का एक ऋषि। (प्राचीन)

रू. भे.—बमुख, बमुह, बेमुख, वमुख, वमुह, विमूंहौ विमुह, विमुहि।

अल्पा.—बिमहौ, बिमुहौ, बेमुहौ, वमुहौ, विमुखौ, विमुहौ, विमूंहौ, विमूही।

विमुखता–सं. स्त्री. [सं.] १ विरोध, प्रतिकूलता।

२ अप्रसन्नता।

३ विरति।

विमुखौ—देखो 'विमुख' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—क्रपणां जस भावै कठै, विधि विमुखां नूं वेद। 'बांका' भोजन नंह रुचै, ज्यांरै वप ज्वर खेद। —बां. दा.

विमुगत—देखो 'विमुक्त' (रू. भे.)

विमुगति—देखो 'विमुक्ति' (रू. भे.)

विमुग्ध–वि. [सं.] १ मोहित हुवा हुआ, आसक्त।

२ भ्रम में पड़ा हुआ, भ्रमित, भ्रान्त।

३ उन्मत्त, मत्त, मस्त, मतवाला।

४ घबराया हुआ, विकल. परेशान।

५ पागल हुवा हुआ, बावला।

विमुग्धकारी–वि. [सं.] १ मोहित करने वाला।

२ पागल बनाने वाला।

३ उन्मत्त या मस्त करने वाला।

४ डराने वाला, परेशान करने वाला।

५ भ्रम में डालने वाला।

विमुदर, विमुद्र–वि. [सं. विमुद्र] खिला हुआ, विकसित।

रू. भे.—विमुद्र ।

विमुह—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ विमुह करण रण साह दळ, 'मुहकम' का 'हरियंद'। सोच निमेड़ण निय दळां, खळां उखेलण कंद । —रा. रू.

उ०—२ सूरां नूर दरस्सिया, तौलै सेल करग्ग । वायर ज्यौं लग्गा विमुह, कायर आठूं मग्ग । —रा. रू.

विमुहाळ—वि.—औंधा, ऊल्टे मुख ।

उ०—विमुहाळ कांवाळ विचाळ विपं, उबचाळ बंगाळ सिगाळ अपं । घड घाव वडाळ अोलाळ घडै, पड नाळ प्रनाळ चणाळ पडै । —पा. प्र.

विमुहि—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—कळि चालि लंकाळ कहै इम 'केहरि', विढिवा कजि ऊछजि केवांण । चलियै दळै विमुहि क्यूं चालूं, चालियौ विमुहि नकी चहुवांण । —नाहरखांन चौहान किसनदासोत रौ गीत

विमुहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ ऊससै आभ लगां आवंतां, राव तणौ रज देख रथ । रैवंत रोक न रहियौ रांणौ, पुळिया विमुहा पाटपत । —चांनण खिडियौ

उ०—२ सांमौ 'जोध' तणौ से जूतै, साझी सलह सजतै सैण । थय कुंजर विमुहां कुंभाथळ, कागमुहा दीठा "कुंभेण" । —गेहौ खिडियौ

उ०—३ रहियौ पण साबत जेतरती, जुध घात विमा सत 'पाल' जती । किम जांवत 'वूड़ाय' राव कहै, विमुहौ रण मारग 'पाल' वहै । —पा. प्र.

उ०—४ औरंगसाहि पातिसाहि रा तपतेज अपरबळ दईवार अवतार जिण आगै जमरांणौ विमुहा खड़ै । तिण सूं तीन पौहर हाथू कै महाराज जसराज ही लड़ै । —र. वचनिका

उ०—५ एक घड़ी वग्गी सुजड़, धड़ धड़ लग्गी धार । पिसण थया विमुहां पगां, गहि वग्गां तोखार । —रा. रू.

उ० - ६ 'करन' 'प्रताप' तणौ जुव कारण, विमुहां करै जिसौ अरि वारण । 'अजबावत' जोधौ दळ आगळ, केवी गळै जेम जळ कागळ । —रा. रू.

विमूंहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा. रू. भे.

उ०—आभ विमूंहां मांणसां है घर झेलण हार । धरणीधर घर छंडिया, अच्छै तूं आधार । —ह. र.

विमूढ—वि. [सं. विमूढ़] १ मूर्ख, नासमझ ।

२ विशेष रूप से मोहित, अत्यन्त मुग्ध ।

३ भ्रमित, भ्रान्त ।

४ चेतना-रहित, चेतना-शून्य ।

विमूढगरभ—सं. पु. यौ. [सं. विमूढ़गर्भ] वह गर्भ जिस में बच्चा मर गया हो और प्रसव बहुत कठिनाई से होता हो ।

विमूळ—वि. [सं. विमूल] १ मूल रहित, बिना जड़ का, निर्मूल ।

२ बरबाद, नष्ट ।

विमूळण—सं. पु. [सं. विमूलन] १ समूल उखाड़ फेंकने की क्रिया, उन्मूलन ।

२ नाश करने की क्रिया, ध्वंस करने की क्रिया ।

विमूहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा., रू. भे.)

विमेक, विमेख—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

उ० – १ तिलोई न जांणै ताहरा, ब्रह्मा जिसा विमेख । काइम तूं सबखौ करै, अबखौ मारग एक । —पी. ग्रं.

उ०—२ विसव कियौ तैं बीस हथ, कियौ विमेख विचार । इम्यां व्रिदि लीधौ इसौ, कीधौ लै करतार । —पी. ग्रं.

उ०—३ उचारै वेद विदुख अनेक, विचारै जिण सू विधि विमेक । —रांमरासौ

उ०—४ पिंगळ भरह पुरांण पराक्रत, विध विध जांणण सयळ विमेक । 'जेसा' हरौ न भंगवट जांणै, ऊतर करै न जांणै अेक । —ईसुरदास बारहट

विमोक्ख, विमोक्ष, विमोख—सं. पु. [स. विमोक्ष] १ बन्धनमुक्त करने की क्रिया, मुक्तिदेने की क्रिया ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष ।

३ सूर्य एवं चन्द्र का ग्रहण से मुक्त होना ।

४ सुमेरु पर्वत ।

विमोखण—सं. स्त्री.—१ बंधन मुक्त करने की क्रिया, रिहा करने की क्रिया ।

२ तीर आदि छोड़ने की क्रिया ।

वि.—१ बंधन मुक्त या रिहा करने वाला ।

२ तीर आदि छोड़ने वाला ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाने वाला ।

विमोखणौ, विमोखबौ—क्रि. स. [सं. विमोक्षणम्] १ बधन मुक्त करना; रिहा करना ।

२ तीर, गोली आदि छोड़ना ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाना ।

विमोखणहार, हारौ (हारी), विमोखणियौ—वि० ।

विमोखिओड़ो, विमोखियोड़ौ, विमोख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विमोखीजणौ, विमोखीजबौ—कर्म वा० ।

विमोखियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बन्धन मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ. २ तीर, गोली आदि छोड़ा हुआ. ३ जन्म मरण से मुक्ति दिलाया हुआ।
(स्त्री. विमोखियोड़ी)

विमोचक–वि.—१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति दिलाने वाला।

विमोचण–सं. पु. [सं. विमोचन] १ बन्धन-मुक्त करने की क्रिया, मुक्ति। देने की क्रिया।
२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष।
३ एक तीर्थ का नाम जो कुरुक्षेत्र में है, जिसमें स्नान करने से क्रोध एवं इन्द्रियों के वशवर्ती न होने वाले पुरुष को प्रतिग्रहजन्य पाप से मुक्ति मिल जाती है।
४ नाश करने की क्रिया, नष्ट करने की क्रिया।
वि.—१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति दिलाने वाला।
३ नाश करने वाला।
रू. भे.—विमोचन।

विमोचणौ, विमोचबौ–क्रि. स.—१ बन्धन-मुक्त करना, रिहा करना।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करना।
विमोचणहार, हारौ (हारी), **विमोचणियौ**—वि०।
विमोचिश्रोड़ौ, विमोचियोड़ौ, विमोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विमोचीजणौ, विमोचीजबौ—कर्म वा०।

विमोचियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बन्धन-मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ. २ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त किया हुआ।
(स्त्री. विमोचियोड़ी)

विमोद–सं. पु. [सं. वि=विशेष+मोद=प्रसन्नता] १ अत्यन्त हर्ष, मोद, प्रसन्नता।
उ०—गिरतै सिर जंग धणी ग्रहियौ, रवि मोद **विमोद** छकै रहियौ। असवार विनां अस जूंभ ग्रही, सपतास कियौ न मोद सही। —पा. प्र.
वि. [सं. वि.=रहित+मोद=प्रसन्नता] हर्ष रहित, मोद रहित, प्रसन्नता रहित।

विमोह–सं. पु. [सं. वि.=विशेष+मोह] १ अत्यन्त मोह।
उ०—विभ्रम **विमोह** चित्तं, सपत तुरग तांणियं सविता। वासर विसाळ लहियं, चक वांणौ मंगळ भवण। —गु. रू. बं.
२ मोह, अज्ञान, भ्रान्ति।
उ०—१ अईयौ ईम अनंत नांम कल्यांण निरंजण, देव किसन दीपांन ग्यांन दईतां ग्रब्र गंजण। अलख नील इनील विसव **विमोह** विग्यांनु, जांणौ सहि जीतूआ माल मेरौ धन धांनु। —पी. ग्रं.
उ०—२ सुभ दिवस समन सजोह, मिट रयण सध **विमोह**। रवि किरण अनुक्रम रेख, वाधेत तेज विसेख। —रा. रू.
उ०—३ अदु रूप सिखर थळ दुम **विमोह**, स्रंगार चमर फिर पूंछ सोह। निज तेज सरति चत्र जुवल नालि, भव कमळ जत्री सूची कि भाळि। —रा. रू.
३ एक नरक का नाम।
वि.—१ बेसुध, अचेत।
[सं. वि.=रहित+मोह] २ मोह रहित।
उ०—ग्रैसै नर अस्त्री भयौ, अग सिघ कौ मोह। हेत विसवास न होत है, बातां करत **विमोह**।
—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

विमोहक–वि. [सं] १ मोह उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, आकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ अचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह-रहित या प्रेम रहित करने वाला।

विमोहण–सं. पु. [सं. विमोहन्] १ मोहित करने की क्रिया, आकर्षित करने की क्रिया।
२ लोभ उत्पन्न करने की क्रिया, ललचाने की क्रिया।
३ अचेत या बेसुध करने की क्रिया।
४ कामदेव के पांचों बाण में से एक बाण।
५ एक नरक का नाम।
६ मोह रहित करने की क्रिया।
वि.—१ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ अचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह रहित करने वाला।

विमोहणौ–वि. (स्त्री. विमोहणी) १ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला।
उ०—देवी गौर रूपा अखां नव्व निद्धि, देवी सक्कळा अक्कळा स्रव्व सिद्धि। देवी व्रज **विमोहणी** वोम वांणी, देवी तोतला गूंगला कत्तियांणी। —देवि.
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ भ्रमित या भ्रान्त करने वाला।
४ अचेत या बेसुध करने वाला।
५ मोह रहित करने वाला।

विमोहणौ, विमोहबौ–क्रि. अ. [सं. विमोहनम्] १ मोहित होना, मुग्ध होना।

उ०—१ अंबा आदि तरण आमासै, परम कंवर लखि हरख प्रकासै। सुंदर चख मुख कर पद सोहै, मंजु रूप लख कंज **विमोहै**। —रा. रू.

उ०—२ मन हरखै तन उच्छव मोटै, कियौ वणाव 'अभै' नव-कोटै। सुरंग वसन सुंदर तन सोहै, वेखि रूप रति भूप विमोहै। —रा. रू.

उ०—३ सुंदर पाव मौड़ सिर सोहै, मुगति पंति लख जगत **विमोहै**। वचन सहास हुलास विहारै, नयण हरखजुत भिरत निहारै। —रा. रू.

२ आकर्षित होना।

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुखवर न पत उदत सवाई। सरवर अचळ निरमळ जळ सोहै, मध पूरन विधु रसमि **विमोहै**। —रा. रू.

३ लालायित होना, ललचाना।

उ०—१ फलं कंदळी स्रीय स्वादं अफारा, **छयै स्रेय** बादांम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारंगियां रस सोहै, महादेव देवेस मेनै **विमोहै**। —रा. रू.

उ०—२ अनेकं फळं भारिया व्रक्ख ओपै, लियै चाहि सेवा न कौ जाय लोपै। सुगंधकरं सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ सौरंभ सिंभू **विमोहै**। —रा. रू.

४ भ्रमित या भ्रान्त होना।

५ अचेत होना, बेसुध होना।

६ मोह रहित होना।

क्रि. स.—७ मोहित करना, मुग्ध करना।

उ०—१ सूर धीर साखैत नीर तैं सोहै, कायर नर कंपै सांघ कूं **विमोहै**। स्रीमहाराज कौ रूप असौ निजर आयौ, जांणै रोहिणी कौ संग विरोचन पायौ। —रा. रू.

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयंद कुरंग नह जूटै। मझि जळ क्रीड़ न सहल **विमोहै**, अस सिबका गज रथ न अरोहै। —सू. प्र.

उ०—३ खसै तैं साहि बिनाकंध खेध, बचाड़िय देवां आदू बेध। जटाधर अंध दइत्त जळाय, **विमोहै** रूप अनूप बणाय। —ह. र.

उ०—४ हर पवन आवै छै। कवळ करां मैं। नवरतन की पोचां सोहै छै। मनरग लोभ पराग **विमोहै** छै। आय ऊभी जीसी देव रभा। उरबसी लजाय। सुर राज अचभा। —पनां

८ लालायित करना, ललचाना।

९ भ्रमित या भ्रान्त करना।

१० अचेत करना, बेसुध करना।

११ मोहरहित करना।

विमोहणहार, हारौ (हारी), विमोहणियौ -वि०।

विमोहिओड़ौ, विमोहियोड़ौ, विमोहयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विमोहीजणौ, विमोहीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विमोहणौ, विमोहबौ—रू. भे.।

विमोहा–सं. पु.—प्रत्येक चरण में दो रगण वाला एक छंद विशेष जिसमें ६ वर्ण होते है। (रूपदीप पिंगळ)

विमोहित-वि. [सं.] १ मोहित, आकर्षित।

२ ललचाया हुआ, लालायित।

३ भ्रमित, भ्रान्त।

४ अचेत, बेसुध।

विमोहियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मोहित हुवा हुआ, मुग्ध हुवा हुआ. २ आकर्षित हुवा हुआ. ३ लालायित हुवा हुआ, ललचाया हुआ. ४ भ्रमित हुवा हुआ, भ्रान्त. ५ चेतना रहित हुवा हुआ, बेसुध हुवा हुआ. ६ मोह रहित हुवा हुआ. ७ मोहित या आकर्षित किया हुआ. ८ लालायित किया हुआ, ललचाया हुआ. ९ भ्रमित या भ्रान्त किया हुआ. १० अचेत किया हुआ, बेसुध किया हुआ. ११ मोह रहित किया हुआ।

(स्त्री. विमोहियोड़ी)

विमोही–वि. [सं. विमोहिन्] १ मोहित या आकर्षित होने या करने वाला।

२ लालायित होने या करने वाला, ललचाने वाला।

३ भ्रमित या भ्रान्त होने या करने वाला।

४ चेतनारहित या बेसुध होने या करने वाला।

५ मोह रहित होने या करने वाला।

विमौदगल–सं. पु. [सं. विमौद्गल] अगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार।

विम्मर—देखो 'विवर' (रू भे.)

उ०—झंगरां गिरां सहरां थका झाटकै, **विम्मरां** गिरां हूतां बिचाळै। नव नवा प्रसण नवकुळ जहीं नीवड़ै, किया आहूत धख-पंख काळै। —राजा अनिरुद्धसिंघ गौड़ रौ गीत

विम्मळ, विम्मल—देखो 'विमळ' (रू. भे.)

उ०—१ मुडिया पिंडमंगळ असिस उछंछळ रावत **विम्मल** लडि पडियं। दुजडा दूनै दळ विढूडै रब्बळ, कंदळ पेखै रवि खडियं। —गु. रू. बं.

उ०—२ पूजै पग **विम्मळ** वेद पुरांण, अलीयळ नाथ लियै अघ्रांण। रमै पग-छांह मधूकर रिक्ख, तवै पग नाग सरीसा तक्ख :—ह. र.

विय—देखो 'बिय' (रू. भे.)

वियग्मणि-सं. पु. [सं. वियद्मणि] सूरज, सूर्य ।

वियटल—देखो 'विटळ' (रू. भे.)

उ०—वाय **वियटल** वैसाखना, भाहां थी भलगु वाय । पांगरणां परनारिनां, ऊडाडितु भाय । —मा. कां. प्र.

वियत-सं. पु. [सं. वियत्] आकाश, व्योम, गगन । (अ. मा.)

उ०—जग सीत प्रगटत पंथ चख जग, अगनि दिसि अनुक्रमै। अंगि जगत जण प्रति सुखद, अंबर **वियत** जळधर वेस मैं ।
—रा. रू.

रू. भे.—बियत, वयंद, वयद, वियद ।

वियतमणि, वियतमणी-सं. पु. [सं. वियत्+मणि] १ सूरज, सूर्य ।

२ चान्द, चन्द्रमा ।

वियति-सं. पु. [सं.] नहुष राजा का एक पुत्र ।

वियद—देखो 'वियत' (रू. भे.)

वियदगंगा-सं. स्त्री. [सं.] आकाशगगा ।

वियांण—देखो 'ब्यांण' (रू. भे.)

वियांणी-वि. स्त्री.—जन्म देने वाली ।

वियांन—१ देखो 'ब्यांन' (रू. भे.)

२ देखो 'बियांन' (रू. भे.)

उ०—विमांन आसमांन में निसांन से रहैं नहीं, बसुंधरां **वियांन** सी बगीलगी बहै नहीं । छलग बाछरु घरु न उच्छरे चरे चिरै, फलंग भैंचकी थकी न नंचकी चकी फिरै । —ऊ. का.

वियाई—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

वियाज—देखो 'व्याज' (रू. भे.)

उ०—आगै जाइ आलि केलि ग्रह अंतरि, करि अंगण मारजण करेण । सेज **वियाज** खीरसागर सजि, फूल वियाज सजै तसु फेण । —वेलि.

वियाणौ, वियाबौ—देखो 'ब्याणौ, ब्याबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू बंझ **वियाई** आतमा, उपज्या आनंद भाव । सहज सील संतोख सत, प्रेम मगन मन राव । —दादूबांणी

उ०—२ तेणि पातिसाहि आयां सांतरि कुण सहइ ? कुणइ सहिजइ ? कुण की जुक्ती, कुण की प्राप्ती ? कुण माइ **वियांणी**, जू सांमउ रहइ अणी पांणी ? —अ. वचनिका

वियापणौ, वियापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चौथै पहरै रैणिदै, बणिजारिया तू पक्का हूवा पीर वे । जोवन गया जरा **वियापी**, नांहीं सुधि सरीर वे । —दादूबांणी

उ०—२ आखय ऊमा देवड़ी, संभळि पिंगळ राइ । **विरह-वियापी** मारुई, नहि राखण कउ दाइ । —ढो. मा.

वियापणहार, हारौ (हारी), **वियापणियौ**—वि० ।

वियापिओड़ौ, वियापियोड़ौ, वियाप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वियापीजणौ, वियापीजबौ—भाव वा० ।

वियापियोड़ौ—देखो 'व्यापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वियापियोड़ी)

वियापि, वियापी—देखो 'व्यापी' (रू. भे.)

उ०—१ सकल **वियापी** संगि वसैं, हरि समथ सिरजणहार । साहिब ही तै पाइए, साहब का दीदार । —ह. पु. वां.

उ०—२ त्रिविध ताप सासौं न सूळ, परमभेद आनंदमूळ । उदै अस्त आवै न जाय, सकळ **वियापि** सहजभाव । —ह. पु. वां.

उ०—३ मनसा अटी मिटी सब दौर, गहि गुर ग्यांन वसै निज ठौर । जन हरिदास गोविंद गुणगाई, सकळ **वियापी** रांम सहाई ।
—ह. पु. वां.

वियायोड़ी—देखो 'ब्यायोड़ी' (रू. भे.)

वियार—१ देखो 'विकार' ।

२ देखो विचार' ।

वियाळू—देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

वियाव—देखो 'विवाह' (रू. भे)

वियास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—**वियास** भट्ट के महंत, जोतिकी ब्रहांमणं । कथा पुरांण भागवंत, भारथं रांमाइणं । —गु. रू. बं.

वियासियौ—देखो 'बंयासियौ' (रू. भे)

उ०—रतन पाट बैठौ रधू, देखौ सांईदास । समत पनर **वियासियै**, भैसरोड़ चंद्रभास । —सांईदास रौ गीत

वियासी—देखो 'बंयासी' (रू. भे.)

वियोग-सं पु. [सं.] १ संयोग का अभाव । (डि. को)

उ०—१ कोइक पूरब भव संबंध सूं रे आइ मिल्यौ संजोग । भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यौ रे, वणियौ एम **वियोग** ।
—प. च. चौ.

उ०—२ रहै नहीं नांमै कोई रोग, वली सहु जायै सोग **वियोग** । सदा हुवै भोग संयोग सबेव, दीयै सुख वछित रीखभदेव ।
—ध. व. ग्रं.

२ विच्छेद, अलगाव ।

उ०—१ स्वांमीजी नवी दिक्षा लीधां पछै केतलैएक वरसै तीन जणियां दिक्षा लेवा त्यारी थइ । जद स्वांमीजी बोल्या थें तीन जणियां साथै दिक्षा लेवौ अनैं कदाचित एकण रौ वियोग पड़ जावै तौ दोयां नै कल्पै नहीं सो पछै संलेखणा करणी पड़ै । —भि. द्र.

उ०—२ जकै व्यापार करै छै। त्यांह की स्त्री, गाय ग्रर बछड़ा। बिभचार ही करणहारी स्त्री ग्रर लंपट। ये नीन्यौ रात्रि कै समै भेळा हुता त्यांह नै **वियोग** हुग्रौ। —वेलि टी.

उ०—३ नाह **वियोगै** दुखणी तेह, भूरि कस कीधौ छै देह। रहै एकांतै लेइ ग्रावास, धरम ध्यांन मन मांहै जाम। —वि. कु.

३ ग्रवसर, मौका।

४ विरह जुदाई।

उ०—१ दसरथ राय दियौ देसवटउ, रहचउ वनवास जी। वलि **वियोग** पड़चउ सीतानउ, ग्राठं पहर उदास जी। —स. कु.

उ०—२ खसबोय लगाई। ग्राप ढोलियै पोढियौ। भरमल पवन करै छै। वडारण पगै हाथ देवै छै। वातां करै छै। खुस-वखत छै हसै छै। घणां दिनां रौ **वियोग** भागौ, सौ दोनुं परम राजी छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ साहित्य में एक प्रकार का ग्रलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाग्रों के विरह का वर्णन होता है।

वि.—बिना, रहित।

क्रि. वि.—ग्रलग, वियोग में।

रू. भे.—बिग्रोग, बिजोग, बियोग, बिवोग, वजोग, विग्रोग, विजोग।

ग्रल्पा.,—विजोगौ, वियोगौ।

वियोगण, वियोगणी–सं. स्त्री [सं. वियोगिनी] वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम उससे ग्रलग या दूर हो, विरहणी।

रू. भे.—विजोगण, विजोगणी, विजोगिण, विजोगिणि, विजोगिणी, विज़ोगिन, विजोगिनि, वियोगिण, वियोगिणि, वियोगिणी, गिणी, विवोगण, विवोगणि. विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी।

वियोगांत–वि. [सं.] जिसकी कथा का ग्रंत दुःखपूर्ण हो।

रू. भे.—विजोगांत।

वियोगिण, वियोगिणि, वियोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

उ०—सीलवंती नै हो एहिज जोगता, धरम पणै द्रढ थाय। वलि विसेख हो जेह **वियोगिणी**, धरम करइं मन लाय। —वि. कु.

वियोगी–वि. [सं.] जो ग्रपनी स्त्री या प्रिया से ग्रलग या दूर हुग्रा हो, विरही।

सं. पु.—वह नायक जो प्रिया के वियोग के कारण दुःखी हो।

रू. भे.—बिग्रोगी, बिजोगिय, बिजोगी, बियोगन, बियोगी, विजोगी।

वियोगौ—देखो 'वियोग' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—रांणी माञ्या ढपला नै सोगो रै, म्हारै व्हालां पड़ै **वियोगो**। हा हा करूं हिवै कासूं रै, माहरो हिवड़ो फटै मां सू। —जयवांणी

वियोजक–वि. [सं.] १ वियोग उत्पन्न करने वाला।

२ दो संयुक्त वस्तुग्रों को ग्रलग करने वाला।

वियोजण–सं स्त्री. [सं. वियोजन] १ दो संयुक्त वस्तुग्रों को ग्रलग करने की क्रिया, पृथक करने की क्रिया।

२ गणित में किसी बड़ी संख्या में से छोटी घटाने की क्रिया, बाकी।

वियोजित–वि. [सं.] ग्रलग किया हुग्रा, पृथक किया हुग्रा।

सं. स्त्री.—किसी बड़ी संख्या में से छोटी संख्या के घटाने के बाद ग्राई हुई संख्या।

वियौ—देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—१ चहुवांणां कुळ चल्लणी, **वियौ** न चल्लै कोय। वाड न घट्टै खूंद की, सीस पलट्टै तोय। —रा. रू.

उ०—२ ग्रनि गढां विखम भ्रम ऊपजै, खळ त्यां उद्यम खंभियौ। 'गजसाह' **वियौ** गुज्जर सिरै, 'ग्रभैसाह' ग्रारंभियौ। —रा. रू.

उ०—३ क्रत सोभति रेसम लूंब करै, धुरवा किर फूलिय संभ धरै। भ्रत उग्र तुरंगम ग्रग **वियै**, क्रम सोभत ग्रावत डोर कियै। —रा. रू.

वियौवन–स. पु.—१ युवा-ग्रवस्था के बीच का समय।

२ युवा ग्रवस्था के बाद का समय।

विरंग, विरगू, विरंगोड़ौ, विरंगौ–वि. [सं. विरंग] (स्त्री. विरंगी)

१ ग्रप्रिय, ग्रसुहावना।

उ०—१ ततखण माळवणी कहइ, सांभळि कंत सुरंग। सगळा देस सुहांमणा, मारू देस **विरंग**। —ढो. मा.

उ०—२ सेभां ग्रावौ सुंदरी, ज्यौं सोभा दै सेभ। तौ बिन सेभ **विरंगियां**, कही न लागै जेह। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ छूटौ नीर चखा संतरांम ऊंचरतां छेला, सरूपदास री छाती उभेना समंद. जांमी ग्राज म्हांनै छोड ग्रकेला कठीनै जावौ, कोयलां **विरंगां** हेला दे रही कमंघ। —स्वरूपदास

२ जो समय के प्रतिकूल हो।

३ कड़वा, बेस्वाद।

४ बदशक्ल, बदरूप, कुरूप।

५ वदरंग, बुरे रंग का।

६ ग्रनेक रगों वाला, ग्रनेक रंगों का।

उ०—कंपू मार तेगां तीजी ताळी सौ कुरंगी कीधी, जका बाद नौरंगी प्रजाळी भुजां जोम । मांनू तारकी विरंगी काळी घड़ा माथै, भूप 'डूंगै' विधूंसी फिरंगी वाळी भोम । –गिरवरदांन कवियौ

७ भयंकर, भयावना, भयावह, डरावना ।

उ०—घटा टोप मेघा गडड़ंत गाजै, हुबक्कै तरंगा विरंगाह्न बाजै । खिचापिच्च लागी घड़ी ताल भाजैं, अहो कोइ राखै अठै अम्ह काजै । —ध. व. ग्रं.

८ उदासीन, खिन्न ।

उ०—१ नाह मिळियौ सही विरंग रंग नीसरै, क्रमंतां प्रथी सिर जेज नंह को करै, रीसियै 'जसै' भड़ रिमां घड़ रोळियां, झूड़ि अस असमरां रुधिर झकबोळियां । —हा. झा.

उ०—२ नयणह आगलि गयउ कुरंगू, राय चींति जां हुयउ विरंगू । जोइ वांमु दाहिणउं । —सालिभद्र सूरि

९ अशुभरंग (वर्ण) ।

१० फीका, नीरस, आनन्दरहित ।

उ०—बडां लियां भड़ अनड़ कस तुरंग सजतै विखौ, अभंग जंग जीत व्रद भुजां ओपै । सूर बड सुरंग रंग चढियौ असमरां, किया नवरंग विरंग दुरंग कोपै । —सबळौ सांदू

११ अनुराग या इश्क रहित ।

१२ दुःखपूर्ण, पीड़ायुक्त, सन्तापयुक्त ।

उ०—बरसण लागा बैण विरंगा, तरसण लागा तीठा । परसण लागा पाव दुहेला, दरसण छेला दीठा । —ऊ. का.

१३ प्रभावरहित, रौबरहित ।

१४ प्रतिष्ठा रहित, बेइज्जत ।

१५ जोश रहित, आवेशरहित ।

१६ शोकसूचक, शोकजनक ।

१७ भद्दा, बुरा ।

उ०—१ मुरधर छोड़ परधरा वसै, लगै अधांणां ओपरा । बांसड़ां रै सारै विरंगा, जांणै दरखत तोप रा । —दसदेव

उ०—२ वे विरंगोड़ा रूंख, जठै सूखी छांहड़ली । हांण-फांण सी घास, काय काया री ढिगली । —सक्तिदांन कवियौ

१८ शुष्क, सूखा, निर्जल ।

उ०—देस विरंगउ ढोलणा, दुखी हुया इहां आइ । मन गमता पाम्या नहीं, ऊंट कंटाळा खाइ । —ढो. मा.

१९ कड़वा, कर्णकटु ।

२० विकट ।

उ०—ताय सुरंग वात कहिवै तणी, दोंग विरंगी दहन रौ । उर जेज घरौ म करो उरड़, ऊनौ तेज अगन्न रौ । —रा. रू

२१ जिसका रंग बदल गया हो, परिवर्तित रंग का ।

उ०—दव लग्गां वन अंतरै, छूटै पवन अछेह । धूम दिसा तिम धुंधळै, व्योम विरंगै खेह । —रा. रू.

रू. भे.—बिरंग, बिरंगौ ।

विरंच-सं. स्त्री.—१ एक औषधि का नाम ।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति गोळी, चूरण, आसण, कवळ, कुटी, नागासिणी विरंच, मुफर, तांबेसर, मदन कांमेसर, जिता मारिआ ओखध फेरीजै छै । —रा. सा. सं.

२ देखो 'विरंचि' (रू. भे.) (डिं नां. मा.)

उ०—१ बांचै चत्रवेद विरंच बखांण, प्रकासै व्यास अठार पुरांण । खत्री दुज बैस गया सुद्र खोज, हुंतौ ज हुंतौ ज हुंतौ ज हुंतौ ज । —ह. र.

उ०—२ महा मनोहर महल छबि, अति ऊंचा आवास । रतन-जटत राजत अधिक, तहां विरंच निवास । —गज उद्धार

उ०—३ अैसी पुरी विरंच की, का पै वरणी जाय । मत परवांण वखांणियै, अपणै अपणै भाय । —गज-उद्धार

उ०—४ जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां विरंच जांणै, धूरजटी तावां ऊंच भावां मेर धींग । आवा लोम रिखी रांम लम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सांमवेद वेदांगां वीरावी संभू सींग । —हुकमीचद खिड़ियौ

विरंचनाथ—देखो 'विरंचि' (रू. भे.)

विरंचसुत—देखो 'विरचिसुत' (रू. भे.)

विरंचि-सं. पु. [सं. विरचः विरंचि] ब्रह्मा का नाम, विधाता ।

उ०—सकनकूर साखात सराहैं सहचरी, कांम विरंचि विमास क स्री हथ सू करी । जेहरि घूघरमाळ पगां झुणकै जियां, कुंजै बारिज पुंडू बचा कळहंसियां । —बां. दा.

रू. भे.—बिरंच, बिरंचनाथ, बिरंचि, बिरंचिय, बिरंची, वरच, विरंच, विरंचनाथ, विरंचिनाथ, विरंज, विरजौ ।

विरंचिनाथ देखो 'विरंचि' (रू. भे.)

विरंचिसुत-सं. पु. [सं. विरंचि+सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद का एक नाम ।

रू. भे.—विरंचसुत ।

विरंज, विरंजौ-सं. पु.—१ चावल के साथ बनाया जाने वाला मांस विशेष ।

उ०—तठा उपरायंत सीरौ-पूड़ी वर्ण छै । सोहितै सारु देवजीभि जोयजै छै । विरंजै सारु चोखा मंगायजै छै । पुलाव सारु कमोद वीणजै छै । काठां गोहुवां रौ आटौ मंगायजै छै । सू नाळेर-गरा गोळवां रोटा वणायजै छै । —रा. सा. सं.

२ चावल का बनाया जाने वाला, मीठा व्यंजन विशेष।

३ देखो 'विरंचि' (रू. भे.) (नां. मा.)

विरंडी—१ देखो 'ग्रांडी' (रू. भे.)

२ देखो 'भिंडी' (रू. भे.)

विरउ-वि.—हल्का, तुच्छ।

उ०—ग्रम्है किसा छां? मिच्छवास मिथ्यात्वनउ संस्कार तिणि करी निकृस्ट विरउ भाव तेहतउ गलिउ गुरु गुरुउ विवेक तत्वातत्वविचार जेहनउ छइ। —षष्ठीशतक

विरक-सं. पु, [सं. वृक] भेड़िया।

उ०—सीकोतरि सक्कणी,प्रेत डक्कणी ग्रपारां। विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु, विरक जंबू रसवाया। काक कंक कौ गिणै, ग्रास पळ संभळ ग्राया। —रा. रू.

रू. भे.—वरक।

विरकत—देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—१ नदी ताळ जहां नही जहां वापी सर कुवा। सवही उजड देस देख मन विरकत हुवा। —दूलची जोइयै री वारता

उ०—२ ग्रैसे नटवा वांस चढि, उलटा खेलै दाव। जनहरीया यूं जगत मैं विरकत मेलै पाव। —ग्रनुभववांणी

उ०—३ रीती देख न विरचियै, भरी न धरीयै चित्त। हरीया रीती ग्रर भरी, दोऊं सुं विरकत्त। —ग्रनुभववांणी

उ०—४ वैरागी विरकत भलौ, जुग सु न्यारा मंन। हरीया गिरही सो भलौ, सब सुं दासा तंन। —ग्रनुभववांणी

उ०—५ हरीया हिरमच लायकै, बैठे विरकत होय। विरकत सोई जांणियै, विखै विरता सोय। —ग्रनुभववांणी

विरक्ख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—नमौ हयग्रीव निगम्म निखात, बडा कवि ब्रह्म बदै बड रमात। नमौ प्रथु राजा ग्रादि पुरक्ख, नमौ बर लच्छि परम्म विरक्ख। —ह. र.

विरक्त-सं. पु. [सं.] १ रामस्नेही साधुग्रों का एक भेद विशेष, जिसके साधु नगे बदन, नगे शिर ग्रौर नंगे पाव रहते हैं। (मा. म.)

२ केवल ताल देने के काम ग्राने वाले बाजे।

वि. [सं.] १ ग्रत्यन्त लाल, गहरा लाल।

२ सांसारिक प्रपंचों ग्रादि से दूर रहने वाला, सांसारिक बन्धनों से मुक्त।

३ उत्तेजनायुक्त, उत्तेजित।

४ भोग विलास से दूर रहने वाला, जिसे कामवासना न हो।

५ बदले हुए रंग का, बदरंग।

६ ग्रनुराग या ग्रासक्ति रहित।

७ कर्मानुष्ठान के फल की ग्राशा न रखने वाला, त्यागी।

उ०—१ मिथ्याद्रस्टि तणी उत्थापक, व्यक्त गुणै सुविलासी। वलि विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति ग्रभ्यासी। —वि. कु.

उ०—२ पण राजा को दांन लेऊं नहीं विरक्त नूं त्रण बराबर छौ। —पचंदंडी री वारता

८ खिन्न, उदासीन।

रू. भे.—बिरकत, बिरक्त, बिरगत, विरकत, विरगत, विरत, विरता, विरत्त, विरिकत, विरिक्त, विरित।

विरक्तता, विरक्ति-सं. स्त्री, [सं.] १ उत्तेजना।

२ खिन्नता, उदासीनता।

३ ग्रनुराग या ग्रासक्ति का ग्रभाव, विमुखता।

४ भोग विलास ग्रादि से परे रहने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—विरगता, विरगति विरता, विरति, विरती, विरत्ति, विरत्ती।

विरख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०-१ तरवर सदा पुरांणा पातां, थायां नवा पखै विण थात। सब जांणग सु विरख नव सहसी, पूजै नवा पुराणा पात। —हरीरांम ऊहड़ रौ गीत

उ०—२ वट तमाल पीपल विरख, ग्ररुजन समी ग्रपार। ईढ तजै पत्र एक री, सुगन पांचेइ सार। —रा. रू.

उ०—३ विनां पेड़ जांह विरख है, विन फूलां फळ लाय। विनां पंख जांह भवर है, ग्रवर विलंबै भाय। —ग्रनुभववांणी

उ०—४ हरीया चदण बावनौ, वाकै पासि विरख। सोई चंदण दूसरा, कीया ग्राप सिरख। —ग्रनुभववांणी

विरखभांण, विरखभांणु, विरखभांन, विरखभांनु—देखो 'व्रसभांनु' (रू. भे.)

उ०—मेरै गोपाळजी कूं रोटी बनाय देऊं, एक छोटी दूजी मोटी। मेरै गोपाळजी का ब्याह करूंगी, विरखभांन की बेटी। —मीरां

विरखा—देखो 'वरसा' (रू. भे.)

उ०—१ किसन सिर फूल विरखा करै, ग्रमर तमासै ग्राइया। निहंग घरि बीच मावै नहीं, सुरै विवांण संबाहिया। —पी. ग्रं.

उ०—२ रुंड मुंड सै खंड, गुडै गज मांणकडंडह। ग्रगनि बांण ग्रारिक्ख, बीज विरखा व्रहमंडह। —गु. रू. बं.

उ०—३ विनां नीर जांह कवळ है, विन विरखा वरसाळ। विनां मास जांह रुत है। मात पिता विन बाळ। —ग्रनुभववांणी

उ०—४ उलटिया पेम चहुं ग्रोर विरखा लगी, गिगन घनघोर विन इंद गाजै। खळकिया नीर तन तठ नाडा भरया, ब्रह्म परफूळ खट कवल छाजै। —ग्रनुभववांणी

उ०—५ रसीद भाई कह्यौ—जद तौ बाभा थें घणा फोड़ा भुगतिया अंडी ठा'व्है'ती तौ म्हैं सफाखांनै गाडी लियातौ । घणी ई बाट जोई । सेवट विरखा देखनै रवांना व्हैणौ ई पड़्यौ ।

—फुलवाड़ी

विरखाकरण—देखो 'वरसाकरण' (रू. भे.)

विरगत—देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

विरगता, विरगति—देखो 'विरक्तता, विरक्ति' (रू. भे.)

विरगरावणौ, विरगरावबौ—क्रि. स.—दीनता दिखाते हुए दीन वचन बोलना; गिड़गिड़ाना ।

उ०—ऊजळौ सुभाव, चड़ूड चल्लौ, गांव री बेटी पण सगळां सूं गूंघटौ पल्लौ । सूधी गऊ रा ऊपरला दांत । **विरगरावती** सी बोलै लीलडी सी काढै । कींसू ही खेड़ै नीं आखै मिनखां नै हुंस'र दांत दिखाळै । —दसदोख

विरगरावणहार, हारौ (हारी), **विरगरावणियौ**—वि० ।

विरगराविओड़ौ, विरगरावियोड़ौ, विरगराव्योड़ौ—भू० का० कृ ।

विरगरावीजणौ, विरगरावीजबौ—भाव वा० ।

विरगारावियोड़ौ—दीन बचन बोला हुआ, गिड़गिड़ाया हुआ ।

(स्त्री. विरगरावियोड़ी)

विरड़क—सं. पु.—१ बाधा, विघ्न, रोक, रुकावट ।

२ कुएं से पानी खींचने में कोई रोक ।

विरड़णौ, विरड़बौ—क्रि. अ.—१ घुसना, धंसना ।

उ०—**विरड़** ऊरड़ मुरड़ बड़ बड़ हूर हड़ हड़ रंभ हड़ हड़, बीजड़ ओभड़ कंध बड़ बड़ दड़ड़ रतपड़ मुंड दड़ दड़ । —जगौ खिड़ियौ

२ कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ०—वारण **विरड़ियौ** दरबार विचाळै, कायरां हुई करारी । 'बाघा' हरै आगरै वाई, कुंवरपणै कटारी ।

—रतनसिंह राठौड़ रौ गीत

३ लड़ना, झगड़ना ।

४ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोही होना ।

उ०—कंवर **विरड़ियौ** मुरड़ अमराव फिरिया सकौ, अैरसी वार बिखमी बणी आंण । पाट चीत्तौड़ रौ हुवौ ऊथळपथळ, 'दुरंग' नूं सिमरियौ तई दीवांण । —दुरगादास आसकरणौत रौ गीत

विरड़णहार, हारौ (हारी), **विरड़णियौ**—वि०— ।

विरड़िओड़ौ, विरड़ियोड़ौ, विरड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरड़ीजणौ, विरड़ीजबौ—भाव वा० ।

विरडणौ, विरडबौ—रू. भे. ।

विरड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घुसा हुआ, धंसा हुआ. २ कुपित हुवा हुआ, क्रोधित हुवा हुआ. ३ लड़ा हुआ, झगड़ा हुआ । ४ राजसत्ता के विरुद्ध हुवा हुआ, विद्रोही हुवा हुआ ।

(स्त्री. विरड़ियोड़ी)

विरचणौ, विरचबौ—क्रि. अ.—१ पलटना, बदलना, विमुख होना ।

उ०—१ स्वारथ नी सगाइयां, जोइजौ इण संसार । किण विधि **विरचै** सूं, कंत सूं 'सूरिकंता' नार । —जयवांणी

उ०—२ साजनिया संसार, जै कीजै तौ जोइनै । नेह निबांहणहार, 'जसा' न **विरचै** जीवतां । —जसराज

उ०—३ करै वणिक कुल कसब कर, हित मांहै वित हांण । वणिक दगौ दै **विरचियौ**, उर इचरज मत आंण । —बां. दा.

उ०—पासी 'बोका ! पाट. करनादै सौमुख कह्यौ । थारौ रहसी थाट, म्हारा सूं **विरचै** मती । —अग्यात

२ पीछे हटना ।

उ०—हरीया अैसा हय रहौ, परबत कैसे भाय । धका धंम केता सहै, **विरच** कबु नहीं जाय । —अनुभववांणी

३ विरुद्ध होना, प्रतिकूल होना ।

उ०—कुळ ऊंच मईजन मेम कियौ. दिल चेतन सूध विखै न दियौ । अजड़ी धकधूण तकी तरछी, बुरचींतोय देवळ नां **विरची** ।

—पा. प्र.

४ क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—१ मेटण परजापत जिगन मद्द, भव हुकम **विरचियौ** वीरभद्द । जुरसिंध भीम तजि बाहुजुद्ध, फिर सेन बंधि जूटा सक्रुद्ध ।

—रा. रू.

उ०—२ **विरचि** राव सत्रसाळ 'औरंग' पड़ै बाथियां, जाथियां अनचळै बदन जरदै । राळियौ साथियां लोक त्रय लोक रै, हेम रौ हाथियां बीच हरदै । —हरदैनारायण हाडा रौ गीत

५ रचना, बनाना ।

उ०—ततखिण तिहां मिलिया चलियासण सुर कोडि, प्रभुना पद पंकज प्रणमइ बेकर जोडि । बेकर जोड़ी मछर छोडी समवसरण **विरचंति**, मांणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय झलकंति ।

—स. कु.

६ आयोजन करना, मनाना ।

७ विरक्त होना, उदासीन होना ।

उ०—रीती देख न **विरचीयै**, भरी न धरीयै चित । हरीया रीती अर भरी, दोऊं सूं विरकत । —अनुभववांणी

८ कम होना, घटना ।

उ०—माया खरची खूब है, जौ कुछि खरची जाय । हरीया खरचत खावतां, **विरच** कबु नही जाय । —अनुभववांणी

९ त्यागना, छोड़ना ।

उ०—साजन अैसा कीजियै, जांमैं लखण बतीस । भीड़ पड़्यां विरचै नहीं, सीस करै बगसीस । —अग्यात

१० धोखा देना, छलना ।

उ०—म्याराजी, विरचौ मती, प्याराजी कर प्रीत । म्याराजी रहतां नमंख, यौ वैराजी चीत । —मयारांम दरजी री वात

विरचणहार, हारौ (हारी), **विरचणियौ**—वि० ।

विरचिग्रोड़ौ, विरचियोड़ौ, विरच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरचीजणौ, विरचीजबौ—भाव वा० ।

बिरचणौ, बिरचबौ बिरच्चणौ बिरच्चबौ, बिरछणौ, बिरछबौ वरचणौ, वरचबौ, वरच्चणौ, वरच्चबौ, वरछणौ, वरछबौ —रू० भे० ।

विरचयिता—वि. [सं.] बनाने वाला, रचना करने वाला ।

रू. भे —विरचियता ।

विरचित—वि. [सं.] रचित, निर्मित ।

विरचियता—देखो 'विरचयिता' (रू. भे.)

विरचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ पलटा हुआ, बदला हुआ, विमुख हवा हुआ. २ पीछे हटा हुआ. ३ विरुद्ध हवा हुआ, प्रतिकूल हवा हुआ. ४ क्रुद्ध हवा हुआ, कुपित हवा हुआ. ५ रचा हुआ, बनाया हुआ. ६ आयोजन किया हुआ; मनाया हुआ. ७ विरक्त हुवा हुआ, उदासीन हवा हुआ. ८ कम हवा हुआ, घटा हुआ, ९ त्यागा हुआ छोड़ा हुआ. १० धोखा दिया हुआ, छला हुआ ।

(स्त्री. विरचियोड़ी)

विरछ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ **विरछां** लूंबी वेलियां, फूलीफली फवेह । सीतळ छांह सुहावणी, दिणियर किरण दवेह । —र. हमीर

उ०—२ सेली पवित्रा सीस, किता रेसम सुंवरणी. । फूल क्यारी रौ भगौ, खवा दोनू उपरणी । चौसर चोघड़ गूंथ, वरण फूलां रौ गहणौ, । विरछ वसंत रौ वणै, निजर तिरछी सूं वहणौं । —अरजुणजी बारहठ

उ०—३ सीस सरग सातमें. परग सातमें पयाळै । अरणाव मांतै उदर, विरछ रोमांच विचाळै । —र. रू.

उ०—४ **विरछां** बेलां पर चढणै बुधि चाही, उर में अलबेलां बेलण सुध आई । आंणा लेवण नै अैधूळा आया, दरसण देवण नैं मोभी मुळकाया । —ऊ. का.

विरछौ—सं. पु.—बबूल की फली ।

विरज—सं. पु. [सं. विरजः] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर ।

२ शिव, महादेव ।

३ वीर्य बीज ।

४ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम ।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण ।

६ त्वष्ट एवं विरोचना के पुत्रों में एक एक पुत्र राजा, जो विशुचि का पति और शतजित् का पिता था ।

७ पूर्णिमत राजा का एक पुत्र ।

[सं. विरजस्] ८ भगवान् नारायण का एक मानसपुत्र, जो कीर्तिमत का पिता था ।

९ शिवावतार का एक शिष्य ।

१० वसिष्ठ एवं ऊर्जा के सात पुत्रों में से एक पुत्र ऋषि ।

११ कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक नाग पुत्र ।

१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

१३ वारुणि कवि ऋषि के आठ पुत्रों में से एक पुत्र, प्रजापति ।

१४ कला (कर्दम प्रजापति की पुत्री) एवं मरीचि महर्षि पूर्णिमा नामक पुत्र का पहला पुत्र । दूसरे पुत्र का नाम विश्वग था ।

वि.—१ जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो । (स्त्री)

२ धूल, गर्द से रहित, निर्मल, स्वच्छ ।

३ सुखवासना से मुक्त, अनुराग रहित ।

विरजमंडळ—देखो 'व्रजमंडळ' (रू. भे.)

विरजस्क—सं. पु. [सं.] सावर्णिमनु के एक पुत्र का नाम ।

विरजा—सं. पु. [सं. वीर्य+ज] १ पिता । (ह. नां. मा.)

२ धृतराश्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

३ बीसवें कल्प में उत्पन्न श्री ब्रह्मा का रक्त नामक एक मानस पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ वसिष्ठ एवं ऊर्जा के आठ पुत्रों में से एक ।

६ भगवान् नारायण का एक पुत्र ।

सं. स्त्री.—७ शुत्र पुत्र ऋक्ष बानर की पत्नी जो विरजस् नामक प्रजापति की कन्या थी ।

वि. वि.—बाली एवं सुग्रीव क्रमशः इन्द्र व सूर्य से इसे पुत्र प्राप्त हुए थे ।

८ श्रीकृष्ण की एक प्रिय सखी जो राधा के भय के कारण नदी बन गई । कहीं २ पर राधा के शाप से भी इसका नदी बनना स्वीकार्य है ।

९ नहुष की पत्नी एवं ययाति की माता, जो सुस्वधा पितरों की कन्या जी ।

१० अदितिपुत्र महोत्कट का वेशधारी श्रीगणेशजी का भक्षण

करने वाली राक्षसी, जिसका उदर विदीर्ण कर श्रीगणेशजी बाहर आ गये थे।

विरजाक्ष-सं. पु. [सं.] मेरु पर्वत के पास उत्तर में स्थित एक पर्वत।

विरजाक्षेत्र, विरजाखेत, विरजाखेत्र-सं. पु. [सं. विरजाक्षेत्र] उड़ीसा में जाजपुर के पास माना जाने वाला एक पवित्र तीर्थ।

विरजामित्र-सं. पु. [सं विरजस्+मित्र] वसिष्ठ के पुत्र विरजस् का नामान्तर।

विरडणौ, विरडबौ—देखो 'विरड़णौ, विरड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ बळि भरियौ विरडियौ, खुरम माफी गहवंतौ। ग्रंह चडै चख त्रिडै, रोस हूँ मुँह हइ रातौ। —गु. रू. बं.

उ०—२ ब्रांह्मण पूतळी देखि नै मन मैं विचारियौ। आगलै साथियै पूतळी तंयार कीवी। हिवै स्रीपरमेस्वर रौ भजन करूं ज्युं जीव पड़ै। ताहरां पूतळी फिरण लागी। तद उवै च्यारै ही **विरडीया**। ऊ कहै म्हारी बाइर, ऊ कहै म्हारी बाइर। —चौबोली

उ०—३ हूकळ पोळ **विरडियौ** हाथी, नीछट भीळ निराळी। 'रतन' पहाड़ तणौ सिर रोपी, धूहड़ियै धाराळी। —रतनसिंह राठौड़ रो गीत

विरडणहार, हारौ (हारी), **विरडणियौ**—वि०।

विरडिओड़ौ, विरडियोड़ौ, विरड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरडोजणौ, विरडीजबौ—भाव वा०।

विरडियोड़ौ—देखो 'विरड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरडियोड़ी)

विरणियौ-वि.—वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—घाव घण थटां अत पिसण दळ घालणौ, पांच सै पाखरचा हेकलौ पालणौ। राव जसवंत सौ राखिया **विरणिया**, हाक वागी तं कूदिगा हिरणिया। —हा. झा.

विरतंत, विरतंति—देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ ढोलइ मनि आरति हुई, सांभळि ए **विरतंत**। जे दिन मारू विण गया, दई न ग्यांन गिणंत। —ढो. मा.

उ०—२ ताहरां रांणी पुछियौ-जु महाराज, कुण वास्तै हंसीया। राजा नटियौ। रांणी बहुत गाढ करि पूछण लागा। जु महाराज, मोनुं हंसीया रौ **विरतंत** कहीजै। —चौबोली

उ०—३ हिव **विरतंत** सुणौ सहु, आदरवंत अचूक। सेठ तिहां ठगनी परै, पडियौ पाडै कूक। —वि. कु.

उ०—४ पूछचौ भूपै कुण परदेसी, इण ठांमै क्युं आयौ। तिण अपणा घर देव त्रियांनौ, सहु **विरतंत** सुणायौ। —ध. व. ग्रं.

उ०—५ तेहनै कह्यौ निमित्तियै जी, बाल पणै निमंत। जणसी पुत्र मुवा थका जी, करम तणै **विरतंत**। —जयवांणी

विरत-सं. पु.—१ झूठ, असत्य। (अ. मा.)

२ यति, विश्राम। (पिंगल शास्त्र)

३ देखो 'व्रती' (रू. भे.)

उ०—१ डूम-डल्ला कीरत गावै, मंगता-भिखारी **विरत** चावै कोइयौ, कोइयौ आयौ चांद रै चांनणै में बुहार झाड़'र खायग्या, लेग्या अर केई मांगता ही गया। —दसदोख

उ०—२ स्रवण वयण संभळै, नयण विळकुळै निरंमळ,। जोत वदन झळहळै, लाज भुजि भळै स उज्जळ। सूर **विरत** सल्लळै, ज्वाळ झळहळै फुणांधर। कनां प्रळै क्रति करण, किरण परजळै दिणांकर। —रा. रू.

५ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—१ बूढा तै किम बाल कहीजइ, **विरत** नहीं जांणउ कोई। एक रुपइयउ खोटउ बांध्यउ, दौड़चउ करंय दगाई रे। —स. कु.

उ०—२ रात्रि भोजन करतां थकां ए, मन मांनै खाय कै। **विरत** कांई नहीं ए, मरने दुरगति जाय कै। —जयवांणी

६ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

रू. भे.—बिरत, वरत।

विरतांत—देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ सोना ना दीठा दांत रे, जांण्यउ पूरब **विरतांत** रे। अणसण लीधउ एकांत रे, बाघण पण थइ उपसांत रे। —स. कु.

उ०—२ राजा स्यांमसुंदर सारौ **विरतांत** दीठौ। उवै उडीया पछै आ बोली, 'हिमैं खबरि पड़ी ? ताहरां राजा कह्यौ 'खबरि पड़ी।' फेरि कहण लग्गी, 'सवारै ऐ आविसी'। —स्यांमसुंदर री वारता

उ०—३ झाली नुं कहौ ओ कांसु **विरतांत** ? तद झाली डर मारी वात सागी खींवसीजी नुं कहि दीवी—जिण तरै मा कांमण कराया, इण नदी में नांखिया, सौ सरब मालम कीवी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ कुंवरसी रथ सुं उतर घोड़ै असवार हुवौ। घोड़ै नुं गजदा खुवाई, सो हाथ चाळीस-पचास उपर जाय खड़ौ। वरछी सिलार छै, सौ खरल सारा देखता रह्या—जो ओ कांसु **विरतांत** ? कुण छै ?' —कुंवरसी सांखला री वारता

विरता—१ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—भील ही भगत थारै भला, कैयै नां मोजां करै। हमां सत कूकि **विरता** हुयै, येरै काजि अवतरै। —पी. ग्रं.

२ देखो 'विरक्तता' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया हिरमच लायकै, बैठे विरकत होय। विरकत

सोई जांणियै, विखै विरता सोय। —अनुभववांणी

उ०—२ ऊपनुं केवलनांणु सांमीय ए नेमि जिणेसरह ए, सांभली सांमि वखांणु **विरता** ए सावयव्रतु धरइं ए। —सालिभद्र सूरि

विरति, विरती-सं. स्त्री. [सं. विरतिः] १ अन्तिम अवस्था, अवसान, समाप्ति।

उ०—अवें त्वरथी अरूथी बकत नह व्यरथी अति यहीं, अयोनी योनी की विरति चित होनी रचि यही। —ऊ. का.

२ अन्तिम छोर, शिरा।

३ देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ **विरति** नहीं नहीं आंखडी, नहीं पोहो सो नहीं आदरी दीख। तैं पिण स्रेणि करायनें, तें कीधो हो स्वांमी आप सरीख। —वृ. स्त.

उ०—२ केइ उपाय करी मेलण करूं, परिग्रह बिविध प्रकार। **विरति** करु पिण मन न रहै वलि, तौ किम हुवै भव पार (निस्तार) —ध. व. ग्रं.

४ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

उ०—नयतै निय सेन तणी नागद्रह, भारत भू भड़ **विरती** भीर। पग किम रावत परठै पाछा, जड़िया परियां तणां जंजीर। —रावत रत्नसिंह सिसोदिया रो गीत

वि.—५ क्रोधपूर्ण।

उ०—जोधपुरो जुध जीपवा, गढ लेवा 'गजसाह'। **विरती** कोडी विळकुळै, रीसांणो रिमराह। —गु. रू. बं.

विरतीचक्ष, विरतीचक्षु, विरतीचख-सं. पु.—मंत्री। (डिं. नां. मा.)

वि. [सं. विरत्त+चक्षु] लाल आंखों वाला, क्रोधपूर्ण आंखों वाला।

विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी—देखो 'व्रतेस्वरी' (रू. भे.)

विरतौ—देखो 'विरत्तौ' (रू. भे.)

उ०—घर में मत खा फिरतौ घिरतौ, न कहै मरम बोलीजै निरतौ। तारु सूं मत तोड़ै तिरतौ. वडां रै कांम म थाए **विरतौ**। —ध. व. ग्रं.

विरत्त—१ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

उ०—एक एक मुनिवर एहवाजी, सूत्र में कहियै निरत्त। संकल्प आथमियां पछै जी, उगियां पछै **विरत्त**। —जयवांणी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

विरत्तणौ, विरत्तबौ-क्रि. अ.—१ कुपित होना, क्रुद्ध होना।

उ०—दिल्ली साह **विरत्तै**, रण अगाध जम्मण उपकंठै। रैणायर' रण मंडै, गौ दीवांण रांम खळ खंडै —रा. रू.

२ पीड़ित होना, दुःखी होना।

३ उदासीन, होना, खिन्नचित्त होना।

उ०—'ईंदो' परव परव आभाळो, भोज सुतन अनसाह भुजाळो। जैत सुजाव जोत जगपत्ती, वधै खीज किर बीज **विरत्ती**। —रा. रू.

विरत्तणहार, हारौ (हारी), विरत्तणियौ—वि०।

विरत्तिओड़ौ, विरत्तियोड़ौ, विरत्त्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरत्तीजणौ, विरत्तीजबौ—भाव वा०।

विरत्ति—देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

३ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—जै कहै तौ कीरत्ति, त्यां वधै वसुं **विरत्ति**। निबाज सुं रथन्नि पत्ति, असस गज दिया पुरधर अत्ति। —मा. वचनिका

विरत्तियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ. २ कष्टमय हुवा हुआ, पीड़ित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ उदासीन हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ।

(स्त्री. विरत्तियोड़ी)

विरत्ती—१ देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

३ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

विरत्तौ-वि. [सं. विरक्त] (स्त्री. विरत्ती) १ कष्टमय, पीड़ित, दुखी।

उ०—चड़ि वेगो चक्र धरि, करै कांई ढील करत्ता। गळो वढै गाय रो, वळै ब्राह्मण **विरत्ता**। —पी. ग्र.

२ क्रोधयुक्त, क्रुद्ध, कुपित।

उ०—१ "गजबंधी" सीह **विरत्ता**, दखणी दळ भाजि विगूता। बालापुर महिक्कर छोडै, दखणी दळ भागा होडै। —गु. रू. बं.

उ०—२ साह **विरत्तौ** मारवां, ग्राह जही गज वार। जठै सुदरसण चक्र ज्यां, रिणमलां पणधार। —रा. रू.

उ०—३ वंस वखांणै झल्लणो, चहुवांणै 'चुतरेस'। रत्तो साहां जंग कज, जांण **विरत्तौ** सेस। —रा. रू.

उ०—४ जोस भुजां दक्खवै रोस वीरा रस रत्तो। गजराजां ऊपरां जांणि अगराज **विरत्तो**। —रा रू.

उ०—५ **विरत्तौ** वेग न काइ विमास, विढेवा राउ खडै वरहास। खुरां रवि फीण उमटट्यो खांणि. लंगोड़ै लागै लाल लगाणि। —राव जैतसी रो रासो

३ उदासीन, खिन्नचित।

रू. भे.—विरतौ, विरुत्त, विरुत्तौ, विरुत्थ, विरुत्थौ, विरथौ।

विरथ–वि. [सं.] १ बिना रथ का या रथ से गिरा हुआ।

२ नृपंजय के पुत्र बहुरथ का नाम।

३ देखो 'व्यरथ' (रू. भे.)

रू. भे.—बिरथ।

विरथा—देखो 'व्रथा' (रू. भे.)

उ०—पदमरण बोली पीवतां, **विरथा** कीदौ वाद। छकिया मद री छाक रौ, समजि नही सवाद। हरख जलालौ चित हुवै, पीदां प्यालौ नेस। पीव विलालौ पिलंग परि, वालौ लागै वेस। —पनां

विरद—१ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

२ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—१ दळ-थंभ तुझ दुवारि झूंझारि धवळ तणा, घणां **विरदां** लहण आविया अरि घणा। घणा नींदाळवां नींद वारौ घणी, तूंग नहं छै भली हींस घोड़ां तणी। —हा. झा.

उ०—२ ऐराक छाक दुरबल आधार, पांवणां हूंत सांमां पधार। अति **विरद** वहादर तव अवूज, तरवार बहादुर विरद तूज। —वि. सं.

उ०—३ पाछै यै ही नाहरू का नाहर दरसावै, 'भीमाजळ' हाथूं रुघनाथ सा कहावै। जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के कंकण सा **विरद** जिण पाया। —रा. रू.

उ०—४ उभै फाबिया **विरद** 'जसराज' खगि ऊजळा, भुजां भारथ दिली भार भळियौ। वाळियौ आंक 'औरंग' सरिस वाजतै, वळै ही मुरडतै आंक-वळियौ। —नरहरदास बारहठ

उ०—५ गढ वरियावर **विरद** अथागा, वरियावर कमधज इम वागा। बारमौ सुत पूंज महाबळ, क्रपासिंधु जिण नांम अणंकळ। —सू. प्र.

विरदधण, विरदभल, विरदभलू–वि.—१ विरुदधारी, यशस्वी।

उ०—यह कांमेतयां जी हुकम सहकार रवाना होय, अवर जनेतियां जी साजत कीजियौ सहकोय। सहकोय साजत करौ सुभडां **विरदभल** वरियांम, कुळ जनक कुमरी व्याह करसी रिधू वरसी रांम। —र. रू.

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—आय हुई सब एकठी, कथ जेम कहांणी, **विरदभलू** जगमाल री, कमरां कसवांणी। वेली बापूकारनै, कथ ऐम कहांणी, ऐ तीजणियां स ऐकठी, आई आंपांणी। —वी. मा.

रू. भे.—बिरदधण, बिरदभल, बिरदभलु, विरदांभलौ, विरदाभल, विरदाभलौ।

विरदधार, विरदधारी, विरदधारू—देखो 'विरुदधारी' (रू. भे.)

उ०—१ लग अरद कूप मज तूटियै लाव, आ घात सुणत उन छूटियै आव। कर बूंब तिन कीनी पुकार, धाइयौ मा करनल **विरदधार**। —रांमदांन लाळस।

उ०—२ गांव दुधोड हुवौ राव स्रीरिडमलजी रै पुत्र वेरोजी हुवा, वेराजी रै पुत्र रांमदासजी हुवा। गांव दुधोड़ रै खेड़ै थापना कीनी। वडौ एक आखाढसिध रजपूत हुवौ। **विरदधारी** रजपूत हुवौ। —रा. सा. सं.

विरदपगार–वि. [सं. विरुद+रा. प्र. पगार=रक्षक] विरुद की रक्षा करने वाला, यशस्वी।

उ०–जिम रावण झूंझार, कमधज रांमाइण करै। 'पाल' तणौ बाहां प्रळंब, पड़िओ **विरदपगार**। —र. वचनिका

विरदपत, विरदपति, विरदपती—देखो 'विरुदपति' (रू. भे.)

उ०—१ 'पतौ' 'जगा' रौ **विरदपत**, 'वीरम' रौ 'जैमाल'। केल पुरौ कमधज दुहूं, हुआ चीत गढ ढाल। —बां. दा.

उ०—२ पुंडरीक नभ पाटि **विरदपति**, सुज पुत्र खेमधन्व वायक सति। देवांनीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार अनीक तास सुत। —सू. प्र.

विरदांभलौ—देखो 'विरदभल' (रू. भे.)

विरदांणी–वि.—विरुदधारी, यशस्वी।

विरदाई—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

विरदाभल, विरदाभलौ – देखो 'विरदभल' (रू. भे.)

विरदाणौ, विरदाबौ—देखो 'विरुदाणौ, विरुदाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ थका अवर न भायै भूपत, कवि **विरदायै** बोहोत कथ। काढै कुण तो बिन 'केहरिया', रावत कवि खूंचियौ रथ। —चतुरभुज बारहठ

उ०—२ चोपड रमतां इसा समाचार मीयां रै नै महेची रै हुवा। तरै महेची चारण घर रौ बुलायने रांमदासजी रै कनै मेलियौ नै कयौ, इसी तरै-**विरदायनै** कहेजो बाइ लाडु रै मीयां वुढण रै चोपड़ रमतां इसी बतळावण हुइ छै, सौ जांणसुं। —रा. सा. सं.

विरदाणहार, हारौ (हारी), विरदाणियौ—वि०।

विरदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विरदाईजणौ, विरदाईजबौ—कर्म वा०।

विरदाधिप, विरदाधिपत, विरदाधिपति, विरदाधिपती—देखो 'विरुदपति'।

उ०—हंसी राघव वळ हाथ, ग्राह तणै माथै दियौ। सदा रहौ निज साथ, तार लियौ **विरदाधिपत**। —गजउद्धार

विरदायक—१ देखो 'वरदायक' (रू. भे.)

उ०—धांनख मुख जिकै रसण गुण धारणा, पांण बचन तीखा

अप्रमांण। रांमकरण महड्ड रा रूपक, **विरदायक** अरजुण रा बांण।
—रांमकरण महड् रौ गीत

२ देखो 'विरुदायक' (रू. भे.)

उ०—नायकां पाठड़ा हूंत आवै नहीं, लायकां छंदा री अतर लाहां। कोइक **विरदायकां** मांय जांणौ सुकव, वायकां सायकां तणी वाहां।
—नवळजी लाळस

विरदायोड़ौ—देखो 'विरुदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विरदायोड़ी)

विरदाळ, विरदाळौ—देखो 'विरुदाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ भगतवछळ **विरदाळ** तुम, जांनू दीन्हौ खोय। मौ बाहर धावौ नहीं, बैठ रहे चुप होय।
—गजउद्धार

उ०—२ सूरिजि चंद्रमा सारिखा, बैठा छै **विरदाळ**। खेतपाळ हणमंत खरा, कोटवाळ किरणाळ।
—पी. ग्रं.

उ०—३ बै भाई **विरदाळ**, औरंगसाहि मुराद वै। हैवैपति भेळा हुआ, जुध मंडण जमजाळ।
—र. वचनिका

उ०—४ फैल क्रोध चममां कराळां आग भाळा फुणां, ताळां दे भूजाळा त्यूं गुपाळा तीरवांन। **विरदाळा** सिंघाळा अड़ाळा जोध चाळाबंध, जूटा बिहुं काळा नै विचाळा जोरवांन।
—र ज. प्र.

उ०—५ बिहूं कूरमां साथ **विरदाळा**, जोध हजार वीस जरदाळा। त्रिह रावळ गहलोत भांण तड़, भीम हठी उग्रसेन महाभड़।
—सू. प्र.

उ०—६ पाघ तिहारा पांव मैं, रिड़मल आ झट राळी। कियौ छत्रपति रंक नै, दियौ राज विरदाळी।
—हिंगळाजदांन बारहठ

(स्त्री. विरदाळी)

विरदावणौ, विरदाबौ—देखो विरुदाणौ, विरुदाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ईहगां घणौ **विरदावियौ**, मारू अमलीमांण नूं। आपरौ करैं दीधौ उतन, तरैं राव सुरतांण नूं।
—सू. प्र.

उ०—२ जौ थण दीहौ सागड़ी, ह्वै **विरदावणहार**। सींगाळौ बळ सौगुणौ, जांणावे जिण वार।
—बां. दा.

उ०—३ धूंणै सिर पकड़ै धरा, असह सहै जे आर। बौहळिया **विरदावियां**, गरज सरै नह तार।
—बां. दा.

उ०—४ राव रै हाथ लाहोरी कबांण री छै। बड़ी खपरियां रा तीर च्यार तौ मूठ में छै और तरकस दोय होदां में छै। राव राजपूतां नूं **विरदावै छै**, ललकारै छै, सो घोड़ां रा सवार हाथी सूं पांवडा बीस तीस अगल वगल ऊभा छै।
—डाढाळा सूर री बात

उ०—५ रट्ठौड रूप राए दीनौ, सुरतांण नांम दळथंभण। हिंदुवै मुसळमांणौ, **विरदाविये** जोध विरदैता।
—गु. रू. बं.

विरदावणहार, हारौ (हारी), **विरदावणियौ**—वि०।

विरदाविओड़ौ, विरदावियोड़ौ, विरदाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरदावीजणौ, विरदावीजबौ—कर्म वा०।

विरदावळी—देखो 'विरुदाळी' (रू. भे.)

विरदावियोड़ौ—देखो 'विरुदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरदावियोड़ी)

विरदूं—देखो विरुद' (रू. भे.)

उ०—दातार सूरूं राजू का पुत्र जैसे प्यारे। सूंवूं कायर राजूं को विख जैसे खारे। राजसभा के भूखण दिल के उदार। **विरदूं** के भारे समसेर बहादरूं के समसेरूं के चितारे।
—सू. प्र.

विरदेत—देखो 'विरुदैत' (रू. भे.)

उ०—दिपै चढ भूपत तांम दुबाह, रिड़म्मल तांम चढै अरिग्गाह। 'बुधौ' चढ तांम दळां **विरदेत**, 'सरूप' चढै अरि भांज सचेत।
—सि. सु. रू.

उ०—२ कायरां चेत उड प्रेत जोगण किलक, उग्रवट भूभट **विरदेत** अड़िया। 'जेत' हर जीत पाई समर जीतियौ, पांच अर असी जुधखेत पड़िया।
—तिलोकदांन बारहठ

विरदै—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—इंद्रसिंघ दक्खण थी आयौ, साथ लियौ कर तोल सवायौ। रांणसुतण **विरदै** समराथै, संग थयौ पहुंचावण साथै।
—रा. रू.

विरदैत,—देखो 'विरुदैत' (रू. भे.)

उ०—१ वेताळ वीर आगैं वधै, चालै भूचर खेचरा। **विरदैत** पेखि वंदण भणै, जैत जैत जोधांहरा।
—रा. रू.

उ०—२ चूंगाळ फूलंत खेलत चौधार, प्रह फट्टिय चंड मुंडां पधार। **विरदैत** कोड़ि करमैंत बैंस,, साखैत जैत जू वीर सैंस।
—मा. वचनिका

उ०—३ 'अभावत' क्रोध सझै अणथाह, सिधां धरि साधक व्है सिध साह। दळां निजहूंत वधै **विरदैत**, खळां मभि हाकळियौ पखरैत।
—सू. प्र.

उ०—४ बाप इता **विरदैत** छळि, धरि कुळी छतीस सहि। चाल्या स्वांमि समांणसा, सउ मांणस साखैत।
—अ. वचनिका

उ०—५ साखेतां सुहडां सांमंतां, **विरदैतां** जोधां वळवंतां। 'गाजीसाह' सिरै गैमंतां, रांणी-रांण मिळै रावतां।
—गु. रू. बं.

विरद्द—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—१ धेन पूज सुर धेन, विमधु चरणाम्रत वंदां। धनुख मांण न्रप कळप, संख जस मद्द **विरद्दां**।
—रा. रू.

उ०—२ सुकवि देख संभरै, कोड़ उच्चरै **विरद्दां**। रीत 'अजन' राठौड़, जोड़ लखि हद्द समंदां।
—रा. रू.

उ०—३ सुत धांधळ ढाल वरन्न सही, नटबा राय तुज विरद्द नहीं। भुगतूं दुख वाद थयौ भाइयां. विरदावीय 'पाल' वनौ बाइयां। —पा. प्र.

उ०—४ जोधां राकसै जरद्द मूंगळा उतारै मद्द बांहाळौ खाटै विरद्द मरद्दां मरद्द। रिमां खागै करै रद्द, बहू लियै सु सबद्द, हींदू ऐहद विहद्द जद जद जद्द। —ल. पिं.

विरध—१ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

उ०—१ **विरध** वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई। पूजा पाठ निराठ, वरै वन्नमाळां मोखी। जागण रातीजगां, दसुटण दायजां चोखी। —दसदेव

उ०—२ आला-गीला बांस कटा र चंवरी रा गीत गा दिया। वीं दिन ही **विरध** अर बीं दिन ही बनोरो, बीं दिन ही भात अर सागी दिन ही अमोरो। —दसदोख

उ०—३ भैरव काळा ओर भैरव गोरा ओ वेगेरो आव। तो बिन ओ भैरव तो बिन **विरध** न होवसी। जो तो बिन ओ भैरव तो बिन जनोई न होय। —लो गी.

२ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—१ आखी दुनिया म्हारी बातां सुणनै माथो धूणै, रींझै। जणौ जणौ म्हारो **विरध** वखांणै। सुण-सुणनै कायौ व्हैगो। नांमून सूं ओक्या बैठगी। पण अबै जावतां बातां रा सिरै मरम नें सावळ समझ्यो। —फुलवाड़ी

उ०—२ एक फिरत उचकै उरध, मति जग **विरध** विमोह। नटपट्टी दीखै निपट, घटी पलट्टी सोह। —रा. रू.

३ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

४ देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ **विरध** पिता उहां दारण वन, तहां रिखी संग तपोधन तन। —रांमरासौ

उ०—२ जु धनो घणौ **विरध** छै इण रै सेवा करण वाळो कोइ नहीं छै। —पंचदडी री वारता

उ०—३ फेर कुंवर री रांणी नै फुरमायो—जे राज रो कांम कुण चलावसी, राजा तो **विरध** हुवा। कुंवरजी री यूं हुई दैपाळदे बाळक छै। राज रांखणो छै तो आपनै विराजणो छै।
—पलक दरियाव री बात

विरधा—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—बालपणै नही चेतियो, तन तरणापो थाय। जनहरिया **विरधा** भयो, अजूं न गोविंद गाय। —अनुभववांणी

विरधापण, विरधापणौ—देखो 'व्रद्धता'।

उ०—सरधा घटगी सेंग, वेग **विरधापण** वळियो। निकळण रो रथ नहीं, कळण ऊंडी में कळियो। —ऊ. का.

विरधि, विरधी—देखो 'व्रद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ कनक दांन कुरखेत **विरधि**, गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सतसंग ग्यांन गुर वांणि उजागर। —रा. रू.

उ०—२ म्हैं तो आंगण गार गिलोवस्यां, म्हारी **विरधी** रा कोडां। चोखो रै मादळ घुळ रह्यो, रंग रातो रै मादळियो, थारो रै सबद सुहावणो। —लो. गी.

विरबोर—देखो 'बराबर' (रू. भे.)

विरम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'वरम' (रू. भे.)

विरमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

विरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

विरमणौ, विरमबौ—देखो 'विलमणौ, विलमबौ' (रू. भे.)

विरमणहार, हारौ (हारी), **विरमणियौ**—वि०।

विरमिग्रोड़ौ, विरमियोड़ौ, विरम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरमीजणौ, विरमीजबौ—भाव वा०।

विरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे.)

उ०—वांणियां रो धरम वधावै अर **विरमपुरी** सराध खावै है। आ बात आंतरै तांई जावै, ज्यूं बाहरला बांमण अठैरा टाबरां बेटां नै आपरी बेटी देवण आवै है। जांणै मीठौ पांणी अर मोकळी विरम-पुरी, आटो मांगै जकारै ही हजार धूवां री वसती है, भातै नै सेर सात पक्को घरां लेय र बड़ै है। —दसदोख

२ देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे)

उ०—दोनूं मिळ' र बात करै, वेगराजजी रा बेटा-पोता सुणै है। वेगराजजी बाजतो हो! साल में एक **विरमपुरी** किया करतो, सेठ नांव धरावतो, आया गया जिमांवतो। —दसदोख

विरमांड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

विरमांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—पीलूड़ा पुरसाद देवै, भाड़ो लेवै बाळका। **विरमांणी** धिरांणी जांणी, जाळां जूनी काळका। —दसदेव

विरमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ ओ तो गहरो गहरो **विरमाजी** रो छावो वालम रसियो, गहरौ जी फूल गुलाब रो। ओ तो गहरो गहरो नणदळ बाई री वीरो वालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाब रो। —लो. गी.

उ०—२ उण कुमार नै आपरै खांमचीपणा रो तो अणूंतो मोद हो। वो आपरी घरवाळी नै केई वेळा कैवतो कै **विरमाजी** नै अेकर इण दुनियां रा जीव जिनावर, पंछी अर मिनख घड़तां देखलूं तो वो

दूजै दिन ई वांरौ हूबौहूव सांचौ उतार दै। —फुलवाड़ी

उ०—३ डंड कमंडळ विरमा दीनी, सदासिव दीनी भारी। भगवां वसतर विसनु दीना, विचरौ विरमाचारी। —अग्यात

विरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

उ०—डंड कमंडळ विरमा दीनी; सदासिव दीनी भारी। भगवां वसतर विसनु दीना, विचरौ **विरमाचारी**। —अग्यात

विरमाणौ, विरमाबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

विरमाणहार, हारौ (हारी), **विरमाणियौ**—वि०।

विरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विरमाईजणौ, विरमाईजबौ—कर्म वा०।

विरमायोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरमायोड़ी)

विरमावणौ, विरमावबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

विरमावणहार, हारौ (हारी), **विरमावणियौ**—वि०।

विरमाविओड़ौ, विरमावियोड़ौ, विरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरमावीजणौ, विरमावीजबौ—कर्म वा०।

विरमावियोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरमावियोड़ी)

विरमियोड़ौ—देखो 'विलमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरमियोड़ी)

विरमौ-सं. पु.—१ एक प्रकार का ओढ़ने का वस्त्र, दुसाला।

उ०—भारत, रै नै वीरा, भावज ओढाया, म्हांनै घणमोलां री चूनड़ी जै। सुसराजी नै, वीरा, **विरमौ** ओढाय, सासूजी नै साड़ी सांपड़ जै। —लो. गी.

२ देखो 'बरमौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वरम' (रू. भे.)

विरम्म—देखो 'वरम' (रू. भे.)

उ०—घरारी वाहर कोप वियांन, **विरम्मां** वेढि तणै वरदांन। भमाड़ै रुड़ा भारथि भल्ल, रांयां राउ जोध अनै रिणमल्ल। —राव जैतसी रौ रासौ

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

विरयां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिरियां' (रू. भे.)

विरळ, विरल, विरलउ-सं पु.—१ सूर्य, सूरज। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'विरळौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अंधकार फोटउ। गाय तणा गाला छूटा, तारागण **विरल** हुउ, चंद्रमा विछाय थिउ। कूकड़ां तणी उलि लवइ देव तणा बार ऊघड़िया, प्राभातिक तूरय वाजियां। —रा. सा. सं.

उ०—२ को **विरलउ** तुझ आदरइ, छांडइ सहु संसार। एक आपनुं भाजतउ, बीजा भांजइ च्यार। —स. कु.

उ०—३ **विरलउ** पुण्यवंत कोइ साहु वेटा, रिद्धि तणउ समदाय। घरमवंत विनयवंत होइ, भविय कुड़ंबउ भणीइं सोइ। —वस्तिग

विरळणौ, विरळबौ-क्रि. स.—१ तहस-नहस करना, नष्ट करना।

२ आकर्षित करना।

३ पथभ्रष्ट करना, गुमराह करना।

४ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अंग कभी ऊपर और कभी नीचे करना।

५ चीरना, फाड़ना।

६ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर और ऊपर वाला भाग नीचे करना, नीचे ऊपर या ऊपर-नीचे करना।

७ अस्त-व्यस्त करना, इधर-उधर करना, बिखेरना।

क्रि. अ.—१ तहस-नहस होना, नष्ट होना।

२ आकर्षित होना, मोहित होना।

३ पथभ्रष्ट होना, गुमराह होना।

विरळणहार, हारौ (हारी), **विरळणियौ**—वि०।

विरळिओड़ौ, विरळियोड़ौ, विरळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरळीजणौ, विरळीजबौ—कर्म/भाव वा०।

बिरळणौ, बिरळबौ, वरळणौ; वरळबौ—रू. भे.।

विरळाणौ, विरळाबौ-क्रि. स.—दिखाना।

उ०—भायै भळहळिया भुरटां रा भारा, अध अंग ऊलळिया उरगा रा आरा। विरळा दातां री पांता **विरळाती**, चोड़ै चाचर री चौड़ै चिरळाती। —ऊ. का.

विरळाणहार, हारौ (हारी), **विरळाणियौ**—वि०।

विरळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विरळाईजणौ, विरळाईजबौ—कर्म वा०।

बिरळाणौ, बिरळाबौ, बिरळावणौ, बिरळावबौ, वरळाणौ, वरळाबौ, वरळावणौ, वरळावबौ, विरळावणौ, विरळावबौ—रू० भे०।

विरळायोड़ौ-भू. का. कृ.—दिखाया हुआ।

(स्त्री, विरळायोड़ी)

विरळावणौ, विरळावबौ—देखो 'विरळाणौ, विरळाबौ' (रू. भे.)

विरळावणहार, हारौ (हारी), **विरळावणियौ**—वि०।

विरळाविओड़ौ, विरळावियोड़ौ, विरळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरळावीजणौ विरळावीजबौ—कर्म वा०।

विरळावियोड़ौ—देखो 'विरळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरळावियोड़ी)

विरळियोड़ौ-भू. का कृ.—१ तहस-नहस हुआ या किया हुआ, नष्ट किया या हुवा हुआ. २ आकर्षित किया या हुवा हुआ. ३ पथ-भ्रष्ट किया या हुवा हुआ. ४ गुमराह किया या हुवा हुआ. ५ चीरा या फाड़ा हुआ. ६ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अंग कभी ऊपर और कभी नीचे किया हुआ. ७ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर व ऊपर वाला भाग नीचे किया हुआ. ८ अस्त व्यस्त किया हुआ, इधर-उधर किया हुआ, बिखेरा हुआ।

(स्त्री. विरळियोड़ी)

विरळ, विरलु, विरळौ, विरलौ—वि. [सं. विरलं] १ जो बहुतायत से नहीं मिलता हो, थोड़ा, कम, दुर्लभ।

२ जिसके अंग आदि पास-पास न हो, घना न हो, सघन का विपर्यय।

उ०—भाये भळहळिया भुरटां रा भारा, अध अंग ऊलळिया उरगां रा आरा। **विरळा** दांतां री पांता विरळाती, चोड़ै चाचर री चौड़ै चिर ळाती। —ऊ. का.

३ गाढ़ा का विपर्यय, पतला।

४ जहां कोई नहीं हो, निर्जन, शून्य।

५ जहां कुछ भी नहीं हो, खाली, रिक्त।

६ सैकड़ों हजारों या लाखों में से एक, कोई एक, अद्वितीय।

उ०—१ जैसे सरपणी करत कुंडाळा, बचीया जण जण खाई। आंटा बार पड़्या सोई जीता, यूं **विरळा** बच जाई। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ काछ दिढा कर बरसणा, पर कजु मुंहा-मिठ्ठ। रिण-सूरा जग वल्लभा, सो मैं **विरळा** दिठ। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दादू पखा पखी संसार सब, निरपख **विरळा** कोइ। सोई निरपख होइगा, जाकै नांम निरंजन होइ। —दादूवांणी

उ०—४ जाइजो रे समकित नो परगम्यो रे, जिन मारग नै चाढी सोभ रे। इसड़ी समता केई **विरला** करै रे, जीत्या छै मोह त्रसणा नै लोभ रे। —जयवांणी

उ०—५ अरध उरध मैं कीया पयांणा, जांणै **विरला** जोगूं। मन पवनां पछिम की घाटी, आपा नांव तरोगूं। —अनुभववांणी

उ०—६ सोकड नवि संपति मिलइ, हरख धरइ नवि जाइ। हरख-सोक-समचित तै, **विरला** जाया माई। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बिरळौ, वरळु, वरलु, विरळ, विरल, विरलउ।

विरवड़, विरवड़ी—देखो 'वरवड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ **विरवड़** मात रमत बायां में, चरवड़ भात चढाई। घणीं खमा राजा नोघण री, जाती फौज जिमाई। —मे. म.

उ०—२ आवड़ **विरवड़** वाहण चाळक, सारी सकति सहाय। अमरां व्रंद सदा प्रतपाळै, मेहाई महमाय। —राघवदास भादौ

विरस—वि. [सं.] १ जिसमें रस न हो, स्वाद या जायके रहित, रसर-हित।

उ०—१ जिन मारग में अनुरताजी, अरस नै **विरस** आहार। तक तक घर जावै नहीं जी, तप कियौ न करै जहार। —जयवांणी

उ०—२ अरस **विरस** अंत पंत लुह, ए चाल्या पंच आहार। ए जीमी जीवै मुनि, धन मोटा अणगार। —जयवांणी

२ कष्ट, पीड़ा, सन्ताप।

३ प्रेम या प्रीति रहित, अनुराग रहित।

उ०—पातर वाळी प्रीत, मीठी लागै प्रथम मन। मंद हुआ धन मीत, हुएं **विरस** कड़वी हुवै। —बां. दा.

४ रति-क्रीड़ा से विरक्त, काम-केलि से दूर या विषय-वासना रहित।

५ उमंग रहित, जोश या उत्साह रहित, मनोवेग का अभाव।

६ मीठास का अभाव, कड़वाहट।

७ रक्त-हीन, रुधिररहित।

८ तरलता रहित, आर्द्रता रहित, शुष्क।

९ गुणों का अभाव या तत्वरहित, सार रहित।

१० नाराज।

उ०—प्रक्रत एकण भांतरी छै, सु रांणाजी नूं कहाड़िया, राजा मांन-सिंह सूं मत मिळो, औ एकण भांत रो आदमी छै। रांणौ वरजियौ रयौ नहीं। आय मिळियौ। मैहमांनी करी। जीमण पगां **विरस** हुवौ तद मांनसिंह दरगाह गयौ। —नैणसी

११ शत्रु, दुश्मन।

उ०—संमत १६६२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैसिंघ वाघोतरै दावै हमीर भाटियां ऊपर दोड़िया हुता। तिण दिन राव सूरजसिंघ नै कंवर बलू **विरस** हुवौ थौ, सु बलू विकूंपुर सूं छाडनै कैरडूंगर री पाखती आयौ थौ। —नैणसी

१२ कळह, झगडा।

१३ जो अच्छा न लगै, अरुचिकर।

१४ चिन्तातुर, चिन्तामग्न, उदास।

उ०—पाधारै नृप जोधपुर, गढ चाढिया कमंध। आप **विरस** हुए चीतियौ, धरा चहूं दिस धंधू। —रा. रू.

१५ जो दयालु न हो, निर्दय।

१६ निष्ठुर, हृदयहीन।

१७ पीड़ाकारक, कष्टप्रद।

सं. पु.—रीस, क्रोध।

उ०—रांमसिंघजी गाडा नवहर लै जाइ राखिया । कुंवर रिणी सिधाया । तिसड़ै सैं वांसै सीरोही राजाजी कन्हां सुरतांण प्रिथीराज पणि विरस करि घरे आया । घरै आइ रहिया । —द. वि.
रू. भे.—विरस, विरसाळौ, विरसालौ ।

विरसपत, विरसपति, विरसपती – देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

विरसाळौ, विरसालौ–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—ग्रोप साह ऊहड़ अभंग, कमधज करिणाळा । हाथ जोड हरजी हंसै, साहिब विरसाळा । —पी. ग्रं.

२ देखो 'विरस (रू. भे.)

उ०—संभाली ल्यें वडां सोह, सुचाली कलत्त सुत्त, क्या करै कंकाली नाली अनाली कपूत । वांणी कै रसाली वदैं विरसाली एकां बात, कली कालि उजवालि आपरी करतूत । —घ. व. ग्रं.
(स्त्री विरसाळी, विरसाली)

विरस्पत, विरस्पति, विरस्पती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

विरह–सं. पु. [सं.] १ संयोग का अभाव, वियोग ।

२ विच्छेद, अलगाव ।

३ दो प्रेमियों के अलग-अलग होने की अवस्था, जुदाई ।

उ०—१ मैं कीधौ सांचै मतै, नायक तोसूं नेह । बण आवैं सौ देह वित, दाह विरह मत देह । —बां. दा.

उ०—२ विरह पीर तन भीतरै, पलक न विसरी जाय । जनहरिया हरी कारणै, नैणां नीझर लाय । —अनुभववांणी

उ०—३ रोम रोम मैं विरह की, विथा वियापी एक । जनहरिया कैसैं कटै, ओखदहार अनेक । —अनुभववांणी

४ उक्त वियोग या जुदाई से उत्पन्न मानसिक कष्ट, दुःख या पीड़ा ।

उ०—१······काळ रा नेवर पद्मरिग्रां, केळिग्रभ चंदण री छेडौ रतना री रासि, अंधारै रौ आदीत; अरस री अभरी, सरग री झांप, विरह रौ समूह रूप रौ निधांन, थाका हंस री टोळी, निवायै री होळी, घणौं हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराजमांन होइ नै रही छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ बैर महीं तोटौ वसै, वसै नफौ नह 'बंक' । सिया विरह राघव सह्यौ, रावण पलटी लंक । —बां. दा.

उ०—३ जद सुध आवत पीव की, विरह उठत, तन जाग । ज्यूं चूनै की कांकरी, जद छिड़कौ तद आग । —अज्ञात

उ०—४ वडारण कन्है बैठी थी, सो दिलासा दीवी । सो भरमल नं तौ सारी वात वीसर गई । जीव तौ कुंवरजी कन्हैं गयौ, देह पड़ी छै । सो इसौ विरह ऊठीयौ, सो राखीयौ न रहै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

५ अनुपस्थिति, गैरहाजरी ।

६ छोड़ने की क्रिया या त्याग ।

वि.—१ तप्त, गर्म ।* (डिं. को)

२ बिना, रहित, हीन ।

देखो 'विरही' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू भे.—बिरह, ब्रह, वरह, वरहु, विरहि, व्रिह ।

विरहण, विरहणि, विरहणी–सं. स्त्री.—वह स्त्री या प्रेयसी, जो अपने पति या प्रियतम से अलग या दूर हो ।

उ०—१ पाजै पांणी न थांहरै, थरहर कंपै देह । हाथ सुंहाळी मारवण, विरहण, पाडै वेह । —ढो. मा.

उ०—२ सहियां सोइ विदेस पिव, तनहि न जावै ताप । बाबहिया असाढ जिय, विरहण करै विलाप । —अज्ञात

उ०—३ कबहूं नैन निरख नहिं देखै, मारग चितवत तोर । दादू ऐसैं आतु विरहणि, जैसैं चंद चकोर । —दादू बांणी

उ०—४ माती खेती पाती नीपनी काती मास, कातीय विरहणि छाती में काती वहैं नहीं जास । दीप दीवालीय वलिय सुहालिय नै पकवांन, खलक रचैं पिण मुझ नैं न रुचै खांन नैं पांन ।
—घ. व. ग्रं.

उ०—५ बाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवां एक सहाव । जब ही बरसइ घण घणउ, तब ही कहइ प्रियाव । —ढो. मा.

उ०—६ तिणि वाउ कमळ था सु बाळि इसा कीया जु । जिसौ विरहणी कौ मुख । आंब था सु इसा कीया जिसौ संजोगिणी कौ उरस्थळ । —वेलि टी

वि.—जो अपने प्रिय या पति से अलग या दूर हो ।

रू. भे.—बरहण, बरिहण, बिरहण, बिरहणी, बिरहन, बिरहनी, वरहण, विरहन, विरहनि, विरहनी, विरहिण, विरहिणि, विरहिणी, विरहण, विरहणि, विरहणी, विरुहण, विरुहणि, विरूहण, विरूहणि, विरूहणी ।

विरहणौ, विरहबौ–क्रि. अ. [सं.] १ चीरा जाना, विदीर्ण किया जाना ।

उ०—मैं कांमी कपटी क्रोध काया में, कूप परत नहिं डरतै । करवत कांम सीस धर अपनै, आपहि आप विरहतै । —दादूवांणी

२ संयोग का अभाव होना, वियोग होना ।

३ विच्छेद होना, अलग होना ।

४ दो प्रेमियों का अलग-अलग होना ।

५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट होना ।

६ छोड़ना, त्यागना ।

विरहणहार, हारौ (हारी) विरहणियौ—वि० ।

विरहिओड़ौ, विरहियोड़ौ, विरहयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरहीजणौ, विरहीजबौ—भाव वा० ।

बिरहन, बिरहनि, बिरहनी—देखो 'बिरहण' (रू. भे.)

उ०—१ नैणां नीझर लाविया, छह रुत बारै मास। हरिया बिर-हन रांम कूं, एक न बिसरै सास। —अनुभववांणी

उ०—२ उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ, करत प्रियु प्रियु सोर। बिरह सइं पीरी अति अधीरी, डरत बिरहनि जोर। —वि. कु.

उ०—३ बिरहनि तेरी प्रांण झुरत है, दाधी बेलि सिचाई। मीरां को प्रभु दरसन दीजै, प्रांण रखौ सरणाई। —मीरां

उ०—४ बिरहनी ऊभी दरद सूं, अबळा सूं क्या मांण। कै मिळिहौ कै तन तजूं, सुणिहौ कत सुजांण। —ह. पु. वां.

उ०—५ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नहीं भरि सोय। रांम बिसूरै बिरहनी, आंसु कर सुं धोय। —अनुभववांणी

बिरहमण—देखो 'ब्रांह्मण' (रू. भे.)

उ०—चोपदार की मारफत रुघनाथसिंह से मिळने का इरादा किया, उसने साल भर पहलै औरत के मरने की मातमी का बहांना लिया। नेक वखत एक बिरहमण नें स्यांम कौ अरज गुजराई, है तौ मिळण कै लायक अेक चारण मुजराई। —दुरगादत्त बारहठ

बिरहमांण, बिरमांन—देखो 'बिहरमांण' (रू. भे.)

बिरहांमण—देखो 'ब्रांह्मण' (रू. भे.)

बिरहाग, बिरहागन, बिरहागनि, बिरहाग्नि—सं. स्त्री [सं. बिरह+अग्नि] बिरहानल।

उ०—१ व्यथा बिरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग संयोग सुहाय। अनाग्रह भुल्लित आंन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय। —ऊ. का.

उ०—२ त्रिलोचना कुमरी तिण वार, दुख संपूरित ह्रिदय मझार दुखणी दुस भरि करै विलाप, प्रीय बिरहागनि तन संताप। —वि. कु.

उ०—३ पीहर तौ परतटै रहिया, प्रीतम बिरहागनि दहिया। प्रमदा इणि परि विलवती, दुख रोई राति गलंती। —स्रीपाळरास

बिरहानळ, बिरहानल, बिरहानलि—सं. स्त्री. [सं. बिरह+अनल] बिर-हाग्नि।

उ०—१ काळी कांठळ में दांमणियां दमकी, चित मैं कांमणियां बिरहानळ चमकी। छूटी आसारां कासारां छिलती, पड़ती परनाळां पहुवी पिलपिलती। —ऊ. का.

उ०—२ जेठ दीहाड़ा जेठ ना, लागइ ताप अथाहौ जी। बिरहानल तपइं दियउ, प्रियु तुम चंदन बांहौ जी। —वि. कु.

उ०—३ दिल सुद्ध प्रणमुं नेमि जिनेसर परमदयाल। रोक्या जीव ते मूक्या तोरण थी रथ-वाल। राजिमति सती नेह वस किय विविध विलाप, तौ पिण तसु तणु नाइ सक्यौ बिरहानल ताप।

उ०—४ जै जळ सीकर, तै उद्वेग कर। जउ सीतलोपचार, तै करइ विकार। इवि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, बिरहाळ नीपजइ। —रा. सा. सं.

उ०—५ दवदंति बिरहानलि हा नलि नडिय अपार। प्रिय मेलउ केतै वासरै, आसरै वडिय संसारि। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—बिरहानळ, बिरहानल।

बिरहाळी, बिरहाली—सं. स्त्री.—सौंफ, शतपुष्पा।

उ०—१ जायफळ लांग इळायची मिरच बिरहाळी अजूं नागकेसर भमरटंटी तज तमालपत्र तंबोळ प्रत संथी। और ही मसाला मंगा-यजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ लाभइ खांड तेल नइ मिरी, करइ सालणां लाभइ सुरी। अजमा जीरां लाभइ बहू, वेसण बिरहाळी लइ सहू। —कां. दे. प्र.

बिरहि—देखो 'बिरह' (रू. भे.)

उ०—१ त्यांहां जई तेहनि बिरहि लगाडूं प्रीत करि यम नारि। गुण ओसीकल थायि नहीं, राई, धिक तेहनु अवतार। —नळाख्यांन

उ०—२ वीणा डफ महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग। तरुणी तरुण बिरहि जण दुतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग। —वेलि

उ०—३ बिरहि विरागीय वण मझारि, जाईउ मणि झायइ। लव-णिय जूवणु रूपरेह तां आलिहिं जाइ। —सालिभद्र सूरि

बिरहिण, बिरहिणि, बिरहिणी—देखो 'बिरहणी' (रू. भे.)

उ०—१ रूप सुरंगा सांवरौ, मुख निरखण जावां। मीरां व्याकुळ बिरहिणी, अपनी कर ल्यावां। —मीरां

उ०—२ आरति तेरी अंतरी मेरै, आवौ अपनी जांण। मीरां व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्रांण। —मीरां

उ०—३ आव अमोडा-माहिं घरु, ईस तणइ जिम गंग। हूं विलपंती बिरहिणी, स्वांमि ! म छंडिसि संग। —मा. कां. प्र.

उ०—४ 'को विलपंती बिरहिणी, घांणी मन्मथ घाय। ससिहर नइं साहमु लिखी, सिंह देखाडइ कांय। —मा. कां. प्र.

बिरहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. २ संयोग का अभाव हुवा हुआ, वियोग हुवा हुआ. ३ विच्छेद हुवा हुआ, अलगाव हुवा हुआ. ४ दो प्रेमियों का अलग-अलग हुवा हुआ. ५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट हुवा हुआ. ६ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

(स्त्री. बिरहियोड़ी)

बिरही—वि. [सं] १ जो अपनी पत्नी या प्रियतमा से अलग या दूर हो या अलग या दूर होने के कारण दुःखी हो।

उ०—१ तास थयौ प्रारंभ रै, थंभ जिसा रे तरुवर पालवै रे। दुखियां नैं दुरलंभ रे, **विरही** लोकां रै हीयड़ै सालवै रे। —वि. कु.

उ०—२ सूरज ना किरन पच्छिम ढळया। पंथी मगा नइ मिल्या। विरही ना हीया वळया, गोवाळ घरै वळया। चौपूं लाव्या, आप आपना घरै आव्या। —रा. सा. स.

उ०—३ हाथे न लेवइं वस्त्र। आधा ओढै वस्त्र। लोक सीसिग्राट करइं, चौपूं उछरइं, ताढइ न चरइं। धूजै बाळगोपाळ, **विरही** मां पड़इ हवाल, सहु बैठा चौसाळ, साचव्या देहरा नइ पोसाळ, एहवौ सीतकाळ। —रा. सा. सं.

२ कठोर।* (डिं. को.)

३ देखो 'बरही' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू. भे.—बिरही।

विरहीवीर—वि.—वीरों में वीर, महावीर।

सं. पु.—श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम। (नां. मा.)

विरहुण, विरहुणि, विरहुणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे)

उ०—गिरि गिरि वाधइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास। मंडइ मोर कला घणी, **विरहुणियां**-तन त्रास। —मा. कां. प्र.

विरहोत्कंठिता—सं. स्त्री. [सं. विरह+उत्कंठिता] विरह मे व्याकुल वह नायिका जिसे अपने नायक के आने का पूरा-पूरा विश्वास हो किन्तु वह किसी कारणवश न आ सके।

विरहौ—देखो विरह' (रू. भे.)

उ०—१ प्राये छोरू न लहै सार, मावीत्रां नी किण ही वार। पिण मावीत्र तपै दिन-राति, पांणी वल **विरहौ** न खमात। —वि. कु.

उ०—२ अधिकौ **विरहौ** अंग में रे लाल, तै किम दूरै थाय है सहेली। जमवारौ जल मैं वसै रे लाल, चकमावि अगन उल्हाय है सहेली। —घ. व. ग्रं.

उ०—३ संजोग रौ विजोग पड़ जावै। सारीरिक मांनसिक दुख ऊपजै। जठै भगवांन मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुखां रौ कदेइ **विरहौ** पड़ै ईज नहीं। ए स्वांमीजी रा वचन सुणनैं संतोख आय गयौ। —भि. द्र.

उ०—४ **विरहौ** मो दाहै सदा, कासूं करुं पुकार। प्रीतम अब कीजै क्रपा, लीजै हाथ पसार। —कुंवरसी सांखला री वारता

विरांण—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

उ०—१ उण घूमर क्रोध भळा ऊभळी, अड़िया असुरांण उचार अळी। सयदांण जुवांण **विरांण** सजं, गुमरांण उफांण अरोह गजं। —सू. प्र.

उ०—२ **विरांण** मीर बीठा विलद, नीसांण फील दीठा नरिंद। वरहड़ै क्रोध परचंड धूप, भुज डड अड़ै वहमंड भूप। —वि. सं.

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

विरांणी—१ देखो 'वणियांणी' (रू. भे.)

२ देखो 'विडांणौ' (स्त्री.) (रू. भे)

उ०—सुणबाला, इक रंग पोढती कंठ लगांणी, जागी जजकां नैण बिलखतां नीर भरांणी। पूछंतां,मुळकाय कह्या थें बोल सयांणी। छळिया! पेख्यौ तूझ विलमणौ नार **विरांणी**। —मेघ

विरांणौ—देखो 'विडांणौ' (रू. भे)

उ०—१ हीर चीर हेम तार बड़ी मैं **विरांणा** होसी, लाखां द्रव्य विभौ सबै हाथी घोड़ा लांठ। गाम धांम झूठा जांणै धंधे झूठा लागा नरां, गार रा मिरग रै पड़ी वायरा री गांठ। —ओपौ आढौ

उ०—२ खाणां पीणा खरचणा, और न चालै सथ। जसवंत वर पोढाविया, माल **विरांणा** हथ। —महाराजा जसवंतसिंह

उ०—३ वपु माया नै जांण **विरांणी**, पांव न घर खोटी दिस प्रांणी। रघुवर साचौ दास रसांणी,बोल 'वकसिया' अमरत वांणी। —बक्सीरांम लाळस

(स्त्री. विरांणी)

विरांन—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—मूळी दाझै, रूसै अर रीस रळै। पेमजी जूझै, कुढै अर गुंग में गळै। गठजोड़ौ तौ जुड़्यौ पण मन-मेळू जोड़ौ मिल्यौ नहीं। मूळी लांबी अर जुवांन। पेमजी ओछौ, गटमींगणियौ बूढौ **विरांन**। दौ-दौ दुख सागै रळग्या। —दसदोख

विरांम—सं. स्त्री. [सं. विराम] १ क्रिया, गति, चाल आदि में होने वाला ठहराव, अटकाव।

२ अन्तिम अवस्था, समाप्ति।

३ आराम, विश्राम।

४ कार्य, सेवा आदि से मिलने वाला अवकाश, निवृत्ति।

५ वाक्य व छन्द में वह स्थान जहां बोलते या पढ़ते समय कुछ समय के लिए रुकना पड़ता है।

६ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—हरि है दाता देह का तातैं भया सकांम। गुर है दाता ग्यांन का, मन का मेट **विरांम**। —अनुभववांणी

७ विराम चिन्ह।

८ चिन्ह, लक्षण।

उ०—माता पिता के आगै खेलतां। कांम रा जु **विरांम** छै। सु छिपाया चाहिजै। सु कांम रा विरांम कुण। जु ऐक तउ कुच प्रगट हुया। नेत्रां चंचलता हुई। नितंब भारी दीसै लागा। ए कांम का विरांम। —वेलि टी.

९ घबराहट, क्षोभ, खलबली, अशान्ति।

उ०—कमंधां पत दरकूच कर, घरि मेड़तै मुकांम। धर दिल्ली धूजै उरै, पुर आगरै **विरांम**। —रा. रू.

१० उत्पात, उपद्रव।

उ०—माया मोह न कीजियै, माया बडी हरांम। जनहरिया तिह लोक मैं, केता करै **विरांम**।

११ कष्ट, पीड़ा, संकट।

उ०—१ दूहौ दुपटौ दांम, जोड़चा सो ही जांणसी। ब्यावर तणा **विरांम**, वांभ न जांणै वींभरा। —वींभरै अहीर री वात

उ०—२ अभिखा अंक आहवय अविधा, नांमधेय संग्या हरि नांम। आठई पहर राखि उर अंतर, वेग टळै दुख दळिद्र **विरांम**। —ह. नां. मा.

उ०—३ भगवत्ति आवौ भांई, मुझ मदत स्रीमहामाई। नित पढै प्रहस में नांम, त्यां रोरि भंजि **विरांम**। —मा. वचनिका

१२ निवास-स्थान।

१३ अग्यांन।

उ०—मैं मन कुं नही जांणिया, मन का बौहत **विरांम**। हरीया इनकुं उलटि कै, सदा सिवरियै रांम। —अनुभववांणी

रू. भे.—विरांम।

विरांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ रुळचा खुळचा रजपूत, **विरांमण** मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा। चोड़ै धाड़ै चोर ढंग विन ढेढस ढेढी। जिकै नहीं किण जोग, मिळचा घर घर रा मेढी। —ऊ. का.

उ०—२ हिमैं **विरांमण** जीवण जसावत रौ नै मनोहर रांमावत छै। जाट रजपूत बांभण बांणिया बसै। —नैणसी

(स्त्री. विरांमणी)

विरांमणी—सं. स्त्री.—१ ब्रह्मचारणी देवी, ब्राह्मणी।

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री.) (रू. भे.)

विरांमणौ, विरांमबौ—क्रि. स.—१ शर्मिन्दा करना, लज्जित करना।

उ०—सुनि भरस संभार सदन घणा क्रपणां तणौ **विरांमियौ**। कर भू पर कीरत करमसी, रायसिंघ विसरांमियौ। —नैणसी

२ विश्राम देना, विश्राम करना, आराम करना।

३ कष्ट देना, दुःख देना, पीड़ित करना।

४ रोकना, ठहराना।

क्रि. अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

२ पीड़ित होना, दुःखी होना।

३ रुकना, ठहरना।

४ मरना, अवसान।

उ०—पतळा नसीब पाता सुरां, परज करमफळ पावियौ। प्रतपाळ 'सिवौ' माता पिता, वड दातार **विरांमियौ**। —साहबदांन सुरतांणियौ

५ हटना।

उ०—चिंतामणि पारस पौरसौ, सुधा सरोवर कांमगा। संपजै तांम सुत संपनै, ग्रह सुर धांम **विरांमगा**। —रा. रू.

विरांमणहार, हारौ (हारी), विरांमणियौ—वि०।

विरांमिओड़ौ, विरांमियोड़ौ, विराम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरांमीजणौ, वीरांमीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विरांमब्रह्म—सं. पु. [सं. विराम-ब्रह्म] ब्रह्म ताल का एक भेद विशेष। (संगीत)

विरांमियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शर्मिन्दा किया या हुवा हुआ, लज्जित किया या हुवा हुआ. २ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ. ३ पीड़ित किया या हुवा हुआ, दुःखी किया या हुवा हुआ. ४ रोका हुआ, ठहराया हुआ. ५ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ६ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ७ हटा हुआ। (स्त्री. विरांमियोड़ी)

विरांमी—वि. [सं. विराम] १ विश्राम करने वाला, आराम करने वाला।

२ व्याकुल, बेचैन।

३ शर्मिन्दा करने या होने वाला।

४ पीड़ित होने या करने वाला, दुःखी होने या करने वाला।

५ रुकने या रोकने वाला।

६ मरने वाला।

७ हटने वाला।

विराग—सं. पु.—१ एक में मिला हुआ दूसरा राग। (संगीत)

२ देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

विरागणौ, विरागबौ—क्रि. स—१ वैराग्य ले लेना, संन्यास ले लेना।

उ०—तितरै रांणैजी री दीकरी रांमसिंघजी री बहू नांम आंबां रांम कहियौ। तिण ऊपरि रांमसिंघजी **विरागिया**। दाढी न सुवराड़ै। कपड़ा न धोवाडै। वागौ न पहिरै। आरासि न करै। —द. वि.

२ त्यागना, छोड़ना।

विरागणहार, हारौ (हारी), विरागणियौ—वि०।

विरागिग्रोड़ौ, विरागियोड़ो, विराग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरागीजणौ, विरागीजबौ—कर्म वा० ।

विरागियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वैराग्य लिया हुआ, संन्यास लिया हुआ. २ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ ।

(स्त्री. विरागियोड़ी)

विरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.) (सभा)

विरागीय—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—विरहि विरागीय वरण मझारि जाईउ मणि झायइ । लवणिम जूवरण रूपरेह तां आलिहिं जाइ । —सालिभद्रसूरि

विरागौ—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—साचउ जांणइ जिणधरममागौ, तउ मनि जूवण लगइ **विरागौ** । गंगानंदण वणि वसार । —सालिभद्र सूरि

विराड़-सं. पु.—१ हिस्सा. बंट । (मा. म.)

२ देखो 'वराड़' (रू. भे)

विराज-सं. स्त्री.—१ शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य ।

उ०—डोहत सूंड सिघळी, घटा **विराज** सांमळी । घमंकि घट घुग्घरं, सिंदूर सीस चम्मरं । —गु. रू. बं.

सं. पु.—२ राजा, नृप ।

३ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।

४ क्षत्रिय जाति का व्यक्ति ।

५ स्वयंभुव मनु का नामान्तर ।

६ नर राजा का पुत्र एक राजा ।

७ एक वैदिक छन्द विशेष ।

८ कुरुवंशीय राजा अविक्षित के पुत्र ।

विराजणौ, विराजबौ-क्रि. अ. [सं. विराजनम्] १ शोभित होना, शोभायमान होना ।

उ०—१ और ही अनेक भांत रा फूलां री माळा किलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै । सू सारै साथ नै बकसजै छै । फूलां रां चौसरा घातजै छै । छड़ी हाथां में **विराज** रही छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ बांकौ मुकट काछनी सुंदर, ऊपर जरद किनारी । गळ मूतियन की माळ **विराजै**, कुंडळ की छबि न्यारी । —मीरां

उ०—३ समपै अनड़ दाढाळ सहट्टां, दैतां दहण करण दहवट्टां । रातंबर तन रोम **विराजै**, झळकंत तेज सुरां मझि भ्राजै ।
—मा. वचनिका

उ०—४ बिंदली सीस विराजही, मांग ज भरी सिंदूर । नथ **विराजै** नासिका, रही सोभ भरपूर ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ निवास करना, रहना ।

उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत **विराजणौ** आप । वोहि बंगळौ अणखावणौ, तौ विण घणौ 'प्रताप' । —जैतदान बारहठ

उ०—२ दूर दिसावर जेहनौ पिऊ वसै जी, तै नार सुहागण कहाय । महाविदेह में वणिय विराजियाजी, तिकै निरधणिया किम थाय । —जयवांणी

उ०—३ सोजत रा बजार में छत्री त्यां स्वांमीजी **विराज्या** ।
—भि. द्र.

उ०—४ अजमेर में आंनासागर ऊपर बाग में मेल रैवास रा कराया, ऊठै **विराजता** जद । —मारवाड़ री ख्यात

३ बैठना । (आदर-सूचक, सम्मान सूचक)

उ०—१ कसतूरी केसर अरगजो, चंदन तिलक लिलाटि । करै स्रीपति री आरती, किसन विराज्या पाटि । —पदम भगत

उ०—२ अेकदा प्रस्ताव राव जोधोजी दरबार कियां विराजै है नै सारा भाई वा अमराव वा कंवर हाजर है । —द. दा.

उ०—३ ताहरां गोगैजी कह्यौ—घोड़ा हूं ले आऊं छूं, ज्यूं आंपां घरै हालां । ताहरां पाबूजी कह्यौ—राज ! आप **विराजौ** । हूं लै आईस । —नैणसी

उ०—४ उन्हाळै चोमासै सिरया री पक्की हाटै **स्वांमीजी** बखांण देता, भीखणजी स्वांमी भारमलजी आगै जोड़ै **विराजता**, पाखती कंठ मिलावण वाला भाया बेठता, बीजा साध मांहै बेसता ।
—भि. द्र.

उ०—५ पौळि पौळि उच्छ्व प्रबळ, वेदोकति विसतार । राजा तखत विराजियौ, सुभ चौकी स्रंगार । —रा. रू.

उ०—६ डोडी रै बारणै वैहळ सु उतर भीतर नुं चाली, सो आगै रांणोजी मूढै ऊपर **विराजिया** छै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

४ होना ।

उ०—१ चक्रवरती दसै हुआ, धरम तणै परताप । आरंभ परिग्रहो त्यागनै, मोख **विराज्या** आप । —जयवांणी

उ०—२ आंदेसरजी' एड़ी कही, 'भरतादिक' सौ भाय । धरम तणै परभाव सूं, मुगत **विराज्या** जाय । —जयवांणी

५ उमड़ना, छाना, आच्छादित होना ।

उ०—चिहुं ओर घोर घटा **विराजत**, गुहिर गाजत गइन । घरि अधिक गाढ अखाढ उलव्यउ, घव्यउ, चित सै चइन । —वि. कु.

६ रहना ।

उ०—१ गांम रे वास्तै भार ई कांई है। गांमसाऊ रुपिया आपरै खनै इज है। आप जोधपुर जाय नें रेडियो ले पधारो। अठै विराजौ जितरै खूब धूंधावौ अर बदळी व्हैनें पधारो जद रेडियो आपरो नें आपरै बाप रो। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ राजा दखिण विराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह सुपारिस सांभळै, की फत्तै सरहद्द। —गु. रू. बं.

७ जीवित रहना। (सम्मान, आदर)

उ०—१ ताहरां सरब हजूरी, पासवांन, खवास तेरू हुता तिकै सरब तळाव ढूंढियो। घणो ही जोयो पण हाथ न आयो। इतरै में कुंवर री अतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सबद हुवौ। साथ सारो ही रोवण-कूकण लागो। राजा नै जाय खबर हुई सो सुण नै मुरछा-गति हो गई, विवहल होय ग्यो। कुंवर सुंदरदास दीठौ कै कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटै तौ राज जाय छै। ताहरां कुंवर दैपाळदे नै उठाय छाती सूं लगायौ। नांक भींच सावचेत कियो। राजा सावचेत हुवौ। फेर कूकण-पुकारण लागा। तद महतै अरज कीवी-जै कुंवरजी री आ दसा हुई। दैपाळ निराठ दिलगीर हुवौ। बूकारोळ सूं कुळराइज गयो, कहचौ-महाराज दिलासा करो। इण ऊपर जीव टेकौ अर परमेस्वरजी आईज की तौ किण रो ही दोख नहीं। यूं कहि दूहौ कहचौ-

सुख में दुख संचारबौ, दुखियां सुख दयाल।
देवज रूठौ दांणवै, हरि रूठां बेहाल॥

यूं कहि राजा नूं समझायौ। सावचेत कियो अर कहचौ-महाराज, थांहरै सारी दौलत छै, कुटंब छै। इण तरह राजा नूं धीरज बंधाय जनांनी डोढी गयौ। जनांनै सारै ही में धीरज दीवी। कुंवर री मां अर महळ दोनूं ही हठ झालियौ-कुंवर रौ मुंहडौ देखां। ताहरां कुंवर री मां नै तौ कहचौ-थै तौ सुग्यांनी छौ। इतरा सास्तर सुणिया छै। कथा सुणी तैं मैं इतरो ही हठ सुणियो छै? यूं कहि रांणी रो हठ छुडायो। फेर कुंवर री रांणी नै फुरमायौ-जै राज रो कांम कुण चलावसी, राजा तो विरघ हुवा। कुंवरजी री यूं हुई। दैपाळदे बाळक छै। राज राखणो छै तौ आपनै विराजणौ छै। परमेस्वरजी निमित्त धरम-पुन करो। घणो सोच करणो तौ असमझ रो कांम छै। हठ छोड अर लारै रहि कर राज करो। —पलक दरियाव री बात

उ०—२ इयै भूतळ पर आप ५३ वरस रे अड़ंगड़ै विराजिया अर संवत् १९५१ में सिवलोक सिधारिया। —संत सेठ स्रीरांमरतन डागा री वात

८ ठहरना, रुकना।

उ०—१ गुणसठै रा साल चवदै साधां सूं तथा चवदै आरयां सूं देवगढ में भीखणजी स्वांमी विराज्या हुंता, तिहां तीन'''आय बोल्या—भीखणजी म्हैं तीन जणां त्यांनेइ पूरो आहार नहीं मिल्यो तौ थांनै इतरा ठांणां नै आहार किण रीतै मिलै। —भि. द्र.

उ०—२ अंतरपट कर सहैल्यां हथबोळणै री कसार मुंह आगै आंण धरियो। ताहरां भरमल अरज होळै सै कीवी, जो आज रात चाकर ऊपर किरपा कर विराजै तौ मोटी करै। —कुंवरसी सांखलै री वारता

९ निवास करना।

उ०—औघड़ एक न पायो औघड़, आक धतूरा खाय हुवो तड़। बुरा भला खावै किस काजै, तेरै भीतरि रांम विराजै। —अनुभववांणी

१० स्थित होना।

उ०—वलि तेहनै चो पाखती, विकट दुरंग विराजै रे। घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे। —वि. कु.

११ उपस्थित होना, विद्यमान होना।

विराजणहार, हारो (हारी), विराजणियौ—वि०।
विराजिओड़ौ, विराजियोड़ौ, विराज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विराजीजणौ, विराजीजबौ—भाव वा०।
बराजणौ, बराजबौ, बिराजणौ, बिराजबौ—रू० भे०।

विरजमांन-वि. [स. विराजमान] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—१ नारद तुंबर सपत सुर संगीत किया। अपछरा मिळ ग्रंधप ग्यांन किया। हूरां पौहप बरखा कीधी। तिण विरियां बारै आदीत मुखा कमळ विराजमांन हुवा। —मा. वचनिका

उ०—२ तठा उपरायत देसौत राजांन आपरा टोळी मजल रा जुवांन लियां विराजमांन हुवा छै। कमरां खोलजै छै बरछी रा झूला कीजै छै। —रा. सा. सं.

२ उपस्थित, विद्यमान।

उ०—तिण वेळां आदरी सगति। जोति री धणियांणी। सुरां री सहाय। सुक्रित री वाहरू। खळ री खैगाळ। चवदै भवणां री प्रतिपाळ। प्रगट विराजमांन हुवा। इद्रलोक में उछाह हुवा। —मा. वचनिका

३ बैठा हुआ। (सम्मान सूचक, आदर-सूचक।

उ०—वागा वणाउ करि। संख चक्र गदा पदम धारि। वैजयंती माळ मोर मुगट कुंडळ विसाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यांमसुंदर ठाकुर विराजमान हुआ छै। मणिमांणिक जड़ित छत्रपाट सिंघासण विराजमांन दीसै छै। भळळाट करि जगाजोति जागी छै। —र. वचनिका

४ स्थित।

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति मुखमली जरबाफती,

मखतूल रेसम री कलावतू जरकस लपेटिग्रां लूंबा समेत गादी तकिग्रा **विराजमांन** कीजै छै। —रा. सा. सं.

सं. पु.—१ वैठाने की क्रिया, वैठाना। (सम्मान सूचक, आदर सूचक)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति तोरण बांधीजै छै। घणां गज डंबर पेसाख करि मंडोवर महलें पधराया छै। सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मूहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा मांहि ग्रांगिण पाट सिंघासण **विराजमांन** किग्रा छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर ढुळै छै। —रा. सा. सं.

२ बैठने की क्रिया, बैठना। (सम्मान-सूचक)

उ०—१ दोय-दोय बाकरां री सिल्हाड़नै ठरका हुवै छै। तरवारां रा छणकार हुयनै रह्या छै। चौरंगा री खाटखड़ हुयनै रही छै। कटोरां मांहै फूल लीजै छै। बाकरा होसनाकां वसू कीजै छै। देसौत रवां धोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर **विराजमांन** हुवा छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ त्यां उमरावां रा वखांण। लोह री लाठ। चालता कोट। ग्रांबर चौधा। ग्रनेक भारथ किया। भांति भांति रा लोह चाखिया नै चखाया। ईसा दुवाह। ग्रांण **विराजमांन** हुवा। —मा. वचनिका

उ०—३ व्रहमा बिसन महेस इंद्र सुर साथै **विराजमांन** हुग्रा छै। ग्राप विसन चत्रभुज रूप धारि। वागा वणाव करि। संख चक्र गदा पदम धारि। वैजयंतीमाळ मोरमुगट कुंडळ बिसाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यांमसुंदर ठाकुर विराजमांन हुग्रा छै। —र. वचनिका

३ पत्रों ग्रादि में ग्रपने से बड़ों के लिए लिखा जाने वाला ग्रादर सूचक शब्द।

उ०······सरब ग्रोपमा **विराजमांन** ग्रनेक ग्रोपमा लायक भावौसा दुरगजी नें लिखी तेजा री जय स्रीरघुनाथजी री वंचावसी। घणा मांन सूं करनें उपरंच समाचार एक वांचमी कै उतराद में भगड़ौ चेतग्यौ है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रौ हुकम मिळचौ है। ग्राप कोई बात री चिंता फिकर करसी नीं वूजी नें म्हारा पांव धोक ग्ररज करसी ग्रर टाबरां माथै हाथ फेरसी। म्हारी कांनी सूं ग्रमलां री मनवार मनासी। —ग्रमर-चूंनड़ी

रू. भे.—बिराजमांन, बैराजमांन।

विराजित—देखो 'विराजियोड़ौ'

उ०—१ वर तुरंग उत्तंग, कर्ण साकति **विराजित**। मदोमत्त मात्रंग, जांण जळ वादळ गरजित। —गु. रू. बं.

उ०—२ पूठि भिडज्जां ग्रारुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसै त्रिज्जड। सत्तरि खांन बहुत्तरि ऊमर, सीस **विराजित** मेघाडंबर। —गु. रू. बं.

विराजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभायमान हुवा हुग्रा, शोभित हुवा हुग्रा. २ निवास किया हुग्रा, रहा हुग्रा. ३ बैठा हुग्रा (ग्रादर सूचक) ४ हुवा हुग्रा. ५ उमड़ा हुग्रा, छाया हुग्रा, ग्राच्छादित हुवा हुग्रा. ६ रहा हुग्रा. ७ जीवित रहा हुग्रा (ग्रादरसूचक) ८ ठहराहुग्रा, रुका हुग्रा. ९ निवास किया हुग्रा. १० स्थित हुवा हुग्रा.
(स्त्री. विराजियोड़ी)

विराजी—देखो 'वेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ तीं सूं बादसाह घणी महरवांनगी राखै ग्रौर जबरदस्त घणां तीं सूं पण भय राखै जे **विराजी** हुवौ तौ फौजां धावै। —महाराज जयसिंह ग्रांमेर रा धणी री वारता

उ०—२ सं. १५३५ तळाव ऊपर कोट घातण री तजबीज करी। तद राव सेखै कहायौ, "गढ ग्रठै मती घातज्यौ, परै जांगळू री हद में घातौ। सू यां मांनी नहीं। पीछै राव सेखौ मनमें **विराजी** तौ हुवौ पण यांनै क्यूं ई कयौ नहीं। —द. दा.

उ०—३ ता पछै पातसाहजी भला मांणस मेल दळपतसिंघजी नूं दिली बुलाया सू गया नहीं। हजरत रा मांणस पाछा गया। तठै पातसाहजी वडा **विराजी** हुवा। पण दळपतसिंघजी इण बात नें थापी नहीं। —द. दा.

विराट—सं. पु. [सं. विराट] १ महाभारत के एक पर्व का नाम।

२ एक प्रदेश जो जयपुर, ग्रलवर व भरतपुर के बीच है। जहां पांडवों ने ग्रज्ञातवास का समय (एक वर्ष) बिताया था।

उ०—बळी न्रप जैत करां बळिहार, पत्री ग्रणभीज परां खळ पार। बांणां थट कैरव रांण **विराट**, व्रहन्नट जांण करै द्रहबाट।—मे. म.

३ उक्त प्रदेश का राजा।

वि. वि.—इसकी पुत्री उत्तरा का विवाह पांडव-पुत्र ग्रर्जुन के पुत्र ग्रभिमन्यु से हुग्रा था। इसके पुत्र उत्तर व इसकी स्वयं की मृत्यु महाभारत युद्ध में पांडवपक्ष की ग्रोर से लड़ते हुए हुई थी। इसके साले व सेना का सेनापति कीचक का वध पाण्डव पुत्र भीम ने उनके ग्रज्ञात वास के समय द्रोपदी पर कुदृष्टि डालने के विरोध में किया था।

४ स्वयंभू मनु का नामान्तर।

५ महाभारत युद्ध के समय ग्रर्जुन को कृष्ण द्वारा दिखाया गया विश्व स्वरूप।

६ बलि को छलने हेतु विष्णु द्वारा किया गया त्रिविक्रम रूप।

७ विश्वशरीर मयी ग्रन्त पुरुष।

८ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।

९ एक देवयोनि, सुतप ।

१० प्रतवर्दन देवों में से एक ।

११ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण और अन्त में लघु होता है ।

१२ देखो 'वैराट' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बराट, बिराट, बैराट, वइराट, वयराट, वैराट ।

विराटक-सं. पु. [सं.] विराट नगर में निकलने वाला एक प्रकार का निम्नकोटि का हीरा या नग ।

विराटपरव-सं पु. [सं. विराट+पर्वन्] महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटरूप—देखो 'विस्वरूप'

विराड—देखो 'वैराट' (रू. भे.)

उ०—इयें बिछावणा कीया आइ बैठा । देखिनें कह्यौ इंडो बांटौ । खीवौं बोलियौ बांटणौ कांसू । बिराड भाग इ करिस्यां । ताहरां नाचिण वाळौ बोलियौ ना जी थां कहियौ हुतौ । ईयैं नुं इतरी भूंइ थांहरै कहियैं आंणी । —चौबोली

विराडप-सं. पु.—अंगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ।

विराडणौ, विराडबौ-क्रि. अ.—डरना, भयभीत होना ।

उ०—विउड भिउड ताडिउ तु चपेटा ऊपाडिउ । कूंयरि मनि विराडिउ बोल बोलइ सु ताडिउ । —सालिसूरि

विरादर—देखो 'ब्रिरादर' (रू. भे.)

उ०—१ यम लिखि दोलउजीरनें, पुरजा पहुंचाया । खांन विरादर नोकरौं, सबको बुलवाया । सबके बीच मसूरखां, पुरजा बंचवाया । फिर कासीद जबांनदां, समचार सुनाया । —ला. रा.

उ०—२ आगेंही वडे महाराज 'अजमाल' सें संभर के खेत हमारे विरादर हुसनखां गिरदखां हुसैनखांनें जंग कर सच्चें दिल सें सिर दिया । जिन्हुंन के मरणें सें तारीफ के सवाल सब आलम परि जिया । —सू. प्र.

विरादरी—देखो 'बिरादरी' (रू. भे.)

उ०—सात हजारी सांमतौ, जाकौ नांम 'अजीत' । दाखौ फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत । —रा. रू.

विराध-सं. पु. [सं.] १ विरोध, प्रतिकूलता ।

२ अनादर, अपमान ।

३ कष्ट, पीड़ा, तकलीफ ।

४ दण्डकारण्य में राम या लक्ष्मण के द्वारा मारा जाने वाला एक बलवान राक्षस जिसे रंभा पर अत्याचार करने के कारण गंधर्व से राक्षस योनि प्राप्त हुई थी ।

५ कश्यप एवं दनु के दानव पुत्रों में से वितल नामक पाताललोक में रहने वाला एक पुत्र दानव ।

वि. [सं. विराद्ध] १ विरोधी, प्रतिपक्षी ।

२ अपमानित, तिरस्कृत ।

३ कष्टमय, पीड़ित, दुखी ।

रू. भे.—बिराध ।

विराधक-वि.—१ विरोध करने वाला, विरोधी, प्रतिपक्षी ।

उ०—उदायन दीधउ केसी नइ, भांणेजा तइ राजभार जी । वैर वहतउ थयउ विराधक, अपीचि असुर कुमार जी । —स. कु.

२ अनादर करने वाला, अपमान करने वाला ।

३ कष्ट देने वाला, दुःख देने वाला ।

विराधणौ, विराधबौ-क्रि. स.—१ विरोध करना, विरुद्ध कार्यवाही करना ।

२ अनादर करना, अपमान करना ।

३ रोकना, अवरुद्ध करना ।

उ०—तै मुझ मिच्छांमि दुक्कडं, अरिहंत नी साख । जै मइं जीव विराधिया, चउरासी लाख । —स. कु.

४ कष्ट देवा, दुःख देना ।

५ नाश करना, नष्ट करना ।

उ०—सीसु सिखंडी तणउं तांमु छेदीउ छलु साधीउ, पाप पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ । —सालिभद्र सूरि

विराधणहार, हारौ (हारी), विराधणियौ—वि० ।

विराधिप्रोड़ौ, विराधियोड़ौ, विराध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विराधीजणौ, विराधीजबौ—कर्म वा० ।

विराधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विरोध किया हुआ, विरुद्ध कार्यवाही किया हुआ. २ अनादर किया हुआ, अपमान किया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ, दुःख दिया हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री. विराधियोड़ी)

विराधी—देखो 'विराधक'

उ०—इत्यादिक बहूला हूवा, समकित धरम विराधी रे । मरनै केई नरकै गया, केई नीची गती पिण लाधी रे । —जयवांणी

विराळ, विराल-सं. स्त्री.—उष्णता, वाष्प ।

उ०—डूंगर तणां सिखर डगमगइ, थयूं अजूआलूं सायर लगइ । दिग्गज आठ रह्या अवलोकि, धूम विराल गई सुरलोकि । —कां. दे. प्र.

विराळी—देखो 'बिराळी' (रू. भे.)

विराव-सं. पु. [सं.] १ हल्ला गुल्ला, शोरगुल ।

२ ध्वनि, शब्द।

३ अमिताभ नामक देवयोनि।

रू. भे.—बिराव।

विरावणौ, विराववौ–क्रि. स.—१ हल्ला-गुल्ला करना, शोर करना।

२ ध्वनि या शब्द करना, बोलना।

विरावणहार, हारौ (हारी), **विरावणियौ**—वि०।

विराविप्रोड़ौ, विराबियोड़ौ, विराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरावीजणौ, विरावीजबौ—कर्म वा०।

बिरावणौ, बिराववौ—रू० भे०।

विराविन–सं. पु. [सं. विराविन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विरावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हल्ला-गुल्ला किया हुआ, शोर-गुल किया हुआ. २ ध्वनि या शब्द किया हुआ, बोला हुआ।

(स्त्री विरावियोड़ी)

विराह–सं. पु [सं. वि.+फा. राह] १ कुमार्ग, बुरा रास्ता।

२ बिना रास्ता, रास्ता विहीन। ३ उल्टे रास्ते।

उ०—कै भागा अजमेर नूं, रिम दळ राह **विराह**। कै छिपिया 'किरतेस' रै, कै पुर घर घर मांह। —रा. रू.

३ देखो 'वराह' (रू. भे.)

विरिंच, विरिंचन, विरिंचि–सं. पु. [सं. विरञ्च, विरञ्चि] **१** ब्रह्मा।

२ विष्णु।

३ महेश।

विरिकत, विरिक्त– देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

विरिक्ष, विरिख, विरिखि—१ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'वरस' (रू. भे.)

विरित–सं. पु. [सं. व्रतिन्, व्रत्ति] **१** श्वान, कुत्ता। (ह. नां. मा)

२ देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

विरिद, विरिदि—देखो 'विरुद' (रू. भे)

उ०—१ बळिभद्र बुध तूं नां **विरद**, सबळा चडिसै सेस। परौ उधारै प्रांणियौ, 'पीर' कहै परमेस। —पी. ग्रं.

उ०—२ चौरी बैठै चक्रधर, बळि सुहिद्रा रौ वीर। वाबै नां सबळा **विरिद**, पुणै कवेसर 'पीर'। —पी. ग्रं.

ऊ०—**३** अरण गुरड़ ओळगै, दियै परिकरमा दिणीअर। सिनिका-दिखि समरां, **विरिद** दै बारट ईसर। —पी. ग्रं.

उ०—४ बावा तूं बाळा विरिदि, अइग्रौ पुरिखि अलाह। सहसा-बाहु सारिखा, गिळिया कितरा ग्राह। —पी. ग्रं.

विरिध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे)

विरिधि—१ देखो व्रद्ध' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रद्धि' (रू. भे.)

विरियां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ एक **विरियां** मुख बोलौ रे, धुता रा जोगी। कांनन कुंडळ गळ बिच सेली, अब तेरौ मुख खोलौ रे। रास रच्यौ बंसी-वट जमुना, ता दिन कीनौ कोलौ रे। —मीरां

उ०–२ उण विरियां 'अभसाह' रौ, नरपति पेखै नूर। सर सोखिम करिवा सत्रां, ग्रीखम सूर करूर। —रा. रू.

उ०—३ पर उपगारी परम करुणा पर, सेवक अपणौ संभारौ। भगत अनेक भवोदधि तारै, हम **विरियां** क्यूं विचारौ। —स. कु.

उ०–४ लोक व्यवहार राखण भणी, वीर समीपै जाय। पूछण री विरियां हुई, तरै लाज आई मन मांय। —जयवांणी

उ०—५ अणहूंत भाठै सूं काठी हुवै। **विरियां** देख'र विणजै नीं सौ वांणियौ ही गिंवार। छाती काठी करी है। जै जिसौ दिन नहीं आवै। —दसदोख

उ०—६ फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणौ माथै हथफेरी करणी पैंलाई। पांच-सात **विरियां**, छुट्टी विसरांम रै वखत, करणौ नै जमी पर सूंवौ सुवांण्यौ, ऊपर चादर उढाई तथा मिंतर पढायौ। —दसदोख

विरिस, विरिसि—**१** देखो 'वरस' (रू. भे.)

२ देखो 'वरीस' (रू. भे.)

विरी—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—सदा मद स्रवसै तना त्रावइ सकति, भाग हुइ सै जिकां जुडिसै भगति। भागइ **विरी** करौ कनां इंद रौ भलौ, टळि गयौ परौ जमराउ वाळौ टलौ। —पी. ग्रं.

२ देखो 'बीड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—वचन विनता उच्चरि रे, विहंग, तूं **विरी** थयु। गुण कह्या नळरायना नि, भाव मननु तांहां गयु। —नळाख्यांत

विरुग्रौ—देखो 'विरूग्रौ' (रू. भे)

उ०—१ **विरुग्रौ** दुरमुख ऊपरै होजी, पिण जिन धरम करंत। रयण दिवस रही, समकित सुद्ध सुमति ग्रही होजी, भजै सदा भगवंत। —वि. कु.

उ०—२ मांन गहेली मांननी, **विरुग्रउ** बोल्यौ वयण। **विण आदर** न रहैं कदै, सिंह सूर नै सयण। —प. च. चौ.

उ०—३ पांणी तिहां नवि नीकलै रे, **सोकातुर** सहु जात। चिंतवणा एहवी करै रे, एतौ **विरुइं** वात। —वि. कु.

(स्त्री. विरुई)

विरुभणो, विरुभबो–क्रि. अ.—उलझना, फंसना।

विरुझणहार, हारो (हारी), विरुझणियो—वि०।

विरुझिओड़ो विरुझियोड़ो, विरुझ्योड़ो—भू० का० कृ०।

विरुझीजणो, विरुझीजबो—भाव वा०।

बिरुभणो, बिरुभबो—रू० भे०।

विरुझियोड़ो—उलझा हुआ, फंसा हुआ।

(स्त्री. विरुझियोड़ी)

विरुत्त, विरुत्तो—देखो 'विरत्तो' (रू. भे.)

उ०—आयो खुरम विलागै अंबरि, पूरै पारंभ है गे पक्खरि। उपाडेह छरा आंघतरि, जांणै सींह विरुत्तो छप्परि। —गु. रू. बं.

विरुत्थ, विरुत्थो, विरुथ—देखो 'वरूथ' (रू. भे.)

उ०—दावै लागा जमी घणा हियै दूखियां दोयणां दूठ, प्रवाड़ा अचूकिया लै भूडंडां पांडीस। 'जुंवारो' 'भोपाळ' 'डूंगो' दुहत्थां भूखिया जंगां, सेखा चाळै ढूकिया विरुत्थां गोरां सीस।

—संकरदांन सांमोर

२ देखो 'विरत्तो' (रू. भे.)

विरुथण, विरुथणी, विरुथनी—देखो 'वरूथणी' (रू. भे.)

विरुद–सं. पु. [सं.] १ किसी के गुण, यश, प्रताप आदि का वर्णन।

उ०—अमर मंत्र उर धरै, विरुद ऊचरै महावत, संक साह सपणै, वयण न भणै असुहावत। भाय दाय क्रमि भरै, पाय लगर खरळक्कै। ऐंड बेंड अड़ियल्ल नीठ दोय पैंड सरक्कै। —रा. रू.

२ राजा लोगों द्वारा प्राचीन काल में धारण की जाने वाली यश या प्रशंसासूचक पदवी।

उ०—वेराजी रै पुत्र रांमदासजी हुवा गांव दुधोड़ रै खेड़ै थापना कीनी। बडो एक आखाढसिध रजपूत हुवो। विरदधारी रजपूत हुवो। रांमदास वेरावत नै उगणीस विरुद हुवा। तिकै विरदां रा नांव–प्रथम पाखरियां विना रहणो नहीं। दूजो सबळां उथापण। तीजो निबळां थापण। चोथो जाचक जण तरवर। पांचमो परनारी सहोदर। छठो चरुसुगाळ। सातमो सुखी······। —रा. सा. सं.

३ यश, कीर्ति, गुण।

उ०—१ गोपाळ व्रिज रा बाळ गोवाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच। जादवां उजाळ नमो विरुदां विसाळ जूना, डांग धारी काळ माथै ससिपाळ डाच। —पी. ग्रं

उ०—२ छत्र, चांमर, नीसांण, कुकमानगर रो राज दीधो। कांगरू देसनो राजा मारचो। लक्ष हाथी, नवलख अस्व पायगा हुई। अनेक विरुद विराजमांन राठोड कमधजवंस री थापना कीधी।

—रा. वं. वि.

उ०—३ हाडां घर गहमह हुई, जाडां विरुद लुभांण। गाडां भरि जाडां गळां; खाडां तुरक खपांण। —वं. भा.

४ यशस्वी या यशपूर्ण कार्य, कीर्ति के कार्य।

उ०—बाप जिम वडा ही वडा वणिया विरुद, "सूर" हर आभरण भवां सारू। महाराजा जु तैं माड कीधो विग्रह, मंडोवर अंजसै राव मारू। —गु. रू. बं.

५ कर्त्तव्य।

उ०—१ तुंवर दाटण मेलिया, अभै करै 'अभसाह'। सांभरि सिर आयो सगह, नरपति विरुद निवाह। —रा. रू.

उ०—प्रवहण तारचा कस्ट निवारचा, अटवी माहि उबारचा राज। विरुद संभारचा धरमसी धारचा, सेवक कांज सुधारचा राज।

ध. व. ग्रं.

७ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

रू. भे.—बड़द, बरद, बिड़द, बिडद, बिरद, बिरद्द बिरिद, बिरिदि, बिरुद, बीड़द, व्रद, व्रिद, व्रिदि, विड़द, विड़दात्र, विडद, विडदाव, विडुद, विरद, विरदू, विरदै, विरद्द, विरध, विरिद, विरिदि, विरुद्द, विरूद, व्रद।

विरुदधार, विरुदधारी–वि. [सं. विरुद+धारिन्] विरुद धारण करने वाला, विरुदपति।

उ०—अरांना किसन नंद छहुं विध हूं अधक, चोजबांन विरुदधार चड़तां। कहर ससमाथ दस पाट लाधै कवण, पंथ उतराद गुण ग्रंथ पढतां। —हुकमीचंद खिड़ियो

रू. भे.—विरदधार विरदधारन. विरदधारी।

विरुदपत, विरुदपति, विरुदपती–वि. [सं. विरुद+पति] विरुद धारण करने वाला, विरुदधारी।

रू. भे.—बड़दपत, बड़दपति, बड़दपती, बरदपत, बरदपति, बरदपती, बिड़दपत, बिड़दपति, बिड़दपती, बिरदपत, बिरदपति, बिरदपती, बिरिदपत, बिरिदपति, बिरिदपती, बिड़दपत, बिरुदपति, बिरुदपती, बिरदाधिप, बिरदाधिपत, बिरदाधिपति, बिरदाधिपती, बिरधाधिपत, बिरधाधिपति, बिरधाधिपती, वरदपत, वरदपति, वरदपती, वरदाधिपत, वरदाधिपति, वरदाधिपती, विरदपत, विरदपती, विरदपती, विरदाधिप, विरदाधिपति, विरदाधिपती।

विरुदाणो, विरुदाबो–क्रि. स.—१ जोश दिलाना, उत्साहित करना।

२ कीर्तिगान करना, यशगान करना, गुणगान करना।

३ ललकारना।

विरुदाणहार, हारो (हारी), विरुदाणियो—वि०।

विरुदायोड़ो—भू० का० कृ०।

विरुदाईजणो, विरुदाईजबो—कर्म वा०।

बड़दाणौ, बड़दाबौ, बड़दावणौ, बड़दाववौ, वरदाणौ, बरदाणौ, बरदावणौ, वरदाववौ, बिड़दाणौ, बिड़दावौ, बिड़दावणौ, बिड़दाववौ बिडदाणौ, विडदावौ, बिडदावणौ, बिडदाववौ, बिरदाणौ, विरदावौ विरदावणौ, बिरदाववौ, बिरुदाणौ, बिरुदावौ, बिरुदावणौ, विरुदाववौ, वरदाणौ, वरदाबौ, वरदावणौ, वरदाववौ, विड़दाणौ, विड़दाबौ, विड़दावणौ, विड़दाववौ, विडदाणौ, विडदावौ, विडदावणौ विडदाववौ, विरदाणौ, विरदाबौ, विरदावणौ, विरदाववौ, विरुदावणौ, विरुदाववौ—रू० भे० ।

विरुदायक–वि.—१ कीर्तिगान, यश गान या गुणकथन करने वाला ।

२ जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला ।

रू. भे.—बरदायक, विड़दायक, बिरदायक, बिरुदायक, वरदायक, विरदायक ।

विरुदायोड़ौ–भू का. कृ.—१ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ. २ कीर्तिगान किया हुआ, यशगान किया हुआ. ३ ललकारा हुआ. ४ गुणगान किया हुआ ।

(स्त्री. विरुदायोडी)

विरुदाळ—देखो 'विरुदाळौ' (मह., रू. भे.)

विरुदाळी–सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

रू. भे.—बरदाळी, बिरदाळी, बिरद्दाळी, बिरिदाळी, बिरुदाळी, विरदाळी व्रदाळी, ।

विरुदाळौ–वि. (स्त्री. विरुदाळी) १ विरुदधारी, यशस्वी ।

२ वीर, बहादुर ।

३ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू. भे.—बरदाळौ, बिरदाळौ, बिरद्दाळौ, बिरिदाळ, बिरिदाळौ, विरुदाळ, बिरुदाळौ, व्रदाळौ, विरदाळौ ।

मह.,—बरदाळ, बिरदाळ, बिरद्दाळ, बिरिदाळ, बिरुदाळ, व्रदाळ, विरदाळ ।

विरुदावणौ, विरुदाववौ—देखो 'विरुदाणौ, विरुदाबौ' (रू. भे.)

विरुदावणहार, हारौ (हारी), **विरुदावणियौ**—वि० ।

विरुदाविओड़ौ, बिरुदावियोड़ौ, विरुदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरुदावीजणौ, विरुदावीजबौ—कर्म वा० ।

विरुदावळी, विरुदावली–सं. स्त्री. [सं.] १ कीर्त्तिगान, यशवर्णन, प्रशंसा ।

उ०—१ राजवियां नै ओळखै रे, जांणै देस विदेस रे । वंस तणी विरुदावळी, संभळावै सुविसेस रे । —स्रीपाळरास

उ०—२ देवकी माता आदै रांणिया, साथै सहू परिवार । बोलै विरुदावलियां, चारण सुजब सब, जय जय शब्द अपार । —जयवांणी

उ०—३ रथ बेठी नै संचरी, हुवौ खाड़ेती भ्रात । भाटण देवै विरुदावली, आरीमो लेई हाथ । —जयवांणी

२ विरुदों या गुणों का सग्रह, गुणावली ।

उ०—विरुदावळी हसती वरीस अवनीस, लाख सांसण कोड़ि वरीस अडंड डडण अगंजी गंजण, अनमी अभूत ताहि नमी भूत करण । सवळ रायथांन उथापण, निरजोर राय सहाय करि थापण । खंड खंड खुरामांण कौ मांण हीण करण, वेद मुजाद की अजाद असरण के सरण । —रा. रू.

रू. भे.—बिरदावळी, विरुदावळी, व्रदाळी, विडदावळ, विडदावळी, विरदावळी ।

विरुदावियोड़ौ—देखो 'विरुदायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरुदावियोड़ी)

विरुदेत, विरुदैत–वि.—१ विरुदधारी, विरुदपति, विरुदवान, यशस्वी ।

उ०—पांचै रतन तणौ वलै, जिहां तिहां पामै जैत । बीजा तै सहु वापड़ा, कुमर वडौ विरुदैत । —वि. कु.

२ विरुद या यश का वर्णन करने वाला ।

रू. भे.-बरदेत, बिरदेत, बिरदैत, बिरुदेत, विरुदैत, वरदेत, वरदैत, विरदेत, विरदैत ।

विरुद्द—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—१ वैंडा जुगं गयंदां ढाळवै खेत वेढीगारो, चाळवै ससत्रां पंजा विरूथौं सचाळ । लूथबत्थां अंगरेजां सूं, सूर काळ रूपी लड़ै, उनागां खड़गां सीह विरुद्दां उजाळ । —बुधसिंह सिढायच

उ०—२ इसा कमधज विरुद्द अधार, महारिण मेछां मारणहार । ढंढोळण ढिल्ली है-वै ढांण, संकोड़िम जेह वडा सुरतांण । —राव जैतसी रौ रासौ

२ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—नाथिया उनत्थां नत्थां विरुद्दां बठोठ नाथ । सिंघ टोळा साथियां सबोळा लीधा संग । घांसाहरां दीधा घेर त्रिभाड़ै हाथियां घड़ा, वेध लागा कीधां धू बिलातियां बरंग । —डूंगजी जवारजी रौ गीत

विरुद्ध–वि. [सं.] १ जो प्रतिकूल हो, बैरी, दुश्मन । (ह, नां. मा.)

उ०—मिळ थाट कमधां दळ अनमंधां, बंधक संधां ऊवंधां । अति वेध विरुद्धां परस उरद्धां, किलंब दगधां अधुकंदा । —रा. रू.

२ विपरीत, उल्टा ।

उ०—१ तिण री स्रद्धा-हिंसा में धरम । सम्यक्त्वी नै पाप न लागै । सरव जगत रा जीव मारयां एक समौ संसार बधै नहीं । सरव

जीव नीं दया पाल्यां एक समौं संसार घटै नहीं । होणहार हुवै ज्युं हुवै । करणी रो कांम नहीं केवली देख्यौ जद मोक्ष परहौ जासी। इत्यादिक विरुद्ध स्रद्धा स्वांमीजी कनै कहै । —भि. द्र.

उ०—२ साजी नावां समान तौ साधु आप तिरै ओरां नै तारै। फूटी नावां समांन भेखधारी, आप डूबै भोलां नै डबोवै । पत्थर की नावां समांन तीन सौ तेसठ पाखड़ी तै प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसै । —भि. द्र.

३ अवरुद्ध, अटका हुआ ।

४ घेरा हुआ, बन्द किया हुआ ।

५ जो मेल नहीं खाता हो, बेमेल, असंगत ।

६ जो विरोध करे, विरोधी ।

७ अशुभ, बुरा ।

८ अनुचित, बुरा ।

उ०—परउपगारी रे सहुनौ, हुं हतौ, निस्टाचार न चोर रे। केहनै दुख नवि दीधौ कांई विरुद्ध न कीधौ, हां हां जांण्यौ रे मैं इणहीज भवै । कीधौ पातक घोर रे, न रह्यौ हुं सीधौ मैं सुजस न लीधौ। —वि. कु.

९ जो वर्जित हो, निषिद्ध ।

सं. पु.—१ दसवें मन्वन्तर ब्रह्मसावर्णि का एक देवगण ।

२ युद्ध ।

रू. भे.–विरुद, विरुद्ध, विरुध, विरूद, विरूद्द, विरध, विरुद्द, विरुध, विरूड, विरूध ।

विरुद्धकरमा–वि. [सं. विरुद्ध+कर्मा या कर्मन्] विपरीत आचरण वाला, बुरे चाल-चलन वाला ।

सं. पु.—उक्त प्रकार का व्यक्ति ।

विरुद्धता–सं. स्त्री.—विरुद्ध होने की अवस्था या भाव, विपरीतता, प्रतिकूलता ।

विरुध, विरुधि—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ वाक्य दोख प्रतिकूल वरण बद, प्रगट वरण जिण रस प्रतिकूल । सुध लछण मति अरुच हुए सुण, मति विरुध रस अतहत मूळ । —बां. दा.

उ०—२ सरिखां सूं बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति तो इज भंजिया, जरासेन सिसुपाल जुधि ।—वेलि

विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि—देखो 'विरूपाक्ष' (रू. भे.) (क. कु. बो., नां. मा.)

विरुयउ, विरुयौ—देखो 'विरूऔ' (रू. भे.)

उ०—१ संघ गिरुयउ रे, स्रीसंघ गुणे करि गिरुयउ रे । मात पिता सरिखउ हित वल्लभ, किम ही करई नहीं विरुयउ, रे। —स. कु.

उ०—२ मन मां कुमर इम चिंतवै, ए थई तीजी वार । पीड़ा करै छै वापियौ, विरुयौ कोई वेकार । —वि. कु.

उ०—३······दुख अखाधउ, आगणइ कुउ अनइं कुटंब आंधउ, बांनर अनइं बीछी खाधउ, कांणी अनइ रिसांणी, साप अनइ पंखालउ, कादम अनइं कटालउ, बांझ अनइ विरुया बोली, सरडी अनइ स्लेस्मांणी । —व. स.

विरुहण, विरुहणि, विरुहणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे.)

उ०—वीज खवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेख । विरुहणिअां तनि वेदना, स्रावण ! सरइ विसेख । —मा. कां. प्र.

उ०—२ सरद-निसाकर सममइ, अै मइं जांणिउ भेउ । उहां सरी तिहां अमीअ जिमइ, विरूहणियां विख देय । —मा. कां. प्र.

विरूअउ, विरूउ विरूऔ–वि. [सं, विरूपक] (स्त्री. विरूई) १ बुरा, खराब, भद्दा ।

उ०—१ आज इस्यां तुं का लवइ, विरूआं विरूआं वाक्य ? हंसहणी, वायस भणी, जांणि म जावा ताकि ! —मां. का. प्र.

उ०—२ लोक सह्नै लांपां लवइं, चित्त न राखि ठांहि । फागुण ना गुण स्या कहुं ? विरूआ वसुधा मांहि । —मा. कां. प्र.

उ०—३ जउ अै विरूउं आचरइ, तउपण ब्रह्म पवित्र । परमेस्वर अै पूजीइ, अै निकळंक चरित्र । —मा. कां. प्र.

उ०—४ नवि मांनिउं तुम्हि हुं एह वात अति हुई विरूई । अनु मुझ घरि आविया पंडु पुज इह वात गरूई । —सालिभद्र सूरि

२ बुरा, अहित ।

उ०—जा देव दुरयोधन बांहु वाही, नहीत तइ लेसिइं पारथ साही । किमई विरूअउं करिसिइं न पारथ, ए उधि पूगी हिव हइ क्रतारथ । —सालिसूरि

३ बद शक्ल, कुरूप ।

४ बद जबांन ।

रू. भे.—विरुओ, विरुउ, विरुयउ, विरुयौ ।

विरूउ—देखो 'विरूऔ' (रू. भे)

उ०—जउ अै विरूउं आचरइ, तउ पण ब्रह्म पवित्र । परमेस्वर अै पूजीइ, अै नीकळंक चरित्र । —मा. कां. प्र.

विरूठक–सं. पु. [सं.] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा ।

२ एक लोकपाल ।

विरूड—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—भिड़ियौ रुघनांथ भूपाळ समोभ्रम, चार पहार विरूड घडै । पहला वरियांम इता पडिया, ता पाछै गोइंददास पडै ।—गु. रू. ब.

विरूणां-वि —वीरों का, वीर-रस से सम्बन्धित ।

उ०—जोधा रंगां बारगा विरूणां नाद सांभाजतौ, जटी-घ्रू अजोणां नाद साभतौ जंगेव। बाजतां बिढोणां नाद बाजियौ रांणै-स बाबौ, गुणां नाद अग्राजतौ गाजियौ गंगेव । —हुकमीचंद खिड़ियौ

विरूथ—देखो वरूथ' (रू. भे.)

विरूथणी, विरूथनी, विरूथिनी—१ वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

२ देखो 'वरूथणी' (रू. भे.) (ह नाँ. मा.)

विरूथौ—१ देखो 'वरूथौ' (रू. भे.)

उ०—झुकै झूल बारंगां थरक्क गजां पीठ झंडा, 'केहरी' हुचक्कै जठै ऊबक्कै क्रोधार। सांमध्रमी केम चूकै जेण आंटै चूकै सूरौ, 'जगांणी' न रुकै भूरौ विरूथौ जोधार । —किरपारांम कवियौ

२ देखो 'वरूथ' (अल्पा., रू. भे.)

विरूद—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—संकट माहै समरतां, दादौजी करें दुख दूर रे लाल । बेड़ी राखी बूडती, परसिद्ध ए विरूद पडूर रे लाल। —ध. व. ग्रं.

विरूध—१ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—दुंद विरूधां मंदचळ, रोहा लग्गा राह । यां जाळंधर आवियौ आसुर आलमसाह। —रा. रू.

विरूप-वि. [स] १ बदशक्ल, बदसूरत, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ तेहनें रमणी चार सरूप जो, लखमी तौ लाखें गांनें गेह मांरे लो। कितलै दिवसै थयौ विरूप जो, कवड़ी नौ वित्त मिलै नहीं जेहमां रे लो। —वि. कु.

उ०—२ सोना को नांम छै रुखमइयौ निराउध कीयौ। आवध काटि नांख्या। पकडचौ पकड़ि केस उतारया । तब विरूप दीसै लागौ। आपणौं जीव खिज्यां थका जु रुखमइया कौ जीव छोडचौ सु रुखमणीजी को अंतकरण जांणि कै। —वेलि टी.

२ जिसके अनेक रूप हो, बहुरूपी ।

३ अप्राकृतिक, अद्भुत ।

४ कान्ति, आभा, शोभा, आदि से रहित ।

५ जिसका रूप बदल गया हो, बदले हुए रूप का ।

६ दूसरे या भिन्न प्रकार का ।

७ भयंकर, भयावह, डरावना ।

सं. पु.—१ श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया एक असुर ।

२ क्रोध का मानवी रूप, जिसमें उसने इक्ष्वाकु राजा से तत्त्वज्ञान पर संवाद किया था।

३ श्रीकृष्ण का एक महारथी पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ अंबरीख राजा का एक पुत्र जो पृषदश्व राजा का पिता था ।

६ बिगड़ी हुई या बदली हुई सूरत ।

रू. भे.—बीरूप ।

विरूपआंगिरस-सं. पु. [सं. विरूप+आंगिरस] ऋग्वेद में वर्णित एक वैदिक सूक्तद्रष्टा, जो अंगिराकुलोत्पन्न एक मंत्रकार था ।

वि. वि.—यह अंगिरस् ऋषि के आठ पुत्रों में से एक था। इसके सात भाइयों के नाम—बृहस्पति, उतथ्य, पयस्य, शान्ति, घोर, संवर्त्त एवं सुधन्वन् थे ।

विरूपक-सं. पु.—१ पृथ्वी का शासक एक दानव । (प्राचीन)

२ आलंवेय राक्षसों का अधिपति, जो नीलकन्या विकचा का पति व दंष्ट्राकराल आदि का पिता था ।

विरूपचक्ष, विरूपचक्षु, विरूपचख-सं. पु. [सं. विरूप+चक्षुस्] शिवजी का नाम ।

विरूपता-सं. स्त्री.—१ विरूप होने की अवस्था ।

२ भयंकरता, भयावहता ।

विरूपपरिणांम-सं. पु.—एक रूपता से अनेक रूपता की ओर परिवर्तन। (दर्शन)

विरूपरूप-वि. [सं. विरूप+रूप] भद्दा, बेडौल, बदसूरत ।

उ०—उरध केस विरूपरूप, सुज निसा समांणं । भ्रूह बंका विकराळ है, द्रढ दंत केवांण। —गज-उद्धार

विरूपा-वि. स्त्री. [सं.] बदसूरत, बेडौल, भद्दी ।

सं. स्त्री.—यम की एक पत्नी ।

विरूपाक्ष, विरूपाख, विरूपाखि-वि. [सं. विरूप+अक्ष] बेढंगे या डरावने नेत्र वाला ।

सं. पु.—१ शिव, शंकर । (अ. मा.)

२ शिव का एक गण ।

३ एकादश रुद्रों में से एक ।

४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

५ राम-रावण युद्ध में रावण का सेनापति जिसका वध सुग्रीव ने किया था।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

७ महिषासुर का अमात्य, एक राक्षस ।

८ महाभारत युद्ध में घटोत्कच का सारथि जो कर्ण-घटोत्कच युद्ध में कर्ण द्वारा मारा गया था ।

९ नरकासुर का सेनापति एक राक्षस, जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

१० एक दिग्गज। (पुराण)

११ इंद्र-वृत्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक दानव जो कश्यप एवं दनु के चौंतीस पुत्रों में से एक था ।

१२ एक राक्षस जो हनुमान द्वारा प्रमदावन उजाड़ते समय मारा गया था।

१३ एक नाग।

स. स्त्री.—१४ एक देवी का नाम।

रू. भे.—विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि।

विरूपाक्षपूजन-सं. पु. [सं. विरूपाक्ष+पूजन] पौष शुक्ला १४ को किया जाने वाला विरूपाक्ष देवी का पूजन।

वि. वि.—उक्त पूजन के बाद उपकरण सहित महोक्ष का दान किया जाता है। इस प्रकार वर्षभर प्रत्येक शुक्ल, १४ को पूजन किया जाता है। इसके करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है और राक्षसादि का भय नहीं रहता है।

विरूपिक, विरूपी-वि. (स्त्री. विरूपिका) बदसूरत, बदशक्ल का।

सं. पु.—कुरूप व्यक्ति।

विरूहण, विरूहणि, विरूहणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे.)

उ०—१ माठी थाइ मालती, कमल तणा कुल नास। **विरूहणियां** दुख दाखविइ, मरि तूं मारगमास। —मा. कां. प्र.

उ०—२ थणहर मज्झइ कारस्यू, **विरूहणिया** मुखि जेह। माधव मनि आलोच करि, करवी अधिकी तेह। —मा. कां. प्र.

विरेक, विरेचक, विरेचण, विरेचन-सं. पु [सं. विरेक, विरेचक, व विरेचन] दस्त लाने वाला पदार्थ या औषधि, जुलाब।

विरेफ-सं. पु. [सं.] १ जल की धारा, जलस्रोत, नदी।

२ 'र' वर्ण।

विरोगी-वि.—रुग्ण, बीमार।

उ०—विरह **विरोगिण** हुय रही, रोग न जांणै कोय। जनहरिया हरि कारणै, झुरि झुरि पंजर होय। —अनुभववाणी

(स्त्री. विरोगण, विरोगणी, विरोगिण, विरोगिनी)

विरोचण, विरोचन-सं. पु [सं विरोचन] १ सूरज, सूर्य।

(क. कु. बो., डिं. को., नां. मा., नां. डिं. को.)

२ चन्द्रमा, चांद।

उ०—सूर धीर साखैत नीर तैं सोहै, कायर नर कंपै सांध कूं विमोहै। स्रीमहाराज को रूप ग्रैसो निजर आयो, जांणै रोहिणी को संग **विरोचन** पायो। —रा. रू.

३ आग, अग्नि। (अ. मा., ह. नां मा.)

४ अरक, आक, मदार।

५ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो महाभारत युद्ध में भीम के द्वारा मारा गया था।

६ हिरण्यकश्यप के पुत्र भक्त प्रह्लाद का पुत्र व अर्वाकतलम् नामक पांचवें पाताल लोक के अधिपति बलि का पिता।

वि. वि.—पृथ्वीरूपी गौ को दूहते समय यह बछड़ा बना था। यह ब्रह्मा के पास देवराज इन्द्र के साथ असुरों की ओर से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु गया था। यह 'तारकामय युद्ध' में असुरों की सेना का सेनापति था एवं इसी युद्ध में मारा गया था। इसके विशालाक्षी एवं देवी नामक दो पत्नियां थी। यह यशोधरा का पिता व विरोचना का भाई था। इस के कुंभ, निकुंभ, आयुष्मत, शिबि एवं वाष्कलि नामक पांच भाई थे।

रू. भे.—बिरोचन, बीरोचन, बैरोचन, वीरोचंद, वीरोचन।

विरोचनसुत-सं. पु. [सं. विरोचन+सुत] १ प्रह्लाद पुत्र विरोचन का पुत्र राजा बलि।

२ सूर्य पुत्र राजा कर्ण।

रू. भे.—वीरोचंदसुत, वीरोचनसुत।

विरोचना-सं. स्त्री.—१ भक्त प्रह्लाद की कन्या और विरोचन दैत्य की बहन, जो त्वष्टृ को ब्याही गई थी जिससे इसे विरज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

२ स्कंद की एक अनुचरी का नामान्तर।

विरोटियौ—देखो 'वीरोटियौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विरोटण, विरोटणी)

विरोणौ, विरोबौ-क्रि. स.—पिरोना।

उ०—लक्ष्मीवंतनइ ग्रहि एकि स्त्री अच्छइं, हार अरद्धहार पिरोती, एकि सूंडै सूंडै **विरोती**, देखीइं आंमलक प्रमांण मोती विसाल, सुवरणमय थाल, तेहनां अपार झमाल, रूपांनी कचोली, देखीइं दहीमाहि झबोली······। —व. स.

विरोद, विरोध-सं. पु. [सं. विरोध] १ बेमेल होने की अवस्था, बेमेलपन।

उ०—साहमी सुं संतोख करीजइ, वयर **विरोध** निवार जी। मगपण तें जे साहमी केरउ, चतुर सुणौ सुविचार जी। —स. कु.

२ शत्रुता, दुश्मनी, वैर।

उ०-१ साका विगर नांम न रहैं सु एक साकौ कीजै। तरै मूळराज, रतनसी नै दूदै साकै री निसचै करी, नै पातसाह सूं **विरोध** वधावण री करै। पिण वीकममी करण न दै। —नैणसी

उ०—२ बळोवळी बीरहक नौपतां नंगारां बागी, सेना पीठ लागी जोस धारियां सक्रोध। उबबरां आसमांण भुजाटां सेल री अण्यां, वेखौ कस वंस माथै तड़िता **विरोध**। —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ आगलां जाळंधर महाजोधार सारिखां रा वैर कळियां काढां। भसमासुर रा **विरोध** मांहै इंद्रादिक देवता वाढां। —मा. वचनिका

३ लड़ाई, झगड़ा, युद्ध।

उ०—१ आदर **विरोध** अवरंग सूं, थिरस बोध सुर थप्पियो।

ऊथरां भड़ां 'अजमाल' रां, असुरां डर ऊथप्पियौ। —रा. रू.

उ०—२ यूं कमधज धरै घू अंबर, ज्यूं गंगा मेळै जोगेसर। आदर जोध विरोध असंका, बंट रतन्नै ज्यां सुर बंका। —रा. रू.

४ वह प्रयत्न जो किसी कार्य आदि को रोकने हेतु किया जाता है। उ०—वरसाळै रौ मौको, ऊंट री असवारी, सा'वनै समैरी भेंट दाय आयगी। ईं रै सागै चुनाव रै विरोध हाळी दरखास्त जकी म्हैं अगरवाळां रै कैंएं सूं फाड़ दी जकै रौ ही जिकर करचौ अर मनै दोसी साबत कर दियौ। —दसदोख

५ अनबनी, वैमनस्यता।

६ बाधा, रुकावट।

७ भिन्न-भिन्न तथ्यों में पाया जाने वाला तत्व जो स्वभाविक रूप से एक दूसरे के विपरीत हो। ज्यूं-दूध अर नींबू

८ विपरीत स्थिति।

९ नियंत्रण, दमन।

१० विपरीतता, प्रतिकूलता।

११ मुकाबला, सामना।

१२ एक अर्थालंकार, जिसमें, जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी के साथ विरोध पाया जाता हो।

१३ अनान्तक का पिता व वात नामक राक्षस का पुत्र।

रू. भे.—बरोद, वरोध, व्रिरोध।

विरोधक—वि.—विरोध करने वाला, विरोधी।

उ०—है नह 'पाबु' हाथ ताव अवध 'जींदे' तणी। वेघ विरोधक वात कर, कोय विघन करावसी। —पा. प्र.

विरोधणौ, विरोधबौ—क्रि. स. [सं. विरोधनम्] १ बेमेल करना, असगत करना।

२ शत्रुता करना, दुश्मनी करना, वैर करना।

३ लड़ाई करना, झगड़ा करना, युद्ध करना।

४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न करना।

५ अनबनी करना, वैमनस्य करना।

६ बाधा डालना, रुकावट डालना।

७ नियंत्रण करना, दमन करना।

८ मुकाबला करना, सामना करना।

उ०—मांडव खुरम अडप्पियौ, हालाविया हमल्ल। साह विरोधण कळि मथण, इळ करिवा ऊथल्ल। —गु. रू. बं.

९ खण्डन करना।

विरोधणहार, हारौ (हारी), विरोधणियौ—वि०।

विरोधिग्रोड़ौ, विरोधियोड़ौ, विरोध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरोधीजणौ, विरोधीजबौ—कर्म वा०।

बिरोधणौ, बिरोधबौ—रू० भे०।

विरोधाचरण—सं. पु. [सं. विरुद्ध+आचरण] १ हित के प्रतिकूल आचरण।

२ शत्रुता का व्यवहार।

३ सामान्य आचरण के विरुद्ध आचरण।

विरोधाभास—देखो 'विरोध' (१२)

विरोधिता—सं. स्त्री.—१ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैर।

२ नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)

विरोधियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बेमेल किया हुआ, असगत किया हुआ. २ शत्रुता किया हुआ, दुश्मनी किया हुआ, वैर किया हुआ. ३ लड़ाई किया हुआ, झगड़ा किया हुआ, युद्ध किया हुआ. ४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न किया हुआ. ५ अनबनी किया हुआ, वैमनस्य किया हुआ. ६ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ. ७ नियंत्रण किया हुआ, दमन किया हुआ. ८ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ. ९ खण्डन किया हुआ।

(स्त्री. विरोधियोड़ी)

विरोधी—वि. [सं. विरोधिन्] १ विरोध करने वाले पक्ष का, विपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी।

उ०—मांहोमांहि विरोधियां, सीलां ऊपरि सूर। भवसिद्धि भीखारी थया, भूय तलि हारी भूर। —मा. कां. प्र.

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ बाधा डालने वाला, बाधक।

४ शत्रु, दुश्मन, वैरी। (अ. मा., ह. नां. मा.)

५ दमन करने वाला, नियंत्रक।

६ युद्ध करने वाला, झगड़ा करने वाला।

७ खिलाफ, प्रतिकूल।

उ०—क्रस्णजी का जुदा जुदा रूप देखण लागा। कांमिनी कहइ कांम आयौ। सत्रु कहण लागा काळ आयौ। और जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्रीनारायण को सरूप जांण्यौ। —वेलि टी.

स. पु—साठ संवत्सरों में से २३ वां और विस्णुवीसी में से तीसरे संवत्सर का नाम।

रू. भे.—बिरोधी।

विरोधोपमा—सं. स्त्री. [सं.] उपमा अलंकार का एक भेद विशेष, जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती हो।

विरोळ—सं. पु.—१ भ्रम, भ्रान्ति।

२ नाश, समाप्ति।

३ विघ्न, बाधा।

४ अव्यवस्था, गड़बड़ी।

५ युद्ध, झगड़ा ।

उ०—ऊगां सूर समो ऊदावत, बढ़ै बसू छळ बोल विरोळ । चलु-अल अरी तणो चीतोडा, चंद्रप्रहास रहै नत चोळ ।
—प्रथ्वीराज राठौड़

६ मथने की क्रिया, मन्थन ।

उ०—दोळा दळ दिल्ली वाळा, पंचरूप करि प्रब्बत-माळा । सांमंद विरोळ सकज्जै, घमचक्क किया कमधज्जै । —गु. रू. बं.

वि.—नाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

उ०—हालै आप सभावां उडणो प्रथीनाथ हींदू, बाज सींधू अैराक में छ खंडां विरोळ । मदां लागो खीजियो खूपांण खगां खळां माथै, छंदां लागो रीझियो पुरंद्र वाळी छोळ ।
—भीमसिंह सीसोदियो रो गीत

रू. भे.—वरोळ ।

विरोळण-वि.—१ तहस-नहस करने वाला ।

२ अस्त-व्यस्त करने वाला ।

३ मारने वाला, संहार करने वाला ।

४ मथने वाला, विलोड़ित करने वाला ।

विरोळणौ, विरोळबौ-क्रि. स. [सं. विलोडन] १ तहस-नहस करना, बरबाद करना, ध्वंस करना ।

उ०-सज दळ सबळ सीस पतसाहां, दिली विरोळण 'करण' दुवो । पोढापै तरवार पाकड़े, हीमत करै जवांन हुवो ।
—वीर दुरगादास राठौड़ रो गीत

२ अस्त-व्यस्त करना, अव्यवस्थित करना ।

३ संहार करना, नाश करना, मारना ।

उ०—१ विभाड़ै गोळ फिरंगांण रा द्रहवटां, गैघड़ा विरोळण जोम गाढै । स्रोण में खाग झकबोळ नवसांहसी, चौळ गरकाब रंग दघां चाढै । —सिवनाथसिंह कूंपावत रो गीत

उ०—२ आठ सैं खळां नै हेक ढाबड़ै विरोळचा आचां. दरोळचा देयंतां दैवां मथायो खीरोध । अचायो दिखायो तौर सारंगां खगेस आयो, सिखायो पिनाकी वीरभद्र सो विरोध ।
—बादरदांन दधवाड़ियो

उ०—३ पांच सोबायतां गिळै 'ऊभो' सुपह, विरोळै धौंकळै करै बाहां । विड़ंग आदेसियो दळै बहळायतां, सार आदेसियो पातसाहां । —हरनाथसिंह करमसोत रो गीत

उ०—४ धड़ां सिर जोम, ताजै घड़ां धमाधम, कांगुरां तरफ बाजै कुहाड़ा । किलो गिरधरण ओळै रयण बंध कड़ा, विरोळै चोवड़ा फिरंग वाळा । —कविराजा बांकीदास

४ मंथन करना, मथना, विलोडित करना ।

उ०—१ रिण रोहिड़ दधि मंथांण, विरोळै लीधा रतन लाल । रत रंढ सुपांण विमांण, विडारै हूरां कीधा हाल । —मा. वचनिका

उ०—२ समहर गजबोळ रोळिग्रै साबळ, बैसर बैसर तोलतो बळ । दिली सहायत 'अचळ' दूसरो, 'दूद' विरोळै दिखण दळ ।
—दूदा नगराजोत रो गीत

५ उपभोग करना ।

६ बिखेरना, छितराना ।

७ समाप्त करना, मिटाना ।

उ०—तउं वीस हथि विरोळि, तइं वीस हथि विरोळियइ । भावठि भागइ तू तणइ हिज्यउं सु कांइ हिंगोळि । —अ. वचनिका

८ गुजरना, पार करना ।

उ०—करहा, चरि चरि म चरि चरि, चरि चरि म चरि म झूर । जं वन काल्हि विरोळियउ, तं वन मेल्है दूर । —ढो. मा.

९ पराजित करना, हराना ।

उ०—जतराव जणी पुल वाग झलै, हय थाट विरोळण भील हलै । कळ चाळ रोसाळ बुहा कड़चै, यण ताळ घेनांळ लयां अड़चै ।
—पा. प्र.

१०—रस लेना ।

उ०—भमरि मालति जेम विरोलियइ, तिम न केतकि केलि धंधोलियइ । त्रणह काजि न डूंगर ढोलियइ, जडह कालु करी कुल बोलियइ । —सालिसूरि

विरोळणहार, हारो (हारी), विरोळणियो—वि० ।

विरोळिओड़ो, विरोळियोड़ो, विरोळघोड़ो—भू० का० कृ० ।

विरोळीजणो, विरोळीजबो—कर्म वा० ।

बरोळणो, बरोळबो, बिरोळणो, बिरोळबो, बिरौळणो, बिरौळबो, वरोळणो, वरोळबो, वीरोळणो, वीरोळबो—रू० भे० ।

विरोळियोड़ो-भू का कृ.—तहस-नहस किया हुआ, बरबाद किया हुआ, ध्वंस किया हुआ. २ अस्त-व्यस्त किया हुआ, अव्यवस्थित किया हुआ. ३ संहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ४ मथन किया हुआ, मथा हुआ, विलोड़ित किया हुआ. ५ उपभोग किया हुआ. ६ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ. ७ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ. ८ गुजरा हुआ, पार किया हुआ. ९ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १० रस लिया हुआ.

(स्त्री. विरोळियोड़ी)

विरोहण—सं. पु.—१ एक नाग विशेष जो तक्षक कुल में उत्पन्न हुआ था ।

२ वह सन्तान जिसकी माता का वर्ण पिता की अपेक्षा उच्च हो ।

विलंद-सं. पु.—१ बालिश्त ।

उ०—सुइया सांकळी रूपै रा चमकतै रह्चा छै। सात-सात विलंदां री लांबी खोळी मेण कपड़ री सूं बाहर काढजै छै। बादळ मांह बीज नीसरी आकास री, कना तीज रै तमासै मारु पातळी कामणी पोसाक कर नीसरी, इण भांत री बंदूकां मोटचार तिरता-तिरता लेय उण घड़नावां आया छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बुलंद' (रू. भे.)

उ०—१ विरांण मीर धीठा विलंद, नीसांण फील दीठा नरिंद। धरहड़ै क्रोध परचंड धूप, भुज डंड अड़ै बहमंड भूप। —वि. सं.

उ०—२ वडवडे भी वडवडे, वड पुरख विलंदे, जांण पिछांण जाहरां, दिल अदर दंदे। सीधां आगम च्यार वेद, कतेब कहंदे, पुतलियां नट हुंदियां, क्या आदम गंदें। —केसोदास गाडण

रू. भे.—बिलंद बुलंद।

विलंब-सं. पु. [सं. विलम्ब] १ आवश्यक, उचित या सामान्य समय से अधिक समय लगने की स्थिति।

उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया, गेम गमाया गुण गाया। धिणीयांणी धाया विलंब न लाया, आराधां नां सुणि आया। —पी. ग्रं.

२ आवश्यक उचित या सामान्य समय से अधिक लगने वाला समय, देर, अति काल।

उ०—धरिये भोग विलंब न करियै, मेरी मांन पियारी। जीमें म्हारो प्यारो गिरधर, साधां नै बेग बुला री। —मीरां

३ आलस्य, दीर्घसूत्रता।

रू. भे.—बिलंब, बिलम, विलंभ, विलम।

विलंबण, विलंबन-सं. स्त्री. [सं. विलम्बन] १ देर करने की क्रिया, विलंब करने की क्रिया।

२ लटकने की क्रिया।

३ आश्रय लेने की क्रिया, आश्रित होने की क्रिया।

विलंबणौ, विलंबबौ-क्रि. स. [सं. विलम्बनम्] १ देर करना, विलम्ब करना।

उ०—गढ थी मांउ सेना लगें जी, करचौ ह्वारा डोर। वार घणी विलंबयौ जी, जतन करेयौ जोर। —प. च. चौ.

२ आलिंगन करना।

उ०—सांवण आयउ साहिबा, पगइ विलंबी गार। ब्रच्छ विलंबी वेलड़चां, नरां विलंबी नार। —ढो. मा.

२ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ पवन जु चाल्यौ छै। सु नदि नदि कै विखै तिरतौ आवै छै। रूंख छै त्यां कै विखै विलंबतौ आवै छै। वेल्यां सौं लपटातौ आवै छै। दक्षण हुंता जु उत्तर दिसा नै चाल्यौ छै। —वेलि टी.

उ०—२ हरीया अैसा हरि भया, तैसा भया न कोय। वाकै पाय विलंबियै, पारि उतारै सोय। —अनुभववांणी

३ पकड़ना, ग्रहण करना।

उ०—१ गाडर पूंछ विलंब कर, कोइ पार लंघावै, रंक रुलंदा मार कर, कोइ मल कहावै। वेतर भुत आराध कर,कोइ देव मनावै, डाकण का मंत्र सीख कर, कोइ साध कहावै। —केसोदास गाडण

उ०—२ केईक पांनां फूलड़ां, केईक विलव्यां डाल। हरीया मूल विलंबिया, फल पाया असराल। —अनुभववांणी

क्रि. अ.—१ देर होना, विलम्ब होना।

२ फंसना, बसना।

उ०—माया को कादो विन्यो, अंब विलंब्या आय। हरीया नर आधा धसै, ज्यूं ज्यूं कळता जाय। —अनुभववांणी

३ आश्रित होना, सहारा लेना।

उ०—सजण, गुणे समुद्द तूं, तर तर थक्की तेण। अवगुण एक न सांभरइ, रहूं विलंबी जेण। —ढो. मा.

४ मग्न होना, लीन होना।

५ रत्त होना, आसक्त होना।

उ०—दादू खाटा मीठा खाइ कर, स्वाद चित्त दीया। इनमें जीव विलंबिया, हरि नांम न लीया। —दादूबांणी

६ लगना, लिपटना।

उ०—सांवण आयउ साहिबा, पगइ विळंबी गार। ब्रच्छ विलंबी वेलड़चां नरां विलंबी नार। —ढो. मा.

७ उलझना, फसना।

८ सहारा लेना, लटकना।

९ रुकना, अवरुद्ध होना।

१०—चिपकना।

उ०—१ सांवण आयउ साहिबा, पगइ विलंबी गार। ब्रच्छ विलंबी वेलड़चा, नरां विलंबी नार। —ढो. मा.

उ०—२ पावस मास प्रगट्टियउ, पगइ विलंबइ गारि। धण की आही वीनती, पावस पंथ निवारि। —ढो. मा.

११ हर्षित होना, खुश होना।

१२ भ्रमित होना, भूलना।

उ०—हरीया मिरघ विलंबियौ, हरया देख वन घास। जीवण का सांसा पड़चा, इण आजूणै वास। —अनुभववांणी

१३ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त होना, लगना।

उ०—सांई सौं सहजै रमूं रे, और नहीं आंन देव। तहां मन विलंबिया, जहां अलख अभेव रे। —दादूबांणी

१४ देखो 'बिलूंबणौ, बिलूंबबौ' (रू. भे.)

बिलंबणहार, हारौ (हारी), बिलंबणियौ—वि०।

बिलंबिग्रोड़ौ, बिलंबियोड़ौ, बिलंब्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलंबीजणौ बिलंबीजबौ—कर्म, भाव वा०।

बिलंबणौ, बिलंबबौ, बिलमणौ, बिलमबौ—रू० भे०।

बिलंबिका-सं. पु.—एक प्रकार का अजीर्ण रोग। (अमरत)

बिलंबित-वि. [सं. विलम्बित] १ लटका हुआ, झूलता हुआ।

२ जिसमें देर हुई हो।

३ देर करने वाला।

४ सुस्त या धीरे चलने वाला।

बिलंबियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ देर किया हुआ, विलम्ब किया हुआ. २ आलिंगन किया हुआ. ३ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. ४ पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ. ५ देर हुवा हुआ, विलम्ब हुवा हुआ. ६ आश्रित हुवा हुआ, सहारा लिया हुआ. ७ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ८ लगा हुआ, लिपटा हुआ. ९ उलझा हुआ, फंसा हुआ. १० सहारा लिया हुआ, लटका हुआ. ११ रुका अवरुद्ध हुवा हुआ. १२ चिपका हुआ. १३ रत्त हुवा हुआ, आसक्त हुवा हुआ. १४ हर्षित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ. १५ भ्रमित हुवा हुआ. १६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, लगा हुआ।

१७ देखो बिलूंबियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलंबियोड़ी)

बिलंभ—देखो 'बिलंब' (रू. भे.)

उ०—वीरभांण विचारइ रे, मन वैर संभारइ रे, इण सोहाग उतारयौ मुझ माता तणौ रे, जो परही दीज्यै रे, सहिजइ छूटीज्यै रे, कीज्यैं न बिलंभ इण बातै घणौ रे। —प. च. चौ.

बिळ, बिल—१ देखो 'बिल' (रू. भे.)

२ देखो 'वळ' (रू. भे.)

बिलउ—देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—किसूं पहूतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि बिलउ। अरजुन बोलइ रे अकुलीन, अरजुन भूझिसि मइं सुं हीन।

—सालिभद्र सूरि

बिलकणौ, बिलकबौ—देखो 'बिलखणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—ब्रहन डोलै बिलकती, कर कर छूटा केस। भसम लगाऊं अंग पर, ऊपर बरसै मेस। —श्री हरिरामजी महाराज

बिलकणहार, हारौ (हारी), बिलकणियौ—वि०।

बिलकिग्रोड़ौ, बिलकियोड़ौ, बिलक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलकीजणौ, बिलकीजबौ—भाव वा०।

बिलकल—देखो 'वल्कल' (रू. भे.)

बिळकळणौ, बिळकळबौ—देखो 'बिळकुळणौ, बिळकुळबौ' (रू. भे.)

उ०—अकरूर घरे आया अनंत, बिळै मात पिति बिळकळै। कूबड़ी हुंति कीधी क्रिपा, माहव भगतां सा मिळै। —पी. ग्रं.

बिळकळणहार, हारौ (हारी), बिळकळणियौ—वि०।

बिळकळिग्रोड़ौ, बिळकळियोड़ौ, बिळकळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिळकळीजणौ,बिळकळीजबौ—भाव वा०।

बिळकळियोड़ौ—देखो 'बिळकुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिळकळियोड़ी)

बिलकियोड़ौ—देखो 'बिलखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री· बिलकियोड़ी)

बिलकुल—देखो 'बिलकुल' (रू. भे.)

बिळकुळणौ, बिळकुळबौ-क्रि. अ.—१ व्याकुल होना, विह्वल होना।

उ०—हय हय सिरजणहार, ढोलौ वीछोहौ बिळकुळै। —ढो. मा.

२ प्रसन्न होना, हर्षित होना।

उ०—१ बिळकुळै राजरमणी वदन, निरखै रूप नरचंद रौ। जांणै विकास प्रांमै जळज, देखि प्रकास दुंदिद रौ। —रा. रू.

उ०—२ धरापति आज लखधीर रज धणी, धणीं भुइ जास जसवास रिधि घणी। कवीं निति देखि मन मांहि बिळकुळै, भलौ विधि तेज रवि जेम भळहळै। —ल. पि.

उ०—३ खळां रा सीस महारुद्र में पेस कीजै। दुस्ट मरै सरगापुर रौ दुख टळै। इतरौ सांभळ, बिळकुळतै वदन पुरंदर बोलियौ—जांणै कर उजळा, अमोलक मोताहळ सा वचन झड़े।

—मा. वचनिका

उ०—४ खळहळां खत चळवळां खापर, वीसहथ भर बिळकुळी। मह वळां चव रघुनाथ अमलां, मंड सुसबद मंडळी। —र. जः प्र.

उ०—५ मन मैं तौ देखियां ने घणी बिळकुळी। चौड़ै सोच की सूरत कीदी। जवै साथण्यां नैं कह्यौ, अबै हुं कांइ करूं। मनै तौ देखि लीवी। पवन बी वैरी हुवौ। —पनां

३ आतुर होना, उतावला होना।

उ०—१ भड़ कोस छला मद गैं मरियौ, ओ 'गोगौ' लछुसर उतरियौ। स्रवणैं सत्र नैंडोय संभरियौ,काळ चालण 'धीर' बिळकुळियौ। —गो. रू.

उ०–२ वीरत्ति बिछेवा बिळकुळेय, मुख राग मूंछ भ्रूंहां मिळेय। चख लाल कीध मुख कीध चोळ, कळकळै तेज विकसै कपोळ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ बिळकुळै बधाईदार बधि, आणंद उछब अथाह सूं।

आगम्म खबर अभसाह' री, जाय कहै 'जैसाह' नूं। —सू. प्र.

४ प्रफुल्लित होना, फूलना।

उ०—१ हरामंत द्रोरा हिल्लोळवा, बीरा-तन किरि बिळकुळै। दळ-थंभ विढरा दखराधि सूं, ऐम ऊठियौ भुज आंमळै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ बिळकुळियौ वदन जेम वाकारचौ, संग्रहि धनुख पुराच सर संधि। क्रिसन रुकम आउध छेदरा कजि, वेलखि अरणी मूठि द्रिठि बधि। —वेलि.

५ दैदिप्यमान होना, चमकना।

उ०—१ वीरति मुख सूरति बिळकुळियं, कमधज तेज कमळ कळमळयं। किसन वरण माझिल कंठलिय, सूरज किरण जांण झळहळियं। —गु. रू. बं.

उ०—२ स्रवरा वयण संभळै, नयरा बिळकुळै निरंमळ, जोत वदन झळहळै, लाज भुजि झळै स उज्जळ। सूर विरत सल्लळै, ज्वाळ झळहळै फुरांधर, कनां प्रळैकति करण, किरण परजळै दिरांकर।

—रा. रू.

६ चुनौती देना, ललकारना।

७ उत्साहित होना, जोश में आना।

उ०—१ सुज आप सपंड वसंभ लीयं, बप वाधेय जोस बिळकुळियं। कंध थापळ रखत दूर कियौ, दाखै मुख ब्रदळ गांम दियौ।

—गो रू.

उ०—२ जोगावत 'पेमौ' तिरा जांमळ, दिल बिळकुळै मिळै जद कंदळ। 'वछराजोत' 'अखौ' वरदाई, पायां कळह जांरिग रिब पाई।

—रा. रू.

उ०—३ जोधपुरौ जुध जीपवा, गढ लेवा 'गजसाह'। विरती कोडी बिळकुळै, रीसाणौ रिमराह। —गु. रू. बं.

८ चचलता के साथ हिलना-डोलना।

९ निकलना।

उ०—मारवणी मुख-ससि तराउ, कसतूरी महकाइ। पावस पन्नग पीवराउ, बिळकुळियउ तिरिग ठाइ। —ढो. मा.

बिळकुळणहार, हारौ (हारी), बिळकुळणियौ—वि०।

बिळकुळिओड़ौ, बिळकुळियोड़ौ, बिळकुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिळकुळीजणौ, बिळकुळीजबौ—भाव वा०।

बिळकुळणौ, बिळकुळबौ, बिल्कुळणौ, बिल्कुळबौ—रू० भे०।

बिळकुळियोड़ौ-भू. का कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, विह्वल हुवा हुआ. २ प्रसन्न हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ. ३ आतुर हुवा हुआ, उतावला हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ. ५ दैदिप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ. ६ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ. ७ उत्साहित हुवा हुआ, जोश में आया हुआ. ८ चंचलता के साथ हिला-डुला हुआ।

(स्त्री. बिळकुळियोड़ी)

बिलक्खणौ, बिलक्खबौ—देखो 'बिलखणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कर मूठ धनक्खं छूट विसक्खं, लेखा पक्खं सर नक्खं। धव सूर हरक्खं और बिलक्खं, चाव परक्खं रवि चक्खं। —रा. रू.

उ०—२ स्वजनं वेवाहिय धूरइं भूरइं निगाहिय नेह, लेई अचेत ऊपा डिय माडिय आँणीय गेहि। भूतलि भंभरभोलिय डोलिय जिम न चडंत, विलवइ कुमरि बिलक्खिय देखिय तैं व्रत्तांत।

—जयसेखर सूरि

बिलक्खणहार, हारौ (हारी), बिलक्खणियौ—वि०।

बिलक्खिओड़ौ, बिलक्खियोड़ौ, बिलक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलक्खीजणौ, बिलक्खीजबौ—भाव वा०।

बिलक्खियोड़ौ—देखो 'बिलखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलक्खियोड़ी)

बिलक्खौ—देखो 'बिलखौ' (रू. भे.)

उ०—सालूरा पांणी बिना, रहइ बिलक्खा जेम। ढाढी साहिब सूं कहइ, मौ मन तौ विरा एम। —ढो. मा.

बिलक्ष-वि. [सं.] १ विशेष चिन्हों या लक्षणों रहित, लक्षणहीन।

२ जिसका कोई लक्ष्य न हो, लक्ष्य रहित।

३ विकल, व्याकुल।

४ अद्भुत, अनोखा, अनूठा, असाधारण।

५ लज्जा से युक्त, लज्जित।

६ आश्चर्ययुक्त, चकित, विस्मित।

रू. भे.—बिलक्षि।

बिलक्षण-वि. [सं.] १ चिन्हों या लक्षणों से रहित, लक्षणहीन।

२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र।

उ०—वीर पणौ पती रौ दिखाण सारू कहै छै-थें जिकां रा वधावा गावौ छौ तिकां रा सुभाव सुं म्हारा पती रौ सुभाव बिलक्षण छै-किसो कि दमगळ (जुद्ध) विनां दुचितौ रहै अनै जुद्ध मैं कंगळ बगतर रा जंत कड़ियां ही नहीं जड़ै इसा वीरपणा रा सुभाव है।

—वी. स. टी.

३ अशुभ लक्षणों वाला।

४ विशेष लक्षणों वाला।

रू. भे.—बिलच्छण, बिलच्छन, बिलख, बिलखण, बिलखणौ, विलच्छण, विलच्छन।

बिलक्षणता-सं. स्त्री.—बिलक्षण होने की अवस्था या भाव।

बिलक्षि—देखो 'बिलक्ष' (रू. भे.)

उ०—गोरी गलि वलगी रही, बेलि चढी जिम व्रक्षि । विनय करी-नइं विलपती, विधि विधि थई विलक्षि । —मा. कां. प्र.

विलख, विलखरा-वि.—खिन्न, उदास, विकल, व्याकुल ।

उ०—नमांमी सरवेसा विलख लयसेखाक्षर नमौ, नमौ सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमौ । नमौ स्रस्टा त्वस्टा अगम ऊतक्रस्टा अह नमौ, नमौ स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमौ । —ऊ. का.

रू. भे.—विलख, बिलखरा ।

विलखरणौ-वि- [स्त्री. विलखरणी] १ व्याकुल, बेचैन ।

२ रोने वाला ।

३ व्यथित, दुःखी ।

४ मुरझाने वाला ।

५ भयभीत, घबराया हुआ ।

रू. भे,—बिलखरणौ ।

विलखणौ, विलखबौ-क्रि. अ.—१ व्याकुल होना, बेचैन होना ।

उ०—साळूड़ो साळूड़ो गोरी कांई विलखै, मेह बिना धरती तरसै, मेहड़ो हुवरण दे । —लो. गी.

२ व्यथित होना, दुःखी होना ।

उ०—थारा जीव अर म्हारा जीव रो मन मिळग्यो; पछै घरवास में कांई खांमी । मांनै तो थारी मरजी, नींतर म्हैं थनै जावरण तो नीं दूं । म्हारै हिवड़ा री नागरण थारै बिना तड़फै, विलखै ।
—फुलवाड़ी

३ अभाव की स्थिति में प्रत्याशा से ताकना ।

४ मुरझाना, कुम्हलाना ।

उ०—मेरै सांम सुहाग का, छांना न रहै नूर । विलखै वदन दुहागिनी, हरीया ऊगै सूर । —अनुभववांणी

५ विलाप करना, रोना ।

६ भयभीत होना, घबराना ।

उ०—विलखीजै रिरगतूर वाजियां, अदंग वाजियां हरख मचै । धारा तीरथ चढै, धूजरणी, प्यारा तीरथ कररण पचै ।
—कविराजा बांकीदास

विलखरणहार, हारौ (हारी), विलखणियौ—वि० ।

विलखिओड़ौ, विलखियोड़ौ, विलख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलखीजणौ, विलखीजबौ—भाव वा० ।

बिलखणौ, बिलखबौ, बिलखाणौ, बिलखाबौ, विलखाणौ, विलखाबौ, विलखावणौ, विलखावबौ—रू० भे० ।

विलखाणौ, विलखाबौ—देखो 'विलखणौ, विलखबौ' (रू. भे.)

विलखाणहार, हारौ (हारी), विलखाणियौ—वि० ।

विलखायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलखाईजणौ, विलखाईजबौ—भाव वा० ।

विलखायोड़ौ—देखो 'विलखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलखायोड़ी)

विलखावणौ, विलखावबौ—देखो 'विलखणौ, विलखबौ' (रू. भे.)

उ०—महा मांडियो जाग उज्जैण खागां मचै, रुदन विलखावती रही रोती । हेळवी "भ्रमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपछर रही वाट जोती । —नरहरदास बारहठ

विलखावणहार, हारौ (हारी), विलखावणियौ—वि० ।

विलखाविओड़ौ, विलखावियोड़ौ, विलखाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलखावीजणौ, विलखावीजबौ—भाव वा० ।

विलखावियोड़ौ—देखो 'विलखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलखावियोड़ी)

विलखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ अभाव की स्थिति में प्रत्याशा से ताका हुआ. ४ मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ. ५ विलाप किया हुआ, रोया हुआ. ६ भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ ।

(स्त्री. विलखियोड़ी)

विलखूं—देखो 'विलखौ' (रू. भे.)

उ०—कोलाहल सांभलयउ अपार, कटक मांहि वूठउ अंगार । कटक मांहि सहू दखीऊ हूऊ, घोडूं मांरास विलखूं थयूं । —कां. दे. प्र.

विलखोड़ौ—देखो 'विलखौ' (अल्पा., रू. भे.)

विलखौ विलख्यौ-वि. (स्त्री. विलखी) १ उदास, खिन्नचित, व्याकुल ।

उ०—१ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजांरण । तुझ विरण घरण विलखी फिरइ, गुरण बिन लाल कमांरण । —ढो. मा.

उ०—२ निरखै अवासां भर निजर, नह देखै दसरथ न्रप निजर । निज देखै नह बंधव निजर, नर दीठा विलख्या सह निजर ।
—र. रू.

उ०—३ आव हमारै आंगरणै, 'अह' त्रिभुवन राइ । तुम्ह विन मैं विलखी फिरौं', अब रह्यौ न जाइ । —ह. पु. वां.

उ०—४ मन जांरणै कीकर ई व्हैग्यौ । मूंडौ उतरग्यौ अर कंठ जांरणै चैंठग्यौ । घरै आयां ठांम उतरावतां जेठांणी पूछ्यौ—बिनरणी आज विलखा कियां ? —अमरचूनड़ी

२ दुःखी, व्यथित ।

उ०—१ प्रभू सौ कांय उपावियौ, किम अेह करांरणं । अत ही चित आतुर हुवौ, बिलखौ ब्रह्मांरणं । —गजउद्धार

उ०—२ मां रै मूंडा सूं बाप रै चेता री बात सुणनै राजी व्है जातौ अर वांरै सीत री बात सुणनै अणूंतौ **विलखौ** व्है जातौ। इण सूं आगै उण री समझ नीं ही। —फुलवाड़ी

३ मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

उ०—१ प्यारी चितियौ पीव दिस, वदन **विलखौ** देख। अब केसैं अंतर परचौ, कौन हमारौ लेख। —गजउद्धार

उ०—२ काळी तौ कोयल भई, काळा जिसका रंग। हरीया हरि विन विरहनी, वदन **विलखे** अंग। —अनुभववांणी

४ घबराया हुआ, भयभीत।

५ वीरांन, रिक्त, शून्य।

उ०—अमरांणै में घोर अंधार हां रे म्हांरा सोढा रांणा, अमरांणै में हौ घोर अंधार हो जी हौ। विलखा नै लागै रै मेहल माळिया हौ, म्हारा रतन रांणा एकर तौ अमरांणै पाछौ आव।—लो. गी.

६ कान्तिहीन, तेज रहित, चमक रहित।

उ०—१ भूखा मांस अहारी भाखै, **विलखै** रग ऊचारै वांणी। वांको चालण फोज वहंडण, औख वडंग गयौ 'अमरांणी"।

—सुखजी खिडियौ

उ०—२ कुदरत ई साव अलूंणी के बाड़ी लागती। चांद पीळिया रै रोगी ज्यूं **विलखौ** लागतौ। ऊगता अर आथमता सूरज री गुलाल उणनै काळस सूं ई सवायौ माड़ौ लागतौ। —फुलवाड़ी

७ निराश, उदास।

उ०—१ ऊमर मन **विलखउ** हुयउ, चारण वचन सुणेह। उणि हिज पंथ पाछउ वळयउ, साल्ह निचंत करेह। —ढो. मा.

उ०—२ लोग पूजारीजी नै सागैड़ौ जीमायौ। थड्डा देय घर सूं बारै काढियौ। वौ घणौ ई कूकियौ पण कीं सुणवाई व्ही नीं। **विलखौ** होय टुळक-टुळक बगेची तांई नीठ पूगौ। —फुलवाड़ी

उ०—३ भाई सा तौ रोज कंवै के अबै उणनैं सफाखांना सूं छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मांमोसा उणनैं लेयनै आवेला। वो अठी-उठी देखनै **विलखौ** पड़ग्यौ अर म्हनैं जबाव देवणौ भारी पड़ग्यौ।

—अमरचूंनड़ी

रू. भे.—बिलकौ, बिलक्खौ, बिलखौ, बिलख्यौ, विलक्खौ, विलखूं।

अल्पा.,—विलखोड़ौ।

विलग-वि.—अलग, पृथक।

रू. भे.—बिलग।

विलगणौ, विलगबौ-क्रि. अ.—१ लगना, लिपटना।

उ०—मन विसहर तन बंबही, ऊठि **विलगै** पाय। जनहरिया तिह लोक में, जांह जांउं तांह खाय। —अनुभववांणी

२ अलग होना, पृथक होना, जुदा होना।

उ०—हरीया अैसा को मिळै, सहजां रहै समाय। बाहरि वाजा वचन बौह, चित न विलगै जाय। —अनुभववांणी

३ छूना, स्पर्श होना।

४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ना।

५ चिपकना, लगना, जुड़ना।

उ०—१ फल तर तैं तूटां पछै वर्वै न विलगै जाय। गुर वेमुख नही नीपजै, भावै गोविंद गाय। —अनुभववांणी

उ०—२ तन ऊतरिया नां चड़ै, करिहौ कोड़ि विचार। ज्यूं तरवर फळ ऊतरयौ, फेर न विलगै डार। —अनुभववांणी

६ लगना, होना।

उ०—बाहर किस सूं झगड़ियै, घर झोड़ **विलगा**।

—केसोदास गाडण

७ आवेष्टित होना, लिपटना।

उ०—ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ केळि। जांणै चंदन-रूंख-ड़इ, विळगी नागर वेलि। —ढो. मा.

८ कार्यारंभ होना।

९ पकड़ना, ग्रहण करना।

१० किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना, लगना।

११ आलिंगन होना, लिपटना।

उ०—१ वेस्या वेस विलूण-समी, वोलि सोस-मझारि। नेह विना **विलगइ** गलइ, मूरख, ! भव म म हारि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ पडखतउ हुसि मूं नइं स्वांमी, मेल्हिसी कवण स्त्री नइं नांमी। कंत कंठि **विलगी** तनु बालउं, आपणा कुल कहूं अजूआ-लउ। —सालिसूरि

विलगणहार, हारौ (हारी), विलगणियौ—वि०।

विलगिओड़ौ, विलगियोड़ौ, विलग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विलगीजणौ, विलगीजबौ—भाव वा०।

बिलगणौ, बिलगबौ बिलग्गणौ, बिलग्गबौ, बिल्लगणौ, बिल्लगबौ, विलगाणौ, विलगाबौ, विलगावणौ, विलगावबौ, विलग्गणौ, विलग्गबौ, विल्लगणौ, विल्लगबौ—रू० भे०।

विलगाणौ, विलगाबौ-क्रि. स.—१ लगाना, लिपटाना।

२ अलग करना, पृथक करना, जुदा करना।

३ छूना, स्पर्श करना।

४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ाना।

५ चिपकाना, लगाना, जोड़ना।

६ लगाना, करना।

७ आवेष्टित कराना, घेरना, लिपटाना।

८ कार्यारंभ कराना ।

९ पकड़ाना, ग्रहण कराना ।

उ०—ग्रांगणियै न करावी थिरी, कन्हैया । ग्रांगुळियां विलगाय रे । हाऊ बेठौ छै तिहां, कन्हैया, ग्रलगौ तूं मति जाय रे ।

—जयवांणी

१० देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

विलगाणहार, हारौ, (हारी), विलगाणियौ—वि० ।

विलगायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलगाईजणौ, विलगाईजबौ—कर्म वा., भाव वा० ।

बिलगाणौ, बिलगाबौ, विलगावणौ, विलगावबौ—रू० भे० ।

विलगायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लगाया हुग्रा, लिपटाया हुग्रा. २ ग्रलग किया हुग्रा, पृथक किया हुग्रा, जुदा किया हुग्रा. ३ छूया हुग्रा, स्पर्श किया हुग्रा. ४ किसी ग्रन्य स्त्री के साथ ग्रनैतिक सम्बन्ध जुड़ाया हुग्रा. ५ चिपकाया हुग्रा, लगाया हुग्रा, जोड़ा हुग्रा. ६ लगाया हुग्रा, किया हुग्रा. ७ ग्रावेष्टित किया हुग्रा, घेरा हुग्रा, लिपटाया हुग्रा. ८ कार्यारम्भ किया हुग्रा. ९ पकड़ाया हुग्रा, ग्रहण किया हुग्रा.

१० देखो 'विलगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलगायोड़ी)

विलगाव–सं. पु.—१ लगाव, लिपटाव ।

२ ग्रलगाव, पृथकता ।

३ किसी ग्रन्य स्त्री के साथ जुड़ा हुग्रा, ग्रनैतिक सम्बन्ध ।

४ घेराव ।

५ कार्यारम्भ ।

६ पकड़ाव पकड़ ।

विलगावणौ, विलगावबौ—१ देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विलगाणौ, विलगाबौ' (रू. भे.)

विलगावणहार, हारौ (हारी), विलगावणियौ—वि० ।

विलगाविग्रोड़ौ, विलगावियोड़ौ, विलगाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलगावीजणौ, विलगावीजबौ—भाव वा. कर्म वा० ।

विलगावियोड़ौ—१ देखो 'विलगियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विलगायोड़ौ' (रू. भे.)

विलगियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ लगा हुग्रा, लिपटा हुग्रा. २ ग्रलग हुवा हुग्रा, पृथक हुवा हुग्रा, जुदा हुवा हुग्रा. ३ छूया हुग्रा, स्पर्श हुवा हुग्रा. ४ किसी स्त्री के साथ ग्रनैतिक सम्बन्ध जुड़ा हुग्रा. ५ चिपका हुग्रा. लगा हुग्रा, जुड़ा हुग्रा. ६ लगा हुग्रा. हुवा हुग्रा ७ ग्रावेष्टित हुवा हुग्रा, लिपटा हुग्रा. ८ कार्यारम्भ हुवा हुग्रा. ९ पकड़ा हुग्रा, ग्रहण किया हुग्रा. १० किसी ग्रनिष्ट या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध हुवा हुग्रा. या उसके सम्पर्क में ग्राया हुग्रा, लगा हुग्रा.

(स्त्री. विलगियोड़ी)

विलग्गणौ, विलग्गबौ—देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जड पंयाळ पै जुग्रल, सीस ग्रहमंड विलग्गै । कळ-वाउ डंडूळ, डिगै नह डोलै जुग्गै । —गु. रू. बं.

उ०—२ 'गजपती' दिस मेल्हियौ, ग्रसपती फुरमांण । खुरम विलग्गौ राह हुई, तौ छूटै खुरसांण । —गु. रू. बं.

उ०–३ 'दूद' मेड़तियो राव, ग्राय गुर पाय विलग्गौ । रावळ जैसलमेर, परचतां सांसौ भग्गौ । —वील्हौजी

उ०—४ इक कर वयस विलग्गियै, इक कर लग्गिय लाज । थय कह जोगनिपुर चलहु, लाज कहै भिड़राज ।

—महाराजा मानसिंहजी

उ०—५ हर हर करतौ हरख कर, ग्राळस म कर ग्रयांण । जिण पांणी सूं पिंड रच, पवन विलग्गौ प्रांण । —ह. र.

उ०—६ सुणि सुंदरि, सच्चउ चवां, भांजइ मन ची भ्रंति । मौ मारू मिळिवा तणी, खरी विलग्गी खंति । —ढो. मा.

उ०—७ कंठ विलग्गी मारवी, करि कंचूवा दूर । चकवी मनि ग्राणंद हुवउ, किरण पसारचा सूर । —ढो. मा.

विलग्गणहार, हारौ (हारी), विलग्गणियौ—वि० ।

विलग्गिग्रोड़ौ, विलग्गियोड़ौ, विलग्ग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलग्गीजणौ, विलग्गीजबौ—भाव वा० ।

विलच्छण, बिलच्छन—देखो 'विलक्षण' (रू. भे.)

विलछणौ, बिलछबौ—देखो 'विलसणौ, विलसबौ' (रू. भे.)

उ०—वार न लायौ विलछतां,म्लेछां मन रत्ता । ईस्वर रूप ग्रलावदीन, जिण ग्रालम जित्ता । —लूणकरण कवियौ

विलछणहार, हारौ (हारी), विलछणियौ—वि० ।

विलछिग्रोड़ौ, विलछिग्रोयोड़ौ, विलछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलछीजणौ, विलछीजबौ – भाव वा० ।

विलछियोड़ौ—देखो 'विलसियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विलछियोड़ी)

विलणौ, विलबौ–क्रि. स.—ग्रावेष्टित करना, घेरना ।

उ०—दल सभ्भै सुरतांण, ग्राय चित्रकोट विलिज्जइ, भेजउ वेगि विसेट, बात मिलणौ की कीजइ । —प. च. चौ.

विलधणौ, विलधबौ—देखो 'विलूंधणौ, विलूंधबौ' (रू. भे.)

उ०—मन मंध्या सोई इंद्रियां, सो स्वाद बिलधा ।

—केसौदास गाडण

विलधणहार, हारौ (हारी), विलधणियौ—वि० ।
विलधिओड़ौ, विलधियोड़ौ, विलध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विलधीजणौ, विलधीजबौ—भाव वा० ।

विलधियोड़ौ—देखो 'विलूंधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विलधियोड़ी)

विलपणौ, विलपबौ–क्रि. अ.—१ उदास होना, खिन्नचित्त होना, बेचैन होना ।
२ व्याकुल होना, दुःखी होना, व्यथित होना ।
उ०—१ दातण मिळबौ दूलभ, सघन वन वनै जितै सह । **विलपत** जळ विन बाळ, भरै सर नळ उभळत वह ।
—जैनदांन वारहठ
उ०—२ नगर मांहि नर नारि नइं, अतिघण अंगि उचाट । **विल-पइ** बंभण वांणीया, वली विसेखि भाट । —मा कां. प्र.
३ विलाप करना, रोना ।
उ०—१ विनिता विविविधि **विलपती**, टोलै टोलै जाय । आगलि थातां अेकनइ. **बीजो** वढवा धाय । —मा. कां. प्र.
उ०—२ आव, अमोडा-माहि धरु, ईस तणइ जिम गंग । हूं **विल-पंती** विरहिणी, स्वांमि ! म छंडिसि सग । —मा. कां. प्र.
उ०—३ इम **विलपती** देखि नै, आवै सेठ निलज । सुवचन कहै संतोखनै, एहवी करै अरज । —वि. कु.
विलपणहार, हारौ (हारी), विलपणियौ—वि० ।
विलपिओड़ौ, विलपियोड़ौ, विलप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विलपीजणौ, विलपीजबौ—भाव वा० ।

विलपाणौ, विलपाबौ–क्रि स.—१ व्याकुल करना, दुःखी करना, व्यथित करना ।
२ विलाप करने के लिए प्रवृत्त करना, रुलाना ।
विलपाणहार, हारौ (हारी), विलपाणियौ—वि० ।
विलपायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विलपाईजणौ, विलपाईजबौ—कर्म वा० ।
विलपावणौ विलपावबौ—रू० भे० ।

विलपायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ व्याकुल किया हुआ, दुःखी किया हुआ, व्यथित किया हुआ २ विलाप करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, रुलाया हुआ ।
(स्त्री. विलपायोड़ी)

विलपावणौ, विलपावबौ—देखो 'विलपाणौ, विलपाबौ' (रू. भे.)
विलपावणहार, हारौ (हारी), विलपावणियौ—वि० ।
विलपाविओड़ौ, विलपावियोड़ौ, विलपाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विलपावीजणौ, विलपावीजबौ—कर्म वा० ।

विलपावियोड़ौ—देखो 'विलपायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विलपावियोड़ी)

विलपियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।
(स्त्री. विलपियोड़ी)

विलब्ध–वि. [सं.] १ पाया हुआ, प्राप्त किया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

विलब्धणौ, विलब्धबौ–क्रि. स. [सं. विलब्धनम्] १ प्राप्त करना, पाना २ अलग करना, पृथक करना ।
विलब्धणहार, हारौ (हारी), विलब्धणियौ—वि० ।
विलब्धिओड़ौ, विलब्धियोड़ौ, विलब्ध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विलब्धीजणौ, विलब्धीजबौ—कर्म वा० ।
विलभणौ, विलभबौ—रू० भे० ।

विलब्धियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।
(स्त्री. विलब्धियोड़ी)

विलभणौ, विलभबौ—देखो 'विलब्धणौ, विलब्धबौ' (रू. भे.)
विलभणहार, हारौ (हारी), विलभणियौ—वि० ।
विलभिओड़ौ, विलभियोड़ौ, विलभ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विलभीजणौ, विलभीजबौ—कर्म वा० ।

विलभियोड़ौ—देखो 'विलब्धियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विलभियोड़ी)

विलम–सं पु.—१ मनबहलाव की क्रियाएं ।
२ देखो 'विलंब' (रू. भे.)
उ०—१ राई वेगई चढि आवौ, **विलम** न करौ बार । सोल सइ-यर रूकमणी सारीखी लेज्यो साथ । —रुकमणी मंगळ
उ०—२ **विलम** बिना विलुंबी मेरी, नहीं अधर नहिं धरता । आद रु अंत मध्य नहीं मेरै, नहिं उरै परै मेरी सुरता ।
—स्री हरिरांमजी महाराज
३ देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—भंवरा घेर र भूवन मैं, राख्यो विना रहूं न । वाडी म्हांरी रौ **विलम**, खूंनी कर गयौ खूंन । —अग्यात
४ देखो 'विलोम' (रू. भे)
उ०—महण वन दहण 'केसर' गहण मंडियौ, तेण खग वहण

घण सघण तणियौ। महा तम विलमां उडावण मारुवौ, वडखत्री तरण चै रूप वणियौ। —किसोरदांन बारहठ

विलमणी–वि.—१ प्रेमाशक्त।

उ०—सुण बाळा, इक रैण पोढती कंठ लगांणी, जागी जजकां, नैण विलखतां नीर भरांणी। पूछतां, मुळकाय कह्या थें बोल सयांणी, 'छळिया! पेख्यौ तूझ विलमणी नार विरांणी। —मेघ

२ भोग-विलास में रत्त।

३ कार्य में लग कर भूलने वाला।

४ मग्न, लीन।

५ कार्य में लीन।

विलमणौ, विलमबौ–क्रि. अ.—१ प्रेमाशक्त होना।

२ भोगविलास में रत्त होना।

३ कार्य में लीन होना।

४ कार्य में लग कर भूलना।

५ मग्न होना, लीन होना।

६ ठहरना, रुकना।

७ देखो 'विलूंबणौ, विलूंबबौ' (रू. भे.)

उ०—म्हांरा चगा मारु चालै छै विदेस, जिण रुत केसू फूलै श्राली। कळियां सुं भवर विलम रया छै, सूवटां श्रांबा डाळी श्राली। —रसीलै राज रा गीत

८ देखो 'विलंबणौ, विलंबबौ' (रू. भे.)

विलमणहार, हारौ (हारी), विलमणियौ—वि०।

विलमिश्रोड़ो, विलमियोड़ो, विलम्योड़ो—भू० का० कृ०।

विलमीजणौ, विलमीजबौ—भाव वा०।

बिरमणो, बिरमबौ, बिलमणौ, बिलमबौ, विरमणौ, विरमबौ, विलम्मणौ, विलम्मबौ—रू० भे०।

विलमाणौ, विलमाबौ–क्रि. स.—१ बातें करने हेतु प्रवृत्त करना, बातों में लगाना, बहलाना।

उ०—'मदू' श्राखे मारकौ, श्रंत वेढ श्रघाया, पुड़ घर धूज पड़ाईयै, 'दलजी' चढ श्राया। वातां सू विलमायनै, ज्यां नै जजमाया, 'सीहै' कहिया भेद सौ, नाही मन भाया। —वी. मा.

२ मोहित करना, लुभाना, मोहना।

उ०—१ मंद भागणि मौ सारसी, राज छंलै लीराय। कोइक पुर की कांमणी, रखै ली विलमाय। —पनां

उ०—२ पलकां रै ऊपर पग घर श्राजौ, तौ हिवड़ा रै श्रासण श्राप विराजौ। कहौ जी! प्रभूजी! थांनै किण विलमाया, तौ दासी रै महलां विलंब सूं श्राया। —गी. रा.

उ०—३ वागां में घूमण गयौ म्हारौ रावतियौ सरदार, वागां मांयली कोयल म्हारौ लियौ छै भंवर विलमाय, दासी, कण विलमायौ श्रै, रावत नहीं श्रायौ श्रब तक बारणैं। —लो. गी.

३ धैर्य देना, धीरज बंधवाना।

४ फुसलाना, बहकाना।

उ०—मालवणी ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पिण ढोलोजी रहै नहीं। ताहरां मालवणी कहै। —ढो. मा.

५ देरी लगाना, विलम्ब करना।

६ रोकना, ठहराना।

उ०—१ तद श्रोळंगुवा बोलिश्रा—भुजनगर रौ राजा रावळ जालम, बडौ पातसाह. तिण रांणी रा चाकर छां घरां तौ कांई कमांणा न छै, पण दातारां नै देखण नै मुलकगिरी करता फिरां छां। सो बरस श्रेक हुवौ, महाराज विलमाय राखिया। —पलक दरियाव री वात

उ०—तद खींवौ ऊठ घोड़ै सवार हुवौ। सूरेजी नूं कहियौ—थे काढौ, साथ माफक छै, हूं इहां नूं विलमायस्यूं। तद सूरैजी कही—हमें काढियां किसी गत छै। —सूरे खींवै कांधळोत री बात

उ०—३ श्रोठक नूं वित सांपियौ सौ भगायौ श्रौर कही जै हूं बाहर नूं विलमाऊ छूं। —सुन्दरदास भाटी बीकंपुरी री वारता

विलमाणहार, हारौ (हारी), विलमाणियौ—वि०।

विलमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विलमाईजणौ, विलमाईजबौ—कर्म वा०।

बिरमाणौ, बिरमाबौ, बिरमावणौ, बिरमावबौ, बिलमाणौ, बिलमाबौ, बिलमावणौ बिलमावबौ, बिरमाणौ, विरमाबौ, विरमावणौ, विरमावबौ, विलमावणौ, विलमावबौ, विलम्माणौ, विलम्माबौ, विलम्मावणो, विलम्मावबौ—रू० भे०।

विलमायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बातें करने हेतु प्रवृत्त किया हुश्रा, बातों में लगाया हुश्रा. २ मोहित किया हुश्रा, लुभाया हुश्रा, मोहा हुश्रा. ३ धैर्य दिया हुश्रा, धीरज बंधाया हुश्रा. ४ फुसलाया, हुश्रा बहकाया हुश्रा. ५ देरी लगाया हुश्रा, विलम्ब किया हुश्रा. ६ रोका हुश्रा, ठहराया हुश्रा.

(स्त्री. विलमायोड़ी)

विलमावणो, विलमावबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पांणी पी-पी जापौ काढ्यौ, हियै दूध री सूखी धार। टाबर रोयौ भूखां मरतौ, मन विलमावण लागी नार। —चेतमांनखौ

उ०—२ "मेह-मांमौ म्हांनै कांई देसी, दादी।"
"लाडू।"

मळै ?"

"दूध, दही, रमतिया, गैणा ।"

"साचै ई, दादी ।"

"हां, बेटा ।"

"नहीं तूं बिलमावै है ।" —वरसगांठ

उ०—३ तद बहुवां सारी मुजरो कर बोहड़ी, डेरै आई । आय सारी जणी एकठी बैस कहण लागी—"आपां कुंवरजी नूं किण भांत विलमावस्यां, वात विसारै घातस्यां ?" —कुंवरसी सांखला री वारता

विलमावणहार, हारौ (हारी), विलमावणियौ—वि० ।

बिलमाविग्रोड़ौ, विलमावियोड़ौ, विलमाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मिलमावीजणौ, विलमावीजबौ—कर्म वा० ।

विलमाविंयोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलमाविंयोड़ी)

विलमियोड़ौ–भू का. कृ.—१ प्रेमाशक्त हुवा हुआ. २ भोग-विलास में रत्त हुवा हुआ. ३ कार्य में लीन हुवा हुआ. ४ कार्य में लग कर भूला हुआ. ५ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ६ ठहरा हुआ, रुका हुआ ।

७ देखो 'विलूंबियोडौ' (रू. भे.)

८ देखो 'विलंबियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलमियोड़ी)

विलम्मणौ, बिलम्मबौ—देखो 'विलमणौ, विलमबौ' (रू. भे.)

उ०—स्रोण भू में खळाकै कमूंवा मांट फूटा सा-क, उठै सूरां गैदंता विलम्मै केक आंण । घणां घावां बीच घूमै कलाळी हाट ज्यूं गौरा, ग्रेह रोसवाई उभै रचायो आरांण । —जसो आढौ

विलम्मणहार, हारौ (हारी), विलम्मणियौ—वि० ।

बिलम्मिग्रोड़ौ, विलम्मियोड़ौ, विलम्म्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलम्मीजणौ, विलम्मीजबौ—भाव वा० ।

मिलम्माणौ, विलम्माबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

विलम्माणहार, हारौ (हारी), विलम्माणियौ—वि० ।

विलम्मायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलम्माईजणौ, विलम्माईजबौ—कर्म वा० ।

विलम्मायोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलम्मायोड़ी)

विलम्मावणौ, विलम्मावबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

विलम्मावणहार, हारौ (हारी), विलम्मावणियौ—वि० ।

विलम्माविग्रोड़ौ विलम्माविंयोड़ौ, विलम्माव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलम्मावीजणौ, बिलम्मावीजबौ—कर्म वा० ।

विलम्माविंयोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलम्माविंयोड़ी)

विलम्मियोड़ौ—देखो 'विलमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलम्मियोड़ी)

विलय, विलयन–सं. पु. [सं. विलयनम्] १ पानी में पदार्थ के घुलने की क्रिया ।

२ पदार्थ के परिवर्तित रूप में दूसरे पदार्थ में मिलने की क्रिया ।

३ आत्मा का परमात्मा मे मिलन ।

४ सृष्टि का अन्त, प्रलय ।

५ मौत, मृत्यु ।

६ दो राज्यों का आपसी विलन ।

७ नाश, समाप्ती ।

उ०—आप तौ धरम करण नै लागा, करौ काया रौ निस्तारौ रे । म्हारै आंगणै पगल्या करतां पाप विलय जावै म्हारौ रे । —जयवांणी

रू. भे.—विलउ, विलै ।

विलळणौ, बिलळबौ–क्रि. ग्र. [सं. विलपनम्] १ उदास होना, खिन्न होना, बेचैन होना ।

२ व्याकुल होना, दुःखी होना ।

३ विलाप करना, रोना ।

उ०—पंथी हाथ संदेसड़उ, धण विलळंती देह । पग सूं काढइ लीहटी, उर आंसुआं भरेह । —ढो. मा.

विलळणहार, हारौ (हारी), विलळणियौ—वि० ।

विलळिग्रोड़ौ, बिलळियोडौ, विलळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलळीजणौ, विलळीजबौ—भाव वा० ।

विलळाणौ, विलळाबौ–क्रि. ग्र. [सं. विलापनम्] १ उदास होना, व्याकुल होना, खिन्न होना ।

२ व्यथित होना, दुःखी होना ।

३ विलाप करना, रोना ।

उ०—छांटौ पांणी कुमकुमइं, वीभण वीञ्झ्या वाइ । हुई सचेती माळवी, प्री आगळि विलळाइ । —ढो. मा.

४ समाप्त होना, नाश होना, मिटना ।

विलळाणहार, हारौ (हारी), विलळाणियौ—वि० ।

विलळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलळाईजणौ, विलळाईजबौ—भाव वा० ।

बिलळाणौ, विलळाबौ, बिलळावणौ, बिलळावबौ, विलळाणौ, विलळाबौ, विलळावणौ, विलळावबौ, विललाणौ, विललावबौ —रू० भे० ।

बिललाणौ, बिललाबौ—देखो 'बिलळाणौ, बिलळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तोरणथी रथ फेरि चलै रथ फेरि चलै दोख पसु दै जात। प्यारउ नेहु मनाई, मुगति वधू मन मइं वसी, मन मइं वसी हमहि रहै बिललात। —स. कु.

उ०—२ जोड़ जादवां तणी सोहती सूल ए, देखतां देखतां हुय गई धूल ए। गाढ नै जोम हुं तो घट मांय ए, रिद्धि थोड़ा में गई बिललाय है। —जयवांणी

बिललाणहार, हारौ (हारी), बिललाणियौ—वि०।

बिललायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिललाईजणौ, बिललाईजबौ—भाव वा०।

बिलळाप—देखो 'बिलाप' (रू. भे.)

बिलळापणौ, बिलळापबौ—देखो 'बिलापणौ, बिलापबौ' (रू. भे.)

बिलळापणहार, हारौ (हारी), बिलळापणियौ—वि०।

बिलळापिओड़ौ, बिलळापियोड़ौ, बिलळाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलळापीजणौ, बिलळापीजबौ—भाव वा०।

बिलळापियोड़ौ—देखो 'बिलापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलळापियोड़ी)

बिलळायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ उदास हुवा हुआ, व्याकुल हुवा हुआ, खिन्न हुवा हुआ. २ व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ. ४ समाप्त हुवा हुआ, नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री. बिलळायोड़ी)

बिललायोड़ौ—देखो 'बिलळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिललायोड़ी)

बिलळावणौ, बिलळावबौ—देखो 'बिलळाणौ, बिलळाबौ' (रू. भे.)

उ०—बाळ रहै **बिलळावता**, 'पातल' धाक प्रताप। मन जरमनां कमंध रौ, आठूं पौहर अलाप। —किसोरदांन बारहठ

बिलळावणहार, हारौ (हारी), बिलळावणियौ—वि०।

बिलळाविओड़ौ, बिलळावियोड़ौ, बिलळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलळावीजणौ, बिलळावीजबौ—भाव वा०।

बिललावणौ, बिललावबौ—देखो 'बिलळाणौ, बिलळाबौ' (रू. भे.)

उ०—मैं तौ जांणी ए काची माया, **बिललावै** जिम बादल छाया। ऐसी जांणी कहौ कुण रीझै, मोनै धरम तणौ मारग प्रेमौ। —जयवांणी

बिललावणहार, हारौ (हारी), बिललावणियौ—वि०।

बिललाविओड़ौ, बिललावियोड़ौ, बिललाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिललावीजणौ, बिललावीजबौ—भाव वा०।

बिलळावियोड़ौ—देखो 'बिलळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिलळावियोड़ी)

बिललावियोड़ौ—देखो 'बिलळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिललावियोड़ी)

बिलळौ—देखो 'बिलळौ' (रू. भे.)

उ०—१ हमेसां री भांत अेक दिन भळै दोनां में राड़ पजगी। साव **बिलळी** राड़। बिणियांणी कह्यौ—म्राड बिना म्हारौ गळौ अडोळौ लागै, थैं सोनार रै घरै जाय इण वींटी री म्राड गड़ायलौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ थांरै कैणा मुजब कलम री बात तौ व्हैगी साच अर जबांन अर हाथरी बात व्हैगी झूठ। किणी दूजा रै मूंडागै अेड़ी **बिलळी** बात करज्यौ मती, लोग हसैला। —फुलवाड़ी

उ०—३ गोफणियौ सूंसावती वा मोसा सुर में बोली भाटियां सूं हाल थांरौ पांनौ नीं पड़ियौ दीसै, इणी खातर अेड़ी **बिलळी** बात करी। —फुलवाड़ी

उ०—४ सेठां रै मूंडा सांम्ही देख कैवण लागा—सेठां, इत्ता समझदार होय थैं अेड़ी **बिलळी** बात कीकर करी। थांरै कीं नीं बच्यौ तौ कांई व्है, राज रौ खजांनौ तौ हाल भरयौ है। —फुलवाड़ी

(स्त्री बिलळी)

बिलवणौ, बिलवबौ—क्रि. अ.—१ उदास होना, खिन्नचित होना, बेचैन होना।

२ व्याकुल होना, दुःखी होना, व्यथित होना।

उ०—१ पीहर तौ परत है रहिया, प्रीतम विरहागनि दहिया। प्रमदा इणिपरि **बिलवंती**, दुख रोई राति गलंती। —स्रीपाल रास

उ०—२ इम **बिलवंती सुंदरी**, रोवंती न रहाय। धवल अधरमी तिण समै, भासै पासै आय। —स्रीपाल रास

३ विलाप करना, रोना।

उ०—१ करि मन धीर करार, **बिलवै** कांइ विरही थयौ। सयणै न लही सार, जावण दै परहा 'जसा'। —जसराज

उ०—२ **बिलवइ बै** सती कीजइ कंकण भंग। उछइ नीरि जिम माछली तिम विरह दहइ अम्ह अंग। **बिलवई बै** सती। —कां. दे. प्र.

उ०—३ अन्न दिवसि बंभणु सकुटंब, रल जिम **बिलवई** पाडइ बूंब। पूछइ भीमु करी एकंतु., आविउं दूखु किसुं अचिंतु। —सालिभद्र सूरि

४ निर्भर होना, आश्रित होना ।

उ०—४ जनहरिया उंन देसड़ै, वारै मास वसंत । सदा फलंगी विनसती, विलव्या जीव निचंत । —अनुभववांणी

५ पकड़ना, ग्रहण करना ।

उ०—केईक पांनां फूलड़ां, केईक विलव्या डाळ । हरिया मूळ विलंबिया, फळ पाया असराळ —अनुभववांणी

विलवणहार, हारौ (हारी), विलवणियौ—वि० ।

विलविग्रोड़ौ, विलवियोड़ौ, विलव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलवीजणौ, विलवीजबौ—भाव वा० ।

विळवळणौ, विळवळबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ (रू. भे.)

उ०—खिण रोवै खिण विळवळै मारु······मिट । वळि घण दीसै नाह विण, घण विण नाह म दिठ । —ढो. मा.

विळवळणहार, हारौ (हारी), विळवळणियौ—वि० ।

विळवळीग्रोड़ौ, वळवळीयोड़ौ, विळवळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विळवळीजणौ, विळवळीजबौ—भाव वा० ।

विलवलणौ, विलवलबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

उ०—जांण्यं अ.ड़ड मांडस्यइ जी रे जी वीरजी गौतम लेस्यइ केवल भाग रे । विलवलतां, मूंकी गयउ जी, रे जी, वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे । —स. कु.

विलवलणहार, हारौ (हारी), विलवलणियौ—वि० ।

विलवलिग्रोड़ौ, विलवलियोड़ौ, विलवल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलवलीजणौ, विलवलीजबौ—भाव वा० ।

विलवळियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विलवळियोड़ी)

विलवलियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलवलियोड़ी)

विलवावणी-स. स्त्री.—छिपकली की जाति का एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष ।

रू. भे.—विलवांमणी ।

विलवियोड़ौ-भू. का: कृ.—१ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री. विलवियोड़ी)

विल-विल—देखो 'बिल बिल' (रू. भे.)

उ०—१ माता पिता झुरता रहघा, वलि बांधवा नी जोड़ रे । वाल त्रिया विलविल करै, तै तो गयोज ऊभा छोड़ रे । —जयवांणी

उ०—२ अचेतन थई देवकीजी. कुरड़ै सा असराल । हीन दीन विलविल करै जी, दोहली पेट री झाल । —जयवांणी

विलविळणौ, विलविळबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वउळावू सगळा विलविळइ, ढोलउ किउंही पाछउ वळइ । साथी मारू दागण-भगी, घणूं कहइ पणि न रहइ धणी । —ढो. मा.

उ०—२ भाई सुत रांणी विलविळइ, हाथ झाली कहइ तेह गहिला राजा । एक पारेवइ नइ कारणइ, स्यूं कापउ छउ देह गहिला राजा । —स. कु.

उ०—३ स्रावण मास में विरहणि जांमनी जांम न जात, सजि आडबर जंबर दांमिणी मिलै वरसात । मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दीध निरास, विलविळै राजुल आंखीय भरि भरि नाखी निरास । —ध. व. ग्रं.

उ०—४ मात पिता पाल्या घणा रे लाल, एतो रह्या नी लीगार हो, भविक जन । नारयां विलविलती रही रे लाल, नहीं आंण्यो मोह ति वार हो, भविक जन । —जयवांणी

विलविळणहार. हारौ (हारी), विलविळणियौ—वि० ।

विलविळिग्रोड़ौ, विलविळियोड़ौ, विलविळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलविळीजणौ, विलविळीजबौ—भाव वा० ।

विळविलाट, बिलविलाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू. भे.)

विलविलाणौ, विलविलाबौ—१ देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

विलविलाणहार, हारौ (हारी), विलविलाणियौ—वि० ।

विलविलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलविलाईजणौ, विलविलाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलविलायोड़ौ—१ देखो 'बिलबिलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलविलायोड़ी)

विलबिलावणौ, विलविलावबौ—देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

विलविलावणहार, हारौ (हारी), बिलबिलावणियौ—वि० ।

विलविलाविग्रोड़ौ, विलविलावियोड़ौ, विलविलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलविलावीजणौ, विलविलावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलविलावियोड़ौ—१ देखो बिलबिलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलविलायोड़ी)

बिलविलियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. विलविलियोड़ी)

विलवांमणी—देखो 'विलवावणी' (रू. भे.)

बिलसण, विलसणौ–वि.—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता।

२ आमोद-प्रमोद करने वाला।

३ भोग-विलास करने वाला।

४ दान देने वाला, दातार।

उ०—१ वड पह बडुआर भुजि कुळि भार, धर सिणगार तपै लखधीर। **विलसण** गज वाज कुंअर सकाज, वसधा राज करै वर वीर। —ल. पि.

उ०—२ **विलसण** गज वाजि निवाजण खट व्रंन, काइम राज अजाद सकाज। घर ओपम प्रतपै पाटोधर 'लखपति' कुंअर भुजै कुळ लाज। —ल. पि.

सं. पु.—दांन। (अ. मा.; ह. नां. मा.)

विलसणौ, विलसबौ–क्रि. अ.—१ शोभा पाना, शोभित होना।

उ०—म्हारै पती जांणै कोई आळस खुद देह धारी एं समें सुभावी कौ हीज **विलसतौ** सोभतौ होवै जिसौ है पण सिंधुराग जुद्ध री राग सुणतांई तौ सौ गुणौ अंग फूल पौरस वध जाय अनें सरीर बगतर में ही मावै नहीं। —वी. स. टी.

२ कलंकित होना, कलंक लगना।

क्रि. स.—१ विलास करना, आनन्द मनाना।

उ०—१ राति दिवस रंगइं रमइ, **विलसइ** नवरस भोग। जोड़ी सारीखी जुड़ी, केसव तणइ संजोग। —ढो. मा.

उ०—२ प्रति दिन विलास नवकोटपति, 'अभैसाह' **विलसै** इसा। चाहै धनेख निरखै चरस, इंद्र सराहै एरसा। —रा. रू.

उ०—३ कवी कहै है कि—नाग हाथी सोभागवांनां नें दांम रुपिय्या देण सूं मुसकळ हाथै आवै वे हाथी वीर पुरख विनां दांमां विनां रुपिया दीधां दुसमणां सुं खोस लेहै नें **विलसै** सुख लेवै है। —वी. स. टी.

उ०—४ मुगति मांहै बेहु मिल्या रे लाल, **विलसै** सुख वरदाय है सहेली। प्रणमैं पंडित धरमसी रे लाल, नमतां नव निधि थाय है सहेली। —ध. व. ग्रं.

२ उपभोग करना, भोगना।

उ०—१ अम्रत भोजन रांम रस, काहे न **विलसै** खाइ। काळ विचारा क्या करै, रम रम रांम समाइ। —दादूबांणी

उ०—२ वित **विलसण** री वार, नर सठ वित विलसै नहीं। जावै बीत जियार, जेहल पछतावै जिकै। —बां. दा.

उ०—३ **विलसी** धन कोडी तै बात टली, तजी नारी तणी संगति सगली। परभव दुरगति वेदन दुहिली, बोलइ मत कोसा तै बात वलि। —स. कु.

३ आमोद-प्रमोद करना।

उ०—धाइं धसइं ति उधसइं, **विलसइं** हसइं अबाहु। खधि चडइ खंधागली आकली न सकइं नाहु। —जयसेखर सूरि

४ दान देना।

उ०—बास स्रीया **विलसंत** न विरचें, सुरतर सुपह बिन्है सारीक। सोरमतरि अहि वंस सुखी सहि, मांगण सुखी कन्हीं मछरीक। —नांदण बारहठ

५ भोग करना, संभोग करना, मैथुन करना।

उ०—१ स्रावण हास्य रसइ करी, **विलसउ** प्रीतम प्रेमइ जी। योगी भोगी नइ घरै, आवण लागा केमइ जी। —वि .कु.

उ०—२ मंत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक रंजण सुलक्खण, पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिण्णि, नारि **विलसइ** विअक्खणि। —हीराणंद सूरि

उ०—३ पदमणी परिमल पांम नै, भोगी भ्रमर नाह! सुख **विलसौ** मोसुं बालहा! लीजै-जोवन-लाह। —जयबांणी

उ०—४ वर **विलसइं** अलवेसर केसर हेठि सुवेस, अघ पूगइं ऊतरायणि रायणि फलिय असेस। —जयसेखर सूरि

६ उत्सव मनाना।

उ०—१ जिणि जगि जीतउ समरमि अमर सिरोमणि कांमु, **विलसइ** सिद्ध सयंबर संवरगुणि अभिरांमु। निरुपम निपुण निरंजन रंजन जनमन चारु, पांमीय सुह गुरु आइसु गाइसु नेमि कुमारु। —जयसेखर सूरि

उ०—२ दोरइ बद्धइ सूयडउ छूटइ महतउ होइ. इण परि **विलसइ** विवह परि सुद्धि न जांणइ कोइ। —हीराणंद सूरि

विलसणहार, हारौ (हारी), **विलसणियौ**—वि०।

विलसिओड़ौ, विलसियोड़ौ, विलस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विलसीजणौ, विलसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बलसणौ, बलसबौ, बिलसणौ, बिलसबौ, बेलसणौ, बेलसबौ, वळसणौ, वळसबौ, वीलसणौ, वीलसबौ—रू० भे०।

विलसाणौ, विलसाबौ–क्रि. स. [विलसणौ क्रिया का प्रे. रू.] १ शोभित करना, शोभायमान करना।

२ कलंकित करना, कलंक लगाना।

३ विलास करना, आनन्दित करना।

उ०—पैंसठ भोम पोलां ऊपरै, तेतीस नै भोम नै मांय हु-भवियण।
सिंहासन सक्र इंद्र नौ, जीव सुख बिलसाय हो-भवियण।
—जयवांणी

४ उपभोग या भोग कराना।

५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित करना।

६ दान दिलाना।

७ संभोग करने के लिए प्रेरित करना, मैथुन करने के लिए प्रेरित करना।

बिलसाणहार, हारौ (हारी), **बिलसाणियौ**—वि०।

बिलसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलसाईजणौ, बिलसाईजबौ—कर्म वा०।

बिलसाणौ, बिलसावौ, बलसाड़णौ बलसाड़बौ, बलसाणौ, बलसावौ, बलसावणौ, बलसावबौ—रू० भे०।

बिलसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभित किया हुआ, शोभायमान किया हुआ. २ कलंकित किया हुआ, कलंक लगाया हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्दित किया हुआ. ४ उपभोग या भोग कराया हुआ. ५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित किया हुआ. ६ दान दिलाया हुआ. ७ संभोग करने के लिए प्रेरित किया हुआ, मैथुन करने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. बिलसायोड़ी)

बिलसियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ. २ कलंकित हुवा हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्द मनाया हूआ. ४ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ. ५ दान दिया हुआ. ६ भोग किया हुआ, सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ. ७ आमोद-प्रमोद किया हुआ।

(स्त्री. बिलसियोड़ी)

बिला—अव्य. [अ. बिला] बिना।

बिलाइत—देखो 'बिलायत' (रू. भे.)

उ०—घणै सीतळ पांणी सूं सींचिआ थका वीभणां वाइ भांपां सूं हींफा खाइ रहीआ छै। तठै **बिलाइत** री गूंथी चटाई अमोलक बिछाइ रही छै। तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरै ढोलिआ गिलमां री बिछाति वांणि नै रही छै। —रा. सा. सं.

बिलाइति, बिलाइती—देखो 'बिलायती' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति उण बागाइत मांहै ग्रीखम रित रा **बिलाइती** वालेरा खस खांनां, ऊंची ठौड़ रा बंगळां, रावटी वालाबध रा ठांसा रा गूंथिआ भांति भांति खसखांनां वणाया छै। —रा. सा. सं.

बिलाउ—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—जिहां सिव, तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घूरहराट, न लांभइ बाट नइ घाट। लांघता दोहली छइ, चीत्रा बुरकइ, वेडि **बिलाउ** घुरकइ। —सभा

बिलाग—वि.—१ पृथक, अलग, भिन्न।

२ संलग्न, लगा हुआ।

बिलागणौ, बिलागबौ—क्रि. अ.—१ चिपकना, लिपटना।

२ पहुंचना।

३ स्पर्श होना, छूना।

उ०—१ आयौ खुरम **बिलागै** अंबरि, पूरै पारंभ है गै पक्खरि।
ऊपाडेह छरा आवंतरि, जांणे सींह विरुत्तो छप्परि।
—गु. रू. बं.

उ०—२ वाघा लै वाधियौ, बडौ ब्रहमंड **बिलागौ**। चलण हेक हरि चांपियौ, भलौ भूगोळ सभागौ —पी. ग्रं.

४ देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

बिलागणहार, हारौ (हारी), **बिलागणियौ**—वि०।

बिलागिओड़ौ, बिलागियोड़ौ, बिलाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलागीजणौ, बिलागीजबौ—भाव वा०।

बिलागणौ, **बिलागबौ**—कर्म वा०।

बिलगियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. २ पहुंचा हुआ. ३ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ।

४ देखो **'लागियोड़ौ'** (रू. भे.)

(स्त्री. बिलागियोड़ी)

बिलाणौ, बिलाबौ—क्रि. अ.—१ विलीन होना, विलय होना।

२ लोप होना, लुप्त होना।

उ०—विलावलि कौ वखत आयौ। गुणी जनां राग झिलायौ। चकवा चकवी को मिळाप। कुकडा बोलिया। जवार सीतल हुवा। हरक वाल फूलिया। रातंवर प्रगासियौ। तारा **बिलाया** चिड़चां चहकि। —पनां

३ नाश होना, मिटना।

उ०—१ कांम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खड़ग लै सबी संघारा। जड़ अरु असत् क्लेस **बिलाया**, सत् चेतन आनंद पद पाया। —स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ जड़ चेतन कूं जोय, हंस निरभै थया। तन मन गया **बिलाय**, ब्रह्म केवल रया। —स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ गुरु का सब्द सुणत ही जाग्यां, माया मोह **बिलाय** गया। स्वप्ना माथै अनंत भरम देख्या, जागत ही निज स्वरूप लया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ उत्पति थिति लय नहीं ज्यांमैं, कारण कारज **बिलांणी**।

सत् सुखरांम आतमारांमी, निरालंब निरवांणी।
—स्री सुखरांमजी महाराज

४ व्यतीत होना, बीतना।

विलाणहार, हारौ (हारी), **विलाणियौ** – वि०।

विलायोड़ौ —भू० का० कृ०।

विलाईजणौ, विलाईजबौ—भाव वा०।

विलावणौ, विलावबौ, वीलाणौ, वीलाबौ, वीलावणौ, वीलावबौ रू० भे०।

विलात—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

उ०—काबल कतल करीह, कायम चीण विलात कै। भाळै क्रोध भरीह, न्रपत 'पता' किण सिर निजर। —पाबूदांन आसियौ

विलाति, विलाती—देखो 'विलायती' (रू. भे.)

उ०—१ माभी मीर बलक्की मल्लं, मीर सैद पठ्ठांण मुगल्लं। खारी और सजोर बुखारी, धर काबली विलाति खंधारी। —रा. रू.

उ०—२ परचंड गात कच्छिय प्रगट, रेवत थट्ट विलाती रा। नव साजि किया हाजर नरां, भिड़ज नवल्ली भांति रा। —रा. रू.

उ०—३ तुरकी ताजी तुरंग, विलाती देसी विडंग। धूना चित्तांगिया धंग, खेड़ रा नीपना खंग। —गु. रू. बं.

उ०—४ विडग तुरक्की ऐराकी विलाती, मचै पाखरां रोळि है-हींस माती। सिणगारिया पीलवांणैं सुंडाळा, असमांन सांम्हा दियंता उलाळा। —गु. रू. बं.

विलाप-सं. पु. [सं.] १ उदास, व्याकुल या व्यथित होने की क्रिया। २ कष्ट, दुख, पीड़ा।

उ०—१ तिण सगतसिंह जी मार रांणाजी नै हेलौ पाड़ कयौ घोड़ौ तीनां पगां है तद देख जीण उतारतां ही घोड़ौ छूटौ। रांणौजी महा विलाप कियौ। सत्तू (सक्तिसिंह) भाई उपकार कर आपरौ घोड़ौ दियौ। —वीं. स. टी.

३ रुदन, क्रदन।

उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या — यूं न करणौ। रोगादिक ऊपनां गाढौ रहणौ। ज्यूं किण हि रै माथै दैणौ हौ। देबारा परिणाम नहीं हुंता। पिण पेलै जबरी सूं लिया। जद मुरख तौ विलाप करै। —भि. द्र.

वि.—तप्त, गर्म।* (डिं. को.)

रू. भे.—बिलाप, विलालाप, विलापात, विलोपात।

अल्पा.,—विलापातौ।

विलापणौ, विलापबौ–क्रि. अ.—१ उदास होना, बेचैन होना, खिन्न-चित्त होना।

२ व्याकुल होना, व्यथित होना, दुःखी होना।

३ रुदन करना, रोना।

विलापणहार, हारौ (हारी); **विलापणियौ** – वि०।

विलापिओड़ौ, विलापियोड़ौ, विलाप्योड़ौ – भू० का० कृ०।

विलापीजणौ, विलापीजबौ—भाव वा०।

बिलापणौ, बिलापबौ—रू० भे०।

विलापात – देखो 'विलाप' (रू. भे.)

उ०—१ इतरा विलापात करण लागी तद सहेल्यां बोली—इक म्हां मन अचरिज भयौ, सांभळ बात स प्रेम। त्यां अण दीठां सज्जणां, क्यूकर लागौ प्रेम। —ढो. मा.

उ०—२ मारवणी वांसै इण भांत विलापात करै छै ढाढी उहड सोलंखी नखा चालिया हुंता सो कितरा हेक दिनां मैं नळवरगढ जाय पहुंता। —ढो. मा.

उ०—३ केतलै एक कालै प्रदेश में भरतार काल कीधो। सुणनै घरम में न समझै तै तो रोवै विलापात करै। समझै तै रोवै नहीं समता धारनै बैठी। —भि. द्र.

विलापातौ—देखो 'विलाप' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कुण वीरौ कुण बहनड़ी रे, जोयजौ मोहरी बात। इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै बिलापातौ रे। —जयवांणी

विलापियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ उदास हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री. विलापियोड़ी)

विलायत–सं. पु. [अ.] १ दूसरा या पराया देश, विदेश।

उ०—हूं किसौ विलायत वसै हौ? जको थै ओजूं ताई ठा ही नहीं करयौ। हूं किसा हाथी-घोड़ा थोड़ा ही मांगै हौ? अर जै मांगू तौ ही किसौ बंदै सूं आछौ हुवै। —दसदोख

२ इंग्लैण्ड।

उ०—१ नांव किसनजी, कोटै धणी रै आगै रैवै। एडीकंप अर पराईवेट वाजै। देस रा दौरा पूरा करावै, आबू अर बिलायत सागै जावै। हरखां-कोडां हंसै-कढै, गाळचां खा-खा ऊंचा चढै। —दसदोख

उ०—२ व्रज दुरग खिसारा तबळ सारा गौरां बजै, दहल पुड़ रसा रा हल हमल दुंद। लंक दिस प्रभंजण सारा वेग लागा, विलायत दिसा रा उडै घणां व्रंद। —चैनकरण सांदू

उ०—३ उतन विलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा। यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा। —कविराजा बांकीदास

उ०—४ मज दूजा 'अभसाह', महि रज मंडळ माचतां । रूड़ां लीधा राह, विकटा दूर विलायतां । —ग्रावूदांन आसियौ

३ दूरस्त यूरोपीय देश ।

४ ईरान, तुर्किस्तान ।

रू. भे.—बलायत, बिलायत, बिल्लायत, वलायत, विलाइत, विलात, विल्यायत, विल्लायत ।

विलायति, विलायती–वि.—दूसरे देश का, विदेशी ।

२ इंग्लैण्ड का ।

३ यूरोप का, यूरोपीय ।

उ०—१ सू छुरी किण भांत री छै ? पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्यांनां मांहां काढजै छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ सु तरवाररचां किण भांत री छै ? सीरोही री नीपनी, वै आंगळ बाढ भेळिया थकां जनैव मगरेब पुड़तकाळ सेफ विलायती भुजरी विरांसुदुरो हवसांनी फिरंगी । —रा. सा. सं.

४ ईरान का, तुर्किस्तान का ।

उ०—ग्रटक पार मो अगै, इळा नहि नमै **विलायति** । जवन वसै जिण मांहि, आठ मगरूरा ग्रसपति । —सू. प्र.

रू. भे.—बिलातिय, बिलायती, बिलाइति, बिलाइती, बिलाति, विलाती ।

विलायतीकद्दू–सं. पु.—तरकारी के काम आने वाला एक विशेप प्रकार का कद्दू ।

विलायतीकांसनी–स. स्त्री.—एक प्रकार की कांसनी, जिसकी पत्तियां दवा के काम आती है ।

विलायतीकीकर–सं. पु—हिमालय में पांच हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाने वाला पहाड़ी कीकर ।

विलायतीछछूंदर–सं. पु.—इंग्लैण्ड के पश्चिमी प्रदेशों में बहुतायत से पाया जाने वाला एक प्रकार का छछूंदर ।

विलायतीनील–सं. पु.—चीन से आने वाला एक विशेष प्रकार का नीला रंग ।

विलायतीप्याज–सं. पु.—विना गांठ का एक प्रकार का प्याज जिसमें केवल गूदेदार जड़ होती है ।

विलायतीबैंगन–सं. पु.—१ एक प्रकार का बेंगन विशेष जिसका पौधा यूरोप से आया हुआ कहा जाता है ।

२ टमाटर ।

विलायतीमेंहदी–सं. स्त्री.—मेंहदी की जाति का एक प्रकार का पौधा विशेष ।

विलायतीलसन, विलायतीलसुन, विलायतीलहसन, विलायतीलहसुन–सं. पु.—मसाले के काम आने वाला एक प्रकार का लहसुन ।

विलायतीसिरिस–सं. पु.—विदेश से आया हुआ एक प्रकार का सिरिस आजकल यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है ।

विलायतीसेम–सं. स्त्री.—एक प्रकार की सेम जिसकी फलियां साधारण सेम से कुछ बड़ी होती है ।

विलायन–सं. पु. [सं.] प्राचीन भारत में पाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेप ।

वि. वि.—उक्त अस्त्र के प्रयोग से शत्रु सेना को विश्राम करने हेतु प्रवृत्त किया जाता था ।

विलायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ विलीन हुवा हुआ, विलय हुवा हुआ. २ लोप हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ. ३ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ४ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ ।
(स्त्री. विलायोड़ी)

विलालौ–वि. [स्त्री. विलाली] १ रसिक, रसिया ।

उ०—१ पदमण बोली पीवनां, बिरथा कीदो वाद । छकिया मद री छाक रो समझी नहीं सवाद । हरख जलालो चित हुवै, पीदां प्यालौ नेम । पीव **विलालौ** पिलंग परि, वालो लागै वेस । —पनां

उ०—२ दारू रो प्यालो भलो दुपट्टै रो झालो । मारवण तौ पतळी भली, मारू बड़ो **विलालौ** । पीग्रोनी दारुड़ी । —लो. गी.

२ उदार, दातार, दानशील ।

उ०—१ ताकवां निसाला खुलै भेटियां बिलंद ताळा, **विलाला** नरिंद इंद सा रूप वाखांण । पांणां थारा ग्रमरेस' नचीतौ चीतोड़-पती, खांडै थारै दुचीतौ छ खडी खुरसांण । —ग्रमरसिंघ सिसोदिया रौ गीत

उ०—२ प्रगट धूपटे दरब ग्रठ पहर ग्रणपार रे, बडम कुळ भार रे भुजां लीधां । **विलाला** खड़ै नित तुरंग इण बार रे, माग आचार हुवा 'माधा' । —मेघजी महड़ू

३ अद्भुत, विचित्र, विलक्षण ।

उ०—करुं बखांण घणा हूं कासूं, जीव कियौ सपतास जिसौ । लाखवरीस **विलालौ** लाखो. आयस कीधो रीझ इसौ । —नवलजी लाळस

४ छैल-छबीला ।

उ०—खेलण दौ गणगौर भंवर म्हांनै पूजण दौ गणगौर । हो म्हारी सइयां जोवै बाट, **विलाला** म्हांनै खेलण दो गणगौर । —लो. गी.

५ युद्धोन्मत्त, मस्त ।

उ०—१ कमरां कस आयौ रण काळौ, बांधण मांथै मोड़

विलालौ। भुजडंड पकड़ ऊठियौ भालौ, लेवा भचक रुठियौ लालौ। —बरजूबाई

उ०—२ भाला हथां जोध भीमांणी, वाल्हा सुरपुरवासी। पांत विराज विलाला पातां, प्याला मद कुण पासी।
—महारांणा जवांनसिंहजी रौ गीत

रू. भे.—बिलालौ, वलालौ।

विलाव—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—तिकौ तळाब किण भांतरौ छै। राती वरडी रौ। पांडरौ नीर। पवन रौ मारियौ फीण ग्राछटतौ थकौ झोला खाय रह्यौ छै। लहरां लियै छै। ग्रथग डोव छै। कड़ियां सुंवै पांणी में पैठां पगांरा नख भाखै छै। दूध रै भोळावै विलाव वासीजै छै।
—रा. सा. सं.

विलावणौ, विलावबौ—देखो 'बिलाणौ, बिलाबौ' (रू. भे.(

उ०—१ वनवासौ चवदें वरसां रौ, वासां संग विलावै। बीतै पलही कलप बराबर जिकै दिवस किमि जावै। रे सुध ग्रावै, रे सुध ग्रावै, किण विध कीजिये। —र. रू.

उ०—२ दिया 'सूजा' तणै पेड तोपां दिसा, सफीलां तणा नह लिया सरणा। बीजलां रीठ पावै सझा विलावै, विजा करपुर करपूर-वरणा। —कविराजा बांकीदास

विलावणहार, हारौ (हारी), विलावणियौ—वि०।

विलाविग्रोड़ौ, विलावियोड़ौ, विलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विलावीजणौ, विलावीजबौ—भाव वा०।

विलावळ, विलावळि, विलावळी—सं. पु.—१ एक राग विशेष जो केदार ग्रौर कल्याण के योग से बनता है यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है। यह सवेरे के समय गाया जाता है [संगीत]

उ०—१ नचंत केक रंत राग, विम्मळं विलावळं। करंत गोख जोख केक, हेम मैं झळाहळं। —सू. प्र.

उ०—२ रात तौ इण रंग में विदित्त हुई। इतरै परभात हुवौ। भैरु विभास। विलावळि कौ वखत ग्रायौ। गुणी जनां राग झिलायौ। —पनां

२ हिंडोल राग की स्त्री एक रागिनी। (संगीत)

रू. भे.—बिलावळ, वेळावळ, वेळावळ।

विलाविग्रा, विलाविया—सं. पु.—एक प्रकार का बस्त्र विशेष।

उ०—पाटंवर नीलंबर जरकसो रा वणाव कीजै छै। ग्राडिग्रां फणिग्रां मुखमली खासां विलाविग्रां थकां जालौरी सांठै, खुरासांणी भळकै सांतिग्रै ऊठ सौदागर रै घोड़ै चालविग्रै पठांण ग्ररड़ै ग्रायै चींचड़िग्रै रूठै, गांम धणी सा लोचनां किग्रां, बाळि वाळि मोतिग्रा ठविग्रां थकां,…। —रा. सा. सं.

विलावियोड़ौ—देखो 'विलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलावियोड़ी)

विलास—सं. पु. [सं. विलास] १ क्रीड़ा, खेल।

उ०—१ न्रप सुख ग्रीखम निरखतां, वधि बरसात विलास। मातौ कादंब मेदनी, ग्रायौ भाद्रव मास। —रा. रू.

उ०—२ सबळा खळ सूं सांधियां, निबळ जाय खळ नास। मूंसौ मेळ मंजार कर, वचियौ विपत विलास —बां. दा.

२ ग्रनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा, ग्रामोद-प्रमोद।

उ०—१ यौं नरपति पुर ग्रापरै, नित प्रति महल निवास। सुख ग्रनुराग छ राग सुख, बाग तड़ाग विलास। —रा. रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति रितिराज बसंत वैसाख मास रा मंगळाचार विमांह रा सुख विलास करतां सरदरित ग्राई छै। ग्रासोज मास ग्राइ संप्रापती हुग्रै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ इण भांत सुख-सेजै पौढिग्रा। राति विहांणी। प्रभात हुवौ छै। रातौ का कांम उजागर नैण घुळि नै रहिया छै। कपोळै कांम सुहाग री छाप लागी छै। खुलि नै रही छै। इण भांत सुख विलास करतां छै रित बारै मांस मांणीजै छै।
—रा. सा. सं.

३ शोभा, सुन्दरता, मनोहरता।

उ०—वळवळ कंठ विलास, हार भुजंग गंग सिर खळहळ।
—र. ज. प्र.

४ स्त्रियोचित हाव-भाव नाज-नखरा ग्रादि जो काम-वासना को उत्तेजित करने वाली होती है।

उ०—वर नारि नेत्र निज वदन विलासा, जांणियौ ग्रंतहकरण जई। हसि हसि भ्रूहै हेक हेक हुइ, ग्रह बाहरि सहचरी गई।
—वेलि.

५ ग्रानन्द, प्रसन्नता, हर्ष।

६ कौंध, चमक।

७ मनोरंजन, मनोविनोद।

उ०—१ सु ग्रागली सखिग्रां नूं जावती लखै नहीं छै। लखाव नहीं पड़तौ छै। तिणि सौवैरे डोरै लगी जाए छै। ऊजळी ठकुरांणी ऊजळा ठाकुर प्रीतम सुं जाइ जाइ मिळै छै। इण भांति सरद चांदणी रंग विलास मांणीजै छै। —रा. सा. सं.

८ सयोग श्रृंगार का एक भाव विशेष, जिसमें नायक के सामने नायिका उसके मन में ग्रपने प्रति ग्रनुराग या प्रेम उत्पन्न करने की क्रियाएं या चेस्टाएं करती है। (साहित्य)

९ भोग विलास, विषय भोग, मैथुन।

उ०—१ बोलै बंधव रूपसी, बोलै मोकमदास । तज अवसांण विलास पद को मांनै ध्रम जास । —रा. रू.

उ०—२ निस वसियौ सुख ग्रेह निज, आवै रमणि विलास । अरज करै मुख औरतां, हित रिति गरम हुलास । —रा. रू.

उ०—३ कुसमित कहतां फूली । कुसमायुध कहतां कांम देवतै कै उदै करि केलि विलास खेल तै कै अरथि जांहका भरतार घरै छै । सु-तौ वसंत विखै फूली छै । —वेलि टी.

१० सुख भोग, आनन्द भोग ।

उ०—१ स्रीनरनाथ विलास सूं पूरण कियौ वसंत । देखैवा दिल्ली नयर, भायौ कूच निभ्रंत । —रा. रू.

उ०—२ ध्रम बंभ लघु भ्रात हेत धरि. कासीराज तेणि दीधौ करि । हित देखै नृप राग हुलासी, करै विलास इंद्र जिम कासी । —सू. प्र.

उ०—३ सोरंभा सोंधा सरस, राग रग अति हास । ब्रह्मा ब्रह्मांणी सहत, निज पुर करत विलास । —गज-उद्वार

उ०—४ राजपाट सुत वित सबै, सूंदरि महल विलास । हरिया हरि सुख बाहिरौ, ज्यूं जंगळ का घास । —अनुभववांणी

११ महक, सुगंध ।

१२ एक तपस्वी जिसकी मुक्ति 'विमल ज्ञान' की प्राप्ति से हुई थी ।

१३ प्रिय वस्तु के दर्शनादि से गति, स्थिति आसन आदि की तथा मुख, नेत्रआदि के व्यापारों की विशेषता या विलक्षणता ।

१४ शिल्पक के सत्ताईस अंगों में से एक ।

रू. भे.—विलास, वेलस, बेळास, विलासा ।

अल्पा,—विलासौ, विलासु ।

विलासक–वि.—१ इधर उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, मैथुन करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, आनन्द भोग लूटने वाला ।

५ क्रीड़ा-खेल करने वाला ।

६ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा करने वाला, आमोद प्रमोद करने वाला ।

७ मनोरंजन करने वाला, मनोविनोद करने वाला ।

क्रि. वि. [अ. बिला+शक] बिना शक, बेशक, निस्संदेह ।

उ०-जै तूं अरब जा हर भांत कर हातिम नूं मारचावैतो तोनूं मोटी करूं इण पापी कही बिलासक मार आस्यूं । —नी. प्र.

विलासण–वि.—१ इधर-उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, भोग विलास करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, आनन्द भोग करने वाला, उपभोग करने वाला ।

उ०—रूप भूप रतिराज, प्रांण अगराज प्रकासण । कौरवराज घन करण, विमळ सुरराज विलासण । —सू. प्र.

५ क्रीड़ा-खेल करने वाला ।

६ अनुराग या प्रेमपूर्ण क्रीड़ा करने वाला ।

७ मनोरंजन या मनोविनोद करने वाला ।

८ देखो 'विलासी' (पु.) (रू. भे.)

विलासणौ, विलासबौ–क्रि. स. [विलाशनम्] १ क्रीड़ा करना, खेल करना ।

२ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा करना, आमोद-प्रमोद करना ।

३ काम वासना को उत्तेजित करने हेतु स्त्रियोचित हाव-भाव, नाज-नखरे करना ।

४ मनोरंजन करना, मनोविनोद करना ।

५ भोग-विलास करना, विषय भोग करना, मैथुन करना ।

उ०—तिलोतमा मैंणका सची उरवसी सरोतरि, सुरपत्ती सेवतां ईढ न धरै तिण औसरि । कंता सहित कुबेर वरण निज तरणि विलासत, सरस लेख 'अभसाह' पेखि साराह प्रकासत । —रा. रू.

६ सुख भोग करना, आनन्द भोग करना ।

क्रि. अ.—७ अनुरक्त होना, लीन होना ।

उ०—पाठ प्रबंध किताक प्रकासत, वेद पुरांण विचार विलासत । पंडत द्वीत अद्वीत प्रकासत, भासत देव जिसा दुज भासत । —जैपुर नगर री तारीफ रो गीत

८ शोभित होना, सुन्दर लगना ।

९ आनन्दित होना, हर्षित होना ।

विलासणहार, हारौ (हारी), **विलासणियौ**—वि० ।

विलासिओड़ौ, विलासियोड़ौ, विलास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलासीजणौ, विलासीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बिलासणौ, बिलासबौ—रू० भे० ।

विलासनी—देखो 'विलासिणी' (रू. भे)

उ०—तठा उपरांति करि नें राजांन सिलांमति अंतेउरी आगै चार बडारणां सहेलिआं रहै छै । अनंगमंजरी, मदनमंजरी, रतनमंजरी, पटुमजरी । तांह बडारणां सहेलिआं आगै चार पात्रां सिंगारणी खवास्यां रहै । गुणमाळा, फूलमाळा, विजैमाळा, दीपमाळा । तिकां सिंगारणी खवास्यां आगै चार विलासनी दासी रहै छै । —रा. सा. सं.

विलासा–सं स्त्री.—१ अभिलाषा, इच्छा ।

उ०—पेम पियाला पीजियै, मावा करि भरिपूर । जनहरिया पीयां पछै, विखै विलासा दूर । —अनुभववांणी

२ देखो 'विलास' (रू. भे.)

उ०—१ सखी री मन धारै बारै मासा, आंणौ वैराग उलासा। गुरु विजयहरख जस वासा, वधतै धरमसील विलासा हो लाल।
—ध. व ग्र.

उ०—२ माया भई बिडांणियां, भए बिड़ाणै लोग। जन हरीया महीं आपना, विखै बिलासा भोग। —अनुभववांणी

उ०—३ पिलग पथरणा पोढणैं, सदा सहेली सग। हरीया होसी भगति बिन, विखै बिलासा भंग। —अनुभववाणी

उ०—४ वर नारि नेत्र निज वदन बिलासा, जांणिथी अंतहकरण जई। हसि हसि भ्रू हैं हेक हेक हुई, ग्रह बाहरि सहचरी गई।
—वेलि

बिलासि—देखो 'बिलासी' (रू. भे.)

उ०—वैकंठ बिलासि अपुन्य प्रकासि अपार अपार अप्रंम परं, निरकार नरं मधुकंटक मारण विधन बिडारण केवल रूप वराह करं। धर दांठ धरं करि दैत कणं कण रे पण रांमण लंक लई दधि लोप लजं, अविगति अज हमीर समरि हरत्ता सि निरंतर, ग्राह वेह ऊग्राहि गजंधज पंख धज। —पि. प्र.

बिलासिणी, बिलासिनी—सं. स्त्री. [सं. विलासिनी] १ विलास करने वाली, कामुक, भोग विलास में अनुरक्त या लीन स्त्री।

२ देवी का विशेषण।

३ वेश्या, गनिका।

४ विक्षेप शक्ति से युक्त।

५ सुंदरी, युवा स्त्री।

६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग होता है।

रू भे.—बिलासनी।

बिलासी—वि. [सं. विलासिन्] (स्त्री. बिलासण) १ दानी, दातार।

२ सुखभोग या आनन्द भोग करने वाला।

३ क्रीडा-खेल करने वाला।

४ प्रेमपूर्ण क्रीड़ा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला।

५ मनोरंजन या मनोविनोद करने वाला।

उ०—सोभत (न) जोग मिले सुखकारी, नरपति तिकण असोभा न्यारो। रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणौ **बिलासी**। —रा. रू.

६ विषय भोग, भोग विलास या मैथुन करने वाला।

७ कामी, रसिक।

रू. भे.—बिलासण. बिलासि।

सं. पु.—१ आग, अग्नि।

२ श्री कृष्ण का नामान्तर।

३ भगवान श्रीविष्णु।

४ चान्द, चन्द्रमा।

५ सांप, सर्प।

६ शिव शंकर, महादेव।

७ कामदेव।

८ वरुण वृक्ष।

९ एक प्रकार का वर्णिक छंद विशेष जिसमें मगण तगण फिर दो मगण और अन्त में गुरु होता है तथा पांच, तीन व पांच पर यति होती है।

बिलासु—देखो 'विलास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—समुद्रविजय सिवानंदन चंदन वचन बिलासु, नेमि जिणेसर नितु नितु उन्नत महिम निवासु। —जयसेखर सूरि

बिलासौ—देखो 'विलास' (रू. भे.)

उ०—१ जांणै तै चौसठि कला, निरुपम वचन बिलासौ रे। चंद्रवदन मृगलोयणी, गय गजराज उल्हासौ रे। —वि. कु.

उ०—२ चाकर चौकीदार ज्यूं, बहुला राखै पासौ रे। कांम करावै तै कन्हा, विलसै आप बिलासौ रे। —ध. व. ग्रं.

बिलास्य—सं. पु.—तार लगा हुआ प्राचीन काल का एक बाजा।

बिलि—देखो 'वळ' (रू. भे.)

उ०—हिवइं वडां आवइ तै केहवा! बिलि मरिचनां वडां, कांजी नां वडां, घोल वडां, उडदनी दालि नां वडां. मुंगनी दालिना वडां कुलथीनी दालिनां वडां. घणै घोलणै भीनां, घणि तेलै सीनां चमत्कारियां अत्यत, मुहडि घाल्यां तुरत गलइ, घणूं स्यूं कहीइ स्वरग ना देव देवता पणि खावा नइ टलवलि। —व. स.

बिलिखित—वि. [सं.] १ लिखा हुआ।

२ खोदकर अंकित किया हुआ।

बिलिप्त—वि.—पुता हुआ, लिपा हुआ।

बिलियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—देखण लागौ यक्ष आंखड़ी आंसूं भरियां, चीतै मन कुरळाय आज आ किसड़ी बिळियां। निरख्यां अेड़ां मेघ संजोगी चचळ होवै, वांरा कांई हवाल, कांमणी कंठ न होवै? —मेघ

बिलियोड़ौ—भू. का. कृ.—आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ।
(स्त्री. बिलियोड़ी)

बिलिबिलियौ—सं. पुं.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—अथ वस्त्र, देवदूष्य चीनसुक गोजी चउडसी नीलनेत्र सचोपां पाटणियां हीरपट्ट साउला **बिलिबिलिया** नरम्म खमी उभयखरम्म वांमखरम्म वांमसऊआ मुगवनां मांगलिआं वयराग

रां हीरागरां पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट धोतपट्ट ।
—व. स.

विलीजणौ, विलीजबौ–क्रि. अ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाड़ा' रोग ग्रस्त होना।

विलीजियोड़ौ–भू. का. कृ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाड़ा' रोग ग्रस्त हूवा हुआ ।

(स्त्री. विलीजियोड़ी)

विली—देखो 'वळं' (रू. भे.)

उ०—अथ प्रव [ह] ठाभंगावसर जलकल्लोल गगनमंडल व्यापिवा लागा अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रस्य थई, विली वाउ वाइवा लागा, तलांनी माटी ऊपरि आंगाइं, दुर्गंध ऊछलिउ क्षार जलनउ छुड द्रु न लागइ, जलचर जीव आवी प्रवहणि वाजइं ।
—व. स.

विलीन–वि. [सं.] १ आपस में घुले-मिले हुए, जो वापस अलग नहीं किये जा सकें ।

२ जो गायब लुप्त, अदृष्य या ओझल हो गया हो :

३ नष्ट हुवा हुआ, नष्ट ।

४ मरा हुआ, मृत ।

विलुद्ध–वि. [सं. वि.+लुब्ध] १ मोहित, आकर्षित ।

२ लालायित ।

३ उलझा हुआ, फंसा हुआ ।

वलुद्धणौ, विलुद्धबौ—देखो 'विलूंधणौ, विलूंधबौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मंदिर मालिया, मुलकंती नेह विलुद्ध । पूरै हाथै पूजियौ, परमेस्चर मन-सुद्ध ।
—जयवांणी

विलुद्धणहार, हारौ (हारी), विलुद्धणियौ—वि० ।

विलुद्धिओड़ौ, विलुद्धियोड़ौ, विलुद्धयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलुद्धीजणौ, विलुद्धीजबौ—भाव वा० ।

विलुद्धियोड़ौ—देखो' विलूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलुद्धियोड़ी)

विलुप्त–वि. [सं.] १ जिसका नाश हो गया हो, नष्ट ।

२ जो लोप या अदृश्य हो गया हो ·

३ जो टूट फूट गया हो, नष्ट, बरबाद ।

विलुप्तायोनि–सं. पु. [सं.] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग विशेष जो कि वायुदोष के कारण होता है ।

वलूंधणौ, बिलूंधबौ–क्रि. अ.—१ झंझटों में उलझना, फंसना ।

उ०—वडो दुरगमी देस जोधै विलूंधो, सुधै अंगदं अंतरानेर सूंधो । तरै खेद होतां त्रखा देह तांणी, प्रळ वेस लाधौ नहीं पाख पांणी ।
—सू. प्र.

२ मोह में फंसना, मोहित होना, आकर्षित होना ।

उ०—१ सुरा सोरै झकोळियै, भंवर न जागै काय । प्रेम विलूंधौ भवरौ, सखि मरंतौ जाय ।
—अग्यात

उ०—२ विखियारस विखन्नेर विलूंधी, सेवै क्रपण वेनुगत सूंधी ।
—अग्यात

३ लालायित होना, लालच में फंसना ।

विलूंधणहार, हारौ (हारी), विलूंधणियौ—वि० ।

विलूंधिओड़ौ, विलूंधियोड़ौ, विलूंध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूंधीजणौ, विलूंधीजबौ—भाव वा० ।

विलूधणौ, विलूधबौ, विलुद्धणौ, बिलुद्धबौ, विलूधणौ, विलूधबौ
—रू० भे० ।

विलूंधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ झंझटों व तकलीफों में उल्झा हुआ, फंसा हुआ २ मोह में फसा हुवा, मोहित हुवा हुआ, आकर्षित हुवा हुआ. ३ लालच में फंसा हुआ, लालायित हुवा हुआ ।

(स्त्री. विलूंधियोड़ी)

विलूंधौ–वि.—१ झझटों व तकलीफों में फंसा हुआ ।

२ मोह में फंसा हुआ, मोहित ।

३ लालच में फंसा हुआ, लालायित ।

विलूंबणौ, विलूंबबौ–क्रि. अ.—१ लटकना ।

उ०—१ खींवा थूं खुरसांण, धण तेगौ तरवार रौ । मुखमल हंदै म्यांन, खंवै विलूंबू खींवजी ।
—खींवजी री बात

उ०—२ करहौ काचीं ना चरै, पाकी दिसां न जाय । अधर विलूंबी वेलड़ी, तिण नै घणौ झुराय ।
—अग्यात

२ मेघ या घनघटा आदि मंडराना, छाना, झुकना ।

उ०—कुण थांनै चाळा चाळिया, हो पनामारू जी हो, किण थांनै दीवी, रे ढोला, सीख । सीख, हौ पिया प्यारो रा ढोलाजी हौ, हां रे, सांवणियौ विलूंब्यौ रै वीकानेर ।
—लो. गी.

३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित होना ।

४ छूना, स्पर्श होना ।

५ लिपटना, चिपकना ।

६ लत्थोबत्थ होना ।

क्रि. स.—७ आलिंग करना, गले लगना. या लगाना ।

उ०—यूं करतां इतरा में तौ हुइ फजर । कूकड़ा बोलिया । वाजौ गजर । तद कंवर वाग नूं सीख कीवी । तौ पिण रतना आंखियां भरी चाळां लूंबी, गळै विलूंबी । बोलणी न आयौ, गळौ गहरायौ ।
—र. हमीर

८ रोकना, अवरुद्ध करना ।

९ देखो 'विलंबणौ, विलंबबौ' (रू. भे.)

विलूंबणहार, हारौ (हारी), विलूंबणियौ—वि० ।

विलूंबिप्रोड़ौ, विलूंबियोड़ौ विलूंब्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूंबीजणौ, विलूंबीजबौ—कर्म वा० भाव वा० ।

बलूंबणौ, बलूंबबौ, बिलुंबणौ, बिलुंबबौ, बिलूंबणौ, बिलूंबबौ, बिलूंमणौ, बिलूंमबौ, बिलमणौ, बिलमबौ, विलूंमणौ, विलूंबबौ—रू० भे० ।

विलूंबियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ लटका हुआ. २ मेघ या घनघटा आदि मंडराया हुआ, छाया हुआ, झुका हुआ. ३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित हुवा हुआ. ४ छूवा हुआ, स्पर्श हुवा हुआ. ५ लिपटा हुआ, चिपका हुआ, ६ लत्थोबत्थ हुवा हुआ. ७ आलिंगन किया हुआ, गले लगा या लगाया हुआ. ८ रोका हुआ, अवरुद्ध किया हुआ ।

९ देखो 'विलंबियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. विलंबियोड़ी)

विलूंमणौ, विलूंमबौ—देखो 'विलूंबणौ, विलूंबबौ' (रू. भे.)

उ०—विरछां बिलूंमी पिया वेलड़ी, नरां विलूंबी विलूंबी नार, होजी ढोला नार, अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ।

—लो. गी.

विलूंमणहार, हारौ (हारी), विलूंमणियौ—वि० ।

विलूंमिप्रोड़ौ, विलूंमियोड़ौ, विलूंम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूंमीजणौ, विलूंमीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलूंमियोड़ौ—देखो 'विलूंबियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलूंमियोड़ी)

विळू—देखो 'वळू' (रू. भे.)

उ०—१ ढालू वाळा धणी रै पखै नीं बंधै तौ बात रै है जठै ई मूंचौ लाग जावै । सगळा आणंद रौ मठ मर जावै । इण आणंद रौ साव लेवण सारू मतै ई जणौ जणौ ढालू वाळा मोट्यार रै विळू बंधग्यौ । —फुलवाड़ी

उ०—२ बस्ती रा सगळा मिनख थळिया रै बिळू रह्या । अर वौ हाकांधाकां गवूं अर खाखला री आधी पांती पटकायली ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ ओ तौ साचांणी दूध ई निकळियौ । जै कोई लफंगौ व्हैतौ तौ केड़ीक माहेरौ सजतौ ! आज तौ भगवांन नांमी बिळू रह्यौ । दोयती रा भाग है । —फुलवाड़ी

उ०—४ उतरतां ई पैला तौ बेटी सूं खम्माघणी करी । पछै मोहरी झाल वागोळता ऊंट री गळाई बगळ बगळ कैवण लागा-भाग बिळू व्है जद यूं व्हिया करै । —फुलवाड़ी

विलूधणौ, विलूधबौ—देखो 'विलूंधणौ, विलूंधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सांसाधरम विखादवाद, विपरीत विलूधा ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप । मनड़ौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधो रे कमल मधूप ।

—वि. कु.

उ०—३ सेठ तणौ मन मांहि उदधि मां कुमरी वसै निसदीस, विरह विलूधौ रे विसवावीस । नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस । —वि. कु.

उ०—४ तीखा लोयण, कटि करळ, उर रत्तड़ा बिबीह । ढोला, थांकी मारुई, जांणि विलूधउ सीह । —ढो. मा.

विलूधणहार, हारौ (हारी), विलूधणियौ—वि० ।

विलूधिप्रोड़ौ, विलूधियोड़ौ, विलूध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूधीजणौ, विलूधीजबौ—भाव वा० ।

विलूधियोड़ौ—देखो 'विलूंधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलूधियोड़ी)

विलूरणौ, विलूरबौ—क्रि. स.—१ नोचना ।

उ०—गुरु पूछी रे वन मांहि गयउ, काउसग्ग रह्यउ समसानौ रे जी । स्यालणी सरीर विलूरियउ, वेदना सही असमांनौ जी ।

—स. कु.

२ छीनना, झपटना ।

विलूरणहार, हारौ (हारी), विलूरणियौ—वि० ।

विलूरिप्रोड़ौ, विलूरियोड़ौ, विलूरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूरीजणौ, विलूरीजबौ—कर्म वा० ।

विलूरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नोंचा हुआ. २ छीना हुआ, झपटा हुआ ।

(स्त्री. विलूरियोड़ी)

विलेच्छ, विलेच्छु—देखो 'म्लेच्छ' ।

उ०—वीर कोडि विहु पांडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि विडारी । तु विराटन्रप भीमि ऊदालिउ, दाउ देविगु विलेच्छु सु बालिउ । —सालिसूरि

विळै—देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—१ अला बुध अवतार तूं बाप बाबा, निमौ धरम नां कीध निरबळ नियाबा । जुध घिणी जगत केणि भांति जीतौ, विळै खाफर जिसौ दइत वीतौ । —पी. ग्रं.

उ०—२ सीत परणियौ सांम, गरब दुजरांमि गमायौ । हुऔ अयोध्या हरख, विळै कोसल्या वधायौ । —पी. ग्रं.

उ०—३ अकरूर घरै आया अनंत, विळै मात पिति विळकुळै। कूबड़ी हुंति कीधी क्रिपा, माहव भगतां सां मिळै। —पी. ग्रं.

विलेप, विलेपण, बिलेपन—सं. पु. [सं. विलेपः, विलेपनं] १ लेप आदि करने की क्रिया।

उ०—१ कंचण कंकण केउर नेउर पइं भुयदंडि, चंदनि देह **विलेपनु** लेप न लागइ पिंडि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ वेणी पवित्र करिस लिखमीबर, मसतग चाढै तुलसी-मंजर। तुव इम पवित्र करिस दसरथ-तण, चरच **विलेप** करै हर चंदण। —ह. र.

२ शरीर आदि पर चुपड़ने या लगाने की वस्तु. चन्दन, केसर या अन्य सुगन्धी द्रव्य आदि।

विलेपनग्रह—सं. पु. [सं. विलेपनं+गृहं] वह स्थान जहां चन्दन आदि का लेपन किया जाता है।

उ०—मज्जनग्रह **विलेपनग्रह** प्रसाधनग्रह अलंकारग्रह आदरसग्रह अंतःपुरग्रह क्रीडाग्रह रसवतीग्रह भोजनग्रह आस्थानग्रह कोसचैत्य प्राय मदिरपरिकरित विसाली प्रणाली चित्रसाली। —व. स.

विलेसय—देखो 'बिलेसय' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—अर अणिहल पुर बंबी मैं पाधरौ ही जाय पैठण री संकल्प धरतौ नहीं परंतु इसड़ा राग रा रिझवार अलगरद **विलेसय** तौ कठै न जाणिया। —वं. भा.

विळै, विलै—१ देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—१ विमळ करेसर **विलै**, साधु सुखदेव सरीखा। बालमीक जैदेव, नांम नरहर कवि नीका। —पी. ग्रं.

उ०—२ विही केम घणनांम, हेक हैग्रीव **विलै** हंस। सेत वाराह, आप विणि रूप तणौ अंस। —पी. ग्रं.

२ देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—१ फेर रावजी सूं कही कुंवर घणा कहीं **विलै** लगावौ। भाई पण **विलै** लगावौ। —नापे सांखले री वारता

उ०—२ केसव गुण गावण करूं स्री गुरुदेव सहाय। ऊजळ घट बुध ऊपजे, विघन **विलै** हुय जाय। —भगतमाळ

उ०—३ दादू देखि देखि सुमिरण करै, देखि देखि लै लीन। देखि देखि तन मन **विलै**, देखि देखि चित दीन। —दादूवांणी

उ०—४ तन मन **विलै** यौं कीजिये, ज्यौं पांणी में लौंण। जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहियै कौंण। —दादूबांणी

उ०—५ नदी पार संपजे, पोत द्रढ खेवट पायां। विपति **विलै** हुय जाय, जेम घर संपत आयां। —रा. रू.

बिलोक—वि. [वि=रहित+लोक] १ जन रहित, निर्जन, शून्य।

२ दृष्टि, नजर।

विलोकण—सं. स्त्री. [सं. विलोकनं] १ देखने की क्रिया, या भाव।

२ जांचने की क्रिया, परीक्षण।

३ तलाश करने की क्रिया, तलाशी।

रू. भे.—विलोकन।

विलोकणि—स. स्त्री.—दृष्टि, नजर।

उ०—सत कै सोनागिर' वाचा हरिचंद, साच कै अजातसत्र गात रति विंद। क्रपा की द्रस्टि अम्रित कै भाय, कोप की **विलोकणि** काळ तैं सवाय। —रा. रू.

विलोकणौ, बिलोकबौ—१ अवलोकन करना, देखना।

उ०—१ नरां अही अंमरां उछंडे थंडै थाळ नीर, मही रसां तळां घोर थडै आसमांण। महावीर देवांसाल **विलोकै** रोस में मंडै, पुळै कपी भाळ छंडे पछाड़ी पीठांण। —र. रू.

उ०—२ रवि रथ थांभि **बिलोकै** राजा रौ आपरा जोध सिर-ताजा। दै दै पाव गजां दांतूसळ, वाघा जेम चढां वीजूजळ। —सू. प्र.

उ०—३ जिण **विलोकि** कहियौं जगजांमी, सिव छै सुखी सिवा तौ स्यांमी। कहि इम प्रभु आतिथ-श्रम कीधौ, दखि प्रमांण आसण त्रण दीधौ। —सू. प्र.

२ निरीक्षण या परीक्षण करना, जांचना।

३ ढूंढ़ना, तलाश करना।

४ विचार करना, विचारना।

विलोकणहार, हारौ, (हारी), विलोकणियौ—वि०।

विलोकिओड़ौ, विलोकियोड़ौ, विलोक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विलोकीजणौ, विलोकीजबौ—कर्म वा०।

बिलोकणौ, बिलोकबौ, बिलोकवणौ, विलोकवबौ—रू० भे०।

विलोकन—देखो 'विलोकण' (रू. भे.)

विलोकवणौ, बिलोकवबौ—देखो 'विलोकणौ, विलोकबौ' (रू. भे.)

उ०—सब तमस मिटचो प्रगटचौ सराह, वरत्यौ सुभ ग्यांन प्रकास वाह। चित कोक **विलोकवं** करत चाह, सब सुर नर जिनकी करत सराह। —ध. व. ग्रं.

विलोकवणहार, हारौ (हारी), विलोकवणियौ—वि०।

विलोकविओड़ौ, विलोकवियोड़ौ, बिलकव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विलोकवीजणौ, विलोकवीजबौ—कर्म वा०।

विलोकवियोड़ौ—देखो 'विलोकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विलोकवियोड़ी)

बिलोकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ. २ निरीक्षण या परीक्षण किया हुआ; जांचा हुआ. ३ ढूंढा

हुआ, तलाश किया हुआ. ४ विचार किया हुआ, विचारा हुआ।
(स्त्री. विलोकियोड़ी)

विलोड़णौ, विलोड़बौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

विलोड़णहार, हारौ (हारी), विलोड़णियौ—वि०।।
विलोड़िग्रोड़ौ, विलोड़ियोड़ौ, विलोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विलोड़ीजणौ, विलोड़ीजबौ—कर्म वा०।

विलोड़ियोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विलोड़ियोड़ी)

विलोचण, विलोचन-सं. पु. [सं. विलोचनं] १ आंख, नेत्र। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ एक नरक जहां जाने से प्राणी अन्धा हो जाता है।

वि.—बिना आंखों का, अन्धा।

विलोचनअंबु-सं. पु. [सं. विलोचन+अम्बु] आंखों का पानी, आंसू।

विलोडणौ, विलोडबौ-क्रि. स.—१ विलोडित करना, मथना।

उ०—...वल्लिगहन त्रोडतउ,पाखांण रोडतउ सुंडादंडि आच्छोडतउ गिरिनदी **विलोडतउ**, महाद्रह डोहतउ, साहास्सिक तणां मन खोहतउ, तुरंगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ।... —व. स.

२ हिलाना, डुलाना।
३ युद्ध आदि में शत्रु सैन्य को तितर-बितर करना।
४ उथल-पुथल करना।

विलोडणहार, हारौ (हारी), विलोडणियौ—वि०।
विलोडिग्रोड़ौ, विलोडियोड़ौ, विलोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विलोडीजणौ, विलोडीजबौ—कर्म वा०।

बिलोडणौ, बिलोड़बौ, बिलोडणौ, बिलोडबौ, बिलोणौ, बिलोबौ बिलोवणौ, बिलोवबौ, बीलोणौ, बीलोबौ विलोड़णौ, विलोड़बौ विलोणौ, विलोबौ, विलोवणौ, विलोवबौ, वीलोणौ, वीलोबौ। —रू. भे.

विलोडियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विलोड़ित किया हुआ, मथा हुआ. २ हिलाया-डुलाया हुआ. ३ युद्ध आदि में शत्रु सैन्य को तितर-बितर किया हुआ, हताश किया हुआ, ४ उथल-पुथल किया हुआ।
(स्त्री. विलोडियोड़ी)

विलोणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे.)

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, **विलोणा** तणा भरड़का उपजइं, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणै घरि वेद ध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा. सा. सं.

विलोणौ, विलोबौ—देखो 'विलोडणौ, बिलोडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुग्रौ हंस रौ रूप ग्रौ रांम हुग्रै, वडौ कछ अवतार दरिया **विलोग्रै**। दिवै दांन रतनां तणौ सरिसि देवां, जरू दुख दै दांणवां राह जेवां —पी. ग्रं.

उ०—२ **विलोग्रै** वार बळिराव, वहि सुरां जैत सीता वरै। रुघनाथ तिकै दिन राह रौ, घड़सां सिर अळगौ धरै। —पी. ग्रं.

उ०—३ दूहिजै उद्यम दूध जतन करि दही जमावै। वलि परभात **विलोइ**, उदिम सेतीं घ्रत आवै —ध. व. ग्रं.

उ०—४ मिळ मथांण धाराळ तणै मुंह, जत्र कत्र सत्र होयै जणौ जण। वार वार दध जेम **विलोग्रै**, ताईयां दळ नगराज तण। —दूदा नगराजोत रौ गीत

विलोणहार, हारौ (हारी), विलोणियौ—वि०।
विलोयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विलोईजणौ, विलोईजबौ—कर्म वा०।

विलोप-सं. पु. [सं.] १ बाधा, रोक, रुकावट।

२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागने की क्रिया।
३ हानि, नुकसान।
४ नाश, संहार।

उ०—आयौ सकोप दळ ऊपरा, प्रबळ तोप गोळै सु पर। कारण **विलोप** जग चौ करण, घायौ काळक कोप धर। —रा. रू.

५ उल्लंघन करने की क्रिया।
६ अदृश्य या आंखों से ओझल होने की क्रिया।

वि.—गवाने वाला, खोने वाला।

उ०—ग्रोरंग कोप **विलोप** भू, गिणै अकब्बर साह। सांम्हा चढिया वावसू, खड़िया पिच्छम राह। —रा. रू.

विलोपक-वि.—१ बाधा डालने वाला, रुकावट डालने वाला।
२ चोरी से या बलात वस्तु लेकर भागने वाला।
३ हानि या नुकसान करने वाला।
४ नाश करने वाला।
५ अदृश्य या विलुप्त होने वाला।
६ गंवाने वाला, खोने वाला।
७ उल्लंघन करने वाला।

विलोपणौ, विलोपबौ-क्रि. स.—१ बाधा डालना, रुकावट डालना।
२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागना।
३ हानि करना, नुकसान करना।
४ उल्लंघन करना।
५ नाश करना, मिटाना।

६ नाश करना, संहार करना ।

क्रि. अ.—७ नाश होना, मिटना ।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अंबर ओपयं । किरि सुबुधि कवि सतसंग कारण, लुबुध होत विलोपयं ।
—रा. रू.

८ संहार होना ।

९ अदृश्य होना, विलुप्त होना ।

१० गंवाना, खोना ।

११ विमुख होना, पलटना ।

विलोपणहार, हारौ (हारी), **विलोपणियौ**—वि० ।

विलोपिओड़ौ, विलोपियोड़ौ, विलोप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलोपीजणौ, विलोपीजबौ—कर्म वा, भाव वा० ।

विलोपात—देखो 'विलाप' (रू. भे.)

उ०—ऊपरां सांम्ही राति आई । ताहरां मन मैं विचार कियौ, हुं केथी जाऊं ? मैं आगै कदे सासरौ आंखे दीठौ नहीं । हिवै म्हारी कौंण गति हुसी ? आ मन मैं **विलोपात** करणै लागी ।
—कांवळौ जोईयै नै तीडी खरळ री वात

विलोपियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ. २ चोरी से या बलात् वस्तुऐं लेकर भागा हुआ ३ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ उल्लंघन किया हुआ. ५ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ संहार किया हुआ. ७ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ८ संहार हुवा हुआ. ९ अदृश्य हुवा हुआ, विलुप्त हुवा हुआ. १० गवाया हुवा, खोया हुआ. ११ विमुख हुवा हुआ, पलटा हुआ ।

विलोपी-वि.—विलोप करने वाला ।

विलोभ, विलोभन—वि. [सं.] १ जिसमें लोभ का अभाव हो, लोभ से रहित ।

२ मोहित, आकर्षित, लालायित ।

उ०—सिणगार गज असि सोभ, लखि हुवै इंदर **विलोभ** । मिळ मंत्रि सुभड़ समाज, साजंत निज रस साज ।
—सू. प्र.

सं. पु.—१ मन को ललचाने वाला, लालच ।

२ आकर्षण ।

३ बहकावा, फुसलाहट ।

४ गुणकथन ।

विलोम—वि. [सं.] १ जिसके बाल न हो, लोम रहित ।

२ सामान्य रीति, नियम, स्वभाव आदि के विपरीत क्रम में होने वाला ।

३ विपरीत क्रम यानी ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला ।

४ विपरीत, उल्टा ।

उ०—घनै उतंग अंग कै मतंग घूमतै नहीं, चलंत सै **विलोम** लोम व्योम चूमतै नहीं । झपेट देत झंडकै ब्रह्मंड व्यापतै नहीं, छलंग देत छोनि है, मलंग मांनतै नहीं ।
—ऊ. का.

५ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—सबळ कळ आदित्या **विलोमां** साभतां, वाजतां त्रंबागळ कहर वेळा । 'पतौ' ईडरपती ढिलौवै पलायत, हुवौ दळ छत्रियां छत्र हेळा ।
—किसोरदांन बारहठ

सं. पु.—१ स्वान, कुत्ता ।

२ सर्प, सांप ।

३ वरुण का एक नामान्तर ।

४ कुए से पानी निकालने का एक प्रकार का साधन, रहट ।

५ स्वरों का अवरोहात्मक साधन ।

६ संगीत में ऊंचे स्वर से नीचे स्वर की ओर उतार, ऊचे स्वर की ओर से नीचे स्वर की ओर आने की क्रिया ।

७ पर्दे के वाद्यों सतार आदि में एक प्रकार का मीड़ विशेष ।

वि. वि.—इसमें "सा" के पर्दे पर ही बिना तार बजाए तार को अंदाज से खींच कर 'रे' के स्थान तक ले जा कर मिजराब से प्रहार किया जाता है तथा फिर तार को वापस "सा" पर ले जाया जाता है ।

८ कपोतरोमा राजा का एक पुत्र ।

रू. भे.—विलम, ।

विलोमसोमायन—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का व्रत विशेष, जिसके करने से व्रतीसोमलोक प्राप्त होता है ।

वि. वि.—यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से आरम्भ कर, ३ दिन चार स्तनों का, ३ दिन दो स्तनों का, ३ दिन एक स्तन का दूध पीये फिर ३ दिन १ स्तन का, ३ दिन २ स्तनों का, ३ दिन तीन स्तनों का, और तीन दिन चार स्तन का दूध पी कर कुल चौबीस दिन तक यह व्रत किया जाता है ।

विलोयोड़ौ—देखो **'विलोडियोड़ौ'** (रू. भे.)

(स्त्री. विलोयोड़ी)

विलोळ, विलोल—वि. [सं. विलोल] १ हिलने-डुलने वाला, लहराने वाला ।

२ चंचल, सुन्दर ।

३ ढीला, शिथिल ।

उ०—भवि भवसउ तैं बोलइं बोलइं गिरिसिर टोल, सहजिइं परभव भेदन वेदन वदन **विलोल** ।
—जयसेखर सूरि

४ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ ।

सं. पु.—ऐश-आराम ।

उ०—विलसै दरब विलोळ, हरांमखोर जो नर हुवै । पावै जम री पोळ, भूरदक्षिणा 'भैरिया' । —महाराजा बलवंतसिंह रतलांम

विलोळणौ, विलोळबौ—देखो 'विलोलणौ, विलोलबौ' (रू. भे.)

विलोळणहार, हारौ (हारी), विलोळणियौ—वि० ।

विलोळिओड़ौ, विलोळियोड़ौ, विलोळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलोळीजणौ, विलोळीजबौ—कर्म वा० ।

विलोलणौ, विलोलबौ—क्रि. स.—१ ऐश-आराम करना ।

२ हिलाना-डुलाना ।

३ हवा करना, हवा डालना ।

उ०—वनिता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय। वाउ विलोलइ वींजणइ, कौ चंदन घसी लाय । —मा. कां. प्र.

विलोलणहार, हारौ (हारी), विलोलणियौ—वि० ।

विलोलिओड़ौ, विलोलियोड़ौ, विलोल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलोलीजणौ, विलोलीजबौ—कर्म वा० ।

विलोळणौ, विलोळबौ—रू० भे० ।

विलोळियोड़ौ, विलोलियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ऐश-आराम किया हुआ. २ हिलाया-डुलाया हुआ. ३ हवा किया हुआ, हवा डाला हुआ ।

(स्त्री. विलोळियोड़ी, विलोलियोड़ी)

विलोवणउ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे)

उ०—दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मंथांन रे । जिम विलोवणउ विलोवतां थकां, सरीर नउ संस्थांन रे । —स. कु.

विलोवणी—सं. स्त्री.—१ मिट्टी का बना वह छोटा पात्र जिसमें दही मथा जाता है ।

२ दही मथने वाली स्त्री ।

रू. भे.—बिलोवण, बिलोवणी ।

विलोवणूं, बिलोवणौ—सं. पु.—१ मिट्टी का बना वह बड़ा पात्र जिसमें दही मथा जाता है ।

उ०—मूंधा पड़्या रे विलोवणा, रीती रै'वै जाय छछियार । वारी, म्हारा गुगा, भल रही वौ । —लो. गी.

२ दही आदि मथने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ माय विलोवै विलोवणूं, बहन रसोई कै मांय । सोदागर महंदी राचणी । —लो. गी.

उ०—२ हवइं कूकड़ा बोल्या, लगारेक नींदली डोल्या । नींदई झकोल्या, मूकी संभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या । आवइ नारि, बारि उघारि, राति अधारि । दही संभाल्यूं, विलोवणौ घाल्यूं । —रा. सा. सं.

उ०—३ जांभरकै नांनी-मां रै ई साथै ऊठ्यौ । जोड़ै बैठ दुवारी करी । थोड़ी ताळ विलोवणौ ई घमोड़्यौ । पछै सूरज दो अेक बांसड़ा ऊंचौ चढ्यौ जणां खाखरा माथै माखण मिसरी लेय कलेवौ करण लागौ । —फुलवाड़ी

उ०—४ थूं ई घणा रै मूंडै सुणियौ व्हैला कै पुन्न री जड़ सदा हरी रै'वै । अे काला मिनखां री काली बातां है । थारी मासी तौ पिचियासी बरसां में विखा रौ विलोवणौ करनै फगत इण ग्यांन रौ माखण निकाळियौ कै धन री जड़ सदा हरी रैवै ।

—फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, घमोड़णौ, घालणौ, होणौ ।

रू. भे.—बिलोवणौ, विलोणौ, विलोवणउ, विलोहणौ ।

विलोवणौ, विलोवबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ माय विलोवै विलोवणूं, बहन रसोई कै मांय । सोदागर महंदी राचणी । —लो. गी.

उ०—२ दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मंथांन रे । जिम विलोवणउ विलोवतां थकां, सरीर नउ संस्थांन रे ।

—स. कु.

उ०—३ एक बाई कह्यौ स्वांमीजी म्हारै भैंस व्याव‍ै जब पधारौ तौ लाहौ लेवूं । तै किम भैंस व्यायां एक महिनां नांइ दूध दही वावर देवै, पिण विलोवै नहीं । तै देवी रै टांणै पधारज्यौ ।

—भि. द्र.

उ०—४ पीसण खांडण प्रसिद्ध, वलै गौ दूहि विलोवै । जीमण रांधि जिमाव, लाज सूं जिमै लुकोवै । —ध. व. ग्रं.

विलोवणहार, हारौ (हारी), विलोवणियौ—वि० ।

विलोविओड़ौ, विलोवियोड़ौ, विलोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलोवीजणौ, वीलोवीजबौ—कर्म वा० ।

विलोवियोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विलोवियोड़ी)

विलोहणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे.)

उ०—कमळा किया करतार, भर बुडी तग भार । लेह देह छोडीजै लास, विलोहणै वरहास । —गु. रू. बं.

विलोहित—सं. पु. [सं.] १ तीन सिर, तीन पैर एवं तीन हाथों वाला एक राक्षस जो कश्यप एवं खशा का पुत्र था ।

२ कश्यप एवं सुरभि के पुत्रों में से एक रुद्र ।

विलौ—सं. पु.—१ वर्षा ऋतु में हरे घास या पानी में होने वाला कीड़ा विशेष ।

२ उक्त कीड़े के पेट में चले जाने से गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं को होने वाला रोग विशेष ।

वि. वि.—इस रोग से पशु का अंग अकड़ जाता है । अगर कीड़ा नाक में चला जाये तो पशु मर भी जाता है ।

विल्कुल—देखो 'बिलकुल' (रू. भे.)

विल्कुळणौ, विल्कुळबौ—देखो 'विळकुळणौ, विळकुळबौ' (रू. भे.)

विल्कुळणहार, हारौ (हारी), विल्कुळणियौ—वि०।
विल्कुळिग्रोड़ौ, विल्कुळियोड़ौ विल्कुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विल्कुळीजणौ, विल्कुळीजबौ—भाव वा०।

विल्कुळियोड़ौ—देखो 'बिळकुळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विल्कुळियोड़ी)

बिळचा—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—कोट किला करतांह, विखरतां लागै विळचा। मांनव नै मरतांह, वार न लगे वसतिया। —समेळजी बारहठ

विल्यायत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

विल्यौ—देखो 'बिल्यौ' (रू. भे.)

विल्लगणौ, बिल्लगबौ—देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

विल्लगणहार, हारौ (हारी), विल्लगणियौ—वि०।
विल्लगिग्रोड़ौ, विल्लगियोड़ौ, बिल्लग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विल्लगीजणौ, बिल्लगीजबौ—भाव वा०।

विल्लगियोड़ौ—देखो 'विलगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विल्लगियोड़ी)

विल्लभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

विल्लल—सं. पु.—एक देश का नाम।

उ०—सगवण गज्जण सबर बरबरकाय चिलाय तुरंड गुंड उडकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल ग्रज्जल विल्लल पारस खस लउस हारो समोसहिम रोम मरुग। —व. स.

विल्लायत—देखो 'विलायत' (रू भे.)

उ०—जुदा मिसल जग हूंत, ग्रमल विल्लायत वाळा। इसड़ा बार हजार, चूंच चढिया कळिचाळा —सू. प्र.

विल्लौ—देखो 'बिल्लौ' (रू. भे.)

विल्वपत्र—सं. पु [सं.] वह बेल का पत्ता जो प्रायः शिवजी की पूजा में चढ़ाने के काम में ग्राता है।

विल्वमंगळ—स.पु. [सं.विल्वमंगल] श्रीकृष्ण के ग्रनन्य भक्त एक ब्राह्मण पुत्र।

वि. वि.—इसके पिता कृष्णवेणी नदी के तट पर रहते थे। यह पहले तो शांत व शिष्ट स्वभाव के थे। मगर पिता की मृत्युपरांत दुराचारी हो गये व एक वेश्या के पास भी जाने लगे। पिता के श्राद्ध के दिन भी चितामणि नामक वैश्या के पास रात को गये। नदी में किसी मृत स्त्री के शव को लकड़ी समझ कर उसी से नदी पार की तथा वैश्या के द्वार बंद होने पर एक सांप को रस्सी समझ कर उसी से दीवार फांद कर ग्रन्दर गये। उसी दिन वैश्या के फटकार भरे उपदेश को मान कर उसी को ग्रपना गुरु बनाया तथा ग्रपनी ग्रांखें फोड़ ली ग्रौर कृष्ण की भक्ति में लीन हो गये। इसीने 'श्रीकृष्ण कर्णामृत जिसे" "लीला गुरु" भी कहते हैं, की रचना की थी।

विवंत—सं.—१ स्थिति, हालत।

उ०—जौ नरसंघजी की वाजी सावूत रहमी, थें सावत लोकां नूं लै नीसरसौ तौ। वळै पठांण नूं वैगौ धको देसां। **विवंत** देख दुसमण कन्है नीसरै, विवंत देख लड़ै, तिकां घरती रहै। ग्रर ग्राखता हुय नै काबू बिना लड़ मरै तिकां री घरती जाहि। —राजा नरसिंघ री वात

विवक्षु—सं. पु. [सं.] कौरव वंशीय निमिचिक राजा का नामान्तर जो ग्रधिसीमकृष्ण का पुत्र था।

विवची—देखो 'विमची' (रू. भे) (ग्रमरत)

विवत्स—वि. [सं.] सन्तान हीन, जिसके सन्तान न हो।

विवध—१ देखो 'विबुध' (रू. भे.) (ग्र. मा)

उ०—**विवध** घणमाळ नभचक्र माझल वसी, रवि ससी न दीसै दिवस रजनी। मनोभव लगाडै बांण मोहण मदन, सहंस वातां सजन ग्रांण सजनी। —बां. दा.

२ देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—१ जग ईख स्वाद पी ऊखरस, जिम ग्रवर चार ग्रनारयं। सुख परम दिनपति नृपति सेवत, **विविध** भोग विहारयं। —रा. रू.

उ०—२ **विविध** सास्त्र रा जांणणहार त्रिकाळदरसी इसा स्री ब्रह्माजी कनै सिखाई जै दरद सुणाईजै, कहै तिकां विध कीजै ग्रसुर विहंडीजै, क्रीत कांनै सुंणीजै। —मा. वचनिका

उ०—३ कही धरा पूर धुर कथा, विसवामित्र **विवध**। —रांमरासौ

विवधा—१ देखो 'विबुध' (रू. भे.)

२ देखो 'विविधता, (रू. भे.)

विवधाजांण—देखो 'विविधजांण' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

विवधि—देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—ग्रागम ग्रावण हरख उमंडै, मांडहि कोड नरूकां मंडै। छत्रपति हित मारग छड़काया, **विवधि** राज मगि फूल विछाया। —रा. रू.

विवनउ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

उ०—१ घण थाटि लियइ ग्रायउ घरेहि, छांगिया मेछ घर घाति छेहि। जणियार जोध **विवनउ** जियार, ताडिया वच्छ वथांणि तियार। —रा. ज. सी.

विवनणौ, विवनबौ—क्रि. अ.—मरना, अवसान होना।

उ०—१ नर विवनै वो नंह रहै, जग में आ रह जाय। कुळवंती सूं कीत री, उलटी गति इण भाय। —बां. दा.

उ०—२ विवनै 'वाघ' धरै मूंछां बळ, बैठौ गादी 'गंग' महाबळ। 'माल' 'गंग' गादी राव मारू, सबळा किया आपरै साह। —रा. रू.

उ०—३ तण जास पास नय कुळ तणी, सीचै भोर आचा सही। अभिनमी 'क्रन्न' दांनेसवर रायसिंघ विबनौ म कही। —करमसी आसियौ

उ०—४ मारग जिकण गयौ राव मारु, पाछौ नह देखां परत। तौ विवनै चांपा वड त्यागी, व्रन खट री तूटी वरत। —संकरदांन दधवाड़ियौ

विवनणहार, हारौ (हारी), विवनणियौ—वि०।

विवनिओड़ौ, विवनियोड़ौ, विवन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विवनीजणौ, विवनीजबौ—भाव वा०।

बिवन्नणौ, बिवन्नबौ, व्रिविनणौ, विव्रिनबौ बिविन्नणौ, —रू. भे.

विवनिओड़ौ—भू. का. कृ.—मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ।

(स्त्री. विवनियोड़ी)

विवनौ—वि. (स्त्री. विवनी) १ जिसका अवसान हो गया हुआ, मृत।

उ०—जोडै नांणौ जगत में, कर कर करड़ा कांम। वि वांणियौ, नांणा रौ सुण नाम।

उ०—२ गिणजै मत दांमण चोळ गनौ, मुक्त बंधव सा मनौ। विवनौ घर जीवत रूप मणौ, चारण कुळ सव.... सुणौ। —पा. प्र.

उ०—३ सुण बांधव विवनौ समर, राव विया कर रेठ। दन हूतौ नभ दुघड़ी, जूझ रह्यौ पिड जेठ। —पा. प्र.

उ०—४ अेकलौ जाय अतीत, जती काय अकेलौ जासी। घण विवनी रौ घणी, गरढ जासी ग्रभवासी। —अरजुणजी बारहठ

२ उदास, खिन्नचित्त।

३ विपत्तिग्रस्त, संकटापन्न।

रू. भे.—विवनउ, विवन्नउ, विवन्नौ, विविनौ, विविन्नौ, वीवनौ, वीवन्नौ।

विवन्नउ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

उ०—सींगिळ उत्थेड़णु सत्रां, जोध विवन्नउ जांणि। आंकलु आड़िउ ऊठियउ, विक्रमाइतु वखांणि। —रा. ज. सी.

विवन्नणौ, विवन्नबौ—देखो 'विवनणौ, विवनबौ' (रू. भे.)

उ०—बेगड़उ सांड 'वीकउ' विवन्न, कुळभाण तेथि उदियउ 'करन्न'। ऊधरिय छत्र फेराविं आंण, तांई मंडोवर मूलतांण। —रा. ज. सी.

विवन्नणहार, हारौ (हारी), विवन्नणियौ—वि०।

विवन्निओड़ौ, विवन्नियोड़ौ, विवन्नयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विवन्नीजणौ, विवन्नीजबौ—भाव वा०।

विवन्नियोड़ौ—देखो 'विवनियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विवन्नियोड़ी)

विवन्नौ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

उ०-महाराजा 'अजमाल', इंडौ अरिसाल विवन्नौ। गयौ रांम सुर लोक, इसौ इक जोग उपन्नौ। हिंदू धरम निबाह, सरम गंजे मेछांणां। चक्रवती चालियौ, प्रगट वैकुंठ पयांणा। —रा. रू.

(स्त्री. विवन्नी)

विवर—सं. पु. [सं.] १ सर्प, चूहों व चींटियों के रहने का स्थान, छिद्र बिल।

उ०—१ इक कहै चीटी एह, छित लखौ सुख अणछेह। बस रही संग परवार, धर विवर घर निरधार। —रा. रू.

उ०—२ सींह जिम अडर डर अनमि 'सिवसाह' हर, रिमां विखधर जिहि समर गाहै। तेज खग-ईस री टकर लागी तिकां, रहै नह वारधर विवर मांहै। —राव देवीसिंघ सेखावत रौ गीत

२ कन्दरा, गुफा।

उ०—१ च्यार घड़ी तलक च्यारू रेढा घणा सखरा लड़िया। आदमी घणौ घायल हुवौ। सारा धाप रहिया अर आबू रा विवर पण भूंडण व रेढा री नजर आया। तद सारौ साथ उठै ऊभौ रहियौ। कुंअर नूं संभाळ घोड़ै सवार कियौ छै। इतरै भूंडण-रेढौ। विवर जा बड़िया। —डाढाळा सूर री वात

उ०—२ विखम घाट गोरख पखै, कवण पैसे विवर। चीत कुण रुदर वण जहर चाढै, असंक दैतां वचै जोधपुर 'ऊदला', कहर दरीया वसु तुह-भ काढै। —मालौ सांदू

३ छेद, छिद्र।

उ०—नाभि-विवर अति रुअडु, घण नलीआरइ पेटि। उन्नत उर विसाल, पण भल तइ सकइ न भेटि। —मा. कां. प्र.

४ गर्त, गड्ढा।

उ०—१ अंब विवर तनसीत सुतौ सब तीरथ न्हावै। कासी छाडै देह हेम बसि हाड़ गमावै। —ह. पु. वा.

उ०—२ कनियां भोमि विवर लघु काया, आयस जेम दास धरि आया। वदियौ वळि घर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय। —सू. प्र.

५ दरार, खाई।

६ पाताल। (डिं. नां. मा.)
७ त्रुटि, गलती।
८ किसी ठोस पदार्थ में होने वाला खोखला स्थान।
९ घाव।
१० मूर्ख, नासमझ, विवेकहीन व्यक्ति। (ह. नां. मा.)
११ भूगर्भ, तहखाना।

उ०—अर उहि रिति कै आवर्णे भुजंग जु सरप था। अर घनवंत मनुस्य था त्यां प्रथी का पुड़ विवरण करि ऊंडी ठौड़ां सबारि तहां ए दून्यौं वरग विवर कहतां भुंहिरा निखात ठोड़ तहां जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी.

१२ समुद्र, सागर। (डिं. नां. मा.)
१३ ब्यौरा, हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—१ आखी जंग तणी कथ एती, सारी विवर अकव्वर सेती। अै राठौड़ हुवै ज्यां आगै, भिड़तां ऊला पैला भागै —रा. रू.

उ०—२ वाको ग्यौ अजमेर सूं, साह हजूर सताव। पत्र परखि (ठि) या साह डर, लिखिया विवर नबाब। —रा. रू.

उ०—३ विगत सुणी सारी विवर, आया हितू हजूर। अरि भमरांणी आवियौ, दळां न वै था दूर। —रा. रू.

उ०—४ कुवजा नारद विदर री, विवरां संजुत बात। हरि रा दासां ज्यूं हुए, दासां नूं सुख दात। —बां. दा.

१४ धोखेबाज, कपटी व्यक्ति।

१५ दूत, खबरनवीस।

उ०—अबदुल्ला सुण बंधु अवाजा, रीत कही सुणतां महाराजा। पत्र दिया हित हूंत पठाया, समाचार सहि विवर सुणाया। —रा. रू.

१६ नौ की संख्या।*

रू. भे.—बिबर, बिभर, बिंवर, बिव्वर, बिमर, बिम्मर, वमर, ववर; विमर विम्मर, विवरण।

अल्पा.—वम्मरौ।

विवरजत, विवरजित, विवरजिति–वि. [सं. विवर्जित] १ वर्जित, निषिद्ध, मना किया हुआ।

उ०—बह रांणा राव विवाद विवरजित, "जोध" कळह कथ जिका जुई। वैरायतां तौ वाळी भगवट, हव जांणं कुळवाट हुई। —महम्मदजी बारहठ

२ अपेक्षित, वंचित।

३ रहित, बिना।

उ०—१ भाई नांऊ वळद पियारौ, तिह के गळै करद क्यों सारौ ? विणि चीन्ह खुदाई तरस विवरजत, केहा मुसलमांणौ ? —अग्यात

उ०—२ उदै अस्त आवै न जाय, सकल वियापि सहज भाय। मोह दोह आसा न पास, वरण विवरजित सु प्रकास। —ह. पु. वां.

उ०—३ सकल रूप रस रूप विवरजित, सकल रूप तैं कीया। सकल रूप करि सवतैं न्यारा, साधां कूं सुख दीया। —ह. पु. वां.

उ०—४ सतगुरु सरणि गई सब दुवध्या, एक निरंजन पाया। करम विवरजिति सकल वियापी, सो मेरै मन भाया। —ह. पु. वां.

४ रुका हुआ, अवरुद्ध।
५ वर्णन किया हुआ, कहा हुआ, वर्णित।
रू. भे.—बिवरजित, बिवरजित।

विवरजितदे, विवरजितदेह–सं. पु. [सं. विवर्जित+देह] निराकार, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—अनाथां-नाथ अनंत अछेह, दयाळ मूरत्ति विवरजितदेह। बिना बपु रूप अनंत विथार, अमूळ विरक्ख सु विस्वाधार। —ह. र.

रू. भे.—बिवरजितदेह।

विवरण–सं. पु. [सं. विवरणं] १ प्रकट करने की क्रिया, प्रकटन, प्रदर्शन।

२ सविस्तार वर्णन, विवेचना, व्याख्याभाष्य, टीका।

उ०—विवरण जो वेलि रसिक रस वंछौ, करौ करणि तौ मूझ कथ। पूरै इतै प्रांमिस्यौ पूरौ, इम्रै ओछै ओछौ अरथ। —वेलि.

३ छेदने की क्रिया, छेदन।

उ०—तब सूहव जु नायिका तांह का उरस्थळ वैकुंठ प्राय हुई रहीआ छै। अर उहि रिति कै आवर्णे भुजंग 'सु सरप था। अर घनवंत मनुस्य था त्यां प्रथी का पुड़ विवरण करि ऊंडी ठौड़ां संबारि एहां ए दून्यौं वरग विवर कहतां भुंहिरा निखात थोड तहां जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी.

[सं. विवर्ण] ४ जातिच्युत या जाति से बहिष्कृत व्यक्ति।

५ मन्तव्य, स्पष्टीकरण।

६ साहित्य में एक भाव जिसमें नायक या नायिका के मुख का रंग भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण बदल जाता है।

वि. [सं. विवर्णः] १ नीच, कमीना, निम्न जाति या कुजाति का।

२ बुरे या बेमेल रंग का, बदरंग।

उ०—विवरण वरण स्तंबवरण लंबकरण व्है विलै, मही न धरन चरन मरन उत्तमरन क्रै मिलै। गती रती न ग्यांन की गद विग्यांन की गमी, स्त्रुती परी करी सदा स्त्रुती जनस्त्रुती सभी। —ऊ. का.

३ मूर्ख, नासमझ। (ग्र. मा.)

४ कांतिहीन, शोभा व चमक रहित।

५ अनेक रंगों का, रंग-बिरंगा।

६ देखो 'विवर' (रू. भे.)

रू. भे.—बिबरण, बिवरण, विउरण, विबरण।

विवरत-सं. पु. [सं. विवर्त] १ चक्कर, फेरा, घुमाव।

२ वापिस लौटने की क्रिया, प्रत्यावर्तन।

३ भ्रम, भ्रान्ति।

४ नृत्य, नाच।

५ परिवर्तन।

६ समुदाय, समूह।

विवरतकलप, विवरतकल्प-सं. पु. [सं. विवर्तकल्प] एक कल्प विशेष जिसमें लोक क्रमशः उन्नति की ओर से अवनति की ओर अग्रसित होते हैं। (जैन)

विवरतवाद-सं. पु. [सं. विवर्त+वाद] वेदान्तियों के अनुसार वह सिद्धांत विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म ही सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति स्थान है व संसार माया व मिथ्या है।

विवरतस्थायीकलप, विवरतस्थायीकल्प-सं. पु. [सं विवर्तकस्थायीकल्प] वह समय जब लोक अवनत्ति को प्राप्त कर शून्य दशा में भ्रमण करता है, कल्पान्त, प्रलय।

विवरधन-सं. पु. [सं. विवर्धन] १ मणिवर एवं देवजनी का एक पुत्र, यक्ष।

२ युधिष्ठर की सभा का एक राजा।

विवराणौ, विवराबौ-क्रि. स.—उच्चरित करवाना।

विवराणहार, हारौ (हारी), विवराणियौ—वि०।

विवरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विवराईजणौ, विवराईजबौ—कर्म वा०।

विवरावणौ, विवरावबौ—रू० भे०।

विवरायोड़ौ—भू. का. कृ.—उच्चरित करवाया हुआ।

(स्त्री. विवरायोड़ी)

विवरावणौ, विवरावबौ—देखो 'विवराणौ, विवराबौ' (रू. भे.)

उ०—सखियां रांणी सू सकळ, **विवरावै** सह वांणि। साल्हकुंवर सपनै मिळै, पदमण अंग कुमलांणि। —ढो. मा.

विवरावणहार, हारौ (हारी), विवरावणियौ—वि०।

विवराविग्रोड़ौ, विवरावियोड़ौ, विवराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विवरावीजणौ, विवरावीजबौ—कर्म वा०।

विवरावियोड़ौ—देखो 'विवरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विवरावियोड़ी)

विवरि, विवरी-सं. पु.—सन्देश व सूचना लाने व ले जाने वाला, सन्देशवाहक, दूत।

उ०—'सेर' अरज मांनै सुख पायौ, 'अमर' पास निज मंत्री आयौ। सेर विलंद तणी विध सारी, 'अमरै' सूं तिण **विवरि** उचारी। —रा. रू.

वि.—वर्णन करने वाला।

विवरौ-सं पु.—१ भेद, रहस्य।

उ०—१ नव दिन नाभी ध्यांन कौ, **विवरौ** देह बताय। जन हरीया ररंकार सुं, सहजां ताळी लाय। —अनुभववांणी

उ०—२ कहन सुनन की वात का, हरिया **विवरा** थाय। कोई महरंम हुय दाखवै, कौ कहै वात वनाय। —अनुभववांणी

उ०—३ पण परभात रै पोहर राज दरबार करौ छो, ताहरां रावळो मुंह उतरियो लागै सुं कांमूं जांणीजै ? ताहरां लाखैंजी कह्यौ रुड़ां भांणेज ! तोनू कहीस, पण एकांत कहीस इण वात रो **विवरौ** छै। —नैणसी

२ कारण।

३ विवरण, ब्यौरा, वृतांत, हाल।

उ०—१ उर प्रगटै सुख ऊभरौ, सुणि **विवरौ** 'अभैसाह'। ज्यौं जिग कांम तपौधनां, रांम कियौ ओछाह। —रा. रू.

उ०—२ न्रपत समेळ पधारिया, **विवरौ** थयौ विख्यात। आवी अरज उकील री, आ मत मांनौ बात। —रा. रू.

उ०—३ तिसै चौकी पोहरै उमराव था, त्यांने कह्यौ, चौकी किण किण री छै। जिकै उमराव था तिण रा नांम लै लै नै कह्यौ। तरै राजा कह्यौ, देखां ऊगूण दिसि नैं कोई गावै छै, कोई रोवै छै। तिणरौ **विवरौ** ल्यावौ। —जगदेव पंवार री बात

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार।

५ अन्तर, फर्क।

उ०—१ सूर लड़ै जब कंध सिर, कमंध लड़ै विण सीस। हरिया सूर कमंध विच, **विवरौ** विसवा वीस। —अनुभववांणी

उ०—२ घड़ौ कूलड़ौ तांवणी, घड़िया घाट अनेक। कुल करमा **विवरौ** कियौ, हरीया माटी हेक। —अनुभववांणी

उ०—३ जस न हुवै धन जोड़ियां, धन दीघां जस होय। बीसलदै बीकम तणौ, जग में **विवरौ** जोय। —बां. दा.

उ०—४ जाति पांति विवरौ करै, भांणै ग्रांणै भिन। हरिया इन परसाद मैं, पाप न कोइ पिन। —ग्रनुभववांणी

उ०—५ दमड़ी चमड़ी बीच में, हरिया विवरौ होय। दमड़ी मुं दावा किसा, चमड़ी मा करि जोय। ग्रनुभववांणी

६ व्याख्या, टीका।

७ संक्षिप्त जानकारी, परिचय।

उ०—कोडीधज साहरी कवर, मांहरी नांव पनीज। ग्राईछुं उदमाद सुं. तरै खेलवा तीज। किण घर सौ ग्राया कहौ, जास्यौ सिघ जोधार। म्हांरौ विवरौ म्हैं दियौ, कुण छौ राज कवार। —पनां

७ बयांन।

रू. भे.—बिवरौ, बीवरौ, वीवरौ।

विवस-वि. [सं विवश] १ जिसका कोई बस नहीं चलता हो, बेबस, लाचार।

उ०—लुटेही लेत विवेक का डेरा, बुद्धिबळ यदपि करूं बहुतेरा। हाय रांम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूं विवस प्रभु धावउ सवेरा। —मीरां

२ जो अपने या किसी के काबू में न हो, बेकाबू।

३ जिसे होश न हो, बेहोश।

४ मरा हुग्रा, मृत।

५ कारण।

उ०—ग्रादर कियौ मिळै ग्रसुरेसुर, दियौ नांम न्रप तेग बहादुर। भावी विवस जोधपुर भायौ, चगथै खां महराव चलायौ। —रा. रू.

रू. भे'—बिवस, बेबस, विवसि।

विवसता-सं. स्त्री. [सं. विवशता] विवश होने की ग्रवस्था या भाव।

विवसवत-सं. पु. [सं. विवस्वत्] १ एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम।

२ चौदह सौ किरणों वाला एक सूर्य जो ज्येष्ठ माह में प्रकाशित होता है।

३ मनु एवं यम का पिता, प्रथम यज्ञकर्त्ता।

४ चाक्षुष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

५ गरुड़ के द्वारा मारा गया एक ग्रसुर।

६ उदित होने वाले सूर्य का प्रतिनिधित्वकर्त्ता एक देवता।

७ देखो 'विवसवांन' (रू. भे.)

रू. भे.—विवस्वत।

विवसवांन, विवसांण, विवसांन-सं. पु. [सं. विवस्वत्] १ सूरज, सूर्य। (ग्र. मा., क. कु. बो., नां. मा., ह. नां. मा.)

वि. वि.-यह बारह ग्रादित्यों में से एक है, जो कश्यप प्रजापति व दक्षकन्या ग्रदिती के बारह पुत्रों में से एक है। बारह पुत्रों के नाम निम्न हैं-विवस्वान्, ग्रर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, मित्र, वरुण, शक्र व वामन या उरुक्रम।

२ ग्ररुण।

३ ग्रर्क, मदार।

४ पंद्रहवां प्रजापति।

५ एक सनातन विश्वदेव का नाम।

रू. भे.—विवसवत, विवस्वांन।

विवसाइ, विवसाई—१ देखो व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू. भे.)

उ०—कारू नारू नइ विवसाई, ग्रावइ वरण ग्रढार। पाए लागी-नइ कांमा सारइ, ग्रायस करइ जुहार। —कां. दे. प्र.

विवसाइयौ, विवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—गांछा छीपा नइ तेरमा, विवसाईया वसइ। नगरमां ग्रापा-पणि काजि सहू मिलइ, चहुटइ हईइ हईउं दलइ। —कां. दे. प्र.

विवसाय—देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

उ०—१ च्यारि वरण उत्तम जांणिया, विवहारिया वसइ वांणिया। कुहरइ वीकइ चालइ न्याय, देसाउरि करइ विवसाय। —कां. दे. प्र.

उ०—२ पुरसोतम चितवै स्रस्टि, व्यापार रचीजै। इम चितवतां ग्राप, सयन निद्रावसि सूजै। किता जुग विवसाय, परम निद्रा भर पोढ्यौ। जोगनिद्रा जोगेस, ग्राठ क्रंम पवनह उळ्यौ। —रा. वंसावळी

विवसायौ—देखो 'व्यवसायी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—हाटां तणउ पार नवि लहइ, घणा लोक विवसाया वहइ। खांडां तरकस तीर कमांण, जरहजीण पूरइ दीवांण। —कां. दे. प्र.

विवसि—देखो 'विवस' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिण वेल तर ग्राछादि गिर तन, ग्रवनि पंथ ग्रंगम ए। मन जांणि तापसि विवसि थाया, भ्रमत फिर पड़ि भ्रंम ए। —रा. रू.

उ०—२ विवसि हुग्रौ मुनि वेस्या वसि। —रांमरासौ

विवस्था—देखो 'व्यवस्था' (रू. भे.) (ग्रमरत)

उ०—१ राइ नट तेडाविया, कही विवस्था वत। वाडव कौ वेस्या जपइ; टालि पहु तैं रत्त। —मा. कां. प्र.

उ०—२ विवस्था विखाद वादा वादकौ विवाद बाढ्यौ, मेटन फिसाद याद कीनौं जस जापी कौ। प्रबळ प्रधांनपणौ दैन जसवंत प्रभू, जैपुर तैं लीनौं टेर 'पातल' प्रतापी कौ। —ऊ. का.

विवस्वत—देखो 'विवसवत' (रू. भे.)

विवस्वांन—देखो 'विवसवांन' (रू. भे.)

विवह—सं. पु.—१ देवराज इन्द्र। (ना डिं. को.)

२ अत्यन्त वेगवान् वायु, तुफान।

३ देखो 'विबुध' (रू. भे.)

४ देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—दीसइ **विवह** चरीय, जांणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो। अप्पांणं च कलिज्जइ, हडिज्जइ तेण पुहवीए। —ढो. मा.

उ०—२ केतां भड़ां निवाजस कीजै, दांन प्रसन मन पातां दीजै। अतरै दूत खबर लै आया, समाचार सह विवह सुणाया। —रा. रू.

उ०—३ स्रीमंडळ रबाब सार रुद्रवीणा भणंकार, तंत मझि घोर तार ग्रांमा त्रिहणं। ताळ कंसाळ झालरी अघोटी कच्छिब्री एक, आगळी वाजै अनेक, **विवह** वणं। —गु. रू. बं.

उ०—४ अंनि अबीर जबाधि, **विबह** अन्नेक परिम्मळ, चंपक दळ केतकी कुसम सेवती सुपड्डळ। नीसांण सद्द सुणिये नहीं, भेर नाद मरदग घण, आम्रांण महल्लै अंग रहण, इम अलिअर गुंजार-वण। —गु. रू. बं.

उ०—५ विवह वरन्ना कप्पड़ा, **विवह** वरन्नी पाग। फजर हुवंदी फूलिया, जाण मलूकां वाग। —गु. रू. ब.

विवहथरणौ, विवहथरबौ—देखो 'विबहथरणौ, विबहथरबौ' (रू. भे.)

विवहथरणहार, हारौ (हारी), **विवहथरणियौ**—वि०।

विवहथरिओड़ौ, विवहथरियोड़ौ, विवहथरयौड़ौ—भू० का० कृ०।

विवहथरीजणौ, विवहथरीजबौ—भाव वा०।

विवहथरियोड़ौ—देखो 'विबहथरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विवहथरियोड़ी)

विवहपरि, विवहपरी, विवहप्परि—क्रि. वि.—विविध प्रकार से।

उ०—१ ता? उन्हउं सीयलु जयह जलु, फासूय थप्पिय **विवह-प्परि**। निज्जिणिउ विजयाणंद ति (लि) हि, अभयतिलकि चउ-पट्टि धारि। —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ दोरइ बद्धइ सूयडउ, छूटइ महतउ होइ। इण परि विलसइ **विवहपरि**, सुद्धि न जांणइ कोइ। —हीराणंद सूरि

विवहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—१ हूं रावळो चाकर, यूं चूक पड़ि, तकसीर माफ करणी। यूं करतां घड़ी अेक हुई। रुदन करण लागो। देही परसीज गई। **विवहल** होय गयो, ज्यौं प्रांण छूटै। ताहरां लक्ष्मीजी स्रीभगवांन सूं अरज करी—जै साहूकार बहोत दीन छै, विवहल हुयो छै. इण रा प्रांण छूटै छै। इण री पइसौ लीजै। —पलक दरियाव री वात

उ०—२ इतरै में कुंवर री म्रतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहा-कार सबद हुवौ। साथ सारौ ही रोवण कूकण लागौ। राजा नै जाय खबर हुई सो सुणनै मुरछागति हो गई, **विवहल** होय गयौ। —पलक दरियाव री बात

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—१ धरम, विग्यांन, इतियास, पुरांण, राजनीति, आचार, **विवहार**, कळा, साहित, वेसभूसा, परब-त्यूंहार, कारीगरी नै खेतीवाड़ी अे सैंग परंपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै। —फुलवाड़ी

उ०—२ हुन्नर करौ हजार, स्यांणप चतराई सहित। हेत कपट **विवहार**, रहै न छांनौ, राजिया। —किरपारांम

उ०—३ वरतीजै **विवहार**, कदै निज रुढि न कीजै। सदाचार धरमसींह, लीह कहो केम लंघीजै। —ध. व. ग्रं.

उ०—४ विणजै व्यापारं वलि **विवहारं**, लक्ष्मी आप वहै लारं। परिघल परिवारं पुण्य प्रकारं, बोलै बहु जस बाजारं। —ध. व. ग्रं.

उ०—५ अबै रिणमलजी मोकळ रो **विवहार** बांध चाचामेरा नै प्रधांनगी सूंप पाछा मंडोवर आया। अठै मोकळ रै आगै चाचोमेरौ चलावै छै। —राव रिणमल री बात

उ०—६ कंत घणा है सांतरा' जांणै जग **विवहार**। मत समझी मोटा घणा, करै न जण सत्कार। —करणीदांन बारहठ

विवहारिउ विवहारिओ, विवहारियौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—राजग्रहि नउ **विवहारिउ** रे, गोभद्र तणउ रे मल्हार। भद्रा माता कूंयरु रे, सालिभद्र गुण भंडार। —स. कु.

विवहारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

उ०—त्रिणि दिहाडा वरखा वरसीउ, **विवहारी** चालिउ परदेसि। नारी एकली वली रे तिहां थई, छई तै यौवन वेसि। —नळदवदंती रास

विवहारीउ, विवहारीओ, विवहारीयौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारू थई **विवहारीउ**, वाहणि घोडा साथ। पूरण पुहुंचा लगि भरिउ, वेढि वांकडां हाथि। —मां. कां. प्र.

उ०—२ सपरिकरि संध्या समइ, रथि बइसीनइ राय। वेख धरी **विवहारिया**, वेस्यानइं घरि जाय। —मां. कां. प्र.

उ०—३ प्रधांन लोक **विवहारिया**, राजलोक सहुअे सुखी।

च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनि नहीं कोय दुखी ।
—प. च. चौ.

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

विवहौलु, विवहालौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

उ०—बडुया सांभलि बांभण भणइ, ए विवहार नयरि अम्ह तणी। विद्यासिद्धी राखसु हूउ, वकनांमि छइ जम नइ दूउ ।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विवाह' (अल्पा., रू. भे.)

विवहु—देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—पंण सग वेय मयंक वरसि माहह छण वासरि, भांणुमल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि । नंदि ठविय विरिंयारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिद्ध किद्ध मगलु विवह प्परी ।
—अभय यतिक यती

विवांण—देखो 'विमांण' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ सौंठ सुहावै जायजे, चढजै गुध विवांण । रजी न लागै लूगड़ां, पंथ तूठै असांण । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सातमै पाताल वासंग नाग रै माथै टपूकड़ा खाईनै रहिआ छै। त्यांरी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोड़ि देवता सरग सूं हलूस नै उतरै देवासुरां रा विवांण हिलोरव खाइ नै रहिआ छै ।
—रा. सा सं.

उ०—३ झळहळ खेड़ि विवांणां झोकां, सुर हुय इम जाऊं सुर-लोकां । इम बोलै मेड़तिया अडुर, धुर जोधार पुछै पाटोधर ।
—सू. प्र.

उ०—४ दुरत गत डांण उसरांण सिर दियंतौ, लियंतौ फुरलबौ थाट लाहौ । सुतन 'गजबंध' सुर कांमणी संपेखै, विवांणां ठांभियौ खाग-वाहौ । —अग्यात

उ०—५ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहंग धरि बीच मावै नहीं, सुरै विवांण संबाहिया । —पी. ग्रं.

उ०—६ इळ वाज वजावै ऊपडता, रिणतूर नसां भिळनै रुडता । डांसां किरि पाउ पलव डहै, वाजिद्रक वेग विवांण वहै ।
—गु रू. व.

विवांणणौ, विवांणबो—क्रि. स.—प्रसव करना ।

उ०—इसउ हिंदू राजा उपकंठि कउण जिकइ मनि पातिसाह की रीस वसी, कउण का माथा तइं खिसी ? कउण हइ दई रूठउ ? कउण की माई विवांणी, जू सांमउ रहइ अणी पांणी ?
—अ. वचनिका

विवांणियोड़ी—भू. का. कृ.—प्रसव किया हुआ ।

विवांणि, विवांणी—सं. स्त्री.—१ अप्सरा ।

उ०—विवांणी झंप उरध्धी काळ, विहंगम रंभ मिळी वेताळ । दिली खुरसांण विभाडचौ ढाल, मनाव्यौ मोटौ रावळ 'मांल' ।
—राऊ जैतसी री रासौ

२ देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—चौत्रांग दमूड़ी छोहि चक्कि, फरहरइ फउरि फिरियउ फरक्कि । वाबुलउ वाघ वांणी वखांणि, वाजिन्नि चडिय चडिसइ विवांणी । —रा. ज. सी.

विवाई—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

विवाद—सं.पु. [सं.] १ किसी बात या विषय हेतु किया जाने वाला तर्क, वाद, झगड़ा ।

उ०—१ विवस्था विखाद वाद वाद को विवाद वाढचौ, मेटन फिसाद याद कीनौं जस जापी को । प्रबळ प्रधांन पणौ देण जसवत प्रभू, जैपुर तै लीनौं टेर 'पातल' प्रतापी को । —ऊ. का.

उ०—२ बली दोय सावां रै आपस में अड़बी लागी अनै ऊ कहै तूं लोलपी । ऊ कहै तूं लोलपी । इम परस्पर विवाद करता करता स्वांमी जी कनै आया तौ पिण विवाद छोडै नहीं ।
—भि. द्र.

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ ।

२ शास्त्रार्थ ।

उ०—१ द्वादश गुरु, द्वादस सिस्य, जुमलै चौवीस कापाळिक हुवा है । उगर भैरव कपाळिक रै नै संकराचारय रै विवाद हुवौ है ।
—बां. दा. ख्यात

उ०—२ साधन काव्य कळा सुर साधत, वाद-विवाद करै मत वाधत । देह अनेह किता तप दाधत, विद्ध हरि गुण वाधत वाधत ।
—जैपुर नगर री वरणण

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ ।

३ सोच-विचार ।

उ०—थांरा दिन धकै पड़चा है, म्हे घणी दुनियां दीठी, फगत थांरौ उणियारौ निरखण सारू जीवण री साध पूरता हा । पण इण साध री आज माठ आयगी दीसै । आ विवाद री वेळा नीं है । —फुलवाड़ी

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ ।

४ जिद्द, आग्रह ।

उ०—ओ सिरदार डाकी नहीं है परंत अरियां नै खावण वाळौ है और डाकी होवै सो तौ केवळ फकत वार आयां अरथात सनेसर नें ही ज मारै नै ओ सिरदार तौ सदेव ही मारै और डाकी आपरां री रिछा करै नै दूजां नै मारै पण ओ डाकी सिरदार वदावदी विवाद कर निज आपरा रजपूत भाई बेटा तिकां नें जुद्ध में माराय

नांखे इण वासते डाकी डाकी नहीं डाकी औ सिरदार है सारां नै युद्ध में मारावरण वाळौ। —वी. स. टी.

क्रि. प्र.—करणौ।

५ युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।

उ०—१ ओपमा 'कर्मा' हरनाथ आद, वरवीर खळां मेटरण विवाद। मछरीक 'फतौ' गज घड़ मरोड़, 'अजबेस' 'लाल' पातल अनोड़। —रा. रू.

उ०—२ 'दोलौ' गोयंद हरां दुबाहौ, सुन जैसिंघ विवाद सगाहौ। 'सूरौ' 'खांन' तणौ ध्वज सूरां,आहव न वदै जिसौ अधूरां ।—रा. रू.

क्रि. प्र.—करणौ, चालणौ, होणौ।

६ न्यायालय में चलने वाला वाद, मुकदमा।

७ प्रतिस्पर्धा, होड़।

उ०—एक करइ रथ वाडिय, वाडिय माहि विवेकि। कुसुम विवादइं, चूंटइ, खूंटइ पल्लवि एकि। —जयसेखरसूरि

क्रि. प्र.—करणौ, चालणौ, होणौ।

रू. भे.—बिवाद, विवादु, विवादौ।

विवादक—देखो 'विवादी'

विवादी—वि. [सं. विवादिन्] १ किसी बात या विषय पर तर्क, वाद या झगड़ा करने वाला।

२ शास्त्रार्थ करने वाला।

३ सोच-विचार करने वाला।

४ जिद्द करने वाला, जिद्दी।

५ युद्ध करने वाला, झगड़ा करने वाला।

उ०—सेखा कांमखांनी कूंम दोनूं एम रूठा, दोनूं ही विवादी यौं विवादौ धारि ऊठा। —शि. वं.

६ न्यायालय में वाद चलाने वाला।

७ राग के स्वरूप को बिगाड़ने वाला वर्ज्य या वर्जित नामक स्वर। (संगीत)

८ संगीत का वह पक्ष जिसका किसी राग में बहुत कम व्यवहार होता है।

रू. भे.—विवादौ।

विवादु—१ देखो 'विवाद' (रू. भे.)

२ देखो 'विवादी' (रू. भे.)

विवादौ—१ देखो 'विवाद' (रू. भे.)

उ०—सेखा कांमखांनी कूंम दोनूं एम रूठा, दोनूं ही विवादी यौं विवादौ धारि ऊठा। —शि. वं.

रू. भे.—विवादु।

विवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—लाडणू वसै महाजन लोक चौपड़ां पड़ै बाजार चौक। है दरब जहूं लक्खूं हजार, वांणियां तणां चालै विवार —पे. रू.

विवाह—सं. पु. [सं. विवाह] १ हिन्दू धर्म के सोलह संस्कारों में से वह संस्कार जिसमें वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते हैं।

वि. वि.—ये विवाह निम्न आठ प्रकार के माने गये हैं—

(१) ब्राह्म विवाहः—वह विवाह, जिसमें शीलवान् और वेदाभ्यासी वर को बुलाकर कपडे व अलंकारों से वर-वधू का पूजन कर कन्या का विवाह किया जाता है।

(२) दैव विवाहः—वह विवाह जिसमें ज्योतिष्टोमादि यज्ञ में ऋत्विज (यज्ञ का कार्य कराने वाले) को विधि-पूर्वक अलंकारादि से सत्कार कर कन्या का दान किया जाता है।

३ आर्ष विवाहः—वह विवाह जिसमें कन्या का पिता वर से गाय व सांड का एक या दो जोड़े अपनी लड़की को देने हेतु धार्मिक भाव से (लड़की के मूल्य के रूप में नहीं) लेकर कन्या का दान करता था।

४ प्राजापत्य विवाहः— वह विवाह जिसमें कन्या का पिता पहले से ही संकल्प कर लेता है कि अमुक वर के साथ अपनी पुत्री का विवाह करूंगा तथा कन्यादान करते समय वर-वधू का पूजन कर अपने मुंह से कहता है कि तुम दोनों साथ रहकर धर्माचरण करो।

५ आसुर विवाहः— वह विवाह जिसमें वर की ओर से कन्या व कन्या के पिता को धन देकर स्वच्छन्दतापूर्वक कन्या को ग्रहण किया जाता है।

६ गन्धर्व विवाहः—वह विवाह जिसमें वर व कन्या कामासक्त हो कर स्वेच्छा से (माता पिता के बिना दान किये) एक दूसरे के साथ संयोग कर लेते हैं।

७ राक्षस विवाहः— बल पूर्वक कन्या का हरण करके किये गये विवाह को राक्षस विवाह कहते हैं।

८ पैशाच या पैशाच्य विवाह—वह विवाह जिसमें एकान्त स्थान व समय पाकर बेखबर, नींद में या नशे में बेहोश कन्या के साथ संभोग कर लिया जाता है। इसे अधम विवाह मानते हैं।

राजस्थान में विशेषतः राजपूतों व चारणों में एक विशेष प्रकार का विवाह किया जाता है। जिसमें वर को कन्या पक्ष वाले धोखे से पकड़ कर ले जाते हैं, और घर लेजाकर विवाह कर देते हैं।

२ उक्त संस्कार के अवसर पर मनाया जाने वाला उत्सव।

३ वह उत्सव जिसमें पुरुष व स्त्री वैवाहिक बन्धन में बन्धते हैं।

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या— किण ही सहर में च्यार बजाज री हाटां हुती। तिण में तीन तो विवाह गया। पाछे कपड़ादिक नां ग्राहक घणां आया। हिवै एक बजाज रहियौ तै राजी हुवै कै बेराजी। —भि. द्र.

उ०—२ हेमजी स्वांमी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वांमीजी नैं कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रौ व्यसन है। जद स्वांमीजी बोल्या—काचरियां रौ अटक्यौ किसौ विवाह रहे है। —सू. प्र.

४ उक्त उत्सव के अवसर पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।

५ बीसवें कल्प में उत्पन्न ब्रह्मा का रक्त नामक पुत्र।

रू० भे०—बिवाह, बिमां, बिमाह, बिया, बियाव, बियाह, बिवाह, बींया, बीवाह, बीमा, बीमाह, बीयाव, ब्यांव, व्याव ब्याह, भियाव, भ्याव, विमांह, विमाह, विमाहौ, वियाव, विहां, विहा, विहाव, वीमं, वीमांह, वीमाह, वीवा, वीवाह, वीहा वीहाव, व्यांह, व्याव।

अल्पा.,—विवहालु, विवहालौ, विवाहलु, विवाहलौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, व्यावड़ौ।

विवाहणौ, **विवाहबौ**—क्रि. स. [सं. विवाहनम्] १ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करना।

२ उक्त अवसर पर उत्सव मनाना।

३ पुरुष व स्त्री का वैवाहिक बंधन में बंधना।

उ०—१ तब घणौ आंणदित होई ससिपाल विवाहण चाल्यौ। ज्यौं ग्रंथि विखै गायौ छै। जितनौ एक परिगह कह्यौ छै। तिहिं भांति होय चाल्यौ। —वेलि टी.

उ०—२ जिम थांरौ खूनी जिकौ, किर बळभद्र कबंध। अठै विवाहण आंणियौ, सरणं में बळसंध। —वं. भा.

४ उक्त अवसर पर धार्मिक कृत्य करना।

विवाहणहार, हारौ (हारी), विवाहणियौ—वि०।

विवाहिओड़ौ, विवाहियोड़ौ, विवाहयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विवाहीजणौ, विवाहीजबौ—कर्म वा०।

बिआणौ, बिआबौ, बिबाहणौ, बिवाहबौ, बियाणौ, बियाबौ, बिहांमणौ, बिहांमबौ, बिहाणौ, बिहाबौ, बिहावणौ, बिहावबौ ब्याणौ, ब्याबौ, ब्यावणौ, ब्यावबौ बिमाहणौ, विमाहबौ, विहाणौ, विहाबौ, विहावणौ, विहावबौ, वीवाहणौ, वीवाहबौ वीहाणौ, वीहाबौ, वीहावणौ, वीहावबौ—रू० भे०।

विवाहलु, **विवाहलौ**—सं. पु [विवाह+लाप] १ किसी व्यक्ति विशेष के विवाह से सम्बन्धित काव्य।

वि. वि.—कई उक्त काव्यों में जीवन से सम्बन्धित लीलाएं भी दी हुई होती हैं।

उ०—सासनदेव तै मत धरिए, चउवीस जिन पय अनुसरीए। गोयस्वांमी पसायलुए, अनैं गा (इ) सि स्रीगुरुणी विवा लु ए। —ऐ. जै. का. सं.

रू. भे.—वियावलौ, व्यावलौ, विवहालु, विवहालौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, वीवाहलै, वीवाहिलु, वीवाहिलौ, व्यावलौ।

२ देखो 'विवाह' (अल्पा.,रू. भे.)

विवाहित—वि. [सं. विवाहिता] वह जिसकी शादी हो गई हो।

रू. भे.—व्याहत।

विवाहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार किया हुआ। २ उक्त अवसर पर उत्सव मनाया हुआ। ३ स्त्री व पुरुष का वैवाहिक बन्धन में बन्धा हुआ। ४ उक्त अवसर पर धार्मिक कृत्य किया हुआ।

(स्त्री. विवाहियोड़ी)

विवाहिलु, **विवाहिलौ**—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (अल्पा., रू. भे.)

विविंध्य—सं पु. [सं.] श्री कृष्ण के पुत्र चारुदेष्ण द्वारा मारा गया एक दानव।

विविंस—सं. पु. [सं. विविंश] १ विदर्भ राजकुमारी वदिनी व वीर राजा का पुत्र तथा सुप व प्रथमा का पौत्र एक सूर्यवंशी राजा; जो खनीनेत्र आदि पंद्रह लड़कों का पिता था।

विविंसति—सं. पु. [सं. विविंशति] धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भारतीय युद्ध में महारथी था और भीम के द्वारा मारा गया था।

२ चाक्षुप राजा का पुत्र एक राजा जो रंभ राजा का पिता था।

विविक्त, **विविक्तनांमा**—सं पु. [सं. विविक्तनामा] हिरण्यरेतस के सात पुत्रों में से एक, जो कुशद्वीप का राजा था।

विविक्षु—सं. पु [सं] अधिसोमकृष्ण का एक पुत्र जो शत्तानीक का पौत्र था।

विवित्त—सं. पु. [सं] वह स्थान जहां पर स्त्री, पशु और नपुंसक नहीं हो। (जैन)

विवित्ताहार—स. पु. [सं. विवित्त+आहार] विकृति रहित आहार। (जैन)

विवित्स, **विवित्सु**—सं. पु. [सं.] धृतराष्ट्र के शतपुत्रों में से एक, जो भीम के द्वारा मारा गया था।

विविद, **विविध**—सं. पु. [सं. विविद] कश का अनुचर एक राक्षस।

वि. [सं. विविध] तरह-तरह का, अनेक प्रकार का, भांति-भांति का। (सभा)

उ०—१ आदि अगम अविकार, एक ईस्वर अविणासी। पछै प्रकति तत पंच, विविध सुर इखजवासी। —रा. रू.

उ०—२ सुभ चित्र मंदिर चौक सुंदर, ओपि रुचि राय अंगणै । तन सदन सोभित करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणै ।
—रा. रू.

उ०—३ आपणा घरि कादम फेड़इ, बोजा काज मेड़ई । पार पार न लीइं, साध विहार न करीइं । अनेक जीव नीपजै, विविध धांन्य ऊपजै । लोकनी आस पूजै, गाय भैंस दूजै । इत्यादि ।
—रा. सा. सं.

उ०—४ ग्यांन ब्रह्म 'जसराज' गुण, उग्र तप करि पाविया । सार जसवंत आदि स्तुतिवर, विविध ग्रंथ वणाविया । —सू. प्र.

उ०—५ वरणव करूं सुमेर कौ, सब ही कंचन सार । रतन स्रंग राजत विविध, लख जोजन विस्तार । —गज-उद्धार

रू. भे.—बिबिध, बीवध, विवध, विवधि, विवह, विवहु, विविधि, विविह ।

विविधजांण-वि. [सं. विविध+ज्ञान] १ कवि, पंडित । (अ. मा.)

२ जिसने बहुत बातें सुन ली हो, बहुश्रुत ।

रू. भे.—विवधाजांण ।

विविधता-सं. स्त्री. [सं. विविध+ता प्रत्यय] विविध होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे.—विविधा ।

विविधविस्रांम-सं. स्त्री [सं. विविध=विबुध+विश्राम] स्वर्ग ।
(अ. मा.)

विविधि—देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—इंद्र कहि 'वरदांन थी, देखसि नहीं प्रतिहार । ईछाइ तूं दरसन देज्यै, देखी विविधि विहिवार । —नळाख्यांन

विविधेस, विविधेसर, विविधेसुर, विविधेस्वर-सं. पु. [सं. विबुध+ईश, विबुध+ईश्वर] १ कवि, पंडित, विद्वान ।

उ०—विरही वरहण घणमुंड व्यापी, केकी सुकळापंग कळापी । रथकुमार प्रक विखर चाया, विविधेसुर खग नांम बताया ।
—नां. मा.

२ ईश्वर ।

विविनणौ, विविनबौ—देखो 'विवनणौ, विवनबौ' (रू. भे.)

विविनणहार, हारौ (हारी), विविनणियो—वि० ।
विविनिअोड़ौ, विविनियोड़ौ, विविन्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विविनीजणौ, विविनीजबौ—भाव वा० ।

विविनियोड़ौ—देखो 'विवनियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विविनियोड़ी)

विविनौ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विविनी)

विविन्नणौ, विविन्नबौ—देखो 'विवनणौ, विवनबौ' (रू. भे.)

उ०—'सूरजम' (ळ) गौ सरगि, साह निव्वाज विविन्नौ । मन तुरकां हिंदुवां, तांम वैराग उपन्नौ —गु. रू. बं.

विविन्नणहार, हारौ (हारी), विविन्नणियो—वि० ।
विविन्निअोड़ौ, विविन्नियोड़ौ, विविन्न्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विविन्नीजणौ, विविन्नीजबौ—भाव वा० ।

विविन्नियोड़ौ—देखो 'विवनियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विविन्नियोड़ी)

विविन्नौ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

विविह—देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—१ बारअट्ठुतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ, जिणेसर सूरि पइसरइ संघु सयलु विवह सज्जइ । सूरिमंतु सिरि सव्वएवसूरहि जसु दिनउ, जालउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव कीनउ,
—ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ इण परि बिहूं तीरथंकराए, चिरपालीराज विविह पराए । जांणी अवसर सार ए, बिहु लीधौ संजम भारए ।
—वृ. स्त.

विवुध—देखो 'विबुध' (रू. भे.)(अ. मा., डिं. नां. मां., ह. नां. मा.)

विवुधपुर-सं. पु. [सं. विबुधपुर] स्वर्ग ।

विवुधप्रिय, विवुधप्रिया-सं. स्त्री. [सं. विबुधप्रिय] १ अप्सरा, देवांगना ।

२ देखो 'विबुधप्रिया' (रू. भे.)

विवुधबन, विवुधवन—देखो 'विबुधवन' (रू. भे.)

विवुधबैद्य-सं. पु. [सं. विबुधवैद्य] देवताओं के वैद्य, अश्विनिकुमार ।

विवुधालय—देखो 'विबुधालय' (रू. भे.)

विवुधेस—देखो 'विबुधेस' (रू. भे.)

विवुह—देखो 'विबुध' (रू. भे.)

विवेक-सं. पु. [सं.] १ भले-बुरे या सत-असत का ज्ञान ।

२ भले-बुरे या गुण अवगुण को पहिचानने की शक्ति ।

उ०—जै भंगी री भीटी तौ न खादी नें भंगी री कीवी खाधी तिण सूं उणनें विवेक रौ विकल जांणै । ज्यूं ग्रहस्थ कमाड़ खोलनें देवे ते तौ लेवे नहीं अनें अंधारी रात्रि में हाथ सूं कमाड़ जड़ै उघाड़ै तिण रौ संक आंणै नहीं । —भि. द्र.

३ समझ, ज्ञान, बुद्धि ।

उ०—१ भव सह हरै निजर भर, कर कर गहर विवेक । सर 'प्रताप' नर तौ समौ, अवर आज नह एक ।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ लूटेहि लेत विवेक का डेरा, बुद्धिवळ यदपि करूं बहु-

तेरा। हाय रांम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूं बिवस प्रभु धावड सवेरा। —मीरां

उ०—३ घर चोड़े सरवर विपन, विंधाचळ दिस एक। च्यार महूरत उत्तरे, धारस मंत्र विवेक। —रा. रू.

उ०—४ आठूं ई मिसल के कमंध महाबाह, जाकी सुण मांनी वांनी विखै की सलाह। चाळै में अग्रकारी अनेक सा एक, रांम दळां मेळ जांणे नील को विवेक। —रा. रू.

४ सत्यज्ञान।

क्रि. प्र.—करणौ, धरणौ, धारणौ, राखणौ, होणौ।

रू भे.—बवेक, बमेक, ववेक, बिवेक, बिमेक, विवेक, वमेक विमेक, विमेख।

अल्पा.—विवेकौ।

विवेकजोग, विवेकजोग्ग–सं. पु.—स्त्री पशु व नपुंसक अर्थात मन में विकृति पैदा करने वाले किसी पदार्थ का संसर्ग न होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—विवेगजोग, विवेगजोग्ग।

विवेकता–सं. स्त्री. [सं. विवेक+ता प्र०] विवेक की अवस्था या भाव।

विवेकनारायण–वि.—विवेकशील।

उ०—तीणि नगरि, सामंत मडलेस्वर मंत्रि महामंत्रि स्रेष्ठि सारथवांहपुत्र दंडाधिपति ग्रहकप्रमुख लोक सेव्यमांन अनीति निरनासन गरुयारंभ परनारीसहोदर बुद्धिमयरहर विवेकनारायण दांनै कव्यसन··· । —व. स.

उ०—२ ···एर अनेक रूप नरेंद्र, सच्यवाचां हरिस्चंद्र, निरभय भीम, आपन्न जीमूतवांहन, वाग्देवी विलास कास्मीर, विवेकनारायण, औदारयि बलि, सेवकजन कल्पतरु चतुरंग वाहिनी सेनासमुद्र, इसिउ राजा। —व. स.

विवेकवांन–वि. [स. विवेक+वांन्] जिसमें विवेक हो, अच्छे-बुरे को पहिचानने वाला, बुद्धिमान।

विवेकी–वि. [सं. विवेकिन्] १ विवेकधारी, भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला।

उ०—कहै सुखरांम सुणौ भाई साधौ, भेख भेख सब एक। त्याग वैराग गुरु गम गाढा, सोई जांण विसेख। भेद विवेकी रे,··· ········ —स्रीसुखरांमजी महाराज

२ बुद्धिमान, ज्ञानी।

३ न्यायप्रिय, न्यायशील।

रू. भे.—विवेकी।

विवेकौ—देखो 'विवेक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेकौ जी। मिच्छांमि दुक्कडं दीजियइ, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येकौ जी। —स. कु.

विवेग—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

विवेगजोग, विवेगजोग्ग—देखो 'विवेकजोग' (रू. भे.)

विवेचक–वि.—विवेचना करने वाला, विवेचनकर्त्ता।

विवेचन—देखो 'विवेचना' (रू. भे.)

विवेचना–सं. स्त्री. [सं.] १ भली-बुरी, सत्-असत् आदि का ज्ञान, विवेक।

२ तर्क-वितर्क, वाद-विवाद।

३ निर्णय, फैसला।

४ मीमांसा।

५ अनुसन्धान, अन्वेषण।

६ परीक्षण, निरीक्षण।

रू. भे.—विवेचन।

विवोगण, विवोगणि, विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

उ०—विरहणि विरह विवोगणी, दरसन कारणि पीव। विकळ भई विलंबै कहां, ताला वेली जी। —ह. पु. वां.

विवोढ–सं. पु. [सं. विवोढु] १ पति, खाविंद, भरतार। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ दुल्हा।

विव्वड़ा—देखो 'वरवड़ो' (रू. भे.)

विव्वांण, विव्वांणी—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—वाज पंख सीचांण, वाज विव्वांण उडाया। पवन आतुर पेरियै, जळद जांणे किरि धाया। —गु. रू. बं.

विव्वोक–सं. पु. [सं.] स्त्रियों के द्वारा संयोग के समय प्रिय का अनादर हेतु किया गया हाव। (साहित्य)

विव्हार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ लगती लहंगौ पहरि सुहागण, बीतौ जाइ विव्हार। घन जोबन दिन च्यार का, जात न लागै बार। —मीरां

विसंठुल–वि. [सं. विसंटुल] १ चंचल। (उ. र.)

२ विषम, विकट।

विसंड–सं. पु.—गणों के ईश, गणेश, गजानन। (क. कु. बो.)

विसंदरौ—देखो 'विसूंदरौ' (रू. भे.)

उ०—जळ अनळग वन वन गहन जाय, डाकणी पसु प्रेत न डराय। खेचरी चोर नाहर न खेद, विसंदरा वैरी दंबो विवाद। —रांमदांन लाळस

विसंन—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ कमळी भगत जीतौ कळह, त्रिपुरासुर जिसतांन तन । इमिरित वावि सोसी अलखि, विसंभ रूप वणियौ **विसंन** ।
—पी. ग्रं.

उ०—२ बखांणं जांणं एक **विसंन**, कहै मति कूरम मच्छ किसंन । कहै दत देव कपिल कल्यांण, तवै दसरथ तणं तुड़ितांण ।
— पी. ग्रं.

उ०—३ वडौ सहि थोकां हुंति **विसंन**, प्रमेसर मूझ समापौ पुन । प्रमेसर पार अपार अपार, नारायण नेह निमौ निरकार ।
—पी. ग्रं.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

विसंभ-सं. पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ समांणौ तूझ महीं घणस्यांम, राघव्व अम्हीणौ आतमरांम । सेवग्ग पयंपै तेजस मोह, **विसंभ** रखै हिव थाय विछोह ।
—ह. र.

उ०—२ **विसंभ** तूझ नां निमौ लीला विलासं, केहर तूझ वाल्हौ घणौ कविलासं । निगुण नाथ आदेस बलिरांम नागुं, त्रिगुण किसंन रा वीर तूं सरव त्यागुं ।
| पी. ग्रं.

२ श्रीकृष्ण ।

३ ऋषभावतार ।

उ०—१ पढि फरसरांम लखमण कपिलि, रिदं मुझ बळिरांम रहि । नारीयण **विसंभ** अवतार निजि, क्रिसन बुधि निकलंक कहि ।
—पी. ग्रं.

उ०—२ कमळी भगत जीतौ कळह, त्रिपुरासुर जिसतांन तन । इमिरित वावि सोसी अलखि, **विसंभ** रूप वणियौ विसंन ।
—पी. ग्रं.

वि.—भयंकर, डरावना ।

उ०—फौडा **विसंभ** फाड ए, तुरंग कोमंड ताड ए । कट्टक फौज कंठळा; अणी खिवंत साबळा ।
—गु. रू. बं.

रू. भे.—बिखंभ, बिसंभ ।

विसंभर—देखो 'विस्वंभर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ ब्रखभ कपिळ हैग्रीव **विसंभर**, दत्तात्रेय हंस दामोदर । राव बैकुंठ धनंतर रिक्खभ, गरुड़ारूढ विसन प्रसणीग्रभ । —ह. र.

उ०—२ भीर म्है जकां भीरी **विसंभर**, गांज कुण सकै जसराज रा गांव । राव एक थाप ऊथापिया रिडमल्लां, रिडमलां पुडदड़ी राखिया राव ।
—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

उ०—३ ध्रम रहसै, रहसै धरा, खिस जासै खुरसांण । 'अमर' **विसंभर** ऊपरै, राख नहच्चौ, रांण ।
—रहीम

उ०—४ स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण । ब्रज नायक विसवेस **विसंभर**, घणनांमी आणंदघण । —र. ज. प्र.

उ०—५ या औसर हरि का होय गहियै, भवर रच्या सौ भूधर कहिए । नाव **विसंभर** विसपति रावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा ।
—ह. पु. वां.

विसंभरा—देखो 'विस्वंभरा' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां मा)

विसंवाद-सं. पु. [सं.] वाद-विवाद, बहस ।

उ०—प्रीति परस्पर अतिघणी, एक जीव तनु दोइ । पिण निज निज मत नै विखै, **विसंवाद** नित होइ ।
—स्रीपालरास

विस-सं. पु. [सं. विष] १ शरीर में पहुँचने पर प्राण लेने या हानि पहुंचाने वाला पदार्थ, जहर, गरल । (ह. नां. मा.)

उ०—१ इयै भांत रहितां दो एक दिन नायण चलै कही कुंवर नं एक गोली बणायां छां तेसुं थे राजी हुसौ । तद कुंवर कह्यौ गोली बणाय । तद नायण **विस** गोली बणाय हर कुंवर नूं दीवी ।
—चौबोली

उ०—२ रावळ बुधसिंघ जगतसिंघ रौ पाट बैठो । पछै बुधसिंघ नै कहै छै सीतळा नीसरी थी, तिण में **विस** हुवौ । तठा पछै रावळ तेजसिंघ जसवंतसिंघ रौ पाट बैठो ।
— नैणसी

उ०—३ घर रा बेटां रै सिवाय दूजौ कुण चाटतौ । बाप रौ डील चाट्यां पछै दोनूं बेटां रै डील में **विस** फूटग्यौ, सेवट मरियां लार छूटी ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ ऊमड़ घटा अधियांवणी, वीज छटा छिब्र वाह । **विस** जिसडी लागै बुरी, निस पावस बिण नाह ।
—र. हमीर

२ सुख शांति में बाधा पहुंचाने वाला तत्व या बात ।

उ०—१ पथी एक संदेसड़इ, लग ढोलइ पौहच्याइ । विरह महा **विस** तन विसइ, ओखद दियइ न आइ ।
—ढो. मा.

उ०—२ चिड़णा अर कूटणा बिचै ई बेटी नै बाप री इण सुभराज अर कुरब कायदा रौ घणौ दुख व्हियौ । मिनख री आ गुलांमी तौ हवा अर उजास में ई **विस** घोळ देवैला ।
—फुलवाड़ी

३ कुटिलता ।

उ०—१ तौ ई जीवूंला जितै गुण मांनूंला कै थांरी प्रीत रै कारण म्हारै हिवड़ा रौ **विस** इमरत में बदळग्यौ । लुगाई रै रूप री अर पुरख रै प्रेम री आ इज तौ छैहळी मरजादा ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ तद वो अळगी भांम जायनै अेक दूजा गांव में आपरा डेरा-डंडा जमाया । नवां गांव में पेठ जमावण सारू वो मिसरी सूं ई मीठौ बोलण लागौ तौ ई उण रै अंतस रौ **विस** लोगां सूं छांनो नीं रहचौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ आ कालाई तौ बरसां तांई जूतां मारियां ई ठांणै नी आवै, इण वास्ते म्हैं तौ मुळगी ई माठ झालली । अवारू ई आ सोचनै मूंन धारी कै देखूं आप लोगां री जीभ में कित्तोक विस भरयौ है । —फुलवाड़ी

४ वैश्य; बनिया ।

५ दनायुष नामक असुर का पुत्र ।

६ एक प्रकार के देवगण ।

७ नकुलि देवी के द्वारा मारा गया एक असुर ।

८ कमल की नाल ।

९ जल, पानी ।

१० घी, घृत ।

११ सर्प, सांप ।

१२ अमृत ।

१३ सात उपधातुओं में से एक ।

१४ कड़वा या तीक्ष्ण तत्व या बात ।

क्रि. प्र.—उगटणौ, करणौ, खाणौ, घोळणौ, झरणौ, टपकणौ, देणौ, मारणौ, लेणौ, होणौ ।

रू. भे.—बख, बखम, बिख, बिस, बिसिया, विख, वख, वस वसव, विक्ख, विख, विसिया, विसु, वेख ।

१५ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—विस सुख मांहि रम रहै, माया हित चित लाइ । सोइ संत जन ऊवरै, स्वाद छाड गुण गाइ । —दादूवांणी

विसइ, विसई—१ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—भलां वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सांमांन्य वस्त्र पहरइ तौ दरिद्री, गोरौ आंमवातीउ, कालौ तौ कवाडि, कां वेचि तौ खात्रपाडउं, न वेचइ तौ भडंग, बिसइ तौ सद्धरम बहिस्क्रत, विसइ हीन तो नपुंसक । —व. स.

२ देखो 'विसयी' (रू. भे.)

उ०—१ थोडुं जमइ तौ भूंडउं ऊणाटउ, भलां वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सांमांन्य वस्त्र पहरइ तौ दरिद्री, गोरौ आंमवातीउ, कालौ तो कबाडि, कां वेचि तौ खात्रपाडउं, न वेचइ तौ भडंग विसइ तौ सद्धरम बहिस्क्रत, विसइ हीन तौ नपुंसक । —व. स.

विसकंठ—सं. पु. [सं. विषकठ] १ शिव, महादेव ।

२ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

मि०—"नीलकंठ" ।

विसकंभक—देखो 'विस्कंभ' (रू. भे.)

विसक—देखो 'विसिख' (रू. भे.)

उ०—पेख जण पोखतां अगन झाळां पड़ै, छछाळा सीत मंद सुगंध छूपै, कंपै नवजोबना इसक चाळा करै, फूलवाळा विसक पार फूटै । —लच्छीरांम बारहठ

विसकन्या—सं. स्त्री. [सं. विषकन्या] १ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ संभोग करने से संभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर में एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

२ नाग कन्या ।

उ०—१ दळपति कोई न दूजौ वरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियौ, राव तणै घरि लहीस वर । —दूदौ विसराळ

उ०—२ मैं परणंती परखियौ, सूरति पाक सनाह । धड़ि लड़िसी गुड़िसी गयंद, नीठि पड़ेसी नाह । नाह नीठि पड़िसी खेत मांझी निवड़, गयंद पड़िस गहर करड़ धड़ भड़ गहड़ । ।विढंतौ 'जसौ' विसकन्या वाखांणियौ, परणती कंथ चौ मुरड़ पहचांणियौ । —हा. झा.

रू. भे.—बिसकन्या, विखकन्या ।

विसकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

उ०—राजमहलूं कै अडाव अरस सेती अड़ै, मनू धवळागिर विसकरमा जड़ाव सूं जड़ै । जिस नगरी का राव दिल का दरयाव जिसकै भंडार परवरदिगार । —र. रू.

विसकांमणि; विसकांमणी—सं. स्त्री. [सं. विषकामिनी] नाग कन्या ।

उ०—१ सिणगारी सन्नाह सूं, विसकांमणि वरियांम । वरि आई हाला वरण, करण महा जुध कांम । कांम संग्रांम ची हांम जुध कांमणी, घणा नर जोवती भोमि आई घणी । महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तूं, सवळ धड़ कड़तळां घणा सन्नाह सूं । —हा. झा.

उ०—तूटै हार अपार तुरंगम, पहुटति मांग अनंग पड़ी । कमधज 'रतनै' स्यूं विसकांमणि, चाचरि चवरंग पलंगि चढि ।
—दूदौ विसराळ

२ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ संभोग करने से संभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर में एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

रू. भे,—विसकांमणि, बिसकांमणी ।

विसकुंभ—सं. पु. [सं. विषकुम्भ] फलित ज्योतिष के २७ योगों में से प्रथम योग का नाम ।

विसकुट, विसकूट, विसकूठ—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

विसक्ख—१ देखो 'विसिख' (रू. भे.)

उ०—उभै दळै उचारयं, मचै सु मार मारयं । विसक्ख पारवारयै, भड़ां सनाह भारयै । —रा. रू.

उ०—२ कर मूठ धनंखं छूट विसक्खं, लेखा पक्खं नर लक्खं । वध सूर हरक्खं, और विलक्खं चाव परक्खं रवि चक्खं । —रा. रू.

२ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ आठ गुरु पद छद, जिण विद्युन्माळा अक्ख । गुरु लघु क्रम अठ वरग पद, सौ मल्लिक विसक्ख । —र. ज. प्र.

उ०—२ भेद च्यार जिण रा भणौ, आद वेलियौ अक्ख । कवी सोहणौ खुड्द कह, वळ जांगड़ौ विसक्ख । —र. ज. प्र.

विसक्रमा—सं. पु. [स. विश्व+कर्मिनि] १ सूर्य, सूरज, भानु । (क. कु. बो., नां मा.)

२ देखो 'विश्वकरमा' (रू. भे.)

उ०—१ इणि जांइगा वारह दिनां रौ मुकांम कीजै । ज्यूं इतरा माहै अगनि सिनांन करी सति ही आवै । महाराज मांनी । हांजी दुलह क्यूं चालै विगर जांनी । वैकुंठनाथ विसक्रमा कूं हुकम किया । —र. वचनिका

उ०—२ गज कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतंग महल अटाळा । संपेख धांम वांम, विसक्रमा विभ्रम भवेत । —गु. रू. बं.

विसख—देखो 'विसिख' (रू. भे.)

उ०—१ वहि सुबाहु एकणि विसख, मारीचै मुरझाय । —रांमरासौ

उ०—२ दिस किरण पुरब अरक दरसै, दिखण कमधज दरसिया । असुरांण दळ सिर असंख अणगम, विसख घण जिम बरसिया । —रा. रू.

उ०—३ आगै सेर विलंद सेन सनमुक्ख चलायौ, दळ जादव ऊपरा जांण नाळब दरसायौ । कुहक बांण हथनाळ विसख वरखै तिण वारां, ब्रति स्रांमण वद्दळां जांण घण मत्तौ धारां —रा. रू.)

उ०—४ तौ करू अरियण तेण कण कण, हरख मारू विसख हण हण । विकट पुरू मनावंछन, गहर गुण गाजै । —र. रू.

विसखधांम—सं पु [सं. विशिख धांम] १ तरकश । (अ. मा.)

विसखपर, विसखपरौ, विसखप्पर—सं. पु. [सं. विषकर्परा] १ कीचक के लिये प्रयुक्त विशेषण सूचक शब्द ।

उ०—विसखप्पर कीचका बकु, हिडंबु कमीरू मारिउ । लहु बंधवि अरजुनि दुन्नि, वार तुह जीउ ऊगारिउ । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'बिसखपरौ' (रू. भे.)

विसखुट, विसखूट—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

विसघातक, विसघाती-वि. [सं. विष+घातक] जिससे विष का प्रभाव दूर हो जाय ।

विसटर – देखो 'विस्टर' (रू. भे.)

विसटाळ, विसटाळु, विसटालु, विसटाळू, विसटाळौ—देखो 'विस्टाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ केय कहै भिड आयौ कंठीर । विस्टाळ कहै कोय वडौ वीर । जिण वार तमंक पाबु जवांन, विसताळ भडै खेग गैठ वांन —पा. प्र.

उ०—२ जगपत जोय जहाज, कुळ जोइयां कतळत करत । ए विसटाळु आज । दाखै कुण मेलत 'दला' । —गो. रू.

उ०—३ विसनसिंघ जद भेजिया, विसटाळू उणबार । कमध हूंत कंहाविया, चोकस सम्माचार । —पे. रू.

उ०—४ विसटाळू आया वहै, जींद कनै सब जांण । कहिया बूढे रा कथन, बकियौ जायल रांण । —पा. प्र.

उ०—५ आलोची रातै रे, कहस्यां परभातै रे, जातै रहवातै सुख हम तुम सही रे । पाउधारेंउ डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे, विसटाळु चर पाछा फिरै इम कही रे । —प. च. चौ.

उ०—६ धरा सहरि ऊधमै, जोध खिजिया जमजाळा । कूंभरांण ओदकै, वीच फेरै विसटाळा, —सू. प्र.

उ०—७ विढै एम बेखियौ, इता एकण घर वाळा । वड वड भड़ां विचारि, वीच फेरै विसटाळा । —सू. प्र.

उ०—८ 'सूर' पांन लै साह रा, अयौ करण अखियात । घर मुदफर सिर छत्र धर, विसटाळा री वात । —सू. प्र.

उ०—९ अम्हूं विसटाळै आवियौ, लग ज्यां हिज लारै । कंटक सुणि अंगद कहै, पित तूझ प्रकारै । —सू. प्र.

विसटियौ—देखो 'बिसटी' (अल्पा. रू. भे.)

उ० –वित ले जावै विसटिया, पांण चकारां पाड़ । मारौ ज्यांनै मोटवी, सगत त्रसूलां चाड़ । —पा. प्र.

विसटी—सं. पु [सं. विष्टि] १ ज्योतिष में ग्यारह करणों में से सातवें करण का नाम ।

२ पुरस्कारहीन या बिना पारिश्रमिक का कार्य, बेगार ।

वि.—१ दुष्ट आततायी ।

२ देशद्रोही, उपद्रवी ।

३ डाकू, लुटेरा ।

रू. भे.—बिसटी ।

अल्पा.,—विसटियौ ।

विसटौ—देखो विस्टौ' (रू. भे.)

उ०—कागां केरी चांच ज्यूं, चुगलां केरी जीह । विसटा ज्यूं परची बुरी, चूंथै सबही दीह । —बां. दा.

विसठ—सं. पु. [सं. विशठ] बलराज एवं रेवती के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

विसठौ –देखो 'विस्ठौ' (रू. भे.)

विसरण—देखो 'विसरणु' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा विसरण महेसवर तौ सेव कराही । गत अमांमी ताहरी, को जांणै नांही । —गज उद्धार

विसणाड़णौ, विसणाड़बौ—देखो 'विणासणौ, विणासबौ' (रू. भे.)

विसणाड़णहार, हारौ (हारी), **विसणाड़णियौ**—वि० ।

विसणाड़िग्रोड़ौ, विसणाड़ियोड़ौ, विसणाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसणाड़ीजणौ, विसणाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विसणाड़ियोड़ौ—देखो 'विणासायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसणाड़ियोड़ी)

विसणाडणौ, विसणाडबौ—देखो 'विणासणौ, विणासबौ' (रू. भे.)

उ०—अलूखांनि विसणांड़िउं काज, कटक मरावी आव्यउ आज । करइ वात इम सारू राज, अलूखांनि जो आंणी लाज । —कां. दे. प्र.

विसणाडणहार, हारौ (हारी), **विसणाडणियौ**—वि० ।

विसणाडिग्रोड़ौ, विसणाडियोड़ौ, विसणाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसणाडीजणौ, विसणाडीजबौ—कर्म वा० ।

विसणाडियोड़ौ—देखो 'विणासायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसणाडियोड़ी)

विसणु—देखो 'विसणु' (रू. भे.)

विसतंत्र—सं. पु. [सं. विषतंत्र] सांप आदि विषैले जानवर के विष को दूर करने की क्रिया । (वैद्यक)

विसत—देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)

उ०—अपनै काज करै गउ विसमल, जीव सरै पुंहचावै । काजी विसत हाथि है तेरे, तौ कुल दोजख क्यूं जावै । —अनुभववांणी

विसतर—देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—लाखा भाटी की अर्ज साखा विसतर का, कांटै मोती पोविया वन हैम वर का । जल्ला गहांणी जिसा जग कीरत कर का, गावै जिस दा गीतड़ा अब ही घर घर का । —दुरगादत्त बारहठ

विसतरणौ, विसतरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रसनां नाभ सबद संचरिया, तन मन वचन सहज विसतरिया, उलटि अछर अणअछर होई, सुरता बकता लहै न कोई । —अनुभववांणी

उ०—२ विसतरी बात सारी विसव, अणकारी उतपात सी । अजमेर कांन अवरंग नैं, सुण लग्गी अत घात सी । —रा. रू.

उ०—३ महा ढहोली मेदनी, विसतरियौ तिण वार । साह तपस्या आगली, अकबर सेन अपार । —रा. रू.

उ०—४ गम पडै एम इण गीत री, इम पिंगळ कवि उचरै । हेक गुर घटै दुइ लुघ दुई तिम तिम नाम विसतरै । —पिं. प्र.

उ०—५ कमधज्ज तजै मनमोह कायाचौ, वीर तिसोह विसतरियं तत लै निरवांण क राज तियाग, गोपीचंद भरत्थरियं । —गु. रू. बं.

उ०—६ दाड़िमी बीज विसतरिया दीसै, निउंछावरि नांखिया नग । चरणे लुंचित खग फळ चुंबित, मधु मुंचति सींचति मग । —वेलि

विसतरणहार, हारौ (हारी), **विसतरणियौ**—वि० ।

विसतरिग्रोड़ौ, विसतरियोड़ौ, विसतर्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसतरीजणौ, विसतरीजबौ—कर्म, भाव वा० ।

विसतरबंद—देखो 'बिस्तरबंद' (रू. भे.)

विसतरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसतरियोड़ी)

विसतरियौ, विसतरौ—देखो 'बिस्तर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पाछौ पड़ड्यलो मिल्यौ—कदै ही नहीं ! कदै ही नहीं ! तौ म्हैं अठै क्यूं हूं ? दूजी दुनियां बळगी के ? एक दिन री बात थोड़ी ही है ? जिंदड़ी रो सवाल है । मूली बोरिया-विसतरा उठाया, बांध्या अर चढी, रातरै पल्लै ! पेमजी आपरै तल्लै-बल्लै । —दसदोख

विसतार—सं. पु.—१ समूह, झुण्ड । (अ. मा.)

उ०—सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारां, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारां । गिरध चील गोमायु, विरक जंबू रसवाया, काक कंक कौ गिणै, आस पळ संभळ आया । —रा. रू.

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ सु वसंत आइ हित देने दुख दूरि कीयौ । वेली थी सु व्याई । साखा व्रख्यां की पसरी छै । सु जांणां बाहां की ओलादि वैसाख हुई । वैसाख मासि साखां कौ विसतार हुओ । —वेलि टी.

उ०—२ रांम नांम निज मूळ है, और सकळ विसतार । जन-हरिया फल मुगति कु, लीजै सार संभार । —अनुभववांणी

उ०—३ तीन लोक मंडप विसतारा, जा विच आय जाय ससारा । वाकै परै अभंगीराया, आसण एक अटल मट छाया । —अनुभववांणी

उ०—४ औरंगसा पातसा आसुर अवतार, तपस्या कै तेजपुंज एक से विसतार । माप का विहाई सा प्रताप का निदांन, मारतंड आगै जिसी जोतसी जिहांन । —रा. रू.

उ०—५ पोळि पोळि उच्छव प्रबळ, वेदोकति **विसतार**। राजा तखत विराजियौ, सुभ चोकीस्रंगार। —रा. रू.

उ०—६ वड़ी रिधि तणै **विसतारै**, पुर बाहिर हिव पधारै। आवै धरता आंणंद, जिहां त्रिगड़ै स्रीवीर जिणंद। —ध. व. ग्रं.

उ०—७ आठ गायत्री ब्रह्मा नै दीवी, रजोगुण **विसतारा**। चार वेद पिछाड़ी दीना, कर उत्पत्ति संसारा।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—८ मिटै चोर मारग, जोर प्रगटै व्यापारां, वधि वसती रन; वनै वेळ वरती ऊदारां। वडै क्रोध **विसतार**, रीछ सांबर घर रोणा। जठै सिंघ सद्दता, तठै गरजंत बिलौणा। —रा. रू.

उ०—९ आगै जाइ गुजराति री वेढि की। वेढि जीपि अर पातिसाहजी सीकरी फतेहपुर पधारिया। इण बात रो **विसतार** आगै कहीजसी। —द. वि.

विसतारक—देखो 'विस्तारक' (रू. भे.)

विसतारण—देखो 'विस्तारण' (रू. भे.)

उ०—१ कुळ देबी ग्रह पूज सकारण, विजन नव नेवज **विसतारण**। धूप अगर दीपक सुभ धारण, अन देवां धन सेव अपारण। —रा. रू.

उ०—२ धर अंबर ढक्कियण, वेद ब्रह्मा **विसतारण**। त्रिभुवन तारण-तरण, सरण असरण साधारण। —ह. र

विसतारणौ, विसतारबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चुगली **विसतारत** चुगल, सांप्रत होय सचेत। सौ मुरदार सरीर री, लट मुख मांभल लेत। —बां. दा.

उ०—२ वात वळै असुरां **विसतारी**, धर दिस असट दिलासा धारी। कितराई सुण अमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा। —रा. रू

उ०—३ पर हूंता जिम पसर, धरा फणधर उर धारै। पवन जोर पेरियौ, वहै वद्दळ **विसतारै**। नाग राग पेरियौ, प्रांण पैलां वलि थप्पै। दास हुकम पेरियौ, जास पति धरै सजप्पै। —रा. रू.

उ०—४ भार उतारै भोमि, अवधि संदेह उधारै। वसै रांम वैकुंठ, विमळ जग जस **विसतारै**। —सू. प्र.

उ०—५ हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकंता नवि हारै। सुंडादंड सबल **विसतारै**, मद उनमत्ता मारै हो। —वि. कु

विसतारणहार, हारौ (हारी), **विसतारणियौ**—वि०।

विसतारिओड़ौ, विसतारियोड़ौ, विसतारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विसतारीजणौ, विसतारीजबौ—कर्म वा०।

विसतारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसतारियोड़ी)

विसतारी—देखो 'विस्तारी' (रू. भे.)

विसतारौ—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—चारित्र ऊपर चाव हमारो, वचन न लोप्यौ एकज थांरो। तिण सुं एह हुवौ **विसतारौ**, पिण विरक्त नै कुण राखणहारौ।

—जयवांणी

विसत्तरणौ, विसत्तरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—करि थांन छठै प्राकृत कहूं, विधि आ घणी **विसत्तरूं**। सर रचि प्रताप 'अभमाल सह,' इम खटभाखा उच्चरूं।

—सू. प्र.

विसत्तरणहार, हारौ, (हारी), विसत्तरणियौ—वि०।

विसत्तरिओड़ौ, विसत्तरियोड़ौ, विसत्तरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विसत्तरीजणौ, विसत्तरीजबौ—भाव वा०।

विसत्तरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसत्तरियोड़ी)

विसथरणौ, विसथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—मरदिया जेम जगमल्लमल्ल, ढंढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, संभळइ सत्त **विसथरई** वत्त।

—रा. ज. सी.

विसथरणहार, हारौ (हारी), **विसथरणियौ**—वि०।

विसथरिओड़ौ, विसथरियोड़ौ, विसथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विसथरीजणौ, विसथरीजबौ—भाव वा०।

विसथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसथरियोड़ी)

विसथार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ नमौ नर सुरां नाथ निरगुण नरेसुं, नमौ सेभ थारै हुऔ नाग सेसु। नमौ बिसन **विसथार** अधिकौ वणायौ, निमौ जोनि ब्रह्मा जिसौ पुरुख जायौ। —पी. ग्रं

उ०—२ करतार मेह करंति, भ्रम चिहुं रसा वरसंति। परमेस पार अपार, वैराट घट **विसथार**। —पी. ग्रं

विसथारणौ, विसथारबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

विसथारणहार, हारौ (हारी), **विसथारणियौ**—वि०।

विसथारिओड़ौ, **विसथारियोड़ौ**, **विसथारयोड़ौ**—भू० का० कृ०।

विसथारीजणौ, विसथारीजबौ—कर्म वा०।

विसथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसथारियोड़ी)

विसद—वि. [सं. विशद] १ निर्मल, साफ, स्वच्छ, पवित्र।

उ०—कह कारखांना गिणत कुण कुण, संभ्रमैं तिहूंलोक सुण सुण। विसद जग उजवाळ विरदां, सत्रा सांभण सूर।
—र. रू.

२ सफेद रंग का, चमकीला, उज्जवल (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

३ स्पष्ट।

४ शान्त, स्थिर, निश्चिन्त।

उ०—सुखारथी स्वारथी जै स्वसुख दुख प्रान्थी बच सदैं, बढै जी विद्यारथी विसद परमारथी वच सदैं। प्रचंड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमंड प्रद प्रभौ, वितंड प्रोद्दंड प्रनत दुख खड प्रद विभौ —ऊ. का.

५ सुन्दर, मनोहर।

सं. पु—१ सफेद रंग।

२ शंख। (अ. मा.)

३ जयद्रथ राजा का पुत्र एवं सेनजित राजा का पिता एक राजा।

रू. भे.—बिसद।

विसदता–सं. स्त्री. [सं. विशद+ता प्रत्य] विशद होने की अवस्था या भाव।

विसदसरीर–सं पु [सं. विशद+शरीर] चन्द्रमा, चान्द। (नां. मा.)

विसधर–सं. पु. [सं. विष+धर] १ सर्प, सांप।

उ०—हुण विसधर विसधर बचौ, आग बुझाय अंगार। पिसण मार सुत पिसण रौ, असमझ लियौ उबार। —बां. दा.

२ गोह।

३ शेषनाग।

४ महादेव, शिव, शंकर।

रू. भे.—अखधर, बखधारी, बिक्खधर, बिखधर, बिखहर, बिसधर, बिसहर, विक्खहर, विखधर, विखधार, विक्खधारी, विखहर, विसधार, विसधारी।

विसधात्री–सं स्त्री.—मनसादेवी जो जरत्कारु ऋषि की स्त्री थी।

विसन–सं. पु [सं. वैश्वानर] १ आग, अग्नि।

उ०—मैं तौ प्रीत करी परमातम, पावक देख पतंगा। परमातम पर दुख निवारैं, उ जळत विसन कै संगा। —अनुभववांणी

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे.) (ना. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ रांम नांम सब ही कुं आख्यौ, ब्रह्मा विसन महेसुर भाख्यौ। सोई नांव कह्यौ पारबती, आयौ भेद रिख नारद ती।
—अनुभववांणी

उ०—२ भगवत सुतण हुओ ब्रहुँ भुवणं, घण दीहां लग नांम धणौ। ब्रहमा विसन महेस वदीतौ, तप तुंगिम जस तूझ तणौ।
—गोपाळ मीसण

उ०—३ तांण मूंछ तोलै तिजड़, विसन सकति कर वंद। कूच नगारां हुय कटक, चवै हुकम जयचंद। —सू. प्र.

उ०—४ सुणे पौकार विसन सळसळिया, रत चखि भ्रकट कोट बोम रळिया। प्रळै काळ रौ विखतौ पावक, प्रगटै जोति पिंड प्रम भावक। —मा. वचनिका

उ०—५ ब्रहमा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वप्प किय। रिदय निलाट अरि नाभि हूं, ब्रहमां विसन महेस थिय।
—रा. वंसावळी

३ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

उ०—१ कइ अम्है सत विसन आचरियां, कइ परनंदा कीधी। कइ अम्हैं दीनदया नवि पाली, लांच अयुगती लीधी।—कां. दे. प्र.

उ०—२ एक सहर, तै मांहै वडो राजा। पिण राजा नूं सिकार रौ घणौ विसन। नित्य सिकार चढै। मारै तौ हेक हिरण पिण सारी ही रोही रा हिरण घेचै, चरण देवै नहीं।
— बूढो ठग राजा री वात

उ०—३ माझी खिणक मिजाज, बै अदबी सातूं विसन। लोभ घणौ कम लाज, पैलां घर वांछै पिसण। —बां. दा.

उ०—४ जग मांझल चुगली जिसौ; हींण विसन अन है न। विण चुगली भुगतै विथा, चुगली कीधां चैन। —बां. दा.

विसनदेव - देखो 'विस्णु'

उ०—नागै हुय असनांन कराया, विसनदेव का नांव धराया। तुं तौ आस पास कुं नाळै, अलख रह्यौ आखि दै ठाळैं।
—अनुभववांणी

विसननाथ—देखो 'विस्णु'।

उ०—नरां नांव वाजतां नगारां, आयौ पुहकर दळां अपारां। विसननाथ आयां दिन वळिया, पुहकर गुरां तणा दुख पुळिया।
—रा. रू.

विसनपथ - देखो 'विस्णुपथ' (रू. भे.)

विसनपद—देखो 'विस्णुपद' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

विसनपरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

विसनपरौ—देखो 'विस्णुपुरौ' (रू. भे.)

उ०—झूठा खांणा बकणा, ए जमपुर का कांम। हरीया सुवचन साचका, विसनपरा विसरांम। —अनुभववांणी

विसनपुर—देखो 'विस्णुपुरौ' (रू. भे.)

विसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

विसनपुरौ—देखो 'विस्णुपुरौ (रू. भे.)

विसनप्रिया—देखो 'विस्णप्रिया' (रू. भे.)

विसनर, विसनरु—१ देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.) (उ. र)

उ०—१ दूखणियां गदबड़ै, घाव डूंगा घळ जावै। **विसनर** सूं जळ जाय, लाल लोई कढ आवै। जळ में पांन उकाळ, धपटवा धाव कुवावै। कीड़ा पड़ै न कोय, पीड़ आखी झड़ जावै।

—दसदेव

उ०—२ विहुंगै हुवौ न चीनौ **विसनर**, भव ही तणौ न आयौ भागि। धड़ 'धमळोत' तणौ खग-धारां, लिगि लिगि गयौ अंगारां लागि। —ईसरदास बारहठ

उ०—३ राति चालइ राउ मागि सुरंगह कुणबि सउं, दियउ पुरोहितु दाउ लाखहरइ **विसनरु** ठवइ। —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—सिव ब्रह्मा **विसनर** कहैं, संत भरैं सब साखि। रांम नांम एकौ भला, हरीया हिरदै राखि। —अनुभववांणी

विसनसांमी-सं. पु.—वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी।

उ०—१ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला तो खांन कटणा सु हुयौ थौ नै पछै मोती बाई करायौ तिण में बेरी १८६६ में **विसनसामियां** सारा सांमल होय नै कराई। —मारवाड़ री ख्यात

विसनासन-सं. पु. [सं. विस्णु+आसन] १ गरुड़।

२ शेषनाग।

वि. पु. [सं. विष+नाशन्] विष का नाश करने वाला।

विसनिर, विसनिरु—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

विसनी, विसनीउ—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

उ०—१ विसन बिनां दस बीस बरस, बिच मरणौ सूरग सिधांणौ। **विसनी** नर सौ बरस जियै वपु, पूगै नरक पयांणौ।

—ऊ का.

उ०—२ गव्रची थाइ गालडा, अनइ करमाइ काय। आगलि ऊभउ **विसनीउ**, थूंकत थूंकत जाइ। —मा. कां. प्र.

विसनु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.) (अ. मा.)

विसनुकवच—देखो 'विसनुपजर'।

विसनुपंजन, विसनुपंजर-सं. पु. [सं. विष्णु+पंजर] १ विष्णुस्तोत्र जो रक्षार्थ पढ़ा जाता है।

२ विष्णुस्तोत्र जो ताबीज के रूप में भुजा पर धारण किया जाता है।

रू. भे.—पंजरविसन, पंजरविसनु।

विसनोई-सं. पु.—१ एक सम्प्रदाय विशेष, जिसके प्रवर्त्तक जांभोजी थे।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे.—बिसनोई, बिस्नोई।

विसनौ—देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—विन भजन कहे तूं **विसनौ**, वडौ थूळ सरिखौ छां। पीरदास कूड़ बोलै प्रभु, दास नहीं कहैं दास छां। —पी. ग्रं.

विसन्न—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ क्रपाळ विसाळ सिंघाळ किमन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ **विसन्न**। मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस। —ह. र.

उ०—२ वंदै पग लच्छि सहेत **विसन्न**, समीपमुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तूझ तणौ अत भाग। —सू. प्र.

उ०—३ उदोत तपोनिध त्रेगुण ईम, अजीत जरा अत जोग अधीस। **विसन्न** विमोह विसब्ब विग्यांन, रतीपति तात प्रकत्त राजांन। —ह. र.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

उ०—जावै साहस जांणियौ, ईर्ख आकत तन्न। वाघ डरै नह बैर सूं, बाघां बैर **विसन्न**। —बां. दा.

विसन्नर—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

२ देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—फौजां गजडंबर लीण लसक्कर दक्खण उत्तर आहूडियं। वहै बांण **विसन्नर** धिक्खियौ धोमर ताळ भयंकर तावडियं।

—गु. रू. बं.

विसन्नु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

विसपत, विसपति, विसपती—१ देखो विस्वपति' (रू. भे.)

उ०—या ओसर हरि का होय रहियै भवर रच्या सो भूधर कहिए। नांव विसंभर **विसपति** रावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा। —ह. पु. वां.

२ देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

विसपाळ—देखो 'विस्वपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ चंद्र सूर किया दोय दीपक, करि तारामंडळ करितारं। अनंत लोक **विसपाळ** विसंभर, सकळ सछाया तो सारं।

—ह. पु. वां.

उ०—२ अरि भंजन अनरथ हरन गरब हरन गोपाळ। जन हरि-दास अकरन करन हरि, अकळ सकळ **विसपाळ**। हरि अकळ सकळ विसपाळ नाथ निरभै निरधारं। निराकार निरलेप वार नहिं लाभै पारं। —ह पु. वां.

विसप्रसून-सं. पु. [सं. विषप्रसून] कमल। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बिसप्रसून।

विसप्रस्थ-सं. पु. [सं. विषप्रस्थ] एक पर्वत का नाम।

विसफळ-सं पु. [सं. विष+फलं] १ वह जहरीला फल जिसके सेवन करने पर सेवनकर्त्ता की मृत्यु हो जाती है।

रू. भे.—विसफळ।

विसफोटक—देखो 'विस्फोटक' (रू. भे.)

विसब, विसब्ब—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—उदोत तपोनिध त्रेगुण ईस, अजीत जराम्रत जोग अधीस। विसन्न विमोह **विसब्ब** विग्यांन, रती पति तात प्रकत्त राजांन। —ह. र.

विसबावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि। बुद्धि ब्रह्म **विसबावीस**, अंतकरण कहीजै ईस। —पी. ग्रं.

विसमंत्र-सं. पु. [सं. विष+मंत्र] १ विष उतारने वाला मंत्र।

२ उक्त मंत्र को जानने वाला व्यक्ति।

विसम-वि. [सं. विषम] १ जो समान न हो, असमान।

२ जिसमें दो का भाग देने पर एक शेष बचे।

३ जो सरल न हो, कठिन, रहस्यमय।

उ०—अब वार गंग तोइ धोई अग, करि स्त्रीक्रसन तणा कैबार। उत्तम होई जनम क्रम आतम, स्वगम तरै दवि **विसम** संसार। —ह. नां. मा.

४ जो व्यवस्थित न हो अव्यवस्थित।

५ जहां कोई नहीं जा सके, दुर्गम्य।

उ०—बंदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउलनउ छइ वास। विसमउ गढ विसमा झूझार, ऊपरि **विसमा** पोलिपगार। —कां. दे प्र.

६ भयंकर, भीषण।

उ०—१ उलकापात हुउ विकराळ, **विसम** धूम धूंधूइ विराळ। वलिउं कटक छांडिउ मेल्हांण, ढीली भणी चाल्यउ सुरतांण। —कां दे. प्र.

उ०—२ सत्य कु छेदिउ वलिहिं, सीसु तसु दिणी चऊदमइ, रातिहिं झूझइ **विसम**, झूझि गुरु पडइ कीमइ। —सालिभद्रसूरि

उ०—३ **विसम** ढाक स ढूकस ढमढमी भरहरी भर भेरि बिहांमणी। उच्चरि तुररी कुरुरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्वसी। —सालिसूरि

७ कष्ट देने वाला, कष्टप्रद।

८ टेढ़ा, तिरछा, बांका।

९ प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत।

१० अद्भुत, अनोखा।

११ बुद्धिमान, चतुर, चालाक।

१२ तीव्र, तेज।

१३ वीर, बहादुर।

१४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—बंदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउलनउ छइ वास। विसमउ गढ **विसमा** झूझार, ऊपरि विसमा पोलिपगार। —कां. दे. प्र.

१५ ऊबड़-खाबड़, असमतल।

उ०—सुगुरु साथिय हीण घणुं भमिया, **विसम** वाट किहाइं न वीसमिया। वसइं जै जिनमंदिरि सीयलइ, बिहु परै तीहु तापु सही टलइ। —जयसेखर सूरि

१६ दृढ़, मजबूत।

१७ उलटा, विपरीत।

उ०—तै जांणी हुं ताहरी, थई रही छूं धीर। अक्षर सहू कीजै समा, **विसमा** टाली वीर। —मा. कां. प्र.

१८ टेढ़ा, अनुचित, बुरा, कर्ण कटु।

उ०—पातिसाह मूछइ वळ घाली, **विसमा** बोल्या बोल। जै को माहरी आंण न मांनइ, चूकइ ठांम निठोल। —कां. दे. प्र.

सं. पु.—१ वह संख्या जो दो से बराबर-बराबर नहीं बंटे।

२ तकलीफ, मुसीबत, विपत्ति, संकट।

३ फौज, सेना।

४ अग्नि, आग।

५ वायु, पवन, हवा।

६ शिव, शंकर, महादेव।

७ वह वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में समान वर्ण न होकर किसी चरण में अधिक व किसी चरण में कम हो।

८ दो परस्पर विरोधी वस्तुओं या दोनों की विषमताओं का वर्णन करने वाला एक प्रकार अर्थालंकार विशेष। (साहित्य)

९ एक प्रकार का ताल विशेष। (संगीत)

१० वायु प्रकोप के कारण उत्पन्न होने वाली चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक।

[सं. विषमः] ११ भगवान श्रीविष्णु का एक नामान्तर।

रू. भे.—बखम, बिखम, बिखमी, बिस, बिसम, बीसम, वखम, वखमी, विक्खं, विक्ख, विक्खम, विक्खमी, विक्खम्म, विक्खम्मी, विखम, विखमी, विखम्म, विखम्मी, विसमउ, विसमिउ, विसमी, विसमु, विसमै, विसमो, विसम्म, विसम्मी, विसम्य, विस्सम, वीसम, वीसमउ, वीसमी, वीसमै वीसमो।

विसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ गढ गिरुउ अनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ महागज तणा जिसा पाग तिसां कोसीसां, गरुई पोलि, निविड

कमाड, लोहभोगल, विजाहरि तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणि,...।
—व. स.

उ०—२ बंदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउळनउ छइ वास।
विसमउ गढ विसमा झूझार, ऊपरि विसमा पोळिपगार।
—कां. दे. प्र.

विसमगत, विसमगति, विसमगती, विसमगत्त, विसमगत्ति, विसमगत्ती—सं. स्त्री.—विकटस्थिति।

उ०—हळवळ दळ अकळ 'जसा' हीलोहळ, झळहळ कूंत हद बीज भत्त। झळहळ खाग दोयण स झाडण, गढ अरियण घरां विसमगत्त।
—सादूळजी खिड़ियौ

रू. भे.—वसमगत, वसमगति, विखमगत, विखमगति।

विसमजुर, विसमज्वर—सं. पु. [सं. विषम+ज्वर] प्रायः वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमें यकृत और तिल्ली बढ जाती है।

रू. भे.—बिखमजुर, बिखमज्वर, विखमजुर, विखमज्वर।

विसमत—सं. स्त्री. [सं. विष+मति] दुर्बुद्धि, खराब बुद्धि।

वि.—१ ऊबड़ खाबड़, असमतल।
२ कठिन या दुर्गम्य।
३ संकुचित, सिकुड़ा हुआ।
देखो 'विस्मित' (रू. भे.)
रू. भे.—बिसमत, विसममत।

विसमता—सं. स्त्री. [सं. विषम+ता प्रत्य.] विषम होने की अवस्था या भाव।

उ०—अठै अस्थिपाल रा अन्वय मैं 'गंभीर' थी दसमी पीढी राजकुमार देवसिंह हुवौ जिकण चालुक बंस मैं भोलाराय भीम थी तेबोसमी पीढी गोइंदराज टोडा रौ अधीस हुवौ जिकण रा अढारह अंगजां मैं बडा ही बडा कुंभराज कन्हड़ दो ही बंधवां नूं आपरा सगोत्र गोळवाळ जसराज री दो ही पुत्रियां बिबाही इण कारण मागध लोकां रा घणां ग्रंथां मैं एक ही लेख जांणि सोहो प्रमांण इण ग्रंथ में राखियौ परंतु पीढियां री बिसेस ही विसमता हूं बिरोध आवै।
—वं. भा.

रू. भे.—विखमता।

विसमनयण, विसमनयन—सं. पु. [सं. विषमनयन] शिव, महादेव।

रू. भे.—बिखमनयण, बिखमनैण, विखमनयण, विखमनैण।

विसमनेतर, विसमनेत्र, विसमनैण—सं. पु. [सं. विषमनेत्र] शिव, महादेव।

रू. भे.—बिखमनेत्र, विखमनेत्र।

विसमपण, विसमपणौ—सं. पु. [सं. विषम+रा. प्र. पण, पणौ] विषम होने की अवस्था या भाव, विषमता। (अमरत)

विसमबांण—सं. पु. [सं विसम+बाण] कामदेव के पांच बाणों में से एक बांण।

रू. भे.—विखमबांण, विखमवांण, विसमवांण।

विसममत—देखो 'विसमत' (रू. भे.)

विसमय—सं. पु.[सं. वि.=बुरा+समय] बुरा समय, खराब समय।

वि.—[सं. विष+मय] १ विषयुक्त, जहरयुक्त।

रू. भे.—बिसमय, बिसमै, बिस्मय।

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

उ०—कमनै तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनि कै 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय बय छपय रन सुम अभय अतिसय विसय चय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अजय सयकर अखय जय अय उभय सय पय ह्रदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।
—वं. भा.

विसमर—देखो 'विसमरौ' (रू. भे.)

विसमरण, विसमरमण—देखो 'विस्मरण' (रू. भे.)

विसमरणौ, विसमरबौ—देखो 'विस्मरणौ, विस्मरबौ' (रू. भे.)

विसमरणहार, हारौ (हारी), विसमरणियौ—वि०।
विसमरिओड़ौ, विसमरियोड़ौ, विसमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
विसमरीजणौ, विसमरीजबौ—कर्म वा०।

विसमरियोड़ौ—देखो 'विस्मरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसमरियोड़ी)

विसमरौ—सं. पु. [सं. विषमर] विषैला जन्तु, छिपकली। (अमरत)

रू. भे.—बिसमर, विखमरौ, विसमर।

विसमल, विसमला, विसमल्ला, विसमल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

उ०—१ मूला सूंनित तें, करी तें कीया विसमल। खलड़ी गला कटाय कै, क्या कीया वेकल।
—अनुभववांणी

उ०—२ काया विसमल क्या करै, मन कुं विसमल कीन। हरीया मन विसमल विनां, आतम सधै न चींन।
—अनुभववांणी

उ०—३ अपनै काज करै गउ विसमल, जीव सरै पुंहचावै। काजी विसत हाथि है तेरै, तौ कुल दोजख क्युं जावै।
—अनुभववांणी

उ०—४ अपनै हाथि कीया मन मांनी, हरि का कीया दाय नहीं आंनी। मारै गऊ कहैं विसमला, युं तौ खुसी खुदाय न अला।
—अनुभववांणी

विसमवांण—देखो 'विसमबांण' (रू. भे.)

विसमविसिख—सं. पु. [सं. विषम+विशिख] कामदेव का एक नाम।

विसमव्रत—सं. पु. [सं. विषम+वृत्त] एक प्रकार का वृत्त विशेष जिसके चारों चरणों में पद असमान हों।

विसमसि—स. पु. [सं.] आलम्बन सहारा।

उ०—तै मिच्छदिट्ठी मिथ्यात्वी द्रस्टि जांणिज्ज जांणिवउ, जे पतित धरम हूंता भ्रस्ट हूया तेहना आलंबन ओठभ लिइं, भ्रस्टनी विसमसि करइं। —षष्ठीशतक

विसमागनी, विसमाग्नि—सं. स्त्री. [सं. विषम+ अग्नि] वैद्यक में चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक जठराग्नि।

विसमाजुद्ध, विसमाजुध, विसमाजुध्ध, विसमायुद्ध, विसमायुध—स. पु. [सं. विषमायुद्ध] कामदेव का नामान्तर।

रू. भे.—विखमाजुध, विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध।

विसमासन—स. पु. [स. विषमाशन] ठीक समय पर भोजन न करके थोड़ा पहले या थोड़ा पीछे भोजन करना जिससे शरीर में आलस्य उत्पन्न होता है। (वैद्यक)

विसमिउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—विसमिउं कटक कौरव केरउं, दैव चक्र किम कांइं फेरिउं। नारि सइरि सर संप्रति आवइ, कइ अगास पडतां एउ भावइ। —सालिसूरि

विसमिल, विसमिला, विसमिल्ला, विसमिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

विसमित—देखो 'विस्मित' (रू. भे.)

विसमी—देखो 'विसम' (रू. भे)

उ०—१ रतनसेन साथै हुऔ, विसमी विसमी ठोड़। देखायौ सुलतान नै, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड़। —प. च. चौ.

उ०—२ चमरी जिम चल लखमीय, विसमीय विसय नी वात। नारीय नेह विण दीविय, जीविय बहु उपघात। —जयसेखर सूरि

विसमु—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ दैव जिहां विसमु थयु, तव नहीं कांई बलप्रांण। वली वेलां सरव साचूं, जांणनै निरवाणि। —नळाख्यांन

उ०—२ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमरौ, करणिहि सरिसउं माडइ वयरौ। बे भाथा बिहुं खवै वहेई, करयलि विसमु धणुहु धरेई। —सालिसूरि

विसमै—१ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

उ०—१ आवी खबर अचींतियां, विसमै जैसी वत्त। तद राठौड़ै बूझियौ, 'दुरगं' आसावत्त। —रा रू.

उ०—२ मेड़तिया 'मधकर' हर मेड़तै सहायक, सांहस कै सादूळ वंस कै नायक। जाकी रीत कौ प्रमांण द्वापुर दरसावै, कहनै मैं विसमै सी देखै वन आवै। —रा. रू.

२ देखो 'विस्मित' (रू. भे.)

उ०—रात घड़ी दोय गयां थाळी में सेर च्यार वस्त घात, रुमाल सूं ढक राजा री हजूर गयौ। जाय मुजरौ कियौ। थाळी मुंहडै आगै मेल्ही। राजा सांम्हौ देख विसमै रह्यौ। —राजा भोज अर खापरै चोर री वात

३ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ० -१ सांम धरम रत्ता पण साचै, वयण दूठ मुख भूठ न वाचै। पड़तौ गयण ग्रहै निज पांणी, विसमै समै एक रस बांणी। —रा. रू.

उ०—२ 'सोनागिर' चांपावत हाथ खग तोलै, विसमै मैं द्रढ देण कोप वैण बोलै। समै पाए सूर सोई वीरता विचारै, समै कै निदांन आए आसमांन धारै। —रा. रू.

विसमौ—१ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—गढ गरुउ अनइ विसमौ जीह तणौ पाय पातालि पइठउ, परवतनइ स्रंग, बइठउ उच्चस्तर पोलि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पद्धति,···। —व. स.

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

विसम्म, विसम्मी—देखो 'विसम' (रू. भे.)

विसम्य—१ देखो 'विसम (रू. भे.)

उ०—दसा विसम्य संम्य हा अगम्य गम्य है नहीं, रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं। गवाक्ष तें अगाक्ष की कटाक्ष तें निगै नहीं, थिराभ चंद्रसाल चंद्रसाल पै थिगै नहीं। —ऊ. का.

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

विसय—सं. पु. [सं. विषय] १ कोई तत्व या बात जो विचारणीय, विवेचनीय या अध्ययन करने योग्य हो।

२ स्त्री के साथ किया जाने वाला संभोग या मैथुन।

उ०—१ धुरतै सील फरसधर धारचौ, विसय विकार विहाई। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार इकीस बनाई। —ऊ. का.

उ०—२ वैरागी विसया रस त्यागै, रागी कर आसक्ती लागै। दोई तजै सौ निरदावै, सम द्रस्टि थावै। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ बिलार विसया लालची रे, ताहि भोजन देत। दीन हीन व्है छुधा रत सै, रांम नांम न लेत। —मीरां

उ०—४ परदारा सुं पापियउ, भोगवइ कांम भोग। विसया रस लुब्धउ थकउ, न बीहइ पर लोग। —स. कु.

३ बड़ा प्रदेश या राज्य।

उ०—कमनैत तीरन तांनिकै पखरैत बेधत पांनि कै 'बुध' तनय

हित जय प्रणय नय बय छपय रन सुम अभय अतिसय विसय चय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय, उदय रवि नय-निलय अतिरय अजय खयकर अखय जय मय उभय सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।

—वं. भा.

४ भोग-विलास व मैथुन से प्राप्त आनन्द।
५ पंचज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त आनन्द या सुख।
६ जगह, स्थान।
७ वीर्य, बीज।
८ प्रियतम या पति।
९ सम्पत्ति।
१० सर्प, सांप।
११ सल्तनत, बादशाहत।
१२ सांसारिक पदार्थ।
क्रि. वि.—१ लिए, प्रति।
२ मध्य, अन्दर, में।
रू. भे.—बिखै, बिखइ, बिसई, बिसिया, वखै, विख, विखय, विखिया, विखै, बिस, विसइ, विसई, विसिया, विसै।

विसयक–वि. [सं. विषयक] विषय का, विषय से सम्बन्धित।
रू. भे.—बिसयक।

विसया–सं. स्त्री. [सं. विषया] चन्दनावती नगरी के दुष्ट बुद्धिप्रधान की कन्या का नाम।

विसयी–सं. पु. [सं. विषयिन्] १ कामदेव।
२ भोग-विलास में बहुत अधिक आसक्त व्यक्ति, कामी व्यक्ति।
३ बहुत अधिक विषय या धन सम्पत्ति वाला व्यक्ति, धनवान।
रू. भे.—विखई, विसइ, विसई।

विसर–सं. पु.—१ अपशब्द, कटु शब्द, अपमान सूचक शब्द।
उ०—असुर बोलियौ विसर पतसाह मुह आगळी, राज विण खत्री ध्रम कवण राखै। दूसरा 'माल' वरदांन तोनां देऊं, अमर' मो काड जमदाढ आखै। —अमरसिंघराठौड़ रौ गीत
२ अप्रशंसासूचक कविता, निन्दा सूचक या दुत्कारयुक्त कविता।
उ०—१ सुकव आवियां नजर मेळाय भटकै सदा, कसर सूं चलै मछरां कराता। अदावां विसर विण लागै नह आंमटी, तुरी विण चांमटी न वहै ताता। —पीरदांन आढौ
उ०—२ परांणी विसर वाजै घणां ऊपरां, पैंड चालै नहीं पैल पूरा। रीत बळ भाड़ै थाका सको रांमणा, भांमणा लेऊ धुर जूप भूरा। —हरनाथसिंह चांपावत रौ गीत
३ एक प्रकार का विषैला जन्तु विशेष।
४ युद्ध, समर।
५ एक प्रकार का घोड़े का चारजामा।
[सं. वि: सर] ६ समूह, झुण्ड। (अ. मा.)
वि.—भयंकर, भयावह।
उ०—१ बिहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर। थरर लंका जिसा थाहर, विसर त्रंबक वाज। —र. ज. प्र.
उ०—२ विसरि गड़गड़ै तूर सूरां चढ़ै वीर रसि, अछर वरिवा करै चित उमेखा। सांमि छळ देस छळ वेस छळ सांमठां, सांपना तांहरै भागि सेखा। —सेखा दुर्जनसालोत पातावत राठौड़ रौ गीत
रू. भे.—बिसर, वसर, विस्वर, वीसर।

विसरग–सं. पु. [सं. विसर्ग] १ व्याकरण के अनुसार ऊपर नीचे अर्थात खड़े दो बिन्दुओं वाला वह वर्ण जिनका उच्चारण अर्द्ध 'ह' के समान होता है।
२ दान।
३ संहार, नाश।

विसरण, विसरन–सं. पु. [सं. विसर्जन] १ परित्याग, त्याग।
२ दान या भेंट। (अ. मा., ह. नां. मा.)
३ प्रस्थान, विदा।
४ मल का परित्याग करने की क्रिया।
५ पूजन में अंतिम उपचार, षोडशोपचार।
६ सभा आदि की अन्तिम कार्यवाही के बाद सभा के विसरजन की क्रिया।
७ उक्त के आधार पर पूजनोपरान्त देव मूर्ति का जलाशय में किया जाने वाला प्रवाह।
८ विस्मरण, भूल।
९ समूह, व्यूह। (अ. मा.)
वि. [सं. विशरण] आश्रयहीन, अनाथ।

विसरणौ, विसरबौ–क्रि. अ.—१ गल्ती होना।
२ फैलना।
उ०—रूक आवाहिया देवराए, गाजि ब्रहमंड घाए निहाए। खीजिया जोध वाहै खडग्गं, विसरि किरि जीह वासिग्ग नग्गं। —गु. रू. बं.
३ कुपित होना, क्रोधयुक्त होना।
उ०—वाही गजसिंघोत विसरिअै, असुरां फुटा अफर अणी। मुगळां तणी पड़ी किर माथै, त्रिजड़ी तडित अकाळ तणी। —केसोदास गाडण
४ विस्मरण होना, भूलना।
उ०—१ वर उपदेस करै बिन पूछया, निगमा उगत उचरना।

हंसा होय चुगौ मुक्तावळ, विसया रस विसरना ।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ सघण, ग्रेह, वायक न सुणावी, लाखाउत ग्रागळी लहेइ । तू विसरिस तइयां जइयां तिण, ढिग हुइसै रज तणौ विखेइ ।

—ईसरदास बारहठ

उ०—३ हियै धारियां खांन जुवांन छिबतौ निहंग, ग्रवर नर विसरै तणा ग्रचंभा । विखम गत देख 'जसराज' खग वाहतौ, रही रथ साह गजगाह रंभा । —गु. रू. बं.

उ०—४ पीया निसदिन तोकुं घ्यांउं, उनमुंन ताळी लांउं, तौ विसरचां दुख पांउं । —ग्रनुभववांणी

उ०—५ मांडणियां नै इबारत बोलै, वांचणियां रै दूहां रा ग्ररथाव खोलै है । विलम्या बैठ्या है । घरनै सफा विसर रैया है ।

—दसदोख

उ०—६ वरज्या सतगुर सांम्य, कुमल कुकरणी करता । मद मास पोसती, भांग खाहि विसरंदा । —ग्रग्यात

विसरणहार, हारौ (हारी), विसरणियौ – वि० ।

विसरिग्रोड़ौ, विसरियोड़ौ, विसरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसरीजणौ, विसरीजबौ—कर्म वा० ।

बिसरणौ, बिसरबौ, बीसरणौ, बीसरबौ, वीसरणौ, वीसरबौ, वीसूरणौ, वीसूरबौ—रू० भे० ।

विसरप-सं. पु. [सं. विसर्प] १ रेंगने, फिसलने या सरकने की क्रिया । २ ग्रनिष्ट फलदायक प्रारब्ध कर्म ।

३ एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें एक साथ बहुतसी छोटी-छोटी फुन्सियों के साथ बुखार भी ग्राता है, शीतला, चेचक । (ग्रमरत)

विसरमौ-वि. [सं. वि.=रहित+शर्म=लज्जा] जिसे शर्म नहीं ग्राती हो, बेशर्म, लज्जाहीन ।

उ०—कासुं व्है बहु कह्यां वदै नहीं कदै **विसरमा** । सुगुरु तणी धरम सीख, करै नहीं भारी करमा । —ध. व. ग्रं.

विसरांत-सं. पु.—मथुरा का विश्राम घाट ।

उ०—तद प्रथीराजजी कयौ, "महाराज मास छठै मथुराजी मैं **विसरांत** घाट ऊपर होवैगी । जहां धोळा काग ग्रावैगा ।—द. दा.

विसरांम-सं. पु. [सं. बिश्राम] १ सहारा, ग्राश्रय, पनाह ।

उ०—१ सांवरिया ! तूं भूलां री बाट है, रांम ष्यारा रै ! हारचां रौ **विसरांम** । —गी. रां.

उ०—२ देस मालम सुतण देसल नर सघर दुंह पखै निरमल, ग्रतुलबल ग्रति कमल ऊज्जल वरन खट **विसरांम** । —ल. पिं.

उ०—३ मछळी नै जळ कोई मिळावै, कै कोयलड़ी नै ग्रांम । ग्रब तौ वैग मिळै उवौ सांवळ, हारचां रौ **विसरांम** ।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ बांह कोई ऊंच न नीच है, नांम न कोई ठांम । हरीया हेको ब्रह्म है, सबहन के **विसरांम** । —ग्रनुभववांणी

उ०—५ सतगुरु सोई जांणियै, कहै कहावै रांम । हरीया गुर गोविंद सा, ग्रौर न को **विसरांम** । —ग्रनुभववांणी

उ०—६ जिण ग्ररवद ऊपर ग्रठारह भार वनस्पती झुक रही छै । घणौ ही चंपौ, चमेली, मोगरौ, जुही फूल रहिया छै । फेर ग्रड़सठ तीरथ ग्राय **विसरांम** लियौ छै । —डाढाळै सूर री बात

२ ग्राराम, चैन ।

उ०—१ ग्रर इत्तौ उस्ताद रांमूजी ! थांनै ई करणौ पड़ैला, कोई सभाधभा ग्राळौ ग्रावै तौ कै दिया—ग्रबार तबियत ठीक कौ रै वै नी, डागदर **विसरांम** लेवण रौ कयौ है । —बरसगांठ

उ०—२ नारी क्यारी कांम की, सींच्यां करै विरांम । जनहरीया तन मन बरै, ताहि नही **विसरांम** । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ लख चौरासी जोनि मैं, मातौ मोह सकांम । हरीया ऐसै जीव कुं, कहां नहीं **विसरांम** । —ग्रनुभववांणी

उ०—४ गजराज सूका सरोवर ढूंढता फिरै छै । सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ ग्रगनी सूं बळतां थकां वीझा वनरा हाथिग्रां री पेट री छाया सूता **विसरांम** करै छै । —रा. सा. स.

उ०—५ हां रै राज इंद्र धड़कै हो, हां रै राज, ग्रो तौ इंदर धड़कै हो, हां हो म्हारा घड़ी नै, घड़ी रा **विसरांम** भंवरजी इंद्र धड़कै हो । —लो. गी.

३ सुख-शान्ति, ग्रानन्द ।

उ०—१ जनहरिया है मुगति कुं, नीसरणी निज नांम । चढि चापरि सुं सिवरियै, जो चाहै **विसरांम** । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ रांम नांम कुं सिवरतां, पाया मन **विसरांम** । जनहरिया तै नांव का, मैं हूं सदा गुलांम । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ जै कोई चीन्है सहज कुं, सहजां ग्रातम रांम । जनहरिया सहजां भया, मन इंद्री **विसरांम** । —ग्रनुभववांणी

४ ग्राश्रमव्यवस्था में चौथा ग्राश्रम, संन्यासाश्रम ।

उ०—हरीया ग्रेसा को मिळै, चित चौथै **विसरांम** । ताप त्रिगुण सुं रहत है, निज भगता निहकांम । —ग्रनुभववांणी

५ ग्रवसान, मौत, मृत्यु ।

६ कार्य-काल के बीच ग्राराम एवं जलपान हेतु मिलने वाला ग्रवकाश ।

उ०—फाजल ही ग्रापरी साधना सरु करी, करणै माथै हथफेरी

करणी पेलाई । पांच-सात विरियां, छुट्टी बिसरांम रै वखत, करणै नै जमी पर सूंवौ सुवांण्यौ, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायौ ।
—दसदोख

७ ठहरने का स्थान, विश्रामस्थल ।

उ०—१ हरिया हंसौ जीव है, सुन्य सागर विसरांम । सुरति हमारी सीपड़ी, निज करण मोती नांम । —अनुभववांणी

उ०—२ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा बिसरांम । हरीया जम लै जावसी, वेग सिवरियै रांम । —अनुभववांणी

उ०—३ भूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का कांम । हरिया सुवचन साच का, विसनपरा विसरांम । —अनुभववांणी

उ०—४ हरि वसती हरि वन है, हरि हैं ठांमौ ठांम । हरिया हरि हिरदै गया, ताहि नही बिसरांम । —अनुभववांणी

८ ठहराव ।

उ०—१ सहजां सुख दै वस्य किया, मन मोहादिक कांम । जनहरिया गोरख जती, सहज किया विसरांम । —अनुभववांणी

उ०—२ रांम रांम रसनां लिया, मास दोय विसरांम । हरिया हिरदै कंठ मैं, सागर वरस मुकांम । —अनुभववांणी

उ०—३ गांमां दांम उग्राहजे, कै मारीजै ग्रांम । डेरा दीधा रांणपुर निस कीधा बिसरांम । —रा. रू.

उ०—४ म्हनै बडौ अचूंभौ आवतौ हो कै बंबोई जिसी मोटी नगरी में जठै कै आभा सूं बातां करता मेल माळिया ऊभा हा पण दो मिनखां नै विसरांम करण जोग छः हाथ जमीन मिळणी कठण व्हैगी ही । —रातवासौ

क्रि. प्र.—करणौ, पाणौ, मिळणौ, लैणौ ।

९ अध्याय, प्रकाश ।

१० वाक्य के अंत में लगाई जाने वाली बिन्दु या खड़ी रेखा ।

११ छन्द शास्त्रानुसार कविता, पद्य आदि के चरणों में वह स्थान जहां पढते समय लय ठीक रखने हेतु थोड़ा विराम या ठहराव किया जाता है, यति ।

उ०—१ दस दस पर विसरांम चव, मत चाळीस हुवंत । गुरु लघु अखिर नियम नहि, उद्धत छद अखत । —र. ज. प्र.

उ०—२ कळ दस धुर फिर आठ सकांम, मभ तुक विखम दोय विसरांम । सम अठ अंत रगण जोकार, चतुर गीत लंहचाळ उचार ।
—र. ज. प्र.

उ०—३ छै निसांणी छद रं, मत तेवीस मुकांम । मांभ अेक तुक त्रदस दस, वदै दोय विसरांम । —र. ज. प्र.

रू. भे.—बिसरांम, विस्रांम, विस्रांमु, विस्सरांम, विस्सांम, वीसांम, वीसांमउ ।

मह.—विसरांमौ, विस्सरांमौ, वीसांमौ ।

अल्पा.—बिसरांमी, विसरांमी, विस्सरांमी ।

विसरांमणौ—वि.—१ विश्राम करने वाला ।

२ विश्राम देने वाला ।

३ सहारा देने वाला, सहायक ।

रू. भे.—विसरावणौ ।

बिसरांमणौ, बिसरांमबौ—क्रि. अ. [सं. विश्रमण] १ आराम लेना, विश्राम लेना ।

२ मरना, अवसान होना ।

उ०—१ सुनिभ्ररस संभारसदन घणा, कपणां तणौ विरांमियौ । कर भू पर कीरत करमसी, रायसिंघ विसरांमियौ । —नैणसी

उ०—२ यूं करतां राव सूजोजी कितरै हेकै दिनै विसरांमियौ । ताहरां टीकै री तयारी हुई । ताहरां इंया ठाकुरां वीरमदे नूं पकड़ बांह अर गढ सूं हेठो उतारियो, नै गांगै नूं टीकौ दियौ
—नैणसी

उ०—३ लाखौ देसवटै फिरै छै । फूल री चोथी दसा हुती । तै वासतै लाखैजी आ वात कही हुती, फूलजी री मोनूं मत कोई सुणाया । सु फूलजी बिसरांमिया । लाखै नुं कोई कहै नहीं ।
—लाखै फूलांणी री बात

३ युद्ध में वीरगति प्राप्त होना ।

उ०—१ रण सारंग विसरांमियौ, नह बूडौ नमियोह । गोल तणौ कहियौ गुणौ, संपूरण समियोह । —पा. प्र.

उ०—२ आहुई वडौ राठौड़ विसरामियां, तज गया दूसरा न सायत टेक । हसत नित वरीसण न को इळ रायहर, हसत बंध कवि नहीं जगत में हेक । —द. दा.

४ ठहरना, रुकना ।

५ सहारा देना, आश्रय देना ।

विसरांमणहार, हारौ (हारी), विसरांमणियौ—वि० ।

विसरांमिओड़ौ, विसरांमियोड़ौ, विसरांम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसरांमीजणौ, विसरांमीजबौ—भाव वा० ।

बसरांमणौ, बसरांमबौ, बिसरांमणौ, बिसरांमबौ, वसरांमणौ, वसरांमबौ, विस्रांमणौ, विस्रांमबौ, वीसांमणौ, वीसांमबौ
—रू० भे० ।

विसरांमियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ आराम लिया हुआ, विश्राम लिया हुआ. २ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ३ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ४ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ. ५ युद्धक्षेत्र में वीरगति प्राप्त हुवा हुआ ।

(स्त्री. विसरांमियोड़ी)

विसरांमी-वि.—१ विश्राम करने वाला।

उ०—सुखदाइ सीतल स्वांमी रे, प्रभु सुमता रस **विसरांमी** रे। उपकारी गुण अभिरांमी रे, नमियै एह नै सिर नांमी रे।
—घ. व. ग्रं.

२ विश्राम देने वाला।

३ देखो 'विसरांम' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—बिसरांमी, विस्रांमी।

विसरांमौ—देखो 'विसरांम' (मह., रू. भे.)

उ०—उतिम सिवरन हिरद सथांनुं, मांहीमांहि भया घर व्यांनुं। रसनां लीया रांम का नांमा, उर भीतरि पाया **विसरांमा**।
—अनुभववांणी

उ०—२ दुख पाऊं छुं आप, पापां रे परताप। तौ तूं जांणदै ए, **विसरांमौ** खांणदै ए। —जयवांणी

विसराड़णौ, विसराड़बौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

विसराड़णहार, हारौ (हारी), विसराड़णियौ—वि०।

विसराड़िओड़ौ, विसराड़ियोड़ौ, विसराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसराड़ीजणौ, विसराड़ीजबौ—कर्म वा०।

विसराड़ियोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसराड़ियोड़ी)

विसरायाण-सं. पु.—दान। (अ. मा.)

विसराणौ, विसराबौ-क्रि.स.—१ विस्मरण करना, भूलना।

उ०—१ सीख सुनत ही सुधि भई, तन आपौ **विसराय**। जन-हरिया मन गरक हुय, तरक फरक नहीं थाय। —अनुभववांणी

उ०—२ बेटै बाप **विसराया**, भाई वीसारेह। सूरां पूरां गल्लडी, चारण चीतारेह। —रा. सा. सं.

उ०—३ वीठू कवल न चूकजे, लगी जीव के लार। **विसराई** नहीं वीसरै, केवळ प्रांण अधार। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ गल्ती करना।

३ त्यागना, छोड़ना।

विसराणहार, हारौ (हारी), विसराणियौ—वि०।

विसरायोड़ो—भू० का० कृ०।

विसराईजणौ, विसराईजबौ—भाव वा०।

बसरांमणौ, बसरांमबौ, बिसराड़णौ, बिसराड़बौ, बिसराणौ, बिसराबौ, बिसरावणौ, बिसरावबौ, बीसराणौ, बीसराबौ, बीस-रावणौ, बीसरावबौ, वोसराणौ, बोसराबौ, बोसरावणौ, बोसरावबौ विसराड़णौ, विसराड़बौ, विसरावणौ, विसरावबौ, विसराहणौ, विसराहबौ, वीसराणौ, वीसराबौ, वीसरावणौ, वीसरावबौ
—रू० भे०।

विसरायण-सं. पु.—दान। (अ. मा.)

विसरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विस्मरण किया हुआ, भूला हुआ. २ गल्ती की हुई, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

(स्त्री. विसरायोड़ी)

विसरारण—देखो 'विसरायण' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

विसराळ, विसराळी विसराळौ-वि. [सं. विष+रा. प्र. राळौ] १ विपैला, जहरीला।

२ क्रोधी, क्रोधयुक्त।

३ रसहीन, कड़वा, नीरस।

४ जोशपूर्ण, जोशयुक्त, जोशीला।

उ०—तीधसिया **विसराळ** न घोखै, दळ पड़ घोकै तीरमदाज। भटकां बह सांमुहा भोकै, रोकै कुण एकल गिड़ राज।
—महादांन मेहडू

५ भयंकर, भयावह।

उ०—बिसराळ त्रंबाळ घुरै रवि वीहस, लाह आखेट लंकाळ। अजेरां जेरण वेर असंगां, फेर दुहाई फाळ। —मा. वचनिका

६ निन्दाजनक काव्य की रचनाएं करने वाला।

७ कर्णकटु, कड़वा।

उ०—वायक **विसराळाह**, सुणिया थै मांमी मनै। वै धांधळ वालाह, केवा मैं सह काढिया। —पा. प्र.

सं. पु.—निन्दायुक्त कविता।

रू. भे.—बिसराळ, वसराळ, विस्राळ, विस्राल, विस्राळी, विस्राली, विसाळौ, विस्रालौ।

विसरावणौ—देखो 'विसरांमणौ' (रू. भे.)

विसरावणौ, विसरावबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे)

उ०—१ पुसपां री माळा पहरायां, जनम मरण मेटै विन जाप। विध विध रा भोजन **विसरावै**, बयवौ जाय खाय मा-बाप।
—भगतमाळ

उ०—२ गांव में ही पी'र, गांव में ही सासरौ। फूटरी आवै-जावै अर आंणद सू ओपै है। कुसोभ्या रौ कांम नीं, आछौ नांव-नांमून कर राख्यौ है। सासू सुसरौ सरावै, वास रा मांणस वडाई करै। कोई ही **विसरावै** नहीं सगळा सोभ्या करै। —दसदोख

उ०—३ सुणी वात सुविहांण, पूछ खुरसांण अप्रबळ। दरद जीव मो दहै, करद जिम सहै विना कळ। असपत्ती ऊचरै, वेध छत्री **विसरावौ**। छंडि द्रेस महि छोड, भेख ग्रहि मक्कै जावौ। —रा. रू.

उ०—४ मारो मार मचायां मनवो, आप अेक घर आवै। अेक ठोड आयां सूं अनुभव, बस सुध बुध **विसरावै**। —ऊ. का.

विसरावणहार, हारौ (हारी), विसरावणियौ—वि० ।
विराविग्रोड़ौ, विसराविंयोड़ौ, विसराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विसरावीजणौ, विसरावीजबौ—भाव वा० ।

विसराविंयोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री विसराविंयोड़ी)

विसराहणौ, विसराहबौ—देखो 'विसराणौ, विसरावौ' (रू. भे.)
विसराहणहार, हारौ (हारी), विसराहणियौ—वि० ।
विसराहिग्रोड़ौ, विसराहियोड़ौ, विसराह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विसराहीजणौ, विसराहीजबौ—कर्म वा० ।

विसराहियोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विसराहियोड़ी)

विसरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गल्ती हुवा हुग्रा. २ कुपित हुवा हुग्रा, क्रोधयुक्त हुवा हुग्रा. ३ फैला हुग्रा. ४ विस्मरण हुवा हुग्रा, भूला हुग्रा ।
(स्त्री. विसरियोड़ी)

विसलूमौ-सं. पु.—एक प्रकार का हिंदवाना से मिलता-जुलता कड़वा फल । (शेखावाटी)

विसल्या-सं. पु. [सं. विशल्या] १ रामानुज लक्षमण की पत्नी ।
२ एक नदी जो वरुण की सभा में रह कर वरुण की उपासना करती थी ।
३ एक ग्रौषधि का नाम जो शरीर में लगे बाणों को निकालने के लिए लगाई जाती है ।

विसव-सं. पु. [सं. विश्व] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । (ग्र. मा., नां. मा.)
२ स्वभाव, ग्रादत, प्रकृति । (ह. नां. मा.)
३ देखो 'विस्व' (रू. भे.)
उ०—१ विसतरी वात सारी विसव, ग्रणकारी उतपात सी । ग्रजमेर कांन 'ग्रवरंग' नैं, सुण लग्गी ग्रत घात सी । —रा. रू.
उ०—२ पातसाह दक्खण रहै, जाळंधर महाराज । विसव ग्रवर जवनां वसू, करै सको मिळ काज । —रा. रू.
उ०—३ धू ग्रह ग्रास बाळपण बारै, सांई त्यां ततकाळ संभारै । ग्रौ पतसाह तिसौ ग्रन्याई, विसव ग्रनीत जीत वरताई । —रा. रू.
उ०—४ निरख छठै रिपु ग्रह ससिनंदण, कुळ मातुळ सुख ग्ररीनिकंदण । राजभवन सुरगुर सुभ राजै, विसव एक छत्र ग्रांण विराजै । —रा. रू.
उ०—५ ग्राळस बाळौ मंगणां, उर मंगणां उदार । बंक उदारां दिसव मैं, बाळौ जस विसतार । —बां. दा.
उ०—६ तूं करता तूं भोगता, रहै ग्रकिरिता रांम । विसव घड़ै भांजै विसव, विसव तणौ विसरांम । —पी. ग्रं.

विसवकसेन—देखो 'विस्वकसेन' (रू. भे.)

विसवक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

विसवजूण, विसवजोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे.)

विसवतरेखा-सं. स्त्री. [सं. विषुवरेखा] पृथ्वी के ठीक मध्य में पूर्व या पश्चिम की ग्रोर चारों ग्रोर मानी जाने वाली एक कल्पित रेखा । (भूगोल, ज्योतिष)
रू. भे:—विसुवरेखा ।

विसवनाथ—देखो 'विस्वनाथ' (रू. भे.)
उ०—१ भिरजौ पैठौ डेरां मांहे, सुज कर ग्ररज घणां पग साहे । बाधै तेज नौबतां वाजै, विसवनाथ निज तखत विराजै । —रा. रू.
उ०—२ वीठ्ठल विसवनाथ घन जदपत्त केसव स्रीवरं, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहरं । ग्रविगत ग्रादि जुगाद उपावण ग्रकळ ग्रपंपर, समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसरं । —पि. प्र.

विसवयोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे.)

विसवाद-सं. पु. [सं. विषवाद] ७२ कलाग्रों में से एक ।
२ देखो 'विखवाद' (रू. भे.)
उ०—१ जनहरिया हरि कारनै, सौ परमारथ स्वाद । ग्राप सुवारथ हरि विनां, सो स्वारथ विसवाद । —ग्रनुभववांणी
उ०—२ दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सहु नर मादा राज । टलइ ग्रल्हादा सहु विसवादा, कुसल कुसल परसादा ।—ध. व. ग्रं.
उ०—३ दुसम काल तणै परभावै, हुइ मांहौ मां विसवाद जी । तौ पणि तुरत खमावी लीजइ, पंडित गुरु परसाद जी । —स. कु.
उ०—४ विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद । इस्ट वियोग पड्यां किया, रोदन विसवाद । —स. कु.

विसवाबीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)
उ०—तन मन सौंज संवार सब, राखैं विसवाबीस । सौ साहिब सुमिरै नहीं, दादू मांन हदीस । —दादूवांणी

विसवामंत्र, विसवामित, विसवामितर, विसवामिति, विसवामित्र, विसवामित्रि—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे.)
उ०—१ किसन री सुरै दरसण कियौ, कर जोड़ै कीरति कहै । करतार काजि दसरथ कन्हौ, विसवामिति ग्राया वहै । —पी. ग्रं.
उ०—२ विसवामित्रि कारणै, प्रभु चढियौ जिगि पालण । जां मारै तां मुगति, ग्राज ताड़का उधारण । —पी. ग्रं.

विसवावीस-ग्रव्यय.—१ निश्चय ही, ग्रवश्य ही, जरूर ।

उ०—सूर लड़ै जब कंत्र सिर, कमंध लड़ै विण सीस । हरिया सूर कमंध बिच, विवरौ विसवावीस । —अनुभववांणी

उ०—२ चलणा है, रहणा नहीं, चलणा विसवावीस । अैसे सहज सुहाग पर, कुंण गुंथावै सीस । —अग्यात

उ०—३ रीझ खडिवां तीज री, पदमण वचन प्रमांण । आस्यां विसवावीस मैं, सिव सगत री आंण । —पनां

२ सत्य, ठीक ।

उ०—१ ग्राह पकड़े खांच गाढौ, सलल फिरगौ सीस । तज गरुड़ गजराज तारै, वात विसवावीस । तौ जगदीस जी जगदीस, जन काज दोड़णा जगदीस । —भगतमाळ

उ०—२ राजा अति आतुर थयौ, तेहनै कीधी रीस । उत्तम तिहां किण आविनै, बोलै विसवावीस । —वि कु.

३ निस्सन्देह ।

उ०—कहियौ न्रप कारिज सिध कीजै, दत वर मूझ पदमणी दीजै । वदै सिद्ध न्रप विसवाबीसां, पदमण आंणू दीह पचीसां । —सू. प्र.

४ निश्चयपूर्वक, यकीनन ।

वि. वि.—किसी बात के औचित्य को मान लेने के लिये जिस प्रकार यह कहा जाता है कि "यह बात सोलह आने खरी है ।" या यह शत-प्रतिशत सही है । "बीस-विसवा" ठीक इन्हीं अर्थों में बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होता है । कभी-कभी बीस विसवा के स्थान पर 'सौ विसवा' भी बोला जाता है । पर दोनों का आशय एक ही है ।

५ पूर्णरूप से ।

उ०—सेठ तणै मन मांहि उदधि मां कुमरी वसै निसदीस, विरह विलूधौ रे विसवावीस । नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस । —वि. कु.

रू. भे.—विसवाबीस, विस्वाबीस. बीसबसा, बीसविसवा, बीस-बिस्वा, वीसवाबीस, बीसविसा, बीसांत्रीसै, बीसावीस, बीमुबसा, विसबावीस, विसवाबीस, विसवाहीवीस, विसव्वावीस, विसहवीस, बीसविसवा, वीसविसा, वीसवीसा, वीसवीस्वा ।

विसवावीसइ—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—पटणी पारिख सूरजी सघ सुं, जात्र करी लाभ सुजगीसइ । समयसुंदर कहइ साचउ मंइ जांण्यउ, वीतराग देव विदा विसवा-बीसइ । —स. कु.

विसवास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ जां जीतौ सारौ सगत, त्यां सब आई रास । भाग जिन्हां दा जांणियै, जै राखै विसवास । —गजउद्धार

उ०—२ अैसे नर अस्त्री भयौ, अग सिंघ को मोह । हेत विसवास न होत है, वातां करत विमोह । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ स्यांणप सूं सौदो पटायो, बेटै रौ बाप नांव-नांमून में आयो । डागै री विसवास जम्यो अर दायजै टीकै रो मोल मांग्यौ न थम्यो । सगै-सगै रौ रळग्यो जी मीठा हुया ज्यूं सक्कर घी । —दसदोख

उ०—४ मा'रजा नै आपरौ मितर बता-बता मार नांख्यौ । पण ओजूं बात रौ विसवास करै सांच कूड़ रौ वेरौ पट जावै तौ किसी नदलाल नै माड़ो बता देवै । —दसदोख

उ०—५ लांधूरांम राजदरबार रौ इनो वडो निबड़क चौधरी होवतां थकां भी भूत-पलीत, डोरा-डांडा, देई-देवता अर डाकण-स्यारी न कदै ही कूड़ नीं बतावै । आंधौ विसवास राखतौ थकौ हिड़दै मूं मानतौ रै'वै । —दसदोख

उ०—६ पूरणदस प्रांमियां, जनम होसी जोधाहर । बधै वंस विसवास, आस तै ज्यास मुरद्धर । —रा. रू.

उ०—७ सुत 'गोयंद' घांघळ सकज, दुभल विहारीदास । राजा निज पुर रक्खियौ, वचन जिकै विसवास । —रा. रू.

विसवासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

विसवासणौ, विसवासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

विसवासणहार, हारौ (हारी), विसवासणियो—वि० ।

विसवासिओड़ौ, विसवासियोड़ौ, विसवास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसवासीजणौ, विसवासीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

विसवासिआ—सं. स्त्री.—आर्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में मिलाकर ९ गुरु और ३९ लघु वर्ण सहित ५७ मात्राऐं हो ।

विसवासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसवासियोड़ी)

विसवासी—सं. पु. [सं. विश्वाची] एक प्रकार का वात रोग विशेष जिससे कंधे से लेकर अंगुलियों तक सारा ही हाथ न तो सिकोड़ा जा सकता है और न ही फैलाया जा सकता है । (अमरत)

२ देखो 'विस्वासी' (रू. भे.)

उ०—अंध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोड़ी वात नै सांची मांनण खातर ही वण्यौ है । नटणै खातर हरगिज नहीं । चावै कोई अफंड करो तथा जाळ । —दसदोख

विसवाहीवीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—दिल अंतर एह विचारी दसरथ, घर पदवी जुवराज सधीर । सो दैणी विसवाहीवीसै, राज जोग दीसै रघुवीर । —र. रू.

विसवि—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—१ वीठुल बरदाई बडी वडाई, विसवि उपाई व्रजवासी। मेरंग्गिर ग्रांमीं सुर नर सांमी, अंतरजांमी अविरणासी। —पि. ग्रं.

उ०—२ वडा ही वडा आचार दीपै विसवि, वहै सबळां खळां खेति बागै। जग हथै बंधियै 'गजरण' रौ जैत-हथ, जग हथां बंधपण विरद जागै। —केसोदास गाडण

विसवेस—देखो 'विस्वेस' (रू. भे.)

उ०—स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण। व्रज नायक विसवेस विसंभर, घणनांमी आणंदघण। —र. ज. प्र.

विसवौ-सं. पु.—१ जमीन को नापने का एक नाप विशेष जो एक एकड़ के पचासवें भाग के बराबर होता है।

उ०—चावै कोई अफंड करौ तथा जाळ। बींरै वास्तै तौ वीघै भूत अर विसवै सांप हाळी कैवत सांची है। खेजड़ी-खेजड़ी गोगा अर खेतरपाळ खड्या दीसै। —दसदोख

२ अंगुली की गांठ या जोड़ जहां से वह मुड़ सकती है।

३ अंगुली के जोड़ के स्थान पर पड़ी रेखा।

४ पूर्णता के माप का निश्चित अंश।

उ०—हिवै वीरमजो जाय जोइयै रह्यौ, जोईयां घणौ आदर दियौ, घणा हीड़ा किया कह्यौ वीरमजी विखै में आया छौ, बेखरच छै। ताहरां दांण मांहै विसवौ कर दियो। —नैणसी

५ अन्न पदार्थ आदि यत्किंचित्।

६ पिंगल प्रकाश के अनुसार एक वर्णिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम नगण फिर सगण फिर यगण होता है।

७ सार्वजनिक पशु (आंकल) के लिए गेहूं आदि की हरी फसल में से लाया गया चारा जो कि प्रत्येक दिन अलग २ कुए से लाया जाता है।

रू. भे.—बिस्वौ, विसोबा, विसोवा, विस्वौ।

विसव्वावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—घन सूरातन धन अडप, घन राठौड़ां ईस। सुणि सुरतांण कबूल की, वात विसव्वावीस। —गु. रू. बं.

विससन-सं. पु. [सं. विशसन] एक नरक का नाम।

विसहर-सं. पु. [सं. विषधर] सर्प, सांप।

उ०—१ तन बंबही मन विसहर मांही, डस्य डस्य जाहि सकळ जुग तांही। विसम लहरि ऊठै अग अंगा, ता तें होय सकळ जुग भंगा। —अनुभववांणी

उ०—२ मैलौ अत अदतार मन, रुच जस तणौ रहै न। तन काळौ विसहर तणौ, कंचुक सेत सहै न। —बां दा.

उ०—३ सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह निसांण। पालंखी विसहर भई, मदिर भयउ मसांण। —ढो. मा.

उ०—४ मूल मत्र जांणै कुछ नांही, बिसहर ले मेलै गल मांही। जैसा फुनि गति सी है माया, जै खाया तै बहौड़ि न आया।

—ह. पु. वा.

वि. [सं.] विष के प्रभाव को दूर करने वाला, विष के प्रभाव को हरण करने वाला।

रू. भे.—बिखहर, बिसहर, विक्खहर, विसहरि।

विसहरतिथ, विसहरतिथि-सं. स्त्री.—नागपंचमी।

रू. भे.—बिसहरतिथ, बिसहरतिथि।

विसहरा-सं. स्त्री. [सं. विषहरा] मनसा देवी का नामान्तर।

विसहरि—देखो 'विसहर' (रू. भे.)

उ०—सब जीव भुवंगम कूप में, साधू काढै आइ। दादू विसहरि विस भरै, फिर ताही को खाइ। —दादूवांणी

विसहरी-सं. स्त्री. [सं. विषहरा] मनसादेवी का नामान्तर।

विसहविसा, विसहवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसांई—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

उ०—अेक पेड़ रै तळै विसांई ली। गंगलौ लकड़ियां चुग लायौ डोकरी रोटियां पोवण लागी। —वरसगांठ

विसांगणा, विसांगना-सं. स्त्री. [सं. विष+अंगना] १ विषकन्या।

२ नाग कन्या।

विसांण-सं. पु. [सं. विषाण] १ हाथी दांत।

२ पशु का सींग।

३ सूअर का दांत।

रू. भे.—बिसांण, विखांण, विखांन।

विसांणण, विसांणन-सं. पु. [सं. विष+आनन] सर्प, सांप।

विसांणिन-सं. पु. [सं. विषाणिन्] एक जातिसमूह, जो दाशराज युद्ध में सदासराजा के पक्ष में था।

विसांणी—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

विसांणौ-सं. पु. [सं. विषाण] विवाह के लिए खरीदा गया हाथीदांत का चूड़ा।

उ०—सोमसी सांखलै सारी सभाई कीधी। वरी विसांणौ रावजी लेनै आया गोधूळक समै परणिया। रातिवासै पोढिया। प्रभातै सुखपाल मै बैसांण नै गढ जालौर लै आया।

—वीरमदे सोनिगरा री बात

रू. भे.—बिसांणौ।

विसांतक-वि. [सं. विष+अंतक] १ विष को नष्ट करने वाला, विष के प्रभाव को दूर हटाने वाला।

सं. पु.—शिव, महादेव ।

विसांनी-स. स्त्री.—शरपुंखा ।

रू. भे.—विमांनी, बिसूनी, विहांणी, बिहांनी, बिहूंणी, विहूणी, बिहूनी ।

विसाइत —देखो 'विसात' (रू. भे.)

उ०—प्रथम तौ द्रव्य हुवै तौ देवै, म्हारै घर मैं पांच लाख री **विसाइत** छै, गढ गिरनार रौ धणी तियै रै पांच लाख री माया तौ वीजा राजां रै कठा द्रव्य ? —सयणी री बात

विसाइति, विसाइती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'विसाती'

विसाऊ-वि.—खरीदने वाला, क्रेता, खरीददार ।

उ०—१ कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवंदा । विणज **विसाऊ** कुण वेस, कुण सुद्र कहदा । —केसौदास गाडण

उ०—२ महि मातौ मैंगळां, विडग ताता कारवांनां । किसतूरी कुमकुमा, अतर गांधियां दुकांनां । केसर चनण कपूर, अंग अरगचा अबीरां · और विहद अेवास, सुगंध चील पर समीरां । वादळा तास थिरमा वसत्र, बासतां ऊंच बजाज रां । **विसाऊ** 'सेर' महगी वुसत, गौ गाहिक सौदागरां । —पहाड़खां आढौ

विसाख-सं. पु. [सं. विशाखः] १ स्वामीकार्त्तिकेय ।

(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

२ शिव, महादेव ।

३ इंद्र-सभा का एक महर्षि ।

४ स्वामी कार्तिकेय का छोटा भाई ।

५ आयु राजा का एक पुत्र, एक राजा ।

विसाखा-स. पु. [सं. विशाखा] सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवां नक्षत्र, जिसमें चार तारे होते हैं ।

उ०—१ नखत **विसाखा** तिथी चवद्दस, घड़ी च्यार पळ वीस गयां निस । मिथुन लगन सोभन मिळ जागै, सकुन करण दुख हरण संजोगै । —रा. रू.

उ०—२ तदि निसा च्यार घटिका वितीस, ऊपरा वळै पळ सताईस । वणि नखित्र, विसाखा जेणि वार, 'अभमाल' जनम लीधौ उदार । —सू. प्र.

रू. भे.—बिसाख, बिसाखा ।

विसाग—देखो 'विसाद' (रू. भे.)

उ०—बिहूं रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सझै जग विस्वामित्र सहाय । जनंक तणौ वळि जोयौ ज्याग, मांगै धनुख कट्टण सीय **विसाग** । —ह. र.

विसाड़णौ, विसाड़बौ—देखो 'विसाणौ, विसाबौ' (रू. भे.)

विसाड़णहार, हारौ (हारी), विसाड़णियौ—वि० ।

विसाड़िओड़ौ, विसाड़ियोड़ौ, विसाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसाड़ीजणौ, विसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विसाड़ियोड़ौ—देखो विसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसाड़ियोड़ी)

विसाजुद्ध, विसाजुध—देखो 'विसायुद्ध' (रू. भे.)

विसाणौ, विसाबौ-क्रि. स.—१ छितराना, फैलाना, बिखेरना ।

२ खरीदना, मोल लेना ।

उ०—१ काच कथीर **विसाय** कर, कोई कनक घड़ावै ।

—केसौदास गाडण

उ०—२ खुरासांण उतपन्न, सोझ ऐराक **विसाया** । कर दरियावां पंथ, जिकै नावां सिर आया । —रा. रू.

उ०—३ काछी करह बियूंभिया, घड़ियउ जोइण जाइ । हरणाखी जउ हसि कहइ, आंणिसि एथि **विसाइ** । —ढो. मा.

३ निवास कराना, ठहराना ।

उ०—छांडि गयौ अब कहां **विसासी**, प्रेम की बाती बराय । बिरह समुद्र में छांडि गयौ पिव, नेहकी नाव चलाय । —मीरां

४ बेचना, बिक्री करना ।

उ०—१ तठा उपरांत करि राजांन सिलांमति तिण सहिर मांहै छत्रीस पवन जाति रहै छै । तिण सहिर मांहै बाजार चौहटा मंडिया छै । सोना रूपा जवहर जड़ाव कपड़ा पटकूल रेसम पस-मरा बाव भांति भांति **विसाईजै** छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ किरचा फाक्यां री कोथळी, बीड़ी सिगरेटां री डबी अर वेटरी, वाजां री पेटी रासभियां रै पेटा माथै लटकायां खोड़ में विसायत खांनौ सो **विसाया** फिरै है ! —दसदोख

५ स्थापित करना ।

विसाणहार, हारौ (हारी), विसाणियौ—वि० ।

विसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसाईजणौ, विसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिसाणौ, बिसाबौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ, विसाड़णौ, विसाड़बौ, विसावणौ, विसावबौ, विसाहणौ, विसाहबौ—रू० भे० ।

विसात —१ देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—आधेअेक देस मैं रावजी रौ अमल छै । थांणां सूं हमेसा राड़ां हुवै छै । जिणां दिनां वीरमदे दूदावत सूं मेड़तौ छूटौ सू **विसात** थकां राव कल्यांणमलजी कनां आयौ सू आ वात इण तरह छै । —द. दा.

२ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

विसाति, विसाती–सं. पु.—१ व्यापार करने वाला, व्यापारी।

उ०—'सूज' हर मिळै अध्रियांमणां साज सूं, जैतखंभ आज री किला जेरै। वारणां लियण हेरै नह विसाती, हैथंडां हूंकळां खळां हेरै। —उम्मेदसिंघ सीसोदिया री गीत

२ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

विसाद–सं. पु. [सं. विषाद] १ दुःख, शोक।

उ०—तुरत देय अम्रत कळस, मेट्यौ सत्रु विसाद। इसौ उदार विक्रम न्रपति, सुणौ भोज संवाद। —सिंघासण बत्तीसी

२ निराश या हताश होने की अवस्था या भाव।

३ दुर्बलता, कमजोरी।

४ मूर्खता, अज्ञानता।

५ उपायों के अभाव में पुरुषार्थहीनता।

रू. भे.—विखाद, बिसाद, विखाद, विसाग।

विसादी–वि. [सं. विषादिन्] जिसे विषाद हो, विषादयुक्त, विषादग्रस्त।

रू. भे.—विखादी।

विसाबीसै—देखो 'विसवाबीस' (रू. भे.)

विसायत–सं. पु.—१ देखो 'विसाती'

२ देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०–१ सो रावजी रै नांनांणै दिसा सौ साख हुतौ, सु रावजी जुहार कहायौ। त्यां स्रीरावजी नै भीतर बोलाया निछरावळां कीवी। अर कह्यौ—बाबा ! रिजक, विसायत दीसै छै सु थांहरी छै। भोजन करौ। —नैणसी

उ०—२ रांम सरीखा नांव न कळि मैं, गायां पातिग जात। पूरी एक विसायत पाई, खूटै कबुयन खात। —अनुभववांणी

उ०—३ साह रै एक बेटौ हुंतौ। तठै ओ आदमी आयौ हुंतौ, तिकौ ठकुरै रै माळियै विसायत देख राजी हुवौ। इयै मन माहै विचारी, जु साह तौ वडौ साह दीसै छै।

—ठकुरै साह री वात

३ देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायत पाछलै पोहर री ढळती छाया री विसायत कीजै छै। देसौत सिरदार जाजलमां पधारै छै। केस सुंवारै छै।

—रा. सा. सं.

उ०—२ चौरंगां री खाटखड़ हुयनै रही छै। कटोरां मांहै फूल लीजै छै। बाकरा होसनाकां वसू कीजै छै। देसौत रवां धोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर विराजमांन हुवा छै। —रा. सा. सं.

विसायति, विसायती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'विसाती'

विसायुद्ध, विसायुध–सं. पु. [सं. विषायुद्ध] १ सर्प, सांप।

२ विष में बुझाया हुआ अस्त्र।

वि.—विष में बुझाया हुआ, विषैला।

रू. भे.—विखाजुद्ध, विखाजुध, विखायुद्ध, विखायुध, विसाजुद्ध, विसाजुध।

विसायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ छितराया हुआ, फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ. २ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ।. ३ निवास कराया हुआ, ठहराया हुआ. ४ बिक्री किया हुआ, बेचा हुआ. ५ स्थापित किया हुआ।

(स्त्री. विसायोड़ी)

विसार–सं. स्त्री. [सं.] १ मछली। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

विसारण, विसारणौ–वि. (स्त्री. विसारणी) विस्मरण कराने वाला, भुलाने वाला।

रू. भे.—वीसारण, वीसारणौ।

विसारणौ, विसारबौ–क्रि. स.—१ विस्मरण करना, भुलना।

उ०—१ सो सपूत जे पीछौ राखै, दुरजन हीण कदै ना भाखै। वैरां तिणां विसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा।

—डाढाळै सूर री बात

उ०—२ थै तौ नाभि नरिंद कुल चंदा, राजि थांनइ सेवै सुर नर इंदा। थांरौ ध्यांन हिया विच धारूं, राजि थांनइ निसि दिन कही न विसारूं। —वि. कु.

उ०—३ ढोला, ढीली हर किया, मूंक्या मनह विसारि। संदेसउ नह पाठवइ, जीवां किसइ अधारि। —ढो. मा.

उ०—४ भांम गांम धांम ठांम ठहांम नकूं आंम, तमांम निहार सांम लै अरांम तांम। दांम दांम विसार निकांम फोड़ ह्वै उदांम, नरां जांम जांम मैं उचार रांम नांम। —र. ज. प्र.

२ परित्याग करना, त्यागना।

३ गलती करना।

४ आरम्भ करना, शुरू करना।

उ०—सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारां, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु विरक जंबू रसवाया, काक कंक को गिणै आस पळ संभळ आया। अछरां स्रंगार धरि ऊमही, हूरां हरखि उचारियौ। महि गयण संग खेळां मिळै, आगम जंग विसारियौ। —रा. रू.

विसारणहार, हारौ (हारी), विसारणियौ—वि०।

विसारिओड़ौ, विसारियोड़ौ, विसारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विसारीजणौ, विसारीजबौ—कर्म वा० ।

बइसारणौ, बइसारबौ, बिसारणौ, बिसारबौ, बीसारणौ, बीसारबौ, बीसारणौ, वीसारबौ—रू० भे० ।

विसारद–वि. [सं. विशारद] १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, विशेषज्ञ ।

२ विद्वान, पंडित, कवि । (अ. मा., ह. नां. मा.)

३ चतुर, होंशियार, कुशल, निपुण ।

उ०—सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध । अदसारद पारद उकति, करण **विसारद** बुद्ध । —रा. रू.

४ प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर ।

५ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू. भे.—बिसारद ।

विसारियोड़ौ–भू. का. कृ.–१ विस्मरण किया हुआ, भुलाया हुआ . २ परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ. ३ गल्ती किया हुआ ।

(स्त्री. विसारियोड़ी)

विसारौ–सं. पु.—विस्मृति, भुलावा ।

उ०—१ तद बहुबां सारी मुजरौ कर बोहड़ी, डेरै आई । सौ आप एकठी बैस कहण लागी—"आंपां कुंवरजी नुं किण भांत बिलमास्यां, बात **विसारै** घातस्यां । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ उण दिन सुं सारा मोहल इसी हीज तवज्या लोक-लोक री करण लागी अर कुंवरजी नुं इसा खुस कीया, जैसुं रच रह्या । नेट दिन आडा पड़ता गया, ज्युं ज्युं वात **विसारै** पड़ती गई । आदमी पण कदै ही कोई खरळां दिसली वात काढै नहीं । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ नंदलाल रौ नांव आवै जद स्यांमजी सफा सीतळ पड़ ज्यावै । मूंछ संवारै, ओला खावै, गैं'णै हाळी बात नै **विसारै** घालणी चावै । —दसदोख

विसाळ, विसाल–वि. [सं. विशाल] १ दीर्घ, बड़ा । (अ. मा.)

उ०—१ **विसाल** भाल तोप कौ विसाल जाळ वित्थुरै, धमक भू धुजावनीं धमंक मेघलौं धुरै । महांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथै कबीर नैं कही चिराव की चही चही । —ऊ. का.

उ०—२ चिहुर अलक्का ऊधरौ, विकसै वदन **विसाळ** । चोळ वरन्न कपोळ किय, रुत्ता लोचन भाळ । —गु. रू. ब.

उ०—३ चढियै गयण गज चौवांह, गुड्डी जांण फब्बि गिरांह । वाजै वीरघंट **विसाळ**, पक्खर पूठि घूघर-माळ । —गु. रू. बं.

उ०—४ सोल कला सुंदरि, ससिवयणी चंपकवन्नी बाल । काजल सांमल लह कइ, वेणी चंचलनयण **विसाल** । —हीराणंद सूरि

२ विस्तृत, लम्बा-चौड़ा ।

उ०—१ विसाल भाल तोप कौ **विसाल** जाल वित्थुरै, धमंक भू धुजावनीं धमंक मेघलौं धुरै । म्हांन रंज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथै कबीर नै कही चिराव की चही चही । —ऊ. का.

उ०—२ एक चित्त ऊजळा, चलै सुभ नीत रसत्तै । एक खूंन छलवांन,वहै कोळाहळ मत्तै । एक सोर सारत्ति, घोर घूंवा रवि डंवर । ज्यौं वावळि वादळ, **विसाळ** ओपै मग अंबर । —रा. रू.

३ ऊंचा ।

४ प्रसिद्ध, मशहूर ।

५ महान् ।

उ०—१ क्रपाळ **विसाळ** सिंघाळ किसन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न । मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस । —ह. र.

६ समय की निश्चित सीमा से अधिक, लम्बा ।

उ०—विभ्रम विमोह चित्तं, सपत तुरंग तांणियं सविता । वासर **विसाळ** लहियं, चक वांणै मंगळ भवण । —गु. रू. बं.

७ बहुत, अधिक ।

उ०—१ अन्नदिणंतरि रांमलि करंतउ,जमण तडा तडि राउ पहूतउ । जलखेलती दीठी बाल, बेडी बइठी रूप **विसाल** । —सालिभद्रसूरि

उ०—२ देवी सुनी रै दूध तैं खीर रांधी, देवी मारकंड रूप तैं भ्रांत बांधी । देवी मंत्र मूळ देवी बीज बाळा, देवी थापणी स्रब्ब लीला **विसाला** । —देवि.

८ लम्बा ।

उ०—१ मद मसत हळवळ, हालि मैंगळ, विमळ स्यांमळ घटा वद्दळ । जांणि रद बग पंत उज्जळ, व्याळ माळ **विसाळ** ।
—महाराव हणुतसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ कंबुकंठ भुज **विसाळ**, ग्रीव तीन रेखा । नटवर कौ भेस मांनु, सकळ गुण विसेखा । —मीरां

९ मात्रा की दृष्टि से अधिक ।

उ०—वग्गी हाक बहादरां, वीछड़ि पड़ै **विसाळ**। नाराजां ऊबांणियां खुरसांणियां कपाळ । —रा. रू.

सं. पु.—१ एक पर्वत का नाम । (पुराण)

२ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र ।

३ एक प्रकार का हरिण ।

४ लंका नगरी का एक राक्षस ।

५ परिक्षित राजा की पत्नी वैशालिनी का पिता एक राजा ।

६ कृष्ण का बालमित्र ।

७ विश्ववस व अलबुषा अप्सरा का पुत्र ।

रू. भे.—बिसाळ, बिसाल, विछाळ, विछाल, विसाळु, विसाळू ।

विसालक-सं. पु. [सं. विशालक] १ एक यक्ष जो कुबेर की सभा में रहता है।

२ वसुदेव पत्नी भद्रा का पिता।

विसाळता-सं. स्त्री. [सं. विशालता] विशाल होने की अवस्था या भाव।

विसाळद्रग-सं. पु. [सं. विशाल + दृग] शिव, महादेव। (अ. मा.)

विसाळनेत, विसाळनेतर, विसाळनेत्र-सं. पु. [सं. विशाल+नेत्र] शिव, महादेव। (क. कु. बो.)

विसाळपुरी—देखो विसाळापुरी' (रू. भे.)

विसाला-सं. स्त्री. [सं. विशाला] १ एक तीर्थ का नाम। (पुराण)

२ उज्जैन नगर का नाम।

३ सोमवंशीय राजा अजमीगढ़ की पत्नी।

४ गय राजा के यज्ञ से प्रकट हुई सरस्वती।

५ दक्ष प्रजापति की एक पुत्री।

६ कौशिक राजा की पत्नी।

७ महावीर्यपुत्र भीम राजा की पत्नी।

विसालाक्ष-सं. पु. [सं. विशाल+अक्ष] (स्त्री. विसालाक्षी) १ शिव का नामान्तर।

२ वास्तुशास्त्रविषयक अठारह प्रमुख ग्रंथकारों में से एक।

३ भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

५ विराट का छोटा भाई व सेनापति।

६ युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित मिथिलादेश का राजा।

७ भगवान् विष्णु का वाहन, गरुड़।

८ गरुड़ का एक पुत्र।

९ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम।

वि.—बड़ी व सुन्दर आंखों वाला।

विसालाक्षी-सं. स्त्री. [सं. विशाल+अक्षी] १ बड़ी एवं सुन्दर आंखों वाली स्त्री।

२ पार्वती देवी का नाम व उसकी एक मूर्ति।

३ चौसठ योगनियों में से एक योगिनी।

विसालाक्षीजात्रा, विसालाक्षीयात्रा-सं. पु. [सं. विशालाक्षीयात्रा] भाद्रपद कृष्णा तृतीयाको किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—इसमें तिथि रात्रिव्यापिनी होना आवश्यक है। इस दिन उपवास व जागरण व भाद्रपद शुक्ला तृतीया को गौरी का पूजन कर गुड़ के पूये नैवेद्य में दिये जाते हैं।

विसाळापुरी-सं. स्त्री. [सं. विसालापुरी] उज्जैन नगरी का नाम।

रू. भे.—बिसाळापुरी, विसाळपुरी।

विसाळु, विसाळू—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—वडा सांमि तें विसव किमि करि वणायौ, सरग सात पाताळ मुख मां समायौ। वडौ ताहरौ मुख उरळौ विसाळूं, किसन तूझ नां निमौ तुझ काळ-काळूं। —पी. ग्रं.

विसावणौ, विसावबौ—१ उपार्जन करना, कमाना।

उ०—'जोधा' हरां मिळै जोधारां, समहर रीठ वजायौ सारां। एक पोहर लड़ियौ बळ ओडै, कमधां भाम विसावण कोडै। —रा. रू.

२ उत्पन्न करना, नया पैदा करना।

उ०—१ वैर हमेस विसावणा, वाड़ विना वसणेह। वाघां रै क्यूं कर वणै, आरण आळसणेह। —बां. दा.

उ०—२ वैर विसावै वाघ सूं, वन माझळ कर वास। जतन न राखै जांणजे, वेगौ जास विणास। —बां. दा.

उ०—३ वातां वैर विसावणा, सैणां तोड़ै नेह। हासै विख पीणा हरख, आछा कांम न एह। —बां. दा.

३ प्राप्त करना, पाना।

उ०—एकां लाभ विसाविया, एक मूळ ठगांणा। —केसौदास गाडण

४ एकत्र करना, इकठ्ठा करना, संग्रह करना।

उ०—दो असाढ, दो भादवा, दो आसोज कै मांय, सोना-चांदी वेच कै, नाज विसावौ साय। —वरसा विग्यांन

५ देखो 'विसाणौ, विसाबौ' (रू. भे.)

विसावणहार, हारौ (हारी), **विसावणियौ**—वि०।

विसाविओड़ौ, विसावियोड़ौ, विसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसावीजणौ, विसावीजबौ—कर्म वा०।

विसावियोड़ौ-भू. का कृ.—१ उपार्जन किया हुआ, कमाया हुआ. २ नया पैदा किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ. ३ एकत्र किया हुआ, संग्रह किया हुआ, इकठ्ठा किया हुआ. ४ प्राप्त किया हुआ। ५ देखो विसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसावियोड़ी)

विसावीस, विसावीसै—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—१ गजां रत पोट, पड़ि चोट तंबागळां, वचण अरि ओट लै विसावीसै। धजवड़ां गहै मन-मोट ज्यां सिर धसै, दवाळा कोट सैंलोट दीसै। —अनोपसिंघ सांदू

उ०-२ वंदनीक पाय रा गाय रा दुजां विसावीस, आसुरां भजणा आडै घाय रा अमाव। अडोळ पाय रा सीह सुभाय रा आसतीक, सिहाय रा जनां ओधराय रा सुजाव। —र. ज. प्र.

उ०—३ हणु थाप गांम बिथार भार अठार वन कर भेद । उगणीस वरसं भोम जोबन विसावीस अखेद । —र. ज. प्र.

विसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ समेळा जांह कन्है, तुरी अमेळा जास । रावत मांभी इक मनां, जांह रौ किसौ विसास । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ यौं करता कितरा दिन वितीत हूवा सो गुवाळ पण विसास कीधौ जांणौ सो मौनै खाय तौ नहीं । —गांम रा धणी री वात

उ०—३ चद सूरिज हुई दीया साख, पांनी पवन अरि धूर अकासि । हुं नवि जांणु य ईम करै, मुसी है ! नणद हुं ईणी विसास । —वी. दे.

उ०—४ रांम भरोसं ऊकळे, आदण ईसरदास । ऊकळता में ओर दै, बंदा राख विसास । —ह. र.

विसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—१ विसासघात गोहलां, निपात डाभियां बुरी । करै कमंध चूक जोम, भोम आपरी करी । —पा. प्र.

उ०—२ भुजां धारियौ न खाग तें वाकारियौ न वाघ भूरौ, करग्गां प्रहारियौ दगा सूं आंणै कूंत । एकाएक लाखां बातां हारियौ धरम्म 'अजा', हिंदूनाथ मारियौ विसासघात हूंत । —जीवौजी भादौ

विसासणौ, विसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—कद थै नाग विसासिया, नैण लिया अग-भल्ल । मांन सरोवर कद गया, हंसां सीखण हल्ल । —अग्यात

विसासणहार, हारौ (हारी), विसासणियौ—वि० ।

विसासिओड़ौ, विसासियोड़ौ, विसास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसासीजणौ, विसासीजबौ—कर्म वा० ।

विसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विसासियोडी)

विसास्त्र—सं. पु. [सं. विष+अस्त्र] १ विष में बुझा हुआ अस्त्र ।

२ सांप, सर्प ।

विसाहणौ, विसाहबौ—क्रि. स.—१ स्वीकार करना ।

२ ग्रहण करना, पकड़ना ।

उ०—सब जीव विसाहैं काळ कौ, कर कर कोटि उपाइ । साहिब कौ समझै नहीं, यौं परळै ह्वै जाइ । —दादूबांणी

उ०—२ दादू कारण काळ कै, सकळ संवारै आप । मीच विसाहैं मरण कौ, दादु सोक संताप । —दादूबांणी

३ देखो 'विसाणौ, विसाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ करि उच्छव सूरजकंवर, कीध विदा 'अभसाह' । रिध सोव्रन मोती रतन, वसन अमोल्य विसाह । —रा. रू.

उ०—२ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल सोभण मुख मूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप । —वेलि.

विसाहणहार, हारौ (हारी), विसाहणियौ—वि० ।

विसाहिओड़ौ, विसाहियोड़ौ, विसाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विसाहीजणौ, विसाहीजबौ—कर्म वा० ।

विसाहणौ, विसाहबौ—रू० भे० ।

विसाहियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ. २ ग्रहण किया हुआ, पकड़ा हुआ ।

३ देखो 'विसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसाहियोड़ी)

विसिसथल, विसिस्थल—सं. पु. [सं. विशिस्थल] कटिस्थल ।

उ०—करमायु भर कुसुमचु, वेणि विसिस्थल थाय । ऊडंती जांणै ग्रही, सींचांणइ डुरगाय । —मा. कां. प्र.

विसिक्ख, विसिख—सं. पु. [सं. विशिखः] १ बांण, तीर । (अ. मा., डिं. नां. मा.)

उ०—जैसें वाउ थंभै तौ मेह वरसै । त्यौं अठै विसिख कहतां तीर चलावणौ रहि गयौ । धड़ां उपरि ऊजळी धारां तरवारचां की चमकण लागी । —वेलि टी.

२ एक पक्षीराज, जो गरुड एवं शुकी के पुत्रों में से एक था ।

रू. भे.—बिसिख, वसक्कि, वसख, विखिक, विसक, विसक्ख, विसख, विसिखि, विसिख्ख, विसेक, विसेख ।

विसिखा—सं. पु. [सं. विशिखा] १ फावड़ा ।

२ तकुआ ।

३ बांण, तीर ।

४ सुई या आलपिन ।

४ राजमार्ग, आम रास्ता ।

रू. भे.—बिसिखा ।

विसिखि, विसिख्ख—देखो 'विसिख' (रू. भे.) (अ. मा.)

विसिन—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—ब्रह्मि जगायौ विसिन, परम कोपियौ ईसर परि । महा कोप मन मांहि, कंध केकांण जिसौ करि । —पी. ग्रं.

२ देखो व्यसन' (रू. भे.)

विसिनि, विसिनी—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस । त्यांन करीमौ हुइ गियौ, विसिनि किसौ कोइ वेस । —पी. ग्रं.

उ०—२ इंद अनंत अणपार, विसिनि लै रोम वसाया। रोमि रोमि ब्रहमंड, असंख ब्रहमंड उपाया। रोम रोम ऊपरी रहै सायर जळ सारा, एकणि रोम अनंत वसै कविळास विचारा। —पी. ग्रं.

२ देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

विसिमिसि–सं. पु. [सं.] १ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, होड़। (उ. र.)

२ गर्व, अहंमता। (उ. र.)

विसिया—१ देखो 'बिसिया' (रू. भे.)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

३ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—जन हरिदास विसिया तजै, गोविन्द गुण गावै। छाजै बैसै ग्यांन कै, तब ही सच पावै। —ह. पु. वां.

विसियारस–सं. पु. [सं. विषय+रस] १ कामवासना, कामेच्छा।

२ भोगविलास, मैथुन।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाळ तरै, भल भोग नितंब नितंब भरै। कसिया तन घोट लंगोट कसी, विसियारस अंतर बीच बसी। —ऊ. का.

विसिरस्क–सं.पु. [सं. विशिरस्क] सुमेरु के पास का एक पर्वत। (पुराण)

विसिरा–सं. स्त्री. [सं. विशिरा] स्कद की एक अनुचरी, एक मातृका।

विसिस्ट–सं. पु. [सं. विशिष्ट] वह व्यक्ति या वस्तु जिसमें कोई विशेषता पाई जाती हो, अद्भुत वस्तु या व्यक्ति।

वि.—१ प्रसिद्ध, मशहूर, कीर्तिवान।

२ शिष्ट, सभ्य।

३ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

रू. भे.—विसीठ।

विसिस्टाद्वैत–सं. पु. [सं. विशिष्ट+अद्वैत] श्री रामानुजाचार्य का वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें, जीवात्मा और जगत दोनों को ब्रह्म से भिन्न माना गया है यद्यपि ये दोनों भिन्न नहीं है।

विसिस्टाद्वैतवाद—देखो 'विसिस्टाद्वैत'।

विसिस्टी, विसिस्ठी–सं. पु. [सं. विशिष्ठी] १ संदेशवाहक, खबरनवीस, दूत।

सं. स्त्री.—२ शंकराचार्य की माता का नाम।

विसीखमूरति—देखो विसीसमूरति' (रू. भे.)

विसीठ—१ देखो 'वसीठ' (रू. भे.)

उ०—राजा री सेना पूछियौ, लड़ाई अब हुइसी पिण पूछौ पैलां कुण छै विसीठा लोग पूछियौ। —पचदंडी री वारता

२ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

३ देखो 'विसिस्ट' (रू. भे.)

विसीठगारी–सं. पु.—१ संदेशवाहक या दूत का कार्य।

२ अपशब्द, कटुशब्द, गाली।

उ०—गोगादै वीरमोत मारियौ, तद राव रांणगदै विसीठगारी गोगादेजी सूं कीवी थी, तद गोगादेजी कह्यौ हुतौ—म्हारौ दावौ जोईयां सूं कौ नहीं, म्हारा तीन सरदार पड़िया, जोईयां रा सात सिरदार पड़िया, म्हारौ कोई राठौड़ वैर मांगै तौ राव रांणगदै कनै मांगज्यौ। —नैणसी

विसीसमूरति–सं. पु. [स. विशीषमूर्ति] कामदेव का नामान्तर।

विसुंडी–सं. पु. [सं. विशुंडी] कश्यप ऋषि का पुत्र एक नाग।

विसुंदरी—देखो 'विसूंदरी' (रू. भे.)

(स्त्री. विसुंदरी)

विसुंधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

उ०—विस्वामित्रेस एण वात, कोपियौ भयंकरा। गिरां तरां सरां गंभीर, धुज्जवै विसुंधरा। —सू. प्र.

विसु—१ देखो 'वसु' (रू. भे.)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—विसु दीवउं दुरयोधनिहिं, भीमह भोजन माहि। अमतु हुई नइ परिणमिउ, पुन्निहिं दुरिउ पुलाइ। —सालिभद्र सूरि

विसुआवीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—सुणौ रगण त्रिणि रूप सहि, सौ नै सत तालीस। प्रगट छंद कहि एण परि, वात विसुआवीस। —ल. पि.

विसुक्र–सं. पु. [सं. विशुक्र] देवी के द्वारा मारा गया एक भण्डासुर।

विसुणी—देखो 'विस्रांति'।

उ०—मोसा, ओळमा वगै कवै, छाक पूत सिर छाबड़ी। लेण विसुणी बैठ संभाळै, रळग्या बाळक राबड़ी। —दसदेव

विसुद्ध–वि. [सं. विशुद्ध] १ बिलकुल शुद्ध, खरा।

२ बिना पाप का, पाप रहित।

३ कलंकरहित, कलंकशून्य।

४ सच्चा, ठीक।

५ पवित्र।

उ०—१ विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पांतरैं नहीं, विसुद्ध सुद्ध सघ तैं असुद्ध आंतरैं नहीं। प्रचड पंडितांन की वितंड बंडळी नहीं, महा अबोध सोधनी सुबोध मंडळी नहीं। —ऊ. का.

उ०—२ कटै कडियाळ वहै करमाळ, कुटक्कै कोपर कंध कपाळ। बगत्तर जोध हुवंति विसुद्ध, जुटंत बहादर बाहुअ जुद्ध। —गु. रू. बं.

सं. पु.—योग या तंत्र के अनुसार राजस्थानी में शरीर के भीतर माने गये आठ कमल या चक्रों में से पांचवा चक्र।

वि. वि.—इसका स्थान कंठ माना गया है। जप १०००, रंग नीला (हलका आसमानी), दल १६ होते हैं। इसके देव कहीं चंद्र और कहीं शिव माने जाते हैं। इसके १६ अक्षर और १६ दल होते हैं।

उ०—चक्र **विसुद्ध** कंठ में उद्‌मुख जांणियै,धूम्र वरण सोडस दळ, कमळ पिछांनियै। एक एक कर सोडस स्वर हैं दळन पर, यंत्र पूरण चंद्राकृति, भासत सुक्लंतर। —साधक-सुधा

रू. भे.—बिसुद्ध विसुध, विसुद्धचक्र, विसुद्धिचक्र, विसुध।

विसुद्धचक्र-सं. पु—देखो 'विसुद्ध' (सं. पु.) (रू. भे)

विसुद्धचारी-सं. पु. [स. विशुद्ध+चारिन्] बिलकुल शुद्ध चरित्र वाला व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति।

विसुद्धता-सं. पु. [सं. विशुद्ध+ता] विशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

विसुद्धात्मा-सं. पु. [सं. विशुद्ध+आत्मा] परम शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप भगवान।

विसुद्धि-सं. स्त्री. [सं. विशुद्धि] विशुद्ध होने की क्रिया या भाव, शुद्धता।

रू. भे.—बिसुद्धि बिसुद्धी, विसुद्धी।

विसुद्धिचक्र—देखो 'विसुद्ध' (सं. पु.) (रू. भे.)

विसुध—१ देखो 'विसुद्ध' (रू. भे.)

उ०—किहि रिति संध्या कै विखै रस पाईजै छै। कवि यौ कहि गया छै। विहुं पखां। **विसुध**। विहुं मासां। बिहुं राति दिन। वसंति सारीखौ रस निरवाह छै। —वेलि टी.

२ देखो 'बेसुध' (रू. भे.)

विसुन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

विसुनपुर—देखो 'विस्णुपुरौ' (रू. भे.)

विसुनपुरी—देख 'विस्णुपुरौ' (अल्पा., रू भे.)

उ०—असीय सइहस सजै करि मैमत्ता, पंच क्षोहण जै कइ मिळइ नरिंद। कर जोड़ै नरपति कहई, **विसुनपुरी** जांणै वसइही गोव्यंद। —बी. दे.

विसुरण, विसुरणौ—देखो विसूरणौ' (रू. भे.)

उ०—हजार कोस में सारौ लोक दुखी छै। म्हांनै तौ छोडियां नै वरस छः हुवा छै, पण चाळीस दिन आपणी सीम में हुवा, सारौ लोक रोवै था। माथौ टेकिय **विसुरण** करै था। —पलक दरियाव री वात

विसुरणौ, विसुरबौ—देखो 'विसूरणौ, विसूरबौ' (रू. भे.)

विसुरणहार, हारौ (हारी), **विसुरणियौ**—वि०।

विसुरिओड़ौ, विसुरियोड़ौ, विसुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विसुरीजणौ, विरीजबौ—कर्म वा०।

विसुरियोड़ौ—देखो 'विसूरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसुरियोड़ी)

विसुव-सं. पु. [सं. विषुव] दिन और रात दोनों बराबर होने का वह समय जब सूर्य विषुवत्‌रेखा पर पहुंचता है। (ज्योतिष)

विसुवरेखा—देखो 'विसवतरेखा' (रू. भे.)

विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति विसुवामित्र,—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे.)

विसुविसा, विसुवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसूंणी—देखो 'विस्रांति'।

विसूंदरौ-सं. पु. (स्त्री. विसूंदरी) विषैला जन्तु विशेष, छिपकली।

उ०—१ नाई बोल्यौ—हां बापजी, बात तौ आपरी साव साची। म्हारी निजरां देख्योड़ी है। अेकर **विसूंदरा** री पूंछ वाढी तौ वा निरी ताळ आंगणा में लटपट लटपट करती री। —फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ कह्यौ—पाळियोड़ी मिन्नी रौ कांई सबूत ! म्हैं किसी उणनै मोल लायौ हौ। थे तौ कैवौला कै ऊंदरा ई म्हारै पाळियोड़ा है, घर री माखियां, माछर अर **विसूंदरा** ई म्हारै पाळियोड़ा है। —फुलवाड़ी

रू. भे.—बिसांदरौ, बिसुंदरौ, बिसूंदरौ, विसंदरौ, विसुंदरौ।

मह.—वसंदर।

विसू—देखो 'वसु' (रू. भे.)

उ०—१ **विसू** रक्खण सुजस वातां, इंद्र कौसळ आखियातां, देव वंछित दांन दाता, दुफल दीन दयाळ। गाव दससिर बांण गंजै, प्रगट खळ जन भूप भंजै, जनक पण रख चाप भंजै भलै अवध भुवाळ। —र. ज. प्र.

उ०—२ देण सेवग लंक दाता, घल्ल व्याध कबंध घाता। **विसू** रखण क्रीत वातां, हद्द हातां हद्द हातां। —र. ज. प्र.

उ०—३ वडा भाग ज्यांरी **विसू**, लछबर चरणां लाग। पाव रांम गुण प्रीत सूं, आठ पहर अनुराग। —र. ज. प्र.

विसूइया—देखो 'विसूचिका' (रू. भे.) (जैन)

विसूकणौ, विसूकबौ-क्रि. अ.—१ रसहीन होना, सूखना।

उ०—बन मांभळ बधवाव सूं, दुरद **विसूकै** डांण। जेठ लुवां सूकंत जिम, निरजळ देख निवांण। —बां. दा.

२ नष्ट होना।

३ दुर्बल होना, कमजोर होना।

४ सुन्न होना।

५ दुधारु पशु के दूध आना बन्द होना।

विसूकणहार, हारौ (हारी), विसूकणियौ—वि०।

विसूकिओड़ौ, विसूकियोड़ौ, विसूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसूकीजणौ, विसूकीजबौ—भाव वा०।

विसूकणौ, बिसूकबो, बेहुगणौ, बेहुगबौ, विसूगणौ, विसूगबौ—रू०भे०

विसूकियोड़ी-सं. पु.—वह गाय, भैंस, या अन्य दुधारु पशु जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो।

रू. भे.—विसूगियोड़ी।

विसूकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ रसहीन हुवा हुआ, सूखा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ. ३ दुर्बल हुवा हुआ, कमजोर हुवा हुआ. ४ सुन्न हुवा हुआ।

(स्त्री. विसूकियोड़ी)

विसूगणौ, विसूगबौ—देखो 'विसूकणौ, विसूकबौ' (रू. भे.)

विसूगणहार, हारौ (हारी), विसूगणियौ—वि०।

विसूगिओड़ौ, विसूगियोड़ौ, विसूग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसूगीजणौ, विसूगीजबौ – भाव वा०।

विसूगियोड़ी—देखो 'विसूकियोड़ी' (रू. भे.)

विसूगियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. विसूगियोड़ी)

विसूचिका-सं. स्त्री. [सं.] वमन और बिरेचन को साथ लिए हुए हैजा नामक रोग विशेष, जो अजीर्ण की वृद्धि के कारण होता है।

विसूची-स. स्त्री. [सं. विषूची] १ विरजू नामक राक्षस की पत्नी,जिससे इसे सो पुत्र एवं एक कन्या उत्पन्न हुई थी।

२ देखो 'विसूचिका' (रू. भे.)

विसूणी—देखो 'विस्रांति'।

उ०—जोंड़े खनै जिरांण, जठै नर मृतक जळावै। सीढी धोरै मे'ल, विसूणी बीच लरावै। जळ री कर छिड़काव, नंगलियौ फटकै फोड़ै, हांडी पावक हेत, दागवै पाळां जोंडै। —दसदेव

विसूर-सं. पु.—रुदन करने या सुबकने की क्रिया या भाव।

विसूरण, विसूरणौ-सं.पु. [सं.विसूरणं] १ दुख, रंज, शोक, पश्चाताप।

उ०—इण भांत झालो ठाकुर सिंह ऊभौ-ऊभौ विसूरणा करै छै। हाथ मसळै छै। घोड़लो आपरी सवारी री सुन्हली साखत सूं खेत मांही पड़ियौ छै। —डाढाळा सूर री वात

२ चिन्ता।

३ रुदन।

४ किसी मृत व्यक्ति के शोक में बनाया हुआ पद्य, मरसिया।

रू. भे.—बिसूरणौ, विसुरण, विसुरणौ, वीसूरण, वीसूरणौ।

विसूरणौ, विसूरबौ-क्रि. स.—१ सुबक-सुबक कर रोना।

उ०—१ निमखांतर सहता नहीं, दीखण लागा दूर। भाखै इण विध भांमणी, वचन विसूर-विसूर। —र. हमीर

उ०—२ एक घड़ी आधी घड़ी तुम सौं रहूं ज दूर। बरस बराबर एक पळ, रहूं विसूर-विसूर। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ —चिन्ता करना, शोक करना।

उ०—माया विसरी वेलड़ी,हरीया पसरी दूरि। केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि-विसूरि। —अनुभववाणी

३ रुदन करना, रोना।

उ०—१ भिरै भटालि भाल में भिखार भूर-भूर व्है, छिता अफंड छंड कै प्रचंड ज्वाळ तें चिपें। भगें कनूर भूरि भेंस तूर तूर व्है भजौ, मरै विसूर सूर कै मकूर कन्न लै मजौ। —ऊ. का.

उ०—२ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नही भरि सोय। रांम विसूरै विरहनी, आंसु कर सुं धोय। —अनुभववांणी

४ पश्चाताप करना, दुख करना।

उ०—तर ऊंचौ असमांन फळ, पथी रह्या विसूरि। जनहरिया फळ ऊजळा, हाथ न पहुंचै दूरि। —अनुभववांणी

विसूरणहार, हारौ (हारी),विसूरणियौ—वि०।

विसूरिओड़ौ, विसूरियोड़ौ, विसूर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसूरीजणौ, विसूरीजबौ कर्म वा०।

बिसूरणौ, बिसूरबौ, विसुरणौ, विसुरबौ—रू० भे०।

विसूरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सुबक-सुबक कर रोया हुआ. २ चिन्ता किया हुआ, शोक किया हुआ. ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. ४ पश्चाताप किया हुआ, दुख किया हुआ।

(स्त्री. विसूरियोड़ी)

विसूविसा, विसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसेक, विसेख-सं. स्त्री.—यश, कीर्ति, प्रसिद्धी।

(अ. मा., ह. नां. मा.)

वि.—१ भयकर, भयावह।

उ०—१ आसाढऊ सुद नवमि, गुण आगै रिख (१७३७) लेख। जिकै समत्सर जोधपुर, समहर थयौ विसेख। —रा. रू.

उ०—२ यौं नभ रवि अचरज्जियौ, प्रबळ कळह गह पेखि। एक प्रहर गोळां उरड़, व्रत झड़हूंत विसेख। —रा. रू.

[सं. वि =विशेष+सेक=शोक] २ विशेष दुखी, खिन्नचित्त, उदास, पीड़ित।

उ०—रांम निचंत आप हुय रहिया, सुध म्हांरी वीसरिया सांम। लेखा सकळ विसेक विलोकै, बोलै जद राघव वरियांम। —र. रू.

३ देखो 'विसिख' (रू. भे.)

४ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—पछै अबु समझायौ, कह्यौ—अै इण तरफ वडा आदमी फंमदार छै। इणां सु आंपणौ कांम आखर कर देसी। तठा पछै इणां रौ आदर भाव विसेक कीयौ। —नैणसी

उ०—२ मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक। सारदूळ विक्रीड़तह, वरणौ छंद विसेक। —र. ज. प्र.

उ०—३ वांसवाहलौ ठोड थापी दोय रावळ हुवा दोय सारीखी राजधांनी हुई तरवार सांमैं वांसवाहला रा धणियां री विसेख हुई। —नैणसी

उ०—उर पतसाह उचाट अत, वाट अटक्की देख। मिरच हुतासण होमिया, मंत्र कतेब विसेख। —रा. रू.

उ०—५ साथ रै लोक नूं कहण लागौ, 'जो वीहा कुंवरजी रै आगे ही घणा छै पिण समझदार दातार तौ लाडीजी सारखौ कोई नहीं—बडी सिरदार जांणियौ विसेख।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ तिण रुपियां री जायगा लेयनै लकड़ा री खटकड़ कीधी। आरंभ थोड़ौ। जद स्वांमीजी नें किणही कह्यौ—इनमें कोई आरंभ है ? विसेख आरंभ नहीं। —भि. द्र.

उ०—७ दस कूप समौ वापी, दस वापी समौ सर। दसां सरवरां समी किन्या, अन-दांन विसेखत। —रा. सा. सं.

उ०—८ प्रथीराज रै हाथ रावत भींव रहियौ। बीजौ ही घणौ विसेख हुऔ। पाछा कुसळ-खेमैं रावजी कनै साथ आयौ तरै सिकै राती बरछी कीयां रावजी री हजूर आया। —नैणसी

रू. भे.—विसेखि।

अल्पा.—विसेखियौ, विसेखौ।

विसेखकच्छेद्य—सं. पु.—६४ कलाओं में से एक कला का नाम।

विसेखणौ, विसेखबौ—क्रि. स.—१ देखना, जांच करना।

२ अवलोकन करना, समझना

उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि, दळ प्रबळ उच्छव पेखियौ। सब धरण नव सुख नवल सोभा, विमळ रूप विसेखियौ। —रा. रू.

३ कहना, पुकारना।

उ०—व्यंदु दोय सुनयणा विसेखौ, बहु अनुमार मनहरा बेखौ। विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत। —र. ज. प्र.

विसेखणहार, हारौ (हारी), विसेखणियौ—वि०।

विसेखिओड़ौ, विसेखियोड़ौ, विसेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विसेखीजणौ, विसेखीजबौ—कर्म वा०।

विसेखणौ, विसेखबौ—रू० भे०।

विसेखापुद्गल-सं. पु. [सं. विशेषापुद्गल] वे पुद्गल जिनका आत्म सम्बन्ध नहीं हुआ है।

विसेखि—सं. पु.—१ कारण।

उ०—पातिसाह दिली मांहै हुयौ दिन अढाई। तिण पातिसाह रौ मांनौ ममरेजखांन तिणि एदल नूं मारि अर टीकौ लियौ दिली रौ। वरस एक राज कियौ। पातिसाह सेती लूणहरांम कियौ। तिणि विसेखि ममरेजखांन आप गहिलौ हुयौ। —द. वि.

२ देखो 'विसेख' (रू. भे.)

३ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ महस लाख स्रावक भणी, भोजन पुण्य विसेखि। सेत्रुंज साध पडिलाभता, अधिकउ तेह थी देखि। —स. कु.

उ०—२ ऊठिया जगतपति अंतरजांमी, दूरंतरी आवतौ देखि। करि वंदण आतिथ श्रम कीधौ, वेदै कहियौ तेणि विसेखि। —वेलि.

विसेखियौ, विसेखी, विसेखौ—१ देखो 'विसेख' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कोधी कपटी पूर, भूंडौ दीसै नूर। धरम रौ द्वेसियौ ए, मच्छर विसेखियौ ए। —जयवांणी

उ०—२ हिम वाधि हिम रित निसा हरणौ, दिवस क्रिस गुणि देखियै। चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर विसेखियै। —रा. रू.

उ०—३ तिणि मां गुर इकत्रीस, दोइ लुघ भेळा देखौ। मूहर नांम सौ महण, वळै गुणत्रीस विसेखौ। —पिं. प्र.

उ०—४ कंबु कंठ भुज विसाळ ग्रीव तीन रेखा, नटवर का भेख मांनौ सकळ गुण विसेखा। छुद्रघंटिका अधर अनूप किंकिनी धुन सवाई, उस गिरधर के अंग अंग मीरां बळि जाई। —मीरां

उ०—५ इंद्र बोल्या बेऊं करस्या नै हो, लाया थे जांन विसेखौ। नेम कंकर परणै जिकै ही, मैं पिण लेस्यां लेखौ। —जयवांणी

विसेट, विसेठ—देखो 'वसीठ' (रू भे)

उ०—१ दळ सझवै सुरतांण, आय चित्रकोट विलिज्जइ। भेजउ वेगि विसेट, बात मिलणै की कीजइ। —प. च. चौ.

उ०—वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार सभा सहित राय भेटीयउ, बोलइ वयण विचार। —प. च. चौ.

विसेरियौ—सं. पु.—१ आधिपत्य या प्रशासन में रहने वाला व्यक्ति।

उ०—तरै कंवर करन कह्यौ—"थांनुं, दीवांणजी बुलाया छै, थै आवौ तौ हूं जीमूं" तरै मेघ कह्यौ—"म्है थांरा विसेरिया चाकर छां, ज्यूं थै कहस्यौ, त्युं करस्यां पिण हूं पातसाहजी सौं सीख कर आवसौं। —नैणसी

२ देखो 'वसीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

विसेल, विसेलौ–वि. [सं. विषैला] १ जहरीला, विषयुक्त। (अमरत)

२ व्यसनी, विषयी।

विसेविसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसेस–वि. [सं. विशेष] १ अधिक, विशेष, ज्यादा।

उ०—१ पनंगेस धरेस सुरेस तेस सभै पेस, भूतेस **विसेस** चिंतवेस ध्यांन भेस, जौतेस, अरेस बंध सेस क्रीत जपौ जेस, 'किसनेस' कवेस नरेस कोसळेस। —र. ज. प्र.

उ०—२ खरळां रा आदमियां रौ जाबतौ आप रा मुख सुं करावै छै। दारू रा घड़ा बीच में पड़िया छै। सारै साथ नुं पायजै छै। फेर उहां नुं **विसेस** जाबतौ देय पावै छै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ 'सोमल' ब्राह्मण नीधिया, 'सोमा' नांमै एक। प्रत्यक्ष जांणै अपछरा, चतुराई रूप **विसेस**। —जयवांणी

२ मुख्य, खास, प्रधान।

उ०—१ **विसेस** बाब अेलची रा में, जिकी जीभ बादसाहां री छै अर हाल, समझ, बादसाहां रा तौर अेलची उण रा सूं मालम होय। —नी. प्र.

उ०—२ पूत पिता एकै थया, थै चढ जावौ देस। बोलां कोला बोलिया, वीतौ वयण **विसेस**। —रा. रू.

३ साधारण से परे, अतिरिक्त या अधिक।

सं. पु.—१ अन्तर. भेद।

२ हर्ष, खुशी।

३ पदार्थ. वस्तु।

४ अधिकता, उत्तमता विशेषता।

५ विचित्रता, अद्भुतता, अनोखापन।

६ सार, तत्व।

७ प्रकार, किस्म।

८ दमन नामक शिवावतार का शिष्य।

९ सात प्रकार के पदार्थों में से एक प्रकार का पदार्थ। (वैशेषिक दर्शन।

१० एक प्रकार का पद्य विशेष, जिसमें तीन श्लोकों या पदों में एक ही क्रिया रहती है। (साहित्य)

११ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें आश्चर्योत्पादक अर्थ (घटना) का वर्णन होता है। इसके तीन भेद होते हैं।

रू. भे.—बसेस, बिसेस, वछेक, वसेक, वसेख, वसेस, विसक्ख, विसेक, विसेख।

अल्पा.,—वसेखौ, विसेखि, विसेखियौ, विसेखी, विसेखौ, विसेसि, विसेसौ।

विसेसउक्ति—देखो विसेसोक्ति' (रू. भे.)

विसेसक–वि. [सं. विशेषक] १ विशेषता उत्पन्न करने वाला।

सं. पु.—१ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में पांच भगण व एक गुरु होता है।

वि. वि.—इसके अश्वगीत, नील, व लीला भी नाम हैं।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें प्रस्तुत-अप्रस्तुत में गुण सादृश्य होने पर भी किसी कारणवश विशेषता की स्फुरणा होती है। (साहित्य)

विसेसग्य–वि. [सं. विशेषज्ञ] किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला।

विसेसण–सं. पु. [सं. विशेषण] व्याकरण में वह विकारी शब्द, जिससे किसी संज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो।

वि.—विशेषता बताने वाला।

विसेसता–सं. स्त्री [सं. विशेषता] विशेष होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—बिसेखता, बिसेसता।

विसेसन्नु–वि.—विशेषज्ञ। (जैन)

विसेसालंकार—देखो 'विसेस' (११)

विसेसि—देखो विसेस' (रू. भे.)

उ०—पूगळ देस दुकाळ थियुं, किणहीं काळ **विसेसि**। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चढ़ देसि। —ढो. मा.

विसेसोक्ति–सं. स्त्री. [सं. विशेषोक्ति] एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें पूर्ण कारण के होने पर भी कार्य का अभाव वर्णित होता है।

वि. वि.—इसके तीन भेद कहे गये हैं—

(१) उक्तनिमित्ता—जिसमें कार्य के अभाव का निमित्त कहा जाय।

(२) अनुक्तनिमित्ता—जिसमें कार्य के अभाव का निमित्त नहीं कहा जाय।

(३) अचिंत्यनिमित्ता—जिसमें कार्य के अभाव का निमित्त समझ में नहीं आने वाला हो।

रू. भे.—विसेसउक्ति।

विसेसौ—देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे.)

विसेस्य–सं. पु. [सं. विशेष्य] व्याकरण की वह पद या शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगा कर सूचित की जाय।

विसै—देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—१ कुंती नगरी नै **विसै**, हुवौ हाहाकार। देखौ राय मराविपौ, बिना गुनै अणगार। —जयवांणी

उ०—२ हसण बोलण चालण **विसै**, घणुं होसी हो अवसर नौ

जांण। युद्ध करी अपराभवी, नवांग सुंदर ही, सोभै स्रंगार वखांण।
—जयवांणी

उ०—३ आयै साध भये प्रहलाद, जिनकै नहीं विसै रसवाद। उनका कहा वरनौ विसतार, रांमसनेही मेरै प्रांण अधार।
—ह. पु. वां.

विसोक-सं. पु. [सं. विशोक] १ अशोक नामक वृक्ष।

२ ईश्वर, परमात्मा।

३ भारतीय युद्ध में पाण्डव पक्षीय राजा जो केकय राजकुमार था और कर्ण के द्वारा मारा गया था।

४ भीमसेन का सारथि।

५ ब्रह्मा का मानसपुत्र। (पुराण)

६ दमन शिवावतार का एक शिष्य।

७ कृष्ण एवं त्रिवक्रा के एक पुत्र का नाम जो नारद का शिष्य था।

वि.—१ जिसे शोक न हो, शोकरहित।

२ जिसे शोक हो, शोक युक्त।

रू. भे.—विसोग।

विसोकद्वादसीव्रत-सं. पु. [सं. विशोकद्वादशीव्रत] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत विशेष।

वि. वि.—इस दिन सिर्फ अल्पाहार किया जाता है और लक्ष्मी-पूजन किया जाता है इसके करने से प्रियवियोग नहीं होता है तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है।

विसोका-सं. स्त्री. [सं. विशोका] १ कृष्ण की सोलह हजार पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

२ स्कंद की एक अनुचरी मातृका।

विसोग—देखो 'विसोक' (रू. भे.)

विसोतर-सं. पु.—एक सौ बीस की संख्या।

रू. भे.—बिसोतर, बिसोत्तर, विसोत्तर।

विसोतरि, विसोतरी—देखो 'विंसोत्तरी' (रू. भे.)

विसोत्तर—देखो 'विसोतर' (रू. भे.)

विसोत्तरि, विसोत्तरी—देखो 'विंसोत्तरी' (रू. भे.)

विसोधन-सं. पु. [सं. विशोधन] पापों का नाश करने वाले भगवान्।

विसोधनी-सं. स्त्री. [सं. विशोधनी] ब्रह्मपुरी का नाम।

विसोनी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का वर्षात में पैदा होने वाला पौधा, शरपुंखा।

रू. भे.—बिसूनी, बिसोनी, बीग्रोनी, बीफनी, बीसूनी, बीसोनी, बेहोनी।

विसोबा—देखो 'विसवौ' (रू. भे.)

विसोभित-वि. [सं. वि.=रहित+शोभित] १ शोभारहित, भद्दा।

उ०—जब राति वितीत होण लागी। तब चंद्रमा किसौ दीसै छै। जिसौ भरतार असमाध्यां थकां सती कौ मुख देखिज्यै। जब पिउ वै माहै सक्त छै। चंद्रमा माहि ज्योति छै। श्रौ दुख का मारचां अर यै दिन की जोति नजीक आयां। दून्यौ विसोभित सा देखीजै छै।
—वेलि टी.

[सं. वि.=विशेष+शोभित] २ विशेष शोभित, शोभायुक्त।

विसोवम-वि. [सं. विषोपम] विष के समान जहर के सदृश्य।

विसोवा—देखो 'विसवौ' (रू. भे.)

विसोवावीस, विसोहावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ राजा नीयत सांभळै, वहै विसोवावीस। असमै धारै बुद्धि बळ, समै, विचारै रीस।
—रा. रू.

उ०—२ आभ थोभै भुजै "माल" हर आभरण, वधै आधक छत्रां विसोवावीस। दुचित दिल्लेस तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस।
—केसोदास गाडण

विसोही-वि. [सं. विशोही] १ आत्मा को विशेष प्रकार से शोधन करने वाला। (जैन)

सं. स्त्री.—विशुद्धी।

विसौ-वि. [स्त्री. विसी] वैसा, जैसा, समान।

उ०—१ ग्रै दोनूं सरदार जनांनां रै बाहर जाय ऊभा रहिया। इहां नूं मांहीं बड़णै नहीं दिया राजूखां री बीबी बाहर आय कही—बाबा थांरो वैर थां लेय ही लियो। साबास छै, बडी रजपूती राखी! जसा पुरसां रा थै लड़का था विसी ही कीवी। जनांनी मरजाद मतां भांजो।
—सूरै खींवै कांधलोत री वारता

उ०—२ सेठ तीन दिनां तांई कलकत्ता री सड़कां नापी जरै कठै ई जावतां चौथोड़ै दिन ठीक विसौ रौ विसौ इज हीरौ एक देसी फरम में निगै आयौ।
—अमरचूंनड़ी

उ०—३ दिनुगां री टेम ही अर भूलेसर री भीड़ आपरी पूरी जवांनी पर आयोड़ी ही। जवांनी ई इसी-विसी नहीं पण टल्ला देवती।
—रातवासौ

विस्कंभ, विस्कंभक-सं. पु. [सं. विष्कंभ, विष्कंभक] १ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक योग का नाम।

वि. वि.—इसमें किसी शुभ कार्य करने में विष्कुंभ योग की प्रथम पांच घटि (दंडों) को अशुभ व शेष को शुभ माना जाता है।

२ योगियों का एक प्रकार का बंध।

३ भूत एवं भविष्यत् कथाओं का सूचक, एवं कथा का संक्षेप करने वाला अंक।

रू. भे.—बिसकंभक, विसकंभक।

विस्कंभी-सं. पु. [सं. विष्कम्भिन्] शिवजी का एक नामान्तर।

विस्क-सं. पु. [सं. विष्क] बीस वर्ष की आयु का हाथी। (डिं. को.)

विस्कर-सं. पु. [सं. विष्कर] १ पक्षी, चिड़िया।

२ पूर्वकालिक एक राक्षस जो सम्पूर्ण पृथ्वी का शासक था।

विस्कल-सं. पु. [सं. विष्कल] सूअर, शूकर।

विस्किर-सं. पु. [सं. विष्किरः] १ पक्षी चिड़िया।

२ सर्प, सांप।

विस्कुट—देखो 'विस्कुट' (रू. भे.)

विस्टइ-सं पु. [सं. विष्टि] संदेशवाहक, दूत।

उ०—१ **विस्टइ** ! तूं वलि वेगिसूं, विक्रम कहिजै वात। वेस देउं अै विप्रनइ, तु अेह ज माहरु तात। —मा. कां. प्र.

उ०—२ अम्हो वलूं इम **विस्टइ**, काहवी करुणावंतो। क्षिति मंडन क्षोजइ नहीं, क्षिमा-खडग सोभंति। —मा. कां. प्र.

विस्टकार-सं. पु.—१ दूत, सन्देशवाहक।

२ अपशब्द कहने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—विस्टिवार।

विस्टकारी-सं. पु.—१ दूत या सन्देशवाहक का कार्य।

२ अपशब्द, गाली, कटु शब्द।

उ०—पसू बांधनै घाव कियौ। इसौ घाव जो राव रांणंगदे नूं अथवा सादै कुंवर नूं करै तौ जांणूं घाव कियौ। मोनूं भाटी खटकै छै। इयां गोगादेजी नूं **विस्टकारी** दी हुंती, सु मोनूं दूखै छै। —नैणसी

रू. भे.—विस्टाकारी, विस्टिकारी।

विस्टप-सं. पु [सं. विष्टप] संसार, जगत।

विस्टर-सं. पु. [सं. विष्टर] १ आसन, बैठक।

२ यज्ञ में ब्रह्मासन।

३ पेड़, वृक्ष। (ह. नां. मा.)

४ देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

रू. भे—बिसटर, बिस्टर, विसटर।

विस्टरास, विस्टरास्व-सं. पु. [सं. विष्टराश्व] सूर्यवंशी राजा पृथु के उत्तराधिकारी राजा का नाम।

उ०—सुत विकुख सकूनिज सुत स्वाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जै सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नंदन **विस्टरास**। —सू. प्र,

विस्टाकारी—देखो 'विस्टकारी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां गोगादेजी बोलिया—जै कोई सुणतौ हुवै तौ सांभळज्यो, गोगादै कहै छै, राठोड़ें अर जोईयें वैर बराबर हुवौ छै। जै कोई जीवतौ हुवै तौ महेवै जायनै कहज्यो। राव रांणंगदै **विस्टाकारी** दीनी छै। ज्यो वैर भाटियां कनां लेज्यो। —नैणसी

विस्टाळ, विस्टाळु, विस्टालु, विस्टाळू, विस्टालू, विस्टाळौ, विस्टालौ-वि. [सं. विष+टालनम्] बीच बचाव करने वाला, मध्यस्थता करने वाला।

स. पु.—१ कलह या झगड़े की अवस्था में शान्ति कराने वाला मध्यस्थ व्यक्ति।

२ सुलह कराने की क्रिया, मध्यस्थता।

३ समझौता।

उ०—सहर रै दरवाजै चिठी बांधी—नव चोर मारचा तिण रा इग्यारा गुणां निनांणवै मनुस्य मारचां पछै **विस्टाळौ** कर सूं। —भि. द्र.

रू. भे.—बसीटाळ, बसीटाळौ, बिसटाळ, बिसटाळौ, वसीटाळ, वसीटाळौ, विसटाळौ।

विस्टि-सं. पु. [सं. विष्टिः] १ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

सं. स्त्री. [सं. विष्टि] २ विष्टिभद्रा नामक ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवां करण। ३ नरकगामी जीव का नरकवास। ३ विवस्वत् एवं छाया की एक भयंकर कुरूपा कन्या जिसका विवाह त्वष्ट पुत्र विश्वरूप राक्षस से हुआ था।

विस्टिकार—देखो 'विस्टकार' (रू. भे.)

विस्टिकारी—देखो 'विस्टकारी' (रू. भे.)

विस्टिव्रत-स पु. [सं. विष्टिव्रत] एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमें मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थी को इसका संकल्प कर विद्वान ब्राह्मण का पूजन करे तथा लोह, पाषाण या काष्ठ की मुद्रा बनवा कर अष्टदल आसन पर प्रतिष्ठित कर पूजन करे। इस व्रत को इन्द्र ने वृत्रासुर मारने हेतु, शिव ने त्रिपुरासुर का वध करने हेतु विष्णु ने पांचजन्य शखार्थ एवं वरुण ने विमानार्थ किया था।

विस्टौ-सं पु. [सं. विष्ठा] पाखाना, मैला, मल, टट्टी, गू। (अमरत)

उ०—१ पग ऊंचा माथौ तलै जीवा, आंखां ऊपर हाथ। जाल जंजाल **विस्टा** मध्यै जीवा, तूं वसियौ कही जगनाथ। —जयवांणी

उ०—२ **विष्टा** नै वलीमातरौ ए, नाक तणो मल खेल। वाय पित्त सलेसमाए, सुक्र लोही राध चेल। —जयवांणी

रू. भे.—बिसटौ. बिस्टौ. भिसटौ, भिसठौ, भिस्टौ, भिस्ठौ, विसटौ, विसठौ, विस्ठौ।

विस्ठाघर-सं. पु. [सं. विष्ठा+गृह] पाखाना, टारत, शोचालय।

उ०—सुणी नृप स्नांन करि तुं नीसरचउ, देहरा भणी सुपवित्तो

जी। विस्ठाघर मांहि बइठउ आदमी, तेड़इ तुं आवि तुरंतौ जी।
—स. कु.

विस्ठामुक, विस्ठामुख–सं. पु. [सं. विस्ठामुख] सूअर।

विस्ठौ—देखो 'विस्टौ' (रू. भे.)

विस्ण—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा विस्ण महेस, सेस मानै फुरमांण।
—केसोदास गाडण

उ०—विस्णु नांम कुळ विस्ण, विस्णु सुत मित्र अपस वद। कच अहिमुख ससि लंक, स्यंध कुच कोक नाळ छिद। —र. ज. प्र.

विस्णतर–सं. पु.—सुदर्शन चक्र। (नां. मा.)

विस्णु–सं. पु. [सं. विष्णु] १ सृष्टि का भरण-पोषण व पालन करने वाले देवता, जो हिन्दुओं के प्रधान देवता माने जाते हैं, ईश्वर, परब्रह्म।

वि. वि.—इन्हीं की नाभि से कमल द्वारा ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है।

उ०—१ ब्रह्मा विस्णु नहीं सिव सक्ती, नहीं गुरु नहिं चेला। नारी पुरुस एक नहीं होता, हरि तौ आपोई आप अकेला।
—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ विस्णु नांम कुळ विस्ण, विस्णु सुत मित्र अपस वद। कच अहिमुख ससि लंक, स्यंध कुच कोक नाळ छिद। —र. ज. प्र.

उ०—३ देवी नाभ रै कमळ ब्रह्मा निपाया, देवी ब्रह्म रै रूप मधु-कीट जाया। देवी रूप मधुकीट ब्रह्मा डरायं, देवी ब्रह्म रै रूप विस्णु जगायं। —देवि.

उ०—४ पगि तणि हूंती चोटलइ, चौद लोक नु वास। ब्रह्मा विस्णु महेस पणि, पंजरि श्रेणि प्रकास। —मा. कां. प्र.

२ अग्निदेवता।

३ बारह आदित्यों में से पहले आदित्य का नाम।

४ विष्णुस्मृति की रचना करने वाले प्राचीन ऋषि।

५ श्रीकृष्ण का नामान्तर।

६ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम।

७ श्वेत वर्ण।* (डिं को.)

८ कृष्ण वर्ण।* (डिं. को)

९ कार्तिक मास में अश्वतर नाग, रंभा अप्सरा, गधर्व एवं यक्षों के साथ घूमने वाला सूर्य।

१० भृगु वश में उत्पन्न एक गोत्रकार।

११ महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष का एक राजा, जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

१२ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

१३ भौत्य मनु के पुत्र का नाम।

१४ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक।

१५ अठारह पुराणों में से एक पुराण।

रू. भे.—विसंन, बिसंन्न, विसन, विसनु, बिसन्न, बिस्णु, विस्नु, विस्नुक, बीसन, वसन, विल्णु, विसन, विसण, विसणु, विसन, विसनर, विसनु, विसनौ, विसन्न, विसन्नु, विस्ण, विस्णू, विस्न, वीसणु, वीसन, वीसनु।

विस्णुकांची–सं. पु. [सं. विष्णुकांची] दक्षिण में श्रीशंकराचार्य द्वारा स्थापित एक तीर्थ का नाम।

विस्णुकांता–सं. स्त्री. [सं.] एक जड़ी विशेष, जो औषध में काम आती है। (अमरत)

विस्णुक्रम–सं. पु. [सं. विष्णुक्रम] विष्णु भगवान् का पाद या पग।

विस्णुक्रांत–सं. स्त्री. [सं. विष्णुक्रांत] संगीत में एक प्रकार का ताल विशेष।

विस्णुक्रांता–[विष्णुकान्ता] नील अपराजिता।

विस्णुक्रांति–[सं. विष्णुकान्ता] श्वेत कोयल नाम की एक लता विशेष।
(अमरत)

विस्णुगंग, विस्णुगंगा–सं. स्त्री. [सं. विष्णुगंगा] एक प्राचीन नदी।

विस्णुगुपत, विस्णुगुप्त–स. पु. [सं. विष्णुगुप्त] कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम। (ऐतिहासिक)

विस्णुचकर, विस्णुचक्र–सं. पु. [सं. विष्णुचक्र] सदैव भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला सुदर्शन चक्र।

विस्णुज्वर–सं. पु. [सं. विष्णुज्वर] शत्रुओं का नाशक एक ज्वर जिसके अधीश विष्णु है।

विस्णुतरपण–सं. पु. [सं. विष्णुतर्पण] किसी बालक के मर जाने पर उसके तीसरे दिन दूध, जल, तिल आदि से की जाने वाली तर्पण विधि। (मा. म.)

विस्णुतिथ, विस्णुतिथि–सं. स्त्री. [सं. विष्णुतिथि] एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियों का नामान्तर।

विस्णुतैल–सं. पु. [सं. विष्णुतैल] समस्त वात रोगों को मिटाने वाला तैल विशेष। (वैद्यक)

विस्णुदास–सं पु. [सं. विष्णुदास] श्रीविष्णु का एक अनन्य भक्त।

विस्णुदैवत, विस्णुदैवत्या–सं. पु. [सं. विष्णुदैवत्या] १ योगतंत्र में २७ नक्षत्रों में से श्रवण नामक नक्षत्र विशेष, जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

२ चान्द्रमास के दोनों पक्षों की एकादशी व द्वादशी तिथियां।

विस्णुद्वीप–सं. पु. [सं. विष्णुद्वीप] एक द्वीप विशेष। (पुराण)

बिस्णुधरमा–सं. पु. [सं. विष्णुधर्मा] गरुड़ की प्रमुख संतान ।

विस्णुधरमोतर–सं. पु. [सं. विष्णुधर्मोतर] विष्णुपुराण का उपपुराण या एक अंश ।

विस्णुधारा–सं. स्त्री. [सं. विष्णुधारा] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।
२ एक नदी का नाम । (पुराण)

बिस्णुपंजर–सं. पु. [सं. विष्णुपंजर] १ विष्णु का एक कवच विशेष, जिसके धारण करने से सब भय दूर हो जाते हैं । (पुराण)
२ एक मंत्र जो शिव द्वारा देवी को बताया गया था ।
रू. भे.—विस्णुपंजर ।

विस्णुपथ–सं. पु. [सं. विष्णुपथ] १ आकाश, व्योम ।
रू. भे.—बिसंनपथ, बिसनपथ, विसनपथ ।

विस्णुपद–सं. पु. [सं. विष्णुपद] १ आकाश, व्योम ।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
३ क्षीरसागर ।
४ कमल ।
५ विष्णु के पैर ।
६ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें १६ व १० पर यति और अन्त में गुरु होता है ।
७ एक तीर्थ का नाम, जो विपाशा नदी के तट पर स्थित है ।
रू. भे.—बिसनपद विसंनपद, विसनपद ।

विस्णुपदी–सं. स्त्री. [सं. विष्णुपदी] १ भगवान् श्रीविष्णु के पैर के नाखून में से निकली हुई गंगा, श्रीभागीरथी, गंगा ।
२ द्वारिकापुरी ।
३ वृष, वृश्चिक, कुंभ व सिंह आदि की सक्रांति ।

बिस्णुपुरांण—देखो 'विस्णु' (१५) ।

बिस्णुपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

बिस्णुपुरौ–सं. पु. [सं. विष्णु+पुर] स्वर्ग लोक, वैकुण्ठ ।
रू. भे.—बिसनपरौ, बिसनपुर, बिसनपुरौ, बिसुनपुर, बिसुनपुरौ ।
अल्पा.,—बिसनपरी, बिसनपुरी, बिसुनपुरी, बिस्णुपुरी ।

बिस्णुप्रयाग–स. पु. [सं. विष्णुप्रयाग] एक तीर्थ स्थान, जो पाण्डुकेश्वर के निकट है । इसके निकट ही विष्णुगंगा अलकनंदा में मिलती है, इसके पास ही हाथी पर्वत है ।

बिस्णुप्रिया–सं. स्त्री. [सं. विष्णुप्रिया] १ भगवान् श्री विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी ।
२ तुलसी का पौधा ।
रू. भे.—बिसनप्रिया ।

विस्णुप्रीति–सं. स्त्री. [सं. विष्णुप्रीति] भगवान श्रीविष्णु की सेवा पूजा करने के लिए किसी पूजा करने वाले व्यक्ति को बिना लगान दी गई भूमि ।

विस्णुमती–सं. स्त्री. [सं. विष्णुमती] शतानीक की पत्नी ।

विस्णुयसा–सं. पु. [सं. विष्णुयशा] ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता, जो सुमति का पति था । (पुराण)

विस्णुरथ–स. पु. [सं. विष्णुरथ] विष्णु का वाहन, गरुड़ ।

विस्णुरात–सं. पु. [सं. विष्णुरात] अर्जुन-सुभद्रात्मज अभिमन्यु व उत्तरा का पुत्र महाराज परीक्षित जिसकी हत्या अश्वथामा द्वारा गर्भ में ही कर दी गई थी मगर श्रीकृष्ण ने पुर्नजिवित किया था ।

विस्णुलोक–सं. पु. [सं. विष्णुलोक] विष्णु का निवास स्थान, स्वर्ग वैकुण्ठ ।

विस्णुवल्लभा–सं. स्त्री. [स. विष्णुवल्लभा] १ तुलसी का पौधा ।
२ लक्ष्मी ।

विस्णुवाहन–स. पु. [सं. विष्णुवाहन] गरुड़ ।

विष्णुवाहण–सं. पु. [सं. विष्णुवाहन] गरुड़ ।

विस्णुविवाह–सं. पु. [सं. विष्णुविवाह] एक प्रकार का वैधव्यहर, जिसमें कन्या का विवाह पहले विष्णु से कर देते हैं ।

विष्णुव्रत–सं. पु. [सं. विष्णुव्रत] पौष शुक्ला द्वितीया से चार दिन तक रखा जाने वाला विष्णु का व्रत विशेष ।

विस्णुसकति, विस्णुसक्ति, विस्णुसगति–सं. स्त्री. [सं. विष्णुशक्ति] लक्ष्मी ।

विस्णुसप्तमी–सं. स्त्री. [सं. विष्णुसप्तमी] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को की जाने वाली विष्णु की पूजा जो अभीष्ट सिद्धि हेतु की जाती है ।
वि. वि.—इसी मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को ही त्रियसप्तमी और विष्णु सप्तमी भी मनायी जाती है ।

विस्णुसरमन–सं. पु. [सं. विष्णुशर्मन] इन्द्र को भी शरण देने वाला एक राजा, जो शिवशर्मन राजा का पुत्र था ।

विस्णुसावरणि–सं. पु. [सं. विष्णुसावर्णि] भौत्य मनु का नाम ।

विस्णुसिद्धि–सं. पु. [सं. विष्णुसिद्धि] अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

विस्णुहरि–सं पु. [सं. विष्णुहरि] विष्णु के एक अनन्य भक्त का नाम ।

विस्णुसिल, विस्णुसिला–सं. स्त्री. [सं. विष्णुशिला] सालि-ग्राम ।

विस्णुस्रंखळ, विस्णुस्रंखळा–सं. स्त्री. [स. विष्णुश्रृंखला] श्रवण नक्षत्र में आने वाली द्वादशी ।

विस्णुस्म्रति–स. स्त्री. [सं. विष्णुस्मृति] एक धर्मशास्त्र, स्मृति विशेष ।

विस्णुस्वांमी-सं. पु. [सं विष्णुस्वांमी] १ वैष्णव सम्प्रदाय या रामावत साधुओं की एक शाखा। (मा. म.)

विस्णू—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—क्रतध्वसी विस्णूं कमळभव जिस्णूं स्तुति करै, हिमांसू उस्णांसू पदम-पद पांसू सिरधरै। हगामां हमेसां बजत त्रिदवेसां नवबती, अई इंदू अंबा जयति जगदंबा भगवती। —मे. म.

विस्तर—१ देखो 'विस्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ नव बाड़ि सेती सील पालउ, पांमउ जिम भव पार रे। भगवंत विस्तर पणइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। —स. कु.

उ०—२ उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमै, सूत्र टीका सुविचार। रिखमंडल वलि प्रकरण थी, रच्यौ ए विस्तर अधिकार।
—ध. व. ग्रं.

उ०—३ सूत्र वांची नइ सगलुं समझज्यो, तिहां विस्तर संबंधोजी। केसी प्रदेशी राजा तणउ, समयसुंदर कहइ प्रबंधो जी। —स. कु.

विस्तरण-वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

उ०—नमौ वेद विस्तरण, नमौ निसचर बोह नांमण। नमौ सेससायंत, नमौ हब कव्व हुतासण। —ह. र.

विस्तरणौ, विस्तरबौ-क्रि. अ.—१ उच्चरित होना, ध्वनित होना, गूंजना।

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरड़का उपजइं, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणै घरि वेद ध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा. सा. सं.

२ विस्तार पाना, व्याप्त होना, फैलना।

उ०—१ सुर प्रगट मिटि अटकाव सरिता ब्याह मंगळ विस्तरै। सोचंति पुर बाजार सोभा, मौज सुंदर मंदिरै। —रा. रू.

उ०—२ मीठापणा जांणिया मीठौ, कमधज धिनौ तुहारा क्रत। 'बीका'हरा बांण विस्तरियौ, अत भवणै मांही इम्रत। —द. दा.

३ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

४ बिखरना, छितरना, फैलना।

उ०—मांग मांही मोती सूं भरिया छै जांणै आकास रै आंगण तारा विस्तरिया छै। सरवणां री ओर ओपमा न वणसी। सीप मांनू स्वाति बूंद झेली छै। जकौ मोती जणसी। —पनां

५ हरा भरा होना, लहलहाना।

६ गमन करना, जाना।

उ०—वइरागी थिउ विस्तरइ रांमा सूंपि राग। कातर कांटै काकरि, पुलतू अणुहांणि पाग। —मा. कां. प्र.

७ तितर-बितर होना, फैलना।

उ०—बेताल किलकिलह, दावांनळ प्रज्वळइ। रीछ सांचरइ, वीरूतणा यूथ विस्तरइ। वेडी रा सांड आडूकइ, ठांमि ठांमि वन रा भइंसा ढूकइ। —सभा

विस्तरणहार, हारो (हारी), विस्तरणियौ—वि०।

विस्तरिओड़ो, विस्तरियोड़ो, विस्तरयोड़ो—भू० का० कृ०।

विस्तरीजणौ, विस्तरीजबौ—भाव वा०।

बित्थरणौ, बित्थरबौ, बिथरणौ, बिथरबौ, बिथुरणौ, बिथुरबौ, बिसतरणौ, बिसतरबौ, बिस्तरणौ, बिस्तरबौ, बीथरणौ, बीथरबौ; वित्तरणौ, वित्तरबौ, विथरणौ, विथरबौ, विथुरणौ, विथुरबौ, विसतरणौ, विसतरबौ, विसत्तरणौ, विसत्तरबौ, विसथरणौ, विसथरबौ—रू० भे०।

विस्तरता-सं. स्त्री. [सं] बहुत या अधिक होने की अवस्था या भाव।

विस्तरबंद—देखो 'विस्तरबंद' (रू. भे.)

विस्तरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ उच्चरित हुवा हुआ, ध्वनित हुवा हुआ, गूंजा हुआ. २ विस्तार पाया हुआ, व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, आनन्दिव हुवा हुआ. ४ बिखरा हुआ, छितरा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ५ हरा भरा हुवा हुआ, लहलहाया हुआ।
(स्त्री. विस्तरियोड़ी)

विस्तरियौ—देखो 'विस्तर' (अल्पा., रू. भे.)

विस्तार-सं. पु. [सं.] १ प्रसार, फैलाव।

उ०—सिव सक्ती का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इनमें ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ अकास लील नगर गंधरब का, इंद्रजाळ आकार। जाग्रत झबकायूं जोय र जोगुण, मन कल्पित विस्तारा।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ वधवांणी तूं ऐक ब्रंम. ओऊंकार अपार। किमि करि कीधौ काळिका, विसव तणौ विस्तार। —पी. ग्रं

उ०—४ केतेक दिन तपस्या करि आरांम लगाया। तिस काकरिख के नांम कागा कहाया। तिस बगीचू के दरम्यांन वरणै जेतै फळ फूलं का विस्तार। सब्बू के सिर पोस आंनारू का अधिकार।
—सू. प्र.

उ०—५ मेला मिनख बचन्न रै मार्थ, बात बणाय करै विस्तार। बैठ सभा बिच मूंडा वारै, बचन काढणौ बहुत विचार।
—बां. दा.

२ वृक्ष की शाखाएं।

३ अधिकता, बाहुल्यता।

उ०—तठै केसरियै साह ठकुरै साह नूं पूछी कही, "जी साहजी, इतरौ थांहरै माया रौ **विस्तार** हुंतौ, सु किसी भांति गयौ, सु मनै कहौ। —ठकुरै साह री वात

४ वृतान्त, विवरण।

उ०—१ तिण समय दिली पातिसाह स्रीसेरसाह राज करै छै। तिण रै पुत्र सलेमसाह साहिजादौ वडो अदली हुयौ। तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै। **विस्तार** आगै लिखीजसो। —द. वि.

उ०—२ तिण अनुसारै मंडाय कोई संक्षेप हुंतौ तिण नै उनमांन न्याय जांण नै वधारचौ। **विस्तार** जांण नै संकोच्यौ। तिण में कोई विरुद्ध आयौ हुवै। —भि. द्र.

उ०—३ स्वांमीजी फेर कह्यौ आपै करां। पछै चंद्रभांण तिलौकचंद दोनूं जणां मांन अहंकार रै बस टोला बारै निकल्या। तै सहुं **विस्तार** तौ स्वांमीजी क्रत रास थी जांणवौ। —भि. द्र.

उ०—४ पांचं पांच सौ दीधा दांन, सोनौ रूपौ ग्रहण संघात। राछ पीछ बडारण गाय, **विस्तार** सूत्र भगवती मांय। —जयवांणी

रू. भे.—बिथार, बिसतार, बिस्तर, बिस्तार, वित्थर, वित्थार, विथार, विसतर, विसतार, विसतारौ, विसंथार, विसार, विस्तर, विस्तारि, वैसार।

विस्तारक—वि.—विस्तार करने वाला।

रू. भे.—विसतारक।

विस्तारण—सं. स्त्री.—विस्तार या प्रसार करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—विसतारण।

विस्तारणौ, विस्तारबौ—क्रि. स.—विस्तार करना, फैलाना।

उ०—१ जब परीसदा वांदण नीकली, सुण आयो 'सुबाहु' कूमारो' रे। वांदे बैठौ छै मुग आगलै, वीर वांणी कही **विस्तारो** रे। —जयवांणी

उ०—२ साधवा मुक्तिका वास बंदा सहु, भिक्खम स्वांम सिद्धंत है भारी। स्वांमी पर भाव कै साधन साच है, बांचे है सूत्रकला **विस्तारी**। —भि. द्र.

उ०—३ ···एकि चंद्र सूरयनी प्रभा आपणी कांती करी पराभवइ एकि स्त्री पुरुख योग्य दिव्योपभोग्य आभरण **विस्तारइं** एक चक्रवरत्रिनी रसोई पाहिइं अनंत गुण सुस्वाद अठोत्तरसउ खाद्य···। —व. स.

२ बिखेरना, छितराना।

३ ध्वनित करना, उच्चरित करना।

४ बढ़ोतरी करना, बढ़ाना।

५ हिलाना-डुलाना।

६ प्रचार करना।

उ०—धरमकथा अनुयोगमेंजी, धरमकथा द्रस्टांत। ए चारों **विस्तारिया** जी, पेंतालिस सिद्धांत। —वृस्त

विस्तारणहार, हारौ, (हारी), विस्तारणियौ—वि०।

विस्तारिओड़ौ, विस्तारियोड़ौ, विस्तारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विस्तारीजणौ, विस्तारीजबौ—कर्म वा०।

बिथारणौ, बिथारबौ, बिसतारणौ, बिसतारबौ, बिस्तारणौ, बिस्तारबौ, वित्थारणौ, वित्थारबौ, विथराणौ, विथराबौ, विथारणौ, विथारबौ, विसतारणौ, बिसतारबौ, विसथारणौ, विसथारबौ—रू० भे०।

विस्तारि—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—चऊद राज ऊपरि **विस्तारि**, सिद्धसिला छइ छत्राकारि। अनेक सुख छइं सिद्ध विलसंत, सुखह तणउ तें पार न लहंति। —वस्तिग

विस्तारियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ विस्तार किया हुवा, प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ. २ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ. ३ ध्वनित किया हुआ, उच्चरित किया हुआ। ४ बढ़ोतरी किया हुआ, बढ़ाया हुआ. ५ हिलाया-डुलाया हुआ. ६ प्रचार किया हुआ। (स्त्री. विस्तारियोड़ी)

विस्तारी—वि. [सं. विस्तारिन्] जिसका विस्तार अधिक हो।

विस्तीरण—वि. विस्तीर्ण] १ विस्तृत, फैला हुआ।

२ बहुत लम्बा-चौड़ा।

रू. भे.—बित्थीरण।

विस्त्रत, विस्त्रित—वि. [सं. विस्तृत] १ फैला हुआ, विस्तरित, व्याप्त।

२ लम्बा-चौड़ा।

३ विपूल, परिव्याप्त।

४ जिसका विवरण यथेष्ट हो।

विस्न—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ दुख सुख गौटा ऊछळै, माया मद पीया। ब्रह्मा **विस्न** महेस लौं, वाजी वसि कीया। —ह. पु. वां.

उ०—२ गवरीय नदन वीनवूं जी, स्रीहरि सुरतइं आंणि। **विस्न** तणौ वीवाहिलौ जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण। —रुकमणी मंगळ

उ०—३ रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण करी नइं, **विस्न** तणौं वीवाह। सुंडा डंबर करि धर फरसी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

विस्नी—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

बिस्पला-सं. स्त्री. [सं. विश्पला] एक बहुत ही वीर स्त्री जो खेल नामक राजा की पत्नी थी।

वि. वि.—कहते हैं कि युद्ध में इसके एक पैर के टूटने पर अश्विनों ने इसे लोहे का पैर प्रदान कर युद्ध करने योग्य बनाया था।

बिस्फार-सं. पु. [सं.] १ धनुष की टंकार।

२ धनुष की डोरी।

३ कम्पन, सिसकन।

बिस्फारित-वि. [सं.] १ टंकारा हुआ, खेंचा हुआ।

२ कम्पायमान किया हुआ, थरथराता हुआ।

बिस्फुरणौ, बिस्फुरबौ-क्रि. अ.—१ कांपना, कम्पित होना।

२ डरना, भयभीत होना।

३ हिलना-डुलना।

बिस्फुरणहार, हारौ (हारी), बिस्फुरणियौ—वि०।

बिस्फुरिग्रोड़ौ, बिस्फुरियोड़ौ, बिस्फुरयोड़ौ—भू० का० कृ।

बिस्फुरीजणौ, बिस्फुरीजबौ—भाव वा०।

बिस्फुराणौ, बिस्फुराबौ-क्रि. स.—१ कम्पित करना, कम्पाना।

२ भयभीत करना, डराना, हिलाना-डुलाना।

बिस्फुराणहार, हारौ, (हारी), बिस्फुराणियौ—वि०।

बिस्फुरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फुराईजणौ, बिस्फुराईजबौ—कर्म वा०।

बिस्फुरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कम्पित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ. ३ हिलाया-डुलाया हुआ।

(स्त्री. बिस्फुरायोड़ी)

बिस्फुरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कांपा हुआ, कम्पित हुवा हुआ. २ हिला-डुला हुआ. ३ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ।

(स्त्री. बिस्फुरियोड़ी)

बिस्फोट-सं. पु. [सं.] १ भूमि के अन्दर की भरी हुई आग, गर्मी आदि के फूट कर बाहर निकलने की क्रिया।

२ उक्त क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाला शब्द।

३ एकत्र गैस, बारूद आदि के अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलने की क्रिया।

४ उक्त क्रिया के कारण उत्पन्न शब्द।

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ।

५ जहरीला या खराब फोड़ा।

६ एक प्रकार का कोढ नामक रोग। (अमरत)

बिस्फोटक-सं. पु. [सं.] १ गर्मी या आघात से भभकने वाला पदार्थ।

२ जहरीला फोड़ा।

३ शीतला रोग, चेचक।

४ छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों में से एक।

उ०······मुरवि अर्द्धमुरवि परसु पास पट्टिस दूस लांगूल मुसल मुखंढि मुग्दर लगुड गदा दंड भिंडपाल गांजीव **बिस्फोटक** वज्र तरवारि प्रमुख ३६ खट खटत्रिस दडा युधानि। —ध. स.

रू. भे.—बिसफोटक, बिस्फोटक, विसफोटक।

बिस्फोटणौ, बिस्फोटबौ-क्रि. अ.—१ भूमि के अन्दर की आग, गर्मी आदि का फूट कर बाहर निकलना।

२ एकत्र गैस, बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलना।

३ जहरीला फोड़ा होना।

क्रि. स.—४ एकत्र गैस, बारूद आदि को अग्नि, ताप या आघात आदि से बाहर निकालना।

बिस्फोटरणहार, हारौ (हारी), बिस्फोटणियौ—वि०।

बिस्फोटिग्रोड़ौ, बिस्फोटियोड़ौ, बिस्फोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फोटीजणौ, बिस्फोटीजबौ—भाव, कर्म वा०।

बिस्फोटता-सं. स्त्री.—अंग को आलस्य आदि के कारण मोड़ने की क्रिया।

उ०—समस्त सेनां दिसि द्रस्टि करि देख्यौ। पाछै क्यों थोड़ो सो हस्या। पछै क्यौं थोड़ो सो आळस कीयौ। अंग **बिस्फोटता कीयौ**। जंभाई आई पाछै क्यों थोड़ा-थोड़ा चाल्या गति दिखाई। पाछै क्यों एक संकुच्या। ए पांचौं बांण सेनां नै लागा। —वेलि टी.

बिस्फोटियोड़ौ-भू.का.कृ.—१ भूमि के अन्दर की आग का, गर्मी आदि के कारण फूटकर बाहर निकला हुआ। २ एकत्र गैस बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकला हुआ. ३ जहरीला, फोड़ा हुवा हुआ। ४ एकत्र गैस बारूद आदि को अग्नि या आघात आदि से बाहर निकाला हुआ।

(स्त्री. बिस्फोटियोड़ी)

बिस्मय-सं. पु. [सं.] १ आश्चर्य, ताज्जुब।

उ०—१ तद बखतसिंह जी **बिस्मय** में पड़ अबोला सा रहिया।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ बादल लै आदेस गोरा रावत तणौ, सुभट मिल्या तिहां जाय साहस मन में घणौ। देखि सभा सगली मनमइं **बिस्मय थई** आवइ नहि दरबार कदै क्यों आवई। —प. च. चौ.

२ अद्भुत रस का स्थायी भाव। (साहित्य)

३ अभिमान, अहंकार, गर्व।

रू. भे.—बिसमउ, बिसमय, बिसमै, बिस्मय, विसमय; विसमै, विसमौ, विसम्य विस्मि, विस्मिय।

बिस्मयकारी-वि. [सं. विस्मयकारिन्] आश्चर्यान्वित करने वाला, ताज्जुब में डालने वाला।

उ०—हे सकळगुणी सिरमोर! माया रा चित्र बडा विचित्र, **बिस्मयकारी**, बहुगुण भरिया हुवा जांणौ। बाहरी संसार मांही

जिसा नदी परबत बन अर नगर दीसै है जिका सगळा ही थां अंतरजगत काया मांही जांणौ। —सिंघासण बत्तीसी

विस्मरण–सं. पु. [सं.] भूल जाने या याद न रहने की अवस्था या भाव
रू. भे.—बिसमरण, बिस्मरण, विसमरण, विसमरमण।

विस्मरणौ–वि —भूलने वाला, जिसे याद न रहता हो ।

विस्मरणौ, विस्मरबौ–क्रि. स.—भूल जाना, याद न रहना ।

विस्मरणहार, हारौ, (हारी), विस्मरणियौ—वि० ।
विस्मरिग्रोड़ौ, विस्मरियोड़ौ, विस्मरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विस्मरीजणौ, विस्मरीजबौ—भाव वा० ।

बिसमरणौ, बिसमरबौ, बिस्मरणौ, बिस्मरबौ, विसमरणौ, विसमरबौ—रू० भे० ।

विस्मरियोड़ौ–भू. का. कृ.—भूला हुआ, याद न रहा हुआ ।
(स्त्री. विस्मरियोड़ी)

विस्मल्ला, विस्मल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

विस्मारक–वि. [सं.] भूला देने वाला, विस्मरण करा देने वाला ।

विस्मि –देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

उ०—गिणतां राइ 'दस' कस्यूं, तव दंसु भूपति नाग । करूप अति राजा थयु, विस्मि तैं जोई लाग । —नळाख्यांन

विस्मित–वि. [सं.]—आश्चर्ययुक्त, आश्चर्यान्वित, चकित ।

उ०—तौ रांणौ विस्मित होय नापै नू बुलायौ, एकांत में ले जाय कही जै राठोड़ मंडोवर कद आया । —नापै सांखलै री वारता
रू. भे.—बिसमत, बिसमित, विसमत, विसमित, विसमै ।

विस्मिता–सं. पु.—एक प्रकार का वर्णिक छंद विशेष जिसमें यगण, मगण, नगण, सगण, दो रगण एवं अन्त में गुरु होता है । तथा छः छः तथा सात पर यति होती है ।

विस्मिय—देखो विस्मय' (रू. भे.)

उ०—दीठु जांणे प्रत्यक्ष कांम, मांनी देव, कौ करि प्रणांम । विस्मिय पांमीं गजगामिनी, सघली रूप जोईं कांमिनी ।—नळाख्यांन

विस्मिल—देखो 'बिस्मिल' (रू. भे.)

विस्मिल्ला, विस्मिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

विस्रंखल, विस्रंखला–वि. [सं. विशृंखल] १ जिसमे शृंखला नहीं हो, शृंखलारहित ।
२ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके ।
३ दुराचारी, लपट ।

विस्रंभ–सं. पु. [सं. विश्रम्भ] १ दृढ़ विश्वास ।
२ प्यार, प्रेम, मुहब्बत ।
३ विश्राम ।
४ मैथुन के समय होने वाला प्रेमी-प्रेमिका का झगड़ा ।

विस्रंभी–वि. [सं. विश्रम्भी] १ विश्वास करने वाला ।
२ प्रेम या मुहब्बत सम्बन्धी ।

विस्र–सं. पु.—खून, रक्त । (डिं. को.)
रू. भे.—बिस्र ।

विस्रब्ध–वि. [सं. विश्रब्ध] १ जिसका विश्वास किया जाय ।
२ जो विश्वास करे ।
३ निर्भय, निडर ।
४ जो उद्धत न हो, सुशील ।

विस्रव, विस्रवा–सं. पु. [सं. विश्रवस्] १ पुलस्त्य ऋषि एवं हविर्भू के पुत्र और कुबेर, रावण आदि के पिता का नाम ।
वि. वि.—इसके करीब नौ पत्नियां थी । इसकी इड़विड़ा नामक पत्नी से कुबेर, दूसरी पत्नी केकसी के गर्भ से रावण कुम्भकरण, विभीषण, नामक तीन पुत्र एवं शुर्पणखां नामक एक कन्या, तीसरी पत्नी राका के दूषण आदि तीन पुत्र एवं चौथी पत्नी पुष्पोत्करा से खर आदि चार पुत्रों का जन्म हुआ था ।
२ लंकापति रावण ।

उ०—संख बडौ तुं संख, संख आउध संवाहै ।
गदा पदम चक्र ग्यांन, विस्रव ऊपरि लै वाहै । —पी. ग्रं.

३ पुलस्त्य ऋषि के वंशज ।
४ तृणबिन्दु का पुत्र एक राजा ।
५ ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति ।
६ विशाल राजा का पुत्र एक राजा ।
[सं. विश्रव:] ७ आश्रय ।

विस्रांत–वि. [सं. विश्रान्त] १ जिसने आराम किया हो ।
२ शान्त, सुशील ।
३ पीछे रहा हुआ, रहित ।
४ देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

विस्रांति–सं. स्त्री. [सं. विश्रान्ति] १ विश्राम, आराम, ।
२ अवसान, मौत, मृत्यु ।
३ एक तीर्थ का नाम । (पुराण)
रू. भे.—बिसांई, बिसाई, बिसांणी, बिहांणी, बिहांमी, विसांई, विसांणी, विहांणी ।

विस्रांम—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—१ निरद्वंद नाथ, आस्रम अनाथ, वह सस्टीवार, प्रळयांत पार । विस्रांम व्यूढ, गोतीत गूढ, निरगुण निरीह, आधार ईह । —ऊ. का.

उ०—२ तठै आगवौ खाग हुं छाग तोड़ै, चंडी काळिका मात रै स्रोण चोडे। लगावै सबै सेस विंदी ललाटां, करै फेर विस्रांम पाखे कपाटां। —मे. म.

उ०—३ कनक महल रतनन जटत सबै पुरी के धांम। कनक कोटी पौरी कनक, वाय तणौ विस्रांम। —गज उद्धार

उ०—४ एहुवा पालखा में राव नै बेसांण हवा खावा निकल्या। साथै मनुख आगे पाछै घणा गांम वारै आया। जब खेत कनै रूंख री छायां विस्रांम लियौ। जद करसणी बोल्या—अठै मां बालौ रे। मां बालौ। छोहरा छोहरी वीहेला। —भि. द्र.

विस्रांमणौ, **विस्रांमबौ**—देखो 'विसरांमणौ, विसरांमबौ' (रू भे.)

उ०—१ जिसड़ै मोटौ राजड़वाळै गयौ तिसड़ै परियां रांमसिंघजी पधारिया। ओथि आरोगण लागा दाढ़ी समराड़ी। बहू विस्रांमी पछै तिण दिन दाढी समराड़ी। —द. वि.

उ०—२ राजाजी भोपतजी थकां कुंवर दळपतजी नूं उंचौ करि झालियौ हुतौ अर भोपतजी विस्रांमियै पछै ज्यूं भोपति नूं कसता तिम दळपतजी नूं कसणी माहे कियौ —द वि.

विस्रांमणहार, **हारौ** (**हारी**), **विस्रांमणियौ**—वि०।

विस्रांमिओड़ौ, **विस्रांमियोड़ौ**, **विस्रांम्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

विस्रांमीजणौ, **विस्रांमीजबौ**—भाव वा०।

विस्रांमियोड़ो—देखो 'विसरांमियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विस्रांमियोड़ी)

विस्रांमी—देखो विसरांमी' (रू. भे.)

वस्रांमु—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—दव जिम दीठइं करुणए करणइ ए हियुं निकांमु। मरुउ वरुऊ दमनकी मन किहिं नहीं य विस्रांमु। —जयसेखरसूरि

विस्राळ, **विस्राल**, **विस्राळौ**, **विस्राली**, **विस्राळौ**, **विस्रालौ**—देखो 'विसराळ' (रू. भे.)

उ०—नारी चींतवइ एहवूं, जु नल हुइ मझ चित्ति। सती प्रभाविइ ए हुज्यो, विस्राल थाज्यो भक्ति। —नळदवदती रास

विस्रुत-सं. पु. [सं. विश्रुत] १ वसुदेव एवं सहदेवी के पुत्रों में से एक यादव राजकुमार।

२ अमिताभ देवों में से एक।

३ पारावत देवों में से एक।

४ जनकवंश के देवमीढ़ के पुत्र और महाधृति के पिता का नाम।

वि.—१ जाना या सुना हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

३ प्रसन्न, हर्षित।

विस्रुतवत-सं. पु. [सं. विश्रुतवत] सरस्वत राजा का पुत्र एवं बृहद्बल राजा का पिता एक राजा।

विस्रुतात्मा-सं. पु. [सं. विश्रुतात्मन्] भगवान श्रीविष्णु।

विस्रुति-सं. स्त्री. [सं. विश्रुति] प्रसिद्धि, ख्याति।

विस्रेय-वि [सं. वि.=विशेष श्रेयस्] १ विशेष श्रेष्ठता वाला, उत्तम, श्रेष्ठ।

[सं. वि.=रहित+श्रेयस्] २ श्रेष्ठता रहित, बुरा, नीच।

उ०—धेय कौ विधांन साधि ध्यांन नां धरचौं, गेय कौ अग्यांन तें प्रमांन नां परचौं। क्रेय औ विक्रेय कथा काजते करचौं। स्रेय कौ विस्रेय साज लाज नां मरचौ। —ऊ. का.

विस्लथ-वि. [सं. विश्लथ] १ शिथिल. ढीला।

२ सुस्त, थका हुआ।

विस्लेस-सं. पु. [सं. विश्लेष] १ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव।

२ प्रेमियों या पति-पत्नी का विछोह, वियोग।

३ थकावट सुस्ती।

४ शिथिलता, ढीलापन।

विस्लेसण-स. पु. [स. विश्लेषण] १ किसी पदार्थ आदि के संयोजक द्रव्यों को अलग-अलग करने की क्रिया।

२ वायु के प्रकोप से फोड़े या घाव में होने वाली एक प्रकार की वेदना।

विस्लेसणात्मक-वि. [सं. विश्लेषणात्मक] जिसका विश्लेषण किया जा सकता हो।

विस्लोक-सं. पु. [सं विश्लोक] एक मात्रिक छंद बिशेष जिसमें १६ मात्राएँ होती हैं और पांचवीं व आठवीं मात्रा लघु होती है और यहीं पर यति होती है।

विस्वंतर-सं. पु. [सं. विश्वंतर] भगवान बुद्ध।

विस्वंभर-सं. पु. [सं. विश्वंभर] १ समस्त संसार का पालन-पोषण करने वाले, भगवान विष्णु का नामान्तर।

उ०—नमो अग्राहचारु स्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा भ्रत विजय लक्ष्या पत नमो। नमो विस्वाधारी अनळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वंभर नमो। —ऊ. का.

२ देवराज इन्द्र।

३ अग्नि देवता।

४ एक उपनिषद्।

रू. भे.—बिसभर, बिस्वभर, वसंभर, विसंभर, विसंभर, वीसमर।

विस्वंभरा-सं॰ स्त्री. [स. विश्वंभरा] पृथ्वी, भूमि। (डिं. को.)

रू. भे.—विसंभरा, वीसंभरा।

विस्वंभरी–सं. स्त्री. [सं. विश्वंभरी] १ पृथ्वी, भूमि।

२ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विस्वंभरेसर, विस्वंभरेसुर, विस्वंभरेस्वर–सं. पु [सं. विश्वंभरेश्वर]

१ हिमालय के एक शिवलिंग का नाम। (पुराण)

२ महादेव, शिव।

३ ईश्वर।

विस्व–सं. पु. [सं. विश्वं] १ चौदह भवनों का समूह; समस्त ब्रह्मांड।

२ मयूर नामक असुर का पुत्र एक राजा जो महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष में था।

संसार, जगत।

४ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक गंधर्व।

५ विष्णु का नामान्तर।

६ शिव, महादेव।

[सं. विश्वः] ७ वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, भृति, कुरु, पुरुरवा और माद्रवा आदि दस देवताओं का एक गण विशेष।

वि. [सं. विश्व] १ समस्त, सम्पूर्ण, सार्वजनिक।

२ प्रत्येक, हरेक।

रू. भे.—बिसब, बिसव, बिसू, बिस्व, वसव, विसब, विसब्ब, विसव, विसवि।

विस्वईस—देखो 'विस्वेस' (रू. भे.)

उ०—घण घणा थाट भांजण घड़ण, **विस्वईस** संभळ बयण। ईसरौ कहै असरण सरण, नमौ नाथ तौ नारियण। —ह. र.

विस्वईसर, विस्वईसुर, विस्वईस्वर—देखो 'विस्वेस्वर' (रू. भे.)

विस्वकंभ–सं. पु. [सं. विश्वकंभ] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

विस्वकरण—देखो 'विस्वकरमा'

उ०—अचरिज सहु नें ऊपनौ रे, वलि चींतइ सूतार। **विस्वकरण** नि ओपमा रे, एहिज लहै रे कुमार। —वि. कु.

विस्वकरमजा–सं. स्त्री. [सं. विश्वकर्मजा] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

विस्वकरमा, विस्वकरम्मा–सं. पु. [सं. विश्वकर्मन्] १ विश्व का पालन-पोषण करने वाला ईश्वर, विष्णु।

२ विश्व की सृष्टि करने वाला, ब्रह्मा।

३ शिव, महादेव।

४ सूरज, सूर्य। (नां. मा.)

५ शिल्पशास्त्र के अधिष्ठाता एक देवता।

वि० वि०–ये प्रभास वसु के पुत्र थे पुराण, मतान्तर से इन्हें लावण्यमयी या बृहस्पति की ब्रह्मावादिनी बहिन का पुत्र कहा गया है। सूर्य की पत्नी संज्ञा इनकी पुत्री थी व नल नामक वानर इनका पुत्र था। इन्होंने लंका व द्वारका नामक नगरियां बसायी थी। सूर्य के शरीरांश से इसने विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिसूल इंद्र का वज्र व विजय नामक धनुष आदि अस्त्र बनाये थे।

६ इमारत के कार्यकर्त्ता, लौहार, बढ़ई आदि।

रू. भे.–बिसुकरमा, विसकरमा, विसक्रमा, विसवक्रमा, विस्वकरण, विस्वक्रमा, विस्वैकरमा, विस्वैक्रमा।

विस्वकसेन–सं. पु. [सं. विश्वक्सेन] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

२ इंद्र सभा का एक ऋषि।

३ नारद का शिष्य एक प्रसिद्ध आचार्य।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ एक अवतार जो ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर में हुवा था।

६ एक राजा जो ब्रह्मदत्त व गो के संसर्ग से उत्पन्न हुआ था।

७ 'चौदहवें मनु का नामान्तर। (पुराण)

रू. भे.—विसवकसेन।

विस्वकाय–सं. पु. [सं. विश्वकाय] भगवान् श्रीविष्णु।

विस्वकाया–सं. स्त्री. [सं. विश्वकाया] देवी दुर्गा का नामान्तर।

विस्वकारक–सं. पु. [सं. विश्वकारक] १ विष्णु।

२ ब्रह्मा।

३ शिव।

विस्वकारज—देखो 'विस्वकार्य' (रू. भे.)

विस्वकारणी, विस्वकारिणी–सं. स्त्री. [सं. विश्वकारिणी] विश्व की कारण रूपा, देवी।

उ०–प्रगट व्यास प्रोखता, कना अपछर हैतू कह। इंद्रायण कन आप, रुप देखै विभ्रम रह। धरण आभ धारणी, **विस्वकारणी** वखांणौ। रिध सिध नारायणी, जगत अंबा मन जांणौ। —पा. प्र.

विस्वकारय–स. पु. [सं. विश्वकार्य] सूर्य की प्रधान सात ज्योतियों का समूह जिसमें सात रंग होते हैं। बैंगनी, नीली, आसमानी, हरी, पीली नारंगी व लाल।

रू. भे.—विस्वकारज।

विस्वकूट–सं. पु. [सं. विश्वकूट] हिमालय की एक चोटी का नाम। (पुराण)

विस्वकेतु–सं. पु. [सं. विश्वकेतु] १ अनिरुद्ध का एक नामान्तर।

२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

विस्वकोस–सं. पु. [सं. विश्वकोश] १ संसार के समस्त, पदार्थ आदि के संग्रह का कोश या भण्डार।

२ संसार के समस्त प्रकार के विषयों आदि के विस्तृत बिवेचन का ग्रन्थ।

विस्वक्रत–सं. पु. [सं. विश्वकृत] १ संसार के सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा।
उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक।
सरवजीव **विस्वक्रत** ब्रह्म सू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि
२ संसार का भरण-पोषण कर्त्ता, विष्णु।
३ शिव, महादेव।

विस्वक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

विस्वगंध–सं. पु. [सं. विश्वगंध] १ लहसन।
२ लोबान।

विस्वगंधा–सं. स्त्री [सं. विश्वगन्धा] भूमि, पृथ्वी। (डि. को.)

विस्वगंधि, विस्वगंधी–सं पु [सं. विश्वगंधि] पृथु नामक राजा के एक पुत्र का नाम।

विस्वग–सं. पु. [सं. विश्वग] १ ब्रह्मर्षि मरीचि एवं कर्दमपुत्री कला के गर्भ से उत्पन्न पूर्णिमा के एक पुत्र का नाम।

विस्वगरभ–सं. पु. [सं. विश्वगर्भ] १ भगवान विष्णु।
२ शिव, महादेव।

विस्वगस्व–सं. पु. [सं. विश्वगश्व] राजा पृथु वैन्य के पांच पुत्रों में से एक।

विस्वगोप्ता–सं. पु. [सं. विश्वगोप्ता] १ विष्णु।
२ देवराज इन्द्र।
३ विस्वंभर।

विस्वचक्र–सं. पु [सं. विश्वचक्र] बारह प्रकार के महादानों में से एक प्रकार का महादान, जिसमें सोने का चक्र दान में दिया जाता है। (पुराण)

विस्वचक्ख, विस्वचक्ष, विस्वचक्षु, विस्वचख–स. पु [सं. विश्वचक्षुस्]
१ ईश्वर, परमात्मा।
२ सूर्य. सूरज।
(मि. जगचख)

विस्वचित्ति–सं. पु. [स. विश्वचित्ति] हिरण्यकशिपु के दरबार का एक राक्षस।

विस्वजीत–सं. पु. [सं. विश्वजित्] १ एक प्रकार का यज्ञ विशेष जो विरोचनसुत राजा बलि ने शुक्राचार्य के आदेश से इन्द्र को परास्त करने हेतु किया था।
२ वरुण का पाश।
३ आग, अग्नि।
४ बृहस्पति के एक पुत्र का नाम।
५ एक दैत्य जिसने पूर्वकाल में सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य किया था।
६ राजा सत्यजित के पुत्र का नाम।

विस्वजीव–सं. पु. [सं. विश्वजीव] ईश्वर, परमात्मा।

विस्वजूण, विस्वजोनि—देखो विस्वयोनि' (रू. भे.)

विस्वजोतिस–स पु [सं विश्वज्योतिष] एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक था।

विस्वतन, विस्वतनु–सं. पु. [सं. विश्वतनु] भगवान विष्णु।

विस्वतोया–सं. स्त्री. [सं. विश्वतोया] गंगा नदी।

विस्वदत्त–सं. पु. [सं. विश्वदत्त] एक सोमवंशीय राजा जो श्रीगणेश की पूजा करने के कारण देवताओं का गणाधिपति बना था।

विस्वदासा–सं. स्त्री. [सं. विश्वदासा] अग्नि की सातों जिव्हाओं का नाम।

विस्वदेव–सं. पु. [सं. विश्वदेव] १ नांदी मुख श्राद्ध में पूजे जाने वाले एक प्रकार के देवता। (पुराण)
२ पारावत देवों में से एक।
३ ईश्वर, परमात्मा।
उ०—देव देव दीन नाथ राज राज स्रीदयाळ, वासुदेव **विस्वदेव** वंदनीक नै विसाळ। नारसींघ नार श्रेण नरांनाह नाभकंज, रांमचंद्र राघवेस रूपराज रमा रंज। —र ज. प्र.
रू. भे.—विस्वदैव।

विस्वदैव—१ देखो 'विस्वदेव' (रू. भे.)
२ देखो विस्वदैवत' (रू. भे.)

विस्वदैवत–सं. पु. [सं. विश्वदैवत्] २७ प्रकार के नक्षत्रों में से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विस्वधर–सं. पु. [सं. विश्वधर] भगवान श्रीविष्णु।

विस्वधांम–सं. पु. [सं. विश्वधामन्] ईश्वर, परमात्मा।

विस्वधा–स. पु. [सं. विश्वधा] एक प्रकार के देवता, वशवर्तिन देवता।

विस्वधार–सं पु. [सं. विश्व+धारी] (स्त्री. विश्वधारिणी) १ शिव, महादेव।
२ एक तीर्थ का नाम।
उ०—ओळंगू हरदांन रांमदांन दोनूं अतीत होय गया था। तीरथां नै रवांना होय गया था सो आगै केदारनाथजी परस, बदरीनांथ परस, **विस्वधार** परस, भूठंति मांही कर नैंपाळ परस, मुक्त क्षेत्र परस, अयोध्या कासी परस परागजी आय मकर रौ नाहण करि फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भरायां पछै बैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकंडेय कुंड तरपण किया।
—पलक दरियाव री बात
२ शाकद्वीपाधिपति मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक।

विस्वधारणी, विस्वधारिणी–सं. स्त्री. [सं. विश्वधारिणी] १ भूमि, पृथ्वी।

२ दुर्गा, देवी, शक्ति ।

विस्वनंत–सं. पु. [सं. विश्वनंत] जनकवशीय एक राजा ।

विस्वनंद–सं. पु. [सं. विश्वनंद] ब्रह्मा के एक परम तेजस्वी शिष्य का नाम ।

विस्वनाथ–सं. पु. [स. विश्वनाथ] १ काशी का एक ज्योतिर्लिंग ।

२ शिव, महादेव । (अ. मा.)

उ०—भौ मेटि उभै संसार भव, इम कुण कुळ उद्धारसी । परसियो राय जोधहपुरै, **विस्वनाथ** बांणारसी । —गु. रू. बं.

३ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

रू. भे.—विसवनाथ ।

विस्वनाभ–सं. पु. [स. विश्वनाभ] १ भगवान् श्रीविष्णु ।

२ देखो 'विस्वनाभि' (रू. भे.)

विस्वनाभि–सं. पु. [सं. विश्वनाभि] १ भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र ।

२ देखो 'विस्वनाभ' (रू. भे.)

विस्वपत, विस्वपति, विस्वपती–सं. पु. [सं. विश्वपति] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

३ मनु नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम

रू. भे.—विसपत, विसपति, विसपती ।

विस्वपा–सं. पु. [सं विश्वपा] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चन्द्रमा, चांद ।

४ आग, अग्नि ।

विस्वपातरी विस्वपात्री–सं. पु. [सं. विश्वपातृ] पितरों में से एक ।

विस्वपाळ–सं. पु. [सं विश्वपाल] १ संसार का भरण-पोषण कर्ता, ईश्वर, विष्णु ।

२ हिरण्यनाभ कौशल्य का पिता एवं व्युत्थिताश्व का पुत्र एक राजा ।

रू. भे.—विसपाळ ।

विस्वपावन, विस्वपाविनी–सं स्त्री. [सं विश्वपावन] १ तुलसी ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आग, अग्नि ।

विस्वपूजिता–सं. स्त्री. [सं. विश्वपूजिता] तुलसी ।

विस्वप्रकास, विस्वप्रकासक–सं पु. [सं. विश्वप्रकाशक] सूरज, सूर्य ।

विस्वप्रबोध–सं. पु [सं. विश्वप्रबोध] भगवान विष्णु ।

विस्वासन–स. पु. [सं. विश्वासन्] १ देवता ।

२ सूरज, सूर्य ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ अग्नि, आग ।

विस्वबंधु–सं. पु. [सं विश्वबंधु] शिव. महादेव ।

विस्वबाहु–सं. पु. [सं. विश्वबाहु] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

विस्वभरता, विस्वभरत्ता–सं. पु. [सं. विश्वभर्तृ] ईश्वर, परमात्मा ।

विस्वभावन–सं. पु. [सं. विश्वभावन] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ रक्त नामक बीसवें कल्प में उत्पन्न ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।

विस्वभुज, विस्वभुजा–सं. स्त्री. [सं. विश्वभुज्] १ एक देवी का नाम । (पुराण)

सं. पु.—२ ईश्वर, परमात्मा ।

३ देवराज इन्द्र ।

४ पाकयज्ञ का अग्निदेवता जो ब्रहस्पति के चार पुत्रों में से चौथा पुत्र था और गोमती नदी का पति था ।

५ पितरों में से एक ।

वि —सब का उपभोगकर्त्ता, सर्वभक्षी ।

विस्वभूखण, विस्वभूसण–सं. पु. [सं. विश्वभूषण] एक सूर्यवंशी राजा (रा. वंसावली)

विस्वमया–सं. स्त्री. [सं विश्वमया] अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम ।

विस्वमहेस्वर–सं पु. [सं. विश्वमहेश्वर] १ शिव, महादेव ।

विस्वमाता–सं. स्त्री. [सं विश्वमाता] विश्व की माता, दुर्गा ।

विस्वमित, विस्वमितर, विस्वमित्र, विस्वमीत—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे.)

उ०—पेड़ां री छायां बैठ्यो हो, **विस्वमित्र** तप ग्यांनी । चिंतन घणोमगन हो, हो परम लोक रो घ्यांनी । —करणीदांन बारहठ

विस्वमुखी–सं. स्त्री. [सं विश्वमुखी] पार्वती ।

विस्वमूरति, विस्वमूरती, विस्वमूरत्ति–सं. स्त्री. [सं. विश्वमूर्ति] सर्वव्यापी भगवान विष्णु ।

विस्वमोहन–सं. पु. [सं. विश्वमोहनम्] विष्णु का नामान्तर ।

विस्वयोनि, विस्वयोनी–सं. पु. [सं. विश्वयोनि] संसार के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

रू. भे.—विसवजूरग, विसवजोनि, विसवयोनि, विस्वजूरग, विस्वजोनि।

विस्वरंधी–सं. पु. [सं. विश्वरंधि] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम।

विस्वर—देखो 'विसर' (रू. भे.)

उ०—नाड़ोलाई रो सोभाचंद सेवग वावेचा कह्या—भीखरगजी खेरवै है सो त्यांरा अवरगवाद विस्वर जोड़। सतरै प्रकार नीं पूजा रचै है तिरग मांहीं सूं तोनै दस बीस रुपया देस्यां। जद सोभाचंद बोल्यौ—भीखरगजी सूं वात करनै पछै विस्वर जोड़सूं
—भि. द्र.

विस्वरथ—देखो 'विस्वमित्र'

विस्वराजा–सं. पु.—एक सूर्यवंशी राजा का नाम। (रा. वंसावळी)

विस्वरुचि, विस्वरुची–सं. पु. [सं. विश्वरुचि] १ एक देव योनि।
[सं. विश्वरुची] २ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम।

विस्वरूप–सं. पु. [सं. विश्वरूप] १ श्रीकृष्ण। (नां. मां.)
२ श्रीविष्णु।
३ शिव, महादेव।
४ चौसट भैरवों में से एक भैरव का नाम।
५ शिवकल्प के पश्चात् प्रारंभ हुए एक कल्प का नाम।
६ गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखाया गया भगवान श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जिसके अनुसार उन्होंने समझाया कि ब्रह्मांड में सूर्य, चन्द्रमा, तारे ग्रह आदि जो कुछ है वे सब मेरा ही स्वरूप है।
८ एक प्राचीन तीर्थ।
९ त्वष्टा का एक त्रिमुखी पुत्र जिसे इन्द्र ने मारा था।

विस्वरूपविस्तार–सं. पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

विस्वरूपा–सं. स्त्री. [सं. विश्वरूपा] १ एक देवी।
२ धर्म ऋषि की पत्नी, जिसकी कन्या का नाम धर्मव्रता था।

विस्वरूपी–स. पु. [स. विश्वरूपिन्] भगवान श्रीविष्णु।

विस्वरेतस—देखो 'बिस्वरेतस' (रू. भे.)

विस्वलोचरग, विस्वलोचन–सं. पु. [सं. विश्वलोचन] १ सूरज, सूर्य।
२ चांद, चन्द्रमा।

विस्वलोप–स पु. [सं. विश्वलोप] एक वैदिक ऋषि का नामान्तर।

विस्ववसु–स पु. [सं. विश्ववसु] जमदग्नि एवं रेणुका एक पुत्र।

विस्ववारा–सं. स्त्री. [सं. विश्ववारा] एक अत्रिगौत्र की स्त्री, जो ऋग्वेद के पांचवें मंडल की ऋचाओं की ऋषि थी।

विस्वविद्यालय–सं. पु. [सं. विश्वविद्यालय] सभी प्रकार के विषयों की ऊंच कोटि की शिक्षा देने व उपाधियां प्रदान करने वाली शैक्षणिक संस्था विशेष।

विस्वसनीय–वि. [सं. विश्वसनीय] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य।

विस्वसहा–सं. स्त्री. [सं. विश्वसहा] १ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम।
२ भूमि, पृथ्वी, (डि को.)

विस्वसाक्षी, विस्वसाखी–सं. पु. [सं. विश्वसाक्षी] ईश्वर, परमात्मा।

विस्वसित—देखो 'विस्वस्त' (रू. भे.)

विस्वसेन–सं. पु. [सं. विश्वसेन] १ शान्तिनाथजी के पिता एक राजा। (जैन)

उ०—**विस्वसेन** पिता अचिरा माया, जेरग चउदै सुपना मोटा पाया। जनम्या तीरथंकर अमिय झरौ, स्रीसांति जिनेस्वर सांति करौ।
—जयवांरगी

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम। (रा. वंसावळी)

विस्वस्त–वि. [सं. विश्वस्त] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वसनीय।

विस्वस्ता–स. स्त्री. [सं. विश्वस्ता] वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो, विधवा।

विस्वस्त्रवा–सं. पु. [सं. विश्वश्रवा] कुबेर एवं लंकापति रावरग के पिता एक मुनि।

उ०—ब्रहस्पति पुत्र पुलहक्रत (भारचा मनभवा) तस्य पुत्र भारद्वाज। पुलहस्त भारचा सांति, तस्य पुत्र **विस्वस्त्रवा**। विस्वस्त्रवा पुत्र कुबेर। कुबेर पुत्र नलकुवर।
—रा. वंसावळी

विस्वहरता, विस्वहरत्ता–सं. पु. [सं. विश्वहर्तृ] शिव, महादेव।

विस्वहेतु–सं. पु. [सं. विश्वहेतु] भगवान, श्रीविष्णु।

विस्वा–सं. स्त्री. [सं. विश्वा] १ राजा दक्ष की कन्या, जो धर्म को ब्याही गई थी।
२ भारतवर्ष की एक महा नदी।
३ सोंठ। (नां. मा.)

विस्वगाथा–सं. स्त्री. [सं. विश्वागाथा] गाहा छंद का एक भेद विशेष, जिसमें ९ गुरु और ३९ लघु अर्थात ४८ वर्ण या ५७ मात्राएं होती हैं।

विस्वाघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—राजाजी चिमकनै बोल्या—हैं, अै तो दीवांरगजी ! अबै ठा पड़ी ! तौ आ सगळी कुचमाद आं दीवांरगजी री ही। इत्तौ

विस्वाघात ! साच पूछो तो म्हांनै श्रां दीवांणजी माथै कदै ई पूरो भरोसो नीं व्हियो । —फुलवाड़ी

विस्वाची–सं. स्त्री. [सं. विश्वाची] १ एक वैदिक अप्सरा ।

२ वायु के कारण होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें कंधे से अंगुलियों तक सारा हाथ न तो फैलाया जा सकता है और न ही सिकोड़ा जा सकता है । (वैद्यक)

विस्वात्मा–सं. पु. [सं. विश्वात्मा] १ विष्णु, भगवान ।

२ संसार के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा ।

३ शिव, महादेव ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

विस्वाधार–सं. पु. [सं. विश्वाधार] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—अनांथां-नाथ अनंत अछेह, दयाळ-मूरति विवर्जित-देह । बिना-वपु-रूप अनंत विथार, अमूळ-विरक्ख सु **विस्वाधार** । —ह. र.

२ मेवातिथि के पुत्र का नाम ।

रू. भे.—विस्वाधारी ।

विस्वाधारी—देखो 'विस्वाधार' (रू. भे.)

उ०—नमो अग्राहृचारु सुवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा अत विजय लक्ष्या पत नमो, नमो **विस्वाधारी** अनळ अवहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वभर नमो । —ऊ का.

विस्वाधिप, विस्वाधिपत, विस्वाधिपति, विस्वाधिपती–सं.पु. [सं. विश्वाधिपति] विश्व का अधिपति, ईश्वर, परमेश्वर ।

विस्वानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ बावन्ना चंदन ठवी, सुरहा तेल नी धार रे । घ्रत **विस्वानर** तर पिनइ, कीधउ तनु संस्कार रे । —ए. जै. का. सं.

उ०—२ उतर आज स उजमी, सकै तो पडसी सीय । कै **विस्वानर** सेवियै, कै सासू री धीय । —ढो. मा.

उ०—३ तेरा पक्का न खावसी, रे **विस्वानर** रढ्ढ । मह दीठइ तइ जाळिया, सज्जन केरा हढ्ढ । —प्रथ्वीराज राठौड़

विस्वाबीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विस्वांमित, विस्वांमितर, विस्वामित, विस्वामितर, विस्वामित्र, विस्वामित्रेस, विस्वामीत–सं. पु. [सं. विश्वामित्र] कान्यकुब्ज के पुरुवंशीय महाराज गाधि के पुत्र एक महर्षि जो क्षत्रियकुल में जन्म लेने पर भी अपने तपोवल से ब्रह्मर्षियों में परिगणित हुए ।

उ०—१ **विस्वामित्रेस** एण बात, कोपियो भयंकरा । गिरां तरां सरां गंभीर, धुज्जवै विसुंधरा । —सू. प्र.

उ०—२ **विस्वामित्र** रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रेण पै हूंत गोतम्म तारी । पति स्रापहूं देह पाई पखांणै, जिका दिव्य देहा हुई स्रब्ब जांणै । —सू. प्र.

उ०—३ बिहूं रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सझै जग विस्वामित्र सहाय । जनक तणौ वळि जोयौ ज्याग, भांगै धनु क टु सीय विसाग । —ह. र.

वि. वि.—इनका जन्म का नाम विश्वरथ था किन्तु ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर ये विश्वामित्र के नाम से विख्यात हुए । गाधि की सत्यवती नामक पुत्री ऋचीक ऋषि को ब्याही गई थी । ऋचीक ने अपनी पत्नी व सास के लिए दो अलग-अलग चरु बनाये पर दोनों ने गलती से एक दूसरी का चरु खा लिया । परिणामतः सत्यवती से जमदग्नि हुए जो ब्राह्मण होते हुवे भी क्षत्रिय गुण सम्पन्न थे और महाराज गाधि की पत्नी के गर्भ से विश्वामित्र हुवे, जो क्षत्रिय होते हुवे भी ब्राह्मणत्व से परिपूर्ण थे । ये बड़े प्रतापी राजा थे । एक बार ये शिकार करते-करते ससैन्य वसिष्ठाश्रम में पहुंचे । वहां वसिष्ठ महर्षि ने अपने तपबल एवं कामधेनु नन्दिनी की सहायता से राजा का राजोचित सत्कार किया । नन्दिनी से प्रभावित होकर उसे इन्होंने अपने साथ ले जाना चाहा और वसिष्ठ के इन्कार करने पर इन्होंने जबरदस्ती की । वसिष्ठ का इंगित जान कर नन्दिनी क्रुद्ध होकर अपने शरीर से सैनिक व म्लेच्छ निकाले जिन्होंने राजकीय सैनिकों को पराजित किया । उक्त घटना से इन्हें अनुभव हुआ कि राजबल से तपोबल अधिक है । परिणामतः इन्होंने भी राज्य को त्याग कर घोर तपस्या की और तपस्वी, राजर्षि व ब्रह्मर्षि बने । इनकी तपस्या में मेनका ने विघ्न डाला और उससे शकुन्तला का जन्म हुआ । मतान्तर से उर्वशी या रम्भा नामक अप्सरा ने तपस्या भंग की थी और तपस्या भंग करने वाली अप्सरा से ही शकुन्तला का जन्म हुआ था जो दुष्यन्त राजा की पत्नी बनी थी और भरत की माता बनी थी । इन्होंने दशरथ सुत रांम-लक्ष्मण को अपने साथ यज्ञ की रक्षार्थ ले जाकर ताड़का, सुबाहु आदि का वध करवाया था । वहीं से रांम-लक्ष्मण को अपने साथ मिथिलापुरी सीता स्वयवर में ले गये थे । इन्होंने त्रिशंकु को सदेह स्वर्ग पहुंचाया था । इनके शुनः, शेफ, मधुच्छन्द, धनंजय, कृतदेव, अष्टक, कच्छप, हारीतक, हिरण्याक्ष, आदि सौ पुत्र हुए थे । सती, रेणु, शालावति, सांकृति, माधवी आदि इनकी पत्नियां थी । इनका आश्रम कौशिकी नदी के तट पर था ।

२ अर्वावसु एवं परावसु ऋषियों के पितामह एवं रैभ्य नामक ऋषि का पिता, एक ऋषि ।

३ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित वैवस्त मन्वन्तर का एक ऋषि ।

४ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ रहने वाला एक ऋषि ।

५ रात्रि राक्षसों के चार समूहों में से एक राक्षस समूह ।

रू. भे.—बिसवामंत्र, बिस्वामंत्र, विसवामंत्र, बिसवामित, विसवा मितर, विसवामिति, विसवामित्र, विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति, विसुवामित्र, विस्वमित, विस्वमितर, विस्वमित्र, विस्वमीत।

विस्वामित्रा-सं.स्त्री. [सं.विश्वामित्रा] भारत में बहने वाली एक नदी।

विस्वायु-सं. पु. [सं. विश्वायु:] पुरुरवस् राजा के छ: पुत्रों में से एक जो राजा था।

विस्वावसु-सं. पु. [सं. विश्वावसु] १ एक गन्धर्व का नाम जो कश्यप एव प्राथा के पुत्र थे। (पुराण)

वि. वि.—इनके दो पुत्रियां थी। पहली पुत्री महासती मदालसा थी, जिसे पातालकेतु विवाहार्थ हर ले गया था किन्तु शत्रुजित् के पुत्र ऋतध्वज ने पातालकेतु को मारकर इससे विवाह किया था और दूसरी पुत्री का नाम प्रम्द्वरा था जो मेनका नामक अप्सरा से उत्पन्न हुई थी। पृथु महाराज के द्वारा पृथ्वी को गाय रूप में दूहते समय गन्धर्वों व अप्सराओं ने इन्हें बछड़ा बनाकर कमल पात्र में गन्धर्व विद्या (संगीत) व सौंदर्य दुह लिया था।

२ श्रावण माह के सूर्य के साथ भ्रमण कर्त्ता एक गन्धर्व।

३ विष्णु का नामान्तर।

४ जमदग्नि ऋषि के पांच पुत्रों में से एक जो महान ऋषि था।

५ साठ संवत्सरों में से ३९ वां और विष्णु वीसी के उन्नीसवें संवत्सर का नाम।

६ धर्म एवं सुदेवी के पुत्रों में से एक, वसु।

७ मधु राक्षस की पत्नी कुंभीनसी का पिता एवं माल्यवत राक्षस की कन्या का पति, एक राक्षस।

८ पुरुरवस एवं उर्वशी के पुत्रों में से एक, गन्धर्व।

विस्वावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—१ द्यै सहु नै सुख ए जगदीस, वांणी तेहनी, विस्वावीस। प्ररुप्या आगम पेंतालीस, संख्या नांम कहुँ सुजगीस। —ध व.ग्र.

उ०—२ धण जोवै नित राजरी, वाटां विस्वावीस। किण दिन आय करांवस्यौ, घर लीलां री हींस? —अग्यात

विस्वास-सं. पु. [स. विश्वास] १ मन में किसी व्यक्ति, बात या वस्तु के कारण उत्पन्न होने वाला भाव, भरोसा, ऐतबार, यकीन,।

उ०—१ देखतां पांण सेठ री जीव राजी व्हियौ। उण री निजरां आगै सा' ब अर मेंमड़ी रा हसतौड़ा उणियारा फिरण लाग्या। सेठ नैं पक्कायत विस्वास व्हैग्यो के हीरो बानैं सोळूं आंना दाय आवेला। —अमर चूंनड़ी

उ०—२ तथा लोकां नें साधां सूं भिड़कावै। जद स्वामीजी बोल्या—आगै भगू पुरोहित पिण बेटां नें भिड़काया। कह्यौ साधां रो विस्वास कीज्यो मती। —भि. द्र.

२ किसी विषय, सिद्धांत आदि की सत्यता का पूरे प्रमाण के अभाव में उसकी सत्यता के सम्बन्ध में होने वाली मन की धारणा।

उ०—लुगाई में अकल अर हीमत व्है तौ ई वा कांम में नीं बरती-जै। बरतीजण रौ कीं मारग ई कोनी। पूतळी री पूजा करतां भगत नै तो औ विस्वास रैवै के भगवांन विनां कह्यां ई उण रै मन री सै बातां जांणतौ व्हैला। —फुलवाड़ी

३ मन में होने वाला वह दृढ़ निश्चय जो केवल अनुमान पर आधारित हो।

उ०—इतरा नें तो एक लठ्ठ म्हारी खोपड़ी पर पड़ियौ अर म्हूं पड़तौ पड़तौ बच्यौ। अबै म्हने पक्को विस्वास व्हैग्यौ हौ के आ कोई प्रेत लीला नहीं पण मांनखा लीला ही। —रातवासौ

४ यकीन, एतबार, भरोसा।

उ०—१ घात व्हैणी व्हैती तौ कदेई व्है जाती। धनजी-भीमजी माथै आपरो विस्वास है जिको चोखौ इज है, पण कांई ए दो आदमी दरबार सूं ई बत्ता सांमरथ है? दरबार तौ आप रै माथै पूरा मेहरबांन है। —अमर चूनड़ी

उ०—२ अबकी महारांणी फेर मासी रै पगां हाथ लगाय कह्यौ— थूं औ विस्वास राख कै थारी काली भांणजी कदै ई थारै इण सत माथै अभरोसौ नीं करैला। —फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारी जीभ में कीड़ा पड़ै म्हैं थनै काळै कैंडी ऊंधी पाटी पढाई। म्हारी काली बातां माथै घणौ विस्वास करियो तो सगळी ऊमर रोवैला। —फुलवाड़ी

५ आत्मबल।

उ०—१ इण परमेस्वर रै करार री कूंतौ आंक लियौ बेटी! म्हैं थनै म्हारो औ इज ग्यांन सूंपणी चावती। अबै तो औ ग्यांन ई म्हारी सुहाग अर थारौ विस्वास है। —फुलवाड़ी

उ०—२ उण रा डील नै पतवांणियां म्हनै अैड़ो लखायो के औ बावो धांन, पांणी अर हवा रै पांण नीं जीवै, आपरा विस्वास रै आपं जीवै है। —फुलवाड़ी

उ०—३ पण विस्वास रा बळ आगै उणरा अखूट विखा नै ई हार मांनणी पड़ी। विस्वास रा बळ रै सांमी बापड़ा दुख, क्लेस अर संताप रौ कांई गाढ। —फुलवाड़ी

६ दृढ़ निश्चय।

उ०—ठाकर आडियां रा अरथ बतावण में प्रवीण हा वांनै पूरौ विस्वास हौ। अर जवांन सूं कौल व्हैगो जको तौ व्हैगो। —फुलवाड़ी

७ धैर्य, तसल्ली ।

८ आत्म-सन्तोष ।

उ०-१ म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नैं कांई जबाव देवतौ । उण रा विस्वास नै कियां खंडत करतौ । जिण उम्मेद री डोर माथै वौ जीवै हौ उणनैं कियां तोड़तौ । —अमरचूंनड़ी

उ०-२ गुमेज भरचा सुर में बोल्या—मूंडो है, घरटी रो गाळौ कोनीं । निकळचा बोल पाछा नीं उराइजै । म्हनै पूरौ विस्वास है कै किणी आडी रौ अरथ म्हारा सूं छांनौ कोनीं । —फुलवाड़ी

६ धैर्य ।

उ०—तिण सूं गंगदेव रो आगम जांणि पहिली सूचना करि मोनूं बुलाइ गेमांरां नूं म्हारौ सहायक भाव दिखावणौ । जरैं खीची रौ भय टळियां विस्वास पाइ धीजियां नूं रजपूत करण रै काज मीणां री चाल छोडण रौ पत्र कपट कर लिखावणौ । —वं. भा.

उ०—······जे हंसै तौ एक लाख अर जे प्रसन्न होय तौ विक्रम करोड़ रुपिया देय । सो हे राजा ! महाराज विक्रम सा गुण जे तौ मांहीं होय तौ सिंघासण बैठ नातर विस्वास कर बैठ रहै । —सिंघासण बत्तीसी

क्रि. प्र.—करणौ, जमणौ, देणौ, बैठणौ, होणौ ।

रू. भे.—बसास, बिसबास, बिसवास, बिसास, बिस्वास, बेसास, बैसास, विसवास, विसास, वीसास ।

अल्पा.—बेसासड़उ, वीसासौ ।

स्वासकारक-वि. [सं. विश्वासकारक] १ विश्वास करने वाला, जो विश्वास करे ।

२ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास योग्य, विश्वसनीय ।

स्वासघात-सं. पु. [सं. विश्वासघात] विश्वास देने के बाद विश्वास करने वाले के विरुद्ध, उसके विश्वास के विरुद्ध किया जाने वाला कार्य ।

उ०—१ इतरी सुण कुमार चट बांदर नूं डाळ सूं धकेलियौ सो पड़तां बार सचेत होय डाळ ऊपर चढ गयौ । कुमार रै माथै मूंत की धार मार कही—नीच तो नूं धिक्कार ! तूं बचनहार, मित्रद्रोही विस्वासघात कीन्हौ । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ इसी बात सुण कुमार एक आंक छोडियौ । वीसारांमा करै लागियौ, तद पड़दा मांहीं सूं फेर पिंडत कही —ब्रह्महत्यादिक पाप गंगा नहायां छूट जाय पर मित्र सूं कियौ विस्वासघात नहीं छूटै । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ कइ विस्वासघात अम्हे कीधा, कइ अवगुणियां पात्र । कइ धन प्रांणि पियारां फूटी, पांमर पोख्यां गात्र । —कां. दे. प्र.

रू. भे.—बिसवासघात, विस्वाघात, बिस्वासघात, विसवासघात, विसासघात, वीसासघात ।

विस्वासघातक, विस्वासघाती-वि. [सं. विश्वासघातक, विश्वासघातिन्] विश्वासघात करने वाला ।

उ०—१ इतरी वात सुण कुमार एक आंक और छोडियौ । वीसरांमा करै लागियो । पड़दा सूं पिंडत कही—जै मित्रद्रोही, विस्वासघाती अर क्रतघ्नी हौ सो चांद, सूरज रहै तौ लौं नरक भोगै । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सेठजी म्हनै पं'ला आ बात क्यूं नीं बताई । म्हैं आं सेठां नै अैड़ा विस्वासघाती तौ नीं जांण्या हा । म्हारै सागै ई कुचमाद करण में नीं चूक्या । —फुलवाड़ी

उ०—३ राज-दरबार में मांनखो मावतौ नीं हौ । राजाजी सिंघासण माथै बिराज्या रीस में उफणता हा । तौ आ सगळी कुचमाद इण विस्वासघाती दीवांण री । —फुलवाड़ी

विस्वासणौ, विस्वासबौ-क्रि. स.—१ सन्तोष करना ।

२ विश्वास या भरोसा देना, विश्वास कराना ।

३ दृढ़ निश्चय करना ।

क्रि. अ.—४ सन्तोष होना ।

५ विश्वास होना, भरोसा होना ।

६ दृढ़ निश्चय होना ।

विस्वासणहार, हारौ (हारी), विस्वासणियौ—वि० ।

विस्वासिअोड़ौ, विस्वासियोड़ौ, विस्वास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विस्वासीजणौ, विस्वासीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिसवासणौ, बिसवासबौ, बिसासणौ, बिसासबौ, बिस्वासणौ, बिस्वासबौ, बेसासणौ, बेसासबौ, बैसासणौ, बैसासबौ, विसवासणौ, विसवासबौ, वीसासणौ, वीसासबौ—रू० भे० ।

विस्वासपातर, विस्वासपात्र-वि. [सं. विश्वासपात्र] जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय ।

रू. भे.—बिस्वासपात्र ।

विस्वासा-सं. पु. [सं. विश्वासा] एक सूर्यवंशी राजा, विश्रुतवान । (पुराण)

उ०—जै सुत हुवौ सधि ह्त दूजण, मरखण सधिसुतण कुळ मंडण । मरखण सुत सिहसांन भूप मणि, भूप विस्वासा द्वै तै सुत भणि । —सू. प्र.

विस्वासियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सन्तोष किया हुआ. २ विश्वास या भरोसा दिया हुआ, विश्वास किया हुआ. ३ दृढ़ निश्चय किया हुआ. ४ सन्तोष हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ. ५ विश्वास हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ. ६ दृढ़ निश्चय हुवा हुआ ।

(स्त्री. विस्वासियोड़ी)

विस्वासी-वि. [सं. विश्वासी] १ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य ।

उ०—१ दीखणा में तौ अेकलौ दीसूंला, पण अेकलौ व्हूंला कोनी। म्हारी मरजी रा खास विस्वासी असवारां नै पांच-पांच, सात-सात री टोळियां बणाय नाकै रै नाकै ठौड़ ठौड़ लुकाय नै बैठांण दूंला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ जद स्वांमी जी खिमाकर विस्वासी आहार अवेरनै वोल्या—आ थारै सका है तौ चरचा करांला। इम कही उण वेला इज तावड़ै मैं विहार कीधौ। —भि. द्र.

उ०—३ मतीरौं री रुत में मतीरौं रा ऊठ रा ऊंठ नाखीजता। विस्वासी आदमी वां रै टाक्यां लगाय' र कई में मोहर अर कई में रुपिया घाल' र पाछोई मूंडौ बंद कर देंवता।
—संत सेठ स्रीरांमरतन डागा री वात

२ विश्वास करने वाला।

रू. भे.—बिसवासी, विसवासी।

विस्वेदेव-सं. पु. [सं. विश्वेदेव] १ वेदानुसार नौ देवतातों का एक समूह विशेष।

वि. वि.—अग्निपुराणानुसार इस समूह में दस देवता माने गये हैं—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आर्द्रक और पुरुरवा। इनमें से पांच देवों का जन्म विश्वामित्र के शाप के कारण द्रोपदी के गर्भ से हुआ था जो बाल्यकाल में ही अश्वथामा के द्वारा मारे गये थे। श्राद्ध आदि में इनका पूजन किया जाता है।

२ दस की संख्या*।

विस्वेदेवपूजन-स. पु. [सं. विश्वेदेव पूजन] आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को पूर्वाषाढा होने पर विश्वेदेवों का किया जाने वाला पूजन।

विस्वेस-सं. पु. [सं. विश्वेस] १ शिव, महादेव।

२ भगवानन् श्रीविष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ सत्ताईस नक्षत्रों में से उत्तराषाढ़ा नामक नक्षत्र विशेष।

रू. भे.—विसवेस, विस्वईस।

विस्वेसर, विस्वेसुर, विस्वेस्वर-सं. पु. [सं. विश्वेश्वर] १ शिव की एक मूर्ति।

२ विष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम।

रू. भे.—बिसेसर, विस्वईसर, विस्वईसुर, विस्वईस्वर।

विस्वेकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

विस्वैकसार-सं. पु. [सं. विश्वेकसार] एक प्राचीन तीर्थ, जो काश्मीर में है।

विस्वैक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

उ०—अहं नांम सोयं प्रभा धांम एता, जिकै तात विस्वैक्रमा कीध जेता। हिमांनी सखा माहरै एक हूंती, अठाहूंत सौ उद्धरी भागवती
—सू. प्र.

विस्वौ—देखो 'विसवौ' (रू. भे.)

उ०—तरै जैतसीजी वोल्या, बाई, म्हांनै पण छै वांमण, चारण भाट सवासणी—इतरां रौ विस्वौ खाण रौ पण छै. सो पण भांज्यौ थांरा दाखीण सूं। —जैतसी ऊदावत री वात

विस्सरांम—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—पड़िहार भीम भुज दांन भत्त, प्रिथमी दीव जांणे सपत्त। थाकै सति साहंस विस्सरांम, 'नाद' उत कियौ रवि चंद - नांम।
—गु. रू. वं.

विस्सरांमी—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

विस्सरांमौ—देखो 'विसरांम' (रू. भे)

विस्सम—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—विपरीत विस्सम घात. किरि वांण वज्रहै पात। वरजाग बूंग वहंति, किरि अगिग द्रस्टि हुबंति। —गु. रू. ब.

विस्सहरपुर-सं. पु. [सं. विषधरपुर] नागौर नगर का नाम।

उ०—विस्सहरपुर फतै वहइ वांणि, पह दियइ भेट पूजइ न प्रांणि। खेसइ खडग्गि नांणउ खरोइ, करिमाळ झाल ऊभइ न कोइ। —र. ज. सी.

विस्सांम—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

विस्सा-सं पु. [सं. विश्रसा] पुदगल, धूप छाया, आदि।

उ०—विस्सा हाथ आवै नहीं, मिस्सा जीव-रहत। जीव सहित तै योगसा, स्री जिन वांणी तहत्त। —जयवांणी

विहंग-सं. पु [सं.] १ पक्षी, चिड़िया।

उ०—१ प्रीतइं भलां पारेवडां, केता अवर विहंग। वात न लहइ वियोगनी, सदा निरंतर संग। —मा. कां. प्र.

उ०—२ मर सूकै नह संचरै, बांका पही विहंग। किण रै चालै संग कुण, सब स्वारथ रै संग। —बां. दा.

उ०—३ जेथि रंग-आंमास, तेथि क्रीडंति कुरंगह। जेथि न्रपति बैसता, तेथि उड्डंत विहगह। —गु. रू. बं.

उ०—४ कुदरत्ती कोमंड तांण करै, छेदंत विहंग दुहंग सरै। रज धूंधळ समूह मिळै रयणां, ग्रहपति प्रछन्न थयौ गयणां।—गु. रू. बं.

२ मांसाहारी पक्षी।

उ०—१ पनग लड़ौ कीड़ा पड़ौ, सड़ौ झड़ौ दुख संग । जग चुगलां री जीभड़ी, वायस भखौ विहंग । —बां. दा.

उ०—२ मिल अच्छर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत । खग गिलत गूंदा तत अखत, वरा असत परवत मेरवत । सह त्रिपत विहंग विसेख । —र. रू.

३ सूरज, सूर्य ।

४ चान्द, चन्द्रमा ।

५ बादल, मेघ ।

६ बाण, तीर ।

७ घोड़ा, अश्व । (ना. डिं. को.)

उ०—१ जोइवा जगत आवंत जात, गिरवर विहंग उतंग गात । दीपक्क चक्ख सोभा दिवस्सि, असराळ तेज कोडीक अस्सि । —गु. रू. बं.

उ०—२ ताहरा चूडासांमा, "राज रौ खरौ परधांन आयौ । थोड़ा असवारां सो पोहतौ । परमेसर दीनौ । मार नै घोड़ा उरा लेवौ ।" इतरौ कहि नै असवार ५० वडा विहंग पाछा वेरिया । वेर नै नरै ऊपर नांखिया । —जैतमाल पुमार री वात

८ आकास, गगन । (नां. मा.)

९ सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र ।

१० जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध, ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग का नाम ।

११ हंस ।

उ०—करिसु कथा जिम कुमुदिनी, रमिवा भोगी अंग । मति मुत्ताहल वीखरिसु, चिणवा चतुर विहंग । —मा कां. प्र.

१२ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

उ०—भक्त जोग परै हठ जोग है, सांख्य जोग ता आगी । मीन पपील विहंग पुनि कहियै, तीहूं राह चीन बडभागी ।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

१३ देखो 'बिहाग' (रू. भे.)

उ०—भणंत स्री विनोदयं, कल्यांण केक मोदयं । खंभायची पटंगयं, वगैसरी विहंगयं । —रा. रू.

रू. भे.—बहंग, बिहग, बिहगम, बिहंगौ, बिहग, वहंग, विहंग, विहंगम, विहग, विहांग, वीहग ।

अल्पा.,—बिहंगड़ौ, विहंगड़ौ, विहांगड़ौ, वीहंगड़ौ ।

विहंगड़ौ—देखो 'विहंग' (अल्पा., रू. भे.)

विहंगजेठी—सं. पु.—१ सूरज, सूर्य ।

उ०—भड़ खगां छछोहां भींच छेटी भनै, विहंग-जेठी समर खांचियौ बाज नैं । गजां घेटी तरह झाड़तां कुलगनैं, कणेठी सूर सुरतांण जेठी कनैं । —ठाकुर सुरतांणसिहजी रौ गीत

२ गरुड़ ।

विहंगनाथ—सं. पु. [सं. विहंग+नाथ] १ पक्षिराज गरुड़ ।

उ०—वज्र खूटौ इद्र कै, विछूटौ रामचंद्र बांण, कूदवा सांमद्र बांण टूटो हणू क्रोव । काळी नाग घड़ा हूं विहंगनाथ जूटो कना, जटी की जटा सुं छूटौ भद्र जोव । —हुक्मीचंद खिड़ियौ

२ देवराज इन्द्र ।

३ देखो 'विहगपत'

रू. भे.—विहंगांनाथ ।

विहंगपत, विहंगपति, विहंगपती,—सं. पु. [सं. विहंगपति] १ पक्षिराज गरुड़ ।

२ देवराज इन्द्र ।

३ सूर्य, सूरज ।

४ चन्द्रमा, चांद ।

रू. भे.—वहंगपत, वहंगपति ।

विहंगम—वि. [सं.] आकाश में गमन करने वाला ।

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति ग्रीखम रित मांहै पवन पावक समांन वाजियौ छै । प्रथी अप नैं वायू अकास च्यारि तत पांचमै अगनी तेज तत भेला मिळ नै रहिया छै । प्रिथी रा लोक विहंगम पंखी छै । —रा. ज. स.

सं. पु.—१ सूरज, सूर्य ।

२ अश्व, घोड़ा ।

३ आकाश, गगन ।

४ मांसाहारी पक्षी ।

उ०—१ तिण वार वीरारस संगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विहंगम । कळह का आगम सौ विखमारिख, सार का कांठा सचां पारिख । —रा. रू.

५ पक्षी ।

उ०—१ तन दुख नीर तड़ाग, रोज विहंगम रूखड़ौ । विसन सलीमुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल । —बां. दा.

उ०—२ साथै हिंदू मुस्सलमांणां, हिंदुसथांन खिडै खुरसांण । मुळ गळ अवत्रकि खुरसांणी, बोलै जेम विहंगम वांणी ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ सूंडाळां आलम ढ़ल्ल सिरै, नन्नावधि वंसक नंदगिरै । घंटा-रव घूघर सद्द हुवै, बोलत विहंगम जांण धुबै । —गु. रू. बं.

उ०—४ ऊंचासौ इद्र रै, रांम रै गुरड़ विहंगम । सूरज रौ सिलह "जै" जिसौ सपतास तुरंगम । —गु. रू. बं.

६ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण ।

७ खर राक्षस का एक आमात्य ।

८ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

रू. भे.—बिहंगम ।

विहंगमग-सं. पु. [सं.] १ आकाश, आसमान, गगन, (नां. मा.)

२ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

विहंगमपथ—देखो 'विहंगमारग' ।

उ०—वदंति लोक वाक्या, पपीलिका मारगं पयणे । सिघति सूर पंथं, **विहंगमपथ** पणयह । —गु. रू. बं

विहंगममारग—देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

विहंगमा-सं. स्त्री. [सं.] सूर्य की किरण ।

विहंगमारग-सं. पु. [सं. विहंगमार्ग] योग साधना के तीन मार्गों में से एक मार्ग विशेष, जिसके द्वारा साधक काया को अधिक क्लेश दिये बिना शीघ्र व सहज में पक्षी की तरह उड़कर अपने प्राण ब्रह्मांड तक ले जाता है ।

रू. भे.—विहंग, विहंगम, विहंगमग, विहंगममारग, विहंगराह ।

विहंगराज, विहंगराजा-सं पु. [स. विहंगराज] १ पक्षिराज गरुड़ ।

२ इन्द्र का नामान्तर ।

रू. भे'—वहंगराज, वहंगराजा ।

विहंगराह—देखो 'विहगमारग' ।

उ०—सांख्य जोग निज ग्यांन कहीजे, सार असार पिछांणै । मिथ्या त्याग सत्तकी संग्रह, श्रो **बिहंगराह** निरवांणै ।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

विहंगांनाथ—देखो 'विहंगनाथ' (रू. भे)

उ०—तूटौ बोम बाट निराताळ सौ विछूटौ तारौ, केतां छूटौ पीरांण आळखां ताकै कूप । कोप रुद्र-माळका **विहंगांनाथ** जूटौ कना, रूठौ गौरां माथै प्रळै काळ को सौ रूप ।

—गिरवरदांन कवियौ

विहंगेस-सं पु [सं. विहंग+ईश] १ गरुड़ ।

२ इन्द्र ।

रू. भे.—बिहंगेस, बिहगेस ।

विहंगौ—देखो 'विहंग' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—गरु मेरे दीया सबद **विहंगा**, पकरि लीया असें मन पंगा । यो मन भवंग वसै तन बंबी, गवन करै कब छोटीय लंबी ।

—अनुभववांणी

विहंड-सं. पु.—१ टुकड़ा, खण्ड ।

उ०—लडै पड़ै रिण खेत में, तन तैं होय **विहंड** । सूरा तन को क्या सूवो, हरिया दरगह मंड । —अनुभववांणी

२ नाश, संहार ।

उ०—अनुळ पौरस धर चंडमुंड बोलिया-हंसा गमण री हांम पूरां । वडौ प्रम उवारां । दोखियां रा कांध भिरड़ां । एक वार घणां रा तन **विहंड** करां । —मा. वचनिका

३ मारने की क्रिया ।

रू. भे.—विहंड ।

विहंडखंड—देखो 'खंड-विहंड' (रू. भे.)

उ०—मिळै असुरांण वीर भाग रौ समंदां मथै, खेलै होळी फाग रौ अथाग रौ खतंग । झड़ै पंडां खाग रौ **विहंड-खंडां** बगै जूझ, पीठांण 'गंभीरौ' पड़ै आग रौ पतंग ।

—ठाकुर गंभीरसिंघ सोलंकी रौ गीत

विहंडण-सं. पु —१ नाश, संहार ।

२ मारने की क्रिया ।

वि.—१ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

उ०—धर गई सरव धर धूंहड़ां, तै दावी तोता त नै । वैरियां **विहंडण** वेगडा, मुणै किसू हव मात नै । —पा. प्र.

२ मारने वाला ।

उ०—स्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ **विहंडण** । जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मंडण ।

—र. ज. प्र.

३ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—१ खलक तारण तरण खलां खंडण खतम । रोर जण **विहंडण** सुखद सरसे । सियावर तूझसौ तुही दाखे सको, दूसरो समोबड़ न को दरसे । —र. रू.

उ०—२ दुख दावानल सलिलवाह ! दोहग्ग **विहंडण** । जय जय 'पास' जिणंद ! देव ! थंभणपुर मंडण । —स. कु.

विहंडणौ-वि.—१ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—इम थुण्यउ जिणवर संति दिणयर, भरिय तिमिर **विहंडणो** । अणहिल्ल पाटण मांहि स्री, त्रंबाड़ वाड़ा मंडणो । —स. कु.

२ मारने वाला ।

३ नाश करने वाला, संहार करने वाला, विध्वंसक ।

विहंडणौ, विहंडवौ-क्रि. स.—१ नाश करना ।

उ०—१ स्यांम छळ करां जुध साहसां, धार समंद झूलण धसां । किरमरां विहंड असुरां कटक, वरां रंभ सुरपुर बसां —सू. प्र.

उ०—२ पिंड **विहंड** होय चुख चुख पडूं, ताय वरूं रंभ हित तिको । सुलभ ही जिको पाऊं सुरग, जगत घणौ दुल्लभ जिको ।

—सू. प्र.

उ०—३ जीता लाखां जुद्ध विहंडे जूजूवाह. हाजिर बंदा देव सको किंकर हूवाह । प्रगटी पेस अमोल दियै नित सुरपती, हरिहां

गुमिर किती इक तूझ कहीजै जगजगती । —मा. वचनिका

उ०—४ वहै विपरीत वेळा करारी, कूंत किरमाळ नेजा कटारी । धजवडां धार रुळ रुंड मुंड, विहंड पंड वाढ खंडह विहंड । —गु. रू. बं.

२ मिटाना, खत्म करना ।

३ नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ गिरिजा-नंदन गुण गुहिर, गाजइ गिर गभीर । अंधारि आदित्य तिम, विघन विहंडइ वीर । —मां. कां. प्र.

उ०-२ थोर गात्र ठरट्टिम कइ चालइ, सिरि सेवंत्रा भार । गवरीय नंदन विघन विहंडण, दुख खंडण सुख सार । —रुकमणि मंगळ

४ मारना, संहार करना ।

उ०—१ भाखरसी आपणै पण लोह गोळो । अर पठांण आया हूंता, तिकां नूं मार विहंड कर नांखिया, अर अठै भाखरसी री तो फतै हुई, मोरचौ कायम राखियौ । —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ भोमिया डंड पेसां भरै, मैंणै करसण मांडिया । गढपती पेसायौ मालगढ, विढ अबदाळ विहंडिया । —रा. रू.

उ०—३ विहंडत गज वाज, सांमि तणै छळि साहणी । देखि कहै पैळां दळां, धिन हाथां धनराज । —र. वचनिका

उ०-४ इक बाघौ सहसा अजणि, जळ क्रीड़ा मझारै । बांमणि गदां विहंडिया, दूजौ बळि द्वारै । —सू. प्र.

उ०—५ "सूर" तणौ सुरसरी तणै सर, मांनव विहंडिया वजावै मार । रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार । —किसनौ आढौ

उ०—६ सीह हुवा मेहासदू, अड़िया भुज अंबर । बिजो अरज्जन विहंडिया, खाधा भर खप्पर । —ठाकुर जूझारसिंह मेड़तियौ

५ टुकड़े-टुकड़े करना, काटना, छेदना ।

उ०—१ रूक पिआला पीअस्यां पाइस्यां । चाचर विहंडिस्यां विहंडाइस्यां । रिणखेत रै विखै रंगिअै बांणासि मतवाळां ज्यूं घूमतां थकां हाथिआं सूं टला खाइस्यां । —र. वचनिका

उ०-२ वाहै सत्रां सिरि खाग विहंडै, मार लियै थांणा बळ मडै । पाल्हासणी असुर बळ पूरै, साथ अमांमै गात सनूरै । —रा. रू.

उ०—३ आज करूं आरांण, निकसतां तबल निसांणा । बीस भुजा दस बदन, विहड रालूं तज बांणां । —र. रू.

उ०—४ ओरि तुरग असुर रां, जंगी हवदां लगि जाऊं । सिर विहंडूं घण सत्रां, विक्रम निज सिर विहडाऊं । —सू. प्र.

क्रि. अ.—६ नाश होना, सहार होना ।

७ टुकड़े-कटुड़े होना, कटना ।

उ०—१ भड़ खळिया भंभर वेहक वज्जर, वढ़िया पक्खर विहंड वपै पळ खंडिया पंजर पडै पंचाहर, जै जै संकर सकति जपै । —गु. रू. बं.

उ०—२ तूटै भड निवड त्रिजड झड तिमछै, वाढ अंतेवड विहंड वपै । छूटंती रुहिर नडड दड वड छिळि, धारां धजवड सुहड धपै । —गु. रू. बं.

उ०—३ वपि विहंड पळ खंड, तेग तिमछां मुहि तुटौ । धारां मुहि धडच्छियौ, कुंभ किरि काळी फूटौ । —गु. रू. बं.

८ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

९ घटना ।

१० मिटना, खत्म होना ।

विहंडणहार, हारौ (हारी), विहंडणियौ—वि० ।

विहंडिओड़ौ, विहंडियोड़ौ, विहंड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहंडीजणौ, विहंडीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिहंडणौ, बिहंडबौ, बिहड़णौ, बिहड़बौ, बीहंडणौ, बीहंडबौ, वहंडणौ, वहडबौ, विहड़णौ, विहड़बौ—रू० भे० ।

विहंडाणौ, विहंडाबौ—क्रि. स. [विहंडणौ, विहंडबौ का प्रे. रू.]

१ संहार कराना ।

उ०—१ बीजळां मोहरि खळ दळ विहंडि, वप विहंडाय परी वरां । स्रग करै वास अंजस सरब, कुळ सो वीस कवेसरां । —सू. प्र.

उ०—२ अभमाल आप छळि करि अचड़, वप विहंडाय रंभा वरूं । जंग करण महाभारत ज्युं ही 'करण' नांम साचौ करूं । —सू. प्र.

२ नाश करवाना, मिटवाना ।

३ संहार करवाना, मराना ।

४ मिटवाना, खत्म करवाना ।

५ टुकड़े-टुकड़े कराना, कटवाना, छिदवाना ।

उ०-१ ओरि तुरंग असुर रां, जंगी हवदां लगि जाऊं । सिर विहंडूं घण सत्रां, विखम निज सिर विहंडाऊं । —सू. प्र.

उ० —२ रूक पिआला पीअस्यां पाइस्यां । चाचर विहंडिस्यां विहंडाइस्यां । रिण खेत रै विखै रंगिअै बांणासि मतवाळां ज्यूं घूमतां थकां हाथिआं सूं टला खाइस्यां । — र. वचनिका

विहंडाणहार, हारौ (हारी), विहंडाणियौ वि० ।

विहंडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहंडाईजणौ, विहंडाईजबौ—कर्म वा० ।

विहंडायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ संहार कराया हुआ. २ नाश करवाया हुआ, मिटवाया हुआ. ३ संहार करवाया हुआ, मरवाया हुआ. ४ टुकड़े-टुकड़े करवाया हुआ, छिदवाया हुआ, कटवाया हुआ. ५ मिटाया हुआ, खतम किया हुआ ।

(स्त्री. विहंडायोड़ी)

विहंडियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नाश किया हुग्रा, संहार किया हुग्रा, ध्वंस किया हुग्रा. २ नाश किया हुग्रा, मिटाया हुग्रा. ३ संहार किया हुग्रा, मारा हुग्रा. ४ टुकड़े-टुकड़े किया हुग्रा, काटा हुग्रा, छेदा हुग्रा. ५ मिटा हुग्रा, खत्म हुवा हुग्रा. ६ मिटाया हुग्रा, खत्म किया हुग्रा।

(स्त्री. विहंडियोड़ी)

विहंण, विहंणौ—देखो 'विहूंणौ, (रू. भे.)

विहंसक—देखो 'विध्वंसक' (रू. भे.)

उ०—विरहणि वंस विहंसक, किंसुक नहिं ए भ्रंति । विलवइं विरह करालियउ, बालिय इम एकंति । —जयसेखर सूरि

विहंसणौ, विहंसबौ—देखो 'विहसणौ, विहसबौ' (रू. भे.)

विहंसणहार, हारौ (हारी), विहंसणियौ—वि० ।

विहंसिग्रोड़ौ, विहंसियोड़ौ, विहंस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहंसीजणौ, विहंसीजबौ—भाव वा० ।

विहंसियोड़ौ—देखो 'विहसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहंसियोड़ी)

विह—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ बारस विह गणिपिटक तणी, संख्या कही हो लाल । सासता ग्ररथ ग्रनंत कि छइ, एहना सही हो लाल । —वि. कु.

उ०—२ ग्रारोहत गिर सिखरं, समुद्र लंघ जात कपाळं । विह ग्रक्षर लिखिया भालं, फलत कपाळं हि भूपालं । —ठकुरै साह री वात

उ०—३ लिखियौ लाभै लोय, पर लिखियौ लाभै नहीं । पर सिर पदम हि जोय, जै विह विहवै ग्रप्पियौ । —नैणसी

उ०—४ लगन कळह दिली विह लिखियौ, ग्रालम घड़ देखै ग्रसमांन । वींदपणौ ग्रजमेर विसारै, खिसियौ लसियौ हाजीखांन । —राठौड़ रतनसिह री वेलि

उ०—५ विह ग्रांणै विह मेळवै, विह मंडै उपचार । ग्रळगौ ही नैड़ो करै, विह तणौ विचार । —राव रिणमल री बात

विहग—देखो 'विहंग' (रू. भे.)

विहड़–सं. पु.—बीहड़, जगल, वन ।

उ०—इसै में भांगेसुर मंगायजै छै सु किण भांत छै । केसर री क्यारी दोलळी, वासग माथा री । थोहर रा बिड़ा री, भाखर रा खुड़ारी. भूरै मोर री, काळै पांन री, ग्राबू रा विहड़ां री, भमरमार मिरघमाळ लरियाळ चिड़ियाळ, चोटड़ियाळ । —रा. सा. सं.

रू. भे.—विहड, विहडु ।

ग्रल्पा.,—विहड़ो, विहडौ ।

विहड़णौ, विहड़बौ—देखो विहडणौ, विहंडबौ' (रू. भे.)

उ०—नेह ग्रक्रत्रिम मइं कियउ रे, कदै न विहड़इ तेह । दिन दिन ग्रधिकउ उलटइ रे, जिम ग्रासाढी मेह । —वि. कु.

विहड़णहार, हारौ (हारी), विहड़णियौ—वि० ।

विहड़िग्रोड़ौ, विहड़ियोड़ौ, विहड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहड़ीजणौ, विहड़ीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

विहड़ियोड़ो—देखो 'विहंडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहड़ियोड़ी)

विहड़ो—देखो 'विहड़' (ग्रल्पा., रू. भे.)

विहचणौ, विहचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सिर नासा कांन दसन ग्रांखें, नख गाल वपुस ना मल नांखें । मिलणौ लेखौ करइ मंतरणौ, विहचण ग्रपणौ करि धन धरणौ । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ जाइ राजा सूं मुजरौ कीयौ । कहीयौ महाराज घरां री खबर ग्राई छै । बेटी री विमाह छै । राजा सिरपाव दे विदा दी उवै चोर कन्है गया कह्यौ ईंडो विहचौ । कह्यो विहचौ । ताहरां खीवौ बोलियौ एथ वहिचस्यां नहीं मारवाड़ माहि नै जाइ नै उथ वहिचस्यां । तांहरा ऊ चोर बोलियौ कितरा हैसा करिस्यो कह्यौ तीन हेसा करिस्यां । —चौबोली

उ०—३ तद पाछा घरै पधारनै जै भांत जोगी कह्यौ हतौ तै भांत रांणियां नूं बभूत री गोटौ, सोपारियां विहच दीवी । पछै कितरै कै दिनै पुत्र हुवौ —नैणसी

विहचणहार, हारौ (हारी), विहचणियौ—वि० ।

विहचिग्रोड़ौ, विहचियोड़ौ, विहच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहचीजणौ, विहचीजबौ—कर्म वा० ।

विहचियोड़ौ—देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहचियोड़ी)

विहड—देखो 'विहड़' (रू. भे.)

उ०—तिकै चीता कठारा छै ? मरोट रा, ग्रधीरा, देरावर रा, रोहरा, थटैरौ, पहाड़ां रा, ईडर रा डूंगरां रा, जाळोर रा, पहाड़ां रा, पावर रा, थळां रा, पारकर रा विहड़ां रा । इसा चीता साथ लीजै छै । —रा. सा. सं.

विहडौ—देखो 'विहड़' (ग्रल्पा., रू. भे.)

विहडु—१ देखो 'बेहद' ।

उ०—नेहली नीर भरिया नयडु, वांकउ दुरग पाखी विहडु । सारीख 'जइत' सुरितांण साज, रांमावतार राठउड राज । —रा. ज. सी.

२ देखो 'विहड़' (रू. भे.)

विहण–वि. [सं.] १ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

२ संहार करने वाला, मारने वाला ।

३ देखो 'वहन' (रू. भे.)

रू. भे.—विहरण, विहन, विह्न ।

विहत, विहति–क्रि. वि. [सं. विहीतम्] निवारण करने के लिए ।

उ०—उळझाया तन मन आप आप मैं, विहत सीत रुखुमिणी वरि । वांणि अरथ जिम सकति सकतिवत, पुहपगंध गुण गुणी परि । —वेलि

देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—अगमद अंबर सारघण, गंधसार अंगरेल । कुम कुमादि केसर अतर, विहति सुगंधी रेल । —रा. रू.

विहत्तर—देखो 'बेहतर' (रू. भे.)

उ०—वाग तांम वरियाम, दहूं आए वढि डंबर । कारंजां चादरां नीर धरहरै विहत्तर । —सू. प्र.

विहथी–वि.—दो हाथ के बराबर नाप की ।

उ०—सु तोड नूं धाड़वी जोंणै छै, जु रैबारी मार नै तोड़ लेवां । सु तोड मेंह रै चीखळ रै कैड री, हथ विहथी कंबडी, नवहथी भोकणी । चीखळ करहौ भेकतौ तहा भेकी ।

—जैतमाल पुमार रीं वात

विहद–सं. पु.—१ ध्वनि, आवाज ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—विहद हुंदि रहम देख जमदूत दहलै । —केसोदास गाडण

३ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में बीस मात्राएं होती हैं ।

उ०—पायै एकणि परठि जै, वीस मात्र विसतार । समझै लाखो भड सुघड़, विहद छंद वडुआर । —ल. पि.

वि.—बड़ा या महान ।

उ०—ता में अेक गयंद है, मेर समोवड़ गात । रिण वेळा रावत विहद, गिणै अरि तिलमात । —गजउद्धार

५ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ हरनेत्र जळै ज्वाळा विहद, स्रोकजि अमरख संमिळै । अजमल्ल वळै दीठौ 'अभौ', देस ढाळ मारू दळै । —रा. रू.

उ०—२ विहद लीध जिण वार, रैण प्रथ भूप जही रस । जस भ्रम कजि जगजीत, दियां तंबपत्र दवादस । —सू. प्र.

उ०—३ विहद कोर गोटां बणै, पातर रै पोसाक । परणी फाटा पूंगरण, बैठी फाडै बाक । —बां. दा.

उ०—४ देवी दै बरदांन, ग्यांन रीजै गुण गावां । भाखां सहि भागिवंत, विहद हथ अरथ वणावा । —पी. ग्रं.

उ०—५ लागौ ग्यांन धरा पर लोटै, सुध बुध भूला भोम सिळै । विहद कपाळ हुवा परवरती, मुगती पोहरां मांय मिळै ।

—बांकीदास बीठू

रू. भे.—विहद्द ।

विहदमांनु, विहदभांनू–सं. पु. [सं. बृहद्भानु] अग्नि, आग । (अ. मा.)

विहद्द—१ देखो 'विहद' (रू. भे.)

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ विरांण सब्द सुणिया विहद्द, नीसांण तूर अनहद्द नद्द । जोयणां सरीरां जोत जाग, लोयणां पार रां ध्यांन लाग ।

—वि. सं.

उ०—२ त्यारी करै तमांम, जलूसां साजिया, त्रंबागळ रिणतूर, विहद्दां बाजिया । —र. रू.

उ०—३ हुकम हुवौ तन सुख हुवां, हुवा नगारां सद्द । कूच हुवौ जैपुर दिसा, हुवौ हुलास विहद्द । —रा. रू.

उ०—४ बनस्पती पाखर वणी, वणिया टूंक विहद्द । पटा विछूटा नीझरण, आयौ मद अरबद्द । —डाढाळै सूर री बात

उ०—५ फौजां डेरा फाबिया, दीसै हद्द विहद्द । सबज वरना स्याह व्रन, लाल सपेत जरद्द । —गु. रू. बं.

उ०—६ वेताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द । मिळ समळ ग्रीध आंमंख भक्ख, जंबक्क रींछ वड्डाक जक्ख ।

—गु. रू. बं

विहन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—बांमण चरण प्रतापविधि, हिम पित गौरि विहन ।

—रांमरासौ

२ देखो 'विहण' (रू. भे.)

विहबळ—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—साहू बळ वडौ विहबळ हुवै, त्रिखावंत जळ मोकळै । कठि मूळ आइ पैठौ, 'कमौ', भूंइ कंठै भाखर वळै । —गु. रू. बं.

विहमंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

विहर–सं. पु.—१ संहार, नाश ।

२ घोड़ा, अश्व ।

३ विचरण करने की क्रिया । (जैन)

४ साधुओं आदि द्वारा मांगने पर दिया जाने वाला आहार आदि, भिक्षा ।

क्रि. वि.—१ भांति, तरह, प्रकार ।

२ बहुत, अपार ।

३ बड़ा, विशाल ।

४ बड़ा, महान् ।

विहरखौ-सं. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । (शा. हो.)

विहरण-सं. पु. [सं.] १ विहार करने की क्रिया ।

२ विछोह, वियोग ।

३ विस्तार, फैलाव ।

विहरणौ, विहरबौ-क्रि. अ.—१ विहार करना, घूमना, टहलना ।

उ०—१ ···महाभैरव सूकर घुरकइं, चित्रक बटकइ, वेताल किलकलइं, दावानल प्रज्वलइं, रिंछ सांचरइं विरू बूकार करता **विहरइं**, इसी अटवी,··········। —व. स.

उ०—२ पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ ब्रजनाथ आथ । कांन कवार **विहरि** गळी ब्रज कुंजरी, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ । —बां. दा.

उ०—३ **विहरंत** वाग विलास, किरि संभ ग्रह कयलास । दिन उदय सुख दरसाव, चित होत अगया चाव । —रा. रू.

२ अलग-अलग होना, जुदा होना ।

३ बिखरना, तितर-बितर होना ।

४ भिक्षा देना ।

उ०—बेकर जोड़ी सालिभद्र बोलइ, प्रस्न करूं स्वांमी तुझ नइ रे । **विहरण** बात तौ दूरी रही पणि, मां ओलख्यउ नहीं मुझनइ रे । —स. कु.

५ गमन करना, जाना ।

उ०—धन तें गांम नयर पुर मंदिर, जिहां **विहरइ** जिनराइ रे । विहरमांण सीमंधर स्वांमी, सुर नर सेवइ पाय रे । —स. कु.

६ भिक्षा मांगना, भिक्षा लेना ।

उ०—१ वीर वचन सुणि **विहरण** चाल्यउ, सालिभद्र मन संतोखी रे । आयउ घरि ओलख्यउ नहीं माता, तप करि काया सोखी रे । —स. कु.

उ०—२ नंदिसेण **विहरण** गयउ, गणिका कीधुं हास हो । व्रस्टि करी सोना तणी, मइं तसु पूरी आस हो । —स. कु.

उ०—३ विन **विहरयइ** पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन मांहि संदेह आयउ रे । मारग मांहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ रे । —स. कु.

उ०—४ आपण पइ जाऊं **विहरवा**, सूझतउ लूं आहार । ऊच नीच कुल गोचरी, लेऊं नगर मझार । —स. कु.

क्रि. स.—७ संहार करना, मारना ।

उ०—१ सबळ बोलियौ 'प्राग' समोभ्रम अरिअण **विहर** करां खग उत्तम । 'तेजल' अमर खाग भुज तौले, बहसै खांन नरायण बोलै । —रा. रू.

उ०—२ वढ पड़ **विहर** थाटां विळंद, भुजळग झट सेळां भचड़ि । त्रग वसूं कहैं 'हटमल' मुतन, 'अभूनि' जिम खाटै अचड़ि । —सू. प्र.

उ०—३ व्हां अमर काय सिभजीत व्हां, विखम 'विलंद' फौजां **विहरि** । करमाळ रगै मुजरौ करूं, केसरिया झकबोळ करि । —सू. प्र.

८ काटना ।

उ०—१ भड़ भिड़ज्ज गजभार, धार **विहरै** पाड़ै धड़ । ढहियां सिर पौढियौ, बोळ झकबोळ बहादर । —सू. प्र.

उ०—२ उडती झाळां लोपि अराबां, वह गजघड़ खगि हणूं निबाबां । कूंभाथळां **विहरि** घण काळां, मारि गजा लोपूं मछराळां । —सू. प्र.

उ०—३ पांडवां जहीं किता पळ खडिया, **विहरै** हाड विजूजळ वाह । सहुआं सिर 'मुड़ओ' सूरजमल, मेल्यौ मेछ तणौ दळ माह । —महाराजा सूरसिंह रौ गीत

९ टुकड़े करना, विच्छेदन करना ।

उ०—एकण हीरौ **विहरियां**, दूजो हीरौ थाय । हीराबेधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय । —र. ज. प्र.

१० चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ दांतूसळ वजर धजर जम दाढां, वाढां ऊगाढां **विहर** । असपति नजर भलौ आफळियौ, कुंजर नै नाहर कंवर । —लिखमीदास गाडण

उ०—२ फाट फरि उर पारि फींफरि, वजरि असमरि **विहर** वाखरि । कुंवरि नरि कटि कचर कौपरि, चार चरि धरि ढचरि पळचरि । जोध जुट थट जंग । —जगौ खिड़ियौ

११ तोड़ना ।

उ०—जो न्रप पूती नह दियै, दासी दूध अहार । तौ **विहरै** गिरि वज्र जिम, खत्री खग्ग पहार । —गु. रू. बं.

१२ इन्तजारी करना, प्रतीक्षा करना ।

उ०—गात महाबळ गाळिया, भड़ सारिखा भीम । सत **विहरौ** सयणी कहै, हिव जाणीस्यै हीम । —सयणी री वात

१३ युद्ध क्रीड़ा करना ।

उ०—असुर हजारां संहरै, हरै अमीरां लज्ज । आयौ रण **विहरै** अभौ', करै फतै कमधज्ज । —रा. रू.

विहरणहार, हारौ (हारी), विहरणियौ—वि० ।

विहरिओड़ौ, विहरियोड़ौ, विहरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहरीजणौ, विहरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिहरणौ, बिहरबौ, वी'रणौ, वी'रबौ, वीहरणौ, वीहरबौ।
—रू० भे०।

विहरमांण विहरमांन-सं. पु.—पांचों विदेह क्षेत्रों में विचरण करने वाले तीर्थंकर।

वि. वि.—जम्बू द्वीप के विदेह क्षेत्र के मध्य में स्थित मेरुपर्वत के पूर्व एवं पश्चिम में सीता एवं सीतोदा महानदियां हैं। उक्त नदियों के उत्तर-दक्षिण में आठ-आठ विजय हैं। इस प्रकार वहां आठ-आठ की पंक्ति में बत्तीस तीर्थंकर रहते हैं।

धातकी खण्ड व अर्द्धपुष्कर द्वीप के चारों विदेह क्षेत्रों में भी ऊपर लिखे अनुसार ही जघन्य चार एवं बत्तीस उत्कृष्ट तीर्थंकर सदा रहते हैं कुल पांच विदेह क्षेत्रों में १६० विजय एवं प्रत्येक विजय में जघन्य बीस एवं उत्कृष्ट १६० तीर्थंकर रहते हैं।

वर्तमानकाल में पांच विदेह क्षेत्रों में बीस तीर्थंकर विद्यमान हैं। जिनके नाम नीचे लिखे हैं। घूमते रहने के कारण ये विहरमान कहलाये।

(१) श्रीसीमंधर स्वामी (२) श्रीयुगमंधर स्वामी (३) श्रीबाहु स्वामी (४) श्रीसुबाहु स्वामी (५) श्रीसुजात स्वामी (श्रीसंयातक स्वामी) (६) श्रीस्वयंप्रभ स्वामी (७) श्रीऋषभानन स्वामी (८) श्रीअनतवीर्य स्वामी (९) श्रीसूरप्रभ स्वामी (१०) श्रीविशालधर स्वामी (विशाल कीर्ति स्वामी) (११) श्री वज्रधर स्वामी (१२) श्रीचंद्रानन स्वामी (१३) श्रीचन्द्रबाहु स्वामी (१४) श्रीभुजंग स्वामी (भुजंगप्रभ स्वामी) (१५) श्रीईश्वरस्वामी (१६) श्रीनेमिप्रभ स्वामी (नेमीश्वर स्वामी) (१७) श्रीवीरसेन स्वामी (१८) श्रीमहाभद्र स्वामी (१९) श्रीदेवयश स्वामी (२०) श्रीअजीतवीर्य स्वामी।

बीस विहरमांनों के चिन्ह लांछन क्रमशः निम्न हैं—

(१) वृषभ (२) हस्ती (३) मृग (४) कपि (५) सूर्य (६) चन्द्र (७) सिंह (८) हस्ती (९) चन्द्र (१०) सूर्य (११) शंख (१२) वृषभ (१३) कमल (१४) कमल (१५) चन्द्र (१६) सूर्य (१७) वृषभ (१८) हस्ती (१९) चन्द्र (२०) स्वस्तिक।

उ०—१ सम्प्रति वीस जिनेस्वर वंदउ, **विहरमांन** जिणराया जी। विचरंता भविजन मन मोहैं, सुर नर प्रणमइ पायाजी। —वि. कु.

उ०—२ बिहूं भमती बिंबावली कोरणी अति स्रीकारो रे। समोसरण सोहांमणी, विहरमांन विस्तारो जी। —स. कु.

उ०—३ धन ते गांम नयर पुर मदिर, जिहां विहरइ जिनराय रे। **विहरमांण** सीमंधर स्वांमी, सुरनर सेवइ पाय रे। —स. कु.

रू. भे.—वइरतमांण. वइहरमांण. विरहमांण, विरहमांन।

विहराणौ, विहराबौ—देखो 'वैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

उ०—बिन विहरचइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन मांहि संदेह आयउ रे। मारग मांहि मिला महिआरा, तिण गोरस **विहरायउ** रे। —स. कु.

विहराणहार, हारौ (हारी), विहराणियौ—वि०।

विहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

विहराईजणौ, विहराईजबौ—कर्म वा०।

विहरायोड़ौ—देखो 'वैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहरायोड़ी)

विहरावणौ, विहरावबौ—देखो 'वैराणौ, वैराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रतिदिन पड़िकमणु करइ गति पांमइ जी, सांमायिक एकंत देव गति पांमइ जी। आहार **विहरावइ** सूझतउ गति पांमइ जी, सांभलइ सूत्र सिद्धांत देवगति पांमइ जी। —स. कु.

उ०—२ विण विहराव्या आप जिमइ नहीं, दाखीजइ दांन सूरौ जी। आहार पांणी **विहरावइ** सूझतउ, वस्त्र पात्र भरपूरौ जी। —स. कु.

उ०—३ आज तौ तपसीएहवौ, पूंजा रिख सरीखौ न दीसइ रे। तेहनै वंदता **विहरावतां**, हरखै करि हियड़ौ हींसइ रे। —स. कु.

विहरावणहार, हारौ (हारी), विहरावणियौ—वि०।

विहराविओड़ौ, विहरावियोड़ौ, विहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विहरावीजणौ, विहरावीजबौ—कर्म वा०।

विहरावियौड़ौ—देखो 'वैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहरावियोड़ी)

विहरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विहार किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ अलग अलग हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ. ३ भिक्षा दिया हुआ. ४ बिखरा हुवा, तितर बितर हुवा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ६ भिक्षा मांगा हुआ, भिक्षा लिया हुआ. ७ संहार किया हुवा, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ८ काटा हुआ. ९ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, विच्छेदन किया हुआ. १० चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. ११ तोड़ा हुआ. १२ इन्तजारी किया हुआ, प्रतीक्षा किया हुआ. १३ क्रीड़ा किया हुआ।

(स्त्री. विहरियोड़ी)

विहळ, विहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—भाग तणां भांमणा त्यां भूधर दुख भंजण। **विहलां** ना वीठला, मुगिति सारूप समपण। —पी. ग्रं.

उ०—२ रास निमौ रहमांण, मुगति दीन्ही महिलां नां। गोकळ मां गोविंदो, वळै मिळियो **विहलां** नां। —पी. ग्रं.

उ०—३ रांक सरिस दै रीझ, अखिल कांइ खीज करै अति। वडौ **विहळ** हूं बुरौ, पीर सां रीस किसी पति। —पी. ग्रं.

विहलौ—देखो 'वहिलौ' (रू. भे)

उ०—रहि चौमासौ रग सूं, **विहलौ** करै विहार। माती धरा महेवची, वंदावी तिण वार। —ऐ. जे. का. सं.

रू. भे.—विहिल, विहिलु विहिलौ।

विहव—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—लिखियौ लाभै लोय, पर लिखियौ लाभै नहीं। पर सिर पदम हि जोय, जै विह विहवै अप्पियौ। —नैणसी

विहवल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी री मा तौ सुण अचेत हुई। सौ वडारणां नीठ सचेत कीवी। अर बहुवां सुण विहवली हुइ गई। नेत्रां मांह प्रवाह छूट पड़िया। —कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री. विहवली)

विहव्य—सं. पु [सं.] वितथ्य का पिता एवं गृत्समदवंशीय वर्चस् ऋषि का एक पुत्र, एक ऋषि।

विहव्यआंगिरस—स. पु. [सं.] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम।

विहसणौ विहसबौ—क्रि. अ.—१ हंसना, प्रफुल्लित होना, हर्षित होना।

उ०—१ उरध रोम उल्लसै जोम अरि करण रसातळ, भजि त्रिसळौ निज भाळ कळा सोखण सत्र कम्मळ। उर उछाह ऊपजै धाह पैलां ग्रहि धारण, वदन हास विहसंत रुदन पर वंस वधारण। —रा. रू.

उ०—२ सुंडाळ भिड़िया आवी अड़िया; सुहड़ अंगोअगि। नर सीस विहसई वदन विगसई, सेल वाहई सगि। —रुकमणीमंगळ

२ खिलना, विकसित होना।

उ०—१ पहिली होय दयांमणउ, रवि आथमणउ जाइ। रवि ऊगइ विहसइ कमळ, खिण इक विमणउ थाइ। —ढो. मा.

उ०—२ हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकार व्रात, अद्रस्य नक्षत्र पट,लागगन उज्जवल,नि:सबद घूक कुल,निरमल दिग्मंडल, आरक्त पूरवाचल, हूउं रविमंडळ, विहसइं कमळ, विस्तरइं परिमळ, वायु वाइं सीतळ, प्रसन्न महीतळ, जिस्यां रातां पारेवा तणां चरण, तिस्यां बिस्तरइं सूरय तणा किरण। —रा. सा. सं.

३ प्रफुल्लित होना, फूलना।

उ०—१ तुकमां रूप खतम फतै रा फब्बिया, देखंतां उर दंभ अरंदा दब्बिया। विहसंतौ निज वदन बीरा रस वैस रौ, दीपायौ हद दौर मुरद्धर देस रौ। —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं नहं घायल कणणाय, बाळूं सखी ऊ ड्रंगड़ौ भड़ बापड़ा कहाय। वाळि ऊ ड्रंगड़ौ बसै भड़ बापड़ा, घाव अंग सहे नहं विभाड़ै अरि घड़ा। घणा जसवंत रा जोध विहसै घणा, मांडिसी सही मतिवाळा बेढीमणा। —हा. झा.

उ०—३ बैनांणी ढीलो घडै मौ कंथ तणौ सनाह, विकसै पोइण फूल जिम, पर दळ दीठां नांह,। विकसै घणौ कमळ जिम भड़ निवड़,भड़ घणा पाड़तौ सोभियौ महा भड़। विहसतै सहस वळ कड़ी जाय उवड़ै, घाट घड़ कंथ रै जरद ढीलौ घड़ै। —हा. झा.

४ लहलहाना, लहराना।

उ०—तिसिह आविउ वसंत, हूउ सीत तणउ अंत। दक्षिण दिसि तणउ सीतळ वाउ, वाइ विहसइं वणराइ। —रा. सा. सं.

५ प्रभात होना।

उ०—१ मुझ रहइं पहिलउं दिउ अगेवांणु पंडव कन्ह दलउं जिम मांणु। ईंहा सेनांनी गंगेउ, प्रह विहसी जुडियां दल बेउ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ पवनह वेगिइं चालतां, पुहवी घणी गयाइं। प्रहि विहसी रवि ऊगीउ, नींद्र गई नयणांह। —हीराणंद सूरि

विहसणहार, हारौ (हारी), विहसणियौ—वि०।

विहसिओड़ौ, विहसियोड़ौ, विहस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विहसीजणौ, विहसीजबौ—भाव वा०।

विहंसणौ, विहंसबौ, बिहसणौ, बिहसबौ, बीहंसणौ, बीहंसबौ, बीहसणौ, बीहसबौ, विहंसणौ, विहंसबौ—रू० भे०।

विहसियोड़ौ—भू. का कृ.—१ हंसा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ. २ विकसित हुवा हुआ, खिला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ. ४ लहलहाया हुवा, लहराया हुआ।

(स्त्री. विहसियोड़ी)

विहां—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद खींवसीजी वीठू नुं बुलाय कह्यौ, "जो कुंवर नुं कहि, थारै विहां तौ घणा छै। फेर जोख छै तौ एक-दोय फेर सखरी जायगा करि। इण रौ नाळेर फेर दे। आपां सुं इहां रौ किसौ सूत छै? —कुंवरसी सांखला री वारता

विहांग—देखो 'विहंग' (रू. भे.)

विहांगड़ौ—देखो 'विहंग' (रू. भे.)

उ०—विहांगड़ै ज उदाध्धयां, सर ज्यउं पंडुरियांह। कालर काझा कमळ ज्यउं, ढळि ढळि ढेर थियाह। —ढो. मा.

विहांण, विहांणइ—सं. पु. [सं. विभानु] १ प्रातःकाल, सवेरा।

उ०—१ विहांणै नवै नाथ जागो वहेला, हुवा दोडिवा घेन गोवाळ हेला। जगाडै जसोदा जदूनाथ जागो, महीमाट घूमै नवै नद्धि मागो। —ना. द.

उ०—२ उतर आज स उजमी, पाळौ पडै विहांण। भाजै गात्र कुमारिआं, देखै मुगळ पठांण। —ढो. मा.

उ०—३ तिणि दिवसि हूउंसुपनंतर, हूंतइ प्रगट विहांणइ। पधारियां गंगा नइ गोरी, कांन्हडदे इम जाणइ। —कां. दे. प्र.

उ०—४ घण थट्टां गढ घेरियां, वणि रिण ऊग विहांण। निस जाएं चख जगांणै, दिन पाये घमसांण। —रा. रू.

उ०—५ अर अचळौ रायमलोत कहै छै—'जु जैमलजी मोनूं बोलावै

छै, पिण हूं बिहांणा रौ दिन अठै बैठौ छूं अर जैमलजी घणौ गाढ करै छै। —नैणसी

२ देखो 'विधांन' (रू. भे.)

रू. भे.—बहांण, बिहांण, बिहांन, बीहांण, बीहांणू, बीहांन, विहांणु, विहांणू, वीहांण, वीहांणू।

अल्पा.—बहांणौ, बिहांणौ, विहांणौ, विहांन, वीहांणौ।

विहांणा—देखो 'बिहांणा' (रू. भे.)

विहांणी-वि.—१ नाश हुवी हुई, नष्ट।

उ०—घात छात सब दिल्ली जांणी, संपत ओपत थई विहांणी। पुर चळ चळ मुख अन्न न पांणी, रिधी सोध लीधी रजधांणी। —रा. रू.

२ हीन, तुच्छ, निम्न।

३ बीती हुई, गत, विगत।

उ०—२ एतै पर डाकदार वाव सू आया, पातसाह की ठीक कर तहकीकत लाया। हाजर बुलाए साह सुण दूत वांणी, देखत ही फुरमाया कहो सो बिहांणी। —रा. रू.

४ बिना, रहित।

सं. स्त्री.—१ वृद्धावस्था।

२ विध्वंस, नाश।

३ वार्ता, बात-चीत।

४ देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

रू. भे.—बिहांणी, बिहांनी, वीहांणी।

विहांणु, विहांणू-वि.—१ रहित, विहीन, बिना।

२ देखो 'विहांण' (रू. भे.)

उ०—तेहिं न रोगौ दोहग्गु तहु, तह मंगल कल्लांणु। जे जिण-वल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि संझ सु विहांणु। —ऐ. जै. का. सं.

३ देखो 'विहांणौ' (रू. भे.)

विहांणौ-अव्य —१ कल।

उ०—१ मारु नै तेड़िया, कहण संदेसा कज। कहो कब थै चालस्यो, कै विहांणै कै अज। —ढो. मा.

उ०—२ जोबन कारमौ रे विहांणै उठ जासी, आदर भजन तणौ अभियास। प्राणिया कदे न आवै पाछौ, वळै न बीजो वागड़ वास। —ओपौ आढौ

उ०—३ इतै विहांणौ उगीयो, चिड़ियां चैचाइ। सायब कदै पधारस्यो, कहु जावो कांइ। —पना

उ०—४ हेम सिसर रित मेड़तै, रहियौ कमधां राव। संझ विहांणै ऊगणै, दिन दिन दूणो चाव। —रा. रू.

उ०—५ कूच विहांणै ऊगणै, अरि घर सोच अथाह। घास उजाड़ां नीमड़ै, पड़ै पहाड़ां राह। —रा. रू.

वि.—१ बीता हुआ, विगत।

२ बिना, रहित।

३ नष्ट।

२ देखो 'विहांण' (अल्पा., रू. भे.)

उ–१ हींदूए मारीथल कीधउ, पग मेल्हणउ न जाइ। लोही तणा प्रवाह ऊलटीया, दीसइ विहांणा मांहि। —कां. दे. प्र.

उ०—२ वार वार रतनलाल कह बतळावो जो विहांणा राजा रांम का, मुख धोवो कुरळा करो थांरे कंवरा नै घी ना दूध पिलाय विहांणा राजा राम का। —लो गी.

उ०—३ विहाणां केरी वादली, नीच सरीसु नेह। तिम यौवन थिरता नही, पवन चढी जिम खेह। —मा. कां. प्र.

३ देखो 'बिहांणा' (रू. भे.)

रू. भे.—बिम्रांणौ, बिहांणौ, वहणै, विहांणु, विहांणू, वीहांण, बीहांणू, वीहांणौ।

विहांन—देखो 'विहांण' (रू. भे.)

उ०—१ थांन कौ कुथान थांन मांन नींसरचौ, हीयसौ सुथन हा विहांन वीसरचौं। हूं जहां अरांमखोर तू जहां तरचौं, तूंहि पार तार मार पाव में परचौं। —ऊ. का.

उ०—२ ए कैसें हैं—वडे सु विहांन हैं, वडे महिरवांन हैं, वडे सिरदार हैं। वडे बूझदार हैं, वडे दातार हैं, जमी आसमांन बीच संभू अवतार हैं। —रा. सा. सं.

उ०—३ सुवार सस्त्र अस्त्र कै जुवार जागतै नहीं, लखौं विहांन सांन पै झंझान लागतै नहीं। कमांन वांन तांन कै निसांन बेधतै नहीं, रसा उजास औधतै नसा निसेवतै नहीं। —ऊ का.

विहा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ० —१ सो खींवसी हळोद झालै परणीया। वडो विहा हुवो। बडो गूडौ खरच जस अवल कीयौ, बडो नांव कियौ। झाली बडी ठाकुरांणी, जिसी ही रूप, जिसो ही सहुर, जिसी ही सारी बात में सुघड़। सो खींवसी घणो राजी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ आगै सहर में अेकै साह रै विहा थो, तै रै महीनै री तयारी करावै छै, भठी कढाय कढा, चरु, खुरपा, डहोला सारा बासण आंण हाजर किया, खांड रा कापा भेळा कर वेकी कर राखी, मैदो घिरत सारो काढ तयार कर राखियो।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

विहाई—देखो 'विहायस' (रू. भे.)

विहइति–सं. पु. [सं. विहापित] दान। (ह. नां. मा.)

विहाई—१ देखो 'विहायस' (रू. भे.)

उ०—ग्रोरंगसा पातसा ग्रासुर ग्रवतार, तपस्या के तेजपुंज एक से विसतार। माप का **विहाई** सा प्रताप का निदांन, मारतंड ग्रागे जिसी जोतसी जिहांन। —रा. रू.

देखो 'विहाईमाता'

विहाईमाता—देखो 'वे'माता'

उ०—म्हारी नई ग्रै विहाई, टोंक-टोडे सें ग्राए। तूं तौ ग्राव **विहाईमाता**, भलड़ै सै ग्रौसर ग्राए। —लो. गी.

विहाग—देखो 'बिहाग' (रू. भे.) (मीरां)

विहाड़, विहाड़ौ–वि.—भयंकर, भयानक, भयावह, डरावना।

उ०—ऊपाड़ियै तूट ग्राधंतर, जरण जरण पूगौ जुवौ जुवौ। खींवर हाकलियौ खीमावत, होकर जाउ **विहाड़ौ** हुवौ। —दुरसौ ग्राढौ

विहाणौ, विहाबौ-क्रि. ग्र.—१ व्यतीत होना, गुजरना, बीतना।

उ०—१ न क्यू **विहांणी** निसा इण वखत दूजां नरां, छता बहु दीसवै वड-वडा छात। 'पदम' विन न कौ प्रथमाद दाता पणा, 'पदम' विन न कौ प्रथमाद गजपात। —द्वारकादास दधवाड़ियौ

उ०—२ राति **विहांणी** एण रसि, प्रात हुवौ ग्रसवार। मेछ ग्रभग महाबळी, ग्रारुहि संग ग्रपार। —रा. रू.

उ०—३ दिवस दुहैला कस्टै जाय, रयणी तौ किमही न **विहाय**। जिम जळधर नै समरै मोर, तिम तुम्ह नै समरू' छूं जोर। —वि. कु.

उ०—४ मोतियां री माळ तूटी। जांणै सुख री लंका लूटी। इण भांत सुख-सेजै पौढिया। राति **विहांणी**। प्रभात हुवौ छै। रातौ का कांम—ऊजागर नैण घुळि नै रहिया छै। कपोलै कांम सुहाग री छाप लागी छै। —रा. सा. सं.

२ छोड़ना, त्यागना, गमाना।

उ०—वय बाळ **विहाय** युवा वरणी, कटिबद्ध भयौ करनी करनी। बिमनां ग्रनुराग बिराग वह्यौ, चितव्रत्तिय जोग प्रयोग चह्यौ। —ऊ. का.

३ रवाना होना।

उ०—चींतवियउ चहवांणि, जउहर की मांडउ जुगति। हव हुइ-स्यां हर-पुर दिसा, वेगावेगि **विहांणि**। —ग्र. वचनिका

४ प्रातःकाल होना; सुबह होना।

५ देखो 'विवाहणौ. विवाहबौ' (रू. भे.)

विहाणहार, हारौ (हारी), विहाणियौ—वि०।

विहायोड़ौ—भू० का० कृ।

विहाईजणौ, विहाईजबौ—भाव वा०।

विहाड़णौ, विहाइबौ, विहाणौ, विहाबौ, विहावणौ, विहावबौ, विहावणौ, विहावबौ—रू० भे०।

विहापन–सं. पु. [सं. विहापनः] दातार, दानी।

विहायस–सं. पु. [सं.] १ ग्राकाश, गगन।

२ पक्षी।

रू. भे.—विहाइ, विहाई।

विहायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ व्यतीत हुवा हुग्रा, गुजरा हुग्रा, बीता हुग्रा. २ छोड़ा हुग्रा, गमाया हुग्रा, त्यागा हुग्रा. ३ रवाना हुवा हुग्रा. ४ प्रातःकाल हुवा हुग्रा, सुबह हुवा हुग्रा।

५ देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विहायोड़ी)

विहार–स. पु. [सं.] १ मैथुन, रतिक्रीड़ा।

२ वह स्थान जहां रतिक्रीड़ा या मैथुन किया जाय।

३ बौद्धों का मठ।

४ देवालय, मन्दिर। (ह. नां. मा.)

५ गति, चाल, वेग।

उ०—१ भरै नफेरी त्रबंकौ, डंकां सोर ग्रपार। हुकम पिता चै हल्लियौ, तीर क तीर **विहार**। —रा. रू.

उ०—२ खतंग वाज वेखतां, विडंग चोवड़ी **विहारां**। ग्रंगोग्रंग ग्राफळै, हुवा निरलंग हजारां। ढंग मतंग चाचरां, बरगना रंग बंबाळां, सरग मंग सूरमा, संग वारंग सुचाळा। —बखतौ खिड़ियौ

६ प्रस्थान, गमन।

उ०—१ स्री ग्रकबर ग्राग्रह करी, कास्मीर कियौ रै **विहार**। स्रीपुर नगर सोहांमणु, तिहां वरतावी ग्रमार। —स. कु.

उ०—२ जद भारमलजी स्वांमी नै रुघनाथजी कनै मेल्या थांरा स्रावक चरचा रौ कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करौ। जद रघुनाथजी बोल्या किणरै चरचा करणी है रे? पछै घणौ उपकार कर घणां नें समभाय स्वांमीजी **विहार** कीधौ। —भि. द्र.

उ०—३ जो वीर जिणंद **विहार** करि, इण नगर ना बाग में ग्रावै रे। तौ घर छोडी ग्रणगार हूं थऊं, एहवी भावना भावै रे। —जयवांणी

उ०—४ पंखी तड़फड़इ, बडां मांणस लड़थड़इ, काठ सड़इ, हाळी हळ खड़इ। ग्रापणा घरि कादम फेड़इ, बीजा काज मेड़इ। पार पार न लीइ, साध **विहार** न करीइं। —रा. सा. सं.

७ जैन साधुग्रों का भिक्षा मांगने हेतु जाने की क्रिया।

सं. स्त्री.—८ पंक्ति, कतार।

रू. भे.—विहार, वीहार, वेहार ।

विहारजत्र-सं. पु.—विहार यात्रा । (जैन)

विहारण-सं. पु. [सं. विहारनम्] १ संहार, नाश ।

२ घूमने की क्रिया, टहलने की क्रिया ।

३ प्रस्थान करने की क्रिया, गमन ।

वि. १ संहार या नाश करने वाला ।

२ गमन करने वाला ।

विहारणौ, विहारबौ-क्रि. सं.—१ चहल कदमी करना, घूमना, फिरना टहलना ।

२ मंडराना, उड़ना ।

उ०—आपरा पांम्हणा (दुसमण) तौ पंथ निहारै, झगड़ा री वाट जोवै, अनै रिण खेत में मांस रुधिर भखण वाळी ग्रीधां गैंण आकास में विहारै उड रही है । —वी. स. टी.

३ संहार करना, मारना ।

उ०—ग्रहि छळ 'अरजण' गौड़, परठि मनवार अपारां । नजर टाळि नाराज, वहै घट हुवौ विहारां । —सू. प्र.

४ चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—उभै मिसल अंबखास, पड़े धड़हड़ अणपारां । राव जांणि नरसिंघ, हलै करि दयत विहारां । —सू. प्र.

५ तहस-नहस करना; नष्ट करना ।

६ क्रीड़ा करना, खेल करना ।

उ०-१ खेड़धणी सिरि खीजियां, हुई मुगल्लां हेल । ज्यौं गज वारि विहारतां, वीचै बारिज वेल । —रा. रू.

उ०—२ परणीजै मधुपुरी 'अभौ' व्रंदावन आयौ । पेखि धांम सुख परम भड़ां तीरथ मन भायौ । परखि निगम द्रुम पुंज हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै हेक जळ जमण विहारै ।

—रा. रू.

७ गमन करना, प्रस्थान करना ।

८ उपभोग करना, खाना ।

उ०—जग ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम अवर चार अनारयं । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग विहारयं ।

—रा. रू.

९—शोभा देना ।

१० रति क्रीड़ा करना, मैथुन करना, संभोग करना ।

११ देखो 'बैराणौ, बैरावौ' (रू. भे.)

विहारणहार, हारौ (हारी), विहारणियौ—वि० ।

विहारिओड़ौ, विहारियोड़ौ, विहारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहारीजणौ, विहारीजबौ—कर्म वा० ।

विहारणौ, विहारबौ—रू० भे० ।

विहारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चहलकदमी किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ मंडराया हुआ, उड़ा हुआ. ३ नाश किया हुआ ४ संहार किया हुवा. मारा हुआ. ५ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. ६ तहस-नहस किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ७ क्रीड़ा किया हुवा, खेल किया हुआ. ८ गमन किया हुवा, प्रस्थान किया हुआ. ९ उपभोग किया हुआ, खाया हुआ. १० शोभा दिया हुआ. ११ रति क्रीड़ा वा संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ.

१२ देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहारियोड़ी)

विहारियौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—बरस बावीस कौ बाली-बेस, दंत कवाडचा, सिर किलकिला केस । हाट विहारयां कइ जोवज्यौ, कइ जोवज्यौ राज-दुबारि ।

—वी. दे.

विहारी-वि.—१ विहार करने वाला, विचरण करने वाला ।

२ गमन करने वाला, प्रस्थान करने वाला ।

३ नाश करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

५ रतिक्रीड़ा या मैथुन करने वाला ।

सं. पु. [सं] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

उ०—१ मीरां के गिरधारी मुरारी, राखौ लाज प्रभुजी हमारी । मैं हूं दासी सदा तुमारी, तुम हो भलै विहारी, चीर छोड़ो ।

—मीरां

उ०-२ हंसै सारी नाग नारी उचारी विहारी हूंत, सवारी पधारी वळै लेतौ आजै सूंक । कठै थांरी वेस असी जुद्धकारी बातां करै, फूंणांधारी दीठौ न छै आगकारी फूंक । —मुरारीदास बारहठ

उ०—३ विमळांनन विबुधेस विहारी, संख चक्र धारी सुमण । भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हण ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ गोकळ ग्रांमी, सुर नर सांमी । ए अवतारी, वाचि विहारी । —पिं. प्र.

२ शिव, महादेव ।

३ ईश्वर, परमेश्वर ।

४ एक प्रकार का नींबू विशेष ।

उ०—विहारी, गूदड़ियौ, कागदी तीन जात रा नींबू ।

—बां. दा. ख्यात

५ देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

रू. भे.—बहारु, बिहारी, वेहारी ।

विहारीकंद-सं. पु. [सं.] एक प्रकार का जमीकंद विशेष जो औषधि के प्रयोग में लिया जाता है ।

विहारीदासौत-सं. पु.—१ राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

२ भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

—बां. दा. ख्यात

विहाल, विहालौ—देखो 'बेहाल' (रू. भे.)

उ०—१ भाग विनां नहीं पाईयें, माणिक मोती लाल । दुनियां कोडी हाथि लै, हरीया भई विहाल । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ दुनियां रोवै रोवणा, देख विडांणी खाल । नांव संनेही बाहिरौ, हरिया होय विहाल । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ सबळ दळां कर 'थांनसी', आयौ फेर अचींत । फळ पायौ झालां घणौ, थयौ विहाला चींत । —रा. रू.

विहाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

विहावणौ, विहावबौ—१ देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विहाणौ, विहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आवौ प्रीतम सेझ में, हस हस पूछूं वात । गळ मैं घातां बांहड़ी, सुखां विहावै रात । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ रायसिंघ नूं कह्यौ "मोनूं थांसूं अळगौ करस्यौ तौ राव थां ऊपर आवसी" तरै राठौड़ ठाकुरै कह्यौ 'जिण गांव कूकड़ौ न हुवै छै तठै पिण रात विहावै छै" —नैणसी

उ०—३ तांहरा कोड़ीधज री फरड़कौ सुणियौ ताहरां राव खींवो वोलियौ—'भाई' कोड़ीधज घोड़ै रा फरड़का सुणीजै छ, कोट पण एकलौ छै बांभणियौ पण मास ५–६ हुवा आयौ बैठौ छै, उपद्रव दीसै छै । आजे कुसळ विहावै । —नैणसी

उ०—४ कुसळ विहावउ सज्जणां, पर मंडळे थयांह । जउ बिह हिया न हारिस्यइ वळै मिळेवउ त्यांह । —ढो. मां.

विहावणहार, हारौ (हारी), विहावणियौ—वि० ।

विहाविओड़ौ, विहावियोड़ौ, विहाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहावीजणौ, विहावीजबौ—कर्म, भाव वा० ।

बिहावियोड़ौ—१ देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहावियोड़ी)

विंहिसिक, विंहिसिग-वि.—अनेक प्रकार की हिंसाएं करने वाला । (जैन)

विहि—१ देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ हो वलण वेगी करै वालहा रे. हो वा रे हूँ राखीसि सील रतन्न । हो लेख मिटइ नही विहि लिख्या, हो रे, हो झूठा कीजइ तै जतन्न । —स. कु.

उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ मही—मांहि । विहि—तणा पणि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्यांहि । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'वे'माता' ।

उ०—विहि अम्हारी वैरणी, पेला भवनी होय । सज्जन सिउं सुख मांणीइ, निलवटि निलख्या जोय । —मा. कां प्र.

विहिचणौ, विहिचबौ-क्रि. स.—१ विभक्त करना, तोड़ना ।

उ०—विहिचो मेरु माहागिरी नाप्यु, पात्र तणि तां पांणि । तू मूं दांन करयूं मि महीमांहां, मनि मोटी ए कांणि । —नळाख्यांन

२ देखो 'बांटणौ, वांटबौ' (रू. भे.)

विहिचणहार, हारौ (हारी), विहिचणियौ—वि० ।

विहिचिओड़ौ, विहिचियोड़ौ, विहिच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहिचीजणौ, विहिचीजबौ—कर्म वा० ।

विहिचियोड़ौ-भू. का कृ.—१ विभक्त किया हुवा, तोड़ा हुआ ।

२ देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.]

(स्त्री. विहिचियोड़ी)

विहित, विहिति-वि. [सं. विहित] १ बनाया हुआ, अनुष्ठान किया हुआ, अनुष्ठित ।

२ निश्चित, नियुक्त या सुव्यवस्थित ।

३ निर्मा‌णित, रचित ।

४ स्थापित ।

५ बांटा हुवा, विभक्त ।

६ शास्त्रसम्मत ठीक, उचित, उपयुक्त ।

उ०—१ विहित सुणे भ्रत वांणि एम चहुवांण उचारै । सकौ काळ संघरै, न कौ रहियौ वीसारै । प्रगट मात पांडवां, सु तौ न गई वर सत्थै, औ भ्रत हथ आपरो, हरी दीनौ पर हत्थै । —रा. रू.

उ०—२ आकुळ थ्या लोक केहवौ अचिरज, वंछित छाया ए बिहित । सरण हेम दीसि लीधौ सूरिज सूरिज ही व्रिख आसरित । —वेलि.

सं. पु. [सं. विहितं] १ विधि विधान, कानून ।

२ आदेश, आज्ञा ।

[सं. विहितः] ३ कृति, रचना ।

रू. भे.—बिहित, बिहितु ।

विहिमग्ग, विहिमारग-स. पु. [स. विधिमार्ग] विधिमार्ग ।

उ०—सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ । भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ । —ए. जे. का. सं.

विहिरु-सं. पु.—१ दूषित, आचार। (जैन)

२ अपराध, दोष, गलती।

उ०—विधाताइ करचु विहिरु. सरसव नि यम मेर। एक याचक, एक दाता, घणु दीसि फेर। —नळाख्यांन

३ फरक, अंतर, भेद।

उ०—पंचायण जंबुक यथा, विहिरु वायस हंस। तिम माधव नइं अवर नर, दासि ! न जांणउ दंस। —मा. कां. प्र.

विहिल, विहिली, विहिलु, विहिलौ, विहिल्ल, विहिल्लौ, विहिल्य-वि.—काफी, बहुत, अधिक, पर्याप्त।

उ०—व्यास भणइ मंत्रनइ उपाय, विहिली व्रस्टि हुसइ गढ मांहि। गढ ऊपरि गढरोहा समइ, वूठा देव दिवस चउदमइ। —कां. दे. प्र.

२ दु:खी, पीड़ित।

उ०—लक्ष्मीपुंज आस्रितवत्सल प्रकृतिप्रांजल, विहिल्यां साधार, परोपकारैकव्यसन नीतिबांधव परनारी सहोदर स्निग्धालाप सज्जन चूडामणि अरथजनचिंतामणि इति स्रेस्ठि। —व. स.

३ देखो 'वहिलौ' (रू. भे.)

उ०-१ गाई वाई गुण करी, रीझवि जांणउं राय। अबला ! चालि ऊतावली, वेगि विहिल्या पाय। —मा. कां. प्र.

उ०-२ पवंग पवंग पलांण पलांण, विहिल्लां रूढ हुवा वापांण। सुभट्ट सजोड़ा त्रिण्ह सहस्स, संग्रांमि जिकै सवि दीस सकस्स। —राउ जैतसी रौ रासौ

उ०—३ वीर, विहिलु आवजे, कुसल माग तुंहनि करे कारज मन वांछित, समइ संभारे मूहनि। —नळाख्यांन

विहिवा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—भीम राइं स्रवणं सुणूं रे पुत्रीनि पीडा तंन। विहिवा नु समय थयु रे, अबला थई योवंन। —नळाख्यांन

विहिवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—इंद्र कहि—'वरदांन थी, देखसि नहीं प्रतिहार। ईछाइ तूं दरसन देज्यै, देखी विविध विहिवार। —नळाख्यांन

विहिस्त-सं. पु. [फा. बिहिश्त] स्वर्ग।

उ०—दीन दुनी सदकै करूं, टुक देखण दे दीदार। तन मन भी छिन-छिन करूं, बिहिस्त दोजख वार। —दादूवांणी

विहीण, विहीणौ—देखो 'विहीन' (रू. भे.)

उ०—१ विदर गयां रा बादळा, विदर विवेक विहीण। विदर छांह निरखै बहै, अलबेला अकुलीण। —बां. दा.

उ०—२ गिनका री जै नर ग्रहै, कबरी डंड करेण। खाग ग्रहै किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण। —बां. दा.

उ०—३ 'भगवंत' सुतन सत्रां दळ भांगा, निरदळिया म्रितलोक नर। कूरम चै न घाळियौ किण ही, काळ विहीणां चाळ कर। —राजा मांनसिंघ भगवंतदासोत कछवाहा रौ गीत

विहीन-वि. [सं.] १ बिना, रहित, वगैर।

२ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

३ नीच, निम्न, कमीना।

रू. भे.—बिहिन, बिहीण, बिहीन, वहीण, विहीण, विहीणौ।

विहुंड-सं. पु. [सं.] हुण्ड राक्षस का पुत्र, एक राक्षस।

वि. वि.—नहुष ने इसके पिता हुण्ड का वध किया था अतः इसने नहुषवध हेतु शिव की तपस्या की थी किन्तु विष्णु ने मनमोहिनी स्त्री का रूप धारण कर इसकी तपस्या भंग की थी। अन्त में यह पार्वती के द्वारा मारा गया था।

विहुंडन-सं. पु. [सं·] शिव का अनुचर विशेष।

विहुंण, विहुंणौ, विहुण, विहुणौ-वि.—१ तुच्छ, निम्न।

२ निर्बल, कमजोर।

उ०—तठ वीठू अरज कीवी, "घरां पधार परभात असवार हुयजे, जाय पुहचस्यां। आपां सुं कजीयौ कर कासुं लैसै ! आपां कै विहुणा छां। —कुंवरसी सांखला री वारता

३ देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ हेम वरनी हेम गिर बाळी लहुवै - वेस, कंथ विहुंणी कांमणी, सांचौ कहि संदेस। सांचौ कहैं संदेस वैण मीठा करूं,राज मुदे पट हथ्थ रंग महिलां घरूं। —मा. वचनिका

उ०—२ पग विहुणौ पिण परदेसै भमै, आवै तुरतउं जाय। बैठौ वहै अपणै घरि बापडौ, तौ पिण चपल कहाय। —ध. व. ग्रं.

(स्त्री. विहुंणी, विहुणी)

विहुव-क्रि. वि.—चारों ओर, हर तरफ।

उ०—घूघरी रोळ घटा सबद्द, मोखत्त पटै तळ जोड मद्द। गुडिया गयंद विहुव गमेय, पाहाड जांण हालै पगेय। —गु. रू बं.

विहूं—देखो 'बेऊं' (रू. भे.)

उ०—१ रिण सोहा रिण सूरमां 'वीकौ' 'सोम' वखांणि, नायक पायक भड़ निवड़ अरि भंजण आरांणि। रांण अरांणि अरि भांजितां रूक-हथ, सूर साराहिया 'सोम' 'वीकौ' समथ। खंड पड़तीस सौ विहूं उड़ै खरा, राय गुर बखांणै बंधव रायसिंघ रा। —हा. झा.

उ०—२ दूजै पौहरै रयण कै, मिळियत गुप्फागुघ्ध। धण पाळी, पिव पाखरचौ, विहूं भला भड़ जुध्ध। —ढो. मा.

विहूंण, विहूंणौ—देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ है कांनै मोताहळ, कर पूंची कंठमाळ पै संकळ । राघौ नांम विहूंण अनखांणी ढोर आदम्मी । —र. ज. प्र.

उ०—२ मूळ व्याज दोऊं गया रे, धुर बोरै नहिं मेळ । साह विहूंणौ सहर में, कूड़ी करेज केळ । —स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—३ ग्यांन विहूंणा गुर मिल्या, सुरति विहूंणा सिख । जन हरिया गुर सिख का, संसा मिटचा न चिख । —अनुभववांणी

उ०—४ धणी विहूंणा धौंळहर, ढहि ढहि ढेर थियाह । हरिया पाछा आय कै, वास न कौ वसियाह । —अनुभववांणी

(स्त्री. विहूंणी)

विहू, विहूंण, विहूणड़ौ, विहूणडौ, विहूणौ—देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नितु नितु जौसी पूछोइ, नितु नितु सुकन सुभाव । नित नित निरति विहूणडां, आविइ वली वधाव । —मा. कां. प्र.

उ०—२ इम अहनिसि आलोचती, मन सिधि मन परिणांम । तेल विहूणा दीप परि, क्षणि क्षणि थाती क्षांम । —मां. कां. प्र.

उ०—३ ज्योति जिसी छइ दीवडइ, तिम माधवि मुझ जांणि । नवपल्लव नेह-जि-थकी, नेह विहूणइ हांणि । —मा. कां. प्र.

उ०—४ जलाल तौ बिन कोटड़ी. चंद विहूणी रैण । तौ आयां चांनण हुवै, दीसै भलास सैण । —जलाल बूबना री बात

उ०—५ प्रेम विहूणी प्रीति जोग्रै मन न ठरै 'जसा' । रस विण पानां रीति, रग न आवै राचणी । —जसराज

उ०—६ दादू भाव हीन जे प्रथ्वी, दया विहूणा देस । भक्ति नहीं भगवत की, तह कैसा परवेस । —दादूवांणी

उ०—७ रांम बसै जिण जंगळां हे सखी ! सौ हिज सुरग निवास । रांम विहूंणौ सुरग ही सखी, तन उपजावै त्रास । —गी. रां.

(स्त्री. विहूणड़ी, विहूणडी, विहूणी)

विहून—देखो विहूणौ' (रू. भे.)

विहूवल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—गगा देखी विहूवल थयौ, कांम बांण पीड़चौ ईस । —धरम पत्र

विहेठ, विहेड-सं. पु.—विनाश, संहार । (जैन)

विहृत-सं. पु. [सं. विहृतम्] स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलंकारों में से एक जिसमें लज्जा के कारण कहने के समय भी बात नहीं कही जाती है । (साहित्य)

विहृति-स. स्त्री. [सं. विहृति] १ विहार, आमोद, प्रमोद क्रीड़ा ।

२ हटाने या छीनने की क्रिया ।

विह्वल-वि. [सं.] १ भय, चिन्ता आदि के कारण घबराया हुआ, व्याकुल, बेचेन ।

उ०—१ रूप अनुपम रंभ सम, उवा पदमी कहै याह । वार वार विह्वल थकौ, जंपै आलिम आहि । —प. च. चौ.

उ०—२ मिथिकां वडमी संचरइ, घरि थी राउलि जाइ । वाटि-वली विलोकती, विनना विह्वल थाइ । —मा. कां. प्र.

२ खराब. विकृत । (अमरत)

३ चकित, विस्मित ।

४ भयभीत, डरा हुआ ।

उ०—पीली चोली पहिरणइ, बाली फाली सेत्र । निरखी निरखी नाहु नइं, विह्वल विकसित नेत्र । —मा. कां. प्र.

५ पीड़ित, सन्तप्त ।

६ कुटिलतायुक्त । (मति)

उ०—लघु वइं लक्षण लाछितां, सांमुद्रिक गुण सार । वेस्या मति विह्वल थइ, चितइ चूक विचार । —मा. कां. प्र.

७ चिन्तित, उदास ।

उ०—वलवलती विह्वल वदनि, वलती वदइ उदार । राजा रुठउ मनाविसुं, सुंपी संपति सार । —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बिभल, बिम्भल, बिहवळ, बिह्वळ, बिह्वल, भिंभल, भिंभळ, भींभळ, भीभल, विवहल, विहबळ, विहळ, विहल, विहवल, विहूवल, वीहळ, विहल ।

अल्पा.—विहवली, विह्वली, वीहली, वीहलौ ।

विह्वलता-सं. स्त्री.[सं.] विह्वल होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

वीं—१ देखो 'वी' (रू. भे.)

उ०—१ पहर एक गोळी बही पण बाहरला जांणै उथा सौ उवै लगाव री जायगां जांणै था सो वीं ठांव सूं बड़ गया ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ भरमल अहड़ी कांमणी, जहडौ चंद प्रकास । काया लै घर कूं चल्या, रह्यौ जीव वीं पास ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ सौ दलकरण रै डेढ सौ घोडा पायगा मांहै बाकी पटा-यतां रा घोडा सौ इण तरह सूं घोडा अढाई सौ वीं कन्है रहै ।

—सुंदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

उ०—४ योगी कही—बन मांही म्हारै साथ एक कारज सिद्ध करस्यां । राजा कही—हालौ । तद योगी राजा नूं बन मांहीं लेय गयौ । वीं ठांव एक सीसम रौ व्रख । तौ पर एक मुरदौ बंधियौ छै । —सिंघासण बत्तीसी

२ देखो 'भी' (रू. भे.)
३ देखो 'वी' (रू. भे.)

वींकणौ, वींकबौ-क्रि. स. [सं. वीक्षणं] १ ऊन, रुई आदि को हाथ से साफ करना।
२ देखो 'वीखणौ, वीखबौ' (रू. भे.)
वींकणहार, हारौ (हारी), **वींकणियौ**—वि०।
वींकिग्रोड़ौ, वींकियोड़ौ, वींक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वींकीजणौ, वींकीजबौ—कर्म वा०।
वींखणौ, वींखबौ, वींखणौ, वींखबौ — रू० भे०।

वींकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ हाथ से साफ की हुई ऊन, रुई आदि।
२ देखो 'वीखियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. वींकियोड़ी)

वींख—देखो 'वीख' (रू. भे.)
उ०—"इतला दिन हूं जांणती रे हां" एहनी हिवै तो सोहग सुंदरी रे हां, पुत्री नै दीयै सीख, बाई ! सांभळो । सासरीया संतोखिजे रे हां, हलवै भरजे वींख, बाई ! सांभळो । —स्रीपाळरास

वींखणौ, वींखबौ—१ देखो 'वींकणौ, वींकबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वीखणौ, वीखबौ' (रू. भे.)
वींखणहार, हारौ (हारी), **वींखणियौ**—वि०।
वींखिग्रोड़ौ, वींखियोड़ौ, वींख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वींखीजणौ, वींखीजबौ—कर्म वा०।

वींखियोड़ौ—१ देखो 'वींकियोड़ौ (रू. भे.)
२ देखो 'वीखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वींखियोड़ी)

वींची-सं. स्त्री.—१ विर्वाचका नामक कुष्ट रोग। (अमरत)
२ एक प्रकार का रक्त विकार का रोग (अमरत)

वींछयौ, वींछियौ, वींछीग्रौ, वींछीयौ—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.) (व. स.)
उ०—१ पाय पीरोजी वांणही, अंगूठि अणवट्ट । ठीक जडित ठाहरि रहिया; वली वींछीग्रा खट्ट । —मा. कां. प्र.
उ०—२ अणोट वींछिया उदार, पाय पंख पंकजं । अनंग ह्वै छनंग अंग, रंग रंग में रजं। —सू. प्र.

वींजण—१ देखो 'बींजण' (रू. भे.)
२ देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)
उ०—१ वीनता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय । वाउ विलोलइ वींजणइ, को चंदन घसी लाय। —मा. कां. प्र.
उ०—२ सघण सूकडि सइरि सु सींचीइ, पवण पूरिहिं वींजण वींजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ ग्राफरिउ। —सालिसूरि

वींजणि, वींजणी—१ देखो 'बींजणौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—माधव जिहां पगलां भरि, तिहां पड्यौ मुझ राख । पवन वसइ तिणि वींजणि, साबद सारेज लाख। —मा. कां. प्र.
२ देखो 'बीजणी' (रू. भे.)

वींजणौ—देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)
उ०—जलंद्रा सरीरि लगाड़ीयइं, गुलाब तणा अभ्यंग कीजइ, बावन स्रीखंड घसीयइं। चउदिसि वींजणा फिरइं द्राक्षा आंबिली पांन कीजइ। कलम सालि तणा साधउ रा करवा कीजइं। —रा. सा. सं
उ०—२ न लेवै वींजणै वाय, स्निग्ध वासी न रखाय। भोजन ग्रही थको ए, जीम्यां होवै व्रत-धको ए। —जयवांणी
उ०—३ गुखै बैठी गोरड़ी रे वींजणै ढोलति वाय। पेट नै काजे पदमणी रे, जाचै घर घर जाय। —स. कु.

वींजणौ, वींजबौ—देखो 'बींजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)
उ०—मस्तकि छत्र धरावतउ, चांमर वींजता सार रे। आज तउ मस्तकइ रवि तपइ, डांस मसक भणकार रे। —स. कु.
उ०—२···सेवंत्री तणा ताड वेढ भमिया, अगर प्रतिवोधिउ, क्रस्णागर ऊखेविउ, पंचवरण्ण पाट्ट तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरी मोतीसरी लंबावी. राजा आस्थांन देउ बइठउ छइ, मोर-वींछ तणौ बींजीणै वाउ वींजइ··· । —व. स.
उ०—३ सघण सूकडि सइरि सु सींचीइ, पवण पूरिहिं वींजण वींजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ ग्राफरिउ। —सालिसूरि
वींजणहार, हारौ (हारी), **वींजणियौ**—वि०।
वींजिग्रोड़ौ, वींजियोड़ौ, वींज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वींजीजणौ, वींजीजबौ—कर्म वा०।

वींजाचळ, वींजाचळौ, वींजाचाळ, वींजाचाळौ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)
उ०—१ मल्हपै मैंगळा, सूंड लल्लवळा, आगळी ऊजळा, सेत दांतूसळा। सोहिया सांमळा,वप्पि वींजाचळा, स्रंग कूंभाथळा, वोम किरि वद्दळा। —गु. रू. बं.
उ०—२ कुजरां ढूंहरी ढाळ कूंभाथळं, बादळा जांण फाबत्त वींजाचळं। धम्मळी पीयळी लाल नीली धजं, गाजतां जांण गोरंभ दीसै गजं। —गु. रू. बं.

वींजाणौ, वींजाबौ—देखो 'बींजाणौ, बींजाबौ' (रू. भे.)

उ०-···अनइ इक सुवरणमय रूपमय रसित विविध प्रकारि जे छइ पालखी, चकडोल, अनइ तरुआरि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवे पायके परिवारिउ, छत्र धरातइ, चमर वींजातइ, नफेरी सरणाइ बरगां ढोल भालर डुंडि दमामां दडदडी अदंग नीसांण प्रमुख वाजित्र वाजइ। —व. स.

वींजाणहार, हारौ (हारी), वींजाणियौ—वि०।

वींजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वींजाईजणौ, वींजाईजबौ—कर्म वा०।

वींजायोड़ौ—देखो 'बींजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वींजायोड़ी)

वींजासणियां-सं. स्त्री.—एक लोक देवियों का समूह विशेष, जिनके प्रकोप से वात रोग होते हैं। (अमरत)

वि. वि.—देखो मावलियां

वींजियोड़ौ—देखो 'बींजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वींजियोड़ी)

वींजीणौ—देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)

उ०-···सेवंत्री तणा ताड वेढ भमिया,अगर प्रतिबोधिउ,कस्णागर ऊसेविउ. पंचरणा पाट्ट तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरि मोतीसरी लंबावी, राजा आस्थांन देउ बइठउ छइ, मोरवींछ तणौ बींजीणे वाउ वींजइ··· । —व. स.

वींभ—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—१ इहां सु पजर मन उहां, जय जांणइला लोइ। नयणा आडा वींभ वन, मनह न आडउ कोइ। —ढो. मा.

उ०—२ प्रीति अलियळ केतकी नइ, प्रीति वींभ गयंद। तिय रुखमणी सुं नेह धरज्यौ, प्रीति परमांणंद। —रुकमणी मंगळ

वींभगिर, वींभगिरी—देखो 'विंध्यगिरि' (रू. भे.)

वींभणौ—देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)

वींभणौ, वींभबौ—देखो 'बींजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भांजी निसही जिनग्रह पेसै, धरै छत्र नै मंडप में वेसै। पहिरै वस्त्र अनै पनही, चांमर वींभै मनठांम नहीं। —वृस्त

उ०—२ जिनजी कुं देखि मेरउ मन रींभइ री। तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इंद्र चांमर वींभइ री। —स. कु.

वींभणहार, हारौ (हारी), वींभणियौ—वि०।

वींभिओड़ौ, वींभियोड़ौ, वींझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वींभीजणौ, वींभीजबौ—कर्म वा०।

वींभवन-सं. पु.—एक वन विशेष जहां हाथी बहुत पाए जाते हैं, सुंदर वन।

रू. भे.—वीभवण, वींभवन, वीभावण, वीभावन।

वींभाचळ, वींभाचल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—मयण कांम मूरत्ति, गात गिरवर वींभाचळ। बडौ वीर वीराधि, सिंघ रूपी सहंस बळ। —गु. रू. बं.

वींभाजळ, वींभाजल, वींभाभळ, वींभाभल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—१ वींभाजळ रूप गयंद चढि मेघाडंबर विराजै। नौवतूं कै निहाव वीरारस वाजै। जिस बखत जळाबोळ हालोहळ सैं फोज हल्ली। नाळूं कै निहाव सेती धरती थरसली। —सू. प्र.

उ०—२ धुवै राग सिंधुवां, गजै नाळियां त्रंबांगळ। मेळा भड़ गहमहै, वहै गोळा वींभाभळ। —सू. प्र.

वींट-सं. पु. [स. विष्टा] १ पक्षियों की बींट या विष्टा।

उ०—राजा कह्यौ-थूं ईं वता उडता पंछियां नै वींट करता म्हैं कीकर पाल सकूं। कोई मिनख री जायौ कीं भूल करै तौ म्हैं उण री सात पीढियां नै उकळता कड़ावां में भूंज न्हांकूं पण आं अबूभ पछियां माथै खीज करणी तो विरथा है। —फुलवाड़ी

उ०—२ राजा कह्यौ—थूं तो नित सौ वार मरिया करै थारै मरणा री कांई। पण एक मांमूली सी वींट वास्तै म्हैं अणगिण पछियां नै मार नीं सकूं। लुगायां री कैणौ मांनै. उणनै तौ राजा बणणौ ई नीं चाहिजै। —फुलवाड़ी

२ आवेष्टन, घेरा।

३ टापू, द्वीप।

उ०—मांभि समंदा वींट घर, जळ सूं जांमीपत्त। किणहीं अवगुण कुंभड़ी, कुरळी मांभिम रत्त। —ढो. मा.

४ देखो 'वींटौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—बिंट, विंट, बींट, बींठ, बीट, विंट।

वींटण-सं. पु. [सं. वेष्टन] १ पुस्तक आदि लपेटने का वस्त्र।

२ बिस्तर आदि बांधने की रस्सी।

रू. भे.—बीटण।

वींटणी—देखो 'बींटणी' (रू. भे.)

वींटणौ—देखो 'बींटौ' (रू. भे.)

उ०—कोटवाळ राजी हुवौ, कह्यौ, देखो गांठड़ो मांहै कांसूं छै। जदै पयादां उतावळां मुजरायतां खोलणी मांडी। जठै तीजौ बट खोलै तिठै लोही लागौ दीठौ। सगळा चमक्या नै वींटणौ उघाड़ै तौ मांटी मारचौ निजर पड़ियौ। —जगदेव पंवार री बात

वींटणौ, वींटबौ-क्रि. सं.—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्ठित करना, घेरना।

उ०—१ रांमा रौ पटौ लीयौ नै राव चंद्रसेन नै मुगळां नुं लगाय दीया। जेठ सुद १२ रांमौ मुगळ रांमबावड़ी उतरीया। दिन १८ नगर वींट रह्या। —राव चंद्रसेन री बात।

उ०—२ पातिसाह गुजराति ल्यौ। हूं हिंदुग देस जाइ करि लेइसि।

उठा हुंती मिरजौ सोझति सिरियारि मांहै होइ नै नागोर आइ वींटियौ । —द. वि.

उ०—३ त्रिण कण कापड जल मांहै लीध, गढरोहौ मालव पति कीध। सायर वींटी लंका जेम, उज्जेणी वींटी रह्यौ तेम।

—स्रीपालरास

उ०—४ कमधज वींट नागोर कोट, चळ दळ अरि कीधा एक चोट। 'इंद्रसिंघ' देख दळ बळ अपार, दै कोट जिण लियौ धरम द्वार। —रा. रू.

२ गोल करना, लपेटना, समेटना। (बिस्तर आदि)

३ चारों ओर से आक्रमण करना।

४ आच्छादित करना, ढकना।

५ लपेटना।

उ०—१ अन्न अदक पय परिहारी, आभरणां ऊवेखि। वकुल त्वचा वींटी करि, तरुणी तापस-वेखि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ चावड़ी उण नै अमलां मांहें वेखबर देखि, तरे उणरी ही तलवार काढि गळौ कीधौ। हाथ जुदा जुदा काटिया पगां रा जांघां रा जुदा जुदा तखता कीधा करनै चांदणी मांहै धड़ देनै बांधियौ। ऊपरा पिलिंग-पोस वींटियौ। तिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिकी वींटी। गांठ गाढी सैंठी बांधी। —जगदेव पंवार री बात

६ बाहुपाश में लेना, अंकमाल में लेना।

उ०—रहै उमा भुज वींटियौ, नव कोंपळ रै रंग। आदर पावै कंठ उण, सूर तणौ उतमंग। —बां. दा.

७ वस्त्र, कवच आदि को पहनना, धारण करना।

८ वस्त्र, कवच, आदि पहनाना, धारण कराना।

९ मंढ़ना, आच्छादित करना।

उ०—तठा उपरांयत पताखां सूं बादळा छोडजै छै। सू किण भांत रा बादळा छै? हळवद रा, मोरवी रा, अंजार रा, भरवछ रा, हालोर रा छै। रूपै टूंटी सांकळी लागी छै। घणी सिलेहटी अटायण में वींटिया थका, ऊपरा बेवड़ी-तेवड़ी झालरी में गरकाब किया थका छै। —रा. सा. सं.

क्रि. अ.—१० चारों ओर हो जाना, चारों ओर फैल जाना।

उ०—१ सिधां माळ सूं वींटियौ ज्यूं हेमाळ सदा लहै सोभा, वहै चंद्र माळतारां वींटियौ वखांण। वींटियौ अमरांमाळ मेर वदै कहै वातां, रहै पातांमाळ सूं वींटियौ 'भीमौ' रांण।

—कविराजा बांकीदास

उ०—२ क्षणि नांन्हा क्षणि मोटा दीसइं, माहोमांहि खुसइं बेउ गीसइं। बधवि वींटीउ राउ दुजोहणु, चिहुं पंडवि वींटीउ द्रोणु।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ तब जादव अणरागिय लागिय रहिया पागि। वींटीउ प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मांगि। —जयसेखर सूरि

११ आवेष्टित होना, घिरना।

उ०—वारांगनां वसत्रै वींटांणौ, घाइ घाइ तरण करै घणौ। 'ऊदा' हरै नांखिया अळगा, पौति अनै अवतार पणौ।

—पूरणमल भांणावत रौ गीत

११ जड़ना।

वींटणहार, हारौ (हारी), वींटणियौ—वि०।

वींटिप्रोड़ौ, वींटियोड़ौ, वींट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वींटीजणौ, वींटीजबौ - कर्म वा०, भाव वा०।

बिंटणौ, बिंटबौ, बिंट्टणौ, बिंट्टबौ, बिटणौ, बिटबौ, बींटणौ, बींटबौ, विंटणौ, विंटबौ, विंट्टणौ, विंट्टबौ, वीटणौ, वीटबौ—रू० भे०।

वींटळी, वींटली-स. स्त्री.—१ पगड़ी, साफा।

उ०—वीरां री चिलकी वींटली, भावजां को चिलक्यो जी चीर। उठ गोरी उठ सांवळी, बाई सोदरा बाहर आव। —लो. गी.

रू. भे.—वीटली, वीटलौ, वीटुळी, वीटुली, वीठली।

२ देखो 'बींटळी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां खीमै मुंहतै नूं कह्यौ—'जावां छां गोठ जीमण। राव नूं वींटळी मतां चढण देज्यौ। ताहरां वींटळी चढसी ताहरां रेयां री डूंगरी देखसी, ताहरां सहसौ चीतां आवसी।

—नैणसी

३ देखो 'बींटी' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—कर कणीय ठोसी वांकुडी, वींटली विविध प्रकारि। मुद्रड़ी हीरै जड़ी नई, कनक कंकण सार। —रुकमणी मंगळ

४ देखो 'बींटणी'

वींटाणौ, वींटाबौ-क्रि. स. [वींटणौ क्रिया का प्रे. रू.] १ किसी शहर दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित कराना घिराना।

२ गोल कराना, लपेटाना, समेटाना। (बिस्तर आदि)

३ चारों ओर से आक्रमण कराना।

४ आच्छादित कराना, ढकाना।

५ लपेटाना।

६ बाहु पाश में लेने को प्रवृत्त कराना, अंकमाल में लिवाना।

७ वस्त्र, कवचादि पहनाना, धारण कराना।

८ मंढ़ाना, आच्छादित कराना।

९ चारों ओर कर देना या फैला देना।

१० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त करना, घिरने के लिए प्रेरित करना।

वींटाणहार, हारौ (हारी), वींटाणियौ—वि०।

वींटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वींटाईजणौ, वींटाईजबौ—कर्म वा०।

वींटाणौ, वींटाबौ, वीटाणौ, वीटाबौ, विंटाणौ, विंटाबौ —रू० भे०।

वींटायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित कराया हुआ, घिराया हुआ. २ गोल कराया हुआ, लपेटाया हुआ, समेटाया हुआ। (विस्नरादि) ३ चारों ओर से आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया आच्छादित करवाया हुआ, ढकाया हुआ. ५ लपेटाया हुआ. ६ बाहु पाश में लेने के लिए प्रेरित किया हुआ, अंकमाल में लिवाया हुआ. ७ वस्त्र, कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ. ८ मढाया हुआ, आच्छादित कराया हुआ. ९ चारों ओर किया हुआ, फैलाया हुआ. १० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, घिरने के लिए प्रेरित किया हुआ।

वींटियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ किसी शहर, दुर्गादि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ. २ गोल किया हुआ, लपेटा हुआ, समेटा हुआ. ३ चारों ओर से आक्रमण किया हुआ. ४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. ५ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ, ६ बाहुपाश में लिया हुआ, अंक- माल में लिया हुआ. ७ वस्त्र कवच आदि पहना हुआ, धारण किया हुआ. ८ वस्त्र कवच आदि पहनाया हुवा, धारण कराया हुआ. ९ चारों ओर हुवा हुआ, चारों ओर फैला हुआ. १० आवेष्टित हुवा हुआ, घिरा हुआ. ११ जड़ा हुआ।
(स्त्री. वींटियोड़ी)

वींटी—देखो 'वींटी' (रू. भे.)

उ०—१ छुरी रै हसतौ मुहरै री थी सौ वोहत बस थी। सौ रुपोटै मांहे खोळियौ। वींटी हाथ में मोहरै री थी, सौ खोळी। पछै आप री आंख खोळ वडारण री आख खोळाय आप रै हाथ सुं भरमल नै दी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ मोतियां रौ हार चौढ पंच-लड़ी विराज रह्या छै। जड़ाव रा बाजूबंध कांकण रतन-चोक आरसी वींटी विराज रही छै। वळै चूड़ौ सोनेरी बंगडीदार विराजै छै। जांणै काळी घटा में वीज चमकै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ जीमणा हाथ री चिट्टूड़ी आंगळी धकै करनै कैवण लागा आ छोटी सी वींटी दस हजार रिपियां री है, म्हारी अै पगरखियां हजार रिपियां री है अर थांनै कीं इदकाई नीं दीसै। आपरी आंख्यां में कठैई जाळौ तौ नीं है। —फुलवाड़ी

वींटोरौ—देखो 'भींटोरौ' (रू. भे.)

वींटौ-स. पु.—दरी आदि में लपेट के साथ बांधा हुआ कपड़े आदि का गोल बिस्तर।

२ देखो 'बींटौ' (रू. भे.)

मह,—वींट, बिट, वीटौ।

वींठी—देखो 'वींटी' (रू. भे.)

उ०—जै मीख दियां रै दूजै दिन कै बरस दोय बरस पछै बाई री अणचींती मौत व्हैगी तौ सगळी वींठी, दत्त-दायजौ अैळौ नीं जावैला! कमाई करण वाळा नै हजारूं वातां रौ ध्यांन राखणौ पड़ै। —फुलवाड़ी

वींडी-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—'''गढगजी सवागजी चुगजी पंटणी पटपाट्ट, पंचवरण छींट, नीलवटां चकवटां धोतवटां मुहिवटां नाटी दोटी घटी कठपीठ पागडी वींडी रेट चूनडी पातलसाडी, नंदरबारी पाघडो, पांमडी लोवडी, वाहणवही लोवडी''' । —व. स.

२ देखो 'भिंडी' (रू. भे.)

वींडौ—देखो 'भिंडी' (अल्पा., रू. भे.)

वींण—१ देखो वीणा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

वींणणौ, वींणबौ-क्रि. स.—छांटना, टालना।

उ०—प्रतापसिंह माथै निजर पड़तांई वौ तारा री गळाई उण कांनी तूटौ, इनरै लारनी भीड़ माथै आय पड़ी छता पण नैड़ा आयोड़ा तीन च्यारां नै वींणनै वीर री डाढाळी वुई सौ प्रतापसिंह रौ माथौ जमीं माथै लुटतौ निजर आयौ। —अमर चूंनड़ी

२ देखो 'बिणणौ, बिणबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणणौ, बुणबौ' (रू. भे.)

वींणणहार, हारौ (हारी), वींणणियौ—वि०।
वींणिओड़ौ, वींणियोड़ौ, वींण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वींणीजबौ, वींणीजबौ—कर्म वा०।

वींणती—देखो 'विनती' (रू. भे.)

उ०—कठै अगन, जळ, पवन, धुंवै रौ मेघ अंदेसौ? कठैक पाटक पुरख लिजावण जोग संदेसौ? भूल्यौ इतरा भेद वींणती मेघ करंतां न चेत अचेतण ग्यांन कांम-कवांण चढतां। —मेघ

वींणियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ छांटा हुआ, टाला हुआ।

२ देखो 'बिणियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्रीं. वींणियोड़ी)

वींद—देखो 'वींद' (रू. भे.)

उ०—१ कोई वीर पुरख परणीजियौ नै दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळौ नै बहनोई सत्रुआं नै पूगा तठै वींद वणियोडै हीज भगड़ा रै भूखै तरवारां आगै सरीर पुरजा पुरज कर विखैरियौ। —वी. स. टी.

उ०—२ हिंदवा राव हयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां। गई स्रुग विवांणां बैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना बींदां। —महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

उ०—३ आसकन्न वडी एकाधपति, 'नींबउत' नमौ आतम सकत्ति। ओपमा करन्न अंण-नींद, वरियांम कुंआरी घडा वींद। —गु. रू. बं.

उ०—४ 'जैतमाल' अण-पाल, बींद मेवाड तणी घड। सिवियांणै सोभति, 'भांण' रोळिया भडां घड। —गु. रू. बं.

उ०—५ रुद्रमाळ रचावां। पहाडां नै जळ चाढ़ां। इतरौ सांभळी नै संभ नै निसभ बेऊ दावाई भाई बोलिया-उवाह उवाह। अणी रा बींद। रिण में बावळा। बांकी मूंछाळा। —मा. वचनिका

(स्त्री. वींदणी)

बींदड़—१ देखो 'बींद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बींदड़ जेड़ी बींदड़ी, जोड़ी तुली है जोर। गळ कंठी भुज भुजबद, माथा ऊपर मोड़। —सांतिलाल

२ देखो 'वींदळ (रू. भे.)

उ०—जंप सखी! म्हारा जणणि, भंवर करै भड़भाळ। बींदड़ बजाय बिग्रहां, बींजड़ ह्वै बींबाळ। —रैवतसिंह भाटी

बींदड़लो—देखो 'बींदड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

बींदड़ी-सं. स्त्री.—१ बिवाह आदि के लिये निमन्त्रण पत्र, कुंकुमपत्रिका।

२ देखो 'बींदड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०—बींदड़ जेड़ी बींदड़ी, जोड़ी तुली है जोर। गळ कंठी भुज भुजबंद, माथा ऊपर मोड़। —सांतिलाल

बींदड़ौ—१ देखो 'बींदड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बींद' (अल्पा., रू. भे.)

बींदणी—देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०-१ सुरति करि आरती निरत नेता लीयां, सांम संमेहळै मिळै सारा। ब्रह्म वर बींदणी खैरवंटी खरी,इंद ज्यूं ओवड़ै इमी धारा। —अनुभववांणी

उ०—२ मन ई मन सोचण लागा कै आ कोई डाकण, भूतणी कै स्यारी तौ किणी भाव नीं व्है सकै। देवतां री पूजा साथ घर सूं निकळी। किणी धनवंती री नवी बींदणी दीसै। —फुलवाड़ी

उ०—३ बींदणी अपूठी होय मूंडौ ऊघाड़ बैठगी। ऊंचौ जोधौ। पतळी पतळी लीली चेर लड़ाभूम सांगरियां ई सांगरियां देखतां ई कोयां में ठाडोळांई वापरगी। —फुलवाड़ी

उ०—४ तद पदमावती वर देख राजी हुई। उठै बींद नुं तोरण वांदाय चवरी लै आयां। अर बींदणी आंण हथळेवौ जोड़ अर परणाया। —ठकुरै साह री वात

बींदणौ, बींदबौ—देखो 'बींधणौ, बींधबौ' (रू. भे.)

बींदणहार, हारौ (हारी), बींदणियौ—वि०।

बींदिओड़ौ, बींदियोड़ौ, बींद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींदीजणौ, बींदीजबौ—कर्म वा०।

बींदराजा—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—फेरा रै पैं'ली हथळेवा में बींदराजा रौ हाथ कांई झिलियौ, जांणै गिगन रा नवलख तारा बींदणी री हथाळी में आय खिरिया उण री नस नस में बीजळियां खिवण लागी। —फुलवाड़ी

बींदळ-सं. पु.—नपुंसक, हिजड़ा।

उ०—१ दुफल दुरंगा दहण, बद बद सह खग वार। की बींदळ विग्रह करै, हथ ताळचां हथियार। —रैवतसिंह भाटी

उ०—२ बींदळ वीस हजार, हैमाळै गळिया हुता। करम लिखी करतार, रांकां नै राजा किया। —अग्यात

रू. भे.—वींदड़।

बींदावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

बींदियोड़ौ—देखो 'बींधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वींदियोड़ी)

बींदोळी, बींदोली—१ देखो 'बींदोली' (रू. भे.)

२ देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

बींदोळौ, बींदोलौ-सं. पु.—१ दूल्हे या दुल्हन का जूता।

२ देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

रू. भे.—वींनोळौ।

बींध—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—बहण बींध कुंरंद सपंक्र दाळिद बहण, तप पड़ंग अंगभाव अवतार। कोक सिख जडळ जोगेसरां कविंदां, सूर सक्र अथग 'सिव' बियौ सिरदार। —महाराजा छत्रसिंघ हाडा रौ गीत

बींधणौ, बींधबौ-क्रि. अ. स. १ आर-पार होना, आर-पार निकलना।

२ दबना, विवश होना।

उ०—जीव संताप्या मइं घणा, पर आसायें बींध। वलि रात्रि भोजन करचा, काज अकारज कीध। —वि. कु.

३ आर-पार करना।

४ दबोचना।

५ देखो 'बींधणौ, बींधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जाणतां बूझतां हाथां करने धोखौ खायौ। पण अबै व्है

कांई । संपाड़ौ करचोड़ा ऊघाड़ा डील । पोह री ठारी हाडकां नै वींधती ही । माथा उफणनै भरभंड । व्हेगा । —फुलवाड़ी

उ०—२ ताहरां रायसिंघ बोलियौ—कूंभा ! क्युं उतरै ? म्हारा हाथ देख । सिगळा ही नूं कबूतर दाई वींधूं । ताहरां कूंभौ बोलियौ—रावळ मलीनाथजी री आंण छै, बोलौ तो । —नैणसी

उ०—३ जउ मूकी तुहइ तुलसिरी, जउ वींधी तुहइ मोतिसिरी । जउ डुहलूं तुहइ गंगाजल जांणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वांणि ।
—नळदवदंती रास

६ देखो 'विंधणौ, विंधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लगी सबद की चोट, वींध गई विच काळिजौ । हरिया ग्रोर न ग्रोट, सतगुर वाह्या मूंठ भरि । —अनुभववांणी

उ०—२ सबद तणी तांह मार, ऊठै सूळ सरीर में । हरिया इणी न धार, नख चख सारा वींधग्या । —अनुभववांणी

उ०—३ सैर में सीवळ री रौंळाटी फैलियौ । घर-घर में छोटां वडां रै सीवळ निकळै । कमळा रै ग्रो करम री ग्राय वाजी । घणी दोरी सीवळ निकळी, रूं रूं वींधीजग्यौ । —वरसगांठ

वींधणहार, हारौ (हारी), वींधणियौ—वि० ।
वींधिग्रोडौ, वींधियोड़ौ, वींध्योडौ—भू० का० कृ० ।
वींधीजणौ, वींधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

वींधाणौ वींधाबौ—देखो विंधाणौ, विंधाबौ' (रू. भे.)
वींधाणहार, हारौ (हारी), वींधाणियौ—वि० ।
वींधायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वींधाईजणौ, वींधाईजबौ—कर्म वा० ।

वींधायोड़ौ—देखो 'विंधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वींधायोड़ी)

वींधावणौ, वींधावबौ—देखो 'विंधाणौ विंधाबौ' (रू. भे.)
वींधावणहार, हारौ (हारी), वींधावणियौ—वि० ।
वींधाविग्रोड़ौ, वींधावियोड़ौ, वींधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वींधावीजणौ, वींधावीजबौ—कर्म वा० ।

वींधावियोड़ौ—देखो 'विंधायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वींधावियोड़ी)

वींधियोड़ौ—१ ग्रार पार हुवा हुग्रा, ग्रार पार निकला हुग्रा. २ दबा हुग्रा, विवश हुवा हुग्रा. ३ ग्रार पार किया हुग्रा । ४ दबोचा हुग्रा ।
५ देखो 'विंधियोड़ौ' (रू. भे.)
६ देखो 'वींधियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वींधियोड़ी)

वींन—१ देखो 'वीणा' (रू. भे.)
२ देखो 'विना' (रू. भे.)
३ देखो 'वींद' (रू. भे.)

वींनणी—देखो 'वींदणी' (रू. भे.)

वींनोळी—१ देखो 'वंदोळी' (रू. भे.)
२ देखो 'वींदौली' (रू. भे.)

वींनोळौ—१ देखो 'वींदोलौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वंदोळौ' (रू. भे.)

वींफरणौ, वींफरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)
उ०—धारण सलाह चिन नह धरै, ग्रारण करण उतावळौ । बावळा गयंद मसतां विधी, वींफरियौ रिण बावळौ । —सू. प्र.
वींफरणहार, हारौ (हारी), वींफरणियौ—वि० ।
वींफरिग्रोड़ौ, वींफरियोड़ौ, वींफरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वींफरीजणौ, वींफरीजबौ – भाव वा० ।

वींफरियोड़ौ—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वींफरियोड़ी)

वींभर—देखो 'भींभर' (रू. भे.)

वींभरणौ, वींभरबौ—देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे.)
उ०—१ जुडै हिक वींभरता जम दूत, कढै हिक मारि ग्रणी सर कूंत । वहै हिक घाउ वदै विरा वांण, रिखै हिक गोळियां रिण-ढांण । —गु. रू. बं.
उ०—भाग री धणी सोभाग री भुकीयौ, खाग री खाटियौ वांट खावै । वेहूं राहां वीचै नित वांदै 'बलु', वींभरै खेत नीसांण बावै ।
—बलुजी चांपावत री गीत
२ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू. भे.)
वींभरणहार, हारौ (हारी), वींभरणियौ—वि० ।
वींभरिग्रोड़ौ, वींभरियोड़ौ, वींभरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वींभरीजणौ, वींभरीजबौ—भाव वा० ।

वींभरियोड़ौ—१ देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'विभरियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. वींभरियोड़ी)

वींभरियौ—देखो 'भींभर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वींभळ, वींभळी—देखो 'विभळ, विभळी' (रू. भे.)
उ०—बाहू चळी निरम्मळी, चख वींभळी सुरत्त । ग्राजै करनल ग्रक्कळी (तूं) संवळी रूप सगत्त ।
—राव मेखौ

बींही-सर्व.—उस, उसी ।

उ०—सौ विधना रै लेख सूं भूंडण प्रात:काळ घड़ी दोय रै तड़कै ऊठ सूरजकुंड में स्नांन करणं नूं गई । बींही समै देवजोग सूं डाढाळौ बींही सूरजकुंड मांही स्नांन करण आयौ, सो देखै तौ भूंडण स्नांन कर रही छै । —डाढाळा सूर री बात

बी-सं. पु.—१ शास्त्र । (एका)

२ विष्णु । (,,)

३ योद्धा, सुभट । (,,)

सं. स्त्री.—४ बेल । (,,)

५ गंगा । (,,)

रू. भे.—बीं ।

६ देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—इतरै कंवर वीरमदे घोडां खड आधौ आयौ । जठै गण-गोरचां आगै चढीया ऊभा छा ज्यां बूजायौ—अै सिरदार कुण छै । जठै यां कयौ—म्हैं तौ गैलारथु छां । पारबती को दरसण करस्यां । इतरै गणगोरचां गांव नै वावडी । अै वी गैला उपरै छै । —पनां

७ देखो 'भी' (रू. भे.)

उ०—सांवठां असवारां की वागां उठी । जिकै फागां जांणिजै, गुलालां री मुठी । जठै सैं वाहर पोती । जठै कंवर वीरमदे गैलै असवार ऊभा राख्या था जिकै वी उण वेळां आय सांमिल हुवा । —पनां

वीअ—देखो 'बी' (रू. भे.)

वीआंनी—देखो 'विसांनी' (रू. भे.)

वीआळ, वीआल—देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

उ०—जेवडउ अंतर हाथि अनइं ऊंट, जेवडउ अंतर पाधरसी अनइं खुंट, जेवडउ अंतर सीह नइं सीआल, जेवडउ अंतर गोल अनइ वीआल, जेवडउ अंतर रांणी अनइं दासी,···। —व. स.

वीआळकौ—देखो 'बीयाळकौ' (रू. भे.)

वीआपक—देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

वीआपणौ, वीआपबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

वीआपणहार, हारौ (हारी), **वीआपणियौ**—वि० ।

वीआपिओड़ौ, वीआपियोड़ौ, वीआप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीआपीजणौ, वीआपीजबौ—भाव वा० ।

वीआपियोड़ौ—देखो 'व्यापियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. वीआपियोड़ी)

वीक—१ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वीख' (रू. भे.)

वीकणौ, वीकबौ-क्रि. स.—१ बेचना, विक्रय करना ।

उ०—१ लाख लूण तिल वुहरचा वीक्या, कन्या विक्रय कीधा । सोम सूर कइ राहु गिलंतइ, महादांन कौ लीधां । —कां. दे. प्र.

उ०—२ दोसी वूहरइ अतिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र । एक बइठा कहइ कथा कल्लोल, एक बइठा वीकइ मंजीठ चोल ।? —नळदवदंती रास

उ०—३ सरस्वती आगलि कुण पढीयइ, अम्रत कउणि कढीइ, मांणिकु कउणि वीकीइ, मोती कउणि छडीइ, निरगुण कउणि वंदीइ, वाउ कउणि-बांधीइ···। —व. स.

२ देखो 'बिकणौ, बिकबौ' (रू. भे.)

वीकणहार, हारौ (हारी), **वीकणियौ**—वि० ।

वीकिओड़ौ, वीकियोड़ौ, वीक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीकीजणौ, वीकीजबौ—कर्म वा० ।

वीकधर-सं. पु.—बीकानेर का एक नाम ।

वीकनेर, वीकपुर, वीकपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—१ जस विरद सुणि दुरंग जैरां, नजर भेजी वीकनेरां । एह सुणि वीकांण अक्खै, रावळां बह निजर रक्खै । —सू. प्र.

उ०—२ गढ जैसांणं वीकपुर, कै सीरोही पार । जग मैं भूपत थांन रौ, बुध अनुमांन विचार । —रा. रू.

उ०—३ त्याग मैं दिया गढ परणतां त्रकूणं, वीकपुर अंजस दूणा विकासै । क्रीत सु प्रवीत जण जणं रसणा कहावी, रहावी वात जुग च्यार 'रासै'। —रायसिंह रौ गीत

वीकम—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

उ०—भगौ तोय वाराह, राह गिळियौ तोय दणीयर । लांघणियौ तोय सीह, जेअ मथियौ तोय सायर । अंण हुंतै वीकम, घणं वीटियौ वीकोदर, खोड़ौ तोय हणवंत, लियौ दरसण तोय सांकर । —अल्लूजी कवियौ

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे.)

उ०—१ बाघउत ऊचरै, सुणौ खट-तीस वंस, जुरा आगळि रहै वदूं जाहीं । भोज वीकम तणौ सुजस सारै भुयण, नरां तिण वार रा मंडप नाहीं । —राव गांगौ

उ०—२ विध रा जांण गाथ रा वीकम, पारिख बांण हाथ रा पाथ । जुध रा भीम खळां रा गजण, नाथ' रा बुध गणनाथ । —आईदांन पाल्हावत

उ०—३ पलटियौ नहीं ग्रहियां पलौ, सत हरचंद बिरदां सधै । दातारपणै 'गजबंध' दुभ्रल, वीकम क्रन हूंतां वधै । —सू. प्र.

उ०—४ 'जबदळ' 'पदम' रायसींग जुजम्टळ, हरचंद वीकम भोज हुवा। मांणी मता छता मह मंडळ, मता न मांणी जीता मुवा।
—गोरधनजी खीची

वीकमपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

वीकमायत—सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

वीकम्म—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

उ०—काय भोज वीकम्म काय रुद्र नाग अरज्जन, काय रांमरा बळराज काय जुजठळ अर गंजन। कन्न काय हरचंद क्रन कग ग (क) हर कहंता, काय समर दद्धीच काय जीवाहन जंता।
—मालौ आसियौ

वीकराळ, वीकराल—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

उ०—अकलंक कलंक मौ चढ्यौ, सांमुहौ जोवन वीरह वीकराळ। अनवलइ दव परजळै, पगि पगि मौ सखी मंडइ आळ।
—बी. दे.

वीकांण, वीकांणगढ, वीकांणौ—देखो 'बीकानेर'

उ०—१ प्रथम देस जेसांण वीकांण प्रगटी पछै, वरजियौ भांण बेड़ौ उबारचौ। अबैं परब्रह्म वाळी प्रकति अद्रजा, धजाळी मद्र अवतार धारचौ।
—मे. म.

उ०—२ सौ वीकांण धरा चै सांधै, बळ मेटियौ जु हूता बांधै। केताई गांव थांणायत कोटां, लूटै देस किया सहलोटां।
—रा. रू.

उ०—३ लोहि हरि 'जैत' वीकांणगढ जै लीयौ, दहुडि खुरसांण अजमेर गढ दाबियौ। खाग झड़ रांण खुरसांण दळ जिण खंडै, डीडवांणा सहित सहर सांभरि डंडै।
—सू. प्र.

उ०—४ भिड़ती खुरसांण जितै दळ भाजा, आयौ 'करण' तुहारी ओट। वीकांणा देसांणौ वासै, करनादे पलटै किम कोट।
—महाराणा करणसिंघजी

वीका—सं. स्त्री.—राठोड़ वंश की एक उपशाखा।

वीकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बेचा हुआ, किक्रय किया हुआ।

२ देखो 'बिकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीकियोड़ी)

वीकीजी—सं. स्त्री.—बीकानेर राजवंश की पुत्री या बहिन।

वीकोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे.)

उ०—१ भगौ तोय वाराह राह गिळियौ तोय दणीयर, लांघणियौ तोय सीह जेम मथियौ तोय सायर। अंण हूंतै वीकम भणै वीटीयौ वीकोदर, खोड़ो तोय हणवंत लियौ दरसण तोय सांकर।
—अल्लूजी कवियौ

उ०—२ वीकोदर वीर वर, अनड पाहाड असकित। त्रिविध फोज रचिअणी, अरध आठम चंद्राकत।
—गु. रू. वं.

वीकौ—सं. पु.—राठौड़ वश की वीका नामक उप शाखा का व्यक्ति।

वीक्रम—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

वीक्रमनगर, वीक्रमपुर—देखो 'विक्रमनगर' (रू. भे.)

वीक्षण—सं. पु. [सं.] देखने की क्रिया, अवलोकन, निरीक्षण।

रू. भे.—वीख, वेख।

वीख—सं. पु. [सं.] १ कदम, डग, पैंड।

उ०—१ छोटी वीख न आपडां, लांबी लाज मरेहि। सयण वटाऊ वाळ रे, लंबउ साद करेहि।
—ढो. मा.

उ०—२ संपेख खुरम सुरतांण साथ, नरसिंघ रूप नवकोट नाथ। 'सूरजमल' संभ्रम तै सरीख, वधियौ किरि वांमण दियण वीख।
—गु. रू. वं.

उ०—३ वाकरां नूं बरकौ करण रै पगां अलवळियां मोटचारां नूं हुकम कीजै छै। सू असीलां सीरोहियां लेनै ऊठिया छै। मलफती वीखां भरै छै। जांणै पावासर रौ हंस मोती चुगण चालियौ छै।
—रा. सा. सं.

उ०—४ राय देह पधराय वार तण चेह विचंमां, झळ अगी झूलिवा करण लग्गी परकम्मां। भूप हेत सत भाय रूप सोहै पटरांणी, वीख वीख जग विमळ ईख लाजै इंद्रांणी।
—रा. रू.

२ चाल, गति वेग।

उ०—१ मांगी सीख नरिंद सूं, दीन्ही वीख कुंवार। जांणै बंध पलट्टियौ, सिंध प्रळै चीवार।
—रा. रू.

उ०—२ कपड़ा खरची दै कलै, दसा घरां दी सीख। अठी अठा पाछै अबै, वळै देखौ मत वीख।
—कल्यांणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

३ ऊंट या घोड़े की चाल विशेष।

उ०—१ छट सुंदर वीख सतेज घणा, तन ओप वधै गढ रूप तणा। दुति वकति तुंड लगांम दियां, कुळवंतिय घूंघट जांणि कियां।
—रा. रू.

उ०—२ उण गांव रै गोयरै आय नींसरियौ। देखै, तौ एक लुगाई ऊभी छै। देखि नै मन में संकियौ, भई चूड़ैल नहीं छै। इतरौ जांणि नै रजपूत हीयै रौ जोरावर हुतौ दीठौ, बोलाईस तौ खरी। ताहरां औ ऊंठ वीखै वीखै चलाइ नै नेड़ौ आयौ।
—कांवळ जोईयै नै तीडी खरळ री वात

४ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—श्राबू रै धणी पाल्हण परमार सरव धातू मांहे भरत रौ भरियौ थीतंकर रौ बीख हुतौ सू मलाय श्रचळेसर है । नांदियौ भरायौ जिण विख घालण रा पाप सूं पाल्हण रै कोढ उघड़ियौ जीददेव रौ नांवौ विख भराय थापित कियौ जद कोढ मिटियौ ।
—बां. दा. ख्यात

५ देखो 'वीक्षण' (रू. भे.)

उ०—तूं मोनूं हिव जांणदै, म देख म्हनै कु बीख । जलदी मोनूं जावणौ, म्हारी सगळा नैं उडीख । —सांतीलाल

रू. भे.—बरीख, बीख, ब्रख, ब्रखा, ब्रखि, ब्रीख, भीख, वरीख, विक्खं, विक्ख, वींख, वीखा, वेख ।

श्रल्पा ,—वीखड़ी ।

वीखड़ी—देखो 'वीख' (श्रल्पा., रू. भे.)

उ०—साल्ह चलंतइ परठिया, श्रांगण वीखड़ीयांह । सौ मइं हियइ लगाड़ियां, भरि भरि मूठड़ियांह । —ढो. मा.

वीखणी—देखो 'विक्खणी' (रू. भे.)

उ०—१ इळादि डंब उल्लडै, पवंग वाग ऊपडै । खुरां ज खोणि वीखणी, पतंग छाइ पोइणी । —गु. रू. बं.

उ०—२ है-थट समद जांण हिलोळ, पमगां हमस पक्खर रोळ । क्रमतै खुरमरै कटकेह, वसुधा बीखणी विडंगेह । —गु. रू. बं.

उ०—३ खेड रा जोध तुरंगांण ताता खडै, पै खुरै वीखणी खोण खांना पडै । तप्पिया तालू ए लोह घोडातणै, श्राड भ्रांफां भरै तेज सूं ऊफणै । —गु. रू. बं.

वीखणौ, वीखबौ—क्रि. श्र.—१ रुदन करना , रोना ।

२ बिलखना, व्याकुल होना ।

३ तरसना, लालायित होना ।

४ तड़फना ।

५ दुःखी होना, पीड़ित होना ।

६ देखो 'वींकणौ, वींकबौ' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)

उ०—बदनारविंद गोविंद वीखियै, श्रालोचै श्रापो श्राप सूं । हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुश्रौ कतारथ पहिलौ हूं । —वेलि

वीखणहार, हारौ (हारी), **वीखणियौ**—वि० ।

वीखिश्रोड़ौ, वीखियोड़ौ, वीख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीखीजणौ, वीखीजबौ—भाव वा० ।

बीखणणौ, वीखणबौ, बीखणौ, बीखबौ, विखणौ, विखबौ, वींखणौ, वींखबौ—रू० भे० ।

वीखरणौ, वीखरबौ—देखो 'बिखरणौ, बिखरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाटइं राई वीखरी, उलंडावइ श्रेक । लक्ष प्रकारै लूणना विनता करइ विवेक । —मा. कां. प्र.

उ०—२ जद छोहरा नगारा बजावा लागा । जद रांमत में भंग पड्यौ । लोक वीखर गया । रावलियां रै हाथै दांन पिण न श्रायौ नें भूंडा पिण दीठा । —भि. द्र.

उ०—३ भयांनक हेक करै भाराथ, हिकां मसतक्क पडै पग हाथ । वैणी-डंड हेकां वीखरियाह, लुटै भुंइ हेक लुही भरियाह । —गु. रू. बं.

उ०—४''''''उन्हउ तीन्हउ सरहरउ भरहरउ श्रांहसिउ नीलसिउ श्रणीश्रालउ सूंश्रालु सरसु सकोमल वीखरिउ वीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ ऊंदेली जेवडउ, दूबल पेटि पइसइ, फूटी नीसरइ इसउ कूर परीसिउं । —व. स.

वीखरणहार, हारौ (हारी), **वीखरणियौ**—वि० ।

वीखरिश्रोड़ौ, वीखरियोड़ौ, वीखरघोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीखरीजणौ, वीखरीजबौ—भू० का० कृ० ।

वीखराणौ, वीखराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारौ (हारी), **वीखराणियौ**—वि० ।

वीखरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीखराईजणौ, वीखराईजबौ—कर्म वा० ।

वीखरायोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखरायोड़ी)

वीखरावणौ, वीखराववौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारौ (हारी), **वीखरावणियौ**—वि० ।

वीखराविश्रोड़ौ, वीखरावियोड़ौ, वीखराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीखराश्रीजणौ, वीखरावीजबौ—कर्म वा० ।

वीखरावियोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखरावियोड़ी)

वीखरियोड़ौ—देखो 'बिखरियोड़ौ' ।

(स्त्री. वीखरियोड़ी)

वीखा—सं. स्त्री. [सं.] १ नाच, नृत्य ।

२ संगम, मिलन ।

३ देखो 'बीख' (३) (रू. भे.)

वीखियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ रुदन किया हुश्रा, रोया हुश्रा. २ बिलखा हुश्रा, व्याकुल हुवा हुश्रा. ३ तरसा हुश्रा, लालायित हुवा हुश्रा. ४ तड़फा हुश्रा. ५ दुःखी हुवा हुश्रा, पीड़ित हुवा हुश्रा ।

६ देखो 'वींकियोड़ौ' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखियोड़ी)

वीखेरणौ, वीखेरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)

वीखेरणहार, हारौ (हारी), वीखेरणियौ—वि० ।
वीखेरिओड़ौ, वीखेरियोड़ौ, वीखेरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीखेरीजणौ, वीखेरीजबौ—कर्म वा० ।

वीखेरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीखेरियोड़ी)

वीखै—१ देखो 'विखै' (रू. भे.)
२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

वीखोरणौ, वीखोरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)
उ०—सरण साधार सुदतार लहरी समंद, करै अदतार नर मीढ केहा। रार लजधार संसार सारौ रटै, ऋगट गढ वीखोरणहार तेहा।
—गुलजी आढौ

वीखोरणहार, हारौ (हारी), वीखोरणियौ—वि० ।
वीखोरिओड़ौ, वीखोरियोड़ौ, वीखोरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीखोरीजणौ, वीखोरीजबौ—कर्म वा० ।

वीखोराणौ, वीखोराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)
वीखोराणहार, हारौ (हारी), वीखोराणियौ—वि० ।
वीखोरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीखोराईजणौ, वीखोराईजबौ—कर्म वा० ।

वीखोरायोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीखोरायोड़ी)

वीखोरावणौ, वीखोरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)
वीखोरावणहार, हारौ (हारी), वीखोरावणियौ—वि० ।
वीखोराविओड़ौ, विखोरावियोड़ौ, विखोराव्योड़ौ—भू० का० कृ ।
वीखोरावीजणौ, वीखोरावीजबौ—कर्म वा० ।

वीखोरावियोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीखोरावियोड़ी)

वीखौ—देखो 'विखौ' (रू. भे.)
उ०—राठोड़ दुरगदास आसकरणौत वीखौ घणौ कीयौ न संमत १७६३ रा चैत वद ५ जाळोर सूं नै जोधपुर सूं सोबेदार नबाब जाफरखां वगैरै था सो नास गया नै स्रीहजूर जोधपुर में जाळोर सूं जाय नै अमल कीयो।
—मारवाड़ री ख्यात

वीगड़णौ, वीगड़बौ—देखो 'बिगड़णौ, बिगड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरीया वाड़ी वीगड़ै, सिर परि धणी न होय। मुं चिड़ीयां खाया खेतड़ा, हाकल करै न कोय।
—अनुभववांणी
उ०—पण म्हारै औ पण छै-सगै रौ नाळेर आयौ पाछौ न मेलुं। सो माजी, म्हारौ वचन गयां, जमवारौ व्रथा जासी। तिण सुं थें राजी हूय मनै फुरमावौ, ज्यूं म्हारौ भलौ हुवै अर थांहरै सत-तपस्या सुं माहरौ कुही न वीगड़ै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

वीगड़णहार, हारौ (हारी), वीगड़णियौ—वि० ।
वीगड़िओड़ौ, वीगड़ियोड़ौ वीगड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीगड़ीजणौ, वीगड़ीजबौ—भाव वा० ।

वीगड़ाणौ, वीगड़ाबौ—देखो 'विगड़ाणौ, विगड़ाबौ' (रू. भे.)
वीगड़ाणहार, हारौ (हारी), वीगड़ाणियौ—वि० ।
वीगड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीगड़ाईजणौ, वीगड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

वीगड़ायोड़ौ—देखो 'विगड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीगड़ायोड़ी)

वीगड़ावणौ, वीगड़ावबौ—देखो 'विगड़ाणौ, विगड़ाबौ' (रू. भे.)
वीगड़ावणहार, हारौ (हारी), वीगड़ावणियौ—वि० ।
वीगड़ाविओड़ौ, वीगड़ावियोड़ौ, वीगड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीगड़ावीजणौ, वीगड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

वीगड़ावियोड़ौ—देखो 'विगड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीगड़ावियोड़ी)

वीगड़ियोड़ौ—देखो 'विगड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीगड़ियोड़ी)

वीगन—देखो 'विघ्न (रू. भे.)

वीगसणौ, वीगसबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)
उ०—वळै को चेतै जीव, चेतिस्यौ चेतणहारौ। वीणां वीगसै मन, लखण उजाळै लारौ।
—वील्होजी

वीगसणहार, हारौ (हारी), वीगसणियौ—वि० ।
वीगसिओड़ौ, वीगसियोड़ौ, वीगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीगसीजणौ, वीगसीजबौ—भाव वा० ।

वीगसियोड़ौ—देखो 'विकसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीगसियोड़ी)

वीगाड़—देखो 'बिगाड़' (रू. भे.)
उ०—राव मालदे रा डेरा फळोधी छै। तरै नरै कंवर हरराज नुं कह्यौ—कहौ तौ म्हे जावां कटक रा वीगाड़ करां। तरै हरराज आपरो साथ घणो साथै दीयो।
—नैणसी

वीगाड़णौ, वीगाड़बो—देखो 'विगाड़णौ, विगाड़बौ' (रू. भे.)
उ०—नाहड़राव मंडोवर धणी हुवौ। वाराह एक मंडोवर री वाड़ी वीगाड़ै। तिण री घणी पुकार होई रही छै। नै एक दिन नाहड़राव डेरै होतौ थौ सु वाराह नीसरियौ।
—नैणसी

वीगाड़णहार, हारौ (हारी), वीगाड़णियौ—वि० ।
वीगाड़िओड़ौ, वीगाड़ियोड़ौ, वीगाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीगाड़ीजणौ, वीगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वीगाडियोड़ौ—देखो 'बिगाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीगाड़ियोड़ी)

वीगाड—देखो 'बिगाड़' (रू. भे.)

उ०—तठै माळी बोलियौ-महाराज ! आज काल कोईक जानवर हिल्यौ छै। सौ दिन रा जावता घणी करां छां, पिण रात रा वीगाड कर जावै छै। —रिसालू री बात

वीगाडणौ, वीगाडबौ—देखो 'बिगाड़णौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ वागवांन नै पूछ्यौ—क्युं बे बागवांन ! बहुत दिन सै एसा फल-फूल क्युं लाया, सौ कारण कांइ छै ? तदी वागवांन कही—हुजरत, सलांमत कवलेयांन, अधरात कुं बाग मैं हमेस क्या वलाय आवती है, सौ वाग वीगाडै छै। —रिसालू री बात

उ०—२ अतरायक मैं पातसाहजी बोल्या क्युं बे बागवांन ! ईतरा दिन में ईस्या फल-फूल क्यु ल्यायौ। तदि बागवांन कह्यौ—माहाराज ! कोई आधी रात्रै आवै छै; कोई बलाय छै। सौ वाग वीगाडी जाय छै, नित प्रतं आवै छै। —रिसालू री बात

वीगाडणहार, हारौ (हारी), **वीगाडणियौ**—वि०।
वीगाड़िओड़ौ, वीगाडियोड़ौ, **वीगाड्योड़ौ**—भू० का० कृ०।
वीगाडीजणौ, **वीगाडीजबौ**—कर्म वा०।

वीगाडियोड़ौ—देखो 'विगाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीगाडियोड़ी)

वीगोड़ी—देखो 'बीघोड़ी' (रू. भे.)

वीगौ—देखो 'वीघौ' (रू. भे.)

वीग्रह—देखो 'विग्रह' (रू. भे.)

वीग्रहणौ, **वीग्रहबौ**—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै रावजी बात आ राखी, कहौ—माहारौ कोट आवसी तरै म्है तोनुं छोडसां। तरै डूगरसी कोट रै मोहडै जाई जगहथ देपावत नुं कहीयौ—सावास तैं पांच मास गढ वीग्रहियौ। हिमें हूं दोहोरौ हूं तूं कूंची रावजी नुं सौंप जु मोनुं छोडै। —नैणसी

उ०—२ इण फेर रतनसी कोट भालियौ। सांवत चहुवांण कान्हर नरनाह रौ बेटो चहुवांण ईसरदास वडो रजपूत छै। वडी वडी गढ वीग्रही अै लड़ाई की। —नैणसी

वीग्रहणहार, हारौ (हारी), **वीग्रहणियौ**—वि०।
वीग्रहिओड़ौ, **वीग्रहियोड़ौ**, **वीग्रह्योड़ौ**—भू० का० कृ०।
वीग्रहीजणौ, **वीग्रहीजबौ**—कर्म वा०।

वीग्रहियोड़ौ—देखो 'विग्रहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीग्रहियोड़ी)

वीघोड़ी—देखो 'बीघोड़ी' (रू. भे.)

वीघौ—देखो 'बीघौ' (रू. भे.)

उ०—अंध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोड़ी वात नै सांचीं मांनण खातर ही वण्यौ है। नटणौ खातर हरगिज नहीं। चावै कोई अफ़ड करौ तथा जाळ। वींरै वास्तै तौ वीघै भूत अर विसवै सांप हाळी कैवत सांची है। —दसदोख

वीड़ंग, **वीड़ंगांण**, **वीड़ंगि**, **वीड़ंगी**—देखो 'विडंग' (रू. भे.)

उ०—गुटकांण सीदांण वीमांण तणी गत, नांव तीरांण देधांण अणै। पुखरांण वैगांण प्रमांण पराछक, वात वसै वीड़ंगांण भणै। —किसनजी दधवाड़ियौ

वीड़, **वीडउ**—१ देखो 'विड़' (रू. भे.)

२ देखो 'बीड़ौ' (मह., रू. भे.)

वीड़णौ, **वीड़बौ**—देखो 'बीड़णौ, बीड़बौ' (रू. भे.)

वीड़णहार, **हारौ** (हारी), **वीड़णियौ**—वि०।
वीड़िओड़ौ, **वीड़ियोड़ौ**, **वीड़्योड़ौ**—भू० का० कृ०।
वीड़ीजणौ, **वीड़ीजबौ**—भाव वा०।

वीड़मौं, **वीड़वौं**—देखो बीड़मौं' (रू. भे.)

वीड़ा—देखो 'बीड़ा' (रू. भे.)

वीड़ाणौ, **वीड़ाबौ**—देखो 'बीड़ाणौ, बीड़ाबौ' (रू. भे.)

वीड़ाणहार, **हारौ** (हारी), **वीड़ाणियौ**—वि०।
वीड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वीड़ाईजणौ, **वीड़ाईजबौ**—कर्म वा०।

वीड़ादार—देखो 'बीड़ादार' (रू. भे.)

वीड़ायोड़ौ—देखो 'बीड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीड़ायोड़ी)

वीड़ियोड़ौ—देखो 'बीड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीड़ियोड़ी)

वीड़ौ—सं. पु.—१ जल भरे चरस की लाव [मोटी रस्सी] को बैलों के जुऐं से जोड़ने का स्थान।

२ देखो 'बीड़ौ' (रू. भे.)

वीच—सं. पु.—१ मार्ग, राह। (उ. र.)

२ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ तिसडै पूरब रौ पातसाह समसदी, तिको दिल्ली रा पातसाह ऊपर आयौ। कोस २० रौ दोनूं फोजां रै वीच रह्यौ, तरै पूरब रै पातसाह कवांण दिल्ली रै पातसाह नूं मेली "जु थांहरा कटक मांहे कोई इसड़ौ छै, जिको आ कवांण चाढै। —नैणसी

उ०—२ विढै एम वेखियौ, इता एकण घर वाळा। वड वड भड़ां

विचारि, वीच फेरैं विसटाळा। —सू. प्र.

उ०—३ छोटा चेल्हरां ऊपर कुत्तां री डोर छूटी. सो जाय घेरिया चेल्हरा चौंकिया। । त्यां ऊपर सुवर भुंडरण घिरीया। सो घोड़ा वीच घात फंटाय लीया। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ दीवांण रै सांमंत मांहै जिका हुई सु दीवांरण मांहै परण होत। परण दीवांरण रौ भाग वडौ। धरती दै लड़ाई टाळी। इतरै कहतां वीच रावजी रै फौजां री वागां ऊपड़ी। त्यां दीवांरण री फौज पाछी मुड़ी। इतरै केइक वडेरा ठाकुर वीच पड़िया जु कयौ "ठाकुरां! भागां पाछै कांई जावौ? —नैरणसी

उ०—५ पत्र लिखावै प्रीत सूं, आप धरम चो आंरण। उर संसै यूं छेदियौ, कर कर वीच कुरांरण। —रा. रू.

उ०—६ हरीया तरवर वीच मैं, पंछी वासो लेह। कोई कबाड़ी आय कै, दोस विनां दुख देह। —अनुभववांणी

उ०—७ राता माता मैं भया, तै सेती रहमांन। हरीया नैरणां वीच मैं, निरखु सारंगप्रांन। —अनुभववांणी

उ०—८ हरीया केता वहि गया, कीया करम कै लारि। धिल धंधै धन वीच मैं, ध्यांन सबै नही धारि। —अनुभववांणी

उ०—९ आज कालि क्या करत हैं, हरीया होय अवेर। क्या जांरणु कैसी करै, संभां वीच सवेर। —अनुभववांणी

उ०—१० ए कैसें हैं—वडे सु विहांन है, वडै महिरवांन हैं, वडै सिरदार हैं। वडै बूभदार हैं, वडै दातार हैं। जमी आसमांन वीच संभू अवतार हैं। —रा. सा. सं.

२ देखो 'विछियौ' (रू. भे.)

उ०—घम घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम वीच (छ)। तम-तम यम मालू तवै, स्यार (म) चसम म मीच।

—मयारांम दरजी री वात

वीचणौ, वीचबौ—क्रि. स.—१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—खेड़ धरणी सिरि खीजियां, हुई मुगल्लां हेल। ज्यौं गज वारि विहारतां, वीचै वारिज वेल। —रा. रू.

२ संहार करना, मारना।

३ अलग करना, पृथक करना।

४ त्यागना, छोड़ना, बहिष्कार करना।

५ बीतना, गुजरना, घटित होना।

उ०—१ धांन न भावै चोंच निरोई, इरण वेदन मोनूं खरी विगोई। तौ सौं वात कहूं मैं कैसी, मेरै मन में वीचत जैसी।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तद आ वळै कटारी काढ नै छाती उपरा बैठी, कही, "रे मूरख, आगै तो तै मांहै वीची थी अर वळै आयौ? तो हमैं तै पासै माल छै सो दै नहीं तो मारां छां।"

—बूढी ठग राजा री बात

६ बीतना, गुजरना, व्यतीत होना।

उ०—१ जदि जोबन थौ जोरि, आव को धरयौ उभारौ। वीचि गई तरवार, हुवौ अंगि अखत उवारौ। —देवोजी

उ०—२ चोर पिरण ऊवै रै घर फाड़रण नु गया हुता। मु साहूकार बाप बेटौ लेखो करण बैठा हुता, मु राती वीची गई। पाछिली राति उठीया ताहरां अौथ साहुकार पड़ि रह्या। ऊवै री बेर दीवौ करि ढोलियौ विछाड नै बैठी हुती, सु राति वीचि गई।

—स्यांमसुंदर री वात

वीचणहार, हारौ (हारी), **वीचरिणयौ**—वि०।

वीचिओड़ौ, वीचियोड़ौ, वीच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीचीजणौ, वीचीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीछणौ, वीछबौ—रू० भे०।

वीचळौ, वीचलौ—देखो 'बिचलौ' (रू. भे.)

वीचारणौ, वीचारबौ—देखो 'विचारणौ, विचारबौ' (रू. भे.)

उ०—पहली पोरसी सूत्र चितारै, बीजी पोरसी अरथ वीचारै। जांरणै तीजी पोरसी लागी, वेदन रै वस खुध्या जागी। —जयवांणी

वीचारणहार, हारौ (हारी), **वीचारणियौ**—वि०।

वीचारिओड़ौ वीचारियोड़ौ, वीचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीचारीजणौ, वीचारीजबौ—कर्म वा०।

वीचारियोड़ौ—देखो 'विचारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीचारियोड़ी)

वीचाळ, वीचाळि, वीचाळी, वीचाळु, वीचाळै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ वगां वीचाळै काढिया, हुड़ जिम पग भलै। ऊभी मेली साहवी, गढ गोख महलै —कैसोदास गाडरण

वीचाळौ—देखो 'विचाळौ' (रू. भे.)

वीचि—सं. स्त्री. [सं. वीचि:] १ विवेकहीनता, चंचलता।

२ लहर, तरंग।

३ हर्ष, खुशी, आल्हाद।

४ किरन, रश्मि।

रू. भे.—वीची।

४ देखो 'बीच' (रू. त.)

उ०—इस ऊजैका तमांम देखि गिर भंगरू वीचि घैसाहर फेरै। अरैरू कै भूंड नट्टू कै तटाक षण घुमरू सें घेरै। तहां सेती होकरि ऊठै अंधकंध गिड़दी ढाळ अगन कुंड से चखूंवीच भभकतै क्रोध की भाळ। —सू. प्र.

५ देखो 'विचि' (रू. भे.)

वीचिमाळी—सं. पु. [सं. वीचिमालिन्] समुद्र, सागर। (डिं. को.)

वीचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ. ४ त्याग किया हुआ छोड़ा हुआ, बहिष्कार किया हुआ. ५ बीता हुआ, गुजरा हुआ, घटित हुवा हुआ. ६ बीता हुआ, गुजरा हुआ, व्यतीत हुवा हुआ।
(स्त्री. वीचियोड़ी)

वीची—देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—जनहरिया तन वीची में, नख चख घाटि न वाध। और साध सब कहन का, रांम भजै सोई साध —अनुभववांणी

२ देखो 'विचि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

३ देखो 'वीचि' (रू. भे.)

वीचेतस—सं. स्त्री.—दुचित। (डिं को)

वीछड़णौ, वीछड़बौ—१ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—जीहौ सगपण इण संसार ना, जीहौ थया अनंति बार। जीहौ मिल मिल नै बलै वीछड़ै, जीहौ करम लगावै लार रे।—जयवांणी

उ०—२ पहिलि मिलियइ तेह सुं रे हां, करियइ हास विलास। मिलि नइ वीछड़िवौ पड़ै रे हां, तब मन होइ उदास। —वि. कु.

उ०—३ कुरझड़ियां कळिअळ कियउ, सुणी उपंखइ वाइ। ज्यांकि जोड़ी वीछड़ी, त्यां निसि नींद न आइ। —ढो. मा.

उ०—४ हंसा बुग्गां पटतरौ, वीछड़ियां परवांण। बुग छीलरीयां रय करै, हरियां हंस विलखांण। —अनुभववांणी

उ०—५ कुरजड़ियां कुरळा रही, देख विरंगा ताळ। जिण की जोड़ी वीछड़ी, जिणका कवण हवाल। —अग्यात

२ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे)

उ०—१ वग्गी हाक बहादरां, वीछड़ पड़ै विसाळ। नाराजां ऊवांणियां, खुरसांणियां कपाळ। —रा. रू.

उ०—२ खूम इसी चाढी 'खूमांण', धोया इसै अनोखै धोत। दसतां पड़ै वीछड़ै डाडर, पिंड कापड़ आवै अणपोत।
—मोहकमसिंघ मेड़तियौ

उ०—३ जुध खत्री जाट अग्राज जम जमासा, बाज छड़ बांण धम धमासा वीर। वीछड़ै कड़ा बरम्मां रुधिर विमासा, गंग-सिर-धर खड़ा तमासा-गीर। —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—४ वीर तन लोह छकड़ाल कस वीछड़ै, रूक सूं भिड़ै असपति सारीस। सीस देवळ तणौ डिगण न दियै सकस, स्यांम तण भुजा ऊपतज तै सीस —सुजांणसिंघ भोजराजौत सेखावत रो गीत

उ०—५ वाहतां तेग अनमंध कंध वीछड़ै, हसत बंध हसत दोय टूक होवै। सायजादा दळै हिंदवा पातसाह, 'जसा' अवसर अच्छर तूझ जोवै। —महाराजा जसवंतसिंहजी रो गीत

वीछड़णहार, हारौ, (हारी), वीछड़णियौ—वि०।

वीछड़िओड़ौ, वीछड़ियोड़ौ, वीछड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछड़ीजणौ, वीछड़ीजबौ—भाव वा०।

वीछड़वाणौ, वीछड़वाबौ—देखो 'वीछुड़ाणौ, विछुड़ाबौ' (रू. भे.)

वीछड़वाणणहार, हारौ (हारी), वीछड़वाणियौ—वि०।

वीछड़वायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछड़वाईजणौ, वीछड़वाईजबौ—कर्म वा०।

वीछड़वायोड़ौ—देखो 'विछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीछड़वायोड़ी)

वीछड़ाणौ, वीछड़ाबौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)

वीछड़ाणहार, हारौ (हारी), वीछड़ाणियौ—वि०।

वीछड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछड़ाईजणौ, वीछड़ाईजबौ—कर्म वा०।

वीछड़ायोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीछड़ायोड़ी)

वीछड़ावणौ, वीछड़ावबौ—देखो 'बिछुड़ाणौ, बिछुड़ाबौ' (रू. भे.)

वीछड़ावणहार, हारौ (हारी), वीछड़ावणियौ—वि०।

वीछड़ाविओड़ौ, वीछड़ावियोड़ौ, वीछड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछड़ावीजणौ वीछड़ावीजबौ—कर्म वा०।

वीछड़ावियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीछड़ावियोड़ी)

वीछड़ियोड़ौ—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीछड़ियोड़ी)

वीछडणौ, वीछडबौ—१ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ निजर नौ नेह जिण सु हुवै जी, वीछड्यां दुख न खमाय। तेह सांप्रति किम वीसरै जी, जेहनौ जीवन प्राय। —वि. कु.

उ०—२ रैण अंधारी घण गजै, खडि वांतांण वखांण। वीछडीया मेळा करै, मिरग डांण केकांण। —पनां

उ०—३ वासर सुख नां रयणी सुख, घरै सुख नावंत। वालिम वीछडिआ तणौ, मरम स लागौ मन। —ढो. मा.

२ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—है तूट तुंड रुळि रुंड मुंड, भाजै भसुंड गै हाड-गुंड। वीछडै संध अनमंध वप्प, भूभार दियै तेगां भडप्प। —गु. रू. बं.

वीछडणहार, हारौ (हारी), वीछडणियौ—वि०।

वीछडिओड़ौ, वीछडियोड़ौ, वीछड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछडीजणौ, वीछडीजबौ—भाव वा० ।

वीछड़ियोड़ो—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ (रू. भे.)

२ देखो 'बिछूटियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. वीछड़ियोड़ी)

वीछण, वीछणी-सं. पु.—देखो 'वीछरण' (रू. भे.)

उ०—तन धारै वीछण तणौं, जग चुगलां री जीह । आठ तरफ खावै उदर, दै छोनां दुख दीह । —वां. दा.

वीछळ, वीछळण-सं. पु.—१ बर्तनों, वस्त्रों व हाथ-पैर आदि को धोने का पानी ।

उ०—धोवट घाट अनोखा धोया, सारां मुंह ऊजळा सरीर । सिवला तणी वीछळण सांप्रत, चौळ तणे रंगिया अरण चीर ।
—मोहकमसिंघ मेड़तियौ

२ प्रहार ।

उ०—ऊभड़ां भडां नीभड़ा अंग, वीजड़ां गडां वीछळां बंग । जमजडां घडां समवडां जंग, त्रिज्जडां भड़ां तडफडां तंग ।—गु. रू. बं.

वीछळणौ, वीछळबौ-क्रि. स.—धोना, धुलाई करना ।

उ०—ताहरां तळाई आयौ । पागड़ौ छाडियौ । घोड़ै री काढणी हाथ छै । पांणी मांहै पथर छै तिकै उपर बैठा छै । पथर माथै बैस हाथ पग वीछळनै आंखियां रा गोख छांटीया ।
—मांडणसी कूंपावत री वात

वीछळणहार, हारौ (हारी), वीछळणियौ—वि० ।
वीछळिग्रोड़ौ, वीछळियोड़ौ, वीछळचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीछळीजणौ, वीछळीजबौ—कर्म वा० ।

वीछळियोड़ौ-भू. का. कृ.—धोया हुआ, धुलाई किया हुआ ।

(स्त्री. वीछळियोड़ी)

वीछांमणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

उ०—रंगित मंडप मांहि हिव, जाजिम लांबी जेह । वारु करै वीछांमणां, मोल घणा छै जेह । —प. च. चौ.

वीछाणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

वीछाणौ, वीछाबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

वीछाणहार, हारौ (हारी), विछाणियौ—वि० ।
वीछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीछाईजणौ, वीछाईजबौ—कर्म वा० ।

वीछायोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछायोड़ी)

वीछावणौ—देखो 'बिछाणौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां वळद उपर सखरा वीछावणा, तिण उपर विणयांणी नूं सोहरी बैसांणी । चालिया जावै छै । चालतां चालतां आगै जाय डेरौ कीयौ । —रळै गडवै री वात

वीछावणौ, वीछावबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

वीछावणहार, हारौ (हारी), वीछावणियौ—वि० ।
वीछाविग्रोड़ौ, वीछावियोड़ौ, वीछाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीछावीजणौ, वीछावीजबौ—कर्म वा० ।

वीछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछायोड़ी)

वीछियौ—देखो 'बिच्छू' (अल्पा., रू. भे.) (शेखावाटी)

वीछुड़णौ, वीछुड़बौ-क्रि. अ.—१ विमुक्त होना ।

उ०—कळ विछुड़ि एक बसै गिरि कंदरि, मंदिर भाळक एक भरै । ग्रहि त्याग कुरै धन एक गमाय रु, कै रिध आदरि संधि करै ।
—रा. रू.

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ '(रू. भे.)

उ०—थे सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ, थांकी आस । वीछुड़तां ही मांणसां, मेळउ दियउ उल्हास । —ढो. मा.

३ देखो 'बिछूटणौ, बिटछूबौ' (रू. भे.)

वीछुडणहार, हारौ (हारी); बिछुडणियौ—वि० ।
वीछुड़िग्रोड़ौ, वीछुड़ियोड़ौ, वीछुड़चोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वीछुड़ीजणौ, वीछुड़ीजबौ—भाव वा० ।

वीछुड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विमुक्त हुवा हुआ ।

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीछुड़ियोड़ी)

वीछू—देखो 'बिच्छू' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—मिणधर विख अणमाव, मौटा नह धारै मगज । वीछू पूंछ बणाव, राखै सिर पर राजिया । —किरपारांम

वीछूड़ी—१ देखो 'बिच्छूड़ी' (रू. भे.)

२ देखो 'बीछण' (अल्पा., रू. भे.)

वीछूटणौ, वीछूटबौ—१ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ करिमां रा छूटा गाढ जूवळा अफूटा क्रमै, रथां छूटा पीतंमरा लूटा वरां रंभ । तूटा बाढ बीजळां वीछूटा आभ वीजू तेम, खूटा सीस सांकुळां हूं जूटा जैतखंभ ।

—राजाधिराज बखतसिंघजी रौ गीत

उ०—२ हे कळळ मचै हल हल्लकार, मुंछाळ वदत मुख मार मार । वीछूटै छूट हूई विकट्ट, निरभीत कड़ै चढिया निकट्ट ।
—मा. वचनिका

उ०—३ चौड़ खळ धूहड़ लाखां चाक, वीरोळं लाख खळां वेडाक। खत्री गुर वीरम धूणं खाग, बीछूटी जांणेय सांकल वाग।
—गो. रू.

उ०—४ अपछरा का सा वीवांग वीछूटा। छछोहा जवांन तरवारचा आछटं छै। ज्यां मूं अंगजवार हर वरमाळा साथे ही कटे छै।
—पनां

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू भे)

वीछूटणहार, हारौ (हारी), **बिछूटणियौ**—वि०।

वीछूटिग्रोड़ौ, वीछूटियोड़ौ, बिछूट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछूटीजणौ, वीछूटीजबौ—भाव वा०।

वीछूटियोड़ौ—देखो 'विछूटियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विछूटियोड़ी)

वीछोड़णौ, वीछोड़बौ—देखो 'बिछोड़णौ, बिछोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ वरण फौज राजा तरणं काजवाळी, कवी क्रत जैंसी फुणां पत्ति काळी। कजाकां भडां दोडियौ रूप कैसो, 'अभौ' नक्र **वीछोड़** वा चक्र ग्रैसौ।
—रा. रू.

उ०—२ जिम मोरा ददरां, सघण घण पावस वूठौ। जळ ता मंछ **वीछोड़ि**, वळे जळ मांहि पयठौ।
—अल्लूजी कवियौ

वीछोड़णहार, हारौ (हारी), **वीछोड़णियौ**—वि०।

वीछोड़िग्रोड़ौ, वीछोड़ियोड़ौ, वीछोड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोड़ीजणौ, वीछोड़ीजबौ—कर्म वा०।

वीछोड़ियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछोड़ियोड़ी)

वीछोड़ाणौ, वीछोड़ाबौ—देखो 'बिछोड़ाणौ, बिछोड़ाबौ' (रू. भे)

वीछोड़ाणहार, हारौ (हारी), **वीछोड़ाणियौ**—वि०।

वीछोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोड़ाईजणौ, वीछोड़ाईजबौ—कर्म वा०।

वीछोड़ायोड़ौ—देखो बिछोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछोड़ायोड़ी)

वीछोड़ावणौ, वीछोड़ावबौ—देखो 'बिछोड़ाणौ, बिछोड़ाबौ' (रू. भे.)

वीछोड़ावणहार, हारौ (हारी) **वीछोड़ावणियौ**—वि०।

वीछोड़ाविग्रोड़ौ, वीछोड़ावियोड़ौ, वीछोड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोड़ावीजणौ वीछोड़ावीजबौ—कर्म वा०।

वीछोड़ावियोड़ौ—देखो 'बिछोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछोड़ावियोड़ी)

वीछोटणौ, वीछोटबौ—क्रि. अ.—१ बहना, निकलना।

उ०—गखड़े एक घाव कीधो। तीसो दूजौ संभूनाथ मैं दुधारी सीरां छुटां। वळे घाव हुवौ। दूध दही **वीछोटवा** लागौ। बीजौ घाव हुवौ। लौही वीकरंड चाल्या; तीको संभूनाथ खंड वेहड़ हुवा।
—अरजण हमीर री वात

२ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

४ देखो 'छूटणौ, छूटबौ' (रू. भे)

वीछोटणहार, हारौ (हारी), **वीछोटणियौ**—वि०।

वीछोटिग्रोड़ौ, वीछोटियोड़ौ, वीछोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोटीजणौ, वीछोटीजबौ—भाव वा०।

वीछोटियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ बहा हुवा, निकला हुवा।

२ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे)

३ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

४ देखो 'छूटियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विछोटियोडी)

वीछोव—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

वीछोवणौ, वीछोवबौ—देखो विछोहणौ, विछोहबौ' (रू. भे.)

वीछोवणहार, हारौ (हारी), **वीछोवणियौ**—वि०।

वीछोविग्रोड़ौ वीछोवियोड़ौ, वीछोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोवीजणौ, वीछोवीजबौ—भाव वा०।

वीछोवियोड़ौ—देखो विछोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछोवियोड़ी)

वीछोवौ, वीछोह—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

वीछोहणौ, वीछोहबौ—देखो 'विछोहणौ, विछोहबौ' (रू. भे.)

वीछोहणहार, हारौ (हारी), **वीछोहणियौ**—वि०।

वीछोहिग्रोड़ौ, वीछोहियोड़ौ, वीछोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोहीजणौ, वीछोहीजबौ—भाव वा०।

वीछोहियोड़ौ—देखो विछोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीछोहियोड़ी)

वीछोहौ—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

उ०—आया मिळ असवार, सुंदर दीठी सास विण। हय हय सिरजणहार, ढोलं **वीछोहौ** बिळकुळे
—ढो. मा.

वीज—देखो 'बीज' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेड़ैचौ वाही करि खीज। सुकरि आकास हूंत सेलारां, वीजुळ विढण क वुही **वीज**।
—केसोदास गाडण

उ०—२ पाल्हउ कवणइ, कउण जम ज'तउ वारइ? कवण वज्र झेलियइ, कउण सिरि **बीज** सहारइ।
—अ. वचनिका

३ देखो बीजळी' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ सुर दक्खै जै जै सबद, रस अदभुत लख रीज। ईढ करै खग सूं 'अभा', वजर न चकर न वीज। —रा. रू.

उ०—२ भडज वादळ सवळ बीज सावळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा। वार मुरनांगा दळ अकळ खूटा वरस, माल' हर सीस सुर-गरंद माळा। —अजबौ बारहठ

उ०—३ सो रूप री ऐसी, जैसी प्रथी में नहीं—सरग री परी, आभै री वीज मांन मरोवर रौ हंस, केळ रौ गरभ। सो रूप गुणा-कर निपट अवल पण आख्यां संजम मोतियावंध।

—कंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ जइ तूं ढोला, नावियउ काजळिया री तीज। चमक मरेसी मारवी, देख खिवतां बीज। —ढो. मा.

उ०—५ हीयां धसक्कइ कायर लोक, संत तणा मन करइं ससोक। जांणै बीज पडि [अ] अकालि, जांणै मुंद्र खुभ्या कलिकालि।

—सालिसूरि

४ देखो 'दूज' (रू. भे.)

वीजइ—१ देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—बीजइ दिनि चचिगदे राइ, बइठउ मन मांहि करइ उपाय। मत आवइ रिणधवळांह जांन, करिसी भूंफ पिंगराजांन।

—ढो मा.

२ देखो 'बीजली' (रू भे)

३ देखो 'विजय' (रू भे.)

४ देखो 'बीज' (रू. भे.)

विजइथंभ-सं. पु. [सं. विजय स्तभ] विजयस्तंभ, कीर्तिस्तम्भ।

उ०-पाल्हणासीं भला-भला लोकां का कह्या करण चार सांभळया। आसुं पूंछि अकमाळ लियउ। बीजइथंभ वागड़ी की नांई सकळ ही प्रियमी प्रतपिज्यउ, यउ गढ लीजउ, हमारउ वइर सूरितांण गोरी राजा सउं कीज्यउ। —अ. वचनिका

बीजई—१ देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

३ देखो 'विजय' (रू. भे.)

४ देखो 'बीज' (रू. भे)

वीजउ—देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—अणहिलवाडा पाटण सांमि, बीजउ नफर गयउ तिणि ठांमि। उदयचंदनय कियउजूहार, परणावउ रिणधवळ कुंमार।

—ढो. मा.

२ देखो 'बीज' (रू. भे.)

वीजक—१ देखो बीजक' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—डोहंत सूंडा डंड ए, खीखंड सरपकहिंड ए। गज वाग मत्थै मैगळां, वळकत्त वीजक वद्दळां। —गु. रू. बं.

उ०—२ रत खाळ-खळ तळ पालर, प्रघळ, होहूं हूंकळ यट्ट हुवै। वळ कन विज्जूजळ वीजक वद्दळ, ढोल त्रिमंगळ वोम धुवै।

—गु. रू. बं

उ०—३ चढै चलै चतुरंग महादळ, बीजक जांण वळक्के सावळ। वाजी घोडां पाइ धरत्ती, छूटा सांहण हाहुल मात्ती। —गु. रू. बं.

वीजकणौ, वीजकबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

वीजकणहार, हारौ (हारी), वीजकणियौ—वि०।

वीजकिओड़ौ, बीजकियोड़ौ, बीजक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीजकीजणौ, बीजकीजबौ—भा वा०।

वीजकाणौ, वीजकाबौ—देखो 'भिचकाणौ, भिचकाबौ' (रू. भे.)

वीजकाणहार, हारौ (हारी), वीजकाणियौ—वि०।

वीजकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीजकाईजणौ, वीजकाईजबौ—कर्म वा०।

वीजकायोड़ौ—देखो 'भिचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीजकायोड़ी)

वीजकियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीजकियोड़ी)

वीजखणौ, वीजखबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

उ०—भरड़ौ वीजखियौ, ओळखियौ मोनूं अबै। कुण जींदौ कहियोह, किण कारण मारू कहौ। —पा. प्र.

वीजखणहार, हारौ (हारी), वीजखणियौ—वि०।

वीजखिओड़ौ, वीजखियोड़ौ, वीजख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीजखीजणौ, वीजखीजबौ—भाव वा०।

वीजखियोड़ौ—देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीजखियोड़ी)

वीजगणित—देखो 'वीजगणित' (रू. भे.)

वीजड़—देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

वीजड़लो—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'वीजळी' (रू. भे.)

वीजड़हत, वीजड़हती, वीजड़हथ, वीजडहथी—देखो 'वीजळाहथ' (रू. भे.)

वीजड़हतौ, वीजड़हथौ—देखो 'बीजळाहथ (मह., रू. भे.)

वीजड़ाहत, वीजड़ाहती, वीजड़ाहथ, वीजड़ाहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

वीजड़ाहतौ, वीजड़ाहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे)

बीजड़ी-१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०-बगतरां ऊपरां तरवारिग्रां रा वाड त्रूटि नै रहिग्रा छै। जांणौ बादळा माहै बीजड़िग्रां रा सिला ऊपड़िग्रा पाखरां ऊपरै सार-धारां फूलधारां वाजी सु ठणाणणण जांणै परभात री भालर ठणकी, नरबगतर विधंस हुग्रा। —रा. सा. स.

बीजजळ, **बीजजुळ**, **बीजजूळ**, **बीजभळ**, **बीजभूळ**—देखो 'बीजूभळ'

उ०—संग्रांमां संभावै बीजजुळां कसां ग्राय सांमै, रेण ग्रेक थोड़ा नांमै थावै ग्रसी रीत। न मावै फिरंगी हिंदूथांन कीधौ पाय नांमै, ग्राप नांमै नाज खाधौ विजाई 'ग्रजीत'। —नवलजी लाळस

बीजड—देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

उ०-ऊभडां भडां नीभडा ग्रंग,बीजडां गडां वीछळां वंग। जमजडां घडां समवडां जंग, त्रिज्जडां भडां तडफडां तंग। —गु. रू. बं.

बीजण—देखो 'बींजणौ' (मह., रू. भे.)

उ०—फुला हळवी पाटो कुंवळी, बीजण इधक खिवांय। 'वील्ह' कहै गुर भाइयौ, करणी साच तराय। —वील्होजी

२ देखो 'बीजन' (रू. भे.)

बीजणी—देखो 'बींजणौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बीजणू, **बीजणौ**—देखो—बींजणौ' (रू. भे.)

उ०—ग्राप जुद्ध में कांम ग्रावौ, हूं सत करूं, पछै विमांण में बैस स्वरग में जासां जद ग्रपछरावां चमर करसी तिण रौ वायरौ लागसी ग्रौ बीजणौ हुसी ग्रबै बीजणौ कगवणनै ग्रौ बळै ग्रापरा बळ सारू है। —वी. स. टी.

उ०-२ ···स्रीमंत तणां चउबारां भलहलइं,जलद्रं सरीरि लगाडीइ, गुलाव तणा ग्रभ्यंग कीजइं, बावन्ना स्रीखंड घसीयइ, चउदिसीयइं वीजणां फिरइं, द्राक्षा ग्राबलीपांन कीजइं, कलमसालि तणा सीध-उरा करंबा कीजइं. ग्रच्छां कापडा पहरियइं लू ग्राहण्यां पांणी पीजइं। —व. स.

बीजणो, **बीजबौ**—देखो 'बींजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)

उ०—पांन ग्रारोगइ तै घणा, वनिता वीजइ वाय । ग्रंगि ग्रति ऊलट धरी, तिहुयण तेह न माय। —मा. कां प्र.

२ देखो 'बीजणौ, बीजबौ' (रू. भे.)

बीजणहार, हारौ (हारी), बीजणियौ – वि०।

बीजिग्रोड़ौ, बीजियोड़ौ, बीज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीजीजणौ, बीजीजबौ—कर्म वा०।

बीजन-सं. पु. [सं. वीजनः] १ चक्रवाक, चकोर पक्षी।

२ पंखे से हवा डालने की क्रिया।

३ देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)

रू. भे.—बीजण।

बीजपुरख, **बीजपुरस**, **बीजपुरुख**, **बीजपुरुस**-सं. पु. [सं. बीजपुरुष] किसी वंश का ग्रादि या मूल पुरुष।

बीजपूर, **बीजपूरक**—देखो 'बीजपूर' (रू. भे.)

बीजमन्त्र—देखो 'बीजमंत्र' (रू. भे.)

उ०—रिध सिध दियण कोयला रांणी, ग्राळा बीजमंत्र ब्रह्मांणी। बयण दियै मो ग्रविरळ वांणी, पुणां कीत जिम सारंगपांणी।
—हू. र.

बीजमारग—देखो 'बीजमारग' (रू. भे.)

बीजमारगी—देखो 'बीजमारगी' (रू. भे.)

बीजळ, **बीजल**-सं. पु.—१ पंखा।

२ देखो 'बीजळ' (रू. भे.)

३ देखो 'वीजळा' (रू. भे.)

उ०—१ जुध्र सीस पंडत धडाहं जोळा, बीजळ धक्क चरक्क वहै। गळिबांह लोळावट होय गळोवळ, गूथाबत्थ सुभट्ट ग्रहै।
—गु. रू. बं.

उ० – २ विढै वीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूंकळ कळियळ ए। बळिवंत ग्रतुळ बळ, जूटा चिहुं बळ (वळ) भळहळ दळ बीजळ ए। —गु. रू. बं.

उ०—३ बीजळ सेल गुरज घण बाजै, गाज त्रंबाळ सघण घण गाजै। ग्ररण वभक कोप धड़ उरियां,छकिया घाव कटारां छुरियां।
—सू. प्र.

उ०—४ बाप रै तखत बैठी, धारि छत्र जोम धारि । बीजळां दिलेस देस, मारि कीध थाळ वारि। —सू. प्र.

उ०—५ रीठ पड़ै धारूजळां, ग्रर धड़ डळां उघेड़ । करै खळां चहुवै वळां, दळ बीजळां निवेड़। —रा. रू.

४ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ सोर धीर···सम्मूह, बांण ऊच्छळै वळंता। वहै ग्राग वरजाग, वोम किरि बीजळ लंता। —गु. रू. बं.

उ०—२ वादळ दळ मेल खडग सभ बीजळ, कमंधां कांठळ फौज कर। घण गाजै गजसींग विरद धण, ग्राफळ मरै कंठीर यर।
—देवराज रतनू

उ०—३ पसवाड़ै वीजळ खिवै, हो जी, बै रौ पेट पींपळ केरौ पांन। है गवरल, रूड़ौ है नजारौ तीखौ है नैणां रौ। —लो. गी.

उ०—४ साकळा कळा चक्र साह, तुं ग्राद वीसहत नीमौ ताह। साकंबरी तुं हीज तुं कळा सोम, वीमळा भवर बीजळ गोम।
—रांमदांन लाळस

बीजळड़ी, बीजलड़ी—१ देखो 'बीजळ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळा' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ **बीजलड़ी**, धरा, वरजी ना जाय, वारी धरा वारी श्रो हजा, सावरा-भादवो श्रे चमकै बीजळी, जी राज। —लो. गी.

उ०—२ था री तो सतायी, गोरी का सायबा, आभा री **बीजलडी** होय जास्यां, म्हारा राज। थें धरा, होस्यो श्राभा केरी बीजळी, मारू थारो इंदरियो घररासी, म्हारा राज। —लो. गी.

बीजळसार—देखो 'बिजळसार' (रू. भे.)

उ०—चरखो तो लेल्यूं, भंवरजी, रांगलो जी, हांजी ढोला पीढो लाल गुलाल। तकवो तो लेल्यूं, भंवरजी, **बीजळसार** को जी श्रो जी म्हा री जोड़ी रा भरतार, पूणी मगा ल्यूं जी क बीकानेर री जी। —लो. गी.

बीजळहत, बीजळहती, बीजळहत्थ, बीजळहत्थी, बीजळहथ, बीजळहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजळहथौ, बीजलहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे.)

बीजळा, बीजला—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—राठौड रचेवा रणताळ, वांमंग डहै **बीजला** झाळ। बांधै कदील संधै विबांण, कोसीस भुजै दीना कबांण। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (नां. मा)

उ०—१ कसस्सै कंटळा, श्रांकुसां **बीजळा**। चमक्कै चप्पळा, बैरकां, बंबळा। —गु. रू. ब

उ०—२ खळहळां चलै रळतळां खाळ, **बीजळां** झळां बीमळां व्राळ। गूंछळां गळा गूंथळां गड्डु, सिघळां कळां सांकळां सड्डु। —गु. रू. बं.

बीजळाहत, बीजळाहती, बीजळाहत्थ, बीजळाहत्थी, बीजळाहथ, बीजळाहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजळाहथौ, बीजलाहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे.)

बीजळि, बीजलि, बीजळी, बीजली-सं. स्त्री.—१ वह भैंस जिसके स्तनों में एक ही सफेद रेखा या धारी हो। (अशुभ)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे)

उ०—पछट्टत **बीजळि** 'केहर' पांणि, सिलह बंध हेक करै घमसांणि। जुड़ै चहुंवै दळ रोद व्रजागि, खिवै घरा केहर' ऊपर खग्गि। —सू. प्र.

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ च्यारइ पासइ घरा घणउ, **बीजळि** खिवइ अगास। हरियाली रुति तउ भली, घर सपति, पिउ पास। —ढो. मा.

उ०—२ नख अहिरण धज नळी, ऱ्ळी बाजू पींडा चक। बजै नास बांसली, ताव **बीजळी** छळी तक। —सू. प्र.

उ०—३ ढोलउ जांण्यउ **बीजळी**, मारु जांण्यउ मेह। च्यारि श्रांख एकठि हुई, सयरां वध्यौ सनेह। —ढो. मा.

उ०—४ आरूढ पीलवांणा-ऐ, गजिंद-बाग पांणाए। घटा फवज्ज धूंधळी, चमक्कि कूंत **बीजळी**। —गु. रू. बं.

उ०—५ कुरजां रो टोळो, महेल्यां रो हवोळो साथ लीनां श्रे लागणां लोयणां देखि रिझवार अडवडै छै। वादळा मैं **बीजळी** को झळको, ज्यूं गुंगटा में टीको को पळको पडै छै। हसतां तो फूल झडै छै। इण भांति चालतां रिमझोळां री घमक पडै छै। —पनां

बीजाजळ, बीजाजुळ—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

उ०—विढै **बीजाजळ** गुडिया गज दळ, दमगळ हूंकळ कळियळ ए। बळिवंत अतुळ बळ, जूटा चिहुं बळ, (वळ) झळहळ दळ बीजळ ए। —गु. रू. बं.

बीजाझळ, बीजाझल—१ देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

२ देखो 'विंध्याचल' (रू. भे.)

उ०—नग सीसा गळ नीम, गरक असमां चूनागळ। बीझाझळ सिर वरण, विखम भुग्गजां **बीजाझळ**। —सू. प्र.

बीजाविक-सं. पु. [सं.] ऊट।

बीजियोड़ौ—१ देखो 'बींजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीजियोड़ी)

बीजु—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

बीजुळ, बीजुल—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—असपति राव चमकि श्रोद्रकियौ, खेड़ैचै वाही करि खीज। सुकरि श्राकास हूंत सेलारां, **बीजुल** विढण क वुही बीज। —केसोदास गाडण

बीजुळी, बीजुली—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—काळी कठळि **बीजुळी**, नीची खिवइ निहल्ल। डर भेदंती सज्जणां, ऊचेड़ंती सल्ल। —ढो. मा.

बीजूजळ, बीजूजल, बीजूझळ, बीजूझल—देखो 'बीजूझळ' (रू. भे.)

उ०—१ 'अजबौ' 'पतो' लियां पण उज्जळ,बैणाबत ग्रहियां **बीजूजळ** सकतावत छळि धणी सिघाळा, श्राया चांपा वंस उजाळा। —रा. रू.

उ०—२ वाहि वुहाय घणी **बीजूजळ**, तंडळ खगां करै ह्वां तंडळ।

इस प्रथमी सिर क्रीत उवारां, परणै ग्रपछर सुरगि पधारां।
—सू. प्र.

उ०—३ वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूं सर साबळ झळहळ ए। ग्रडडै कांछूसळ कुटकै कम्मळ, सोणी रळचळ खळहळ ए।
—गु. रू. बं

उ०—४ कळकळां दळां चहुवळां फाबै करण, धरै वार हेकल पाट-ऊधोर। तूटतौ जाय वीजूजळां तणौ ताव, जळां बाधां ज्युंही खळां चौ जोर। — महाराजा मांनसिंहजी रौ गीत

उ०—५ जवनांण दळै वीजूझळै, देख भलै कुळ देस रौ। 'इंद्रभांण' खगै वढ ऊजळै, मिळै जोत 'मुकनेस' रौ। —रा. रू.

वीजोग—१ देखो 'बिजोग' (रू. भे)

२ देखो 'विजोग' (रू. भे.)

३ देखो 'वियोग' (रू. भे.)

उ०—राज कुंवर स्रव वरणव्या, सयल सभा साभळी हो संजोग। गगा फळ 'नरपति' कहइ, पुत्र कळत्र नवि हुवई वीजोग।—बी. दे.

वीजोरउ—देखो 'बीजोरौ' (रू. भे.)

वीजोरड़ी, वीजोरडी—देखो 'बीजोरी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—कणवीर पकरणी केतकी, वीजोरडी नारेळ। कंबोई कुदाळी थाईसरस, सइंवळ वरण तबोळ। —रुकमणी मंगळ

वीजोरी - देखो 'बीजोरी' (रू. भे.)

वीजोरौ—देखो 'बीजोरौ' (रू. भे.)

वीजौ—देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

उ०—१ जद जागूं तद एकली, जब सोऊं तब बेल। सोहणा, थै मनै छेतरी, बीजो त्रीजी हेल। —ढो. मा.

उ०—२ उवै घोडी ग्रांणी तौ थै बडा धाड़वी। बीजौ तौ धाड़ा घणा ही करौ छौ छोटा मोटा। इतरौ कहतां वेउ जणां उठि नै चळू करै नै बोलीमा। चळू भरि पांणि नै कहियौ। जै उवै घोड्यां ग्रांणा तौ एथ ग्राइ नै जीमा नहीं तौ ए कलंक माथै उदक ग्रावण।
—चौबोली

उ०—३ वधाईदार नुं रावजी कड़ा बगसिया। झालीजी मोती दीया कुंवर रा मोहलां सिरपाव दीया। बीजौ पण कांमदारां साहुकारां राज रै रांहणै ग्रमरावां ठाकुरां सारां वधाई दीवी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री. वीजी)

वीझण, वीझणउ, वीझणौ—देखो 'बींजणौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ छांटी पांणी कुमकुमई, वीझण वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री ग्रागलि विललाइ। —ढो. मा.

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति उण ब्रागाइत मांहै ग्रीखम रित रा विलाइती वालै रा खस खांनां, ऊंची ठौड़ रा बंगला, रावटी बालाबंध रा ठांसा रा गूंथिग्रा भांति भांति खस-खांनां वणाया छै। घणै सीतळ पांणी सूं सींचिग्रा थकां वीझणां वाइ झांपां सूं हींफा खाइ रहिग्रा छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ वावळ ग्रागै वीझणौ, की पावै सनमांन। तूझ रीझ ग्रागै तिसौ, 'देवा'! जग चौ दांन। —बां. दा.

उ०—४ बाफतां रा सेलांरा रूमाल केसरिया छै सू माथां ऊपर राखजै छै। वीझणां सूं वायेरा लीजै छै। किण भांत रा छै? लाहोर रा कियाड़ा छै। रूपै री डाडो जरी सूं मढी, टुकड़ीं री झालरी। —रा. सा. सं.

वीझणौ, वीझबौ—देखो 'बींजणौ, बींजबौ' (रू. भे.)

उ०—छांटी पांणी कुमकुमइ, वींझण वीझ्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री ग्रागलि विललाइ। —ढो. मा.

वीझणहार, हारौ (हारी), वीझणियौ—वि०।

वीझिग्रोड़ौ, वीझियोड़ौ वीझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीझीजणौ, वीझीजबौ—कर्म वा०।

वीझवण, वीझवन—देखो 'वींझवन' (रू. भे.)

उ०—ग्राडा डूंगर वीझवण, वीच माछळा गयंद। सीत कहरै वंदरा, किण्य विध्य लोपियौ संमंद। —मेहोजी गोदारौ थापन

वीझांणमाता–सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

वीझाजळ, वीझाजल, वीझाझळ, वीझाझल—१ देखो 'बीजूझळ' (रू. भे)

२ देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—नग सीसा गल नीम, गरक ग्रसमां चूनागळ। वीझाझळ सिर वणै, विखम भुरजां वीजाझळ। —सू. प्र.

वीझावण, वीझावन—देखो 'वींझवन' (रू. भे.)

उ०—सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ ग्रगनी सूं वळतां थकां वीझा-वन हाथिग्रां री पेटरी छाया सूता विसरांम करै छै। भुयंग सरप नीसरिग्रा छै। सौ लू नैं तावड़ै री ग्रगनि सूं बळता थकां द्रोड़ि द्रोड़ि नैं हाथिग्रां रै सीतळ सूंडाहळा मांहै पैसि पैसि रहिग्रा छै।
—रा. सा. सं.

वीझासणि, वीझासणी—१ देखो 'मावलियां'।

उ०–भोपौ कहै भूत छै,लोभ वीझासणि लीधौ। जंत्र मंत्र रा जांण, कहै कोइ कांमण कीधौ। —ध. व. ग्रं.

२ देखो 'ग्रावड़'।

वीझोड़णौ, वीझोड़बौ–क्रि. स.—काटना।

उ०—खाजरू आए हाजर हुआ छै, रावताला नूं कहिआ छै। ठाकरै खाजरूआं नै ठरका करो। तिकै रावताला घणीं केसर नैं घणो कसनागर अंतर सांधे मांहै गरकाब हुआ थका। उआं सीरोहीआं खाजरू वीझोड़ीजै छै। —रा. सा. सं.

वीझोड़णहार, हारौ (हारी), वीझोड़णियौ—वि०।

वीझोड़िओड़ौ, वीझाड़ियोड़ौ, वीझोड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीझोड़ीजणौ, वीझोडीजबौ—कर्म वा०।

वीझोडणौ, वीझोड़बौ—रू० भे०।

वीझोड़ियोड़ौ–भू. का. कृ.—काटा हुआ।

(स्त्री. वीझोड़ियोड़ी)

वीटक–सं. पु. [सं.] पान का बीड़ा।

वीटणौ, वीटबौ—देखो 'वींटणौ, वींटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गाज नगारा चहू गमां, धर माग रुकांणी, चड़िया धूंस बहादरां, बंधै किरवांणी। देस महेवा वीटिया, त्रिविध तुरकांणी। रावळ 'माल' महाबळी, आगळ हिंदवांणी। —वी. मा.

उ०—२ कंकर पथर वीटिया कुंनण, जिण तिण पूछै तोछ जळ। 'सुरावत' तुंहै कण साचौ, आभुखण नव कोट इळ। —सिवनाथसिंघ रौ गीत

उ०—३ हिरणां नह मावै हियै, सड़बौ दीठां स्वास। वाघ घणां मिळ वीटियां, तौ पिण तिल नह त्रास। —बां. दा.

उ०—४ 'चंदण' चंदण वीटियौ, अन भीखग उरगांह। इण कारण आया नही, चारण पंखी तांह। —बां. दा.

उ०—५ खाग धुबंती मारवै, वीट लियौ जोधांण। सज्झै कोट मळेछ दळ, वज्जै बांण कबांण। —रा. रू.

उ०—६ विधि विधि विलखां वचन कहइ, वेलिइ वीटियां व्रक्ष। स्नेह पनुतां अवनि तटि, यम चुहुटाडइ चक्ष। —मा. कां. प्र.

उ०—७ एहवौ धातकीखंड ए, परिदखिणा परकार। आठ लख जोयण वीटीयौ, समुद्र कालोदधि सार। —ध. व. ग्रं.

उ०—८ सुंदर स्यांम सरीरं, बाधौ कट रांम पीत पीतंवर। काळै वादळ सूं कै, वीटांणी वीज वरसाळै। —र. ज. प्र.

वीटणहार, हारौ (हारी), वीटणियौ—वि०।

वीटिओड़ौ, वीटियोड़ौ, वीट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीटीजणौ, वीटीजबौ—कर्म वा०।

वीटली, वीटलौ—१ देखो 'वींटळी' (रू. भे.)

उ०—१ उठां सुं पाछा मुरडिया, सौ अजमेर आया। वीटली सभी तिण ऊपरै भंडारी विजैराजजी नै राव अमरसंघजी कुसलसंघोत ऊदावत वगेरै हरभांण भगवांनदासौत राठौड़ जगतसंघ तेजसंघोत वगैरै आसांमी जद थी। —रा. वं. वि.

उ०—२ पण उणरी चौड़ै लड़णै री आसंग हुई नहीं। तद वरसघ नू लालच देय अजमेर बुलायौ, अरु खातरी करनै वीटली चाढियौ। पीछै वदोवस्त कियौ। —द. दा.

उ०—३ इण भांत सारा नूं सीख सलाह दे वहिर हुवौ सो पहलां तौ अजमेर गयौ सो पहलां तौ खाजेजी री जारत कीवी, देग कवूल कीवी। फेर वीटली चढ मीरांजी री जारत कीवी। —सूरै खींवै कांधळौत री बात

२ देखो 'वींटली' (रू. भे.)

३ देखो 'वींटणी' (रू. भे.)

४ देखो 'वींटी' (रू. भे.)

वीटवौ–वि.—घुमावदार, लपेटेदार।

उ०—सात हमायचा भांग, सात सुराई सराब की, सात सीकां जमनाजळ री, हलवांन पींडा सांत, वीटवा सूळा सराब वस्त भाव मांहै घात उभौ छै। —तिमरलिंग पातसाह री वात

रू. भे.—वीटीवौ।

वीटिका–सं. स्त्री [सं. वीटि] १ पान की वेल।

२ पान का बीड़ा तैयार करने की क्रिया।

३ चोली की गांठ।

४ छोटा पान का बीड़ा।

रू. भे.—वीटी।

वीटियोड़ौ—देखो 'वींटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीटियोड़ी)

वीटी—१ देखो 'वींटी' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सोवन वीटी रयणै जडी, मुझ नाचंतां देउलि पडी। प्रीतिवचन प्रांमी मन माहि, महुतउ पाछउ वलिउ उछाहि। —हीराणंद सूरि

२ देखो 'वीटिका' (रू. भे.)

वीटीजणौ, वीटीजबौ–क्रि. अ.—१ मादा टिड्डी का ऋतुमती होकर गर्भ धारण करना।

वीटीजियोड़ी–भू का. कृ. (स्त्री.) १ ऋतुमती होकर गर्भ धारण की हुई (मादा टिड्डी)

वीटीदार–सं. पु.—विशेष खुदाई वाला, अर्द्ध मंडलाकार पत्थर।

वीटीवौ—देखो 'वीटवौ' (रू. भे.)

उ०—सूनमचा किण भांतरा छै? वीटीवा, चोगांनिया, घणै वनातरा लपेटिया, सालूरा लपेटिया, बोयदार रा मढिया, चैतरा, कलाबूत रै कांम रा, सोनै रूपै रै बळां रा, रूपै रा कुलाबा लागा

थका, सोनै री टूटी, रूपै री चिलम, चिलमपोस छै। —रा. सा. सं.

बीटुळी, बीटुली—१ देखो 'बींटळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बींटणी' (रू. भे.)

३ देखो 'बींटी' (रू. भे.)

४ देखो 'बींटली' (रू. भे.)

उ०—सकती बांधै **बीटुळी**, ढीली मेल्है लज्ज। सरढी पेट न लेटियउ, मूंध न मेळउं अज्ज। —ढो. मा.

बीटोरौ—देखो 'भींटोरौ' (रू. भे.)

बीटौ-सं. पु. [सं. वीटा] १ लकड़ी के डंडे से खेला जाने वाला खेल। (प्राचीन)

२ देखो 'वींटौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बींटौ' (रू. भे.)

उ०—तेज मैं नाहरखां नाहर सै हाथूं और 'अमरेस' गहै आसमांन बाथूं। 'प्राग' के जे न्याती रोकै नाग की सी नांई, सेल साहेटवाळे त **बीटा** देत बांई। —रा. रू.

बीठ्ठल, बीठ्ठल—देखो 'विट्ठल' (रू. भे.)

बीठ्ठलनाथ—देखो 'बिट्ठलनाथ' (रू. भे.)

बीठ—देखो 'विस्ठौ' (रू. भे.) (उ. र)

बीठनि-क्रि. वि.—अन्दर, में।

उ०—नर नार उच्छव सेव निरखै, देव दूदंभि वज्जए। वांटंत नव गुळ सहर **बीठनि**, राज अविचळ रज्जए। —रा. रू.

बीठळ, बीठल—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ लिखमीं नां हर कुण लियै, कुण जीपै करतार। कंटक मारण कारणै, **बीठळ** कीयो विचार। —पी ग्रं.

उ०—२ आदि विस्नु नइं आदि माया, हूआ अंचळ गठि। मधु पुरख हथलेवड़ो. वरमाळ **बीठळ** कंठि। —रुकमणि मंगळ

उ०—३ आभ गाभ ती नांखियौ, धरा लीयौ सिर झल। हरीया धर सिर धूणियौ, कर गहियौ **बीठल**। —अनुभववांणी

उ०—४ तइ ब्रह्मा भल भोलव्यु, संभु कीउ तप भंग। ब्रह्मचारि **बीठल** करिउ, सोल सहस्रह संगि। —मा. कां. प्र.

उ०—५ दीनां लंका जे हाथां न कजे, दीधा जग सारो जांणे। वेदां भेदां धाता **बीठळ**, वारंवार रटै वाखांणे। —र. ज. प्र.

बीठळनाथ, बीठलनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू. भे.)

उ०—कै जम नांम तणौ तन सज कर, भै जम हूं डर डर मत भाजै। किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां, **बीठळनाथ** अनाथां वाजै। —र. ज. प्र.

बीठली—१ देखो 'बींटणी' (रू. भे.)

२ देखो 'बींटी' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'वींटली' (रू. भे.)

४ देखो 'बींटली' (रू. भे.)

उ०—संवत१७७७ जेठ माहै अजमेर दाखल हुवा। **बीठली** लीनी, पातसाही थांणौ सो उतार दीनौ। तिण ऊपरै पातसा महमदसाह बाइसी मेली निबाब मुदफरखां। —रा. वं. वि.

बीठळौ, बीठलौ—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)

उ०—१ मोकूं लीन्है जात है, ग्राह नीर कै मांय। बाहर करवा **बीठळा**, अजू न आवौ कांय। —गजउद्धार

उ०—२ मन बुद्धि चित्त अहंकार मति, समरंति तनां त्रेवइ सकति। रहमांण तुहारौ अटल राज, **बीठला** हिमैं सिणगार वाज। —पी. ग्रं.

उ०—३ भाग तणां भांमणा ल्यां भूधर दुध भंजण, विट्ठलां ना **बीठला** मुगिति सारूप समपण। साधां नां साजोति रांक सालोक लियै रस, सांमी मुगिति समीपि मुझ समपौ जोडां जस। —पी. ग्रं.

उ०—४ वंस अजुआळ प्रतिपाळ थै **बीठला**, रांमचंद राजि मुर भुवण राईआ। पुरांणा डोकरा अरज सांभळि परी, भांजिहौ भांजि भेंचक भाईया। —पी. ग्रं.

बीठ्ठळ, बीठ्ठल—देखो 'विट्ठल' (रू. भे.)

उ०—१ रिखव नाभ सुत निमो अलख अणजीत अणंकळ, ब्रह्मा सेस महेस दत जोगी थारा थळ। इसौ आप अविधूत जिको अन सोईया जायौ, **बीठ्ठल** सां वादतै, गरब गोरखि गमायौ। —पी. ग्र.

उ०—२ भरथ पिता दुख भाळि, हुऔ **बीठ्ठळ** वनवासी। सरगि गिऔ दसरथ, अनंत कीधौ अविणासी। —पी. ग्र.

उ०—३ **बीठ्ठळ** विसवनाथ धन जदपत केसव स्रीवरं, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहरं। अविगत आदि जुगाद उपावण अकळ अपंपर, समरि समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसरं। —पिं. प्र.

उ०—४ मछ कछ वराह माहव, नारसिंघ अनिंदयं। वेसवांण दुझ्झ **बीठुल**, रांमचंद निरंदयं, कांन्ह बुद्ध कलकि केसव, भोम टाळण भारयं। —पिं. प्र.

बीठ्ठळनाथ, बीठ्ठलनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू. भे.)

बीठ्ठलु, बीठ्ठलु—देखो 'विट्ठल' (रू. भे.)

बीठ्ठलुनाथ, बीठ्ठलुनाथ—देखो 'विट्ठलनाथ' (रू. भे.)

बीठौ-वि.—वेष्टित, घिरा हुआ।

उ०—विराजै नगां ओप सूं रूप **बीठो**, दळां नाथ स्रीनाथ रो रूप

दीठो । वर्ण सांभळो गात भीणं वसन्न, तिसो भूखणं जोत मोती रतन्न । —रा. रू.

२ खराब ।

वीडंगांण—देखो 'विडंग' (रू. भे.)

वीडरणौ, वीडरबौ-क्रि. स.—क्रोध करना, गुस्सा करना, क्रोध में विकराल रूप धारण करना ।

वीडरणहार, हारौ (हारी), वीडरणियौ—वि० ।

वीडरिप्रोड़ो, वीडरियोड़ो, वीडरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वीडरीजणौ, वीडरीजबौ—कर्म वा० ।

वीडरियोड़ो-भू. का. कृ.—क्रोध किया हुआ, गुस्सा किया हुआ, क्रोध में विकराल रूप धारण किया हुआ ।

(स्त्री. वीडरियोड़ी)

वीडल-सं. पु.—रस्सी के छोर पर लगाया जाने वाला काठ का छोटा टुकड़ा ।

वीडवसदेस-सं. पु.—एक प्रदेश विशेष । (प्राचीन)

उ०···वीडवसदेस ग्रांम सहस्र ७०, गुजरात ग्रांम सहस्र ७०, पारीथतदेस ग्रांम सहस्र ७०, मालवा ग्राम लख १८ सहस्र ९२, गंगा पारदेस ग्राम सहस्र २४, जेजाहूति सहस्र २४, कुंकण सहस्य ६, मलयदेस ग्राम लख १, । —व. स.

वीडांणी—देखो 'विडांणी' (रू. भे.)

वीढ—१ देखो 'भीड़' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ अगनि में बांण छूटा असंख, वळी वीढ चिहुंवै वळां । पछिवांण हूवौ पूठी रुखौ, 'गजण' तांम दिल्ली दळां । —गु. रू. बं.

उ०—२ पानां मुख वाजित्र हिलै वांनां वैरक्कां, मेघ रंग मातंग वीढ ऊढंग कटक्कां । पली जेझ सादळां हिली फौजां घमसांणां, व्योम रजी वित्थरी धमस वज्जी केकांणां । —रा रू

वीढण—देखो 'विढण' (रू. भे.)

वीढणौ, वीढबौ-क्रि. स.—१ लपेटना, लिपटाना ।

उ०—दही री रजबौ दीजै छै । तरगसां मांहां सीकां काढजै छै । वेवड़ां ठीहां चाढजै छै बीच खोसरी भरती दीजै छै । सूतसु वीढ सीकां ऊपर चाढजै छै । आडै हाथ डोरा दीजै छै इण भांत सूळां वर्ण छै । वडी देवगिरी थाळी में उतारजै छै । —रा सा. सं.

२ देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे)

उ०—वीढण सगरांम री हांम बाकारतां, माहा दोय जांम होय गइ मौने । जोधपुर जहर रा वीज वाया जिकै, तिकै फळ चखाउं आव तौने । —सैरसिंग कोळसिंघ री गीत

३ देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वीड़णौ; वीड़बौ' (रू. भे.)

वीढणहार, हारौ (हारी), वीढणियौ—वि० ।

वीढिप्रोड़ो, वीढियोड़ो, वीढ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वीढीजणौ, वीढीजबौ—कर्म वा० ।

वीढियोड़ो—१ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ ।

२ देखो 'विढियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'वेढियोड़ो' (रू. भे.)

४ देखो 'वीड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री वीढियोड़ी)

वीण-सं. स्त्री. [सं. वीणा] १ सपेरों के बजाने का एक फूंक वाद्य विशेष, महुवरि ।

उ०—तद काया हुय जोगी हुवा । मुद्रा घाती । गुजरात गया । ग्रै प्रोहित दीदारु, सखरा पण । अर वीण आछी वजावै । तद सहर मांहै वखांण हुवौ,—जु जोगी पण भला, वीण आछी वजावै । —नैणसी

२ बांसुरी, मुरली ।

३ भैरूंजी के भौंपों के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष ।

४ मसक से मिलता जुलता एक फूंक वाद्य विशेष ।

५ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ हंस गवण कदळी सुजंघ, कटि केहर जिम खीण । मुख ससहर खंजन नयण, कुच स्रीफळ कंठ वीण । —अग्यात

उ०—२ सहज मंदळ जित धमकही, वाजै अनहद वीण । नोरंगी बांणौ तंन रतंन, साध भगत लौलीण । —आलमजी

उ० —३ चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचंग, विचि हीण । मंदिर बोली मारुवी, जांणि भणक्की वीण । —ढो. मा.

रू. भे.—बीण, वीन, वेण, वेणा, वेणु, वैणू, वैण ।

अल्पा;—वेणका

वीणउसिउ, वीणउसीउ-सं. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०·········वीणउसीउं चीणउसीउं मलउसीउं आउचीयउं मूगनउ मयउं मंगलिकं मेदियउं सीलउरं सिंहलउरउं वइरागउं हीरागरउं फुल्लयागरउं पूतलीउं बहूमूलं घूणोलियं मीणीयं कालं फूटडउं रातउ फूटडउ सूपउती मेघावलि मेघडंबर पद्मावलिपदमोत्तर इत्यादि वस्त्रांणि । —व. स.

वीणकार-सं. पु—गैवैयों के अन्तर्गत एक भेद जो बीन वजाने का पेशा करते हैं । (मा. मा.)

रू. भे.—वीणाकार, वीणिकार ।

वीणणौ, वीणबौ-क्रि. स.—१ देखो 'बिणणौ, बिणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सु पाछिली पहर छै। आ भूलि सांपड़ि नैबाजोट ऊपरि बैठी छै। छूटा केस छै। उवांहणौ लाल घाघरो छै। ढीलै कसणै कांचवो छै। बैठी थाळी में चावळ वीणै छै।
—कांवळै जोईयै नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ तठा उपरायंत इलूरा री कूंडी तेजवळ रौ घोटौ धोय तयार कीजै छै। भांगण वीण मोकळा पांणी सूं धोयजै छै। फेर कोरी हांडी में रांधजै छै। तठा पछै घोटजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ वसंत पंचमी पछै, नीकळै काची केळां। कूंपळ दांतण तणी, रंगीली रुत री वेळां। फागण उतरै धीव, गवरज्या पूजण चावै। वीण लासवा फूल, चढा चंद्रायण गावै। —दसदेव

उ०—४ तसु रंग वास तसुवास रंग तण, कर पल्लव कोमळ कुसुम। वणि वणि माळिणी केसरि वीणति, भूली नख प्रतिबिंब भ्रम।
—वेलि

३ देखो 'बणणौ, बणवौ' (रू. भे.)
४ देखो 'बुणणौ, बुणवौ' (रू. भे.)
वीणणहार, हारौ (हारी); वीणणियौ—वि०।
वीणिग्रोड़ौ, वीणियोड़ौ, वीण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वीणीजणौ, वीणीजबौ—कर्म वा०।

वीणत, वीणती—सं. स्त्री. [सं. विनतिः] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना।
उ०—१ तूं थो नोज मरै ए म्हारी धीवड़ी, सूरज तौ सुणेला थारी वीणती, आ तौ बेमाता सुणेला पुकार, लाय दीनी भंवर चीणोटियौ। —लो. गी.
उ०—२ नीं तो म्है ऊंदरा नै घरै निवतनै लायौ अर नीं म्है मिन्नी नै ऊंदरा मारणा सिखाया। थांरा भगवांन आगै जाय वीणती करौ जको जिनावरां नै जीव मारणा सिखावै। थांरै पाल्यां जै मिन्नी मांनती व्है तौ उणनै मनावौ। —फुलवाड़ी
उ०—३ तरै जैतेजी नूं वीरमदे कहाड़ियौ—राव सुं वीणती करो नै म्हां कन्हां राव रा हीड़ा करावौ। ज्यूं थै चाकरी करो छौ त्यूं म्है ही राव री चाकरी करां। —राव मालदे री बात
२ नम्रता, विनम्रता।
रू. भे.—विणति, विणती, वीनती।
अल्पा.,—वीनतड़ी

वीणधर—देखो 'वीणाधारी' (रू. भे.)

वीणवणौ, वीणवबौ—१ देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिणणौ, बिणबौ' (रू. भे.)
वीणवणहार, हारौ (हारी), वीणवणियौ—वि०।
वीणविग्रोड़ौ, वीणवियोड़ौ, वीणव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वीणवीजणौ, वीणवीजबौ—कर्म वा०।

वीणवियोड़ौ—१ देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बिणियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीणवियोड़ी)

वीणां—सं. पु.—१ कपास का पौधा व कपास का डोडा।
उ०—ऊपर छोंतरा, गोंहू, तरकारी हुवै। पांणी मीठौ। वीणां फागुणियां-मूंग, जवार, सेलड़ी सो हुवै छै। —नैणसी
२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

वीणा—सं. स्त्री. [सं.] १ प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध तारवाद्य।
(अ. मा.)
उ०—१ वीणाधर रहजांई गावै किण भांत, तराज पर नह आवै नारद वीणा री तांत। जिणनै सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरंग ओ भमंग वन पाताल सूं आवै। —रा. सा. स.
उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति अनेक राग रंग बधाई वांटीजै छै। राय अंगण धोलहरै गेहणी घणां मंगळाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै। छत्रीस वाजां पंच-सबदा वाजै छै। तांहरा नांम तंती, वीणा, किंनरी, तंबूरौ, नीसांण एतौ पांच सबदा आगै छत्रीस वाजां रा नांम कहै छै। —रा. सा. सं.
उ०—३ ताल अदंग तंबूरे, सुर वीणा वीणाधरि सुंदरि। हरखत नृपत हजूर; सभै सलांम अलाप कीध सुर। —सू. प्र.
२ बीन।
३ निसांणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ७ गुरु और ६ लघु वर्ण होते हैं।
उ०—कीला, लीला, थिरा, कुंआरि, वीणा, रंगी, चंगी, वारि। विद्या, माळा, बाळा, बांम नीसांणी रा बारा नांम। —पि. प्र.
४ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम। (SIS)
५ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। (व. स.)
६ विद्युत, बिजली।
रू. भे.—वींण, वींन, वीण, वीन, वीणां, वीणा, बेण, बेन, वैंण, वैंन, वैण, वैन, वींण; वींन, वीण, वींणां, वेण, वेणा, वेणु, वेणू, वैंणा, वैन, वैण, वैणा।
अल्पा.,—वेणका, वेणका।

वीणाकार—देखो 'वीणकार' (रू. भे.)
उ०—दक्षिण दिसि तूरी रहिउ ;हीण अंगूठउ हत्थि। वीणाकार वाइ सुसर, तास दंत दोई नत्थि। —मा. कां. प्र.

वीणादंड—स. पु. [सं.] वीणा नामक तारवाद्य के मध्य भाग का लंबा दंड, प्रवाल।

वीणाधर, वीणाधरि, वीणाधार, वीणाधारी—वि. [सं. वीणाधारिन्] (स्त्री. वीण धारिणी)
१ वह जो वीणा रखता और बजाता हो।
उ०—ताल अदंग तंबूरं, सुरवीणा वीणाधरि सुंदरि। हरखत नृपत हजूरं, सभै सलांम अलाप कीध सुर। —सू. प्र.

उ०—२ वीणाधर सहजांई गावै किण भांत, तराज पर नहं आवै नारद वीणा री तांत। जिणनै सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरंग औ भमंग, वन पाताळ सूं आवै। —रा. सा. सं.

सं. पु.—१ नारद।

२ भैंरूजी के पुजारी, 'भोपे'।

सं. स्त्री.—३ सरस्वती।

रू. भे.—वीणधर।

वीणानिनाद—सं. स्त्री. [सं.] स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक।

उ०—ग्रहोपचार, व्याकरण, परिनिराकरण, रधन, केसबंधन **वीणानिनाद**, वितंडावाद, अंकविचार, लोकव्यवहार, प्रहेलिका, स्त्री चतुरसस्टिकला। —व. स.

वीणापांणि, वीणापांणी—सं. पु. [सं. वीणापाणि] १ नारद।

२ भोपा।

सं. स्त्री.—३ सरस्वती।

रू. भे.—वेणापांणि, वेणापांणी।

वीणाप्रसेव—सं. पु. [सं. वीणा+प्रसेव] वीणा में लगी वह गट्टी जिसे आगे पीछे करके तार से निकलने वाले स्वर को तीव्र या मंद किया जाता है।

वीणार—सं. पु.—१ प्रत्येक चरण में प्रथम एक तगण और बाद में सात भगण अंत में एक लघु और एक गुरु सहित २६ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

उ०—प्रथम तगण जगगण संपत, लुघ गुर सारां लारि। आखर बीस छ अै वहां, वदां छंद **वीणार**। —पिं. प्र.

२ घुड़सवार?

उ०—१ भड तुरंग **बीणार**, चडै माझी गज केसर। फौज लगै फूलियै, दीध परराठां पस्सर। —गु. रू. बं.

उ०—२ त्रीस हजार तुरंग नर, मारू धर **बीणार**। धड़हड़ियौ मंडळ धरणि, चडियौ राजकुंवार। —रा. रू.

वीणावंस—सं. पु. [स. वीणावंश] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—······देहरि दंडकलस आंमलसारा सोना तणा जलकइ, जलदिरिणि कुलवधू तणै पागि नूपर खलकइं तडिइं कीरत्तिस्तंभ दीसइं, लोकहियां विहसइं, मेघ मल्हार राग गाइय, **वीणावंस** मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ। —व. स.

वीणावती—सं. स्त्री. [सं.] वीणावादिनी सरस्वती।

वीणावाद, वीणावदक—वि. [सं. वीणा+वादः व वादकः] वीणा बजाने वाला।

वीणावादनी, वीणावादिनी—सं. स्त्री [सं. वीणावादिनी] वीणावती सरस्वती।

वीणासर, वीणासुर—सं. पु. [सं. वीणा+स्वर] वीणा को बजाने से उत्पन्न ध्वनि, वीणा की झंकार।

उ०—**वीणासुर** सहुए करचौ, तंत उतारचा राग। पिण किणही ना नाद सु, कुमरी चित्त न लाग। —स्रीपालरास

वीणास्य—सं. पु. [सं. वीणा+आस्य] वीणा रखने वाला, नारद-मुनि।

वीणाहस्त—सं. पु. [सं वीणा+हस्त] शिव, महादेव।

वीणि—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ थळ माथै निवांण करि, नर कांय लीडै नीर। नाळै खोळै न मिळै, रीणायर **वीणि** हीर। —वील्होजी

उ०—२ भोजन दांन सुभाव विणि, दिल कपटी अंतरि दिवै। जप **वीणि** जमवारो इकरथ, सुरिजन कवि साचौ कवै।

—सुरजनदास पूनियौ

२ देखो 'वीणी' (रू. भे.) (उ. र.)

३. देखो 'वेणी' (रू. भे.)

उ०—एक नांखई एकाउली हार, एक ऊतारइ सवि सिणगार। तांणइ **वीणि** विछोडइ दोर, एक लूम्या दिसइ वंदोर। —कां. दे. प्र.

वीणिकार—देखो 'वीणाकार' (रू. भे)

उ०······चांमरधारिणी वारविलासिनी महल्लकल्लिका उपाध्याय गायन बइकार आलविणिकार **वीणिकार** वंसकार उतिकार मांनताळकार वडाउजिय पखाउजय पाटहिकप्रमुख राजलोक पौरलोक चक्रवालि। —व. स.

वीणियोड़ौ—१ देखो 'बिणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वणियोड़ौ' (रू. भे)

३ देखो 'वुणियोड़ौ' (रू. भे.)

वीणी—सं. स्त्री. १ दो कपाटों को मजबूत बंद करने के लिए उनके पीछे लगाई जाने वाली अर्गला।

२ चौकोर छिद्र करने का एक कीला विशेष।

३ हाथ की कलाई।

४ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

रू. भे.—बीणी, बेणि, बेणी, वीणि।

वीणौ—सं. पु.—एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

२ स्त्रियों के शिर पर चूड़ामणि (बोर) के नीचे लगाया जाने वाला प्लास्टिक का टुकड़ा, जो चूड़ामणि (बोर) के शिर में गड़ने से बचाने हेतु लगाया जाता है।

३ स्त्रियों के शिर के आभूषण टीके का ही दूसरा नाम।

रू. भे.—बीणौ, वेणौ, वैणौ।

वीत–सं. स्त्री. [सं. वीतं] १ महावत द्वारा हाथी को अंकुश मार कर पैरों से मारने की क्रिया। (डि. को.)

[सं. वीत:] २ हाथी, घोड़ा या सैनिक जो युद्ध के अयोग्य हो।

वि. [सं.] ३ स्वतंत्र या मुक्त किया हुआ. ४ गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ. ५ पसद या स्वीकृत किया हुआ।

६ युद्ध के अयोग्य।

रू. भे.—'बीत'

७ देखो वित' (रू. भे.)

उ०—१ हंसियौ जग आसक हुए, वसियौ खोवण वीत। रसियौ नागी रांड सूं, फसियौ होण फजीत। —बां. दा.

उ०—२ हाजर हिंदुवै तुरक, लियै न पर भुंइ लोडि। चींत वटावण हेक तूं, बीत वटावण कोडि। —गु. रू. बं.

उ०—३ पेसकसी मिर आदरै, बंधै कर परवांण। पाय लगौ 'अगजीत' रै, बीत धरै चहुवांण। —रा. रू.

उ०—४ वांटो वीत आपणें वारै, लाछ नहीं हालैला लारै। थिर औ दिन नह रहसी थारै, तू नर क्यों न ईसवर चितारै। —बक्सीरांम लाळस

वीतक, वीतग–वि.—बीता हुआ, गुजरा हुआ।

उ०—१ हूं तुज आगळ सौ कहूं कन्हैया! वीतक दुख री वात रे। —गिरधारी लाल

उ०—२ सेत्रुंजै नायक वीनति सांभलो, स्रीरिखहेसरु स्वांम। दीनदयाल तुम्हांनै दाखिवुं, अंतर वीतग आंम। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ तुं ग्यांनी तौ पिण तुझ आगै, वीतग कहियै बात जी चौबीसै दंडके हुं फिरियौ, वरणुं तेह विख्यात जी। —ध. व. ग्र.

उ०—४ तसु जातिपांति नहीं कांई, नहीं कोई जेहनै भाई, वलि बाप न काई माई। हुं तुझ नै आवी मिलियौ, वीतग दुख सहु टलियौ, घर आंगण सुरतरु फलियौ। —वि. कु.

वीतगराग, वीतगरागी—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

उ०—मेरू विचैकरि पूरब पच्छिम दोइ विभाग, सोलह सोलह विजय तिहां विचरै वीतगराग, सासतै चौथै आरै तारै स्री अरिहंत, एहवै महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत। —ध. व. ग्रं.

वीतणौ, वीतबौ—देखो 'बीतणौ, बीतबौ' (रू. भे.)

उ०—तण न्रप पुंज सथांनक तीजै, वीरचंद्र राजा वरणीजै। इक निस भाग वीतियां आधौ, लगि अनुराग सुपन न्रप लाधौ। —सू. प्र.

उ०—२ वीतां अधूरां वार पूरां वेध सूरां वच्चए, सेलैं प्रहारं धार सारं मार मारं मच्चए। वग्गा खडग्गै दुहुं वग्गै काळ रग्गै वीरयं, अच्छरां उमंगै दूर अंगै चाव रंगै चीरयं। —रा. रू.

उ०—३ पूत पिता एकै थया, थै चढ जावौ देस। बोलां कोलां वोलिया, वीतौ बयण विसेस। —रा. रू.

वीतणहार, हारौ (हारी), वीतणियौ—वि०।

वीतिओड़ौ, वीतियोड़ौ, वीत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीतीजणौ, वीतीजबौ—भाव वा०।

वीतद्वेख, वीतद्वेस–वि. [सं. वीतद्वेष] द्वेष रहित, बिना द्वेष का।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वांमीजी द्रस्टांत दियौ। किणहि डावरा रै माथा में दीधी। जद तौ लोक उण नैं ओलंभौ देवै। भला आदमी छोहरा नां माथा में क्यूं दे। अनै किण ही डावरा नां हाथ में लाडू दियौ। तथा मूलौ दियौ। उणाने कोई वरजै नहीं। औ राग ओलखणौ दोहरौ, अनै ऊ द्वेस ओलखणौ सोहरौ। तिण सूं वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिट्या द्वेस तौ पहिलांइज मिट जाय। —भि. द्र.

वीतभय–सं. पु.—१ एक नगरी का नाम।

उ०—अंतेउर परिवार लै, भडोपकरण संभाय। 'वीतभय' सेती निकली, 'चंपा' नगरी जाय। —जयवांणी

२ भगवान् विष्णु का विशेषण।

वि.—जिसका भय समाप्त हो गया हो, भय रहित।

उ०—वीतभय पाटण नउ धणी रे, नांम उदयन राय। तिणि रातइं पोसउ कीयो रे, वीर वांदण चित लाय रे। —स. कु.

वीतराग–वि. [सं. वीत+राग] १ जिसे आसक्ति न हो, निस्पृह, कामनाशून्य।

उ०—१ राग द्वेस ओलखायवा स्वांमीजी द्रस्टांत्त दियौ। किणहि डावरा रै माथा में दीधी। जद तो लोक उणनै ओलंभौ देवै। भला आदमी छोहरा नां माथा मैं क्यूं दे। अनै किणही डावरा नां हाथ में लाडू दियौ। तथा मूलो दियौ। उणनै कोई वरजै नहीं। औ राग ओलखणौ दोहरौ, अनै ऊ द्वेस ओलखणौ सोहरौ। तिण सूं वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिट्यो द्वेस तौ पहिलांइज मिट जाय। —भि. द्र.

उ०—२ बारमी भावना एम भावउ, अरिहंत वीतराग देव रे। धरम ना ए खरा आराधक, नांम जपउ नितमेव रे। —स. कु.

२ जितेन्द्रिय।

सं. पु.—१ बुद्ध का एक नाम।

२ जैनियों के प्रधान देवता का नाम, जिन भगवान।

उ०—१ आगइ तीह नां सरिआं काज, जेहैं कहिउं कीधउं वीतराग। अठ करम जरा नी ओडी वेलि, गिया इ जि सिदिइं पेलावेली। —वस्तिग

उ०—२ जिन सेव च्यारै अरध पुस्कर, मांहि पच्छिम भाग ए। तिहां मेर विज्जूमाल चिहूं दिसि, विचरता वीतराग ए। —ध. व. ग्रं.

उ०—३ पटणी पारिख सूरजी संघ सूं, जात्र करी लाभ सुजगीमइ समय सुंदर कहइ साचउ मंइ जांण्यउ, **वीतराग** देव विसवा वीसइ —स. कु.

उ०—४ सूत्र सुणउ हित आंणी, एतौ **वीतराग** नी वांणी हो। जस कल्पावतंसिका नांमदू, सोहइ उवंग प्रकामइ हौ। —वि. कु.

रू. भे.—बीतराग, वीतगरागा, वीतगरागी, वीतरागी, वीयराग, वीयरागी, वीयराय।

अल्पा., बीतरागौ वीतरागौ।

वीतरागी—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जांण्या, दुतियै कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी **वीतरागी**। —स्रीसुखरांमजी महाराज

वीतरागौ—देखो 'वीतराग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भार वाहक नइ कह्या भला, वीमांसा **वीतरागौ** जी। माथा थी मूकइ कंधै सहइ, मारग मांहि लागौ जी। —स. कु.

वीतसूत्र-सं. पु. [सं] जनेऊ, यज्ञोपवीत।

वीतसेन-सं. पु. [सं.] राजा पुरुरवा के पिता का नाम।

वीतसोक-वि. सं. [वीत+शोक] जिसे शोक न हो, शोक रहित।

सं पु.—अशोक नामक वृक्ष विशेष।

वीतसोका-सं. स्त्री. [सं. वीतशोका] एक नगरी का नाम।

उ०—तिम द्विज नवमी वच्छ विजय वलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजौ बाहु नमुं धरि नेह। नलिनावरत्त चउवीसमी पछिम विदेह वखांण, **वीतसोका** नयरी तिहां चौथौ सुबाहु सुजांण। —ध. व. ग्रं.

वीतहव्य-सं. पु. [सं.] १ शुनक का पुत्र एवं धृति का पिता एक जनक-वंशीय राजा।

२ हैहय नामक शर्यातिवंशीय वत्स का पुत्र।

वि० वि०—मतान्तर से यह हैहयवंशीय तालजंघ राजा का पुत्र, सुविख्यात हैहय सम्राट कार्तवीर्य का प्रपौत्र एवं जयध्वज राजा का पौत्र था। परशुराम के क्षत्रियसंहार के समय यह अपने पिता के साथ हिमालय में छुप गया था एवं परशुराम के निवृति होने पर इसने माहिष्मती नामक नगरी बसाई थी। इसे अपनी दश पत्नियों से प्रत्येक से दश दश पुत्र उत्पन्न हुए थे। जिन्होंने काशि देश के हर्यश्व, सुदेव एव दिवोदास राजाओं को पराजित किया। इसके पुत्रों का वध काशि के दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने किया था, उस समय इसने भृगुऋषि के आश्रम में छिप कर अपनी जान बचायी थी एवं उसके बाद इसने ब्राह्मणत्व स्वीकार किया एवं भृगुऋषि के कृपाप्रसाद से ब्रह्मर्षि बना था।

वीतहोत, वीहोतर, वीतहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (नां. मा.)

वीताणौ, वीतावौ—देखो 'विताणौ, वितावौ' (रू. भे.)

वीतारणहार, हारौ (हारी), **वीतारियौ**—वि०।

वीतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीताईजणौ, **वीताईजवौ**—कर्म वा०।

वीतायोड़ौ—देखो 'वितायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री, वीतायोड़ी)

वीतावणौ, वीताववौ—देखो 'वितारणौ, वितावौ' (रू. भे.)

उ०—एक डंकी नौबत एक री एक अंगरेजी राज री सुंगा नै सूर-वीरां आपरी जात रौ नै कुळ रौ स्वभाव वीरपणौ भूला और वां सूरमां आळस में अर अैन में सरीर निरस्थक **वीतावणौ** सुरू कीधौ। —त्री. स. टी.

वीतावणहार, हारौ (हारी), **वीतावणियौ**—वि०।

वीताविओड़ौ, वीताबियोड़ौ, वीताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीतावीजणौ, **वीतावीजवौ**—कर्म वा०।

वीताबियोड़ौ—देखो 'वितायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीताबियोड़ी)

वीति-सं. पु. [स. वीतिः] १ घोड़ा, अश्व। (२) खाद्य पदार्थ, भोजन।

३ यज्ञ, हवन। ४ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

५ चमक, दीप्ति, कान्ति।

६ अग्नि, आग।

७ गति, चाल।

८ पैदावार, उपज।

९ खाने पीने की क्रिया, उपभोग।

रू. भे.—बीति, व्रीती, वित्ति, वित्ती, वीती।

वीतिमत-सं. पु. [स. वीतिमत्] रैवत मनु का पुत्र, एक राजा।

वीतियोड़ौ—देखो वीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीतियोड़ी)

वीतिहोत, वीतिहोतर, वीतिहोत्र-सं. पु. [सं. वीतिः+होत्र] १ अग्नि, आग। (२) हैहयवंशीय वीतहव्य राजा का नामान्तर। (३) प्रियव्रत एवं बर्हिष्मती के पुत्रों में से एक जो रमणक एवं धातकी का पिता था। (४) सूर्य, सूरज। (५) इंद्रसेन राजा का पुत्र एवं सत्यश्रवस् राजा का पिता, एक राजा (६) सुकुमार राजा का पुत्र एवं भर्ग राजा का पिता एक राजा। (७) युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि।

रू. भे.—बितिहोत, बितिहोतर, बितिहोत्र, बीतहोत, बीतहोतर, बीतहोत्र, बीतिहोत, बीतिहोतर, वितिहोतर, वितिहोत्र। वित्रहोत, वित्रहोत्र वीतहोत, वीतहोतर, वीतहोत्र, वीतीहोत, वीतीहोतर, वीतीहोत्र, वीत्रहोत, वीत्रहोत्र।

वीती—देखो 'वीति' (रू. भे) (अ. मा.)

वीतीहोत, वीतीहोतर, वीतीहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.)

वीतोड़ौ—देखो 'बीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीतोड़ी)

वीत्थरणौ, वीत्थरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

वीत्थरणहार, हारौ (हारी), वीत्थरणियौ—वि० ।

वीत्थरिग्रोड़ौ, वीत्थरियोड़ौ, वीत्थरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीत्थरीजणौ, वीत्थरीजबौ—भा० वा० ।

वीत्थरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीत्थरियोड़ी)

वीत्योड़ौ—देखो 'बीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीत्योड़ी)

वीत्रहोत, वीत्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वीत्रोट-सं. पु.—मनमुटाव, वैर ।

उ०—डेरा नजीक-नजीक हुवा । बीच परधांन फिरीया, वात बणी नहीं । वीरमदे राव मालदे बीच परधांन जुदा फिरीया । राव 'कूंपै' 'जैतै' बीच आदमी फिर, धणी चाकरै **वीत्रोट** घातियौ । राव मालदे डेरा २ पाछा कीया । —नैणसी

वीथरणौ, वीथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

वीथरणहार, हारौ (हारी), **वीथरणियौ**—वि० ।

वीथरिग्रोड़ौ, वीथरियोड़ौ, वीथरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीथरीजणौ, वीथरीजबौ—भाव वा० ।

वीथरियोड़ौ—देखो विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीथरियोड़ी)

वीथि, वीथिका, वीथी-सं. स्त्री. [सं. वीथिः, वीथिका, वीथी] १ मार्ग, रास्ता, गली ।

२ पंक्ति, कतार ।

३ हाट, दुकान ।

४ चित्रशाला ।

५ वीथी या सड़क के रूप में माने जाने वाले आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग ।

६ कागज या दीवार जिस पर चित्र बनाया जाता है।

७ सूर्य के चलने का आकाश मार्ग ।

८ सत्ताईस प्रकार के दृश्य काव्यों या रूपकों में से प्रकार का रूपक जो एक ही अंक का और एक ही नायक का होता है। इसमें शृंगाररस अधिक होता है ।

रू. भे.—बीथि, बीथी ।

वीदंस-सं. पु.—श्येन, बाज आदि शिकारी पक्षी ।

वीद-सं. स्त्री.—१ हाल, वृतान्त, विवरण ।

उ०—जळ छोळ चीर भीनौ सुजांण, **वीद** पुछी सासु वीमळ वांण । पोसाक तुज किम नीर पास, प्रगट्यौ मोय इचरज चव प्रकास । —रांमदांन लाळस

२ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—खित हर अपच्छर **वीद** खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै । निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै । —रा. रू.

वीदग, वीदग्ध-सं. पु. [सं. विदग्धः] १ कवि, पंडित । (डि. को.)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित **वीदग** सारनै । कहै मंछ भलां रूपक करो, अै दस दोस निवारनै । —र. रू.

उ०—२ दूहा लघु गिण आधकर, ज्यां मझ घट कर एक । रहेस बाकी नांम रट, **वीदग** अघट विसेक । —र. ज. प्र.

२ चारणों का एक पर्यायवाची नाम ।

उ०—१ जिकां भलां धन जोड़ियौ, ऊघमियौ निज आच । कीरत पोहरै करन रै, **वीदग** ऊठै वाच । —बां. दा.

उ०—२ देवळ विण देव. करम विण दरसण, वप वनिता भरतार विना । बांमण विण वेद, विद्या विण **वीदग**, मौज धनह विण जिसी मना । —त्याग प्रसंसा री गीत

रू. भे.—बिदग, बीदग, विदग, विदग्ध ।

वीदळ, वीदल—देखो 'विदळ' (रू. भे.)

उ०—भिडजां भड पारख साल भरै, करवा जुध **वीदल** मेलि करै । भर रोस जिदै धिक बैण भणै, गैहै राख खळां तिलमात गिणै । —पा. प्र.

वीदा—देखो 'वीदावत' (रू. भे.)

उ०—१ सभ्रं जुध 'वीदह' रा खळ साळ, हिचै खग भाग चंदोत 'हिंदोळ' । रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह, नरावत नाहरखां नरनाह । —सू. प्र.

उ०—२ ऊदा कै **वीदा** भड़ उदार, पड़ियार कमां मंडळा पंमार । सांखला गोड़ हाडा सधीर, भाटी चवांण निरवांण बीर । —पे. रू.

वीदावटी—देखो 'वीदावाटी' (रू. भे.)

वीदावत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—बीदा, बीदावत, वीदा ।

वीदावाटी-सं. स्त्री.—छापर द्रोणपुर का वह प्रान्त जो राव जोधा के पुत्र वीदा के अधिकार में था । (ऐतिहासिक)

रू. भे.—वीदावटी।

वीदुखण, विदुसण—देखो 'विध्वंस' (रू. भे.)

वीधणौ, वीधबौ—१ देखो 'बिंधणौ, बिंधबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—नागरचाल रा नीपना गोहूं, बजर कठकालिग्रां मूंछा रा। ग्रांवारी सिलाक हुग्रै तिण भांति रा, बारां बारां वरसां रा डाउडां रा कांन **वीधीजै**। इण भांति रा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ ग्राडिग्रां जाजमां घालिग्रां रोळीजै छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'बींधणौ, बींधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पंख जाति जीवन लाभइं पार, ग्रनवरतु तीहं नउ हुइ संहारु। दीठउं सावज **वीधइं** बांणि, दुख तणी ऊघाडी खांणि —वस्तिग

उ०—२ पांच सइं धनुख देह परिमांण, तेत्रीस सागरोपम सातमी जांणि। पाप तणां फल एवडां होइ, वज्रकटि **वीधिउ** छइ सोउ —वस्तिग

उ०—३ नेहइं नव भव **वीवेय**, दीधिय उग्रसेन राय। कुंग्ररि भलीय राजीमति, सीमति तिहुयण माहि। —जयसेखर सूरि

उ०—४ वीधिउ मन रखि नवमइं, नवमइ निज नेठाउ। देई दांन संवत्सर, मत्सर मिल्हिय नाहुं। —जयसेखर सूरि

वीधणहार, हारौ (हारी), वीधणियौ—वि०।

वीधिग्रोड़ौ, वीधियोड़ौ, वीध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीधीजणौ, वीधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीधि—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ सुजस सुणाई सोभ, पंथ ग्रोपम चडे इधकाई। धन्य ध्रम दियै सौ धन्य, **वीधि** सेंई लहैं वडाई। —वील्हौजी

उ०—२ जोग नहीं पाखंड, कोप काया मां वसै। जोग नहीं पाखंड, जीव बोह **वीधि** तरसै। जोग नहीं पाखड, वीर जपि गांव जळावै। जोग नहीं पाखंड; कूड कथि दूंनी डुलावै। —वील्हौजी

वीधियोड़ौ—१ देखो 'बिंधियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बींधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीधियोड़ी)

वीन—१ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—गूंद लाडू लै र **वीन** वण, कर घमंड फुरती घणी। जाय ग्रसंघै ग्रांम गवाड़ै, परण पधारै वीनणी। —दसदेव

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

४ देखो 'विनय' (रू. भे.)

वीनउलौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

उ०—फिरइ **वीनउला** वीसलराय, बाजित्र बाजइ नीसांणौ घाई जीमणवार साजत हुइ, कूं कूं चंदन पाका पांन। कर जोड़ै राजा कहई, चालउ चउरासी राव की जांन। —बी. दे.

वींनड़ी, वीनणी—१ देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०—१ गूंद लाडू लै' र वीन वण, कर घमंड फुरती घणी। जाय ग्रसंघै ग्रांम गवाड़ै, परण पधारै **वीनणी**। —दसदेव

उ०—२ वंसी री मा-थारै जच तौ **वीनणी**! ग्रोभाजी नैं बुलाय 'र गऊदांन देय देवां। —वरसगांठ

वीनणौ, वीनबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुर ग्रागल्य **वीनती**, करंवे लंगु पाय। राह कारण्य गुर **वीनऊ**, ग्राखर दयौ समभाय। —ग्रग्यात

उ०—२ गोरी नंदन **वीनऊं** स्रीपति सुमति सुजांण। क्रस्ण तणौ वीवाहलौ, रिध सिध प्रसिध प्रमांण। —रुकमणी मंगळ

वीनणहार, हारौ (हारी), वीनणियौ—वि०।

वीनिग्रोडौ, वीनियोड़ौ, वीन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीनीजणौ, वीनीजबौ—कर्म वा०।

वीनतड़ी—देखो 'वीणती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वाल्हेसर मांमी, मांनि नैं तुं ग्रंतरयांमी। मांनि नैं सिवगति गांमी, **वीनतड़ौ** मुझ मांनौ। —प. च. चौ.

उ०—२ सहु गच्छपति सिर छाजै, राजेस्वर पाटियइ पाउधारउ। इक **वीनतड़ी** ग्रवधारौ, स्रीसंघना वंछित सारउ। —वि. कु.

उ० —३ कायम राजा वाड़ी वाही, सींच्यौ सतगुर नूर। **वीनतड़ी** जकै हाजिर सिवरै, सत सुकरत का सूर। —ग्रग्यात

वीनति, वीनती—देखो 'वीणती' (रू. भे.)

उ०—१ सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयौ ग्रादेस रे। वार वार **वीनति** करी रे, लागौ पाय नरेस रे। —प. च. चौ.

उ०—२ सहज सहज हिडाय, उदौ बोलै **वीनती**, ग्रावा गुवणि चुकाय। —ऊदोजी नैण

उ० —३ राव पासि पहिलुं पहुचेई, पय पणमि **वीनती** करेई। सांभलि वाचा मुझ भूपाल, इणि वणि ग्रछउं ग्रम्हि रखवाल। —सालिभद्र सूरि

उ०—४ ग्राडौ सोबौ ग्रावियौ, मिरजै सहत मुकीम। बळ तज दक्खै **वीनती**, भूप परक्खै भीम। —रा. रू.

उ०—५ हरि जस रस साहस करै हालिया, मौ पंडिता **वीनती** मोख। ग्रम्हीणा तम्हीणै ग्राया, स्रवण तीरथै वयण सदोख। —वेलि

वीनमणौ, वीनमबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तापरि खौजौ वीनमें, बूझौ राघव व्यास। सब लक्षण गुण पदमणि कै, जांणै सास्त्र ग्रभ्यास। —प. च चौ.

वीती—देखो 'वीति' (रू. भे) (अ. मा.)

वीतीहोत, **वीतीहोतर**, **वीतीहोत्र**—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.)

वीतोड़ौ—देखो 'वीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीतोड़ी)

वीत्थरणौ, **वीत्थरबौ**—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

वीत्थरणहार, **हारौ** (**हारी**), **वीत्थरणियौ**—वि०।

वीत्थरिओड़ौ, **वीत्थरियोड़ौ**, **वीत्थरयोड़ौ**—भू० का० कृ०।

वीत्थरीजणौ, **वीत्थरीजबौ**—भा० वा०।

वीत्थरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीत्थरियोड़ी)

वीत्योड़ौ—देखो 'बीतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीत्योड़ी)

वीत्रहोत, **वीत्रहोत्र**—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

वीत्रोट-सं. पु.—मनमुटाव, वैर।

उ०—डेरा नजीक-नजीक हुवा। बीच परधांन फिरीया, वात बणी नहीं। वीरमदे राव मालदे बीच परधांन जुदा फिरीया। राव 'कूंपै' 'जेतै' बीच आदमी फिर, धणी चाकरै वीत्रोट घातियौ। राव मालदे डेरा २ पाछा कीया। —नैणसी

वीथरणौ, **वीथरबौ**—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

वीथरणहार, हारौ (हारी), **वीथरणियौ**—वि०।

वीथरिओड़ौ, **वीथरियोड़ौ**, **वीथरयोड़ौ**—भू० का० कृ०।

वीथरीजणौ, **वीथरीजबौ**—भाव वा०।

वीथरियोड़ौ—देखो विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीथरियोड़ी)

वीथि, **वीथिका**, **वीथी**-सं. स्त्री. [सं. वीथिः, वीथिका, वीथी] १ मार्ग, रास्ता, गली।

२ पंक्ति, कतार।

३ हाट, दुकान।

४ चित्रशाला।

५ वीथी या सड़क के रूप में माने जाने वाले आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग।

६ कागज या दीवार जिस पर चित्र बनाया जाता है।

७ सूर्य के चलने का आकाश मार्ग।

८ सत्ताईस प्रकार के दृश्य काव्यों या रूपकों में से प्रकार का रूपक जो एक ही अंक का और एक ही नायक का होता है। इसमें शृंगाररस अधिक होता है।

रू. भे.—बीथि, बीथी।

वीदंस-सं. पु.—श्येन, बाज आदि शिकारी पक्षी।

वीद-सं. स्त्री.—१ हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—जळ छोळ चीर भीनौ सुजांण, वीद पुछी सासु वीमळ वांण। पोसाक तुज किम नीर पास, प्रगट्यौ मोय इचरज चव प्रकास। —रांमदांन लाळस

२ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—खित हर अपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै। निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै। —रा. रू.

वीदग, **वीदग्ध**-सं. पु. [सं. विदग्धः] १ कवि, पंडित। (डिं. को.)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सारनै। कहै मंछ भलां रूपक करौ, अै दस दोस निवारनै। —र. रू.

उ०—२ दूहा लघु गिण आधकर, ज्यां मझ घट कर एक। रहेस बाकी नांम रट, वीदग अघट विसेक। —र. ज. प्र.

२ चारणों का एक पर्यायवाची नाम।

उ०—१ जिकां भलां धन जोड़ियौ, ऊधमियौ निज आच। कीरत पोहरै करन रै, वीदग ऊठै वाच। —बां. दा.

उ०—२ देवळ विण देव, करम विण दरसण, वप वनिता भरतार विना। बांमण विण वेद, विद्या विण वीदग, मौज धनह विण जिसी मना। —त्याग प्रसंसा री गीत

रू. भे.—बिदग, बीदग, विदग, विदग्ध।

वीदळ, **वीदल**—देखो 'विदळ' (रू. भे.)

उ०—भिडजां भड पारख साल भरै, करवा जुध वीदल मेलि करै। भर रौस जिदै धिक बैण भणै, गहैं राख खळां तिलमात गिणै। —पा. प्र.

वीदा—देखो 'वीदावत' (रू. भे.)

उ०—१ सर्फ जुध 'वीदह' रा खळ साळ, हिचै खग भाग चंदोत 'हिंदोळ'। रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह, नरावत नाहरखां नरनाह। —सू. प्र.

उ०—२ ऊदा कै वीदा भड़ उदार, पड़ियार कमां मंडळा पंमार। सांखला गोड़ हाडा सधीर, भाटी चबांण निरवांण बीर। —पे. रू.

वीदावटी—देखो 'वीदावाटी' (रू. भे.)

वीदावत-सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

रू. भे.—बीदा, बीदावत, वीदा।

वीदावाटी-सं. स्त्री.—छापर द्रोणापुर का वह प्रान्त जो राव जोधा के पुत्र वीदा के अधिकार में था। (ऐतिहासिक)

रू. भे.—वीदावटी।

वीदुखण, विदुसण—देखो 'विध्वंस' (रू. भे.)

वीधणौ, वीधबौ—१ देखो 'विंधणौ, विंधबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—नागरचाल रा नीपना गोहूं, बजर कठकालिम्रां मूंछा रा। ग्रांवारी सिलाक हुग्रै तिण भांति रा, बारां बारां वरसां रा डाउडां रा कांन वीधीजै। इण भांति रा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ ग्राडिम्रां जाजमां घालिम्रां रोळीजै छै। —रा. सा. सं.

२ देखो 'वींधणौ, वींधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पंख जाति जीवन लाभइं पार, ग्रनवरतु तीहं नउ हूइ संहारु। दीठउं सावज वीधइं बांणि, दुख तणी ऊघाडी खांणि —बस्तिग

उ०—२ पांच सइं धनुख देह परिमांण, तेत्रीस सागरोपम सातमी जांणि। पाप तणां फल एवडां होइ, वज्रकटि वीधिउ छइ सोउ —वस्तिग

उ०—३ नेहइं नव भव वीधेय, दीधिय उग्रसेन राय। कुंग्ररि भलीय राजीमति, सीमति तिहुयण माहि। —जयसेखर सूरि

उ०—४ वीधिउ मन रखि नवमइं, नवमइं निज नेठाउ। देई दांन संवत्सर, मत्सर मिल्हिय नाहुं। —जयसेखर सूरि

वीधणहार, हारौ (हारी), वीधणियौ—वि०।

वीधिग्रोड़ौ, वीधियोड़ौ, वीध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीधीजणौ, वीधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीधि—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ सुजस सुणाई सोभ, पंथ ग्रोपम चडै इधकाई। धन्य ध्रम दियै सौ धन्य, वीधि सेंई लहैं वडाई। —वील्हौजी

उ०—२ जोग नहीं पाखंड, कोप काया मां वसै। जोग नहीं पाखंड, जीव बोह वीधि तरसै। जोग नहीं पाखड, वीर जपि गांव जळावै। जोग नहीं पाखंड; कूड कथि दुंनी डुलावै। —वील्हौजी

वीधियोड़ौ—१ देखो 'विधियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वींधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीधियोड़ी)

वीन—१ देखो 'वींद' (रू. भे,)

उ०—गूंद लाडू लै र वीन वण, कर घमंड फुरती घणी। जाय ग्रसंधै ग्रांम गवाड़ै, परण पधारै वीनणी। —दसदेव

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

४ देखो 'विनय' (रू. भे.)

वीनउलौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

उ०—फिरइ वीनउला वीसलराय, बाजित्र बाजइ नीसांणी घाई जीमणवार साजत हुइ, कूं कूं चंदन पाका पांन। कर जोड़ै राजा कहई, चालउ चउरासी राव की जांन। —बी. दे.

वीनड़ी, वीनणी—१ देखो 'वींदणी' (रू. भे.)

उ०—१ गूंद लाडू लै' र वीन वण, कर घमंड फुरती घणी। जाय ग्रसंधै ग्रांम गवाड़ै, परण पधारै वीनणी। —दसदेव

उ०—२ वंसी री मा-थारै जच तौ वीनणी! ग्रोभाजी नै बुलाय 'र गऊदांन देय देवां। —वरसगांठ

वीनणौ, वीनबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुर ग्रागल्य वीनती, करंवे लंगु पाय। राह कारण्य गुर वीनऊ, ग्राखर दयौ समभाय। —ग्रग्यात

उ०—२ गोरी नंदन वीनऊं स्रीपति सुमति सुजांण। ऋस्ण तणौ वीवाहलौ, रिध सिध प्रसिध प्रमांण। —रुकमणी मंगळ

वीनणहार, हारौ (हारी), वीनणियौ—वि०।

वीनिग्रोडौ, वीनियोड़ौ, वीन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीनीजणौ, वीनीजबौ—कर्म वा०।

वीनतड़ी—देखो 'वीणती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वाल्हेसर मांमी, मांनि नैं तुं ग्रंतरयांमी। मांनि नैं सिवगति गांमी, वीनतड़ी मुझ मांनी। —प. च. चौ.

उ०—२ सहु गच्छपति सिर छाजै, राजेस्वर पाटियइ पाउधारउ। इक वीनतड़ी ग्रवधारौ, स्रीसंघना वंछित सारउ। —वि. कु.

उ०—३ कायम राजा वाड़ी वाही, सींच्यौ सतगुर नूर। वीनतड़ी जकै हाजिर सिवरै, सत सुकरत का सूर। —ग्रग्यात

वीनति, वीनती—देखो 'वीणती' (रू. भे.)

उ०—१ सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयौ ग्रादेस रे। वार वार वीनति करी रे, लागौ पाय नरेस रे। —प. च. चौ.

उ०—२ सहज सहज हिंडाय, उदौ बोलै वीनती, ग्रावा गुवणि चुकाय। —ऊदोजी नैण

उ०—३ राय पासि पहिलुं पहुचेई, पय पणमि वीनती करेई। सांभलि वाचा मुझ भूपाल, इणि वणि ग्रछउं ग्रम्हि रखवाल। —सालिभद्र सूरि

उ०—४ ग्राडो सोबौ ग्रावियौ, मिरजै सहत मुकीम। बळ तज दक्खै वीनती, भूप परक्खै भीम। —रा. रू.

उ०—५ हरि जस रस साहस करै हालिया, मौ पंडिता वीनती मोख। ग्रम्हीणा तम्हीणौ ग्राया, स्रवण तीरथै वयण सदोख। —वेलि

वीनमणौ, वीनमबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तापरि खोजौ वीनमें, बूझौ राघव व्यास। सब लक्षण गुण पदमणि कै, जांणौ सास्त्र ग्रभ्यास। —प. च चौ.

उ०—२ बादल इण परि बीनमें, मात नहीं हुं बालो रे। रिणवट आलिम साह सूं, जोइ करूं ढकचालो रे। —प. च चौ.

उ०—३ आजि चलावै देव हइ, वचन हमारउ मांनो नू मांन। कर जोड़ै दूज बीनमें, थै घरि चालो, तू लावो ही वार। —बी. दे.

उ०—४ ताहरां राजाजी भोपत ऊपरि चढण लागा। ताहरां रांणीजी जसबंतदेजी राजि नू बीनमियौ। राजि दोहरा की हुवो, हूं जाइ अर भोपति नूं लै आविस। —द. वि.

बीनमणहार, हारौ (हारी), बीनमणियौ – वि०।

बीनमणिओड़ौ, बीनमियोड़ौ, बीनम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीनमीजणौ, बीमीजबौ—कर्म वा०।

बीनमियोड़ौ—देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री॰ बीनमियोड़ी)

बीनवणौ, बीनवबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गौरींनंदन बीनवुं, ब्रह्मसुता सरसत्ति। सरस बंध प्राकृत कवूं, द्यउ मुझ निरमल मत्ति। —कां दे.. प्र.

उ०—२ कहीउ सघलउ तै अवदात, महती हरखी निसुणी वात। सखीअ पाठि बीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ आंणंद। —हीराणंद सूरि

उ०—३ जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन बीनवीइ किसी ? हूं वहूअर, तू जेठ ! —मा. कां. प्र.

उ०—४ नदियां गै'री कठण लांघणी, पंथ खांडा री धार। काजी महमंद बीनवे, हरि भजि उतरौ पार। —दीनमहमद

उ०—बे कर जोड़ी बीनवूं जी, सुणि स्वांमि सुविदीत। कूड़ कपट मूकी करी जी, बात कहूं आप वीति। —स. कु.

उ०—६ एक दिन कोमल पांखड़ी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे आवी सभा में बीनवें रे लाल, चिरंजीवो नरनाथ रे। —प. च. चौ.

बीनवणहार, हारौ (हारी), बीनवणियौ—वि०।

बीनविओड़ौ, बीनवियोड़ौ, बीनव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीनवीजणौ, बीनवीजबौ—कर्म वा०।

बीनवियोड़ौ—देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीनवियोड़ी)

बीनांण-सं. स्त्री.—१ रचना, कृति, सृजन।

उ०—नूर जिहां भरपूर अग, कंठ लोह पखांणी, चौरासी लख भख दियण, निरपख निरबांणी। घड़ घड़ भजै भी घड़ै, पैदास पुरांणी, तुज बीनाण न जांणियै, करतार बीनांणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनांण' (रू. भे.)

बीनांणी-वि.—१ रचना कर्त्ता, सृजन कर्त्ता, कृतिकार।

उ०—नूर जिहां भरपूर अंग, कंठ लोह पखांणी, चौरासी लख भख दियण, निरपख निरबांणी। घड़ घड़ भंजै भी घडै, पैदास पुरांणी, तुज बीनांण न जांणियै, करतार बीनांणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनांणी' (रू. भे.)

३ देखो 'वैनांणी' (रू. भे.)

उ०—१ तदै तरवार वाही। तरवार वाहतां तरवार भागी। ताहरां वाळौ कहै, "फेट बीनांणी, फेट बीनांणी ! भुंडी घड़ी, भुंडी घड़ी ! ताहरां साजण कहै—दूहा—वाळा म करि वेसास, असमर ऊजड़िया तणौ। वांक बीनांणी नाह, वांक तमीणौ वोचउत। —चांपै वाळै री बात

उ०—२ बरहासां नास धमण बाजती, घांसारव साजै घमसांण। वांकड़ो रावत मेघ बीनांणी, अरियण दळां धमै आरांण। —रावत मेघ सीसोदिया रौ गीत

बीनियोड़ौ—देखो 'विनवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीनियोड़ी)

बीनौ-सं. पु.—१ संकट, तकलीफ।

२ विनय।

उ०—बीनौ पीत सनेह, प्रेम निरवाहै पावन। लाज मांण अहंकार, सिरै चाढै सूरातन। —गु. रू.

बीपनी-सं. स्त्री.—प्रायः डेढ फुट ऊंचा लाल या सफेद फूलों वाला एक प्रकार का वर्षाती पौधा, जिसके फल फलीनुमा होते हैं, शरपुंखा।

बीपसा, बीप्सा-सं. स्त्री. [सं. वीप्सा] १ एक प्रकार का शब्दालंकार विशेष, जिसमें आदर, आश्चर्य, आतुरता, रोचकता, घृणा, हर्ष शोक आदि भावों का बाहुल्य प्रकट करने हेतु किसी शब्द का प्रयोग बार बार किया जाता हैं।

उ०—१ चौथै पदकल पंच वार चिहु, दोय बीपसा दाखौ। कहै 'मंछ' इम गीत गोखकर, भूप अवध गुण भाखौ। —र. रू.

उ०—२ बारह मत तुक आठ प्रत, आख बीपसा अंत। छीनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत। —र. ज. प्र.

उ०—३ रगण जगण गुरू लघु हुवै, जिण रै तीन तुकंत। होय बीपसा चवथ तुक, अरध गोखौ आखत। —र. ज. प्र.

२ अधिकता, बाहुल्यता।

३ व्याप्त होने की अवस्था या भाव, व्याप्ति।

४ शब्दों की पुनरावृत्ति, शब्ददुरुक्ति।

रू. भे.—विप्सा

बीप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

बिफनी—देखो 'बीपनी' (रू. भे.)

बीफरणौ, बीफरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भचकै 'बखतेस' गुसै भरियौ, व्रजराज उपासक **वीफरियौ**। जुध जांणिक क्रोध मतै अजरै, करि दांमणि धार संग्रांम करै।
—सू. प्र.

उ०—२ अगडूंपरि आप जूटै **वीफरै** बच्छर दतूंसळूं कै खटक कैसै दरसावै। इंद्र वज्र की झाट ऐसी नजर आवै। चाचरूं की भचक सुंडांडडूं का उपाट। कूंभायळूं पर वज्झी काळदार भुजंगा की सी झाट। —सु. प्र.

उ०—३ कुवैण देवी सांभळ कराळ, **वीफरै** तिणां इम कहै वाळ। बूथां अवोट जीपैं बांणांस, आखाढ सिद्ध सौ करै आस।
—मा. वचनिका

उ०—४ डाकरतौ भरतौ डकरा, धरतौ मकर सधीर। **वीफरतौ** वाकारियौ, करतौ खून कंठीर। —सरूपसींगजी रौ गीत

वीफरणहार, हारौ (हारी), वीफरणियौ—वि०।

वीफरिओड़ौ, वीफरियोड़ौ, वीफरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीफरीजणौ, वीफरीजबौ—भाव वा०।

वीफरियोड़ौ—देखो 'विफरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीफरियोड़ी)

वीबरणौ, वीबरबौ—१ देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू. भे.)

उ०—मतवाळां जेम घुमंत महाभड़, लोह तणी छक लालुरता। जमदूठ उठंत टवै जमदाढां, वाहै आवध वीबरता। —गु. रू. बं.

वीबरणहार, हारौ (हारी), वीबरणियौ—वि०।

वीबरिओड़ौ, वीबरियोडौ, वीबरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीबरीजणौ, वीबरीजबौ—भाव वा०।

वीबरियोड़ौ—१ देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विभरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीबरियोड़ी)

वीभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू. भे.)

उ०—ज्यांनी अबकै पहरका मरद मीजाजी ढोला अबकै पहर का मरद भोत **वीभचार** करै छै जी भौत **वीभचार** करै छै जी।
—लो. गी.

वीभत्स—सं. पु. [स.] १ साहित्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें घृणित एवं जघन्य पदार्थों का वर्णन होता है।

२ देखो 'वीभत्सु' (रू. भे.)

रू. भे.—वीभच्छ, बीभछ, बीभत्स, विभत्स।

वीभत्सरस—देखो 'वीभत्स' (१)

वीभत्सु—सं. पु. [सं.] १ अर्जुन का एक नाम।

२ देखो 'वीभत्स' (रू. भे.)

रू. भे.—वीभत्सु, विभत्स।

वीभर—देखो 'भींभर' (रू. भे.)

वीभरणौ, वीभरबौ—क्रि. अ.—गर्जना करना, दहाड़ना।

उ०—रोकै अकबर राह, लै हींदु कूकर लखां। **वीभरतौ** वाराह, पाड़ै घणा 'प्रतापसी'। —दुरसौ आढौ

२ देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू. भे.)

वीभरणहार, हारौ (हारी), वीभरणियौ—वि०।

वीभरिओड़ौ, वीभरियोड़ौ, वीभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीभरीजणौ, वीभरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीभरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गर्जना किया हुआ, दहाड़ाहुआ।

२ देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विभरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीभरियोड़ी)

वीभळ, वीभल—देखो 'विभळ' (रू. भे.)

वीभळियौ, बीभलियौ—वि.—१ रसिक।

२ थकित, श्रांत (नयन)।

३ देखो 'विभळ, विभळी' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—वीभळियौ।

वीभळी, वीभली—सं. स्त्री.—१ एक देवी का नाम।

देखो 'विभळी' (रू. भे.)

वीभव—सं. पु.—१ अर्जुन का एक नाम। (अ. मा.)

२ देखो 'विभव' (रू. भे.)

३ देखो 'वैभव' (रू. भे.)

वीभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

वीभववांन—देखो 'वैभववांन' (रू. भे.)

वीभवसाळी, वीभवसाली—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे.)

वीभाड़णौ, वीभाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाड़बौ' (रू. भे.)

उ०—कटक **वीभाड़** हराहर अेकल, छित छेकल नाहरड़ै छेक। 'अमांन' तणौ बहौ भांत बमेखळ, टेकल भौम न छोडै टेक।
—ठाकर नवलसिंघ सेखावत रौ गीत

वीभाड़णहार, हारौ (हारी), वीभाड़णियौ—वि०।

वीभाड़िओड़ौ, वीभाड़ियोड़ौ, वीभाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीभाड़ीजणौ, वीभाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वीभाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विभाड़ियोड़ी)

वीभाणौ, वीभाबो—देखो 'विभाणौ, विभावौ' (रू. भे.)

वीभाणहार, हारौ (हारी), वीभाणियौ—वि० ।

वीभायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीभाईजणौ, वीभाईजबौ—भाव वा० ।

वीभायोड़ौ—देखो 'विभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० वीभायोड़ी)

वीभावणौ, वीभावबौ—देखो 'विभाणौ, विभाबौ' (रू. भे.)

वीभावणहार, हारौ (हारी), वीभावणियौ—वि० ।

वीभाविश्रोड़ौ, विभावियोड़ौ, वीभाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीभावीजणौ, वीभावीजबौ—भाव वा० ।

वीभावसु, वीभावसू—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

वीभावियोड़ौ—देखो 'विभायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीभावियोड़ी)

वीभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—चूंडौ उठै गयौ, भाग जागीयो। दिन-दिन बात रस आवती गई। चांवडा देवीजी री सेवा राव चूंडै निपट घणी मांडी। मारग बहतौ तिण सुं दस गुणौ इधक वहण लागौ। रूपा रीं नदी बहण लागी। चूंडा नूं **वीभौ** जुड़तौ गयौ। घोड़ां रजपूतां री जोड़ होती गई। —नैणसी

वीमची—देखो 'विमची' (रू. भे.) (शा. हो.)

वीमळ, वीमल—देखो 'विमळ' (रू. भे.)

वीमांह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—सारीखी जोड़ी जुड़ी, आ नारी अउ नाह। राणी राजा सूं कहइ, कीजइ अउ **वीमांह**। —ढो. मा.

वीमांहणौ, वीमांहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वीमांहणहार, हारौ (हारी), वीमांहणियौ—वि० ।

वीमांहिओड़ौ, वीमांहियोड़ौ, वीमांह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीमांहीजणौ, वीमांहीजबौ—कर्म वा० ।

वीमांहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीमांहियोड़ी)

वीमा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—बीजु हम बोलतो, जदै घणा दिन सूं मिळतो। कुसळायत वूंझनौ, अमल रूपेटां गळतो। **वीमा** सुण आवियौ, वचन थारा रै कारण। धीरज मन नह धरी, जनम पायौ कुळ चारण। —अरजुनजी बारहठ

वीमासणौ वीमासबौ—देखो 'विमासणौ, विमासबौ' (रू. भे.)

उ०—अरजनजी मन में **वीमासी** रहा। ताहरां मा बोली, 'अरजन बोलो न्हीं ? बाप जीमण ठाढो हुवै छै।' ताहरां अरजन बोलियौ, 'मांजी, हमीर भाई दुग्गोटी मांगे छै तो मेल हो। —अरजन हमीर री बात

वीमासणहार, हारौ (हारी), वीमासणियौ—वि० ।

वीमासिओड़ौ, वीमासियोड़ौ, वीमास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीमासीजणौ, वीमासीजबौ—कर्म वा० ।

वीमासियोड़ौ—देखो 'विमासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० वीमासियोड़ी)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—मन मूझ तणौ **वीमाह** जिसौ अन, मारु 'गोइंद' आप मरै। आओ भड साथि जिको मो आवै, काळ निमत्त सरीर करै। —गु. रू. बं.

उ०—२ जिके वेद सूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाड़ि होम करै छै। घणौ गौ घ्रत नै कपूर री आहूति दीजै छै। वेद ध्वनि कीजै छै। दूलह नै दूलहनी सेहरा बधिआ पूरब साह्मा वेसांणिया छै। सेहरा दीजै छै। चार फेरा फेरीजै छै। **वीमाह** कीजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ कह्यो जी ! मोनुं राजा मेळो। कह्यो जी; राजा महीनै मिळसी, काल्हि राजा बाहिर हुतौ, आज माहि पधारियो, महीनै राजा आवै छै, वळै नवो **वीमाह** करि महल मांहै पधारै छै, सू वळै महीनै वाहिर आविसी। —सयणी री वात

उ०—४ जोधांणौ जोधाहरौ, सुख मांणै अभसाह। विच अगसर फागण विचै, च्यार थया **वीमाह**। —रा. रू.

उ०—५ मौहरि गोठि **वीमाह**, मौहर दरबार मझारां। रहां मौहरि रावतां, सदा जिम वहतां सारां। —सू. प्र.

वीमाहणौ वीमाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वीवाहणहार, हारौ (हारी), वीमाहणियौ—वि० ।

वीमाहिओड़ौ, वीमाहियोड़ौ, वीमाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीमहीजणौ, वीमाहीजबौ—कर्म वा० ।

वीमाहियोड़ौ,—देखो 'विवाहियोड़ौ, (रू. भे.)

(स्त्री. वीमाहियोड़ी)

वीमूह—देखो 'विमुख' (रू. भे)

वीमुहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा,. रू. भे.)

उ०—ना जीहा पै **वीमुहा**, जरासंधसीर जै नथ। केता कव जन खस गया, अरि केता भारथ। —स्त्री रायसिंघजी रो गीत

वीम्हर-सं. पु.—झींगुर।

वीयराग—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

बीयरागी, बीयराय—देखो 'बीतराग' (रू. भे.)

उ०—पंचाभिगम विधि सुं करूं, सक्रस्तव सूधौ उच्चरूं। जय बीय-राय कहता करम कटै, देव जुहारूं गउ बीसटै। —स. कु.

बीयांण-सं. पु.—आकाश, गगन।

उ०—बीयांण चद वड बीयुं, ऐराक बीज सापुरस वयण। प्रात गाज पेहली लहवाय, लहवाय पीछै गरवाय।

—मूळवै सांगावत री बात

बीयाज—देखो 'ब्याज' (रू. भे.)

बीयाजू—देखो 'ब्याजू' (रू. भे.)

उ०—हरीया सांमी मनमुखी, माय तमांही हेत। क्युंईक गाडै गैन में, और बीयाजू देत। —अनुभववांणी

बीयास—देखो 'ब्यास' (रू. भे.)

उ०—सारद नारद सुक बीयास समरुथ सिमरंदै।

—केसोदास गाडण

बीयोगण, बीयोगणी, बीयोगिण, बीयोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

बीयौ—देखो 'दूजौ' (रू. भे.)

बीर-सं. पु. [सं.] १ बहादुर, शूरवीर। (ह. नां. मा.)

वि० वि०—वीर चार प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

१ धर्मवीर २ युद्धवीर ३ दानवीर ४ दयावीर।

उ०—१ मचियै कांकळ मदत री, बीर न देखै वाट। एक अनेकां सूं हिचै, छाती वज्जर कपाट। —बां. दा.

उ०—२ कमधज्ज तजै मनमोह काया चौ, बीर तिसौह विसतयरियं। तत लैं निरवांण क राज तियाग, गोपीचंद भरत्थरियं।

—गु. रू. बं.

उ०—३ धख पंख धमळ बीर धारण, निहंग तौ डर केळ वारण, दुखळ पंखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर। यर केण छाजै खाग उछज, अणी भटां चंच आवाज, कळहियौ 'गजसाह' कळियज, वरळ वध वर बीर। —महाराजा गजसिंह रौ गीत

उ०—४ समर सगतपुर मंडोवर छतरधर समोसर, तकर कर बजर बर धजर तांजौ। उसर बगतर ऊग्रर बीर सांसर अतर, 'गग' हर कळोधर कहर गांजौ। —नाथौ मांदू

२ युद्ध करने वाला, योद्धा, सैनिक।

३ विकट परिस्थितियों में भी अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाला, साहसी।

४ विशिष्ट कार्यों में अन्य से बढकर।

५ कर्मठ, कर्मशील।

६ बात-चीत में होशियार, वाग्वीर।

७ बहन या अन्य स्त्री के द्वारा भाई या किसी अन्य पुरुष के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

उ०—तितरै हेक दीठ पवित्र गळि त्रागो, करि प्रणपति लागी कहण। देहि संदेस लगी द्वारिका, बीर वटाऊ ब्राह्मण। —वेलि

८ भाइ, भ्राता। (अ. मा., ह. नां मा.)

उ०—१ आज उमाहउ मौ घणउ, ना जांणू किव केण। पुरुख परायउ बीर वड, अहर फुरक्कइ केण। —ढो. मा.

उ०—२ खित्रीवट जै साहस धीर, मालदेव छइ लहुडउ बीर। जिसी प्रीति लखमण नइ रांम, राज खनरेइ एहवी मांम।

—कां. दे. प्र.

उ०—३ बागां में बाज्या जंगी ढोल, सहरां में बाजी सहनाई जी। आयौ म्हारौ जानगजायौ बीर, चूनड़ तौ ल्यायौ रेसमी जी।

—अमर चूंनड़ी

उ०—४ चौरी बैठै चक्रधर, वळि सुहिद्रा रौ बीर। बाबै नां सबळा विरिद, पूर्णे कवेसर 'पीर'। —पी. ग्रं.

उ०—५ चुड़लौ चिरामी धण रौ सायबौ रे, लंजा ओठीड़ा है लौ। ओढणियौ ओढासी म्हारौ बीर वाला जौ। —लो. गी.

९ पति, खाविंद।

१० पुत्र, बेटा।

११ मित्र, साथी।

१२ सखी, सहेली।

१३ महिला, स्त्री, १४ राठोड़ों के प्रसिद्ध तेरह वंशों में से एक वंश, अथवा इस वंश का व्यक्ति। —बां. दा. ख्यात

१५ दूल्हा, वर।

१६ तीन प्रकार की भावों की साधनाओं में से एक प्रकार की साधना जिसमें मद्यपानादि द्वारा उन्मत्त होकर साधक द्वारा मनुष्य, भैंसे, भेड़ या बकरी की बलि दी जाती है। (तांत्रिक)

उ०—भणंत एक व्याकरण, बीर इस्ट कै करै। तरक्क नीति सानत्रांणि, एक मुक्क उच्चरै। —गु. रू. बं.

वि० वि०—यह साधना दिन के प्रथम दस दंडों में पशुभाव से, दूसरे या बीच के दस दंडों में वीरभाव से और अन्तिम या तीसरे दस दंडा में दिव्यभाव से करनी चाहिए। मतान्तर से सोलह वर्ष की अवस्था तक पशुभाव से, फिर पच्चास वर्ष की अवस्था तक वीर-भाव से और उसके बाद दिव्यभाव से साधना करनी चाहिये।

१७ उक्त प्रकार के वीरभाव से साधना करने वाला साधक।

१८ वज्रयानी सिद्धों के अनुसार वज्रप्रज्ञोपाय योग के द्वारा महाराग में विराग का दमन करने वाला साधक।

१९ मोक्ष के अनुष्ठान अर्थात् साधना में पराक्रम करने वाला या चार

धन-घातिया कर्मरूपी रज अर्थात् कूड़ा-कचरा हटा देने वाला एवं प्राणियों को संयम आदि के अनुष्ठान में विशेष रूप से प्रेरित करने वाला। (जैन)

२० चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी। (जैन)

उ०—१ धन धन गांम नगर जिहां रे, विहरइ **वीर** जिणंदो रे। धन धन नर नारी तिकै रे, वांणि सुणइं आणंदो रे। —स. कु.

उ०—२ दौधा उड़दना बाकला, **वीर** नै 'चंदनबाल'। वृस्टि हुई सोवन तणी, वरत्या मंगल माल। —जयवांणी

उ०—३ लहियै सोभा लोक में, तप करि कसतां तन्न। परतखि **वीर** प्रसंसियौ, धन्नौ मुनिवर धन्न। —ध. व. ग्रं.

२१ विष्णु का एक नाम।

२२ अर्जुन का एक नाम।

२३ कामदेव।

२४ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक असुर।

२५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

२६ पांचजन्य अग्नि का पुत्र एक अग्नि।

२७ एक अग्नि, जो भारद्वाज एवं वीरा के पुत्रों में से एक था और सरयु का पति एवं सिद्धि का पिता था।

२८ कलिंगराज चित्रांगद की कन्या के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा

२९ पुरुवंशीय एक राजा।

३० श्रीगणेश का एक विशेषण।

३१ पुरंजय नामक एक राजा जो अनुवंशीय था।

३२ तामस मन्वन्तर का एक देव।

३३ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रों में से एक पुत्र यादव।

३४ कृष्ण एवं कालिंदी के पुत्रों में से एक पुत्र यादव।

३५ अविक्षित् की पत्नी लीलावती का पिता, एक राजा।

३६ सोमवंशीय राजा, जो तोण्डमान का पिता था।

३७ क्षुप एवं प्रथमा का पुत्र, विदर्भ राजकुमारी नंदिनी का पति एवं विवंश का पिता, एक राजा।

३८ पवनसुत हनुमान।

३९ शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस, जिसमें उत्साह वीरता, साहस आदि गुणों का वर्णन होता है। (साहित्य)

४० प्रत्येक चरण में ३१ एवं १६ मात्राओं पर यति या विराम पाया जाने वाला एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष। (पिंगल)

४१ छप्पय छंद का पांचवा भेद जिसमें ६६ गुरू, २० लघु से ८६ वर्ण तथा १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

४२ ठगण के द्वितीय भेद का नाम।

४३ भूत, प्रेत।

उ०—१ जंतर मंतर टांणा टूंणा, कांमण टूंमण जांणें। **वीर** मूंठ विद्या बौहतेरो, आतम देव अजांणें। —अनुभववांणी

उ०—२ सीकोतरि सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारां। विवध भूत वेताळ, **वीर** पळचर बिसतारां। गिरध चील गोमायु, विरक जंबू रसवाया। काक कंक कौ गिणै, आसपळ संभळ आया। —रा. रू.

उ०—३ पूजै कर कर पीर, घर घर नूंतै गांव मे। वळै जगावै **वीर** मूठ चलावै मोतिया। —रायसिंह सांदू

उ०—४ वैताल **वीर** मिळिया विहद, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमंख भक्ख, जबक रींछ वड्डाक जक्ख। —गु. रू. बं.

क्रि. प्र. जगाणौ, जागणौ।

४४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव।

वि० वि०—देखो 'भैरव'।

उ० - खळां घूकळां आदरै **वीर** खेळा, मिळै बाधरै जोगण्यां जुत्थ मेळा। भरै पत्र भैसां अजां रत्र भोगै, अछक्कां छकां छाक दारू अरोगै। —मे. म.

४५ महादेव के वे प्रियगण जो श्मशान में ही निवास करते हैं।

क्रि. प्र.—जगाणौ, जागणौ।

४६ वीरभद्र नामक शिवगण।

४७ दक्ष के यज्ञ को विध्वस करते समय शिवगण वीरभद्र के रोम रोम से निकले हुए गण।

उ०—१ खित हूर अपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै। निरखै सुख नारद **वीर** नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै। —रा. रू.

उ०—२ छायौ गयण रभ रथ छाजै, विखमी पांख पांखणी वाजै। बावन **वीर** नचण बहबहिया, डैरू जटी चंड डहडहिया। —सू. प्र.

उ०—३ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै **वीर** खेला, हेला मुंडमाळी पढै संचै हार हेत। इखां जत्र पांणां बंचै बाहा बाणा बाहा ईसौं, खागां खळां 'सूभांणी' बिरच्चै वीरखेत। —प्रभुदांन मोतीसर

उ०—४ कतियांणी क्रह क्रह नारद डह डह, हेका टह टह **वीर** हसै। बड रावत व्रह व्रह पोरसि प्रह प्रह, दूडी ठह ठह होठ डसै। —गु रू. बं.

वि० वि०—वीरभद्र के शरीर से निकले हुए गणों में से मुख्य ५२ गण थे जिन्हे 'वीर' संज्ञा दी गई थी। उनके नाम निम्न लिखित हैं:—

(१) क्षेत्रपाल वीर (२) कपिल (३) वटुक (४) नारसिंह (५) गोपाल (६) भैरव (७) गरुड (८) रक्तसुवर्ण

(९) देवसेन (१०) रुद्र (११) वरुण (१२) भद्र (१३) वज्र (१४) वज्रजव (१५) स्कंद (१६) कुरु (१७) प्रियंकर (१८) प्रियमित्र (१९) वह्नि (२०) कंदर्प (२१) हंम (२२) एकजघ (२३) घंटापथ (२४) दजक (२५) काल (२६) महाकाल (२७) मेघनाद (२८) भीम (२९) महाभीम (३०) तुंगभद्र (३१) विद्याधर (३२) वसुमित्र (३३) विस्वसेन (३४) नाग (३५) नागहस्त (३६) प्रधम्र (३७) कंपिल (३८) बकुल (३९) अल्लाद (४०) त्रिमुख (४१) पिशाच (४२) भूतभैरव (४३) महापिशाच (४४) कालमुख (४५) शुनक (४६) अस्थिमुख (४७) रेतोवेंद्य (४८) स्मशानचार (४९) कलिकल (केलिकला) (५०) भृंग (५१) केटक (५२) विभीषण।

४८ बावन की संख्या का नाम। *

४९ नये बैल को कृषि में जोतने का अभ्यास कराने की क्रिया।

५० आरम्भ करने की क्रिया।

५१ रवाना होने या करने की क्रिया।

५२ किसी भूत-प्रेत विशेष की उपस्थिति का शरीर में अनुभव होकर तदनुसार अंग संचालित होने और मुंह की ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, भूत-प्रेत का प्रभाव।

उ०—देखो डाकण रा घर में डावड़ा नै जको मेलै उण री भूल, क्यूंकि डाकण तौ वीर चढै तद खावहीज चाहै घर रो चाहै पारको उण सूं तौ आघो रहे वौ हीज वचै। —वी. स. टी.

क्रि. प्र.—आणौ, उतरणौ, ऊटणौ, चढणौ।

५३ यज्ञ की अग्नि।

५४ काली मिर्च।

५५ आलुबुखारा नामक फल।

५६ वाराही कंद।

५७ एक प्रकार का सींगिया नामक विष।

५८ पुष्करमूल।

५९ कांजी। (अमरत)

६० अर्जुन नामक वृक्ष।

६१ सिंदूर।

६२ लोहा।

६३ लताकरंज।

६४ नरकट।

६५ कनेर।

६६ उशीरा, खस।

६७ शालिपर्णी, सरिवन।

६८ ऋषभक नामक औषधि।

६९ तोरी, तुरई जिसकी सब्जी बनाई जाती है।

७० कुश।

७१ नरमल।

७२ भिलावां।

रू. भे.—बीर, बीरक, बीरक्क, वीरजु, वीरय, वीरय्य, वीररस, वीररस्स, वीरांण, वीरारस, वीरारसि, वीरू'।

अल्पा,—बीरौ, वीरड़ौ, वीरडौ, वीरति, वीरती, वीरौ।

वीरकंठ—सं. पु.—१ वीरध्वनि।

२ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

वि० वि०—इसके पहले एव तीसरे चरण में सोलह वर्ण व चौबीस मात्राऐं एवं दूसरे व चौथे चरण में चौदह वर्ण व इक्कीस मात्राएं होती हैं। आठ-आठ वर्ण पर अर्द्धविराम एवं अंत में लघु-गुरु होते हैं। (र. ज. प्र., र रू)

रू. भे.—विडकठ, विरकंठ, बीरकंठ।

वीरक—सं. पु. [स.] १ चाक्षुक मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक ऋषि।

२ अंगराज वंशीय राजा शिवि का पुत्र।

रू. भे.—वीरक्क।

३ देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—दीपक हूंत दीपक, अंब हूं अंबक उग्गै। सिध हूंता साधिक्क, वीर घर वीरक जग्गै। —गु. रू. बं.

४ देखो वक' (रू. भे)

वीरकरमा—वि. [सं. वीर+कर्मा, कर्मन्] वीरोचित कार्यकर्त्ता।

वीरकळहळ—सं स्त्री.—वीर-ध्वनि।

उ०—हूंकळै सींधवौ वीरकळहळ हुवै, वरण कजि अपछरां सूरिमां बहवुवै। त्रिजड़ हथ मयंद जुध गयंद घड़ तोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अढंगा बोलणा। —हा. झा.

वीरकाम—वि. [सं. वीर+कार्य] १ वीरोचित कार्य करने वाला।

[सं. वीरकाम] २ पुत्र की कामना रखने वाला।

वीरकाव्य—सं. पु. [सं.] वह काव्य जिसमें वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन होता है।

वीरकुक्षि—सं. स्त्री. [सं.] १ वह स्त्री जो वीर पुत्र को जन्म देती है।

२ वह भूमि जिस पर वीर पुत्र उत्पन्न होते हों।

वीरकेत, वीरकेतु—सं. पु. [सं. वीरकेतु] १ पाञ्चाल देशाधिपति द्रुपद का पुत्र जो महाभारत के युद्ध में द्रोण के द्वारा मारा गया था।

२ एक अयोध्या नरेश का नाम।

३ हंसध्वज नामक राजा के प्रधान सुमति का पुत्र।

वीरक्क—१ देखो 'वीर (रू. भे.)

उ०—वीरक्क नचक्क सभक्क सबक्क, चोळक्क पियक्क कळिक्क चहक्क। करक्क हाडक्क गुडक्क कड़क्क, खिवै खंजरक्क पड़ै खरड़क्क। —सू. प्र.

२ देखो 'वीरक' (रू. भे.)
३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

वीरखेत-सं. पु. [सं वीर+क्षेत्र] युद्धस्थल।

उ०—१ पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी। वीरखेत पूरब्ब रित हेमंत प्रघट्टी। —गु. रू. बं.

उ०—२ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हेला मुंड-माळी पढ़ै संचै हार हेत। इखां जंत्रपांणां बंचै बाहा बांणां बाहा ईसौं।खागां खळां 'सुभांणीं' विरच्चै वीरखेत। —प्रभूदांन मोनीसर

२ वह भूमि जहां वीर अधिक उत्पन्न होते हों।
उ०—तरह तरह के दाव जंगू के भणाकै अपणै अपणै कुरंगूं की हमराहा होसनायकूं कै हाकै जोधांण मेड़तौ वीरखेत के जाए भाजै न लहवहै जेतै लड़ै तेतै बरीबर रहै। —सू. प्र.

३ वह स्त्री जो वीरपुत्रों को जन्म देती है।
रू. भे.—बीरखेत।

वीरखेती—युद्ध।
रू. भे.—बीरखेती।

वीरगत, वीरगति, वीरगती-सं. स्त्री. [सं. वीरगति] वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होने वाली गति।
रू. भे.—बीरगत, बीरगति, बीरगती।

वीरगाथा, वीरगाहा-सं. स्त्री [सं. वीरगाथा] वीर के वीरतापूर्ण कार्यों का कवित्वमय वर्णन।

वीरघंट, वीरघंटु, वीरघंटौ-सं. पु. [सं. वीर+घंट] १ हाथी के झूल के बांधने का घंटा या घंटी।

उ०—१ रात घड़ी दो एक गई, इक डंको सुणियौ। तरै जोगेसर जांण्यौ कोई सिरदार आवै छै। तिसै हाथी री वीरघंट सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोड़ां री कळहळ सुणी। —जगमाल मालावत री बात

उ०—२ मद धारां वरसतां थकां गज डंबर नीसांण गाजै। वीजळी आंकुस विराजै। ग्रिध चात्रिग वीरघंट दादुर बोलै। मुगळ लाल ममोळा सा दिखावै। —वचनिका

उ०—३ हाथियों कै हलकै खंभूठांणातै खोलै, अरापत कै साथी भद्रजाती कै टोळै। अत देहु कै दिग्गज विंध्याचळ के सुजाव, रंग-रंग चित्रै सुंडाडंड कै बणाव। भूल की जलूस वीरघंट्ट कै ठणकै, बादळां की जगमगाट भरै भोरौं की भकी भंणकै। —र. रू.

२ देवालयों में लटकाया जाने वाला बड़ा घंटा या छोटी घंटी।
रू. भे.—बीरघंट।

वीरड़ो—देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

वीरचक्र-सं. पु. [सं.] सैनिकों को उनके वीरतापूर्ण कृत्यों के लिए शासकों द्वारा दिया जाने वाला पदक।

वीरचाळौ-सं. पु.—१ युद्ध झगड़ा।

उ०—१ मारू फील मंता, दियै पाव दंता। कड़क्कै कपाळां, चढै वीरचाळां। —सू. प्र.

उ०—२ उजेणी महासूर हैथाट आंणै, जुड़ैवा चढै देव दांणव्व जांणै। चकत्यां कमंधां रचै वीरचाळा, वणै जांणि भारत्थ पारत्थवाला। —र. वचनिका

उ०—३ जांनकीनाथ समराथ जाहर जगत; चुरस धमचक्र रचण वीरचाळा, बसै खेत वीरती। ताखड़ां जोध आरोड़ दसरथ तणा, कीजियै किसो न्रप जोड़ काळा, कहै जग कीरती। —र. ज. प्र.

२ भूत-प्रेतादि का उपद्रव।
३ वीरों का कार्य या चरित्र।

वीरचाव-सं. पु.—युद्ध, झगड़ा।

उ०—किला जीत माभी मारवाड़ में कहावै 'कूंपा', चीतवरां वारंग मिळावै वीरचाव। अनेकां विभाड़ रोदौ लोडा नै पछाड़ आयौ, राजा राज 'भीम' रौ जमायौ मारुराव। —वीसनसिंघ कूंपावत रौ गीत

वीरज-सं. पु [सं. वीर्य्य] १ सब धातुओं के अंत में निर्मित होने वाली शरीर की सात धातुओं में से एक धातु, शुक्र, रज। (डिं. को.)

उ०—१ जस भगति जादव जांणि, वणराय रोम वखांणि। वपु वरण वीरज वारि, नह वेर रांमा नारि। —पी. ग्रं.

उ०—२ तरुवर साखा मूळ बिन, रज वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ सो दादू गहिता। —दादूबांणी

२ किसी पदार्थ का सार भाग। (वैद्यक)
३ पराक्रम, तेज।
४ बल, सामर्थ्य, वीरता।
५ अन्न आदि का बीज।
६ पुंसत्व, प्रजनन शक्ति।
७ साहस, दृढ़ता।
८ फुर्तिलापन, स्फूर्ति।
९ आभा, कान्ति, चमक।
[सं वीर्य्यज] १० पुत्र, बेटा।
वि०—१ निर्मल, स्वच्छ।

उ०—संग सखी सीळ कुळ वेस समांणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजति राजकुंअरि रायअंगण, उडीयण वीरज अंब हरि। —वेलि
रू भे—बीरज, वीरय, वीरय्य, वीरय्यज, वीरिय, वीरय।

वीरजा-स. स्त्री.—वीरांगना।

वीरजित-सं. पु. [सं.] मगधवंशीय सत्यजित् राजा का पुत्र विश्वजित्।

वीरजिन-सं. पु.—भगवान् महावीर स्वामी के लिए प्रयुक्त शब्द ।
—(स. कु.)

वीरजु—देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—हथनाळि हवाई कुहक वांण यांको सोर आघात होण लागौ **वीरजु** वडा वडा जोधा । त्यां की वीरहाक होण लागी । गय हस्ती त्यां की गहणि हूई । —वेलि टी.

वीरडौ—देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—टीवा ओलटी वडी जी राजयै बाई बसवा एक रूसडी जाय। बाहिर से आयौ मेरौ **वीरडौ** जी यें राज गोरी आंगण ए क कीचड़ क्यूं । —लो. गी.

वीरण-सं पु. [सं.] चाक्षुक मन्वन्तर का एक प्रजापति ।

वि० वि०—इसकी असिक्नी (**वीरिणी**) नामक कन्या का विवाह दक्ष के साथ किया गया था जो ५००० पुत्रों की माता थी । इसे सात्वत धर्मका ज्ञान सनत्कुमार के द्वारा प्राप्त हुआ था जो इसने आगे चलकर रैभ्य ऋषि को दिया था ।

२ कांस नामक तृण ।

वीरणक-सं. पु. [सं.] जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ, धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग ।

वीरणि, वीरणी-सं. पु. [सं. वीरणि] याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य एक आचार्य ।

वी'रणौ, वी'रबौ-क्रि. अ.—१ विस्मरण होना, भूलना ।

२ देखो 'विहरणौ, विहरबौ' (रू. भे.)

वी'रणहार, हारौ (हारी), वी'रणियौ—वि० ।

वी'रिओड़ौ, वी'रियोड़ौ, वी'रघोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वी'रीजणौ, वी'रीजबौ—भाव वा० ।

वीरत-सं. स्त्री. [सं. वीरत्व] वीरता, बहादुरी, शौर्य, बल ।

उ०—१ मन भावै चलै खत्रीवट मारग, **वीरत** दावै घड़ा वरै । राजापती 'जसौ' महाराजा, कमंध सुहावै जकूं करै । —नाथौ सांदू

उ०—२ बडै बडै नरनाह, सै न घण संभळी, आनंद हुवौ उछाह, कगूडी ऊछळी । **वीरत** कीरत वात, पिरथि सिर वापरी, आयौ ओरंगबाद, फतह कर आपरी । —महाराजा पदमसिंहजी री बात

उ०—३ **वीरत** कीरत बंस वित, मत मोजां गुण मांन । संप सुलच्छण धरम सुख, व्हेयां अघ सूं हांण । —बां. दा.

उ०—४ सुर सरत धर सिर भरत सर, पळ चरत पळचर अघत अत । मिळ अच्छर हरखत चित महत, पख निरख **वीरत** वरत पत ।
—र. रू.

उ०—५ तेज वडै तखतेस रा है हिंद दिवाकर, तूज सराह न कौ तूलै बे राह बराबर । देख खळां उर ताप व्है अजसै सैणां उर, **वीरत** भलपण वीटियौ 'परताप' बहादुर । —मोडजी आसियौ

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

वीरतराय-सं. पु.—विजययाधिपति, श्रेष्ठवीर । (वं० भा०)

वीरतवंत-सं. पु.—१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—आद 'जसौ' धन आव दाव दूजौ यशवल नर, **वीरतवंत** सिद्धरावत करसी घण । रख नारायण ह्रदै मांडसिव धरण जुध स्रावज, विकरम करम वखांण करण मारण मोटा कज । —पा. प्र.

२ बलवान, शक्तिशाली ।

वीरता, वीरताई-सं. स्त्री.—१ वीर होने का भाव; वीरत्व, बहादुरी ।

उ०—१ खेल **वीरता** खेलणा, अस ठेलणा अपल्ल । 'पतौ' हुवै भल जास पख, झुकतौ लै नभ झल्ल । —जैतदांन बारहठ

उ०—२ **वीरता**, सच्चाई अर डिढता तौ इणारै आगै पांणी भरै । म्हनै तौ सुण सुण नै इचरज व्है कै आं नाकुछ गुणां रा अबूझ मिनख कैड़ा कैड़ा बखांण करिया है । म्है तौ भगवांन री भगती नै ई इणारै सांमी फुतरका जिती गिणूं । —फुलवाड़ी

उ०—३ इण तरै आपरा धरम री कुळ री मरजाद री धरती री रिछ्या करणी औ रजोगुण कहीजै सौ जिकां में रजोगुण नहीं (अभिमांन) तिकां नें औ दोहा सुंण वीररस उपजै नहीं क्यूं कि वांमें **वीरताई** री उफांण नहीं । —वी. स. टी.

उ०—४ इसी **वीरताई** है सौ आकां रा ही झूंपड़ा न देवै । वडा वडा राजाआं गढ दे वीरता री मरजाद खोय दी परंत इण वीर री ईसी **वीरता** आदि राजपूती अडग है । —वी. स. टी.

२ बल, पराक्रम ।

३ वीरता का कार्य, वीरतापूर्ण कार्य ।

४ जोश ।

उ०—झळक नवरंग जरकस बसण भूखणां, तेज धन धगन मुख **वीरताई** । 'जगाहर' 'भीम' कर लगन विलसी ज्यूंही, अगन झळ धसण मन मगन आई । —किसनौ आढौ

रू. भे.—**वीरत**, वीरता, बीरताई, बीरती, विरत्ति, विरत्ती, वीरति, वीरती वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती ।

वीरति, वीरती—१ देखो 'वीर' (४२, ४३, ४४, ४५, ४६)
(अल्पा., रू. भे.)

उ०—राति जगावै **वीरती**, दिन की लेवै नींद । हरीयौ कहै कुरांड कूं, क्यूं करि मुई उलींद । —अनुभववांणी

२ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—जांनकीनाथ समराथ जाहर जगत, चुरस घमचक रचण वीरचाळा, वसै खेत **वीरती** । ताखड़ा जोध आरोड़ दसरथ तणा, कीजियै किसौ नृप जोड़ काळा, कहै जगत कीरती । —र. ज. प्र.

उ०—२ खळ दळ समर खपावत, किव जरा गावत कीरती। सीता बाहर सभता वसुधा जाहर वीरती। —र. ज. प्र.

उ०—३ नरां नरिंदां पार न लब्भै, वीरति खुरम विढेवा विब्भै। साह तणौ घर फाटी सब्भै, ऊमर माड पडे की अब्भै। —गु. रू. बं

उ०—४ वीरति मुख सूरति विळकुळियं, कमधज तेज कमळ कळमळयं। किसन वरण माफिल कठळियं, सूरज किरण जांण भळहळियं। —गु. रू. बं.

उ०—५ वड विना क्रांमति न को वीरति, पिंड हुई मत जाय संपति। इमै इण भति धरौ हिम्मति, पुळौ पर खिति रहौ नरपति। —रा. रू.

वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती—देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—१ जळ महि तौ समर अपर जन, सर 'प्रताप' समरत्थ। वर्ण न को निरबीज भुव, त्यां कमधां वीरत्त। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ वीरत्ति विढेवा विळकुळेयं, मुख राग मूंछ भ्रूंहां मिळेयं। चख लाल कीध मुख कीध चोळ, कळकळै तेज विकसै कपोळ। —गु. रू. बं.

उ०—३ भाराहरो कुळिभांण कविदां दियै केकांण, बाचीजे बडा बखांण प्रथमी प्रमाण। मारको अमलीमांण जाडै जोध जुवांण, वीरत्ति दत्ति विनांण जांण जांण जांण। —ल. पिं

वीरथाट—सं. पु.—सैना, फौज। (अ. मा.)

वीरदांण—सं. पु.—देखो 'विरुद' (मह., रू. भे.)

उ०—माथै सत्रां खांपां घावै गवांवै जिहांन माथै, दसु दसा सोभाग छवायौ वीरदांण। जींहांन जांणी जोम छतै 'नाहरेस' जायौ, अजंठी ऊठाय आयौ आपै ही आथांण। —कमजी दधवाड़ियौ

वीरदेत, वीरदैत—देखो 'विरुदेत' (रू. भे.)

वीरद्युमन, वीरद्युम्न—सं. पु. [सं. वीरद्युम्न] भूरिद्युम्न नामक राजा का पिता, प्राचीन वीर नरेश।

वि० वि०—अपने खोये हुए पुत्र भूरिद्युम्न को खोजते हुए यह तनुविप्र नामक ऋषि से मिले एवं आशा-निराशा से सम्बन्धित तत्वज्ञान पर संवाद किया था।

वीरधनवन, वीरधन्वा, वीरधन्वन—स. पु. [सं. वीरधन्वन्] १ महाभारत युद्ध में कौरव पक्षीय त्रिगर्द देश का राजा, जो धृष्टकेतु के हाथों मारा गया था।

१ कामदेव का नाम।

३ धृष्तराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

४ चेदी नरेश का नाम जो दशार्णराजा की पुत्री सुदामा ने पति थे।

वि० वि०—नल की पत्नी दमयन्ती इन्ही के यहाँ रही थी और यहीं से उसे कुंडिनपुर वापिस लिवा ले गये थे।

५ अत्यतं पराक्रमी भुजाओं वाले भगवान्।

वीरधरमन, वीधरमा—सं. पु. [सं. वीरधर्मन] भारतीय युद्ध में पांडव-पक्षीय एक राजा।

वीरनंद, वीरनंद्—सं. पु. [सं. वीर+नंद] वीरों की सन्तान, वीरपुत्र।

वीरनाद सं. स्त्री. [सं.] वीरध्वनि, वीरगर्जना।

उ०—अस्त्र गुलाब अबीर उडायौ, सस्त्र पिचरका छिब सरसायौ। वीरनाद सोइ चंग वजायौ, रंग फाग सम जंग रचायौ। —ऊ. का.

वीरपउंतार—वि.—वीरों को उत्साहित करने वाला, वीरों को जोश दिलाने वाला।

उ०·········मेघाडंबर छत्र, गंगायमुना वखरं, मुद्रावतार सीकिरिघोरंधार, गयद्रमक्क, रायद्रहबोल, रायत्रिभाड, रायपंवायरण राजा बइठड छइ, डावइं पखइं मंत्रि, वीरपउंतार दीवटिया वयगरणा यंत्रवाहक चमरहारि छडायता·········। —व. स.

वीरपण, वीरपणौ—सं पु.—वीरत्व, वीरता, शूरता, बहादुरी।

उ०—१ एक वीर स्त्री आपरा पती रौ वीरपणौ देख मस्त हुई कहै छै ए सखी देख म्हारौ पती सिंघ होवै जैड़ौ छै—मौ सत्रु ऊपरै आवणा रौ मतौ करै पण पग पाछा पड़ै है छाती धड़कै। —वी. स. टी.

उ०—२ 'पता' अंग बण वीरपण, निज बाळापण नेह। जांण जवाहर रंग जिम, मेटै नहीं मिटेह। —जैतदांन बारहठ

रू. भे.—वीरपण वीरपणौ।

वीरपरा—सं. स्त्री.—सोलंकी वंश की एक शाखा।

रु. भे.—वीरपुरा

वीरपरौ—सं. पु.—सोलंकी वंश की वीरपुरा शाखा का व्यक्ति।

रू. भे—वीरपुरौ

वीरपांण, वीरपान—सं. पु. [सं. वीरपानं] एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ, जो योद्धा युद्ध में जाते समय या युद्धोपरान्त थकावट मिटाने हेतु पीते थे।

वीरपाटी—सं. पु.—वीररस की विद्या।

उ०—पढचौ वीरपाटी पांव आरांण न दिया पाछा, ताखा लाटी बैठौ ही उगती मूछां तांण। बाप खाटी मेटनी ऊजळा रूकां पांण बापौ, राज दाटी भुजां रै भरोसै झाला रांण। —माधौसिंह झाला रौ गीत

वीरपुरा—देखो 'वीरपरा' (रू. भे.)

उ०—सोळंकियां री साख री विगत—दारिया, भांणगोती, वाघेला, लराहा, बालणोत, वीरपुरा, नाथावत; वाराह, खाजीय इत्यादि है। —बां. दा. ख्यात

वीरपुरी-सं. स्त्री.-१ श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया या तृतीया के बाद आने वाले सोमवार को मनाया जाने वाला उत्सव।

२ वह नगर जहां वीर अधिक रहते हों।

रू. भे. – बीरपुरी, बीरपुली, वीलपुरी, वीरपुली।

वीरपुरौ—देखो 'वीरपरौ' (रू. भे.)

वीरपुली—देखो 'वीरपुरी' (रू. भे.)

वीरप्रसविनि-सं. स्त्री. [सं.] १ वीर पुत्रों की माता।

२ पृथ्वी जहां वीर उत्पन्न होते हों।

वीरप्रसु, वीरप्रसू-सं. स्त्री. [सं. वीरप्रसू] १ वह स्त्री जो वीरसंतान को जन्म देती हो।

२ वह भूमि जहां वीर उत्पन्न होते हों।

वीरबळी—देखो 'बीरबळी' (रू. भे.)

वीरबहूटी, वीरबहोड़ी-सं. स्त्री.—वर्षा ऋतु में पाया जाने वाला लाल रंग का कीड़ा विशेष, इंद्रवधु।

उ०—वीरबहूटी आज ही भुव पै मखमल भांत, सांप्रत सांवण तीजणी खूब करी सब ख्यांत। —लो. गी.

रू. भे. – बीरबहूटी

वीरबांणी—देखो 'वीरवांणी' (रू. भे.)

वीरबाहु-सं. पु. [सं.] **१** भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

२ महाभारत युद्ध में भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

३ चेदीनरेश जो दशार्णराज सुदामन् की कन्या का पति था।

वि० वि०—इसकी पत्नी नल की परित्यक्ता पत्नी दमयन्ती की मौसी थी और नल के छोड़ देने पर दमयन्ती इसी के पास रही थी। इसके पुत्र का नाम सुबाहु एवं कन्या का नाम सुनंदा था।

४ राम-रावण युद्ध में राम पक्षीय एक वानर।

५ गन्धर्व, जिसने तक्षक से युद्ध किया था।

६ लंकानरेश रावण के एक पुत्र का नाम।

७ परम विष्णुभक्त काम्पिल्य नगर का राजा, जिसकी पत्नी का नाम कान्तीमती था, जो पूर्वजन्म में भी इसी की पत्नी थी।

वि.—जिसकी भुजाऐं पुष्ट अथवा मजबूत हों।

वीरभदर, वीरभद्द, वीरभद्र-सं. पु. [सं. वीरभद्रः] १ श्रेष्ठ एवं प्रसिद्ध वीर, योद्धा।

२ वह घोड़ा जो अश्वमेधीय यज्ञ के लिए उपयुक्त हो।

३ मनोभद्र नामक सोमवंशीय राजा के एक पुत्र का नाम।

४ अविक्षित राजा की पत्नी निभा का पिता, एक राजा।

५ यशोभद्र राजा का भाई।

६ सुगन्धित घास, खस।

७ भगवान् शंकर के क्रोध से उत्पन्न हुवा एक गण जिसने दक्ष यज्ञ को ध्वंस किया था।

उ०—१ चावदंत दीह अगां समा ऊभ लाग चाळै, नरा ताळै सांमध्रमी तणौ साचौ नेम। क्रोध वाळै रूद्र गनीमांण रौ विधूंस कीधौ, 'जोध' वाळै **वीरभद्र** दक्ष जाग नेम। —बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ रातिं झाळ चखां चौळ काळी सहै काळ रूप, रूद्र **वीरभद्र** काळी करंतौ आरोध। दोड़ियौ सांमहौ देखै काया सूं हरांमी दूठ, जाणौ बिनां माया सूं वंदूच वाळौ जोध। —करणीदांन कवियौ

उ०—३ मू मध जेठ कळा धर सारी, आयौ रवि ज्यौं किरण अकारी। पंड कोपियौ किनां धार पण, **वीरभद्र** दिख ज्याग विधूं-सण। —रा. रू.

उ०—४ सुणि कथ पदम सभै दळ साजा, रिण परगण उच्छव करि राजा। जटी **वीरभद्र** घना जगाया, आठ हजार इसा भड़ आया। —सू. प्र.

वि० वि०—दक्ष यज्ञ में शिव के अपमानित होने के कारण क्रुद्ध होकर जटायें झटकने पर इसका निर्माण हुवा। मतान्तर से क्रुद्ध शिव के सिर से टपकी बूंद के पृथ्वी पर गिरते ही इसका निर्माण हुआ। कई जगह शिव के मुंह से उत्पन्न होने या स्वयं शिवावतार होने की कथा प्रचलित है। शिवाज्ञा से इसने दक्षयज्ञ को विध्वंस हेतु अपने रोमकूपों से रौम्य नामक रुद्रगणेश्वरों की सृष्टी की थी। दक्षयज्ञ के बाद यह शिव सेनापति भी था। इसने शिव-जालधर युद्ध में भी अपने पराक्रम को दिखाया। समस्त देवगणों व कश्यपादि ऋषियों के दावाग्नि में भस्म हो जाने पर मंत्रों से सिद्ध भस्म से इसने उन्हें पुनर्जीवित किया था। इसी प्रकार सांप व पंचमेढू नामक राक्षस के द्वारा देवताओं के निगल लिए जाने पर इसीने उन्हें पुनर्जीवित किया था। हिरण्यकशिपु के उदर-विदीर्णोपरान्त विश्वसंहारार्थ उद्यत नृसिंहावतार का भी इसी ने दमन किया था।

रू. भे.—बीरभद्र।

वीरभद्रक-सं. पु. [सं.] गौडदेशाधिपति, जिसकी पत्नी का नाम चंपकमंजरी था।

वीरभाव-सं. पु.—**१** बहादुरी, वीरता, शौर्य।

२ बल, पराक्रम।

रू. भे.—बीरभाव।

वीरभूम, वीरभूमि, वीरभोम-सं. स्त्री. [सं. वीरभू, वीरभूमि] १ युद्धस्थल, युद्धक्षेत्र।

२ वह भूमि जहाँ वीरों के जन्म अधिक होते हों।

३ श्मशान।

रू. भे.—बीरभोम।

वीरमंत्र-स. पु. [सं. वीर+मंत्र] श्मशान भूमि में भूत-प्रेत एवं वीरों को जगाने का मंत्र।

उ०—अराध **वीरमंत्र** एक, साधनं सधीत रा। सिखंत भेद कोक-सार, सासत्रं संगीत रा। —सू. प्र.

वीरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

वीरमणि-स. पु. [सं.] १ देवपुर का राजा जिसके पुत्र का नाम रुक्मांगद था।

वि० वि०—राम के भाई शत्रुघ्न एवं इसके पुत्र रूक्मांगद में राम के अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को पकड़ लेने के कारण युद्ध हुआ था। उक्त युद्ध में शिव शंकर इसके पक्ष में थे जिन्होंने शत्रुघ्न को पाश में बांध लिया था, किन्तु रामचन्द्रजी ने छुड़ा लिया था।

२ एक परम शिवभक्त राजा, जिसके श्रुतवती नामक पत्नी थी।

वि० वि०—इसकी प्रार्थना सुनकर स्वयं शिव ने योगिनियों से युद्ध किया था किन्तु अन्त में इसकी हार हुई।

वीरमति, वीरमती-सं. स्त्री. [सं. वीरमती] भारतवर्ष में बहने वाली एक प्राचीन नदी का नाम।

वीरमत्स्य-सं. स्त्री. [सं.] एक जाति विशेष। (प्राचीन)

वीरमदे-सं. पु.—भाटी वंश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

वीरमपोता-सं. पु.—चारण जाति के याचक ढोलियों की एक शाखा। (मा. म.)

रू. भे.—बीरमपोता

वीरमपोतौ-सं. पु.—चारण जाति के याचक ढोलियों की 'वीरमपोता' नामक शाखा का व्यक्ति।

वीरमरदन-सं. पु. [सं. वीरमर्दन] एक दानव का नाम। (पुराण)

वीरमहर-स. पु.—राजा के पार्श्ववर्ती लोगों में से एक।

उ०—······अंगमरद कूटिकार चाटुकार उपांनहधर अंगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक अंककार फलिहकार मल्लयोद्ध सस्यपाल बालबंध अंगरक्षक **वीरमहर** धनुरद्धर खड़गधर दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक········। —व. स.

वीरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

वीरमात, वीरमाता-सं. स्त्री. [स. वीरमातृ] १ वीरपुत्रों की माता।

१ वीर नामक गणेश की माता।

३ पृथ्वी।

४ शत्रुओं का संहार करने वाले वीरों की रक्षा करने वाली देवी।

वीरमारग-सं. पु. [सं. वीरमार्ग] वीरों को वीरगति प्राप्त होने के बाद मिलने वाला स्वर्ग, बैकुंठ।

वीरमुग्दर-सं. पु.—राजा के पार्श्ववर्ती लोगों में से एक।

उ०—·········**वीरमुग्दर** धनुरद्धर खडगधर उपांनहधर अंगार-धर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक नरवैध·········। —व. स.

वीरमुठ—देखो 'वीरमूठ' (रू. भे.)

उ०—बडावास था कोस ०, उगोण मांहै। सूनौ खेड़ो छै। दत्त राव सीगांगाजी रौ बारैठ भैरव नीबाबत रोहड़िया नै। **बीरमुठ** साथै दीयौ। हमै गजसी नरावत नै माधौ मेवाहरोत छै। —नैणसी

वीरमुद्रिका-सं. स्त्री. [सं. वीर+मुद्रिका] पैर की बीच की अंगुली में पहनने का छल्ला।

वीरमूठ-सं. स्त्री.—किसी राजा द्वारा कवि को दिया जाने वाला नकद पुरस्कार जो एक मुस्त रुपयों के ढेर में से दोनों हाथों की मुट्ठी भर कर उठाया जाता था।

उ०—सालवाहण जेसळ संभ्रम, कवियां दाळिद्र कप्पियौ। करि **वीरमूठ** बूजौ सुकव, थिर बारहठ थप्पियौ। —नैणसी

रू. भे.—वीरमुठ।

वीरम्रदंग-सं. पु. [स. वीरमृदग] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—**वीरम्रदंग** वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहतै त्रंबक तणै त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउं, भेरि भुंगल तणै भूभूयाटि भूकिइं भिलकि फाटी·········। —व. स.

वीरय, वीरय्य—१ देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—वीतां अधूरां वार पूरां वेध सूरां वच्चए, सेलै प्रहारं धार सारं मार मार मच्चए। बग्गा खड़ग्गै दुहूं वग्गै काळ रंगै **वीरयं**, अच्छरां उमंगै दूर अंगै चाव रगै वीरय। —रा. रू.

२ देखो 'वीरज' (रू. भे.)

वीरय्यज—देख, 'वीरज' (रू. भे.)

वीररथ-सं. पु. [सं.] द्विमीढवंशीय बहुरथ राजा का नामांतर। यह नृपंजय राजा का पुत्र था।

वीररस, वीररस्स-सं. पु.—१ पीला पीत*। (डिं. को)

२ देखो 'वीर' (३८) (रू भे.)

उ०—१ 'पातल' री वग ऊपड़ी, त्रजड़ भड़ी मभ त्राट। बड़ी बड़ी वप वीर री, घडी **वीररस** घाट। —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ ऊससै कमंध लागौ उरसि, राजा चढियौ **वीररस**। उण वार लोह मुंहगौ हुवौ, सोंना ही हूंता सरस। —सू. प्र.

उ०—३ विढेवा बधै दाखियौं **वीररस्सं**, 'अरस्सी' हरौ कूंत तोलै अरस्सं। ओपै फौज माही अमरसिंघ तन्नं, किरै जांण लंका दळै कूंभ क्रन्नं। —गु. रू बं.

रू. भे.—बीररस, बीरारस, वीरारस।

वीररेण, वीररेणु-सं. पु. [सं. वीररेणु] पांडव पुत्र भीमसेन।

वीरलोक-सं. पु. [सं.] १ स्वर्ग, बैकुंठ।

२ वीरों को वीरगति प्राप्त होने पर मिलने वाला लोक।

वीरवंत, वीरवत-वि. [सं. वीरवत्] जिसमें वीर अधिक हों, वीरों से युक्त।

उ०—तुम्हैं करवउ धरम, पणि नथी जांणता मरम। सांभलउ वन ते वणवीइ जे व्रक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे **वीरवत**, सरोवर ते जे कमलवत, मेघ ते जे समावंत महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रसाद ते जे घजावत, धरमी ते जे दयावंत, आदि। —वाग्विलास

सं. पु.—१ सावर्णि मनु का एक पुत्र। २ ब्रह्मसावर्णि मनु के पुत्र का नाम। ३ साध्य देव।

वीरवर-वि —श्रेष्ठ वीर, योद्धा, बलवान।

उ०—१ ब्रजनाथ लिखमी संग बैठो, आरांण वांणां ऊफणै डिगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि कूरम पीठ जादम डाहळ जोरवर वाजिया खागे **वीरवर**। —जगौ खिड़ियौ

उ०—२ दिखणी पतसाह राह दोय द्रोमभि, कड़ि आवध आविया कसि। बेस कहै धरि चाल **वीरवर**, समर कहै मरणौ अवसि।

—सुजांणसिंघ जगन्नाथोत कछवाहा रौ गीत

उ०—३ वडम पराक्रम **वीरवर**, विहर निडर बळ बांह। सर 'प्रताप' केई सुखी, छत्रधर तो कर छांह। —जैतदांन बारहठ

सं. पु.—१ तालध्वज नरेश माधव की पत्नी सुलोचना के द्वारा पुरुष धारण किया गया नाम।

रू. भे.—वीरबर, वीरव्वर, वीरव्वर।

२ देखो 'बीरबळ' (रू. भे.)

उ०—'पीथळ' सूं मजलिस गई, तांनसेन सूं राग। रीझ बोल हस खेलबो, गयौ **वीरवर** साथ। —अग्यात

वीरवरत—देखो 'वीरव्रत' (रू. भे.)

वीरवरती—देखो 'वीरव्रती' (रू. भे.)

वीरवरद-स. पु.—शिव, शंकर, महादेव। (क. कु. बो.)

वीरवरमन-सं. पु. [स. वीरवर्मन्] १ सुभाल, सुलभ, लोल, कुवल एवं सरस का पिता एवं यम की पुत्री मालिनी का पति, सारस्वत नगराधिपति एक राजा।

वि० वि०—इसने पाण्डवों का अश्वमेधीय अश्व को रोक कर अपने श्वसुर यम की सहायता से कृष्णार्जुन से घोर संग्राम किया था। फिर कृष्ण ने इससे संधि की थी।

२ द्रविड़ देशाधिपति, एक राजा, जिसकी पत्नी हेमांगी पूर्व जन्म में मोहिनी नामक अप्सरा थी।

वीरवांणी, वीरवांनी-स. स्त्री.—वीरध्वनि, वीरगर्जना।

उ०—कलकार **वीरवांणी** कजाक, हलकार दुहूं बलबाज हाक। धांनक टकार भलकार धोह, ललकार मार अणपार लोह। —वि. सं.

रू. भे.—वीरवांणी

वीरवांनी-सं. स्त्री—स्त्री, औरत।

उ०—सोनै री थाळी में लोहरी मेख मारणी ही तौ म्हां सूं क्यूं भिड़ची? इसी वेगी ही भागवांनी हुयी खतम? सीवा ही कांखां मैं गोळियां ढूंढै। पण म्है ही बाजींदा हां! आगलै री म्यांन नेवता ही कौ सका नीं! इसौ वनड़चां रो नादीद ही कोनी! आ ही नहीं लाधी! एक एक बंदै लारी चार-चार **बीरवांनी** बैठी है कुंवारपणौ उनर ग्यो। अबै भलां ही बाप आपरी बेटी नै काठी राखै।

—दसदोख

वीरवाहण, वीरवाहन-सं. पु. [सं. वीरवाहन] १ ब्रह्महत्या से पीड़ित एक राजा।

२ विराध नगरी का एक राजा जिसने वसिष्ठ ऋषि के साथ धर्म सम्बन्धी चर्चा की थी।

वीरविक्रम-सं. पु.—एक शूद्र जिसकी कन्या का विवाह एक चांडाल के साथ हुआ था।

वीरविद्या-सं. स्त्री —१ वीरों अर्थात् श्मशानों में भूतों व प्रेतात्माओं को जागृत करने की विद्या, मंत्र-तंत्र।

उ०—नको सुपन जागै नको सुखपती, नको पद तुरिया नको मोख मुगती। नको भूत प्रेत नको **वीरविद्या**, नको काळ जाळ नकोउ अविद्या। —अनुभववांणी

२ युद्धविद्या।

वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी—देखो 'वीराधिवीर' (रू. भे.)

उ०—१ कूंग रांम सकज्ज, जैतधारी जैतावत। 'वाघ' 'फना' वेडकां **वीरवीराध** विजावत। —रा रू.

उ०—२ धडै साबकै जोर सूं खाग धारां, हुयै चोट वारी हजारै हजारां। वडा **वीरवीराध** वाकार वाहै, सु तौ सांमुहै चाचरै वाहि स है। —रा. रू.

उ०—३ मयण कांम मूरत्ति, गात गिरवर वींझाचळ। वडौ **वीर-वीराधि**, सिंध रूपी सहंस बळ। —गु. रू. बं.

उ०—४ छऊं भेंन छोटी दहूं ओड़ छाजै, बिचै पाट राजीव माजी विराजै। खड़ी लांगड़ो **वीरवीराधि** खेतू, करैं रागड़ां छागड़ां राह केतू। —मे. म.

वीरवैताळ-वि.—उत्पात करने वाला, बदमाश, शैतान, उद्दंड।

उ०—कहै अचूकी ओर कथ, भलो 'कळो' भूपाळ। म्है तौ सब जग मोहिओ, तूं तौ **वीरवैताळ**।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वीरव्रक्ष, वीरव्रख-सं. पु. [सं. वीरवृक्ष] अर्जुन नामक वृक्ष का नाम।

वीरव्रत, वीरव्रती-वि. [सं.] अपने संकल्प पर दृढ़ रहने वाला।

२ बहुत ही निष्ठा एवं आचारपूर्वक रहने वाला, निष्ठावान।

सं. पु.—मधु राजा एवं सुमना के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जो

मंथु एवं प्रमंथु का पिता एवं भोजा का पति था। (पुराण)
रू. भे.—वीरवरत, वीरवरती।

वीरव्वर—देखो 'वीरवर' (रू. भे.)
उ०—'जोधा' 'चांपा' 'अखा', भला भणि 'डूंगर' 'भाखर'। 'मांडण' 'मडंळा' 'करन', वरण फौजां **वीरव्वर**। —गु. रू. बं.

वीरसंग–सं. पु. [सं. वीर–शङ्ग] ४९ क्षेत्रपालों में से ३९ वां क्षेत्रपाल।

वीरस—देखो 'विरस' (रू. भे.)
उ०—पछै राव मालदे तौ मेड़ता माथै कटक कोई नंह कीयौ। तठा पछै मास ८ राव मालदे संमत १६१९ रा काती सुदी १२ काळ कीयौ। राव चंद्रसेन पाट बैठौ। सु चंद्रसेन रै भाई ग्रासीया जोर लागा। रजपूत नै रिणमल नै राव **वीरस** हुग्रो। राव चद्रसेन तौ मेड़तै रौ नांव लीयौ नहीं। —नैणसी

वीरसजा, वीरसज्जा—देखो 'वीरसय्या' (रू. भे.)

वीरसयन–स. पु. [सं. वीरशयन] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।

वीरसय्या–स. पु. [सं. वीरशय्या] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।
रू. भे.—वीरसजा, वीरसज्जा

वीरसरमा–स. पु. [सं. वीरशर्मा] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण जो कुशिक वशोत्पन्न लक्ष्मी नामक कन्या का पति था।
वि० वि०—इसके तीर्थयात्रा पर जाते समय इसकी पत्नी गर्भवती होने के कारण इसने उसे राजा तोंडमान के यहां छोड़ दी थी। राजा ने छः माह की भोजन सामग्री भरवा दी और फिर भूल गया। ब्राह्मणी ने स्वाभिमानवश भोजन मांगा नहीं और वहीं मर गई किंतु इसने दो वर्ष बाद उसे वेंकटाचल पर स्थित अस्थिकूट सरोवर में स्नान करवा कर जीवित कर लिया था।

वीरसिंघ, वीरसिंह–सं. पु. [सं. वीरसिंह] वीरमणि राजा का पुत्र एवं रुक्मांगद का भाई एक राजा, जिसने राम के अश्वमेधीय अश्व को रोक कर शत्रुघ्न से युद्ध किया था।

वीरसुता, वीरसुया–वि. [सं. वीरसुता] वीर पुत्रों को जन्म देने वाली, वीरप्रसू।
उ०—एक **वीरसुया** सती आपरा पुत्र नै हींडा देतौ घर री रीति सिखावै है। —वी. स. टी.
सं. स्त्री.—**१** वीरबाला, वीरस्त्री।
२ भूमि जहां वीर अधिक उत्पन्न होते हैं।
रू. भे.—वीरसूया

वीरसू–सं. स्त्री. [सं.] **१** वीर पुत्र प्रसव करने वाली स्त्री।
२ वह भूमि जहां वीर अधिक उत्पन्न होते हैं।

वीरसूया—देखो 'वीरसुता' (रू. भे.)
उ०—**१** हूं ग्रां **वीरसूया** (वीरमाता) वां रांणियां री कूख नै बळिहारी जाऊं और वां रांणियां री बळिहारी भ्रूंण (गरभ) हीज वां नैं कांई तरै सिखाण देवे है सो दाई रा हाथ री नाळौ काटण री छुरी नै साव (जन्मतौ) हीज बाळक झपटै। —वी. स. टी.
उ०—२ कोई एक वीरसूया (वीर री मा) भागल पुत्र नै ललकारै छै। अरै पूत म्हारी ऊमर खोय ग्रां थणां रौ दूध पाय घणा दुख सूं पाळ मोटौ कियौ सो ग्रा ग्रास ही के। —वी. स. टी.

वीरसेण, वीरसेन–सं. पु.—१ युधिष्ठर के राजसुय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि। २ एक सूर्यवंशी राजा। ३ निषध देशाधिपति नल का पिता। ४ दक्ष राजा का श्वसुर। ५ वसुदेव की धारणी राणी का पुत्र। ६ कृष्ण-वसुदेव के २१ हजार कंकणधारी वीरों के प्रमुख अग्रेसर। ७ ऋतुपर्ण राजा का पुत्र एवं सुदास राजा का पिता, एक राजा। ८ तीन राजसूय यज्ञ एवं सोलह अश्वमेधीय यज्ञ करने वाला अवंती नरेश। ९ आलुबुखारा। १० हिमालय में होने वाली आड़ नामक जड़।
रू. भे.—वइरसेन।

वीरस्थांन–सं पु. [सं. वीरस्थान] १ स्वर्ग, बैकुंठ।
२ देखो 'वीरासन' (रू. भे.)

वीरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)
उ०—कड़ि चालउ गोरी करइ वीरह वेदन नवि जांणइ कोई। ज्युं राजा रांणी मिलइ, युं ईणि कलि मिलजे सब कोई। —बी. दे.

वीरहक, वीरहक्क, वीरहक्कौ—देखो 'वीरहाक' (रू. भे.)
उ०—**१** खग झट विकट वुडव खरड़क, डहकत डारण **बीर** डहडक। गति घण गैहक छायीयै गयणक, 'हीरा' ऊपरि **वीरहक**। —हीरा मांगळिया रै जुध रौ गीत
उ०—२ चत चैन थकां नत चोक चौहटै, सुनतु पुठै वहै सक। समहर समहर मोहर सुजीयां, हुग्रै हुवंती **वीरहक**। —सूरजमल करमसोत रौ गीत
उ०—३ घुबै सार मारं धड़ै धार धारं, हुवै **वीरहक्कं** हजारै हजारं। छटा ज्यों विछुटै भुजै सेल छूटै, खगै ग्रंग तूटै ग्रनोग्रन्न खूटै। —रा. रू.
उ०—४ नवकोट सुभट कुळवट निहार, संग्रांम ग्रड़प ग्रप छळ संभार। हुई धीर सधीरां **वीरहक्क**, हर सकति डंक डमरू डहक्क। —रा. रू.
उ०—५ ऊठचौ दिली हूं ग्रोरंगसाह एक राह तणै ग्रांटै, महाबाह बिहूं राहां मेटबा ग्रजाद। धकां धकां चंहू चकां हूचकां खड्ग धारा। **वीरहक्कां** हींदवां तुरक्कां भिड़ै बाद। —महारांणा जयसिंहजी द्वितीय रौ गीत

वीरहथ, वीरहथौ, वीरहथ्थ, वीरहथ्थौ–सं. पु.—वीर, बहादुर।
उ०—**वीरहथा** आपहमता, प्रभुता लियण ग्रमाप। कविता रजपूती कदर, तुहि करता 'परताप'। —जैतदांन बारहठ

वीरहाक, वीरहाबौ–सं. पु.—वीररसपूर्ण ध्वनि, ललकार।

उ०—१ डमडमै सकति डम्मरू डाक, है-थाट हुव्व हुय वीरहाक। गडि ग्रडै भेर दम्मांम गज्ज, गयणगज बारह घण गरज्ज।
—गु. रू. बं.

उ०—२ हथनाळि हवाई कुहकबांण यांको सोर आघात होण लागो। वीरजु वडा वडा जोधा। त्यां की वीरहाक होण लागी। गय हस्ती त्यां की गहरिण हुई। वेलि टी.

उ०—ग्रह ग्रहै ग्रंबाळ जोगी ग्रमंक, सींधवौ राग प्रगटंत संक। करि वीरहाक ग्रोरै केकांण, मच राड़ि ग्राड़ि गोळा मंडांण।
—मा. वचनिका

रू. भे.—वीरहक, वीरहाक, वीरहक, वीरहक्क, वीरहक्कौ।

वीरहोत, **वीरहोतर**, **वीरहोत्र**—सं. पु. [सं. वीरहोत्र] १ विन्ध्याचल पर्वत पर स्थित एक स्थान।

२ हैहय राजवंश का ग्राद्यपुरुष हैहय सम्राट।

वीरांगणा, **वीरांगना**—सं. स्त्री. [सं. वीरांगना] वीर स्त्री, बहादुर स्त्री।

उ०—वीरांगना वचन-ए ढोलण ढोली नूं कह इतरी ढोल री पलां (ढोल री पौह वा गत) मैं इतरी क्यूं ताकीद करै जोधार तौ ग्रापरा बाह घोड़ा नैं चर चरवादार मालक रौ घोड़ौ सभै छै तैं मालक है सो बगतर पहरै इतरी देर छै। —वी. स. टी.

वीरांण वि०—१ वीरों का, वीरों से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

२ भयानक, भयावह।

सं. पु—१ युद्ध, समर, संग्राम।

उ०—चांदौ ईसरदास सचाळौ, 'विसन' सुजाव गढां रखवाळौ। चाड धणी 'तेजल' चहुवांणं, वाघै 'चंद' तणौ वीरांणं। —रा. रू.

२ देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत कमंधां ग्रग्गळी, रूक वजायी 'रोहड़ै'। वीरांण कि ग्रारण वावरै, ज्यां घण तत्ते लोहड़ै। —रा. रू.

उ०—२ दड़ौदड़ी तूट माथा कमंधां पांवडा देवै, रिमां सीस खाथा सार बजावै ग्रारांण। हैकंपै कायरां प्रांण छूटगा वीरांण हांसै, भैचक्कै भूलोक रत्थां थंभायौ सु भांण। —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ लीधां ग्रासतीक रैणसिंग ऊबारै घड़ा रौ लाडौ, ऊबारौ भड़ालां नाम चाढौ कुळां ग्रंब। गोरां रै ग्रजंटी बोल सांभळै वीरांण गाढौ, खगं ऊभौ मैदपाट ग्राडौ जेतखंभ। —कमजी दधवाड़ियौ

उ०—४ मदभरां डांण नीसांण मौज, फरहरां बांण ग्रसुरांण फौज। वीरांण रूप इण विध वणाय, ग्रारांण भूप सनमुक्ख ग्राय।
—वि. सं.

उ०—५ हिंदवांण तुरक्कांण हिचै, रिण ढांण वीरांण ग्रतांण रचै। करड़क्क हुवै सिलहक्क कड़ां धमचक्क भचक्कत सेल धड़ां।
—सू. प्र.

३ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—काळा सा मिरघलड़ाजी, घट ऊजळ पेटा। चोरी जाय करैजी वीरांणै खेता। —दीन मुदरदी

४ देखो 'विडांणौ' (रू. भे.)

रू. भे'—वीरांण, वेरांण, विरांण, विरांन, वेरांण, वेरांन, वैरांण, वैरांन।

वीरांणी—सं. स्त्री.—वीरता, बहादुरी।

वि०—१ भयानक, भयावह।

२ वीररसपूर्ण।

३ वीरों का, वीरों से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

उ०—रमै वीर हड़ुडै हालरै जमै जोगरांणी, बोम धोम मंडै बडै मेछांणी वैराक। पढै पाठ वीरांणी चीतौड़ थांन चढै पांणी, 'ग्रड़सांणीर' डैरोस ऊकडै ग्रैराक। —महादांन महड़

४ देखो 'वीरांनी' (रू. भे.)

वीरांणौ—१ देखो वीरांन' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'विडांणौ' (रू. भे)

वीरांन—वि० [फा. वीरान] १ उजड़ाहुग्रा, श्रीहीन।

२ जनशून्य, उजाड़, जंगल।

रू. भे.—विरांण, विरांन, वीरांण, वेरांण, वेरांन, वैरांण, बैरांन, मह.—वीरांणौ, वेरांणौ।

वीरांनी—सं. स्त्री. [फा. वीरानः] वीरान या उजाड़ होने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—वीरांणी।

वीरा—सं. स्त्री. [सं.] १ पत्नी, स्त्री।

२ वधू।

३ माता।

४ वीर पत्नी, वीर स्त्री।

५ बहिन, भगिनि।

उ०—उठै नीं, ग्रै चारण वीरा, सूती छै सुखड़ा री नींद, थारी तौ गायां मैं ग्रै, खीची घोड़ा फेरिया। ज्यां तौ गायां कै, ग्रै चारण, तूं खेती गूगळ-धूप, ज्यां तौ गायां कै ग्रै खीची मारै कोरड़ा।
—लो. गी.

६ पुत्री, बेटी।

७ बड़ों या वृद्ध पुरुषों व स्त्रियों द्वारा पुकारा जाने वाला किसी कुलवधू या युवा स्त्री के लिए सम्बोधन सूचक शब्द।

८ स्त्रियों द्वारा वृद्धों के ग्रतिरिक्त ग्रन्यों को पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला संबोधन सूचक शब्द।

उ०—१ के इता मैं मोड़ा रै बारै घोड़ा री हींस सुणीजी। कमसल वात करतां ई ग्रायग्यो। सेठांणी ग्राडो खोल बोली—वीरा, थारी ऊमर तौ लाँठी। —फुलवाड़ी

उ०—२ सासरा री मगरी ढ़ळतां ईं उणनै मड़ौ साम्ही धकियौ। सुगन तौ भला व्हिया। वेल सूं हेटै उतर वा मुड़दा नै हाथ जोड़िया अेक खांधिया नै होळैसी'क पूछ्यौ—बीरा, कुण चलियौ।

—फुलवाड़ी

९ शंयुपुत्र भरद्वाज नामक अग्नि की पत्नी और वीर की माता।

१० वीर्यचंद्र राजा की कन्या एवं करधम की पत्नी जो अविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसने अपने पौत्र मरुत्त के द्वारा सर्पसत्र प्रारंभ करवाया था जिसे अविक्षित की पत्नी वेशालिनी ने अपने पति के द्वारा बन्द करवाया था।

११ मुरा, मुरामांसी।

१२ केला।

१३ ऐलुवा।

रू. भे.—बीरा।

वीराचारि, वीराचारी-सं. पु. [सं. वीराचारिन्] १ अपने इष्टदेव की वीरभाव से उपासना करने वाले एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त।

२ वीर बहादुर या योद्धा का आचार, कर्त्तव्य।

उ०—इम आरोडिउ तपि जा करणु, पुरूख पराभवि सारू मरणु। दुरजोधनि तउ पखउ करीजइ, "वीराचारि कुलु जांणीजइ।"

—सालिभद्र सूरि

वीराजमांन—देखो 'विराजमांन' (रू. भे.)

उ०—ठाकुरजी स्रीदाऊजी रा मिंदर में सेवा तौ महाराज अभैंसिंघजी गुसांईजी विठलरायजी १७८६ कोटै सुं लाय **वीराजमांन** किया नै मिंदर रौ मोटौ कमठौ मा'राज विजैसिंघजी करायौ।

—मारवाड़ री ख्यात

वीरातन-सं. पु.—१ बहादुरी, वीरता।

उ०—१ हणमंत द्रोण हिल्लोळवा, **वीरातन** किरि विळकुळै। दळथंभ विढण दखणाधि सूं, ऐम ऊठियौ भुज आंमलै। —गु. रू. बं.

उ०—२ सुजड-हथा "चांद राउ" समोभ्रम, विधि **वीरातन** वैर विधि। रोपै जई पवगि आसण रिध, रिप तई भंजे राज रिधि।

—राव रिडमल रौ गीत

उ०—३ आरण कियौ उछाह, **वीरातन** वद्धियौ। मारू लोह मराट, चमू सझ चढ्ढियौ। —किसोरदांन बारहठ

२ बहादुर, वीर, योद्धा।

रू. भे.—वीरायतन।

वीरादवीर; वीरादिवीर, वीरादीवीर—देखो 'वीराधिवीर' (रू. भे.)

उ०—कथ सुणी अेम 'विसनै' कमंध, मेड़तियै गूलरपत मदंध। सांमहां जाय मिळियौ सधीर, विसनेस कमंध **वीरादवीर**। —पे. रू.

वीराधपत, वीराधपति, वीराधपती-सं. पु.—[सं. वीराधिपति] वीरों में श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि, महावीर।

वीराधवीर—देखो 'वीराधिवीर' (रू. भे.)

उ०—१ मूछां अणी भ्रूंह मेळ, दाढी कर दाखि जी। विढसी **वीराधवीर**, सूर जितै साखि जी। —गु. रू. बं.

उ०—२ वरव्वीर खूमांण **वीराधवीरं**, कळी-मूळ 'सादूळ' बेवै कंठीरं। भलौ भीच कल्यांण मल्लौ भुजाळौ, 'मांनावत' वेढीमणौ मच्छराळौ। —गु. रू. बं.

उ०—३ अेळा उधमैं अवाक भालां छाक डाक दै दै आंणं, धाड़ा धाड़ा आपांणै भरोसै भुजा धींग। चंद्रहास ऊवांणै **वीराधवीर** जांणै चौजां, दिली री कंवारी फौजां मांणै देवीसींग।

—राव देवीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—४ **वीराधवीर** जिसा धीर पंडिर। यांरी वी रजपुती असी आकाय। ज्यां सूं जमराज पणि देसत खाय। यां नै आंगवणि कुण करै। सिर उपर रूठा फिरै। —पनां

वीराधि-सं. पु.—वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—जोगी तुझ नां जयौ जूना जुवारी, महादेव माहेस अणकल मुरारी। महावीर **वीराधि** अेकलमलं, अधिक आप उदार दाता अदलं। —पी. ग्रं.

वीराधिवीर-सं. पु.—वीरशिरोमणि, महावीर।

उ०—१ सुत रूरुक हुवौ व्रक पोहु सधीर, व्रक सुतण बाहु **वीराधिवीर**। सुत बाहु सगर परगट संसार असमंज सगर सुत न्रप उदार।

—सू. प्र.

उ०—तेहै घोड़ै किस्या खित्री चढिया। पंचवीस वरस ऊपहरा। पंचास वरस मांहि। लुघसंघांनीक। **वीराधिवीर**। आकरणांत मूंछ। —कां. दे. प्र.

उ०—३ **वीराधिवीर**, हेलां हमीर। 'मधुकर' सुतन्न, किरतव्व क्रन्न। र. वचनिका

रू. भे.—बिराधवीर, बीराधबीर, बीराधवीर, बीराधिबीर, बीराधिबीर, वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी, वीरादवीर, वीरादिवीर, वीरादीवीर, वीराधवीर।

वीरापांचम-सं. स्त्री.—भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी।

वीराबारस-सं. स्त्री.—कार्त्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी।

वीराबीज-सं. स्त्री.—कार्त्तिक शुक्ला द्वितीया।

वीरायतन—देखो 'वीरातन' (रू. भे.)

उ०—सांतल तणउं रुधिर सुरतांणि, वांचउं **वीरायतन** वखांणि। पदम नाभ पंडिति मति कही, बीजा खंड समापति हुई।

—कां. दे. प्र.

वीररस, वीररसि—देखो 'वीर' (३८)

उ०—१ घणि वाजित्र घण घाउ, घमघमि अपछर घूघरा। वाग्गा **वीररस** तणा, नाराजिआं निहाउ। —र. वचनिका

उ०—२ तुकमां रूप खतंम फतै रा फब्बिया, देखंतां डर दंभ ग्ररंदा दब्बिया। विहसंतौ निज वदन **वीरारस** वेस रौ, दीपायौ हद दौर मुरद्धर देस रौ। —किसोरदांन बारहठ

उ०—३ **वीरारस** घरण घोख वाजई, ग्रभिनवा सिरि द्रोंरण। सेल सावळ कुंत मुदंगर, उछळई ग्रति स्रोरण। —रूकमणी मंगळ

उ०—४ वींझाजळ रूप गयंद चढि मेघाडंबर विराजै। नौबतूं कै निहाव **वीरारस** वाजै। जिस वखत जळाबोळ हालोहळसै फौज हल्ली। नालूं कै निहाव सेती धरती थरसली। —सू. प्र.

वीरावी–क्रि. वि.—वीरों में।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां विरंच जांरणै, धूरजटी तावां ऊंच भावां मेर धींग। ग्रावा लोम रिखी रांम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊंच, सांमवेद वेदांगां **वीरावी** संभूसींघ। —हुकमीचंद खिड़ियौ

वीरासण, वीरासन–सं. पु. [सं. वीर+ग्राशनं] १ निगाह या चौकसी रखने की क्रिया, रखवाली।

२ युद्ध ग्रादि में ग्रधिक जोखिम वाला पद।

३ वीर सिपाही।

[सं. वीर+ग्रासनं] ४ वीरों के बैठने का ढंग विशेष।

उ०–जिल ग्रैमक सै **वीरासन** बैठा न गया, पिछाड़ी को हाथ टेक कर ग्रगाड़ी पैर फैला दिया। जिस वखत रघुनाथसिंघ ग्रेसा निजर ग्राया, मांनौं बुझी मसाल सा दीदार दिखलाया। —दुरगादत्त बारहठ

५ पहरा दिया जाने वाला स्थान।

६ घुटना मोड़कर बैठने क्रिया।

७ योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन विशेष जिसमें बायें पाव को घुटने से मोड़कर इसके पजे को गुदा के नीचे उत्तर दक्षिण ग्राडा रखकर ग्रौर दाहिनै पांव की एड़ी बांये पांव के ग्रंगूठे को लगाकर घुटने को छाती की तरक ऊंचा करके बैठना होता है। हाथों या पांवों के हेर फेर से इसका दूसरा प्रकार भी होता है।

उ०—एक ग्रासरण ग्ररु ऊकडू, पड़िमा काउसग्ग रात। पद्मासन **वीरासणो**, रहै छकाया-नाथ। —जयवाणी

रू. भे.—वीरस्थान

वीरि–सं. स्त्री.—१ बहन, भागिनी। (ह. नां. मा.)

२ वीर स्त्री।

उ०—एक नारि रण नइ तडि ऊभी, बंधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीरिण धाय पडतउ नवि जांणिउ, न्याय वीरू कुल **वीरि** वखांणिउ। —सालिसूरि

३ देखो 'वीरी' (रू. भे.)

वीरिणी–सं. स्त्री.—[सं.] १ वह स्त्री जिसका पति एवं पुत्र जीवित एवं सुखी हो।

२ वीरण प्रजापति की कन्या एवं दक्ष प्राचेतस की पत्नी।

वि० वि०—इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के ग्रंगूठे से हुई बताते हैं। इसके एक हजार पुत्र एवं पचास कन्याएँ उत्पन्न हुई थी।

३ शुकपत्नी पीवरी का नाम।

४ ब्रह्मा की पौत्री एवं वीरसेन राजा की कन्या जो चाक्षुप राजा की पत्नी थी।

५ एक प्राचीन नदी का नाम।

वीरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वी'रियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विस्मरण हुवा हुग्रा, भूला हुग्रा।

२ देखो 'विहरियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. वी'रियोड़ी)

वीरी—सं. पु. १—वैरी, शत्रु, दुश्मन।

उ०—संदेसांहि ववज पड़चौ, लांघ्या परवत दुरघट घाट। परि-देसां परि-भूमि गयउ, **वीरी** जगह न चालइ वाट। —बी. दे.

२ देखो 'वीरि' (रू. भे.)

वीरीयां—देखो 'वेला' (रू. भे.)

उ०—१ इसी तरै कागद लिख मेलियौ, चारण साथै। सो कागद वांच नै रामदासजी तिण हीज **वीरीयां** हेरू मेलिया, ग्रनै कयौ ग्रन तौ साढियां लीयां वसां। चारण नै घोडो सिरपाव दे नै सीख दीनी पधारौ बाइ नै जुहार कहेजौ। —रा० सा० सं.

उ०—२ मा बोली—'ग्ररजन, वात सांभळी ? बाप, हमीर दुरणोटौ मांगै छै। कह्यौ—बाप, जीमण बैसे छै, तीयै **वीरीयां** ग्ररजन सु मोनुं दुरणोटौ मेलहौ।" —ग्ररजन हमीर री बात

वीरु—देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—१ सउ कूंयर पंचग्गलउं किंवहरि पढिवा जाइं। धीरू **वीरु** मति ग्रागलउं करणू पढइ तिणि ठाइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक नारि रण नइंतडि ऊभी, बंधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि घाय पडतउ नवि जांणिउ, न्याय **वीरु** कुलवीरि वखांणिउ। —सालिसूरि

उ०—३ हउ ग्रोलखावउं ग्रनइं **वीरु** वीर, तइं होइवउं उत्तर नांम धीर। छइ जीह दुरयोधन तीह खेडउं, हेलां सही कौरवमांन मोडउ। —सालिसूरि

वीरुज, वीरुज्झ, वीरुझ–सं. पु. [सं. वीर+उज्झ] ग्रग्निहोत्र नहीं करने वाला ब्राह्मण।

वीरुधा–सं स्त्री. [सं.] नागमाता सुरसा की तीन कन्याग्रों में से एक।

वि० वि०—इसकी ग्रन्य दो बहनों का नाम ग्रनला एवं रुहा था।

वीरूप-वि० [सं. विरूप] भयंकर, भयावह, डरावना ।

उ०—देवी रगत नीलमंणी सीत रंगं, देवी रूप अंबार **वीरूप** अंगं। देवी बाल जूवा व्रधं वेख वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसांभुजाळी।
—देवि.

रू. भे.—बीरूप ।

वीरेस, वीरेसर, वीरेसुर, वीरेस्वर-सं. पु. [सं. वीर+ईश एवं वीर+ईश्वर] १ शिव, महादेव ।

२ वीर, अत्यन्त वीर पुरुष ।

३ पवनसुत हनुमान ।

वीरोचंद—देखो 'विरोचन' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

—त—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

उ०—**वीरोचंदसुत** ग्रहपर वारौ, रव सुत तणौ अमरपुर राज। धीनि दातार 'कलावत' नरपुर, अनंत रोर केही गत आज।
—दुरसौ आढौ

वीरोचन—देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—ऊधम किर राळै धर अंदर, वाग असोक लांगड़े वांनर। दहुवै जुवां भड़ां खळ दहिया, **वीरोचन** अंमर दळ वहिया ।
—सू. प्र.

वीरोचनसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

वीरोटण, वीरोटणी—सं. स्त्री. जादू-टोने आदि करने वाली स्त्री. जादूगरनी।

उ०—तद कांन्हौ बोल्यौ तमक, मत करणा मक्कर। **वीरोटण** पण वेखतां, नह सोभ चढै नर ।
—ठाकुर झुंझारसिंघ मेड़तियौ

वीरोटियौ-स. पु. [सं. वीर+रा. प्र. ओट, ओटियौ] (स्त्री. वीरोटण, वीरोटणी) १ मंत्र-तंत्र द्वारा श्मशान भूमि में भूत-प्रेत जगाने वाला पुरुष, जादूगर।

२ देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कई खाय पीलिया कैणा, कई जाळ जाळोटिया। मुरधर मल्ल वणै इण मेवै, बाळ बेंड **वीरोटिया**।
—दसदेव

रू. भे.—विरोटियौ ।

वीरोध—देखो 'विरोध' (रू. भे.)

उ०—बांण पाराथ तणौ जांण **वीरोध** रौ, विखम थट रोध रौ कियां बांसौ। जबर भुज धारियां हणूं बळ जोध रौ, धमक भुज धारियां अरुण धांसौ।
—रावत अजीतसिंघ रौ गीत

वीरोळणौ, वीरोळबौ—देखो 'विरोळणौ, विरोणबौ' (रू. भे.)

उ०—चौड़ै खळ धूहड़ लाखां चाक, **वीरोळै** लाख खळां वेढाक, खत्री गुर वीरम धूणै खाग, वीछूटौ जांणेय सांकल बाग ।
—गो. रू.

वीरोळणहार, हारौ (हारी), वीरोळणियौ—वि० ।

वीरोळिग्रोड़ौ, वीरोळियोड़ौ, वीरोळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीरोळीजणौ, वीरोळीजबौ—कर्म वा० ।

वीरोळियोड़ौ—देखो 'विरोळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीरोळियोड़ी)

वीरौ-सं. पु.—१ भाई, भ्राता ।

उ०—१ उठौ बाइसा बांधौ राखड़ी, थांरा **वीरोसा** रा जतन कराव। उठौ मांनेतण खोलौ कोथळी, थारै सासु नणद नै ओढावां ।
—लो. गी.

उ०—२ औ मांय घालौ जायफळ नै जावंतरी, औ तेल बनड़ा रै अंग चढसी औ। लेखौ वां रा भाभीसा कर लेसी, औ दमड़ा वांरा **वीरौजी** भर देसी ।
—लो. गी.

उ०—३ चाकरड़ी रै मारू, थां रै वडोड़ै **वीरंजी** नै मेल राय, भरियै रै भादवै, रै म्हारा गाढा मारू, घर वसौ। वडोड़ै वीरंजी री, गवरांदे, लड़ोकड़ी नार, राय, सांझतड़ी रीसवैली म्हांरै बाबैजी सूं मोरचौ मांडसी ।
—लो. गी.

उ०—४ कुण **वीरौ** कुण बहनड़ी रे, जोयजो मोहरी बात। इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै विलापातौ रे ।
—जयवांणी

(स्त्री. वीरी)

२ भाई के नाम पर बहिन द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—१ धीवड़ियां घर बाळापण धीर, उगेरै 'वीरौ' ऊंची राग। जोवतां टुग टुग तारौ अेक, सरावै धरती रा सौभाग ।
—सांझ

उ०—२ म्हनैं **वीरौ** सुणण रौ अर बाई नै **वीरौ** गावण रौ कितरौ कोड हौ, जिण रौ कोई पार नीं। म्हूं आवतौ जितरी बार लारै पड़ जावती-बाई एकर तौ **वीरौ** सुणाय दे! अर वा झीणा कंठ सूं सरू कर देवती ।
—अमर चूंनड़ी

३ देखो 'वीर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ रंमता रांम एक रंग रता, माया मोह विखै नही मता। उतिम साध सु लछन धीरा, सौ कहीयै अजरांमर **वीरा** ।
—अनुभववांणी

उ०—२ भगवंत नइ भव पूछिया कह्यउ, तुं छइ चरम सरीरौ रे। सूरियाभ वारता सहु, गौतम पूछी कहि **वीरौ** रे।
—स. कु.

रू. भे.—बीरौ

वीरघ—देखो 'वीरज' (रू. भे.)

वीरघचंद, वीरघचंदर, वीरयचंद्र-सं. पु. [सं. वीर्यचंद्र] करंधम राजा की पत्नी एवं अविक्षित राजा की माता का पिता ।

वीरघधर, वीरधधारी—सं. पु. [सं वीर्य+धारिन्] प्लक्षद्वीप के मूल निवासी क्षत्रिय । (पुराण)

वीरचवत, वीरचवांन—सं. पु. [सं. वीर्यवत्, वीर्यवान] १ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक दानव।

२ एक सनातन विश्वे देव।

वीरचसह—सं. पु. [सं. वीर्यसह] सूर्यवंशी राजा सौदास का कल्माषपाद नामक पुत्र।

वीरचहारी—सं. पु. [सं. वीर्यहारी] दु:सह नामक यक्ष की पुत्री के गर्भ से किसी चोर के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

वील—सं. पु.—१ किसी बन्द कमरे में सामान आदि रखने के लिए आमने-सामने की दीवार में लगाया जाने वाला लंबा पत्थर।

२ देखो 'बीलौ' (मह. रू. भे.)

उ०—१ प्रथम पीपळ साग सीसमइ, आंमली अधिकार। बडबोर **वील** बहेड़ बाउळ, कूरमदी कंथार। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ जाळ जांगड़ो रूंख, सघन गायड़मल गाढौ। **वील** सरेसां वडौ खजूरां सिरसौ डाढौ। खर खोदरिया मांय, गोहिरा सांप गजवरा। झड़ झांखड़ जड़ जाय, उरणियां वडै अखव रा। —दसदेव

उ०—३ कनक कुंभ स्रीफल जिसा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रंग। पाका **वील** नारिंग सा रे, मांनु युगल चकोर रे रंग। —प. च. चौ.

३ देखो 'बील' (रू. भे.)

वीलाणौ, वीलाबौ—देखो 'विलाणौ, विलाबौ' (रू भे.)

उ०—वरसा वदीत हुइ सरद आइ। ससि अम्रत सूवै छै जोतिफळै गइ जुन्हाइ। आकास निरमळ हुवौ। बादळ **वीलाया**। सीपां गरभ धारण कीयौ छौ। ज्यां मोती जाया। —पनां

वीलाणहार, हारौ (हारी), वीलाणियौ—वि०।

वलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलाईजणौ, वीलाईजबौ—भाव वा०।

वीलायोड़ौ—देखो 'विलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलायोड़ी)

वीलावणौ, वीलावबौ—देखो 'विलाणौ, विलाबौ' (रू. भे.)

वीलावणहार, हारौ (हारी), वीलावणियौ—वि०।

वीलाविग्रोड़ौ, वीलावियोड़ौ, वीलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलावीजणौ, वीलावीजबौ—भाव वा०।

वीलावियोड़ौ—देखो 'विलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलावियोड़ी)

वीलियौ—देखो 'बीलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वीली—देखो 'बीलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वीलोणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे.)

उ०—थापियौ कीरंड ताय सीयर थांन, मही नंद मोळनं गोळजी उगोळ माय। गाजे मु व्रखव मुव चरै गाय, मन धरै **वीलोणौ** करण माय। —रांमदान लाळस

वीलोणौ, वीलोबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

वीलोणहार, हारौ (हारी), वीलोणियौ—वि०।

वीलोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीलोईजणौ, वीलोईजबौ—कर्म वा०।

वीलोयोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोयोड़ी)

वीलोवणौ, वीलोवबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

वीलोवणहार, हारौ (हारी), वीलोवणियौ—वि०।

वीलोविग्रोड़ौ, वीलोवियोड़ौ, वीलोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वोलोवीजणौ, वीलोवीजबौ—कर्म वा०।

वीलोवियोड़ौ—देखो 'विलोडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोवियोड़ी)

वीलौ—देखो 'बीलौ' (रू. भे.)

वील्हणवटी, वील्हणवाटी—सं. स्त्री.—नागौर जिले के 'मारोठ' गांव के आस पास का प्रदेश।

उ०—दहियां रौ उतन यूं सुणियौ छै, दिखण नूं नासिक त्र्यंबक गोदावरी कनें गढ थालनेर थौ। इतरी ठौड़ दहियां रै अजमेरा माहैं हुती। देरावर परवतसर गांव ५२. सावर घाटियाळी। हरसार वील्हण रौ बेटौ हरधवळ धणी। माहरोट रौ **वील्हणवटी** नांव। —नैणसी

वि० वि०—इसका नाम वील्हण दहिये के नाम से हुआ।

वील्हौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

उ०—वील्हा वायस, बिझळां, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊंधी टंगाय। —मा. कां प्र.

२ देखो 'बीलौ' (रू. भे.)

वीवणोटौ—देखो दूणौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताहरां साजण री नजर नै हमीर री नजर एक हुई। ताहरां हमीर री आंख सूं चाळचा ठळक-ठळक पड़वा लागा। ताहरां साजण कहै छै, "बाप, हवै रोवै छै? मु अरजनजी विचै **वीवणोटौ** आरोगवा पधारा था। —अरजन हमीर री बात

वीवनौ, वीवन्नौ—देखो 'विवनौ' (रू. भे.)

उ०—परचंड पराक्रम दाखवै, पित्त **वीवनै** पंच दिन। 'गजसाह' वसुह राखी पगै, डहै भुज्ज डिगियौ गिगन। —गु. रू. बं.

वीवरौ-सं. पु.—१ आलंबन, सहारा।

उ०—रहौ **वीवरै** रांमरस, अनरथ घणौ अलंत। या हिज है भ्रम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तंत। —बां. दा.

२ लीन या मग्न होने की अवस्था या भाव।

३ देखो 'विवरौ' (रू. भे.)

वीवसाल—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—सबळां सूं सहीयारौ कीजई, पांणी पहिली पाळ। रुखमईयौ बोलै सुणि राजा, जोईजइ **वीवसाल**। —रुकमणी मंगळ

वीवांण—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—१ अपछरा का सा **वीवांण वीछूटा**। छछोहा जवांन तरवारचां आछटै छै। ज्यां सूं अंगजवार हरवरमळा साथै ही कटै छै। —पनां

उ०—२ भोम वाजंद्र धरै सुर पग वीवांणां, भणै सुर पधारौ जोत भैळा। आपरै सेवगां महर रावळ 'अमर', वीहद भूलौ नहीं तैण वेळा। —रावळ हरराजजी री गीत

वीवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव विमळ विचार करै **वीवाह**। सुंदर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह। —वेलि

उ०—२ मंदिर तरि किया खिणंतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधै तिणि **वीवाह** संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत। —वेलि

उ०—३ तद विजोगण री मा विजोगण नूं कह्यो, आपां वांणीया छां अर ऐ राजा छै। अर आपां इसां निसपत काई नहीं। ए बीजा **वीवाह** करसै तद तनै दुहागण कर राखसी। तू कहीं साह नूं परणीज ज्यौं घर री धणीयांणी हुवै। —वीजड़ वीजोगण री वात

वीवाहलौ, वीवाहिलु, वीवाहिलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

उ०—१ गोरीनंदन वीनऊं, स्रीपति सुमति सुजांण। क्रस्ण तणौ **वीवाहलौ**, रिधसिध प्रसिध प्रमांण। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ सयल मण वंछियं कांम-कुंभोवमं, पास पय कमलु पणमेवि भत्ति। सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु **वीवाहलउ**, सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति। —ऐ. जै. का. सं.

उ०—३ गवरीय नंदन वीनवूं जी, स्रीहरि सुरतइं आंणि। विस्न तणौ **वीवाहिलौ** जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण। —रुकमणि मंगळ

वीवाहु—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ अभिवनु उत्तरकूंयरि वरिउ, आवौ क्रसिण **वीवाहु** सु करिउ। पहुतउं सहूइ कन्हउपुरि, च्यारि कन्न चिहु पंडवि वरी। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ आदरि अरिदल आंमला, सांमलावांनि **वीवाहु**। आसारंगि रमाडिय, माडिय मनि उच्छाहु। —जयसेखर सूरि

वीवाहणौ, वीवाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वीवाहणहार, हारौ (हारी), वीवाहणियौ—वि०।

वीवाहिओड़ौ, वीवाहियोड़ौ, वीवाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीवाहीजणौ, वीवाहीजबौ—कर्म वा०।

वीवाहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीवाहियोड़ी)

वीसंभर—देखो विस्वंभर' (रू. भे.)

उ०—अंतिम येह उपाय, **वीसंभर** न विसारियै। साथै धरम सहाय, पल पल रांण प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

वीसंभरा—देखो विस्वंभरा' (रू. भे.)

वीस-वि.—दस का दुगुना, पन्द्रह व पांच का योग।

सं. स्त्री.—२० की संख्या।

उ०—१ रीझी सुण चद्रावत रांणी, सांम साथ कज स्रवण सुहांणी। गायण **वीस** परम जस गावै, दूणै हित ऊठो दरसावै। —रा. रू.

उ०—२ **वीस** कोस दिस वांम, वीस दाहणै तरक्कै। जाळंधर सांमहौ, करै बेमुहौ सरक्कै। —रा. रू.

रू. भे.—बीस।

वीसण—देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

वीसणु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

वीसन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—बळतौ ढोलौ इम कहै, एह वचन मम आख। मारू सूं संकलपियौ, ब्रह्मा **वीसन** री साख। —ढो. मा.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

वीसनर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

वीसनु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

वीसभुज, वीसभुजांण, वीसभुजा-सं. पु. [सं. वीस+भुजा] १ लंका-नरेश रावण। (अ. मा.)

उ०—१ साझण जुधां **वीसभुज** आसुर, दीन निवाजण अनुज सहोदर। बोलै साख त्रिकुट लिछमीबर, उमंग रीसवाळौ अवधेस्वर। —र. ज. प्र.

उ०—२ सुत भ्रात कटै सक धीट वधै धक, **वीसभुजांण** विचारियौ जी। निरवीजां वांनर नेम गमुन्नर, धेख इसौं मन धारियौ जी। —र. रू.

सं. स्त्री.—२ दुर्गा, महामाया।

वि०—जिसके बीस भुजाऐं हों।

रू. भे.—बीसभुज, बीसभुजा, बीसभूजा।

वीसभुजाळ—१ देखो 'वीसभुजाळौ' (मह,. रू. भे.)

२ देखो 'वीसभुजाळी' (मह,. रू. भे.)

वीसभुजाळी–सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया।

रू. भे.—वीसभुजाळी, वीसांभुजाळी।

मह., रू. भे.—वीसभुजाळ वीसभुजाळ,।

वीसभुजाळौ–वि.—जिसके बीस भुजाएँ हों।

स. पु.—लंकानरेश रावण।

मह., रू. भे.—बीसभुजाळ, वीसभुजाळ।

वीसभूजा—देखो 'वीसभुजा' (रू. भे.)

उ०—देवी भूतड़ां अम्मरी **वीसभूजा**, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजां। देवी राखसं धोमरै रक्त रुती, देवी दुग्जटा विकटा जम्मदुती। —देवि.

वीसम, वीसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.) (उ. र.)

वीसमणौ, वीसमबौ–क्रि. अ. [सं. विश्रामः] १ आराम करना, ठहरना।

उ०—१ इकि डोकरि तिणि दीसि पांच पूत्र इकि बहूय सउं कुंती नइ आवासि वटवाहु **वीसमियां**। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सुगुरु साथिय हीण घणुं भमियां, विसम वाट किहाइं न **वीसमिया**। वसइं जै जिनमंदिरि सीयलइ, बिहु परैं तींहै तापु सही टलइ। —जयसेखर सूरि

उ०—३ सीतल सीलछायां **वीसमउ**, भावना नीरिहिं सींचिउ धरउ। फुल पत्र बार देवलोक जांणि, एह व्रक्ष नउं फल मुकति निरवांणि। —वस्तिग

२ शयन करना, सोना।

उ०—छायल फूल विछाय, **वीसमतो** वरजांगदै। गैमर गोरी राय, तिण आंमास अड़ाविया। —सोभा हीमालावत रौ गीत

३ अवसान होना, मरना।

उ०—'मांन' हर 'माल' हर 'अमर' हर **वीसमै**, अन पहू ओसरै नको आया। असुर दळ ऊपटै, आज हूं अेकलौ, जुड़न कज पवारो 'स्यांम' जाया। —कछवाहा सुजांणसिंघ स्यांमसिंघोत सेखावत रौ गीत

वीसमणहार, हारौ (हारी), वीसमणियौ—वि०।

वीसमिओड़ौ, वीसमियोड़ौ, वीसम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीसमीजणौ, वीसमीजबौ—भाव वा०।

बीसमणौ, बीसमबौ, वीसम्मणौ, वीसम्मबौ—रू. भे.।

वीसमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ विश्राम किया हुआ. आराम किया हुआ, ठहरा हुआ। २ शयन किया हुआ, सोया हुआ। (३) अवसान हुवा हुआ, मरा हुआ।

(स्त्री. वीसमियोड़ी)

वीसमी, वीसमै—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ हुईय कांमिनि रूपि निरुपमी, रहिउ भीम तमी मुख **वीसमी**। बहुल भक्ष मनुक्ष करै करी, गयउ सौ तडि कीचक सुंदरी। —सालिसूरि

उ०—२ उठै हसन दळ लियां अभूता, हिलियौ महण क दक्खण हूंता। औ **बीसमै** दिवस खड़ि आयौ, लेखवतां मग मास न लायौ। —रा. रू.

वीसमौ—१ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ मरै घण गाजियै जिको सादूळ महि, सत्रां चा ढोल सिर सकै किम 'जसौ' सहि। वयण घण सांभळै रहै किम **वीसमौ**, सुपह सादूळ कुण गिणै आपा समौ। —हा. झा.

उ०—२ 'गोइंद' पेखि जैसळगिरो, बाघ **वीसमौ** वीरवर। रिण-वार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगा जेम गया कुंअर। —गु. रू. बं.

२ देखो 'वीसवौ' (रू. भे.)

वीसम्मणौ, बीसम्मबौ—देखो 'वीसमणौ, वीसमबौ' (रू. भे.)

उ०—पंखा करै अछर बिहू पासै, पंखणि सेव सचंवै पांव। सिरदारां पाथरि **वीसम्मियौ**, समहरि निसभरि 'मांन' सुजाव। —सुरतांण मांनावत रौ गीत

वीसम्मणहार, हारौ (हारी), वीसम्मणियौ—वि०।

वीसम्मिओड़ौ, वीसम्मियोड़ौ, वीसम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीसम्मीजणौ, वीसम्मीजबौ—भाव वा०।

वीसम्मियोड़ौ—देखो 'वीसमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीसम्मियोड़ी)

वीसर–सं. स्त्री.—१ भूल, विस्मरण।

२ देखो 'विसर' (रू. भे.)

वीसरणौ–वि०—भूलने वाला, विस्मरण होने वाला।

वीसरणौ, वीसरबौ—देखो 'विसरणौ, विसरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां एकण बहू कह्यो, "बीजौ तौ किण ही विध विसारै न पड़ै, जौ सांवण लागतै स्युं आपां कुंवरजी नुं जुदी जुदी गोठां करौ। भीतर राखां। आदमी वागियां सारां नुं अमलां-पांणियां सुं गळतांन राखां तौ **वीसर** जावै। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ लिव लागी तूटै नहीं, लिव अंतर की तार। लागत ही सुं **वीसरी**, हरीया तन की सार। —अनुभववांणी

उ०—३ क्यों **वीसरै** दांन क्यों वीसरै मांन क्यों वीसरै जुगति सुं जीमियो धांन। क्यों वीसरै सांप नै सीस रौ घाव, क्यों वीसरै वेरियां जदि पड़ै दाव। —मेहोजी गोदारा थापन

उ०—४ मौताज अम्हां हरवळ मिळण, सो कुळवाट न **वीसरूं**। 'गोरधन' कियौ 'गजबंध' अग्र, कळह आप अग्र मैं करूं। —सू. प्र.

उ०—५ दिनि निसि माधव देखवा, हीयडा मांहि हांम। भूख त्रिखा निद्रा नहीं, **वीसरिया** सवि कांम। —मा. कां. प्र.

वीसरणहार, हारौ (हारी), वीसरणियौ—वि०।
वीसरिओड़ौ, वीसरियोड़ौ, वीसरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वीसरीजणौ, वीसरीजबौ—कर्म वा०।

वीसराणौ, वीसराबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

उ०—हीरां तणी सहेलियां, दुरस दिलासा दीन। **वीसराई** उण बात नै, नागर ग्यात नवीन। —बगसीरांम प्रोहित री बात

वीसराणहार, हारौ (हारी), वीसराणियौ—वि०।
वीसरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वीसराईजणौ, वीसराईजबौ—कर्म वा०।

वीसरायोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीसरायोड़ी)

वीसरावणौ, वीसरावबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

वीसरावणहार, हारौ (हारी), वीसरावणियौ—वि०।
वीसराविओड़ौ, वीसरावियोड़ौ, वीसराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वीसरावीजणौ, वीसरावीजबौ—कर्म वा०।

वीसरावियोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीसरावियोड़ी)

वीसरियोड़ौ—देखो 'विसरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीसरियोड़ी)

वीसवळौ—सं. पु.—कलेजे पर पानी से भरी एक थैली।

वीसविसवा, वीसविसा, वीसवीसा, वीसवीस्वा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ **वीसविसवा** भक्ती कर, एक विसवौ दै नंद। पुण्य कीनौ राक्षस भख, होय जावै अंदादुंद। —स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ जमवांन सु एवजखांन जिसा, वप रीस अमापक **वीसविसा**। वधि जोड़ अबद्दल सैंद वळै, भुज सार लियौ जिण भार भळै। —रा. रू.

उ०—३ दिल उजळ 'सिवा' अवनीमा दूवा, वडपण दाखां **वीसवीसा**। कपड़ां दीसा न देखै कमधज, देखीजै आखरां दीसा। —सिवसिंघ मेड़तिया रौ गीत

वीसवौं—वि०—जिसका स्थान क्रम से उन्नीस के बाद हो।
रू. भे.—बीसमौं, बीसवौं वीसमौं।

वीससणौ, वीससबौ—क्रि० स०—१ विश्वास करना, ऐतबार करना।

उ०—१ मन उल्हसइ कलंबी तणा, ऊससइ वेलि वितांन। लोक लोकनइ **वीससइ**, विणसीइ जवांना पांन। —नळदवदंती रास

उ०—२ विदुरि पवाचिउ लेखु, दुरयोधन मन **वीसिसउं**। एसु पुरोहित वेसु, कालु तुम्हारउ जांणिजउ। —सालिभद्र सूरि

क्रि० अ०—२ विश्वास होना, ऐतबार होना।

वीससणहार, हारौ (हारी), वीससणियौ—वि०।
वीससिओड़ौ, वीससियोड़ौ, वीसस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वीससीजणौ, वीससीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वीससाकरण—सं. पु. [सं. विश्रसाकरण] रूप, रस, गंध एवं स्पर्श का अपने से भिन्न रूप, रस, गंध एवं स्पर्श में मिलने से उस वर्णादि का मेल। (जैन)

वीससियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विश्वास किया हुआ, ऐतबार किया हुआ।
२ विश्वास हुवा हुआ, ऐतबार हुवा हुआ।
(स्त्री. वीससियोड़ी)

वीसहत, वीसहती—सं. स्त्री.—१ देवी, दुर्गा, महामाया।
२ सरस्वती गिरा, भारती।

उ०—चिंता विघन विनासणी, कमळासणी सगत। वीसहती हंसवाहणी, माता देहु सुमत। —अग्यात

रू. भे.—बीसहत, बीसहती, बीसहत्थ, बीसहत्थी, बीसहथ, बीसहथि, बीसहथी, बीसहथ्थ, बीसहथ्थी, वीसहत्थ, वीसहत्थी, वीसहथ, वीसहथि, वीसहथी, वीसहथ्थ, वीसहथ्थी, हातबीसाळी।

वीसहतौ—देखो 'वीसहथौ' (रू. भे.)

वीसहत्थ, वीसहत्थी—देखो 'वीसहती' (रू. भे.)

उ०—नमौ कूखमांडी नमौ कांति काळी, नमौ त्रिपुरा तोतला प्रेत ताळी। नमौ **वीसहत्थी** नमौ वीर संगा, नमौ उंडळां ओडणी गौम अंगा। —मा. वचनिका

वीसहत्थौ—देखो 'वीसहथौ' (रू. भे.)

वीसहथ, वीसहथि, वीसहथी—देखो 'वीसहती' (रू. भे.)

उ०—१ तउं **वीसहथि** विरोळि, तइं वीसहथि विरोळियइ। भावठि भागइ तू तणइ, हिव्यउं सु कांइ हिंगोळि। —अ. वचनिका

उ०—२ कहै ओरि केकांण, सेल असुरांण करूं सळ। **वीसहथी** हथवीस, ओक पाऊं रत ऊजळ। —सू. प्र.

उ०—३ खळहळां खत चळवळां खापर, **वीसहथ** भर विळकुळी। मह वळां चव रघुनाथ अमलां, मंड सुसबद मंडळी। —र. ज. प्र.

उ०—४ बूझइ किसूं बापड़ा मांनव, **वीसहथी** सहु लहइ विचार। गवरी जांणं लाडगहेली, ईसर देव तणां अधिकार। —महादेव पारवती री वेलि

वीसहथौ—सं. पु.—लंकाधिपति रावण।
वि.—बीस भुजाओं को धारण करने वाला।

रू. भे.—वीसहतौ, वीसहत्थौ, वीसहथ्थौ।

वीसहथ्थ, वीसहथ्थौ—देखो 'वीसहतौ' (रू. भे.)

वीसहथ्थौ—देखो 'वीसहथौ' (रू. भे.)

वीसहे'क–वि.— करीब बीस, लगभग बीस।

उ०—तद ग्रै मोटियार था, सताबी खड़ कोसां पांचां-सातां ग्राय पोहता। ग्रांण वतळाया ग्रै घिरीया, सो रीठ वागौ। सो ग्रादमी वीसहे'क सुं वेणीदास रा बेटा दोय, भतीजा दस, बीजा भाई बंध खरळ कांम ग्राया। —कुंवरसी सांखला री वारता

वीसांभुजाळी—देखो 'वीसभुजाळी' (रू. भे.)

उ०—देवी रगत नीलंमणी सीत रंगं, देवी रूप ग्रंबार वीरूप ग्रंगं। देवी बाळ जूवा व्रधं वेख वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसांभुजाळी। —देवि.

वीसांम, वीसांमउ—देखो 'विसरांम' (रू. भे.)

उ०—१ न लियइ वीसांम उन विरहइ, पवन वेग तै वाटै वहइ। कहइ उडइ पंखी ग्रागासि, प्रगडइ ग्राया पूगळ पासि। —ढो. मा.

उ०—२ ललित सरोवर पेखियइ ए, वली सत्ता नी वावि। तिहां वीसांमउ लीजियइ ए, वड नइ चउतर ग्रावि। —स. कु.

वीसांमणौ, वीसांमबौ—देखो 'विसरांमणौ, विसरांमबौ' (रू. भे.)

वीसांमणहार, हारौ (हारी), वीसांमणियौ—वि०।

वीसांमिग्रोड़ौ, वीसांमियोड़ौ, वीसांम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीसांमीजणौ, वीसांमीजबौ—भाव वा०।

वीसांमियोड़ौ—देखो 'विसरांमियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री, वीसांमियोडी)

वीसांमो—देखो 'विसरांम' (मह., रू. भे.)

उ०—भारवाहक नइ कह्या भला, वीसांमा वीतरागौ जी। माथा थी मूकइ कंधै लहइ, मारग मांहि लागौ जी। —स. कु.

वीसार–सं. स्त्री.—१ विस्मरण, भूल।
२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वीसारण, वीसारणौ—देखो 'विसारणौ' (रू. भे.)

उ०—दुख-वीसारण, मनहरण, जउ ई नाद न हुंति। हियड़उ रतन-तळाव ज्यउं, फूटी दह दिसि जंति। —ढो. मा.

वीसारणौ, वीसारबौ—देखो 'विसारणौ, विसारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ साहजादा ग्रजीम साग्रतखां संग, ग्रजमेर मैं सहायक राखै ग्रवरंग। इनायत खांन जोधपुर दोड़ ग्रा वीसार, ग्रसुरां की घोर कौ न जोर कौ न पार। —रा. रू.

उ०—२ थै सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ थांकी ग्रास। मत वीसारउ मन-थकी, उवा छइ थांकी दास। —ढो. मा.

उ०—३ ग्राय न्रपति पूछो विध एही, सावधांन हुय धरम सनेही। विखै ग्रग्यांन धरम वीसारौ, सूरजकुळ चौ धरम संभारौ। —सू. प्र.

उ०—४ ग्रम सनेह कुळ मारग धारा, प्रांणहूंत वधि ग्राप पियारा। ग्राप वचन मैं सीस ग्रधारै, वायक प्रिया कहण वीसारै। —सू. प्र.

वीसारणहार, हारौ (हारी), वीसारणियौ—वि०।

वीसारिग्रोड़ौ, वीसारियोड़ौ, वीसारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीसारीजणौ, वीसारीजबौ—कर्म वा०।

वीसारियोड़ौ—देखो 'विसारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीसारियोड़ी)

वीसावत—सं. पु.—वीका राठोड़ों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

उ०—ग्ररु प्रांणकुंवर निरवांण रै दोय कंवर हुग्रा, ग्रमरौजी वीसौजी। तिण रा ग्रमरावत वीका है माजन रा परधांन। ग्ररु वीसौजी रा वीसावत वीका है भूकरकै रा परधांन। —द. दा.

वीसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ कांई कीयौ कपटी तणौं रे, ग्रसुर तणौ वीसास। राय ग्रह्यौ हिव पदमणी नैं, गढनौ करसी ग्रास। —प. च. चौ.

उ०—२ जव कह्यो मात पै ग्रघट जोय, हित मांगहु ग्रंछचा फेर होय। उण कयौ मात इक पुत्र ग्रास, सौ बिणं कुंप केसौ वीसास। —रांमदांन लाळस

उ०—३ पेस करां जौ पदमणी जी, तुम उपजै वीसास। विण वीसास किसी परै जी, व्है महुनै रंग रास। —प. च. चौ.

वीसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

वीसासणौ, वीसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—कहि ग्रालिम कैसी परैंजी, तुम वीसासउ मन। 'लालचंद' कहै सांभलोजी, वादल कहेज वचन। —प. च. चौ.

वीसासणहार, हारौ (हारी), वीसासणियौ—वि०।

वीसासिग्रोड़ौ, वीसासियोड़ौ, वीसास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीसासीजणौ, वीसासीजबौ—कर्म वा०।

वीसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वीसासियोड़ी)

वीसासौ—देखो 'विस्वास' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—हिवै नव ग्रीवै कै पंचांनुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार। प्रत्येकेप्रतिमा वीसासौ तिहां जांण, ग्रडत्रीस सहस सतसाठ ग्रछै गुण खांण। —वृ. स्त.

वीसियौ–सं. पु.—एक प्रकार का घास विशेष।
रू. भे.—वीस्यौ।

वीसी-सं. स्त्री—१ समय, अवधि।

२ बीसमी शताब्दी।

३ वह स्थान जहां लागत अदा करके शाकाहारी भोजन प्राप्त किया जाता है, भोजनालय।

४ बीस वर्ष का समय। (युग)

५ एक ही प्रकार के बीस पदार्थों का समूह, कोडी।

६ गणना का वह प्रकार, जिसमें बीस-बीस चीजों के समूह को एक-एक इकाई मान कर रखा जाता है।

७ ज्योतिष शास्त्र में साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई एक विभाग।

वि० वि०—इनमें प्रथम ब्रह्मावीसी, द्वितीय विष्णुवीसी एवं तृतीय रुद्रवीसी कहलाती है।

(१) ब्रह्मावीसीः—(१) प्रभव (२) विभव (३) शुक्ल (४) प्रमोद (५) प्रजापति (६) अंगिरा (७) श्रीमुख (८) भाव (९) युवा (१०) धाता (११) ईश्वर (१२) बहुधान्य (१३) प्रमाथी (१४) विक्रम (१५) वृष (१६) चित्रभानु (१७) सुभान (१८) पार्थिव (१९) तारण (२०) व्यग्र।

(२) विष्णुवीसीः—(१) सर्वजित (२) सर्वधारी (३) विरोधी (४) विकृति (५) खर (६) नंदन (७) विजय (८) जय (९) मन्मथ (१०) दुर्मुख (११) हेमलम्ब (१२) विलंब (१३) विकारी (१४) शार्वरी (१५) प्लव (१६) शुभकृत (१७) शोभन (१८) क्रोधी (१९) विश्वावसु (२०) पराभव।

(३) रुद्रवीसीः—(१) प्लवंग (२) कीलक (३) साम्य (४) साधारण (५) विरोधकृत (६) परिधावी (७) प्रमादी (८) आनन्द (९) राक्षस (१०) अनल (११) पिंगल (१२) कालयुक्त (१३) सिद्धार्थ (१४) रौद्र (१५) दुर्मति (१६) दूंदुभी (१७) रुधिरोद्‌गारी (१८) रक्ताक्षी (१९) क्रोधन (२०) क्षय।

८ बीस गाथा, श्लोकों या छंदों का समूह।

९ जैन मतानुसार बीस विहरमानों के नामों का समूह।

वि० वि०—देखो 'विहरमांण'।

रू. भे.—बिसी, बीसी।

वीसूंणी—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

वीसूरण, विसूरणौ—देखो 'विसूरण' (रू. भे.)

वीसूरणौ, वीसूरबौ—१ देखो 'विसरणौ, विसरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरणौ, विसूरबौ' (रू. भे.)

वीसूरणहार, हारौ (हारी), वीसूरणियौ—वि०।

वीसूरिग्रोड़ो, वीसूरियोड़ो वीसूरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीसूरीजणौ, वीसूरीजबौ—भाव वा०।

वीसूरियोड़ौ—१ देखो 'विसरियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीसूरियोड़ी)

वीसूविसा, वीसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—अपत रहिया 'अखै' 'अजा' 'गोकळ' इसा, रीत खत्रवाट री बोय दीनी रसा। विगाड़चौ धरम धर तणौ वीसूविसा, दियौ जळ हाथ सुं सात पीढी दिसा। —स्यांमजी बारहठ

वीसें'क-वि०—बीस के लगभग।

रू. भे.—बीसें'क।

वीसेविसा, वीसेवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—तूं सूधी तूं साधवी, तूं नर भक्ति निधांन। विधि वाधी वारू विसै, वीसेविसा समांन। —मा. कां. प्र.

वीसोतर-वि०—एक सौ बीस।

सं. पु.—चारण जाति जिसमें कुल एक सौ बीस गौत्र हैं।

उ०—वीसोतर का छोगा, दिल का उदार। जस जुगतेस कूं बखांणैं, सब ही संसार। —बां. दा.

रू. भे.—बीसोतर, वीसोत्तर।

वीसोतरि, वीसोतरी—देखो 'विसोत्तरि' (रू. भे.)

वीसोत्तर—देखो 'वीसोतर' (रू. भे.)

वीसोत्तरि, वीसोत्तरी—देखो 'विसोत्तरी' (रू. भे.)

वीसौ-सं. पु.—१ बीस की संख्या का वर्ष।

२ बीस की सख्या का संवत्।

रू. भे.—बीसौ।

वीस्यौ—देखो 'वीसियौ' (रू. भे.)

वीहंग—देखो 'विहंग' (रू. भे.)

वीहंगड़ौ—देखो 'विहग' (अल्पा,. रू. भे)

वीह—देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—निमौ हंस हंसा तणी जोति हरंता, निमौ काळ ही वीह राखै करंता। निमौ धरम ही तूझ निस दीह ध्यावै, निमौ वडौ जण वीण तुंबर वजावै। —पी. ग्रं.

वीहड़—देखो 'बीहड़' (रू. भे.)

वीहणौ, वीहबौ—देखो 'बीहणौ, बीहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आसराव, नाडूल सिकार रमतौ हुतौ सु वडौ दूठ राजवी हुवौ, तिण नूं देवी वीहाड़ण लागी सु आसराव वीहै नहीं नै बांण हिरण नूं सांधियौ हुतौ सु बाहचौ, तरै देवी खुश हुई नै आसराव नूं कहण लागी, तोनूं हूं तूठी तूं जांणै सु मांग। —नैणसी

उ०—२ बीहड़ो जिकै मरण सुं बीहै, रहज्यौ जिकोज साथ रहै। सिर साटै देसी सादावत, कोट म बीहै 'भोज' कहै।
—भोजराज रूपावत रो गीत

उ०—३ बोलि न सक्कूं बीहतउ, हेक ज वात हुई। राजि अपूठा वाहुड़उ, माळवणी मूई। —ढो. मा.

उ०—४ जसु अठार मुकुट बद्ध राजा, सेव करइ कर जोड़ जी। कोणिक थी बीहतउ राय चेड़उ, कूप पड़यउ बल छोड़ जी।
—स. कु.

बीहणहार, हारौ (हारी), बीहणियौ—वि०।
बीहिग्रोड़ौ, बीहियोड़ौ, बीहयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीहीजणौ, बीहीजबौ—भाव वा०।

बीहर—देखो 'वहीर' (रू. भे.)

बीहरणौ, बीहरबौ—देखो 'विहरणौ, विहरबौ' (रू. भे.)

उ०—तिरसूळ बीव उरमभ ताय, फळ जहुं उवर म वर बीहरै फबाय। सिर चकर बीहर कर काट सोय, हुंकार डकर धमजगर होय। —रांमदांन लाळस

बीहरणहार, हारौ (हारी), बीहरणियौ—वि०।
बीहरिग्रोड़ौ, बीहरियोड़ौ, बीहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीहरीजणौ, बीहरीजबौ—कर्म वा०।

बीहरियोड़ौ—देखो 'विहरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीहरियोड़ी)

बीहळ, बीहल—१ देखो 'बीहलौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वीहल्ल' (रू. भे.)
३ देखो 'विठ्ठल' (रू. भे.)
४ देखो 'वेहळ' (रू. भे.)
५ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

बीहळा—सं. स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया।

उ०—देवी चंद्रघंटा महम्माय चंडी, देवी बीहळा अन्नळा वड वड्डी। देवी जम्मघंटा वदीजै जडंबा, देवी साकणी डाकणी रूढ सब्बा।
—देवि.

बीहळी, बीहली—सं. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति पास में नहीं हो, वियोगिनी।

उ०—वीज न देखै बीहलियां, पीव परदेस थयांह। आपण लीयै झबूकड़ा, गळि लागै सिहरांह। —ढो. मा.

२ देखो 'विठ्ठल' (अल्पा, रू. भे.)

बीहलौ—सं. पु.—वीहल्ल राजपूत वंश का व्यक्ति।
वि०—हद से ज्यादा, अत्यधिक।

उ०—देख्यौ दरियौ भरियौ जल घणौजी, तब बोलै नरनाथ। वारिधि पूरौ हल बीहला हुइ रे, मुंछ्या घालै हाथ। —प. च. चौ.

देखो 'विठ्ठल' (अल्पा. रू. भे.)

बीहल्ल—सं. पु.—एक राजपूत वंश।

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया। जयवंता यादव बीहल्ल, नर निकुंभ गिरुया गोहिल्ल। —कां. दे. प्र.

रू. भे.—वीहळ, वीहल

बीहसणौ, बीहसबौ—क्रि० अ०—१ हंसना, हर्षित होना।

उ०—विसराळ त्रंबाळ घुरै रवि बीहस, लाह आखेट लंकाळ। अजेरां जेरण वेर असगां, फेर दुहाई फाळ। —मा. वचनिका

१ हिनहिनाना।

उ०—साठ तुरिय पाखरचा संजुत, बौसलदे साथहि बीहसंत। जाई परभोमई संचरचो, कोई न जांणइ सांभरचा-राव। उलिगांणउं होई संचरचो, देस उडीसइं पहुंता जाई। —बी. दे.

बीहांण—१ देखो 'विहांण' (रू. भे.)
२ देखो 'विहांणौ' (रू. भे.)

बीहांणी—देखो 'विहांणी' (रू. भे.)

बीहांणू—१ देखो 'विहांण' (रू. भे.)
२ देखो 'विहांणौ' (रू. भे.)

बीहांणौ—१ देखो 'विहांण' (अल्पा. रू. भे.)
२ देखो 'विहांणी' (रू. भे.)

बीहा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद वीठू जाय कुंवर नुं कही, "जौ माहाराज फुरमावै छै, औ नाळेर पाछौ देवौ। बीजौ बीहा सुं जोख छै तौ एक-दोय करो।" तद कुंवर कह्यौ, "वीठू तूं अरज करै, जो म्हारै तौ पण छै-सरीक रौ नाळेर आयौ पाछौ न फेरूं। —कुंवरसी सांखला री वारता

बीहाड़णौ, बीहाड़बौ—१ देखो 'बीहाणौ, बीहाबौ' (रू. भे.)

उ०—आसराव, नाडूल सिकार रमतौ हुतौ सु वडौ दूठ राजवी हुवौ, तिण नूं देवी बीहाड़ण लागी सु आसराव बीहै नहीं नै बांण हिरण नूं सांधियौ हुतौ सु बाह्यौ, तरै देवी खुस हुई नै आसराव नूं कहण लागी, तोनूं हूं तूठी, तूं जांणै सु मांग। —नैणसी

२ देखो 'बीहावणौ, वीहावबौ' (रू. भे.)
बीहाड़णहार, हारौ (हारी), बीहाड़णियौ—वि०।
बीहाड़िग्रोड़ौ, बीहाड़ियोड़ौ, बीहाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीहाड़ीजणौ, बीहाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बीहाड़ियोड़ौ—१ देखो 'बीहायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बीहावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीहाड़ियोड़ी)

बीहाडणौ, वीहाडबौ—१ देखो 'बीहाणौ, बीहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वीहावणौ, वीहावबौ' (रू. भे.)

बीहाडणहार, हारौ (हारी), वीहाडणियौ—वि० ।

वीहाडिग्रोड़ौ, वीहाडियोड़ौ, वीहाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीहाडीजणौ, वीहाडीजबौ—कर्म वा० ।

वीहाडियोड़ौ—१ देखो 'बीहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वीहावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीहाडियोड़ी)

बीहाणौ, वीहाबौ—१ देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहाणौ, बीहाबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वीहावणौ, वीहावबौ' (रू. भे.)

वीहाणहार, हारौ (हारी), वीहाणियौ—वि० ।

वीहायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीहाईजणौ, वीहाईजबौ—कर्म वा० ।

वीहायोड़ौ—१ देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वीहावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीहायोड़ी)

वीहार—देखो 'विहार' (रू. भे.)

उ०—नवलाख निवतरै सहत नूर, नित दिवस वदै रंगरळी पूर।
आपरी इउ हीज लीला उदार, वड सगत करण जै जग वीहार।
—रांमदांन लाळस

बीहाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद ठगै कह्यौ, "फळांणां रा बेटा हुवौ नहीं ?" तद ईयै कही, राज हुवां छां। तद ठग रै बेटै कही, तौ थे म्हांहरा बहनेई हुवौ। फलांणै बरस थांहरो बाप आयौ हुतौ। तद वीहाव कीयौ हुतौ। —वूढी ठग राजा री बात

बीहावणौ, वीहावबौ—क्रि. स. १—व्यतीत करना समाप्त करना।

उ०—वीजा नुं परौ बीजी कांन्ही मेल्हण लागा। तरै देवड़ै बीजै घणूं ही इणां ठाकरां नै कह्यो—मो नुं परौ अळगौ मत मेल्हौ। तरै इणै ठाकुरै कह्यौ—कूकड़ो जिण गांव न हुवै छे तठै ही रात बीहावै छे। —राव चन्द्रसेन री बात

२ देखो 'बीहाणौ, बीहाबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वीहावणहार, हारौ (हारी), वीहावणियौ—वि० ।

वीहाविग्रोड़ौ, वीहावियोड़ौ, वीहाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वीहावीजणौ, वीहावीजबौ—कर्म वा० ।

वीहाड़णौ, वीहाड़बौ, वीहाडणौ वीहाडबौ, वीहाणौ' वीहावौ
—(रू. भे.)

वीहावियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, समाप्त किया हुआ।

२ देखो 'बीहायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीहावियोड़ी)

वीहूर—सं. पु.—वातचक्र, हवा का चक्र।

वि० वि०—देखो 'बघूलो' (रू. भे.)

वु—सं. पु.—१ प्रातः काल, सवेरा। (एका.)

२ रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रदोष। (,,)

३ घनपटल। (,,)

वुग्रणौ, वुवबौ—१ देखो 'वहणौ,वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रतापसिंह नै सांम्ही आवतौ देखनै ठाकर म्यांन सूं तलवार बारै काढली। घेरौ नैंन्हौ होवण लाग्यौ अरु ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर रो माथौ बाढ नांख्यौ। दुस्मियां रै मन चींती व्ही। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ जिण मारग केहर वुवौ, रज लागी तिरणांह। वे वन ऊभा सूकसी, नह चरसी हिरणांह। —बां. दा.

२ देखो 'बोवणौ, बोवबौ' (रू. भे.)

वुग्रणहार, हारौ (हारी), वुग्रणियौ—वि० ।

वुइग्रोड़ौ, वुइयोड़ौ, वुग्रोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुईजणौ, वुईजबौ—भाव वा० ।

वुग्राणौ, वुग्राबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

वुग्राहणहार, हारौ (हारी) वुग्राणियौ—वि० ।

वुग्रायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुग्राईजणौ, वुग्राईजबौ—कर्म वा० ।

वुग्रायोड़ौ—१ देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुग्रायोड़ी)

वुग्रारणौ, वुग्रारबौ—देखो 'बुहारणौ, बुहारणौ' (रू. भे.)

वुग्रारणहार, हारौ (हारी), वुग्रारणियौ—वि० ।

वुग्रारिग्रोड़ौ, वुग्रारियोड़ौ, वुग्रारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुग्रारीजणौ' वुग्रारीजबौ—कर्म वा० ।

वुग्रारियोड़ौ—देखो 'बुहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुग्रारियोड़ी)

वुग्रारी—देखो 'वुहारी' (रू. भे.)

वुग्रारौ—देखो 'वुहारौ' (रू. भे.)

वुग्रावणौ, वुग्रावबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

वुग्रावणहार, हारौ (हारी), **वुग्रावणियौ**—वि०।

वुग्राविग्रोड़ौ, वुग्रावियोड़ौ, वुग्राव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुग्रावीजणौ, वुग्रावीजबौ—कर्म वा०।

वुग्रावियोड़ौ—१ देखो 'वहायोड़ौ, (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुग्रावियोड़ी)

वुइयोड़ौ, वुग्रोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुइयोड़ी, वुग्रोड़ी)

वुक—१ देखो 'बक' (रू. भे.)

२ देखो 'बुग' (रू. भे.)

वुकठणौ, वुकठबौ—क्रि. स.—निकालना।

उ०—है वुकठिग्रां कांकण हथौ, केवा काढण काज कड़च्छै। भाक समूं भळकतां भालां, धण लै ग्ररियां खाग धड़च्छै।

—मोहकमसिंघ राठौड़ रौ गीत

वुकठणहार, हारौ (हारी), **वुकठणियौ**—वि०।

वुकठिग्रोड़ौ, वुकठियोड़ौ, वुकठचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुकठीजणौ, वुकठीजबौ—कर्म वा०।

वुकढणौ, वुकढबौ—रू० भे०।

वुकठियोड़ौ—भू० का० कृ०—निकाला हुग्रा।

(स्त्री. वुकठियोड़ी)

वुकढणौ, वुकढबौ—देखो 'वुकठणौ, वुकठबौ' (रू. भे.)

वुकढणहार, हारौ (हारी), **वुकढणियौ**—वि०।

वुकढिग्रोड़ौ, वुकढियोड़ौ, वुकढचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुकढीजणौ, वुकढीजबौ—कर्म. वा०।

वुकढियोड़ौ—देखो 'वुकठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुकढियोड़ी)

वुकांनी—देखो 'बुकांनी' (रू. भे.)

वुखार—१ देखो 'भखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुखार' (रू. भे.)

वुखारी—१ देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'भखारी' (रू. भे.)

वुखारौ—देखो 'भखारी' (रू. भे.)

उ०—कांय भाई मोमिणौं ग्रौ धन संचौ, संचि संचि छलौ **वुखारौ** ग्रौ धन खाकि जी भाई होयसी, खाली रह्या **वुखारौ**।

—ऊदोजी नैण

वुग—देखो 'बुग' (रू. भे.)

वुगचियौ, वुगची—देखो 'बुगचौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वुगचौ—देखो 'बुगचौ' (रू. भे.)

वुगती—देखो 'बुगती' (रू. भे.)

उ०—"छौ हुंसता।" बींदणी तौ ग्रा बात कैय ग्रजेज वेहल सूं हेटै कूदगी। फुदी व्है ज्यूं केर केर उड़ती फिरी। थोड़ी ताळ मैं राता-चुट्ट डालुवां सूं खोळौ भरने पाछी ग्रायगी। वुगती रा पांणी सूं वांनै सावळ धोया। ठारचा।

—फुलवाड़ी

वुगदी—देखो 'बुगदी' (रू. भे.)

वुगदौ—देखो 'बुगदौ' (रू. भे.)

वुगध्यांनी—देखो 'वकध्यानी' (रू. भे.)

वुगर—देखो 'बुगर' (रू. भे.)

वुगलाभक्त—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

वुगलाभक्ति, वुगलाभक्ती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

वुगलाभगत—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

वुगलाभगति, वुगलाभगती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

वुगलियौ—१ देखो 'बुगलियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वुगलौ—१ देखो 'बुगलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वुगस—१ देखो 'बुगस' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (मह., रू. भे.)

वुग्गी—देखो 'बुग्गी' (रू. भे.)

वुड़कौ—देखो 'बुड़कौ' (रू. भे.)

वुड़चणौ, वुड़चबौ—देखो 'बुड़चणौ, बुड़चबौ' (रू. भे.)

वुड़चणहार. हारौ (हारी), **वुड़चणियौ**—वि०।

वुड़चिग्रोड़ौ, वुड़चियोड़ौ, वुड़च्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुड़चीजणौ, वुड़चीजबौ—कर्म वा०।

वुड़चियोड़ौ—देखो 'बुड़चियोड़ौ' (रू. भे.)

वुजी—देखो 'बूजी' (रू. भे.)

वुटाबटौ, वुटावटौ—देखो 'बुटाबटौ' (रू. भे.)

वुट्ठणौ, वुट्ठबौ—देखो 'बूठणौ, बूठबौ' (रू. भे.)

उ०—तहि ग्ररजुणि मिल्हिऊ, ग्रागिणेय सरु ग्रगि उट्ठीय। वहु दुक्खु मणि चिंतवीय, पंडसेन घण नयणि वुट्ठीय।

—सालिभद्र सूरि

वुट्टणहार, हारौ (हारी), वुट्टणियौ—वि० ।
वुट्टिग्रोड़ौ, वुट्टियोड़ौ, वुट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुट्टीजणौ, वुट्टीजबौ—भाव वा० ।
वुट्टियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री वुट्टियोड़ी)
वुठणौ, वुठबौ—देखो 'वूठणौ, वूठबौ' (रू. भे.)
उ०—१ गुलक्यारी क्यारा, चंदनगारा, फूल अधिक फाबंदा है। चादरियां छूटं, ज्यूं घण वुठं, ऊजळ जळ झळकंदा है।
—गज-उद्धार
उ०—२ अठी सतारौ अमीर जहुं सौबासूं जुटिया आंगौ, वुठिया आतसां आग प्रथी व्है अचंब। जैतवादी 'चांपा' 'कुंपा' जुटिया सिव जीउ जांगौ, खागां झाल अठी सुं उठीया जैतखंभ।
—पहाड़खां आढौ
वुठणहार, हारौ (हारी), वुठणियौ—वि० ।
वुठिग्रोड़ौ, वुठियोड़ौ, वुठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुठीजणौ, वुठीजबौ—भाव वा० ।
वुठियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.) (स्त्री. वुठियोड़ी)
वुठी—देखो 'उठी' (रू. भे.)
वुठै—देखो 'उठै' (रू. भे.)
वुट्ठणौ, वुट्ठबौ—देखो 'वूठणौ, वूठबौ' (रू. भे.)
उ०—सोळसै संमत, वरस छहतरै बयट्ठै। सुकळ पक्ख भाद्रवै, घुम्मि वरखा घण वुट्ठै।
—गु. रू. बं.
वुट्ठणहार, हारौ (हारी), वुट्ठणियौ,—वि० ।
वुट्ठिग्रोड़ौ, वुट्ठियोड़ौ, वुट्ठयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुट्ठीजणौ, वुट्ठीजबौ—भाव वा० ।
वुट्ठियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वुट्ठियोड़ी)
वुडणौ, वुडबौ—१ देखो 'बूडणौ, बूडबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'उडणौ, उडबौ' (रू. भे.)
वुडणहार, हारौ (हारी), वुडणियौ—वि० ।
वुडिग्रोड़ौ, वुडियोड़ौ, वुड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुडीजणौ, वुडीजबौ—भाव वा० ।
वुडवणौ, वुडवबौ—देखो 'बूडणौ, बूडबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'उडणौ, उडबौ' (रू. भे.)
उ०—खग झट बिकट वुडव खरड़क, डहकत डारण बीर डहडक। गति घण गेहक छायीयै गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक।
—हीरा मांगळिया रौ गीत
वुडवणहार, हारौ (हारी), वुडवणियौ—वि० ।
वुडविग्रोड़ौ, वुडवियोड़ौ, वुडव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुडवीजणौ, वुडवीजबौ—भाव वा० ।
वुडवियोड़ौ—१ देखो 'बूडियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'उडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वुडवियोड़ी)
वुडियोड़ौ—१ देखो 'बूडियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'उडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वुडियोड़ी)
वुड्ढौ—देखो 'बूढौ' (रू. भे.)
वुढण—देखो 'बूढण' (रू. भे.)
वुढापौ—देखो 'बुढापौ' (रू. भे.)
वुढौ—देखो 'बूढौ' (रू. भे.)
वुड्ढौ—देखो 'बूढौ' (रू. भे.)
उ०—तूं हिज आज जुगाद तूं, तूं वुड्ढी बाळी। तुहिज तरुण किसोर तूं, माता मतवाळी।
— गज उद्धार
(स्त्री. वुड्ढी)
वुणणौ, वुणबौ—१ देखो 'बुणणौ, बुणबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बणणौ, बणबौ' (रू. भे.)
वुणणहार, हारौ (हारी), वुणणियौ—वि० ।
वुणिग्रोड़ौ, वुणियोड़ौ, वुण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुणीजणौ, वुणीजबौ—कर्म वा० ।
वुणवाणौ, वुणवाबौ—१ देखो 'बुणाणौ, बुणावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बणाणौ, बणावौ' (रू. भे.)
वुणवाणहार, हारौ (हारी), वुणवाणियौ—वि० ।
वुणवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुणवाईजणौ, वुणवाईजबौ—कर्म वा० ।
वुणवायोड़ौ—१ देखो 'बुणायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री वुणवायोड़ी)
वुणाई—देखो 'बुणाई' (रू. भे.)
वुणाणौ, वुणाबौ—१ देखो 'बुणाणौ, बुणाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)
वुणाणहार, हारौ (हारी), वुणाणियौ—वि० ।
वुणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुणाईजणौ, वुणाईजबौ—कर्म वा० ।
वुणायोड़ौ—१ देखो 'बुणायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वुणायोड़ी)
वुणावणौ, वुणावबौ—१ देखो 'बुणाणौ बुणाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बणाणौ, बणावौ' (रू. भे.)
वुणावणहार, हारौ (हारी), वुणावणियौ—वि० ।
वुणाविग्रोड़ौ, वणावियोड़ौ, वुणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वुणावीजणौ, वुणावीजबौ—कर्म वा० ।
वुणावियोड़ौ—१ देखो 'बुणायोड़ौ' (रू. भे)
२ देखो बणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुणावियोड़ी)

वुणियोड़ौ—१ देखो 'वुणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वुणियोड़ी)

वुधर—१ देखो 'उधर' (रू. भे.)

२ देखो 'भूधर' (रू. भे.)

उ०—वल्य राठोड़ां ऊं कही, सांभल्य **वुधर** भेव । विमनोई करिस्यां अकर, हुकंम करौ हरिदेव । —केसौजी गाडरण

वुपर—देखो 'ऊपर' (रू भे.)

उ०—उसण येक गजमुंख लंबोदर, धरणी कनक मुकुट फरसीधर । पीतंबर सोभा तन **वुपर**, बिनायक दायेक विद्या बर ।

—दगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ मुंहैं अणियां **वुपरे** नांकतौ 'मधकर', भव चैं मन आंतगौ भयौ । सहलौ दिलौ हुई अणसकतौ, गहलौ री केव्हड़ौ गयौ ।

—राजा माधौसिंघ कछवाहा री गीत

वुर—देखो 'बुर' (रू. भे.)

वुरकौ—देखो 'बुरकौ' (रू. भे.)

वुरड़णौ, वरड़बौ—देखो 'बुरड़णौ बुरड़बौ' (रू भे.)

वुरड़णहार, हारौ (हारी), **वुरड़णियौ**—वि० ।

वुरड़िग्रोड़ौ, वुरड़ियोड़ौ, वुरड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुरड़ीजणौ, वुरड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वुरड़ियोड़ौ—देखो वुरड़ियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वुरडियोड़ी)

वुरचिंतौ वुरचींतौ—देखो 'वुरचिंतौ' (रू. भे.)

वुरज—देखो 'बुरज' (रू. भे.)

वुरजी—देखो 'बरछी' (रू भे.) (डिं. को.)

वुरज्ज—देखो 'बुरज' (रू. भे.)

वुरझौ—देखो 'बुरछी' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

वुरटी—देखो 'बुरटी' (रू. भे.)

वुरड—देखो 'बुरड' (रू. भे.)

वुरडी—देखो 'बुरडी' (रू. भे.)

वुरवंछ, वुरवंछौ—देखो बुरचींतौ' ।

वुराई—देखो 'बुराई' (रू. भे.)

उ०—निहचैं नांव राखि तन मन तें, विक्रम छोडि **बुराई** । धरणै मांहि धका नही खावैं, हालौ हक सराई । —अनुभववांणी

वुराणौ, वुराबौ—देखो 'बुरावणौ, बुरावबौ' (रू. भे)

वुराणहार, हारौ (हारी), **वुराणियौ**—वि० ।

वुरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुराईजणौ, वुराईजबौ—कर्म वा० ।

वुरादौ—देखो 'बुरादौ' (रू. भे.)

वुरायोड़ौ—देखो वुरावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुरायोड़ी)

वुरावणौ वुरावबौ—देखो 'बुरावणौ, बुरावबौ' (रू. भे.)

वुरावणहार, हारौ (हारी), **वुरावणियौ**—वि० ।

वुराविग्रोड़ौ, वुरावियोड़ौ, वुराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुरावीजणौ वुरावीजबौ—कर्म वा० ।

वुरावियोड़ौ—देखो 'बुरावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुरावियोड़ी)

वुरी—देखो 'बुरी' (रू. भे.)

उ०—सिरदार री कृपा और सुद्ध मन री चाह सारां रै होवै है । सुद्ध मन रा सिरदार रै चाकर बुरी कदे नहीं **वुरी** सूंणी नहो ।

—वी. स. टी.

२ देखो बुरौ' (पु.)

उ०—नारी नेह न कीजियै, नारी **वुरी** संसार । हरिया नारी गंजिया, सै भगा करतार । —अनुभववांणी

वुरौ—१ देखो 'बुरौ' (रू. भे.)

उ०—१ बांसै विजै भगती की । ग्रोथि रांमसिंघजी प्रिथीराज जी विजै री भगति जामिया । तारां राजाजी **वुरा** किया । इयां तूं कहाड़ियौ जु थे मोनूं थोड़ाई छा । —द. वि.

उ०—२ कलि खोटी पौहरी **वुरौ**, रीस करौ मत कोय । हरिया माया भगति कै, जांह तांह आडी होय । —अनुभववांणी

उ०—३ पाड़ोसी पिंडत **वुरौ**, जौ हरि भगति न होय । हरिया हरिजन गाँव घर, ता तुल्य भलौ न कोय । —अनुभाववांणी

उ०—४ किमकौ **बुरौ** न कीजियै, जौ सिध होय असिध । हरिया आडी आवसी, जिसी कमाई कीध । —अनुभववांणी

उ०—५ भलौ किसी कुं चाहियैं, **वुरौ** न कीरियै कोय । जन हरिया सव कु कह्या, रांम भजौ नर लोय । —अनुभववांणी

वुलगणौ, वुलगवौ—क्रि. स. (गीत या गायन) प्रारम्भ करना ।

उ०—विरहानळ प्रज्वळइ अंगु, साखिजन सूं विरंगू । एहवऊं कांई थ्यूं विग्र चित्त न **वुलगई** गीत्तू । न कुण हीसूं हंसइ, सदा नीससइ; बोलावि खीजइ, दिहाड़इ देह खीजइ । आदि । —रा. सा. स.

वुलगणहार, हारौ (हारी), **वुलगणियौ**—वि० ।

वुलगिग्रोड़ौ, वुलगियोड़ौ, वुलग्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुलगीजणौ, वुलगीजबौ—कर्म वा० ।

वुलगार—देखो 'बुलगार' (रू. भे.)

उ०—सोनहीरी फूलां नकसी फूलां मुखमल री गादी घातियां, सांबरा हथवासां, **वुलगारां** डाबा सहित ऊग्रांस राजांनां रा हाथां री ऊग्रांहीज वड़ां नै पीपलांरीग्रां साखां सूं नांगलिग्रां।
—रा. सा. सं.

वुलगियोड़ौ—भू० का० कृ०—(गीत या गायन) प्रारम्भ किया हुग्रा।

(स्त्री. वुलगियोड़ी)

वुलडोग—देखो 'बुलडोग' (रू. भे.)

वुलसरी, वुलसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

उ०—जउ सूकी तुहइ **वुलसिरी**, जउ वींधी तुहइ मोतीसिरी। जउ डुहलूं तुहइ गंगाजल जांणि. जउ थोडी तुहइ सपुरिस वांणि।
—नळदवदंती रास

वुलाक—देखो 'बुलाक' (रू. भे.)

वुलाकी—देखो 'बुलाकी' (रू. भे.)

वुलाणौ, वुलाबौ—१ देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)

उ०—हवि मूंह्नि **वुलावु**, पीहरि जावा मंन। मुझ विना दुहल्यां थातां, हुसि पुत्री नै तंन।
—नळाख्यांन

२ देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)

वुलाणहार, हारौ (हारी), **वुलाणियौ**—वि०।

वुलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुलाईजणौ, वुलाईजबौ—कर्म वा०।

वुलायोड़ौ—१ देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुलायोड़ी)

वुलावण—देखो 'बुलावण' (रू. भे.)

वुलावणौ, वुलावबौ—१ देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ **वुलावा** भीमराय देसनी संधि, लगइ ग्रावीउ बहु सैन्य लेई ए। भीमनइ कहइ निसध, तमे वलु भूपति। रूडइ ठांमि हवइ बइसीइ ए।
—नळदवदंती रास

उ०—२ रथ तणु माहरइ खप ज नहीं, माहरूं नथी ग्रहीइ कांई सही। घणउं कहितइ रथ राखिउ तेणि. नलनइ ग्रावइ **वुलावा** जेणि।
—नळदवदती रास

उ०—३ सैन्य सांमग्री सघळी करी, दवदंती पीहरि नीसरि। चंद्रयसांना प्रणम्या पाय, **वुलावा** ग्रावइ तिहां राय।
—नळदवदंती रास

वुलावणहार, हारौ (हारी), **वुलावणियौ**—वि०।

वुलाविग्रोड़ौ, वुलावियोड़ौ, वुलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुलावीजणौ, वुलावीजबौ—कर्म वा०।

वुलावियोड़ौ—१ देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो वौळायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. वुलावियोड़ी)

वुलावौ—देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

वुलि, वुली, वुल्ली—१ देखो 'बुलि' (रू. भे.)

२ देखो 'बुल्ली' (रू. भे.)

वुवाणौ, वुवाबौ—देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

वुवाणहार, हारौ (हारी), **वुवाणियौ**—वि०।

वुवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुवाईजणौ, वुवाइजबौ—कर्म वा०।

वुवायोड़ौ—देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुवायोड़ी)

वुवारणौ, वुवारबौ—देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)

वुवारणहार, हारौ (हारी), **वुवारणियौ**—वि०।

वुवारिग्रोड़ौ, वुवारियोड़ौ, वुवारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुवारीजणौ, वुवारीजबौ—कर्म वा०।

वुवारियोड़ौ—देखो 'बुहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुवारियोड़ी)

वुवारी—१ देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—दस कोस रौ पैंडौ पार कर दियौ। गांव रै गळियारै गळियारै जावतौ हौ के ग्रेक बारणा माथै घूंघटौ काढयां उठानै ग्रेक लुगाई ऊभी दीसी। चौधरी फट लखग्यौ के है तौ ग्रा इण गांव री **वुवारी**।
—फुलवाड़ी

वुवारौ—देखो 'बुहारौ' (रू. भे.)

वुवाळा—देखो 'बुवाळा' (रू. भे.)

वुवाळौ—देखो 'बुवाळौ' (रू. भे.)

वुवासौ—देखो 'बहुवासौ' (रू. भे.)

वुवाह—सं. पु.—वाह-वाह, धन्यवाद।

उ०—सिलप्पी रचायै जे रूकां ग्रसी चार सोझै, बिणायै रतन्ना विधा कांगरां **वुवाह**। ग्रामासां ग्रनोखां गौखां पराभा मेघ भासै ग्रसां, दांन रा सौभा झरोखां विराजे दुबाह।
—मोहकमसिंघ रूपावत रौ गीत

वुवोतर—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

वुवोतरमौं, वुवोतरवौं—देखो 'बग्रोत्तरमौं' (रू. भे.)

वुवोतरे'क—देखो 'बग्रोत्तरे'क' (रू. भे.)

वुवोतरौ—देखो 'बग्रोतरौ' (रू. भे.)

वुसत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ दीया वुसत अनूप है, दिया करौ सब कोय। घर मैं धरा न पाइयै, जे कर दिया न होय। —अग्यात

उ०—२ हरीया ख्याली खलक मैं, कै तो गया वसाय। कै आया ज्युंई गया, वुसत मुसाय मुसाय। —अनुभववाणी

उ०—३ मनवा उलटि मिल्या निज मन कुं, ससा सोग न व्यापै तन कुं। अरध उरध विच रसतह लाया, जोखा जंत न वुसत विसाया। —अनुभववांणी

वुसताज, वुसताद—देखो 'उसताद' (रू. भे.)

उ०—पंड वुसताज आहणौं असपत, दुजड़े देतौ खळां दुख। केस केस संधियौ कैलपूरा, रावळ अंबर तणी रुख।

—जगतसिंघ सीसोदिया री गीत

वुसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

वुसुत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—वप ब्रहम विधत री सरव वुसुत री, तुं गंगा तुं गावतरी। पारबती निमौ हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी. ग्रं.

वुस्त—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

वुस्ताज, वुस्ताद—देखो 'उसताद' (रू. भे.)

वस्तु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

वुहणौ, वुहबौ—१ देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिंदवा राव हयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदां। गई स्रग विवांणां वैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना विना वींदां। —महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

उ०—२ असपति राव चमकि ओद्रकियौ, खेड़ेचै वाही करि खीज। सुकरि आकास हूंत सेलारां, वीजुल विढण क वुही वीज।

—केसोदास गाडण

उ०—३ जिण माथै सखी मारा धणी री सांग बरछी वुही जांणणी अरयात दूसरा जोधारां रा हाथ रा सस्त्रां सूं तौ अधक्रटिया अधमरिया हूवा रोवै छै नै म्हारा पति रा सस्त्र लागोडा पछै, जीव विनां हीज हौवै छै सस्त्र लागोड़ा कोइ वचै नहीं। —वी. स. टी.

२ देखो 'बोवणौ, बौवबौ' (रू. भे.)

वुहणहार, हारौ (हारी) वुहणियौ—वि०।

वुहिओड़ौ, वुहियोड़ौ, वुह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुहीजणौ, वुहीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

वुहत्तर, वुहत्तरि, वुहत्तरी—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

वुहरउ—देखो 'बौरौ' (रू. भे.) (उ. र.)

वुहरणौ, वुहरबौ—क्रि. स.—१ खरीदना, क्रय करना।

उ०—दोसी वुहरइ अतिघणा वस्त्र, सुभट भला ते चहइ सस्त्र। एक वइण कहइ कथाकल्लोल, एक वइण वीकइ मंजीठ चोल।

—नळदवदंती रास

२ देखो 'व्यवहारणौ, व्यवहारवौ' (रू. भे.)

वुहरणहार, हारौ (हारी), वुहरणियौ—वि०।

वुहरिओड़ौ, वुहरियोड़ौ, वुहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुहरीजणौ, वुहरीजबौ—कर्म वा०।

वुहराड़णौ, वुहराड़बौ—देखो 'वुहराणौ, वुहराबौ' (रू. भे.)

वुहराड़णहार, हारौ (हारी), वुहराड़णियौ—वि०।

वुहराड़िओड़ौ, वुहराड़ियोड़ौ, वुहराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुहराड़ीजणौ वुहराड़ीजबौ—कर्म वा०।

वुहराड़ियोड़ौ—देखो 'वुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहराड़ियोड़ी)

वुहराणौ, वुहराबौ—देखो 'वुहराणौ, वुहराबौ' (रू. भे.)

वुहराणहार, हारौ (हारी), वुहराणियौ—वि०।

वुहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वुहराईजणौ, वुहराईजबौ—कर्म वा०।

वुहरायोड़ौ—देखो 'वुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहरायोड़ी)

वुहरावणौ, वुहराबबौ—देखो 'वुहराणौ, वुहराबौ' (रू. भे.)

वुहरावणहार, हारौ (हारी), वुहरावणियौ—वि०।

वुहराविओड़ौ, वुहरावियोड़ौ, वुहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुहरावीजणौ, वुहरावीजबौ—कर्म वा०।

वुहरावियोड़ौ—देखो 'वुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहरावियोड़ी)

वुहरियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ।

२ देखो 'व्यवहारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहरियोड़ी)

वुहाड़णौ, वुहाड़बौ—१ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

वुहाड़णहार, हारौ (हारी), वुहाड़णियौ—वि०।

वुहाड़िओड़ौ, वुहाड़ियोड़ौ, वुहाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वुहाड़ीजणौ, वुहाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वुहाड़ियोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहाड़ियोड़ी)

वुहाणो, वुहाबो—१ देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू. भे.)

उ०—वाहि वुहाय घणी वीजूजळ, तंडळ खगां करै ह्वा तंडळ। इम प्रथमी सिर कीत उबारां, परणै अपछर सुरगि पधारां।

—सू. प्र.

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

वुहाणहार, हारौ (हारी), वुहाणियो—वि०।

वुहायोड़ो—भू० का० कृ०।

वुहाईजणो, वुहाईजबो—कर्म वा०।

वुहायोड़ो—१ देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहायोड़ी)

वुहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—समत बयाळै मांह काती वद कळस थप्यो। मुकति कौ वुहार कीनौ साचौ गुर जांणियै।

—सेवादास

वुहारड़ी—१ देखो 'बुहारी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

वुहारण—देखो 'बुहारण' (रू. भे.)

वुहारणो, वुहारबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

उ०—गायां री मैं गोरचां वुहारी भैंस्यां रा खरळां-खरळां गोत्रर गेरचो, उपला थाप्या सौ रै पचास। मारुणी घणा कमावणी।

—लो. गी.

वुहारणहार, हारौ (हारी), वुहारणियो—वि०।

वुहारिओड़ो, वुहारियोड़ो वुहारयोड़ो,—भू० का० कृ०।

वुहारीजणो, वुहारीजबो—कर्म वा०।

वुहारि—१ देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

वुहारियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहारियोड़ी)

वुहारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

वुहारो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

वुहावणो, वुहावबो—१ देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू. भे.)

उ०—करै घात बोलै पारसी, बगतर तवा झिखै जांणै आरसी। कबांणां कुजां जिम कुरवरिया बिलख मेहा जिम ओसरिया। नाली निहाव, गोळा वुहाव। गढ सिखर चडी, कायरां का जीव तुडी।

—अ. वचनिका

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

वुहावणहार, हारौ (हारी), वुहावणियो—वि०।

वुहाविओड़ो, वुहावियोड़ो, वुहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वुहावीजणो, वुहावीजबो—कर्म वा०।

वुहावियोड़ो—१ देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहावियोड़ी)

वुहियोड़ो—१ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वुहियोड़ी)

वुहुतर, वुहुतरि, वुहुत्तर, वुहुत्तरि, वुहुत्तिरि—देखो 'बओत्तर' (रू. भे.)

वूंग—१ देखो 'बूंग' (रू. भे.)

२ देखो 'बूंझ' (रू. भे.)

वूंगरड़—देखो 'बुंगरड़' (रू. भे.)

वूंगी—देखो 'बूंझ' (रू. भे.)

वूंगो—देखो 'बूंगो' (रू. भे.)

वूंघरो—देखो 'बूंघरो' (रू. भे.)

वूंझ—देखो 'बूंझ' (रू. भे.)

वूंझियो, वूंझो—देखो 'बूंझो' (रू. भे.)

वूंट—देखो 'बूंट' (रू. भे.)

वूंटी—देखो 'बूंटी' (रू. भे.)

वूंटो—देखो 'बूंटो' (रू. भे.)

वूंतणो, वूंतबो—देखो 'बूंतणो, बूंतबो' (रू. भे.)

वूंतणहार, हारौ (हारी) वूंतणियो—वि०।

वूंतिओड़ो वूंतियोड़ो, वूंत्योड़ो—भू० का० कृ०।

वूंतीजणो, वूंतीजबो—कर्म वा०।

वूंतियोड़ो—देखो 'बूंतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वूंतियोड़ी)

वूंद—देखो 'बूंद' (रू. भे.)

उ०—मेरी गई पुकार सब, ज्यूं समंद में वूंद। सुणी न ओको सांवळा, कांन रहे हो मूंद।

—गजउद्धार

वूंदड़—१ देखो 'बूंद' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बूंदी' (मह., रू. भे.)

वूंदड़ी—१ देखो 'बूंद' (अल्पा., (रू. भे.)

२ देखो 'बूंदी' (अल्पा., रू. भे.)

वूंदळा—देखो 'वूंदळा' (रू. भे.)

वूंदा—देखो 'वूंदा' (रू. भे.)

वूंदी—१ देखो 'वूंदी' (रू. भे.)

२ देखो 'वूंद' (रू. भे.)

वूंब—देखो 'वूंब' (रू. भे.)

वूंबड़ा—देखो 'वूंमड़ा' (रू. भे.)

वूंबाड़ौ—देखो 'वूंब' (मह., रू. भे.)

वूंमड़ा—देखो 'वूंमड़ा' (रू. भे.)

वू-सं. पु.—१ अर्क, सूर्य। (एका.)

२ यभु (,,)

३ तूल। (,,)

४ कवूतर। (,,)

५ वहुत, अत्यधिक। (,,)

६ सर्व, सब। (,,)

७ देखो 'वू' (रू. भे.)

८ देखो 'वहू' (रू. भे.)

वूअणौ, वूअबौ—१ देखो 'वहणौ वहवौ' (रू भे.)

उ०—पाचा (छा) डेरा हुता ज्यां हुआ छै, पकवांना का थाळ डेरां नै **वूआ** छै। पाचा रंग-राग वरतांणा, मालूका हुआ मन का जांणां दारू की भड़ लगायौ छै, जसां भी पीधौ छै, म्यारांम नै पीयौ छै।
—मयारांम दरजी री वात

२ देखो 'वोवणौ, बोवणौ' (रू. भे.)

वूअणहार, हारौ (हारी), वूअणियौ—वि०।

वूइओड़ौ वूइयोड़ौ, वूअ्योड़ौ, वूयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वूईजणौ, वूईजबौ—भाव वा०।

वूआणौ, वूआबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, वोवावौ' (रू. भे.)

वूआणहार. हारौ (हारी), वूआणियौ—वि०।

वूआयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वूईजणौ, वूईजबौ—कर्म वा०।

वूआयोड़ौ—१ देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूआयोड़ी)

वूआवणौ, वूआवबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, वोवावौ' (रू. भे.)

वूआवणहार हारौ हारी) वूआवणियौ—वि०।

वूआविओड़ौ, वूआवियोड़ौ, **वूआव्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

वूआवीजणौ, वूआवीजबौ—कर्म वा०।

वूआवियोड़ौ—१ देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वूआवियोड़ी)

वूइयोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूइयोड़ी)

वूई—देखो 'वुई' (रू. भे.)

वूक—देखो 'वूक' (रू. भे.)

वूकड़—देखो 'वूक' (मह., रू. भे.)

वूकड़ौ—देखो 'वूक (अल्पा., रू. भे.)

वूखीचड़ी—देखो 'वहुखीचडी' (रू. भे)

वूग—१ देखो 'वूक' (रू. भे)

२ देखो 'वुग' (रू भे.)

वूड़ी—देखो 'वूड़ी' (रू. भे.)

वूच—देखो 'वूच' (रू. भे.)

वूचकी—देखो 'वूचकी' (रू भे.)

वूचड़—देखो 'वूचड़' (रू. भे.)

वूचड़खांनौ—देखो 'वूचड़खांनौ' (रू. भे.)

वूचौ—देखो 'वूचौ' (रू. भे)

वूजी वूजीसा-सं. स्त्री. [स. वधू] १ वृद्धा स्त्री।

वि० वि०—सर्व प्रथम औरत घर में व्याह कर आती है उस समय उसको "वू" कहकर पुकारा जाता है। उसके सन्तानोत्पत्ति होने पर सन्तान भी उसको 'वू' कहने लग जाती है। परन्तु उसकी वृद्धावस्था होने पर उसको 'वूजी' कहने लग जाते हैं।

२ माता।

उ०—आप कोई बात री चिंता फिकर करसी नीं। **वूजी** नैं म्हारा पांव धोक अरज करसी अर टावरां माथै हाथ फेरसी। म्हारी कांनी सूं अमलां री मनवार मांनसी। —अमर चूंनड़ी

३ दादी।

४ दादीसासु।

५ सासु।

उ०—काकी बोली जबरजी बेटा! म्हारो एक कांम करौला? म्हनैं थारै काकौसा रौ कागज पढनैं सुणाय दौ वीरा! म्हूं थांनैं

बिलावणौ करती वखत बूजी रै छांनै मांखण रौ लूंदौ दू ला।
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ सेठां रै कैणा मुजब सेठांणी पांचूं बहुवां नै इण अबखी वेळा में साथ निभावण वास्तै समझावण लागी तौ चारूं मोटोड़ी बहुवां कह्यौ—वूजीसा, इण में इत्ती समझावण री कांई बात। म्हांरीसाख किसी न्यारी है। —फुलवाड़ी

रू. भे.—बुजी, वूज्जी।

वूजो—१ देखो 'वूजौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बूंझो' (रू. भे.)

वूज्जी—१ देखो 'वूज्जी' (रू. भे.)

२ देखो 'वूजी' (रू. भे.)

वूझ—१ देखो 'वूझ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछ' (रू. भे.)

३ देखो 'बूंझ' (रू. भे.)

वूझणौ, वूझबौ—१ देखो 'पूछणौ, पूछबौ' (रू. भे.)

उ०—आवी खबर अचींतियां, विसमै जैसी वत्त। तद राठौड़ै वूझियौ, 'दुरग' 'आसावत्त'। —रा. रू.

२ देखो 'बूझणौ, बूझबौ' (रू. भे.)

वूझणहार, हारौ (हारी), वूझणियौ—वि०।

वूझिओड़ौ, वूझियोड़ौ, वूझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वूझीजणौ, वूझीजबौ—कर्म वा०।

वूझताछ—देखो 'पूछताछ' (रू. भे.)

वूझदार-वि.—बुद्धिमान।

उ०—ए कैसे हैं—वडे सु विहांन है, वडे महिरवांन हैं, वडे सिरदार हैं। वडे वूझदार हैं, वडे दातार हैं। जमी आसमांन वीच संभू अवतार हैं। —रा. सा. सं.

वूझबूझाकड़, वूझबूझागर—देखो 'बूझबूझाकड़' (रू. भे.)

वूझली—देखो 'बूझली' (रू. भे.)

वूझवणौ, वूझवबौ—१ देखो 'बूझणौ, बूझबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछणौ, पूछबौ' (रू. भे.)

वूझवणहार, हारौ (हारी), वूझवणियौ—वि०।

वूझविओड़ौ, वूझवियोड़ौ, वूझव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वूझवीजणौ, वूझवीजबौ—कर्म वा०।

वूझवियोड़ौ—१ देखो 'वूझियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूझवियोड़ी)

वूझाड़णौ, वूझाड़बौ—१ देखो 'वूझाणौ, वूझाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणौ, बुझाणौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणौ, पूछाबौ' (रू. भे.)

वूझाड़णहार, हारौ (हारी), वूझाड़णियौ—वि०।

वूझाड़िओड़ौ, वूझाड़ियोडौ, वूझाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वूझाड़ीजणौ, वूझाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वूझाड़ियोड़ौ—१ देखो 'वूझायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ौ, (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूझाड़ियोड़ी)

वूझाणौ, वूझाबौ—१ देखो 'बूझाणौ, बूझाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणौ, बुझाबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणौ, पूछाबौ' (रू. भे.)

वूझाणहार, हारौ (हारी), वूझाणियौ—वि०।

वूझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वूझाईजणौ, वूझाईजबौ—कर्म वा०।

वूझायोड़ौ—१ देखो 'बूझायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूझायोड़ी)

वूझावणौ, वूझावबौ—१ देखो 'बूझाणौ, बूझाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणौ, बुझाबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणौ, पूछाबौ' (रू. भे.)

वूझावणहार, हारौ, (हारी), वूझावणियौ—वि०।

वूझाविओड़ौ, वूझावियोड़ौ, वूझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वूझावीजणौ, वूझावीजबौ—कर्म वा०।

वूझावियोड़ौ—१ देखो 'बूझायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूझावियोड़ी)

वूझियोड़ौ—१ देखो 'बूझियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूझियोड़ी)

वूट—१ देखो 'बूंट' (रू. भे.)

२ देखो 'बूट' (रू. भे.)

वूटकी—देखो 'बूंटी' (अल्पा., रू. भे.)

वूटणौ, वूटबौ—देखो 'बूठणौ, बूठबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लुटौ सांमांन भंडारां ऊवार पारां राव लागौ, सोभा डांणें आंणें राव खूटौ खजांनां सचूप । तणी बांध सांम घटा मौजां मांणें रावतूटौ, रांणें राव रूपाधार वूटौ यंद्र रूप । —महादांन महडू

उ०—२ पंगी लुटी चंगी सांमा हुई मांण पांण वाळी, जांफ छूटी पातां घणा आंणां वाळी फोक । रीफां तूठी अछेह ज्यू ऊठी फाट रांणा वाळी, नांणा वाळी मूठी वूटी मेह ज्यू निघोक ।

—महादांन महडू

वूटणहार, हारौ (हारी), वूटणियौ—वि० ।

वूटिग्रोड़ौ, वूटियोड़ौ, वूट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वूटीजणौ, वूटीजबौ—भाव वा० ।

वूटियोड़ौ—देखो 'वूठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूटियोड़ी)

वूटियौ—देखो 'बूंटौ' (अल्पा., रू. भे.)

वूटी—देखो 'बूंटी' (रू. भे.)

वूटौ—देखो 'बूंटौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूटी)

वूठ-सं. स्त्री.—वर्षा होने की गति या क्रिया ।

वूठणौ, वूठबौ—देखो 'वूठणौ, वूठबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ·····भलां हुइं दही, परीस्यां कोइ कहइ नहीं, मही प्रथिवी रही गहगही, साचइं कादम माचइं, कारसणी नाचइं, नीपजइ सातइं थांन, देखतां प्रधांन, नासइ दुकाल, भाद्रवइ वूठइ सुगाल । —व. स.

उ०—२ सोरंभ फूट जव्वाध एम, घण वूठै जळहर लहर जेम । पेखियै ताम सोभा परम्म, किसनागर अंबर जख कदम्म ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ ऊनमियउ उत्तर दिसइं, गाज्यउ गुहिर गंभीर । मारवणी प्रिउ संभरयउ, नयणे वूठउ नीर । —ढो. मा.

उ०—४ सेवै नर सदीना मुरधर, सदा नीरोगी ही रवै । वूठै जांरी वातड़ी नै, वगत वटाऊड़ा कवै । —दसदेव

उ०—५ गाढां बाढणौ अवगाढ महूगढ, उत्तर प्रगट घर पैलां । सेणां फड़ मांड्यौ साहवखां, वूठौ सरस बूंदेलां ।

—साहवखां भाखरोत कछवाहा रौ गीत

उ०—६ दीपै मजलस निस दिवस, हित चित नित मनुहार । विंद 'अभो' वूठौ विभै, इंद तणै आचार । —रा. रू.

वूठणहार, हारौ (हारी), वूठणियौ—वि० ।

वूठिग्रोड़ौ, वूठियोड़ौ, वूठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वूठीजणौ, वूठीजबौ—भाव वा० ।

वूठाळ, वूठाळू-वि.—वरसने वाला, वर्षा करने वाला ।

उ०—कंठळ वूठाळू रूपकंध, बंधिया किलावा चमरबंध । तहमद्द फूल कसि घंट तांम, जंगी धरि हवदां पुठि जांम । —सू. प्र.

वूठियोड़ौ—देखो वूठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूठियोड़ी)

वूड़परवा, वूड़पिरवा—देखो 'वूडपरवा' (रू. भे.)

वूड़वेम—देखो 'वूडजांम'

वूढ—१ देखो 'वूढ' (रू. भे.)

२ देखो 'वूढौ' (मह., रू. भे.)

३ देखो वूढण' (मह., रू. भे.)

वूढजांम—देखो 'वूडजांम' (रू. भे.)

वूढण, वूढणि, वूढणी—देखो 'वूढण' (रू. भे.)

वूढणौ, वूढबौ—देखो 'वूढणौ, वूढबौ' (रू. भे.)

वूढणहार, हारौ (हारी), वूढणियौ—वि० ।

वूढिग्रोड़ौ, वूढियोड़ौ, वूढ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वूढीजणौ, वूढीजबौ—भाव वा० ।

वूढपरवा, वूढपिरवा—देखो 'वूडपरवा' (रू. भे.)

वूढल—१ देखो 'वूढौ' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'वूढण' (रू. भे.)

वूढली—१ देखो 'वूढण' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वूढी' (अल्पा., रू. भे.)

वूढलौ—देखो 'वूढौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. वूढली)

वूढवाळ, वूढवावळ-सं. स्त्री.—वृद्धावस्था, वुढ़ापा ।

उ०—पेमजी जवरा हुकमां हाल्या । अंसै वूढवाळ फोड़ा घाल्या । सपनां ला सैंग हीड़ा-सुमन, उलटा फड़खलां ज्यूं फूरड़ीजै है । कुभावना हाला काली नस रा कीड़ा कुसम, सुलटा तिणखला सा तुरड़ीजै । —दसदोख

वूढवेम—देखो 'वूडजांम'

वूढसुवागण, वूढसुहागण-सं. स्त्री.—वृद्धा सुहागिन स्त्री ।

वूढाई—देखो 'वुढाई' (रू. भे.)

वूढापण, वूढापणौ—देखो 'वूढापणौ' (रू. भे.)

उ०—आवि तूं पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तूं आधारौ जी । तुझ विण कुण वूढापणइ, करिस्यइ अम्हारी सारौ जी । —स. कु.

वूढापौ—देखो 'बुढापौ' (रू. भे.)

उ०—१ किसनजी कीं कूंत नीं सक्यौ। सौखीनाई अर खरच-बरच री चीजां वस्तुवां सूं खूब राजी हुयौ। वूढापै हाळा ओखदां माथै वै'म ही नीं गयौ। ओसध्या ही तीस-पैंतीस तांई री अकल मैं आई। —दसदोख

उ०—२ बाळापण तरणा गयौ, वड वूढापौ थाय। हरीया कर सिर कंपिया, वीख भरी नही जाय। —अनुभववांणी

वूढि—१ देखो 'वूढापौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वूढी' (रू. भे.)

वूढियोड़ौ—देखो 'वूढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूढियोड़ी)

वूढी—१ देखो 'वुढण' (रू. भे.)

२ देखो 'वूढौ' (स्त्री.)

वूढैवारै—देखो 'वूढैवारै' (रू. भे.)

उ०—इतरौ कहिनै जैत डेरै आयौ। आय रजपूतांणी नूं रीसांणी, 'जु वूढैवारै राजा कनै मारी कमी कराई।' इम कहि नै जैत छांडियौ। —जैतमाल पुमार री वात

वूढौ—देखो 'वूढौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया वूढा नां गिनै, तरना गिनै न बाळ। काळ पसारा सकळ जुग, ज्यूं मकड़ी का जाळ। —अनुभववांणी

उ०—२ बाळा ती तरणा भयौ वूढौ तौ ई न आपौ चेती। जनहरिरांम बीज विन वाह्यां, कहा निपावै खेती। —अनुभववांणी

वूढौठाडौ, वूढौठाढौ—सं. पु. (स्त्री. वूढीठाडी, वूढीठाढी) अति वृद्ध पुरुष।

उ०—आळी भोळी गावै बा तौ घर वर पावै। परणी-पाती गावै बा तौ पुतर खेलावै। वूढीठाढी गावै ज्यां नै वैकूंटां रौ वासौ। —लो. गी.

वूढौठेरौ—सं. पु. (स्त्री. वूढीठेरी, वूढीढेरी) अति वृद्ध पुरुष।

उ०—जै कोई धूजी नै परणी-पाती गावै, परणी पाती गावै, गोद पुतर खेलावै। जै कोई धूजी नै वूढीठेरी गावै, वूढीठेरी गावै वा वैकूंटां नै जावै। —लो. गी.

रू. भे.—वूढौढेरौ।

वूढौडेंग—देखो 'वूढौडेंग' (रू. भे.) (स्त्री. वूढीडेंग)

वूढौढेरौ—देखो 'वूढौढेरौ' (रू. भे.)

वूढौभोड—सं. पु.—अति वृद्ध पुरुष।

उ०—ऊंट, बकरी रौ जोड़ौ जुड़े, जद मन कद मिळै ? एक करै नूई बीनणी रा कोड, दूजी करैं आंखें अदीठ वूढौभोड। पेलड़ौ लटवा करै—हाथ जोड़ै। बीजी मूं सुजावै, माथौ फोड़ै। —दसदोख

वूणा—देखो 'वूणा' (रू. भे.)

वूतणौ, वूतबौ—देखो 'बूंतणौ, बूंतबौ' (रू. भे.)

वूतणहार, हारौ (हारी), वूतणियौ—वि०।

वूतिओड़ौ, वूतियोड़ौ, वूत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वूतीजणौ, वूतीजबौ—कर्म वा०।

वूतियोड़ौ—देखो 'बूंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूतियोड़ी)

वूतेलौ—सं. पु.—वातचक्र, बगूला।

वि० वि०—देखो बघूळौ' (रू. भे.)

वूत्कार—देखो 'बूत्कार' (रू भे.)

वूथ—देखो 'बूथ' (रू. भे.)

वूथेळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे)

वूथेळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

वून—देखो 'बूंद' (रू. भे.)

वूनै—देखो 'बूनै' (रू. भे.)

वूर—१ देखो 'बूर' (रू.भे.)

२ देखो 'बूरौ' (मह., रू. भे.)

वूवणौ, वूवबौ—१ देखो वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ० कूंडी कुतकौ होक चींपियौ, कमर कस उठ वूवौ रे। झोळी झंडा अौर पींजरौ, जिण मांही एक सूवौ रे। —रैदास धत्तरवाळ

२ देखो 'बोवणौ, बोवबौ' (रू. भे.)

वूवणहार, हारौ (हारी), वूवणियौ—वि०।

वूविओड़ौ, वूवियोड़ौ, वूव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वूवीजणौ, वूवीजबौ—भाव वा०।

वूवियोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वूवियोड़ी)

वूसट—सं. पु.—चपेटा। (उ. र.)

वूसर—१ देखो 'असुर' (रू. भे.)

उ०—रे मन वूसर क्यूं बैठो रूस र, साहिब सेती सांन्यां, माया देखि भयौ मतिवाळौ, या वातां मन मांन्या। धन जोबन अंजरी कौ पांणी, कर सूं जासी नीसर, मनखा देही वळै न पावै, हरि सिंवरौ मन वूसर। —हरजी वणियाळ

२ देखो 'ऊसर' (रू. भे.)

वूहणौ, वूहबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कूंभड़ियां करळव कियउ, घरि पाछिलै दरंगि। सूती साजण संभरचा, करवत वूही अंगि। —ढो. मा.

उ०—२ कूंझड़ियां कळिग्रळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। निसि भरि सज्जण सल्लियां, नयणे बूहा नीर। —ढो. मा

उ०—३ सिर ढांकण कुंण सां ग्रह्यो, जुवती चढतै (वैसा) जोम। दिन दिन जोवन दीहड़ा, बूहा जावै बोम। —मा. वचनिका

उ०—४ घाव चोट निहंस घरहरै, झाळ दुंग ऊछळै झझ। बूही तेंग मेर सिरि वजर, वजर देह खगधार वज्र।
—सुरजनदास पूनियौ

उ०—५ इसड़ा हीज गडां रा ढिग मारग माहै पड़िया। परमेसर री का इसड़ी हीज घड़ी वूही। उठा चढि ग्रर कीतासर पधारिया।
—द. वि.

उ०—६ ताहरां सिवौ छाजू रौ बेटौ नदी थी निजीक सिकार खेलतौ हुतौ, सू कूकवौ सुणनै दौड़ ग्रायौ। साहिजादी नदी मांहै वूही जावती दीठी। —नैणसी

वूहणहार, हारौ (हारी), वूहणियौ—वि०।
वूहिग्रोड़ौ, वूहियोड़ौ, वूह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वूहीजणौ, वूहीजबौ—भाव वा०।

वूहा—देखो 'वूहा' (रू. भे.)

वूहाणौ, वूहाबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)
वूहाणहार, हारौ (हारी), वूहाणियौ—वि०।
वूहायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वूहाईजणौ, वूहाईजबौ—कर्म वा०।

वूहायोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.
(स्त्री. वूहायोड़ी)

वूहारणौ, वूहारबौ—देखो 'वुहारणौ, वुहारबौ' (रू. भे)
वूहारणहार, हारौ (हारी), वूहारणियौ—वि०।
वूहारिग्रोड़ौ, वहारियोड़ौ, वूहारचोड़ौ—भू० का० कृ०।
वूहारीजणौ, वूहारीजबौ—कर्म वा०।

वूहारियोड़ौ—देखो 'वुहारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वूहारियोड़ी)

वहारी—देखो 'वुहारी' (रू. भे.)

वूहारौ—देखो 'वुहारौ' (रू. भे.)

वूहावणौ, वूहावबौ—देखो 'वहाणौ, वहावौ' (रू. भे.)
वूहावणहार, हारौ (हारी), वूहावणियौ—वि०।
वूहाविग्रोड़ौ, वूहावियोड़ौ, वूहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वूहावीजणौ, वूहावीजबौ—कर्म वा०।

वूहावियोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वूहावियोड़ी)

वूहियोड़ौ—देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वूहियोड़ी)

वूही-वि.—पागलपनयुक्त, पागलपन की।
उ०—एकर री वात, राजी रै जापै में पौन-हवा निकलगी। बावली वंडा करण लागगी। गूग विखेरै ग्रर तत्ता-पत्ता सूं वूही वातां करै। जकै सूं घर हाळां नै भूतणी री वै'म वड़ग्यौ है।
—दसदोख

वें—देखो 'वें' (रू. भे.)

वेंकट—देखो 'वेंकटगिरि' (रू. भे.)

वेंकटगिर, वेंकगिरि, वेंकटगिरी—सं. पु. [सं. वेंकटः+गिरि] दक्षिण भारत में स्थित एक पर्वत, जहां विष्णु का प्रसिद्ध स्थान है और भारत के कोने-कोने से भक्त दर्शनार्थ आते हैं।
रू. भे.—वेंकट, वेंकिट, वेंकिटगिर, वेंकिटगिरि, वेंकिटगिरी

वेंकटाचळ—देखो 'वेंकटगिरि'

वेंकटेस, वेंकटेसर, वेंकटेसुर, वेंकटेस्वर—सं. पु. [सं. वेंकट+ईश, वेंकट+ईश्वर] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर।
२ शेषनाग का नाम।
३ दक्षिण भारत के तिरुपति बालाजी का एक नाम।

वेंकिट, वेंकिटगिर, वेंकिटगिरि, वेंकिटगिरी—देखो 'वेंकटगिरि' (रू. भे.)

वेंगळा, वेंगला—सं. स्त्री.—मूर्ख स्त्री, मूर्खा।
उ०—१ भगवांन री समझदारी कै दुनियां मैं ग्रेड़ा मूरख ग्रर ग्रधरमी ग्रादमी घणा नीं व्है, नींतर सगळा संसार रौ ई पोखाळौ व्है जातौ। ग्रा दुनियां जीवण जोगी ई नीं रै'ती। वौ धरमात्मा भतीजौ नीठ उण वेंगळा नै समझाई। —फुलवाड़ी
उ०—२ सेठ जूंझळ खावता बोल्या—थनै हेलौ नीं मारचौ तौ किणी दूजा नै मारचौ। घर मैं दूजौ कुण है जिणनै हेलौ मारूं। थारै पीहर वाळा ई थनै वेंगळा केता सौ यूं थोड़ा ई केता।
—फुलवाड़ी
उ०—३ पण सेठांणी ग्रेड़ी वेंगळा कै वा ग्रापरै जायोड़ा बेटा नै ई नीं ग्रोळखै। बोळी-घोनी नै कठै ई रातिंदौ तौ नीं हैं। नीं बेटा री बोली पिछांणी ग्रर नीं उणनै ग्रोळखियौ। —फुलवाड़ी

वेंच—देखो 'वेंच' (रू. भे.)

वेंचणौ, वेंचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)
उ०—रांमदासजी सांढियां लेनै दुधोड़ ग्राया। इणां नै तौ ग्राखड़ी छै, धाडौ बासी राखणौ नहीं। सांढियां रजपुतां नै वेंच दीनौ।
—रा. सा. सं.

वेंचणहार, हारौ (हारी), वेंचणियौ—वि० ।
वेंचिग्रोड़ौ, वेंचियोड़ौ, वेंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचीजणौ, वेंचीजबौ—कर्म वा० ।

वेंचवाड़ौ—देखो 'बेंचवाड़ौ' [रू. भे.)

वेंचाणौ, वेंचाबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वेंचाणहार, हारौ (हारी), वेंचाणियौ—वि० ।
वेंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचाईजणौ, वेंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वेंचायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंचायोड़ी)

वेंचावणौ, वेंचावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वेंचावणहार, हारौ (हारी), वेंचावणियौ—वि० ।
वेंचाविग्रोड़ौ, वेंचावियोड़ौ, वेंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचावीजणौ, वेंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंचावियोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंचावियोड़ी)

वेंचियोड़ौ—देखो 'बेंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंचियोड़ी)

वेंट—देखो 'बेंट' (रू. भे.)

वेंटणौ, वेंटबौ—देखो 'बांटणौ, बांटबौ' (रू. भे.)

उ०—बेटा रै जलम री खुसी में बांमण सवा मण ,मिसरी पतासा वेंट्या ग्रर जाट सवा मण गुळ वेंट्यौ। पछै दोनूं घरां में दोनूं बातां दिनौदिन भरै पड़ण लागी । —फुलवाड़ी

उ०—२ डावड़ी कह्यौ—गांव में तौ सगळै बधाई रौ पांच मण गुळ वेंटीजग्यौ ग्रर थें हाल तांई सूताई हौ । ग्राज तौ ग्रापांरै गांव सोनै रौ सूरज ऊगियौ । ग्रापरै करमां रौ परताप कै इण गांव राजा रौ कंवर तोरण वांदियौ । —फुलवाड़ी

वेंटणहार, हारौ (हारी), वेंटणियौ—वि० ।
वेंटिग्रोड़ौ,वेंटियोड़ौ, वेंट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंटीजणौ, वेंटीजबौ—कर्म वा० ।

वेंटाणौ, वेंटाबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वेंटाणहार, हारौ (हारी), वेंटाणियौ —वि० ।
वेंटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंटाईजणौ, वेंटाईजबौ—कर्म वा० ।

वेंटायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंटायोड़ी)

वेंटावणौ, वेंटावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वेंटावणहार, हारौ (हारी), वेंटावणियौ —वि० ।
वेंटाविग्रोड़ौ, वेंटावियोड़ौ, वेंटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंटावीजणौ, वेंटावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंटावियोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंटावियोड़ी)

वेंटियोड़ौ—देखो 'बांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंटियोड़ी)

वेंडाक—१ देखो 'बेंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'बेंडौ' (मह., रू. भे.)

वेंडौ—देखो 'बेंडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंडी)

वेंण—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

३ देखो 'वेन' (रू. भे.)

वेंत—१ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

उ०—१ वीजळी कांई किड़की, ग्राभा नै सैचन्नण कर दियौ। खेजड़ी हेटै चार हाथ ऊंडौ धेड़ खुदग्यौ । च्यारूं ग्रादमियां री जीभां वेंत बारै निकळगी। ग्रांख्यां रा डोळा बारै ग्राय पड़्या । —फुलवाड़ी

उ०—२ धकै जावतां वौ इज रूखाळी वाळौ खेत ग्रायौ । ताळां छेक ऊभी बाजरी झोला खावती ही । दौ दौ वेंत लांबा जड़ाव री जात सिट्टा मोत्यां रै उनमांन परळाट करता हा । —फुलवाड़ी

उ०—३ ग्रंदाता, ग्राप किसौ विस्वास करौला—इरा़ौ ऊचौ ग्रेलम कै फगत दोय घड़ी में वेंत वेंत लांबा वाळ ग्राय जावै । सेवां ज्यूं लरड़ लरड वधै। —फुलवाड़ी

उ०—४ वेदां री तौ गिरै-दसा ई भंवगी । जूता ग्रर वेंतां रा डर सूं जांणता जकौ ई विद्या विसरग्या । किणी धंतर-वेद सूं कीं कारी लागी नीं । —फुलवाड़ी

२ देखो 'बेत' (रू. भे.)

३ देखो 'वैंत' (रू. भे.)

४ देखो 'वेत' (रू. भे.)

वेंतणौ, वेंतबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

वेंतणहार, हारौ (हारी), वेंतणियौ—वि० ।
वेंतिग्रोड़ौ, वेंतियोड़ौ, वेंत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंतीजणौ, वेंतीजबौ—कर्म वा० ।

वेंतरणौ, वेंतरबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

वेंतरणहार, हारौ (हारी), वेंतरणियौ—वि० ।

वेंतरिश्रोड़ो, वेंतररियोड़ौ, वेंतरघोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंतरीजणौ, वेंतरीजबौ—कर्म वा० ।

वेंतराणौ, वेंतरावौ—देखो 'वेंताणौ, वेंतावौ' (रू. भे.)

वेंतराणहार, हारौ (हारी), वेंतराणियौ—वि० ।

वेंतरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंतराईजणौ, वेंतराईजबौ—कर्म वा० ।

वेंतरायोड़ौ—देखो 'वेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतरायोड़ी)

वेंतरावणौ, वेंतरावबौ—देखो 'वेंताणौ,, वेंताबौ' (रू. भे.)

वेंतरावणहार, हारौ (हारी), वेंतरावणियौ—वि० ।

वेंतराविश्रोड़ौ, वेंतरावियोड़ौ, वेंतराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंतरावीजणौ, वेंतरावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंतरावियोड़ौ—देखो 'वेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतरावियोड़ी)

वेंतरियोड़ौ—देखो 'वेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतरियोड़ी)

वेंताणौ, वेंताबौ—देखो 'वेंताणौ, वेंतावौ' (रू. भे.)

उ०—थांन दोय बाफतां रा, दोय मांहमुंदी, पांच सेल्हा अवल ल्याई । सौ दरजी भरमल रै कारखांनै वेंसांणिया । वागो पंहरण नै कुंवरसी रै थौ सौ दोपोर पोढिया जद लै गई । उण ऊपर वेंताया जांधिया तीन बाफता रा कराया ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

वेंताणहार, हारौ, (हारी), वेंताणियौ—वि० ।

वेंतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंताईजणौ, वेंताईजबौ—कर्म वा० ।

वेंतायोड़ौ—देखो 'वेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतायोड़ी)

वेंताळीस, वेंतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

वेंतावणौ, वेंतावबौ—देखो 'वेंताणौ, वेंताबौ' (रू. भे.)

वेंतावणहार, हारौ (हारी), वेंतावणियौ—वि० ।

वेंताविश्रोड़ौ, वेंतावियोड़ौ, वेंताव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंतावीजणौ, वेंतावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंतावियोड़ौ—देखो 'वेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतावियोड़ी)

वेंतियौ–वि.—एक बालिश्त लम्बा ।

सं. पु.—केवल एक बालिश्त लम्बा व्यक्ति, जो प्रायः पृथ्वी तल के अन्दर पाया जाता है और पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकता ।

वेंदी—देखो 'विंदी' (रू. भे.)

वेंद्रिय—देखो 'वेइंद्रिय' (रू. भे.)

वेंहरौ–सं. पु.—विवाद ।

उ०—उग्जन तणौ लमै ऊतरियौ, सुन जगमाल रहियौ सुधर ।
वेंहरौ हुग्रौ वेहूं गड विग्रह, हाडा अने 'हमीर' हर ।

—रावत पत्ता ग्रांमेट रौ गीत

वे'—देखो 'वेह' (रू. भे.)

वे–सं पु.—१ काम, कार्य । (२) वैद्य, हकीम । (३) पल्लव । (४) कल्पवृक्ष । (५) पीपर । (६) वेग, गति । (एका.)

७ स्वरूप, आकार ।

८ पोशाक ।

सर्व.—१ 'वौ' का बहुवचन ।

२ उस । (ग्रमरत)

३ वह का बहुवचन उन ।

उ०—वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक । वे खाधां वे मांनियां, हुवा क्रतांत खुराक । —बां. दा.

४ वह का बहुवचन, वे ।

उ०—मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटां हत्थ । वे ही क्रपण कपाट नूं, ऊघाडण असमत्थ । —बां. दा.

४ तृतीय पुरुष के लिए सम्बोधन सूचक शब्द, वह (सम्मान सूचक) ।

उ०—कांम तौ करणौ इज चाहिजै । सगळै ई कांम व्हाला है. चांम व्हाला कठैई कोनीं । पण थोडौ घणौ कांम तौ जेठांणीजी नै ई करणौ चाहिजै । पण वे तौ डील रै एल ई नी दे ।

—ग्रमरचूंनड़ी

ग्रव्य.—५ सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—ग्रहौ ग्रावौ वे यार वैठौ दरबार । ए चांदणी रात, कहौ मजलीस की बात । कहौ कौंण कौंण, मुलक कौंण कौंण राजा देखै, कौंण कौंण पातिस्या देखै, कौंण कौंण दईवांन देखै, कौंण कौंण महिवांन देखै । —रा. सा. सं.

६ देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०—१ उठै वे दळ जोध ग्रकारा, साझ सरीर तणा श्रम सारा । कहि गंगा तन मंजन कीधा, दांन वितान मांन करि दीधा ।

—रा. रू.

उ०—२ रहता सेती रचीयै, क्या वहतां सुं कांम । भाव जहां हंसि बोलियै, वे भावत वेकांम । —ग्रनुभववांणी

रू. भे.—वेंह, वे ।

वेग्रंत—देखो 'वेग्रंत' (रू. भे.)

वेग्रकल—देखो 'बेग्रकल' (रू. भे.)

वेग्रकली—देखो 'बेग्रकली' (रू. भे.)

वेग्रक्खरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे.)

वेग्रक्खरीचौसर—देखो 'बेग्रक्खरीचौसर' (रू. भे.)

वेग्रखरी, वेग्रक्खरी, वेग्रख्परी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे.)

वेग्रद-वि०—बेइज्जत, प्रतिष्ठारहित ।

उ०—ठिकांणा री मालक घोड़ा रजपूतां नै **वेग्रद** राखतौ सो इण सारू उणरी स्त्री कह रही है—हे सखियां ग्रठै ठिकांणा में भड़ नै घोड़ा मुहंगा हा सौ एक ग्रादमी सू झाट उडतां (युद्ध होतां) भड़ नै घोड़ा मुहंगा हो गया । —वी. स. टी.

वेग्रदब—देखो 'वेग्रदब' (रू. भे.)

वेग्रदबी—देखो 'बेग्रदबी' (रू. भे.)

वेग्ररथ, वेग्ररथौ—देखो वेग्ररथ' (रू. भे.)

वेग्राखरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे.)

वेग्राब—देखो 'बेग्राब' (रू. भे.)

वेग्राबरू—देखो 'बेग्राबरू' (रू. भे)

वेग्राळिस, वेग्राळीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

वेग्रासी—देखो 'बंयासी' (रू. भे.)

वेइंदिय, वेइंदी, वेइंद्रिय—देखो 'बेइंद्रिय' (रू. भे.)

वेइंसाफ—देखो 'बेइंसाफ' (रू. भे.)

वेइंसाफी—देखो 'बेइंसाफी' (रू. भे.)

वेइ—देखो 'वेई' (रू. भे.)

उ०—राजा वीसलदेव ग्रजमेर राज करै । वडौ महाराज, तैसू कोई ग्रधको नहीं । तिण सौ मूळवै लागवजी हुई, चारण वेसवटै **वेइ** । वेसवड़ौ मूळवै पासै रहै ग्रर मूळवौ चणडोळियौ रहै । —मूळवै सांगावत री वात

वेइज्जत—देखो 'बेइज्जत' (रू. भे.)

वेइज्जती—देखो 'बेइज्जती' (रू. भे.)

वेइतबार—देखो 'बेइतबार' (रू. भे.)

वेइया—देखो 'वेदिका' (रू. भे.) (जैन)

वेइल्म, वेइल्मी—देखो 'बेइल्म' (रू. भे.)

वेई—देखो 'बेई' (रू. भे.)

उ०—१ मन में धरता मरट घरट जिम भूखें घूमैं, मेलै घर गया मऊ भटकि मूग्रा पर भूमैं । बेटा नै मा बाप वेचि चै जीमण **वेई**, रूलतां रिगता रांक करै वेललाटा केई । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ पछै संमत १६७२ वळै पाछौ ग्रायौ, तद काभड़ौ पटै दियौ । पछै विकूंकोहर पांणी री तीण **वेई** माहोमांह बोलाचाली हुई तद भाटी ग्रचळदास मारियौ । —नैणसी

उ०—३ गूंजवौ कोहर तौ, तठै चारण री वित पावण **वेई**, सु कोहर चाढियौ, सु पांणी नीसरै नहीं । ताहरां चारण बिरवड़ी कही—'वडा राठोड़ घेरी छै ज्यूं पाय । —नैणसी

उ०—४ जदै वीरमदै कहण लागौ—'ज, हूं उठै पठांण रै जाय ग्रर बंध **वेई** ग्ररज करूं । ताहरां कल्यांणमल सवणां मांहै समझतौ हुतौ, ताहरां कह्यौ—'राज । बंध **वेई** ग्ररज मतां करो । —नैणसी

वेईठणौ, वेईठबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

वेईठणहार, हारौ (हारी), **वेईठणियौ**—वि० ।

वेईठिग्रोडो, वेईठियोड़ौ, वेईठयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेईठीजणौ, वेईठीजबौ—भाव वा० ।

वेईठाणौ, वेईठाबौ—देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

वेईठाणहार, हारौ (हारी), **वेईठाणियौ**—वि० ।

वेईठायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेईठाईजणौ, वेईठाईजबौ—कर्म वा० ।

वेईठायोड़ौ—देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेईठायोड़ी)

वेईठावणो वेईठावबौ—देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

वेईठावणहार हारौ (हारी), **वेईठावणियौ**—वि० ।

वेईठाविग्रोड़ौ, वेईठावियोड़ौ, वेईठ्व्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेईठावीजणौ, वेईठावीजबौ—कर्म वा० ।

वेईठावियोड़ौ—देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेइठावियोड़ी)

वेईठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेईठियोड़ी)

वेईमांन—देखो 'बेईमांन' (रू. भे.)

वेईमांनी—देखो 'बेईमांनी' (रू. भे.)

वेउल-सं. पु. [सं. विचकिलः] एक प्रकार की चमेली । (उ. र.)

उ०—१ वनि वनि विकसइं **वेउल**, खेउ लगाडइं चींति, दीठा द्राखह मंडव, मंड वधारइं प्रीति । वर विलसइं ग्रलवेसर केसर हेठि सुवेस, ग्रध पूगइं ऊतरायणि रायणि फलिय ग्रसेस । —जयसेखर सूरि

उ०—२ मउरिया सहकार, चंपक उदार । **वेउल** बकुल, भ्रमर कुल संकुल, कलरव करइं कोकिल तणा कुल । प्रवर प्रियंगु पाडल, निरमळ जळ, विकसित कमळ । —रा० सा० सं०

वेउवियलद्धी, वेउवियलधी, वेउव्वियलद्धी, वेउव्वियलधी—देखो 'वैक्रियलब्धि' (रू. भे.) (जैन)

वेऊ—सं. पु.—१ एक प्रकार का शाक विशेष।

उ०—वालु नइं वेलातरू, वेऊ वेतस वांणि। वश्चारू वाहलु लीउ वाउलीउ वखांणि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बेऊ' (रू. भे.)

वेकट—स. पु.—१हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा।

२ हीरे-जवाहिरात की परख करने वाला, जौहरी।

३ युवा पुरुष।

रू. भे.—वेकट, वेकढ

वेकटी, वेकढी—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—वागी अखंगा काहुळा नाग करतकां साफलें वहौ, गुड़ै सिधू बाहुळां जुझाऊ कै गाराज। लड़ै वहादरेस धूत मूंहड़ा गैणाग लागौ, नत्रीठा **वेकढी** वागौ खळा धूनाराज। —प्रभूदांन मोतीसर

वेकणौ, वेकबौ—देखो 'वेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)

उ०—चपला गत चूंवीह, परी गई अपछर परै। आय आगळ ऊभीह, कमळादै नर वेकियां। —पा प्र

वेकणहार, हारौ (हारी), वेकणियौ—वि०।

वेकिओड़ौ, वेकियोड़ौ, वेक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेकीजणौ, वेकीजबौ—कर्म वा०।

वेकदर—देखो 'बेकदर' (रू. भे.)

वेकदरी—देखो 'बेकदरी' (रू. भे.)

वेकदरौ—देखो 'बेकदर' (अल्पा,. रू. भे.)

वेकर—सं. पु. १—एक प्रकार का घास विशेष।

२ एक प्रकार की मिट्टी विशेष।

३ देखो 'बेकर' (रू. भे.)

रू. भे.—वेकरड़ी, वेकरियौ।

वेकरड़ी—१ देखो 'बेकर' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेकर' (अल्पा., रू. भे.)

वेकरड़ौ—१ देखो 'बेकर' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'वेकर' (मह, रू. भे.)

वेकरार—देखो 'बेकरार' (रू. भे.)

वेकरारी—देखो 'बेकरारी' (रू. भे.)

वेकरियौ—१ देखो 'बेकर' (अल्पा., रू. भे)

२ देखो 'वेकर' (अल्पा., रू. भे.)

वेकळ—१ देखो 'वेकळू' (रू. भे.)

२ देखो 'विकळ' (रू. भे.)

वेंकल—देखो 'विकळ' (रू. भे.)

उ०—मुलां संमित तैं कगी, तैं कीया बिसमल। खलड़ी गला कटाय कै, क्या कीया **वेंकळ**। —अनुभववांणी

वेकळी—१ देखो 'बेकळी' (रू. भे.)

२ देखो व्याकुळी' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याकुलता' (रू. भे.)

वेकळू—देखो 'बेकळू' (रू. भे.)

उ०—१ पछै सिंझ्या तांई खेत रै चारूंमेर होळै होळै चकारा देवती फिरी। सूरज हमेसां री गळाई आथूण दिस रै घोरां री **वेकळू** मलमल मैं गडग्यौ हौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ मन ई मन आ सोच राजी व्ही कै जकौ कूंडा मैं मोहर न्हाकी, वा सीख मैं रांम-जांणै कांई बगसैला! वा मन लगाय आपरी खट-पट मैं अळूभगी। वेकळू रेता कूंडा भर भरनै मळवा माथै लाय राळ्या। —फुलवाड़ी

उ०—३ अैड़ा अैड़ा अकरम, अन्याव अर अधरम चुपचाप सहै, चुन्कारौ ई नीं करै। **वेकळू** रेत रा लांठा धोरा मैं विरखा रौ पांणी रिसै ज्यूं उण राज री रचा रै अतस मैं सगळा अकरम, अन्याव भरै बुड़कौ ई नीं ऊठै। --फुलवाड़ी

वेकस—देखो 'बेकस' (रू. भे.)

वेकसूर—देखो 'बेकसूर' रू. भे.)

वेकांनूनी—देखो 'बेकांनूनी' (रू भे.)

वेकांम, वेकांमौ—देखो 'बेकांम' (रू. भे.)

उ०—१ घरि ही हरि सूं हित लाय रहौ, मन रे मत जाह भटकण कूं। कंण पाखौ कांम **वेकांम** करै, थोथा भूर फटकण कूं।

—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ जाकै घट विरहा वसै, जा घट प्रगटै रांम। जनहरिया घट विरह विन, सोई घट **वेकांम**। —अनुभववांणी

उ०—३ रहता सेती रचीयें, क्या वहतां सुं कांम। भाव जहां हंसि वोलियें, वे भावत **वेकांम**। —अनुभववांणी

उ०—४ सहजै जीव जिंद कूं छाडै, ताकूं कहत हरांमां। काजी करद गऊ सिर सारै, विनां दोस **वेकांमां**। —अनुभववांणी

वेकाज - देखो 'बेकाज' (रू. भे.)

उ०—तुं क्युं सूतौ नींद भरि, भजन विनां **वेकाज**। जनहरिया जौरौ करै, खड़ौ सिरांणै वाज। —अनुभववांणी

वेकाबू—देखो 'बेकाबू' (रू. भे.)

वेकायदा—देखो 'बेकायदा' (रू. भे.)

वेकार—देखो 'बेकार' (रू. भे.)

वेकारी—देखो 'बेकारी' (रू. भे.)

वेकी—देखो 'बेकी' (रू. भे.)

वेकीमती—देखो 'बेकीमती' (रू. भे.)

वेकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वेकुंथहत्थिराज, वेकुंथहत्थिराय, वेकुंथहथिराज, वेकुंथहथिराय—सं. पु. [सं. वैकुंथहस्तिराज] हाथियों की सेना का नायक। (जैन)

वेकूफ, वेकूब—देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

वेकूबी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

वेख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

२ देखो 'वीक्षण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीख' (रू. भे.)

४ देखो 'बेख' (रू. भे.)

५ देखो 'वेस' (रू. भे.)

वेखटक वेखटकै—देखो 'बेखटकै' (रू. भे.)

वेखणौ, वेखबौ—क्रि. स.—[सं. वि+ईक्षणम्] १ अवलोकन करना, देखना।

उ०—१ वजि थाळ सकळ वाजित्र वजे, कुसम सघण सुरियंद किया। वेखियां हीज आवै वणौ, वण दिन तणी अजोधिया। —सू. प्र.

उ०—२ बळोवळी बीरहाक नौपतां नंगारां बागी, सेना पीठ लागी जोस धारियां सक्रोध। उबंबरां आसमांण भुजाटां सेल री अण्यां, वेखौ कंस वंस माथै तड़िता विरोध। —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ वणै चार, आभास वदनारविंद, उरै ऊपजै वेख रेखा अणाद। सदा हेत संतां इसा नेत सोहै, महा मंण रूपी तिकां नैंण मोहै। —रा. रू.

उ०—४ भंग्व डावी भणै दुगडियौ मांन दिरीजै, जौ राजा जीमणौ पोहर हैकण ठंहरीजै। व्रख आडो वेखतां पौर खोडस पारभण, आठ पौहर योमास चलैऊ भेडौ तै सुण। —पा. प्र.

२ निरीक्षण करना, जांचना।

३ जानना, समझना।

उ०—१ कथ सुणि न्रप दाखियौ क्रिपा करि, हवि तूं मांग कहै सुजि हाजरि। एक वार ओखद तत एहौ, जपियौ मैं वेखां गुण जेहौ। —सू. प्र.

उ०—२ वेदां भेदां वेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौरांणां। राघौ नांम सरीख, नह कौ नर देव नागिंद्रं। —र. ज. प्र.

वेखणहार, हारौ (हारी), वेखणियौ—वि०।

वेखिओड़ौ, वेखियोड़ौ, वेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेखीजणौ, वेखीजबौ—कर्म वा०।

बेखणौ, बेखबौ, वीखणौ, वीखबौ, वेकणौ, वेकबौ, व्रीखणौ, व्रीखबौ —रू. भे.।

वेखता—देखो 'बेखता' (रू. भे.)

वेखबर—देखो 'बेखबर' (रू. भे.)

वेखबरदारी—देखो 'बेखबरदारी' (रू. भे.)

वेखबरी—देखो 'बेखबरी' (रू. भे.)

वेखरच—देखो 'बेखरच' (रू. भे.)

उ०—उठा धरमदुवार मांगि नीसरिया हुता। मरि, छूडि, तूटि, घणौ वेखरच हुइ, तूटि मरि, भूखा मरि अर नीसरिया हुता। तियै वास्तै पातिसाहजी खिजिया। —द. वि.

वेखवेरी—देखो 'बेखवेरी' (रू. भे.)

वेखातर, वेखातरि—देखो 'बेखातर' (रू. भे.)

वेखास—सं. पु.—१ प्रयत्न, प्रयास, कोशिश।

उ०—कोई कहै मोनि पाठ ग्रह विंघ्या, कोई वसतै वनवासा। सतगुर विन संसा नही भाजै, भांवें कोटि करौ वेखासा। —अनुभववांणी

२ विश्वास, एतबार।

उ०—सुण जिनवर सेत्रुंजाधणीजी, दास तणी अरदास। तुज आगल बालक परैजी, हुंतौ करूं वेखास, रे जिनजी मुज पापी नें तार। —वृस्त.

३ विलाप, रुदन।

उ०—१ सुणि मारुवणी आवइ घरै, व्याप्यउ विरह मयण बळ धरै। सूती सेज करै वेखास, मोडइ अंग, मूंकइ नीसास। —ढो. मा.

उ०—२ वोळावे मन विलखा किया, देवसूत्र एहवा थया। वार ढोलउ करइ वेखास, वळि-वळि जोवइ मारू-सास। —ढो. मा.

वेखियोडौ—भू० का० कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ. २ निरीक्षण किया हुआ, जांचा हुआ. ३ समझा हुआ जाना हुआ। (स्त्री. वेखियोड़ी)

वेखुदी—वि. [फा. बेखुदी] जिसमें चेतना न हो, बेखबर।

उ०—वेखुदी वै आदि बेगम, अजर अचळ अचाल। चिदानंद अरूप अवगति, खबर दारौं ख्याल। —ह. पु. वां.

वेखून—वि.—निरापराध, बेखून।

उ०—त्रीकम अरज करां छां तूनां, मोटी अकलि समापै मूनां। जादवराव निमौ जर जूनां, वैकंठ मां राखै वेखूनां। —पी. ग्रं.

वेग–सं. पु. [सं.] १ प्रवाह, बहाव।

उ०—वहै खग आय खळां झळ वेग, तुटै घरा आप तरा सिर तेग। सथी करि मेछ घरा समराथ, भटी भड़ तांम पड़ै भाराथ। —सू. प्र.

२ शरीर में से मल-मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति।

३ मोतिया बिन्द का समय पर ऑपरेशन न होने पर नेत्र में चलने वाली सूल, पीड़ा।

४ वायु विकार।

५ चौबीस गुणों में से एक गुण जो आकास, जल, तेज वायु और मन में पाया जाता है। (न्याय)

६ गति, चाल।

उ०—१ पमंग वेग उप्पड़ै, वरी सनूर वंकड़ै। खुलै अपार खग्गयं अरणी सकत्ति अग्गयं। —रा. रू.

उ०—२ चोखी वात फैलतां नै जेज लागै पण भूंडी वात तौ पवन रै वेग उडै। रेडियौ में खबर पूगै ज्यूं आ खबर धानपुर पूगी नै गांव में खळबळी माचगी। मिनखां रा अबै मूंडा जितरी ई वातां। —अमरचूंनड़ी

७ तीव्र गति, तेज चाल।

उ०—१ राति सांमीर सारंग डांगी ग्रहै, वाइ ऊपडिया लीण जांगी वहै। हद्द वेहद्द पै वेग पै हैमरां, पाघरा जांण पाहाड़ उड्डै परां। —गु रू. बं.

उ०—२ जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कंठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन, फल रहित व्रक्ष, तप रहित भिक्षुक। वेग रहित घोड़ौ, केस रहित मोढौ, वस्त्र रहित सिणगार, स्वरण रहित अलकार, इत्यादि। —रा. सा. सं.

उ०—३ मझि खगां झाट खेलहै मलंग, आफळै अणी परघार अंग। पवन रा कुटवी वेग पांण, उड्डुड सिधगुटका जिम उडांण। —सू. प्र

८ आवेश, जोश ९ दृढ़ प्रतिज्ञा। १० प्रेम, अनुराग। ११ वीर्य, शुक्र। १२ वीर्यपात, वीर्यस्खलन। १३ शक्ति, बल, सामर्थ्य।

१४ शीघ्र, जल्दी; तुरन्त (अ. मा.)

उ०—१ मम ढील करौ हल वार म लावौ, वेग चढो वहिळा वहिळा। भिडता भड सूरज मंडळ भेदै, भूळ भरै रंभ भूम्भ भला। —गु. रू. ब.

उ०—२ सुगुण सनेही नाहला, वाला वेग पधार। अलबेला अलजौ घणौ, देखण पीय दीदार। —ढो. मा.

उ०—३ मोवायन इंद्र साह रौ, राव दिसी तिण वार। गोयंदास पमार संग, पूगौ वेग पुकार। —रा. रू.

उ०—४ चंद उठी दळ वेग चलाया, आई ठीक नजीक सु आया। प्रळै काळ जिसड़ा दळ पावस, दळपत छत्रहूंत कोसां दस। —सू. प्र.

१५ प्रसन्नता, आनन्द।

१६ देखो 'वेग' (रू. भे.)

रू. भे.—वैग, वेघ, वेघौ, वेव, वंग, वेगांण।

वेगइरउ, वेगइरौ–क्रि. वि.—अपेक्षाकृत शीघ्र, जल्दी।

उ०—पंथी, हेक संदेसड़उ, लग ढोलइ पैहच्याय। जोबन जायइ प्राहुणउ, वेगइरउ घर आय। —ढो. मा.

वेगउ—देखो 'वेगौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—चंदमुखी, हंसा-गमणि, कोमळ दीरघ केस। कंचन-वरणी कांमनी, वेगउ आवि मिळेस। —ढो. मा.

वेगड़, वेगड़उ–सं. पु.—१ राठौड़ों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'वेगड़' (रू. भे.)

३ देखो 'वेगड़ौ' (मह., रू. भे)

उ०—१ सवा कोटि धन खरचियौ, हरख्यौ 'महमद शाह' हौ। बिरूद दियौ वेगड़ तणौ, प्रगट थयौ जग मांहि हौ। —ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ कमंधां घर ऊगौ किरणाळौ, भुज लग हथ पावू भालाळौ वेगड़ धमल कंध वळवाळौ, वाखांणू धांधल राव वाळौ। —पा. प्र.

उ०—३ कमळ झाडै पडै न चाले कलोड़ा, छंड भाजै भरै जीव छोळां। 'अजारा' पूजियां मांड कांधो अबै, वेगड़ तांड तौ जिसी वेळां। – हरनाथसिंह चांपावत रौ गीत

उ०—४ राठउड़ै उदियउ चउंड राउ, वेगड़इ सांड वीरम वियाउ। साळवड़ी थांणउ दे सधीर, हठमल्ल राउ थांणै हमीर। —रा. ज. सी.

उ०—५ वेगड़उ सांड 'विकउ' विचन्न, कुळ भांण तेथि उदियउ 'करन्न'। ऊधरिय छत्र फेरावि आंण, तांई मडोवर मूलतांण। —रा. ज. सी.

४ देखो 'दोगळौ' (मह., रू. भे.)

वेगड़ीगड़ी—सं. स्त्री. एक प्रकार की बन्दूक।

वेगड़ि—देखो 'वेगडी' (रू. भे.)

वेगड़ियौ–सं. पु—१ चौहटे का नाम। (सभा)

२ देखो वेगड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

वेगड़ी-सं स्त्री. [सं विकटशृंगी] तीक्ष्ण और सीधे सींगों वाली गाय या भैंस। (उ. र.)

रू. भे.—वेगडी।

वेगड़ौ—१ देखो 'बेगड़' (रू. भे)

२ देखो बेगडौ' (रू. भे.)

उ०—१ पाबू पाट रै रूप राठवड़ां, सेवै तूझ सधीरा। **वेगड़ै** पाल्ह लीया वरदाई, सिव तणा सांढी रा।

—पाबू धांधळोत राठौड़ रौ गीत

उ०—२ माधौ अटक न ऊतरै माधौ कटक न जाय। बेटी साटै **वेगड़ौ**, घर बैठौ घर खाय। —बां. दा ख्यात

उ०—३ वांछंतां वरमाळ **वेगड़ा**, वकता सुणै 'दूदै' वसियौ। जेसळगिरा तिकौ दिन जांणै, हाथां ताळी दे हसियौ।

—हूंफौ सादू

उ०—४ महि मालम थांन मसूरियौ, श्रोथ हूंत खड़ आवजै। **वेगड़ा** 'पाल' गउ वाहरू, दम इक जेज म लावजै। —पा. प्र.

उ०—५ दरगह रांण कळण विच दारुण, गौ नाहीं सुधौ कळण। कांधौ कुण मांडे 'कांधळ' रा, **वेगड़ा** धोरी तूझ वण।

—चतुरभुज बारहठ

३ देखो 'दोगळौ' (रू. भे.)

वेगड, वेगडउ—१ देखो 'वेगड़' (रू. भे.)

२ देखो 'दोगळौ' (मह., रू. भे)

३ देखो 'बेगड़ी' (मह., रू भे.)

उ०—उडि महाभर कंध; भार भलपण संब्राहै। वेगड बांभी वहण प्रिथी ऽाभौ पतिसाहै। —गु रू. बं.

वेगडियौ—१ देखो 'बेगड़' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'वेगड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

वेगडी—देखो 'वेगड़ी' (रू. भे)

वेगडौ—१ देखो 'बेगड़' (रू. भे)

२ देखो 'दोगळौ' (रू. भे.)

३ देखो बेगड़ौ' (रू. भे.)

उ०—वाजिया **वेगडा**, व्रिक्ख भाजै थडा। ऊजडै सङ्झडा, धूज प्रिथ्थी पुडा। —गु. रू. बं.

वेगतंत-क्रि. वि—तत्काल, शीघ्र, तुरन्त।

उ०—चौत मांज 'करनला' कर विचार; 'लाखण' रै नांही पुत्र लार। सुब सुदा दीस्ट जोयौ सगत्त, तांहां उठचौ लाखण **वेगतंत**।

—रांमदांन लाळस

वेगम-सं. पु.—१ वह स्थान जहां पर कोई नहीं जा सके, अगम्य स्थान।

उ०—१ सुख सागर की सेन वताई; मेरा अंतर जांण रया। लगन मगन सतगुरु कर दीना, **वेगम** देस गया।

—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ **वेगम** का जांणत कौन बजारा, वाही सहर की मोय बतावै। सौ सत् गुरु हमारा। —स्रीहरिरांमजी महाराज

२ देखो 'बेगम' (रू. भे.)

उ०—१ पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै संभाळ, **वेगमां** धमै पड़दै विचाळ। —वि. सं.

उ०—२ हरीया परणी पीव सूं, खेलै अंग लगाय। दूजी **वेगम** देख करि, आवै ज्यू उठि जाय। —अनुभववांणी

उ०—३ दळ दिली कळळ दरोळ, चढि **वेगमां** चख-डोळ। तिण वार दळ सुरतांण, खळ भळै इम खुरमांण। —सू. प्र.

उ०—४ पाटवी हेळवी **वेगमै** पैलकै, तैं समै अैलकै लीध टाळा। पागती 'दलौ' नै 'रतन' परणीजतां, वाट जोती रही 'गजन' वाळा।

—महाराजा जसवंतसिंहजी रौ गीत

वेगमी—देखो बेगमी' (रू. भे.)

वेगर—देखो 'बेगर' (रू. भे.)

वेगरज—देखो 'बेगरज' (रू. भे.)

वेगरजी—देखो 'बेगरजी' (रू. भे.)

वेगरणी-वि.—मध्यस्थ।

उ०—ब्या'रा **वेगरणी**, बिचावला, रुळपट, लपचेडू अर जार भायेला भोंदू पटावै तथा खूब खावै-पीवै है। मोफतिया इमा मौकां मौज-मजा ही किया करै है। —दसदोख

रू. भे. वैगरणी।

वेगरणौ-सं पु.—मध्यस्थता।

वि०—मध्यस्थ।

रू. भे.—वैगरणौ।

वेगळ—देखो 'बेगळ' (रू. भे)

वेगळि वेगलि. वेगळी, वेगली, वेगळु, वेगलु, वेगळौ, वेगलौ—क्रि. वि०—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—१ अकस्मात् धंध्ररि पडिवा लागी; एतलनइं नालिनी **वेगळि** भागी, वस्तु चावणी कीजइं, लहरइं सिढ भीजइं, एकै आपणी वस्तु तिवारइं अरद्धमूलि दीजइं. अनेरै लीभीए तिवारइं तै वस्तु लीजइं सार गांठडी सुग्रहीत कीजइं,.........। —व. स.

उ०—२ राजद्वार कोठार, जीन-सालां काढीजै, जरद जरद्दी घडै लोह लोहै कूटीजै। वेनांणी **वेगळा**, वाढ घालै केवांणा, कूंत वांण कीजति अणी तीखा खुरसांणां। —गु. रू. बं.

उ०—३ वरहास दोड़ै वेगळा, किरि खडै नभ उर मंडळा। हुइ हमम धम धम है-खुरां, वाजंत धम-धम पाखरां। —गु. रू. बं.

२ दूर।

उ०—१ वेगं वाळचा हथ रे, रे रथ सुं रथ वांध्यौ रळी। गज थाट मोगर वहइ उवट, वैंद्रवा थई वेंगळी। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ व्याधि जरा रहि वेगली, अलीग्र लक्षण होइ जेह। वेदि जे विधि विस्तरी, सविकौ पालइ तेह। —मा. कां. प्र.

उ०—३ आहेडीइ मन फेरव्यू, ग्रिहेवा लागु हाथ रे। रेहि रे पापी नूंह वेगलु, नल छि माहारु नाथ रे। —नळाख्यांन

उ०—४ वेलि विहूणां पत्र परि, हूं हूइ छउ हीण। विटलः रहि रे वेगलु, आगलि थिका अमींण। —मा. कां. प्र.

उ०—५ किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, आहार ऊपरि करइ अनास्था। सरव सिंगार, मांनि अंगार। तिणइ अबला (अंतरगत) फूला कीधा वेगला। चंद तपइ पांन, थयां विखवांन। —रा. सा. सं.

वेगवंत, वेगवांन—वि. [स. वेगवान्] वेगपूर्वक चलने वाला, तेज चलने वाला।

उ०—घोड़ा छै सु महा वेगवंत छै। रथ छै सु महा अंतरिख वहै छै। चंदांणणि कहतां रुखमणीजी के साथि ए चालिया। सु किसा दीसै छै। जिसा अयोध्या का वासी वैंकुंठ तैं। —वेलि टी.

सं. पु.—१ विष्णु।

२ दैत्य जो कृष्ण पुत्र साम्ब के द्वारा मारा गया था।

३ कश्यप एवं दनु का पुत्र एक दानव।

४ एक नाग।

रू. भे.—वेगवती।

वेगवाहिनी—सं. स्त्री. [सं.] १ गंगा नदी का एक नाम। (२) कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत) (३) एक प्राचीन नदी (पुराण)

वेगसर—सं. पु.—१ तेज गति से चलने वाला घोड़ा।

२ देखो 'बेगसर' (रू. भे.)

वेगांनगी—देखो 'बेगांनगी' (रू. भे.)

वेगांनौ—देखो 'बेगांनौ' (रू. भे.)

वेगागळ, वेगागळौ—१ घोड़े के गले में बांधने का चमड़े या सूत का तस्मा या रस्सा।

२ घोड़ा, अश्व। (ह. नां. मा.)

उ०—ऊपडि फौज घटा आडंबर, रज धूळ हि छायौ रातंबर। चडिया घडै धडालां चंचळ, वाजै नास वहै वेगागळ। —गु. रू. बं.

वि.—तेज गति से चलने वाला, अति चंचल।

उ०—सिणगारै सरब हेम में साकति, गळै गउजगाह बंध ए। वेगागळ वाजराज वाहण या, दीपत सरळ कध ए। —गु. रू. बं.

क्रि. वि.—तेज गति से, तीव्रगति से।

उ०—१ कमस्सै कंठळा, आंकुसां वीजळा, चमक्कै चप्पळा, वैरकां वंबळा। ढैंच ढालव्वळा, असिस ऊतांमळा, वहै वेगागळा, वाज वाहै नळा। —गु. रू. बं.

उ०—२ अन्नूप रूप चित्रांम अंग. वेगागळ थळ नाचै विडंग। अदभूत पराक्रम गुण अछेह, ऊंचास कना सपतास अेह। —गु. रू. बं.

रू. भे.—वेगागळ, वेगाळ, वेगाळौ, वेंगागळ, वैंगागळ, वैंगागळौ, वैंगाळ, वैंगाळौ।

वेगार—देखौ 'वेगार' (रू. भे.)

उ०—आज री सिझ्या तौ घरवाळा नै ओ कांम संभळाय देणौ हौ। थारै गियां पछै तौ सेवट आं लोगां नै ई अै सगळा कांम करणा है। महारांणी व्हैतां थकां ई इत्ता दिन घरवाळां री धणी ई वेगार काढी। —फुलवाड़ी

वेगारी—देखो 'वेगारी' (रू. भे.)

वेगाळ, वेगाळौ—वि०—१ तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी, शीघ्रगामी।

उ०—१ कळ चाळ नित्र छाताळ कंदळ भीच काळ भुजाळ, सुंडाळ दरगह सावता वेगाळ खेंग वडाळ। किरमाळ बळ रिणताळ केता जीपगा जमजाळ। —पीर आसियौ

उ०—२ चमराळा व्है चूर, वेगाळा तेजी वडा। पड़ंतां घर भेळा पड़ै, सर गोळा नर सूर। —र. वचनिका

२ जल्दबाज, उतावला।

३ तेज वाला, तेजस्वी।

क्रि० वि०—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—आयै थह उजवाळ, कंवरां गुर मिसलत करै। वीरम दिस वेगाळ, जद लिखिया कागळ 'जगै'। —गो. रू.

२ देखो 'वेगागळ' (रू. भे.)

उ०—१ वहै वेगाळ उरां उण वार, धड़ां चढ धिक्क सरां धूंकार। सभ्भ रुंडमाळ सिभू सिरताज, विचै दळ सुर हिलोहळ वाज। —गो. रू.

उ०—२ धडहडै सात-पुडि धूजि धम-हम धरा, डंब औघूळ अंबर चडै डंबरा। वावंता नास वेगाळ तेजी वहै, गाहटां गोम पाहाड पाए गहै। —गु. रू. बं.

उ०—३ गाळै मांण कायरां सोकिया तीर बांण गोळा, गजां कंध ढाळै पांण तोकिया तेगाळ। भांण रथां रोकिया गैणाग खेल रीधा भाळै, 'गीधा' वाळै सत्रां घांण भोकिया बेगाळ।
—जालमसिंह चांपावत री गीत

रू. भे.—वैगाळ, वैगाळौ।

बेगावेगि—क्रि० वि०—शीघ्र, जल्दी।

उ०—चींतवियउ चहवांणि, जउहर की मांडउ जुगति। हव हुइ-स्यां हरपुर दिसा, बेगावेगि विहांणि। —श्र. वचनिका

बेगिनी—सं. स्त्री. [सं.] एक नदी का नाम।

बेगुना, बेगुनाह—देखो 'बेगुनाह, (रू. भे.)

बेगेरौ—देखो 'वेगौ' (रू. भे.)

उ०—पंथी एक संदेसड़ौ, लग ढोलै पहुंचाइ। जोवन जावै प्राहुंणौ, बेगेरौ घर आइ। —ढो. मा.

बेगो—वि० [स्त्री. वेगी] १ शीघ्र,जल्दी, अविलम्ब।

उ०—१ काळा काळा केस भंवर, म्हारी आटी कांमणगारी रे। आधी रा अमलां मैं, म्हारी सेज अलूंणी रे, बेगा बावड़ज्यौ। हां रे सासू रा जाया, वेगा बावड़ज्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ खिसकरण वाळा मिनखां रा पग हा जठै ई चिपग्या। मासी अणूंती जोर सूं हंसी। बोली—थांनै म्हारी बोली बिचै ई कुत्तां री बोली वेगी समझ मैं आवै। आवै जकी ई चोखी।
—फुलवाडी

उ०—३ बेगा दूत दिलीपतवाळा, आवै गूजर खंड उताळा। चाहै दुरग तकूं तजि ताळा, समपै धन मणि मुकत विसाळा। —रा. रू.

उ०—४ ताहरां रांणै जांन करि परणीजण नुं चालियौ। ताहरां वगड़ावतां नुं आदमी मेल्हिया जु रांणैजी परणीजण नुं चढिया छै। थे वेगा आवौ। —देवजी बगडावत री बात

रू. भे.—बेगौ, वेगउ, वेगेरौ, वेघ, वेघौ, वैगौ।

बेघ, बेघौ—१ देखो 'वेग' (रू. भे.)

२ देखो 'वेगौ' (रू. भे.)

उ०—१ पोलि उघाड़ी गढ तणी; सरल सभावै रांणी रे। मूंक्या तेडण मंत्रवी, वेघ पधारौ सुलतांनो रे। —प. च. चौ.

उ०—२ महिर करी हिव मोहि, बीदा करौ बेघौ घणौ जी। आ-लिम साथै होय, पोलि लगै पहुँचावियौ जी। —प. च. चौ

उ०—३ तै ऊपरि ए पदमणी, आइ आपां पासी। स्युं करिवौ सूझौ मतौ, वेघौ कहौ विमासी। —प. च. चौ.

उ०—४ बादसाह हूंत कह्यौ छोड जे इणां नै वेघा, ऐ न छंडै हिंदू धरम विनादी आफेक। कह्यौ साह 'भांण' नंद पातवां छुडावौ किसां? एक एक प्रती चहां माथौ एक एक।
—सक्तावत गोकळदास (सावर) री गीत

बेड़—१ देखो 'वीहड़' (रू. भे.)

उ०—त्यां मांहै ऊगौ मुदौ बोल्यौ, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाध्या छौ। राजा हस्यौ। तरै ऊगै कह्यौ, महाराज, जाट गधेड़ा की तरह छै, बेड़ का रहिण वाळा छां, बोलण की कू ही जांणां छां नहीं, माफ करिज्यौ। —कहवाट सरवहियौ की बात

२ देखो 'बेड़' (रू. भे.)

३ देखो 'बेड़ो' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'बैड़' (रू. भे.)

५ देखो 'वेड' (रू. भे.)

उ०—बाग वणाया वेड़ मैं, कांटा आक कटाय। सीसम आंवा तर सघण लाखां दिया लगाय। —चिमनदांन रतनू

६ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ बेड़ परायण इसी वचाड, मही सरायण सुणज्यौ मूठ। निज नारायण गुरु निवाजै, फजर गइ तारायण फूठ।
—बांकीदास वीठू

उ०—२ वांट प्रसाद वळौवळ वागा, त्रसना भागी लोभ तणी। चेलां गुरां बेड़ री चरचा, साधां सौ सौ कोस सुणी।
—बांकीदास वीठू

बेड़की—देखो 'बेड़की' (रू भे.)

२ देखो 'बैड़' (अल्पा., रू. भे.)

बेड़णी—देखो 'बेड़णी'।

बेड़णौ, बेड़बौ—१ देखो 'बेडणौ, बेड़बौ' (रू. भे.)

उ०—वळदेव महाबळ तासु भुजाबळि, पिड़ि पहरंतै नवी परि। विजड़ां मुहै वेड़तै बळभद्र, सिरां पुज कीधा समरि। —वेलि

२ देखो वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

बेड़णहार, हारौ (हारी), **बेड़णियौ**—वि०।

बेड़िओड़ौ, बेड़ियोड़ौ, बेड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेड़ीजणौ, बेड़ीजबौ—कर्म वा०।

बेड़लौ—१ देखो 'बैड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेढलौ' (रू. भे.)

बेड़ाफोड़—देखो 'बेड़ाफोड़' (रू. भे.)

बेड़ियोड़ौ—१ देखो 'बेड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेड़ियोड़ी)

बेड़ी—१ देखो 'बेड़ी' (रू. भे.)

२ देखो 'वेड़ो' (वि. स्त्री.)

वेड़ूंकौ, वेड़ूंखौ—देखो 'वेड़ूंखौ' (रू. भे.)

वेड़ौ—देखो 'वेड़ौ' (रू. भे.)

उ०—वैकुंठ **वेड़ौ** विसन ढोयौ, सचियार साल्हियां लेविसी। पारगिरांय पुहंचाय भांभराय, वास निहचळ देविसी। —ऊदौजी नैण

वेच—देखो 'वे'ज' (रू. भे.)

वेचकौ—देखो 'वे'ज' (अल्पा, रू. भे.)

वेचणौ, वेचबौ—क्रि. स —१ खर्च करना, व्यय करना।

उ०—विद्या लेवांनु बीजु भेद, सांभलु प्रांणी! मांणसिउ खेद। सुत भणाव्यांनु जु खप होय, तु धन **वेचीजइ** अति जोइ।

—नळदवदंती रास

२ देखो 'वेचणौ, वेचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पांच तत महा तत रहै पास, संभारै तनां प्रभु सास सास। गुण तीन दास पतिसाह गाइ, **वेचिया** प्रभु थारा विकाइ।

—पी. ग्रं.

उ०—२ **वेचै** मत तूं वेगड़ौ, चित नांणा री चाह। वळै न मिळसी वेगड़ौ. नांणा दीधां नाह। —बां. दा.

उ०—३ आदू अखइ मोहतौ दूहौ कहै; राजा. **वेचूं** नहीं तौ ग्रोखौ खांण मिळूं। पण घोड़ौ उराकी छै। रवियांण चंद, ऐराक बीजं वड़ बीज, प्रात गाज, सापुरस वेण, पैहिली तौ लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहूल हमीर री बात

उ०—४ मन में धरता मरट घरट जिम भूखे घूमैं, मेलै घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमें। बेटा नै मा बाप **वेचि** द्यै जीमण वेइ रूलतां रिगतां रांक करे वेललाटा केई। —ध. व. ग्रं.

३ देखो 'वेंचणौ, वेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अथवा सालि दालि घ्रत पक्वांन्नादिक अथवा देवद्रव्य वस्त्रादिक जइ घणाइं मूलिइं आपणाइ घरि वावरइ। अनेराइ स्रावक ल्हइं दिइ। अथ महात्मा दरसनी थिकु देवद्रव्य वधारी प्रासादादिकै **वेचइं**। —षष्टीशतक

उ०—२ गुरु एकइ जि अनइ स्रावक एकइ जि छइ। पुण चैत्य देहरा जूआं जूआं अनेरा अनेरा नां कराव्यां छइ। तिहां जे द्रव्य छइ तै परस्परिइंन वेचइं। पेला देहरा नु उलिइ देहरइ, ओल्या देहरांनू पेलइ देहरइ न वेचइ। मनि भेद आंणइ। —षष्टीशतक

उ०—३ ·········तै राजा जे राज्य पालइ, तै अमात्य जे न्याय दिखाडइ, तै कापड जे पखालिउं सूकइ, तैं कारचा [जै] वुद्धि सीभइं तै तुरंगम जे वेगि पूजइ, तै द्रव्य जे सत्पात्रि **वेचीइ**। —व. स.

उ०—४·········उन्मारगि न चालइं, गुरु उपदेस झालइं, घरमतत्व न हालइं, नवै क्षेत्रै **वेचइ** धन, जिसिउं बावनुं चंदन इस्या सीतल मन, इस्या कहीए स्वजन,········· । —व स.

वेचणहार' हारौ (हारी), वेचणियौ—वि०।

वेचिओड़ौ, वेचियोड़ौ, वेच्योडौ—भू० का० कृ०।

वेचीजणौ, वेचीजबौ—कर्म वा०।

वेचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

वेचरा, वेचराज, वेचराजी,वेचराय—देखो 'वहचराय' (रू. भे.)

उ०—**वेचराजी** रा चरणां कूकड़ा हैं ज्यां नूं मिन्नी न मारै।

—बां. दा. ख्यात

वेचांण—देखो 'वेचांण' (रू. भे.)

वेचाक, वेचाख—देखो 'वेचाक' (रू. भे.)

उ०—रईयत सरब गई। धरती हेमा आगै वस सगै नहीं। कितराहेक वरस यूंही धोंकळ रह्यौ। हिवै रावळ मालोजी कुटेवा पड़िया। यूं करतां घट घणौ **वेचाक** हुवौ। —नैणसी

वेचाड़णौ, वेचाड़बौ—देखो 'वेचाणौ, वेचाबौ' (रू. भे.)

वेचाड़णहार, हारौ (हारी), वेचाड़णियौ—वि०।

वेचाड़िओड़ौ, वेचाड़ियोडौ, वेचाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचाड़ीजणौ, वेचाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वेचाड़ियोड़ौ—देखो 'वेचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेचाड़ियोड़ी)

वेचाणौ, वेचाबौ—देखो 'वेचाणौ, वेचाबौ, (रू. भे.)

वेचाणहार, हारौ (हारी), वेचाणियौ—वि०।

वेचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचाईजणौ, वेचाईजबौ—कर्म वा०।

वेचायोड़ौ—देखो 'वेचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेचायोड़ी)

वेचारौ—देखो 'वेचारौ' (रू. भे.)

वेचाळ, वेचाल—वि०—जिसका चाल चलन ठीक नहीं हो, **बदचलन**।

वेचावणौ, वेचावबौ—देखो 'वेचाणौ, वेचाबौ' (रू. भे.)

उ०—तत्थ तेहै विविध चैत्यें जं जे जिनद्रव्य ऊपजइ तै जिनद्रव्य देवद्रव्य परस्परइं एक चैत्यनउं द्रव्य बीजइ चैत्थि जे सुगुरु स्रावक न **वेचावइं**। षष्टीशतक

वेचावणहार, हारौ (हारी), वेचावणियौ—वि०।

वेचाविओड़ौ, वेचावियोड़ौ, वेचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेचावीजणौ, वेचावीजबौ—कर्म वा०।

वेचावियोड़ौ—देखो 'वेचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेचावियोड़ी)

वेचियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ।

२ देखो 'वेचियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेचियोड़ौ (रू भे.)
(स्त्री. वेचियोड़ी)

वेचिराग—देखो 'बेचिराग' (रू. भे.)

वेचेत, वेचेतै, वेचैतै—देखो 'बेचेत' (रू. भे.)

वेचैन—देखो 'बेचैन' (रू. भे.)

वेचैनी—देखो 'बेचैनी' (रू. भे.)

वेचौ–सं. पु.—गाय भेंस का दूध जमाया नहीं जाकर देवताओं को अर्पण करने की क्रिया।

वि० वि०—गाय ब्याहने के बाद कुछ दिनों तक उस गाय का दूध जमाने योग्य नहीं होता है। सात आठ दिनों के बाद जब दूध जमाने योग्य हो जाता है तब गाय का सूर्य पूजा जाता है और उस दिन गाय का सम्पूर्ण दूध पित्तरों को चढ़ा कर बाल-बच्चों को पिला दिया जाता है।

वेच्छाळ, वेच्छाल–सं. पु.—एक प्रकार का कंद विशेष।
उ० – सिगमंडी सींदूरीया, तिहां तुंबिणि पालि। सहसमुखी संजीवनी, वच्छनाग वेच्छाल। —मा. कां. प्र.

वेछराज, वेछराय—देखो 'बहुचराय' (रू. भे.)

वेछाड़—देखो 'वैछाड़' (रू. भे.)

उ०—१ सहस तेर' असवार, सीह सादूळ समोसर। वीस गयंद वेछाड़, निहंस पावस गिर नीझर। —सू. प्र.

उ०—२ बैसारै चख बोळ, छकै आया वेछाड़ां। चढ सयद किर चढै, प्रचंड कंठीर पहाड़ां। —सू. प्र.

उ०—३ आका रीठ कुरीठ, वयंड छोडै वेछाड़ां। इसा दीठ अवनाड़, पीठ लै हलै पहाड़ां। —सू. प्र.

वे'ज, वे'जकौ—देखो 'वे'ज' (रू. भे.)

वेजड़—देखो 'बेजड़' (रू. भे.)

वेजबांन—देखो 'बेजबांन' (रू. भे.)

वेजवाल–वि. [फा. बे+अ. जवाल=पतन] जिसका पतन न हो, नष्ट नहीं होने वाला।

उ०—ईसवर निरंकुस है, चाहै स करै। खुदा इरादौ करै अेक चीज को पैदा करै असबाब उसको। खुदा ताला री पातसाही वेजवाल है। अेतजादुल मुलक। —बां. दा. ख्यात

वेजांन—देखो 'बेजांन' (रू. भे.)

वेजा–सं. पु.—१ घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें घोड़े के अगले पैर या चारों पैर पीड़ित रहते हों। (शा. हो.)
२ देखो 'बेजा' (रू. भे.)

वेजागर—देखो 'बेजारा'।

वेजातांणा–सं. पु.—ताना बाना।

उ०—कीडी कुंजर आद दै, सब जीन जडांणा, तु निराकार आकार मझ सरबंग समांणा। जेथी तेथी पेखियै, तुं वेजातांणा, तुही एक तुं, हु ऐता जांणा। —केसोदास गाडण

वेजापता, वेजाब्ता—देखो 'बेजाब्ता' (रू. भे.)

वेजारा—देखो 'बेजारा' (रू. भे.)

वेजारौ–वि०—१ चतुर, होशियार।
२ देखो 'बेजारौ' (रू. भे.)

उ०—आळा गूंथण रौ खांमची ऐड़ौ कै नांमी सूं नांमी वेजारा नै ई मात करै। हाथ भर लांबौ अर तीखौ आळौ। फूठरौ अर झीणौ गूंथ्योड़ौ। मांय दोय खण। —फुलवाड़ी

वेजु, वेजू—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

वेजोड़—देखो 'बेजोड़' (रू. भे.)

वेजौ—देखो 'बेजौ' (रू. भे.)

वेज्ज—देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

वेज्यास—देखो 'बेज्यास' (रू. भे.)

उ०—दिसापाळ भूपाळ त्यां छूट द्रढ्ढं, गिरौं ओट सेवा तणी कोट गढ्ढं। गजै मेघ ज्यौं वेग नीसांण गाजै, भयां आस वेज्यास मैंवास भाजै। —रा. रू.

वेझ, वे'झ, वेझकौ—देखो 'बे'ज' (रू. भे.)

उ०—इसै मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतौ, सौ महाडोळ री पाखती आई लागौ। सांम्हौ जोवतौ वहै। महाडोळ री खोळी रै वैझ कर भरमल देखै छै। कोस एक पुहचाय सारौ जाब्तौ दै पाछौ घिरियौ। सौ घिर घिर पाछौ देखै। —कुंवरसी सांखलारी वारता

वेझड़—देखो 'बेजड़' (रू. भे.]

वेझु—देखो 'बेझौ' (रू. भे.)

उ०—१ सक्ति अपूरव सइज ठहरांणी, दुगति दूर हरांणी। वांणी तेहिज वेझुं वेधइ, कीरति तास गवांणी रे। —वि. कु.

उ०—२ तरस्या जाई गज तुरी. परिहरि कां प्रासाद। वेझुं विण वेधिउं रहइ, उत्तर एक सवाद। —मा. कां. प्र.

वेट—१ देखो 'बेठ' (रू. भे.)
२ देखो 'बेट' (रू. भे.)

वेटीजणौ, वेटीजबौ–क्रि. स.—बकरी का गर्भ धारण करना।

वेटीजियोड़ी–सं. स्त्री.—गर्भ धारण की हुई बकरी।

वेटेरिनरी अस्पताल, वेटेरिनरी सफाखांनौ–सं. पु.—पशुओं का चिकित्सालय।

वेठ–सं. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ देखो 'वेठ' (रू. भे.)

उ०—१ जांगक डोकर खोलड़ै, जिम वाघ वियायौ, वाड़ौ दीधौ वेठ मां, घरतार गमायौ। क्या तेरा ग्रांगण किया, हमका धन भाएं, ग्राध दिया हम वीरमा, सब धरती माएं। —वी. मा.

उ०—२ वसती री हुवै बांभ वेठ नह काढणी, कांमेती उगाह मूंड में हुवै घणी। बाकी किण रौ वीह खुसी व्हे खेलणा, एता दै किरतार फेर नह बोलणा। —ग्रग्यात

३ देखो 'वेट' (रू. भे.)

वेठऊड़ौ-वि०—बेगार का कार्य करने वाला।

उ०—बेगार वेठऊड़ा हासल, पांन चराई न देवै। चवरी माफ चहुँ देस मैं, जको विस्णोई नहीं देवै। —साहबरांमजी

वेठणौ, वेठबौ-क्रि० स०—१ लपेटना।

२ घेरा डालना, घेरना।

३ निभाना।

उ०—१ काछेल वेध वढिया कलह, ग्रहण पाल पूरी गरत। वेठिया हुता 'बूडे' विवध, ग्राया जे 'पाबू' ग्ररथ। —पा. प्र.

उ०—२ साभ मडीजे साकुरां, कमरां कसवाई, ग्राफूगाळै ऊंदा ग्रंगां ग्रड़पाई। बाथोटै सह वेलियां, मनवार कराई, विध विध थांनै वेठिया, म्हे खूद खिमाई। —वी. मा.

४ सहन करना, सहना।

उ०—सोधतां गिली ग्रगिग्ररि, ग्राहेंडीइ काढी। घिरि राखण मन तेणि कीधूं, वेदन वेठी गाढी। —नळाख्यांन

५ बेगार निकालना, बेगार का कार्य करना।

६ पालन-पोषण करना।

उ०—१ वीरमदै रौ छोटौ भाई भीमसींघ किसडौ हेक सिरदार। वैंडा घोडां रजपुतां रौ वेठणहार। रजपुतवट रूपगां रौ रिझवार। दातार जूझार। भाइजी रै सांमौ ग्रावण री तयारी कीनी। —पनां

उ०—२ वेठै बेटां जेम वीदगां, करै मीढ भड ग्रवर कसौ। चारण वरण तणै राव चांपा, जग सर तारण तरण जसौ। —मेगराज ग्राढौ

वेठणहार, हारौ (हारी), **वेठणियौ**—वि०।

वेठिग्रोड़ौ, वेठियोड़ौ, वेठचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेठीजणौ, वेठीजबौ—कर्म वा०।

वेठन-सं. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ लपेटने का वस्त्र, लपेटन।

वेठियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ लपेटा हुग्रा. २ घेरा डाला हुग्रा, घेरा हुग्रा. ३ निभाया हुग्रा. ४ बेगार निकाला हुग्रा, बेगार का कार्य किया हुग्रा. ५ पालन-पोषण किया हुग्रा. ६ सहा हुग्रा, सहन किया हुग्रा।

(स्त्री. वेठियोड़ी)

वेठियौ—देखो 'वेठियौ' (रू. भे.)

वेड-सं. पु.—१ वन, जंगल।

उ०—सगतां री लीनी सुरह, बीच चरंती वेड। कर ग्रायौ बूढै कह्यौ, खीची ठाकुर खेड। —पा. प्र.

२ कटीले पदार्थों (झाड़ियों) का बना हुग्रा मकान का ग्रहाता, घेरा।

उ०—सरसा दळ सायर स क्रमतै, मळवा छळै मांडियौ मेड। मार्भो मेर गयौ दळ मुरड़ै, वड रहियौ कांटां री वेड। —दूदौ ग्रासियौ

३ सीमा, ग्राखिरी छोर।

४ एक प्रकार का चन्दन विशेष।

५ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

६ देखो 'वैड़' (रू. भे.)

रू. भे.—वेड़।

वे'ड, वे'डकी—देखो 'वैड़' (रू. भे.)

वेडण-वि०—१ संहार करने वाला, नाश करने वाला।

२ तोड़ने वाला, विच्छेदन करने वाला, काटने वाला।

उ०—हूंतौ जांगू सगत, गढां जड मूळ उखेलण। हूंतौ जांगू सगत वडां ग्रसुरां सिर वेडण। —पा. प्र.

रू. भे.—वेढण।

वेडणौ, वेडबौ—१ देखो 'वेडणौ, वेड़बौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

वेडणहार, हारौ (हारी), **वेडणियौ**—वि०।

वेडिग्रोड़ौ, वेडियोड़ौ, वेडचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेडीजणौ, वेडीजबौ—कर्म वा०।

वेडर-वि०—निशंक, निर्भय।

उ०—गिण छप्पय चा वरण लघु, त्यां मज्झे दळ टाळ। ग्राधा कीधां ऊबरै, वेडर नांम बताळ। —र. ज. प्र.

वेडली—देखो 'वेड़ी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वेडलौ—देखो 'वेढलौ' (रू. भे.)

वेडांणी-वि०—१ दुष्ट, नीच।

२ देखो 'विडांणी' (पु.)

३ देखो 'वेदांणी' (रू. भे.)

वेडाक—१ देखो 'वेंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ उ तोलै ऐराक, वोळण खळ उबांबरौ। वीरमदे वेडाक, मेळ वचन नह मांनिया। —गो. रू.

उ०—२ चौड़े खळ धूहड़ लाखां चाक, वीरोळै लाख खळां वेडाक। खत्री गुर वीरम धूणै खाग, वीछूटो जांणय सांकळ वाग। —गो. रू.

वेडागर, वेडागार—देखो 'वेढीगारौ' (मह., रू. भे.)

वेडागारी—देखो 'वेढीगारौ' (पु.) (रू. भे.)

वेडागारौ—देखो 'बेढीगारौ' (रू. भे.)

वेडागारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

वेडाय—सं. पु.—१ सूवर, शूकर।

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

वेडारोटी—देखो 'वेढारोटी' (रू. भे.)

वेडाळ—देखो 'बेडाळ' (रू. भे.)

वेडावतौ—वि०—१ जबरदस्त, जोरदार।

२ वीर, बहादुर।

वेडाहळ—सं. पु.—मुसलमान, यवन।

वेडि, वेडिइं—सं. पु.—१ बाग, बगीचा।

२ वन, जंगल।

उ०—१ नयण लां म्रग नी उपमा किसी, हईइ हारिउं वेडि जई वसी। चरण चारिहिं हंस हरावती, वचनि जीणइं जीती भारती। —सालिसूरि

उ०—२ सूयारडइ हूउ दाघ देवा, गिउ वेगि वेडिइं पुण कास्ट लेवा। द्रस्टिइं न दीसइं दिसि धलि रोली, तु आंबिली भीमिइं भडिश्र मूली। —सालिसूरि

वि०—१ जंगल का, जंगली।

उ०—जिहां सिवा तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट। लांघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, वेडि विलाउ घुरकइ। —सभा

२ देखो 'वेडी' (रू. भे.)

वेडियोड़ौ—१ देखो 'बेड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेडियोड़ी)

वेडियौ—सं. पु.—जट (बकरी या ऊंट के बाल) को कातने के निमित्त उसकी बनाई हुई गेंडूरी नुमा पूनी।

वेडी—सं. स्त्री.—बकरी या ऊंट के बालों को साफ कर कातने के निमित्त वृताकार बनाया गई गेंडुरीनुमा पुनी।

वि०—१ मस्त, मत्त।

२ कळहप्रिय, झगड़ालू।

३ वीर, बहादुर।

४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—'केहरि' वेडी (वै) घणूं, मज्जीठी मुहराइ। 'करन' 'कंमौ' एकै मतै, बै ऊभा पडगाहि। —सू. रू. ब.

५ देखो 'वेडि' (रू. भे.)

उ०—बेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइ। रीछ सांचरइ, वीरूतणा यूथ विस्तरइ। वेडी रा सांड त्राड्कइ, ठांमि ठांमि वन रा भड़सा ढूकइ। —सभा

वेडीमणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू. भे.)

उ०—ऊगती मोसरां दहायक अभावां, सीत वरसिया क गात रा संभ। मांन रा वाळिया वचन वेडीमणा, खळां गाळिया गरब गजखभ। —राजुरांम बारहट

वेडीवाहौ—देखो 'बेड़ीवाहौ' (रू. भे.)

वेडूर—सं. पु. [सं. वैदूर्य] धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न या बहूमूल्य पत्थर जिसे लहसुनिया भी कहते हैं।

वेडौ—सं. पु.—खड्डा, गड्डा।

उ०—१ सु औ रोज नवी-नवी जायगा बरछी खोहै सु आंगणां मैं वेडा-वेडा हुय रह्या। तांहरां रांणी एक दिन सात तवा लोह रा, सवा-सवा मण रौ एक-एक तवौ, कराय अर जठै सेतरांम आय बैसतो तठै गचमें तवा गडाया। ऊपर विछावणा विछाया। —नैणसी

उ०—२ ताहरां सेतरांम कही—महाराज! हूं बैठतौ तठै बरछी गडती, सु दीसै छै आज कोई म्हारी मसकरी कीवी छ। तद राजा विछावण परहा कराय देखै तो कासूं? सारै ही वेडा-वेडा छै। —नैणसी

वि.—मस्त, मत्त।

वेडौळ—देखो 'बेडौळ' (रू. भे.)

वेढंग—देखो 'बेढंग' (रू. भे.)

वेढंगापण, वेढंगापणौ—देखो 'बेढंगापणौ' (रू. भे.)

वेढंगौ—देखो 'बेढंगौ' (रू. भे.)

वेढ—सं. स्त्री. [सं. वेध] १ युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

उ०—१ वेढ वडाई राजियां, सूरौ दळ सिणगार। मेल धमंका सिर सहै, आवै जब इकतार। —अनुभववांणी

उ०—२ वळ जोधांण तणी दिस वळिया, भू लूटण टळिया सुज भिळिया। नाहरखांन नांदिया मांहै, बेढ कमळ लीधौ खग वाहै। —रा. रू.

उ०—३ इर थक्का वळवार विढण क्यूं वीसरै, लग्गा लोह लकीर नमंता नीसरै। वाव फरक्कै वेढ वलै नह वापरै, पांण चढियां किलम जिकै 'परताप' रे। —किसोरदांन बारहठ

उ०—४ रावळ भोजदे विजैराव लांजा री वेटी लूद्रवै धणी हुवौ। निपट वडौ रजपूत हुवौ। कहै छै वरसां १५ तथा १६ री ऊमर मांहै पचास वेढ जीती हुती। —नैणसी

२ घर, गृह, धाम।

३ युद्धस्थल, रणभूमि।

उ०—वगसर भग्गा वेढ तज, मुंण वग्गा नीसांण। ताप उनग्गा तेग री, अर डग्गा अारांण। —किसोरदांन बारहठ

४ योद्धा, वीर। (डिं. नां. मा.)

५ एक प्रकार का आभूषण विशेष। (व. स.)

उ०—वींटी वेढ गांठोडा, वलि दीधा घणा घोड़ा। स्रावक स्राविका आवइ, मोती थालें वधावइ। —ऐ. जै. का. सं.

६ देखो 'वेड' (रू. भे.)

रू. भे.—बीढ, बेढ, बेढि, बेढी, बैढ, वेड़, वेढण, वेढि, वेढी, वैड, वैढ।

अल्पा.,—वेढड़ी।

वेढक-सं. पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—१ मिरचै 'मुहकम' मारियौ, कर छळ मिळ अप्रकास। वेढक डेरै वज्जियै, पड़िया सुहड पचास। —रा. रू.

उ०—२ सूरा 'अडूबाळ' सुजड हथ 'सांडा', 'जैता' जंगमल जैत्राई। कांधिल कळिमूळ सदा कळि चालण वैरा वेढक वरदाई। —गु. रू. वं.

उ०—३ वड रावत जिकै वडा ग्रह वेढक, झडपै अरियण खडग झडं। आया जूहार कुंअर गुर आगळि, भड कमधज लख अवर-भडं। —गु. रू. वं.

वि.—वीर, बहादुर।

उ०—जुध दुरंग दंत चढिया जिता, खित पाड़ै मुगळां खळां। वळ साह डोहि आयौ दुभल वेढक रंगियां वीजळां। —सू. प्र.

२ निशंक, निर्भय।

३ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—ऊगतां भांण 'अगजीत' रा, वेढक भड़ अरिघड़ बना। सांमुहा आया भारथ सभण, एक उतन रा ऊपना। —सू. प्र.

रू. भे.—बेढक, वैढक।

अल्पा.,—वेढकौ, बेढकौ।

वेढकौ—देखो 'वेढक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—'कूंपा' 'रांम' सकज्ज, जैतधारी 'जैतावत'। वाघ फता वेढकां वीरवीराध 'विजावत'। —रा. रू.

वेढगरौ, वेढगारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

उ०—'वखतेस' 'खळां' सिर वेढगरौ, हर कांकण सौ 'अमरेस' हरौ। संग 'रांम' 'रुघे' 'जेसिंह' सही, गज रूप सफै रिम टेक ग्रही। —रा. रू.

वेढड़ी—देखो 'वेढ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वडा पतिसाह करि किलंग सा वेढड़ी, महमहण हमै पिरिणी-जिजै मेवड़ी। आजि रै बांधियौ कडी तरगस अभिगि, प्रिथी रै धिणी ससमाथ चडियौ पविगि। —पी. ग्रं.

वेढण—१ देखो 'वेडण' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

वेढणबाई-सं. स्त्री.—[देश.] व्यर्थ की बातें करने वाली स्त्री।

वेढणौ, वेढबौ—क्रि. स. १—युद्ध करना, संग्राम करना।

२ संहार करना, नाश करना।

३ काटना, विच्छेदन करना।

४ युद्ध में मरना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—तितरइ नाथू डोड डूंगर वागड़ी कहइ छइ—इसउ नहीं हौ ठाकुरे! इसउ कीजइ-गळइ सात सइ साळिग्रांम तुळसी की माळा घातिजइ, अचळेसर का आवास थइ लोहड़उ करतां करतां गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ, जितरा जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा अस्वमेध ज्याग का फळ लीजइ। इणि विधि जीवण वेढिजइ तउ सूरज मंडळ भेदिजइ। —अ. वचनिका

वेढणहार, हारौ (हारी), वेढणियौ—वि०।

वेढिओड़ौ, वेढियोड़ौ, वेढयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेढीजणौ, वेढीजबौ—कर्म वा०।

बेढणौ बेढबौ, बीड़णौ, बीड़बौ, वेड़णौ, वेड़बौ, वेडणौ, वेडबौ, वैडणौ, वैडबौ, वैढणौ, वैढबौ—रू. भे.।

वेढब—देखो 'बेढब' (रू. भे.)

वेढमण—देखो 'वेढीमणौ' (मह., रू. भे.)

वेढमणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू. भे.)

वेढमल, वेढमल्ल-वि०—युद्ध का उस्ताद, युद्ध में निपुण एवं दक्ष योद्धा, वीर।

रू. भे.—बेढमल, बेढमल्ल, बेढीमल, बेढीमल्ल, वेढीमल, वेढीमल्ल, वैढमल, वैढमल्ल, वैढीमल, वैढीमल्ल।

वेढमी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

उ०—............खांड मांडा, पूरण मांडा, कुरकरा मांडा, पत्र-वेटिया मांडा, आकासिआ मांडा, आछा मांडा, खाटउं चूरिमउं,

गुलिउं चूरिमउं, प्रधांन पनोली, रोटी बाटी, ठोठि अंगार करि **वेढमी**, मरूयाडिनी पंचधार लपनसी, सुदलित सुललित वरनारि परीमी। —व. स.

रू. भे.—वेढिमी, वेंढमी।

वेढलौ-सं. पु.—१ स्त्रियों के कान के ऊपरी भाग में पहनने का आभूषण विशेष।

२ कुत्तों के कानों में पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष।

उ०—जिकां री मूडहथ मोहनाळ. हाथ भर नस, वड़ रै पांन जिसा कांन, ताजणासेद पूंछ. नाहरसा पंजा बाघ सी आंख, पातळी लीक जाडै आंठ। इण भांत रा कुत्ता। बनाती पटा, रूपै री भंवरकड़ी रेसमी डोर, कांनां में रूपै सोनै रा **वेढला**, गलै में निजर रा ताइत। —रा. सा. सं.

रू. भे.—वेडलौ वेंढलौ।

वेढमांणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू. भे.)

उ०—विढण नमौ नेठाहू हथवाहा वेढीमणा, रीत सराह दोय राह रौधा। वडा खळ आदरा त्रबंक **वेढांमणा**, करै जुध पाधरा सणंक कीधा। —सेरसिंह रौ गीत

वेडागार, वेढागारी, वेढागारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

वेढारोटी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

वि. वि.—गेहूं के कम आटे के लौंदे को रोटी की तरह बेल कर उस पर गीला-गीला नमकीन पदार्थ फैला दिया जाता है और किनारों को थोड़ा-थोड़ा उलट कर चौकोर बना दिया जाता है। फिर थोड़ी देर सुखा कर तेल अथवा घी में तल दी जाती है।

रू. भे.—बेडारोटी, बेढारोटी, भेडारोटी, भेढारोटी, वेडारोटी।

वेढिंगर, वेढिंगरौ-वि०—१ वीर. वहादूर।

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—बे तरफ भड़ **वेढिंगरा**, जूटा हगामी जंग रा। घस मसक घरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस। —र. रू.

३ देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

वेढि—देखो 'वेढ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ हींदू तुरक पडड पोसाता, नित नित **वेढि** ऊतारइ। नितु ऊठवइ एकमना राउत रोसि चडचा रणि मारइ। —कां. दे. प्र.

उ०—२ गुरुदेव सुमति समापि गुण, भूग्रपतिग्र जेम 'रतन्न' भणं। पित जासु 'महेस' नरेस परं, गढ **वेढि** लिग्रौ जिणि देवगिरं। —र. वचनिका

उ०—३ जई प्रधांनि खांन वीनविया, हींदू **वेढि** करेसइ। खांन भणइ सहूइ सज थाउ, एछवां दाउ देसइ। —कां. दे. प्र.

वेढिमी—देखो 'वेढमी' (रू. भे.)

उ०—हांसा गहुं, काठा गहुं, जालिया गहुं, वाजिया गहुं, वांसिया गहुं, एतलै प्रकारै गहुंना मांडा,. तै किम ? खांडमाडा, पूरणमांडा, आछा मांडा, करकरा मांडा, आकास मांडा, एतली पडसूदीना मांडा। लहचूई पोली, खूबी रोटी, वारू वडां, **वेढिमी**, वडां तौ केहवां छइ ? —व. स.

वेडियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. २. संहार किया हुआ, नाश किया हुआ. ३ काटा हुआ, विच्छेदन किया हुआ. ४ वीरगति प्राप्त।

(स्त्री. वेढियोड़ी)

वेढी—१ देखो 'वेढि' (रू. भे.)

२ देखो वेडी' (रू भे.)

३ देखो 'वेढ' (रू भे.)

वेढीगार, वेढीगारी वेढीगारौ-सं. पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—'वखतौ' अगळी **वेढीगारां**, 'जगपत' हरौ तिलक जूझारां। भाटी जोधां मुहर भुजाळौ, 'सकतौ' 'भगवांनोत' सिघाळौ। —रा. रू.

वि० १ वीर, बहादुर।

उ०—१ मछराळा मूंछाळ, वेहद हद **वेढीगारा**। सुर भग्गा लख वार, प्रथी इक छात्रप सारा। —मा. वचनिका

उ०—२ पाजा लोप सींधू जीउ अराबा व्है अवाजा पूर, मातंगां गराजा घुर जठी साजा मोह। मारहटां सैनह मचायौ ताजा जोस माथै, **वेढीगारै** राजा भोम काजा चकावोह। —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—३ कळहळ काछियां छणकारा कड़ियां, नेड़ौ घुरै नगारौ। आयौ पीव काळ अणचीतौ, 'रांमड़ौ' **वेढीगारौ**। —ठा. रांमसिंघ बिलाड़ा रौ गीत

२ शक्तिशाली; बलशाली।

उ०—१ सांकै नहीं सधीर, दिन उगै पसरां दियै। वहै अरोड़ां वीर, **वेढीगारौ** राठवड़। —गो. रू.

उ०—२ जोईया मिलै जीयार, कथन 'दळा' हूंता कहै। मारै छै कायमार, **वेढीगारौ** राठवड़। —गो. रू.

रू. भे.—बेढीगार, बेढीगारौ, बेंढगारौ, वेडागर, वेडागार, वेडागारी, वेडागारौ, वेढागर, वेढागार, वेढागारी, वेढागारौ, वेढिगर, वेढिंगरौ, वेंढगरौ, वेंढगारौ, वेंढीगार, वेंढीगारी, वेंढीगारौ।

वेढीमण, वेढीमणौ, वेढेमणौ-वि०—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ वरव्वीर 'खूमांण' वीराधवीरं, कळीमूळ 'सादूळ' वेवै कंठीरं। भलौ भीच कल्यांणमल्लौ भुजाळौ,' मानावत' **वेढीमणौ** मच्छराळौ। —गु. रू. बं.

उ०—२ अेकलै भुजां दहूं छ खंड घातै अवर, दस दिसां वजै जस तणौ डाकौ। 'माल' हर 'वीर' हर पछै वेढीमणै, 'सूर' हर तीसरौ कियौ साकौ। —नरहरदास बारहठ

उ०—३ चालसी जुध गयण धोम चेढीमणौ, मुगलां गाळसी जोम मेढीमणौ। तरह लंकाळ सी घाट तेढीमणौ, वाळसी क्यां कसर दाट वेढेमणौ। —वदरीदास खिड़ियौ

२ जबरदस्त।

उ०—जळचर वनचर आंतरौ, जळचर जळ में जोर। वनचर अति वेढीमणौ, जो कछु लाभै कोर। —गज-उद्धार

३ शक्तिशाली, बलशाली।

उ०—विढण नमौ नेठाह हथवाह वेढीमणा, गीत सराह दोय राह रीधा। वडां खळ आदरा त्रंबक वेढांमणा, करै जुध पाधरा सणक कीधा। —सेरसिंह रौ गीत

४ युद्ध करने वाला, युद्ध प्रिय, योद्धा।

उ०—वडा गहलोत सत्र मालम वमू, धार चढ धोळहर जेम ढळियौ। 'मुकन' री सुधारै मौत वेढीमणा, 'भीमड़ा' परम ची जोत मिळियौ। —भीमा गहलोत रौ गीत

रू. भे.—बेढीमणौ, बैंढीमणौ, वेडीभणौ, वेढमणौ, वेढांमणौ।

मह०,—वेढमण, बंढमण, वेढमण, वंढमण, वंढमणौ, वेंढीमण, वैंढीमणौ।

वेढीमल, वेढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू. भे.)

वेण-सं. पु.—१ सूर्यवंशी राजा प्रथु के पिता का नाम।

२ बांस का वृक्ष या बांस। (नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ताल साल मालिका बकुल कुवजक खरजूरी, बोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी। कुमुद ढाक कल्हार वेण कचनार विराजै, सोन जाय पल्लव असोक सुर धोक सु साजै। —रा. रू.

३ सेना, सैन्यदल।

४ नाक में पहनने का आभूषण विशेष नथ।

उ०—आदू मंजन करिध पाट पेहरै देही दळ। नयणे कजळ रेख, तिलक कुंकम भाळीयण। कण कांन त्राटक, वेण नासा मोतीहळ। हार उर चंदन विलेप, रची कांकण कटि मेखळ। —गु. रू. बं.

५ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ पीहर हंदी डुंबणी, राग आलापै तेण। ढोलौ मारू ऊगरै, कहि समझावै वेण। —ढो. मा.

उ०—२ ठग कांमेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सेण। चोर न कीजै पाहरू, ब्रहसपती रा वेण। —बां. दा.

उ०—३ होवै सुविनीत सेण रे। धारै गुरु वेणा रे। जैसी ढलती छाया रे। राखै प्रीत सवाया रे। —जयवांणी

उ०—४ जीहौ काया माया कारमी, जीहौ जेसौ सुपनौ रेण। जीहौ विणसंतां देर लागै नहीं, जीहौ मांनौ सतगुरु वेण। —जयवांणी

उ०—५ आदू अखई मोहुतौ दूहौ कहै, राजा वेचूं नहीं तौ ओखौ खांण मिळूं' पण घोड़ौ उराकी छै। रवियांण चंद, ऐराक बीजै वड़वीज, प्रात गाज, सापुरस वेण, पैहिली तौ लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

उ०—६ सुंदर सर असुरह दळै, जळ पीयौ वेणेह। 'ऊदै' नरयंद काढियौ, तस नारी नयणेह। —उदैसी असरी रौ गीत

६ देखो 'वीण' (रू. भे.)

उ०—१ उभा मोरली नाद लीधै अबूरै, मारौ जागसी सांम वादै मधूरै। विकस्से हसै वेण ऊचौ बजायौ, सपत्तै पताळै सुरग्गै सुणायौ। —ना. द.

उ०—२ लुटै साथ जांणै अमीद्धार लीधौ, किणौ वेण नादं सजीवन्न कीधौ। विजोगौ संजोगौ वजै वेण वायौ, प्रभू आपरी जांण अन्नत्त पायौ। —ना. द.

७ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—नोवत तेर तूर नीभ्रसे, वह बंदिण वहु जस वहसै। वेण ताळ मिरदग वजावै, मीत नाद गुण गंध्रव गावै। —रांमरासौ

८ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

९ देखो 'वहण' (रू. भे.)

रू. भे.—वेणु, वेणू, वैण।

वेणका—१ देखो 'वीण' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वीणा' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वळकुळै ईस नारद वजै वेणका, कमळ ग्रह चळचळै जोस काथै। मूंग थाळी जुई रुळै खळ महीसर, 'मांन' हर मळैदळ केण माथै। —मेगराज आढौ

३ देखो 'वेणी' (अल्पा., रू. भे.)

वेणचि, वेणची—देखो 'वेणची' (रू. भे.)

वेणरावमुनि-सं. पु.—नारद मुनि का नाम।

वेणसुत—देखो 'वेनसुत' (रू. भे.)

वेणा-सं. स्त्री.—१ भारत में बहने वाली पर्णासा नामक नदी जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है।

वि० वि०—यह नदी वरुण की सभा में रह कर उनकी उपासना करती है। इस नदी के तट पर तीन रात उपवास करने से मनुष्य

मोर एवं हंस युक्त विमान से स्वर्ग जाता है। इसी नदी के तटवर्ती जनपद के राजा को सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय के समय पराजित किया था।

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

वेणाट—सं. पु.—प्राचीन कालीन भारत के दक्षिण का एक छोटा प्रदेश जो अब केरल का तिरुविताकर हिस्सा बन गया है।

वेणापांणि, वेणापांणी—देखो 'वीणापांणी' (रू. भे.)

वेणि, वेणिका, वेणी—सं. स्त्री. [सं.]—१ स्त्रियों के बालों की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ डंसण बीज दाडंम, **वेणि** वासग भुयंगम। भटियांणी वर कमध, समदः गंगा नदि संगम। —गु. रू. बं.

उ०—२ बर्ण भुजंग रूप **वेणि**, मंग 'सीस मोतिय'। प्रजा लजै न छत्र पांति, जोय तास जोतियं। —सू. प्र.

उ०—३ सिरि **वेणी** सिरली असी, जांणइ वासिग नाग। बीहता मारइ बंभणइ, किधु ताहरू त्याग। —मा. कां. प्र.

उ०—४ रतन में राखडी **वेणी** बासग जडी, सूभरा वांहडी लहक लोड़ै। स्वाति नौ विंदलौ नासिका निरमयौ, आजु आल्यंगन करन क्रोड़ै। —रुकमणी मंगळ

२ कलाई, मणिबंध।

३ नदी का प्रवाह।

४ गंगा नदी का नाम।

उ०—जळै चंद्र सिळी थाई जगचख, रेणायर सांसतौ रहै। जयमाल उत जाइ छांडै जुध, **वेणी** जळ उपरांठ वहै।

—रांमदास राठौड मेड़तिया री गीत

५ शाकद्वीप की एक नदी का नाम।

६ देखो 'त्रिवेणी'।

७ देखो 'वीण' (रू. भे.)

८ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ पुण्यइ मयगल बाझइ बारि, पुण्यवंत भुज नावइ हारि। पुण्यइ हुइ नित नवला रंग, पुण्यइ सुणीइ **वेणि** भ्रदग। —कां. दे. प्र.

उ०—२ गढ ऊपरि नितु हुइ पेखणां; सुणीइ **वेणि** भ्रदंग। नितु उछव नितु पाउल नाचइ, नितु नितु नवला रंग। —कां. दे. प्र.

९ देखो 'वहणी' (रू. भे.)

१० देखो 'वेणीस्कंद'।

रू. भे.—बेण, बेणि, बेणी, बैनी, बैणी, वीणि, वीणी, वेण, वेणु, वेणू, वेनी, वैण, वैणि, वैणी।

अल्पा.,—बेणका, वेणका।

वेणीडंड, वेणीदंड—सं. स्त्री.—स्त्रियों के बालों की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहैं **वेणीडंड** रे रंग। (अथ) भ्रगानयनी उपरइ रे, बांध्यौ जाल प्रचंड रे। —प. च. चौ.

उ०—२ **वेणीडंड** जिसउ विराजइ वांसउ, पिंड उदमाद धरत पाव। अख ताइ बंद तणइ बिलागउ, अख लइतउ घणाइ अख राव। —महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—बेणीडंड, बेणीदड, वैणडंड, वैणदड, वैणीडंड, वैणीदंड।

वेणीफूल—सं. पु.—स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष।

रू. भे.—बेणीफूल।

वेणीमाधव—सं. पु.—प्रयाग में स्थित श्रीविष्णु भगवान का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—संध्यावट हेटै हणूमांन पौढै है, वडी मूरत है। **वेणीमाधव** प्रमुख चवदै माधव है प्रयागै। सरस्वती कूप रो ळल लाल है प्रयागै। लोपामुद्रा दोय देवी प्रयागै। —बां. दा. ख्यात

वेणीस्कंद, वेणीस्कंध—सं. पु. [स. वेणीस्कन्द] जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध कौरव्यकुलोत्पन्न एक नाग।

वेणु—सं. पु.—१ शतजित् राजा का पुत्र, एक राजा।

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

उ०—१............एकि वीणा **वेणु** भ्रदग यमल संख पटह कंसालप्रमुख अगुणपंचास वादित्रस्वर सांभलावइं मधुर, एकि तिलक बकुल असोक चंपक कुंद मंचकुंदादि पुस्पप्रकर संपानुडइं प्रचुर, एकि दीवांनी परि उद्योत करइं............। —व. स.

उ०—२ रली रंग राग नाना विधि, मुनि-मंडळ के छाजै। पति सूं प्रीति जीति गुण दूजा, **वेणु** गगन में बाजै। —ह. पु. वां.

उ०—३ दादू रंग भर खेलूं पीव सौं; तंह बाजै वेणु रसाल। अकल पाट पर बैठा स्वांमी, प्रेम पिलावे लाल। —दादुवांणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—पटुपटह भ्रदंग करडि मरद्दल **वेणु** तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहभंभ हडुक ढक्क बुक्क त्रंबक काहल काहली बरगां प्रभ्रति वादित्र। —व. स.

४ देखो 'वेण' (रू. भे.)

५ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

रू. भे.—बेणु, बेणू' वेनु, वेनु।

वेणुजंघ–सं. पु. [सं.] युधिष्ठर की सभा में उपस्थित एक प्राचीन महर्षि।

वेणुदारि–सं. पु. [सं.] अक्रूर (बभ्रू) की पत्नी का हरणकर्त्ता एक यादव जिनके पुत्र को कर्ण ने अपने दक्षिणदिग्विजय के समय हराया था।

वेणुदारितक—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष।

रू. भे.—वेणुविदारित।

वेणुमंडळ, वेणुमंडल–सं. पु. [सं. वेणुमण्डल] कुशद्वीपीय एक भाग।

वेणुमंत—देखो 'वेणुमांन'।

वेणुमती–सं. स्त्री. [सं.] पश्चिमोत्तर देश की एक नदी। (पुराण)

वेणुमांन–सं. पु. [सं. वेणुमान्] १ एक वंश। (पुराण)

२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वेणुवन–सं. पु. [सं.] राजगृह में स्थित एक उपवन का नाम, जहाँ राजा बिंबसार के समय गौतम बुद्ध ठहरे थे।

वेणुविदारित—देखो 'वेणुदारितक' (रू. भे.)

वेणुवीणाधरा–सं. स्त्री. [सं.] कुमार कार्त्तिकेय की एक अनुचरी।

वेणुहय–सं. पु [सं.] वेणु राजा का नाम।

वेणुहोत, वेणुहोतर, वेणुहोत्र–सं. पु. [सं. वेणुहोत्र] वीतिहोत्र राजा का नाम जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र एवं गार्ग्य का पिता था।

वेणू—१ देखो 'वीण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

३ देखो 'वेण' (रू. भे.)

४ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

वेणौ–सं. पु—१ सोने-चांदी के आभूषणों पर खुदाई के काम में कुछ गहरे खड्डे (छेद) करने का लोह का एक औजार विशेष।

२ बढई का एक औजार विशेष।

३ देखो 'वहणौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वीणौ' (रू. भे.)

रू. भे.—बेणौ।

वे'णौ, वे'बौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—अलग राख आरोह, तसां कपड़ा वेंतोड़ा। खरहंड नासा खांच, रजक प्याले अण रोडा। —पा. प्र.

वेण्या, वेण्वा–सं. स्त्री. [सं.] विन्ध्य पर्वत से निकली हुई चौदह नदियों में से एक।

वेतंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

उ०—अर ऊभी वेतंड साहण सिंगार नूं आवतौ देखि सांम्हौं हालियौ। इण रीति दो ही गजां आप आप रा कलावां सूं आधोरणां नूं उडाय रीस मैं अंध होय समीप आवतां ही लोयण (नेत्र) मिळाया। —वं. भा.

वेत–सं. स्त्री.—१ बूंदी एवं चितोड़ के बीच के पठार से छब्बीस मील दूर बहने वाली नदी।

उ०—तिण वेत नदी ऊपर वडौ जंगळ छै। तिण में द्रोब, करड़ री वडी ऊगम छै। तिका ठोड़ जोय आया। जांणियौ मांहरौ हसम याड अठै चरसी। —नैणसी

२ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

३ देखो 'वेत' (रू. भे.)

उ०—१ थें किले में संचौ सताब करजै। हूं वेत लागियां आयस्यूं। —गोपाळदास गौड़ री वारता

उ०—२ तठै आगै बाग आयौ। देखनै मांहै पैठा मल फल-फूल खाया, पिण बाग मैं जावतौ घणौ दीठौ। तठै तौ पिण हीरण बीचारियौ-जौ आ जागा भली छै, मांरी चारौ पिण मोकळौ छै, पिण दिन रा तौ वेत लागै नही, अबै रात रा चरवा नै आवस्यां। —रीसालू री वात

उ०—३ पूरणह-मल्ल बाहां पलंब, 'ईंदा' हर राखै रूकि अंब। वर-वीर धीर सुरतांण वेत वाखांण चौरासी वीर-खेत। —गु. रू. बं.

४ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

५ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

वेतकल्लुफ—देखो 'बेतकल्लुफ' (रू. भे.)

वेतकल्लुफी—देखो 'बेतकल्लुफी' (रू. भे.)

वेतधर—देखो 'वेतधर' (रू. भे)

वेतड़—देखो 'वेंतड़' (रू. भे.)

वेतन–सं. पु. [सं.] कुछ निश्चित समय तक प्रायः एक मास तक काम करने के बदले दिया जाने वाला धन या पारिश्रमिक, तनख्वाह।

उ०—मांन देई राखियु, सुंपिया अस्व अनेकि। दस सहस्र वेतन परिठ्युं, नि मुख्य कीधु एक। —नळाख्यांन

वेतनभोगी–वि०—वेतन लेकर काम करने वाला।

वेतमीज–देखो 'बदतमीज' (रू. भे.)

वेतमीजी—देखो 'बदतमीजी' (रू. भे.)

वेतर—१ देखो 'वेतरू' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)

उ०—रंक रूळंदा मारकर, कोई मल कहावै, वेतर भूत आराध कर, कोइ देव मनावै। डाकण का मंत्र सीख कर, कोइ साध कहावै, आंख्यां आंधा होय कर. कोइ वाट बतावै। —केसोदास गाडण

वेतरणी-सं. स्त्री.—१ दर्जी द्वारा कपड़े का माप लेने की क्रिया।
२ देखो 'वैतरणी' (रू. भे.)

वेतरह—देखो 'बेतरह' (रू. भे.)

वेतरु, वेतरू-सं स्त्री.—वह गाय, भैंस, बकरी आदि मादा पशु जो निकट भविष्य में शीघ्र प्रसव करने वाली हो।
रू. भे.—वेतर, वैतर।

वेतलब—देखो 'बेतलब' (रू. भे.)

वेतलबी—देखो 'बेतलबी' (रू. भे.)

वेतस-सं. स्त्री. [सं.] १ जंभीरी, बिजौरा।
उ०—वालु नइं वेलातरु, वेऊ वेतस वांणि। वध्रारु वाहलु लीउ, वाउलीउ वखांणि। —मा. कां. प्र.
२ देखो 'वेतसु' (रू. भे.)
रू. भे.—बेतस।

वेतसवन-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ मृत्यु ने तपस्या की थी।

वेतसिका-सं. स्त्री. [स.] वह तीर्थ जिसकी सेवा ब्रह्मा ने की थी। इस की यात्रा करने से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

वेतसिनी-सं. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी का नाम। (पुराण)

वेतसु-सं. पु. [सं.] एक दानव, जिसका वध इन्द्र ने किया था।

वेता—देखो 'वेत्ता' (रू. भे.)

वेताब—देखो 'बेताब' (रू. भे.)

वेताबी—देखो 'बेताबी' (रू. भे.)

वेतार—देखो 'बेतार' (रू. भे.)

वेताळ, वेताल-सं. पु. [सं.] १ भूत-प्रेतों की एक प्रकार की योनि विशेष। (पुराण)
उ०—वेताल भीसणाकार, मुखि करता फार फेत्कार, कतांतावतार मुखि मेल्हतउ झाल, हस्ति देता ताल, इस्यां ऊछलिग्रा वेताल। —व. स.
२ वह शव जिस पर भूत-प्रेतों ने अधिकार कर लिया हो।
३ बंदीजन, भाट।
४ देव विशेष।
५ द्वारपाल, दरबान।
६ युद्धप्रिय देव।
उ०—१ व्रहमंड किनां फुट्टौ वळै, धसक तळातळ आतळै। मुखै हसै सकति महाबळ, वेताळा कुळ व्याकुळै। —मा. वंचनिका
उ०—२ सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारां, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु विरक जंबू रसवाया, काक कंक को गिरणै आसपळ संभळ आया। अछरां स्रंगार धरि ऊमही, हूरां हरखि उचारियौ। महि गयण संग खेळां मिळै, आगम जंग विसारियौ। —रा. रू.
उ०—३ हुए हक्क सूरां उठी मेर हक्कां, करै भूत वेताळ चंडी किलक्कां। करै जोर प्राहार वेपार कुंतां, दिपै जुद्ध जांणै भ्रगू सिंभू दूतां। —रा. रू.
७ छप्पय छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ६५ गुरु व २२ लघु, कुल ८७ वर्ण वा १५२ मात्राएँ होती हैं।
८ देखो 'बेताळ' (रू. भे.)
रू. भे.—बैताळ, वइताळ, वेयाळ, वेयाल, वैताळ, वैताल, वैताळी।

वेतालजननी-सं. स्त्री. [सं.] कुमार कार्तिकेय की एक मातृका।

वेताळभट, वेतालभट, वेताळभट्ट, वेतालभट्ट-सं. पु—एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पंडित।

वेताळिक—देखो 'वैताळिक' (रू. भे.)

वेताळीस, वेतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

वेताव—देखो 'बेताव' (रू. भे.)

वेतुंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

वेतुकौ—देखो बेतुकौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेतुकी)

वेत्ता-वि० [सं.] ज्ञाता, जानकार, तत्ववेत्ता। (अमरत)
सं. पु.—पंडित, कवि।
रू. भे.—वेता।

वेत्रकीयवन-सं. पु. [सं.] वह वन जहाँ भीम ने बकासुर का बध किया था।

वेत्रकूट-सं. पु. [सं.] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम।

वेत्रगंगा-सं. स्त्री. [सं.] हिमालय से निकलने वाली एक नदी का नाम।

वेत्रवती-सं. स्त्री. [सं.] परियात्र नामक पर्वत से निकली चौदह नदियों में से वेतवा नामक नदी।
उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जातां, सगळा भोग विलास पावसौ प्रीत जतातां। वेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजंतां, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर धण पांन करंतां। —मेघ

वेत्रहा-सं. पु. [सं. वेत्रहन्] देवराज इन्द्र का एक नाम।

वेत्रासन-सं. पु. [सं.] बेंत का बना हुआ एक प्रकार का आसन विशेष।

वेत्रासुर-सं. पु. [सं.] १ यमुना नदी में मिलने वाली वेत्रवती नदी के गर्भ से उत्पन्न सिधुद्वीप नामक राजा का पुत्र, प्राग्ज्योतिषपुर का राजा एक प्रसिद्ध असुर, जो इन्द्र के द्वारा मारा गया था। (पुराण)
२ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—वैत्रासुर ।

वेत्रिक-स. पु. [सं.] १ प्राचीन भारतीय एक जनपद ।

२ उक्त जनपद का निवासी ।

वेथळियौ—देखो 'वेथळियौ' (रू. भे.)

वेथाग—देखो 'वेथाग' (रू. भे.)

वेथी—देखो 'वेथी' (रू. भे.)

उ०—कितरा एक दिन रावजी असमाधिया रहि अर वैकुंठ सिधाया। उठै राजा भारमल पणि बैकुंठ सिधाया । विहूं राजवियां दिन आठ वेथी हुई । ओथि राजा भगवंतदास नूं टीकौ हुयौ । —द. वि.

वेदंग—देखो 'वेदग्य' (रू. भे.) (नां. मा.)

वेदंड—देखो 'वितुंड' (रू. भे.)

वेदंत—१ देखो 'वेद' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदांत' (रू. भे.)

वेद-सं. पु. [सं.] १ धार्मिक या आध्यात्मिक विषय अथवा किसी विषय का सच्चा एवं वास्तविक ज्ञान ।

२ भारतीय आर्यों के सर्वमान्य वे चार ग्रन्थ जो मनुष्य रचित नहीं हैं बल्कि ये ब्रह्मा के मुख से निकले हुए माने जाते हैं, श्रुति ।

उ०—१ वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण, वळे खट भाख जीहा वखांणै । भांत पौराण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगतां तणा भेद आंणै । —र. ज. प्र.

उ०—२ पह तिलक कीध कुंकम सु पांणि, मोतियां अक्षत चाढे प्रमांणि । जस जोतख द्विज्ज लिखंत जंत्र, मुख पढत महा द्विज वेद मंत्र । —सू. प्र.

उ०—३ प्रथी करण थिर वेद पुरांणां, करम जिकां बळ हीण कुरांणां । यौं जग मैं रवि वंस उजागर, प्रगटै भूप रूप परमेस्वर । —रा. रू.

३ भगवान् श्री विष्णु का नाम ।

४ ईस्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ नमौ कांमणी वेद माया कुमारी, नमौ सेहस नैणी प्रबोधा संसारी । नमौ सेसकंठी नमौ सीळ सांमा, नमौ भूचरी खेचरी रूद्र भांमा । —मा. वचनिका

उ०—२ लोक वेद कौ डर नहीं रस भीना दिन राति । कांमी प्रेमी हरि भगत, नहीं सूझै दिन राति । —परमानद वणियाळ

५ जय जयकार की ध्वनि ।

६ ज्ञान ।

उ०—१ जनहरिया ज्युं नांव घी, अंन पांणी ज्युं वेद । जै कोई न्यारौ जांणसी, जिन कुं आयौ भेद । —अनुभववांणी

उ०—२ नाभी घरि आया, नाच नचाया, सहुचां मुख सिवरंदा है । रग रग आरंभा, भया अचंभा, छुछम वेद भणंदा है । —अनुभववांणी

७ चार की संख्या । * (डिं. को.)

उ०—भणि तेरहसौ छासठि भेद, विगति मात्र सोलह ध्रू वेद । आखर लुघू गुरु इगिआर, वदां सुभंकर छंद विचार । —ल. पि.

८ तीन की संख्या । * (डिं. को.)

९ छन्द ।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—रिण तूर पयंच-सव्द वेद रुडै, गयणाग क अंबनिधि गडडै । ढळकै गज-ढालां ढूहरियं, अनडां सिरि जांणक अच्छरियं । —गु. रू. बं.

११ योग, जोड़ ।

१२ मांगणियार मुसलमानों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति । (मा. म.)

१३ नाईयों की शाखा जो हजामत के धन्धे के साथ-साथ मरहम पट्टी आदि कुछ वैद्यगी का काम भी करती है । (मा. म.)

१४ उक्त शाखा का व्यक्ति । १५ भृगु के कुल में उत्पन्न एक मंत्रकार । १६ सिंधुद्वीपराजा का भाई जो शिव भक्त था । १७ जनमेजय का उपाध्याय व धौम्य ऋषि का शिष्य, एक ऋषि ।

२० विवाह वेदी पर बोले जाने वाले मंत्र ।

उ०—ताहरां छोकरचां वाघै दोळा फेरा च्यार लीया । ताहरां बांभण एक पांगुळौ ओथ पड़ियौ हुतौ तिकै नुं वाघै कह्यौ । रे तूं बांभण छै । जै भणियौ छै तौ तूं वेद पढ । का मारीस । ताहरां बांभण बीहतै क्युं भणियौ । —देवजी बगडावतां री बात

२१ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या—किणहि रोगी नैं वेद ओखध पावा लागौ कहै औ ओखध पी जा रोग जातौ रहसी । जद रोगी बोल्यो—मूंहडा मैं तौ घालूं नहीं । म्हारा मौरां में कूद दौ । —भि. द्र.

उ०—२ बाप घणौ ई समझायौ, पण वौ तौ मान्यौ ई नीं । वेद हकीम ई घणौ ई पालियौ तौ ई उणरै कीं हीयै बैठी नीं । बेटा रा वाद आगै सेठां रौ तौ खायौ पीयौ ई अंग लागै नीं । —फुलवाड़ी

उ०—३ अमोलक सूं अमोलक हीरौ कोई पेट मैं खावण सूं तौ रह्यौ । आप सगळां जांणौ ई हौ, कांई बतावूं । कुठौड़ पीड़ अर

सुसरौजी वेद। रांड कंवरसा लारै सती होवण रौ हठ झाल राख्यौ।
—फुलवाड़ी

२२ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—धमाधम बांण गोळा वीखम गाजिया, साझिया मरण खत्रियां धरम सैद। मंडोवर तणा अदराजिया मेड़तै, वाजिया वेहूं धरती तणा वेद। —सेरसिंगजी, कौलसिंहजी रौ गीत

रू. भे.—वेद, वेदंत, वेय, वेह।

वेदउदय-सं. पु. [सं. उदयवेद] सूरज, सूर्य। (डिं. को.)

वेदक—१ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—मंतव्य मांन, गंतव्य ग्यांन, वेदक विधांन, धर धेय ध्यांन। सुन जाग सूर, चंद्राक चूर, सुख मन संचार, अम्म्रत अपार।
—ऊ. का.

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

वेदकरता-सं. पु. [सं. वेदकर्तृ] १ वेदों की रचना करने वाला, ब्रह्मा।

२ विष्णु का नाम।

३ शिव, शंकर।

४ सूरज, सूर्य।

५ वर पक्ष के वे मनुष्य जो विवाहकृत्य सम्पन्न हो जाने पर वधू के घर वर तथा वधू को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु जाते हैं।

वेदकल्प-सं. पु. [सं.] अथर्ववेद का एक भाग।

वेदका-सं. स्त्री. [सं वेदिका] विवाह वेदी, चंवरी।

उ०—अलंगां ऊमरांकोट तोरणां काळमी आई, नांमी वंस बधाई आरनी नरां नाथ। विप्रां गंठ जोडी बांध वेदका समीप बैठै, बंनौ बंनी मेहंदी हाथ मिळायौ विख्यात। —बादरदांन दधवाड़िया

वेदकार-वि० [सं.] वेदों के रचयिता, वेदों का रचनाकर्त्ता।

वेदगंगा-सं. स्त्री.—कृष्णा नदी में मिलने वाली एक दक्षिण भारतीय नदी।

वेदगरभ-सं. पु. [सं. वेदगर्भ] १ ब्रह्मा।

२ ब्राह्मण।

रू. भे. - बेदगरभ।

वेदगरभा-स स्त्री. [सं. वेदगर्भा] १ सरस्वती नदी।

२ रेवा नदी।

वेदगरभापुरी-सं. स्त्री. [सं. वेदगर्भापुरी] एक तीर्थ विशेष।

वेदगाथ-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

वेदगी-सं. स्त्री.—१ होशियारी, चतुराई, दक्षता, विशेषता।

उ०—राजाजी नै उणरी भोळी अर अबूझ बात सुणनै हंसी आयगी। बोल्या—भौळा ठीकरा, हाथ जोड़ना मैं अैड़ी कांई वेदगी! म्हैं कदै ई नीं जोड़्या तौ ई जांणू। —फुलवाड़ी

२ देखो 'वैद्यगी' (रू. भे.)

वेदगुप्त-सं. पु. [सं.] १ भगवान् श्रीकृष्ण।

२ पराशर ऋषि का पुत्र।

वेदग्य-वि० [सं. वेदज्ञ] १ वेदों का ज्ञाता, वेदों का जानकार।

२ ब्रह्मज्ञानी।

सं. पु.—ब्रह्मा।

रू. भे.—वेदग, वेदंग, वेदंगर, वेद्यक, वेद्यग।

वेदजणणी-सं. स्त्री. [सं. वेदजननी] वेदों की माता, सावित्री।

वेदजा-सं. स्त्री. [सं. जात-वेद] १ अग्नि, आग। (ना. डिं. को.)

२ द्रौपदी। (अ. मा.)

वि० वि० (मि. जागसेनी)

रू. भे.—वेदिजा, वेदीजा।

वेदण—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—अम्हे न करिम्यां कोइ, साजनिया सहु कौ करौ। फिर दूणौ दुख होइ, वेदण विछड़ियां पछै। —जसराज

वेदणौ, वेदबौ—देखो 'वेधणौ, वेधबौ' (रू. भे.)

उ०—काटै वेदै घसै पथर पर, तथा तपाय कड़ावै तोल। सुर पूजा सोरंम गुण समपै, खेड़ा सचंनण रौ खेल। —स्वरूपदास

वेदतीरथ-सं. पु. [सं वेदतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ। (प्राचीन)

वेदत्रय, वेदत्रयी-सं. स्त्री. [सं. वेदत्रयी] तीन वेदों का समूह, जिसमें ऋगवेद यजुर्वेद एवं सामवेद होते हैं। (वं. भा)

वेददरस, वेददररसन-सं. पु. [सं वेददर्श, वेददर्शन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने सुमन से अथर्ववेद, संहिता सीख कर अपने शिष्यों को प्रदान की थी।

वेदद्विस-सं. पु. [सं. वेदद्विष] चेदि देशाधिपति बृहद्रथ का पुत्र।

वेदधंको-स. पु. [सं. वेध+रा. धंकी] युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर, बहादुर।

उ०—हैजमां हिलोळ हतां तेगां उसां टीलौ हलै, साथ वीर चलै चंडी चांटीलौ समंद। वेदधंकी जंगां मेळै वारंगां मांटीलौ वींद, कंवांणां कोमंकी वागां आंटीलौ कमंद। —हुकमीचंद खिड़ियौ

वेदधरम-स. पु. [सं. वेदधर्म] वेदिक धर्म।

उ०—१ उत्तम नांम वंस उजवाळौ, वेदधरम चौ बंधव वडाळौ। धरपति जेणि सोस छत्रधारे, एम प्रतग्या करै उचारे। —सू. प्र.

उ०—२ खग्ग बल विस्तरि अकब्बर सै सत्रु अग्ग, इक्कल निबाह्यौ जिहं वेदधरम नत्ताकौ। आसमुद्र उरवि वासी अज्ज कृतमन्य देत, धन्यवाद वीर अग्रगण्य रांन 'पत्ता' कौं। —बालाबक्स पालावत

रू. भे.—वेदोधरम, वेदोध्रम ।

वेदधुनि, वेदध्वनि–सं. स्त्री. [सं. वेदध्वनि] वैदिक मंत्रों के उच्चारण की ध्वनि ।

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अंधकार फीटइ, गाय तणा गांला खूटा, तारागण विरल हुउ, चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकड़ां तणी उलि लवइं, देव तणां बार ऊघड़ियां, प्रभातिक तूरच वाजियां, राजभवनइ वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका ऊपजइं, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणै घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुआ । —व स.

उ०—२ जिकै वेद मूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाड़ि होम करै छै । घणौ गौ धृत नै कपूर री आहूति दीजै छै । वेदध्वनि कीजै छै । दूलह नै दूलहनी सेहरां बांधिआ पूरब माहमा वेसांणिआं छै । —रा. सा. सं.

रू. भे.—वेदबधुनि, वेदवध्वनि, वेदोधनि, वेदोधनी, वेदोध्रुण, वेदोधणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी, वेदोध्वनि ।

वेदन, वेदना–सं. स्त्री. [सं. वेदनं एवं वेदना] १ पीड़ा, कष्ट, व्यथा ।

उ०—१ लै नै सिरचंद मुंहतै नूं रांणीजी कहियौ हुतौ ज्यूं गुण हुवै तिम करिया । सु न का गांठि न का वेदन इउं ही उपाय करि अर बात थापी । —द. वि.

उ०—२ राजा उठ्यौ, वेग सतावमूं रे, रांणी ऊपर न करचौ द्वेस रे । ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे, राख्यौ इण समता भाव विसेख रे । —जयवांणी

उ०—३ जीहौ वेदना नरक में सासती, जीहौ जरा तापसी खेद । जीहौ वेदना दस प्रकार नीं, जीहौ जिणरा न्यारा न्यारा भेद । —जयवांणी

उ०—४ पल जागे पल भी सुवै, पल मन धरै न धीर । हरिया वेदन विरह की, निस दिन भई सरीर । —अनुभववांणी

२ तकलीफ ।

३ प्रसूता स्त्रियों को प्रसव के समय होने वाली शारीरिक पीड़ा या व्यथा ।

उ०—बांझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जांणत मूंड भमायौ । पूत कपूतन कौं चटसाला कि, ज्यूं कुलटा सुसराळ सुणायौ । —ऊ. का.

४ रोग, बीमारी ।

उ०—१ ओखद करि करि जु मूंवा, वेदन चडी न हाथि । जा ओखद सुं ऊबरै, वाकी पड़ी अनाथि । —अनुभववांणी

उ०—२ धांन न भावै चोंच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई । तौ सौं बात कहूँ मैं कैसी, मेरे मन मैं बीचत जैसी । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ विध चूका वैद न जांणै वेदन, औखध लहै न पीड अथाह । रात दिवस खटकै उर 'राजौ', साजौ तेण नहीं पतसाह । —पीरदांन आसियौ

उ०—४ मुं सारां मुलकां रा वेद बुलाया, तिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहर मैं पाडौ फेरचौ—नागजी नै ताजौ करै, तिण नै लाखपसाव देवां । सु वैदां नै तौ वेदन लाधी नहीं । राजा वेद बुलाय कै, कुंवर देखाई बांह, वैदां वेदन काळ ही, करक कलेजां माहि । —नागजी नागवंती री बात

उ०—५ तारां अे भाटी कलकरण केहरौत कनै गया । तद कलकरण आदमी हजार दोय सूं कंवर वीकैजी माथै आयौ, अरु राव सेखै नूं कहायौ कै थे आव म्हारै सांमल हुवौ ज्यूं काची वेदन काट देवां । —द. दा.

५ भय एवं हिंसा की पुत्री ।

रू. भे.—बेदन, बेदनि, वेदण, वेदनि, वेवना ।

वेदनाथ–सं. पु. [सं.] १ एक विश्वनाथ नामक ब्राह्मण एवं कमलालया का पुत्र एक राजा ।

वि० वि०—इसे ब्राह्मण का साग या द्रव्य चुराने के कारण पुनर्जन्म में वानरयोनि प्राप्त हुई । अपने मित्र सिन्धुद्वीप मुनि की सलाह के अनुसार यह धनुष्कोटि तीर्थ में जाकर पापमुक्त हुआ था ।

२ महादेव, शिव ।

वेदनिंदक–वि. [सं.] १ वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक ।

२ बौद्ध धर्म का अनुयायी ।

वेदनि—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ बूंटी परखि गांठि ग्रह बांधी, जम भव वेदनि तूटी जांह्कै रोग सदा अंगि रहता, बोहत होती तपनाइ । या बूंटी रस घापि र पीया, जीणि वोहड़ी संताप न पाई । —वील्होजी

उ०—२ वेदनि विरह विथा तन मांही, पड़दा खोलि मिळौ क्यूं नांही । जन हरिदास कै आस तुम्हारी, विलम कहा पति देव मुरारी । —ह. पु. वां.

वेदनिध, वेदनिधि–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन महर्षि ।

वेदनीय–वि० [सं.] जो वेदना उत्पन्न करे, वेदना उत्पन्न करने वाला । (कर्म) (जैन)

वेदपाठ–सं. पु. [सं.] वेद के मंत्रों का पाठ, वेदाध्ययन ।

उ०—नकौ सुचि क्रिया न कौ वेदपाठं, न कौ मुखवांणी न कौ मोन काठं । न कौ तनत्यागी न कौ ग्रेहचारा, न कौ नवनाथं न कौ पंथवारा । —अनुभववांणी

वेदपाठी–वि० [सं. वेद+पाठिन्] वेदों को पढ़ने वाला, वेदों का अध्ययन करने वाला ।

उ०—१ वेदमंत्र बोलंत, वेदपाठी ब्राह्मण। पहरै पट्ट अबोट, द्रव्य आपै घण सघण। —गु. रू. बं.

उ०—२ तहां वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरबक मंत्रवळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इंद्र आदि देवता अड़सठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु, अस्ट परवत, दसौं दिग्पाळ आदि सैं आवाहन करि आहुती कर प्रसन्न किया। —सिंघासण बत्तीसी

वेदपित-सं. पु.—अग्नि, आग। (अ. मा.)

वेदफळ-स. पु.—वैदिक कर्म करने से प्राप्त होने वाला फल।

वेदबाह, वेदबाहु-स पु. [सं. वेदबाहु] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

३ पुलस्त्य ऋषि का नाम।

४ रैवत मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

वेदबीज-स. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ ब्रह्मा।

वेदभू, वेदभूम, वेदभूमि, वेदभूमी-सं. स्त्री. [सं. वेदभू, वेदभूमि] १ वह स्थान जहाँ वेदों का अध्ययन किया या कराया जाता है, ऋषि-आश्रम।

उ०—ईं वेदभूम रौ धरम नहीं, ओलै सी बात बणा लेवै। आ बात जिंदगी मौत तणां, सगळां री सोच सला लेवै। —करणीदान बारहठ

२ वैदिक भूमि, हिन्दुस्तान, भारत।

३ देवताओं का एक गण विशेष।

वेदमंतर, वेदमंत्र-स. पु [सं. वेदमंत्र] १ वेदों में आये हुए मंत्र।

२ एक प्राचीन जनपद का नाम। (पुराण)

३ उक्त जनपद का निवासी।

४ मूलमंत्र।

वेदम—देखो 'बेदम' (रू. भे.)

वेदमत-स. पु.—वेदों में उल्लिखित मत, वैदिक मत या नियम।

उ०—माजी मांनै वेदमत, सुणै सदा सुरगाह। सती आठमी सांपरत, दसमी स्रीदुरगाह। —बां. दा.

वेदमाता-सं स्त्री. [सं. वेदमातृ] १ सावित्री, गायत्री।

२ दुर्गा, शक्ति।

३ वीणावादिनी, सरस्वती।

४ गायत्री मंत्र।

वेदमात्रका, वेदमात्रिका—देखो 'वेदमाता'।

वेदमालि, वेदमाली-सं. पु. [सं. वेदमालि] रैवत मन्वन्तर के एक वेदज्ञ ब्राह्मण का नाम।

वि० वि०—कुछ समय पश्चात् अपने परिवार के पालन-पोषण हेतु इसने अनीति से धन कमाना शुरू किया। जावंती मुनि के उपदेश से इसे ज्ञान हुआ। परिणामस्वरूप इसने अपने दोनों पुत्रों को अपने धन का दो भाग देकर शेष बचे धन को धर्मकार्य में लगादिया और स्वयं नरनारायणाश्रम बद्रीवन में जाकर तपस्या कर पापमुक्त हुआ।

वेदमितर, वेदमित्र-सं. पु. [सं. वेदमित्र] व्यास की ऋकशिष्य परम्परा में से माण्डुकेय नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य जो स्वयं शाकलगोत्रीय था।

वेदमुंड-सं. पु. [सं.] एक असुर का नाम।

वेदमूरत, वेदमूरति वेदमूरती-वि० [स वेदमूर्ति] १ वेदों का पूर्ण ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति नीला आला वंस केलि खंभ सूंना गलिआ थका कांचनां रा कलसां री वेह करिनै चौरी पधराया छै। हथळेवौ जोड़ि छेहड़ा बांधिया छै। सु जांणि मन बांधिया छै। जिकै वेदमूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाड़ि होम करै छै। —रा. सा. सं.

२ सूरज, सूर्य।

वेदरद, वेदरदी—देखो 'बेदरदी' (रू. भे.)

उ०—१ चालनि मौरा सइयां दुख पावै, रसराज ऐसी वेदरदी होय रही, काहैं कूं तौ पनघट जावंरी आवै, —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ चालौ चालौ सहियां म्हांरी सांवरै री लैर, प्यारौ गयौ कही विरह वेदरदी. खोजल्यां नै उवां रा सूधा पंर। —रसीलै राज रा गीत

उ०—३ हेरी हेरी मा मन लै गयौ, सांवरौ सनेही अलवेलौ मा। नैंन लगाय मन लै गयौ वेदरदी, दिल विच छाय रयौ। —रसीलै राज रा गीत

वेदरस-सं. पु. [सं.] वृहस्पति का नाम। (अ. मा.)

वेदरह, वेदराह-सं. पु. [स. वेद+अ. राह] वेदों में बताया गया मार्ग वेदमार्ग,।

वेदल—देखो 'बेदिल' (रू. भे.)

उ०—१ थें नाळेर किण नें बंदायौ? म्हैं थांनें काहुं कहिनें मेलिया था? तरै उमरावां अर पुरोहितजी पाछली बात ज्यूं हुई त्यूं कही। कागद दिखायौ। स्रीरिणमल जी वेदल हुवा। —राव रिणमल री बात

उ०—२ वळै ढाढियां नुं मुख वचन समाचार मारवणी कह्या छा सु कह्या पिण ढाढी डरै छै। ताहरां ढोलोजी बोलिया थैं वेदल (क्यूं) छौ। ताहरां ढाढी बोलिया कंवरजी आपनैं दीठा तौ घणां राजी छां पिण मरण सूं डरां छां। —ढो. मा.

उ०—३ तरै पाधरी कंवरजी री हजूर आई। कंवरजी ढोलियै बैठा छै। तद मालवणी आंगा मुजरो कीयौ। जद कुंवरजी हाथ पकड़ नै घणा आदर सुं मालवणी नै ढोलियै बैसांणी। पिण मालवणी वेदल घणी छै। —ढो. मा.

वेदवंत-वि० [सं.] १ वेदों का ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—१ कांमिणी कहि कांम काळ कहि केवी, नारायण कहि अवर मर। वेदारथ इम कहै वेदवंत, जोग तत्त जोगेसवर। —वेलि

उ०—२ जु वेदवंत भला ब्राह्मण था। त्यां वेद री वेदोकित विचारचौ। वात पणि कही चाहीजै अर मन मांहै भय उपनौ छै। मत बसदेवजी बुरौ मानै पणि जरूर हुई। ब्राह्मण जु कछु धरम्म होय कहै। —वेलि टी.

२ ब्रह्मज्ञानी।

वेदवचन-सं. पु. [सं] वेदों का मूलपाठ।

वेदवती-सं. स्त्री. [सं.] १ राजा कुशध्वज की कन्या जो दूसरे जन्म में सीता हुई थी।

२ द्रोपदी। (अ. मा.)

३ एक प्राचीन नदी जो परियात्र पर्वत से निकली १४ नदियों में से एक थी।

४ एक अप्सरा का नाम।

वेदवदन-सं. पु. [सं.] १ ब्रह्मा। (डिं. को.)

२ व्याकरण।

वेदवधुनि, वेदवध्वनि—देखो 'वेदधुनि' (रू. भे.)

उ०—कुंदन मे थाळ द्रोब दधि कुंकंम, पूरित अक्खत तंदुळं। इत्यादिक गीत नाद वेदवधुनि, मंगळ धमळ मंगळं। —गु. रू. बं.

वेदवा-वि०—जिसकी कोई दवा नहीं हो, बिना दवा का।

उ०—जांह कोई जोग न जुगति है, जांह नही वेग न तेग। हरीया दवा न वेदवा, जांह कोई पौंण न वेग। —अनुभववांणी

वेदवाक्य-सं. पु. [स.] १ वेद का कोई वाक्य।

२ पूर्ण रूप से प्रमाणित कोई बात जिसका खंडन नहीं किया जा सके।

वेदवादी-वि०—[सं. वेदवादिन्] १ वेदों का अच्छा ज्ञाता।

२ वेदों में उल्लिखित मार्ग पर चलने वाला।

वेदवावंत—देखो 'दवावंत' (रू. भे.)

वेदवाहन-सं. पु. [सं. वेद+वाहनम्] सूरज, सूर्य।

वेदवित, वेदविद—वि० [सं. वेदवित्] वेदों का जानकार, वेदज्ञ।

उ०—वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कंपित चित लागा कहण। हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पांणिग्रहण। —वेलि

सं. पु.—१ वेदविशारद ब्राह्मण।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

रू. भे.—वेयविम्र, वेयवी।

वेदविदुख, वेदविदुस-वि. [सं. वेदविदुष] वेदों का ज्ञाता, पंडित, विद्वान्।

उ०—सिलपी कांम हुयौ सह सिद्ध, ब्रह्मां साखि रचै जिग विधि। उचारै वेदविदुख अनेक, विचारै जिग सुविधि विमेक। —रांमरासौ

सं. पु.—ब्राह्मण, पंडित।

वेदवेद्या-सं. स्त्री. [सं.] वह देवी जो वेदों से जानी जाती है। उक्त देवी के निवास स्थान चिन्तामणि ग्रह के चार दरवाजे चारों वेद हैं।

वेदव्यास-सं. पु. [सं.] १ एक प्राचीन ऋषि, जो सत्यवती एवं पराशर के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ही वेदों के विभाग करके आधुनिक रूप दिया।

उ०—१ का तन आलस करत ऊंघ, का फिर सूंघा करत सूंघ। का मन मूरख विकल जास का हुय बैठ वेदव्यास। —अनुभववांणी

उ०—२ ताह माँहि लै अधिका उतिमि, ग्यांन रूप गाहैडि गडा। बारहट अनै रिखि बराबरि, वेदव्यास ईसर बडा। —पी. प्रं.

२ वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईस द्वापरों में उत्पन्न होने वाले अट्ठाईस वेदव्यासों का समूह। (पुराण)

रू. भे.—बेदव्यास

वेदव्रद्ध, वेदव्रध-सं. पु.—[सं. वेदवृद्ध] व्यास की सामशिष्य परम्परा में से कौथुम पाराशर्य नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य।

वेदसरमन, वेदसरमा-सं. पु. [सं. वेदशर्मन्, वेदशर्मा] १ एक वेदज्ञ ब्राह्मण।

वि० वि०—इसने ब्राह्मणों को देने के लिए संकल्पित धन ब्राह्मणों को नहीं दिया। इसलिए इसे श्रृगाल-योनि प्राप्त हुई। यह वेदनाथ का मित्र था एवं सिन्धुद्वीप मुनि के उपदेशानुसार धनुष्कोटि तीर्थ में शाप मुक्त हुआ था।

२ विदुर का मित्र, जो विदुर के साथ कालिंजर पर्वत पर गया।

वि० वि०—कालिंजर पर्वत के सिद्धों के उपदेशानुसार इसने सोमवती अमावस्या के दिन 'अघ तीर्थ' पर स्नान करके मुक्ति प्राप्त की।

३ शोणाश्व राजा का एक पुत्र।

४ विष्णु भक्त शिवशर्मन के पुत्र का नाम।

५ मुनिशर्मन नामक विष्णु भक्त के द्वारा पिशाच योनि से मुक्त हुआ एक ब्राह्मण ।

वेदसिनी—सं स्त्री. एक प्राचीन नदी । (पुराण)

वेदसिरस, वेदसिरा—सं. पु. [सं. वेदशिरस्, वेदशिरा] १ वाराह-कल्पान्तर्गत वैवस्त मन्वन्तर में से पन्द्रवें युगचक्र में उत्पन्न एक शिवावतार, जो सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अंतर्भाग में स्थित वेदशीर्ष नामक स्थान पर अवतीर्ण हुआ था । इसका प्रमुख अस्त्र महावीर्य था ।

२ प्राण राजा का पुत्र, एक राजा ।

३ स्वारोचिष मन्वन्तर के विभु नामक इंद्र का पिता ।

४ रैवत मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक ।

५ एक भृगुवंशीय ऋषि, जो मार्कंडेय का पुत्र था ।

वि० वि०—इसकी माता का नाम मूर्धन्या व पत्नी का नाम पीवरी था इसके अनेक पुत्रों का सामूहिक नाम मार्कंडेय था । इसकी तपस्या शुचि नामक अप्सरा ने भग की थी, जिससे उत्पन्न कन्या का हरण यमधर्म ने करना चाहा किन्तु इसके शाप से वह काशी में धर्म नामक नदी बना ।

६ कृशाश्व ऋषि एवं धिषणा का पुत्र, एक ऋषि, जिसे पाताल में नागों से विष्णुपुराण का ज्ञान प्राप्त हुआ ।

वेदसीरस—स. पु. [सं. वेदशीर्ष] सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अन्तर्भाग में स्थित एक स्थान । (पुराण)

वेदस्परस—सं. पु. [स. वेदस्पर्श] कबंध ऋषि का देवदर्श नामक शिष्य एक आचार्य ।

वेदस्म्रति, वेदस्म्रती—स. स्त्री. [सं. वेदस्मृति] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वेदस्री–सं. पु. [सं. वेदश्री] रैवत मन्वन्तर का एक प्राचीन ऋषि ।

वेदस्रुत–सं. पु. [सं. वेदश्रुत] १ वशिष्ठ के पुत्र का नाम ।

२ रैवत मन्वन्तर का एक देव ।

वेदस्रुति–सं. स्त्री. [सं. वेदश्रुति] एक प्राचीन नदी का नाम । (पुराण)

वेदांग–सं. पु. [सं. वेद+अङ्ग] १ वेदों के छः अंगो में से कोई एक अंग ।

वि० वि०—उक्त छः अंगों के नाम निम्नलिखित हैं—

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, ज्योतिष और छन्द ।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावां विरंच जांणें, धूरजटी ताव ऊंच भावां मेर धींग । आवा लोम रिखी रांम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊंच, सांमवेद वेदांगा वीरावी संभूसींग ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ बारह आदित्यों में से एक आदित्य ।

३ सूरज, सूर्य ।

सं. स्त्री.—४ छः की संख्या । * (डिं. को.)

वि०—छः । * (डिं को.)

वेदांणी–सं. स्त्री.—१ दाख, द्राक्ष । (अ. मा.)

२ देखो 'बेनांणी' (रू. भे.)

उ०—धकां पार जोवतां वार लग्गै वरणंतां, तड़ित सार अवतार अणी गुण धार अनंतां । वेदांणी तन मजि रंजि आभीच लगन्नै, घड़े सधर पुळ सज्जि धूप डंबर वासन्नै । —रा. रू.

३ देखो 'विनांणी' (रू. भे.)

वेदांत–सं. पु. [सं] १ चराचर विश्व को एक ब्रह्म एवं अद्वैत मानने वाला एक दर्शन, जिसमें वेदों के चरम उद्देश्यों का वर्णन है ।

उ०—१ वितयौ रांमचन्द्र री ओर, चित म्हारो हो गयौ चकोर । सब ब्रह्मग्यांन, वेदांत विसारचौ, तन मन धन वारचौ ।

—मी. रां.

उ०—२ सिखा फरहरती, उतरासंगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउं जनोइ, सिर भद्रिउं, तिलक वधारिउं, गायत्री साधनु, त्रिकाल-संध्यारावन, प्रभातस्नांन, नित्यदांन, वेद पढइ, वेदांत जांणइ, सिद्धांत वखांणइ, देव तरपण, गुरूतरपण, रिखितरपण, पित्रतर-पण, इसिउ नैस्टिक ब्राह्मण । —व. स.

२ वैदिक सिद्धान्तों का निरूपण व विवेचनकर्त्ता शास्त्र ।

३ ७२ कलाओं में से एक ।

रू. भे.—बेदांत, विदांत, विदांतौ, वेदंत ।

वेदांतसूत्र–सं. पु. [सं.] वेदांतशास्त्र का मूल माना जाने वाला महर्षि वादनारायण कृत सूत्र ।

वेदांती–वि० [सं. वेदांतिन्] वेदांत का श्रेष्ट ज्ञाता; ब्रह्मवादी ।

उ०—राता विखै विकार सूं, आप सवारथी पर हुती । "वील्ह" कहै एक वीनती, विसन टाळि वेदांती । —वील्हौजी

रू. भे.—बेदांती, मदांती ।

वेदांनौ–सं. पु.—१ एक प्रकार का अमरूद विशेष जिसमें बीज नहीं होते ।

२ एक प्रकार अनार विशेष ।

उ०—तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति किण भांति रा सरबत छांणीजै छै । घणैं वेदांनैं, दाड़िम कुळी रा रस लीजै छै । सौ घणी कालपी मिसरी रा भेळ सूं घणी एलची नैं मिरचां रै भेळ बोह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गंगोदक पांणी सूं ऊजळै गळणैं झोळि झोळि झारीजै छै । —रा. सा. सं.

रू. भे.—वेदांणौ ।

वेदात्मा-सं. पु. [सं] १ सूरज, सूर्य।

२ भगवान् विष्णु।

वेदादि, वेदादिबीज-सं. पु. प्रणव ओंकार का मंत्र।

वेदाधिदेव-सं. पु [सं.] ब्राह्मण।

वेदाधिप वेदाधिपत, वेदाधिपति, **वेदाधिपती**-सं. पु. [सं. वेदाधिप, वेदाधिपति] चारों वेदों के माने जाने वाले अधिपति ग्रह।

वि० वि०—ऋग्वेद के वृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल और अथर्ववेद के बुध अधिपति हैं।

वेदार-सं. पु. [स. वेदारः] गिरगिट (डिं. को).

वेदारण-सं. पु. [सं.] दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान।

उ०—दिखण में भीम नदी भीम संकरी कहावै। क्रस्णा वेणी क्रस्णा कहावै। दक्षिण में **वेदारण** तीरथ है। —बां. दा. ख्यात

वेदासवा, वेदास्वा-सं. स्त्री [सं. वेदाश्वा] भारत की एक नदी का नाम। (प्राचीन)

वेदि-वि. [सं. वेदिः] १ पंडित, विद्वान्।

२ देखो 'वेदी' (रू. भे.)

वेदिउ, वेदिओ—देखो 'वेदियौ' (रू. भे.)

उ०—१ रांमा हवइं रुडुं हसिइ, रूठा देव मनावि। बाटइ लागु **वेदिउ**, तुं घर मज्झलि आवि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ रडती रहि रुडुं हसइ, रूठा देव मनावि। बाटइ लागु **वेदिउं**, तूं मंदिर मांहि आवि। —मा. कां. प्र.

वेदिक—देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

वेदिका—देखो 'वेदी' (अल्पा., रू. भे.)

वेदिजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदिन-वि. [सं वेदिन्] १ जानने वाला, ज्ञाता।

२ विवाह करने वाला, दुल्हा।

३ विद्वान्, पंडित।

स. पु.—१ पढ़ाने वाला, शिक्षक।

२ ब्राह्मण या ब्राह्मण की उपाधि।

वेदियौ-सं. पु.—१ वेदों का ज्ञाता, वेदज्ञ, पंडित।

उ०—**वेदिया** ब्राह्मण पांचसइ ए, वेद भणइ दरबारि। गछवासी जती सातसइ ए, सूझतउ ल्यइ आहार। —स. कु.

२ ज्योतिष विद्या जानने वाला, ज्योतिषी।

३ विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला कर्मकाण्डी ब्राह्मण।

उ०—१ सिद्धराव आप रै नांव नवौ वसायौ, नै पूरव सूं बांभण, उदीच **वेदिया** १००० तेड़ाइ नैं गांव ५०० सूं सिद्धपुर दीयौ, गांव ५०० सीहोर रा दीया। —नैणसी

उ०—२ आवइ अेक अगन्योत्तरी वली **वेदिया** व्यास। माई मींटि आपणी, मुनि मूकइ मसवास। —मा. कां. प्र.

३ देखो 'वैद्य' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तुं क्या करी है **वेदिया**, ओखद पांणी देह। हरीया जिन वेदन दई, सारा सोय करेह। —अनुभववांणी

रू. भे.—वेदिउ, वेदिओ।

वेदिल—देखो 'वेदिल' (रू. भे.)

उ०—तूं गोरी मत **वेदिल** होय ओजी राज, इबकै जावां जद सागै लै चालांजी राज। झूटा ढोला झूठ न बोल ओ जी राज, सदाई जावौ थे सागै कदै न लै चालौ जी राज। —लो. गी.

वेदिसद-सं. पु. [सं. वेदिषद] बर्हिषद नामक महाराजा।

वेदी-सं. स्त्री. [सं.] विवाह आदि शुभ कार्यों एवं यज्ञ करने के लिए साफ करके तैयार की हुई ऊंची भूमि, मिट्टी का चबूतरा, चौकी।

उ०—१ अब विवाह को आरंभ भयो। ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आंणि बैठा छै जिसा साक्षात मूरतिवंत वेद। **वेदी** छै सु रतन जड़ित छै। नीला बांस छै। अरजन (अरण ?) कहतां रूपा का कलसा की वेह छै। —वेलि टी.

उ०—२ खट कास्ठें निरदूख खित, आहुत घिरत कपूर। दिब पंडित **वेदी** सद्रढ, सोभत अगनि सनूर। —रा. रू.

उ०—३ व्रति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जड़ित **वेदी** दुति राजै। दिव्य कास्ट खट जाति अदूखति, अगर कपूर घिरत जुत आहुति। —रा. रू.

उ०—४ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सूं लै आवै। **वेदी** जिगां विवाह, साज सुभकार सजावै। ग्रह रेणुका राख, दांत निरमळ कर निरखे। वासण वरतण रगड़, ऊजळां धोरां हरखे। —दसदेव

२ वह अंगूठी जिस पर किसी का नाम खोद कर अंकित किया हुआ हो।

३ वीणावादिनी सरस्वती।

४ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

५ चबूतरा, चौकी।

६ ब्रह्मा का नाम।

७ रहस्य, गुप्त बात।

८ ब्रह्मा की पत्नी।

वि०—१ जानने वाला, ज्ञाता।

उ०—तूं अध्यातम मत **वेदी**, तइं करमप्रकृति सहु छेदी रे। संसार तरी तु बइठउ, सिवमंदिर मांं जइ पइठउ रे। —वि. कु.

२ विद्वान, पंडित ।

३ वेदों का, वेदों से सम्बन्धित ।

रू. भे.—वेदि, वेदी, वेदि ।

अल्पा.,—वेदिका ।

वेदीजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे.)

वेदीतीरथ-सं. पु. [सं. वेदीतीर्थ] कुरूक्षेत्र का एक पुण्यक्षेत्र ।

वेदीसबद, वेदीसब्द—देखो 'वेधीसबद' (रू. भे.)

वेदू, वेदू-वि०—१ वेदज्ञ, वेदों का जानकार ।

२ विद्वान, पंडित ।

सं. पु.—१ ब्रह्मा, विधि ।

उ०—वेदु जटधर चवे वीणती, निरखं मधुवन तणौ निवास । व्रजवासी कयळास वसावौ, विसन अमां दीजं व्रजवास ।

—अग्यात

२ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—अनंत तणौ नहिं अंत नांम लालच गिणि नाहीं, रूप रेख निहीं रंग कहौ हव का हित्त काई । सास अ'स निहिवास वांणि नह खांण न वेदुं, अनंत नांम अकाज आंति नह जाति न भेदुं ।

—पी. ग्रं.

वेदेह—देखो 'विदेह' (रू. भे.)

वेदेही—देखो 'विदेही' (रू. भे.)

उ०—पारब्रह्म राजा वसै, नगर वेदेही मांहि । ग्यांन कुंवर जुग राज पदवी, जुग जुग राज कराहि । —स्रीहरिरांमजी महाराज

वेदोकत, वेदोकति, वेदोकती, वेदोकित वेदोक्त, वेदोक्ति, वेदोक्ती-स. पु. [सं. वेदोक्त, वेदोक्ति] १ वेदवाक्य, वेदवचन ।

२ वेदों में कहे गये मंत्र ।

३ शास्त्रोक्त वचन ।

४ वेदों में वर्णित विधि, वैदिक विधि ।

उ०—१ कजि उदकंजळि सूंज कराए, जमण मितांन कियौ न्रप जाए । वेदोकत मंत्रां सुण वांणी, जळ अंजळि आपी जग जांणी ।

—रा. रू.

उ०—२ ज्यौं रचना न्रप ज्याग री, कौ वरणै कविराव । वेदोकत सासत्र वचन, पगि पगि लगन प्रभाव । —रा. रू.

उ०—३ अढार भार वनस्पती का पत्र फूल फळ, अड़सठ तीरथ का निरमळाचार जळ । राजा 'जैसाह' कन्यावळ कौ संकळप लियौ सौ वेदोकति संसकार करि पार कियौ । —रा. रू.

उ०—४ जू वेदवत भला ब्राह्मण था । त्यां वेद रौ वेदोकित विचारचौ वात पणि कही चाहीजै अर मन मांहै भय उपनौ छै । मत वसदेवजी बुरौ मांनै पणि जरूर हुई । —वेलि टी.

उ०—५ ब्रह्म-कवच पंजर-विसन, रक्षा-रांम उचार । वेदोक्ती सूं ब्राहमण, आसीसै अणपार । —रा. रू.

रू. भे.—विदोगत, विदोगति, विदोगती, विदौगत, विदौगति, विदौगतो, वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती ।

वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा नारद करै वेदोगत, चंवरी होम कटक चढियौ । फिरियौ नहीं उवर खत फाटै, फेरा कमध इसा फिरियौ ।

—बलू चांपावत री गीत

उ०—२ वेदोगत धरम विचारी वेदविद, कंपित चित लागा कहण । हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पांणिग्रहण । —वेलि

उ०—३ सेतरांम संभ्रमी, इळा ऊठियै कनूजा । जगत जात रिण-छोड, कीध वेदोगति पूजा । चाम्रोडौ परचाड, वहै लाखो फूलांणी । धारां धड ऊतारि, चाडि राठौड़ां पांणी । —गु. रू. बं.

उ०—४ सतियां 'आंम' सहेत, दाग वेदोगति दीधा, केसरियां कमधजां, करै अत उच्छब कीधा । वड चांपावत 'बलू', कमध 'भाऊ' कूंपावत, अवर भींच उमराव, रोस भरिया बहु रावत । —सू. प्र.

वेदोधनि, वेदोधनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोधर-सं. पु. [सं] ब्रह्मा, विधि, विरंचि ।

रू. भे.—बेदोधर ।

वेदोधरम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

वेदोधुण, वेदोधुणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी—देखो वेद-ध्वनि' (रू. भे.)

उ० -१ आंमना चत्र वेद ब्रहमांणयं विप्रयं, रुघ जुज्जर सांम अथरवणयं जपयं । वेदोधुनि जै जै सब्बदयं वणयं, गुंजार रव भेर पडंसदयं घणयं । —गु. रू. बं.

उ०—२ दियै रिख संग आहुति देवंस, मेवा घ्रत होमै असि सुमंस । निधूम अगनि विप्रां मुखनाद, वेदोधुनि ज्वाळा लागौ वाद ।

— रांमरासौ

उ०—३ वधाई वाजा रा जहुग्रार, चत्र विध मंगळ मंगळचार । वेदोधुनि विप्र तणै चत्र विधि, सुर नर नाचै देव प्रसिधि ।

—रांमरासौ

वेदोधम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

उ०—वेदोध्रम रिख्या रांम विचारि, विग्रारै आस्रम ध्रम चिग्रार । दया द्रुम ध्रम रघुपति देखि, पदारथ च्यार छीया फळ पेखि ।

—रांमरासौ

वेदौध्वनि, वेदोध्वनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोपनिसद-सं. पु. [वेदोपनिषद] एक उपनिषद का नाम ।

वेदौ—देखो 'वेदौ' (रू. भे.)

उ०—तौ पिण स्वामीजी रात्रि मैं बखाण वांचें जठै वावेचा ढोलक बजावै । गावै । बखांण मैं विघ्न पाड़ै । जद भायां कह्यो —म्हा-राज दूजी जायगां उतरौ। स्वांमीजी बोल्या— खेतसीजी नव दिक्षित है सौ देखां परीखह खमवा किसायक सेंठा हैं । कितरायक दिना वेदौ कियौ पछै वावेचा लातर गया । पयूखणां मैं इंद्रध्वज काढयौ । स्वांमीजी रा मूंढा आगै घणी वेलां ऊभा रही गावै बजावै तांन करै । जद केइ स्रावक वावेचा सूं वेदौ करवा लागा । जद स्वांमीजी कह्यौ—**वेदौ** मत करौ । —भि. द्र.

वेधंगी—देखो 'वेधांगी' (रू. भे.)

वेध-वि० [सं] १ जो जानने के लिए हो, ज्ञातव्य ।

२ जो बताने या सिखाने के लिए हो ।

३ जो विवाह करने के लिए हो ।

सं. पु.—१ ग्रहों का किसी ऐसे स्थान अर्थात् नक्षत्र में पहुँचने की क्रिया जहाँ से उसका किसी दूसरे ग्रह में सामना होता हो। (ज्योतिष)

२ यंत्रों आदि की सहायता से ग्रहों नक्षत्रों, तारों आदि को देखने की क्रिया ।

३ तीव्र प्यास, बहुत तेज प्यास ।

उ०—एहरइं **वेध** न लागइ ए, आगइ ए अंगि न अंगि । त्रटकै ताहरै त्रासि सिइ जाइ सिइ गिरिवर स्रंगि । —जयसेखर सूरि

[सं. वेधः] ४ छेदने की क्रिया, छेदन ।

५ घाव ।

६ छेद, छिद्र ।

[सं. वेधस्] ७ सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।

८ भगवान् विष्णु।

९ शिव शंकर, महादेव ।

१० सूरज, सूर्य ।

११ पंडित, विद्वान ।

१२ दक्ष एवं प्रजापति ।

१३ अर्क, आक, मदार ।

१४ यंत्रादि से ग्रह, तारा, नक्षत्रादि को देखने की क्रिया ।

१५ आकर्षण, मोहकता ।

उ०—मुक्ति रमणि जांणी करी तै ऊपरि थयूं चित्त । **वेध** लागउ तेहनइ घणउ, नांम समरइ रे तेहनूं नित कि । —नळदवदंती रास

१६ कळह, झगड़ा ।

उ०—१ कळि लागी मुग्गळां. तांम हसियौ जोगणपुर । वसूं हुवै घर **वेध**, अगै विढिया पांडव-कुर । —गु. रू. बं.

उ०—२ वंसी वधंति बहुअं, अंतर गति गंठि **वेध** उतपन्नौ । संजोगि अगनि पतंगी, प्रजळयं अप मज्झेण । —गु. रू. बं.

उ०—३ बोलै इण पर खांन तहव्वर, बांण-मथांण हुवण दिल्ली घर । पख हिंदू अम थया प्रमेसर, आदरयौ घर **वेध** अकब्बर ।

—रा. रू.

उ०—४ चिगतां उवेल पखरै चरित, रखबै मेळ अमेळ रुख । वध **वेध** वळै खळ वांस ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख । —रा. रू.

१७ वैमनस्यता, शत्रुता ।

उ०—तिण दिन सोनगरा पिण राव रिड़मल मारिया छै, धणलै वसंता थकां । तठा पछै मंडोवर पायौ । सोभत रांणै आपरी तरफ मुं दीवी छै । तठा पछै कितराहीक दिनां रांणै मोकळ नै सीसोदिया चाचै-मेरा **वेध** बांधियौ । —नैणसी

१८ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—१ पड़ै **वेध** कूरमज्रदे रांण छळ 'पौथलौ', खळां सर वीज जिम बहै खवतौ । जागरण भड़ाभड़ छूट गोळा जठै, रुक झड़ डंडै-हड़ रमै रवतौ । —बखरांम रावळ

उ०—२ बकती मुख सावळ देव वळी, कळपै चारणी गत हंस कळी । लग **वेध** अमीणिय वेन लए, दुलहा सुण देवल साद दए ।

—पा. प्र.

उ०—३ यूं करता, दोनूं भायां आपस मैं दूदै अर भोज वडौ **वेध** पड़ियौ । ताहरां राव सुरजन वेटा वेऊं तेड़िनै कह्यौ—'थै मो ऊपर फिरिया । थै म्हारौ कह्यौ न मांनौ । म्हैं राज सूं कोई कांम नहीं ।

—नैणसी

उ०—४ वीतां अधूरां वार पूरां **वेध** सूरां वच्चए; सेलै प्रहारं धार सारं मार मारं मच्चए । वग्गा खड़ग्गै दुहुँ वग्गै काळरंगै वीरयं, अखरां उमंगै दूर अंगै चाव रंगै चीरयं । —रा. रू.

रू. भे.—वेधा, वेद, वेवस, वेधा, वेधि, वेधौ, वेह।

वेध, वेधअ - देखो 'वेवेअ' (रू. भे.)

वेधक-वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला।

२ जानकार, विद्वान, पंडित ।

उ०—जै **वेधक** सहु वात ना रे, गुण रस जांणइ खास । मूरख पसु जांणइ नहीं रे, सेलड़ी कड़व मिठास । वि. कु.

सं. पु. [सं. वेधकं] १ धनिया ।

२ कपुर ।

३ एक नरक का नाम ।

वेधकारी-वि०—१ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—पढावै कुरांणां तिकां पढावै काजियां पूजा, सुरांणां पुरांणां वेन ब्रहमांणां सेव । राजा तणौ छत्रधारी खागधारी राजहंस,

दांणवां सूं वेधकारी अवत्तारी देव ।
—महारांणा स्रीजयसिंहजी (दूसरा) रो गीत

२ मारने वाला।
३ संहार करने वाला, नाश करने वाला।

वेधड़क—देखो 'निधड़क'।

वेधणी—देखो 'वेधनी' (रू. भे.)

वेधणौ–वि० [स्त्री. वेधणी[१ युद्ध करने वाला, योद्धा।
२ नाश करने वाला, संहार करने वाला।
३ मारने वाला, वध करने वाला।

वेधणौ, वेधबौ–क्रि. स. [सं. वेधनम्] १ नाश करना, संहार करना।
२ मारना।
उ०—१ वडा खळ वेधत साबळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कपि लाह। जुड़े धज सेल पड़ै जवनेस, दखै रवि तांम भोका 'मुकंदेस'।
—सू. प्र.
उ०—२ वांनरपति विख्यात वर, वेध्यु जांणी वालि। सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइं तिणि तालि।   —मा. कां. प्र.
३ चीरना, फाड़ना।
४ छेद करना, छेदना; भेदना।
उ०—१ सिलहांण अंगांण वेधांण सरां, पखरांण केकांण अभीच परां। अति सोण उफांण धरांण धसी, जगचख्ख उगांण क्रनांण जिसी।   —सू. प्र.
उ०—२ कपि कटक हूचक कटक दैतक, उरक वेधक सरक अंतक। अंतक तक भड़ भचक इक इक, पड़ि जरक मुद गरक पासक।
—सू. प्र.
उ०—३ बैं बै कबांण भूथांण बंध, असमांन छिबत रोसांण अंध। चख मछी रंध्र छेदै चकास, उड़ता विहंग वेधै अकास। —वि. सं.
५ युद्ध करना, संग्राम करना।
६ तोड़ना।
७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहूंचना जहां से उनका किसी अन्य ग्रह में सामना होता हो।
उ०—१ गजरा नवग्रही प्रोचिया प्रोचै, वळै वळै विधि विधि वळित। हसत नखित्र वेधियौ हिमकरि, अरध कमळ अलि आवरित।
—वेलि
उ०—२ दूलह सधीर विच दीपियौ, हीर जिहा गुण उज्जळां। रिख व्रंद सतै किर वेधियौ बीज चंद्र बाधै कळां।   —रा. रू.
८ यंत्रों आदि की सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों, और तारों आदि को देखना।

वेधणहार, हारौ (हारी), **वेधणियौ**—वि०।
वेधिअोड़ौ, वेधियोड़ौ, वेध्योडौ—भू० का० कृ०।
वेधीजणौ, वेधीजबौ—कर्म वा०।
वेधणौ, वेधबौ, वेदणौ, वेदबौ, वेहणौ, वेहबौ—रू. भे.।

वेधनी–सं. स्त्री. [सं.] १ हाथी के कानों को वेधने का एक औजार विशेष।
२ मोती आदि वेधने का उपकरण विशेष।
३ अंकुश।
रू. भे.—वेधणी।

वेधय, वेधयण—देखो 'वेधेग्र' (रू. भे.)

वेधरम—१ देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)
२ देखो 'अधरम' (रू. भे.)

वेधस–सं. पु. [सं. वेधसं] १ हथेली के अंगूठे की जड़ के पास का स्थान जिसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं।
२ अंगिराकुलोत्पन्न एक मंत्रकार।
३ देखो 'वेध' (रू. भे.)
रू. भे.—बेधस।

वेधसी–सं स्त्री. [सं.] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वेधांगी–सं. पु. [सं.] योद्धा, वीर।
रू. भे.—वेधंगी।

वेधांणौ—देखो 'वेध' (१, २) (रू. भे.)
उ०—राजा भूलरि रांणिया, सोहै ईहीं भंति। किरि वेधांणौ किरतियां, चंदो पूनम रति।   —गु. रू. बं.

वेधा–सं. पु. [सं.] १ दक्ष आदि प्रजापति। २ राजा हरिश्चन्द्र का पिता। ३ अंगद के एक पुत्र का नाम।
४ देखो 'वेध' (रू. भे.)   (नां. मा., ह. नां. मा.)

वेधाता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

वेधातिथ, वेधातिथि–सं. स्त्री. [सं. वेधातिथि] वह तिथि; जिस दिन सूर्यादि नक्षत्रों एवं लग्न का नक्षत्र एक ही रेखा अर्थात् एक ही सीध में हो।
वि० वि०—सूर्यादि नक्षत्रों एवं लग्न के नक्षत्र के एक ही सीध में होने पर वेध होता है इसमें विवाह वर्ज्य है।

वेधाधि, वेधाधी–सं. स्त्री.—सरस्वती, भारती।
रू. भे.—बेधाधी।

वेधि—देखो 'वेध' (रू. भे.)
उ०—भमरडउ मरिवा अणबीहतउ, पसरि पइसइ केतकिई हंतउ, कठिन कंटक कोडि कुटीरडइ, पडिउ वेधि पछइ पुणि आरडइ।
—सालिसूरि

वेधित—देखो 'वेधियोड़ौ'।

वेधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ. २ मारा हुआ. ३ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. ४ छेद किया हुआ, छेदा हुआ, भेदा हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ. ६ तोड़ा हुआ. ७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुंचा, हुआ होना कि जहां से उनका किसी अन्य ग्रह से सामना हुआ हो. ८ यत्रों आदि की सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों, तारों आदि को देखा हुआ।

वेधी–वि० [सं. वेधस्] १ पंडित, विद्वान। (ह. नां मा.)

२ शत्रु, दुश्मन। (ह. ना. मा.)

उ०—दत कवि पळ मिळ खित दुनियां, वेधी जळ जवास विध। खेधी खेह वळ छळ खागां, सोभा मिळ अखाड़ सिघ।

—महाराजा मांनसिंघ रौ गीत

३ सयोगी जन।

उ०—करडा, तूं मनि रूअड़उ, वेध्यां करइ विछोह। अजइ कुआ-रउ वप्पड़ा, नहीं ज कांमिण मोह। —ढो. मा.

४ युद्ध करने वाला, संग्राम करने वाला।

वेधीलौ–वि० [सं. वेध+रा. प्र. इलौ] युद्ध करने वाला, वीर. वहादुर, योद्धा।

उ०—वागड़ रै कांठ चहुवांगा भड किवाड रजपूत वेधीला छै सू धणिवां रै नै चहुवांगां रै रस थोडा दिन हुवै छै। तद मारवाड़ रा रजपूतां नूं वडा वडा पटा देनै सदा बागड़ रै राजथांन वाम राखै छै। —नैणसी

वेधीसबद, वेधीसब्द–सं पु. [सं. शब्द+वेधी] अर्जुन। (ह नां. मा)

रू. भे.—वेदीसबद, वेदीसब्द।

वेधेअ, वेधेअण, वेधेय, वेधेयण–वि. [सं वेधेय] मूर्ख. नासमझ, वेवकूफ। (अ. मा.)

रू. भे.—वेधअ, वेधअण, वेधय. वेधयण।

वेधौ–सं. पु.—१ शंका. संशय, संदेह।

उ०—हुऔ रांम दुजरांम, व्रह्म रै मन मां वेधौ। फरसी साठी फरसि, खरौ खत्रियां सिर खेधौ। —पी. ग्रं.

२ देखो 'बेदौ' (रू. भे.)

उ०—राजा ईग्रां रौ वेधौ सुणे. अवोलीअ रह्या। तरै सारौ ही दन उदमाद सूं काट सांझ रै वखत सवागढ आय, इग्रां अहुं जणां सहत दाखलं हुआ।

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री बात

३ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—वेधौ दुंद न वीसरै, 'चद' तणौ हरनाथ। पंथ अळगौ लंघता, लारालग्गौ साथ। —रा. रू.

वेध्या–सं. पु. [सं. विधाता] ब्रह्मा, विरंचि।

उ०—वेध्याइ याह्नि वदन ज रचिऊं, त्याहारि सार इंहु नूं हरिऊं। तर लोधी तांहां खाण थई लि, मुख मनोहर करिऊं। —नळाख्यांन

वेन–सं. पु. [सं.] १ चाक्षुप मनु एव नड्वला के वंशज महाराज अग और सुनीथा (जो कि मृत्यु अधर्म की मानस पुत्री थी) के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो सूर्यवंशी राजा प्रथु का पिता था।

वि० वि०—कहीं-कहीं पर इसे तेईसवां वेदव्यास एवं कर्दम के पुत्र अनग का पुत्र भी कहा गया है। इसका पालन-पोषण इसके मातामह के घर हुआ था। यह बचपन मे ही दुष्ट एवं दुष्टप्रकृति के स्वभाव वाला था अतः बच्चों व जानवरों का गला दबा कर हत्याएं खूब करता था। इसी क्रूरता के कारण इसके पिताजी अंग देश छोड़ कर चले गये। तत्पश्चात् इसे राज्यपद प्राप्त हुआ और दुष्टता आदि में भी अत्यधिक वृद्धि हुई। इसी कारण से ऋषियों ने कुशत्रण से इसका वध कर दिया किन्तु अनग के दूसरी सन्तान न होने के कारण राज्य-सिंहासन खाली रहता था अतः राज्य में आतंक बढा। तब ऋषियों ने इसकी जांघ को मथा, तब एक श्यामवर्ण. नाटे कद का एवं कुरूप व्यक्ति निकला जिसे ऋषियों ने निषाद अर्थात् बैठने के लिए कहा इसलिए इसका नाम निषाद ही रखा गया। फिर इसके दोनों हाथों का मंथन किया गया, जिनसे एक स्त्री एवं पुरुष निकले। पुरुष को (जिसका नाम प्रथु रखा गया था) विष्णु अवतार एवं स्त्री को लक्ष्मी का अवतार माना गया।

२ वैवस्त मनु के दस पुत्रों में से एक।

३ देखो 'वहन' (रू. भे.)

रू. भे.—वेंण, वेन, वेंण।

वेनड़, बेनड़ौ—देखो 'वहन' (अल्पा., रू. भे.)

वेनट—देखो 'वेनट' (रू. भे.)

वेनतनय–सं. पु. [सं. वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड़। (ना. डिं. को.) [सं. वेनतनय] २ सूर्यवंशी राजा पृथु।

वेनतियाइत–सं. पु. [सं. वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड़।

वेनती—देखो 'विनती' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवर तौ हालण नै तयार हुवौ छै। अबै कुंवर आप रौ साथ तैयार कर नै राजा सौं वेनती कीवी, कही, "जौ माहाराज, मनै मेलजै। हुं साह नुं पण लै आईस अर समुद्र पण देख आईस।'

—वीजड़ वीजोगण री बात

उ०—२ अर हूं तौ बीजै कांम आया छां। ताहुरां जैत कहियौ 'रावजी कहौ जिम थांहरी वेनती राजा सौं करां। इतरा दिन किम

कहियौ नहीं ?" ताहरां राव कहिया, 'जु रांणी दहड़ कहायौ छै, नरसंघ री सगाई करौ तौ थां कनै रांहणी आवै। राजा सौं आ वीनती करौ।' —राजा नरसिंघ री वात

बेनवा—देखो 'बेनवा' (रू. भे.)

बेनसीब—देखो 'बेनसीब' (रू. भे.)

बेनसुत–सं. पु. [सं.] अंग एवं सुनीथा के गर्भ से उत्पन्न वेन राजा का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा।

रू. भे.—बेणसुत, वेणसुत।

बेनांणी—१ देखो 'बैनांणी' (रू. भे.)

उ०—राजद्वार कोठार, जीण सालां काढीजे, जरद जरद्दी घडै, लोह लोहे कूटीजै। बेनांणी वेगळा, वाढ घालै केवांणां, कूंत बांण कीजंति, अणी तीखा खुरसांणां। —गु. रू. बं.

उ०—२ रांमण ताड़ सराड़ छड़ अधसळा रेही, दीप दिसावरि नींपनी बेनांणी गेही। सुध गज-बेल हलूळ फळ अहिडंभज नेही, 'अचळै' खांन घमोड़िया उणहारी ऐही। —मालो सांदू

२ देखो 'विनांणी' (रू. भे.)

बेनो—देखो 'बेणी' (रू. भे.)

बेनियौ–सं. पु.—बंबूल की पतली टहनियों की छाल।

बेनीत—देखो 'बेनीत' (रू. भे.)

बेनु—देखो 'वेणु' (रू. भे.)

बेनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बेपतरो—देखो 'बेपतरौ' (रू. भे)

बेपरवा—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे.)

बेपरवाई—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

उ०—बेपरवाई पतसाह, मनवा मतवाळा। सतगुरु हेरदै सबद का, भर जोर पयाळा। —केसोदास गाडण

बेपरवाह—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे.)

बेपरवाही—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

बेपाक—देखो 'बेपाक' (रू. भे.)

बेपार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

२ देखो 'बेपार' (रू. भे.)

उ०—हुए हक्क सूरां उठी मेर हक्कां, करै भूत वेताळ चंडी किलक्कां। करै जोर प्राहार बेपार कुंतां, दियै जुद्ध जांणै भ्रगू सिंभु दूतां। —रा. रू.

बेपारहु—देखो 'बेपारहु' (रू. भे.)

बेपारहो, बेपारियौ—देखो 'बेपारियौ' (रू. भे.)

बेपारी—१ देखो 'दोपारी' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

बेपीड़, बेपीर—देख बेपीड़' (रू. भे.)

उ०—किरपण माया कारणै, सुख दुख सहै सरीर। जनहरिया हरि नांव धन, पाया सुं बेपीर। —अनुभववांणी

बेपुड़ि, बेपुड़ी—देखो 'बेपुड़ी' (रू. भे.)

उ० सु मेघ कौ आड़ग जांणै जोगिणी आवी छै। रत कहतां लोही वरसती बेपुड़ी कहतां वादल की पणि बेपुड़ी बहै छै। सु दौवड़ा वादळ आंम्हां सांम्हा हूया। —वेलि टी.

बेपूठ–वि०—विमुख।

उ०—जनहरिया संसार मैं. सुख दुख दोऊं झूठ। जब तैं सुख अर दुख गिनैं, तब हरि तैं बेपूठ। —अनुभववांणी

बेपोहर—देखो 'बेपोहर' (रू. भे.)

बेपोहरो—देखो 'बेपोहरो' (रू. भे.)

बेफरवांण, बेफरवांणी–वि० [फा. बे.+फर्मान] बिना आज्ञा, बिना हुक्म, बिना आदेश।

उ०—हींदू घाव करै अजीया सिर, हरि सुं बेफरवांणी। खावै स्वाद करै मुख सेती, जीव दया नही जांणी। —अनुभववांणी

बेफाड़, बेफाड—देखो 'बेफाड' (रू. भे.)

उ०—करै एक एकां धकै जत्र कत्रं, पड़ै हाथ जांणै झडै ताडपत्रं। किता सीस बेफाड़ चौफाड़ केतां, जपै रूप लेखै कवी ओप जेतां। —रा. रू.

बेफार—देखो 'बेपोहर' (रू. भे.)

बेफारो—देखो 'बेपोहरो' (रू. भे)

बेफिकर—देखो बेफिक्र' (रू. भे.)

उ०—मन अकबर मजबूत, फूट हींदवां बेफिकर। काफर कोम कपूत, पकडूं रांणा प्रतापसी। – दुरसौ आढो

बेफिकरी—देखो 'बेफिक्री' (रू. भे.)

बेफिकरौ, बेफिक्र—देखो 'बेफिक्र' (रू. भे.)

बेफिक्री—देखो बेफिक्री' (रू. भे.)

बेबगत—देखो बेवक्त' (रू.भे.)

बेबस—देखो 'विवस' (रू. भे.)

बेबसी—देखो 'बेबसी'(रू. भे.)

बेबांण—देखो 'बेबांण' (रू. भे.)

बेबार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बेबाह—१ देखो 'बेबाह' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बेबुद्धि, बेबुद्धी—देखो 'बेवुद्धि' (रू. भे.)

बेबुनियाद—देखो 'बेवुनियाद' (रू. भे.)

बेभव—देखो 'वैभव' (रू.भे.)

बेभू—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

बेभाव—देखो 'बेभाव' (रू. भे.)

बेम-सं. पु. [सं.] १ वेग, जोश।

उ०—ताहरां पछीत खोदणौं वैठै नीचींत थको खोदै छै। खोदतै खोदतै गली की जिसडी मैं माथौ मावै। खीवौ तरवार काढिनै बैठौ छै। माथौ आघौ करै माथै मैं तरवार री चूं। इंण आंगुली घाली करि नै जोयौ। जोइनै खणौतरा रै माथै हांडी देइ नै आवौ कीयौ। तितरै खीवै बेम भरी नै तरवार बाही सु हांडी उपरा बाजी। सू हांडी फूटि गई। —चौबोली

२ बार, दफा, मर्तबा।

३ देखो 'बेम' (रू. भे.)

उ०—ताहरां सांगमरावजी अमल कर घोडी ऊपर चढिया, ताहरां खुरी कीवी। घोड़ी हुती सु नहीं। ताहरां सांगमरावजी विसनदास नूं कहायौ। कह्यौ-घोड़ी व्याई। कूंड़ कियौ ? बेम उरहो मेल्हौ। ताहरां विसनदास सांगमरावजी नूं कहायौ-थें वेहनेई छो तीयें कारण आसंगौ कियौ। बेम देवा नहीं। ताहरां सांगमरांव मांनी नहीं नै लड़ण नूं चढियौ। ताहरां आचांनण सांगमरावजी नूं कहियौ—जु राज! चढीजै नहीं। घोड़ी रो बेम हूं लै आईस। —नैणसी

बे'म—देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—१ आडां रै आगळ जड़नै बेटौ होळै होळै कैवण लागौ-म्हनै उखरड़ी माथै अेक मोहर चमकती दीसी। पण सांमी ई वै लोग निपटनै आवता हा। जे लुळनै मोहर उठावूं तौ वांनै तुरत बे'म व्हैतो। —फुलवाड़ी

उ०—२ पण म्हांरा करार रौ निबळा सेठां नै कांई वेरो! धग्गड़ अळगा वगाय नोड़िया मैं जरू करघोड़ी गांठड़ी बारै काढी। बांणिया री जात किसी चात्रंग! केड़ा पूर में हीरा-मोती लुकाय राखै। कोई बे'म करै तो करै इज कीकर! —फुलवाड़ी

उ०—३ अर अठी हथ-ळेवा री वगत वींदराजा नै औ बे'म व्हियौ के हाथ री ठौड़ कठैई गुलाब रौ कंवळौ फूल तो नीं आयग्यौ। वींदणी री खुली आंख्यां रै सांम्ही सपनां री कावड़ घूमण लागी जकी घूमती ई गी। —फुलवाड़ी

बेमजी—देखो 'बेमजी' (रू. भे.)

बेमन—देखो 'बेमन' (रू. भे.)

बेमांणिक, बेमांणिय, बेमांणी, बेमांणीक, बेमांणीय, बेमांनिक—देखो 'वैमांनिक' (रू. भे.)

उ० १ भुवनपति वीस इंद्रै मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार। जोड सहुदस बेमांणिय जुडयाजी, चौसठ इंद्र सुविचार। —वृस्त.

उ० २ —अनुरादिक दस होय वांण व्यंतरिया अट्ठ, जोइस पंच बेमांणिय दुविहा सुत्तै दिट्ठ। पनरै भेदै सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनुमांनादिक हिव एहनो कहिमूं अविकार। —वृस्त.

बेमाता, बे'माता-सं. स्त्री. [सं. विधाता] १ विधाता, ब्रह्मा।

[सं. वृद्धिकामाता] बच्चे के जन्म के बाद छठी रात को भाग्यलेख लिखने वाली एवं बच्चे को स्वरूप प्रदान करने वाली एक प्रकार की काल्पनिक देवी।

उ०—१ सेठां रै बेटा रौ हूबोहूब आप सूं उणियारौ मिळै। बेमाता री कुदरत। खुद सेठ देखता तौ ई ओळख नीं सकता। अबै वातां करचां सावळ ठा पड़गी कै उणियारौ तौ अवस मिळै पण आप दूजा हौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ बेमाता ई माव लखणां बायरी दीसै कै रूप अर रीस नै अेकठ क्यूं करी। सगळौ रूप रौ जांणै मठ मार दियौ। रांणीजी कना सूं पग नीं पकड़ाऊं तौ म्हैं राजा रौ कंवर नीं। —फुलवाड़ी

उ०—३ अर परतख दीखण मैं दस बरसां जितौ लांठौ। बेमाता अणूंती निकमी वेळा मैं अणूंता कोड-मोद सूं घड़चौ। खांधै रळ-कंतौ काळै केमां रौ चीकणौ भड़ूलौ अेड़ौ लागतौ जांणै बरसां लग मकरांणा री सिलाड़ी माथै घोट्योड़ौ काजळ घटा बणनै लूंमै। —फुलवाड़ी

उ०—४ बेमाता नै रीस तौ घणी ई आई। पण जोर कांई करती लाचार होयनै जवाब दियौ—म्है सेठ रा बेटा रै जलम रा आंक लिखण वास्ते आई हूं। वेगी आगळ खोल, वेळा टळै। —फुलवाड़ी

उ० ५ बेमाता आखती पड़ती थकी बोली—म्हैं कोई ठाली नी भटकिया करूं। छटी री रात म्हैं सेठां रै बेटा रा भाग मैं आखर घालण सारू आई हूं। —फुलवाड़ी

वि० वि०—लोक में 'बेमाता' शब्द अति प्रचलित है। जिसका प्रयोग बच्चे के जन्म का विधान करने वाली देवी तथा जन्म की छठी रात बच्चे की भाग्य-लिपि लिखने वाली एक मातृ-देवी के अर्थ में किया जाता है। इस बेमाता (रूपा०-बीमाता) शब्द की व्युत्पत्ति सं. 'वृद्धिकामाता' से हुई है। इस सम्बन्ध में डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का अभिमत ज्ञातव्य है—

'आर्यवती और आर्यवृद्धा देवी एकही होनी चाहिए। यह देवी कौनसी थी, इसके सम्बन्ध में यह सम्भावना प्रतीत होती है कि जिसे

आज-कल लोक में 'बिहाई' (वृद्धाआर्या) या 'बीमाता' (वृद्धिकामाता) कहते हैं, वही 'आर्यवृद्धा' होनी चाहिए। लोक में विश्वास है कि वेमाता बच्चे को देखने के लिए छठी पूजन की रात मे अवश्य आती है और उसके भाग्य का शुभाशुभ फल अवश्य लिख जाती है। इसी लिए उस रात जागरण आवश्यक माना जाता है। उसे ही षष्ठी जागरण कहते हैं ''

इससे स्पष्ट है कि 'वेमाता' (वृद्धिकामाता) और 'बिहाई' (वृद्धाआर्या) एक ही देवी के नाम हैं, जैसा कि विद्वान डा० अग्रवाल ने सुझाया है। दोनों का व्युत्पत्ति क्रम इस प्रकार रहा होगा:—

बेमाता=वृद्धिकामाता=विद्धिआमाता =बिहिआमाता=बिहीमाता=बिईमाता=बीमाता=बेमाता।

बिहाई=**वृद्धाआर्या**=वृद्धांआर्यिका=विदाइया=बीधाइया=बीहाई=बिहाई। आर्य वृद्धा का उल्लेख कादम्बरी में तथा आर्या व वृद्धा के नाम से वन पर्व में भी आया है।

रू. भे.—बेमाता, बेहमाता, बिहाई बिहाईमाता, वेहुमाता, वैमाता वैमाता, वैह।

वेमार—देखो 'बीमार' (रू. भे.)

उ०—पातसाह महमंद वडो धरमात्मा हुवो। अो अोखदां री हाट ४ मंडावी, वैद्य राखिया। **वेमारां** नूं दारू धरम रो दीजै। रोगियां नूं खावा नूं दीजै ओढण विछावण दीजै। —नैणसी

वेमारी—देखो 'बीमारी' (रू. भे.)

वेमालूम—देखो 'बेमालूम' (रू. भे.)

वेमिळावट—देखो 'बेमिळावट' (रू. भे.)

वेमुख—१ देखो 'बेमुख' (रू. भे.)

२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया मांस मसांण है, भूत राकसी खांण। सोई भखै विनादमी, **वेमुख** वडा अजांण। —अनुभववांणी

उ०—२ जाग्या सोई जांणियै, हरिया हरि के हेत। हरि **वेमुख** सुं जागिया, ता मुख पडसी रेत। —अनुभववांणी

उ०—३ गुर दरसन परमन नही, हरिया **वेमुख** जांनि। अंधा नर वेवै नही, पीपल बाधी तांनि। —अनुभववांणी

उ०—४ हरीया करणी क्या करै, गुर सुं **वेमुख** थाय। तोरै तूटी वरत ज्युं, खबड़खत को जाय। —अनुभववांणी

उ०—५ वाकुं आर पार नही कोई. रह्या रांम सुं **वेमुख** सोई ब्रह्म विचार भया जन पारा, और रह्या वार का वारा।

—अनुभववांणी

वेमू-सं. स्त्री—वह गाय, भैंस आदि पशु जो प्रसव देने वाले हों।

वेय—१ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म **वेय** उच्चरैय, गीत तुंबरु गावै, रंभा अवसर रमै, वीण सरसत्ती बजावै। सिव अवलोकण करै, इंद्र सिर चम्मर ढाळै। व्यास उकति बरनवै, पांउ गंगा पख्खाळै। —अलुनाथ कवियौ

२ देखो 'बेय' (रू. भे.)

वेयकाल-सं. पु. [सं. वेद काल] भोगने का समय। (जैन)

वेयड्ढ, वेयड्ढह, वेयड्ढ-सं. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—१ अरजुनु बोलइ चरु भंडारी, पाछइ आवइ लउ उपगारि। खेचरु बोलइ सांभलि सांमि, गिरि **वेयड्ढ** सुणीइ नांमि।

—सालिभद्रसूरि

उ०—२ गिरि **वेयड्ढह** तलि गयऊ, पणमिउ नाभि मल्हारु। निव मणिचूडह राजु दिइ, पहिलउ एउ उपकारु। —सालिभद्रसूरि

वेयण, वेयणा, वेयणि, वेयणी—१ देखो 'वचन' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ दस मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणंति। कठिण **वेयणि** कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसंति। —वेलि

उ०—२ ए जु भमर बोलिबा नै मणाणाट करै छै। सु मांनुं गरभवती व्याकुळता जणावै छे। जब **वेयण** लागे छै प्रसूत हुइवा की तब गरभवती कूजे छै। विलाप करै छै। सु ए कोकिला बोले। सोई मांनूं वनसपती नैं **वेयण**लागी छै। अर कूजै छै। इहि समै वनसपती वसंत जायो। —वेलि टी०

उ०—३ लाख जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तणां दुक्ख तिणि न कहाइं। नरय **वेयण** जो कहइ विचार, केवल नांणी न जाइं पारि।

—वस्तिग

वेयरणी—देखो 'वैतरणी' (रू. भे.) (जैन)

वेयविअ, वेयविय, वेयवी—देखो 'वेदविद' (रू भे.) (जैन)

वेयहद, वेयहदी—देखो 'वेहद' (रू. भे.)

उ०—न को जोग जुगता न को जत जोखा, न को सात सुखं न को दसदोखा। न को मनवाचा न को स्वाल सबदी, न को हृदि मांही न को **वेयहदी**। —अनुभववांणी

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

वेयाळ, वेयाल—१ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेताळ' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

वेयावच, वेयावच्च-वि० [सं. वैयावृत्य] १ वयोवृद्ध, गुणवृद्ध।

२ देखो 'वैयावच्च' (रू. भे.)

उ०—१ **वेयावच** दस प्रकारनी, करजौ चित्त लगाय। कांइयक रसायण ऊपजे, दुख दालिद्र दूरै जाय। —जयवांणी

उ०—२ पीठी न करावै अंग; ग्रही **वेयावच** संग। करै करावै नहीं ए, जात न जणावै सही ए। —जयवांणी

उ०—३ संसार तारण दु कांवली, चउथौ व्रत देह दस्तार रे। अ-खोड आंबिल निम जांणवी, कल (इ) य **वेयावच्च** सार रे। —कवि कुसललाभ

उ०—४ भली साधवी यसोभद्रा, पालइ पंचाचार रे। विनय **वेयावच** करइ वारु गिणइ गुरुणी नी कार रे। —स. कु.

उ०—५ आपणा जांणपणा नें आगलैं, गिणु न केह नें गांन। विनय **वेयावच्च** नहींय विवेकना, अति मोटौ अभिमान। —ध० व० ग्रं.

वेर-सं. स्त्री. [सं. वेरः] **१** शरीर, बदन, देह।

२ शत्रु, दुश्मन।

३ विलम्ब, देर।

उ०—१ लसकर पिण अलघौ गयौ, जूझण वेला जांणि। वड़े **वेर** हम कुं भई, वादल कहैं ए वांणी। —प. च. चौ

उ०—२ मांढां स्वनै मेलियौ, वीरम नै नाळेर। परणीजण आय-जियौ, वीचै मत कीजौ **वेर**। —वी. मा.

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०-१ केइ वड पूरण काज कर, फूलै नह मन फेर। 'पातल' धीर गंभीरपणा, भल रक्खण इण **वेर**। —जैतदांन वारहठ

उ०—२ वणि होळिका थंभ जुध **वेरां**, सिरपर बह झेलूं समसेरां। धार विहार अणी घट धौरंग, चुख-चुख होय पडूं रिण चौरंग। —सू. प्र.

उ०—३ 'वाघा' हर नाहर जेण **वेर**, घांसाहर थाहर लीध घेर। ध्रुव तोप सघण त्रंवाळ ध्रीह, बहसिया चाळ वांधरण अबीह। —वि. सं.

उ०—४ इम परखै राजा आंवेरौ, आवै हित धर **वेर** अवेरौ। 'अजमल' तेड़ 'दुरंग' 'आसांणी', कथ धारी मेटण तुरकांणी। —रा० रू.

५ देखो 'बोर' (रू. भे.)

६ देखो 'वैर' (रू. भे.)

७ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—तउ ईह नां मौलि तणां पटउलां, हेलां वलउं कांइं करउं अवेलां। जाउ पराए सवि मूं पसाइं, मारउं न **वेरइं** न्नप नइं उपाइं। —सालिसूरि

रू. भे.—वेर।

वेरक—१ देखो 'बेरक' (रू. भे.)

२ देखो 'वैरक' (रू. भे.)

३ देखो 'वैरक' (रू. भे.)

वेरजा-वि०—विना इच्छा एवं विना स्वीकृति, स्वीकृति रहित।

उ०—सुख सुवायंत करी, दुख दुवायंत पासै टाळी। तेरी रजा करी सैतान की **वेरजा** करी. आई वलाय दफै करी। —नी. प्र.

वेरजौ-सं. पु.—चीड़ वृक्ष पर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का गोंद विशेष, गंधविरोजा। (अमरत)

वेरणौ-सं. पु.—वढ़ई का लोहे, लकड़ी आदि में छेद करने का औजार विशेष।

वि०—१ चीरने वाला, काटने वाला।

२ देखो 'वारणौ' (रू. भे.)

वेरणौ, वेरबौ—देखो 'वैरणौ, वैरबौ' (रू. भे.)

उ०—वांरा वरवार मैं ईं उणरै खोजां नींव भर वड़ला निजर सूं ईं पैला ऊंचा वधग्या। राजाजी विना सोच्यांई हथमांरा नै हुक्म दियो कै उणरा दोनूं पग वाढ वेरा में थरकाय दौ। दुस्टी करोतियां सूं पग **वेरण** ढूका। —फुलवाड़ी

वेरणहार, हारौ (हारी), वेरणियौ—वि०।

वेरिओड़ौ, वेरियोड़ौ, वेरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेरीजणौ, वेरीजबौ—कर्म वा०।

वेरतन-सं. पु. [सं. वैरीतनय] वैरी, दुश्मन, शत्रु। (वं. भा.)

वेरपरळय, वेरपरळै—देखो 'वेरप्रळै' (रू. भे.)

वेरपरवाह—देखो 'वेपरवाह' (रू. भे.)

वेरपरवाही—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

वेरप्रळय, वेरप्रळै-सं. पु.—प्रलयकाल, कल्पांत।

उ०—सारा 'चांपा' 'जोधं' संग, 'ऊदा' मिळिया आय। उल्लटिया अजमेर दिस, **वेरप्रळै** करवाय। —रा० रू.

वेरमण-सं. पु.—त्यागने की क्रिया, त्याग।

वेरवदा-सं. स्त्री.—राठौड़ों की प्रसिद्ध तेरह शाखाओं में से एक शाखा। (वां. दा. ख्यात)

वेरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति सरद रित रै समै री पूनिम रौ चंद्रमा सोळै कळा लियां संपूरण निरमळी रैण रौ उजळी जांदणी रै किरण करि नें हंस नुं हंसणी देखै नहीं नें हंसणी हंस देखै नहीं छै। मिळि सकता नहीं छै। तारां बार-बार माहौ माहै बोलि बोलि नें **वेरह** गमावता छै। —रा. सा. सं.

वेरहडी-सं. पु.—घोड़ों का एक प्रकार का रोग विशेष जो घोड़े के अगले पैर की नली में होता है। (शा. हो.)

वेरहम—देखो 'वेरहम' (रू. भे.)

वेरहमी—देखो वेरहमी' (रू. भे.)

वेरहर, वेरहरि—देखो 'वेरहर' (रू. भे.)

उ०—आदरत ओट खळ चाल अड़िया अडर, दुभळ खग चाल संलोट देता। वेरहर जठै पगवाळ खग बजावै, कठै खुसियाळ खुसियाळ कैता। —तिलोकदांन बारहठ

वेरांण—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

वेरांणयौ- देखो 'वीरांन' (मह., रू. भे.)

वेरांन—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—नरै राव सूजा नुं लिख नें घणी दिलासा दे वासियौ। नरौ आप वसियौ तिण दिन ठौड़ बोहोत वेरांन सु नरा रौ मन टिकै नहीं। —नैणसी

वेरा—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वेराई—देखो 'बैराई (रू भे.)

वेराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—बंधव ए भल अविया रे, सरिया वांछित कांम। जाति समरण ग्यांन थी रे, आयो वेराग बेऊं तांम के। —जयवांणी

वेरागढ—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—हीरा थैं लाईजौ वेरागढ देस रा म्हाँरा राज, मोती थैं लाईजौ बनड़ी रै हार जड़ायजो, रे तोरे आवजो। —लो. गी.

वेरागर-सं. पु.—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—सदा हुवै मोती सागरां, हीरा वेरागर होय। —सरसती भंडार

२ देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

वेरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—सांभल! है रांणी राजा नै करड़ा न बोलियै, निसंक हुई जै नांय। इसी वेरागण अजे तूं दीसै नहीं, तूं बैठी छै राज कै मांय। —जयवांणी

(स्त्री. वेरागण)

वेराग्य—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—वेराग्य रगिइ चारित्र लीधउं, प्रतिमाइ रहिउ मुनि रे। नलरानाइ तै यती दीठु, ध्यांनस्थ सोभइ वनि रे। —नळदवदंतीरास

वेराडणौ, वेराड़बौ—देखो 'वैराणौ,वैराबौ' (रू. भे.)

वेराड़णहार, हारौ (हारी), वेराड़णियौ— वि०।

वेराड़ग्रोड़ौ, वेराड़ियोड़ौ, वेराड़चोड़ौ - भू० का० कृ०।

वेराड़ीजणौ, वेराड़ीजबौ—कर्म वा०।

वेराड़ियोड़ौ—देखो 'वैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेराड़ियोड़ी)

वेराज—देखो 'बेराज' (रू. भे.)

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या—थें कहो भीखणजी रा स्रावक दांन नहीं देवै तो जै लेवाल नै सरव थांरै इज आसी। अनै थें कहो तै धरम थांनै इज हुवै, थें वेराजी क्यूं थया। थें निंदा क्यूं करौ। —भि. द्र.

उ०—२ सेठ जोर री डकार लेवतां बोल्या—गया महीना री बात है, कोई मांमूली लैंण-देण रा मांमला मैं एक अफसर म्हारा सूं वेराजी व्हैग्या। म्हनें ई रीस आयगी के देवतां-देवतां ई अकड़ बतावै, सो आपसरी मैं भौड़ व्हैग्यौ। —अमरचूंनड़ी

उ०—३ नदीयां नीर नहीं। सतीयां सत नहीं। ब्राह्मणां वधारौ नहीं असत्रियां रूप नहीं। इण तरै सराप दै, वेराजी हुय नै स्री सिवजी मा'राज नै चेला संकरजी कैळास पधारिया। —मारवाड़ री ख्यात

वेराजीपण, वेराजीपणौ, वेराजीपौ-सं. स्त्री.—बेराजी होने की अवस्था या भाव।

उ०—जद स्वांमीजी कह्यौ-किणहिरै गूंबड़ौ दुखतो घणौ नै पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै कै वैराजी व्है? जद कह्यौ-राजी हुवै। ज्यूं दुखदाइ छूटां वेराजीपौ नहीं। —भि. द्र.

रू. भे.—वैराजीपण, वैराजीपणौ, वैराजीपौ

वेराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे.)

२ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

वेराणौ, वेराबौ—देखो 'बैराणौ बैराबौ' (रू. भे.)

वेराणहार, हारौ (हारी), वेराणियौ—वि०।

वेरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेराईजणौ, वेराईजबौ—कर्म वा०।

वेरायोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेरायोड़ी)

वेरावणौ, वेरावबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

वेरावणहार, हारौ (हारी), वेरावणियौ—वि०।

वेराविग्रोड़ौ, वेरावियोड़ौ, वेराव्योड़ौ—भू० का० कृ०

वेरावीजणौ, वेरावीजबौ – कर्म वा०।

वेरावियोड़ौ—देखो 'वेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेराविघोड़ी)

वेरासती-सं. स्त्री.—वैमनस्य, मनोमालिन्य।

उ०—तद हाजीखां कयौ, जौ हाथी तौ म्हारै अेक है अौर सोव्रन देण नूं नहीं, नै पात्र छै सू हमारी वैर है। तद ठाकुरां पाछां आय रांणां नूं उतर दियौ। तद इण वात ऊपर रांणै रै नै हाजी रै **वेरासती** हुई। —द. दा.

वेराह—देखो 'वेराह' (रू. भे.)

उ०—जग तूठौ वंदी जणां, स्त्रीदूलह 'अभसाह'। किया सवाई मांडहै, तळ दाई **वेराह**। —रा रू.

वेरि—१ देखो 'वैरी' (रू. भे.)
२ देखो 'वेरी' (रू. भे.)
३ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—म्रदंग ढोल मंगळी, रवाव तार सार ली। वजंति **वेरि** वेरियं, भर्ण कि झंकि भेरियं। —रा० रू०

वेरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वेरियोड़ौ—देखो 'वैरियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री. वेरियोड़ी)

वेरी—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)
२ देखो 'वेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ भैंस्यां नै अपटाऊ तिलां री कच्चर, खोपरां रो गिर अर कुपासियां रौ बांटो। चरण सारू सूवा री पांख रै उनमांन पराळ चीपटौ पीवण सारू **वेरी** रौ साफ-सुथरौ ठाडौ पांणी। सवार-सिंझ्यां सातूं भैंस्या नै संपाड़ौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ वसती घणी। धरती हळवा ४० छै। ऊनाळी नहीं। कालंभर व्याव २ वोराड़ा री केर बाहळौ गांव नजीक छै। तठै **वेरियां** छै। बावड़ी एक वाहाळै मांहै छै। भाखर खुभराड़ियौ कहीजै। भाखर री खांभ बसै। —नैणसी

३ देखो 'वैरी' (रू. भे)

उ०—नींदड़ली **वेरण** हुय रही, इण सरीखौ हौ भूंडो नहीं कोय के। मूल तौ मिलै नारकी, गति माठी मैं कोई फेर न जोय।
—जयवांणी

(स्त्री. वेरण)

वेरुख—देखो 'वेरुख' (रू. भे.)

वरुखी—देखो 'बेरुखी' (रू. भे.)

वेरूलिय-सं. स्त्री.—वैदूर्यमणि, जिसका आधुनिक नाम नीलम है। (जैन)

वेरूं—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—वेगौ आयौ न करी **वेरूं**, खाडै करि मूं दस्खण खेरु। रत्ता मुगळ नीली टोपी, ततकाळै नरवद्दा लोपी। —गु. रू. वं.

वेरोक—देखो 'बेरोक' (रू. भे.)

वेरोजगार—देखो 'बेरोजगार' (रू. भे.)

वेरोजगारी—देखो 'बेरोजगारी' (रू. भे.)

वेरौ-सं. पु.—१ कूआ, कूप।

उ०—१ दुनिया मैं निवळा अर गरीब बणा है, इण कारण अै लोग टणकेल अर सूरवीर है। बेटी! म्हारी आ भुळावण थारै वास्ते अणूंती मूंघी पड़ैला, आ जांणतां थकां ईं म्हैं थनै विखा रा ऊंडा **वेरा** मैं धरकावूं, थूं म्हारी इण लाचारी नै समझै है कै नीं।
—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नैं कांई जवाब देवती। उणरा विस्वास नैं कियां खंडत करती! जिण उम्मेद री डोर माथै वौ जीवै हो। उणनै कियां तोड़ती। जिण वरत रै सहारै वौ **वेरा** मैं उतरियोड़ौ हौ, उणनै कियां वाढती। —अमरचूंनड़ी

उ०—३ उनाळा रा पांणी री तकलीफ रा दिनां में कोई आपरा सगा गिनायतां रै घरै जाय जम्यौ तौ किणीई **वेरा-कोइटा** करनै दिन तोड़ दिया पण आसाढ रा चांदणा पख रा ऐ दिन जावता खारा जैर व्है ज्यूं लागता हा। —रातुवासौ

२ देखो 'वेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ डागै आपरी बेटी वेई वर देखण नै काठी कमर बांध ली। आडसर, मूंमासर, रिणी' र राजगढ च्यारां कांनी भंवाळी खावण नीसरचौ। पर फूटरौ-फररौ भंवरी रै वर रौ **वेरौ** कठै ही नीं पटचौ। —दसदोख

उ०—२ जै फिरंगी नै **वेरौ** पड़ ज्या, पाछौ बो फिर ज्याय, तोप मुंहांणी म्हांनै चाडै, रहौ कैद कै मांय। इतनी सुणकै डूंगजी, स, बोल्यौ कड़वा वैण, ई मूंडै कौ धणी लोटिया! म्हानै आयौ लेण?
—डूंगजी, जवारजी री छावली

उ०—३ अेक वर, देवर, वागां मैं ले चाल, **वेरौ** तो पाड़ां, अौ देवरिया, नारी-मरद कौ, नारी होय तौ पड़्या-रिड़्या फळ खाय। मरद हुवै तौ तोड़ै फूल गुलाव रौ, राजा जैमल पड़्या-रिड़्या फळ खाय। लो- गी.

रू- भे.—वैरौ

वेळ-वि०—१ समान, तुल्य।
२ वहुत ज्यादा, अत्यधिक। (अ मा.)
सं. पु.—१ समुद्र, सागर।

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण। **वेळ** निजर विद्दुसां, असह कवि भ्रमण अकारण। —रा. रू.

२ तरंग, लहर, हिलोर। (ह. नां. मा.)

उ०—१ उमर वरस एकादस आई, अठै सुणी न्रप चंद्र अवाई। सुणतां मात्र कूच अप सधियौ, वेळ समुद्र जेम दळ वधियौ।
—सू. प्र.

उ०—२ वांणिजां वधू गौ वाछ असइ विट, चोर चकव विप्र तीरथ वेळ। सूर प्रगटि एतला समपिया मिळिया विरह विरहियां मेळ।
—वेलि

उ०—३ जिम मधुकर नड कमलणी, गंगासागर वेळ लुबधा ढोलउ मारुवी, कांम कतूहळ केळ।
—ढो. मा.

उ०—४ सुत सम्रत छंद खट पंच नव संपूरण, भेदगर च्यार दस बोध भाळी। अरथ जुत बोलबौ हेळ बीजा 'अजा', वेळ अम्रततणा उदध वाळी।
—र. ज. प्र.

उ०—५ मिळ आवत लोढ कि बोढ मही, जमना दळ वेळ समुद्र जही। उर माळ भरणंभण ऊभरियं, पवंगां तुरियं रव पाखरियं।
—रा. रू.

उ०—६ जैता सांम संग्रांम की, जोवै वाट कमंध। ज्यां दधि दक्खै वेळ वळ, हीरा परक्खै बंध।
—रा रू.

३ गले में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

४ अंगुली में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि० वि०—यह सोने, चांदी या तांबे के तार से गुंथी हुई अंगूठी होती है। कतिपय लोग तांबे के तार से गुंथी हुई देवजी या भैरवजी आदि देवताओं की वेळ (अंगूठी) अंगुलियों में पहनते हैं।

५ पागल।

६ पागलपन।

उ०—१ केई दिनां सूं काली मासी घर घर बकें तौ ई म्हैं उण री गिनरत नीं करी। जांण्यौ वा कालायां करै तौ छौ करती। आप उण नै इत्ती माथै नीं चाढता तौ उण री कांई मजाल कै घर घर यूं वेळ बातां बकती फिरै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कदेई कदेई तौ थूं अैड़ी वेळ बातां करै के म्हनै ई जूंभळ छूट जावै। पण म्हारां सूं ई कोगत करियां बिना थारौ जीव धापै कोनीं।
—फुलवाड़ी

उ०—३ वौ चोर हमेसां कीं न कीं ऐड़ी वेळ बातां करतौ ई रैवतौ उणनैं ढाबण सारू दूजोड़ौ चोर अेक समझदारी री बात करी—सात पीढियां लग आ माया तौ अपांरै खायां नीं खूटे। अबै चोरी नीं करनै इज्जत सूं ठायौ अपड़लां तौ सावळ! जीव अस्टपौर सुरक सुरक करै।
—फुलवाड़ी

उ०—४ ढालू खाती बींदणी रै मूंडा सांम्ही देख बींद कैवण लागौ—अैड़ी वेळ बात वळै कदै ई करज्यौ मती। भायजी जांणै जित्ती खीझ करेला। वै रूप बिचै लुगाई रै गुणां रौ घणौ आदर करै।
—फुलवाड़ी

७ आग, अग्नि।

८ सहसा मन में उठने वाली तरंग, उमंग, भावना।

उ०—१ ईडरिया आचार री, वीर चढै तौ वेळ। हसत चढै चारण हुवै, माया सरसत मेळ।
—बां. दा.

उ०—२ वेळ रौ महण अणथाग वीर, हेतवां देण हेला हमीर। सेण रौ सैण अर सत्रु साल, ढाविया विरुद जोधांण ढाल
—पे. रू.

९ देखो 'वेल' (रू. भे.)

उ०—१ रवि ऊगै साहावदी, खांन इनायत वेळ। आसुर आयौ खेड़ियां, ज्यौं सागर ऊभेळ।
—रा. रु.

उ०—२ सझै सूर असुरांण दळ पूर आयौ सिखर, किणी नह बियै अब वेळ कीजै। वारता जिसी 'गंग' कहै वीकमपुरौ, 'जैतसी' जोधपुर दुरंग लीजै।
—राव जैतसी रौ गीत

१० देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—विरध वधाई नांव, समूरथ साख सगाई। व्याह विनायक वेळ महोछव मेळ विदाई। पूजा पाठ निराठ, वरै व्रनमाळां मोखी। जागण रातीजगां, दसुटण दायजां चोखी।
—दसदेव

११ देखो 'वेल' (रू.भे.)

१२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

रू. भे.—वेला

वेल—सं. पु.—१ खेत में कुए से नाली द्वारा जाने वाले पानी का बहाव।

२ एक प्रकार का लघु काव्य।

३ रेखा लाईन।

उ०—मच फाग छटी रव खाग मह्रा, कल सोर न प्रांण कबांण कहा। वधि वेल धमाधम सेल वहै, गुणि खीज कि वीज सिळाव वहै।
—रा. रू.

४ होलिका-दहन के दस दिन बाद अर्थात चैत्र कृष्ण दशमी को सधवा स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले "दसामाता" या "दसादहाड़ी" के व्रत के दिन सूत के दस धागों के डोरे पर दस गांठे लगाकर गले में धारण की जाने वाली तात।

५ देखो वेल' (रू भे.)

उ०—१ आयौ फिर डेरां 'अजौ', नरपत सहत निबाब। दक्खण दूत चलाविया, तेड़ण वेल सिताब।
—रा. रू.

उ०—२ परत न लभै पार, तिण पसरी वेल अपार। उत्तम मध्यम अधम में, नर सुर नाग कुमार।
— रांठौड़ां री बंसावळी

उ०—३ ना रे ना भोला, बीज वास्तै नीं है। थूं तौ लारै ईंज पड़ग्यौ, बिना बतायां पार नीं जावैला। वौ मतीरौ इमरती वेल रौ

है, सौ राजा नै भेट देवण खातर रुखाळियोड़ौ है ।
—ग्रमर चूंनड़ी

उ०—४ पसरी मुकति बेल रूपहरी, गंगा बहै इसी छवि गहरी । उठै वसाय दीजियै ग्रातुर, पारकेस नांमै पारकपुर । —सू. प्र.

उ०—५ भावजी रे हमनै नौसर हार, बेल वधौ मेरै बाप की रे । ज्यूं वाली ज्यूं इव, ज्यूं कीड़ी ज्यूं नाल । —लो. गी.

६ देखो 'वेला' (रू. भे.)

७ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—चौधरण तौई फिटक मैं नी ग्राई । वा तौ दूजै दिन बेल जुताय धणी सारू किणी फूठरा नांव री सोय मैं पीहर रै मारग वहीर व्हैगी । —फुलवाड़ी

८ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

९ देखो 'वेळ' (रू. भे.)

उ०—१ चडै वेल वरियांम, सुजळ ते ग्रागळ चंचळ, गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर त्रंबागळ । ग्रसंख फौण ग्रोपत्ति, वहुत चीघां बेरक्कां, मारवाड मरजाद, भडां ग्रनडां मारक्कां । —गु. रू. वं.

उ०—२ रचतां इसौ राजसर रांणा, लेखौ जगगै कवण लहै । ग्रस सूरज वहतौ ग्राधंतर, वेलां पग मांडतौ वहै ।
—महारांणा राजसिंह रौ गीत

वेलकि, वेलकी–सं. स्त्री.—एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन विशेष ।

वेलख, वेलखि–सं. पु. [सं. बेलकं] बांण का फर, पुंख स्थान ।

उ०—विळकुळियौ वदन जेम वाकारयौ, संग्रहि धनुखं पुणच सर संधि । क्रिसन रुकम ग्राउध छेदण कजि, वेलखि ग्रणी मूठि द्रिठि बंधि । —वेलि

रू. भे.—बेलख, बेलखि

वेलड़—१ देखो 'बेलड़' (मह., रू. भे.)

वेलड़ली, वेलड़ि वेलड़ी.–सं. स्त्री.—१ एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन विशेष ।

रू भे.—बेलड़ली, बेलड़ि, बेलड़ी, वेलडली, वेलडि, वेलडी

२ देखो 'वेल' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वरस सीम काउसग रह्यउ, वेलड़िए वींटांणउ रे । पंखी माला मांडिया, सीत तावड़ सोखांणउ रे । —स. कु.

उ०—२ बातां करतां पखवाड़ौ बीत ग्यौ । राजा वाळौ मतीरौ पाकनैं रांणबांण व्हैग्यौ । वेलड़ी कुम्हळीजगी ग्रर कूंण्ळ वळगी । चोखौ दिन देखनैं चौधरी मतीरौ लेयनैं राजारे दरबार कांनी वहीर व्हियौ । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ मनोहारा सार स्रंगार रसमां, ग्रनुभवी थया तरवरा । वेलड़ी वनिता ल्यइ ग्रालिंगन, भूमि भांमिनी जलधरा । —वि. कु.

उ०—४ माया विसरी वेलड़ी, हरीया पसरी दूरि । केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि विसूरि । —ग्रनुभववांणी

वेळच, वेलच—देखो 'बेळच' (रू. भे.)

वेळचौ, वेलचौ—देखो 'बेळचौ' (रू. भे.)

वेलज, वेलज्ज—देखो 'वेलज' (रू. भे.)

वेलडली, वेलडि, वेलडी—१ देखो 'वेलड़ली' (रू. भे.)

२ देखो वेल' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ नै (तै) भय मिटयौ जांण नै नदी उपरै वाग लगायौ छै । माहौवला फूल हुवै छै । घणी वेलां, धणी वेलडिया, गी (नी) लोतरी चीभडा, खरबूजा, नीला गोहूं, साल, दाल घणी नीपजै छै । इसडौ वाग छै । —रिसालू री बात

उ०—२ विण तरुग्रर जिम वेलडि, कंठ विना जिम माल । पुरुख विहूणी पद्मनी, किणि परि ठेलिसि काल ? —मा. कां, प्र.

उ० ३ गिरि गिरि वाधइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास । मंडइ मोर कला घणी, विरहुणीयां तन त्रास । —मा. कां. प्र.

उ०—४ वेस्या विम नी वेलडी, कांमी कूंकम व्रक्ष । बाली वाउ-लीउ करिय, लघु वयमांहि लक्ष । —मा. कां. प्र.

वेलण–सं. स्त्री.—१ नींद में, स्वप्न में या ग्रचेतनावस्था में बकने की क्रिया ।

२ देखो 'बेलण' (रू. भे.)

उ०—वेलण वेलीजी वांह, मिरगानैणी जी राज । मूंगफळी सी धणरी ग्रांगळी, जी म्हां रा राज । —लो. गी.

उ०—२ हलूइ हाथइ चालइ, मांहि थी थूलउं टालइ, एक लगैं पाटउ, मांहइ दीजइ साटउ, वेलण स्युं वेलीइ, हलूइस्यूं मेल्हीइ, घ्रत स्युं मिल्या, लोह कडाहै तल्या, सब्द कल कलइ, निरधूम ग्रगनि वलइ,········· । —व. स.

रू. भे.—वेलण

वेलणियौ–वि०—नींद में, स्वप्न में या ग्रचेतनावस्था में वकने वाला ।

सं. पु.—१ रहट के घूमने वाले चक्र पर पड़े लट्टू पर बैल हांकने वाले के स्थान के नीचे लगाया जाने वाला एक डंडा विशेष जिसमें सांकल या रस्सा डाल कर बैलों के जूए से जोड़ा जाता है ।

२ देखो बेलण' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वेलणौ, वेलबौ–क्रि० ग्र०—१ छट-पटाना, तड़-फड़ाना ।

उ०—१ हमि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मंडै खफर पत्र मिळै । तिल तिल हुइ टूकड, वेलै तुरभड, मच्छक तडफड तुच्छ जळै । —गु. रू. वं.

उ०—२ ढाढी गाया निसह भरि; सुणियउ साल्ह सुजांण । ग्रोछइ । पांणी मच्छ ज्यउं, वेलत थयउ विहांण । ढो. मा.

२ देखो 'बेलणो, बेलबो, (रू. भे.)

उ०—१ वेलण वेली जी बांह, मिरगानेणी जी राज। मूंगफळी सी धण री आंगळी, जी म्हांरा राज। —लो. गी.

उ०—२ ·········मांहिथी थूलउं टालइ, एक लगें पाटउ, मांहइ दीजइ साटउ, वेलण स्यु वेलीइ, हलूइस्युं मेल्हींइ, घ्रतस्युं मिल्या, लोह कडाहें तल्या, सब्द कलकलइ, निधूम अगनि बलइ, नीपनां सतपुडा खांजा, तुरत कीधां ताजां, सदला नें साजां, मोटां जांणे प्रासाद नां छाजां, चिहुं खुणे साजां एहवां खाजा प्रीस्यां········· । —व. स.

३ देखो 'बेलणो, बेलबो' (रू. भे.)

उ०—१ सेठां रै वेलण रै सागै इणी भांत सेठांणी रौ बेलणो चालू हो। अर बेटो दोनूं जणा री बेलणो चुपचाप सुणतो रह्यो। मां रै मूंडा सूं बाप रै चेतारी बात सुणनै राजी व्है जातो अर बांरै सीत री बात सुणनै अणूंतो विलखो व्है जातो ! इण सूं आगै उणरी समझ नींही। —फुलवाड़ी

उ०—२ सेठांणी रौ काळजो अणूंतो काचो हो। हरख मनावण री बात सुणियां पछै तो वा वत्ती रोवण लागी। कदास सेठ सीत में बेलण तो नीं लागग्या ! अबै वा करै तो कांई करै। सेवट काठी हारनै वा कह्यो—थें भलांई नीं मांनो, म्हें तौ पंचा नै बुलावूं। —फुलवाड़ी

उ०—३ घरविद री बातां रै पछै मासी राजाजी रा समंचार पूछ्या तौ वा सुभट निसंक भाव सूं कह्यो के राजाजी तो उण दिन पछै गूंगी री तिथ ई नीं ली। गूजरी अलोप व्हैगी तो ई हाल उणरी प्रीत वास्तै वेलै। —फुलवाड़ी

वेलणहार, हारौ (हारी), वेलणियौ—वि०।

वेलिग्रोड़ौ, वेलियोड़ौ, वेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेलीजणौ, वेलीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वेळणौ, वेळबौ, वेलणौ, वेलबौ—रू. भे.

वेलदार—देखो 'बेलदार' (रू. भे.)

उ०—१ पैंसठ हाथ रै पछै रेळी रै कारण बेरौ खुदणौ दूभर व्हैगौ तौ म्हैं अेक वाजिंदा सिरावा री सोय मैं निकळियौ। वौ सिरावौ जात रौ वेलदार हौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ डारण तेड वेलदार भुरजालंदं, रोठ घतोजं रीठ मैं चला चंग अंदे। रैत थली री रात दिन मन पै धड़कंदं, कोटड़ियां धमका करै चोबीस भड़ंदे। —पा. प्र.

वेलदारी—देखो 'बेलदारी' (रू. भे.)

वेलपतर, वेलपत्र, वेलपात—देखो 'बेलपत्र' (रू. भे.)

वेलळाट, वेललाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू. भे.)

उ०—मन मैं धरता मरट घरट जिम भूखें घूमै, मेलै घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमें। बेटा नै मा बाप वेचि द्यै जीमण वेइ, रूलतां रिगतां रांक करै वेललाटा केइ। —ध. व. ग्रं.

वेळा—स. स्त्री. [सं. वेला] १ समुद्र का तट या किनारा।

२ सीमा, हद।

३ रात-दिन का चौबीसवां भाग, पल।

४ काल, वक्त, समय।

उ०—१ तठा उपरांति राजांन सिलांमति तोरण बांधीजै छै। घणां गज डंबर पेसारा करि मंडोवर महलें पधराया छै। सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मुहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा मांहि आणि पाट सिंघासण विराजमांन किआ छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर ढुळै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ बेली तदि बळभद्र बापूकारै, सत्र साबतौ अजे लगि साथ। तूठे वाहवियै आ वेळा हव, जीपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ। —वेलि

उ०—३ लांठा लांठा मौतबिर वेळाकुवेळा दही दूध रौ मिस लेय गूजरी रै घरै आवता संकता कोनीं। काली मासी खुड़को व्हैतां ईं जाग जाती। सगळा नै मीठौ जबाब देती। किणी माथै छींटा नीं देवती। —फुलवाड़ी

उ०—४ वूजी कांई, वूजी रा बेटा नै ई गीगला रौ कितरौ कोड है। लारली वेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जदरी बात है–पूणचौ काठौ पकड़ लियौ अर बट्ट करती कांवळी वदार नांखी। —अमर चूंनड़ी

पद—वेळापूळ=समय।

५ अवकाश, फुर्सत।

उ०—१ कंवर नै खेत री रुखवाळण रा बोल याद आया। उण री देखा देख वौ कह्यौ—विरथा भिकाळ करण री म्हनैं वेळा कोनीं। थें सगळी बातां थांरै कांनां सूणली हौ, म्हैं पाछी कांई गिणावूं। —फुलवाड़ी

उ०—२ आं री घाल्यां तीन दिन व्हिया आपरै पाखती ई नीं आय सकी। दिन मैं चार-पांच वेळा चूंघांणा पड़ै। थोड़ै दिनां पछै तौ घाट दळियौ खावणौ सीख जावेला। पछै वेळा ई वेळा है। आपनै अठा तांई आवण सारु अेकर ई फोड़ा नीं खावणा पड़ेला। महारांणी अपूठी फिरनै बोली—म्हैं जावूं। फेर वेळा मिळी तौ आय नै मिळ लेवूंला। अबारूं थूं आंरी साळ-संभाळ कर। —फुलवाड़ी

६ मौका, अवसर।

उ०—१ तब रुखमणीजी डावै पासै बेसांण्यां। ज्यौं विधि छै त्यौं बोल वाचा ले। ज्यौं कही छै त्यौं करि नें विवाह पूरण कीयौ।

जिहि वेळां वेद का पठणहारां। मुंहमांगी सु नव ही निधि पाई।
—वेलि टी.

उ०—२ जगत री रीत है आप री स्त्री नैं प्रथम मिलाप री वेळा देखणै है अनै इण सूरवीर रैं पाछो हटण रो पूठ लारै देखण रो प्रण है कै पाछो हटूं नहीं पूठ लारै देखूं नहीं। —वी. स. टी.

मुहा०—१ वेळा रा वाया मोती नीपजै=उचित अवसर पर काम करने से लाभ होता है।

२ वेळा देख वरतणौ=अवसरवादी होना।

७ बार, दफा, मर्तबा।

उ०—१ ताहरां कोई परमेस्वर रौ ख्याल हुवौ, जु कवांण काढ नैं रावजी रैं गळै मांहै घालण करै। ताहरां एक वेळा तौ कवांण ऊपर सैं रही गळा रै। —नैणसी

उ०—२ जुडिया 'वीर' तणी जुग जांणी, दाखव पंथी देख दुयै। काळा सूं विढतां कै वेळा, हांमैं कै हथवाह हुयै। —दूदौ वारहठ

उ०—३ चौधरी तीन वेळा जमीं तांई लुळ लुळ नैं खम्माघणी अरज कर नैं ऊंचौ राजा रैं मूंडा कांनी देख्यौ तौ पगां नीचै सूं धरती सिरकती लागी। औ तौ सागण उण दिन खेत में आयौ जिकोज आदमी। —अमरचूंनड़ी

उ०—४ दो तीन वेळा जीभ फेरनै डोकरियौ आपरौ दांत संभाळियौ। पछै थूक गिटतौ कैवण लागौ—तौ रांमजी भला दिन देवै—तीनूं जणा हांकरतां जमराज रै पाखती पूगा। —फुलवाड़ी

उ०—५ बेटां रै मरियां पछै नित अेक वेळा तौ म्हनै आ बात सुणांणी ईं पड़ै। जांणतां थकां ईं दूजी बात सुणावण रौ मन ई नीं करै। —फुलवाड़ी

८ देर, विलम्ब।

उ०—विढतां घणी लगाई वेळां, समहर सूर सवादा। सुर त्रीया क्षाद करै सांगावत, रथी आवौ रायजादा।
—जैंसिंह नरूका कछवाहा री गीत

९ देखो 'वेळ' (रू. भे.)

रू. भे.—बरियां, बरिया, बिर, बिरया, विरियां, बिरिया, बिळिया, बिलिया, बिलीया, बीरियां, बीरिया, बीरीयां, बीरीया, बेर, बेरं, बेरिया, वेळ, वेल, वेंल, बेळा, वेला, वरियां, वरीयां विरयां, विरियां, वीरियां, वीरीयां, विलिया, विल्या, वेर, वेरां, वेरिया, वेरी, वेरू, वेला, वेलि, वेली, वेळू, वेलु वेळू, वेलू वेल्या, वेल्हा, वैंळा, वैंला मह., वेळौ, वेलौ

वेला-सं. पु.—१ जन्म, जीवन।

उ०—ढोर माहि जीव घणउं दुख सहइ, चारि पांणी नवि वेलां लहइ। परवसि थ्या करमि घालइं घाटि, वहइं भार तैं मारइं साटि।
—वस्तिग

२ कष्ट, संकट।

उ०—आगइ नारी तणइ वियोग, कूबड देहि हऊड कुयोग। वेला पाडी मझ समकाल, उपगार नूं फल हवूं ततकाल।
—नळदवदंती रास

रू. भे—वेल्हा, वैंळा, वैंला

३ देखो वेळ' (रू. भे.)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ वाल्हा किम आवुं तिहां रेलौ वेला विखमी जायरे सनेही। सुख चाहता जीव नइ रे लौ, मत कोई लागू थाय रे सनेही।
—वि. कु.

उ०—जिकै पारस्व केरी करिस्यंति भक्ति तिकै धन्य वारू मनुस्या प्रसक्तिम। भली आज वेला मया वीतरागा, खुसी मांहि भेख्या नमद्देव नागा। —स. कु.

उ०—३ संवरी स्रावक करइ पोसउ, आठ पुरहि गुरु मुखइ। उचरइ दंडक त्रिण्ह वेला, सांमाइक पणि तिणि रुखइ। —स. कु.

उ०—४ कूडे मन आदर करे तेह सजाई लीध दासी नै मनकारि सिखानी सगलौ सिखौ दीध। भोजन पांन सजाई करतां वेला कीध, वाघी रात पड़ी छै आकुल थाओ म सीध। —ध. व. ग्रं.

उ०—५ इण वातै मोनैं लाज कहावै, पुत्र थकां मां दुखणी थावै। हूं समझूं थांरै समझावै, बात कहौ वेला घनी थावै। —जयवांणी

वेळाइत, वेलाइत-सं पु.—समुद्र, सागर।

क्रि. वि.—उचित समय पर।

उ०—उठियौ जगड़ लाग असमांणै, उर 'अजमाल' तणौ व्रत आंणै। उण वेळा 'लालौ' मिळ आगां, वेळाइत खंचांणी वागां।
—रा० रू०

वेळाउळ, वेलाउल—१ देखो 'विलावळ' (रू. भे.) (ध. व. ग्रं.)

२ देखो 'वेळावळ' (रू. भे.)

उ०—१ ३० सहस्र आगर, २४ सहस्र नगर, २४ सहस्र करवड, १६ सहस्र खेड, १४ सहस्र वेलाउल, ३६ कोडि कुल, ४८ सहस्र पत्तन, ४९ सहस्र उद्यांनवन,……… । —व. स.

वेळाउळधी, वेलाउलधी—देखो 'वेळावळधी' (रू. भे.)

वेळाकूल, वेलाकूल-सं. पु.—बन्दर, वानर।

उ०—किसलय नींकलता गहगहइ, वेलाकूलै रा गहगहइ। मंड लक्ष धान्य नींपजइ, सकल वांछित सुख संपजइ। —नळ दवदंती रास

वेलाज्वर, वेलाज्वर-सं. पु. [सं. वेलाज्वर] वह ज्वर जो मृत्यु के समय होता है।

वेलातर वेलातरु-सं. पु.—एक प्रकार का शाक (सब्जी) व व्यंजन विशेष।

उ०—वालु नइं वेलातरु, वेऊ वेतस वागि।-वश्रारु गहलु लीउ, वाउलीउ वखांगि । —मा. कां प्र.

वेलाधिप, वेलाधिपत वेलाधिपति, वेलाधिपती-सं. पु. [सं. वेलाधिपति] दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता ।

(फलित-ज्योतिष)

वि० वि०—जिस दिन जो वार होता है उसी दिन की पहली वेला का वेलाधिपति उसी वार का ग्रह होता है ।

वेलापात—देखो 'विलापात' (रू. भे.)

उ०—मारवणी री सरीर सोरंभ किस्तुरी जिसौ छै । उठै पीवण सांप हुता जिकै सास पी गया । तिण सुं मारवणी निरजीव हुय गई । परभातै जगाई जागी नहीं । ताहरां ढोलोजी दीवाधरी सखी बोलाउ । सगळाई आंगि भेळा हुवा । ढोलोजी प्रति वेलापात करण लागा । —ढो. मा.

वेळापुळ वेलापुळ-सं. पु.—अच्छा मुहूर्त, शुभ समय ।

उ०—नित रा ओळबां सूं आंती आय वा खुद केई दिनां सूं बादळ नै मन री वात बतावणी चावती ही । आज काले करतां दिन टळता गिया । ओ अणचींत्यौ जोग सजग्यौ तौ इण नै क्यूं टाळै ! वेळापुळ वायोड़ा ई मोती निपजै । —फुलवाड़ी

वेळायौ—देखो 'बेळायौ' (रू. भे.)

वेलाळ वेलाल-सं. पु.—१ पवन, हवा । (ना. डि. को.)

२ समुद्र, सागर ।

वेळावळ, वेळावळ-सं. पु.—१ समुद्र, सागर । (ना, डि. को., ह.नां. मा.)

२ देखो 'विळावळ' (रू. भे.)

रू. भे.—वेळाउळ. वेलाउल, वेळाकूल, वेलाकूल ।

वेळावळधी, वेलावलधी-सं. स्त्री.—विष्णु-पत्नी लक्ष्मी । (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वेळाउळधी, वेलाउलधी

वेळावसेक, वेळाविसेक-सं.स्त्री.—बालकों में होने वाला बालग्रह नामक रोग समूह में से कोई एक रोग विशेष ।

उ०—बाळ-कन्हैयौ थोड़ौ घणौ ई ओपरौ लखावतौ कै मासी नै वेळा-विसेक रौ वैंम व्हैतौ तौ सात वेळा अवारनै लूंण-मिरच करती । खुदोखुद ई मन करै जणा झाड़ो देती, हळकौ हाथ करती । —फुलवाड़ी

वेलास—१ देखो 'बेलस' (रू. भे.)

२ देखो 'विलास' (रू. भे.)

वेळाहरण, वेलाहरण-सं. पु. [सं. वेला+धारणम्] समुद्र, सागर ।

उ०—रांमा अवतारि वहै रणि रांवण, किसी सीख करुणाकरण । हूं ऊधरी त्रिकुटगढ हूंती, हरि बंधै वेळाहरण । —वेलि

वेलि—१ देखो 'वेल' (रू. भे.)

उ०—१ तेरै पासा खासा दासा, पासा वांसाहि का प्यासा, मेरी आसा वेली फैलि तूं ही इछ्या अभा है । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ मुझ आंगणि सुरतरु वेलि फैली, चिंतामणि करियल आवि मिली जसु समरणि सुर धेनु मिली, सो सेवउ जिनवर रंग रली । —स. कु.

उ०—३ तेल विहूणउ दीवडु, मूल विहूणी वेलि । पांणी विहूणी दद्दूरी, तिम होई ति महेलि । —मा. कां. प्र.

उ०—४ रांमा अवतार नांम ताइ रुकमणि, मांन सरोवरि मेरुगिरि । बाळकति करि हंस चौ बाळक, कनक वेलि बिहुं पांन किरि । —वेलि

उ०—५ मूरखु कोइ छइ खरउ गमारु, सूकडि बाली करइं छार । जिन धरम लाधउ पाय म पेलि, सुख तणी ऊपाडी म वेलि । —वस्तिग

२ देखो 'बेली' (रू. भे.)

३ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वेलियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ तड़-फड़ाया हुआ, छट-पटाया हुआ ।

२ देखो 'वेलियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. रू.)

(स्त्री. वेलियोड़ी)

वेलियौ—१ देखो 'बेलियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बळद' (अल्पां., रू. भे.)

४ देखो 'वहलियौ, (रू. भे.)

उ०—गांम रा मौजीज आदमियां आयनै रावळै मुजरौ अरज कियौ अर जाजम ढाळ नै गांम में अमल रौ हाकौ करायौ । घोड़ां नै दांणौ अर वेलियां नै गुळ फटकड़ी दिरीजी ! रोटां वास्तै आटौ गूंदीजियौ, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालौ पीसतां सिला लोडी बाजण लागी । —अमरचूंनड़ी

वेली—१ देखो 'बेली' (रू. भे.)

उ०—१ वेलो तदि बळभद्र बापूकारै, सत्र साबतौ अजै लगि साथ । बूठं वाहवियै आ वेळा, हल जीपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ । —वेलि

उ०—२ "बालौ" भालौ झल्लियां, रिण कालौ रावत्त । जुध वालौ वेली जिहां, 'तेजो' 'सूजावत्त' । —रा. रू.

२ देखो 'बेल' (रू. भे.)

उ०—१ पीड़ंति हेमंत सिसिर रितु पहिलौ, दुख दाळचौ वसंत हित दाखि । व्याए वेली तणी तरुवरां, साखां बिसतरियां वैसाखि । —वेलि

उ०—२ मळयानिळ वाजि सुराज थिया महि, भई निसकित ग्रंक भरि। वेली गळि तरुवरां विलागी, पुहप भार ग्रहणां पहरि।

—वेलि

उ०—३ हरीया कड़वी वेलका, कड़वाई फळ किध। जब वेली तैं वीछड़े, होय नांव की सिध। —ग्रनुभववांणी

उ०—४ त्रिगुन तें गुन ऊपजे, गुन के त्रिगुन मांहि। जनहरिया फल वेल तैं, फल विन वेली नांहि। —ग्रनुभववांणी

३ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वेलीड़ौ—देखो 'वेली' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वेळ, वेलु—१ देखो 'वाळू' (रू. भे.)

उ०—ठाढौ वेळु की रेत, भबुकेला पुंवरण घणां। वरसो ग्राजो की राति, काल्हो का धौंस घणां। —समसदीन

२ देखो 'वेळू' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वेळुका, वेलुका—देखो 'वाळू' (रू. भे.)

उ०—उपवन करि ग्रति ग्रेह उसीरां, नोख गुलाव छड़क घरण नीरां। जळ गुलाब वेळुका जमावै, विमळ पटी सीतळ विछवावै।

—सू. प्र.

वेळू, वेलू—वि०—१ व्याकुल, बेचैन, विह्वल।

उ०—द्विज भयौ वेळू ग्रजामेलू, कांमकेळू बांम ये। जमदूत खेलू काळ वेळू, कंठ मेळू ग्रांम ये। सुत हेत हेलू नाम लेलू, कर उवेळू सांम ये, ऐसा गोविंदु क्रपासींधु, दीन बंधु रांम ये। —करुणासागर

२ सहायक, मददगार।

३ देखो 'वाळू' (रू. भे.)

उ०—१ वेळू वांणी पील कर, कोई तेल कढावै।

—केसोदास गाडण

उ०—२ वली वचन कहै सूवटौ, जौ तिल मां तेल न होय। तो वेलू मैं किहां थकी, राय विचारी जोय। —वि. कु.

४ देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

५ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—द्विज भयौ वेळू ग्रजामेळू कांमकेळू बांम ये। जमदूत खेलू काळ वेळू कंठ मेळू ग्रांम ये। सुत हेत हैलु नांम लेलू कर उवेळू सांम ये; ऐसा गोविंदू क्रपासिंधू दीनबंधू रांम ये। —करुणासागर

रू. भे.—वेळू, वेलू, वेळु, वेलु

वेलै—सं. पु.—ग्राकार, ग्राकृत्ति।

उ०—गूंगी रौ धरणी ठेट काठियावाड़ जायनै घोड़ौ लायौ। लाखां मै टाळकौ। उपरैटा री ग्रोद री। पळकती कमेत रंग। कांनौ तीखौ। धणक ज्यूं तणियोड़ी लांबी गावड़। गाळिया छोटा। ग्रग्गर चौड़ौ। ढालां जैड़ा पुट्ठा। लांबौ वाळचौ। केसावळी लांबी। चौड़ा सूंम। लांबै वेलै। चौड़ौ लिलाड़। गळा रै सुद देवमिरण।

—फुलवाड़ी

वेळौ, वेलौ—सं. पु.—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

२ क्रौंच पक्षी।

३ कष्ट, संकट, ग्रापत्ति।

४ वंश।

५ पूजा ग्रादि का सामान रखने का साधन या उपकरण।

उ०—यूं कहनै रातरा मंडोवर रया नै प्रभात रा उठ देखै तौ भैरूंजी री मूरत वेलै मैं लाधी तद सांखलै नापै कंवरजी ग्रीवीकैजी नुं कयौ—गोरौजी ग्राप रै सागै हालसी ग्ररु थांरी राज वाडौ बंधसी। —द. दा.

६ देखो 'वेळा' (मह., रू. भे.)

उ०—वस्त्राभरण जिणे हरया तै छूटइ इण मेळौ जी। ग्रादिनाथ नी पूजा करइ' प्रहऊठी बिहुं वेलो जी। —स. कु.

७ देखो 'वेळौ' (रू. भे.)

उ०—सांमजी रांमजी वूंदी रा वासी। सावगी जाति रा बेद। दोनूं भाई वेला रा (जोडै जनम्यां)। उणीयारी सूरत एक सरीखी दीसै। केलवै दीक्षा लेवा ग्राया। —भि. द्र.

वेल्यां—१ देखो 'वेल' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—हरसा मेरा वेटा रै, होवेली सांझ सवेरी रै रोज। मेरा समरथ मोबी! भोजन री वेल्यां रै ऊभी रोयसी। हरसा! मेरा लाल रे, ग्रावैली पर घर कैरी धीय। मेरा मोबी रै बेटा, भोली किन्या नै रै फोड़ा घालसी। —लो. गी.

वेल्यौ—देखो 'वेल' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वेल्हणौ, वेल्हबौ—क्रि. स.—१ चीरना, फाड़ना। किसी दल या समूह को बीच में से दो भागों में पृथक करना, दूर करना, हटाना।

उ०—वेल्हती गजां है थाट लागा ग्रटळ, रीठ वाजा खगां दुवै राहां। जोध बसराज पुगो भलौ जूजवौ, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां।

—महाराज जसवंतसिंघ रौ गीत

२ देखो वेलणौ, वेलबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वैलणौ, वैलबौ' (रू. भे.)

वेल्हणहार, हारौ, (हारी), **वेल्हणियौ**—वि० ।

वेल्हिग्रोड़ौ, वेल्हियोड़ौ, **वेल्हयोड़ौ**—भू. का. कृ. ।

वेल्हीजणौ, वेल्हीजबौ—कर्म वा० ।

वेल्हा - १ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—प्रहरै प्रहर ज ऊतरयुं, दिवला साख भरेह । धण जीती, प्रिव हारियउ, **वेल्हा** मिळण करेह । —ढो. मा.

२ देखो 'वेला' (रू. भे.)

वेल्हियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, संहार किया हुआ

२ देखो 'वेलियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेल्हियोड़ी)

वेव—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—१ एक अचंभम परखणौ, अति छति सकति अजेव । ज्यौं मनि आवै सांमि कै, पाय दिखावै **वेव** । —रा. रू.

उ०—२ महातेज मैं राजि वाजी समत्थं, रहै **वेव** पेखै खड़ा देव रत्थं । दुनी मग्ग राजांन री सोभ देखै, लखै कांम रै नांस सौ बाधि लेखै । —रा० रू०

उ०—३ तेजी वितंड ऊडंड तेव, विख्यात राग अख्यात **वेव** । परबत पंख पक्खर प्रचंड, एराकी पिठ खुरसांण खंड । —गु. रू. बं.

उ०—४ गुरड **वेव** साहस घटै, मरण संक हणवंत मुडै । जग यता थोक थावै जदैं, पाल' **वचन** भूठा पडै । —पा' प्र.

वेवकूफ—देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

वेवकूफी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

वेवक्त, वेवगत—देखो 'बेवक्त' (रू. भे.)

वेवड़—देखो 'दोवड़' (रू. भे.)

वेवड़ियौ—देखो 'वेवड़ौ' (अल्पा., रू भे.)

वेवड़ीचूड़—'बेवड़ीचूड़' (रू. भे.)

वेवड़ौ—एक प्रकार का बर्तन विशेष ।

२ देखो 'बेवड़ौ' (रू. भे)

उ०—मसाला वेसवार लूण चरायजै छै । दही री रजबो दीजै छै । तरगसां मांहां सीकां काढजे छै । **वेवड़ां** ढीहां चाढजै छै । बीज खीसरी भरती दीजे छे । सू तसु वीढ सीकां ऊपर चाढजै छै । आडे हाथ डोरा घी रा दीजे छै । इण भांत सूळा वणै छे —रा. सा. सं.

३ देखो 'बेड़ौ (रू. भे.)

वेवटौ—देखो 'बपटौ' (रू. भे)

वेवणी—देखो 'बेवणी' (रू. भे.)

उ०—हळदी अेक ख्वारी लेयनै सरड़ सरड़ सगळौ फूस बुवार, दियौ । उखरड़ी सूं सिलांम करनै वा आगै बहीर व्ही । आगै जावतां उणनै अेक चूलौ सांमी धकियौ । चूलौ कह्यौ—हळदी बाई थोड़ी म्हारी **वेवणी** साफ करदै । —फुलवाड़ी

वेवणौ, वेवबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रीस में दांत पीसती बोली—रळनी लायोड़ी रा डीकरा अैड़ा नाजोगा नीं व्हैला तौ किण रा व्हैला । बाप रौ तौ नन्नौ पत्तौ ई कोनीं, पछै इत्ती करड़ावण किण बात री । पै'ला मां नै जाय बाप रौ नांव तौ बूझ, पछै मारग **वेवती** पिणियारयां सूं रोळचां करजे । —फुलवाड़ी

उ०—२ पांचां रौ ई तेवड़ै तौ कूटळौ कर न्हाकै । पण कोई जोधा कै सूरवीर व्है तौ लड़तौ ई ओपै । ठगां नै तौ ठगाई करनै हाथ बतावै तौ साचैली जीत । मारग **वेवतां** परख ई व्ही । वौ तौ पछै कीं सोच नीं करचौ । —फुलवाड़ी

२ देखो 'बेवणौ, बेवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अरधीयां थंभ वेधौखीयां वडायर, बरद त्रप धारीयां वात **वेवै** । दली नै मंडोवर पगां रा पखै अडग, दली नै मंडोवर धका देवै । —तेजसी खिड़ियौ

उ०—२ ऊपरलै देवलोक सरवारथ सिद्ध सीम, चिहु दिसि सरखा देवता ए । उपजइ एथ मनुस्य तप संयम करी, सुख भोगवै भ्रम **वेवता** ए । —स. कु.

वेवणहार, हारौ (हारी), **वेवणियौ**—वि० ।

वेविग्रोड़ौ, वेवियोड़ौ, वेव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेवीजणौ, वेवीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

वेवतन—देखो 'बेवतन' (रू. भे.)

वेवना—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—कमळा सोचती—इसै जीवणै ना तौ मर जावणौ ई भलौ । बा कदै-कदै मा बाप रै दुख नै देख'र अपघात करण री सोचती । जद धरम आडौ ऊभ'र आंगळी हिलाय'र कैतौ 'अपघात घोर पाप' । घरवाळा बै-नै अेकली कौ छोडता हा नी । पण तोई वा तौ मांयली **वेवना** सूं घुळती जावती ही । —वरसगांठ

वेवफा—देखो 'बेवफा' (रू. भे.)

वेवळ—डेखो 'बेवळ' (रू. भे.)

वेवलियौ, वेवलौ वेवल्यौ—देखो 'नेवलौ' (रू. भे.)

वेवांण—देखो 'विमांन' (रू. भे.)

उ०—१ लप्फ गं जूह लोहां कं धरा तड़फ्फे सूर, बड़क्के खेचरां रंभा भड़फ्फे **वेवांण**। महा वेग वहिया गनीम अद्र तणं मथै, क्रोधंगी हमीर' वाळी दाँमणी केवाण। —तेजरांम आसियौ

उ०—२ साट सीरम्म उरम्म हुइ साहणां, घाघरट थाट घांसार हाल घणां। तापडै ऊपडै तेज माहीं तुरा, उड्डिया जाण **वेवांण** आकास रा। —गु. रू. बं.

वेवा—देखो 'वेवा' (रू. भे.)

वेवाई—१ देखो 'वेवाई' (रू. भे.)

२ देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याई' (रू. भे.)

उ०—अेहड़ो वचार माडां ही मलिआ। अर आय, देवी रै वर थकी अदीठ समचार बूझिआ। कोई वेवाई, कोई जमाइ, कोई वंदेई सगा कह मलिआ। भायां रा नांम लै कुसल पूछिआ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वेवाणौ, वेवाबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

वेवाणहार, हारौ (हारी), वेवाणियौ—वि०।

वेवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेवाईजणौ, वेवाईजबौ—कर्म वा०।

वेवायोड़ौ—देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेवायोड़ी)

वेवार—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

वेवाई—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

वेवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

वेवाहणौ, वेवाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

वेवाहणहार, हारौ (हारी), **वेवाहणियौ**—वि०।

वेवाहिओड़ौ, वेवाहियोड़ौ, **वेवाह्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

वेवाहीजणौ, वेवाहीजबौ—कर्म वा०।

वेवाहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेवाहियोड़ी)

वेवाही—देखो 'व्याई' (रू. भे.)

उ०—१ थयौ सूरंग वीवाह, रंग सूरंग रह्यौ **वेवाहियां**। —स्रीपालरास

उ०—२ स्वजन **वेवाहिय** घूरइं, भूरइं निगहिय नेह। लेई अचेत ऊपाडिय, माडिय आंणीय गेहि। —जयसेखर सूरि

वेवियोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेवियोड़ी)

वेसंभाळ—वि० [अ. बे+राज.संभाळ] बिना चेतना का, बेसुध, चेतनारहित।

वेस—सं. पु. [सं. वेशः] १ पहनने के वस्त्र, पोशाक, वेश।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नै कहै छै—हे कंथ। आप भलां भाग नैं जीवता घरै आया। अबै म्हारौ **वेस** धारण करावौ। अबै म्हनै आं चूड़ियां सूं लाज आवै छै सो हूं तौ हमैं चूड़ियां पैलै जनम भेटसूं। —वी. स. टी.

उ०—२ अेक दिन सिञ्यां रा घोड़ा माथै बैठौ वौ यूं ईं बिरथा तबड़का मारतौ हौ कै उगनै मरवर री पाळ सूं उतरतौ विणियारयां री झूलरौ सांम्ही धकियौ भांत-भांत रा सुरंगां भांत-भांत रा रूपाळा उणियारा। रूं रूं में जोबन छळकै। —फुलवाड़ी

उ०—३ पछै समेट खांम कर थेली में घात कागळ प्रोहित नुं पहुँचायौ। थिरमौ एक, **वेस** एक जनांनौ अवल, रुपीया सब इतरा प्रोहित नुं विदा रा मेलिया। मण एक सीरावणी मारग री मेली। —कुंवरसी सांखला री वारता

२ कपड़े आदि पहनने या पहन कर सजने या किसी अन्य को पहना कर सजाने का ढंग, तरीका।

उ०—१ अर आप न हालौ तौ कन्या नूं तरुणी हुई जांणि चंद्रावतां पुरोहित रौ धरणौ दिवाई मोनूं बींद रौ **वेस** कराइ साहस थी आंणियौ तौ भी दिल्ली रा दूत दसोर पूगा जांणि पाछौ ही पलाईजै। —व. भा.

उ०—२ पछै नरबद छांनौ घोड़े-वहल **वेस** नै जैतारण था कोस १ अरट छै तठै रह्यौ। सु सुपयारी आथण री मजूरणी रौ **वेस** करने माथै घड़ौ लै नीसरी। —नैणसी

उ०—३ आज निसह म्है चालिस्यां, बहिस्यां, पंथी **वेस**। जउ जीव्या तउ आविस्यां, मुया त उणि हिज देस। —ढो. मा.

क्रि. प्र.-करणौ, कराणौ, देणौ, धारणौ, पहरणौ, पहराणौ, बदळणौ, बदळाणौ, लेणौ।

३ रंगमंच के पीछे का स्थान।

४ भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश द्वार।

५ वेश्याओं का मोहल्ला।

६ वेश्या का घर।

७ शरीर, देहन।

उ०—१ आवइ आवासि आपणइ पगि लूहंता केस। पुण्य हुई तु पांमीई, वेस्या केरु **वेस**। —मा. कां. प्र.

उ० — २ सुदरभाल विसाळ, अलक सम माळ अनोपम। हित प्रकास अद्दु हास, अरुण वारिज मुख ओपम। कृपा धांम नव कंज, नयण अभिरांम सनेही। रुचि कपोल ग्रीवा त्रिरेख, छवि बेस अछेही। निरखंत सत सनमुखा निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मांन दांन चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यांन ओ ध्यांन कर। —रा. रू.

८ स्थिति, हालत, अवस्था।

९ रूप, सौन्दर्य।

१० रूप, स्वरूप।

[सं. वेश] ११ एक दानव जो आयु राजा की रक्षार्थ देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि. —१ विशेष, श्रेष्ठ वढ़िया।

उ०—१ ओ वस्तुआं आपरै हीज लायक छै, म्हारै लायक नहीं तद रावजी राखी। घोडी एक निपट बेस थी सौ रावजी राखियौ।

—ठाकुर जैतसी री बात

उ०—२ कुतक खिदर धव काठ रा, विदर पजावण वेस। तौ पिरा हाजर राखरा, घण मेखचा हमेस। —बां. दा

उ०—३ दिस बतावौ ब्रहन कूं, तौ सुख पाऊं वेस। भिळियां भ्रांती भागसी, जासी सबै भ्रन देस। —स्त्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—४ सदा मनोरथ सुभ करण, वांणी अख्यर वेस। सारां पहली समरियै, गवरी पुत्र गणेस। —पनां

२ देखो 'वेसर' (रू. भे.)

उ०—सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। सुरु गुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै। मुखं प्रकास हास मद, ओपमा उजासयं। उदै अरद्ध भांणए, मयंकजं प्रकासयं। —सू. प्र.

३ देखो 'वेस्या' (रू भे.)

उ० —मुहनउ लेई सवि समुदाय, आव्यु जिहां वइठउ छइ राय। अप आयस लही वर वेस रंगंगणि कीधउ प्रवेस। —हीराणंद सूरि

४ देखो वेस्य' (रू. भे.)

उ०—कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवंदा। विराज विसाऊ कुण वेस, कुण सुद्र कहंदा। —केसोदास गाडण

५ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—१ आळस वाळा राजवी घर रा घर मैं दारू पी रोटी खाय सूय रैणौ, घर रौ कांम परोपकार, वीरता, देस सेवा, आदि आछा कांम न करणा मैं व्रथा यूं ही वेस ऊंमर गमावै है। —वी. स. टी.

उ०—२ हैंम वरनी हेम गिर, बाली लहुवै वेस। कंथ विहूंणी कांमणी साचौ कहि संदेस। सांचौ कहै संदेस वैंण मीठा करूं, राज मुदै पर हथ्थ रंग महिलां धरूं। —मा. वचनिका

उ०—३ हूंसै सारी नाग नारी उचारी विहारी हूंत, सवारी पधारी बळै लेतौ आर्जै सूंक। कठै थां री वेस असी जुद्धकारी वातां करै, फूणांधारी दीठौ न छै आगकारी फूक। —मुरारीदास बारहठ

उ०—४ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस संधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ पळ चढतौ जि होइ सै, प्रथम ग्यांन एहवौ परि। —वेलि.

उ०—५ देवी रत्त नीलमणी सीत रंगं, देवी रूप अंबार वीरूप अंगं। देवी बाल जूवा ब्रध वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसां भुजाळी। —देवि.

रू. भे.—बेस, बैस, वेख, वेसि, वैस।

वेसऊर—देखो 'बेसऊर' (रू. भे.)

वेसऊरी—देखो 'बेसऊरी' (रू. भे.)

वेसकार-सं. पु. [सं. वेषकार] किसी वस्तु की सुरक्षार्थ उस पर लपेटा हुआ कपड़ा।

वेसकीमत, वेसकीमती—देखो 'बेसकीमती' (रू. भे.)

वेसजुवति, वेसजुवती—देखो 'वेसयुवती' (रू. भे.)

वेसण—देखो 'बेसण' (रू. भे.)

वेसणियौ-सं. पु.—बेसन, नमक, मिर्च आदि के घोल को पका कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

वेसणी—देखो बेसणी' (रू. भे.)

वेसणौ—देखो 'बैसणौ' (रू. भे.)

वेसणौ, वेसबौ—देखो बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—कांम पड़ियां वगतर टोप पेरवा री आखडी। केसरिया वागा विना पेरवा री आखडी। दांत रा चुडा विना वडारण राखणरी आखडी। घुडवेल वेसवा री आखडी। गायां री घासमारी लेवा री आखडी। —रा. सा. सं.

वेसणहार, हारौ, (हारी), वेसणियौ — वि०।

वेसिओडौ, वेसियोड़ौ, वेस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेसीजणौ, वेसीजबौ—भाव वा०।

वेसधर-सं. पु. [सं. वेशधर] जैनों का एक संप्रदाय, छद्मवेषी।

वेसन—१ देखो 'बेसण' (रू. भे.)

२ देखो 'विसण' (रू. भे.)

वेसनर वेसन्नर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ वेसनर भी लकड़ी लोह पाखांण लुकाए।

—केसोदास गाडण

उ०—२ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर, कांम बांण ग्रहिय करगि। वळि रितुराइ पसाइ वेसन्नर, जण भुरड़ीतौ रहै जगि। —वेलि.

वेसनव—देखो वैस्णव' (रू. भे.)

वेसबघू—देखो वेसबघू' (रू. भे.)

वेसबर—देखो 'बेसबर' (रू, भे.)

वेसबरी—देखो बेसवरी' (रू. भे.)

वेसबार—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांत खरगोस होसनाक वणावै छै। मछळांद मिटायजै छै। नान्हौ छून देगचां में घातजै छै। माहै देसबार हल्द धणा सूंठ मिरच जायफळ तज लांग वातजै छै। —रा. सा. सं.

वेसव्र—देखो 'बेसवर' (रू. भे.)

वेसव्री—देखो 'बेसवरी' (रू. भे.)

वेसभूसा-सं. स्त्री. [सं. वेषभूषा] १ किसी देश, संप्रदाय, जाति आदि के द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक २ शरीर की सजावट हेतु पहने हुए कपड़े। (अ. मा., ह. नां. मा)

वेसम—देखो 'वेस्म' (रू. भे.) (ह नां. मा.)

वेसमझ—देखो 'बेसमझ' (रू. भे.)

वेसमझी—देखो 'बेसमझी' (रू. भे.)

वेसमण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.) (जैन)

वेसयुवति, वेसयुवती-सं. स्त्री. [सं. वेशयुवती] वेश्या, रण्डी।
रू. भे. वेसजुवति, वेसजुवती।

वेसर, वेसरु-सं. स्त्री. [सं. वेस्वर या वेसरः] १ खच्चर।

उ०—१ अलूखांनि जण साथि मोकल्या, देखाडयूं मेल्हांण। घोडा हाथी ऊंट पोठिया, **वेसर** पूठि पल्हांण। —कां. दे. प्र.

उ०—२ पाडा गाडां पोठिया, वली **वेसरां** वादि। भार भरियां भल संचरइ, अमल चढ़ियां उन्मादि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बेसर' (रू. भे.)

उ०—१ आभा झळपट अंग क चंदै चीरियां, दरियाई धुज देह धरै डग धीरियां। लटकण झोला लेह क **वेसर** बंकियां, भरिया भूखण भार क लचकै लंकियां। —र. हमीर

उ०—२ कांइ नांम की जातियां, सुंदर वोहत सरूप। नख चख दीसै अति चतुर, वल **वेसर** छळ रूप। —पनां

उ०—३ नाकां नी नथड़ी लावजौ, म्हांरै नाकां नी नथड़ी लाव। म्हांरै **वेसर** फूल लगावौ हो, म्हांनै खेलण द्यो गनगौर। —लो. गी.

उ०—४ तन मोड़ वांकी निजर त्रिपुरा, सलज चढियां सौहळी। सळ नाक चाढै विकट सोहै, अहर **वेसर** अळवळी। —मा. वचनिका

उ०—५ सुभ नाक **वेसर** जड़ितस सौवन, असुर पास अळूझऐं। सिणगार असुरां छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झ ए। —मा. वचनिका

वेसरज—देखो 'बेसरज' (रू. भे.)

वेसरम—देखो वेसरम' (रू. भे.)

वेसरमी—देखो 'बेसरमी' (रू. भे.)

वेसलूक, वेसलूग-वि० [फा. बे+सलूक] १ विना ढंग का, तौर-तरीके रहित।

२ बिना सम्बन्ध या रिश्ते।

३ अव्यवहार।

४ बेचैन, घवराया हुआ, उद्विग्न।

उ०—अबै कुंभौ जीव रौ उकराळयौ, ऐकल असवारो मंडोवर गयौ। तरां रिणमलजी माळियै बैठां अळगां सु कुंभा नै आवतौ ओळखियौ। तितरै आयौ रिणमलजी सुं मिळियौ। कुंभौ गळगळौ हुवौ। तरां रिणमलजी पूछियौ—अवार एकलौ **वेसलूक** सौ क्यु? खातणी वाळां विगाड़ी दीसै छै। —राव रिणमल री बांत

वेसवण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.)

वेसवघू—देखो 'वेसबघू' (रू. भे)

वेसवनिता-सं. स्त्री. [सं. वेशवनिता] वेश्या, रण्डी।

वेसवा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.) (जैन)

वेसवाद—देखो 'वेस्वाद' (रू. भे.)

वेसवानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

वेसवार-सं. पु. [सं.] पीसे हुए नमक, मिर्च, लौंग, हल्दी, धनिया, काली मिर्च आदि मसालों का चूर्ण।

उ०—१ तै मैं घणो नान्हौ छुंनियौ मांस मंदी आंच कढाई में तळजै छै। **वेसवार** मसाला घात उहां मांडां में घातजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ मांस रंधांणां देगचा **वेसवार** अपारा, सूळा त्यार किया सही जाजै घ्रत झारा। आया थाळ मिठाइयां पकवांन जभारा, भोजन छपन छतीस भांत जीमै जुग सारा। —पा. प्र.

उ०—३ आगै समघड़ौ हथियार खोल नै बैठो छै। ससौ एकै रजपूत नूं दीयौ। कह्यौ, 'सखरौ वणावौ'। उण कह्यौ, "भलां, जी' तठै रजपूत **वेसवार** ससै नूं दे अर अंगीठो जगायौ छै। —पीठवै चारण री वात

उ०—४ तठा उपरांत मोदियां नै हुकम हुवौ छै। भुंजाई सारू सारी ही वसत सीधौ मीठांणा **वेसवार** सरब लेय राती नाडी चालज्यौ म्है सिकार रम उण नाडी आवां छां। —रा. सा. सं.

उ०—४ जरै जीमण नैं पंचधारी लापसी मोकळी मंगळीक कीधी। घणा दाळ भात बणाया। घणा वेसवारां रांधिया, सालणा बणाया। जीमण तयार हूवौ। तरां आईदांन जैतसीजी कनै गयौ नैं कह्यौ, पधारीजै, रसोड़ौ तयार हूवौ छै। —जैतसी ऊदावत री बात

२ पहले हड्डियां अलग करके पीस कर मसाले मिला कर पकाया हुआ मांस।

रू. भे.—बिसवार, वेसवार, वेवार, वेसबार, वेसवारी, वेसार।

वेसवारियोखीच—सं. पु. [सं. वेसवार+कृशर] बाजरी के साथ कुछ मोठ कूट कर उनके छिलकों को अलग कर फिर उबालते समय नमक, मिर्च, धनिया आदि 'वेसवार' एवं काचरियों के छोटे-छोटे टुकड़े मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।

रू. भे.—वेस्वारियोखीच, वेंसवारियोखीच, वेस्वारियोखीच।

वेसवारी—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

उ०—वेसवारी वळांहि, सांजमणी हुँता ससां। खरा न खाधा जाहि, बिस भरीया वेंसूर रा। —पीठवै चारण री वात

वेसवास—सं. पु.—१ वेश्या या रण्डी का घर।

२ देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

वेसस्त्री—सं. स्त्री.—वेश्या, रण्डी।

वेसांमी, वेसांमौ—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

उ०—मुहम प्रकोप उदेपुर माथै, सातेंइ महण थया फिर साथै। लाधां जळ वेसांमौ लीजै, छीजै जंतु प्रजा पुर छीजै। —रा. रू.

वेसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—महि तु सूग्रडा रूपइं थई, वेसा पंजरि बइठउ जई। राजकुंग्ररि हिव ग्रतिहिं ग्रलजई, महती ग्रागलि कहिवा गई। —हीराणंद सूरि

वेसाड़णौ, वेसाड़बौ—देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

वेसाड़णहार, हारौ (हारी), वेसाड़णियौ—वि०।

वेसाड़िग्रोड़ौ, वेसाड़ियोड़ौ, वेसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेसाड़ीजणौ, वेसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वेसाड़ियोड़ौ—देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसाड़ियोड़ी)

वेसाणौ, वेसाबौ—क्रि. स.—१ उत्पन्न करना, व्याप्त करना।

उ०—ज्यूं कोइ रै स्रद्धा वेसांणीनें कहै हिवै तूं गुरु कर। तब तै कहै दोय चार जणां नै पूछ सूं तथा आगला गुरु नें पूछ सूं। तै कहसी तौ गुरु कर सूं। जब जांणणी इणरै स्रद्धा पक्की बैठी नहीं। —भि. द्र.

२ देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

उ०—वेड़ी घाली वेसांणियौ रे, राहु ग्रहचौ जिम चंद। जोरौ कोई चालियौ, सिंह पड़चौ जिम फ़ंद। —प. च. चौ.

वेसाणहार, हारौ, (हारी), वेसाणियौ—वि०।

वेसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेसाईजणौ, वेसाईजबौ—कर्म वा०।

वेसानर—देखो 'वंस्वानर' (रू. भे.)

वेसायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, व्याप्त किया हुआ।

२ देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसायोड़ी)

वेसार—सं. पु.—विश्वास, भरोसा, एतबार।

वि०—१ बिना सार का, तत्वहीन।

२ बिना तलवार वाला, जिसके पास तलवार न हो।

३ बिना चर्बी का, चर्बीहीन।

४ देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

वेसावणौ, वेसावबौ—देखो 'बैठाणौ, बैठावो' (रू. भे.)

वेसावणहार, हारौ (हारी), वेसावणियौ—वि०।

वेसाविग्रोड़ौ, वेसावियोड़ौ, वेसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेसावीजणौ, वेसावीजबौ—कर्म वा०।

वेसावियोड़ौ—देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसावियोड़ी)

वेसास—१ देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—मेछै वहतै मेलिया, दूत कमंधां पास। साहरै रहिया ग्राज लग, थे म्हांरै वेसास। —रा. रू.

उ०—२ वळै रूखमइयै कहै छै। इतना राजवंस छोडिनै ग्रहीर सूं सगाई करै। सू बूढा हुग्रां को वेसास कौ मत करौ। देखौ माता पिता कितरउ चूकै छै। —वेलि टी.

उ०—३ कांम सूंप नंह कीजिए, विदर तणौ वेसास। रांणी कीधौ 'राजसी', हुग्रौ जगत मैं हास। —वां. दा.

उ०—४ मन रौ उदास वेसास न जिय रौ, खांन पांन सुख नहीं उण घाळी। कद मिळसी रसराज सांवळड़ौ, बनमाळी गोकुळ रौ ग्वाळी। —रसीलैराज रौ गीत

२ देखो 'बेसास' (रू. भे.)

उ०—पीर न कौ वेपीर सौ, ग्रास न जिसी निरास। सकल न कोई ग्रकळ सा, सास न सा वेसास। —ग्रनुभववांणी

वेसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—१ वेसासघात लै विसतरी, सळी सळी कुळ सोधिया। सुपनंख्या वेध कीयौ संबळ, रांवण रांम विरोधिया। —सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ माल खायो ज्यांरौ त्यांरो रत्ती हीये नायो मोह, कुबदी सूं छायौ भायो नहीं रमाकंत । वेसासघात सूं कांम कमायौ बुराई वाळौ, माजनौ गमायौ नींवावतां रै महत । —कविराजा बांकीदास

वेसासड़उ, वेसासड़ौ—देखो 'विस्वास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—करहा तुझ वेसासड़े, मैं विसारिया सट्काज । रखे बीच वासौ करै, मारू न मेळै आज —ढो. मा.

वेसासणौ, वेसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासवौ' (रू. भे.)

उ०—१ तठै कालबूत हसतणीं रै फरस करि नें छिबितरी खाड मांहै पड़ै छै । पछै लोह सांकल रा प्राम नाखिनें तिकै हाथी पकड़ीजै छै । इणी भांति रा सींवली गजराज वेसासनैं आंणिआ छै । तांह नूं घणा मलीदा, वेसवार, मोगर दे दे नें पाटि आंणिनैं सभाया छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ सुजु करै अहीरां सरिस सगाई, ओलांडै राजकुळ इता । त्रिधपणै मति कोइ वेसासौ, पांतरिया माता इ पिता । —वेलि

उ०—३ प्रमेसूर अंक तणै परमांण. मंडे घर 'छाडा' वेध्र मंडांण । वेसासै दाखे कोल वचन्न, मारू राव ध्रोह धरै वडमन्न । —गो. रू.

उ०—४ जळ मांहै जगदीस, विढै मघकीट विभाड़ै बतळावै वेसासि, पछै दांणवां पछाड़ै । —पी. ग्रं.

उ०—५ तांरां खड़ियां रा साथ नै परतीत आई । सगां रा नांमठांम ठीक पहुता, वेसास्या । तरै खड़िये आईदांन आय सुभराज कीयौ । तरै जेतसीजी घोड़ा सूं उतरिया । बांह-पसाव करिनै मिळिया । —जेतसी ऊदावत री बात

वेसासणहार, हारौ (हारी), वेसासणियौ—वि० ।

वेसासिओड़ौ, वेसासियोड़ौ, वेसास्योड़ौ—भू० का० कृ०

वेसासीजणौ, वेसासीजबौ—भाव वा. ।

वेसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ रिणमल्ल राउ कूंभेण रांणि, वेसासि चूकि वूहउ विनांणि कूंभेणि कूड़ कीयउ कदम्म, मारियउ 'रइण' साख्यात ध्रम्म । —रा. ज. सी.

उ०—२ सत्रियें सपुत्रै बंधवै समेत्रै सगै, न क्यों संमरयै न हुवे सांमासि । वाट वसना पड़ै न कौ वाट बाहर चड़ै, ती वसती तणौ किसौ वेसासि । —तेजोजी चारण

वेसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसासियोड़ी)

वेसासौ—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—वरसां सौ जीवण की आसा, पण एक घड़िय नहीं वेसासा । समयसुंदर कहइ अथिर संसारा, जनमि जनमि जिन ध्रम आधारा । —स. कु.

वेसि—१ देखो 'वयस' (रू. भे.)

२ देखो 'वेस' (रू. भे.)

उ०—अन्न उदक पय परिहरि, आभरणां ऊवेखि । वकुल त्वचा वीटि करि, तरुणी तापस वेसि । —मा. कां. प्र.

३ देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—वेसि पभणइ वेसि पभणइ 'मंत्रि सुणि वात । ए सहूइ धन ताहरउं रहिय भोगवि भली परि, मंत्रीसर इम संभली वचनबद्ध रहिउ तसु घरि । —हीराणंद सूरि

४ देखो 'वेस्य' (रू. भे.)

वेसियोड़ौ—देखो 'वैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसियोड़ी)

वेसी-वि.—१ वेस धारण करने वाला या वेसधारण किया हुआ ।

२ देखो 'वेसी' (रू. भे.)

उ०—१ इण कारण इण सामाजिक रूप रौ मिनख नै जितौ वेसी बोध होसी वौ उतौ ई समरथ वणसी । —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारौ औ डिड विस्वास कै धरती माथै मिनख सूं वेसी कीं चीज कोनीं । —फुलवाड़ी

उ०—३ केई जणा मिनकी रै प्रगट व्हियां ऊंदरा हड़बड़ै ज्यूं कानी कानी न्हाटा । केई डावड़ियां नै तौ डर रै कारण जाफ आयगी । विडरूपता विचै ई वांनै भूत रौ डर वेसी लागौ । औ खगड़ौ व्हियौ तौ कांई व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

वेसुद—देखो 'वेसुव' (रू. भे.)

उ०—भली भांत परुसारौ किया नै दारू पावता गया । तरै सारा लोटपोट वेसुध हुवा तरै सड़, वेउ आडा देनै लगाइ दिया । कतराहेंक वळ मूवा बाकी रा फळसा रै मुंहडै आया सु खीली खटका विगर मारिया और साथ डूंगर रा घरां ऊपर मेलियौ ।

—नैणसी

वेसुद्धि, वेसुधी—१ देखो 'वेसुध' (रू. भे.)

२ देखो 'वेसुधी' (रू. भे.)

वेसुमार—देखो 'वेसुमार' (रू. भे.)

उ०—कळहिया कमंध आसुर सक्रुद्ध. जदुवंस भांण किर भांण जुद्ध । ओळा कि अतुळ गोळा अपार, वरखंत दहूं दळ वेसुमार ।

—रा. रू.

वेसुर, वेसुरौ—देखो 'वेसुर' (रू. भे.)

वेसुवाद—देखो 'वेस्वाद' (रू. भे.)

वेसूर—देखो 'वेसऊर' (रू. भे.)

उ०—वीसळदे वेसूर खाटी पए खाधी नहीं। कोधी घात करूर, माया उए मैं मोतिया। —रायसिंह सांदू

वेसूरत—देखो 'बदसूरत'।

वेसू'रो—देखो 'बेसऊर' (अल्पा, रू. भे.)

वेसूल, वेसूलो–वि०—१ निष्कंटक।

२ बिना दर्द।

उ०—**वेसूल** फूल-धारां विहार, भाले पड़ंत डोले भंभार। संग्रांम लोह वाहै सनड्ड, विपरित घाउ ऊखळा-त्रड्ड। —गु. रू. बं.

३ अपार, असीम।

उ०— छह दरसन छिनवे पाखंडा, एक न जांणें नांव अखंडा। केना देख पाखि नर भूला, बिखै करम करिग्या **वेसूला**।

—अनुभववांणी

४ अमर्यादित।

वेसोटो—देखो 'बेसोटो' (रू. भे.)

वेसो—देखो 'वेसो' (रू. भे.)

उ०—घर **वेसा** घरवेस कहाया, घिल घरवेस मता नहीं पाया। हाथै भंडा गलै वागली, घरि छरि मांगें भीख आगली।

—अनुभववांणी

वेस्टक—वि. [सं. वेष्टक] १ चारों ओर से ढकने या आवृत करने वाला।

२ घेरा डालने वाला।

वेस्टकापथ-सं. पु. [स. वेष्टकापथ] एक प्राचीन शिव स्थान। (पुराण)

वेस्टण, वेस्टन-सं. पु. [सं. वेष्टनं] १ कोई वस्तु आदि लपेटने का कपड़ा।

२ लपेटने की क्रिया या भाव।

३ घेरने की क्रिया या भाव। (४) पगड़ी, साफा।

५ नृत्य का एक प्रकार का भाव विशेष। (६) घेरा, अहाता।

वेस्टित-वि. [सं. वेष्टित] १ लपेटा हुआ. २ लिपटा हुआ. ३ घेरा हुआ. ४ ढका हुआ, आच्छादित।

उ०—जगत मात जननी जग जांनी, मदिरा रुधिर छाक मन मांनी। **वेस्टित** अरून उरन के अंबर, तप मुख मनहु प्रात रातंबर। —मे. म.

वेस्टितकरण-सं. पु.—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष।

वेस्म-सं. पु. [सं. वेश्म] घर, गृह, मकान।

रू. भे.—बेस्म, वेसम।

वेस्य-सं. पु. [सं. वेश्य] १ व्यापार करने वाला, व्यापारी, बनिया।

२ व्यापारिक समुदाय। ३ वैश्य जाति।

४ वैश्य जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—बइस, बईस, बयस, बिस, बैस, वइस, वईस, वेस, वेसि, वैईस, वैस, वैस्य।

वेस्यांगना-स. स्त्री. [सं.] वेश्या वृत्ति करने वाली स्त्री।

वेस्या-स. स्त्री. [सं. वेश्या] १ वह स्त्री या स्त्रियों का वर्ग जो धन लेकर संभोग कराने का व्यवसाय करती हैं। पातर, रण्डी, वेश्या।

उ०—१ खेरवा में स्वांमीजी कनै ओटो स्याल उंधो अवळो बोल्यौ थे स्रावक नें दियांइ पाप कहो ने **वेस्या** नें दियांइं पाप कहो छे, इए लेखै स्रावक अनै **वेस्या** सरीखा गिण्या। —भि. द्र.

उ०—२ सपरिकरि संध्या समइ, रथि बइसीनइ राय। वेख धरी विवहारिया, **वेस्या** नइं घरि जाय। —मा. कां. प्र.

वि० वि०—वेश्याओं के कई वर्ग होते हैं—(१) पातर (२) भगतन (३) रामजनी (४) हुरकनी—ये हिन्दु हैं तथा (५) कंचनी (६) सावंत ये मुसलमान हैं। धन लेकर संभोग कराना इन सब का सामान्य व्यवसाय है। परन्तु इनके रहन-सहन एवं व्यवसाय करने के कुछ अलग अलग तरीके हैं इस कारए ये वर्ग एक दूसरे से कुछ भिन्नता रखते हैं।

(१) **पातर**:—इनके बाप, भाई आदि जागरी होते हैं और इनकी उत्पत्ति राजपूतों से मानी जाती है। जागरी लोग अपनी बहन-बेटियों से संभोग का कार्य करवाते हैं। इनकी औरतें यह कार्य नहीं करती। कंवारी लड़की से व्यवसाय कराना पाप समझा जाता है। इसलिये जिस लड़की को पातर बनाना चाहते हों उसके विवाह की रस्म छोटी ऊम्र में ही गणेशजी के साथ पूरी कर दी जाती है और उसके जवान होने पर ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ इसका प्रथम संभोग करा दिया जाता है। उस रात गाना बजाना व उत्सव मनाया जाता है उसके बाद उसका व्यवसाय चलने लगता है। इसके अतिरिक्त ये कुछ गाना-बजाना व नाचने का कार्य भी करती हैं। इस कार्य की तालीम इन्हें मीरासी लोग या भगत देते हैं। किसी मुसलमान के साथ संभोग कराने का इनमें प्रतिबंध है। विधवा औरतें किसब का व्यवसाय नहीं कर सकती। इनकी पोशाक पाजामा, और लंबा अंगरखा तथा सिर पर दुपट्टा है। कभी कभी घाघरा अंगरखा भी पहनती हैं। इनका धर्म शाक्तिक है। खान-पान राजपूतों जैसा है। धोबी, ढोली, मोची, बांभी, महत्तर और मुसलमानों से ये परहेज करती हैं।

(२) **भगतन**:—इनकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से मानी जाती है। इनके विवाह रस्म किसी गरीब साधु के साथ फेरे दिरवा कर पूरी करवादी जाती है। साधु को कुछ धन देकर उससे यह बात तय करवा ली जाती है कि वह इस लड़की का कोई दावा नहीं करेगा। ऐसा साधु यदि न मिले तो पातरिओं की तरह इनके विवाह

की रस्म भी गरोश जी साथ फेरे दिरवा कर पूरी करादी जाती है। यह 'कंवारपना' उतारना होता है। कंवारी लड़की से किसब करवाना इनमें भी वर्जित है। विवाहित औरतें किसब का व्यवसाय नहीं करतीं। पातरियों की तरह ये भी गाना-बजाना व नाचने का कार्य करती हैं परन्तु इस कला में पातरियां ज्यादा शिक्षित होती हैं। पोशाक इनकी भी पातरियों जैसी होती हैं। संभोग कराने में मुसलमानों से परहेज नहीं करती परन्तु उनके हाथ का खाना-पीना नहीं करती। दारू, मांस, गाजर, सलजम, प्याज व लहसुन से परहेज करती हैं। धर्म इनका वैष्णव है, इष्ट हनुमानजी का रखती हैं।

इन दोनों के अलावा हिन्दुओं में रामजनी और हुरकनी नामक वेस्याओं के दो वर्ग और हैं पर उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

(३) **कंचनी:**—ये मुसलमान रंडियां हैं। ऐसा कहा जाता है कि पहले इनको 'कंजरी' कहा जाता था, परन्तु बादशाह अकबर ने कंजरी के स्थान पर कचनी नाम रख दिया। इनके भाई-बाप आदि कंचन कहलाते हैं। इनका रहन-सहन मुसलमानी ढंग का होता है। औरतें परदा रखती हैं और लड़कियों को रण्डी बनाने के लिये कलावतों से गाने-बजाने व नाचने की तालीम दिलाई जाती है। पातरियो और भगतनों की तरह इनका भी 'कुमारपना' उतारा जाता है पर कोई मजहबी या वैवाहिक रस्म पूरी नहीं की जाती। पातरियों की तरह ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ लड़की का प्रथम सभोग करवाया जाता है। उस रात लड़की को दुलहिन बना कर उस आदमी के पास भेज दिया जाता है, सुबह अपनी बिरादरी में मिठाई बांटी जाती है।

कचनियां सिर खोल कर नाचतीं हैं। कभी-कभी बरातों में नाचने भी जाती हैं। गाने-बजाने व नाचने में ये पातरियों और भगतनियों से अधिक दक्ष होती हैं। अदाऐं दिखा कर ग्राहकों को फंसाना और लूटने में चालाक होती हैं। गजल और ठुमरी इनका खास गाना है। पोशाक इनकी अंगिया, कुरती, पजामा और दुपट्टा है। इनका चूड़ा काच का होता हैं।

कंचनी के अलावा मुसलमान वेश्याओं का एक 'सावंत' वर्ग और होता हैं, परन्तु उसका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

इन सब के अतिरिक्त इसी प्रकार का व्यवसाय करने वाली एक किसबन या कसबन नामक कौम है। जो पहले हिंदू थी मगर अब मुसलमान है। ये छोकरियों को मोल लेकर पोशीदा कसब कराया करती थी। एक बार एक मुसलमान छोकरी ने इस काम के लिए मना किया एवं परदे में बैठ कर कुरान पढ़ने लगी और दूसरी छोकरियां इसको परदा खोल कर बदनीयति से देखती थी तब इसने बददुआ दी कि जाओ तुम्हारे कसब चौड़े आ जाये एवं गर्मी हो जाय। उसी दिन से ये बाजार में कसब कमाने के कारण कसबन या टकियाई या टकियारी कहलाने लगी।

मारवाड़ में गुजरात से उस समय आई जिस समय वहां के हाकिमों के अहदी मारवाड़ में आते थे। इनकी खांप चौहान, चापावत, सोढ़ा, भाटी आदि है। ये पहले रामदेवजी को मानती थी और अब खुदा आदि का नाम लेती हैं एवं मुसलमानी ढंग बरतती है। इनके नाम हिंदुओं जैसे होते हैं। और इनकी पोशाकें रंडियों व अहणियो जैसी होती हैं। ये गाना-बजाना नहीं जानती। ये शराब पीती हैं। किन्तु सूअर एवं झटके का मांस नहीं खाती। ये चलते फिरते आदमी को फंसा लेती है। इनकी लड़कियों की शादी तेलियों, घांचियों आदि की उन स्त्रियों के लड़कों से की जाती है जो मुसलमानों के घर घुस जाती है। इनकी ब्याही स्त्री कसब कमाने का काम नहीं करती और अगर करती है तो वह जाति-च्युत कर दी जाती है। जाति-च्युत औरत को जाति में लेने के लिए अजमेर भेजा जाता है। वहां उसें गुनहगारी में पंचों का हुक्का भरना पड़ता है।

२ स्वर्ग-लोक की अप्सराऐं।

उ०—देरांणी वचन—आज झगड़ा ऊपरै जावतां भेस करियौ छै। कुसम फूलां रौ मौड़ अनै वसण कपड़ा रंगिया है। केसर मैं नेह न देह सदैव जौ नेह म्हां सूं राखता हा सौ भी आज नहीं अरयात म्हारा सूं ही सनेह छोडियोड़ा होवै ज्यूं सोह रहिआ छै। इण वास्ते म्हनैं तौ तुलै है की वाभीजी साहब म्हारै पती लोड़ी सौक वसावैला अरथात जुद्ध मैं मारीज अपछरां वरसी हूं सत करनै जासूं जितरै लौड़ो सौक धकै मिळसी। जेठांणी कहै—हे देरांणी तूं उण कुळ मैं उपजी है जठै थारै माता पिता रा दोनूं ही पख विनां दाग रा अरथात निकलंक है-सौ कांई मूंडौ सौ **वेस्या** ही थारौ सुहाग खोस लेवै। —वी. स. टी.

रू. भे.—वेसां, वेस, वेसा, वेसि, वैस, वैस्या।

वेस्याकार—एक वर्ग विशेष ?

उ०·········गंधिकायण दौस्यिकापण सौवरणाकार कांस्यकार मणिकार पूगीफलतांबूलिक मालिक सौत्रिक लडुककार कांडुकिकार कणकार **वेस्याकार** चरमकार मल्लक खलक धांन्यखलक वाटक वाटिका वांमी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर। —व. स.

वेस्यारत—वि०—वेश्याओं में अनुरक्त, लीन, वेश्यागामी।

उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैण मांही राज करै। तेथी जुवारी, मांसाहारी, सुरापांनी, **वेस्यारत**, चोर, आखेटी, परदारत रौ नांम नहीं। —सिंघासण बत्तीसी

वेस्याहटी-सं. पु.—वेश्याओं का मुहल्ला। (सभा)

वेस्रमण, वेस्रवण - देखो 'वैस्रवण' (रू. भे.)

वेस्वारियोखीच—देखो 'वेसवारियौखीच' (रू. भे.)

वेह-सं. पु. [सं. वृद्धि] १ विवाह मंण्डप (विवाह वेदी) के चारों कोणों (चारों उपदिशाओं—नैर्ऋत्य, मारुत, ईसान एवं आग्नेय) में हरे बांसों के संरक्षण में रखे जाने वाले मटके जो ९-९ की संख्या में ३६ होते हैं।

उ०—१ दिन ऊगौ, ताहरां रिणमलजी सीसोदियां रा माथा वाढि चंवरी रचाय, तियां री चोक्यां कीवी। तियां ऊपर बरछांरी वेह मांडी। अर सीसोदियां री बेटियां राठोड़ां नूं परणाई। च्यार पोहर दिन वीमाह किया। —नैणसी

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति नीला आला वंस केलि खंभ सूंना गलिआ थका काचना रा कळसां री वेह करि नैं चौंरी पधराया छै। हथळेवौ जोड़ छेहड़ा बांधिया छै। सु जांणे मन बांधिया छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ विप्र मूरति वेद रतन मैं वेदी, वंस आस अरजुनमैं वेह। अरणी अगनि अगर मैं इंधण, आहुति घ्रत घणसार अछेह। —वेलि

उ०—४ स्तुति वायक सुभ मंत्र, तवै फल दायक तोरण। पधरायौ परणवा, 'अभौ' आयौ राय अंगण। नइरत मारुत निरखि, कूंण ईसांन अगन कसि, वंस हरित जुत वेह, दीप रस नेह असट दिस। —रा. रू.

उ०—५ उच लगन लखि रिखि उरधि, स्रब कूंण प्राचिय सुरधि। रचि कनक वेह सुरंग, ओपंति नव खण अंग। —रा. रू.

वि० वि०—ये मटके (कलश) राजा महाराजाओं के सोने-चांदी के होते थे एवं दूसरों के मिट्टी के होते हैं, जिन पर लाल कपड़े लपेटे हुए होते हैं। इनमें खाजे-मगद आदि डाले जाते हैं कहीं सात सुपारियां एवं कुछ मूंग डाले जाते हैं। ये कलश लड़के की शादी में सात, नौ या इग्यारह होते हैं, जो 'तौरण थंभ' के पास रखे जाते हैं एवं लड़की की शादी में छत्तीस होते हैं जो विवाह-मडप (विवाह वेदी) के चारों ओर नौ-नौ के चार समूहों में रखे जाते हैं, इनमें सबसे ऊपर वाले कलश को 'बूभौ' कहते हैं एवं हरे बांसों के संरक्षण में चारों उपदिशाओं में रखे जाते हैं एवं आठों दिशाओं में दीपक जलाये जाते हैं।

२ मंगल-कलश।

३ विवाह-मडप, विवाह-वेदी।

सर्व.—वह, वे।

२ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—वदै ब्रहमांण चियारै वेह। —अंगीपुरांण

३ देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ आसक हमारा वोई, जिन रचना रची सब कोई। वेह कहियै अपरमपारा, ज्यां कूं क्या जांणै संसारा। —श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ हरीया लेख लिलाट मैं, जो वेह वाल्या अंक। सुख दुख भुगतौ आपणा, कहा करी गैरंक। —अनुभववांणी

उ०—३ वेह समरथ वणावियो, वाघ डाच जम बत्थ। जिण माफल लग जाड़ियां, माय जाय गज मत्थ। —बां. दा.

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—कायर लाखां जतन कर, वेह न विसेख पाय। सूरा समहर संहरै, जातां जुगां न जाय। —रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

उ०—पोहौ अंक वेह प्रमांण, मारू खोटा मंडिया। सक भड़ चढै सिकार, सभै छला सांवर सुंवर। —गो. रू.

६ देखो 'वेस' (रू. भे.)

७ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—सुई तणइ वेहि मूंसल घालेवउं करइ, मूंसल फूलावेवउं करइ, ऊभां पीइ, कलकलतां बूकइं, बफातां गिलइ, वलि बांधी कोडियां हणइ लीख तणइ वेहि वाल प्रोइ, मव धायां तेर पडइ। —व. स.

रू. भे.—बेह, बैह, वे', वैह।

अल्पा.,—बेहड़ली, वेहड़ली।

वेहक—१ देखो 'बहक' (रू. भे.)

२ देखो 'वेहक' (रू. भे.)

उ०—हूकां बेली हक है, बेहकां वेहक। हरीया हेकै हक बिन, सब दिन जांहि अन्हक। —अनुभववांणी

वेहकणौ, वेहकबौ—देखो 'बहकणौ, बहकबौ' (रू. भे.)

वेहकणहार, हारौ (हारी), **वेहकणियौ**—वि०।

वेहकिओड़ौ, वेहकियोड़ौ, वेहक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेहकीजणौ, वेहकीजबौ—भाव वा०।

वेहका—देखो 'वेहका' (रू. भे.)

वेहकाणौ, वेहकाबौ—देखो 'बहकाणौ. बहकाबौ' (रू. भे.)

वेहकाणहार, हारौ (हारी), **वेहकाणियौ**—वि०।

वेहकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेहकाईजणौ, वेहकाईजबौ—कर्म वा०।

वेहकायोड़ौ—देखो 'बहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहकायोड़ी)

वेहकावणौ, वेहकावबौ—देखो 'वहकाणौ, वहकावौ' (रू. भे.)

वेहकावणहार, हारौ हारी), वेहकावणियौ—वि० ।

वेहकाविग्रोड़ौ, वेहकावियोड़ौ, वेहकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेहकावीजणौ, वेहकावीजबौ—कर्म वा० ।

वेहकावियोड़ौ—देखो 'वहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहकावियोड़ी)

वेहकियोड़ौ—देखो 'बहकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहकियोड़ी)

वेहड़, वेहड़उ—१ देखो 'बेहड़' (रू. भे.)

२ देखो बे'ड़ौ' (मह., रू. भे.)

वेहड़ली—देखो 'वेह' (अल्पा.,रू. भे.)

वेहड़ाफोड़—देखो 'बे'ड़ाफोड़' (रू. भे.)

वेहड़ु., वेहड़ू., वेहड़ौ—१ देखो बे'ड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसै समइयै मैं भालुवां ग्रांण ग्ररज कीवी छै। भाखरां रा खुडां **वेहड़ां** मांहां सूवर नीचा उतरिया छै । राजांनां देसोतां सूवरां सांमी वाग लीवी छै । फड़कड़ां फड़वड़ायां जावं छै ।

—रा. सा. सं.

उ०—२ छत्रवट तूझ दसरथ नंद ग्रोप ग्रच्छेहड़ा, बाढै खगां रिण दसमाथ कर धड़ वेहड़ा । वळमुखहूंत निकसै वैण ग्राखर **वेहड़ा**, जुग पद घसै मुगट सहीव सुरपत जेहड़ा । —र. ज. प्र.

२ देखो 'वैसौ' (रू. भे.)

उ०—छत्रवट तूझ दसरथ नंद ग्रोप ग्रच्छेहड़ा, बाढै खगां रिण दसरथ कर धड़ वेहड़ा । वळमुखहूंत निकसै वैण ग्राखर **वेहड़ा**, जुग पद घसैं मुगट सहीव सुरपत जेहड़ा । —र. ज. प्र.

वेहदु, वेहदू—सं. पु.—राह में चलनेवाले, राहगीर पथिक ।

उ०—ताहरां लोकै पूछियौ-भाई कै-रा उचाळा ? कह्यौ-जी ! फोफांणंद थळ रौ चारण छै । घास चारण जावं छै सात वीस भैंसयां नै बजण पड़ै छै, सू मांहरी धरती मांहै घास थोड़ा, सू महे-वची मैं घास चारण ग्राया छै, सू भैंस्यां तौ चरस्यां-चरस्यां ग्राध्यां वूहयां. सू म्है मारग **वेहदू** हुवा, सू ग्राधा जास्यां ।

—फोफाणंद री वात

वेहटौ—देखो 'वेहटौ' (रू. भे.)

वेहडउ, वेहडु, वेहडू, वेहडौ—१ देखो 'वे'ड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ बहरांनी भीड़, हुई पीड़, तुटई चीड़, एक उतावळि दौड़इ छै, एक माथइ **वेहडु** चउड़इ छै, लुगडूं तै माथै ग्रोढई छे, **वेहडूं** तै फोड़इ छै । एक एक नइ ग्रड़इ छै, धड़ाधड़ पड़इ छै, माहोमाह लड़इ छै हुवई नांनी लाड़ी, चीखल भी पड़इ ग्राड़ी, बीजांनी भीजइ साड़ी, तै माठै करइ राड़ी, सोक सोकनी करइ चाड़ी......

—रा. सा. सं.

उ०—२ तोरण त्रीकम ग्राविया, ल्यौ **वेहडां** वर नारि । वर **वेहडुं** वैकुंठ नायक, वंदियुं कर च्यारि । —रुकमणी मंगळ

२ देखो 'वैसौ' (रू. भे.)

उ०—तोरण त्रीकम ग्राविया, ल्यौ वेहडां वर नारि । वर **वेहडुं** वैकुंठ नायक, वंदियुं कर च्यारि । —रुकमणी मंगळ

वेहण—सं. पु. [सं. विधाता] विधाता, ब्रह्मा ।

उ०—नखत्रैत जोध निरेहणं, वड खत्री सारिख **वेहणं** । एकल्ल मल्ल दुभल्ल ग्रांकल, कहि कलहि ग्रकलं । —ल. पिं.

वेहणउ, वेहणौ—वि. [सं. वेधनकम्] छेदन करने वाला, वेधने वाला ।

वेहणौ, वेहबौ—क्रि. ग्र.—१ चालू होना, चालू रहना ।

उ०—नै जेसोजी भाडंडै नागोर रै गांव गया । उठै कोट करायनै मांणस राखनै रांणा कनै चीतोड़ गया । उठै गांव १४० तांणौ मला सोळंकी वाळी दियौ । तठै रांमदास माल्हण रौ वाप मरियौ । रांणा कुंभा थकां ग्राया पछै ग्रौ पटौ **वेहतौ** थौ । —नैणसी

२ डरना, भयभीत होना ।

उ०—ग्रौ कहि वेसवटौ राजा वीसळदै पास रह्यौ छै । ताहरां **वेहतौ** सौ उठ उवौ हुवौ नै हाथ जोड़िया । ताहरां राजा पूछियौ, "थारै जिका मन मांहै वीनती छै सु कहि । " ताहरां वेसवटै वीनती कीवी "माहाराज सलामत, हूं राजा पासै रहूं छुं नै मूळवै किम दुख पाय रावळौ बिगाड़ियौ, ईयै वात हूं ज जांणूं ।' ताहरां राजा कह्यौ, "तनूं किम न लागो । करसी सौ पासी ।"

—मूळवै सांगावत री वात

३ देखो 'व्होणौ, व्होवौ' (रू भे.)

उ०—ग्रड़िया सुजि पड़िया मुंह ऊंधै, सहज कोय देखै सुर-ग्रसुर । ग्राखतौ **वेह** कोय नह ग्रायौ, ग्रमरा' जम राव तणै ज उर ।

—जोगीदास कंवारियौ

४ देखो 'वहणौ, वहवौ' (रू. भे.)

उ०—लुगाई रै नांवे वसा ग्राभडवा री ग्राखडी । सरसे घोडै चढवा री ग्राखडी । काछी घोडै चढवा री ग्राखडी । पालखी चढवा री ग्राखडी । कपुर विना पांन चाववा री ग्राखडी लुगाई सुं रात मैं एक वार भोग करणौ, उपरंत करवारी ग्राखडी । किस-तुरी बिना रहवा री ग्राखडी । फाटा कपड़ा सींवणरी ग्राखडी । साथ नै वल हुवा विनां जीमणरी ग्राखडी । वावडी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी । **वेहती** नदी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी ।

—रा. सा. सं.

५ देखो वेधणौ, वेधवौ' (रू. भे.)

उ०—काया झवकइ कनक जिम, सुंदर, केहै सुख्ख। तेह सुरंगा किम हुवइं, जिण वेहा बहु दुख्ख। —ढो. मा.

वेहणहार, हारौ (हारी), वेहणियौ—वि०।

वेहिओड़ौ, वेहियोड़ौ, वेह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेहीजणौ, वेहीजबौ—भाव वा., कर्म वा.।

वेहत-सं. स्त्री.—एक पौष्टिक औषधि का नाम।

वेहद, वेहदी—१ सर्वशक्तिमान्, ईश्वर।

उ०—१ वेहद वडा गोडिया कोतिक करंदा। —केसोदास गाडण

उ०—२ हरिया वेहद के घटां, नहीं हदि की आस। संसा सोच न ताप तन, नांव निरासा वास। जनहरिया वेहद घरां, धन अनहद की घोर। वाजा राग अपंग धुनि, एक अखंडी टोर।

—अनुभववांणी

उ०—३ हरीया हदि का जीवड़ा, ता कुं धका अनंत। जांह गुर-पाया वेहदी, लै निरवांण चड़ंत। —अनुभववांणी

२ वैकुण्ठ, स्वर्ग।

उ०—१ हरीया हदि आसामुखी, ताहि न करिये हेत। वेहद वास निरास घर, ताकुं तन मन देत। —अनुभववांणी

उ०—२ सहज नांभ कुं धाबि के, सुरति चढै असमांन। हरिये निज पद परसिया, वेहद का वसवांन। —अनुभववांणी

उ०—३ हरिया हदि कूं छांडि कै, वेहद पूंहता जाय। दिल दरगै दीवांन मैं, धका न धूंमी काय। —अनुभववांणी

३ सत्यस्वरूप, ईश्वर।

उ०—हदि का रखा हदि मैं, वेहद का वेहद। हरिया वेहद पाय कै हदि भई सब रद। —अनुभववांणी

४ संत, भक्त।

उ०—हदि बैठा हदि की कहैं, वेद पुरांनां वाचि। हरीया वेहद वावरा, रह्या रांम सुं राचि। —अनुभववांणी

५ ब्रह्म, परब्रह्म।

उ०—१ वेहद सुख सागर भरचौ, पंथ न पग पारेह। हरीया हरिजन पीवसी, हदि सुं हुय न्यारेह। —अनुभववांणी

उ०—२ जनहरिया हदि मैं घणा, सुख दुख भरम संनेह। वेहद कौम न कलपना, अति आंनंद अछेह। —अनुभववांणी

६ ब्रह्मपद।

उ०—वेहद कुं पुहचै नही, हरीया हदि के लोक। तन तौ, माटी मैं मिल्यौ, मन ग्यौ सांसै सोक। —अनुभववांणी

७ ब्रह्मसुख, ब्रह्मआनन्द।

उ०—सहज का भेद सोई संत जांणै, हदि कुं जीत वेहद मांणै। सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज पासा।

—अनुभववांणी

८ अनहद नाद।

उ०—होतब सा जोतब नही, अरथुं सा न गरथ। वेंन न को वेहद सा, सांम न सा समरथ। —अनुभववांणी

९ योग, समाधि।

उ०—सहज में सांम सुख रास ऐसें मिळ्या, रूम मैं रूम रंरकार जागै। दास हरिरांम गुरुदेव परताप तैं, हदि कुं जीव वेहद लागै।

—अनुभववांणी

१० सत्य।

उ०—हरिया हदि का जीव कुं, वेहद की गम नांहि। कीड़ी केरै नाळ ज्यूं, कै आवै कै जांहि। —अनुभववांणी

११ ज्ञान।

उ०—१ वचन सुन्या वेहद का, हदि न आवै दाय। हरिया सुन्य मैं साईयां, तां सु ध्यांन लगाय। —अनुभववांणी

उ०—२ जनहरिया हम कुं कह्या, सतगुरु ऐसा दाव। हदि का पासा छाडि दै, वेहद सांम्हां आव। —अनुभववांणी

वि.—१ जानने का इच्छुक, जिज्ञासु।

२ ज्ञानी।

उ०—हदि छाडि वेहद भया, हरीया रांम हजूर। अखंड उजाळा गैब का, विसा न ऊगै सूर। —अनुभववांणी

३ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—कह कह थाका सेसनाग वेहद वाखांण। —केसोदास गाडण

वेहदौ—देखो 'बहदौ' (रू. भे.)

वेहद्द—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ वेहद्द हद्द वागै वणाव, चम्मीर हीर जामै जडाव। जगमगै जोप कसबी अनूप, नीलक्क मसंजर लाल सूप। —गु. रू. ब.

उ०—२ राति सांभीर सारंग डांणै ग्रहै, वाइ उपडिया लीण जांणै वहै। हद्द वेहद्द वै वेग पै हैमरां, पाधरा जांण पाहाड उड्डै परां। —गु. रू. बं.

२ देखो 'वेहद' (रू. भे.)

वेहन—देखो 'बहन' (रू. भे.)

वेहनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—रहि-रहि वेहनड़ी! बच न तू रोईं, लै लोटिका जळ मुख धोई। फटि रे हिया! नीवालुवा, पाथरी घड़ियौ कै ओघट लोह। झरचझलियौ फूटइ नहीं, सगुणां प्रीतम तणौ विछोह।

—बी. दे.

वेहनि, वेहनी—देखो 'बहन' (रू. भे.)

वेहनेई, वेहनोई—देखो बहनोई' (रू. भे.)

वेहमाता -देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया तन कौ गीरबौ, कहा करैं नर देख। वेहमाता दांणौ दळै, औरां लिखती लेख। —अनुभववांणी

उ०—२ रांम सुणी मोरी वीनती, रांम सुणी मोरी वीनती। मा मोरी, वेहमाता सुणी ग्रे पुकार, कुखड़ली सावळ हुई, मा मोरी वेहमाता सुणी ग्रे पुकार, कूखड़ली सावळ हुई। —लो. गी.

उ०—३ तूं तौ मोज मरै, ग्रे म्हारा री धीवड़ी, सूरज तौ सुणैला थारी वीनती। आ तौ वेहमाता सुणैला पुकार, लाय दौ नी भंवर, म्हांनै चीणोटियौ। —लो गी.

वेहर-सं. स्त्री.—१ काटने की क्रिया या भाव, करतन।

२ भोजन करने की क्रिया या भाव।

वेहरणौ, वेहरबौ—देखो 'बेरणौ, बेरबौ' (रू. भे.)

उ०—मुनिवर वेहर पाछा वल्याजी, लागी छै थोड़ी सी वार। बीजौ सिंघाड़ौ इहां आवियौजी, देवकी घर-बार। —जयवांणी

वेहरणहार, हारौ (हारी), वेहरणियौ—वि०।

वेहरिग्रोड़ौ, वेहरियोड़ौ, वेहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेहरीजणौ, वेहरीजबौ—कर्म वा०।

वेहराणौ, वेहराबौ—देखो 'बेराणौ, बेराबौ' (रू. भे.)

उ०—मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर मांहै थी लाय। केसरी सिंह जटा जिसा जी, वेहराया उलटै जी भाव। —जयवांणी

वेहराणहार, हारौ, (हारी), वेहराणियौ -वि०।

वेहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेहराईजणौ, वेहराईजबौ—कर्म वा०।

वेहरायोड़ौ—देखो 'बेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेहरायोड़ी)

वेहरियोड़ौ—देखो 'बेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेहरायोड़ी)

वेहरी—१ देखो 'बेहरी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहरी' (रू. भे.)

वेहरौ—१ देखो 'बेहरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहरौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेड़ौ' (रू. भे.)।

वेहळ, वेहल-सं. स्त्री.—१ ढोलियों की एक शाखा विशेष या उक्त शाखा का एक व्यक्ति। (मा. म.)

२ देखो 'बेहल' (रू. भे.)

उ०—१ वैरी वेहल वरण रा, दीठा जिण जिण देस। माड़ेचा तैं मेळिया, आभखुवां 'अमरेस'। —वां. दा.

उ०—२ कुण वित्त ग्रवै वेहळां कूंना, खेड सुपह मन खीज करै। सरवर हंस विनाई सारै, सर विन हंसां केम सरै। —राव कूंपा रौ गीत

३ देखो 'वहल' (रू. भे.)

उ०—१ इकां वेहलां रहकलां ऊपर बैसांणजै छै। सू इका वेहलां रहकला किण भांत रा छै? गुजराती, सुरती, खंभाइची, भुजनगरी, हेसारी, उडीसा रा, बणिया घणी सीपुरा, पीतल लोह दांत रा जड़िया, लाल सलहटी रा गदहरा विछाया थका, चांदणी ढालियां थकां ग्रांण हाजर हुवा छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ तठा उपरांत करि नै राजांन मिलांमति काबली कूतरा, लाहोरीकूतरा, विलाती कूतरा. लोलमीं, लोलमी जीभ रा, वलिमैं पूंछ रा, लापड़ै कांन रा, दाड़मी दंत रा, सिंघ रा हथरा, केहरी कंधरा, झांफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांतरा कूतरा, चीतरा, मुखमली, रेसमी, मुखां रा वणाग्रा, सांकळियां जड़िग्रा, वेहलां पालखियां ऊपरै वैठा वहै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ रिमझिम करती वा वीदणी वीदं री वेहल में चढी। ग्रो वींद कितरौ सभागियौ! कितरौ सुखी! भूत रा रूं-रूं मैं जांणै सूळां खुवण लागी। हीया मैं जांणै भट्टी चेतन व्हैगी। —फुलवाड़ी

४ देखो 'विट्ठल' (रू. भे.)

उ०—घर पोरस मेछां धणी कांमणि हुंदी कथ्थ, सांभळि वैठी सांप्रत महागिरिदां मथ्थ। महागिरिदा मथ्थ स्रवण कथ सांभळी, वेहळ मदन विरांम थयौ तन व्याकुळी। —मा. वचनिका

रू भे.—वहळ, वीहळ, वीहल, वेहलि, वेहळ, वैहल।

वेहलि-क्रि वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—क्रमि क्रमि जांन पहूतिय, सुहदिणि, 'भीमपलौ पुरै' गुर हरसिउ मणि। अह सिरि वीर जिणिंदह मंदरि, मंडिय वेहलि नंदि सुवासरि। —ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

३ देखो वेहल' (रू. भे.)

४ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

वेहलियौ, वेहली—देखो 'वैल' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—वेहलियांरी फुरणी वाज रही छै। जंग घूघरा बाज रहया छै। सू वेहलिया किण भांत रा छै? थेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै हालार रा छै सुवालख रा छै, देस-देसरा इकरंग सपेत छै। जांहरी सपेती आगै बगला ही मगसा नजर आवै, मंहदी सूं रंगिया बनात रा मोहरा लालै सूतरी नायां, रेसम री रास, सींगां पीतळ

री खोळी। वनाती फूलां घातियां रहकलां इकां खड़मलां जूता छै। सू ह्यालियां थकां घोड़ां री मांम पाड़े। इसा बेहलो जूता रहकला इका खड़सल आंण हाजर हुवा छै। —रा सा. स.

बेहलो—देखो 'वैहलो' (रू. भे.)

बेहांण-सं. स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

२ देखो 'विमांन' (रू. भे.)

३ देखो 'विहांण' (रू. भे.)

उ०—उदं नभसीस थयो सिसआंण, विजाणूंह होसिय केम बेहांण। पयंपत वंण सलें परधांन, जपं मुख कायर फोट जबांन। —पा. प्र.

बेहांम, बेहांमी, बेहांमो—देखो 'विस्रांति'

बेहा—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ अेराको वडा खेंगरू गात अेहा, वणावै कवी कत्थ स्रीहत्थ बेहा। नळी जंत्र मैं जासु वाखांण नक्खं, उलट्टा कटोरा वणे चत्र अक्खं। —र. वचनिका

उ०—२ मोमिण होय स आपो मारैं, औरचां मारण केहा ? मोमिण होय स तुटी सांधै, मरियो दुसमण घातें बेहा। —समसुदीन

उ०—३ सूरकुळ मुकट अणघट अनट जीह सुज, बयण मुख दाखिया अंक बेहा, दया जन दक्खणा। सांमरथ भभीखण रंक राखै सरणा, तसां आपण सुदत लंक तेहा, रजवट्ट रक्खणा। —र. ज. प्र.

बेहार—१ काटने की क्रिया।

उ०—वध वीर किलक्कं हक्कोहक्कं, घूप सवक्कं धमचक्कं, वण वार असंकं बाधा रंकं, रुक भटक्कं रह चक्कं। वग्गी खग धारां वारूंवारां, वार करारां, बेहारां, धड़ तूटै सारां अंग अपारां, जोड करारां जूंझारां। —रा. रू.

२ देखो 'विहार' (रू. भे.)

बेहारी—१ देखो 'विहारी' (रू. भे.)

उ०—गांयां ग्वाळो कांनो काळो वंसी वाळो, बेहारी, जाजां जांजो प्रिथी प्राजो मोटो आजो मोरारी। लंका लीधी दांनै दीधी सोभा कीधी सवाई, साचां साचो काचां काचो वांणी वाचो वभाई। —पि. प्र.

२ देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

बेहाल—देखो 'बेहाल' (रू. भे.)

उ०—१ रांम सिवरियां बाहिरो, खाली नर खुंसयाल। हरिया जब तैं जांणियै, वेमारग बेहाल। —अनुभववांणी

उ०—२ हरिया अपनै ह्वाल मैं, खलक फिरै खुसियाल। होसी खालिक बाहिरो, हैंदू तुरक बेहाल। —अनुभववांणी

उ०—३ संत दादू ब्रह्म आदू, महा निरपख चाल। दुस्ट तासूं वैर कीनो, मुवो हुय बेहाल। तो हरिलाल जी हरिलाल, है नित भक्ति पख हरिलाल। —भगतमाळ

बेहाली—देखो 'बेहाली' (रू. भे.)

बेहियोड़ो-भू. का. कृ.—चालु रहा हुआ, चालु हुवा हुआ. २ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ. ३ देखो 'होयोड़ो' (रू. भे.)

४ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

५ देखो 'वेधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहियोड़ी)

वेहो-सं. पु.—बदला, प्रतिकार, प्रतिशोध।

उ०—सो सपूत जं पीछो राखै, दुरजन हीण कदै ना भाखे। वैरां तिणां विसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा। —डाढाळै सूर री बात

बै—देखो 'बै' (रू. भे.)

उ०—महाराज, वीं ठांव बरखा घणी होह पण पांणी ठहरै नहीं। तळसीर सूं भी पांणी नहीं आवै। रुपियो वीं बहोत लगायो, सब निसफळ हुवो। तीं कारण सो चिंतातुर ही रहै। वीं नूं चिंतित देख बै री दोय स्त्री परम सुंदरी, नव यौवना सदा चिंतित रहै। —सिंघासण बत्तीसी

बैंकुंठ, बैंकंठ, बैंकुठ—देखो 'वैंकुंठ' (रू. भे.)

बैंक्रति, बैंक्रती-सं. पु [सं. वैकृत] १ रिक्त, खाली।

२ विकार, विकृति, विगाड़।

रू. भे.—बैंक्रति

बैंग-सं. पु.—१ चाल गति।

२ पानी का बहाव।

३ पानी के बहाव का रास्ता।

वि०—पागल

बैंगण—देखो 'बैंगण' (रू. भे.) (अमरत)

बैंगणी—देखो 'बैंगणी' (रू. भे.)

बैंगागळ—देखो 'वेगागळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—चढिया काज चंचळ, वाळि छूट बैंगागळ। हरड किहाडा हीर, मांणकै बोर हमीर। —गु. रू. बं.

बैंचणो, बैंचबो—देखो 'बैंचणो, बैंचबो' (रू. भे.)

वेंचणहार, हारौ (हारी), वेंचणियौ—वि० ।
वेंचिग्रोड़ौ, वेंचियोड़ौ, वेंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचीजणौ, वेंचीजबौ—कर्म वा० ।

वेंचवाड़ौ—देखो 'वेंचवाड़ौ' (रू. भे.)

वेंचाणौ, वेंचाबौ—देखो 'वंटाणौ, वंटाबौ' (रू. भे.)
वेंचाणहार, हारौ (हारी), वेंचावणियौ—वि० ।
वेंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचाईजणौ, वेंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वेंचायोड़ौ—देखो 'वंटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंचायोड़ी)

वेंचावणौ, वेंचावबौ—देखो 'वंटाणौ, वंटाबौ' (रू. भे.)
वेंचावणहार, हारौ (हारी), वेंचाणियौ—वि० ।
वेंचाविग्रोड़ौ, वेंचावियोड़ौ, वेंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचावीजणौ, वेंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंचावियोड़ौ—देखो 'वंटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंचावियोड़ी)

वेंचियोड़ौ—देखो 'वेंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंचियोड़ी)

वेंछणौ, वेंछबौ—देखो 'वेंचणौ, वेंचबौ' (रू. भे.)
वेंछणहार, हारौ (हारी), वेंछणियौ—वि० ।
वेंछिग्रोड़ौ, वेंछियोड़ौ, वेंछयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंछीजणौ, वेंछीजबौ—कर्म वा० ।

वेंछियोड़ौ—देखो 'वेंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंछियोड़ी)

वेंछौ—सं. पु.—बंटवारा, हिस्सा ।
उ०—है साह रां बेटां या पण थांहरा पिता रै वांसै आवी है, थे ईंणी नै वेंछौ माल री द्यौ । —साहूकार री वात

वेंड—१ देखो 'वेंड' (रू. भे.)
२ देखो 'वेंडौ' (मह., रू. भे.)

वेंडाक—१ देखो 'वेंडाक' (रू. भे.)
उ०—हद वेंडाक हजारी । —किसनौ आढौ
२ देखो 'वेंडौ' (रू. भे.)

वेंडाराग—देखो 'वेंडाराग' (रू. भे.)

वेंडूर—देखो 'वेंडूर' (रू. भे.)

वेंडूरज—सं पु. [सं. वैदूर्य्य] वैदूर्यमणि ।

वेंडौ—वि० [सं. वितुण्ड] (स्त्री. वेंडी) १ दातार, उदारचित्त, मौजी ।
उ०—मन जांणै सहल दियण वित मौजां, अै दोय पण धरियां अमठ । वेंडा री वातां इज वेंडी, वेंडा रा पेंडा विकट । —अग्यात

२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र ।
उ०—मन जांणै सहल दियण वित मौजां, अै दोय पण धरियां अमठ । वेंडा री वातां इज वेंडी, वेंडा रा पेंडा विकट । —अग्यात

३ देखो 'वेंडौ' (रू. भे.)
उ०—१ मन जांणै सहल दियण वित मोजा, अै दोय पण धरियां अमठ । वेंडां री वातां इज वेंडी, वेंडा रा पेंडा विकट । —अग्यात
उ०—२ छिन-छिन मैं पग चांप सूं, छिन-छिन करसूं चाव । पांतर सौ तौ ही परा, राजंद ! वेंडा राव । —मयारांम दरजी री वात
उ०—३ हैमरां हींस नर लसकरां कह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वेंडा । आहाडा खंड रज-मंडळ ओछाइयौ, पहाडां अगम सर सुगम पेंडा । —महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत
उ०—४ तरै भवानंद वीरम सूं पूछण लागौ । कहैं—ठाकुरां काहूं वात छै। तरै औ कहै-ठाकुरां काहू कहजै । कहवां तौ लाज आवै छै । पण ठाकुरां म्हारी बेटी नूं परणिआ पाछै मूंडौ हमै देखाळियौ छै । सो रातै सूती मेल भाज आया छै । सौ वेंडा हुआ छैक ? बीजी वहू कांमण किओ छै ! सो हमे रांधियौ धांन रहसी हौ, ठाकुरै ! —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वेंण—१ देखो 'वहन' (रू. भे.)
२ देखो 'वेंण' (रू. भे.)
३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)
४ देखो 'वचन' (रू. भे.)
उ०—१ सब कूं बुलाया वेंण अकबर साह बोले, मेरी निसां खातरी है तुमारै महोलै । तुम पातसाहां के संवादी सूर तैं सूर, तुमारी सिहाय आवै मेरै मुख नूर । —रा. रू.
उ०—२ नैणां रांम वसौ हरि वेंणा, सकल सुखां सुख लाधा । सुर तेतीस घेरि घर आया, सतगुर डोरा बांधा । —ह. पु. वां.
उ०—३ वारवधु ही हरण वित, नेह जणावै नेंण । यूं सिर लेवा ऊचरै, वेरी मीठा वेंण । —बां. दा.
उ०—४ मुणि जोध वेंण भाखंत संभ, रिणमल्ल मांण आंणियै रंभ । चाळां बै रूक चौरंग चाडि, आखंत धूम्रलोचन ओनाड़ि । —मा. वचनिका

वेंत—सं. पु.—१ रीति, उपाय, प्रकार, ढंग ।
२ हिसाब-किताब ।
३ माप, नाप ।

उ०—सीमाळ पेंहली कांनड़देजी तीरै रहतौ। पछै कांनड़देजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखण नूं सीमाळ नूं मेलियौ नै सूरमाळ नूं साथै मेलियौ, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यूं वेंत मैं खोड़ काढी। —नैणसी

४ बनावट, रचना।

५ वश, काबू, नियंत्रण।

६ चिन्ता, दुख।

उ०—सूधा वचन सुणे सगळाई, साथ चेरियां गवा सिपाई। जतनै सुता रहै इम जांणी, इण दुख कंद हुवौ 'आसांणी'। वेंत करै नह ओर विचारूं, मार सुता मिरजा नूं मारूं। —रा. रू.

७ अनुकूल।

उ०—कै सूत वेंत सुभ वात कजि, सोभै दूत समंद रा। आवियास मिळ भ्रम इंद्र रै, कै इळ वद्दळ इंद रा। —रा. रू.

८ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

९ देखो 'बेत' (रू. भे.)

उ०—दाखे सकव सुणौ अनदाता, अमां मिळण नह भाग इसौ। सारै रसी वहै तन सिड़ियौ, कहौ मिळण चौ वेंत किसौ। —पीठवौ

१० देखो 'वेत' (रू. भे.)

उ०—पड़ै रोर चहुं ओर, कणह कणह सम कीधौ। वेचि वेचि नर वेंत, लोभ लाधौ तहां लीधौ। —कीकावती रै दांन रौ कवित

रू. भे.—बेंत, वेत।

वेंतणौ, वेंतबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

वेंतणहार, हारौ (हारी), वेंतणियौ—वि०।

वेंतिओड़ौ, वेंतियोड़ौ, वेंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेंतीजणौ, वेंतीजबौ—भाव वा०।

वेंताणौ, वेंताबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

वेंताणहार, हारौ (हारी), वेंताणियौ—वि०।

वेंतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वेंताईजणौ, वेंताईजबौ—कर्म वा०।

वेंतायोडौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतायोड़ी)

वेंताळीस, वेंतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

वेंतावणौ, वेंतावबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

वेंतावणहार, हारौ (हारी), वेंतावणियौ—वि०।

वेंताविओड़ौ वेंतावियोड़ौ, वेंताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेंतावीजणौ, वेंतावीजबौ—कर्म वा०।

वेंतावियोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतावियोड़ी)

वेंतियोड़ौ—देखो 'बेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंतियोड़ी)

वेंन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया असली असलि वन, चवै न कमसलि वेंन। असली जो कमसलि चवै, तौ दिन वरतै रैंन। —अनुभववांणी

उ०—२ हरीया अंदर ऊपजै, असा निकसै वेंन। मिळियां सेती मन कहै, यौ दुरजन यौ सैंन। —अनुभववांणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

वेंनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

वेंम, वें'म—देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—१ सुनार रै क्यूं दरसणां मैं ही टोटौ वताईजै है? सूरज उगाळी सुनार सांमौ मिळै, लोग मूढौ फोरै सांमै सिर सळ घालै वेंम रै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै अवस टाळै। बौ: आपरी मां रौ ही हांचळ नीं छोडै। —दसदोख

उ०—२ एक'र री वात, राजी रै जापै में पौन-हवा निकळगी। वावळी वंडा करण लागगी। गूंग विखेरै अर तत्ता-पत्ता सूं वूही वातां करै। जकै सूं घर हाला नै भूतणी रौ वेंम वड़ गयौ है। —दसदोख

वेंरागर—देखो 'वेरागर' (रू. भे.)

वेंसौ—देखो 'बेंसौ' (रू. भे.)

वेंह—देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०—सतजुग कै पहरै मां सोनै कौ घाट, सोनै कौ पाट, सोनै कौ कळस, सोनै कौ टकौ। पांचां कोड्यां कौ मुखी गुर पहळाद कळस थाप्यौ, वेंह कळस जस धरम हुवै, सौ ईंह कळस हुइयौ। —जांभौ

वेंहचणौ, वेंहचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीजां ही सवणियां नूं पूछियौ। तियां कह्यौ-जिकै रांणी रै प्रसूत हुसी। तियै रौ बेटौ धरती रौ धणी हुसी। आप राजी हुवा। मालोजी जाया। घणौ हरख हुवौ। घणी वधायां वेंहची। —नैणसी

उ०—२ घोड़ा रजपूतां नूं बकस दिया। एक घोड़ौ आप राखियौ। पुकार दिल्ली गई। अहदी आयौ। घोड़ा ल्यावौ। मालेजी नूं जोर पड़ियौ। घोड़ा मांगीजै। ताहरां मालेजी आदमी मूकिया। कह्यौ—चंवडा घोड़ा ल्याव। ताहरां कह्यौ—घोड़ा तौ वेंहच दीधा। —नैणसी

उ०—३ पछै नरै रै टीकै गोयंद बैठौ। हमैं रोज लड़ायां पड़ै। धरती वसै नहीं। ताहरां राव सूजैजी गोयंद नूं तेड़ायौ। पोकरणां नूं तेड़ाया। धरती आधौ-आध वेंहच दीवी। कोट नरै रै माथै साटै कियौ। उवै जाळ सौं सीम पड़ी। —नैणसी

वेंहचणहार, हारौ (हारी), वेंहचणियौ—वि०।

वेंहचिओड़ौ, वेंहचियोड़ौ, वेंहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेंहचीजणौ, वेंहचीजबौ—कर्म वा०।

वेंहचाणो, वेंहचाबो—देखो 'वंटाणौ वटावौ' (रू. भे.)

उ०—अठै वीरमजी रा कांमेती दांण ऊपर बैसे राति रौ हँसौ वेंहचाइ दे । कदे सरब गोलक मेल आवें । कहै—थे सवारे लेज्यौ। जे नाहर बकरी मारै तौ एकै बकरी री इग्यारह बकरी ले । कहै नाहर तौ जोईयां रौ छै । —नेणसी

वेंहचाणहार, हारौ (हारी), **वेंहचाणियौ**—वि० ।

वेंहचायोड़ौ – भू० का० कृ० ।

वेंहचाईजणौ वेंहचाईजबौ—कर्म वा० ।

वेंहचायोड़ौ—देखो 'वंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंहचायोड़ी)

वेंहचावणौ, वेंहचावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वेंहचावणहार, हारौ (हारी), **वेंहचावणियौ**—वि० ।

वेंहचाविप्रोड़ौ, वेंहचावियोड़ौ, वेंहचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंहचावीजणौ, वेंहचावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंहचावियोड़ौ—देखो 'वंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंहचावियोड़ी)

वै-सं. पु.—१ श्री कृष्ण का एक नाम । (एका.)

२ स्वर्गलोक । (एका.)

३ पति, खाविंद ।

४ मालिक, स्वामी ।

५ एक प्रकार का अव्यय विशेष जो निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ में काम लिया जाता है । किन्तु अधिकांशतः इसका प्रयोग पाद पूर्ति हेतु भी होता है ।

क्रि० वि०—१ निश्चय ही ।

उ०—रिमां मांण मूकै नहीं वै रण गौ वढत्तांह, घण भूझौ रण भोम ही चढियां चाखड़ियांह । चढ रण चाखड़ी सांमहौ चालियो, भूंभतै भलौ रायसिंह तैं भालियौ । —हा. भा.

२ ही ।

३ भी ।

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—सिसु वै मिती वित्ती, उदयौ पौगंड मंड सिंगारौ । ज्यौं व्रंदारक तरय, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम —रा. रू.

५ देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०—१ माया जब तब ही बुरी, हरिया आदि' र अंत । वडे वडे मुनजन छळे, वै रहतै एकंत । —अनुभववांणी

उ०—२ ए वाड़ी, ए सर-केरी पाळ । वै साजण वै दीहड़ा, रही संभाळ संभाळ । —ढो. मा.

उ०—३ नित सवार सिम्या वै गै वे चीजां देखतां देखतां दो री टीड हजार आंख्यां व्हैनी तौ ई आंती आय जा'ी । नित वै री वै सागै चीजा देखणा विचै तौ आंख्यां मींच अंधारौ करणौ उण नं आछौ लागतौ । —फुलवाड़ी

उ०—४ पण सेठां रौ मन तौ सेठां रै वस् हो, वै तौ उण दिन सूं ई कोडाया होय सील-व्रत धारण कर लियौ । सोच्यौ के वेमाता अर जमराज आपरै हिसाब सूं चालै तौ सेठ ई आपरै हिसाब सूं चालैला ।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—वै ।

वैग्रखरी वैग्राखरी—देखो वैग्रखरी' (रू. भे.)

वैईग्रंत—देखो वैज्यंत' (रू. भे.)

वैईजयंतिक—देखो 'वैज्यंतिक' (रू. भे.)

वैईजयंतिका— देखो वैजयंती' (रू. भे.)

वैईजयंती— देखो वैजयतीमाळा' ।

वैईस—देखो 'वैस्य' (रू. भे.)

उ०—बांभन खत्री कौन है, कूंन सुदर कूं वैईस । हरीया आतम हेक है, दूजा कोय न दीस । —अनुभववांणी

वैकंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—वैकंठ विलासि अपुन्य प्रकासि अपार अपार अप्रंम परं, निरकार नरं मधुकंटक मारण त्रिघन विडारण केवल रूप वराह करं । धर दाढ धरं करि दैत करणं कण रे, पण रांमण लंक लई दधि लोप लजं, अविगति अजं 'हमीर' समरि हरत्रां सि निरंतर, गाह वेहऊ गाहि गजंधज पंख धजं । —पि. प्र.

वैकंठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैकंठवासी—देखो 'वैकुंठवासी' (रू. भे.)

वैकक्ष, वैकक्षक, वैकक्षिक-स. स्त्री. [सं.] जनेऊ की तरह पहनी जाने वाली माला ।

वैकटिक-सं. पु. [सं.] रत्नों की पारख करने वाला, जौहरी ।

वैकण—देखो 'वैकरण' (रू. भे.)

वैकणौ, वैकबौ—देखो 'बहकणौ, बहकबौ' (रू. भे.)

वैकणहार, हारौ (हारी), **वैकणियौ**—वि० ।

वैकिप्रोड़ौ, वैकियोड़ौ, वैक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वैकीजणौ, वैकीजबौ—भाव वा० ।

वैकरण-सं.पु. [सं. वैकर्ण] १ वात्स्यमुनि ।

२ एक प्राचीन जनपद ।

वैकरतन-सं. पु [सं. वैकर्तन] १ कुन्ती पुत्र कर्ण का नाम ।

१ सूर्य पुत्र का नाम ।

३ सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम ।

वैकरणिक, वैकरणो–सं. पु. [सं. वैकर्णिक] १ राज्य कर्मचारी विशेष ।

२ कश्यपकुलोत्पन्न वैकर्णक नामक एक गोत्रकार ।

रू. भे.—वयगरणी, वयगरणु, वयगरणौ ।

वैकल—देखो 'विकळ' (रू. भे.)

वैकल्प—देखो 'विकळप' (रू. भे.)

वैकल्पिक–वि. [सं.] १ ऐच्छिक ।

२ संदिग्ध ।

वैकल्य–सं. पु. [सं.] १ न्यूनता, कमी ।

२ विकलांग, लंगड़ा ।

३ घबड़ाहट, व्याकुलता ।

४ अनस्तित्व ।

वैंकाणौ, वैंकाबौ—देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

वैंकाणहार, हारौ (हारी), वैंकाणियौ—वि० ।

वैंकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वैंकाईजणौ, वैंकाईजबौ—कर्म वा० ।

वैंकायोड़ौ देखो 'वहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंकायोड़ी)

वैकाळ–स. पु. [सं. वैकाल] मध्यान के बाद का समय, संध्याकाल ।

वैंकावणौ, वैंकावबौ—देखो बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

वैंकावणहार, हारौ (हारी), वैंकावणियौ—वि० ।

वैंकाविश्रोड़ौ, वैंकावियोड़ौ, वैंकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वैंकावीजणौ, वैंकावीजबौ—कर्म वा० ।

वैंकावियोड़ौ—देखो 'वहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंकावियोडी)

वैंकियोड़ौ—देखो 'बहकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंकियोड़ी)

वैकुंट—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैकुंटनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वकुंट्ठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैकुंट्ठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैकुंट्ठनायक—देखो 'वैकुंठनायक' (रू. भे.)

उ०—तोरण त्रीकम आविया, ल्यौ बेहडां वर नारि । वर वेहडुं वैकुंट्ठनायक, वंदियुं कर च्यारि । —रुकमणी मंगळ

वैकुंठ–सं. पु. [सं.] १ भगवान् श्रीविष्णु का एक नाम ।

उ०—छिपै मेघ सोभा इसौ भाळ छाजै, रवी पंत द्वै कुंडळै क्रांति राजै । भजै मुकुट सोभा सबा कूंण भाखै, रहै मांन तै घ्यांन वैकुंठ राखै । —रा. रू.

२ भगवान् विष्णु के रहने का स्थान, स्वर्ग ।

उ०—१ राजा असमाधियौ हुंतौ । तिकै राजा नूं वरस १०० पूरा हुवा । ताहरां तुरक नूं जासूसै जाय खबर दीनी, राजा मैहां तौ औ प्रकार हुवौ,वैकुंठ प्राप्त हुवौ । —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ वैकुंठ वेडौ विसन ढोयौ, सचियार साल्हियां लेविसी । पारगिराय पुहचाय भांभराय, वास निहचळ देविसी । —ऊदौजी नैण

उ०—३ दिज मूरत देहरां, पड़ै जसराज पड़ंतां, घणां गढ़ां सिर ढाक, चडै वैकुंठ चडतां । अज्या मेल इकठा, चरै सौ सिंघ भुजाळा, सोह लोग संसार, आज तौ वाज दुखाळा । —सुरजनदास पूनियौ

उ०—४ हिक सिवड़ पड़ै त्रण बारहट, सौ पड़िया बंका सुहड़ । वैकुंठ गयौ 'वीठल्ल' रौ, 'अजबसाह' राखै अचड़ । —रा. रू.

३ देवराज ईन्द्र का नाम । ४ तुलसी का नाम । ५ रैवत मन्वन्तर एवं चाक्षुक मन्वन्तर का एक देवगण ।

रू. भे.—बईकुंठ, बयकुंट, बयकुंठ, बयकूंट, बेकुंठ, वैकुंठ, बेकूंट, बेंकूंठ, बैकुंठ, बैकूंट, बैकूंठ, वईकुंठ, वयकुंठ, विकुंठ, वेकुंठ, वैंकुंठ, वैंकूठ, वैकंठ, वैकुंट्ठ, वैकुंटि, वैकुंटी, वैकूंट, वैकूंढ ।

वैकुंठचतुरदसी, वेकुंठचवदस–सं- स्त्री. [सं. वैकुंठचतुर्दशी] कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी ।

वैकुंठनाथ–स. पु. [सं.] १ भगवान् विष्णु ।

उ०—वैकुंठ पधारौ । तिणि वेळा राजा रतन वैकुंठनाथ महाराज सूं अरज करि कहिश्रो । महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड । राठौड़ा माहै हूं इज । मुदै मो नुं कहिश्रो इज चाहीजै । मो साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कांमि आया । हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा । गौड अरजन सारीखा । सीसोदिश्रा सुजांणसिंघ सारीखा । झाला दळथंभ सारीखा । अोर छत्रीस वंस हिंदू सरजीत कीजै । वैकुंठवास दीजै । —र. वचनिका

२ देवराज इन्द्र ।

रू भे.—वैकंठनाथ वैकुंट्ठनाथ, वैकूंटनाथ, वैकूंठनाथ ।

वैकुंठनायक–सं. पु. [सं.] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

रू. भे.—वैकंठनायक वैकुंट्ठनायक, वैकूंटनायक, वैकूंठनायक ।

वैकुंठलोक–सं. पु.—स्वर्गलोक विष्णुलोक ।

वैकुंठवास–सं. पु. [सं.] १ विष्णु का एक नाम ।

उ०—अठयासी सहस रिख करै आस, बखांणै सको वैकुंढवास । पांच तत महा तत रहै पास, संवारै तनां प्रभु सास सास । —पी. ग्रं.

२ स्वर्ग ।

उ०—वैकुंठ पधारौ । तिणि वेळा राजा रतन वैकुंठनाथ महाराज सूं अरज करि कहिश्रो । महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड़ । राठौड़ां माहै हूंइज । मुदै मो नूं कहिश्रो इज चाहीजै । मो साथै

वडा वडा गढपति छत्रपति कांमि आया। हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा। गौड़ अरजन सारीखा। सीसोदिआ सुजाणसिंघ सारीखा। झाला दळथंभ सारीखा। और ही छत्रीस वंस हिंदू सरजीत कीजे। वैकुंठ-वास दीजे।
—र. वचनिका

मुहा.—वैकुंठवास होणौ—स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना।

रू. भे.—वैकूंटवास, वैकूंठवास।

वैकुंठवासी—स. पु. [सं.] विष्णु का एक नाम।

रू. भे.—बैकुंठवासी, वैकंठवासी, वैकूंठवासी।

वैकुंठविलासी—सं. पु. [सं.] १ विष्णु का एक नाम।

२ ईश्वर।

रू. भे.—वैकुटविलासी, वैकूंटविलासी, वैकूंठविलासी।

वैकुंठि, वैकुंठी—सं. स्त्री. [सं. वैकुंठ+रा. प्र. ई] १ पालकीनुमा रथी, जिसे सजा कर उसमें शव को बैठा कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं।

२ देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—साम्हौ सारि दखिण घड़ सांम्हौ, निवहि मुहरि चालियौ निराट। सादूळौ वैकुंठि गौ सूधौ, वैकुंठ तणी न भूलौ वाट।
—खेतसी लाळस

रू. भे.—बैकुंटी, बैकुंठी, वैकूंटी, वैकूंटी, वैकूंठी।

वैकूंट—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैकूंटनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैकूंटनायक—देखो 'वैकुंठनायक' (रू. भे.)

वैकूंटवास—देखो 'वैकुंठवास' (रू. भे.)

वैकूंटविलासी—देखो 'वैकुंठविलासी' (रू. भे.) (नां. मा.)

वैकूंटी—देखो 'वैकुंठी' (रू. भे.)

वैकूंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—१ अम्मरां बधायौ लोक सरायौ वैकूंठ वाळौ, सूरां थोक थायौ वेद रचायौ सरब। आवा कांम परां हूंत पठौ घोड़ै चाल आयौ, पायौ 'जालमेस' हूंता सवायौ परब। —प्रभूदांन मोतीसर

उ०—२ जीहा न बोलै झूठ, स्रवणां झूठ न सांभळै। वरजै कुण वैकूंठ, माधव दरगह मोतिया। —रायसिंह सादू

उ०—३ काल किसी सारै नहीं, मारै सुलटी मूठ। हरीया हरि-जन ऊवरै, उलटि चडै वैकूंठ। —अनुभववांणी

उ०—४ जळ चादरूं की थरहर तमासै का विसतार। सौ कैसी, वैकूंठ सै छूटी जांणि गंगा हजार धार। छछोहै आब गहर फौंहारा छूटै। जमीं सै मेघ जांणि असमांन सै जुटै। —सू. प्र.

वैकूंठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैकूंठनायक—देखो 'वैकुंठनायक' (रू. भे.)

वैकूंठवास—देखो 'वैकुंठवास' (रू. भे.)

वैकूंठवासी—देखो 'वैकुंठवासी' (रू. भे.)

वैकूंठविलासी—देखो 'वैकुंठविलासी' (रू. भे.)

वैकूंठी—देखो 'वैकुंठी' (रू. भे.)

वैक्रत—देखो 'विक्रत' (रू. भे.)

उ०—मह आदसिर सुण वचन मोह, तातें न उचित अब क्रोध तोह। करनला' कयौ सुणियौ न कान, वैक्रत भेरव मुख चोळ-वान।
—रांमदांन लाळस

वैक्रयसरीर—देखो 'वैक्रियसरीर' (रू. भे.) (जैन)

वैक्रांत—देखो 'विक्रांत' (रू. भे.)

वैक्रांतमणि, वैक्रांतमणी, वैक्रांतमिण—सं. स्त्री. [सं. वैक्रान्तमणि] एक प्रकार का रत्न विशेष।

वैक्रिय—सं. पु. सं.—वह जिन में छोटे, बड़े, एक अनेकादि रूप बनाने की शक्ति हो (जैन)

वैक्रिय-लब्धि—सं. स्त्री [सं.] वह लब्धि जिस के प्रभाव से छोटे बड़े आदि विविध रूप बनाये जा सके। (जैन)

उ०—आंमोसहि, विप्पोसहि, खेलोसहि, सव्वोसहिलब्धि वैक्रिय-लब्धि।
—व. स.

वि. वि. मनुष्य और तिर्यंचों को यह लब्धि तप आदि के आचरण करने से प्राप्त होती हैं।

वैक्रियसरीर—सं. पु. [सं. वैक्रियशरीर] १ देव और नारकी जीवों का शरीर। (जैन)

२ वह शरीर जिसमें हाड, मांस, लोही आदि न हो और मृत्यु के पश्चात कपूर की तरह बिखर जाता हो। (जैन)

वैखरी—सं. स्त्री [सं.]—१ चार प्रकार के नाद (स्वर) मे एक प्रकार का नाद जो कंठ से उच्चरित माना जाता है।

उ०—१ पराचित चितवन करै, पस्यती मनन मनार। मध्यमा लखत व्यवहार कूं वैखरी ऊग्रहकार। —स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ मूळधार में परा नाद है जाणिये, स्वाधिस्टांन मे पस्यंती पहचानिये हृदय स्थांन मध्यमा, वदन में वैखरी। —साधक सुधा

२ वाक्शक्ति।

३ वाग्देवी, सरस्वती।

४ बोलने की शक्ति।

वैखांनस, वैखांनसि—सं. पु. [सं. वैखानसः] १ वानप्रस्थ आश्रम का व्यक्ति।

२ वराह रूपी भगवात् श्रीकिष्णु का नाम। यह रूप पातालवासी हिरण्याक्ष के वध के लिए धारण किया था।

३ चंपक नगरी का राजा, जिसने अपने पित्तरों के उद्धार के लिए उन्हें मार्गशीर्ष शुक्ल इग्यारस के व्रत का पुण्य दिया था।

२ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी।

रू. भे.—विखांनस।

वैंग—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—१ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा विसरांम। हरिया जम लै जावसी, वैंग सिवरियै रांम। —अनुभववांणी

उ०—२ सांभि सभ स्वार क्या करत नर वावरा, वैंग भजि वैंग हरि दाव आई। दास हरिरांम तन खाक मिळ जाहिगै, चूक सब जांणि जुग चतुराई। —अनुभववांणी

वैंगरणी—देखो 'वेगरणी' (रू. भे.)

वैंगरणौ-वि०—प्रबन्ध करने वाला, प्रबन्धक।

उ—वैंगरणां सेंगरणां मुंहता, साद करई सुआर। दोमी दळ कौ संख्या आंणइं, मांहइ चक्र तलार। —रुकमणी मगळ

२ देखो 'वेगरणौ' (रू. भे.)

वैंगलेय-सं. पु. [सं.] भूतों का एक गण विशेष। (पुराण)

वैंगांण—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—गुटकांण सीदांण विमांण पराछक तणी गत, नाव तीरांण दैधांण त्रणै। पुखरांण वैंगांण प्रमांण पराछक, वात वसै विड़ंगांण भणै। —किसनजी दधवाड़ियौ

वैंगागळ, वैंगागळौ—देखो 'वेगागळ' (रू. भे.)

उ०—राठोडां सौंह वधी, वंधी सोह हिंदुसथांनां, वरंकरार नव कोट, हसम राखिया खजांनां। दिल्लीवै सुरतांण, वाज वंका वैंगागळ, सूंटी लै मेल्हिया, जूह मद वहता मंगळ। —गु. रू. बं.

वैंगायन-सं. पु. [सं.] भृगु के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार।

वैंगार—देखो 'बेगार' (रू. भे.)

वैंगाळ, वैंगाळौ—१ देखो 'वेगागळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'वेगाळ' (रू. भे.)

वैंगौ—देखो 'वेगौ' (रू. भे.)

उ०—१ मां कह्यौ—बेटा महाराज उतावळ करै छै। सताबी करि घरै हालौ। ताहरां कुंवर कह्यौ—माजी वैंगा ही हालस्यां। आडी ऊभी बातां करि ऊठियौ। आपरै जनाने गयौ। ओळगुवां आंणि मुजरौ कियौ। रांग-रंग हुवा, हंसिया, खेलिया, पौढिया। —पलक दरियाव री बात

उ०—२ एक वीर स्त्री आप रा पती नै कह रही है—हे पती आज आपरो वैंगौ रात्री वदीत हुवां विनां ही जागणौ और चर (चरवादार) घोड़ा नै वेगौ कसियौ तिणसूं म्हनै उनमांन होवै कै है थांरा कोई पांहुणा मिळिया है। —वी. स. टी.

वैंग्यानिक-वि० [सं. वैज्ञानिक] १ विज्ञान का ज्ञाता। २ विज्ञान का, विज्ञान सम्बन्धी। ३ प्रयोगों द्वारा नये ज्ञान सूत्र की खोज करने वाला।

वैंड, वैंड़, वैंडकी, वैंड़की—देखो 'बेंड़' (रू. भे.)

वैंडौ, वैंड़ौ—१ देखो 'बेंड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेंडौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वेसौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा वळै समझाय कह्यौ—बेटा, थारी मंसा परवांण वैंडौ राजकंवरी रा तौ कठै ई बावड़ी ई नीं व्हिया। अबै यूं कै ज्यूं करूं। म्हारौ कैणौ मांन अर ब्याव सारू हुंकारौ भर दै। —फुलवाड़ी

उ०—२ उणियारौ बतावण सारू सिरदार सुभट नटग्या। कह्यौ कै वैंड़ा दुस्टी रौ तौ मूंडौ देख्यां ई पाप लागै भेटका व्हैतां ई झटको। दोय ढोल नीं करां जित्तै चैन नीं पड़ै। —फुलवाड़ी

(स्त्री वैंड़ी)

वैंचणौ, वैंचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू. भे.)

वैंचणहार, हारौ (हारी), वैंचणियौ—वि०।

वैंचिओड़ौ, वैंचियोड़ौ, वैंच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वैंचीजणौ, वैंचीजबौ—कर्म वा०।

वैंचवाड़ौ—देखो 'बेंचवाड़ौ' (रू. भे.)

वैंचाणौ, वैंचाबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

वैंचाणहार, हारौ (हारी), वैंचाणियौ—वि०।

वैंचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैंचाईजणौ, वैंचाईजबौ—कर्म वा०।

वैंचायोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंचायोड़ी)

वैंचावणौ, वैंचावबौ—देखो 'बंटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

उ०—थांरा बीरोसा कागद मेहलियौ। आध (ए) वैंचावण घरै आवौ श्री जूंझारजी. झगड़ै किण विध जूजिया। —जूंझारजी रौ गीत

वैंचावणहार, हारौ (हारी), वैंचावणियौ—वि०।

वैंचाविओड़ौ, वैंचावियोड़ौ, वैंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वैंचावीजणौ, वैंचावीजबौ—कर्म वा०।

वैंचावियोड़ौ—देखो 'बंटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंचावियोड़ी)

वैंचियोड़ौ—देखो 'बेंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंचियोड़ी)

वैछंग-वि०—चपल, चंचल, उछृंखल।

उ०—उभै सहंस झठसठ धुज ऊतंग, वीस सहस हैमर धुज वैछंग।

निज पोसाक सु केसरि नीकां, जवहर अतर अरिगंमंद जोखां।
—सू. प्र.

वेंछरा, वेंछराय—देखो 'बहुचराय' (रू. भे.)

वेंछाड़—देखो 'वेंछाड़' (रू. भे.)

वेंछणौ, वेंछावौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू. भे.)

वेंछाणहार, हारौ (हारी), वेंछाणियौ—वि०।

वेंछायड़ौ—भू० का० कृ०।

वेंछाईजणौ, वेंछाईजवौ—कर्म वा०।

वेंछायोड़ौ—देखो 'विछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंछायोड़ी)

वेंछावणौ, वेंछाववौ—देखो 'विछाणौ, विछावौ' (रू. भे.

वेंछावणहार, हारौ (हारी) वेंछावणियौ—वि०।

वेंछाविओड़ौ, वेंछावियोड़ौ, वेंछाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वेंछावीजणौ, वेंछावीजवौ—कर्म वा०।

वेंछावियोड़ौ—देखो 'विछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंछावियोड़ी)

वेंजंत—देखो 'वेंजयंत' (रू. भे.)

वेंजंती—१ देखो 'वेंजयंती' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंजयंतीमाळा' (रू भे.)

वेंजंतीमाळ, वेंजंतीमाळा—देखो 'वेंजयंतीमाळा' (रू. भे)

उ०—१ चक्र सांमि संख मांमि पदम पति अनां गदापति, प्रीतंवर पंगरण भला फाबिति इसी भति। महि कट मेखळ कहै कांनि मकराइ कि कुंडळ, उरि वेंजंतीमाळ रिदै कुस्टांमिणि कमळ।
—पी. ग्रं.

उ०—२ संख चक्र पदम र गदा, उर वेंजंतीमाळ। मोर मुकुट कट काछनी, आवौ सुंदर लाल।
—गजउद्धार

उ०—३ वेंजंतीमाळा, अधिक विसाळा, कौस्तभ मणि सोहंदा है। भ्रगुलत्ता छाजे, विविध विराजे, अति ही रूप अनंदा है।
—गज-उद्धार

वेंज—देखो 'बेंज' (रू. भे.)

वेंजणती—१ देखो 'वेंजयंती' (रू. भे.)

२ देख 'वेंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

वेंजनाथ—देखो 'वेंद्यनाथ' (रू. भे.)

उ०—राठौड़ कूंपौ महिराजौत बडौ दातार, आखाड़सिघ रजपूत स्रीवेंजनाथ महादेव रौ अवतार, वरस ३५ में कांम आयौ। इतरा प्रवाड़ा तौ प्रसिद्ध कूंपाजी रा छै।
—राव मालदे री बात

वेंजभ्रत-सं. पु. [सं. वेंजभृत] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वेंजयंत-सं. पु. [सं.] १ देवराज इन्द्र।

२ देवराज इन्द्र का राजभवन।

३ इन्द्र का झंडा, पताका।

४ झण्डा, पताका।

५ तिमिध्वज की राजधानी का नाम।

६ घर मकान।

७ क्षीरसागर के मध्य का पर्वत।

रू. भे.—वैजयंत, वेंईजयंत, वेंजंत।

वेंजयंतिक-सं. पु. [सं.] ध्वजा या पताका को उठाकर चलने वाला।

रू. भे.—वेंईजयंतिक।

वेंजयंतिका—१ देखो 'वेंजयंती' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

वेंजयंती-सं. स्त्री. [सं] १ ध्वजा, पताका, झण्डा।

२ चिन्ह, लक्षण।

३ एक प्रकार का पौधा विशेष, जिसके हाथ-हाथ भर लम्बे एवं चार-पांच अंगुल चोड़े पत्ते एव कई दलों के फूल होते हैं।

४ देखो 'वेंजयंतीमाळा' (रू. भे.)

रू. भे.—वेंजंती, वेंजयंती, वईजयती, वेंईजयंतिका, वेंईजयंती वेंजती।

वेंजयंतीमाळ, वेंजयंतीमाळा-सं. स्त्री. [सं. वेंजयंतीमाला] १ मोतियों आदि का हार।

२ पांच रंगों की घुटनों तक लटकती हुई एक प्रकार की माला, जिसे कृष्ण भगवान् पहनते थे।

३ भगवान् श्रीविष्णु की माला।

उ०—ब्रह्मा विसन महेस इंद्र सुर साथै विराजमांन हुआ छै। आप विसन चत्रभुजरूप धारि, वागा वणाउ करि। संख चक्र गदा पदम धारि। वेंजयंतीमाळा मोर मुकट कुंडळ विसाल मदन मोहन कमळलोचन स्यांमसुंदर ठाकुर विराजमांन हुआ छै।
—र. वचनिका

रू. भे.—वेंजंती, वेंजंतीमाळ, वेंजंतीमाळा, वेंजयंती, वेंजयंतीमाळ, वेंजयंतीमाळा, वेंजणती, वईजयंती, वेंजंतीमाळ, वेंजंतीमाळा, वेंजयंती।

वेंजयिकीविद्याग्यांन-सं पु. [सं. वेंजयिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ प्रकार की कलाओं में से एक प्रकार की कला विशेष।

वेंजौ-सं. पु.—घोड़ों का एक प्रकार का रोग विशेष, जो मुरचों पर होता है। (शा. हो.)

वेंड—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—परभोम लई समंदां लगें, राठौड़ा साका रहै। गळहत्थ वंस गोहिलां तणौं, वेंड खड्ग गहि संग्रहै।
—गु. रू. बं.

वेंडणौ, वेंडवौ—देखो 'वेढणौ, वेढवौ' (रू. भे.)

उ०—पांडवां नीलौ पलांण, असी घोडै राव आंण। वैंडतै उमै विकास, आरिखै जिसौ उचास। —गु. रू. बं.

वैंडणहार, हारौ (हारी), वैंडणियौ—वि०।

वैंडिओड़ौ, वैंडियोड़ौ, वैंडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैंडीजणौ, वैंडीजबौ—कर्म वा०।

वैंडव-सं. पु. [सं.] वसिष्ठ ऋषि का पैतृक नाम।

वैंडाक—१ देखो 'वैंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'वैंडौ' (रू. भे.)

वैंडाळव्रत-सं. पु. [सं. विडालव्रतः] एक प्रकार का ढोंग विशेष, जिसमें दिखावे के लिए साधु (सज्जन) बनकर छुपे रूप में पाप व कुकर्म किये जाते हैं।

वैंडाळव्रति, वैंडाळव्रती-वि० [सं. बिडालव्रती] १ पाप एवं कुकर्म करते हुए भी साधु बना रहने वाला।

२ ढोंग रचनेवाला, ढोंगी।

वैंडियोड़ौ—देखो 'वेढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंडियोड़ी)

वैंडूंबौ-सं. पु.—खराब कलिन्दा।

वैंडूरयपरवत-सं. पु. [सं. वैडूर्यपर्वत] एक पर्वत जो गोकर्ण तीर्थके समीप स्थित है।

वैंडूरय वैंडूरयमणि, वैंडूरयमणी—देखो 'वैंदूरयमणि' (रू. भे.)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैंडूरय सूरचकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रलील सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विस्हर हरिन्मणि चूनडी लोहीताक्ष मसारगल्ल हंसगरब्भ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतामणि। —व. स.

वैंडौच्योडै-वि.—घबराया हुआ, विचलित हुवा हुआ।

उ०—पेमजी बोल्या—भायां तणी भीड़, भायेलां भाजै नहीं। लोग कूड़ी कैवै.........बीच में ही दलाल बोल उठचौ—आपणी वडाई पछै करांला, पैली रिपिया ल्यावौ, कांम पक्कौ वणावां। पेमजी वैंडौच्योड़ै राज री रकम रा आयोड़ा ढ़ाई हजार रिपियां री थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल देवता रै आगै बगा नांखी अर कैयौ—कीं बता लै जावौ सा। —दसदोख

वैंढ—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—हाथी लखमन हेत, वळियौ वैंढ लगायकै। चित उत घरियौ चैंत, मिळवा कांमण मांणवा। —गज-उद्धार

वैंढक—देखो 'वेढक' (रू. भे.)

उ०—कनै होत जौ ऊठै 'अजमाल' वैंढक अकळ, लड़ण तेढक खळां दळां लाहौ। साजतौ नही असपेल 'अड़सीह' नु, हांमटै सेल ऊभेल हाडौ। —बद्रीदास खिड़ियौ

वैंढगरौ, वैंढगारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

वैंढणौ, वैंढबौ—देखो 'वेढणौ, वेढवौ' (रू. भे.)

वैंढणहार, हारौ (हारी). वैंढणियौ—वि०।

वैंढिओड़ौ, वैंढियोड़ौ, वैंढयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैंढीजणौ, वैंढीजबौ—कर्म वा०।

वैंढमण, वैंढमणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू. भे.)

वैंढमल, वैंढमल्ल—देखो वेढमल' (रू. भे.)

वैंढमी—देखो 'वेढमी' (रू. भे.)

वैंढलौ—देखो 'वेढलौ' (रू. .)

वैंढियोड़ौ—देखो 'वेढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैंढियोड़ी)

वैंढीगार—देखो 'वेढीगारौ' (रू. भे.)

वैंढीमण, वैंढीमणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू. भे.)

उ०—मूंछां रा वळाका दीवां सीसोद गनीमां माथै, धूर हास तमासैं मुनिंद्र रीधा धीर। म्यांन हूं उखेलतांई कीधा खाग तेढीमणौ, वैंढीमणौ मेलताई कीधा महावीर। बद्रीदास खिड़ियौ

वैंढीमल, वैंढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू. भे.)

वैंण-सं. पु. [सं. वचन] १ स्तुति, वन्दना।

उ०—राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वैंण। सुणै बधायौ गिरि-सुता, सौ ह्वौ मौ सुख दैंण। —बां. दा.

२ देखो 'वेण' (रू. भे) (अ. मा.)

३ देखो 'वीण' (रू. भे.)

उ०—रति रयण सुदि नर नारी रांमति, गाळि प्रमदति गावही। मुख गांन दिन निस स्वांम मगळ, वैंण चंग बजावही। —रा. रू.

४ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ तिसा वैंण स्रीमंडळं जत्र तालं, सहनाय वसी अनै सीस ढालं। सुधा कुंडळी खंजरी चंग सोहै, वजै चंग मिरदंग सोभा विमोहै। —रा. रू.

उ०—२ घूघरां तणां भरणाट हुय घमाघम, वैंण रा तंत्र तरणाट बाजै। नकीबां बोल हरणाट हुय नोबतां, गयणधर सबद गरणाट गाजै। —खेतसी बारहठ

५ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

६ देखो 'बहन' (रू. भे)

७ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ उदियागर उगियौ. इंदु राकां अविरचां, रंग कुरंग रहणी, पाव वाधी अरचां। कोल सेस भूतेस, वैंण सुर वचन चवीजै, विद्यावंत बुधवंत, कहचौ तुम तुम्हां कहीजै। —कोल्हजी चारण

उ०—२ यां विचार वैंण बोलै, तेज सूं समसेर तोलै। मूछ कै रोम व्योम कूं उट्ठै, रांन कै आए जम रांन से रुट्ठै। —रा. रू.

उ०—३ करण अवियात चढियौ भलां काळमी, निवाहण वैण भुज बांधियां नेत। पंवारां सदन वर-माळ सूं पूजियौ, खळां किर-माळ सूं पूजियौ खेत। —बांकीदास आसियौ

उ०—४ रज पळटै दिन ही घटै, सूर पळट्टै छांह। सूरां हंदा बोलिया, वैण पळट्टै नांह। —राव रिणमल री वात

उ०—५ चित वडपण सुभ चितवण, वजर लीक सम वैण। गाढ स्यामध्रम धरण गह, रहण 'पतो' दिन रैण। —जैनदांन बारहठ

उ०—६ तूं मोटी महमाइ, धरम धरि ऊपरि धरणी। व्रध वांणी दे वैण, क्रपा करि हे कुंडळणी। —पी. ग्र.

उ०—७ सुरग न देखूं अपणां नैणां, तौ न पतीजूं गुर का वैणां। सुरग दिखाऊं तेरै तांई, सुरग गयां मन फेरै नांही। —वील्हौजी

वैणडंड, वैणदंड–सं. पु [सं. वेणी+दण्ड] १ एक प्रकार का सर्प विशेष।

उ०—गढां भूखियो कांमरी हांम गाढी, दिनौ मूछ वळ पांण सत्तांण दाढी। पौरस्सै तरस्सै उसस्सै प्रचंड, विकस्सै हसै ऊधसै वैणडंडं। —गु. रू. बं.

२ देखो वेणीदंड (रू. भे)

वैणन–सं. पु. [सं. वैणनः] श्वान, कुत्ता। (ह. नां. मा.)

वैणव–वि. [स] बांस का, बांस सम्बन्धी।

सं. पु. [सं. वैणव] १ बांस का बीज या फल।

२ विश्वामित्र के वंशज एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

[सं. वैणवः] ३ बांस का डडा विशेष, जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है।

रू. भे.—वैणव।

वैणवी–सं. स्त्री. [सं.] १ वंशलोचन।

[सं. वैणविन्] २ बशी बजाने वाला व्यक्ति।

३ शिव, महादेव।

वैणसगाई—देखो 'वयणसगाई' (रू. भे.)

उ०—वैणसगाई वरणियां, अगण दधक्खर खेर। थई सगाई जेण थळ, वळै न रहियौ वैर। —र. ज. प्र.

वैणा—देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—वैणा पुस्तक धारिणी, कासमीर कंदरि वसंति, गीत नाद गुण गाह, दियण देखि कवियण दियंति। —अ. वचनिका

वैणावैणी—देखो 'बोलचाल'।

उ०—तद इण कही, और तौ मुझ कुं कोई न राखै पिण एक देपाळ राखैगा। तद पातसाह कही, तौ भला जाई। तद पातसाह तौ और हुरंम पासै गयौ। तद रातै आ सुखपाळ चढ नै देपाळ रै गई। आई नें कह्यौ, देपाळ नुं कहायौ, मै पातसाह सुं वैणावैणी हुई तैं पग हूं अठै तोनुं तक नै आई छुं। जे रजपूतपणौ डावै छै तौ मोनुं राख। —देपाळधंध री वात

वैणि, वैणी—१ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

उ०—१ वणि मांग उतबंग गूंथ वैणी. मोताहळ मिळ मझ्झएं। सिणगार अमुरां छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झएं। —मा. वचनिका

उ०—२ सिर-वांण जांण वैणी पनंग, हिरणाखी हंसा-गमणि। रंग-महल मिध राजांन सुर, रमति राज-पुत्री रमणि। —गु. रू. बं.

उ०—३ लोयण चंचळ चपळ, अचळ ध्रू जिस मन धारण। कडि मयंद मुख इंद्र, दीरघ वैणी अहि दारण। —गु. रू. बं.

उ०—४ केहरि जिम कडि क्रिस्स, लगति चालंती गजिग्रह। सोभति वैणी सरप, हरै वीरज्ज खगिग्रह। —गु. रू. बं.

२ देखो 'वहणी' (रू. भे.)

वैणीडंड, वैणीदंड—देखो 'वेणीडंड' (रू. भे.)

वैणौ–सं. पु.—१ बढ़ई का एक प्रकार का औजार विशेष।

२ देखो 'वीणौ' (रू. भे.)

वैंणौ—देखो 'वहणौ' (रू. भे.)

वैंणौ, वैंबौ—१ देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—अरु नरसिंघ पण वीकैजी माथै आयौ, नै तरवार कंवरजी नूं वाही सू बगतर कटनै खंवै रै भरपट सी लागी। समचै वीकैजी कयौ, 'नरसिंघ, तरवार यूं वैहै।' इसौ कहनै तरवार वाही सू नरसिंघ रा दोय धड़ हुवा। —द. दा.

२ देखो 'होणौ, होबौ' (रू. भे.)

वैणौ, वैबौ—१ देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

२ देखो होणौ, होबौ' (रू. भे.)

वैतंड–सं. पु.—१ अष्ट वसुओं में आपका एक पुत्र।

२ देखो 'वितंड' (रू भे.)

वैतंडी–सं. पु. [सं. वैतण्डी] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

वैतंड्य–सं. पु. [सं. वैतण्ड्य] आयु राजा का एक पुत्र, राजा।

वैत–सं. पु.—१ सवारी, वाहन।

२ ऊंट।

उ०—मारवाड़ रा मांणस च्यारसौ मारिया गया। नै असबाब वैतां वगेरै सारो लूटियौ। अरु रावजी री आंण फेरी। इण तरै दिन १५ तथा २० मारवाड़ां रा थांणा सरब मार उठाया। नै कई भाज गढ में पैठा। —द. दा.

४ वह गद्य-पद्य रचना, जिसमें अनुप्रासों व समासों की अधिकता हो।

उ०—सू लिखियौ नहीं तद आलमगीर पांणी बंध करचौ। पातसाहजी तिसां मरतां री ज्यांन कबज होणें लागी। तद साजिहांन जी कयौ, 'लावौ भाई रजूनांमा लिख दें।' जब दवात-कलम हाजर किया। पीछै पातसाहजी कलम हाथ लेकर कागज में आ वंत लिखी। —द. दा.

५ नियम, प्रण, प्रतिज्ञा।

६ दांव, पेच।

७ गुरुमंत्र।

८ लता, बेल।

९ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

१० देखो 'बेत' (रू. भे.)

११ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

उ०—१ जद राजा कही, 'तूं सोमवार रै दिन थारी बेटी री स्वयंवर कर। जैरे गळै मांहे हथणी फूलां री माळा घातै, तैनूं परणाय दे।' तद आ वात मुहतै पण कबूल कीवी। कही 'वीवाह ईयें ही ज वंत करसां। —हंसराज बछराज री वात

उ०—२ मेलि परवांन मांन महारांज कीधा म्हैं, लोपियौ हुकम करतूत लहसी। हुई सहुकौ कहै हाक मैं हाकमी, रेत वर वंत दुस्ट दूर रहसी। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—वैंत, भेत, भैत, वेंत, वेत।

वंतड़—देखो 'बंतड़' (रू. भे.)

वंतणौ, वंतबौ—देखो बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

वंतणहार, हारौ (हारी), वंतणियौ—वि०।

वंतिप्रोड़ौ, वंतियोड़ौ, वंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वंतीजणौ, वंतीजबौ—कर्म वा०।

वंतनिक—सं. पु. [सं. वेतन+इक प्रत्य.] वेतन लेकर कार्य करने वाला व्यक्ति, नौकर।

वंतर—१ देखो 'वेतर' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)

उ०—१ हेकठा हुआ बळितणै हेत, पळहांरी वंतर भूत प्रेत। खेचरा भूचरा खेत पाळ, काळिका पुत्र भैरव कंकाळ। —गु. रू. बं.

उ०—२ भूत प्रेत पेसाच, बहत चेडा वह वंतर। वीर सिद्ध वैताळ निसाचर भूचर खेचर। —गु. रू. बं.

वंतरणि, वंतरणी—सं. स्त्री. [सं.] १ उड़ीसा प्रान्त में बहने वाली एक पवित्र नदी।

२ पितृलोक से बहते समय गंगा नदी का नाम। (पुराण)

३ यमराज के द्वार पर (नरक में) बहने वाली एक नदी। (गरुड़ पुराण)

उ०—धवळ न अटकै धुर वहै, कासूं पांणी कीच। इण री जननी तारही, वंतरणी रै बीच। —बां. दा.

वि० वि०—कहा जाता है कि उक्त नदी में जल की जगह गर्म लोहू, अस्थि, मज्जा आदि तेज प्रवाह से बहता है। यह नदी मरने के बाद जीवात्मा को पार करनी पड़ती हैं। इसमें से ब्राह्मण को गौ-दान करने वाला धर्मात्मा ही पार हो सकता है एव पापी को इसे पार करने मैं कठिनाई होती है और दुख भोगना पड़ता है। यह नदी सती के वियोग से जो अश्रुधारा शिव के नेत्रों से बही उसी से बनी थी। इसका विस्तार दो योजन है।

४ दान में दी गई वे वस्तुएं जो परलोक में उन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने की अभिलाषा से दी जाती हैं।

५ देखो 'वेतरणी'।

रू. भे.—बेतरणी, बंतरणी, वेतरणी, वेयरणी।

वंतरणीइग्यारस, वेतरणीएकादसी, वेतरणीग्यारस—सं. स्त्री. [सं. वंतरणी एकादशी] मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी।

वंतरणौ, वंतरबौ—देखो बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

वंतरणहार, हारौ (हारी), वंतरणियौ—वि०।

वंतरिप्रोड़ौ, वंतरियोड़ौ, वंतरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वंतरीजणौ, वंतरीजबौ—कर्म वा०।

वंतरियोड़ौ—देखो 'बेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंतरियोड़ी)

वंतवार—वि०—मूर्ख, नासमझ। (अ. मा.)

वंतांडारूपा—सं. स्त्री.—विकृत रूप धारण करने वाली देवी।

उ०—सीकोतर सोमया तुं सुवीर, वंतांडारूपा विकट बीर। सीवरधां सीधा धातु सभेव, अहिमुखां मुगट कंसाजु ग्रैव। —रांमदांन लाळस

वंताढच, वंताढचगिरि—सं. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—व्रत्त दीरघ वंताढच, वीस सत्तरसौ आढ़च सत्तर मडा नदी ए पंच चूला सदीए। —वृस्त.

वंताणौ, वंताबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

वंताणहार, हारौ (हारी), वंताणियौ—वि०।

वंतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वंताईजणौ, वंताईजबौ—कर्म वा०।

वंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंतायोड़ी)

वंताळ, वंताल—सं. पु. [सं.] १ व्यास की ऋकशिष्य परंपरा में से जातुकर्ण्य आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रहक्कै तूर ग्रंबाळ, चंड कळिचाळ कहक्कै। बकै वीर वेताळ, ग्रीध वेताळ गहक्कै। —सू. प्र.

उ०—२ वीग्ग्मं वैताळं, खिलै खेतपाळं । कटक्कां कसस्से, सुभट्टं सनस्से । —गु. रू. बं.

उ०—३ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा बहु वैतर । वीर सिद्ध वेताळ निसाचर भूचर खेचर । —गु. रू. बं.

उ०—४ वेताल वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध ग्रांमख भक्ख, जंबक्क रीछ वड्डाक जक्ख । —गु. रू. बं.

वेताळरस, वेतालरस-सं. पु. [सं] गंधक, मिर्च और हरताल के योग से बनने वाला एक प्रकार का रस विशेष । (वैद्यक)

वेताळिक, वेतालिक-सं पु. [सं. वेतालिक] १ राजाग्रों ग्रादि को उनकी कीर्तिगान करके जगाने वाला व्यक्ति भाट, वन्दीजन।

उ०—प्रभात समउ हुउ, ग्रंधकार फीटइ, गाय तणा गाला छूटा, तारागण विरल हुउ चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडां तणी उलि लवइ, देव तणां बार ऊघडियां, प्रभातिक तूरय वाजियां, राजभवनइ वेतालिक पढइं, विलोणा तणा झरडका ऊपजइं, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणे घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुग्रा । —व. स.

वि० वि०—ये लोग राजाग्रों को किसी विशेष घटना, बात ग्रादि की सूचना देने का कार्य करते थे।

२ व्यास की ऋकशिष्यपरंपरा में से शाकपूणि नामक ग्राचार्य का एक शिष्य।

रू. भे.—बेताळिक, बैंताळिक, वेताळिक ।

वेतालिकीविद्यग्यांन-सं. स्त्री. [सं. वेतालिकीविद्याज्ञान] ६४ कलाग्रों में से एक।

वेताळी-सं. पु. [सं. वेताली] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक ग्रनुचर ।

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

उ०—काज माळी कमाळी उताळी फिरे माहाकाळी, नचे ग्राळी जाळी वीर वेताळी निसंक । ताळी बाज ग्ररावां सावात जाळी नराताळी, लांघड़े प्रजाळी जांणे हेके साथ लंक । —किसनजी ग्राढो

वेताळीस, वेतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

उ०—पनरेसें वेतालीस कोडीरे; ग्रडवन्न लख ग्रधिके जोडी । छत्तीस सहस ग्रधिक कही रे, प्रतिमा सगली सरद हीयें रे। —वृस्त

वेतियांण-वि.—समर्थ, सामर्थ्यवान् शक्तिशाली, बलवान् ।

रू. भे.—वहतीवांण, वेहतीवांण ।

वेतियोड़ो—देखो 'वेंतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेतियोड़ी)

वेतुंड—देखो 'वितंड' (रू. भे.)

वेतुल-सं. पु.—घोड़ा, ग्रश्व । (ना. डि. को.)

वेत्रासुर—१ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

२ देखो 'वेत्रासुर' (रू. भे.)

वेत्रासुरतंडळ, वेत्रासुरतंडल-सं. पु.—वृत्रासुर नामक राक्षक का वध करने वाला, इन्द्र । (ना. डि. को.)

वेथी—देखो 'वेयी' (रू. भे.)

उ०—जोर कियौ सारै वेथी भागै नहीं, रुमाल लपेट के पांय परै है। खांडो वगस जद मेड़तो दीनो, दूदो जंभेसर नांव धरै है। —सेवादास

वैदंग-सं- पु.—१ ग्रायुर्वेद, वैद्यक, चिकित्सा ।

२ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

वैदंगर—१ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—नाड़ी निरख भया वैदगर, ग्रनंत ग्रोखदी कीन्हा । सारी धात रसांयन करि करि, ग्रातम एक न चीन्हा । —ग्रनुभववाणी

२ देखो वेदग्य'।

वैदंगी—१ देखो 'वैदंग' (रू. भे.)

२ देखो वैद्य' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू भे.)

वैद-सं. पु. [सं.] १ विद ऋषि के एक पुत्र का नाम।

२ विद ऋषि के वंशज।

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे)

उ०—१ हरीया पीर परापती, तन तें दई लग्गाय । वैद विचारा क्या करै, विन भुगत्यां नही जाय । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ ज्योतिषी वैद पोराणिक जोगी, संगीतौ तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तौ ग्ररथ कहि । —वेलि.

उ०—३ वैद किण ही री ग्रांख्यां री कारी कीधी । ग्रांख ठीक हुवां वैद बधाई मांगै । जद कहै पंचा नैं पूछ सूं । पंच कहसी सूझ तो हुवी तो बधाइ देसूं । जद वैद बोल्या—तौ नैं कांइ दीसे है ? —भि. द्र.

वैदक-वि०—जानकार, ज्ञाता ।

उ०—व्याकरण वेद वैदक विविध, भला उदर सहुको भरौ। धरमसीह रतन बहुला धरणी, कोई गरब रखें करौ। —ध. व. ग्रं.

२ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म ग्यांन रसायणं सुर धुनं वेदं तथा जोतिसं, व्याकरण च धनुरधरं जळतरं मंत्राक्षरं वैदकं। —रा. सा. सं

३ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

४ देखो 'वैद्य' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

वैदगी—देखो 'वैद्यगी' (रू. भे.)

वैदथित-सं. पु. [सं.] विद ऋषि कुलोत्पन्न ऋजिश्वन नामक आचार्य।

वैदरभ, वैदरभ-सं. पु. [सं. वैदर्भ] १ रुक्मणी के पिता का नाम।

२ दमयंती के पिता का नाम।

३ आधुनिक बरार प्रदेश का नाम, विदर्भदेश। (व. स)

उ० मलय सिंगल कोसल नइ अंध्य, स्री परवत द्राविड नइ वंध्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्री वैदरभ पाटल अति सार। —नळदवदंतीरास

४ उक्त प्रदेश के राजा भीम का नाम।

वैदरभि, वैदरभी-सं. पु. [सं. वैदर्भी] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा के पिता का नाम।

२ विदर्भ नरेश के वंशज भार्गव नामक आचार्य का नाम।

३ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक की राजकुमारी रुक्मणी का नाम।

४ विदर्भ नरेश की राजकुमारी और नल राजा की पत्नी का नाम।

५ कुश नामक राजा की पत्नी एवं कुशाम्ब, कुशनाभ आदि की माता का नाम।

६ सगर महाराजा की पत्नी का नाम, जिसके साठ हजार पुत्र कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि में भस्म हुए थे।

७ मलयध्वज की पत्नी का नाम।

८ काव्य रचना की एक प्रकार की शैली विशेष, जिसमें मधुर वर्णों से मधुर रचना की जाती है। यह करुण, शृंगारादि रसों के लिए अधिक उपयुक्त है। (साहित्य)

वि० वि०—लाटी, पांचाली एवं गौड़ी इसके अन्य तीन प्रकार होते हैं।

वैदराज—देखो 'वैद्यराज' (रू. भे.)

उ०—भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करें, तरक्क नीति सास्त्रांणि, एक मुख उच्चरें। मारंत एक सब्ब धात, केळवें रसायण, अगाध वैदराज राज ओखदी विचारणं। —गु. रू. बं.

वैदल-सं. पु. [स.] १ परांवटा नामक खाद्य पदार्थ २ दाल का अनाज ३ भिखारी के भीख मांगने का पात्र।

वैदही—देखो 'वैदेही' (रू. भे.) (नां. मा)

वैदांणी, वैदांनी—देखो 'वैनांणी' (रू. भे.)

उ०—तीतर लड़वा वाटवड, वैदांणी बुगलाह। लखे पंखीवण रह्या, वाह वाह जी वाह। गज-उद्धार

वैदिक-वि० [सं.] १ वेदों में वर्णित, वेदोक्त।

उ०—विद्या वेदां में वैदिक विधि वरणीं, अपणीं करणीं सूं जग-पार उतरणीं। निरभय नींयंता यंता नरनारी, करता विस्वंभर भरता सुखकारी। —ऊ. का.

२ वेदोक्त कृत्य करने वाला।

३ वेदों का ज्ञाता, पंडित।

४ वेदों का, वेदों से सम्बन्धित।

रू. भे.—वैदिक, वेदक, वेदिक, वैदक।

वैदूरय, वैदूरयमणि, वैदूरयमणी-सं. पु. [सं. वैदूर्यमणि] १ हरे रंग के रत्न।

२ लहसुनिया नामक रत्न विशेष। (व. स.)

रू. भे.—वैडूरय, वैडूरयमणि, वैडूरयमणी।

वैदेह-सं. पु. [स] १ विदेहराज जनक।

२ विदेह का निवासी।

३ वैश्य या व्यापारी।

४ ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न वैश्यपुत्र।

५ महाराजा निमि के पुत्र तथा वंशजों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधनसूचक शब्द।

६ विदेह देश के राजा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

वैदेहरात-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन ऋषिगण जो विश्वामित्र के कुल से उत्पन्न हुए थे।

वैदेही-सं. स्त्री. [सं.] १ विदेह राजा जनक की कन्या सीता, जानकी।

२ जनमेजय पुत्र शतानीक की पत्नी का नाम।

३ विदेह कुलोत्पन्न।

४ पिप्पली। (ग्र. मा.)

रू. भे.—वैदई, वैदही।

वैद्य-वि. [सं] १ वेद का, वेद सम्बन्धी।

२ औषधि का, चिकित्सा सम्बन्धी।

३ चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

सं. पु. [सं. वैद्यः] १ आयुर्वेद का ज्ञाता एवं उसी के अनुसार चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, आयुर्वेदाचार्य।

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या कोइ नें आंख्यां न सूझै तिण पूछ्यौ सहर में नागा किता अनें ढकिया किता? जद वैद्य बोल्यौ —आंख्यां में ओखध घाल नें सूझतौ तौ हूं कर देऊं अनें नागा ढकिया तूं देखलै। —भि. द्र.

उ०—२ हकीम वैद्य सरब पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जांण असाध्य व्याध जगदंबा, अंबा बांसै आई। —मे. म.

२ विद्वान, शास्त्राचार्य।

३ वैद्य नामक जाति का व्यक्ति जो वैश्य माता, व ब्राह्मण पिता के संसर्ग से उत्पन्न होता है।

४ सब विद्याओं का ज्ञाता, विष्णु भगवान्।

५ सुख देवों में से एक।

६ वरुण एवं सुनादेवी के पुत्र का नाम, जो घृणि एवं मुनि का पिता था।

रू. भे.—बेद, वैद, वइदउं, वयद, वेज्ज, बैदंग, वेदंगर. बैदंगी. वैद, वेदक, वैद्यक।

अल्पा.,—वेदियौ।

वैद्यक-सं. पु.—१ रोगों के निदान एवं चिकित्सा आदि के विवेचन का शास्त्र।

२ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक। (व स.)

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

४ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

उ०—व्यापारी मह वांणिआ, जोसी **वैद्यक** व्यास। मागरा पणि मिलिया बह, सहू नी पूगइ आस। —मा कां प्र.

रू. भे.—वेदक, बैदई, वैदक, वैदगी, वैदिक, वैदक. वैद्यग, वैद्यिक।

वैद्यकक्रिया-सं. स्त्री.—स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक कला का नाम। (व. स.)

वैद्यग-सं. पु.—१ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मंत्रकार।

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

वैद्यगी-सं. पु.—वैद्य का कार्य, चिकित्सा।

रू. भे.—बेदगी, वेदगी, वैदगी।

वैद्यनाथ-सं पु [सं.] १ बंगाल का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

२ मण्डोर का एक प्रसिद्ध स्थान।

३ धन्वन्तरि।

४ शिव, महादेव का एक अवतार जो चिताभूमि में से रावण की प्रार्थना पर हुआ था।

५ महादेव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक।

रू. भे.—वैजनाथ, वेजनाथ, वेधनाथ।

वैद्यराज-सं. पु. [सं.] वह वैद्य जो चिकित्सा करने में अति दक्ष हो।

रू. भे.—वइदराज, वईदराज, वेदराज, वैदराज।

वैद्यिक—देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

उ०—**वैद्यिक** ज्योतिस निमित्त नै ए, भाखै परिग्रह कै काज कै। जिकै तज निकल्या ए, धन मौटा मुनिराज कै। —जयवांणी

वैद्युतगिर, वैद्युतगिरि-सं. पु. [सं. वैधृतगिरि] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वैद्रभा, वैद्रवा—देखो 'विदरभा' (रू. भे.)

उ०—१ कांई भूला भमई गज थाटन रे, वाटन रे वळती न लहई **वैद्रभा** रे। डोभी घाल्या दांणव आवइ रे, कांइ पावइ रे कीधुं कुवधी आपणउ रे। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ वेग वाल्या हय रे रे, रथ सुं रथ बांध्यौ रळी। गज थाट मोगर वहइ उवट **वैद्रवा** थई वेगळी। —रुकमणी मंगळ

वैध—देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

वैधनाथ—देखो 'वैद्यनाथ' (रू. भे.)

वैधव, वैधव्य-सं. पु. [सं. वैधव्यं] विधवा होने की अवस्था, विधवापन

रू. भे.—वैधव।

वैधस-स. पु. [सं.] वेधस के वंशज हरिश्चन्द्र का एक नाम।

वैधी-सं. पु. [सं. वेधिन] दुश्मन, शत्रु। (अ. मा.)

वैधीकरण-स. पु.—कुंती पुत्र अर्जुन। (अ. मा.)

वैधौ—देखो वेदौ' (रू. भे.)

वैध्रत, वैध्रति, वैध्रती वैध्रित, वैध्रिति, वैध्रिती-सं. पु. [सं. वैधृति]

१ फलित ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से सत्ताईसवें योग का नाम जिसमें शुभ कार्य करना निषिद्ध है।

उ०—व्यतीपात **वैध्रति** वली, सूरिजनी संक्रांति। ब्राह्मण हूंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

२ तामस मन्वन्तर का देवगण या देवगणों की माता।

३ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के धर्मसेतु नामक अवतार की माता।

४ ग्यारवें मन्वन्तर धर्मसावर्णि के इन्द्र का एक नाम।

५ विधृति के पुत्रों का सामूहिक नाम।

वैन-सं. पु [सं.] व्यास की सामशिष्य परम्परा के अन्तर्गत शृंगी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'वहन' (रू. भे.)

उ०—१ अर **वैन** अेक रिड़मल री तिकी पाटण तंवरां नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खंडेलै लाया। पीछै रावजी खंडेलौ लूटियौ। तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अर रावजी सीवीकैजी आपरी ठकुरांणी करी नै वैल वैसांणी। —द. दा.

उ०—२ जी साहिबा छोटी ननंद थांकी **वैन**, बाईसा कर मांनती जी म्हांरा राज। जी साहिबा वांनै लगाई अत्ती देर किसूर म्हारौ नायजी म्हांरा रा'ज। —गणगोर रो गीत

३ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—थर हर कंपै नेड़ां थकां रे, अलगा पावै चैन। ओरां री कुणसी चले रे, न मांनै माइतां रा **वैन** —जयवांणी

वैनड़—देखो 'वहन' (मह., रू. भे.)

उ०—१ हरसा भाई म्हारा रे, **वैनड़** भाई रो गाढ़ौ नेह। —जीणमाता रो गीत

उ०—२ जीण मेरी बाई ये ऊंची सो थालूं ये थांनै वैसणूं, वैनड़ भाई जीमां साथ। जांमण की ये जाई, बिच बिच बदळां ये वाल्हा गासिया। —जीणमाता री गीत

बैनड़ली, वैनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हूं तौ जीमण बैठ' र हेलौ जी मारूं, आय परोसै म्हांरी वैनड़ी, वीरे रै आंगण आंबो मोरियो। —लो. गी.

वैनतीय वैनतेअ, वैनतेय—सं. पु. [सं. वैनतेय] विनता का पुत्र, पक्षी-राज गरुड़। (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ लेवनी ठेकांण बाजी सेस धू पयाळ लांबी, वैनतेय खसे वेग वर्णै न विचार। क्रांमनी मपूती लीधां कोळमुंड क्रीत काज, ओपै करां परांपरी बुध रौ आचार। —बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—२ तोयधी मृगिन्द्र पांण वचै व्याळ वैनतेय, दूठ अद्र वचै धांण जुआंण दधीच। बरूथां सत्रां चा बाधा चंद रायासाल बीजै, बीर खागां खाधा जेन लाधा भीम बीच। —हुकमीचंद खिड़ियौ

२ गरुड़ की प्रमुख संतानों में से एक संतान का नाम।

रू. भे.—वैनतीय, बैनतेय।

वैनहोत, वैनहोतर, वैनहोत्र—सं. पु. [सं. वैनहोत्र] १ वीतिहोत्र नामक राजा का नामान्तर जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र था।

बैनांणी—१ देखो 'विनांणी' (रू. भे.)

२ देखो 'बैनांणी' (रू. भे.)

वैनायकीविद्याग्यांन—सं. पु. [सं.] वैनायिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

वैनासिक—सं. पु. [सं. वैनाशिक] १ जन्म नक्षत्र से तेरहवां नक्षत्र। (फलित ज्योतिष)

२ जन्म नक्षत्र से सातवां, दसवां एवं अठाहरवां नक्षत्र।

वि० वि०—उक्त तीनों नक्षत्र अशुभ माने जाते है। इन्हें निधन-तारा भी कहते हैं। इन में यात्रा एवं शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं।

बैनीत—१ देखो 'बेनीत' (रू. भे.)

उ०—कळह हली वळ बेल सु बैनीत वधारी, जाट कह वायक जोर रा फुरमास न धारी। लिया बळधह्व जाटंदा तद कीध तयारी, जांन चडंता जोईया वाजां वजवारी। —वी. मा,

२ देखो 'विनीत' (रू भे.)

बैनु—देखो 'बैनु' (रू. भे.)

बैनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

वैन्य—सं. पु. [सं.] १ भृगुकुलोत्पन्न एक मंत्रकार का नाम।

२ राजा पृथु का नामान्तर।

३ राजर्षि पृथि का नाम।

४ राजर्षि पृथी का नाम।

५ अत्रि ऋषि का नाम।

वैपस्चित—सं. पु. [सं. वैपश्चित] विपश्चित ऋषि कुलोत्पन्न तार्क्ष्य नामक ऋषि का नाम।

वैपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ पर घरनी छासि, कंठ त्रिहुंणी रासि, अवसर बिना भास, कुकुळ नौ दास। फूस नी आग, जमाइ नौ भाग, काचौ ताग, पांणी नौ साग गदीवा नौ तेज दुरजन नौ हेज। उधारा नौ वैपार, रांड ना सिणगार। पावइयानौ प्यार। रा. सा. सं.

उ०—२ उर फुकमा असपत्त सूं तुकमा लेवण त्यार। पाछा करण 'प्रताप' ज्यूं, वेढ अपत वैपार। —किसोरदांन बारहठ

वैपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—दुनिया साळी कैवै कै पुलिस बेईमांन है, म्हूं पूछूं कै आज रै जमांना मैं कुण बेईमान नीं है? ए ब्लेक करणिया वैपारी, ए रिस्वतां ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाइ तौ म्हांरा भाईबंद है। पछै म्हांनै इज क्यूं बदनांम किया जावै? —अमर चूंनड़ी

वैपुर—सं. पु.—गगन, आकाश। (ना. डि. को.)

वैफुल, वैफुली—देखो 'बहुफुली' (रू. भे.)

उ०—पोह पसै सेवंत्री पाडलां, जोख वणी गुलजार। वैफुल वादी ऊपरैं, रहिया भंवर गुंजार। —पनां

वैभव—सं. पु. [सं.] १ विभव, ऐश्वर्य।

उ०—चळ वैभव, संपत सुचळ, चळ जोबण, चळ देह। चलाचली के खेल में, भलाभली कर लेह। —अग्यात

२ धन, दौलत, सम्पत्ति, द्रव्य।

उ०—प्रभिति इंद्र प्रताप पाक पिंड तेज प्रभा-कर। क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर। —गु. रू. बं.

३ बहुतायत, आधिक्य।

४ महिमा महत्व।

५ सामर्थ्य, शक्ति।

६ कार्य, धन्धा, व्यवसाय।

रू भे.—बभौ, बिभौ, बिभव बिभौ, बेभव, वंभव, भंभौ, विभ, विभव, विभाव, विभौ, विहव, वीभव, वीभौ, वेभू, वेभव।

वैभवता—सं. पु. [सं. वैभव+ता प्र.] वैभव होने की अवस्था या भाव।

रू. भे.—विभवता, वीभवता।

वैभववांन—वि० [सं. वैभव+वान्] १ विभववान्, ऐश्वर्यवान।

२ धनवान्, सम्पत्ति वाला, दौलत वाला।

३ महत्वपूर्ण, महिमा वाला।

४ व्यवसायी।

५ सामर्थ्यवान, शक्तिशाली।

रू. भे.—विभववाँन, वीभववांन।

वैभांडक, वैभांडुकि, वैभांडिक–सं. पु. [सं] पूर्णभद्र नामक आचार्य जो गोत्र प्रवर्तक भी कहे जाते हैं।

वैभवसाळी, वैभवसाली–वि० [सं. वैभवशाली] १ वैभववान, ऐश्वर्यवांन।

२ जिसके पास अत्यधिक धन-दौलत हो।

रू. भे.—विभवसाळी, विभवसाली, वीभवसाळी, वीभवसाली।

वैभाखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

उ०—उवै वार वब्भीखणी चालि आयौ, लखे तैं हणूंमांन पावा लगायौ। प्रणांमेस **वैभाखणां** भूप येनूं, जपै आव लंकेस स्रीरांम जेनूं। —सू. प्र.

वैभार–सं. पु.—**वैहार** नामक पर्वत जो राजगृह के पास स्थित है।

उ०—जिन आदेस लेइ करी जी, चढिया मुनि गिरि **वैभार**। सिल उपरी जइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीधउ सार। —स. कु.

रू. भे.—वैहार।

वैभीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

वैभीत—१ देखो 'भैभीत; (रू. भे.)

२ देखो 'भयभीत' (रू. भे.)

वैभीसण, वैभीसणि, वैभीसणी–सं. पु. [सं. वैभीषणि] १ मणि कुंडल नामक वैश्य को शाप मुक्त करने वाला विभीषण का पुत्र।

२ देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

वैभोज–सं पु. [सं.] द्रह्यु के वंशज एक प्राचीन जाति।

वैभ्राज=सं. पु. [सं] **१** सुमेरू पर्वत के पश्चिम में स्थित सुपार्श्व नामक पर्वत पर स्थित एक जंगल का नाम। पुराण)

२ पांचालनरेश का नाम जो ब्रह्मदत्त का पिता था।

३ एक लोक विशेष का नाम।

वैं'म, वैंम–सं. पु.—१ सम्बन्ध, लगाव; गरज।

उ०—बूढी भोळी डोकरयां नै आपरा बेटा वेगा सा छूडा ल्यावण रा वसंतो घमंड दिखाळै है। भुवांळी खावतौ फिरै। घर-घर गेड़ा काटै। मिनखां मैं रिरावै, लीलड़ी काढै। गव्हायां री गरज करै, वकीलां सूं **वेंम** राखै। —दसदोख

२ देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—**१** पटवारी है क, तैंसीलदार? किसनजी कीं कूंत नीं सक्यौ। सौखीनाई अर खरच-वरच री चीजां-वसतुवां सूं खूब राजी हुयौ। बूढापै हालां ओखदां माथै **वैं'म** ही नीं गयौ। ओसथ्या ही तीस-पैंतीस तांई री अकल मैं आई। —दसदोख

उ०—२ एकर री बात, राजी रे जापै मैं पौन-हवा निकळगी। बावळी बंडा करण लागगी। गुग बिखेरै अर तत्ता-पत्ता सूं बूही बातां करै। जकै सूं घर हालां नै भूतणी री **वैं'म** बड़ गयौ है? —दसदोख

उ०—३ पण राजी तौ दवटी पड़ी ही टीली मारै। जकै सूं सै भूतणी री **वैं'म** करै है, सनीपात नै कुण समझै? कोई जिंद बतावै, कोई चूड़ावण री नांव लेवै है। कोई ओपरी छाया कढावण री उतावळ करै, कोई पलीत नै पांणी ढुलावणौ बतावै। —दसदोख

उ०—४ उदास मन सूं बातै कियांई ठिरड़तौ-ठिरड़तौ मोटर में आय नै बैठग्यौ तौ बैठतां पाण एक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टारट व्हैगी। जांणै उणनै **वैं'म** हो कै म्हूं आळांणौ नीं कर दूं अर पाछौ रवांनै नीं व्है जाऊं। —अमर-चूंनड़ी

वैमनस्य–सं. पु. [सं.] **१** वैर, दुश्मनी, शत्रुता।

२ मानसिक शीथलता, उदासी।

वैमर—देखो 'विवर' (रू. भे)

उ०—तैण समै आप रा धणी री कही हकीकत धारि; मूरत उठाय़ै, मूरत नीचै **वैमर** थो, तठै होय़ै घर दीसी चाली। —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

वैमांणिक—देखो 'वैमांनिक' (रू. भे.)

वैमांणिकदेव—देखो 'वैमांनिकदेव' (रू. भे.)

वैमांणी, वैमांणीक, वैमांणीय, वैमांनिक–वि० [सं. वैमानिक] **१** विमान सम्बन्धी, विमान का।

२ आकाश पें विचरण करने वाला।

सं. पु.—**१** हवाईजहाज पर सवार होने वाला।

२ हवाईजहाज चलाने वाला।

३ एक प्राचीन तीर्थ जहाँ स्नान करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है तथा वह विमानों में चाहे वहीं घूम सकता है।

४ देखो 'वैमांनिकदेव' (रू. भे.)

उ०—पंचेंद्रि तिरजंच नै मांनव, एह थया इकवीस जी। वितर जोतिसी नै **वैमांनिक** इम दंडक चौवीस जी। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—विमांणिक, विमांणी, विमांणीक, विमांणीय, विमांनिक, वेमांणिक, वेमांणिय, वेमांणी, वेमांणीक, वेमांणीय, वेमांनिक, वैमांणिक।

वैमांनिकदेव–सं. पु. [सं. वैमानिकदेव] स्वच्छ, निर्मल एवं रत्नजड़ित विमानों में विचरण करने वाले देव। (जैन)

उ०—ति चउरिंद्री गरभज वली, नर तिरयंच कह्या केवली। भवण जोतिख **वैमांनिकदेव**, चउवीस दंडक ए नित मेव। —सं. कु.

वि० वि०—ये देव दो प्रकार के होते हैं—(**१**) **कल्पोपपन्न देवः**—

वे देव जिनमें छोटे-बड़े ग्रादि का व्यवहार होता है। ये बारह प्रकार के होते हैं।

(२) कल्पातीत देव:—वे देव जो ग्रहमिंद्र होते हैं ग्रर्थात जिनमें छोटे-बड़े ग्रादि का भाव या व्यवहार नहीं होता है। इनके दो भेद हैं।

१ ग्रैवेयक एवं २ ग्रनुत्तरोपपातिक।

लोक पुरुषाकार है जो चौदह राजू परिमाण है। नीचे तेहरवें राजू का काफी हिस्सा छोड़ कर ऊपर के हिस्से में ग्रीवा के स्थान में रहने वाले देव ग्रैवेयक देव कहलाते हैं। जो नौ प्रकार के होते हैं। जिन देवों की स्थिति, प्रभाव, सुख,द्युति (कांति), लेश्या ग्रादि ग्रनुत्तर प्रधान है या स्थिति, प्रभाव ग्रादि में जिन से बढकर कोई दूसरे देव नहीं है वे ग्रनुत्तरोपपातिक देव कहलाते हैं। ये देव पांच प्रकार के होते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर छब्बीस प्रकार के वैमानिक देव होते हैं।

रू. भे.—विमांणिकदेव, विमांनिकदेव, वैमांणिकदेव।

वैं'माता, वैमाता—देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

वैमार—देखो 'बीमार' (रू. भे.)

उ०—सु जैत प्रभात री सिकार चढियौ हुंतौ। वैसाख जेठ रै लूवां रा दिन हुंता। सु जैत ताहरां ही ज सिकार रम नैं लू री भकोळियौ थकौ घणौं तावड़ै सौ **वैमार** थकौ ग्राय नै खसखांनै मांहै ग्राय पोढियो। सु खसखांनै बाहरा घणीरौ छड़काव कीयौ।

—जैतमाल पुमार री वात्त

वैमितरा, वैमित्रा-सं. पु. [सं. वैमित्रा] १ स्कन्द की ग्रनुचरी एक मातृका का नाम। २ सात शिशु माताग्रों में से एक।

वैं'मी, वैमी—देखो 'वहमी' (रू. भे.)

वैमुख—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावै। प्रभु **वैमुख** जिणरौ रिपु प्रांणी, ताह न कदे सतावै। —र. रू.

वैम्रग, वैम्रिग—सं. पु. [सं. वैमृग] कश्यप एवं दनु का एक पुत्र दानव।

वैयकी—देखो 'वैयकी' (रू. भे.)

वैयमक-सं. पु [सं.] एक प्राचीन जाति।

वैयर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

२ देखो 'वैर' (रू. भे.)

वैयस्व-सं. पु. [सं. वैयश्व] व्यश्व का वंशज विश्वमनस् नामक एक ग्राचार्य।

वैयाध्रपद्य-सं. पु. [सं.] युधिष्ठर द्वारा ग्रज्ञातवास काल में धारित नाम।

वैयायिक-सं. पु. [सं.] १ दर्शन सिद्धान्त। (बौद्ध)

२ सर्वश्रेष्ठ एवं धार्मिक कर्मों में विघ्नकर्त्ता एक क्रूर देव।

वैयार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—लियौ जनम नर संसार, लागौ जगत **वैयार**। जै नर किसा हरि सूं कोल, भूलौ ग्रभ का सब बोल। —ऊदोजी नैण

वैयालिस, वैयालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

वैयावच, वैयावच्च, वैयावत, वैयाव्रत्य-सं. पु. [सं. वैयावृत्य] एक प्रकार का व्रत या तप विशेष जिसमें ग्राचार्य ग्रादि बड़े एवं ग्रादरणीय पुरुषों की दस प्रकार से सेवा की जाती है। (जैन)

वि० वि०—उक्त व्रत या तप में ग्राचार्य, उपाध्याय; शिष्य, गलानी (रोगी), तपस्वी, स्थविर, स्वधर्मी, कुल (गुरु भ्राता), गण (सम्प्रदाय के साधु) ग्रौर संघ (तीर्थ) को ग्राहार, वस्त्र, पात्र, ग्रौषधोपचार ग्रादि दिये जाते हैं तथा पाद, पीठादि की चम्पी की जाती है।

रू. भे.—वेयावच, वेयावच्च।

वैं'योड़ौ, वैयोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'व्होयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैं'योड़ी, वैयोड़ी)

वैयौ—देखो 'बइयौ' (रू. भे.)

वैरंग, वैरंगौ—१ देखो 'विरंग' (रू. भे.)

उ०—भख मुहगौ करतै भु ग्रंतर, वनचर ऊसर थया **वैरंग**। निस दिन ग्ररज करै निसांसै, सस ग्रागळ ऊभौ सारंग। —रूघौ मुहतौ

२ देखो 'बैरंग' (रू. भे.)

वैरंडेय-सं. पु- [सं] एक गोत्रकार प्राचीन ऋषि।

वैर-सं. पु. [सं. वैर] १ प्रतिकार, बदला।

उ०—१ तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलांमति इणि भांत सूं राजांन री वात सुणनैं ग्रजमेर रै थांणै री हकीकत सांभळनैं ग्रादि **वैर** उगराह नूं ग्रसूरांण तुरकांण रा दळ राजांन ऊपरै विदा हूग्रा सो किण भांत रा कहीजै छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ तरै रैबारियां कही, 'साहिबी कुंवरसी सांखलै री छै। तिण कही, म्हांरौ रजपूत थां पल्लू में मारियौ। तैरै **वैर** में ले जावां छां, ग्रर थांनु मारां छां।' तद ग्रै मोटियार था, सताबी खड़ कोसां पांचा-सातां ग्राय पोहतो। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ एक वार घणां सूरां रा चाचरां री खाज मेटां। कण कण करां। धकचाळां करि कांमणी भेटां। कीति उबारां। ग्रागलां जाळंधर महाजोधार सारिखां रा **वैर** कळियां काढां। भसमासुर रा विरोध मांहै इद्रादिक देवता वाढां। —मा. वचनिका

उ०—४ केसरीसिंघ ग्रचळदासोत। संमत १६९० डाभड़ी ग्रोईसां री पटे। सुंदरदास रै **वैर** सोढां मारियौ। सुंदरदास सुरतांणोत।

जोधपुर मेवरो पटै। पछै लवेरा री सांडां सोढे ली, तठै बाहर आपड़ सोढां सूं वेढ हुई, कांम आयौ। —नैणसी

२ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध।

उ०—१ गांम में उणां री औ ढंग हौ कै नीं किणी सूं दोस्ती अर नीं किणी सूं वैर। मारग आवणौ अर मारग जावणौ। खडी खाणी न कोई पड़ी उठावणी। पोता री मोज में मस्त रैवणौ। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ हठियौ सिर हिंदुवां, माड मेलैं खूमांणा, आदि वैर संभरै, सरस दिल्ली सुरतांणां, राजा सूरजसिंघ, जोध गजसिंह जम-ज्जड, किसनसिंघ करमेत, 'करन' संपेख महाभड। —गु. रू. बं.

उ०—३ सौ जोडी तीन सोनै रा, चोकड़ौ एक मोतियां रौ, सोनै रा हथियार आदमियां कुंवरसी कनै राखिया। तद कुंवर कह्यौ, केई तौ सिरदार था, वैर तौ वडो पड़ियौ। इव जांणां हा, ततौ पूठौ कर वाकी रा काहि नुं जावण देवा हा वात पण नीवड़ी। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ ताहरां नरसघ सींधळां रै पण नाळेर पकड़ियौ अर कहियौ, 'दिन ५ तथा ६ मांहै साहौ मेलजौ तो आसां, नहीं तो म्हांहरै कांम छै। म्हारैं माथै वैर छै।' ताहरां सींवळां पण तुरत साहौ दीनौ। —राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—उगराणौ, उगराहणौ, करणौ, घातणौ, पड़णौ, बांधणौ, भांगणौ, लैणौ, वाळणौ, होणौ।

३ फसल। (डूंगरपुर-भील)

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—१ जनावरां ने कैरे नांव घानी छो मु कहो। ताहरां कुंवर कही वैरां ना साच कहीजै नहीं। ताहरां रांणी कही तो हूं थांहरी अरध सरीरी किसी बिध छूं अर मैं थांरै पगां राखस नैं मरायौ अरथै मना सांच कह्यौ नहीं तो थांहरै प्यार किसौ। —चोवौली

उ०—२ रह्यौ तै मांहै माळियै वाळौ घर अठांणौ मांग्यौ। मार अर सरब चुकाय दीया। पण देवाळौ काढियौ नहीं। वैरां रै कपड़ौ गहणां सुधौ सरब चुकाय दीयौ। आप पुरांणै घरै जाय रह्यौ। हमै परची जैंही वांणीत पासा मागै, सु दस रुपिया रै कांम आवै। —ठकुरै साह री वात

रू. भे.—वइअर, वइयर, बइर, बईअर, बईयर, बईर, बयर, वेर, बैयर, वइअर, वइयर, वइर, वइरि, वइरी, वईअर, वईयर, वईर, वयर, वेर, वेरता।

अल्पा.—वैरड़ौ।

मह.,—वेगी।

वैरक, वैरक्क, वैरख—सं. पु. [सं. वेर., वेरम्] १ शरीर, बदन।

२ हाथी, हस्ती। (अ. मा.)

३ वैरी, शत्रु, दुश्मन।

४ देखो 'वैरक' (रू. भे.)

उ०—पांना मुख वाजित्र हिलै वांनां वैरक्कां. मेघ रंग मातग वीद ऊडंग कटक्कां। पली जेम साढळां हिली फौजां घमसांणां, व्योम रजी विथरी घमस वडजी केकांणां। —रा. रू.

रू. भे.—वेरक, वेरक।

वैरड़ी—देखो 'वैर' (अल्पा., रू. भे.)

वैरड़ो—१ दोगला, वर्णसंकर।

२ वैर का बदला लेने वाला।

उ०—रायसिंघ तिण पाट रहै मेवैं तुरकांणौ, लाखणसी घर छाड हुवौ नाडूलौ रांणौ। मेवा कीध सकत्त, वधै वरदांन वडाई। व्यातौ गढ वधनोर, हुवौ सवाइ चहूं भाई। चहुवांण वंस रूपक वडौ, रावां गंजनै वैरड़ौ। वरदांन आस लीधौ वडै, खुरासांण ऊपर खड़ौ। —मालौ आसियौ

३ देखो 'वैर' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'वैरड़ौ' (रू. भे.)

वैरण, वैरणि, वैरणी—शत्रु, दुश्मन, वैरी। (स्त्री.)

उ०—१ पवन तूं वैरण, धीमी धीमी चाल, उडती दीसै भंवरजी री पांमड़ी। कोयल वैरण, मधरी मधरी बोल, ज्यूं चित आवै भंवरजी नै गोरड़ी। —लो. गी.

उ०—२ कोयल अे कोयल वैरण, पिहु-पिहु बोल, हां अे वैरण, पिहु-पिहु बोल, चढती बाई नै ये सबद सुणाइयौ। —लो. गी.

उ०—३ लाभ लेइजै लोयणां, सजन राखै सखरी। उलसै देखण न दीयौ, वैरण लाज बुरी। —पनां

उ०—४ ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रही रस लाइ। चिहूं पहुर चटकउ कियउ, वैरणि गई विहाइ। —ढो. मा.

उ०—५ नारी वैरणि पुरुख की, पुरखा वैरी नारि। अतकाळ दोनौं मुयें दादू देखि विचारि। —दादूबांणी

उ०—६ विहि अह्यारी वैरणी, पेला भवनी होय। सज्जल-सिउं सुख मांणीइ, निलवटि निलख्या जोय। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—वैरिण, वेरिणि, वैरिणी।

वैरणौ, वैरबौ—देखो 'वैरणौ, वैरबौ' (रू. भे.)

उ०—आपरौ पौरस सीह वाजणां रौ नहीं—हाथळ (भुजा रा) जोर सूं हाथीयां नैं भांजैं अरथात जिकां री तरवार सूं हाथियां रा भसुंड (सीस) वैरीजै वे भड़ सिंघ वाजैं। —वी. स. टी.

वेरणहार, हारौ (हारी), वेरणियौ—वि० ।
वेरिग्रोड़ौ, वेरियोड़ौ, वेरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेरीजणौ, वेरीजबौ—कर्म वा० ।

वेरत-सं. पु. [सं.] एक प्राचीन जाति । (पुराण)

वेरता—देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—१ नहीं हिंदू सूं वेरता, नहीं मुसलमांन मूं प्रीति । सब कुछ करि सब तैं अगम, या साहिब की रीति । —ह. पु. वां.

उ०—२ ना कांहूं सूं वेरता, मोहन बांधै साध । जन हरिदास आठौं पहर, भजिए रांम अगाध । —ह. पु. वां.

उ०—३ तांमस गुण रस वेरता, राजस रस अभिमांन । स्वातिग रस गुण लुड़खड़ी, तहां जीव तोड़ै तांन । —ह. पु. वां.

वेरदेय-स. पु. [सं.] वैदिक काल का एक असुर ।

वेरभाव-सं. पु.—मनमुटाव, बिरोधाभाव, शत्रुता, वेमनस्यता ।
रू. भे.—बैरभाव ।

वेरभावना-सं. स्त्री.—मनमुटाव, विरोधभाव, वैमनस्यता, शत्रुता ।
रू. भे.—बैरभावना ।

वेरवाढ—सं. पु.—विरोध, शत्रुता ।

उ०—ताहरां कह्यौ—मांहरै घोड़ौ सखरौ कोई हुतौ नहीं, तिकण पगा मांग लियौ छै । तै आगै ऊमरकोट सोढां रै वडा-वडा घोड़ा छै । तै भाभैजी कनां मांग लियौ छै । ताहरां कह्यौ—इतरै ऊंटै सिलह क्युं छै ? ताहरां कहियौ—म्हांरै वेरवाढ छै । राजा छां, साथै सिलह चाहीजै हीज ; —नैणसी

वेर वैत्रासुर-सं. पु. [सं. वृत्रासुर वैरी] वृत्रासुर राक्षस का दुश्मन, देवराज इन्द्र । (ना. डि. को)

वेरस-वि०—बिना रस का, नीरस, सारहीन ।

वेरसुध-सं. स्त्री.—बदला, प्रतिकार ।
रू. भे.—बैरसुध ।

वेरहर, वेरहरण, वेरहरि-सं. पु.—शत्रु का वंशज, शत्रु ।
(अ. मा., ह. नां., मा.)

उ०—१ सरणाई चरण वखांणौं, सरणौ, मन जोगी जेहा अमर । 'रांमा' वदन वखांणौं रांमा, हात वखांणौं वेरहर । —पदमां सांदू

उ०—२ दोढ़ बरस लग रहिया दोळा, रोळा कर कर थाका रहै । चकर अदीठ 'विजै' चक्रवत रा, वेरहरां ऊपरा वहै ।
—ऊमेदसिंह सांदू

उ०—३ सिर संपत संग्रहै निहसै नित प्रत, करिमर नीप सहीयै करि । रैवंत पूठि वसै जइ रणमल, वास म गिण तई वेरहरि ।
—राव रिडमल रौ गीत

वि०—शत्रुता मिटाने वाला, दुश्मनी खतम करने वाला ।

रू. भे.—बेरहर, बैरहर, बैरहरण, बेरीहर, वेरहर, वैरहरि, वैरीहर ।

वेरागर—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

वेरांण, वेरांन—१ देखो वीरांण' (रू. भे.)
२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—१ अरु जिणां दिनां मैं सांखलो नापौ चीतोड़ सूं जांगळ आयौ, सूं औ पण जोधपुर हाजर है । पीछै इण वीकैजी नूं कयौ कै जगांळू रौ पड़गनौ वेरांन हुय रयौ है, सू थे हालौ तौ ठिकांणौ बांधां । —द. दा.

उ०—२ औ भरथनेर, भरथजी दसरथजी रै बेटा वसायौ कदीम छै । नै कई वार वेरांन हुवौ अरु कई वार आबाद हुवौ । पण हजार वरस री वात है । जोइयाँ इणनूं आबाद कियौ । पण आपस रै असरचै मैं वळै वेरांन कियौ । —द. दा.

वेरांम-सं. स्त्री. [सं. वैराम] एक प्राचीन जाति ।

वेराई—देखो 'बेराई' (रू. भे.)

उ०—१ कसि वांक वाळां काढि, वेराईयां सिर वाढि । हैकंप भौ महलार, त्यां दीध द्रव्य तोखार । —रा. रू.

उ०—२ वाहरुवां हुए न को वेराई, घण वहस केकांणां धुआ । पोह फुटंत सभी दे परभूय, 'सलख' लिया ताय सलख हुआ ।
—राव सलखा रौ गीत

वेराक-सं. पु —एक प्रकार का बढ़िया शराब जो चौथी बार निकाला हुआ तथा तेज होता है ।

उ०—१ तठा उपरांति करिन राजांन सिलांमति दारू रौ पांणीगौ मंडिग्रौ छै । सौ किण भांति रौ दारू । उलटै रौ पलटै, पलटै रौ ग्रैराक, ग्रैराक रौ वैराक, वेराक रौ संदली, संदली रौ कदली, कंदली रौ कहर, कहर रौ जहर, जहर रौ कटाव, कटाव रौ नेस, नेस रौ जेस, जेस रौ मोद, मोद रौ कमोद. कमोद, रौ हूल ।
—रा. सा सं.

उ०—२ तठा उपरायंत दारू रा घड़ा मगायजै छै । सू दारू किण भांत रौ छै ? ग्रैराक रौ वेराक संदली रौ क़ंदली फूल रौ अतर बाती बभै धुंवांधोर तिवारा रौ काढ़ियौ, बोदी वाड़ मैं नाखियां जग उठै । बाप रौ पियौ बेटौ छिकै, असवार रौ पियौ प्यादौ छिकै । राजा पीवै परजा छिकै । —रा, सा. सं.

वेराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—पछै थोड़ा दिनां पछै नाथजी दुवारै मैं खेतसीजी स्वांमी घणां वेराग सूं घणां महोच्छव सूं रंगूजी नै खेतसीजी स्वांमी एक दिन दिक्षा लीधी । जिन मारग रौ उद्योत घणौ थयौ । —भि. द्र.

उ०—२ ठाकुर जी रौ औ परसाद नी दंणौ संतां रै हाथ हौ । वौ मिंदर रा ठाकुरजी नै छोड सीधौ संतां रै जाय पगां पड़ियौ ।

कहयौ-बापजी, म्हनैं तौं वेराग सूझियौ। म्हारी मुगती अबै आप रै हाथ है। म्हारै हीयै अणचींत्यौ वेराग रौ गोटौ ऊठियौ-अबै आपरै सरणौ हूं। —फुलवाड़ी

उ०—३ विरह न को वैराग सा, रव सा नां कोई रंग। हरख न सा हासा नहीं, सत सा नां कोई संग। —अनुभववांणी

वेरागढ—देखो 'वेरागर'।

उ०—सिरदार वनाजी, हीरा थें लाईज्यौ हे वेरागढ देस रा, उमराव वनाजी, मोती थें लाईज्यौ हे समंदर पार रा, सिरदार वनाजी, सेवरियै झबूकै श्रो श्राभा वीजळी। —लो. गी.

वेरागण-सं. स्त्री.—१ बैरागी स्त्री।

उ०—१ अपणा गिरधर कारणै, मीरां वेरागण हो गई रे। —मीरां

उ०—२ दोउ कुळ छोड भई वेरागण, हरि सौं टेर दई रे। —मीरां

उ०—३ राजा सवाई जैसिंघजी बेरागणियां नुं परगणाय मथुरा मैं; व्रंदावन मैं वेरागपुरी वसायौ। —वां. दा. ख्यात

२ वैरागी की स्त्री या कन्या।

३ संन्यासियों का एक प्रकार का छोटा काष्ट का उपकरण विशेष, जो तपस्या या भजन करते समय रात्रि में वक्षस्थल के अग्र भाग तथा बाहुमूल में सहारे के रूप में लगाजा जाता है।

रू. भे.—बैरागण, वेरागण।

वेरागणौ, वेरागबौ-क्रि० अ० १ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं से विरक्त होना।

२ संन्यास लेना।

३ ईश्वर भजन में लीन होना, ईश्वर के प्रति आसक्त होना।

४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटना।

क्रि. स.—५ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं से मन हटाना।

६ त्यागना। ७ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटाना।

वेरागणहार, हारौ (हारी), बेरागणियौ—वि०।

बेरागिप्रोड़ो, वेरागियोड़ौ, वेरागयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वरागीजणौ, वेरागीजबौ—भाव वा० कर्म वा०।

वेरागर-वि०—१ बहुत गहरा।

२ खाली, रिक्त।

सं. पु—१ खाली भूमि।

२ गहरा कूआ।

३ हीरों की खान।

उ०—हीरा वेरागर हुवै, सीप समंदरां थाय। नग लाखीणा नीपजै, 'माल' तणी घर मांय। वी. मा.

४ एक पर्वत का नाम जहां हीरों की खान है।

५ एक देश का नाम।

उ०—ककरा दांमण सघण काछ पंचाळ निरंतर, सेतबंध रांमेस लागी नव दीपां सायर। झाड़खंड मेवाड़ खंड गुज्जर वेरागर, वागड़ महियड़ सहित खेड़ पावट पारक्कर। —नैणसी

६ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

७ एक प्रकार का रत्न विशेष।

उ०—१ बाघ घरे ओपत वेरागर, ताम्र गळियौ न घाय तन। दूवै 'रतन' भांज घड़ दीठौ, रण अहरण भूरौ रतन। —राव सत्रुसाल हाडा रौ गीत

उ०—२ वर सफर वागली, सार चक्र समसेरां। बांधी गांठ बंदूक, डक बंक हक डेरां। खेह घूंणी खेरवै, वंक तूं ज वेरागर। अग वभूत भूरी जटा, जरद कंथा जोगेसर। सुरजनदास पूनियौ

८ हीरा नामक रत्न विशेष।

उ०—रथ मातंग तुरंग अंग प्रति अंग सिगारै, जगमगाति नव जोति साजि मांणंक सुधारै। सोभि जांन सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर भोमि वेरागर भ्राजै। —रा. रू.

रू. भे.—वइरागर, बयरागर, बेरागर, बैरागर, वइरागर, वइरागरि, वयरागर, वयरागरि, वेरागर, वैरांगर, वैरागिर, वैरागिरि।

वेरागि—देखो वेरागी' (रू. भे.)

वेरागियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं से विरक्त हुवा हुआ। २ संन्यास लिया हुआ। ३ ईश्वर भजन में लीन हुवा हुआ, ईश्वर के प्रति आसक्त हुवा हुआ। ४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटा हुआ। ५ सांसारिक क्रियाओं व वस्तुओं पर से मन हटाया हुआ। ६ त्यागा हुआ। ७ किसी कार्य या वस्तु का त्यागा हुआ। (स्त्री. वेरागियोड़ी)

वेरागियौ—१ देखो 'वेरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ एक सगपण प्रीतम तणौ, बेलैं बीजौ व्रत धार रे। तीजौ तपसी वेरागियौ, रांणी करुणा न करि लिगार रे। —जयवांणी

उ०—२ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया क्रस्ण नरेस। गज सुकुमार वेरागियौ, लागी धरम नी रेस। —जयववांणी

२ देखो 'वेराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

वेरागिर, वेरागिरि—१ देखो 'वेरागर' (रू. भे.)

वेरागी-सं पु. [सं.] (स्त्री. वेरागण) १ व्यक्ति, जिसके मन मे विराग उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, वेराग्यवान्।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता; सो जन है वेरागी। कहै सुखरांम सुणो भाई साधो, और सबी है रागी। —स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ बालपणे भारमलजी स्वांमी नें आखी उत्तराध्ययन उभा-उभा चितारणी इसी आग्या स्वांमीजी दीधी। जद भारमलजी स्वांमी बोल्या—स्वांमीनाथ कदाचित नींद में हेठो पड़ जाउं तो। जद स्वांमीजी पाछो फरमायो पूंजनैं खूणें उभा रहो। इण रीतें आखी उत्तराध्ययन री सभाय अनेक बार कीधी। इसा वैरागी पुरुख। —भि. द्र.

२ संन्यासी, साधु।

उ०—१ सतगुरु सब्द हिरदै धर लीया, अखंड प्रेम रस पीया। हरिरांम वैरागी बोलै, सदा अमर जुग जीया।
—स्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—२ अपनी मौज चलै अरु बैठै. आस्रमं वरण उलांगी। एका एकी विचरै ऐसै, जग वन सिव वैरागी।
—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ वैरागी वन मैं वसै, घरबारी घर मांहि। रांम निराळा रह गया, दादू इनमें नांहि। —दादूबाणी

उ०—४ रसी उसीर पंख ठहरांणें उठै प्रणांम करै रिख आंणे। आतम ग्यांन समुद्र अथागी, रमता परमहंस वैरागी।
—सू. प्र.

३ त्यागी पुरुष।

उ०—१ वैरागी विरकत भलो, जुग सु न्यारा मन। हरिया गिरही सो भलो, सब सुं दासा तन। —अनुभववांणी

उ०—२ इतलै स्वांमीजी गोचरी करनै पाछा पधारया। जद·········ए कह्या—भीखणजी! थें वैरागी वाजो नें इण मोहला मैं नुखतो थयो तिण रा घर सूं पकवांन लाया! ति वारै भीखणजी स्वांमी बोल्या—इण रो दोख कांइ? जद·········ए कह्यो थें वैरागी वाजो नें इसा कांम करो। —भि. द्र.

उ०—३ अब (तो) हरि नांम लो लागी। सब जग को यह माखन चोरयो, नांम धरयो वैरागी। कित छोडी वह मोहन मुरळी, कित छोडी सब टोपी। मुंड मुंडाइ डोरी कटि बांधी, माथै मोहन टोपी।
—मीरां

४ उदासीन वैष्णव सम्प्रदाय।

वि० वि०—यह विरक्त साधुओं की तरह का एक सम्प्रदाय है। इनके व संन्यासियों के मत में अन्तर है। विष्णु को अपना इष्ट मानते हैं तथा विष्णुअवतार राम, कृष्णादि को पूजते हैं अतः वैष्णव कहलाये। ये लहसन, प्याज, सलगम, गाजरादि नहीं खाते तथा गांजा, चरस, शराब आदि नहीं पीते। ग्यारस, जन्माष्टमी, नृसिंहावतार आदि के दिन व्रत रखते हैं व उत्सव मनाते हैं। गीता, रामायण, महाभारत आदि इनकी धर्मपुस्तकें हैं। इनमें चार सम्प्रदाय हैं जिनमें भाव भक्ति के नियम अलग अलग हैं।

१ रामानुज सम्प्रदाय—जिसे श्री सम्प्रदाय भी कहते हैं तथा रामानुजाचार्य ने चलाया था। इस सम्प्रदाय का उन्होंने सेवड़ों को शास्त्रार्थ में जीत कर चलाया था। इनकी पाटगादी मद्रास में गादीधर, आचार्य, कहलाते हैं। ये शादी नहीं करते। गादी पर विद्वान ब्राह्मण ही बैठता है जो इनका पाटवी चेला होता है। इन के चेलों के दोनों भुजाओं पर यज्ञ, पूजादि के बाद चांदी की तप्त-मुद्रा से शंख, चक्र, गदा पद्म आदि के चिन्ह लगाये जाते हैं। बालकों के केसर की छाप लगाते हैं जिसे शीतलमुद्रा कहते हैं। ये तुलसी की माला पहनते हैं व शिर पर सफेद मिट्टी का अर्द्धपुंड (तिलक) लगाते हैं। इनके मन्दिरों में शेषशाई, बेनीगोपाल व जुगल मूर्ति राधाकृष्ण व सीताराम आदि की रहती है। ये आरती के वक्त तांबे का शंख बजाते हैं एव असली शख को हाड का मानते हैं।

२ विष्णुस्वमी द्वारा चलाया हुआ शिव सम्प्रदाय जिसे रौद्र सम्प्रदाय वा विष्णु स्वामी सम्प्रदाय भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय का सिद्धांत है कि शुद्धाद्वैत ईश्वर कृष्ण रूप ऐक ही है। ये भी तुलसी की माला पहनते हैं तथा अर्द्धपुंड तिलक लगाते हैं।

३ ब्रह्म सम्प्रदाय, जिसे माध्व, गौड़ व महाप्रभु सम्प्रदाय भी कहते हैं। इसे ब्रह्माजी ने चलाया था व माध्वाचार्य ने प्रसिद्ध किया था। ये कृष्ण को इष्टरूप में मानते हैं। मन्दिरों में जुगल मूर्ति राधाकृष्ण की होती हैं। ये विष्णु कहलाते हैं तथा हथियार भी बाधते हैं।

४ सनकादिक सम्प्रदाय या निम्मार्क सम्प्रदाय जिसे सनकादिक ने चलाया था तथा अरुणऋषि के पुत्र निम्मार्क स्वामी ने फैलाया था। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त द्वैताद्वैत है अर्थात ईश्वर माया से अलग नहीं है। कृष्ण ही इनका इष्ट है। राधाकृष्ण की जुगल मूर्ति की पूजा व उपासना करते हैं। ये निहंग व गृहस्थी भी हो सकते हैं।

रू. भे.—बइरागी, बयरागी, बिरागी, बेरागी, बैरागी, वइरागी, वयरागी, विरागी, वेरागी, वैरागी।

अल्पा;—वयरागियो, वेरागियो, वैरागियो, वैरागीयो।

वैरागीयो—१ देखो 'वैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—अप हुवो वैरागीयो रे, जीता विसय कखाय, खटको जेहना रे मन थी टल्यो रे। सेठ सहित संयम लीयो रे, सद्गुरु पासै जाय। —वि. कु.

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

वैराग्य-सं. पु. [सं.] १ संसार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होने की मन की एक प्रवृति विशेष, जिससे लोग सांसारिक झंझट छोड़ कर एकांत में रहते हुए ईश्वर-भजन करते हैं।

२ असन्तोष, अप्रसन्नता ।
३ घृणा, ग्लानि, अरुचि ।
५ किसी के प्रति राग-भाव न होने की अवस्था या भाव ।

उ०—संसार असार, दुखनु भंडार, जिसिउं पीपल नूं पांन, जिस्यु गजेंद्र नु कांन, जिस्यु वीज नु झबुकु, पोइणिनिइ पांणी तणउ टवकु, जिस्यु बहुबोलनी जीभ नु लोलु, जिस्यु काग नु डोलौ, जिस्यु धज नु अंचल, तिसिउ संसार चंचल, वैराग्य । —व. स.

रू. भे.—वइराग, वयराग, विराग वेराग, वेराग, वैराग्य, वइराग, वयराग, विराग, विरागीय, विरागौ, वेराग, वेराग्य, वैराग ।

अल्पा;—वयरागियौ, वेरागियौ, वैरागियौ, वैरागीयौ ।

वैराड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

रू. भे.—वइराड़ी, वयराड़ी ।

वैराज-सं. पु. [सं.] १ विरजस् नामक प्रजापति के सात पुत्रों में से एक जो पितर कहे जाते हैं ।
२ देखो 'वेराज' (रू. भे.)

वैराजी—देखो वेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ वूंदी मैं सवाईरांम ग्रोसवाल चरचा करतां भिक्खु कह्यौ—गाय भेंस रा मूंहडा आगे घणौ चारो नांख्यां ओगालौ करै । जब तेह कहै—मोनें ढांढों कह्यौ—वैराजी थयौ । तब स्वांमीजी कह्यौ—थें ढांढ़ा थया म्हारो ग्यांन चारो थाय । इम कह्यां राजी थयौ । —भि. द्र.

उ०—२ देसूरी नौं नाथ साधु स्त्री बेटी मां छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकृति करड़ी, आछी तरह आगया मैं चालै नही । तीन वरस आसरै टोला मैं रह्यौ । पछै टोला बारै निकल गयौ । कनै हुंता त्यां साधां स्वांमीजी नै आय कह्यौ—नाथौ छूट गयौ । जद स्वांमी जी कह्यौ—किणहिरै गूंबड़ो दुखतौ घणो नें पछै फूट गयौ तौ ऊ राजी हुवै के वैराजी ? —भि. द्र.

उ०—३ जद तै राजी होय बोल्या—म्हारै काल कौ गराक आयौ । रुपियौ हाथ मैं लेई देखै तौ खोटौ । माहैं तांबौ नें ऊपर रूपौ । अलगौ न्हाखनें बोल्यौ—प्रभातै खोटा नांणा रौ दरसन हुग्रो । जद ऊ बोल्यौ—साहजी वैराजी क्यूं हुग्रा । परसूं तौ म्हैं पइसौ आंण्यो सौ तांबौ नांणौ बांधो । —भि. द्र.

वैराजीपण, वैराजीपणौ, वैराजीपौ—देखो 'वेराजीपौ' ।

वैराट-सं. पु. [सं. वैराटः] १ इन्द्रगोपक कीट, वीर-बहूटी ।
२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था ।
३ राजा विराट का उत्तर नामक पुत्र ।
वि० १ विराट का, विराट सम्बन्धी ।
२ लम्बा-चौड़ा, विस्तृत, फैला हुआ, बड़ा ।

उ०—घटयंदा वैराट घाट, केता निरवहा । —केसौदास गाडण

३ आकार की दृष्टि से महान्, बड़ा, विशाल ।

उ०—१ ब्रह्म नमौ छब ब्रह्म, ब्रह्म कहिजै ब्रह्मचारी । ब्रह्म नान्हौ वैराट, क्रम अक्रम कूड़ा री । —पी. ग्र.

उ०—२ करतार मेह करंति, ब्रम चिहूं रसा वरसंति । परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार । —पी. ग्रं.

उ०—३ दास तन भजन बिन सो सबी दासरथ, थिरू बस कोड़ वातै न थावै । देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अगु मन सेवगां सुगम आवै । —र. ज. प्र.

उ०—४ पयंपै पुरण आदि पुरुख, उपनै ब्रह्मा ईस अलख । थया तिण रूप सरूप सुघट्ट बर्टै घटघाट वैराट सुघट्ट । —रा. वंसावली

४ भयंकर, भयावह ।

उ०—१ अड़डाट नाद वैराट अज, घट्ट जांणि दूजौ घड़ै । वरनाळ झाळ गोळां वहनि, प्रळैकाळ छोळां पड़ै । —सू. प्र.

उ०—२ इतरै मलंग गैबी मरद उठीयौ, उठि नै हाक मारै छै । तिकै रै पकी बारह मांण लोह री सांकळ पग मांहै नवगजो जोधौ, वडौ माथौ । सिर ऊपर घणी बाबरी छै, ऊपर उधौ तबलौ । सवा मण रौ कुतकौ हाथ मांहै छै । वडौ भुजाडंड । वैराट रूप धारियां थकां निरवांणी योगिंद्र हुवौ तिसड़ौ । कनै कपड़ौ नहीं, दिगंबर आडंबर धारियां थकां । —तिमरलिंग पातसाह री वात

६ देखो 'विराट' (रू. भे.) (सभा)

उ०—१ धर्णी ग्राह नां मारिवा भलौ धायौ, हरि तूझ अवतार वेदै हुलायौ । निमौ वांमणा रांम वैराट ब्रह्म, अधिक रींजियौ इदि ऊपरि अग्रंमं । —पी. ग्रं.

उ०—२ देस सहु मैं दीपतौ रे, वारू देस वैराट । सहू कौ लोक सुखी सदा रे, वरतै निज कुल वाट । —ध. व. ग्रं.

उ०—३ मगध कोसल अंग वग कलिंग कासी कुरु देस, सोरठ कछ विदेह जांगल कुसावरत कहेस । भंग सोबीर वैराट मलय साडिल सूरसेन, वरण पचाल दसारण कुंणाल देस मैं चैन । —वृस्त.

७ देखो 'ब्रह्मरध्र' ।

उ०—१ चख सूरिज नै चंद्रमा, घणनामी घट घाट । पिंडी मोटौ मोटौ प्रभु, वप छोटौ वैराट । —पी. ग्रं.

उ०—२ लगी चोट सत सबद की, खूल्हा ब्रह्म कपाट । मेवासा सब जीत्त कै, वस्या नगर वैराट । —अनुभववांणी

उ०—३ वाटि विगट वैराट की, पुंहचेगा कोई सूर । हरीया कायर थकि रह्या, दरगाह रहीया दूर । —अनुभववांणी

रू. भे.—बराट, बिराट, बेराट, बैराट, वइराट, वयराट, विराड, वेराट ।

वैराटरूप-सं. पु. [सं.] परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप ।

वैराणौ, वैराबौ—देखो वैराणौ, वैराबौ' (रू. भे.)

वैराणहार, हारौ (हारी) वैराणियौ—वि० ।
वैरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वैराईजणौ, वैराईजबौ—कर्म वा० ।

वैरात—देखो 'बरात' (रू. भे.)
उ०—दिली वैरात छातपत दौळा, 'दूदौ' वर राजा दिग्वण । सवगण हरी वरै साहिजादी, रायजादौ पोढ़िणौ रिण ।
—दूदा नगराजौत री गीत

वैराय वैरायत—सं. पु. [सं वैर+आयत] शत्रु, दुश्मन, वैरी ।
उ०—१ बह रांणा राव विवाद विवरजित, 'जोध' कळह कथ जिका जुइ । वैरायतां तौ वाळी भगवट, हव जांणी कुळवाट हुइ ।
—महम्मदजी बारहठ

उ०—२ तिण समै जाय जैतसीजी राजा नैं वकारियौ । कह्यौ, राजा सूराचंद. थांह सूं मूंडा राजा री वैर मांगू. तौ मैं रजपूती होय तिका करि । तारां सूराचद रा राजा सूं तौ काई हुवौ नहीं । राधौदै आघा बघतौ थकौ सेल री राजा रै घमोडी । तिका पैलै पार नीकळी । तरै मोड दीठौ, दीखै तौ वैरायत ।
—जैतसी उदावत री बात

रू. भे.—वैरायत, वैरावत ।

वैरायोडौ—देखो 'वैरायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वैरायोड़ी)

वैरावत—सं. पु.—१ राठौडों की एक उपशाखा ।
२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो 'वैरायत' (रू. भे.)

वैरि—देखो 'वैरी' (रू. भे.)

वैरिण, वैरिणि, वैरिणी—देखो 'वैरण' (रू. भे.)
उ०—दादू माया वैरिणि जीव की, जनि कौ लावै प्रीति । माया देखै नरक कर. यहु संतन की रीति । —दादूबांणी

वैरिय—देखो 'वैरी' (अल्पा., रू. भे.)

वैरियोड़ौ—देखो 'वैरियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वैरियोड़ी)

वैरी—सं. पु. [सं. वैरिन्] (स्त्री. वैरण, वैरणि, वैरणी, वैरिण, वैरिणि वैरिणी) दुश्मन, शत्रु । (ह. नां. मा.)
उ०—१ संसार मैं सगळा दुख चोखा पण पेट री दाझ खोटी । भगवान् सात भव रा वैरी दुस्मण नैं ई पेट री दाझ मत दीजै ।
—अमरचूंनड़ी

उ०—२ गंगेव खोची काग भड़ां किवाड़, वैरियां जड़ां उपाड़ । जिण की सेल कहूं वणाय; सुणियां मन प्रसन्न थाय वरखा रितु लागी, विरहणी जागी । आभा झरहरै; वीजां आवास करै ।
—रा. सा. सं.

उ०—३ सीहां रा वैरी सकौ, सीह न कोय सहाय । जेज करै नह जूंझता, जग तैं विमुहौ होय । —बां. दा.

रू. भे.—वअरि, वअरी, वइअरि, वइअरी, वइयरि; वइयरी, वइरि, वइरी, वईअरि, वईअरी, वईयरि, वईयरी, वईरि, वईरी, वयरि, वयरी, वाइरि, बाइरी, बायरि, बायरी, वेरि, वेरी, वैरि, वैरी; वइअरि, वइअरी, वइयरि, वइयरी, वइरि, वइरी. वईअरि, वईअरी, वयरि, वयरी, वाइरि, वाइरी, विरी, वेरि, वेरी, वैरि, वैरिय ।

अल्पा;—वैरीडौ, वैरीडौ ।

वैरीडौ—देखो 'वैरी' (अल्पा , रू. भे.)
उ०—१ कोई परवा नीं, लैणौ होसी तौ खैलेस्यां । पण वैर लेणौ घेरांला जद मूंछौ ऊंची करांला । लागै जितौ खरचौ ल्यौ, चाहीजै जिका आदमी मांगौ । कुवाडा-गंडासी राखौ अर वैरीडै नै चटकै' र नीचे आडा नाखौ; जद जी मैं जी आवै । —दसदोख

उ०—२ विसको पियालौ, अै गोरी धण, वैरीडां नैं प्याय, वारी धण वारी औ हुंजा थां नै पियालौ अै काचै दूध कौ, जी राज ।
—लो. गी.

वैरीवाडौ, वैरीवाणौ—सं. पु. [सं. वैरी+पाटकः) शत्रुओं का मौहल्ला, देश या निवास स्थान ।
उ०—१ घर घोडी पिय अचपळौ, वैरीवाड़ै वास । नित रा वाजै ढोल्डा, कद चुडलै री आस । —अग्यात

उ०—२ वैरीवाड़ै वासडौ, सदा खणंकै खाग । हेली कै दिन पाहुंणौ, चूडौ भाग सुहाग । —वी. स.

उ०—३ देख मैं वैरीवाड़ै वास कीयौ तौ फळ पायौ । पण भागणी, तैं सूरज रौ सौम खाधौ हुंतौ तौ परमेस्वर पर दाद नहीं पावै । नाहरां कह्यौ, "मैं थारी अगीलौ नहीं खाधौ है । जुठौ कलंक मत् मतां देई ।
—नाहरी हरणी धरमें कै बाबत सांवतसी री वात

उ०—४ आंगण वाई घर कळहं, वैरीवारै वास । नदी कराडै रूखडौ यद तद हुवै वणास ।
—नाहरी हरणी धरमें कै बाबत सांवतसी री वात

वैरीसाल—वि०— शत्रुओं के दिल में खटकने वाला ।

वैरीहर—देखो 'वैरहर' (रू. भे) (डिं. को.)
उ०—'पाल' रौ काळ वैरीहरां पाडतौ, विभड़ ओभाड़तौ सेल वेकै । पठांणां होक झोकां देयंतौ पाधरै; ठोक जाडां गयौ मूळ ठेकै । —जोधा सिसोदिया रौ गीत

वैरोचन—सं. पु. [सं.] १ विरोचनसुत बलि जो दैत्य था एवं प्रह्लाद का पौत्र तथा पाताल का अधिपति था ।

२ सूर्य के एक पुत्र का नाम।

३ अग्नि के एक पुत्र का नाम।

४ देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—१ प्रथम राजा आदि, पुत्र भरत, पुत्र सूरचजिसा, पुत्र ईख्वाक। अठै ईखाग वंस थाप्यौ। इखाग पुत्र समुद्र, पुत्र चंद्रमा, पुत्र बुध, पुत्र पुनर्देत्य, पुत्र विद्याधर, पुत्र मुचकुंद, पुत्र हिरणाकुस, पुत्र पहिलाद, पुत्र वैरोचन, पुत्र बळिराजा, तिको चकवै हुवौ।
—रा. वंसावळी

उ०—२ वैरोचन तन वहरियौ, विप्र छुडाये बाळ। तिण पुन्यथी पुत्र पामियौ, वलिराजा विरदाळ। —रा. वंसावळी

उ०—३ भली हुई जे नहीं दळी वैरोचन रै सत्थ। मो देवतां मडियौ, हरि बळि आगळि हत्थ। —रा. वंसावळी

रू. भे.—वैरोचन।

वैराचनि, वैरोचनी-सं. स्त्री. [सं.] विरोचनसुता एवं त्वष्टपत्नी यशोधरा का नाम।

वैरोचि, वैरोची-सं. पु. [सं. वैरोचि] पातालनरेश बलि का ज्येष्ट पुत्र बाण नाम असुर जो अनिरुद्ध की पत्नी ऊषा का पिता था तथा शिव के वरदान से देवताओं पर शासन करता था।

वैरोट—देखो 'विराट' (रू. भे.)

उ०—मलय सिंगल कोसल नइ अंध्य, श्री परवत द्राविड नइ वंध्य। वैरोट ताथी लाजी धार, स्त्रीवेदरभ पाटल अनि सार।
—नळदवदंतीरास

वैरौ—१ देखो 'वेरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेरी' (रू. भे.)

उ०—वैरै बंस न भरकिये मन मैं रहौ सधीर। हरीया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर। —अनुभववांणी

३ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—व्हाला नइ वइरी बिचइ, नवि करवउ वैरौ। पत ना अवगुण देखि नइ, नवि करवउ वेरौ। —स. कु.

वै'रौ—देखो 'वहरौ' (रू. भे.)

वैल—१ देखो 'वैल' (रू. भे.)

२ देखो 'बोहळियौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—अरु वैन अेक रिड़मल री तिकी पाटण तंवरा नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इण नूं खंडेलै लाया। पीछै रावजी खंडेलौ लूटियौ। तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अरु रावजी सीवी-कंजी आपरी ठकुरांणी करी। नै वैल वैसांणी। —द. दा.

वैलड़ली, वैलड़ी,—१ देखो 'वेल' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बहल' (अल्पा., रू. भे.)

वैलण—१ देखो 'वेलण' (रू. भे.)

२ देखो 'वेलण' (रू. भे.)

वैळणौ, वैळबौ—१ देखो 'वेलणौ, वेलबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वैलणौ, वैलबौ' (रू. भे.)

उ०—अेक दिन वंसी नै बराबर बुखार वगियो रयौ। रात नै बुखार १०४ डिगरी हुयग्यौ, जकै रै जोर सूं वेळण लाग्यौ। रै-रै'र कंवतौ मा गोमती! तूं कठै है? हाय! म्हारै जीतां-जी तनैं दूसरै री द्वारौ देखणौ पड़ियौ। —वरसगांठ

३ देखो 'वेलणौ, वेलबौ' (रू. भे.)

वैळणहार, हारौ (हारी), वैळणियौ—वि०।

वैळिओड़ौ, वैळियोड़ौ, वैळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैळीजणौ, वैळीजबौ—भाव वा०

वैलणौ, वैलबौ—१ देखो वेलणौ, वेलबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वैलणौ वैलबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वेलणौ, वेलबौ' (रू. भे.)

वैलणहार, हारौ (हारी), वैलणियौ—वि०।

वैलिओड़ौ, वैलियोड़ौ, वैल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वैलीजणौ, वैलीजबौ—कर्म वा०।

वैलवांन-सं. पु.—रथ को हांकने वाला व्यक्ति, सारथी।

उ०—भोजास गांव अरु जात गोदारौ, सेवौ नाम जभ कौ प्यारौ। रथ कौ बैलवांन वड भारौ, थापन कीनेऊ ताहि विचारौ।
—मेहोजी गोदारौ थापन

वैळा, वैला—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

२ देखो 'वेला' (रू. भे.)

वैळियोड़ौ, वैलियोड़ौ—१ देखो 'वेलियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वैलियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैळियोड़ी, वैलियोड़ी)

वैली—क्रि. वि.—१ उस ओर, उस तरफ।

उ०—दादू सेख मुसायख औलिया, पैगंबर सब पीर। दरसन सौं परसन नहीं, अजहूं बैली तीर। —दादूवांणी

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

३ देखो 'बेली' (रू. भे.)

वैलै—देखो 'वेलै' (रू. भे.)

उ०—सुरह गाय री ग्रीवा इण गाय सूं लांबी हुवै। वैलै ही लांबी छै सुरह गाय इण गाय सूं। १३ लाख चमर प्रमुख देसां सूं हिंद मैं आवै है। —बां. दा. ख्यात

बैळौ, बैलौ—देखो 'बेलौ' (रू. भे.)
बैल्यौ—देखो 'बैल' (अल्पा., रू. भे.)
बैल्व-सं. पु. [सं.] बिल्व नामक बेल का पत्ता या फल।
बैव—देखो 'बैव' (रू. भे.)
बैवणी—देखो 'बेवणी' (रू. भे.)
बैवणो—देखो 'बहणौ' (रू. भे.)
बैवणौ, बैवबौ—१ देखो 'बहणौ, बहबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बेवणौ, बेवबौ' (रू. भे.)
बैवणहार, हारौ (हारी), बैवणियौ—वि०।
बैविग्रोड़ौ, बैवियोड़ौ, बैव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बैवीजणौ, बैवीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।
बैवतन—देखो 'बेवतन' (रू भे.)
उ०—तिकौ भाई राजा नुं इम कहै, "पठांण दुसमण नेड़ा राखजै नहीं।" राजा रै मोहल मांहै सुंदरांणी दहड़ तिका पदमणी कहै, "राजा, दुसमण नेड़ा राखीयां तिकां घकौ खाधौ। फौजां कर साथ भेळौ कर पाहड़ मांहा सौ ईहा नूं खेद काढौ, बैवतन करौ।
—राजा नरसिंघ री वात
बैवस—१ देखो 'बैवस्वत' (रू. भे.)
२ देखो 'विवस' (रू. भे.)
बैवसरणमनु-सं. पु. [सं] ब्रह्मा के चौदह मनुग्रों में से एक, बैववस्त।
बैवस्त, बैवस्वत-सं. पु. [सं.] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम।
२ एक रुद्र का नाम।
३ शनिचर जी महाराज।
४ ब्रह्मा के चौदह पुत्रों (मनु) मे से एक, जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं।
५ एक प्रकार का तीर्थ विशेष जिसमें स्नान करने वाला स्वयं तीर्थरूप हो जाता है।
६ वर्तमान मन्वन्तर का नाम। (पुराण)
७ यम, धर्मराज।
रू. भे.—बैवस, बइवस्त, वइवस्तु, बैवस।
बैवस्वती-सं. स्त्री.—यमुना नदी का नाम।
बैवार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—रमेश बोलियौ—हूं ई चोर हूं जकौ बीजै री जमांनत घताऊं? थै आज ई काम पड़ियो' र आज ई भूलग्या। बांणियां री कांई प्रीत! सेठ कयौ इयैं मैं चिगण री तौ वात ई कोयनी, आ तौ बैवार री वात है। खैर, अबार तौ सिधावौ, काल सोच' र कंवाय देसूं।
—वरसगांठ
२ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
बैवारिक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)
बैवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे.)
बैवियोड़ौ—१ देखो 'बहियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बेवियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बैवियोड़ी)
बैसंदर—देखो 'बैस्वानर' (रू. भे.)
उ०—१ बैसंदर लकड़ पाखांण, जिम लोह लुकाया।
—केसोदास गाडण
उ०—२ साखि दियै स्रीरांम, कुंवर तौ अजूं कंवारौ। कथ सुंणो एक कांनि, वीर मंनि वात विचारौ। विखै रहां वनवासि, जांनकी झली झेल्यौ। बैसंदर रै पासि, घिरत रहै किम रेल्यौ।
—सुरजनदास पूनिग्रौ
उ०—३ उवां मांहि मिळै 'जैसाह' आय, बैसंदर जांणिक झोल वाय।
—सू प्र.
बैसंधि, बैसंधौ—देखो 'वयसंधि' (रू. भे.)
उ०—सु इह तौ न बाळक अवस्था माहै सूम्रै छै। नै यौवण आयै जागै छै। इहि विचि की संधि सु वयसंधि कहावै। जैसैं सुपिनौ। न सोवै न जागै छै। आगै पल पल चढतौ होसी। पिणि हिवै बैसंधि कौ इसौ प्रथम य्यांन ताकी इसी परिछै।　—वेलि टी.
बैसंनर—देखो 'बैस्वानर' (रू. भे.)　(ह. नां. मा.)
उ०—जळै सहर पुर जास, निसा ओजास निहारै। साह प्रळै संपेखि, सोच मद मोच संभारै। खंडीवन समरत्थ, पत्थ निज हत्थ जळायौ। कनां लंक विण संक, हणू बैसंनर लायौ।　—रा. रू.
बैसंपा, बैसंपायन-सं पु. [सं. वैशंपायन] १ वेदव्यास के एक शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि जो यजुर्वेद के प्रवर्तक थे तथा हरिवंश के प्रचारक थे। इन्होने जनमेजय को महाभारत सुनाया था।
उ०—बैसंपा एम ओचरै, जनमेजै स्रवणै धरै। विस्तरै बांणीइ गुण पांडव तणा रै। पांडव ना गुण विस्तारी नै सांभल तूं, भूपाल, जेनै पोता ना करी जांणै स्वांमी स्रीदीनदयाल।
—नळाख्यांन
२ एक ऋषि जो युधिष्ठिर के राजसूम यज्ञ में उपस्थित था।
३ शौनक ऋषि से तत्वज्ञान पर संवादकर्त्ता एक ऋषि।
रू. भे.—बैसमपायन।
बैस—१ देखो 'वेस' (रू. भे.)
२ देखो 'वेसर' (रू. भे.)
३ देखो 'वेस्या' (रू. भे.)
४ देखो 'वेस्य' (रू. भे.)
उ०—रस संचै माखी जुंही, कीड़ी ज्यूं कणरास। धरै भेस जिम जीरवै, बैस दूकानां बास।
—बां. दा.
५ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—१ चढती वैंस नेंरा अरिणयारै, तूं घरि घरि मत डोल। मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चेरि भई बिन मोल। —मीरां

उ०—२ दुहूं वाद मातो कहर साह वे देखवें, भार पड़ियौ कहर गजां भारां। वैंस कह, 'वीठळा', हालि घर दिसि वजां, सरम कह, 'वीठळा'; वाजि सारां। —लिखमीदास व्यास

उ०—३ अभंग मछरीक इरा भांति सूं ऊचरै सूदो माहरो खरो कांम माथै। वैंस हूंतां कह्यौ, राजि अपछर वरो. सरम, थै हुवौ इंदलोक साथै। —लिखवीदास व्यास

वैंसक-सं. स्त्री. [सं. वेशक] १ वेश्या, रंडी।

उ०—व्रतभंगी ह्वै अरथ खय, नांहां भय रस नास। कुकवी वैंसक तुल्य कर, वरणें सुकवि विमास। —बां. दा.

२ देखो 'बेसक' (रू. भे.)

३ देखो 'वेठक' (रू. भे.)

वैंसरा—देखो 'बेसरा' (रू. भे.)

वैंसराव—देखो 'वैंस्णव' (रू. भे.)

वैंसरणी-सं. स्त्री.—१ चार प्रकार की गाथाओं में से एक प्रकार की गाथा विशेष, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं। (र. ज. प्र.)

उ०—रूपा भरण वैंसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखरण साजत। ऊजळ तिलक विप्रणी ओपत. तिलक सुद्रणी लाल ओपत।
—र. ज. प्र.

२ वैश्य की स्त्री।

वैंसणू—१ देखो 'वैंस्णव' (रू. भे.)

उ०—कट्टर गौ-भक्त-गायां कसाई लेवें है, बियैं सूं ऊपर कोई बोली को देवें नी, इत्ता डांगरां री (१५०) मुकातं बोली दी है, कूंई थेई बधौ नी, तिलक काढरण नें है, दीखौ तौ वैंसणू धरम मैं हौ।
—वरसगांठ

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

३ देखो 'बैंसणी' (रू. भे.)

उ०—जीरा मेरी बाई ये ऊंचौ सौ घालूं ये थांनें वैंसणू. वैंनड़ भाई जीमां साथ, जांमण की ये जाई, विच विच वदळां ये वाल्हा गांसिया। —जीरामाता री गीत

वैंसणौ—देखो 'वैंसणो' (रू. भे.)

उ०—१ जीरण म्हारीं बाई श्रें ऊंचौ सौ घालूं तमैं वैंसणौ।
जीरामाता री गीत

उ०—२ छाडे छतर वैंसणौ, भूपति छाडे देस। हरिया सेझ सराय मैं, काळ किया परवेस। —अनुभववांणी

उ०—३ चंनण चोकी कडेरौ थारौ वैंसणौ, तुळछो री माळा थारै हाथ। आयौ हलकारौ स्रीभगवांन रौ।

वैंसणौ, वैंसबौ—देखो 'बैंठणौ, बैंठबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जूंजर वेरै वैंसतां, जळ मैं जोखा होय। हरिया हरि सिवरन विनां, पारि न पूंहता कोय। —अनुभववांणी

उ०—२ स्रावक स्राविका फारवा लागा। वैंसतै चौमासै तौ ए द्रस्टांत दीधौ। तिण सूं अमरसिंहजी वाला तौ राजी रह्या। मिखवाला नें समझावा लागा। पछै उतरतै चौमासै फतैचंदजी गोटावत बोल्यौ—भीखणजी भिखवाला नें इज निखेधौ पिण पुन्य वाला नेड़ा बेटा त्यांने क्यूं नहीं निखेधौ। —भि. द्र.

उ०—३ श्रो राती भोजन वहरावे, ऋार वैंस छोनें चमकावें। आप अंधारै औरां चंदणा, दुनियां धरम लाभ गुरवंदणा।
—अनुभववांणी

उ०—४ मन के मड है तत वांधी तणी, पेम परतीत की लाव पीठी। सुधि अर बुधि का वैंस विनायका, रस कै डोरड़ै गांठि गीठी। —अनुभववांणी

उ०—५ ताहरां ढोलेजी कह्यौ ऊभा रह्यां तौ सफै कोई नहीं। थांरै कांम छे तौ ऊंट भेकारु छुं तूं वांसै चढि वैंस कागळ लिख मोनें देज्यें तूं परो उतरै। ताहरां विवऊरियौ ऊट ऊपर वैंसि कागळ लिखण लागौ। —ढो. मा.

वैंसणहार, हारौ (हारी), वैंसणियौ—वि०।

वैंसिओड़ौ, वैंसियोड़ौ, वैंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वैंसीजणौ, वैंसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वैंसन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—ओपनां सकति सेव, वैंसना औतार घ्यावै, वंमना के वेद पाठ, चतुराई चालि मैं। परवाई पखी मैं लोक, निरापेखी जन कोई, हरियै के रांम एक, नहीं लाल पाल मैं। —अनुभववांणी

वैंसनर—देखो 'वैंस्वानर' (रू. भे.)

उ०—खड़ ईंधण पांणी वैंसनर, सरब थोक संग्रह करै। जांळोर नाम करवा जरू, चढि पठांरा नह ऊतरै। —गु. रू. बं.

वैंसनव, वैंसनौ—देखो 'वैंस्णव' (रू. भे.)

उ०—१ हैदराबाद में गुजरातियां रौ पुरौ करवांन कहावै। कैई गुजराती वणिक जैंनी, कैई वैंसनव है। केसोमद नूं क्रोड़ीमल वगेरै ठावा आदमी हुता। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ क्या गिरही क्या वैंसनौ, रांम सिबरि भैं पारि। जन-हरिगा सिवरन विनां, वाकु आर न पार। —अनुभववांणी

उ०—३ भगति वैंसना नवध्या करिहै, दसधा की कुछि खबरि न परि है। छापा तिलक बनावै वांना, इनतें साहिब रहिया छांना।
—अनुभववांणी

वैंसन्नर—देखो 'वैंस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ महादुरग अजमेर, 'सूर' जीतौ रिण चाचर। जळियौ जोगणपुरौ, वाइ जांणैं वेसन्नर। पाखरिजे गज थट्ट, खांन सुरतांण मिळै दळ। कटक बंध अनिमध्ध, हुऐ फौजां हीलोहळ।
—गु. रू. बं.

उ०—१ भोम भारंभरं हार कंपे हरं, कोम क्रोड डरं, हैं-खुरै पत्थरं। उड्डि वैसन्नरं, सांमठा सध्धरं, सुम्भटां झूलरं, फौज घांसाहरं।
—गु. रू. ब.

वैसमपायन—देखो 'वैसंपायन' (रू. भे.) (मा. म.)

वैसयिक–वि० [सं. वैषयिक] १ किसी पदार्थ का या पदार्थ सम्बन्धी।
२ विषयी, लपट।

वैसलीण वैसलीन–सं. पु. [अं. वेस्लिन] मरहम की तरह का एक प्रकार का चिकना पदार्थ विशेष, जिसका चमड़ी पर कोमल एवं चिकनी बनाने के लिए लेपन किया जाता है।

उ०—आळा अर आलमारयां मैं ताकत वेगी लायोड़ी बंग-सिलाजीत री सीस्यां जचाई पड़ी है। किरीम-पाउडर खिजाब, वेसलीन रा भरयोड़ा भांडिया, जैं, माथै जेळमाळा वणायां झिलै है। तेल-फुलेल, अंतर-सेंट रा कंटर अर साबण—सोढै रा गोडै-गोडै सूणा सिदूक राजा-मा' राजा रा सा पड़्या दीखै। पटवारी है क, तैसीलदार? किसनजी की कूंत नीं सक्यौ।
—दसदोख

वैसवारियौखीच—देखो 'वेसवारियौखीच' (रू. भे.)

वैसांणणौ, वैसांणबौ–क्रि. स.—१ दफनाना, गाड़ना।

उ०—मैं तौ इण नूं मुंहडा सूं बहन कही जिकौ कोई म्हारै कांम नहीं। तद राजा भीमसेण ईसौ सुण पडितां नूं बुलाय बूझियौ राजा मळ मोनूं दोस लगायौ। ईण री अबै कांसुं करां, तद पंडितां बेद मरजाद कह्यौ, रांणी दमैंतो थारैं घर बेटी कर राखौ, पछै दमैंती नै धरती खोदि मांहै वैसांणौ ऊपर हळ री चांव कढावौ पछै बारै काढौ, इतरै नवौ जन्म हुवौ।
—ढो. मा.

२ अधिकार में करवाना, हुकुमत देना।

उ०—गांव मारियौ, बाळियौ, लूटियौ। दिन दो मंडोर रहा। आसोज सुदि १५ वीसळपुर डेरौ कीयौ, दिन ७ रहा। पछै राव रांम नु सोझत वैसांणनै कटक परा गया। तठा पछै वळै राव रांम जाय फौज लायौ।
—मारवाड़ री ख्यात

३ देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा की रांणी नूं गरभ मास सात कौ थौ। तद सगळा मंत्री प्रधांन मिळ रांणी री पेट परनाळियौ। पेट मां थी पुत्र नीसरियौ। तीं सतमासिया नूं राज दीन्हौ। राज सूं दांन पुण्य करि सिंघासण वैसांणियौ।
—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सुधौ लगावसी, तंबोल खांण नै देसी, अर चौसठ कोठा मंडळ मांडसी, त्यां मांहै थांनु वैसांणसी।
—पंचदंडी री वारता

उ०—३ अरु वैन अेक रिड़मल री तिकौ पाटण तंवरां नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खंडेलै लाया। पीछै रावजी खंडेलौ लूंटियौ। तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अरु रावजी स्री बीकैजी आपरी ठकुरांणी करी। नै वैल वैसांणी।
—द. दा.

उ०—४ पछै अचळौ रिणमलोत मुलतांण जाय तुरकां रौ कटक आंण जगमाल नूं मराय नै वडा भाई गोपा नूं विकूंपुर रै पाट वैसांणियौ नै जगमाल रा बेटा नूं परौ काढियौ।
—नैणसी

उ०—५ तदै जगदेव दरबार आयौ, तिकौ वौ साटुक रौ बागौ पहिरणै छै, रुपिया १) री पाघ माथै थै कांनां हाथा मांहै कड़ा सु ईसै सलूक सूं मुजरौ कियौ। राजा छाती सूं लगाय मिळियौ, कनै वैसांणियौ नै पोसाख देखि नै कह्यौ, 'बेटा इसा कपड़ा क्यूं।'
—जगदेव पंवार री बात

वैसांणणहार, हारौ (हारी), वैसांणणियौ—वि०।
वैसांणिओड़ौ, वैसांणियोड़ौ, वैसांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वैसांणीजणौ, वैसांणीजबौ—कर्म वा०।

वैसांणियोड़ौ–भू का. कृ.—१ गाड़ा हुआ, दफनाया हुआ। २ अधिकार में करवाया हुआ, हुकुमत में दिया हुआ। ३ देखो 'बैठायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री वैसांणियोड़ी)

वैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

वैसाख–सं. पु. [सं. वैशाख] १ चैत्रमास के बाद एवं ज्येष्ठ मास के पहले आने वाला एक महीना, जिसकी पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में पड़ती है।

उ०—१ लागतै वैसाख री, बीज अरौ अळबंड। गांम कियौ मिळ 'केहरी' करी जिही सतखंड।
—रा. रू.

उ०—२ मासोत्तम वैसाख मैं, गढ जाळंधर हूंत। रांणी पधरावी सहर, सायै कुंवर सपूत।
—रा. रू.

२ बाण चलाने की एक मुद्रा विशेष।

३ घोड़ा का एक रोग विशेष, जिसमें उसका शरीर भारी हो जाता है। (शा. हो.)

४ मंथदण्ड।

रू. भे—बिसाख, वेसाख, वइसाख. वइसाह, वयसाख, विसाख, वैसाखि, वैसाखी।

मह.,—वैसाखौ।

वैशाखनंदण, वैसाखनंदन–सं. पु. [सं. वैशाखनन्दन] गर्दभ, गधा।

वैसाखा—देखो 'विसाखा' (रू. भे.) (अ. मा.)

वैसाखि; वैसाखी–वि० [सं. वैशाखी] वैशाख मासकी, वैशाख मास से सम्बन्धित।

उ०—तकरा समै कासी माहै बरस दंन माहै, हेकरा दंन वैसाखी पूरणमासी करवन देवै। तठै करवन रा लेगार सारा तीरथा री कोही हूंता नै पग ग्रोग मिळिग्रा। पूछ पूछ करवत देरा लागो।

—कलंगरसिंघ नरराजोत बाढेल री वात

सं. स्त्री.—१ वैसाख मास की पूर्णिमा जो विसाखा नक्षत्र से युक्त होती है। इस दिन लोग जलाशयों पर जाकर स्नान करते हैं।

२ वैसाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतिया, ग्रक्षयतृतीया।

३ सौर मास की संक्रान्ति को मनाया जाने वाला उत्सव।

४ लंगड़े ग्रादमी के बगल में रखने की एक प्रकार की लकड़ी।

५ वसुदेव की एक पत्नी। (पुराण)

६ देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

उ०—पीड़ंति हैमंत सिसिर ग्रिति पहिलौ दुख दाखवी वसंत हिव दाखि। व्याए वेली तणि तरुवरां सा। विसतरियां वैसाखि

—वेलि

रू. भे.—वैसाखि, वैसाखी, व्याएमाही।

वैसाखीग्रसटमी, वैसाखीग्रस्टमी वैसाखीग्राटम-सं. स्त्री. [सं. वैसाखी-ग्रष्ठमी] वैशाख शुक्ला ग्रष्टमी को किया जाने वाला ग्रपराजिता देवी का व्रत एवं पूजा। इस दिन देवी को उशीर और जटामासी के जल से स्नान कराने से समस्त तीर्थों में स्नान करने के समान फल होता है।

वैसाखीवरत, वैसाखीव्रत-सं. पु [सं. वैसाखीव्रत] वैसाखमास की पूर्णिमा को किये जाने वाला व्रत।

वैसाखौ—देखो 'वैसाख' (मह., रू. भे)

उ०—तासु उयरि प्रभु ग्रवतरचा, सुदि वारस वैसाखौ जी। चवद स्वप्न रांणी लहचा, सुपन पठिक सुत दाखौ जी। —स. कु.

वैसाड़णौ वैसाड़बौ—देखो 'बैठाणौ, बैठावौ' (रू. भे.)

उ०—देही करण इंगार जू तपै, राजर मांथ भयउ उगतउ भांण। माघ पंडित ईम उचरई, चउरी कुंवर बैसाड़ी छई ग्रांणि।

—वी. दे.

वैसाड़णहार, हारौ (हारी), **वैसाड़णियौ**—वि०।

वैसाड़िग्रोड़ौ, वैसाड़ियोड़ौ, वैसाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैसाड़ीचणौ, वैसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

वैसाड़ियोड़ौ—देखो 'वैठायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वैसाड़ियोड़ी)

वैसाणौ, वैसाबौ—देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

वैसाणहार, हारौ (हारी), **वैसाणियौ**—वि०।

वैसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैसाईजणौ, वैसाईजबौ—कर्म वा०।

वैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ पुहप हूँ भु कांन रा वांगा छै। सु कांम ग्रापणा बांगा हाथ लीधा। 'रितिराइ' कहतां वसंत नै कै पसाइ करि जन मनुष्य ग्रागि सौं सपरस करता था सु नै दुख नै रहता हुग्रा समस्त नर जगत वैसानर परसतौ रहीयौ। —वेलि टी.

उ०—२ ग्रह ग्राछां गरंजन, वधै लोहां वैसानर। नर पुर जन हरि नांम, उचरि समरंत ग्रनोचर। रुनी ग्रंग पति संग, दलसि रंग पावक ग्रंकित। रोम ग्रग्र पळ चरम, होम वपु नाडि सांमि हित।

—रा. रू.

वैसारण—देखो 'वैसारिण' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

वैसारणौ, वैसारबौ—देखो 'बैठाणौ बैठावौ' (रू. भे.)

वैसारणहार, हारौ (हारी), **वैसारणियौ**—वि०।

वैसारिग्रोड़ौ वैसारियोडौ, वैसारचोड़ौ—भू० का० कृ०।

वैसारीजणौ, वैसारीजबौ—कर्म वा०।

वैसारद—देखो 'विसारद' (रू. भे.)

वैसारिण-सं. स्त्री. [सं.] मछली।

रू. भे.—वैसारिण, वैसारण।

वैसारियोड़ौ—देखो 'वैठायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वैसारियोड़ी)

वैसारू—देखो 'वैसारू' (रू. भे.)

वैसाल-सं. स्त्री. [सं. वैशाल] १ विशाल नामक राजा के द्वारा बसाया हुग्रा एक नगर। २ एक प्राचीन ऋषि।

वैसालि—देखो 'वैसाली' (रू. भे.)

वैसालिनी-स. स्त्री. [सं. वैशालिनी] विशाल राजा की पुत्री जो ग्रविक्षित राजा की पत्नी एवं मरुत्त ग्राविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसके स्वयंवर के समय ग्रवीक्षित राजा ने इसे बलपूर्वक पकड़ लिया था किन्तु उपस्थित राजाग्रों ने ग्रवीक्षित को पराजित कर पुन: स्वयंवर करने की मांग विशाल राजा से की किन्तु ग्रवीक्षित के पिता करंधम ने स्वयंर में उपस्थित सभी राजाग्रों को परास्त कर ग्रपने पुत्र को बन्धन मुक्त कर इसका हरण किया एवं ग्रवीक्षित के साथ इसका पाणिग्रहण संस्कार किया।

वैसाली-सं. स्त्री [सं. वैशाली] १ एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने बसायी थी एवं, जहाँ का लिच्छवी राजवंश इतिहास प्रसिद्ध है तथा महावीर वर्द्धमान का जन्म इसी नगरी में हुग्रा था।

सं. पु,—२ ग्रंगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

रू. भे.—वैसालि।

वैसालेय-सं- पु. [सं. वैशालय] विशाल का वंशज; तक्षक नामक एक ग्राचार्य।

वेंसावणौ वेंसावबौ—देखो 'बेंठाणौ, बेंठाबौ' (रू. भे.)

वेंसावणहार, हारौ (हारी), **वेंसावणियौ**—वि० ।

वेंसाविप्रोड़ौ, वेंसावियोड़ौ, वेंसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंसावीजणौ, वेंसावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंसावियोड़ौ—देखो 'बेंठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंसावियोड़ी)

वेंसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ विरच जाय स्वारथ बिना, स्वारथ जितरै सैण । वणक तणौ **वेंसास** की, वणक तणौ की वेंण । —बां. दा.

उ०—२ तौ दिन्न मेवाड़, तौ वियप्प कापियं सीसं । ना ऊ रयण वहीजे, **वेंसास** कुंभकरण कतघ्नं । —नैणसी

उ०—३ माहाराजा नेडौ तो कोइ गांम न्ही । असतरी कठा सुं ल्यावुं । तरै तांमस करनै कह्यौ । तरै पथर री पूतळी रौ कह्यौ । तरै कांन्हडदेजी कह्यौ । उरी लै आव । मांहरी छाती ऊपर मेल दे । मन **वेंसास** छै । —वीरसदे सोनीगरा री वात

उ०—४ तद भरमल री मा कह्यौ, "जौ राज पूछियौ कदे नहीं । अर बिनां पूछियां कहूं, सौ इसौ कोई हरख आपरै न थौ । अर **वेंसास** पिण कोई न थौ । तैसुं कही नहीं ।" तद रांणै कह्यौ—किसी जायगा राखिया, सो ठोड दिखावौ । —कुंवरसी सांखला री वारता

वेंसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

बेंसासणौ, वेंसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तुरी सपतास तूल, झाटकियौ नांखी भूल । **वेंसासयं** दीन्ही वाच, डावहियै लगांण डाच । —गु. रू. बं.

उ०—२ इण भांत हालतौ देख नै गोढवाड़ पाखती सोनगरां री ठकुराई सुं सोनगरां नूं अमावा हुवा जु ए पाखती भुंडो, इण नेड़ां थकां म्हांनुं विगाड़, तरै राव रिणमल नुं परणाय नै **वेंसासिया**, आवोजाव हुई । तरै सोनगरां मिळ नै बेटी नुं कह्यौ—बाई म्है थारा मांटी आगे रह सकां नही, तुं **वेंसाससै** तौ म्है रिणमल नुं मारां । —राव रिणमल री बात

वेंसासणहार, हारौ (हारी), **वेंसासणियौ**—वि० ।

वेंसासिप्रोड़ौ, वेंसासियोड़ौ, वेंसास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेंसासीजणौ, वेंसासीजबौ—कर्म वा० ।

वेंसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

वेंसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंसासियोड़ी)

वेंसिक—सं. पु [सं. वैशिक] वेश्याओं के साथ भोग विलास करने वाला एक प्रकार का नायक । (साहित्य)

वेंसियोड़ौ—देखो 'बेंठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंसियोड़ी)

वेंसी—सं. स्त्री.—१ वेश्य की स्त्री ।

२ चार प्रकार की गाथाओं में से एक, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं ।

उ०—१ विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु यकवीस खित्रणी लीजै । सतावीस लघु **वेंसी** सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई । —र. ज. प्र.

उ०—२ विप्री लुघ तेरह रौ वणाउ, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाउ । लुघ सतावीस **वेंसी** लखाइ, सहि सेख सुद्रणि सभाइ । —ल. पि.

वेंसेसिक—सं. पु. [सं. वैशेषिक] छः दर्शनों में से एक कणाद कृत दर्शन, जिसमें पदार्थों का विचार एवं द्रवयों का निरूपण है ।

वेंसौ—वि०—१ किसी की नकल का या किसी के अनुरूप ।

२ उस प्रकार का ।

रू. भे.—वेसौ, वेहडु, वेहड़ौ. वेहडं, रेहड़ं, वेहडौ, वेंड़ौ, वेड़ौ ।

वेंस्णव—वि. [सं. वैष्णव] (स्त्री. वेंस्णवी) विष्णु का, विष्णु सम्बन्धी ।

सं. पु.—विष्णु का उपासक, भक्त ।

उ०—चहुंवां चरित्र **वेंस्णवे** विचित्र, त्रैलोक तत्र, वह मिळत अत्र । परिब्रह्म पूरण, तत मग्न तूरण, परमात्मा प्राप्त, वह पुरूख आप्त । —ऊ. का.

२ हिन्दुओं में, विष्णु की उपासना करने वाला एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय ।

३ इस सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति ।

रू. भे.—बेसनव, बेसनव्व, बैस्नव, बैस्नव्व, वइसनव, वेसनव, वेंसणव, वेंसणू, वेंसनव, वेंसनौ, वेंस्णवु ।

वेंस्णवचाप—सं. पु. [सं. वैष्णवचापः] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सारंग नामक धनुष ।

वेंस्णवी—सं. स्त्री. [सं. वैष्णवी] १ विष्णु की शक्ति ।

उ०—तावदिद संकल जगजीवति **ईस्वरै** विस्वकरत्रित्व मां मनंति मनीसिण, एकि संसार नी स्रस्टि ईस्वर हुंती कहइं, एकि ब्रह्मा, एकि **वेंस्णवी**, एकि सांबमाया, एकि सक्तितउ कहइ, पणि लक्ष्मीकृत स्रस्टि मांनीइ । —व. स.

२ देवी, दुर्गा ।

उ०—देवी **वेंस्णवी** महेसो ब्रहम्मांणी, देवी ईंद्रांणी चंद्रांणी रमारांणी । देवी नारसिंघी वराही बिख्याता, देवी इळा आधार आसुर हाता । —देवि.

३ गंगा ।

४ लक्ष्मी ।

५ तुलसी ।

६ वैष्णव सम्प्रदाय की स्त्री ।

उ०—खाली एक अबोट धोती में आपरा सरीर नै आभड़छट सूं बचावण री फिजूल कोसीस करती दरसण री भूखी वैस्णवियां, ढीली धोती अर नेहरू जाकेट पैरयोड़ा व्यापारी, दस गज री साड़ो नै गेलाई सूं लपेटनै माथै पर फूमां अर साग-भाजी रा ओडा ऊंचायोड़ी मराठणियां, ऊजळा दही व्है जिसा कपड़ा मैं फूटरी-फूटरी गुजरातणियां अर हाथां मैं थैलियां लियोड़ा ग्राहक सब एक साथै ईज बाड़ा मायनैं सूं बकरियां निकळी व्है ज्यूं परभात मैं ईज निकळग्या हा । —रातवासौ

वैस्णवु—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—वैस्णवु राति चारइ पुहुर जागइ । —ड. र.

वैस्य—देखो 'वेस्य' (रू. भे.)

वैस्या—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

वैस्येसवर, वैस्येसुवर, वैस्येस्वर—सं. पु. [सं. वैश्येश्वर] महानंदा के उद्धारार्थ अवतीर्ण हुआ एक शिवावतार ।

वैस्रप—सं. पु. [सं. वैसृप] कश्यप एवं दनु का एक पुत्र दानव ।

वैस्रवण—सं. पु. [सं. वैश्रवणः] १ धनपति, कुबेर । (अ. मा., नां. मा. ह. नां मा.]

२ लंकापति रावण ।

३ शिव, महादेव ।

रू. भे.—वैसवरण, वईस्रवण, वेसमण वेसवण वेस्रमण, वेस्रवण ।

वैस्रावणाय, वैस्रावणालय—सं. पु. [सं. वैश्रवणालय] १ कुबेर के रहने का स्थान ।

२ वट वृक्ष । (अ. मा., नां मा., ह. नां मा.)

वैस्वजुग—देखो 'वैस्वयुग' (रू. भे.)

वैस्वदेव—सं. पु. [सं. वैश्वदेवं] १ विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ ।

२ विश्वदेव को दिया गया उपहार ।

वैस्वदेवत—सं. पु. [सं. वैश्वदेवत] सत्ताईस नक्षत्रों में से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र ।

वैस्वयुग—सं. पु. [स. वैश्वयुगः] वृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत, क्रोधी, विश्वासु और पराभाव नामक पांच संवत्सरों का युग या समूह । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—वैस्वजुग ।

वैस्वानर—सं. पु. [सं. वैश्वानरः] १ अग्नि की उपाधि । २ इन्द्र सभा का एक महर्षि । ३ भानुनाम अग्नि के प्रथम पुत्र का नाम ।

४ वह अग्नि जो अन्न पचाती है ।

५ कश्यप एवं दनु के एक पुत्र दानव का नाम, जिसके, उपदानवी, हयशीरा, पुलोमा एवं कालका नाम की चार कन्याएँ थीं ।

६ वेदांत में चेतन शक्ति ।

७ परमात्मा, ईश्वर ।

८ आग, अग्नि ।

उ०—जउ वैस्वानर ताढउ थाइ, पश्चिम ऊगइ दीस । नारायण टलतउ कान्हडदे, कहि न नांमइ सीस । —कां. दे. प्र.

९ अग्नि देवता ।

रू. भे.—बसंदर, वैसंदर, वेसांनर, वैसंदर, वैसानर, वासंदर, विसनर, विसन्नर, विस्वानर, वीसनर, वेसनर, देसन्नर, वेसवानर, वैसानर, वैसंदर, वैसंनर, वैसनर, वैसन्नर, वैसांनर, वैसानर ।

वैस्वानरचूरण—स. पु. [सं. वैश्वानरचूर्ण] सेंधानमक, अजवायन और हर्रे आदि से बनाया जाने वाला एक प्रकार का पाचक चूर्ण विशेष । (वैद्यक)

वैस्वानरि, वैस्वानरी—स पु. [सं. वैश्वानरि] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

वैस्वामित्र—स. पु. [सं. वैश्वामित्र] विश्वामित्र के वंशज ।

वैवारियोखीच—देखो 'वेसवारियोखीच' (रू. भे.)

वेहंग—देखो 'विहंग' (रू. भे.)

उ०—सोभत मंद सीतळ समीर, कोकला कुहक करत सथर कीर । वांणी अनेक कुजत वेहंग, नाचत मयूर आनंद अंग । —मयारांम दरजी री वात

वेहंचणौ, वेहंचबौ—देखो 'वेंचणौ, वेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—यूं करतां, दोनूं भायां रे आपस मैं दूदै अर भोज रै वडो वेध पड़ियो । ताहरां राव सुरजन वेटा वेऊं तेड़िनै कह्यौ—थे मो ऊपर फिरिया । थे म्हारो कह्यौ न मांनो । म्हें राज सूं कोई कांम नहीं । थे धरती वेहंच ल्यो । —नैणसी

वेहंचणहार, हारो (हारी), वेहंचणियौ—वि० ।

वेहंचिओड़ौ, वेहंचियोड़ौ, वेहंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेहचीजणौ, वेहंचीजबौ—कर्म वा० ।

वेहंचियोड़ौ—देखो 'वेंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहंचियोड़ी)

वेहंडणौ, वेहडबौ—देखो 'विहडणौ, विहंडबौ' (रू. भे.)

उ०—भागीरथी तणै तट भारथ, सत्र वेहंडिया वजाड़ै सार । रिम रेखग भेळाकर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिंगार । —चतुरौ मोतीसर

वेहंडणहार, हारो (हारी), वेहंडणियौ—वि० ।

वेहंडिओड़ौ, वेहडियोड़ौ, वेहंडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेहंडीजणौ, वेहंडीजबौ—कर्म वा० ।

वेहंडियोड़ौ—देखो 'विहंडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेहंडियोड़ी)

वेह—१ देखो 'वयस' (रू. भे.)
उ०—छांपर तबल ज वजिया, हुइ मरदां हल्ल। लाज कहै मर ज्यावणो, वेह कहै घर चल्ल। —सिवसिंघ वाघेला रो गीत
२ देखो 'विधाता' (रू. भे.)
३ देखो 'वे'माता' (रू. भे.)
उ०—पमंगां छाड पागड़ा वात नेवडा विचारी, आगं तूट आंपणं वेर 'सारंग' वडारी। होसी होवण हार वेह लिखियौ जिम ह्वैसै, द्रग अपार धन देख कहो डर जावां कैसे। पा. प्र.
४ देखो 'वेह' (रू. भे.)

वेहणौ, वेहबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)
उ०—वळै आधा चलाया। सु धरती कोस एक आय रही। सासरै सो नेड़ो गयौ। इतरै एक वडो पाकेट ऊंठ पाहड़ हुवै तिसड़ो वडो विपरीत तिको आडो आय फिरियौ। सु घोड़ै नुं आघो वेहण देवै नहीं। —मांडणसी कूंपावत री बात
वेहणहार, हारौ (हारी), वेहणियौ—वि०।
वेहिओड़ौ, वेहियोड़ौ, वेह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वेहीजणौ, वेहीजबौ—भाव वा०।

वेहतीवांण—१ देखो 'वेतियांण' (रू. भे.)
२ देखो 'वहतीवांण' (रू. भे.)
उ०—६०००) गांव रै हासल रा घड़ कसाल पाटो। ५०००)रु मारग वेहतीवांण सुं संमत १७१६ पातसाह। —नैणसी

वेहरणौ, वेहरबौ—देखो 'वेरणौ, वेरबौ' (रू. भे.)
उ०—जिसौ जोध बळि भद्र, पळंव दांणव संहारियै। जिसौ वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप वेहरियै। —गु. रू. बं.
वेहरणहार, हारौ (हारी), वेहरणियौ—वि०।
वेहरिओड़ौ, वेहरियोड़ौ, वेहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वेहरीजणौ, वेहरीजबौ—कर्म वा०।

वेहराड़णौ, वेहराड़बौ—देखो 'वेराणौ, वेराबौ' (रू. भे.)
वेहराड़णहार, हारौ (हारी), वेहराड़णियौ—वि०।
वेहराड़िओड़ौ, वेहराड़ियोड़ौ, वेहराड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
वेहराड़ीजणौ, वेराड़ीजबौ—कर्म वा०।

वेराड़ियोड़ौ—देखो 'वेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेराड़ियोड़ी)

वेहराणौ, वेहराबौ—देखो 'वेराणौ, वेराबौ' (रू. भे.)
वेहराणहार, हारौ (हारी), वेहराणियौ—वि०।
वेहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वेहराईजणौ, वेहराईजबौ—कर्म वा०।

वेहरायोड़ौ—देखो 'वेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेहरायोड़ी)

वेहरावणौ, वेहरावबौ—देखो 'वेराणौ, वेराबौ' (रू. भे.)
वेहरावणहार, हारौ (हारी), वेहरावणियौ—वि०।
वेहराविओड़ौ, वेहरावियोड़ौ, वेहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वेहरावीजणौ, वेहरावीजबौ—कर्म वा०।

वेहरावियोड़ौ—देखो 'वेरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेहरावियोड़ी)

वेहरियोड़ौ—देखो 'वेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वेहरियोड़ी)

वेहळ, वेहल—वि०—१ बिना हल का, हलरहित।
२ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
३ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
४ देखो 'बहल' (रू. भे.)
उ०—१ पछै सचियायजी आय सुपनै मैं हुकम दियौ, वांसै हाथ दिया नै कह्यौ—काळै वागै, काळी टोपी, वेहल रै काळी खोळी, काळा बळद जोतरियां, जिदा रै रूप कियां सांम्हा मिळसी। औ गैचंद छै, तू मत चूकै, कूट मारै। —नैणसी
उ०—२ तद आसथांनजी बोलिया—जु बेटी थांरी परणाय, म्हे जांणा। तद ब्राह्मण बेटी परणाई, फेरा लिया। पछै कांनै रा आदमी ब्राह्मण री बेटी नै वेहल बैसांण लै हालिया। —नैणसी
उ०—३ इतरै महाडोल मंगायौ। भरमल नुं असवार कीनौ। महाडोल रै पुठै रथ वेहलां लगाई, पुठै उंठ, घोड़ा सारा आगै पाछै। इसै मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतो, सौ महाडोल री पाखती आइ लागौ। —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ सांखलां कही, वेहल छोड देवो, आफै चली आसी। तद खरळां वहलवांन नुं उतार रथ ऊपर सहेली नुं चाढि वहीर कीवी। वहलां भारवरदारी सारी रथ रै पुठै लगाय दीया। ऊभा देखण लागा। —कुंवरसी सांखला री वारता

वेहलणौ, वेहलबौ—क्रि. अ. - बुझना।
उ०—अरिसेन बहू जत एक हियूं अंब वाहर 'पाल' हुतै तइयूं। मुझ बांधव 'पाल' जिसो न मिळै, वंस दीपक आज परौ वेहलै।
—पा. प्र.
वेहलणहार, हारौ (हारी), वेहलणियौ—वि०।
वेहलिओड़ौ, वेहलियोड़ौ, वेहल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वेहलीजणौ, वेहलीजबौ—भाव वा०।

वेहलि, वेहली—देखो 'बहल' (रू. भे.)
उ०—कह्यौ—मोहरत री वेळा टळी जाय छै। प्रोळ खोलो। सेजवाळा बारणै ऊभा छै। तरै उणै प्रोळ खोली। सेजवाळा सोह

मांहै आया । तरै रावळा वेहली मांहि था कूद-कूद जीनमालिया उतरिया । दहियां रा जिकै कोट मांहै हुता सु सोह कूट मारिया ।

—नैणसी

वेहलियोड़ौ-भू० का० कृ०—बुझा हुआ ।

(स्त्री. वेहलियोड़ी)

वेहळौ. वेहलौ-वि० (स्त्री. वेहळी. वेहली) १ दुखी, व्यथित, व्याकुल ।

उ०—तिरसी निवांण तायँ ग्रहै तट, वेहळी जाव त्रिया पीहर वट । जग कवियण थावैं दुखी जांम, तद ग्रहै छत्रियां सरण तांम ।

—रांमदांन लाळस

२ मस्त, उन्मत ।

३ शीघ्र, अतिशीघ्र, जल्दी ।

उ०—१ चुंग्र थांणाय चारण हीण सकै, धवलै दन कोळू ग्र गांम धकै । कमधां घर राज किसूं कहला, वत वाहर वीर चढ़ौ वेहला ।

—पा. प्र.

उ०—२ घल जांघड़ डाकेय जूंझ घणौ, तिम खूर बंधै संहै वार तणौ, । पुड जूंझुहै 'पाल' हुतै पंहला, विड़ंगां पर भीण न्हखो वेहला ।

—पा. प्र.

रू. भे.—वेहळौ, वेहिलौ ।

वेहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—जै ऊपर रौ तभर सुपर वेहवार, जिण थूआ ऊपरी फाड़ फड़क्क फाड़तौ । जिण समचै सोवन्न, जेण वदरा वंधावै । जिण सोभावै हा'ट, जेण लाख्यां लूटावै ।

—कमरसी खींवौ सूरौत आसियौ

वेहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

वेहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

वेहायस-सं. पु. [सं.] १ पातालनरेश बलि का एक विमान जिसे मय ने बनाया था तथा यह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित एवं अनेक आयुधों से युक्त था ।

२ एक प्रसिद्ध तीर्थ कुण्ड जो नरनारायणाश्रम के पास स्थित है ।

वि०—आकाश का; आकाश सम्बन्धी ।

वेहार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—नयन तै आंसू खेरिया, कब म्हैं भेटस्यां सांभरया-राव । जीवन घड़ीय तै नवि रहई, जिण सू कागली हुवा वेहार ।

—वो. दे.

२ देखो 'वंभार' (रू. भे.)

वेहारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

वेहासक, वेरासिक-वि० [सं. वेहासिक] हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा, विदूषक ।

वेहियोड़ौ—देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहियोड़ी)

वेहिलौ—देखो 'वेहलौ' (रू. भे.)

उ०—मध कीटय दै मार, हार देवतां हुई हरि । त्राहि त्राहि सुर तवै, किसन वेहिलौ ऊपर करि ।

—पी. ग्रं.

वेहुं, वेहूं, वेहू—देखो 'वेऊ' (रू. भे.)

उ०—खींवौ, विजौ धाड़ावी वडा दोड़ा बडा चोर । विजौ सोभित वसै । खींवौ नाडौल वसै । वेहूं रा ओसाप वडा । ऊ उण रौ नांम जांणै । ऊ उण रौ नांम जांणै । पिण मिळिया कदे नहीं ।

—चौबोली

वेहूकणौ वेहूकबौ—देखो 'विमूकणौ, विमूकवौ' (रू. भे.)

वेहूकणहार, हारौ (हारी), **वेहूकणियौ**—वि० ।

वेहूकिओड़ौ, वेहूकियोड़ौ वेहूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेहूकीजणौ, वेहूकीजबौ—भाव वा० ।

वेहूकियोड़ौ—देखो 'विमूकियोड़ौ' (रू. भे.)

वेहूकियोड़ौ—देखो 'विमूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेहूकियाड़ी)

वेहूगणौ, वेहूगवौ—देखो 'विसूकणौ, विसूकवौ' (रू. भे.)

वेहूगणहार, हारौ (हारी), **वेहूगणियौ**—वि० ।

वेहूगिओड़ौ, वेहूगियोड़ौ, वेहूग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वेहूगीजणौ, वेहूगीजबौ—भाव वा० ।

वेहूगियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ' (रू. भे.)

वेहूगियोड़ौ—देखो 'विसूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वेहूगियोड़ी)

वोंकार—देखो 'वोंकार' (रू. भे.)

वोंयै—देखो 'वांसै' (रू. भे.)

वोंसलौ वोंसूलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

वो-सं. पु.—१ विनय, प्रार्थना । (एका.)

२ सातस्वर, सप्तस्वर । (एका.)

३ समय, काल, वक्त । (एका.)

४ पेड़, वृक्ष । (एका.)

५ रथ हांकने वाला, सारथि । (एका.)

६ देखो **वौ**' (रू. भे.)

वोअणौ, वोअबौ—देखो 'बोवणौ, बोवबौ' (रू. भे.)

वोअणहार, हारौ (हारी), **वोअणियौ**—वि० ।

वोइओड़ौ, वोइयोड़ौ, वोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वोईजणौ. वोईजबौ—कर्म वा० ।

वोइयोड़ौ—देखो 'बोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोइयोड़ी)

वोई—देखो 'वही' ।

अबै दोन्यूं मांमा—भांणेज रै आंख्यां मैं जांणै भैरूं खिबै। हाथां रै बटका भरै। म्हारै एवड़ मैं सूं इज बकरौ लेय गया? अर वोई जोर रै जरकै? वाघ रै गळै वाड़ला नैं हाथ नांखियौ।

—अमरचूंनड़ी

उ०—२ जाकै सिर मोर मुकुट मेरै पति वोई, संख चक्र गदा पद्म कंठ माळा सोई। आई मैं भक्त जांण जगत देख मोई, अंसुवन जळ सींच सींच प्रेम बेल बोई। —मीरां

वोउखीचड़ी, वोऊखीचड़ी—देखो 'बहुखीचड़ी' (रू. भे.)

वोक—१ देखो 'बोक' (रू. भे.)

२ देखो 'बूक' (रू. भे.)

वोकड़, वोकड़ु, वोकड़ौ, वोकडु, वोकडौ—देखो 'बोकड़ो' (रू. भे.)

वोकणौ, वोकबौ—देखो 'बोकणौ, बोकबौ' (रू. भे.)

वोकणहार, हारौ (हारी), वोकणियौ—वि०।

वोकिओड़ौ, वोकियोड़ौ, वोक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वोकीजणौ, वोकीजबौ—कर्म वा०।

वोकारणौ, वोकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे.)

उ०—सुणीजे स्यारां री सरणाट, झाड़कां तीतर तीखा बोल। वोकारै बसतोड़ी सून्याड़, आपणौ आपौ राखै तोल। —सांझ

वोकारणहार, हारौ (हारी), वोकारणियौ—वि०।

वोकारिओड़ौ, वोकारियोड़ौ, वोकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वोकारीजणौ, वोकारीजबौ—कर्म वा०।

वोकारियोड़ौ—देखो 'वाकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोकारियोड़ी)

वोकियौ—१ देखो 'बोखौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बूकियौ' (रू. भे.)

वोकौ—देखो 'बोखौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोकी)

वोखद, वोखदि, वोखदी, वोखध—देखो 'ओखध' (रू. भे.)

उ०—करक कळजे भारी वोखद न लागै कारी, तुम घर जावौ वैद मेरै पीर भारी है। विरहिन विरह बाढचौ तातैं दुख भयौ गाढौ, विरह के बांण लै लै विरहिनी मारी है। —मीरां

वोखलौ, वोखियौ—देखो 'बोखौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. वोखली

वोखौ—देखो 'बोखौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोखी)

वोडणौ, वोडबौ—देखो 'बोड़णौ, बोड़बौ' (रू. भे.)

वोडणहार, हारौ (हारी), वोड़णियौ—वि०।

वोड़िओड़ौ, वोड़ियोडौ वोड़योडौ—भू० का० कृ०।

वोड़ीजणौ, वोड़ीजबौ—कर्म वा०।

वोड़ाणौ, वोड़ाबौ—देखो 'बोड़ाणौ, बोड़ाबौ' (रू. भे.)

वोड़ाणहार, हारौ (हारी), वोडाणियौ—वि०।

वोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वोड़ाईजणौ, वोड़ाईजबौ—कर्म वा०।

वोड़ायोड़ौ—देखो 'बोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोड़ायोड़ी)

वोड़ियोड़ौ—देखो 'बोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोड़ियोड़ी)

वोड़ियौ—देखो 'बोड़ियौ (रू. भे,)

वो'ड़ी—देखो 'बोरड़ी(रू. भे.)

वोचणौ; वोचबौ—देखो 'बोचणौ, बोचबौ' (रू. भे.)

वोचणहार, हारौ (हारी), वोचणियौ—वि०।

वोचिओड़ौ, वोचियोड़ौ, वोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वोचीजणौ, वोचीजबौ कर्म वा०।

वोचियोड़ौ - देखो 'बोचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोचियोड़ी)

वोछौ—देखो 'ओछौ' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिवेणी तटि वास तहां क्यूं ना जाइयै, ए पासा ए डाव सीस लै चाइयै। वोछै पांणी पैसि समद क्यूं छडिए, हरिहां जन हरिदास भजि अलख निरंजननाथ तहां मिळि लाडिए।

—ह. पु. वां.

उ०—२ वोछा करै गुमांन बडां कै नाहि रे, भादू वरसै मेह नदी घर राहि रे। दरिया उभळै नांहि ता मांहि समांहि रे, हरिहां जन हरिदास यूं साधि देखि जग मांहि रे। —ह. पु. वां.

वोज-सं. पु.—१ खाट की की बुनावट।

२ देखो 'बोझ' (रू. भे)

वोजनीळो-सं. पु.—शुभ रंग का एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

(शा. हो.)

वोजलखी-सं. पु. - शुभ रंग का एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

(शा. हो.)

वोझाड़ो-सं. पु.—१ झटका।

२ प्रहार, चोट।

वि०—प्रहार करने वाला।

वोट—१ देखो 'ओट' (रू. भे.)

उ०—१ जग सूं प्रीति कहां लौ कीजे, सकळ काळ की चोट। उलटौ खेलि अनळ का सुत लौ, पकड़ि रांम की वोट।

—ह. पु. वां.

उ०—२ भडां हांक भंकमप तीर गोळी वहै, सुभटन ताकै वोट चोट सन्मुख सहै। ग्यांन खडग लै हथि न फिरि पूठा फिरै, हरिहां जन हरिदास सूरवीर अरिजीत सहरिका होय रहै। —ह. पु. वां.

उ०—३ जन हरिदास हरि सुमरतां, दूरि ग्रांन सब वोट। राग दोख हिरदै नहीं, करसूं करै न चोट। —ह. पु वां.

उ०—४ तहां कंध का छेद, ग्रांन नर वोट न छूटै। दस दरवाजा रोकि, काळ काया गढ लूटै। —ह. पु. वां.

उ०—५ ग्रांन वोड ऊभा ग्रजूं, सकै तौ पड़दा डाळि। साहिब के पड़दा नहीं, तूं ग्रपणी वोट संभाळि। —ह. पु. वां.

२ देखो वोट' (रू. भे.)

उ०—पूना घर वीधौ सर पाधर. हैदळ गैदळ सबळ हींचि। पड़चौ नह सेवौ ग्राय पांवां. वोट मारतौ समद वीचि। —राजा जैसिंघ कछवाहा ग्रामेर रौ गीत

वोटणौ, वोटबौ—देखो 'वोटणौ वोटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नमौ नर नाह हयवाह 'पदमा' निडर, वोट ग्ररियाट ग्रमुरां सवांही। साहियां खड़ग 'करणेस' रा छावड़ा, मालियौ भलौ ग्रंबखास मांही। —पदमसिंघ रौ गीत

उ०—२ सालळै सींधूग्रौ राग सरणाइयां, भलांई ग्राज भारथ करौ भाइयां। मेह मेहां सरिसि ग्रावि जूटा मोहरि, बांण वांणां सरिसि वोढ़िया बहादरि। —पी. ग्रं.

वोटणहार, हारौ (हारी), वोटणियौ—वि०।

वोटिग्रोड़ौ, वोटियोड़ौ, वोटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वोटीजणौ, वोटीजबौ—कर्म वा०।

वोटर—सं. पु. [ग्रं] वोट देने वाला या वोट देने का ग्रधिकार रखने वाला व्यक्ति।

वोटरलिसट, वोटरलिस्ट—सं. स्त्री. [ग्रं. वोटरलिस्ट] वह सूची जिसमें वोट देने वाले या वोट देने का ग्रधिकार रखने वाले व्यक्ति का नाम दर्ज हो।

वोटियोड़ौ—देखो 'वोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोटियोड़ी)

वोडबिलाव, वोडबिलाव, वोडबिलावर—देखो 'वोडबिलाव' (रू. भे.)

वोढ—सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई।

२ देखो 'वोढ' (रू. भे.)

वोढण—सं स्त्री.—१ सर्प की कंचुकी।

उ०—रणां रचि मांही रस पाया, पोवन छक्या सहजि घरि ग्राया। ग्रहि वोढण ज्यूं तजि गुणकाया, भेदी जाह ग्रमेद समाया। —ह. पु. वां.

२ ग्रोढ़ने का वस्त्र, चादर ग्रादि।

उ०—जांहि ग्रधोगति ग्रंध, ग्रग्यांन, ग्रालस 'उरि' लागा। 'त्रिवधि' ग्रंधारै वैसि, ग्यांन वोढण नहिं नागा। —ह. पु. वां.

वोढणियौ, वोढणौ—देखो 'ग्रोढणौ' (रू. भे.)

वोढणौ, वोढबौ—देखो 'वोटणौ, वोटबौ' (रू. भे.)

उ०—सांमंद हुवह सुजळ सायर, रैण सुत जळनघ रैणायर। सुजळ गोडीरव सायर, महण घण महरांण। सुतर 'सूरज' सुजळ सारै ग्ररि ग्रोहाळै उतारै। मारका सत्र वोढ मारै जुड़ै 'गंजण' जुवांन। —महाराजा गजसिंह रौ गीत

वोढणहार, हारौ (हारी), वोढणियौ—वि०।

वोढिग्रोड़ौ, वोढियोड़ौ, वोढ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वोढीजणौ, वोढीजबौ—कर्म वा०।

वोढा—देखो 'वोढा' (रू. भे.)

वोढियोड़ौ—देखो 'वोटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वोढियोड़ी)

वोढौ—वि.—छोटा, कनिष्ठ।

उ०—ताहरां पाबूजी कह्यौ—बाई! हूं तोनूं दोदै सूंमरै री सांढ़ां रा वरग ग्रांण देईस। ताहरां गोगोजी हंसिया कह्यौ—ग्राजै दोदौ सूंमरौ वोढ़ौ रांवण कहीजै। तैरी सांढां किसीभांत लै ग्रावसी? ताहरां पाबूजी बोलिया—सांढां लै ग्राईस। —नैणसी

वोदौ—देखो 'वोदौ' (रू. भे.)

उ०—पीसणियां पीसै; रांधणियां रांधै, वखतसर न्हावौ-धोवौ ग्रर सिक्यां सीख री वातां सांधै। लंगर मैं बैठ'र जीमै, कतार मैं कामण मांजै, नूंवा डरता रैवै, वोदां रौ भौ भाजै। ग्रफसर रै हुकमां हालै थको मौज सूं मालै। —दसदोख

वोपणौ, वोपबौ—देखो 'ग्रोपणौ, ग्रोपबौ' (रू. भे.)

उ०—दमक छटा छबिडंड पताका देखिया, पटा हाट व्योपार जुहांरां पेखिया। ग्राभुवण नर नारि ईसी विध वोपिया, जांण क सुरपुर लोक इधक छबि जोपिया। —वगसीरांम प्रोहित री बात

वोपणहार, हारौ (हारी), वोपणियौ—वि०।

वोपिग्रोड़ौ, वोपियोड़ौ, वोप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वोपीजणौ, वोपीजबौ—कर्म वा०।

वोपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ दुनिया रौ वोपार है, सूका देख-देख छोडै ग्रर हरया देख-देख'र चरै। जकै घर सूं मोकळौ खायौ-कमायौ ग्रर मोटा मोटा कारज सारचा बी: घर री ही ग्राज न्हांयौ ग्रर गिलर करै है। —दसदोख

उ०—२ सुत को दुख दिल मांहै दहै, साह सहरि एक दिलो है। घरै गरथ लखमी ग्रौतार. सोदौ सूत वडो वोपार। —भींवराज

उ०—३ उण देस वाळौ जठै प्रांणां रौ वोपार जिण सिरदार रै हुम तम होवै, कठै ई सत्रुवां ऊपर चढै है कठा सूं ई दुसमणां री फौज ऊपर ग्राय गई है इण तरै प्रांणां रौ वोपार होवै जठै लै चालै। —बी. स. टी.

उ०—४ वणक कहै वोपार विध; सीखो गुरु सूं सोभ। ऊंट मुग्रां नहिं ग्रोरतौ, कापड़ उपर बोभ। —बां. दा.

बोपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—रे बोपारी करि दिल इकतारी, वाचा वीर संभाळी ! श्रौदरि कौळ कियौ मन मेरा, उदग्यौ दसवद टाळी । —भींवराज

बोपारौ—देखो 'व्यापार' (मह., रू. भे.)

उ०—ग्रला हम विणजारा पूरै साह का, विणज करण बोपारौ । ग्रला खोटा खोटा विणज न वौहरां, मांणिकां दांवौ पारौ ।
—दीनसुदरदी

बोपियोड़ौ—देखो 'ग्रोपियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोपियोड़ी)

बोबार-सं. पु.—१ कन्या का सम्बन्ध निश्चित करते समय दामाद या दामाद के सम्बन्धियों द्वारा कन्या के पिता या संरक्षकों को दिया जाने वाला धन ।

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोभर—देखो 'बोभर' (रू. भे.)

उ०—१ मौकौ पड़चां करणौ नै चेतै करो हो, नीं तौ करणौ जाग्रौ वाढ्योड़ा तिला मैं ! मोठ री छाया देख्यौ मजा करौ । इतौ कै परौ'र करणौ बोभर वासतै री हांडी भर'र मंगाई । हांडी रै वासतै मैं एक धोबो कूट्योड़ी मिरचां नखाई । ग्रचेत पड़ी राजी रौ मूंडौ जगती मिरचां री हांडी माथै मेलायौ । —दसदोख

उ०—२ बठै ग्रधबूढ़ी सी एक घरधिरांणी, लाल लुंक रियौ ग्रोढ्यां चूलै कनैं बेठी काचर छोलै है । पाळौ लागै जद बोभर मैं हाथ तपावै, कणा ही सै साथै लकड़ी ही ग्रकेरल देवै है । —दसदोख

बोभरियौ—१ देखो 'बोभरियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोभरौ' (ग्रल्पा , रू. भे.)

बोभरौ—देखो 'बोभरौ' (रू. भे.)

बोमंगी—देखो 'बोमंगी' (रू. भे.)

बोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ रत खाळ रळ तळ पालर प्रम्घळ, होहूं हूकळ थट्ठ हुवै । वळकंत विजूजळ बीजक वट्ठळ, ढोल त्रिमंगळ बोम धुवै ।
—गु रू. वं

उ०—२ गोम डमर हुग्रै बोम गाहीजियै, ग्रंत रै बोम गर दोम ग्रागा । सोन रा ऊधडै धोम रा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा । —कल्यांणदास महडू

उ०—३ बोम ग्रराबै गाजियै, ढोल हुवा सब ठौड़ । ग्रायौ रूपौ' 'रांम' तण, हांम घणी राठौड़ । —रा. रू.

उ०—४ ग्ररोहैं हणूं रांम मैइं ग्रनुज्जं, धरा बोम धुज्जे सिरा लंक धुज्जं । ग्रड़ीखंभ जोधा पदम्मं ग्रठारा, पिलै थाट नीसांण वाजै ग्रठारा । —सू. प्र.

उ०—५ बोम संखचूड़ सरीखा वहै, धेनक सरिखा ढाहिया । निसचरां घणां मोहिण नरंद, गोकळ बैठै गाहिया । —पी. ग्रं.

बोमकेस, बोमकेसी—देखो 'व्योमकेस' (रू. भे.) (ग्र. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

बोमगंगा—देखो 'व्योमगगा' (रू. भे.)

उ०—देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपिला, देवी सोण सतलज भीमा सुसीला । देवी गोमगंगा देवी बोमगंगा, देवी गुप्त गंगा सुचोरूप ग्रंगा । —देवि.

बोमगांमी—देखो बोमंगी' (रू. भे.)

बोमचक्री—देखो 'बोमचक्री' (रू. भे.)

बोमतलक, बोमतिलक—देखो 'बोमतलक' (रू. भे.)

बोमदेव-सं. पु. [सं. वामदेव] शिव, महादेव । (नां. मा.)

बोमपट, बोमपाट-सं. पु. [सं. व्योम+पट] ग्राकाशमार्ग ।

उ०—समु उपड़ै कमंदांपति पटैल विकटा चाळौ, बोमपटां भाळै ख्याल बरमां बांणाव । जोगी जटा वाळै डाक डमरु वजाय जठै, 'हटा' वाळै जाडा थंडां भोकिया हैराव । —ईसरदास खिड़ियौ

बोमवांण, बोमवांणी-सं. स्त्री. [सं. व्योम+वाणी] ग्राकाशवांणी, देववांणी ।

उ०—देवी गौर रूपा ग्रखां नव्व निद्धि, देवी सक्कळा ग्रक्कळा सव्व सिद्धि । देवी व्रज्ज विमोहणी बोमवांणी, देवी तोतला गूंगला कत्तियांणी । —देवि.

बोमि—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—१ 'वीक'हर राउ सांभळि वचन्न, रीसाइ किया राता रतन्न । ऊससिय बोमि लागउ ग्रबीह, सांभळिग्रे कथिनै जइतसीह ।
—रा. ज. सी.

उ०—चांदिणउ संजांणइ कळह चल्लि, सिरि वाळ सोह हारइ न हल्लि । खींवड़उ सुकरि साहियइ खग्गि, लाखीकि चईनउ बोमि लग्गि ।
—रा. ज. सी.

बोर—देखो 'ग्रोर' (रू. भे.)

उ०—बावली तणा घड़ा ज्यू बरतै, काया जतन न कीतो काज । दिली भींच बोर सो दूजो, राखण हार न घड़ियौ राज ।
—राजा माधौसिंह कछवाहा रौ गीत

बोरगत—देखो 'बोरगत' (रू. भे.)

बोरणौ, बोरबौ-क्रि. स.—१ डूबोना, तर-बतर करना ।

उ०—दिगंतां लौं दोरै मचल मन मोरै मुदमुदी, विदांतौ भंभोरै विसय विस बोरै बुदबुदी । पछारै पापौं कौ त्रिपत भण तापौं त्रुटि तलै, मिलावैं मेधा कौ विधि विधि निसेधा कत मलै ।
—ऊ. का.

२ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बोड़णौ, बोड़बौ' (रू. भे.)
बोरणहार, हारौ (हारी), बोरणियौ—वि०।
बोरिप्रोड़ौ, बोरियोड़ौ, बोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोरीजणौ, बोरीजबौ—कर्म वा०।

बोराणौ, बोराबौ—१ देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बौराणौ, बौराबौ' (रू. भे.)
बोराणहार हारौ (हारी), बोराणियौ—वि०।
बोरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोराईजणौ, बोराईजबौ—कर्म वा०।

बोरायोड़ौ—१ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बौरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोरायोड़ी)

बोरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ डुबोया हुआ, तर-बतर किया हुआ।
२ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.) ३ देखो 'बोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोरियोड़ी)

बोरु—देखो 'बोर' (रू. भे.)

बोरौ, बो रौ—देखो 'बौ'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ लळकत जांभळियां वाजण नै लागी, भूखां मरतोड़ी खळकत पड़ भागी। बो'रा थळ विहुणां तिल खळकत तरजै, बूढी चेली नै साधू ज्यौं बरजै। —ऊ. का.

उ०—२ कदै तौ पड़ग्यौ काळ अभागौ, गिण-गिण काढ्यौ दोरौ। कदै तौ ठाकर लाटौ लाव्यौ, कदै लाटग्यौ बो'रौ। —चेतमांनखौ

बोळणौ, बोळबौ—१ देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वौळणौ, वौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारायण रौ नांम ज्यां, नंह लीधौ निरणांह। वां जमवारौ बोळियो, ज्यूं जंगळ हिरणांह। —ह. र.

उ०—२ उतोलै ग्रैराक, बोळण खळ उबंबरा। वीरमदै वेंडाक, मेळ वचन नह मांनिया। —गो. रू.

उ०—३ लख वेरै पैंदास लख वीरम सुख बोळे, हैवर दोय हजारियां, सोहड़ां थट चौळै। सहस दसांही सांढियां, टीकायत टोळै, ऊ पण कीधी ग्रेकठी, गोरख इक गोळै। —वी. मा.

उ०—४ महल चौवार ग्रदवां तणा माळिया, दिनै बोळीजतै जुरा दहसी। मंडळ धू सथिर ग्रहराव सिर मेदणी, राव गांगौ कहै, त्यां गीत रहसी। —राव गांगौ

बोळणहार, हारौ (हारी), बोळणियौ—वि०।
बोळिप्रोड़ौ, बोळियोड़ौ, बोळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोळीजणौ, बोळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोलणौ, बोलबौ—१ देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोलणौ, बोलबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'वौळणौ, वौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बावड़ी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी। वेहती नदी रौ पांणी पीवण री ग्राखडी। भूखा री मुंहडौ देखण री ग्राखडी। दूध कौ बोलण री ग्राखडी। मारग हालतां टळवा री ग्राखडी ग्रऊत रौ धन लेवा री ग्राखडी। —रा. सा. सं.

उ०—२ वरस पांच बोळ्या पछी, तिसड़ै मेह न वुठ। व्हड़ पाखै सहू एकठा, हुआ मांणस मन मठ। —ढो. मा.

बोलणहार, हारौ (हारी), बोलणियौ—वि०।
बोलिप्रोड़ौ, बोलियोड़ौ, बोल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बोलीजणौ, बोलीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोळाई—देखो 'वौळाई' (रू. भे.)

बोलाई—देखो 'वोलाई' (रू. भे.)

बोळाऊ, बोलाऊ—देखो 'वौळावौ' (रू. भे.)

उ०—१ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सूंदरि साथि। हरीया जासैं हेकलौ, करि बोलाऊ हाथि। —ग्रनुभववांणी

उ०—२ बोलाऊ कहण लागा कंवरजी दुख मती करौ। मारू नै दाग द्यौ। थे पाछा चालौ। मारवणजी री तीजी बहन चंपा थांनै परणास्यां। —ढो. मा.

उ०—३ साचौ धणी विपत मैं सांमी, तेड्यां ग्रावै तीजी ताळ। विखमी वाट तणौ बोळाऊ, सांई तूं काळां तणौ सुगाळ। —ग्रोपौ ग्राढौ

उ०—४ सु रूंम-सुंम रै पातसाह इणां पीरजादां नूं तेरै कोड़ रुपियां री माल दियौ नै विदा किया, सु पाछा वळता जेसळमेर ग्राय उतरिया। ग्रसवार २०० पातसाह रा सेखरै साथै बोळाऊ, सू मूळराज रतनसी उणां नूं मारनै वित सोह लियौ। —नैणसी

उ०—५ ग्रलग राख ग्रारोह तसां कपड़ा वेतोडा, खरहंड नासा खांच रजक प्याले ग्रल रोडा। क्रमी क्रमाल कतार ग्रठी ग्राधी निस ऊपर, बोळाऊ बीटियां धुरज चोवड़ क्रस ध्रपर। —पा. प्र.

बोळाणौ, बोळाबौ—देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पायक ग्रस. रथ पंथ ग्रपारां, हाथी पांखरवंत हजारां। वहतै सीतकाळ बोळायौ, ग्रौ वैसाख ग्रजेगढ ग्रायौ। —रा. रू.

उ०— २ रुतियां दोय होवंदियां इक काळ बोळाई।
—केसोदास गाडण

उ०—३ होळै सीक बोल्या—हाकौ मत कर। मतै मतै लोग ढूकेला जको हाथै ग्राई चीज पांणी मांय सूं काढ लै जावेला। म्हैं कैवूं तौ थूं किसौ सांच मांनेला कै ग्रौ सगळौ धन-माल म्हारौ इज है। म्हारै साथै इज ग्रौ छळ व्हियौ। भोळी सेठांणी धोखा मैं ग्राय सगळी माया बोळाय दी। —फुलवाड़ी

उ०—४ सेठ अटकता अटकता बोल्या—कालै सूं ई आपरौ उणियारौ देख्यां पछै आंख्यां सांम्ही बीजळियां खिवै। माया रा लोभ मैं म्हैं तौ रूप री कदै गिनरत ई नीं करी। अर गिनरत करै जेड़ो रूप धर्कै ई नीं आयौ। पोहरौ देवण री भलाई मैं माया तो सगळी बोळाईजगी। फगत सोना रा म्हैं पारसनाथजी बच्या।
—फुलवाड़ी

उ०—५ तरै सोढ़ी कहै—थांहरै डील रौ पछेवड़ो १ मोनूं दीजै इण पछेवड़ा री दरसण करीस नै मोहल मैं बैठी रहीस। नै अेक औ मनभोळियौ डूंम अठै राखौ। औ मोहल नीचै ऊभो थांहरौ जस गावसी, सु सुणीस नै बैठी दिन बोळाइस। —नैणसी

बोळाणहार, हारौ (हारी), बोळाणियौ—वि०।
बोळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोळाईजणौ, बोळाईजबौ—कर्म वा०।

बोलाणौ, बोलाबौ—१ देखो 'बौळाणौ, बौळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलाणौ, बुलबौ' (रू. भे.)
उ०—साह गयौ दरगाह सूं, निज रहवासि अनेह। हितकर बोलाया हितू, गौसळ अंतर गेह। —रा. रू.
बोलाणहार, हारौ (हारी), बोलाणियौ—वि०।
बोलायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोलाईजणौ, बोलाईजबौ—कर्म वा०।

बोळायोड़ौ—देखो 'बौळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोळायोड़ी)

बोलायोड़ौ—देखो बौळायोडौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोलायोड़ी)

बोळावणौ, बोळावबौ—देखो 'बौळाणौ, बौळाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ एकण जीभ करि कितरा हेक गुण कह्या जाय। वळै मारवणी रै सातवीसी सहेल्यां छै तिकै पिण माहा सुघड़ छै, त्यां सूं मारवणी वात विगत करनै दिन बोळावै छै। —ढो. मा.
उ०—२ सू किमा-अेक सरदार जुवांन छै? पाकां पाकां वरियांमां नूं, अजरायलां नूं, खींवरां नूं, डांणहुलां डाकियां नूं, करड़दंतां नूं, लोह घड़ां लाह पर डाहलां नूं, लोली देता, कटारी उगराइ खाता, पचासां बोळावियां आवै आब वाढ उतरियां, जियांरा पांच-पांच हजार दांम पाटां-बंधाई रा पाटेदार खाय चुका छै।
—रा. सा. सं.
उ०—३ सजण बोळावै हूं वळी, ऊभी मंदिर पूठ। हिवड़ो काचा तार ज्यूं, गयो लड़ंगां तूट। —अग्यात
बोळावणहार, हारौ (हारी), बोळावणियौ—वि०।
बोळाविओड़ौ, बोळावियोड़ौ, बोळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बोळावीजणौ, बोळावीजबौ—कर्म वा०।

बोलावणौ, बोलावबौ—१ देखो 'बौळाणौ, बौळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)
उ०—मंदिर हूंतां ऊतरयउ, रवि ऊगंतइ वार। मांगणहार बोलाविया, पूछण तास विचार। —ढो. मा.
बोलावणहार, हारौ (हारी), बोलावणियौ—वि०।
बोलाविओड़ौ, बोलावियोड़ौ, बोलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बोलावीजणौ, बोलावीजबौ—कर्म वा०।

बोळावियोड़ौ—देखो 'बौळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोळावियोड़ी)

बोलावियोड़ौ—१ देखो 'बौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोलावियोड़ी)

बोळावी; बोळावू, बोळावौ—देखो 'बौळावौ' (रू. भे.)
उ०—१ बोळावू वळता कहै, ढोला पाछौ आय। मारू सु लहुंडी वहन, तो परणास्यांजाय। —ढो. मा.
उ०—२ बोळावू वेदल मनै, पुंगळ पुंहता जास। मारवणी दीवा-धरी, रहिया ढोला पास। —ढो. मा.

बोलाह—१ देखो 'बोल्लाह' (रू. भे.)
२ देखो 'वोल्लाह' (रू. भे.)

बोळियोड़ौ—१ देखो 'बोळियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बौळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोळियोड़ी)

बोलियोड़ौ—१ देखो 'बोळियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोलियोड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बौळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोलियोड़ी)

बोलींट, बोलींठ—देखो 'बोलींट' (रू. भे.)
बोलींटियौ, बोलींठियौ—देखो 'बोलींठ' (अल्पा., रू. भे.)
बोळी-दोळी, बोळचूं-दोळचूं—देखो 'ओळी-दोळी' (रू. भे.)
उ०—यण प्रकार हीरां सहेलियां मैं उछव करै छै। गवर कै बोळी-दोळी घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावै छै, जोड़ का जवांन की संगत पाऊ औ वर चावै छै। हीरां को रूप देख सुरंद मन मैं जांणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस नूं इं नारि नै महल मैं मांणै छै। —बगसीरांम प्रोहित री बात

बोल्लाह—सं. पु. [सं.] १ वह घोड़ा जिसके दुम और अयाल के बाल पीले हों। (शा. हो.)
२ देखो 'बोल्लाह' (रू. भे.)

बोवड़णौ, बोवड़बौ—क्रि. अ.—बरसना।

उ०—१ फुणाटां झाट वीजड़ां भड़ां ऊफणां, खुणाटां वोवड़ै थाट खेदी। बादगीरां हुंदा साद घट बीचतै, भीम मुगळां मिळै नाद भेदी। —राव भीमसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ घटा उमंडै अपार सेन वोवड़ै विकट घाट, गीळां सरां मार घूमै त्रमागळां लागा गाज। ब्रजनांथ इंद्र आगै राखी व्रज धार वूठां, सार वागां कोटौ 'देवै' राखियौ सकाज।
—महाराज देवसिंघ हाडा रौ गीत

वोवड़णहार, हारौ (हारी), वोवड़णियौ—वि०।
वोवड़िग्रोड़ौ, वोवड़ियोड़ौ, वोवड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वोवड़ीजणौ, वोवड़ीजबौ—भाव वा०।

वोवड़ियोड़ौ—भू. का. कृ.—वरसा हुआ।
(स्त्री. वोवड़ियोड़ी)

वोवार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

वोग्रौ—सं. पु.—करघे में नीचे की ओर का वह उपकरण जिसे कपड़े का वाना ठीक बैठाने के लिए पैर रखकर ऊपर-नीचे करते रहते हैं।

वोसरणौ, वोसरबौ—क्रि० स०[सं. व्युत्+सृज्] १ छोड़ना, त्यागना।
२ देखो 'विसरणौ विसरबौ' (रू. भे.)

वोसरणहार, हारौ (हारी), वोसरणियौ—वि०।
वोसरिग्रोड़ौ, वोसरियोड़ौ, वोसरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वोसरीजणौ, वोसरीजबौ—भाव वा०।

वोसराणौ, वोसराबौ—क्रि० स० [सं. व्युत्+सृज्] त्याग कराना, छुड़ाना।

उ०—जब एक जणै सौ मण चणां भिखारचां नैं लूंटाय दिया। दूजै सौ मण रा भूंगड़ा सेकाय दिया। तीजै सौ मण चणां नौं घूगरी रंधाय खुवाइ। चौथै सौ मण चणां रो रोट्यां कराय पाखती खाटौ करायनै जीमाया। पांच मैं सौ मण चणा वोसराय नैं हाथ लगावा रा त्याग किया। —भि. द्र.

२ देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

वोसराणहार, हारौ (हारी), वोसराणियौ—वि०।
वोसरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वोसराईजणौ, वोसराईजबौ—कर्म वा०।

वोसरायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ त्याग कराया हुआ, छुड़ाया हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोसरायोड़ी)

वोसरावणौ, वोसरावबौ—१ देखो 'वोसराणौ, वोसराबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू. भे.)

वोसरावणहार, हारौ (हारी), वोसरावणियौ—वि०।
वोसराविग्रोड़ौ, वोसरावियोड़ौ, वोसराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वोसरावीजणौ, वोसरावीजबौ—कर्म वा०।

वोसरावियोड़ौ—देखो 'वोसरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोसरावियोड़ी)

वोसरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोसरियोड़ी)

वोसरू—सं. पु. [सं. व्युत्+सर्ग] त्याग, परित्याग।

उ०—१ भव अनंत ममतां थकां, कीया देह संबंध। त्रिविध त्रिविध करी वोसरू, तिण सूं प्रतिबंध। —स. कु.

उ०—२ इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र। त्रिविध त्रिविध करि वोसरू, करू जनम पवित्र। —स. कु.

वोह—देखो 'बोह' (रू. भे.)

उ०—हुवै मंगळ धमळ दमंगळ वीर-हक, रंग तूठौ कमध जग रूठौ। सघण वूठौ कुसुम वोह जिण मौड़ सिर, विखम उण मौड़ सिर लोह वूठौ। —बांकीदास ग्रासियौ

३ देखो 'वौघ' (रू. भे.)

वोहड़णौ, वोहड़बौ—देखो 'बहोड़णौ, वहोड़बौ' (रू. भे.)

वोहड़णहार, हारौ (हारी), वोहड़णियौ—वि०।
वोहड़िग्रोड़ौ, वोहड़ियोड़ौ, वोहड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वोहड़ीजणौ, वोहड़ीजबौ—कर्म वा०।

वोहड़ाणौ, वोहड़ाबौ—देखो 'बहोड़ाणौ, बहोड़ाबौ' (रू. भे.)

वोहड़ाणहार, हारौ (हारी), वोहड़ाणियौ—वि०।
वोहड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वोहड़ाईजणौ, वोहड़ाईजबौ—कर्म वा०।

वोहड़ायोड़ौ—देखो 'बहोड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोहड़ायोड़ी)

वोहड़ियोड़ौ—देखो 'बहोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वोहड़ियोड़ी)

वोहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—१ छंद कहां त वोहता भावै, खरतर कौ पतियायौ। हिव की वेळा हिव न भाग्यौ, सकि रह्यौ कंदरायौ। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ अभैपुरा जेवंत सूर बागल नरेसर, अहरराव राठोड़ करत करहा दांनेसुर। जलखेड़िया कमधज सघ चंदेल सोहु बारिया, वरै सुमत वोहत सूरमा अ-लिखत पारक वीर कपाळिया।
—रा. वं. वि.

बोहतपत, बोहतपति, बोहतपती-सं. पु.—पाण्डु पुत्र अर्जुन का नाम।
उ०—पुस्तक नांखै परा, पंडित सोय बेद पुरांणां। भारथ भज्जै भीम, बोहतपत चूकै बांणां। —चौथ वीठू

बोहतर—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

बोहदीपी—देखो 'बोहदीपी' (रू. भे.)

बोहनांमी—देखो 'बहुनांमी' (रू. भे.)
उ०—ग्रायौ गुर जंभ अचंभ अजोनी, धरम धुराऊ दाखवियौ। संभराथळ सांमी अंतरजांमी, बोहनांमी हरि हेत कियौ। —गोकळजी

बोहरंगी—देखो 'बहुरंगी' (रू. भे.)

बोहरगत—देखो 'बौरगत' (रू. भे.)

बोहराळ—देखो 'बोहराळ' (रू. भे.)

बोहरूपी—१ देखो 'बहुरूपी' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहरूपी' (रू. भे.)

बोहरौ—देखो 'बौरौ' (रू. भे.)
उ०—ग्रा गाथा सुण नें मोजीरांमजी बोहरौ बोल्यौ—ग्ररै जसू उरहौ ग्राव रे घर तौ लूंट लियौ नें माथै वले डड करै। ज्यूं भीखणजी महाव्रत तौ पांचूं ई परहा भागा कहै। ग्रनें वलै चौमासी रौ दंड कहै छै। —भि. द्र.

बोहळणौ, बोहळबौ—१ देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळणौ, बोहळबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'वौळणौ, वौळबौ'।
बोहळणहार, हारौ (हारी), बोहळणियौ—वि०।
बोहळिग्रोड़ौ, बोहळियोड़ौ, बोहळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोहळीजणौ, बोहळीजबौ—कर्म वा०।

बोहळाणौ, बोहळाबौ—१ देखो 'बोहळाणौ, बोहळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)
बोहळाणहार, हारौ (हारी), बोहळाणियौ—वि०।
बोहळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बोहळाईजणौ, बोहळाईजबौ—कर्म वा०।

बोहळायोड़ौ—१ देखो 'बोहळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहळायोड़ी)

बोहळियोड़ौ—१ देखो 'बोळियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळियोड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'वौळियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहळियोड़ी)

बोहळौ—देखो 'बौळौ' (रू. भे.)
उ०—कहौ (है) बाट, राजा सुणौ, दीठां बोहळा देस। रांमत ख्याल विनोद रस, नारी निरूपम बेस। —ढो. मा.

बोहार - देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—उपज्या खिणस्या भी मुवा, ग्रौ जग कौ बोहार। सतगुर जोणि पिछांणियौ, मरै न दूजी बार। —परमानंद वणियाळ

बोहि, बोहित, बोहिति, बोहित्थ, बोहिथ—१ देखो 'बोहित्थ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
२ देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोही—देखो 'वही' (रू. भे.)
उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत विराजणी ग्राप। बोही बंगळो भणखावणौ, तौ विण घणौ 'प्रताप'। —जैतदांन बारहठ
उ०—२ सीतळ छांय कदम की छोडी, धूप सहा ग्रति भारा। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बोही प्रांण पियारा। —मीरां

बोहोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोहोनांमी—देखो 'बहुनांमी' (रू. भे.)

बोहोळौ—देखो 'बौळौ' (रू. भे.)

बोहौ—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बौ-सं. पु.—१ पत्ता, पान। (एका.)
२ तलवार, खड्ग। („)
३ पुत्र, बेटा। („)
४ जुलाहे का एक प्रकार का ग्रौजार विशेष जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठाते ग्रौर गिराते हैं। यह दो नरसलों का होता है जिसके ऊपर नीचे तागे बंधे रहते हैं ग्रौर जिनके बीच में तागे एक एक करके निकलते रहते हैं।
सर्व.—१ वह।
उ०—१ मुल्क री उतरादी कांकड़ माथै, गोडां-गोडां लग बरफ मैं ऊभै, उणै ग्रौ कागद पढ्यौ तौ उणरी छाती फूलीजगी। बौ सोचण लागौ—राजां फूल जिसी कोमळ ग्रर वज्जर जिसी कठोर, चांद जिसी फूटरी ग्रर चडिका सी विकराळ। ग्रठै उणरै सागै वा ई बंदूक लियां ऊभी व्हैती तौ किसोक नांमी रैवतौ। —ग्रमर-चूंनड़ी
उ०—२ जांणै बौ न जायौ जमदूत जाडै, पुरांणै ग्रढारै कियौ बूम पाडै। रससमे समरथ्थ कह्यौ सन्नमख्खं, समंवाद गातां ग्रहै पार सख्खं। —ना. द.
उ०—३ ग्रवरां नें सुख ग्रापरौ, बौ सुख मांनें ग्राप। वांनें इण धारण वहै, तै छांनें न 'प्रताप'। —जैतदांन बारहठ
२ उस।

उ०—मारग मैं भगतरिणयां रा डेरा आया । अेक रूपाळी भगतरण सूं चार-पांचे'क मोट्यार वोछरड़ायां करता हा । चौधरण रै सागै सागड़ी ही । वो वां मोट्यारां नै वरजिया कै किणी भली लुगाई सूं छेड़छाड़ करणी वेजा बात है । —फुलवाड़ी

रू. भे.—वो, वोव ।

वोगर, वोघर-सं. पु.—बाघ के शरीर की गंध ।

वोड़णो, वोड़बो-क्रि० अ०—१ निवृत्त होना ।

उ०—जिसै दखणी भिड़ै तांई आय वागा । तिण री मा'राज सूं मालम हुई सेवा सूं वोड़तां । पीछे मा'राज पौसाक करी अरू पाघ सदा जूड़ै सूं बाँधता सू उणदिन ऊंतावळ मैं बांध सकिया नहीं, यूं हीज पाघ मस्तक ऊपर देय कमर वांधी । —द. दा.

२ देखो 'वोड़णो, बोड़वो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़णो, बहोड़बो' (रू. भे.)

वोड़णहार, हारो (हारी), वोड़णियो—वि० ।

वोड़िओड़ो, वोड़ियोड़ो, वोड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोड़ीजणो, वोड़ीजबो—भाव वा० ।

वोड़ाणो, वोड़ाबो-क्रि० स०—१ निवृत्त करना ।

२ देखो 'वोड़ाणो, बोड़ाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ाणो, बहोड़ाबो' (रू. भे.)

वोड़ाणहार, हारो (हारी), वोड़ाणियो—वि० ।

वोड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वोड़ाईजणो, वोड़ाईजबो—कर्म वा० ।

वोड़ायोड़ो-भू० का० कृ०—१ निवृत्त किया हुआ ।

२ देखो 'वोड़ायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोड़ायोड़ी)

वोड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—१ निवृत्त हुवा हुआ ।

२ देखो 'बोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़िओड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोड़ियोड़ी)

वोछाड़, वोछार, वोछाळ—देखो 'वौछाड़' (रू. भे.)

वोढउर, वोढपुर, वोढपुरी-सं. पु.—नल राजा के द्वारा विजित एक नगर का नाम ।

उ०—महारास्ट्र कांमाक्ष आभीर, कच पापांतिक निरमदा नीर । वोढउर अनइ भलूं स्रीमाल, दक्षणदेसि जीपिआ भूपाल । —नळदवदंती रास

वोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

वोपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरिया हरि नांव की, पूंजी विन वोपार । खाई कब खूटै नही, पाई वसत अपार । —अनुभववांणी

उ०—२ बापड़ा नामतिक मिनख सांची कैयां करै है कै-दायजो देय'र वेटी री मौत मोल लेवणी है । धन रा ठोकाकड़ लोभी लोग मरज-मांदगी रै समै भी वहू री हीड़ो क्यूं करै ? वांरो तो औ वोपार है कै-मोकळी वहुवां मारै अर मोकळो धन कमावै । —दसदोख

उ०—३ हीरा री कीमत तो जमीं सूं बारै निकळियां पछै व्है । म्हारै साथै वोपार मैं इणरो थोड़ो घणो सीर राख देवूंला । खासी भली पूंजी भेळी व्हियां त्यारी दुकांन मंडाय देवूंला । आज तो थूं सेठां रै चिणायोड़ी प्याऊ माथै बैठो पगार लेवै, पछै थूं खुद गांव गांव प्याऊ लगावण जोग वण जावैला । —फुलवाड़ी

उ०—४ पड़ गहणा लियै दियै नह पाचा, सत्र खत नह दाखै ग्रह सार । सोड तणा वापार सरखो, वळ मांडिवो 'अखै' वोपार । —दुरसो आढो

वोपारी—देखो 'व्यपारी' (रू. भे.)

उ०—१ अैसी संगति साध की, ज्युं वोपारी हाट । जनहरिया जब गाहकु, सवद मिळावैं साट । —अनुभववांणी

उ०—२ तद खाफरो राजारै दरबार वडै लाजमै पोसाख सूं जाय मुजरो कियो । राजा पूछियो—तूं कुण छै ? अरज कीवो-वोपारी छूं, रांमवाजार मैं दुकांन छै, हजार दस वरस दिन मैं जगात रा भरू छूं, राजा फुरमावो किसै कारज आया छो सू कहो । —राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

उ०—३ तद राजा पूछी—साह ! थारी अरज कहि, खाफरै अरज करी—जीव रो आंमां पाऊं, कवल पाऊं तो अरज करूं । राजा फुरमायो—तूं तो वोपारी छै तै—मैं इसी जीव री किसी तकसीर छै ? काई जगात री चोरी आयी छै तो तकसीर माफ छै, म्हा रो कवल छै । —राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

वोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—१ नमो रूपनद्दा सवट्टा रसीली, नमो लच्छि रंभा नमो वोम लीली । नमो मोहणी कमळा मूख मूंनी, नमो धोम धूतारणी संम धूनी । —मा. वचनिका

ऊ०—२ वणे जेथ तेथां तोहि जोति वासी, प्रिथी वोम सांमद्र तूंही प्रकासी । नहीं ठोड़ तूं जेथ तैं दाख नेसं, अखै इंद ऊभा आदेसं आदेसं । —मां. वचनिका

वोर-सं. स्त्री.—बिल्ली या बकरी का ऋतुमति होने की क्रिया ।

वोरणो, वोरबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे.)

वोरणहार, हारो (हारी), वोरणियो—वि० ।

वोरिओड़ो, वोरियोड़ो, वोरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वोरीजणो, वोरीजबो—कर्म वा० ।

बौराणौ, बौराबौ—क्रि० अ०—१ बिल्ली या बकरी का गर्भधारण के लिए ऋतुमति होना।
२ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.) ३ देखो 'बौराणौ, बौराबौ' (रू. भे.)
बौराणहार, हारौ (हारी), बौराणियौ—वि०।
बौरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बौराईजणौ, बौराईजबौ—कर्म वा०।

बौरायोड़ी—सं. स्त्री.—ऋतुमति हुवी हुई बकरी या बिल्ली।

बौरायोड़ौ—१ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.) २ देखो 'बौरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौरायोड़ी)

बौरावणौ, बौराववौ—१ देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बौराणौ, बौराबौ' (रू. भे.)
बौरावणहार, हारौ (हारी), बौरावणियौ—वि०।
बौराविओड़ौ, बौरावियोड़ौ, बौराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बौरावीजणौ, बौरावीजबौ—कर्म वा०।

बौरावियोड़ौ—१ देखो बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बौरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौरावियोड़ी)

बौरियोड़ौ—देखो 'बुहारियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौरियोड़ी)

बौळणौ, बौळबौ—क्रि० अ०—१ पहुँचना।
२ भेजना।
३ उस पार जाना ४ लांघना, पार करना।
५ विदा होना।
६ व्यतीत होना, बीतना।
उ०—फूल कंथ रै कोट मैं राज करै छै। घणा दिन बौळिया। राज जमियौ। फूल कहण लागौ, 'म्हारै बाप री वैर, धरणि नुं मैं मारणौ।' ताहरां प्रधांन बोलियौ—राज, थांहरै घोड़ा नहीं। तौ कहियौ—घोड़ा ल्यौ। —लाखै फूलांणी री बात
७ खोना, गंवाना, गुमाना।
८ ठगा जाना व अन्य को ठगना।
क्रि० स०—९ उपभोग करना, आनन्द लूटना।
१० संहार करना, मारना।
११ नाश करना, नष्ट करना।
१२ व्यतीत करना; बीताना।
उ०—१ दत देता धन मांगतां, जगि सुणतां जसवास। वसुधा इण पर बौळिया, नवकोटी खट-मास। —गु. रू. बं.
उ०—२ मार सार मारकां इळा हुवै आपांणी, मुहि खग्गां हैं खुरां, जेह रक्खी तै मांणी। वर केता बौळिया, कळह केताई कुनारी, पुरख न परणी किणिह, आद जुग्गादि कुआरी। —गु. रू. बं.
१३ मृत प्राणी के शव को दफनाना।
१४ रक्षा करना, हिफाजत करना।
१५ देखो 'बोळणौ. बोळबौ' (रू. भे.)
बौळणहार, हारौ (हारी), बौळणियौ—वि०।
बौळिओड़ौ, बौळियोड़ौ, बौळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बौळीजणौ, बौळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।
बोळवणौ, बोळवबौ, बोह्ळणौ, बोह्ळबौ, बौळणौ, बौळबौ, बौळवणौ, बौळवबौ, वउळणौ, वउळबौ, वउलणौ, वउलबौ, बोह्ळणौ, वोह्ळबौ, वौळवणौ, बौळबौ, वौह्ळणौ, वौह्ळबौ—रू. भे.।

बौळवणौ, बौळवबौ—देखो 'बौळणौ, बौळबौ' (रू. भे.)
उ०—भी वरखा रित बौळवी, बीती सरद अदुंद। हिम रुत आधी बीचच्यौ, फेर प्रगट्टयौ फंद। —रा. रू.
बौळवणहार, हारौ (हारी,) बौळवणियौ—वि०।
बौळविओड़ौ, बौळवियोड़ौ, बौळव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बौळवीजणौ, बौळवीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बौळवियोड़ौ—देखो 'बौळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौळवियोड़ी)

बौलाऊ—देखो 'बौळावौ' (रू. भे.)

बौळाणौ, बौळाबौ—क्रि० स० (बौळणौ, बौळबौ क्रिया का प्रे. रू.) १ बिताना, गुजारना।
उ०—१ वरसाळौ इण पर बौळायौ, जोर न कौ वरसात जणायौ। उठी सरद सीतरित आई, सकळ दळै विणि सोंभ सभाई। —रा. रू.
उ०—२ वात हुई ग्रीखम बौळाई, ऊपर धुर वरखा रुत आई। असतखांन डर थयो अवितो, विचित्रां तणो सोच सुण वीतो। —रा. रू.
२ पहुंचाना।
३ विदा देना, विदा करना।
उ०—१ नर जांणै दिन जात है, दिन जांणै नर जाय। गई बौळावणहारियां, गणगोर बौळाय बौळाय। —अग्यात
उ०—२ दळकार हूठै दखणाध रा, दिल्ली फौजां निरबही। किरि जांण अपूठा बाहुडै, जांन बौळाए मांडही। —गु. रू. बं.
४ भिजवाना, भेजना।
५ पीछा करना या कराना, अनुगमन करना या कराना।
६ खोना, गुमाना।

७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया करना/कराना।
८ उपभोग करना/कराना, आनन्द लूटना/लूटाना।
९ उस पार भेजना १० लघाना, पार कराना या लांघना।
११ सहार करना/कराना, मारना/मरवाना।
१२ नाश करना/कराना, नष्ट करना/कराना।
१३ खर्च करना।
१२ रक्षा करना, हिफाजत करना।
१५ ठगाना।
१६ लौटाना, लौटने को प्रवृत्त करना।
१७ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)

वौळाणहार, हारौ (हारी), वौळाणियौ—वि०।
वौळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौळाईजणौ, वौळाईजबौ—कर्म वा०।
बोळावणौ, बोळावबौ, बोहळाणौ, बोहळाबौ, बोहळावणौ, बोहळाबौ, बौळाणौ, बौळाबौ, बौळावणौ. बौळावबौ, बौहळाणौ, बोहळाबौ, बौहळावणौ, बौहळावबौ, वउळाणौ, वउळावौ. वउलाणौ वउलाबौ, वउळावणौ, वउळावबौ, वळवणौ, वळवबौ, ववळाणौ, ववळाबौ, वुळाणौ, वुळाबौ, वुळावणौ, वुळावबौ, वोळाणौ, वोळाबौ, वोलाणौ, वोलाबौ, वोळावणौ, वोळावबौ, वोलावणौ वोलावबौ, वोहळाणौ, वोहळाबौ, वोहळावणौ, वोहळावबौ वौळावणौ, वौळावबौ, वौहळाणौ, वौहळाबौ, वौहळावणौ, वौहळावबौ—रू. भे.।

वौलाणौ, वौलाबौ—देखो 'वुलाणौ, वुलाबौ' (रू. भे.)

वौलाणहार, हारौ (हारी), वौलाणियौ—वि०।
वौलायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौलाईजणौ वौलाईजबौ—कर्म वा०।

वौलायोड़ौ—देखो 'वुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौलायोड़ी)

वौळायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ बिताया हुआ, गुजारा हुआ। २ पहुँचाया हुआ। ३ विदा दिया या किया हुआ। ४ भेजा हुआ या भिजवाया हुआ। ५ पीछा किया या करवाया हुआ, अनुगमन किया या कराया हुआ। ६ खोया हुआ, गुमाया हुआ। ७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया किया या करवाया हुआ। ८ उपभोग किया या करवाया हुआ, आनन्द लूटाया हुआ। ९ उस पार भेजा हुआ। १० लांघा हुआ, लंघाया हुआ, पार किया हुआ। ११ संहार किया/कराया हुआ, मारा/मरवाया हुआ। १२ नाश किया/कराया हुआ, नष्ट किया हुआ/कराया हुआ। १३ खर्च किया हुआ। १४ रक्षा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ। १५ ठगाया हुआ। १६ लौटाया हुआ, लौटाने को प्रवृत्त किया हुआ। १७ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौळायोड़ी)

वौळावणी—सं. स्त्री.—१ विदा देने की क्रिया, विदाई।
२ मृत प्राणी के शव की अन्त्येष्टी क्रिया।
३ गणगौर को विदा देने का दिन।
रू. भे.—बोळावणी, बौळावणी, वोल्हावणी।

वौळावणौ, वौळावबौ—१ देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ नर जांणै दिन जात है, दिन जांणै नर जाय। गई वौळावणहारियां, गणगौर वौळाय वौळाय। —अग्यात
२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)

वौळावणहार, हारौ (हारी), वौळावणियौ—वि०।
वौळाविओड़ौ, वौळावियोड़ौ, वौळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौळावीजणौ, वौळावीजबौ—कर्म वा०।

वौलावणौ, वौलावबौ—देखो 'वुलाणौ, वुलाबौ' (रू. भे.)

वौलावणहार, हारौ (हारी), वौलावणियौ—वि०।
वौलाविओड़ौ, वौलावियोड़ौ, वौलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौलावीजणौ, वौलावीजबौ—कर्म वा०।

वौळावियोड़ौ—१ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौळावियोड़ी)

वौलावियोड़ौ—देखो 'वुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री वौलावियोड़ी)

वौळावी, वौळावू, वौळावौ—सं. पु.—१ विश्राम स्थान, ठहरने का स्थान।
उ०—ओ हस नडौ निवांण, ओ हस कोडौ नेउरौ। ओ मो आही-ठांण, ओ वौळावौ सजणां। —पदमै चारण री बात
२ सम्मान पूर्वक विदा देने की क्रिया।
३ वह व्यक्ति जिसे राह में डाकुओं आदि से रक्षा के लिए साथ ले लिया जाता है, राह-रक्षक।
उ०—१ किय ढाळौ पूनागर कनें, आय खबर यण रैवियां। सौ तुरंग असी ऊठां सेहत, है वौळावौ खीचियां। —पा. प्र.
उ०—२ गैरी सूं दोय गैर, करां आप हूंतां करी। वौलावै री वैर वाप वैर हूंतां वहत। —पा. प्र.
उ०—३ अलवांणि आपार, मिळै कोळी मूंछाळा, सोढा मिळिया सरस वळै वौळावै वाळा। जत नायक जोइया, वेढ घायक वाडेला; गिर मिणिया गांमेत तेण वधा तूंवेला। —पा. प्र.
४ देखो 'वुलावौ' (रू. भे.)
उ०—आता कहै न आव, वळतां वौळावौ नहीं। तिण सज्जण घर पांव, वळै न दीजै, वींझरा। —वींझरै अहीर री बात

रू. भे.—वोळाऊ, बोळावौ, बोळावू, बोळावौ, बौळायत; बौळाऊ, वउळावू, वळावौ, वौळवौ, वौळावू, वोळावौ, वौल्हावौ।

वौळियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ पहुँचा हुआ। २ भेजा हुवा। ३ उस पार गया हुआ। ४ लांघा हुआ, पार किया हुआ। ५ विदा हुवा हुआ। ६ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ। ७ खोया हुआ, गंवाया हुआ, गुमाया हुआ। ८ ठगाया हुआ या अन्य को ठगा हुआ। ९ उपभोग किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ। १० संहार किया हुआ, मारा हुआ। ११ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ। १२ व्यतीत किया हुआ, बिताया हुआ। १३ मृत प्राणी के शव को दफनाया हुआ। १४ रक्षा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ।
१५ देखो 'बोलियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौळियोड़ी)

वौ'ळौ—देखो 'बौ'ळौ' (रू. भे.)

वौळ्हाणौ, वौळ्हाबौ—१ देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)
उ०—कोई वीर बालक आपरै पिता री वैर लैण सारू सझियौ सो उण बाळक वीर नै समझावै कि वरख पांच तौ वौळ्हाया अनै छठौ जांण री अबै जेझ नही इण छट्ठै वरख पछै सातमौ वरख लागसी तद थूं घोड़ै असवार हो जासी जद थारा पिता री वैर लेजै। —वी. स. टी.
३ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)
वौळ्हाणहार, हारौ (हारी), वौळ्हाणियौ—वि०।
वौळ्हायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौळ्हाईजणौ, वौळ्हाईजबौ—कर्म वा०।

वौल्हाणौ, वौल्हाबौ—देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)
वौल्हाणहार, हारौ (हारी), वौल्हाणियौ—वि०।
वौल्हायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौल्हाईजणौ, वौल्हाईजबौ—कर्म वा०।

वौळ्हायोड़ौ—१ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौळ्हायोड़ी)

वौल्हायोड़ौ—देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौल्हायोड़ी (रू. भे.)

वौळ्हावणी—देखो 'वौळावणी' (रू. भे.)

वौळ्हावणौ, वौळ्हावबौ—१ देखो 'वौळाणौ, वौळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)
वौळ्हावणहार, हारौ (हारी), वौळ्हावणियौ—वि०।
वौळ्हाविओड़ौ, वौळ्हावियोड़ौ, वौळ्हाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौळ्हावीजणौ, वौळ्हावीजबौ—कर्म वा०।

वौल्हावणौ, वौल्हावबौ—देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)
वौल्हावणहार, हारौ (हारी), वौल्हावणियौ—वि०।
वौल्हाविओड़ौ, वौल्हावियोड़ौ, वौल्हाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौल्हावीजणौ, वौल्हावीजबौ—कर्म वा०।

वौळ्हावियोड़ौ—१ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौळ्हावियोड़ी)

वौल्हावियोड़ौ—देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौल्हावियोड़ी)

वौळ्हावौ—१ देखो 'वौळावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

वौल्हावौ—देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

वौव—देखो 'वौ' (४) (रू. भे.)

वौवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

वौवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

वौवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

वौह—१ देखो 'वोह' (रू. भे.)
उ०—मुख तैं मीठा बोलणा, अंदर भरिया खार। वाकै कूड़'र कपट का, हरिया वौह वौहवार। —अनुभववांणी
२ देखो 'बौध' (रू. भे.)

वौहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

वौहनांमी—देखो 'बहुनांमी' (रू. भे.)

वौहरणौ, वौहरबौ—क्रि० अ०—१ घूमना, फिरना।
२ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)
उ०—माया सौदै मांनवी, केता वौहरै हाट। हरीया हरि सौदै तणी, ताहि न जांणै साट। —अनुभववांणी
३ देखो 'व्यवहारणौ, व्यवहारबौ' (रू. भे.)
वौहरणहार, हारौ (हारी), वौहरणियौ—वि०।
वौहरिओड़ौ, वौहरियोड़ौ, वौहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहरीजणौ, वौहरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वौहराणौ वौहराबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)
वौहराणहार, हारौ (हारी), वौहराणियौ—वि०।
वौहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहराईजणौ, वौहराईजबौ—कर्म वा०।

वौहरायोड़ौ—देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौहरायोड़ी)

वौहरावणौ, वौहरावबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)
वौहरावणहार, हारौ (हारी), वौहरावणियौ—वि०।
वौहराविओड़ौ, वौहरावियोड़ौ, वौहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहरावीजणौ, वौहरावीजबौ—कर्म वा०।

वौहरावियोड़ौ—देखो 'वुहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौरावियोड़ी)

वौहरौ—देखो 'बौ'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ अला हम विणाजारा पूरै साह का, विणज करण वोपारौ ; अला खोटा खोटा विणज वौहरां, मांणिकां दावौ पारौ। —दीन सुदरदी

उ०—२ साच सिदक जमलै वौहरां, विसनौ विसन जपाय। विसन जप्यां सुख सांपजै, जम गंजण ना छुटाय : —वील्होजी

वौहळाणौ, वौहळाबौ—१ देखो 'वोळाणौ, वोळावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळाणौ, वोळावौ' (रू. भे.)

वौहळाणहार, हारौ (हारी), वौहळाणिबौ—वि०।
वौहळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहळाईजणौ, वौहळाईजबौ—कर्म वा०।

वौहळायोड़ौ—देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौहळायोड़ी)

वौहळावणौ, वौहळावबौ—१ देखो 'वौळाणौ, वौळावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळाणौ, वोळावौ' (रू. भे.)

वौहळावणहार, हारौ (हारी), वौहळावणियौ—वि०।
वौहळाविओड़ौ, वौहळावियोड़ौ, वौहळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहळावीजणौ, वौहळावीजबौ—कर्म वा०।

वौहळावियोड़ौ—१ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौहळावियोड़ी)

वौहळौ—देखो 'बौ'ळौ' (रू. भे.)

वौहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ मुख तैं मीठा वोलणा, अंदर भरिया खार। वाकै कूड़'र कपट का, हरिया वौह वौहवार। —अनुभववांणी

उ०—२ हरिया अैसा कौ मिळै, साहिब का सचियार। भूठ न वाकै कपट कौ, रंच नही वौहवार। —अनुभववांणी

वौहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

वौहरारी; वौहारी—देखो व्यवहारी' (रू. भे.)

वौहि, वौहित, वौहिति, वौहित्य, वौहिथ—देखो 'बोहित' (रू. भे.)

वौहरौ—देखो 'बौ'रौ' (रू. भे.)

वौहोवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—बाजै हाक वीर धुन वेदां, चवै महारिख मंगळाचार। धड़ भड़ बेहड़ आडियै धारै; वर लाडियै हुओ वौहोवार।
—दूदा नगराजोत री गीत

व्यंग, व्यंग्य—सं. पु. [सं. व्यंग्य] १ कोई लगती हुई बात. ताना, चुटकी।
२ व्यंजना शक्ति से प्रकट होने वाला साधारण अर्थ से कुछ विशिष्ट अर्थ।

रू. भे.—विंग, व्यंग।

व्यंगुळ, व्यंगुल—सं. पु. [सं. व्यंगुल] एक अंगुल का साठवां भाग।

व्यंजक—वि० [सं.] प्रकट करने वाला, जाहिरकर्त्ता।
सं. पु. [सं. व्यंजक:] १ नाटकीय हाव भाव द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटन।
२ संकेत, चिन्ह, निशान।

व्यंजण, व्यंजन—सं. पु. [सं. व्यंजन] १ व्यक्त होने या प्रकट करने का भाव या क्रिया।
२ छप्पन प्रकार के भोजन।

उ०—१ अर वरात रा प्राघूंणकां नूं महानस मैं वुलाय खटरस मय नांना व्यंजनां रौ व्रात पूरण त्रिप्ति चखावियौ। —वं. भा.

उ०—२ दादू आदर भाव का, मीठा लागै मौठ ! विण आदर व्यजण वुरा, जीमण वाळा ठोंठ। —दादूवांणी

उ०—३ अति व्यंजन पळ अन्न, रचै जीमण वंछित रस। आसव छकि आपांन, वणै जदुवंस जथा वस। —व. भा.

३ अच्छा भोजन, वढ़िया खाद्य पदार्थ।

उ०—रावल भगति भोजन तणी रे, सहूअ कराई सभ। रूड़ी व्यजन रसवती रे, आरोगण आलिम कज्ज रे। —प. च. चौ.

४ स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, अक्षर।
५ अंग, अवयव।

रू. भे.—वंजण, विंजण, विंजन, व्यंजन, व्यजन, वंजण, विंजण, विंजन, व्यिंजण, व्यिंजन।

व्यंजनदवादसी, व्यंजनद्वादसी—सं. स्त्री. [सं. व्यंजनद्वादशी] मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष, इस दिन विष्णु की पूजा कर अन्नकूट की तरह ही व्यंजन बना कर विष्णु को भोग लगाया जाता है।

व्यंजनहारिका—सं. स्त्री. [सं.] एक अमंगलकारी शक्ति जो नव वधुओं के द्वारा बनाये गये भोजन उठा ले जाती है। (पुराण)

व्यंजना—सं. स्त्री. [सं.] १ प्रकट करने की क्रिया या भाव।
२ शब्द शक्ति के तीन भेदों में से वह शब्द शक्ति जो मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त मूल में छिपे हुए अकथित अर्थ को द्योतित करती है अर्थात् अभिधा व लक्षणा शक्तियों द्वारा अपने-अपने अर्थ को प्रकट करने के बाद व्यंगार्थ का बोध कराने वाली शक्ति।

रू. भे.—व्यंजना।

व्यंतर—सं. पु.—१ भूत-प्रेत योनि विशेष या उक्त योनि के भूत।

२ एक देवयोनि विशेष या उक्त योनि के देव।

उ०—१ भवनपति व्यंतर नैं जोतसी, भेद विमांणिक पावै। सुर वर तें मिलनैं सगला, नांम निनांणू आवै। —जयवांणी

उ०—२ भुवनपति वीस इंद्रै मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार। जोइ सहु दस वेमांणिय जुडया जी, चौसठ इंद्र सुविचार। —वृस्त.

उ०—३ बावन वीर किये अपनै वस, चौसट्ठि योगिनी पाय लगाइ। डाइण साइणि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—वितर, वेतर, वेंतर,।

अल्पा.,—वितरियौ, व्यंतरियौ।

व्यंतरियौ—देखो 'व्यंतर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—असुरादिक दस होय वांण व्यंतरिया अट्ठ, जोइस पंच वेमांणिय दुविहा सुत्तें दिट्ठ। पनरै भेदें सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार; तनुमांनादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार। —वृस्त.

व्यंद-सं. [सं. बिंदु] १ वीर्य, बीज।

उ०—भूमि परेखौ हौ नरां, कहा परेखौ व्यंद। भुंय बिन भला न नीपजै, कण त्रण तुरी, नरिंद। —जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

२ देखो 'वींद' (रू. भे.)

उ०—रीझवै हसे रिखेस, देखवै रजै दिनेस। अभि लोह धार इंद, वारंगां वरंत व्यंद। —सू. प्र.

व्यंदु—देखो 'बिंदु' (रू. भे.)

व्यंध्य—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—अथ मदावर लोह नी सांकल त्रोडि, आलांनस्तंभ मोडि, हस्तिसाल भांजि, पउंतार गाजइ, कमाड फाडइ, मठ मंदिर पाडइ हस्ति नी यूथ स्मरइ, व्यंध्य मनमाहि धरइ, वन माहि सांचरइ। —व. स.

व्यंब—देखो 'बिंब' (रू. भे.)

उ०—बिचै नासिका अग्र मोती बिराजै, मनू राजकै द्वार सुक्र समाजै। बणे होट नीकै सुरंग विसाळं, लसै विद्रमी कोमळं व्यंब लालं। —बगसीरांम प्रोहित री बात

व्यंस-सं. पु. [सं. व्यंश] १ सिंहिका एवं विप्रचित्ति के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

२ इन्द्र-शत्रु, एक दानव।

व्यउ—देखो 'बिवाई' (रू. भे.) (अमरत)

व्यक्त-वि. [सं.] १ प्रकट किया हुआ, जाहिर किया हुआ, प्रकटित।

उ०—मिथ्याद्रस्टि तणी उत्थापक, व्यक्त गुणे सुविलासी। वलि विरक्त मोहादिक भावे, एक युक्ति अभ्यासी। —वि. कु.

२ साफ, स्पष्ट।

उ०—.........इसिउ स्रीगौतमस्वांमि रिखि तपनउ निधांन, क्रियांनउ भंडार, गुणनउ परमावधि, करुणा नउ निधि, वात्सल्य नउ समुद्र, नसांजाल व्यक्तां दीसइ, अस्थिबंध ढीला ढलहलता जिसा गांमटि अजांणि सूत्रधारि कास्ट मेलिउ सालसंचउ ठगठगतउ मेलीउ हुउ जिसिउ। —व. स.

रू. भे.—व्यगत।

व्यक्ति, व्यक्ती-सं. स्त्री. [सं. व्यक्ति] १ व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होने या करने की क्रिया या भाव।

सं. पु.—२ मनुष्य, आदमी।

उ०—गुनाली गाऊं मैं पुनि न पिछताऊं पथ परूं, कुपथ्यादी काढूं धरम पथ थाढूं गथ धरूं। प्रतिग्या लेता हूं पुरुख ब्रह्म वेत्ता स्रुत पगूं; भगा सत्ती वक्ती पिसुनछळ व्यक्ती हुत भगूं। —ऊ. का.

३ पिंड, शरीर।

रू. भे.—व्यगति, व्यगती।

व्यग्र-वि. [सं.] १ व्याकुल, उद्विग्न, परेशान, दुःखी।

उ०—गोबर के गननाथन की गुन; गाथ करी सु वृथा गुनगारयौ। गायन व्यग्र प्रलाप गह्यौ जनु, ऊंठ के अग्र अलाप उचारयौ। —ऊ. का.

२ भयभीत, डरा हुआ, घबराया हुआ।

३ किसी कार्य में लीन, आसक्त, मग्न।

व्यग्रता-सं. स्त्री. [सं. व्यग्र+ता प्र.] व्यग्र होने की अवस्था या भाव।

व्यजण, व्यजणक, व्यजन-सं. पु. [सं. व्यजन] १ पंखा। (डिं. को.)

२ पंखे आदि से हवा खाने की क्रिया।

व्यतिकर, व्यतिकार-सं. पु. [सं.] १ संमिश्रण, मिलावट।

२ सम्बन्ध, संसर्ग, लगाव।

३ आघात, चोट।

४ घटना।

५ अवसर, मौका।

६ पारस्परिक सम्बन्ध।

७ आपसी लेन-देन, अदल-बदल।

व्यतिक्रम, व्यतिक्रमण-सं. पु. [सं. व्यतिक्रम] १ क्रम में होने वाला उलट-फेर, क्रम का विपर्यय।

२ व्रत भंग की इच्छा, अतिक्रम। (जैन)

३ व्रत भंग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करने की क्रिया। (जैन)

उ०—अतिक्रम इच्छा जांणियै, व्यतिक्रम वस्तु-प्रसंग। अतिचार देस भंग है, अनाचार सब भंग। —जयवांणी

४ आपत्ति, संकट, तकलीफ।
५ पापकर्म, असत्यकर्म।
६ जुर्म, अपराध।
७ उल्लंघन, अवहेलना।
८ लापरवाही।
९ विपरीत होने की अवस्था; वैपरीत्य।
रू. भे.—वितिक्रम।

व्यतिक्रमी–वि.—व्यतिक्रम करने वाला।
रू. भे.—वितिक्रमी।

व्यतिक्रमणौ, व्यतिक्रमबौ–क्रि० स०—व्यतिक्रमण करना।
उ०—सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थो जिवारो जी। ईसानेंद्र करावियउ, ए थीजउ उद्धारो जी। —स. कु.
व्यतिक्रमणहार, हारौ (हारी), व्यतिक्रमणियौ—वि०।
व्यतिक्रमिश्रोड़ौ, व्यतिक्रमियोड़ौ, व्यतिक्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।
व्यतिक्रमीजणौ, व्यतिक्रमीजबौ—कर्म वा०।

व्यतिक्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—व्यतिक्रमण किया हुआ।
(स्त्री. व्यतिक्रमियोड़ी)

व्यतिपात–सं. पु. [सं. व्यतीपात] १ सम्पूर्ण रीति से प्रस्थान या सम्पूर्णत: विच्छेद।
२ बड़ा भारी प्राकृतिक उत्पात या उपद्रव।
३ असम्मान, अपमान।
४ विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से सत्रहवां योग, जिसमें शुभ कार्य एवं यात्रादि निषिद्ध है। ५ भारी संकट-सूचक अपशकुन।
६ अमावस्या के दिन रविवार, स्रवण धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, या मृगशिरा नक्षत्र होने पर होने वाला एक प्रकार का योग विशेष, जिस दिन गंगा-स्नान का बड़ा फल होता है।
रू. भे.—वितिपात, वितीपात, व्यतीपात।

व्यतिरेक–सं. पु.—१ अंतर, भेद, फर्क।
उ०—बाबल रै पुर हूंत बहू, बर-पुर मैं व्यतिरेक। बिधवा मौ पीहर बहव, है न सासरै हेक। —रैवतसिंह भाटी
२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें उपमेय में उत्कर्ष या उपमान में अपकर्ष दिखाकर उपमेय की विशेषता का वर्णन हो।

व्यतीत–वि. [सं.] १ मरा हुआ, मृत।
२ त्यागा हुआ, परित्यक्त।
३ तिरस्कृत, उपेक्षित।
४ गुजरा हुआ, गया हुआ, समाप्त।
उ०—१ भादरवै ले घूड़, मोछवां गोगा मांडां, । पेचौ पीऊ साज, चढावा खीर'र खांडां। पाऊस हुआ व्यतीत; टिकै ना टीब ठिकांणै। दंत-गत भाग दौड़, हेड़ रमबा हल मांणै। —दसदेव
उ०—२ घोड़ौ मांणस जे थकै चढियौ सो ही गुड़ मेळौ हुवौ। इसी इसी वातां कही सो रावजी सुण कर बहुत नाराज हुआ। रात तौ फिकर करतां भांज-घड करतां करतां व्यतीत कीवी। परभात पोह पीळी री नकारौ हुवौ। —डाढाळा सूर री वात
उ०—३ वोलइ तै आगलि वांनर कूदतौ रे, आवौ मन ना मांनीता मीत रे। आगति स्वागति करिस्युं थांहरी रे, रजनी माहरै प्यारि करौ व्यतीत रे। —वि. कु.
उ०—४ यूं करतां बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आया रोजीना अवाज करै छै। जै सांई री पलक मैं खलक बसै छै। सौ अेक दिन कंधार रौ बादसाह थौ सौ इण फकीर री बात सुण मन मैं विचारी अर भिस्ती नूं कही-जै थारै बादसाह नूं जाय अरज कर-हमको बरस बारह व्यतीत हुवै, अब क्या हुकम है? इण भांति भिस्ती नूं कई बार कही पण भिस्ती कहै-मोसर नहीं। और अरज करणी आप चाहै नही। —सांई री पलक में खलक
रू. भे.—वितीत, बीतीत, व्यतीत, वतीत, बदीत, वदीतउ, वदीतै, वदीतौ, वितीत, वितीति।

व्यतीतणौ, व्यतीतबौ–क्रि. अ.—१ मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।
२ त्यागना, छोड़ना।
३ तिरस्कृत होना, उपेक्षित होना।
४ गुजरना, समाप्त होना।
क्रि० स०—५ मारना, संहार करना।
६ त्याग करने को प्रवृत्त करना, छुड़ाना।
७ गुजारना, समाप्त करना।
८ तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।
व्यतीतणहार, हारौ (हारी), व्यतीतणियौ—वि०।
व्यतीतिश्रोड़ौ, व्यतीतियोड़ौ व्यतीत्योड़ौ—भू० का० कृ०।
व्यतीतीजणौ, व्यतीतीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
व्यतीतणौ, व्यतीतबौ, वतीतणौ, वतीतबौ—रू. भे.।

व्यतीतियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त हुवा हुआ। २ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ३ तिरस्कृत हुवा हुआ, उपेक्षित हुवा हुआ। ४ गुजरा हुआ, समाप्त हुवा हुआ। ५ मारा हुआ, सहार किया हुआ। ६ त्याग करने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ। ७ गुजारा हुआ, समाप्त किया हुआ। ८ तिरस्कार किया हुआ, उपेक्षा किया हुआ।
(स्त्री. व्यतीतियोड़ी)

व्यतीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)
उ०—व्यतीपात वैध्रति वली; सूरिजनी संक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

व्यतीपातव्रत–सं. पु. [सं.] किसी शुभदिन के व्यतीपात को स्वर्ण निर्मित सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति की पूजन क्रिया।

वि० वि०—ज्यौतिष शास्त्रानुसार व्यतीपात के प्रारंभ व समाप्ति सूर्य व चन्द्रमा के गणित से होती है। सूर्य के क्रोधावश पृथ्वी पर गिरे आंसुओं से व्यतीपात की उत्पत्ति हुई। शुभ कार्यों में इसका त्याग व लोकोपकार कार्यों में इसका ग्रहण होता है।

व्यतीपाति, व्यतीपाती–वि.—१ उपद्रव करने वाला।

२ प्रस्थान किया हुआ।

३ अपमान किया हुआ, असम्मान किया हुआ।

रू. भे.—वितीपाती।

व्यथा–सं. स्त्री. [सं.] १ रोग, बीमारी। (ह. नां. मा.)

२ भय, डर।

३ चिन्ता, दुख।

४ कष्ट, दुःख।

उ०—१ आखरी लाख मांनै न औ, खाक करी मम खाल री। कुण सुणै साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल री। —ऊ. का.

उ०—२ कहती संकूं मन व्यथा, बिन कहियां तन ताप। मो जोबन मैमत हुवौ, विरहण करै विलाप। —अग्यात

उ०—३ नहिं सही जाय जद ह्वै निडर; कही जाय मोटी कथा। बय बखत अमोलक ह्वै व्रथा, विमळ हियै खोटी व्यथा। —ऊ. का.

५ विकलता, व्याकुलता, परेशानी।

६ पीड़ा, वेदना, दर्द।

उ०—१ दादू सिर करवत बहै, अंग परस नहिं होइ। मांहि कलेजा काटियै, यहु व्यथा न जांणै कोइ। —दादूबांणी

उ०—२ सखी सुहागिनि सब कहैं, पिव सौं परस न होइ। निस वासर दुख पाइयै, यहु व्यथा न जांणै कोइ। —दादूबांणी

रू. भे.—बिथा, ब्यथा, विथ, विथा।

व्यथित–वि० [सं.] १ विकल, व्याकुल, परेशान।

२ डरा हुआ, भयभीत।

३ दुःखी, पीड़ित, कष्टमय।

४ रोगी, बिमार।

रू. भे.—बिथित, ब्यथित, विथित।

व्यथाधर, व्यथाधारी—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.) (नां. मा.)

व्यभचार, व्यभिचार, व्यभीचार–सं. पु. [सं. व्यभिचारः, व्यभीचार]

१ दूषित आचरण, बदचलनी।

२ रति क्रीड़ा, संभोग, भोग।

उ०—मि वरियु वीरसेन सुत आदि, हंस तणै वचनै उल्हादि। देव तह्यौ पित नि ठारि, पुत्री साथि सु व्यभचार। —नळाख्यांन

३ सतो न होने की स्थिति या भाव, असतीत्व।

४ स्त्री का पर-पुरुष से व पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध।

उ०—दादू मरणा खूब है, निपट पूरा व्यभिचार। दादू पति को छोड कर, आंन भजै भरतार। —दादूबाणी

५ कामपिपांसा को अनुचित रूप से शान्त करने की क्रिया या भाव।

६ अनियमितता, अपवाद।

७ अपराध, दोष। ८ असत्य, झूठ।

रू. भे.—बिभचार, बीभचार, विभचार, वीभचार।

व्यभिचारी–वि० [सं. व्यभिचारिन्] (स्त्री. व्यभिचारण, व्यभिचारणी, व्यभिचारिण, व्यभिचारिणी) १ व्यभिचार करने वाला, पतित।

उ०—जन्म लगें व्यभिचारणी, नख सिख भरी कळंक। पलक एक सन्मुख जळी, दादू धोयै अंक। —दादूबांणी

२ पथभ्रष्ट, कुपथ-गामी।

३ दोषी, अपराधी।

४ परस्त्री-गामी।

उ०—छत्री धरम छोडियौ छेलां, चौड़ै हुय व्यभिचारी रे। पर-ण्योड़ी रै पास न पौढे, पातर लागै प्यारी रे। —ऊ. का.

५ रतिक्रीड़ा करने वाला संभोग करने वाला, भोगी।

६ असत्य, झूठा।

सं. पु.—१ वह स्त्री या पुरुष जो पर-पुरुष या पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखता हो।

२ बदचलन, दूषित आचरण।

रू. भे.—बिभचारी, भिभचारी, विभचारी।

व्यभ्यास–सं. पु. [सं. वि=विशेष+अभ्यास] विशेष अभ्यास।

उ०—प्रमांन सास्त्र मात्र कौ स्वपंडतं स्वयम् पढै, गुनीन अग्र मन्य ह्वै व्यभ्यास अन्य मैं बढै। प्रकांड पाठ पाठ के त्रिकरमकांड कौ करै, तनै त्रई उपासनां ब्रह्मांड ग्यांन तैं तरै। —ऊ. का.

व्यय–सं. पु. [सं. व्ययः] १ उपभोग के कारण वस्तु में आने वाला ह्रास, घटौती।

२ निर्माण में होने वाला खर्च, लागत।

३ नाश, बरबादी।

४ मद विशेष का खर्च।

५ लग्न से ग्यारहवां स्थान। (फलित ज्योतिष)

६ वृहस्पति की गति या भार के विचार से एक वर्ष या संवत्सर।

७ एक नाग का नामान्तर।

व्ययकरण, व्ययकरणि, व्ययकरणिक, व्ययकरिण, व्ययकरिणि, व्यय-करिणिक–सं. पु. [सं. व्यय-कणिक] व्यय या भुगतान अधिकारी।

उ०—१ राजा युवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघु सामंत तलवर तंत्रपाल चतुरनीतिक ताडकवनि मंत्रि महामंत्रि ग्रहवाहक स्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धरमाधिक सौवरणक देवक मंडलक गडुरक उस्टक इस्टिकाक घोडकाक यमक पुरोहित दंडनायिक········। —व. स.

उ०—२·········स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक धरमाधिकरिणिक सौवरणकरिणिक देवकरिणिक मंडलकरिणिक उस्ट्र-करिणिक इस्टिकारिणिक यमककरिणिक पुरोहितकरिणिक दंडनायिक सेनापति पउंतार आरोहक प्रतीकारआरिक भांडागारिक मांणिक्यभांडागारिक········। —व. स.

रू. भे.—वयगरणी, वयगरणीक, वयगरणु, वयगरणौ।

व्यरथ–वि. [सं. व्यर्थ] १ फजूल, फालतू, योंही।

२ अर्थ रहित, मतलब रहित, निरर्थक।

३ लाभविहीन।

रू. भे.—विरथ, विरथ।

व्यरथता–सं. स्त्री. [सं. व्यर्थता] व्यर्थ होने की स्थिति या भाव।

व्यलागणौ, व्यलागबौ—देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

उ०—सत्र सामत व्यळागौ सारै, तळ छळि घण लाल अत ग। पांव प्यळोभ थसि स्रगि बसियौ, नागणि नैं डरि कहै हुत नाग। —चतुरा रांमावत राठौड़ रौ गीत

व्यलागणहार, हारौ (हारी), व्यलागणियौ—वि०।

व्यलागिओड़ौ, व्यलागियोड़ौ, व्यलाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यलागीजणौ, व्यलागीजबौ—भाव वा०।

व्यलागियोड़ौ—देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्यलागियोड़ी)

व्यळीक, व्यलीक–वि. [सं. व्यलीक] १ झूठा, असत्य।

२ अप्रिय, अप्रीतिकर।

सं. पु. [सं. व्यलीकं] १ कारण, जिससे दुःख हो।

२ जुर्म, अपराध, दोष।

३ कपट, धोखा।

४ असत्यता, झूठाई।

[सं. व्यलीकः] ५ लंपट या कामी पुरुष।

६ वह पुरुष जो गुदा मैथुन कराने का आदि हो।

व्यवधांन–सं. पु. [सं. व्यवधान] १ बीच में आड़ी आकर आड़ करने वाली वस्तु।

२ रोक, रुकावट।

३ भेद, रहस्य।

४ छिपाव, दुराव।

व्यवसाइ, व्यवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो व्यवसायी' (रू. भे.)

व्यवसाइयौ, व्यवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सुभट नैं आयुधि, सेवक नी स्वांमिभक्ति, कलावंत नी कला, व्यवसाईया नी व्यवसायि, प्रथ्वीपति नी न्यायि, भाग्यवंत नइ भाग्योदयि, एतला प्रदेस माहरी वासभूमि········। —व. स.

उ०—२ भोई सोई भरडिया, सोनी नइं सूतार। व्यवसाईया सहू जातिना, जे जोईइ तिणी वारि। —मा. कां. प्र.

व्यवसाय–सं. पु. [सं. व्यवसाय] १ जीविका, पेशा।

२ उद्योग, प्रयत्न, कोशिश।

३ कार्य, धन्धा।

४ व्यापार।

५ अभिप्राय, मतलब।

६ कार्य का सम्पादन। ७ विष्णु का नामान्तर। ८ शिव का नाम।

रू. भे.—विवसाइ, विवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाय, व्योसाय, विवसाइ, विवसाई, विवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाई।

व्यवसायि, व्यवसायी–सं. पु. [सं. व्यवसायिन्] १ व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

२ वह व्यक्ति जो पेशेवर हो।

३ उद्यम या प्रयत्नशील व्यक्ति।

४ व्यापार करने वाला, व्यापारी।

५ किसी कार्य का अनुष्ठानकर्त्ता व्यक्ति।

६ व्यवसाय करने की क्रिया।

रू. भे.- विवसाइ, विवसाई, विवसाइ, विवसाई, विवसायी, व्यवसाइ, व्यवसाई।

अल्पा.,—विवसाइयौ, विवसाईयौ, विवसायौ, व्यवसाइयौ, व्यवसाईयौ।

व्यवस्था–सं. स्त्री [सं.] १ किसी निर्धारित कार्य की शास्त्रोक्त विधि।

२ चीजों वस्तुओं को सजाकर अलग-अलग रखने की क्रिया।

३ स्थिति, हालत, दशा।

४ किसी कार्य के लिए पूर्वनिर्धारित योजना।

५ कार्यकलाप, प्रबन्ध, इन्तजाम।

रू. भे.—विवस्था, व्यवस्था, विवस्था।

व्यवस्थापक–सं. पु. [सं.] व्यवस्था करने वाला, प्रबन्धक।

व्यवस्थापण, व्यवस्थापन–सं. पु. [सं. व्यवस्थापन] व्यवस्था या प्रबन्ध करने की क्रिया या भाव।

व्यवस्थापित-वि० [सं.] १ व्यवस्थित, नियमानुसार।

२ निर्धारित, निश्चित।

३ सुसज्जित। (वस्तुएं)

व्यवस्थित-वि. [सं.] १ जिसकी व्यवस्था की गई हो।

२ क्रम से चलने वाला।

३ सजाया हुआ, सुसज्जित।

४ निर्धारित किया हुआ, निश्चत।

व्यवहरिक—देखो 'व्यवहारीक' (रू. भे.)

उ०—·········बंधवंत ते जे स्नेहवंत, व्यवहरिक ते जे नयावंत, धरणि ते जे सीलवति, छइल ते जे कलावंत, वेस्या ते जे रूपवंति, वस्त्र ते जे पखालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवंत, साधु ते जे क्षांतिवंत, करह ते जे विगवंत, तुरंग ते जे वेगवंत. हस्ति ते जे भद्रजातीय, मंत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीरचवंत, राय ते जे प्रसस्य जातिवंत। —व. स.

व्यवहार-सं. पु. [सं.] १ आचरण, चाल-चलन। (डि. को.)

२ पेशा, धन्धा।

३ ब्याज-बट्टे या लेन-देन का धन्धा।

४ व्यापार, व्यवसाय।

५ रीति, रस्म, रिवाज।

६ सम्बन्ध, रिश्ता।

७ मुकदमा या मुकदमा की जांच-पड़ताल करने वाला।

८ अधिकार, हक।

उ०—कहिवौ उवरस्ये जिकुं, जांणां छां निरधार। पिण इण अवसर नारी नैं, कहिवा नौ व्यवहार। —जयवांणी

९ शास्त्रोक्त-विधि, नियम।

१० वर्ताव, आचार, सलूक।

उ०—जे किणी घरगोड़िया राजपूत रै सागै उणरी ब्याव व्हियौ व्हैतौ तौ नीं वा इत्ता दिन मंसा परवांण लापतै रै' पाती अर नीं इण भांत लापतै रहयां पछै पाछी गांव मैं पग धर सकती। सासरिया के खुद पीवरिया नाक कांन वाढ नैं चिगदियौ कर न्हांकता। मूंडा मैं आवै ज्यूं जणौ जणौ अरळ-विरळ गाळियां काढतौ। माजनौ गमतौ। पण बाप तौ दिखावटी अैड़ौ व्यवहार करयो जांणै कीं अजोगती बात नीं व्ही। —फुलवाड़ी

११ भेद, अन्तर, फर्क।

उ०—सरगुण निरगुण परख के, इनकै लखै व्यवहार। अगम निगम अनुभव लखै, कर कर हंस विचार। —स्रीहरिरांमजी महाराज

१२ छः सूत्रों में से एक सूत्र का नाम। (जैन)

उ०—व्यवहार सूत्र छ सैं सुविचार, दयासुत स्कंध सत अट्टार। पंचकल्प तैं पंचम छेद, सवा इग्यारसैं संसंख्या वेद। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—ववहार, ववार, बिवहार, बिवहार, बिवार, बुहार, बेवार, बेवार, बोवार, बौहार, ब्यवहर, ब्यवहार, ब्योहार, ब्यौहार, ववहार, वावार, विवहार, विवहार, विवार, विव्हार, विहिवार, वुहार, वेवार, वेवार, वेयार, वैवहार, वैवार, वैहार, वोबार, वोवार, वौवार, वौहवार, वौहार, वौहोवार, व्यवार, व्यहवार, व्योहार।

व्यवहारणौ, व्यवहारबौ-क्रि० स०—१ आचरण करना।

२ पेशा या धन्धा करना।

३ ब्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन करना।

४ व्यापार करना, व्यवसाय करना।

५ रीति-रिवाजों का पालन करना।

६ मुकदमे की जांच-पड़ताल करना।

७ अधिकार करना, हक जमाना।

८ शास्त्रोक्त विधियों या नियमों का पालन करना।

९ अन्तर करना, तुलना करना।

१० वर्ताव करना, सलूक करना।

व्यवहारणहार, हारौ (हारी), व्यवहारणियौ—वि०।

व्यवहारिओड़ौ, व्यवहारियोड़ौ, व्यवहारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यवहारीजणौ व्यवहारीजबौ—कर्म वा०।

वुहरणौ, वुहरबौ, वौहरणौ, वौहरबौ—रू. भे.।

व्यवयारिओ—देखो व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—१ गढ मढ मंदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ खाइ आरांम वनखंड विभूंइआ त्रिभुइआ आवास, चउरासी चहुटां, तिहां व्यवहारिआ नो गजघटा, स्रीमाली पोरुआड ओसवाल गूजर कहोल वाइडा हुंबड मोढ, लाडुआ स्रीमाली, अडालजा········। —व. स.

उ०—२ व्यवहारिआ महरद्धिक वसइ, आप हेठा कहिनइ नवि कसइ। जेह तणी छइ प्रसन्न द्रेठि, इस्या तिहां छइ न्यायवंत सेठि। —नळदवदंती रास

व्यवहारिक-वि.—१ व्यवहार से सम्बन्धित।

२ व्यवहार के उपयुक्त या व्यवहार करने योग्य।

३ व्यापार या व्यवसाय से सम्बन्धित, व्यापारिक।

रू. भे. वैवारिक, व्यवहरिक, व्यवहारिक, व्यावहारीक।

व्यवहारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ आचरण किया हुआ। २ पेशा या धन्धा किया हुआ। ३ ब्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन किया हुआ। ४ व्यापार किया हुआ, व्यवसाय किया हुआ। ५ रीति-रिवाजों का पालन किया हुआ। ६ मुकदमें की जांच-पड़ताल किया हुआ। ७ अधिकार किया हुआ, हक जमाया हुआ। ८

शास्त्रोक्त विधियों व नियमों का पालन किया हुआ। ९ अन्तर किया हुआ, तुलना किया हुआ। १० वर्त्ताव किया हुआ, सलूक किया हुआ।

(स्त्री व्यवहारियोड़ी)

व्यवहारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१.........कालां पीलां नीलां धउलां इस्यां पटोलां, मूकडि न समूह, कपूर नां पूर, घणां केसर नां अलवेसरपणां, अगर ना भर, सुगंधपणपूरी इसी कस्तूरी, मनोहर माणिक्य, मनोग्य रूडां रत्न, अनेकि विदेसी वस्तु, इसिउं **व्यवहारिया** तणउं भवन।

—व. स.

उ०—२ लेतां तौ राजी होय ए, पिण दुस्मण जिम जोय ए। गुरे कहै च्यारां मांय ए, कुण **व्यवहारियौ** कहवाय ए।

—जयवांणी

उ०—३ जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण बंधाव्या, बंदरवाळि ठांम-ठांम सोहाव्या, **व्यवहारिया** सांम्हा इणि परि वांदिवा आव्या कुणही जौ तस्या वहिल ई कल्होड़ा, कुण ही पल्लांण्या आसण होडा, केई करहि चडी घइ दह दिसि द्रोडा, केइ मुखि मांगइ तंबोल-लवंग डोडा।

—रा. सा. सं.

व्यवहारी, व्यवहारीउ—वि. [सं. व्यवहारिन्] उत्तम आचरण वाला।

व्यवहारीओ, व्यवहारू—सं. पु.—१ व्यापार करने वाला, व्यवहारी।

उ०—किहां सुखासण किहां डोली? किहां **व्यवहारू** नइ कोली रे? किहां दीपोच्छव किहां डोली? किहां जव रोटी गहूं पोली रे?

—नळदवदंती रास

२ व्यवसाय करने वाला, व्यवसायी।

३ वेश्य, बनिया।

उ०—बंभण भाट भला वसइ, **व्यवहारिआ** विसेख। राजकुळी रूडी तिहां, छयल छत्रीसै रेख।

—मा. कां. प्र.

४ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

५ ब्याज-बट्टे पर रुपये का लेन-देन का कार्य करने वाला, साहूकार।

रू. भे.—बवहारी, बवारी, बहवारी, ब्यवहारी, ववहारी, विवहारी विहारी, वेहारी, वेंहारी, वोवारी, वोहारी, वौवारी, वौहवारी, वौहारी, व्यवारी, व्यहवारी, व्यारी, व्यारीउ।

अल्पा.,—बवहारियौ, बवारियौ, बहवारियौ, ब्यवहारियौ, विवहारिउ, विवहारिऔ, विवहारियौ, विवहारीउ, विवहारीओ, विवहारीयौ, विहारियौ, वेंवारियौ, वेंहवारियौ, व्यवारियौ, वौहरियौ, वौवारियौ, वौहवारियौ, व्यवहारिऔ, व्यववारियौ, व्यवारियौ, व्यहवारियौ।

व्यवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

व्यवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

व्यवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

व्यसन—सं. पु. [सं.] १ अशुभ बात, अमांगलिक बात।

२ निरर्थक कार्य या प्रयत्न।

३ किसी कार्य या बात के लिए मन की एक प्रवृत्ति या रुचि, जिससे मनुष्य उसी कार्य में संलग्न रहता है।

४ दूषित मनोविकारों के कारण भोगविलास या अन्य बुरे कार्यों के लिए होने वाली आसक्ति, जिसके बिना रहना कठिन हो, बुरी आदत।

उ०—१ तीन लोक को मोल जाय तन सुकवि जगावै, हीरौ लागौ हाथ पुनरभव फेर न पावै। ठाला भूला ठोठ कुबुध्र नहिं छोडै काल्हा, पुण्य गया परवार **व्यसन** जद लागा वाल्हा।

—ऊ. का.

उ०—२ हेमजी स्वांमी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वांमीजी नें कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रौ **व्यसन** है। जद स्वांमीजी बोल्या-काचरियां रौ अटक्यौ किसौ विवाह रहै।

—भि. द्र.

५ असमर्थता, असामर्थ्य।

६ कष्ट, दुःख।

७ विपत्ति, संकट।

रू. भे.—विरसन, बिसंन, विसंन्न, बिसन, बिसन्न, ब्यसन, विसन, विसन्न, विसिन, विस्न, वीसण, वीसन, व्यस्न।

व्यसनी—सं. पु. [सं. व्यसनिन्] वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का व्यसन हो।

रू. भे.—विसनी, व्यसनी, भिसणि, भिसणी, भसिणी, विसनी, विसनीउ, विसिनि, विसिनी, विस्नी, व्यस्नी।

व्यस्टि, व्यस्टी—पु. [सं. व्यष्टि] १ समूह या समाज से अलग किया हुआ।

उ०—निकाई छाई तैं प्रकट प्रभुताई सिख नखा, समस्टी **व्यस्टी** तैं सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा। धरै तूं धारै तूं परज प्रत पारै धन धनी, सभी कौ संहारै प्रळय लय धारै करसनी।

—ऊ. का.

२ सनारू नामक आचार्य का शिष्य व विप्रचित्ति का आचार्य।

व्यस्त—वि. [सं.] १ आकुल, व्याकुल, घबराया हुआ।

२ काम में लगा हुआ, कार्य में फंसा हुआ।

३ इधर-उधर, आगे पीछे, ऊपर नीचे हुवा हुआ।

४ फैला हुआ, व्याप्त।

व्यस्तार—सं. पु. [सं.] १ हाथी की कनपट्टियों से मद के चूने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

व्यस्न—देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

व्यस्नी—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

व्यस्व-सं. पु. [सं. व्यश्व] १ यम का उपासक एक राजा।
२ ऋग्वेद के कुछ मंत्रों के द्रष्टा एवं अश्विनों के कृपापात्रों में से एक प्राचीन ऋषि।

व्यहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

व्यहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

व्यहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

व्यहू, व्यहू—देखो 'वेऊ' (रू. भे.) (उ. र.)

व्यां-सर्व.—वह का बहुवचन, उन।
क्रि. वि.—१ ऐसे, इस तरह।
२ वैसे, उस तरह।

व्यांण-सं. स्त्री.—१ समधी की स्त्री।
२ वह स्त्री जो किसी जागीरदार की लड़की के दहेज में दी जाती हैं और उसे भी वरपक्ष के किसी दास को उसी दिन विवाह दी जाती हैं।
रू. भे.—बिबांयण, विवाहण; बिबाहिणि, बिबाहिणी, बेवांण, व्यांण, व्याहणी, वियांण, व्यायण, व्यावण।

व्यांणु, व्यांणू-सं. पु. [सं. वि+अणु] अणु से बड़ा, विशेष अणु।
उ०—अणू तें व्यांणू तें व्रहदळ विभूतें अति विभू, तुजें नां जांने कौ सुहृद स्वसु जांनें भल त्रभू। कहैं क्या ध्यावें धी कहन नहि आवैं कुळकुळं, मदांधौ मायावी तुम रु हम भावी सम तुलें।
—ऊ का.

व्यांन-सं. पु. [सं. व्यान] शरीर में रहने वाली दश प्रकार के वायु में से एक प्रकार का वायु जो शरीर में संचार करता है तथा इसके द्वारा शरीर में रस पहुँचना, शरीर से पसीना निकलना, खून का चलना व अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती हैं।
रू. भे.—व्यांन, वियांन।

व्यांनदा-सं. स्त्री. [सं. व्यानदा] शरीर में 'व्यान' वायु प्रदान करने वाली शक्ति।

व्यांम-सं. पु. [सं व्याम] दोनों भुजाओं को दोनों ओर फैलाने के बाद एक हाथ की अगुलियों के सिरे से दूसरे हाथ की अंगुलियों के सिरे तक की लम्बाई का नाप।

व्यामोह—देखो 'व्यामोह' (रू. भे.)

व्यांव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)
उ०—१ जलमी रा रे जाया सार ज करतौ छिन-छिन धीय री, हरसा वीर म्हारै राव गढां रे करतौ व्यांव।
—जीणमाता रौ गीत

उ०—२ पेठा तिहां पाखती पांणी, नेमजी मांहै उछाल्यौ पांणी। मांन्यौ मांन्यौ जांणी जांणी, व्यांव मनाय लियौ माडांणी जी।
—जयवांणी

उ०—३ कठै है कुरीती? पिता-पुरखां रीत पर चालणौ कांई कुरीती है? अबार रूपचंद रै घरै बेटी रौ व्यांव हौ जणौ गुळ रौ लेगटौ रांधियौ तौ कोयनी? माईतां री रीत मरजाद अर आप रै सरूप नै देखणौ पड़ै है।
—वरसगांठ

उ०—४ साची है. पछै मिनख कमावै क्यों है? व्यांव-सगाई, ओसर-मोसर, रीत-रकाना अै ईज तौ नांमा-कांमा करण नै। म्हारी आपरी बेन कैवै है कै म्हारै तौ अै ईज छेकड़ला व्यांव है
—वरसगांठ

व्याही, व्याई-सं. पु. (स्त्री. व्यांण, व्यायण) सगा, समधी।
उ०—थे क्यूं डरपौ रै भाई पोळिया, म्हे छां म्हांरी बैनड़ रा लेवाळ। वीरो तौ आयौ सेयां आथाइयां, व्याई जी नै लटक जुहार। मेलौ तौ मेलौ व्याईजी वैन नै, आयी बाई रै पैलै सांवण री तीज। म्हांनै तौ ठीक नहीं भोळा व्याईजी, पूछौ थांरी व्यायणजी नै बात।
—लो. गी.
रू. भे.—बिवाई, बिबाही, बिवाई, बिवाही, बेवाई, बेबाही, बेवाई, बेवाही, व्यांई, व्यांयी, व्यांही, वियाई, वेवाई, वेवाही, व्याही।

व्याऊ—१ देखो 'बिवाई' (उ. र.)
२ देखो 'व्यावू' (रू. भे.)

व्याकरण-स. पु. [सं.] १ एक प्रकार क शास्त्र विशेष, जो वेदों के छः अंगों में से एक माना जाता है। (डि. को.)
उ०—१ स्वांमीजी कनै एक ब्राह्मण आयनै पूछ्यो सायां व्याकरण भण्या हो। स्वांमीजी बोल्या—म्है तौ व्याकरण कोइ भण्यां नहीं। जद ब्राह्मण बोल्यौ—व्याकरण भण्यां बिना सास्त्र ना अरथ हुवै नहीं।
—भि. द्र.
उ०—२ सब्द ही खट सास्त्र कहियै, सब्द ही नव व्याकरण। सब्द ही संस्क्रत पण कहियै, सब्द ही पढ उच्चारण।
—स्रीहरिरांमजी महाराज
उ०—३ कोई कहसी रुखमणीजी स्रीक्रस्णजी सौं अनुराग हुअउ सु विण देख्यां क्यों करि हुओ। तिको जबाब देई छै। रूखमणीजी व्याकरण पढचा पुरांण पढचा। ईतनां सबही मांझ ऐक हीकौ अधिकार पायौ।
—वेलि टी.
वि० वि०—उक्त शास्त्र में, बोलचाल एवं साहित्यिक भाषा के स्वरूप, गठन, अवयवों, प्रकारों, पारस्परिक सम्बन्धों, रचनाविधान व रूप परिवर्तन पर विचार होता है।
२ भाषा सम्बन्धी नियमों के संकलन की पुस्तक।
३ व्याख्या, विवेचन।

४ निर्माण, रचना ।

५ ७२ कलाओं में से एक कला ।

६ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक कला । (व. स.)

७ आठ की संख्या । * (डिं. को.)

रू. भे.—वियाकरण, व्याकरण, वियाकरण ।

व्याकरणी—सं. पु. [सं. वैयाकरण] व्याकरण का ज्ञाता पंडित ।

व्याकळ—देखो 'व्याकुळ' (रू. भे.)

व्याकुळ, व्याकुल—वि. [सं. व्याकुल] १ घबराया हुआ, बेचैन, दुःखी ।

उ०—१ वरमाळा लै कंठि वणावै, पलक खुली तदि त्रिया न पावै । उण दुख हूंत जीव व्याकुळ अति, पड़ै न जक सोचै नित भूपति । —सू. प्र.

उ०—२ मनुष्य जु गरमी करि व्याकुळ हवै छै । अर रूंखां की छाह वांछै छै । सु यै वात री न्याउ छै । इसी गरमी हुई छै । जु सूरच पणि हेमाचळ को सरणौ पकड़ै छै । अर सूरज ही अखि आया छै । —वेलि टी.

२ उदास, खिन्नचित्त ।

उ०—आप बिना गोपिन सब व्रज की; व्याकुळ भई निराट । मीरां के प्रभु दरसण दीज्यौ, करज्यौ आनंद ठाट । —मीरां

३ भयभीत, डरा हुआ, विह्वल ।

उ०—व्याकुळ तातैं भई तनु देही, सिर पर जम का घेरा । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा । —मीरां

४ क्षोभयुक्त ।

उ०—पांच पचीसौं वस किये, मेरा पला न पकड़ै कोय । मीरां व्याकुळ विरहणी रे, कोई आंन मिळावै मोय । —मीरां

५ उदास, चंचलता रहित ।

उ०—आवै सवेग आकळा, वदन्न नैंण व्याकुळा । पवंग छाड पाधरा, असस्स रोम ऊधरा । —मा. वचनिका

६ उत्कंठित, उत्सुक ।

सं. पु.—समुद्र, सागर । (ना. डिं. को.)

रू. भे.—व्याकुळ, व्याकुळी, वकळ ।

व्याकुळणौ, व्याकुळबौ—क्रि. अ.—१ घबराना; व्याकुल होना, बेचैन होना ।

उ०—हळा-बोळ चौरंग दळां बीच मूजै हरण, गजां कुळट्घा कुळत हुअै घर गाह । व्याकुळत भमंग रव बळत धूळी रवण, "सूर" री चढै तिणवार 'गजसाह' । —कल्याणदास महडू

२ उदास होना, खिन्नचित्त होना ।

३ भयभीत होना, डरना, ।

उ०—ब्रहमंड किनां फुट्टो वळै, धमक तळातळ आतळै । मुखै हसै सकति महाबळ, वेताळा कुळ व्याकुळै । —मा. वचनिका

४ उतावला होना, आतुर होना ।

५ कम्पकम्पाना, धूजना ।

व्याकुळणहार, हारौ (हारी), व्याकुळणियौ—वि० ।

व्याकुळिओड़ौ, व्याकुळियोड़ौ, व्याकुळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

व्याकुळीजणौ, व्याकुळीजबौ—भाव वा० ।

व्याकुळता, व्याकुलता—सं. स्त्री. [सं. व्याकुलता] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव ।

२ खिन्नचित्त होने की अवस्था, उदासी ।

३ भय, डर ।

रू. भे.—बेकळी, वेकळी ।

व्याकुळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घबराया हुआ, व्याकुल हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ. ३ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, विह्वल हुवा हुआ. ४ उतावला हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ. ५ कम्पकम्पाया हुआ, धूजा हुआ । (स्त्री. व्याकुळियोड़ी)

व्याकुळी—वि.—भयभीत, बेचैन, व्याकुल ।

उ०—सळसळी चापळी चळी सिर 'सेख' रै, बीजळी तणौ बपु देण विवा । व्याकुळी गिरा आरत सुणै बचाड़ै, आकुळा लिइ कर भाल अंबा । —बालाबख्स बारहठ

रू. भे.—बेकळी, वेकळी ।

व्याकोस—वि. [सं. व्याकोष] १ बढाया हुआ, फुलाया हुआ ।

२ खिला हुआ, विकसित ।

३ वृद्धि को प्राप्त, वृद्धिमान ।

व्याकृति—देखो 'विकृति' (रू. भे.)

उ०—सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, झीनातिझीन चित विदित चीन । पद परम पून्य संकल्प सून्य, निरवांण नित्य अंतर अनित्य । —ऊ. का.

व्याखांन, व्याख्यांन—सं. पु. [सं. व्याख्यान] १ व्याख्या करने की क्रिया

२ भाषण, वक्तृता ।

रू. भे.—व्याखांन, व्याख्यांन ।

व्याखांनसद, व्याख्यांनसद—वि. [सं. व्याख्यानसद] १ व्याख्या करने वाला, टीकाकार ।

२ भाषण देने वाला, वक्ता ।

रू. भे.—बखांणसद, ब्याख्यांनसद वखांणसद, ।

व्याख्यांनसाळा व्याख्यांनसाला—सं. पु. [सं. व्याख्यानशाला] व्याख्यान देने का स्थान ।

व्याख्या—सं. स्त्री. [सं.] समझाने के लिए किसी बात या विषय का किया जाने वाला विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण व उसकी टीका ।

व्याघात—सं. पु. [सं.] १ आघात, प्रहार, चोट ।

२ विघ्न, बाधा, अड़चन, रुकावट।

उ०—रिखिजी कहै पुत्र दौ ए हुसी, पिण यैं मांनौ एक वात रे लाला। व्रत लेसी बालपणैं, जो नवि करौ व्याघात रे लाला।

—जयवांणी

३ ज्योतिष शास्त्र के सत्ताईस योगों में से तेरहवां योग।

वि. वि.—किसी शुभ कार्य करने में इस योग की नौ घटि अशुभ मानी है, जिसमें कोई शुभ कार्य करना वर्जित है।

४ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें एक ही साधन द्वारा दो विरोधी बातों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र–सं. पु. [सं.] सिंह, शेर।

२ यातुधान नामक राक्षक का पुत्र व निरानंद नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

३ भाद्रपद माह में सूर्य के साथ घूमने वाला एक यक्ष।

वि.—१ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

२ मुख्य, प्रधान।

व्याघ्रकेतु–सं. पु. [सं.] १ पांचाल राजकुमार जो कौरव पक्ष में था एवं सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

२ पांचाल योद्धा जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

व्याघ्रग्रीव–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन देश। (पुराण)

व्याघ्रचरम, व्याघ्रचरम्म व्याघ्रचांम–सं. स्त्री. [सं. व्याघ्रचर्म्म] शेर की खाल जिस पर संन्यासी बैठते हैं एवं शोभा या सजावट के लिए कमरों में लटकाई जाती है।

व्याघ्रदत्त–सं. पु. [सं.] १ पांडवपक्षीय एक राजा जो श्रेष्ठ रथियों में से एक था।

२ मगध राजकुमार जो कौरव पक्ष की ओर से लड़ते हुए सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

३ अश्वथामा द्वारा मारा गया एक पांडव पक्षीय राजा।

४ द्रोण के द्वारा मारा गया एक पांडवपक्षीय पांचाल का योद्धा।

व्याघ्रनख—देखो 'बाघनख' (रू. भे.)

व्याघ्रनखौ—देखो 'बाघनखौ' (रू. भे.)

व्याघ्रनांखून—देखो 'बाघनख'

व्याघ्रनाइक, व्याघ्रनायक–सं. पु. [सं. व्याघ्रनायक] गीदड़, श्रृंगाल।

व्याघ्रपद, व्याघ्रपाद–सं. पु. [सं.] वसिष्ठ ऋषि का पुत्र एवं उपमन्यु के पिता एक प्राचीन ऋषि।

व्याघ्रमुख–सं. पु. [सं.] १ एक देश का नाम।

२ एक पर्वत का नाम।

व्याघ्रहन–सं. पु. [सं.] उर्ध्वष्ठी नामक एक राक्षस का पुत्र एवं शरभ का पिता, एक राक्षस।

व्याघ्राक्ष–सं. पु. [सं.] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

२ एक राक्षस का नाम। (पुराण)

व्याघ्री–सं. स्त्री. [सं.] वसिष्ठ की पत्नी का नाम।

व्याड़ि—देखो 'व्याडि' (रू. भे.)

व्याज–सं. पु. [सं.] १ कपट, छल, धोखा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ बाधा, विघ्न, अड़चन।

३ विलम्ब, देरी।

४ बहाना, मिस।

उ०—गंगदेव रैं खुरासांण खेत रौ अति वेग बाजी सुणियौ जिसड़ौ ही तुरंग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट रौ व्याज करि बंबादवा सूं ईसांन दिसा री अटवी में बूंदी सौं पांच कोस परैं लग जाइ सिकार रा रमणा मैं पांच ही दिन बिताइ एक मइद दोइ बाराह गाडां घलाइ चाह करि सायंकाळ रैं समय बूंदी आयौ।

—वं. भा.

५ ऋण की राशि पर लिया जाने वाला अतिरिक्त धन, सूद।

उ०—१ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तौ मांग्या पड़ै। साहुकार तो व्याज सहित देवै अनें दिवाल्यौ मूल ही मैं तोटौ घालै। ज्यूं भगवंतैं सूत्र भाख्या तिम प्रमांणें चालै तै साधु अनें पांचमौ आरा नौं नांम लेइ सूत्र प्रमांणें न चालै तै असाध।

—भि. द्र.

उ०—२ नाकी राखण जीव कसै घणा रे, काढै करड़ै रुपये व्याज रे। ओसर-मोसर ढोल बजाय दे रे, चतुर सुधारैं सगला काज रे।

—जयवांणी

६ व्याज पर दी जाने वाली राशि, ऋण।

उ०—गांम चलतां सुकन गिणीजें, हणतौ विण किण ही न हणीजे। विण ग्रहणैं दीजें मत व्याज, निस्चैं वरस नौ राखै नाज।

—घ. व. ग्रं.

रू. भे.—विश्राज, बियाज, ब्याज, विश्राज, वियाज, वीयाज।

व्याजउक्ति—देखो 'व्याजोक्ति' (रू. भे.)

व्याजड़ियौ–सं. पु.—ब्याज पर रुपया देने वाला व्यक्ति।

व्याजनिंदा–सं. स्त्री. [सं.] १ छल, कपट या बहाने से की जाने वाली निन्दा; जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निन्दा जान न पड़े।

२ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार निन्दा की जाय।

व्याजबटौ–सं. पु.—वह व्यवसाय जिसमें ऋण देने व ब्याज वसूल करने का कार्य किया जाता है।

व्याजस्तुति–सं. स्त्री. [सं.] १ स्तुति के शब्दों में निन्दा व निन्दा के शब्दों में स्तुति करने की एक प्रकार की क्रिया विशेष।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें इस प्रकार से निन्दा या स्तुति की जाय।

रू. भे.—बिग्राजस्तुति, वियाजस्तुति, ब्याजसतुति, व्याजस्तुति, व्याजस्तूती ।

ब्याजू-सं. पु.—वह रकम जो ब्याज के उद्देश्य से लेन-देन की जाती है।

रू. भे.—बियाजू, ब्याजू, वाज्यू बियाजू, बीयाजू, व्याजू ।

ब्याजोक्ति-सं. स्त्री. [स.] १ कपटयुक्त बात ।

२ किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए किया जाने वाला बहाना ।

३ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए बहाना युक्त कथन किया जाय ।

रू. भे.—ब्याजोकती, ब्याजोक्ति ।

ब्याज्यू—देखो 'ब्याजू' (रू. भे.)

ब्याड-सं. पु. [सं.] १ सर्प, सांप ।

२ देवराज इन्द्र ।

३ दुष्ट हाथी ।

४ मांसभक्षी जीव ।

५ गुण्डा, दुष्ट ।

ब्याडि-सं. पु. [सं.] एक प्रसिद्ध व्याकरणकर्त्ता का नाम ।

रू. भे —व्याड़ि ।

ब्याणी-वि. स्त्री.—प्रसव देने वाला मादा पशु ।

ब्याणौ-सं. स्त्री.—जन्म देने की क्रिया।

ब्याणो, ब्याबौ—देखो 'ब्याणौ, ब्याबौ' (रू. भे)

उ०—१ पीड़ति हेमंत सिसिर रितु पहिलौ, दुख टाळ्यौ वसंत हित दाखि । ब्याए वेली तणी तरुवरां, साखां विसतरियां वंसाखि ।
—वेलि

उ०—२ तरै मीयां नैं समाचार हुवा तरै मीयां फोज रौ घमसांण करनै रांमदासजी ऊपर चढिया । रांमदासजी नैं आखडी छै. खेह दीठां खिसणौ नहीं । सांढ तिण एक ब्याइ सौ सांढ ऊभी छोडनै जांण री ग्राखडी । तरै तोडिया नैं पखाळ नैं सांड ऊपरै घाल लियौ नैं आगी खडीया । —रा. सा. सं.

उ०—३ ज्यूं एक साहूकार जिहाज मैं बैस समुद्र पार व्यापार करवा गयौ । पाछौ आवतां कपड़ै री मंजूस में एक गरभवती ऊंदरी आइ सौ ब्याई । साहुकार देखिनै बोल्यो इण नैं समुद्र मैं नहीं न्हांखणी । जाबता करै । —भि. द्र.

उ०—४ कोट मुलक खिडिया के खंड, ब्याइ वसूहक फाटौ ब्रह्मंड । वडा वडा आवै वरियांम, 'ग्रंबर' आगै करै सलांम ।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

ब्याति-सं. पु.—एक तारा जो मृग के नीचे रहता है। इसको संस्कृत में लुब्धक कहते हैं ।

ब्याध-सं. पु. [सं.] १ शिकार करने वाला, शिकारी ।

उ०—तळ खर्चं वांणूं दुसटी पांणू, रटैं नरांणू रखिभांणू । ग्रह ब्याध डसांणू चूकै बांणूं बध सीचांणू दळ संतू । —भगतमाळ

२ प्राचीन काल की एक शिकारी जाति, किरात, बहेलिया ।

३ दुष्ट, नीच आदमी ।

४ देखो 'व्याधि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ फीहै जो विधि कहु बखांणि, गुनम रोग जिण मौ विधि बांण । पेट सूळ जो होइ अगाध, मूत डब नैं नासै ब्याध ।
—घ. व. ग्रं.

उ०—२ कळू में प्रभती ब्याध प्रेत सूं उबारै केतां, तेरासै तेईस जीता भूलोक राठौड़ । ग्रंथां गुणां गीतां सात बेदां मैं कीरती गावै, रेणवां रूखाळौ पाबू ग्रगजी राठौड़ ।
—बादरदांन दधवाड़ियौ

उ०—३ हहौ करै हित हांण, भभौ तन ब्याध जगावै । धधौ राज भय धरै, ररौ धन नास करावै । —र. रू.

रू. भे.—ब्याध, ब्याधि ।

ब्याधि-सं. स्त्री. [सं.] १ रोग, बीमारी । (व. स.)

उ०—१ लियां नांम सुख लाभ, ब्याधि दुख आधि न व्यापै । कुळ सज्जण थिर करै, अरी वडपण ऊथापै । —र. रू.

उ०—२ ब्याधि जरा रहि वेगली, अलीग्र लक्षण होइ जेह । देदि जं विधि विरतरी, सविको पालइ तेह । —मा. कां. प्र.

२ कष्ट, दुख, पीड़ा । (डि. को.)

उ०—१ रीत आद जदुवंस घरांणै, जंगां विघन जिगन सम जांणै । 'जीवण' हरनायोत सजोसौ, आसुर ब्याधि हरण किर ग्रोसौ ।
—रा. रू.

उ०—२ आधि ब्याधि चिंता सहु चूरइ, बइरी कर न सकइ को बुरउरी, सुंदर रूप मनोहर मूरती, हार हियइ मस्तकि सेहरउ री ।
—स. कु.

३ कुष्ट या कोढ़ नामक रोग ।

४ झगड़ा, बखेड़ा, टंटा ।

५ साहित्य में तेंतीसवां संचारी भाव ।

७ मृत्यु की एक पुत्री का नाम ।

रू. भे.—बियाधि, व्याध, व्याधि, वाही, व्याध, व्याधिय, व्याधी, मह.,—बियाधौ ।

ब्याधित-वि. [स.] रोगी, बीमार।

ब्याधिय, ब्याधी—देखो 'ब्याधि' (रू. भे.)

उ०—वुत्र व्याधिय आधि उपाधिय मैं, सुध लाधिय सुन्य समाधिय मैं। निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुपनैं मन संसय सोग नहीं।
—ऊ. का.

व्याप—१ देखो 'व्याप्य' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मांड व्यास, परधी प्रकास, अति व्याप एस, व्यापक विसेस। वैराट वद्ध, सानंद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ. का.

२ देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

व्यापक-वि. [सं.] १ चारों ओर फैलाया हुआ, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र विद्यमान।

उ०—१ ब्रह्मांड व्यास; परधी प्रकास, अति व्याप एस व्यापक विसेस। वैराट वद्ध, सानंद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ. का.

उ०—२ तुं जांह तांह व्यापक रहै, कठै अव्यापक नांहि। तुझि कुं किसका डर नहीं, जनहरिया मुझि मांहि। —अनुभववांणी

उ०—३ ज्युं घायल उर सालै पीरा, त्युं त्युं व्यापक रांम सरीरा। घायल की घायल सो जांनै, परगट कहि दिखलाउं छांनै।
—अनुभववांणी

उ०—४ भै निद्रा आसा इचक ना तिस व्यापक सुधा।
—केसौदास गाडण

उ०—५ अठोत्तर पुत्री जाति अनूप, भलासु दोइ हजार सरूप। उपना एकण पिंड अनेक, हूवा संसार व्यापक हेक।
—रा. वंसावळी

उ०—६ सुपहां दर चंचळ वाळ सरू, घट व्यापक गोरखनाथ गरु। तुडतांण जिसौ चउवांण तपै, कर वेढ सिवाड मैं वास कपै।
—पा. प्र.

२ छाया हुआ।

३ सामान्य, साधारण।

४ ढकने या घेरने वाला।

रू. भे.—बियाप, बियापक, व्यापक, वापक, विआपक, वियापक, वीआपक, वीयापक, व्याप।

व्यापण-सं. स्त्री. [सं. व्यापन] फैलाव, विस्तार।

व्यापणो, व्यापबौ-क्रि. अ. [सं. वि.+आप्लृ] १ चारों ओर फैलना, व्यापक होना, व्याप्त होना।

उ०—१ विकट जड़ी मुहरा घरचा, कांम भुजंग डस लीन। विख व्याप्यो, उतरै नहीं, परस्यां विना प्रवीण। —अग्यात

उ०—२ देवी नीर रै रूप तूं आग ठारै, देवी तेज रै रूप तूं नीर हारै। देवी ग्यांन रै रूप तूं जग्त व्यापी, देवी जगत रै रूप तूं धरम थापी। —देवि.

उ०—३ निज यस दिसि दिसि व्यापए, थापए चउ विह संघ। सूरउ तेहज सांमिय, धामिय कांमिय रंग। —जयसेखर सूरि

२ विद्यमान होना, उपस्थित होना।

उ०—१ तुमही कहो अरधंगा हमारी, हम हूं लगाया कारा। कोटि ब्रह्मांड में व्यापि रह्यो है, सो निज वर है हमारा। —मीरां

उ०—२ नमो खाग हथ्थी नमो खप्पराळी, नमो काळिका काळ-रात्री कंकाळी। नमो सब व्यापी नमो सुख्ख दाता, नमो गौरी पारबती ग्यांन गाता। —मा. वचनिका

३ समाना, प्रविष्ट होना।

४ छाना, फैलना।

५ घेरना, ढकना।

६ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ में निकल्या कदाग्रहो छंड ए, ए रिखीस्वरों नो दंड ए। परसन पूछै तूं बांकड़ा ए, ए क्रोध व्यापण रा टांकड़ा ए।
—जयवांणी

उ०—२ जा घट विरह न व्यापही, भयै अव्यापक तन। जनहरिया घट विरह विन, जांणि अलूंणी अंन। —अनुभववांणी

उ०—३ लियां नांम मुख लाभ, व्याधि दूख आवि न व्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, अरी बडपण ऊंथापै। —रा. रू.

उ०—४ अहूं आगि ता तन वसै, व्यापै विघन करोड़ि। जन-हरीया पद स्वांत कुं, जाता लेह बहोड़ि। —अनुभववांणी

उ०—५ नांव परताप जळ जोगणी चंडका, भैरवा भूत छळ छेद नांही। नांव परताप तै विघन व्यापै नहीं, नांव परताप तिहं लोक मांही।
—अनुभववांणी

७ होना।

उ०—१ प्यारी पोढी पीव संग, कोऊ न व्यापै बीह।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख संपत्ति, व्यापत नांहि विपत्ती। —मे. म.

उ०—३ जे मन राखै रांमसों, अपने अंग लगाइ। दादू कुछ व्यापै नहीं, जे कोटि काळ भख जाइ। —दादूबांणी

८ विचार उत्पन्न होना।

उ०—हियै तहव्वर खांन रै, व्यापी यौं विपरीत। दाह अकब्बर भोगयौ, नौरंग साह नचीत। —रा. रू.

९ असर होना, प्रभाव पड़ना।

उ०—परिचय पीवै रांम रस, राता सिरजनहार। दादू कुछ व्यापै नहीं, तै छूटै संसार। —दादूबांणी

१० उत्पन्न होना।

उ०—राजा घणी चतुराई सुं झारि भरि रखीस्वरां रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवांणी करि दीनी। जावो रांण्यां नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरै पधारिया। उण राति राजाजी व्रतीक थ्या तियै सुख में पोढ्या छै। आधी राति रै समै महाराज ने त्रखा घणी व्यापी, तरै खवास कना सु जळ मंगायो। तरै खवास असमझ थके मंत्री झारी हाजर कीनी। —रा. वंसावळी

११ पहुंचना।

उ०—पंच पंडवि वनंतरि विमासिउं, तेरिमूं वरस केमि गमेसिउं बुद्धि नारद महारिसि आपी, मध्यदेस रहियौ तुम्हि व्यापी। —सालिसूरि

व्यापणहार, हारौ (हारी), व्यापणियौ—वि०।

व्यापिओड़ौ, व्यापियोड़ौ, व्याप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यापीजणौ, व्यापीजबौ—भाव वा०।

बिआपणौ, बिआपबौ, बियापणौ, बियापबौ, व्यापणौ, व्यापबौ, वापणौ, वापणौ, विआपणौ, विआपबौ, वियापणौ, वियापबौ, बीआपणौ, बीआपबौ—रू. भे.।

व्यापत—देखो 'व्याप्त' (रू. भे.)

व्यापति, व्यापती—देखो 'व्याप्ति' (रू. भे.)

उ०—आवइं सकल कलापति, व्यापति मांडइ कोडि। बइठा स्वजन सुखासनि, वासणि धन दिइं कोडि। —जयसेखर सूरि

व्यापार—सं. पु. [सं.] १ व्यवहार, सम्बन्ध।

उ०—जाहरां उवें नुं राजा पासै ले गया, ताहरां मारगि मैं जावतां हटवांणियै री देणौ हुतौ तिकौ बोलियौ, रजपूत, म्हारी लहणौ दीयैं जाह। तोनुं राजा मारिसी। औ छाडैं नहीं। ताहरां वडैं, व्यापारी सुं व्यापार हुतौ, तिकै आया। आइनें कह्यौ, ठकुराळा, टको-पईसो खरचतौ अपूठौ मत जोए। म्है खरच पूरवस्यां। अर छोटैं व्यापारी रौ करज दीयौ। —बाप री सीख री वात

२ कर्म, कार्य, काम।

३ धंधा, व्यवसाय, क्रय-विक्रय का पेशा।

४ उद्योग, उद्यम।

५ आचरण, चारित्रिक, व्यवहार।

६ विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का संयोग। (न्याय)

रू. भे.—बेपार, बेंपार, बोपार, ब्यापार, ब्योपार, ब्यौपार, वापार, बेपार, बेवार, वैंपार, वैवार, वोपार, वोवार, व्योपार, व्यौपार।

मह.,—बेपारौ, वोपारौ।

व्यापारिक—वि. [सं.] व्यापार का, व्यापार से सम्बन्धित।

व्यापारी—सं. पु. [सं. व्यापारिन्] १ व्यापार करने वाला, क्रय-विक्रय करने वाला, सौदागर।

उ०—५ सांझ परी गई, गुदड़ी परी थइ, दीवइ जोति भई। चोहटइ भीड़ मिटी, व्यापारी नी महिमा घटी, हाटइ ताला जडइ। आप आप रै घर आया, कूंची लाया। स्त्री सोलह सिंगार सजै, गणिका जार नै भजै। —रा. सा. स.

उ०—२ ताहरां वडै व्यापारी सं व्यापार हुतौ, तिकै आया। आइनें कह्यौ, ठकुराळा, टको-पइसो खरचतो अपूठौ मत जोए। म्है खरच पूरवस्यां। अर छोटै व्यापारी रौ करज दीयौ। यूं करता राजा गुनह माफ कीयौ। —बाप री सीख री वात

उ०—३ पाटण सहर, तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै। वडौ धनेस्वरी। तिणरै देवीदास नांमौ अेका-अेक बेटो। सौ बरसां पनरह मांहैं हुवौ, तिकौ बडौ सपूत। नांमै-लेखै बिणज व्यापार मांहै बहोत खबरदार। —फलक दरियाव री वात

उ०—४ व्यापारी सहू वांणिआ, जोसी वैद्यक व्यास। मांगण पणि मिळिया बहू, सहूनी पूगइ आस। —मा. कां. प्र.

२ वैश्य, बनिया।

उ०—१ कह्यौ महाजन आवै जिणा नै पइसा लेइ रोटियां कर घालबो कर। महाजन आवै ज्यांनें मेर तैं ब्राह्मणी नो घर बताय देवै। कैतले एक काले च्यार व्यापारी घणा कोसां रा थाका आया। मेरां नै कह्यौ उत्तम घर बताओ जद ब्राह्मणी रौ घर बतायो। —भि. द्र.

उ०—२ तिम हिज जेठमलजी कह्यौ थे जास्यो तो और व्यापारी आंण वसासां पिण साधां नैं काढां इसो अन्याय म्है करां नहीं। जद बावेचा कूंचियां लेइ आप आप रै घर गया। —भि. द्र.

३ व्यवसाय, कार्य-धन्धा या पेशा करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बेपारी, बैंपारी, बोपारी, ब्योपारी, ब्यौपारी, वापारी, वेपारी, वैंपारी, वोपारी, वौपारी, व्योपारी, व्यौपारी।

व्यापियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चारों ओर फैला हुआ, व्यापक हुवा हुआ, व्याप्त हुवा हुआ। २ विद्यमान हुवा हुआ, उपस्थित हुवा हुआ। ३ समाया हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ। ४ छाया हुआ, फैला हुआ। ५ घेरा हुआ, ढका हुआ। ६ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ। ७ हुवा हुआ। ८ विचार उत्पन्न हुवा हुआ। ९ असर हुवा हुआ, प्रभाव पड़ा हुआ। १० उत्पन्न हुवा हुआ। ११ पहुँचा हुआ।

(स्त्री. व्यापियोड़ी)

व्यापी—वि. [सं. व्यापिन्] १ व्याप्त या व्यापक होने वाला या हुवा हुआ।

२ सर्वत्र फैलने वाला या फैला हुआ।

३ आच्छादित या आच्छादन करने वाला।

सं. पु.—विष्णु भगवान का नाम।

रू. भे.—बिआपी, बियापी; विआपी, वियापी।

व्याप्त—वि. [सं.] १ फैला हुआ, पसरा हुआ. २ भरा हुआ, परिपूर्ण. ३ सम्मिलित, शामिल. ४ समाया हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ. ५ आच्छादित।

रू. भे.—बियाप, व्यापत।

व्याप्ति; व्याप्ती—सं. स्त्री. [सं.] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव।

२ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

३ नियम या सिद्धान्त जो सर्वत्र लागू होने वाला हो।

४ फैलाव, विस्तार।

५ परिपूर्ण होने की अवस्था, परिपूर्णता।

रू. भे.—व्यापति, व्यापती।

व्याप्तिग्यांन—सं. पु. [सं. व्याप्तिज्ञान] साध्य को देख कर साध्यवान् के या साध्यवान को देख कर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध में होने वाला ज्ञान। (न्याय)

व्याप्य—वि. [सं.] वह जो व्याप्त करने योग्य या व्यापनीय हो।

रू. भे.—व्याप।

व्यप्रत्त—सं. पु. [सं. व्यापृत] १ सचिव, मंत्री। (डिं. को.)

२ कामदार। (डिं. को.)

४ नौका, नाव।

वि.—१ किसी कार्य में लीन या संलग्न।

व्याप्रति—सं. पु. [सं. व्यापृतिः] १ कार्य, धन्धा।

२ कार्य, कर्म।

३ उद्योग, परिश्रम।

४ पेशा, धंधा।

व्यामोह—सं. पु. [सं. व्यामोहः] १ मोह, अज्ञान।

उ०—व्यामोहे वर वीर, घर घर सत देखि घणउ, आयउ राइ हर आप रइ, समहरि 'अचळ' सधीर। —अ. वचनिका

२ व्याकुलता, परेशानी।

रू. भे.—व्यांमोह।

व्यायण—देखो 'व्यांण' (रू. भे.)

उ०—मेलो तौ मेलो व्याईजी बैंन नै, आयी बाई रै पैलै सावण री तीज। म्हांनै तौ ठीक नहीं भोळा व्याईजी, पूछी थांरी व्यायण जी नै बात। —लो. गी.

व्यायांम—सं. पु. [सं. व्यायामः] १ शरीर को मजबूत एवं पुष्ट बनाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक श्रम, कसरत।

२ परिश्रम, महनत।

३ थकावट।

४ रति-क्रिया के बाद होने वाली थकावट।

५ कोशिश, प्रयत्न, प्रयास।

व्यायांमसाळ, व्यायांमसाल, व्यायांमसाळा, व्यायांमसाला—सं. स्त्री. [सं. व्यायामशाला] वह स्थान जहां व्यायाम किया जाय।

उ०—जिनमंदिर धवलमंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल पौषधसाल रथसाल हस्तिसाल, तुरंगसाल व्यायांमसाल टंकसाल आस्थांनसभा स्नीगरणसभा व्ययकरणसभा·········। —व. स.

व्यायांमी—वि.—व्यायाम करने वाला।

व्यायोग—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का रूपक विशेष। (साहित्य)

व्यायोड़ी—सं स्त्री.—मादा पशु जो प्रसूता हो गई हो, ब्याई हुई, जिसने बच्चा प्रसव किया हो।

व्यायोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्यायोड़ी)

व्यारण—देखो 'वारण' (रू. भे.) (अ. मा.)

व्यारी, व्यारीउ—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.) (उ. र.)

व्याळ, व्याल—सं. पु. [सं. व्याल] १ दुष्ट व्यक्ति, निर्दयी व्यक्ति। (अनेका.)

२ मौत का दिन, मृत्युकाल। (,,)

३ सर्प, साँप। (,,)

उ०—१ माधव ! कीधउ मझ सखी, अै को अभिनवु व्याल। फणि फाटी मद जन्मियु, आगइ जेम मदाल। —मा. का. प्र.

उ०—२ तोयधी मुनिंद्र पाण वचै व्याळ वैनतेय, दूठ अद्र वचै घांण जुआंण दधीच। बळ्थां सत्रां चा बाधा चंद रायासाल बीजै बीर खागां खाधा जे न लाधा भोम बीच। —हुकमीचंद खिड़ियौ

उ०—व्याळ नूं जगायौ सोर बिद्रूजा चलायौ वज्र, सींधली अधायौ कै सुणायौ बीर साद। धुरजटी जटां हूं अधायौ बीरभद्र आयौ, देव दळां ऊपरां यूं आयौ मेघनाद। —जोरावरसिंघ

उ०—४ उरमाळ मुंड नि छाल म्रग की, खाल केसरि जूसणं। वपु भस्म लेप स्मसांन राजित, व्याळ पांणि विभूसणं। —ला. रा.

४ हस्ती, हाथी। (अ. मा., अनेका)

उ०—१ अटवी-अथा अटवी वरणन। अनेकोत्कट व्रक्ष गहन। विविध व्याळ सारदूळ। काल कंकाल। वेताल। क्षेत्रपाल। साकिनी। डाकिनी। योगिनी। यक्ष। राक्षस। गंधरव विद्याधर। खेचर। भूत। प्रेत। पिशाच। क्रीडादिक कारि। —सभा

उ०—२ मदमसत हळवळ, हालि मेंगळ, विमळ स्यांमळ घटा बद्दळ, जांणि रद बग पंत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ। हींस हैंमर कळळ हूंकळ, दुकळ सुकळां सोर दमंगळ, बीज पळकत सेल वळवळ प्रबळ दळ भूपाळ। —महाराव हणूतसिंघ सेखावत रो गीत

५ शेषनाग।

उ०—नहीं तू काळ नहीं तूं क्रम्म, नहीं तूं व्याळ नहीं तूं ब्रह्म। नहीं तूं देव नहीं तूं दंत, नहीं तूं भेव नहीं तूं भंत।

—ह. र.

६ दुष्ट हाथी।

७ बुरा या उपद्रवी व्यक्ति।

८ पवन, हवा, वायु।

उ०—दी आग्या दूसरां, मेळ कीजे ग्रह मंगळ। उण समयै दिस आठ, काठ जग्गे दावानळ। भेळि झाळ तण भुवण, करै मंजण दोनूं कर। परि झूनै जळ पाणि, सकत निरि मांण सरोवर। रव अगनि व्याळ धूंवा रवण, सौर ज्वाळ इळ संमिळै। सुज सती होम करतां सु वणि, मिळै धोम नभ मंडळै।

—रा. रू.

९ शिकारी या हिंसक जन्तु।

१० भगवान् विष्णु का एक नाम।

११ राजा, नृप।

१२ सिंह, शेर।

१३ बाघ, चीता।

१४ दण्डक छन्द का एक भेद विशेष।

रू. भे.—विग्राळ, बियाळ, व्याळ, व्याल, वयाळ, विग्राळ वियाळ, वीग्राळ, वीयाळ, वेयाळ।

ब्याळखळ-सं. पु. [सं. व्यालखल] १ मोर, मयूर। (नां. मा.)

२ पक्षिराज गरुड़।

३ सिंह, शेर।

ब्याळग्राही-सं. पु. [सं. व्यालग्राहिन्] सांपों को पकड़ने वाला, सपेरा।

ब्याळग्रीव, ब्यालग्रीव-सं. पु. [सं. व्यालग्रीव] एक देश का नाम।

ब्याळधीस ब्यालधीस-सं. पु. [सं. व्यालधीश] १ शेषनाग।

२ ऐरावत हाथी।

ब्याळपाळ-सं. पु. [सं. व्यालपाल] चन्दन। (नां. मा.)

ब्यालरेस-सं. पु.—सर्पों का समूह।

ब्याळसूदन-सं. पु. [सं. व्यालसूदन] १ पक्षिराज गरुड़।

२ मोर, मयूर।

३ सिंह, शेर।

ब्यालारि-सं. पु. [सं. व्याल+अरि] १ सर्प-शत्रु गरुड़। (अ. मा.)

२ मोर, मयूर।

३ सिंह, शेर।

ब्यालिक-सं. पु. [सं.] सपेरा।

ब्याळी, ब्याली-सं. पु. [सं. व्याली] १ शिव शंकर, महादेव।

२ मोरनी।

३ सिंह की स्त्री, शेरनी।

ब्याळू-सं. पु. [सं. विकालिक] १ रात्रि का भोजन, सायंकालीन भोजन।

उ०—१ अलख तूं हिज आळसियां उदम, पाळग तूं हिज न पाळां पाळ। बांटण तूं ही न ब्याळां ब्याळू, गोविंद तूं हिज न ग्वाळां ग्वाळ।

—ओपो आढो

उ०—२ पूनम री चट्ट चांदणी रात। वै दोनूं जणा धानपुर पूगा जितरै ब्याळू वेळा व्हैगी। गाम रा गोर मैं छोरा कब्बडी रमता हा अर चांवटै बेठ्या लोग-बाग वातां करता हा।

—अमरचूनड़ी

रू. भे.—बियाळू, बेळू, ब्याळू, बियालू, बियाळू, बेळू, बेलू, वेळू, वेलू।

ब्याव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ एम गुणसठै साठो आयो, राव सहंसमल ब्याव रचायो। घरपति 'अजो' मौड़ सिर धारै, परणीजण साचोर पधारै।

—रा. रू.

उ०—अब माइतां ब्याव की हांस कीनी छै। रांमेपुर ब्राह्मण नै आग्या दीनी छै। रांमेपुर अठा सूं गुजरात नै व्यायो छै। अहमदावाद नगर मैं आयो छै। तदि कपूरचंद सेठ सुणि पायो छै। सेठ आपका आदमी खिनायै रांमेपुर नै बुलायो छै।

—बगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—२ रजपूतां नै उपदेस पमू चारो खाण वाळै ही सांमधरम पाळियो तो है। राजपूतां थै नरदेह हो, अंन धणी री खावो दुख मैं सहायता धणी सू लो ब्याव सावा आदि मैं ईजत राखै है अैड़ा घणा कारण है सो थै राजपूती री राह चालणी चाहो नै तांहरो उद्धार चाहो तो धणी री बुरी नै आपरी न्यूंनता जांणो।

—वी. स. टी.

उ०—४ हरसा वीर मेरा रे, राव गढां रै, करतो ब्याव। मेरी मा का रे जाया, घुड़ला तो हसती रे देतो घूमता।

—जीणमाता री गीत

ब्यावड़ो—देखो 'विवाह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ओसर मोसर मांय, ब्यावड़ां आड़ी आवै। चारै पारै मिळा, करवलां भोज मणावै। कूतरड़ी रै भेळ, गिणीजै नीरो माड़ो। पण घिटाळै टळै, नरां अपजस अंबाड़ो।

—दसदेव

ब्यावट-सं. पु. [सं. व्यावर्त्त] दोष, महादोष।

उ०—हरजीमल सेठ रागी थयो, जद रुघनाथजी सै उरजोजी साधु मोटो ओळियो लेई वांचवां लागो। भीखणजी उठै अमकड़ियै गांम काचो पांणी लीधो, अमकड़ियै गांम कंवांड़ जड़नै सूता, अमकड़ियै नित्य पिंड लीधो, इत्यादिक अनेक दोख पांनां सूं वांचवां लागो। जद सेठजी बोल्या—जोधपुर जावो राजा कनै पुकारो। आ तो ब्यावट है। ओ झगड़ो म्हां सूं नहीं मिटै।

—भि. द्र.

ब्यावण, ब्यावणो—देखो 'ब्यावण' (रू. भे.)

ब्यावणू—देखो 'ब्यावणू' (रू. भे.)

ब्यावणो, ब्यावबो—१ देखो 'ब्याणो, ब्याबो' (रू. भे.)

उ०—खारचिया मैं स्वांमीजी पधारचा। एक बाई कह्यो स्वांमीजी म्हारै भैंस ब्यावै जब पधारो तो लाहो लेवूं। तै किम भैंस ब्यायां एक महिनां तांइ दूध दही वावर देवै पिण विलोवै नहीं। तै देवी रै टांणै पधारज्यो। —भि. द्र.

२ देखो 'विवाहणो, विवाइबो' (रू. भे.)

ब्यावणहार, हारो (हारी), ब्यावणियो—वि०।

ब्याविग्रोड़ो, ब्यावियोड़ो, ब्याव्योड़ो—भू० का० कृ०।

ब्यावीजणो, ब्यावीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

ब्यावर—सं. स्त्री.—१ गाय भैंस आदि की जिनेंद्रिय या योनि।

२ प्रसव देने की क्रिया।

उ०—दूहो दुपटो दांम, जोड़चा सो ही जांणसी। ब्यावर तणो विरांम, वांझ न जांणें बींझरा। —बींझरा अहीर री बात

ब्यावलो—देखो विवाहलो' (रू. भे.)

ब्यावहारिक, ब्यावहारीक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)

ब्यावियोड़ो—वि. स्त्री.—१ जिसका विवाह हो गया हो।

२ जिसने बच्चे को जन्म दिया हो, प्रसूता।

ब्याबियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्यावियोड़ी)

ब्यावू—सं. पु. [अनु.] कुत्ते के भौंकने की आवाज।

उ०—पण मोट्यार बेटा उणरै कैणा री कीं गिनरत करै नीं। वो घड़ी घड़ी वांरै माथै धसळां करतो कुत्ता री गळाई भुसै। सांकड़ै आयां पूंछ हिलावै। आठ पौर कळझळ करतो वो कुत्ता री भांत ब्यावू ब्यावू करतो रैवै। मोट्यार काठो बेटा उण रै भुसणा री कीं यारै करै नीं। —फुलवाड़ी

ब्यास—सं. पु. [सं.] १ वेदों का संग्रह, विभाग व सम्पादन द्वारा पुनर्रचना करने वाले एक महर्षि, जो पाराशर ऋषि व धीवर कन्या सत्यवती (मत्स्यगन्धा) के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे।

उ०—१ सावतरी सांमि रा करै वाखांण किताई, रुखमांगद इंबिरीक साध नारद सवाई। पारासुर पैहळाद सेस गंगेव महेसुर, अरिजण नै अकरूर ब्यास रिखि बारट ईसर। —पी. ग्रं.

उ०—२ सहज कळा जागी सबैं, तन मन वचनां सास। जनररिया इंदर कथा, वेद न जांणें ब्यास। —अनुभववांणी

उ०—३ देवी वालमिक ब्यास रूपै तुं कत्त, देवी रांमायण पुरांणो भागवत्त। देवी काबा रै रूप तूं पाथ लूंटै, देवी पाथ रै रूप भाराथ जूटै। —देवि.

वि० वि०—इन्होंने पुराण, भागवत, महाभारत व वेदांतसूत्र आदि की रचना की थी। ये नदी के बीच टापू पर उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन व रंग काला होने के कारण कृष्ण कहलाये। इनका जन्म सत्यवती की कौमारावस्था में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनकी माता सत्यवती का विवाह भीष्म पितामह के पिता महाराज शान्तनु से हुआ था। जिससे उसे विचित्र वीर्य व चित्रांगद नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। इन दोनों पुत्रों की मृत्यु निसन्तान होने के कारण वंश की स्थापना के लिए इन्हें सत्यवती ने नियोग की आज्ञा दी। अतः दोनों की पत्नियों अम्बिका व अम्बालिका से नियोग कर क्रमशः धृतराष्ट्र व पाण्डु को जन्म दिया एवं अम्बिका की दासी से विदुर को जन्म दिया। इन्होंने संजय को दिव्यदृष्टि दी थी। विभिन्न मन्वन्तर में जन्म लेकर वेदों के विभाग, संग्रह व सम्पादन करने वाले अट्ठाईस महर्षियों में इनका अन्तिम नाम है। सभी अट्ठाईस महर्षियों को व्यास कहते हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

स्वयंभू, मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु, इन्द्र, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, ऋषभ, सुतेजा, अन्तरिक्ष, सुचक्षु, त्र्यारुणि, धनञ्जय, कृतञ्जय, ऋतञ्जय, भरद्वाज, गौतम, हर्यात्मन, वाचश्रवा, तृणबिन्दु, ऋक्ष, शक्ति, पराशर, जातूकर्ण और कृष्णद्वैपायन।

२ ब्राह्मण जो कथावाचक व ज्योतिषी होते हैं।

उ०—१ बियै 'गजन' फिर बूझिया, 'अजन' वडा उमराव। प्रोहित ब्यासां बारठां, पूछै रीत प्रभाव। —रा. रू.

उ०—२ व्यापारी सहू वांणिआ, जोसी वैद्यक ब्यास। मांगण पणि मिलिया बहू, सहूनी पूगइ आस। —मा. कां. प्र.

३ गोल वृत्त में से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी निकल जाने वाली रेखा। (रेखा गणित)

४ फैलाव, विस्तार।

रू. भे.—बियास, बीयास, ब्यास, बिग्रास, बियास, ब्यासि, ब्यासी।

ब्यासगीता—सं. स्त्री. [सं.] एक उपनिषद का नाम।

ब्यासगुफा—सं. स्त्री. [सं.] बद्रिकाश्रम के पास की एक गुफा जहाँ व्यासजी द्वारा पुराणों की रचना की गई थी।

ब्यासतीरथ—सं. पु. [सं. व्यासतीर्थ] एक प्रसिद्ध तीर्थ। (पुराण)

ब्यासपूनम, ब्यासपूरणिमा—सं. स्त्री. [सं. व्यासपूर्णिमा] आसाढ़ की पूर्णिमा जिसे गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं।

ब्यासवन—सं. पु. [सं.] कुरुक्षेत्र में स्थित एक वन जिसमें एक पुण्य तीर्थ है।

ब्यासस्थल, ब्यासस्थली—सं. पु. [सं.] कुरुक्षेत्र में एक तीर्थ, जहाँ व्यास ने अपने पुत्र वियोग से संतप्त हो शरीर त्याग देने का निश्चय किया था।

ब्याससूतर, ब्याससूत्र—सं. पु. [सं. व्याससूत्र] वेदांतसूत्र।

ब्यासि, ब्यासी—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

ब्याह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ नव नव खेल वसंत नित सिर आयौ मधुमास। परणा-वण 'जैसाह' नूं, आगम ब्याह प्रकास। —रा. रू.

उ०—च्यार चक चमरी वेद छुछम पढे, अरध अर उरध के बीच फेरा। दास हरिरांम कहै ब्याह अैसा रच्या, आय नहीं जाय वळ फेर घेरा। —अनुभववांणी

उ०—पछै रूण सांखलां रै पधारिया। सांखला नाळेर ले रावजी रै सांम्हां आया। सांखलो टीकायत रावत कहावतौ तिण री बेटी रावजी नूं परणाई। अर रावजी पण खरा मेंहरबांन हुय ब्याह कियौ। —नैणसी

उ०—४ रंग विण ब्याह, वेस विण रांमति, सुंदरि विण ग्रिह-वास जिसौ। सुरतांण कहै कलियांण समोभ्रम, त्याग पखै कुळ जलम तिसौ। —त्याग प्रसंसा री गीत

ब्याहक-वि.—विवाह करने वाला, दुल्हा।

उ०—हैरांन हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडै। गजगाह 'भीम' 'गाजी' हुऔ, ब्योहक लाडी लाडडै। —गु. रू. बं.

ब्याहणौ, ब्याहबौ—१ देखो 'ब्याणौ, ब्यावौ' (रू. भे.)

उ०—१ इतरै फकीर पाखती घोड़ा बंधिया छै जिकां रै सांम्हौ जोवणै लागियौ। सो पायगां मांही बंधी चंवरढाल नजर चढी। अेक सूरेजी री सवारी रौ घोडौ भंवर आरबी बडी सी कीमत रौ। चंवरढालती सूं ब्याही छै सो अेक तौ बछेरौ बरस अढाई रौ हुवौ। अेक बछेरौ महिनां नौ री हुई सौ दोनूं पाखती बंधिया खड़ा छै। —सूरै खींवै कांधळोत री बात

उ०—२ ताहरां खांन जाय घोड़ी संभाळी। घोड़ी रा पगां मांहीं सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी। ताहरां खांन मन में कहण लागियौ—जे अेम दोय बार ब्याही छै पण गट्टी नूं तौ तोड़ नांखसी। यूं जांण घोड़ी नूं कांयजौ देय, गट्टी सूद्यां बाहर काढी। —सूरै खींवै कांधळौत री बात

उ०—३ आ कुत्ती एक बाळद री सागै थी ब्याभण थी सो ई ठांव ब्याही। —साह रांमदत्त री वारता

२ देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोमपाल री सु कन्या, जयमाळा तसु नांम। घन विक्रम संग ब्याहई, नगर सोनारै गांम। —पंचदंडी री वारता

उ०—२ सुरजन सुत बूंदी सदन, संग्या दुरजणसाल। ब्याहण हूं बळभद्र नूं, हुवौ सहायक हाल। —वं. भा.

ब्याहणहार, हारौ (हारी), ब्याहणियौ—वि०।

ब्याहिओड़ौ, ब्याहियोड़ौ, ब्याह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ब्याहीजणौ, ब्याहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

ब्याहति, ब्याहती—देखो 'व्याह्रति' (रू. भे.)

ब्याहदापौ-सं. पु.—१ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाली एक सरकारी कर विशेष।

२ देखो 'दापौ'।

ब्याहलौ-सं. पु.—१ डिंगल का एक (छंद) गीत विशेष।

२ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

उ०—गुरु गोविंद के सरणै आयौ, कुळ की लज्या पेली। क्रस्ण क्रपा तें कथै ब्यावलौ, भणै पदमैयौ तेली। —रुकमणी मंगळ

ब्याहार-सं. पु [म.] १ वक्रता, भाषण। २ ध्वनि, नाद, उच्चारण।

ब्याहियोड़ी—देखो 'ब्याहियोड़ी' (रू. भे.)

ब्याहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्याहियोड़ी)

ब्याहेलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

ब्याही—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

ब्याहुलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

ब्याहृत-वि. [सं. व्याहृत] बोला हुआ, भाषण दिया हुआ, उच्चरित किया हुआ।

ब्याह्रति, ब्याह्रती-सं. स्त्री. [सं. व्याह्रतिः] १ भाषण, वक्तृता।

२ बयान।

३ भूः, भुवः, स्वः आदि मंत्र जो गायत्री मंत्र के साथ जपे जाते है।

उ०—व्याह्रती गायत्री, व्रती, धारत नहीं धरम धनी, स्त्रुती औ स्म्रति सरब धूर में धसाता। वकतौ में बाद बाद, बूझत करतौ विवाद, सीतळप्रसाद सरब जात कौ जीमाता। —ऊ. का.

रू. भे.—ब्याहति, ब्याहती।

ब्यिजण, ब्यिजन-सं. स्त्री. [सं. वीजनं] १ हवा, वायु।

उ०—गल्यां पीतल रतांजणी तणां पखावज धौंकार करइ छइ। न्रत्यकी पात्र न्रत्य करइ छइ। ततवितत घन सुखिर पंचवरण वाजित्र वाजइ छइ। पंचवरण छत्र धारियां छइ। चांमर ब्यिजन विहुं पखि हुइ छइ। —कां. दे. प्र.

२ देखो 'व्यंजन' (रू. भे.)

ब्युतक्रस्ट-सं. पु. [स. व्युत्क्रुष्ट] व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर बोलने की क्रिया या भाव। (संगीत)

ब्युत्थितास्व, ब्युथितास्व-सं. पु. [सं. व्युत्थिताश्व] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम।

ब्युत्पत्ति-सं. स्त्री. [सं.] १ मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान।

२ शब्द का मूल रूप।

३ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

ब्युत्पन्न-वि. [सं.] निकला हुआ, निकसित।

२ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान ।

व्युसितास्व-सं. पु. [सं. व्युषिताश्व] पुरुवंशीय एक राजा का नाम जो राजा कक्षीवान् की पुत्री भद्रा का पति था ।

वि. वि.—इसकी पत्नी भद्रा अत्यन्त सुन्दर होने के कारण यह अति कामासक्त रहता था अतः इसकी असामयिक मृत्यु हुई । मृत्यूपरान्त इसके शव से भद्रा को सात पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

व्युस्ट-सं. पु. [सं. व्युष्ट] १ पुष्पार्ण एवं दोषा के पुत्रों में से एक, जो पुष्करिणी का पति एवं सर्वतेजस् का पिता था ।

२ विभावसु एवं उषा के पुत्रों में से एक पुत्र, वसु ।

व्यूंवर-सं. पु. [सं. व्योमवर] देवराज इन्द्र । (अ. मा.)

व्यूढ-वि. पु.] सं.] १ पूर्ण, भरा हुवा, पूरा ।

२ विवाह किया हुआ, विवाहित ।

३ सेना की आकृति ।

उ०—ओर की हवेल आंनौ पूरौ पन भेल भेल, खेलबौ पसंद कीनौ बाहनौ अनी कौ तैं । नांम परतापसिंह प्यार कौ पितु तैं पायौ, व्यूढ वरदांन वडा धन्वप धनीकौ तैं । —ऊ. का.

व्यूढोरस, व्यूढोरू-सं. पु. [सं.] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था ।

व्यूह-सं. पु. [सं. व्यूह:] १ समूह, झुण्ड । (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ सेना, फौज ।

३ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष रूप से खड़ा करने का ढंग, सेना-विन्यास ।

उ०—१ सुत 'आणंद' 'महेस', खगे पंडवेस धड़च्छै । गिड़ बाजे पड़िहार, व्यूह चक्राकृत अच्छै । —रा. रू.

उ०—२ डंगां घीसता सांकळां सूत डोरा, धरा यूं खणे ज्यूं बणे खेत घोरा । भला जूह वे बेरियां व्यूह भेदी, बिजै मित्र जे चित्र संग्रांम बेदी । —वं. भा.

४ शरीर, देह ।

उ०—बभीछन कूं पाट बैठाए, सीता सहत अवधपुर आए । भरथ सत्रघन लछमन रांमा, पूरण विस्णु व्यूह अभरांमा । —ऊदौजी अड़ींग

५ तर्क-वितर्क ।

६ निर्माण, रचना ।

७ चक्र ।

८ भ्रमरफाळ ।

रू. भे.—व्यूह ।

व्यूहन-सं. पु. [सं. व्यूहनं] १ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष ढंग से खड़ा करने की क्रिया ।

२ निर्माण करने की क्रिया ।

व्योंत—देखो 'बेंत' (रू. भे.)

व्योंतणौ, व्योंतबौ 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

व्योंतणहार, हारौ (हारी), व्योंतणियौ—वि० ।

व्योंतिओड़ौ, व्योंतियोड़ौ व्योंत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

व्योंतीजणौ, व्योंतीजबौ—कर्म वा० ।

व्योंताणौ, व्योंताबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

व्योंताणहार, हारौ (हारी), व्योंताणियौ—वि० ।

व्योंतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

व्योंताईजणौ, व्योंताईजबौ—कर्म वा० ।

व्योंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्योंतायोड़ी)

व्योंतियोड़ौ—देखो 'बेंतयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्योंतियोड़ी)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—अंदर भक्ति, मौ मन परिखौ ए, तूं तौ पहला व्योपारी सोरिखौ ए । जड कह्यां राजा खेदै भरचौ ए, पिण इतरी कह्यां ठाडौ पड़चौ ए । —जयवांणी

व्योम-सं. पु. [सं. व्योमन्] १ आकाश, आसमान । (डि. नां. मा.)

उ०—१ प्रपंच पंच तत्व कौ तुंही उपावनी, क्षमाप वह्नि वायु व्योम तू खपावनी । ब्रह्म्म कौ तुंहीं रजा भुजा बलंदनी, नमांमि 'इंदरा' 'समद' नंदनी । —मे. म.

उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ । थंभ चलेबौ सोम रवि, पेखै व्योम अचंभ । —रा. रू.

२ जल, पानी ।

३ भोडल, अभ्रक ।

४ सूर्य का मंदिर ।

५ बादल, मेघ ।

६ शून्य ।

६ विष्णु का नाम ।

७ पवन, वायु, हवा ।

६ नीला, आसमानी । * (डिं. को.)

१० यदुवंशीय राजा दशार्ह के पुत्र जो जीमूत का पिता था ।

रू. भे.—बोम, बौम, व्योम, वयोम, वोम, वोमि, वौम ।

व्योमकेस, व्योमकेसी-सं. पु. [सं. व्योमकेश, व्योमकेशिन्] शिव, महादेव ।

उ०—उरमाळ मुंड नि छाल अग की खाल केसरि जूसणं । वपु भस्म लेप स्मसांन राजित, व्याळ पांणि विभूसणं । गण भूतेस पिसाच कौतुक, अंत तंनु जटा जुटी । जय व्योमकेस महेस त्रंबक, भीम भूतप धूरजटी । —ला. रा.

ब्योमगंगा–सं. स्त्री. [सं.] आकाशगंगा ।

उ०—भवानी नमो कच्छपी स्वांन भासा, भवांनी नमो ऐन ईसांन आसा । भवांनी नमो ब्योमगंगा वलच्छा, भवांनी नमो चेतना दंन दच्छा । —मे. म.

रू. भे.—बोमगंगा, व्योमगंगा, वोमगंगा ।

ब्योमगमन–सं. स्त्री. [सं.] आकाश में उड़ने या विचरण करने की क्रिया ।

ब्योमगमनी–वि. [सं.] आकाश में उड़ने या विचरण करने वाला ।

सं. स्त्री.—आकाश में उड़ने या विचरण करने की विद्या।

ब्योमचर, ब्योमचारी–सं. पु. [सं. व्योमचर, व्योमचारिन्] १ आकाश में विचरण करने वाला, देवता ।

२ सूर्य, सूरज । ३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आकाश में उड़ने वाले पक्षी । ५ गन्धर्व ।

वि.—आकाश में विचरण करने वाला ।

ब्योममंडळ–सं. पु. [सं. व्योममण्डल] आकाश ।

ब्योमम्रग–सं. पु. [सं. व्योममृग] चन्द्रमा के दसवें घोड़े का नाम।

ब्योमयांन–सं. पु. [सं. व्योमयान] एक प्रकार का वह यान जिसमें बैठ कर आकाश में उड़ा जा सकता है ।

ब्योमवली, ब्योमवल्ली–सं स्त्री. [सं. व्योमवल्ली] अमरवेल नामक लता विशेष ।

ब्योमसरिता–सं. स्त्री. [सं.] आकाश में बहने वाली नदी, आकाशगंगा।

ब्योमारि–सं. पु.[सं.] एक विश्वदेव का नाम।

ब्योमाळ–सं. पु. [सं. ब्योम] आकाश । (डिं. नां. मा.)

ब्योमसुर–सं. पु. [सं.] मायासुर का पुत्र एवं कंस का अनुगामी एक असुर । कृष्णवध के लिए यह गोकुल गया था जहां इसका वध कृष्ण ने किया था ।

ब्योरौ–सं. पु.—१ भेद, रहस्य ।

२ कारण ।

उ०—तिसै समियै माहै भांणोज मांनधाता आइ मुजरौ कीयौ । रांण्यां कहै छै, भांणोज एकै समियै थारै मामोजी नूं तूं पूछै खुसियाळ करि कवळ अर पूछै माहाराजा मोहल माहै पधारो छौ ताहरां नीसासा क्यूं नाखौ छौ, इतरौ ब्योरौ म्हां नु ले देई । —चौबोली

३ विवरण, वृतांत, हाल ।

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ व्याख्या, टीका ।

६ संक्षिप्त जानकारी, परिचय ।

७ बयान ।

रू. भे.—ब्योरो ।

ब्योहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—यूं हम छाड्या जग ब्योहार, सुख थोड़ा दुख अनंत अपार । माता पूत पिता नहीं कोय, स्वारथि आय मिल्या पख दोय ।
—ह. पु. वा.

ब्योची–सं. स्त्री.—एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष ।
(अमरत)

ब्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—दमक छटा छडिदंड पताका देखिया, पटा हाथ ब्योपार जुहारां पेखिया । आभूखण नर नारि ईसी विध ओपिया, जांणक सुरपुर लोक, इधक छबि जोपिया । —बगसीरांम प्रोहित री बात

ब्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—आपणी आपणी वांणी राजवंसी राजावां कै रूपक सुणाए, सूरवीर सांमंत ताकूं अनंत सुहाए । एतै कवि वीरना कै अग्रकारी, स्रीमहाराज के सुभचिंतक विद्या जस के ब्योपारी ।
—रा. रू.

व्रंग—देखो 'वंग' (रू. भे.)

उ०—व्रंग हुवै भोपाळ वसती गढ कोट उजाड़ै व्रंग हुवै नर नारि सूरवीरां पति पाड़ै । व्रंग हुवै राज्यंद्र, राज ले बंधव मारै; व्रंग गोई गोठियां, दाव दोरूं मैं सारै । व्रंग न कीजै भाइयो, व्रंग कौ को छीजै, विसंन भगत 'उदो' कहै, जांणतां व्रंग न कीजै ।
—ऊदोजी नैण

व्रंद–सं. पु. [सं. वृंद] १ समूह, झुण्ड । (अ. मा.)

उ०—१ आपगां दळण गीखम जळण आहौटी, विसै खटचलण कळियां कदम व्रंद । वारवाहां करी आठ मासां वळण, नह करी बळण कूं जसोमत नंद । —बां. दा.

उ०—वरणूं रूप व्रंदावन ओप वाधू, सदा सेवतं देवतं व्रंद साधू । तरां भार अड्डार नूं भार तैसो, अनेकां विराजै व्रखां रूप अैसो ।
—रा. रू.

उ०—३ डाक चमु वजाड़ै ग्रीधां गळ डळां, बीजुजळां भुजाबळां भांजे खळां व्रंद । अछरां अरजां करै आटोला बीवांण आवौ, अंगहोमा कहै उभी आवौ पुरां इंद । —वनजी खिड़ियौ

उ०—४ लखि फौज तुंग लड़ग, ऊवंग किर दधि अंग । वणि सुरथ पायक व्रंद, जग जांण दळ जयचंद । —रा. रू.

२ ढेर, समुच्चय ।

उ०—भवांनी नमो सत्य आलाप बाळा, भवांनी नमो व्रंद विद्या विसाळा । भवांनी नमो देव हेरंभ माता, भवांनी नमो तन्नमो संत त्राता । —मे. म.

३ गले में होने वाला अर्बुद ।

४ एक प्रसिद्ध कवि का नाम।

५ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ मुहूर्त।

रू. भे.—ब्रंद. ब्रिंद।

ब्रंदा-सं. स्त्री. [सं. वृन्दा] १ तुलसी।

२ गोकुल के समीपस्त वन।

३ कृष्ण की प्रेमिका राधिका का नाम।

४ जालंधर नाम दैत्य की पत्नी और कालनेमि की कन्या का नाम।

रू. भे.—ब्रिंदा।

ब्रंदारक-सं. पु. [सं. वृन्दारक] देवता। (नां. मा.)

उ०—घट घाव बजै तठ आठ घड़ी, पर आरण ज्यां घण रीठ पड़ी। थिर चूर हुवा कर सूर थके, छळ पेख **ब्रंदारक** व्योम छकै। —रा. रू.

वि.—१ मनोहर, सुन्दर। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ अत्यधिक, बहुत।

रू. भे.—बंदारक, ब्रंदारक, ब्रिंदारक।

ब्रंदारकतरय, ब्रंदारकतरु-सं. पु. [सं. वृंदारकतरु] देव वृक्ष, कल्पवृक्ष।

उ०—सिसु वै मित्ती वित्ती, उदमौ पौगंड मंड सिंगारौ। ज्यौं **ब्रंदारकतरयं**, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम। —रा. रू.

वृंदारका-सं. पु. [सं. वृंदारक] १ देवता। (अ. मा.)

२ देखो 'ब्रंदारिका' (रू. भे.)

ब्रंदारिका-सं. स्त्री. [सं. वृंदारिका] अप्सरा।

रू. भे.—ब्रंदारका।

ब्रंदावन-सं. पु. [सं. वृन्दावन] १ वह स्थान या चबूतरा जिस पर तुलसी का पोधा उगा हुआ हो।

२ मथुरा से ६-७ मील दूर एक प्रसिद्ध तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता है। (ह. नां. मा.)

उ०—१ परणीजै मधुपुरी, 'अभौ' ब्रंदावन आयौ, पेखि धांम सुख परम, भड़ां तीरथ मन भायौ। परखि निगम द्रुम पुंज, हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै, हेक जळ जमरण विहारै। —रा रू.

उ०—२ वरण रूप **ब्रंदावन** ओप वाधू, सदा सेवतं देवतं ब्रंद साधू। तरां भार अट्ठार नूं भार तैसौ, अनेकां विराजै ब्रखां रूप ऐसौ। —रा. रू.

रू. भे.—बनरावन, बिंद्रावन, बिंद्रावन, ब्रंदावन, ब्रिंदावन, वनरावन, विंदरावन, विंदावन, विनरावन, विनराविन, वींदावन।

ब्रंदावनपत, ब्रंदावनपति, ब्रंदावनपती-सं. पु. [सं. वृन्दावन+पति] १ श्रीकृष्ण।

२ ईश्वर। (नां. मा.)

ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव-सं. पु. [सं. वृन्दावन+राज] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव।

ब्रंदावनबासि, ब्रंदावनवासी-सं. पु. [सं. वृंदावन+वासिन्] १ वृंदावन में वास करने वाले, वृंदावन निवासी।

२ श्रीकृष्ण।

३ विष्णु।

४ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बंद्रावनवासी।

ब्रंदावनेस, ब्रंदावनेसर, ब्रंदावनेसुर, ब्रंदावनेस्वर-सं. पु. [सं. वृंदावनेश्वर] श्रीकृष्ण।

ब्रंदावनेसरी, ब्रंदावनेसुरी, ब्रंदानेस्वरी-सं स्त्री. [सं. वृंदावनेश्वरी] राधिका।

ब्रंभचार—देखो ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—भींवर छोड्यौ जाळ, कूड़ छोडयौ वावरियै। पांणी पीवै छांणि जुलम, करता मुंह छुरियै। करद कसाई हड कुटा **ब्रंभचार** तांह लीयौ, बांभण खतरी बांणिया अवळ कलमूं तांह कीयौ। —ऊदोजी नैंण

ब्रंभचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे)

उ०—कुंण हींदू कुंण तुरक, कुंण काजी **ब्रंमचारी**। कुंण मुलां दरवेस, जती जोगी जटधारी। कुंण बांळक कुंण व्रध, कुंण राजा कुंण परजा। सूर धीर का कांम और का नहीं अनंजा। —अल्लूजी कवियौ

ब्रंभा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—सुर नर कोड़ि तेतीस, इंद **ब्रंभा** संकर सही। जांन अरजन भींव, पांचू वीर इकांयती। —ऊदोजी नैंण

ब्रंम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'भ्रम' (रू. भे.)

ब्रंमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

उ०—दयावांन नर दाखजै वडै नम विदवांन। दीरघ ई कै नांम दख गणौ एक **ब्रंमग्यांन**। —एका.

ब्रंमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

ब्रंमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रंमरूप-सं. पु. [सं. ब्रह्मरूप] १ वेद। (अ. मा.)

२ देखो ब्रह्मरूप' (रू. भे.)

ब्रंमवरधन-सं. पु. [सं. भर्मन्+वर्द्धनं] ताम्र ताम्बा। (अ. मा.)

ब्रंमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे) (एका)

ब्रंहम, ब्रंह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—निराकार निरवांग, जोगेस्वरां दुलभ जाग तेज़ोमय। रूप विस्नु रहमाण, पंकज नाभ ब्रंह्म उतपन्नो। —सू. प्र.

उ०—२ जिण ब्रंह्म तणै मारीच जांणि, मारीच तणै कासिप प्रमांणि। सुत कासिप सूरज तप असाधि, वइवस्तु सूर मुन तेज वाधि। —सू. प्र.

ब्रंह्मा, ब्रंह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रक–सं. पु. [स. वृक] १ भेड़िया।

उ०—घोरे दू जरख ब्रक घूघुवां, विस क सवद आवत सुणी। सूव रयण लगै ग्रंतस मही, ग्रागै घरू उदियामणी। —पा. प्र.

२ स्वान, कुत्ता। (ग्र. मा.)
३ श्रृंगाल, सियार, गीदड़।
४ कौग्रा, काक।
५ उल्लू।
६ उदर में स्थित एक प्रकार की ग्रग्नि विशेष।
७ डाकू, लुटेरा।
८ सूर्यवंशी राजा रूरुक का एक पुत्र।

उ०—संभ्रम सुदेव ग्रप विजयसूर, पुत्र जास रूरुक तप तेज पूर। सुत रूरुक हुवौ ब्रक पोह सधीर, ब्रक सुतण बाहु वीराघीवीर। —सू. प्र.

९ कृष्ण एवं सत्या का एक पुत्र। १० हरति राजा का नाम।
११ सृष्टि एवं छाया का एक पुत्र। १२ रोहित राजा का नाम।
१३ पांडव पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया था।
१४ एक राजा, जिसने जीवनभर मांस-भक्षण नहीं किया।
१५ श्रीकृष्ण एव मित्रविंदा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।
१६ द्रोपदी के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा, जो महाभारत युद्ध में कौरवों की ग्रोर से युद्ध करते हुए मारा गया था।
१७ शिष्ट एवं सुच्छाया के पुत्रों में से एक पुत्र राजा।
१८ भरुक राजा का पुत्र एवं बाहुक राजा का पिता एक राजा।
१९ शूर एवं मारिषा का पुत्र, दुर्वाक्षी का पति एवं तक्ष तथा पुष्कर का पिता एक राजा।
२० वृथु वैन्य एवं ग्रर्चिष्मती के पुत्र का नाम।
२१ वत्सक यादव एवं मिश्रकेशी नामक ग्रप्सरा के पुत्रों में से एक
२१ शकुनि नामक राक्षस का पुत्र।

वि० वि०—इसने शिव की ग्राराधना कर यह वरदान प्राप्त किया कि वह जिसके मस्तक पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा या मर जायेगा। इस वरदान का प्रयोग इसने पार्वती को प्राप्त करने हेतु शिव पर ही करने को उद्यत हुग्रा। तब शिव भाग कर विष्णु के पास गये। विष्णु ने ब्रह्मचारिन् का रूप धारण कर इसे ग्रपने स्वयं के मस्तक पर ही हाथ रखने को प्रेरित करके भस्म किया।

वि.—क्रूर क्रोधिना। (डि. को.)

रू. भे.—ब्रक, ब्रक्क, बीरक, बीरक्क, ब्रक्क, ब्रग्ग, ब्रग्ख, त्रिक्ख, ब्रिख, ब्रिख्ख।

ब्रककरमा–सं. पु. [सं. वृककर्मा] एक ग्रसुर का नाम।

ब्रकखंड–सं. पु. [सं. वृकखण्ड] एक ऋषि का नाम।

ब्रकग्रह–सं. पु. [सं. वृकग्रह] एक ऋषि का नाम।

ब्रकजंभ–सं. पु [सं. वृकजंभ] एक ऋषि का नाम।

ब्रकदंत–सं. पु. [सं. वृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम जिसकी मालतिनी नामक पुत्री लंकापति रावण के भाई कुंभकर्ण को व्याही गई थी।

उ०—बांणासुर बोटियौ, माघ चेटियौ सदा मिति। दळै दैत ब्रकदंत, खळां ऊपरां हिमै खिति। —पी. ग्रं.

ब्रकदंस–सं. पु. [सं. वृकदंश] कुत्ता, स्वान।

ब्रकदीप्ति–सं. स्त्री. [स. वृकदीप्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेव–सं. पु. [सं. वृकदेव] वसुदेव के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेवा–सं. स्त्री. [सं. वृकदेवा] वसुदेव की पत्नी ग्रौर देवक की कन्या जिसका दूसरा नाम देवकी था, कृष्ण, ग्रवगाहक, नंदक ग्रादि की माता।

ब्रकनिव्रति–सं. पु. [सं. वृकनिवृत्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकरथ–सं. पु. [सं. वृकरथ] दानवीर कर्ण के एक भाई का नाम।

ब्रकल–सं. पु. [स. सं. वृकल] १ श्लिष्टि के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

२ वृक नामक राजा का नाम।
३ ग्रक्रूर के एक पुत्र का नाम।

ब्रकासुर–सं. पु. [सं. वृकासुर] कोक एवं विकोक का पिता एक राक्षक।

ब्रकास्य ब्रकास्व–सं. पु [स. वृकाश्व] एक प्राचीन ऋषि।

ब्रकुट ब्रकुटक, ब्रकुटि, ब्रकुटी, ब्रकुट्टी—देखो 'भ्रकुटि' (रू. भे.)

ब्रकोदर, ब्रकोदर–सं. पु. [सं. वृकोदर] १ भेड़िया।

२ भीमसेन। (ग्र. मा)

उ०—रुठ इसी दे रेस, ऊठ महाभड़ ऊठ ग्रब। कूट गहै छै केस, दूठ ब्रकोदर देख रे। —रामनाथ कवियौ

३ किसी प्रसिद्ध भीमनामक योद्धा हेतु किया जाने वाला सम्बोन्धन सूचक शब्द।

४ ब्रह्मा।

रू. भे.—वकोदर, व्रकोदर, वक्रोदर, विकोदर, बीकोदर, ब्रखोदर।

ब्रकोदरी–सं. स्त्री. [सं. वृकोदरी] पुतना राक्षसी की एक बहन का नाम।

व्रक्क-सं. पु. [सं. वृक्कः] १ हृदय, दिय।

२ गुरदा।

३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

व्रक्ख, व्रक्ष-सं. पु. [सं. वृक्षः] १ पेड़, रूंख।

उ०—१ अनेकं फलं भारिया व्रक्ख ओपं, लियं चाहि सेवा न को जाय लोपं। सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ सौरंभ सिभू विमोहै। —रा. रू.

उ०—२ मंद मंदोमत्ता व्रक्ख धक्का मुडं, गाजता मेघ पाहाड काळा गुडं। ओप ढेंचाळ ढाळां घटा ऊपडं, ऊपरं चींध आकास नेजा अडं। —गु. रू. बं.

उ०—३ जळ पी रूंख तळं सोय रहिया। इतरं एक सिंह आइयौ। तीं नू देख वीं व्रक्ष पर एक बांदर थो जिको एक डाळ तोड़ कुमार पर गेरी। सो सचेतो होय देखे तो नाहर। तीं सूं देख रूंख पर चढ गयौ। सिंह वीं ठांव ही बैठ रहियौ। —सिंघासण बत्तीसी

२ धर्म।

३ दक्ष पुत्री अनला एवं कश्यप के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान।

रू. भे.—बिरक्ख, बिरख, बिरछ, बिरिख, बिरिछ, बीरख, ब्रक्ख, ब्रख; ब्रच्छ, वछ, विरक्ख, विरख, विरछ, विरिक्ख, विरिक्ष, विरिख, विरिखि, व्रक्षि, व्रख, व्रख्ख, व्रच्छ, व्रछ, व्रस, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

व्रक्षचिकित्सा-सं. स्त्री. [सं. वृक्षचिकित्सा] ७२ कलाओं में से एक कला का नाम।

व्रक्षराज-सं. पु. [सं. वृक्षराज] १ पारिजात का वृक्ष।

२ पीपलक नामक वृक्ष।

३ कल्पवृक्ष।

४ वटवृक्ष।

व्रक्षवासी-सं. पु. [सं. वृक्षवासिन्] कुबेर की सभा का एक यक्ष।

व्रक्षायुरवेदयोग-सं. पु. [सं. वृक्षायुर्वेदयोग] वृक्षों चिकित्सा और उन्हें रोपने की विधि, वृक्षों का ज्ञान, चौसठ कलाओं में से एक।

व्रक्षासण, व्रक्षासन-सं. पु. [सं. वृक्षासनं] योग के चौरासी आसनों में से एकप्रकार का आसन विशेष।

वि० वि०—इस आसन में दोनों हाथों के पंजों को जमीन पर सीधा रख कर उन पर सिर टिका कर दोनों पावों को आकाश की तरफ लम्बा करके उलटे मस्तक स्थिर रहना होता है।

इस आसन में प्राण जय शीघ्र होता है। यह आसन करके पांव को घुटने से मोड़ कर एड़ियों को जंघा के निम्न भाग के पास लाने पर अर्द्धवृक्षासन कहलाता है।

व्रक्षि—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—गोरी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम व्रक्षि। विनय करीनइं विलपती, विधि विधि थई विलक्षि। —मा. कां. प्र.

व्रख-सं. पु. [सं. वृष] २ भगवान् श्रीविष्णु का नाम। (अनेका.)

२ कल्प वृक्ष। (,,)

३ देवराज इन्द्र। (,,)

४ धर्म। (,,)

५ इच्छा, अभिलाषा। (,,)

६ भगवान् श्रीकृष्ण।

७ ग्यारवें मन्वन्तर के इंद्र का नाम। (पुराण)

८ पति, स्वामी।

९ कामदेव।

१० बलिष्ठ व्यक्ति, बलशाली।

११ कामुक व्यक्ति, कामी।

१२ शत्रु, दुश्मन।

१३ न्याय।

१४ शिव का नांदिया।

१५ मूसा, चूहा।

१६ दया। १७ भरतवंशीय राजा जो मधुराजा का पिता था।

१८ पूर्वकाल में पृथ्वी का शासक एक असुर।

१९ सृञ्जय एवं यदुवंशीय उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपालिका के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

२० इक्ष्वाकुवंशीय त्रिवृष्ण राजा के पुत्र त्र्यरुण राजा का पुरोहित।

२१ स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर। २२ विकुंठ देवों में से एक।

२३ अनायुषा के पुत्रों में से एक दैत्यपुत्र जो ब्रह्महन्, पशुहन् आदि का पिता था।

२४ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रों में से एक पुत्र।

२५ कृष्ण एवं कालिंदी के एक पुत्र का नाम।

२६ हैहयवंशीय कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र।

२७ अंगराज कर्ण का एक नाम।

२८ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

उ०—भैरव डावी भणं दुगडियौ मांन दिरीजै, जो राजा जीमणौ पोहर हैकण ठेहरीजै। व्रख आड़ो वेखतां पौर खोडस पारंभस; आठ पोहर योमास चलैऊ भेडो ते सुण। —पा. प्र.

२९ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—व्रख जड़ तोड़ मोड़ वैरियां, धर धारूजळ दांत धरै। मारू राव असो मद मैंगळ, कोट गढां सैंलोट करै। —महाराजा जसवंत सिंघ रौ गीत

उ०—२ उवै पाहड़ उपर नूत रौ व्रख हुंतौ। तैरा हाथी रै जितरा फळ। सु फळ नीचा पड़ै। तद फळ रौ पांणी नीसर अर परौ सोनौ हुवै। तद औ उठै फळ सेग्रा हुवै सु ग्रावै अर उहां पांणां रौ सोनौ हुवै तैरी ईटां कर भेळी करै। —ठकुरै साह री बात

उ०—३ तिण वनि गहण विचाळइ पंथी, आविया गंग सनांन कियउ। चढस्यां किम करता चीतवणी, व्रख एकण विसरांम लियउ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ तद योगी राजा नूं बन मांही लेय गयौ। वीं ठाव एक सोनम रौ व्रख। तौ पर एक मुरदौ बंधियौ छै। जोगी कही—ईं मुरदे नूं पेड़ पर सूं छोडि आंणौ। जोगी आप पूरव दिसा जाय मंत्र साधै। —सिंघासण बत्तीसी

३० देखो 'बरस' (रू. भे.)

उ०—१ उण खग नांम खेत जुध आवर, हुय पुर रचै चंद्री चंद्रावर। सांमंद तट करि राज समाजा, रिधू तपै तेरह व्रख राजा। —सू. प्र.

उ०—२ धणी पधारै धांम, सुजस खाटै जगसारै, राज कियौ बड रीत, गिणै व्रख सैंस इग्यारै। रह्या जितै रघुराव, धरम मरजादा धारै, आप पधारत ओक, अवधपुर जीव उधारै। —र. रू.

३१ देखो 'व्रखभ' (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

३२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—१ पाताळ अनइ (अ) म्रतलोक आदीपुरि, हेकांहेक मनइ सह हार। व्रखधारी आखियउ विसंभर, दसमउ व्रख राखियउ दुवार। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वेणी डंड जिसउ विराजइ वांसउ, पिंड उदमाद धरंती पाव। व्रख ताइ चंद तणइ विलागउ, व्रख लइतउ घणाइ व्रखराव। —महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—वीरख, व्रक्ख, व्रख, व्रस, व्रस, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

व्रखक—सं. पु. [सं. वृषक] १ साण्ड, बैल। २ गान्धार के राजा सुबल का पुत्र जो द्रोपदी स्वयंवर में शामिल था तथा महाभारत युद्ध में अर्जुन के द्वारा मारा गया था।

३ मोर, मयूर। (अ. मा.)

४ एक कलिंग देशाधिपति का नाम।

रू. भे.—व्रसक।

व्रखकरमा—सं. पु. [सं. वृषकर्मा] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

व्रखकेतु—सं. पु. [सं. वृषकेतु] १ शिव, महादेव। २ कलिंग देश का एक राजकुमार।

३ कामदेव। (अ. मा.)

४ युधिष्ठर के अश्वमेधीय यज्ञ में अश्वरक्षक अंगराज कर्ण के पुत्रों में से एक जो बभ्रुवाहन के द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—व्रसकेतु।

व्रखक्राथ—सं. पु. [स. वृषक्राथः] द्रोणनिर्मित्त गरुडव्यूह के हृदय स्थान में खड़ा कौरव पक्षीय याद्धा।

व्रखचक, व्रखचकर, व्रखचक्र—सं. पु. [सं. वृषचक्र] मुहुर्त्तशास्त्र का एक योग विशेष जिसकी गणना सम्बन्धित मास की सूर्य संक्रान्ति से की जाती है।

वि० वि०—गृहारम्भ के समय सूर्य संक्रान्ति से गणना करके श्रेष्ठ-नेष्ठ समय का निर्णय किया जाता है। फलितार्थ है कि सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की नक्षत्र तक गिनती के प्रथम ७ नक्षत्रों का गृहनिर्माण अशुभ, ८ से १८ तक के ११ नक्षत्रों का गृहनिर्माण शुभ और १९ से २८ तक के १० नक्षत्रों का गृहनिर्माण अशुभ होता है। वास्तव में सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की संख्या जब ८ से १८ तक हो तभी गृहनिर्माण का कार्यारम्भ शुभ एवं शेष में अशुभ होता है। (मुहूर्त चिन्तामणि)

रू. भे.—व्रसचक, व्रसचकर, व्रसचक्र।

व्रखण—सं. पु. [सं. वृषण] १ देवराज इन्द्र।

२ दानवीर कर्ण।

३ घोड़ा, अश्व।

४ भगवान् श्रीविष्णु। ५ साण्ड, बैल।

६ वृक्ष, पेड़। ७ अण्डकोश। ८ वृषभराशि।

९ सहस्त्रार्जुन राजा का पुत्र एक राजा।

रू. भे.—व्रसण।

व्रखणकच्छ, व्रखणकच्छु—सं. पु. [सं. वृषणकच्छु] एक प्रकार का वह रोग जिसमें पसीने, मैल आदि के कारण अण्डकोश के पास छोटी-छोटी फुंसियां हो जाती हैं।

व्रखणस्व, व्रखणास्व—सं. पु. [सं. वृषण+अश्व] इन्द्र के घोड़े का नाम।

व्रखदंस—सं. पु. [सं. वृषदंश] मंदराचल के निकट का एक पर्वत।

व्रखदरभ—सं. पु. [सं. सं. वृषदर्भ] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ उशीनर देशाधिपति शिवि राजा का नाम, जिसने कबूतर की रक्षार्थ अपने शरीर का माँस दिया था।

३ श्रीविष्णु भगवान का नाम।

४ एक राजा जिसने प्रण एवं गुप्त नियम बनाया था कि ब्राह्मणों को सिर्फ सोना-चाँदी, घी आदि दान में दिया जाय।

रू. भे.—व्रसदरभ।

व्रखदेवा—सं. पु. [सं. वृषदेवा] १ विष्णु भगवान्।

सं. स्त्री.—२ वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

रू. भे.—व्रसदेवा।

व्रखद्वीप—सं. पु. [सं. वृषद्वीप] एक द्वीप का नाम।

रू. भे.—व्रसद्वीप।

व्रखधार, व्रखधारिण, व्रखधारी—सं. पु. [सं. विष+धारिन्] १ सर्प, सांप।

२ जहरीला जानवर।

३ शिव; महादेव।

उ०—पाताळ अनइ (अ) ग्रतलोक आदौपुरि, हेकांहेक मनइ सह हार। व्रखधारी आखियउ विसंभर, दसमउ व्रख राखियउ दुवार।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—व्रसधार, व्रसधारिण, व्रसधारी।

व्रखधुज, व्रखध्वज—सं. पु. [सं. वृषध्वज] १ शिव, महादेव।

२ वृत्र-इन्द्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक असुर।

३ गणेश, विनायक।

४ कर्ण के एक पुत्र का नाम।

५ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

६ प्रवीरवंशीय राजा जिसने अपने स्वजनों का नाश किया था।

७ रथध्वज के पिता एक जनकवंशीय राजा।

रू. भे.—व्रसधुज, व्रसध्वज।

व्रखध्वजा—सं. स्त्री. [सं. वृषध्वजा] देवी, दुर्गा।

रू. भे.—व्रसध्वजा।

व्रखपत, व्रखपति, व्रखपती—सं. पु. [सं. वृषपति] शिव, महादेव।

रू. भे.—व्रसपत, व्रसपति, व्रसपती।

व्रखपरवा—सं. पु. [सं. वृषपर्वन्] १ आंगिरा कुलोत्पन्न एक महर्षि।

२ वृत्र-अनुयायी एक असुर।

३ एक ऋषि जो गन्धमादन पर्वत के पास स्थित अपने आश्रम में रहता था यहीं पर इसने वनवास-काल में पाण्डवों को उपदेश दिया था। ४ शिव का एक नाम।

५ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक जो असुरों का राजा था।

वि. वि.—इसके राजपुरोहित शुक्राचार्य थे। इन्द्र-वृत्र युद्ध में इंद्र से व देवासुर युद्ध में अश्विनों से इसने युद्ध किया था। इसके शर्मिष्ठा, चन्द्रा व सुन्दरी नामक तीन कन्याएं थी। एक बार शर्मिष्ठा के द्वारा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का अपमान किया गया तब शुक्राचार्य ने इसका राज्य छोड़ जाने का निश्चय किया किन्तु इसने उनसे वहीं रहने की प्रार्थना की और अपनी पुत्री शर्मिष्ठा को जन्मभर के लिए देवयानी की दासी बना कर रखा।

व्रखभ—सं. पु. [सं. वृषभ] १ सांण्ड, बैल। (अ. मा., डिं. नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ तूं उपजंइ न खपइ नहु आइस; कुळ न कहिइ कहियउ उकळीण। भीनउ नादि विनोद महाभडि, व्रखभ चढई तइ वावइ वीण।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाघ व्रखभ एकठा वहतां, करइ नहीं मन संका काइ। मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रथ गज व्रखभ तुरंग रथ, दन अनमिति सत दास। सुसा विदा किय नेम सूं, पूरण प्रेम प्रकास। —रा. रू.

उ०—४ जें जें सद्द उचार डाक डमरू कर वाजें, मोर हंस अगराज चडी खगराज गरज्जें। एक हस्ति आरूही व्रखभ अस ऊस्ट्र विगत्ती, सरभ चील सादूळ रीछ बदर तर रत्ती। —रा. रू.

२ शंखिनी जाति की स्त्री के लिए चार प्रकार के पुरुषों में से श्रेष्ठ पुरुष। (कामशास्त्र)

३ कुशाग्र राजा का पुत्र व पुण्यवत् राजा का पिता एक राजा।

४ हैहयवंशीय कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन राजा का एक पुत्र।

५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ भीम के द्वारा मारा गया कलिंगनरेश का भाई।

७ राम सेना का एक यूथपति बन्दर। ८ काशिराज की कन्या जयंती का पति व अनमित्र राजा का पुत्र।

९ सूर्य वीथी का एक नाम।

१० एक प्रकार की औषधि। ११ गान्धार राजा के पुत्र का नाम।

१२ चौबीस प्रकार के अवतारों में से एक। (अ. मा.)

१३ ज्योतिष की बारह राशियों में से दूसरी राशि।

१४ फलित ज्योतिष में बारह प्रकार के लग्नों में से दूसरा लग्न।

१५ सृष्टि व छाया का पुत्र एक राजा। १६ एक असुर जो कृष्ण के द्वारा मारा गया।

रू. भे.—ब्रखभ, विखभ, विखभ्र, ब्रखव, ब्रख्ख, व्रसभ, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिखभ, व्रिख्ख।

व्रखभकेतु—सं. पु. [सं. वृषभकेतु] शिव, महादेव।

रू भे.—व्रसभकेतु।

व्रखभगत, व्रखभगति, व्रखभगती—सं. पु. [सं. वृषभगति] शिव, महादेव।

रू. भे.—व्रसभगत, व्रसभगति, व्रसभगती।

व्रखभचकर, व्रखभचक्र—देखो 'व्रखचक्र'।

व्रखभधज, व्रखभधुज, व्रखभधुजी, व्रखभध्वज—सं. पु. [सं. वृषभध्वज]

१ शिव, महादेव। (अ. मा., कु. कु. बो., नां. मा.)

उ०—ऊठिया विसन अनइ ब्रह्मादिक, जिगन न होवइ राव अजांण। धुर ताइ करइ प्रणांम व्रखभध्वज, कथ ब्रह्म तउ वेद पुरांण।
—महादेव पारवती री वेलि

२ यम, धर्मराज। (नां. मा.)

रू. भे.—व्रखबधुज, व्रखभधुज, विखभधुज, विखभ्रधुज, व्रखभधज, व्रखभध्वज, व्रसभधुज, व्रसभध्वज।

व्रखभरासि, व्रखभरासी–सं. स्त्री. [सं. वृषभराशि] ज्योतिष की बारह राशियों में से एक।

व्रखभवाहण, व्रखभवाहन–सं. पु. [सं. वृषभवाहन] शिव, महादेव। (क. कु. बो.)

व्रखभांक–सं. पु. [सं. वृषभांक] शिव, महादेव।
रू. भे.—व्रखभांक।

व्रखभांण, व्रखभांणु, व्रखभांन, व्रखभांनु—देखो 'व्रसभांनु' (रू. भे.)
उ०—बेली तरळां तरां विलूंबी, वण हरियाळी वीसवसा। व्रप **व्रखभांण** तणां हर नागर, उपवन जोवण जोग इसा। —वां. दा.

व्रखभांनुजा–सं. स्त्री. [सं. वृषभानुजा] कृष्ण की प्रेमिका राधिका।
उ०—नंद सुतन **व्रखभांनुजा**, जुग जुग अविचळ जोर। उर में बसे 'अजीत' कै, जय जय जुगळकिसोर। —गजउद्धार

व्रखभांनुनंदणी, व्रखभांनुनंदिणी, व्रखभांनुनंदिनी–सं. स्त्री. [सं. वृषभानुनंदिनी] कृष्ण-प्रेमिका राधिका।
रू. भे.—व्रसभांनुनंदणी, व्रसभांनुनंदिणी, व्रसभांनुनंदिनी।

व्रखभांनसुता–सं. स्त्री. [सं. वृखभानुसुता] कृष्ण-प्रेमिका राधिका।
रू. भे.—व्रसभांनुसुता।

व्रखभा–सं. स्त्री. [सं. वृषभा] भारत की एक नदी का नाम।

व्रखभासा–सं. स्त्री. [सं. वृषभाषा] इन्द्रपुरी अमरावती का एक नाम।

व्रखभेक्षण–सं. पु. [सं. वृषभेक्षण] श्रीकृष्ण का एक नाम।

व्रखराज, व्रखराय, व्रखराव–सं. पु. [सं. वृषराज] १ शिव, महादेव।
२ सर्प, सांप।
[सं. वृक्षराज] ३ कल्पवृक्ष। ४ वटवृक्ष।
उ०—**व्रखराव** तिसा गिरराव विराजइ, अति साखा संवळकता अंग। सिसहर तणौ पाखती सोहइ, ग्रह जांणौं लागा गयणंग।
—महादेव पारवती री वेलि

व्रखरासि, व्रखरासी—देखो 'व्रखभरासि'
उ०—इसी गरमी हुई छै। जु सूर्य पणि हेमाचळ कौ सरणौ पकड़े छै। अर सूरज ही व्रखि आया छै। और तौ सब मनुस्य तौ रूंखे आवे ही आवे। मांनु सूरज **व्रखरासि** नहीं आयो छै। व्रिख कहतां रूंख की छांह आयो छै। —वेलि टी.

व्रखरूढ–सं. पु. [सं. वृषरूढ] रथ। (डिं. नां. मा.)

व्रखल–सं. पु. [सं. वृषल] १ शूद्र।
२ घोड़ा, अश्व।
३ जातिच्युत व्यक्ति।
रू. भे.—व्रखल, व्रसल।

व्रखलांछण, व्रखलांछन–सं. पु. [सं. वृष-लांछन] शिव, महादेव।
रू. भे.—व्रसलांछण, व्रसलांछन।

व्रखली–सं. स्त्री. [सं. वृषली] १ वह कन्या जो विवाह के पहले रजस्वला हो गई हो।
२ वह स्त्री जो रजस्वला हो।
३ बांझ स्त्री।
४ वह स्त्री जिसने मृत बच्चे को जन्म दिया हो।
५ वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर पर पुरुष से प्रेम करती है।
रू. भे.—व्रसली।

व्रखलीपत, व्रखलीपति, व्रखलीपती–सं. पु. [सं. वृषलीपति] १ वह पुरुष जिसका विवाह ऐसी कन्या से हुआ हो जो विवाह के पहले रजस्वला हुई हो।
२ २ रजस्वला स्त्री का पति।
३ मृत बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री का पति।
४ बांझ स्त्री का पति।
५ दुश्चरित्रा स्त्री का पति।
रू. भे.—व्रसलीपत, व्रसलीपति, व्रसलीपती।

व्रखव—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)
उ०—आ पुंगळ री उपनी, औ सूरत रौ साहा। आ पदमण औ **व्रखव** गण, नार इण जोगी नांह। —पनां

व्रखवात–सं. पु. [सं. वृषवात] वन, जंगल।
रू. भे.—व्रिखवात।

व्रखवाहण, व्रखवाहन–सं. पु. [सं. वृष-वाहन] १ शिव, महादेव।
२ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम।
रू. भे.—व्रसवाहण, व्रसवाहन।

व्रखसंकरांत, व्रखसंकरांति, व्रखसंकरांती, व्रखसंक्रांत, व्रखसंक्रांति, व्रखसंक्रांती–सं. स्त्री. [सं. वृषसंक्रांति] वृषभ राशि में सूर्य के प्रवेश करने का दिन एवं उक्त दिन मनाया जाने वाला पर्व।
उ०—जेठ मास लागौ छै। सूरिज **व्रखसंक्रांति** आयौ छै। सु जांणी जै छै। सूरिज व्रखां नै दरखतां रा भोलौ ताके छै। तौ बीजां लोकां री कौण बात। सूरजजी उतराध सांमां वहै छै। सु जांणीजै छै। हेमाचळ रौ सरणौ लिये छै। —वेलि टी.

व्रखसांन—देखो 'व्रखसेन' (रू. भे.) (अ. मा.)

व्रखसार–सं. पु. [सं. वृषसार] श्रेष्ठ बैल, साण्ड। (अ. मा.)

व्रखसेण, व्रखसेन–सं. पु. [सं. वृषसेन] १ दानवीर कर्ण का एक पुत्र जिसकी पत्नी का नाम भद्रावती था यह अर्जुन द्वारा मारा गया था।
२ यमसभा में उपस्थित एक राजा। ३ ब्रह्मसावर्णि के पुत्रों में से एक।
रू. भे.—व्रखसांन, व्रखसेण, व्रखसेन, व्रिखसेण, व्रिखसेन, व्रिससेण, व्रिससेन।

[सं. वृषसूनु] ४ बैल, साण्ड। (अ. मा.)
५ इन्द्र का पुत्र। ६ कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र।
७ अर्जुन। (अ. मा., ह. नां. मा.)
रू. भे.—व्रखसांन, व्रखसेन, व्रससेन।

व्रखस्कंध-सं. पु. [सं. वृषस्कंध] शिव, महादेव। (डि. को.)
रू. भे.—व्रसस्कंध।

व्रखांक-सं. पु. [स. वृषांक] शिव, महादेव।
रू. भे.—व्रसांक।

व्रखांड-सं. पु. [सं. वृषांक] एक असुर का नाम।

व्रखांणगुण-सं. पु. [सं. वृषाण गुण] भोजन। (अ. मा.)

व्रखा-सं. पु. [सं. वृषा] १ इन्द्र का एक नाम। (ना. डि. को. ह. नां. मा.)
२ देखो 'वरसा' (रू. भे.)
उ०—१ सीत धांम दुख व्रखा सहायै, अनि तजि कंदमूळ खणि खायै। दुख अनेक इम तन मझि दाझै, सुख आगिला जनम कजि साझै। —सू. प्र.
उ०—२ सजळ सलहर, सपत्र, सतप, सुरस्रंग ससीतळ। प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, व्रखा, विग्रह, राका मिळ। —र. ज. प्र.

व्रखाकंप, व्रखाकप—देखो 'व्रखाकपि' (रू. भे.) (अ. मा)

व्रखाकपायी-सं. स्त्री. [सं. वृषाकपायी] १ लक्ष्मी।
२ गौरी।
३ इन्द्र-पत्नी शची।
४ अग्नि-पत्नी स्वाहा।
५ सूर्यपत्नी।

व्रखाकपि, व्रखाकपी-सं. पु. [सं. वृषाकपिः] १ सूरज, सूर्य।
२ शिव, महादेव।
३ रुद्र का एक नाम।
४ देवराज इन्द्र।
५ विष्णु भगवान।
६ एक महर्षि जो देवताओं के यज्ञ में उपस्थित थे।
७ अग्नि, आग।
८ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)
९ ईश्वर, परमात्मा।
रू. भे.—व्रखाकप, व्रखाकंप, व्रखाकप।

व्रखाक्रति, व्रखाक्रती-सं. पु. [सं. वृषाकृति] १ विष्णु। २ सूर्य, सूरज। ३ आग, अग्नि। ४ देवराज इन्द्र।

व्रखागिर, व्रखागिरि, व्रखागिरी-सं. पु. [सं. वृषागिर] एक प्राचीन महर्षि।

व्रखादरभ, व्रखादरभि-सं. पु. [सं. वृषादर्भि] काशीनरेश अनुवंशीय शिवि का पुत्र।

व्रखामित्र-सं. पु. [सं. वृषामित्र] एक महर्षि जिसने पाण्डवों को वन-वास काल में उपदेश दिया था।

व्रखासण, व्रखासन-सं. स्त्री. [सं. वृष+आसन] शिव, महादेव।
उ०—कबहू नहिं मंगत और पिया, तजि संगत गौर व्रखासन की। रघुनाथ जु राव रै दासन के, चित आसन आंन उपासन की। —र. ज. प्र.

व्रखासुर-सं. पु. [सं. वृषासुर] भस्मासुर नामक दैत्य।
रू. भे.—व्रसासुर।

व्रखि, व्रखी-सं. पु. [सं. वृषिन्] १ इन्द्र, देवराज। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—गोत्रग्राव गिरपत गिरंद, धर नग धराधर धार। गिरधारी गिरधर धरै, व्रखी कोप जिण वार। —अ. मा.
२ मंगल ग्रह। (अ. मा.)
३ वृक्ष, पेड़।
४ वृषभ राशि।
उ०—इसी गरमी हुई छै। जु सूरज पणि हेमाचळ कौ सरणौ पकड़ै छै। अर सूरज ही व्रखि आया छै। और तौ सब मनुस्य तौ रूंखै आवै ही आवै। मांनूं सूरज व्रख रासि नहीं आयौ छै व्रिख कहतां रूंख की छांह आयौ छै। —वेलि टी.
रू. भे.—व्रखि।

व्रखोत्सरग-सं. पु. [सं. वृषोत्सर्ग] एक विशेष प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसके अनुसार किसी मृत व्यक्ति के पीछे उसकी स्मृति में किसी बछड़े को दाग कर साड बना दिया जाता है। (पुराण)
रू. भे.—व्रसोत्सरग।

व्रखोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे.)

व्रख्ख—१ देखो 'व्रक' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)
३ देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)
उ०—देवी कौमारी चामुंडा विजैकारी, देवी कुबेरी भैरवी क्षेम-कारी। देवी अगसं व्रख्ख हस्ती मयंखं, देवी पंख केकी गरुड धिरट पखं। —देवि.

व्रगुद, व्रगुट्ट, व्रगुटि, व्रगुटी, व्रगुट्टी—देखो 'भ्रकुट' (रू. भे.)
उ०—निरत रत सुर रिखराज अहनांण मैं, चख भवर व्रगुट फट कमळ पहिचांण में। मिळ कीयौ विधाता 'मांन' 'सुरतांण' में, महा-रिण नर समद समंद जोधांण में। —ठाकुर सुरतांणसींग रौ गीत

व्रचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

व्रचित्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

व्रच्छ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—उड विहंग इच्छ, विस्रांम व्रच्छ, जिहं छांह जीव-सुख ह्वै सदीव। तहं नहिं तमांम, घन सीत धांम, फल फूल फार, अव्वग उदार। —ऊ. का.

उ०—२ सुध्यावंत हूं मातहूं वेण अक्खै, भणेमात भोमी फळां वीण भक्खै। स्रियां छांह राखिया व्रच्छ सूवा, अनै रास कोरा लिया व्रच्छ ऊंधा। —सू. प्र.

व्रच्छिक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

व्रछ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ वणे वाग अतही विहद, ता मैं········कुवाय। आधी-फर अंबर लगै, व्रछ रहै ठहराय। —गजउद्धार

उ०—२ पुळियौ जस मांग वहै अेक पंथी, पाछै वर छखड़ो वण पात। ताकव येम पूछियौ तरवर, व्रछ करवर रहियौ कण वात। —रूगनाथ भाऊ सिंघोत रो गीत

व्रछिक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

व्रज—सं. पु. [सं.] १ मथुरा और वृंदावन के चारों ओर का प्रदेश या भूभाग जहाँ श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीड़ा की थी।

उ०—१ कुहक वांण झड़वांण भयंकर, ओसर इद्र जांणि व्रज ऊपर। ह्वै घण रूप जगत छत्र हट्ठै, पौरस गिरहर चंद परट्ठै। —सू. प्र.

उ०—२ इंद्र धरा व्रज ऊपरै, ज्यां पेलै जळ जाळ। धर हिंदू सुर पीड़वा, आया चांमरआळ। —रा. रू.

उ०—३ आखि पलव करसाख आंगळी, उधरियौ तिणि सिर अनड़। व्रज राखियौ विगोयौ वासव, वडो अवर कुण विसन वड। —ह. नां. मा.

२ समूह, झुण्ड। (ह. नां. मा.)

३ व्रज-भाषा।

४ हविर्धान एवं विषणा का पुत्र, जो स्वयंभुव मनु का वंशज था।

५ देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, राखै रज रिणतूर रुडै। दम्मांमां गरज वहै व्रज दोमज, गज पाताडक भुरज गुडै। —गु. रू. बं.

६ देखो 'व्रज्या' (रू. भे.)

रू. भे.—विरज, ब्रज, व्रज्ज, व्रज्ज, व्रिज, व्रिज्ज।

व्रजइंद, व्रजइंदु—देखो 'व्रजचंद' (रू. भे.)

व्रजचंद—सं. पु. [सं. व्रजचंद्र] १ श्रीकृष्ण भगवान। (अ. मा.)

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा.)

रू. भे.—ब्रजचंद।

व्रजणौ, व्रजबौ—क्रि. अ.—१ जाना, गमन करना।

क्रि. स.—२ मना करना, रोकना।

३ टालना।

व्रजणहार, हारौ (हारी), व्रजणियौ—वि०।

व्रजिओड़ौ, व्रजियोड़ौ, व्रज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्रजीजणौ, व्रजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

व्रजदेव—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—ब्रजदेव।

व्रजदेस—सं. पु. [सं. व्रजदेश] व्रजभूमि।

रू. भे.—ब्रजदेस।

व्रजनंद—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

व्रजन—स. पु. [सं. वृजनं, वृजिनं] १ पाप। (ह. नां. मा.)

२ कष्ट, दुख, तकलीफ। (अ. मा.)

३ अजमीढ़ एवं केशिनी के संसर्ग से उत्पन्न तीन पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

व्रजनाइक—देखो 'व्रजनायक' (रू. भे.)

उ०—नायण नाग नगर व्रजनाइक, आवण महर आंगणै। पावन पुरखि नांम पुरखोत्तम, भूधर चरित भांमणै। —पि. प्र.

व्रजनाथ—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—ब्रजनाथ।

व्रजनायक—सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण।

उ०—मुतन जसोमति सांम सरीर, वजावण वंस वळिभद्र वीर। नमो व्रजनायक ऊतिम नांम, प्रमेसर पार व्रहंम प्रणांम। —पि. प्र.

२ विष्णु। (डिं. को.)

रू. भे.—ब्रजनाइक, ब्रजनायक, व्रजनाइक।

व्रजपत, व्रजपति, व्रजपती, व्रजपत्त, व्रजपत्ति, व्रजपत्ती—सं. पु. [सं. व्रजपति] श्रीकृष्ण का एक नाम। (नां. मा.)

उ०—कमळ नयण कळि अणकळ, बहि ब्रिद लियण अतुळ बळ। व्रजपत्ति सति रुखमणि वर, घन हरि नरहर गिरधर। —पि. प्र.

रू. भे.—ब्रजपत, ब्रजपति, ब्रजपती।

व्रजबाळ—सं. पु. [सं. व्रजबाल] व्रज के बालक श्रीकृष्ण।

रू. भे.—ब्रजबाळ।

व्रजबासी—सं. पु.—१ रामावत साधुओं का एक भेद विशेष। (मा. म.)

२ देखो 'व्रजवासी' (रू. भे.)

व्रजभाखा, व्रजभासा—सं. स्त्री. [सं. व्रजभाषा] मथुरा के आसपास के व्रज प्रदेशों में बोली जाने वाली वह भाषा जिसकी उत्पति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। यह भाषा अत्यन्त कर्णमधुर मानी जाती है।

उ०—ब्रजभाखा मुरधर विमळ, आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डंबर, वरणूं करि विस्तार। —सू. प्र.

ब्रजभूखण, ब्रजभूसण-सं. पु. [सं. ब्रजभूषण] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

उ०—चीर चोरि तर ऊपर चढियौ, गोपंगना तणा गोपाळ। अरज करैं ऊभी जळ अंतर, दे ब्रजभूखण दीनदयाळ। —ह. नां. मा.

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा., ह. नां. मा.)

रू. भे.—ब्रजभूखण, ब्रजभूसण।

ब्रजभूप-सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

उ०—दिविदु दिवांन दिवस वासुर दिन, अह इगियारसि दिविसि अनूप। कीजै वरत भजन पिणि कीजै, भगतवछळ रीझै ब्रजभूप। —ह. नां. मा.

ब्रजमंडळ-सं. पु. [सं. ब्रजमंडल] ब्रज और उसके आस-पास के प्रदेश जो कि तीर्थ माने जाते हैं।

उ०—विखय मुलक रासट उपवरतन, जनपद नीव्रति देस जनात। मंडळ नको अेहड़ो ब्रजमंडळ, अवतरिया हरि करण अख्यात। —ह. नां. मा.

रू. भे.—ब्रजमंडळ, विरजमंडळ।

ब्रजमोहन-सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

ब्रजयंद-सं. पु [सं. ब्रजेंद्र] श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

रू. भे.—ब्रजइंद, ब्रजइंदु, ब्रजयंद, ब्रजइंद, ब्रजइंदु।

ब्रजराज, ब्रजराय, ब्रजराव-सं. पु. [सं. ब्रजराज] १ श्रीकृष्ण का नाम।

उ०—१ राज धनखधर रामजी, चक्रधर ब्रजराज। सदा सुधारै संत कै, केई विकटे काज। —गजउद्धार

उ०—२ नरनाथ जांण राखैं निजर, बांण बखांणां विसतरै। ब्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै। —रा. रू.

उ०—३ हुवौ घटियौ कळू अघट 'वीका' हरौ, भलौ सोभाग संसार भाखै। राज हिंदवांण री लाज जिम रहावी, राज री लाज ब्रजराज राखै। —आसियौ भोपत

२ वसुदेव।

उ०—करग मसलै उरज तोडै अंगियां कसां, चित चलै अलौकिक करै चाळौ। वेख नट तणै खडो बनबेथियां, बटपडो कुंवर ब्रजराज वाळौ। —बां. दा.

रू. भे.—ब्रजराज, विजराज।

ब्रजरेणूं-सं. स्त्री. [सं.] ब्रज भूमि की धुलि।

उ०—कर विधांन करवत लै कासी, लै ब्रजरेणूं लेटै। पग्यौ न दिल प्रभु रै पद पंकज, भिसत न त्यांतिक भेटै। —र. रू.

ब्रजलाल-सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजवणता, ब्रजवनता, ब्रजवनिता-सं. स्त्री. [सं. ब्रजवनिता] ब्रज में निवास करने वाली स्त्रियां, गोपिकाऐं।

रू. भे.—ब्रजवणता ब्रजबनिता।

ब्रजवल्लभ-सं. पु [सं.] ब्रज के प्रिय, श्रीकृष्ण।

ब्रजवासी-सं. पु. [सं.] (स्त्री. ब्रजवासण, ब्रजवासणी) १ श्रीकृष्ण।

उ०—वंसीधारी ब्रजवासी विहारी, पूरी जैरी प्रीति राधा पिम्रारी। काळी लीला खेलियौ काज काळौ, गाए ध्याए देव गायां गुम्राळौ। —पि. प्र.

२ ब्रज में निवास करने वाला व्यक्ति।

उ०—जद त्यां कह्यौ—म्हैं भीखणजी स्वांमी रा टोला री। जद तै बोली—है रांडां! थें पैलकेई म्हारी रोटी लै गई। उरही दौ म्हारी घट। इम कहि धाट लेवा लागी। जद एक ब्रजवासणी वरजै—हे कीकी! अतीत नै दियौ पाछौ मत लै। जद तै बोली—कुता नै न्हांख देसूं पिण इणां कना सूं तौ उरहो लेसूं। —भि. द्र.

३ वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

४ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—ब्रजबासी, व्रजवासी, व्रजबासी, व्रजवासी।

ब्रजविलास-सं. पु. [सं.] श्क्रीष्ण का नाम।

ब्रजविहार, ब्रजविहारी-स. पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

ब्रजवैंकुंठविहारी-सं. पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

ब्रजस्पति, ब्रजस्पती-सं. पु.—श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजांग्ना-सं स्त्री.—ब्रज की स्त्री, गोपिका।

ब्रजांग, ब्रजाक, ब्रजाग, ब्रजागनि, ब्रजागनी, ब्रजागि. ब्रजागिन-सं. पु. [सं. वज्र+अंग] १ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—वाजित्र जेमं पइ ठवइ वेस, दोमजां अस्सि ओपमा देस। मांणिक्क लियउ भोदड़इ मागि, वइरियां सिरैं वाहण ब्रजागि। —रा. ज. सी.

२ देखो 'वजरंग' (रू. भे.)

उ०—वाहरू सीत जांणे ब्रजागि, लसकर कपि मिळिया वेध लागि। जैंचंद दळांबळ देखि जांण, तोलै खग बोलै एम तांम। —सू. प्र.

३ देखो 'बजराक' (रू. भे.)

उ०—१ धडछइ धार बिद्दुक हुवइ धड, खाग ब्रजाग वाव रण खेत्र। गण आठे वाजिया विसम गति, निलवट सुर बांधियौ नेत्र। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भारथि आगि ब्रजागि महाभड, जोध जडाग वडा छळ जागै। मेर म्रजाद देस दस मालिय, मुगळां कन्हैं पेसकस मांगै। —ल. पि.

उ०—३ दस दिसा एम फुरमांण दीध, लायकां भड़ां सिर चाढ लीध। जुध सराजांम सझि सझि ध्रजागि, लोहमैं सरसि भुज उरसि लागि। —सू. प्र.

उ०—४ 'तीड' रौ 'सळख' कुळ चाढ तोड़, दन खगां विरद अजवाळ दोड़। 'वीरम' 'सळखावत' खगां वाग, जोइयां वाढि विढियौ ध्रजाग। —सू. प्र.

उ०—५ इणि भांति रा घोड़ा असवार आगि ध्रजागि माहे अडि पड़ै। सिर पड़िग्रै लड़ै। हाथिग्रां रै दांत चडै। हिंदू मुसळमांण। नरसमंद खुरसांण। च्यारि चक्र नव खंड प्रिथी रा जगजेठ जोधार जमदूत राजिंद्र जोगिंद्र रूप करि उजेणि खेति नर हैंवर धेधिगर चौदंत हूग्रा। —र. वचनिका

उ०—६ हथनाळ हवाई हूकळंत, गजनाळां गोळां गडिग्रडंत। बळती ध्रजागि उड़ै बहंत, ग्रारावौ छूटौ ग्रावरंत। —गु. रू. बं.

उ०—७ हुय हैकंप कांपियौ हजरति, लागुग्रां परै नीसरी लाग। वहमंड 'ग्रमर' भूजाडंड वहती, वाढाळी जळहळी ध्रजाग। —केसोदास गाडण

ब्रजिन-सं. पु. [सं. वृजिनं] १ पाप, कुकर्म (ग्र. मा.)
२ कष्ट, दुःख, पीड़ा। (नां. मा.)
रू. भे.—व्रजिन।

ब्रजियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गया हुग्रा, गमन किया हुग्रा। २ मना किया हुग्रा, रोका हुग्रा। ३ टाला हुग्रा।
(स्त्री. ब्रजियोड़ी)

ब्रजेंद्र-सं. पु. [सं. व्रज+इन्द्र] श्रीकृष्ण।

ब्रजेन—देखो 'व्रजन' (रू. भे.)

ब्रजेस्वर-सं. पु. [सं. व्रज+ईश्वर] श्रीकृष्ण।

ब्रज्ज—१ देखो 'व्रज' (रू. भे.)

उ०—१ देवी गौर रूपा ग्रर्खा नव्व-निद्धि, देवी सक्कळां ग्रक्कळां स्रव्व सिद्धि। देवी ध्रज्ज विमोहणी वोमवांणी, देवी तोतला गूंगला कतियांणी। —देवि.

उ०—२भरै मांग सिंदूर मारग्ग भाळै, वहै सांमळौ ध्रज्ज सेरी विचाळै। वहै लारलै वार पिंडार वाळै, नवा नेह सू देह गोपी निहाळैं। —ना. द.

२ देखो 'व्रज्र' (रू. भे.)

उ०—धड़हड़इ धरा पइ मगरधज्ज, वेगवंत जेम गइणागि ध्रज्ज। जुधि दियइ साखि संसार जास, दोनाळी चढियउ किसनदास। —रा. ज. सी.

ब्रज्जवासी—देखो 'व्रजवासी' (रू. भे.)

उ०—खत्री काहै कौ कंस रै हेत खासी, विचै वाट माथै वहै ध्रज्जवासी। घरै कंस रै नुं बळी तात घाठी, तदा ताहरी केथ खत्रोट ताठी। —ना. द.

ब्रज्या-सं. स्त्री. [सं.] वेदोक्त विधांन, रीति, मार्ग।

उ०—ग्रर बार बार सिराहि भोगां मैं ग्रासक्त ग्राळसी ग्रौर ग्रव-नीसां रा ग्रासय मैं मूतौ वीररस जगायौ। उठै ही सुपुत्र रौ बणायौ बाणी समेत ग्रापरा ग्रभिधांन करि ग्रंकित ईस्वरी रौ ग्रगार ईखि ध्रजांन हूं ऊतरि वेद री ध्रज्या करि वंगेस्वरी रौ ग्ररचन कियौ। —वं. भा.

रू. भे.—वरज्या, व्रज।

ब्रण-सं. पु. [स.] १ जख्म, घाव।

उ०—कठमाला गड़ गुंबड़ सबला, ध्रण कुरंम रोग टलइं सगला। पीड़ा न करइ कुण गलि फोड़ऊ, नित नांम जपउ स्रीनाकउड़उ। —स. कु.

उ०—२ पगहाथ पड़ै नस माथ पखैं, लग घाव सुरां रव दाव लखैं। ग्रंग एक धकै तड़फै ग्रसुरां, सिर चीर नरां ध्रण सेल सरां। —रा. रू.

२ फोड़ा-फुन्सी, बालतोड़।
३ चेचक का दाग।
४ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ वपां ध्रण चोळ वणै तिणवार, जोधांपति हूंत समेस जुहार। सझै रवि सेस महेस सराह, ग्रखे त्रण वार 'ग्रभैमल' वाह। —सू. प्र.

उ०—२ सिन्नांन घात मधि सधियास, उचरत मंत्र गायत्रि ग्रभ्यास। ग्रास्रम चत्र ग्ररु चत्र ध्रण उदार, क्रत करत दांन खोडस प्रकार। —सू. प्र.

५ देखो 'वरणन' (रू. भे.)

उ०—कसि ग्रावध हल्ले, कमंध ग्राखूं ध्रण ग्रग्गी। मुख सूरज बारह मंडे, भौंह मूंछ भिड़ग्गी। —सू. प्र.

रू. भे.—वरण, व्रण, व्रन, व्रन्न, वण, वन।

ब्रणसोथ, ब्रणसोस-सं. स्त्री. [सं. व्रणशोथ] फोड़े, घाव ग्रादि पर होने वाली सूजन। (ग्रमरत)

ब्रतंत, ब्रतंति, ब्रतंती, ब्रतंतु, ब्रतंतू—देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ भयौ स्राप सुर भूप कौ, ग्रातम कदन ग्रनंत। ग्रपछर 'ग्राणंद' रै धकै, वरण्यौ सब ध्रतंत। —पा. प्र.

उ०—२ सइ मुखि ढोलइ पूछिया, मारू तणा ध्रतंति। ढोलउ नइ भाऊ, विन्हइ वेसारी एकंति। —ढो. मा.

उ०—३ निसुणीउ वयणु गभेलउ बोलइ, कोइ न तिहुयणि जौ तुझ तोलइ। निसुणउ हिव इह कन्न ध्रतंतू, एह रहइं होइ संतणु कंतू। —सालिभद्र सूरि

ब्रत-सं. पु. [सं.] संकल्प, प्रतिज्ञा।

उ० —१ एती एक न ग्रादरी, जेती ग्रक्खी साह। कमधज्जां नव कोट रां, ग्रौट लियौ ब्रत चाह। —रा. रू.

उ०—२ जगनाथ का हेमराज राज काज पूरा, 'अजमाल' के व्रत काज सूरां तें सूरा। अखेराज प्रोहित को हित मापे कूंग, 'दलपत' का द्रोणगुर जेसे जोर दूणां। —रा. रू.

उ०—३ 'जेतो' 'सूर' तणो जत्राई, भुज तिण जोड़ 'समेळो' भाई। 'पीथो' 'मुकन' बिन्है व्रत पूरा, साथे दलरांमोत सनूरा। —रा. रू.

उ०—४ वारगना रही धारे व्रत, अ्रत स्यांमावत तणे उमाह। पिड़ि खुरसांणे बींद परखियो, बळि कुडांणे हुवा विमाह। —उदेभांण राठौड़ री गीत

२ नियम।

उ०—१ केइक पुण्यवंत प्राणिया रे, चेत कियो धरम सार। साधु स्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सेंठो धार रे। —जयवांणी

उ०—२ बलता गुरु बोलिया तरे ए, तूं पहला व्योपारी की परे ए। तें बांका प्रस्न बातां कही ए, पिण जांणूं छूं व्रत लेसी सही ए। —जयवांणी

उ०—३ जोग जिग व्रत धरत नेम, अनंत महमा गरत पेम। सिर सहत निसदिन धोम सीत, मन पंच इंद्री दवन जीत। —अनुभववांणी

३ धर्म, कर्त्तव्य।

उ०—वडै वंस ऊपनी वडी रांणी भटियांणी, बोली राजा हूंत जिका पूरे व्रत जांणी। तो पूठे वरजांग साख जेसांण सुभत्ती, पह चोरी परणतां चढे नह को चक्रवती। —रा. रू.

उ०—२ सुज कंत अ्रंत अमरां सुपुरि, चोरीोड़ी हरि ऊचरे। छत्रपती सनेह 'चंदू' छडी, सेखावत व्रत संभरे। —रा. रू.

४ आराधना, भक्ति।

उ०—१ दिल मो ध्यांन त्रकाळग्य दरसी, वीरचंद्र राजा इण वरसी। अर्वे सिव सीस चढासी आचां, सिव रीझसी देखि व्रत साचां। —सू. प्र.

उ०—चालो चालो चंपाबाड़ी, सातूं मिळ सहेली हे। नणंद म्हारी। ईसर गोरजां रो व्रत करस्यां, और रमसां खेलस्यां सारी। —रसीले राज रा गीत

५ पुण्य प्राप्ति हेतु पुण्य तिथि को नियमपूर्वक किया जाने वाला उपवास।

६ अनुष्ठान करने की पद्धति, विधि।

७ अनुष्ठान करने की क्रिया या कार्य।

८ यज्ञ, हवन, होम।

९ देश, राष्ट्र। (अ. मा.)

१० कुऐं से मोट (चरस) निकालने का मोटा रस्सा।

११ अभूतरजस् देवों में से एक।

१२ चाक्षुष मनु एव नड्वला के पुत्रों में से एक।

१३ देखो 'व्रत्त' (रू. भे.)

१४ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—'अजन' करायो एक, डेरे व्रत जेसी। रूप सोभ तारीक, ओप मुर चोभ अनेसी। —रा. रू.

रू. भे.—बरत, व्रत, ब्रत्त, वरत, वरत्त, विरत, व्रतु, व्रित।

व्रतउपवास—सं. पु. [सं.] किसी प्रतिज्ञा या कार्य सिद्धि हेतु किया जाने वाला उपवास।

व्रतघण—सं. पु. [सं. वृत्रघ्न] इन्द्र का नाम।

व्रतचरया—सं. स्त्री. [सं. व्रतचर्य्या] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने की क्रिया।

व्रतचारी—स पु. [सं. व्रतचारिन्] व्रत करने वाला।

व्रतणो, व्रतबो—देखो 'वरतणो, वरतबो' (रू. भे.)

उ०—वाहि तेग संमाहि आसो, हहकारो व्रतियो। धन्य तेरो ध्यांन करमणि, सीझती साको कियो। —वील्हौजी

व्रतणहार, हारो (हारी), व्रतणियो—वि०।

व्रतिओड़ो, व्रतियोड़ो, व्रत्योड़ो—भू० का० कृ०।

व्रतीजणो, व्रतीजबो—कर्म वा०।

व्रतद्वयीपूनम, व्रतद्वयीपूरणिमा—सं. स्त्री. [सं. व्रतद्वयीपूर्णिमा] फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को किया जाने वाला नक्तव्रत तथा सूर्योदय पर सूर्य का एवं चन्द्रोदय पर चन्द्रमा का पूजन।

वि० वि०—उक्त पूजन नक्तव्रत्त करने का कारण है कि उक्त दिन कश्यपऋषि के औरस और अदिति के गर्भ से अर्यमा (आदित्य) एवं अनसूया के गर्भ से चन्द्रमा उत्पन्न हुए थे।

व्रतधार, व्रतधारी—वि. [सं. व्रतधारिन्] व्रत धारण करने वाला।

उ०—व्रतधारी स्रावक, हुवा ए, राजादिक बहु लोग। पुन्न तणें परसाद थी ए, थायें सगला थोक। —ध. व. ग्रं

उ०—२ 'सांगो' 'साहिब' तणो सिघाळो, वांकमि वींद 'लवेरे' वाळो। धारण मेर 'पतो' व्रतधारी; 'ईंदावत' कळि लियण उधारी। —रा. रू.

उ०—३ 'केहरि' तण पण लड़ण अकूंणो, लीधां वरत 'जगपती' 'लूंणो'। अे कूंपा साथे अहंकारी, धणी तणा जतनां व्रतधारी। —रा. रू.

उ०—४ तरसि पधार हुआ तय्यारी, 'धीर' तणो आयो व्रतधारी। रांणी जळती 'ऊदे' राखी, सुख नव कोट किया जग साखी। —रा. रू.

व्रतपारणा—सं. पु. [सं.] व्रत की समाप्ति जो प्राय: तुलसी या भगवान् को अर्पित पदार्थ से की जाती है।

व्रतभंग, व्रतभंगी–सं. पु. [सं. व्रत-भंग] १ व्रत या नियमों को भंग करने वाला व्यक्ति।

२ काव्य रचना का एक दोष।

उ०—व्रतभंगी ह्वै अरथ खय, नांहां भय रस नास। कुकवी वैसक तुल्य कर; बरणै सुकवि विमास। —वां. दा.

व्रतभिक्षा, व्रतभीख–सं. पु. [सं. व्रतभिक्षा य भिक्षाव्रत] यज्ञोपवीत के समय बालक द्वारा मांगी जाने वाली भिक्षा।

व्रतमांण, व्रतमांन—देखो 'वरतमांण' (रू. भे.)

उ०—माह मास व्रतमांन, अरक बैठो उत्तराइणि। मुकल पख्य रिति सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि। —ल. पिं.

व्रतवैरी–सं. पु. [सं. वृत्र+वैरी] इन्द्र, सुरपति।

व्रतसंग्रह–सं. पु. [सं.] यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाने वाली दीक्षा।

व्रतहा—देखो 'व्रत्रहा' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

व्रतांत, व्रतांति–सं. पु. [सं. वृत्तांत] १ किसी बीती हुई घटना, बात विषय या स्थिति से सम्बन्धित विवरण।

उ०—उत्तमकुमर किहां अछै; आगलि कहि व्रतांत। जीवै छै किवा मूऔ, भांजि भांजि मन भ्रांत। —वि. कु.

२ समाचार, खबर।

उ०—आ वात जांणि सलखराज प्रमार वांई तरफ टळि नागौर आयौ अर संबंध रौ व्रतांत अजमेर कहायौ। —वं. भा.

३ विषय, प्रसंग।

४ दशा, हालत।

रू. भे.—बिरतंत, विरतंति, विरतांत, व्रत, व्रतांत, विरतंत, विरतंति, विरतांत, व्रतंत, व्रतंति, व्रतंती, व्रततु, वतंतू, व्रत, व्रत्त, व्रत्तांत, व्रत्तांत्त।

व्रतारि, व्रतारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे.)

व्रतासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—सुरनाथ व्रतासुर साखियात, प्रगटै कि सस्त्र रव वज्रपात। सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव। —रा. रू.

व्रति–सं. स्त्री [सं. वृत्ति] १ चक्कर, घुमाव।

२ परिधि, व्यास।

उ०—वृति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जड़ित वेदी दुति राजै। दिव्य कास्ट खट जाति अदूखती, अगर कपूर घिरत जुत आहुति। —रा. रू.

३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा।

४ चित्त, मन आदि की क्रियाएँ या व्यापार।

५ चित्त, मन आदि की स्थितियाँ।

उ०—व्रति आदि सस्त्र विद्या वरण, उच्छव वादि अघट्टियां। परकास उरध रवि पेखियां, किरि मधु मास पलट्टियां। —रा. रू.

वि० वि०—ये स्थितियाँ पाँच प्रकार की होती हैं जैसे—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, विरुद्ध आदि।

५ इच्छा, चाह, अभिलाषा।

उ०—वधै भक्ती स्रद्धा भवन नर स्परधा व्रति वधै, वसै वो जिग्यासा अगम गम आसा व्रति वधै। अभ्यासी वैराग्य प्रनत अनुराग्य व्रति वधै। बधै वैरघा लंभी तव चरन लंभी व्रति वधै। —ऊ. का.

७ क्रिया, कर्म या विधान, जिसके करने से कुछ होता है।

उ०—तूं ही करत्ता वरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तूं हीं, तूं ही नाही मरत्ता अभय भयहरत्ता नित तूं हीं। तु हीं ग्याता ग्येय प्रकृति बनि ग्याता पद तूं हीं। तु हीं ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता प्रत तूं ही। —ऊ. का.

८ प्रकृति, स्वभाव, आदत।

९ वर्तमान में होने की अवस्था, स्थित अस्तित्व।

१० हालत, दशा, परिस्थिति।

११ परिस्थिति, स्थिति।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह, व्रति अछर लेत विमोह। सब सस्त्र संजुत सूर, पयदात झुंड सपूर। —रा. रू.

१२ याचना कार्य, भिक्षा वृत्ति।

१३ गति।

उ०—आगै सेरविलंद सेन सनमुक्ख चलायौ; दळ जादव ऊपरां जांण नाळव दरसायौ। कुहक बांण हथनाळ विसळ वरखै तिण-वारां, व्रति सांमण वद्दळां जांण घण मत्तौ धारां। —रा. रू.

१४ तौर, तरीका, ढंग, रीति।

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जलद विद्रति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा. रू.

१५ आचरण, चालचलण, चरित्र।

१६ धन्धा, पेशा।

१७ जीविका, रोजी।

१८ मजदूरी, पारिश्रमिक।

१९ किसी जनसमूह, समुदाय या जाति के लोगों द्वारा किसी अन्य जाति या जनसमूह के लोगों के घर पर जीविकोपार्जन के लिए किसी अवसर पर या साधारण समय में नियमपूर्वक सेवा के रूप में किया जाने वाला कार्य।

२० नीयत।

२१ किसी दीन, विधवा, छात्र आदि को लगातार निश्चित समय पर सहायतार्थ दिया जाने वाला कुछ धन।

२२ मनु नामक रुद्र की पत्नी।
२३ अमिताभ देवों में से एक।
२४ व्याख्या, टीका।
२५ शब्दार्थ बतलाने वाली शब्द शक्ति।
२६ वाक्य की रचना करने की शैली।

वि. वि.—संस्कृत भाषा में ये शैलियां चार प्रकार की मानी जाती हैं जैसेः—

१ कैशिकी (कौशिकी) वृत्ति—इसके द्वारा श्रृंगार रस का वर्णन किया जाता है।

२ सात्वती वृत्ति—इसके द्वारा वीर रस का वर्णन किया जाता है।
३ आरभटी वृत्ति—इसके द्वारा रौद्र व वीभत्स रसों का वर्णन किया जाता है।
४ भारती वृत्ति—इसके द्वारा अवशेष रसों का वर्णन किया जाता है।
२७ गीत तथा वाद्य के प्रयोग-वैचित्र्य का प्रदर्शन। (संगीत)

वि.—गोलाकार, गोल।

उ०—सिर चमर चौसर सोह, व्रति सूर किरण विमोह। परिवेस सुभट सप्रीत, गढ आवियौ 'अगजीत'। —रा. रू.

रू. भे.—बरती, बिरत, बिरति, बिरती, बिरत्ती, बीरत, ब्रित, वरत, विरत, विरति, बिरती, विरत्त, विरत्ति, विरत्ती, वीरत, वीरति, वीरती, व्रती, व्रत्ति, व्रत्तो, व्रिति, व्रिती, व्रित्ति, व्रित्ती।

व्रतिन—सं. पु. [सं.] वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर का अठारहवां व्यास।

व्रतियोड़ौ—देखो 'वरतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रतियोड़ी)

व्रती, व्रतीक—सं. पु. [सं. व्रतिन्] १ व्रत धारण करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ आदू वेर छै ब्राह्मण व्रतियो रे, मूस मंजारी जेम। बले सगपण सांकड़ो रे, दूध रुद्र मेल तेम के। —जयवांणी

उ०—२ राजा घणी चतुराई सुं झारी भरि रखीस्वरां रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवांणी करि दीनी, जावौ रांण्यां नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरे पधारिया। उण राति राजाजी व्रतीक थ्या तिकौ सुख में पोढ्या छै। —रा. वंसावळी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

रू. भे.—बरत, बरती।

व्रतु—देखो 'व्रत' (रू. भे.)

उ०—१ व्रतु लेउ विदुर गयउ वन माहिं, कन्ह वली द्वारावती जाइ। बिहु पखि चालइं दल सांमही, बिहु पखि आवइं भड गहगही। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सांमीय गणहर पासि पांचह ए हरिखिहिं व्रतु लिइं ए। सांभली बलिभद्र वात नियमवू ए पूठए पूछइं प्रभु कन्ह ए। —सालिभद्र सूरि

उ०—३ सुगुरु यसोधर पासि हरखिहिं ए पांच ए व्रतु धरए। कणगावलि तपु एकु बीजऊ ए करई रयणावली ए। —सालिभद्र सूरि

व्रतेयु—सं. पु. [सं.] राजा रौद्राश्व एवं घृताची के दस पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

व्रतेसर, व्रतेसरी, व्रतेसुर, व्रतेसुरी, व्रतेस्वर, व्रतेस्वरी—सं. पु. [सं. वृत्ति +ईश्वर+ई] वह व्यक्ति या जनसमुदाय जो किसी अन्य व्यक्ति या जनसमुदाय के घर विशेष अवसर पर या साधारण समय में नियमित रूप से सेवा के रूप में जीविकोपार्जन हेतु कार्य करता है। (मा. म.)

उ०—गोडां रै कुळदेवी नारायणी केळ मैं विराजै है। केळा गोड न खावै। केळां रा पांन रा दोनां मैं जीमैं नहीं। लाखण गोड भाट हुवौ जिण रै वंस रा लाखणोत भाट गोडां रा व्रतेसरी। —बां. दा. ख्यात

रू. भे.—बरतेसरी, बिरतेसर, बिरतेसरी, बिरतेस्वर, बिरतेस्वरी, वरतेसर, विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी।

व्रत्त—सं. पु. [सं. वृत्त] १ जीविका का साधन।

२ चरित्र, चालचलन।
३ कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।
४ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिन्दु उसके अन्दर के मध्यबिन्दु से समान अन्तर पर हो।

५ वह छन्द जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम हो।

६ शिष्ट एवं सुच्छाया के पुत्रों में से एक पुत्र राजा।

७ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसमें रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण एवं अंत में गुरु एवं लघु हो।

वि.—१ जीवित, जिन्दा।

२ घटित हुवा हुआ।
३ मरा हुआ, मृत्त।
४ दृढ़, मजबूत।
५ बीता हुआ, गुजरा हुआ।
६ देखो 'व्रत' (रू. भे.)
७ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ आय निकट बूंदीस सौं सब व्रत्त कहाया। —वं. भा.

उ०—२ रहै कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखे। जेह व्रत्त जिन पक्षै बाधक, तेह कदापि नवि भाखै। —वि. कु.

उ०—वलतूं मयरणा वीनवें रे, तात ! सुणो मुझ व्रत्त। तुमनें पिण करमै किया, होजी राजन ! राज निमित्त। —स्रीपाळरास

रू. भे.—व्रित।

व्रत्तांत, व्रत्तांत—देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—१ स्वजन वेवाहिय धूरइं भूरइं निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आंणीय गेहि। भूतलि भंमर भोलिय डोलिय जिम न चडंत, विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय तै व्रत्तांत। —जयसेखर सूरि

उ०—२ पांणी राजोर कर पांच कोस परा जाय नीसरिया। कराड़ै लागिया। जाय राजा सूं मिळिया। रतन पांच म्हौंडा सांम्है मेलिया। सगळौ व्रत्तांत कहि सुणाइयो। राजा कही—साबास थांनूं, अपणा धणी री आग्या पाळी। इतरी कहि पांच करोड़ इनाम दीन्हां। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ सेठ उज्जेण आय राजा नूं सकळ यात्रा रा व्रत्तांत कहि त्यां स्त्री-पुरस री वारता कही। राजा कही—मोनूं लेय हाल। सेठ कही—बहुत दूर। तद राजा वीं नूं गुटकौ देय तत्काळ दोनूं जाय पहुँचिया। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—४ भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर यग्य करायौ। देवी री आग्या हुई—हमें भाऊ पाछौ दिखण नूं परौ जावै, दूजै महीनै आय साह सूं जंग करै तौ भाऊ री फतै हुवै। विरांमणां औ व्रत्तांत भाऊ नूं सुणायौ। भाऊ न मांनियौ। —वां. दा. ख्यात

व्रत्तारि, व्रत्तारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे.)

व्रत्तासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

व्रत्ति—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

व्रत्तिकार—वि. [सं. वृत्तिकार] १ वृत्ति करने वाला।

२ टीका करने वाला, टीकाकार।

व्रत्ती—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

उ०—१ आ व्रत्ती किम आदरूं, कुंवर कोमळ आक्रती। पिण हर अरि पालणी, कुसळ राखणी धरती। —रा. रू.

उ०—२ व्रत्ती तीन चीन मन मेरा, निरभय पद लौ सरना। निरभय पद सुखरांम निजानंद, अपना आप अमरना। —स्रीसुखरांमजी महाराज

व्रत्यनुप्रास—सं. पु. [सं. वृत्ति+अनुप्रास] एक प्रकार का अनुप्रास विशेष जिसमें एक या अनेक व्यंजन-वर्ण भिन्न-भिन्न रूपों में बार-बार आते हों।

व्रत्र—सं. पु. [सं. वृत्रः] १ अन्धेरा, अन्धकार।

२ पर्वत, पहाड़।

३ बादल।

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—व्रत्र।

व्रत्रघन, व्रत्रघ्न—सं. पु. [सं. वृत्रघ्न] वृत्रासुर का शत्रु इन्द्र।

व्रत्रहा—सं. पु. [सं. वृत्रहा] देवराज इन्द्र। (नां. मा.)

रू. भे.—व्रतहा।

व्रत्रारि, व्रत्रारी—सं. पु. [सं. वृत्र+अरि] वृत्रासुर का दुश्मन, इन्द्र।

रू. भे.—बरतारी, व्रत्रअरी, वरतारी, व्रत्तारी, वरत्रारि व्रनारि, व्रतारी. व्रत्तारि, व्रत्तारी।

व्रत्रासुर—सं. पु. [सं. वृत्रासुर] त्वष्टा का पुत्र एक राक्षस जो देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि० वि०—इसकी माता का नाम दनु था। यह पूर्वजन्म में पाण्डय देश का राजा चित्रकेतु था जो सम्पूर्ण विद्याधरों का राजा था, किन्तु पार्वती के शाप के कारण असुरयोनि में जन्म लिया। एक बार इन्द्र ने विश्वरूपा नामक ब्राह्मण को मार डाला अतः उसके पिता त्वष्टा ने इन्द्र से बदला लेने वाले पुत्र की प्राप्ति हेतु यज्ञ में आहूतियां दी एवं इसे उत्पन्न किया। इसके आतंक से भयभीत होकर इन्द्र, गन्धर्व, किन्नर आदि भगवान् विष्णु की शरण में गये। विष्णु की राय से इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों (जो कि नारायण कवच मंत्राभ्यास के कारण अत्यधिक बलवान् हो गई थी) से वज्र बनाकर उसी वज्र से इसका वध किया।

रू. भे.—व्रतौ, वित्रा, वित्रासुर, वेत्रासुर, वैत्रासुर, व्रतासुर, व्रत्तासुर, व्रत्र।

व्रथ, व्रथा—वि. [सं. वृथा] १ निष्प्रयोजन, व्यर्थ, फिजूल।

उ०—१ सुक पिक लगै सवाद, भल थोड़ौ ही भाखणौ। व्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यूं भैंरिया। —महाराजा बळवंतसिंघ रतलांम

उ०—२ पण म्हारै औ पण छै-सगै रौ नाळे'र आयौ पाछौ न मेलुं। सो माजी, म्हारौ वचन गयां, जमवारौ व्रथा जासी। तिण सुं थे राजी हुय मनै फुरमावौ, ज्यूं म्हारौ भलौ हुवै, अर थांहरै सत तपस्या सुं माहरौ कुही न वीगड़े। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणौ घर रौ कांम, परोपकार, वीरता, देससेवा आदि आछा कांम न करणा मैं व्रथा यूं ही वेस ऊमर गमावै है। —वी. स. टी.

उ०—४ मुंधा हालरा उगेर व्रथा पालणै हलाया माता, पोखें केण कारणै जिवाया थांनै पीव। लोक लाज धारणै फिरंगी हुंता झाट लेवा, जै'र खाय धणी रै बारणै देता जीव। —दलजी महड़ू

२ असत्य, झूठ। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रू. भे.—विरथा, व्रथा, विरथा, व्रिथा।

व्रद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—'अमर' आगरै अखिआत उबारी, भड़ जीपण व्रद भारी। पंच हजारी मुगळ पाड़ियौ, कमधज तणी कटारी। —रूघौ मुहतौ

उ०—२ खांनांणी खंडै खड्ग बळ खाधौ, लाधौ औ व्रद आज सलाह। कांबल कहै, रूधियां केहर, साथ किसौ ताइ किसौ सनाह। —राव कांधळ रौ गीत

उ०—३ लहै ब्रह्म-अग्या व्रदां मेघ लीधौ, दसैकंध आगै हणूं आंणि दीधौ। वदै रांण नूं कोण कै दात वारां, किसैं वैर तैं थाट मारै कंवारां। —सू. प्र.

व्रदधारी—देखो 'विरुदधारी' (रू. भे.)

उ०—तूं मोटी दातार भगतवच्छळ व्रदधारी, 'जगौ' कहै कर जोड़ अरज हरि सुणौ हमारी। काया नगर मझार पंच तसकर पावीजै, कांम क्रोध मद मच्छर कुबुध ममता काढीजै। —ज. खि.

व्रदपूर—देखो 'विरुदधारी'

उ०—१ जोधा भड़ एह पटायत जांणि, वधै जुध सूर 'उमेद' वखांणि। सझै खळ थाट खगां झट सूर, 'पतौ' 'महरांण' तणौ व्रदपूर। —सू. प्र.

उ०—२ कळायण वीच लड़ंत करूर, 'पतौ' इंद्रभांण तणौ व्रदपूर। 'नाथौ' 'अमरावत' खाग उनाग, 'जगावत' जूटत सूर अजागि। —सू. प्र.

व्रदराज—देखो 'विरुदधारी'

उ०—रिणवट बांध जीप जुध रांणा, लड़ ग्रह सुर सुरतांण लिया। खित चित कोट जिसा खूंमांणा, दूसांसण व्रदराज दिया। —हरिदास केहरियौ

व्रदाळ—देखो 'विरुदाळौ' (मह., रू. भे.)

व्रदाळी—१ देखो 'विरुदावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'विरुदाळौ' (रू. भे.)

व्रदाळौ—देखो 'विरुदाळौ' (रू. भे.)

व्रद्द—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—जिकै वंस दाता हुवा सूर जेता, तिकै व्रद्द बोलै सुणै भूप तेता। उभै वात री पात दाखै अहांची, खत्रीध्रम्म छाडो क धांनंख खांचौ। —सू. प्र.

उ०—२ वणै सूरदाता उभै व्रद्द वंका, लियां हूंत पै'ली दिवी दांन लंका। दुवै छेह सांमंद्र बाधौ वधारं, उतारेस पारं पदमं अठारं। —सू. प्र.

व्रद्ध-सं. पु. [सं. वृद्ध] (स्त्री. व्रद्धा) १ युवा एवं प्रौढावस्था के बाद आने वाली मनुष्य की एक अवस्था, बुढ़ापा।

२ उक्त अवस्था को प्राप्त व्यक्ति, बूढ़ा।

उ०—तिम त्रिलोचना नैं घरैं, आवी व्रद्धा नारि। मैं पूछ्यौ ए कुण अछै, मुझ प्रिया तिण वारि। —वि. कु.

वि.—१ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त।

२ बुद्धिमान, पण्डित।

३ बड़ी उम्र का।

रू. भे.—बिरध, बिरिध, ब्रद्ध, ब्रध, विरध, विरिध, विरिधि, व्रध, व्रधु, व्रध्ध, व्रिद, व्रिद्ध, व्रिध।

व्रद्धकन्या-सं. स्त्री. [सं. वृद्धकन्या] कुणिगर्ग महर्षि की बालब्रह्मचारिणी पुत्री।

वि० वि०—नारद के उपदेश से इसने गालव ऋषि के शिष्य श्रृंगवत ऋषि से विवाह किया एवं अपने तप का आधा पुण्य उसे दिया। एक रात उसके साथ रह कर पुनः घोर तपस्या में लीन हो गई। स्वर्ग लोक जाते समय अपने आश्रम को तीर्थ स्थान बना दिया।

व्रद्धकेसव-सं. पु. [सं. वृद्धकेसव] सूर्य की एक मूर्त्ति। (पुराण)

व्रद्धक्षत्र-सं. पु. [सं. वृद्धक्षत्र] १ सिन्धु नरेश जयद्रथ का पिता।

२ पुरुवंशीय एक राजा जो भारतीय युद्ध में पांडव पक्षीय था एवं अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।

व्रद्धक्षेम-सं. पु. [सं. वृद्धक्षेम] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा के पिता का नाम।

२ वृष्णिवंशीय राजा जो पांडव पक्ष में लड़ता हुआ वाल्हिक द्वारा गया था।

व्रद्धगरग-सं. पु. [सं. वृद्धगर्ग] दुश्चिन्हों की उत्पत्ति के बारे में अत्रि ऋषि को ज्ञान देने वाला एक आचार्य।

व्रद्धगारग्य-सं. पु. [सं. वृद्धगार्ग्य] वह महर्षि, जिसने नीलवृषभ छोड़ने, अमावस्या के दिन तिलमिश्रित जल से तर्पण करने व वर्षाऋतु में दीपदान करने के बारे में पितरों से पूछा था।

व्रद्धता-सं. स्त्री. [सं. वृद्धता] १ वृद्ध होने की अवस्था, बुढ़ापा।

२ दुख, कष्ट। * (डिं. को.)

रू. भे.—बिरधाई, बिरधापण, बिरधापणौ, ब्रद्धता, व्रधता, व्रधपण, व्रधपणौ, व्रध्धपण, व्रध्धपणौ।

व्रद्धपूनम, व्रद्धपूरणिमा—देखो 'ब्रद्धपूनम' (रू. भे.)

व्रद्धवयस, व्रद्धवेस-सं. पु. [सं. वृद्धवयस] वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

रू. भे.—व्रधवयस, व्रधवेस।

व्रद्धसरमा-सं. पु. [सं. वृद्धशर्मन्] १ आयु एवं स्वर्भानु के संसर्ग से उत्पन्न पांच पुत्रों में से एक।

२ वसुदेव की बहन श्रुतदेवा का पति व दन्तवक्र का पिता करुष देशीय राजा।

व्रद्धसरवा, व्रद्धस्रवा–सं. पु. [सं. वृद्धश्रवस्] देवराज इन्द्र।

रू. भे.—व्रधसरवा, व्रधस्रवा।

व्रद्धसेना–सं. स्त्री. [सं. वृद्धसेना] सुमति राजा की पत्नी एवं देवताजित राजा की माता का नाम।

व्रद्धाचळ–स. पु. [सं. वृद्धाचल] मद्रास में स्थित एक तीर्थस्थान।

व्रद्धात्रि, व्रद्धात्री–सं. पु. [सं. वृद्धात्रि] एक प्राचीन ऋषि।

व्रद्धास्रम–सं. पु. [सं. वृद्धाश्रम] वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

व्रद्धि–सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] १ बढ़ने की अवस्था, बढ़ोतरी।

उ०—ऊरध अकास, पाताळ पास, सब ठोर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध। वेराग व्रद्धि, सुख बळ सम्रद्धि, निरभय निसांन, निरधन निधांन। —ऊ. का.

२ वृद्ध होने की अवस्था, बुढ़ापा।

३ ब्याज, सूद। ४ लाभ।

५ प्रगति, विकास।

६ बच्चा उत्पन्न होने पर घर में होने वाला सूतक।

७ देखो 'व्रद्धियोग'।

रू. भे.—विरधि, विरधी, विरिधि, व्रधि, व्रधी, व्रिदि, व्रिदी व्रिद्धि व्रिद्धी, व्रिधि, व्रिधी।

व्रद्धिका–सं. स्त्री. [सं. वृद्धिका] वृक्षों पर गिरे हुए शिव-वीर्य से उत्पन्न स्त्रियां जो मनुष्य का मांस भी भक्षण कर लेती हैं।

व्रद्धतिथ, व्रद्धतिथि, व्रद्धतिथी–सं. स्त्री. [सं. वृद्धतिथि] किसी मास या पक्ष में दो तिथि या क्षयतिथि के अतिरिक्त वह तिथि जो घड़ियों में पूर्ण हो।

व्रद्धियोग–सं. पु. [सं. वृद्धियोग] सत्ताईस प्रकार के योगों में से एक योग विशेष।

व्रद्धिसराद्ध, व्रद्धिसराध, व्रद्धिस्राद्ध, व्रद्धिस्राध–सं. पु. [सं. वृद्धिश्राद्ध] विवाहादि मांगलिक अवसरों पर पितरों आदि के लिये नान्दीमुख नामक श्राद्ध।

व्रध—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ आलम का अड़साल, ईखै गूडर आसना। गढ का गा गढपति कन्हइ, व्रध अर तरणा बाळ। —अ. वचनिका

उ०—२ देवी रत्त नीलंमणी सीत रंगं, देवी रूप अंबार वीरूप अंगं। देवी बाळ जूवा व्रधं वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसां भुजाळी। —देवि.

उ०—३ सू अकबर वा जिहांनगीर तथा साहिजांन ये तीन पीढी तौ राजावां नूं मूसलमांन करण री उपाय मैं रया पण तावे आयी नहीं। साजिहांनजी सूं तौ सादलेखां अरज इण वात री करी थी। तद हजरत इसी कही, मैं तौ अब व्रध हो गया सू कोई इस जगा बैठागा जिसकूं भारी है। —द. दा.

२ देखो 'वध' (रू. भे.)

व्रधपण, व्रधपणौ—देखो 'व्रद्धता'।

व्रधवयस—देखो 'व्रद्धवेस' (रू. भे.)

व्रधवा—देखो 'विधवा' (रू. भे.)

व्रधवापण, व्रधवापणौ—देखो 'विधवापणौ' (रू. भे.)

व्रधवेस—देखो 'व्रद्धवेस' (रू. भे.)

व्रधसरवा, व्रधस्रवा—देखो 'व्रद्धस्रवा' (रू. भे.)

व्रधांराज, व्रधांराय, व्रधांराव–सं. पु. [सं. वृद्धराज] ब्रह्मा।

उ०—सिधांराव रै गणेस व्रधांराव रै दिनेस सोहै, जोध बळी राव रै लंकेस रौ है जेम। अलोकराव रै मऋकेत नायजादौ तेम, ऊमेद राव रै 'अजौ' रायजादौ येम। —रावराजा अजीतसिंहजी रौ गीत

व्रधा—देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—ताहरां आंनो वावेलौ भोळौ राजा भीम नूं कहै, राज, प्रथीराज नायौ छै। थें पण मनां चढौ। मनूं विदा करौ और उमराव मोहतौ विदा करौ। ताहरां राजा कहै छै, अनाजी व्रधा हूवा। लूणसाह तौ कांम मेलियौ छै। थां व हरो तौ अठै सरै नहीं। —हाहुल हमीर री बात

व्रधि, व्रधी—१ देखो 'वध' (रू. भे.)

उ०—व्रधि किया बळ व्रंद। —रांमरासौ

२ देखो 'व्रद्धि' (रू. भे.)

उ०—'बांका' हरख न व्रधि सूं, हांण हुवां नहं सोक। हरि संतोख दियौ हियै, तिण नूं दीध त्रिलोक। —बां. दा.

व्रधु–वि. [सं. वृद्ध] दीर्घ, वृहद, विशाल। (अ. मा.)

२ देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

व्रध्ध–सं. पु.—१ एक सूर्यवंशी राजा।

२ देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

व्रध्धपण, व्रध्धपणौ—देखो 'व्रद्धता'।

उ०—बाळापणौ धोळा भया, तरुणापणौ भया लाल। व्रध्धपणौ काळा भया, कारण कोण जमाल। —जमाल

व्रध्नेचा–सं. स्त्री.—चौहान वंश की एक शाखा।

व्रध्नेचौ–सं. पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति।

व्रन—देखो 'व्रण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ झाळ व्रन हुई अवखास विच झळहळै, मार हेकां वियां हियै मिळती। 'अमर' री भगवती खुरम मुह आगाळी, गळ अजै ऊगजै मीर गळती। —केसोदास गाडण

उ०—२ मौ सजन चालंतड़ा, रोय रोय गम रतन्न। पड़िया विसरा चौसरा, आंसु मोती व्रन। —ढो. मा.

उ०—३ तन घरण घटा तराज, धरर धर वाज तिलक धन। पंत दंत बक पाज, वरणै सोभाज सेत व्रन।   —सू. प्र.

उ०—४ मिळि माह तणी माहुटि सूं मसि व्रन, तपि ग्रासाढ तणी तपन। जन त्रीजन पणि ग्रधिक जांणियौ, मध्यरात्रि प्रति मध्याहन।   —वेलि.

उ०—५ कळी सेत व्रन पोळटैं, पड़ै जोखिम कळस, खसै खुंभी, हुवै मंडप खांगो। भींतड़ा भाजि ढहि जाइ धरती भिळै, गीतड़ा नह जाय, कहै 'गांगौ'।   —गांगौ

उ०—६ गढवाडांय जीवत कोण गंजे, व्रन पाल गवां धव पाल वजे। जग मांभ ग्रमां घट प्रांण जिते, इह गांवत हेरण कोण मतै।   —पा. प्र.

व्रनग्रढार-सं. पु.—१ ग्रति उदार या दातार व्यक्ति।

२ प्रजा समूह।

व्रनखट—देखो 'खटदरसरण' (२) (रू. भे.)

व्रनणौ, व्रनबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

व्रनणहार, हारौ (हारी), व्रनणियौ—वि०।

व्रनिग्रोड़ौ, व्रनियोड़ौ, व्रन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्रनीजणौ, व्रनीजबौ—कर्म वा०।

व्रनवणौ, व्रनवबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दस जोयण लगै जियै री देही, व्रनवतां जोवतां विस्तार। इउं हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा व्रख वाधिया उदार।   —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ व्रनवजइं कांम रूप रउ वणतउ, हेग्रां सरस हजूर हुग्रउ। कहइ स कूट बाळियउ कंद्रप, मयण सही ग्रउळजे मुग्रउ।   —महादेव पारवती री वेलि

व्रनवणहार, हारौ (हारी), व्रनवणियौ—वि०।

व्रनविग्रोड़ौ, व्रनवियोड़ौ, व्रनव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्रनवीजणौ, व्रनवीजबौ—कर्म वा०।

व्रनवियोड़ौ—देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रनवियोड़ी)

व्रनियोड़ौ—देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रनियोड़ी)

व्रन्न—१ देखो 'व्रण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ देवी जख्खणी भख्खणी देव जोगी, देवी व्रम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जांनेसुरी व्रन्न मेहा, देवी देव चामुंड संख्याति देहा।   —देवि.

उ०—२ महल्ल गोख सोभ मांन, कुंदनी कळस्य ए, पणत काच नील व्रन्न, ग्रारिखै ग्ररस्स ए। पबै गिरां पगार पौळि, लोहमै कपाट ए, (जु) खिगमेर सीस जांणि, ग्रोपियंत ग्राट ए।   —गु. रू. बं.

उ०—३ काटल ग्रावध मूझ कर, मन मंदाइण व्रन्न। ग्रावध राखै ऊजळा, मैंला ज्यां रा मन्न।   —बां. दा.

व्रप—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—१ करतार घणू कासूं कहां, वडा देव वांमण व्रपा। केसवा रखै कुमया करै, किसन हिमैं करिजौ क्रिपा।   —पी. ग्रं.

उ०—२ हरि हरि करि उद्धरै, बडो सेवग्ग बभीखण, हरि हरि करि उद्धरै, गजह सामंद ध्रू ग्रज्जण। हरि हरि करि उद्धरै, दक्खि व्रप बडौ सुदांमा, हरि हरि करि उद्धरै, सेस संकर सिव ब्रहमा।   —ज. खि.

व्रमंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—रिखण चौ सांम जगत चौ तारण, ग्राधारण व्रमंड ग्रकवीस। जण जण कना काहा तु जाचै, जाच येक दाता जगदीस।   —ग्रोपौ ग्राढौ

व्रम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—त्रकालग्यांन दरसी निज व्रम कूं पहिचांणै। भूत, भवस्त, वरतमांन जुगति सौं जांणै। च्यार वेद नौ व्याकरण खट सास्त्रूं कै विनांण। पिंडत विद्या मैं पारावार जांणै नवदूण पुरांण।   —सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

व्रमग्राखर—देखो 'ब्रह्माक्षर' (रू. भे.)

व्रमकुंड - देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू. भे.)

व्रमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

व्रमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

व्रमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

व्रमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

व्रमचरच—देखो 'ब्रह्मचरच' (रू. भे.)

व्रमचार—१ देखो 'ब्रह्मचरच' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

व्रमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

व्रमजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

व्रमतीरथ—देखो 'ब्रह्मतीरथ' (रू. भे.)

व्रमदड—देखो 'ब्रह्मदंड' (रू. भे.)

व्रमदवार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे.)

व्रमदांन—देखो 'ब्रह्मदांन' (रू. भे.)

व्रमदिन—देखो 'ब्रह्मदिन' (रू. भे.)

व्रमदेत, व्रमदैत, व्रमदैत्य—देखो 'ब्रह्मदैत्य' (रू. भे.)

व्रमदोख, व्रमदोस—देखो 'ब्रह्मदोस' (रू. भे.)

ब्रमद्रोह—देखो 'ब्रह्मद्रोह' (रू. भे.)

ब्रमनाभ—देखो 'ब्रह्मनाभ' (रू. भे.)

ब्रमनिस्ट—देखो 'ब्रह्मनिस्ट' (रू. भे.)

ब्रमपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू. भे.)

ब्रमपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)

ब्रमपुतर—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रमपुतरि, ब्रमपुतरी—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)

ब्रमपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रमपुत्रि, ब्रमपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)

ब्रमभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रममूरत—देखो 'ब्रह्ममूरत' (रू. भे.)

ब्रमरंध्र—देखो 'ब्रह्मरध्र' (रू. भे.)

ब्रमरात, ब्रमरात्रि—देखो 'ब्रह्मरात' (रू. भे.)

ब्रमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)

ब्रमवादिनी—देखो 'ब्रह्मवादिनी' (रू. भे.)

ब्रमविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू. भे.)

ब्रमवेता ब्रमवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)

ब्रमसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे.)

ब्रमसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)

ब्रमसूत, ब्रमसूत्र—देखो 'ब्रह्मसूत' (रू. भे.)

उ०—तीरथ-राउ प्रयागि, राव कमधज्ज पधारै, **ब्रमसूत** निय पहरि करगि अंजळि कुस धारै। करि मंजन वधि सहित, कीध तरपण गंगा तड, विवह दांन दे विप्रां, अंकमाळी अक्खे वड। —गु. रू. बं.

ब्रमहत्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे.)

ब्रमांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—नाचै तिम नट्ट थई जिम नाच, महोदधि मज्झ कूदै सुज माछ। संपेखै संभ निसभ सधीर, ब्रमाणी तांम थई वर वीर। —मा. वचनिका

ब्रमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रम्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रम्मधिया, ब्रम्मधी, ब्रम्मधीया—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू. भे.)

उ०—'करण' सुजाव बर्ष नौ करणां, कळ हूंता गम अगम कीया। चाढै धूमंडळ चीतौड़ा, घू धारक जिम **ब्रम्मधीया**। —राणा जगतसिंघ रो गीत

ब्रम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—देवी विस्णु रै रूप जंघा वधारै, देवी मुकुंद रै रूप मधुकीट मारै। देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म **ब्रम्मा**, देवी साच तण मेलिया जोग सम्मा। —देवि.

ब्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्ररख, ब्ररस—देखो 'वरस' (रू. भे.)

ब्रव—देखो 'ब्रव' (रू. भे.)

ब्रवण—सं पु.—दान, पुण्य। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—पवन चंदन रव इंद्र पतंग पूरण दळद्री प्रेत। विध अगन मूरख **ब्रवण** दीरघ ऊ काहि देत। —एका.

वि.—दातार, दानी, उदार।

उ०—कुंअर किरणाळ सुपह सपखाळ, विरदि उजुआळ सकज धजबंध। प्रसिधि दधि पाज ब्रवण गज वाज, मदति ब्रजराज मरद अनमंध। —ल. पिं.

रू. भे.—ब्रवण।

ब्रवणलोकेस, ब्रवणलोकेसु, ब्रवणलोकेसू—सं. पु.—ईश्वर, परमात्मा। (ना. मा.)

ब्रवणो, ब्रवबो—क्रि. स.—१ दान देना।

उ०—१ मन महरांण धिनौ मेवाड़ा, दाखै धाड़ा दसूं दिसा। राजा अन बांदै रजवाड़ा, तुं गडवाडा ब्रवै तिसा। —रांणा भीमसींग रो गीत

उ०—२ अवतार उदार लाखौ इसौ, जगा जेठ दातार 'जैहै' जिसौ। धरा-थंभ जाड़ेज धूमै धड़ै, ब्रवै वाज जेहा ज गीतां वडै। —ल. पिं.

उ०—३ जग जांणै रै जग जांणै, जिण लंक ब्रवी जग जांणै। स्रीमुख दाख सुकंठ सहोदर, राख प्रभाव घरांणै। —र. ज. प्र.

२ देना।

उ०—१ तांम सूझै न को ठांम ब्रवळह तणा, घणा अन राइयां रूंख राखै घणा। ब्रवै काय रंभ रथ जूथ जांणै सुवर, पड़ै कवि पंखियां 'जसौ' घू कळपतर। —हा. झा.

उ०—२ ब्रवतौ द्रब रीझ झड़ी मैं कळवळ, सोभा समंद झड़ी में साद। जिम चितरांण जीव झड़ी में, आवै घड़ी घड़ी मैं याद। —रांणा सिभुसिंघ रो गीत

उ०—३ अदवां खै जाइस ज्यां अपजस, चक्रवत ब्रवै न जांणै चौज। राजा अमर करै लै रूपग, मंगळ बेगागळ दे मौज। —किसनौ आढौ

उ०—४ धर प्रीत पूछै गहर भूधर कहै विध कवि राव। उर वधत हरख अमाप सुण सुण ब्रवै कोडपसाव। —र. रू.

३ वित्तीर्ण करना, वितरित करना, बांटना।

उ०—राजा कमधज सुतण पदारथि, उण सुत गणपति भूप ब्रवण अथि। तोगनाथ जिण सुतण भूप तवि, कीरति पार जेण न लहै कवि। —सू. प्र.

४ त्यागना, छोड़ना।
५ अर्पण करना।
६ बोलना, कहना।

उ०—व्रवियौ सिध आराध वडाळौ, असठी अक्षर मंत्र जप अ वाळौ। अजमावण कजि मंत्र व्रप अक्खै, दुगम पहाड़ फोड़ि इम दक्खै।
—सू. प्र.

व्रवणहार, हारौ (हारी), व्रवणियौ—वि०।
व्रविओडो, व्रवियोड़ौ, व्रव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
व्रवीजणौ, व्रवीजबौ—कर्म वा०।
व्रवणौ, व्रवबौ—रू० भे०।

व्रस—१ देखो 'व्रख' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)
३ देखो 'विस' (रू. भे.)
४ देखो 'वरस' (रू. भे.)
५ देखो 'व्रक्ष' (रू भे.)

उ०—ननां नंदघा परहरी, पर नंदघा न करेह। सोम नहीं संसार मां, पळतै पत्र गहि लेह। पळतै पत्र गहि लेह, व्रस देखो नर सोई। और पाप कूं नफौ, निंदन नफो न कोई। —वील्होजी

व्रसक—देखो 'व्रखक' (रू. भे.)
व्रसकेतु—देखो 'व्रखकेतु' (रू. भे.)
व्रसचक, व्रसचकर, व्रसचक्र—सं. पु. [सं. वृश्चिक] १ वृश्चिक राशि का नाम। (अ. मा.)
२ देखो 'व्रखचक्र' (रू. भे.)
व्रसण—देखो 'व्रखण' (रू. भे.)
व्रसणकच्छ, व्रसणकच्छु, व्रसणकछ—देखो 'व्रखणकच्छ' (रू. भे.) (अमरत)
व्रसदरम—देखो 'व्रखदरभ' (रू. भे.)

उ०—महाराजा मोरध्वज री व राजा व्रसदरभ री जिण भूखी आत्मा हित आपरै बेटा नूं चीर सिह नू खुवायौ सो मोरध्वज अक्षय पुण्य पायौ। —साह रांमदत्त री वारता

व्रसदेवा—देखो 'व्रखदेवा' (रू. भे.)
व्रसद्वीप—देखो 'व्रखद्वीप' (रू. भे.)
व्रसधार, व्रसधारिण, व्रसधारी—देखो 'व्रखधारी' (रू. भे.)
व्रसधुज, व्रसध्वज—देखो 'व्रखध्वज' (रू. भे.)
व्रसध्वजा—देखो 'व्रखध्वजा' (रू. भे.)
व्रसपत, व्रसपति, व्रसपती—१ देखो 'व्रखपति' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रहस्पति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—औ व्रसपत दसमै ग्रह आयौ, विदुख तिकां दुण लाभ बतायौ। कुळ व्रप उग्र थयौ ह्वै कोई, सुतन प्रताप चौगुणौ सोई।
—रा. रू.

व्रसभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)
व्रसभकेतु—देखो 'व्रखभकेतु' (रू. भे.)
व्रसभगत, व्रसभगति, व्रसभगती—देखो 'व्रखभगति' (रू. भे.)
व्रसभधज, व्रसभधुज, व्रसभध्वज—देखो 'व्रखभध्वज' (रू. भे.)
व्रसभांक—देखो 'व्रखभांक' (रू. भे.)
व्रसभांण, व्रसभांणु, व्रसभांन, व्रसभांनु—सं. पु. [सं. वृषभानु] कृष्ण-प्रेमिका राधा के पिता का नाम।

रू. भे.—व्रखभान, विरखभांण, विरखभांणु, विरखभांन, विरखभांनु, व्रखभांण, व्रखभांणु, व्रखभांन, व्रखभांनु।

व्रसभांनुनंदणी, व्रसभांनुनंदिणी, व्रसभांनुनंदिनी—देखो 'व्रखभांनुनंदिनी' (रू. भे.)
व्रसभांनुसुता—देखो 'व्रखभांनुसुता' (रू. भे.)
व्रसल—देखो 'व्रखल' (रू भे.)
व्रसलांछण, व्रसलांछन—देखो 'व्रखलांछन' (रू. भे.)
व्रसली—देखो 'व्रखली' (रू. भे.)
व्रसलीपत, व्रसलीपति, व्रसलीपती—देखो 'व्रखलीपति' (रू. भे.)
व्रसवाहण, व्रसवाहन—देखो 'व्रखवाहण' (रू. भे.)
व्रससेण, व्रससेन—देखो 'व्रखसेन' (रू. भे.)
व्रसस्कध—देखो 'व्रखस्कंध' (रू. भे.)
व्रसांक—देखो 'व्रखांक' (रू. भे.)
व्रसासुर—देखो 'व्रखासुर' (रू. भे.)
व्रसोत्सरग—देखो 'व्रखोत्सरग' (रू. भे.)
व्रस्चक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

उ०—रवि मीन रासि सनि करक राहु, अरु मकररासि केतह अथाह। कहि व्रस्चक भांण बुध बुध प्रकास, तन लगन मिथुन सुभ अनंत तास।
—सू. प्र.

व्रस्चकसंकरांत, व्रस्चकसंकरांति, व्रस्चकसंकरांती, व्रस्चकसंकरायंत, व्रस्चकसक्रांत, व्रस्चकसक्रांति, व्रस्चकसक्रांती, व्रस्चकसंक्रायंत, व्रस्चकसक्रांति—देखो 'व्रस्चिकसंक्रांति' (रू. भे.)

उ०—व्रस्चकसक्रांत दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सबीस। राजै तदि मंगळ कुंभ रासि, कहि मीन व्रहस्पति बळ प्रकासि।
—सू. प्र.

व्रस्चिक—सं. पु. [सं. वृश्चिक] (स्त्री व्रस्चिकणी, व्रस्चिकनी) १ बिच्छू।

उ०—अऊठ कोडि घटि अम्ह तणइ, रोम सरूपी राय। तै पीऊ पाखइ मूंहनइं, व्रस्चिकनी परी थाइ। —मा. कां. प्र.

२ बारह राशियों में से आठवीं राशि। (ज्योतिष)

३ बारह लग्नों में से आठवां लग्न। (फलित ज्योतिष)

रू. भे.– व्रच्छिक, व्रछिक, व्रस्चक।

व्रस्चिकपत्रिका–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकपत्रिका] पोई नामक साग।

ध्रस्चिकप्रिया–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकप्रिया] पोई नामक साग।

व्रस्चिकसकरांत, ध्रस्चिकसकरांति, ध्रस्चिकसंकरांती, व्रम्चिकसंकरायंत, ध्रस्चिकसक्रांत, ध्रस्चिकसंक्रांति, ध्रस्चिकसंक्रांती, ध्रस्चिकसंक्रायत–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकसक्रांति] वृश्चिक राशि में सूर्य का प्रवेश एवं इस दिन मनाया जाने वाला पर्व।

रू. भे.— व्रस्चकसंकरांत, व्रम्चकसंकरांति, व्रस्चकसंकरांती, व्रस्चकसंकरायंत, व्रम्चकसंक्रांत व्रम्चकसंक्रांति, व्रम्चकसंक्रयंत।

व्रस्चिकाळी–सं. स्त्री. [सं. वृश्चिकाली] प्रायः सारे भारत में पाई जाने वाली बिच्छू नामक लता।

व्रस्टर—देखो 'विस्टर' (रू. भे.) (नां. मा.)

व्रस्टरसव, ध्रस्टरसवा, ध्रस्टरस्रव, व्रस्टरस्रवा–सं. पु. [सं. विष्टरश्रवस्]

१ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.) ३ विष्णु भगवान का नाम।

व्रस्टि, ध्रस्टी–सं. स्त्री. [सं. वृष्टि] १ वर्षा, मेह।

उ०—तीरथंकर नइ पारणै, कुण करसइ मुझ होडि। **ध्रस्टि** करूं सोवन तणी, साढी बारह कोडि। —स. कु.

२ बहुत सी चीजों को एक साथ ऊपर से गिराने की क्रिया।

३ एक ही क्रिया को लगातार बार बार करने की क्रिया।

रू. भे.—व्रस्टी, व्रस्ठी, व्रिस्टि, व्रिस्टी।

व्रस्णि, ध्रस्णी–सं. पु. [सं. वृष्णि] १ बादल, मेघ।

२ यादव वंश।

३ श्रीकृष्ण।

४ देवराज इन्द्र।

व्रस्णिकगरभ, व्रस्णिगरभ–सं. पु. [सं. वृष्णिकगर्भ] श्रीकृष्ण।

व्रहमंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ दखे भाख ज्यारां जती वंस दीता, सकौ कंत त्रिलोक रौ नाथ सीता। **ध्रहमंड** कोड़ेक भांजे वणावे, इसौ रांम माता कठै कांमि आवे। —सू. प्र.

उ०—२ भणंके चलौ कोमंडां तूर भेरी, फबे संख सहनाय आनेक फेरी। विखम्मी सुरां सिद्धवां डाक वागी, **ध्रहमंड** इक्कीसमें हाक वागी। —सू. प्र.

व्रहम—१ देखो 'व्रह्म' (रू. भे.)

उ०—जोग पंथ जांणौ नहीं, माया रूपी कांन्ह। जादम वस छुडाय करि, दीयौ **ध्रहम** निदांन। —सुरजनदास पूनियौ

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

व्रहमण, ध्रहमांण, ध्रहमांणयं—१ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ वेद मंत्र पाठी चत्र वेदह, जांणै जोतिख भेद सुभेदह। होम दिये आहूत हुतासण, तेडै तांम इसा **ध्रहमण**। —गु. रू. बं.

उ०—२ आमना चत्र वेद **ध्रहमांणयं** विप्रयं, रूध जुज्जर सांम अथरवणयं जपयं। वेदौधुनि जै जै सव्वदयं वणयं, गुंजार रव भेर पंडसदयं घणयं। —गु. रू. बं.

२ देखो 'व्रह्मा' (रू. भे.)

व्रहमांणी–देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—देवी वैस्णवी महेसी **ध्रहमांणी**, देवी इंद्रायणी चंद्रांणी रतारांणी। देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इळा आधार आसूर हाता। —देवि.

व्रहमि, व्रहमी—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

व्रह, व्रहत, ध्रहती–वि. [सं. वृहत्] १ आकार की दृष्टि से अत्यन्त बड़ा, विशाल।

२ विस्तार की दृष्टि से बहुत लम्बा-चौड़ा।

३ अपार, बहुत।

सं. पु.—१ वेद।

२ ब्रह्म।

३ प्रत्येक चरण में नौ अक्षरों वाला वर्णवृत्त।

रू. भे.—ब्रह, ब्रहत, ब्रहती, ब्रहद, वहद, व्रिहत, व्रिहद।

व्रहत्कलप–सं. पु. [सं. वृहत्कल्प] एक सूत्र विशेष।

उ०—छ छेदे महानिसीथ निसीथ, पांच सहस गिणिजे इबीथ। **ध्रहत्कलप** बीजो वाखांण, च्यारसे विहुतर संख्या जांण। —ध. व. ग्रं.

व्रहदंग–सं. पु. [सं. वृहत्+अंग] हाथी, हस्ती।

ध्रहदबळ–सं. पु.—वृहदव नामक एक सूर्यवंशी राजा जो विश्रुतवान का पुत्र था।

उ०—नपति प्रसेनजीत तै नंदण, खुनक प्रसेन सुतण खळ खंडण। बळवंत खुनक सुजाव **ध्रहदबळ**, दुभ्रल हुवौ हरवळ कैरव दळ। —सू. प्र.

व्रहदभवन, व्रहदभांण, व्रहदभांणु, ध्रहदभांन, व्रहदभांनु–सं. पु. [सं. वृहद्भानु] १ आग, अग्नि। (ह. नां. मा.)

२ चित्रक।

३ सूरज, सूर्य।

४ सत्यभामा के पुत्रों में से एक।

रू. भे.—व्रहदभांण, ब्रहदभांनु, व्रिहदभांण, व्रिहदभांणु, व्रिहदभांन, व्रिहदभांनु।

व्रहदभोज–सं. पु.—पुराणोक्त वृहद्राज नामक एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—जै सुत ब्रहदभोज जगजाहर, ब्रहदभोज सुत वहन्य कीतवर। जिण ब्रप वहनि सुजाव क्रतंजय, जेण सुजाव नरेस रणंजय।
—सू. प्र.

ब्रहदळ, ब्रहदल–वि. [सं. वृहद्दल] अत्यधिक बड़ा; बहुत बड़ा।

उ०—अणू तें व्याणू तें ब्रहदल विभूतें अतिविभू, तुर्जेनां जांनै कौ सुह्रद स्वसु जांनै भल त्रभू। कहैं क्या ध्यावेधी कहन नहिं आवैं कुल कुलें, मदांधौ मायावी तुम रु हम भावी तुलें। —ऊ. का.

ब्रहदस्व–सं. पु. [सं. वृहदश्व] एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—१ कहि जिण सुतण वीर ब्रप केहौ, जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ। जे सुत ब्रहदस्व भूप करण जय, तै सुत भांनुमांनु तेजोमय।
—सू. प्र.

उ०—२ आरद्र जेयसुत वंसओर, जै सुत जवनासव व्रह्म जोप। सभ्रम जवनासव हुवौ स्राव, ब्रहदस्त्र जेण सुत तप वधाव।
—सू. प्र.

ब्रहनट, ब्रहन्नट, ब्रहन्नड–सं. पु. [सं. वृहन्नट] अर्जुन। (अ. मा.)

उ०—मूभइ रडइ भुहि पडइ मनि कंप थाइ, देखी जतूं कटक उत्तर सून्य थाइ। पाछउं हवं वलि ब्रहन्नड मइं म मारि, खूटा पखइ कहि न भूलउ कां विचारि। —सालिभद्र सूरि

रू. भे.—ब्रिहनट, ब्रिहन्नट, ब्रिहन्नड।

ब्रहन्नळा–सं. स्त्री. [सं. वृहन्नला] १ वनवास काल के बाद एक वर्ष के अज्ञातवास काल में राजा विराट के यहां स्त्री वेष में रहते समय अर्जुन का नाम।

२ अर्जुन।

ब्रहमंड, ब्रहमंडक—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ भिड़े मुख मूंछ अणी भुंवहार, धरे हथ रौळवियौ चवधार। वणे मुख चोळ छिवै ब्रहमंड, 'पतै' अस हाकलियौ परचंड।
—सू. प्र.

उ०—२ कोट मुलक खिडिया केताइ खंड, व्याइ वसूहक फाटौ ब्रहमंड। वडा वडा आवै वरियांम, 'अंबर' आगे करै सलांम।
—गु. रू. बं.

उ०—३ ब्रहमंड किनां फुट्टौ वळं, धसक तळातळ आतळं। मुखें हसै सकति महाबळ, वेताळा कुळ व्याकुळं। —मा. वचनिका

उ०—४ घट मैं तारा चंद रवि, घट मांहि ब्रहमंड। हरिया घट मैं रांम है, वाकी जोति अखंड। —अनुभववांणी

उ०—५ भूंभारां आवध भळहळेय, ब्रहमंडक वीजां वळवळेय। सैफळौ वाजियौ सांमतांह, मेलियौ लोह मुह रावतांह।
—गु. रू. बं.

ब्रहमंडी—१ देखो 'ब्रह्मांडी' (रू. भे.)

उ०—सिव सकत्ती सम मुगती, सिव मभि सकति सकति सिव सभै। आतम सकति सकति सिद्धौ, सिव सकति पिंड ब्रहमंडी।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'ब्रह्मांडी' (रू. भे.)

ब्रहम–सं. पु.—१ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २१ मात्रायें होती हैं।

उ०—दस एकादस मात्र दें, एकांणि पायें एम। ब्रहम छंद वाखांणिजे, गुण लखपति निगेम। —ल. पिं.

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यांनी सो वडा ब्रहम विचारै। —केसोदास गाडण

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ दसरत्थ विभै इम नजर दीध, कांमना पुत्र धरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अनाप, आविया ब्रहम सिव बिसन आप।
—सू. प्र.

उ०—२ सिव ब्रहम बिसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप जिगन व्रत संगि पाय। त्रिय भूप धरम थित गरभ तांम, कांमना सकळ ब्रप ज्याग कांम।
—सू. प्र.

उ०—३ रगतासुर अै रीत, सूर उदै जसण सभै। माहव ब्रहम महेस सुं, गावै आडा गीत। —मा. वचनिका

उ०—४ साळउ दइ हाथ तपै तप संकर, ब्रहम तियइ रउ करइ विचार। बीजी दुनी राखडी बांधइ, संभूनाथ अचळ संसार।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्रहमकपाळ—देखो 'ब्रह्मकपाळ' (रू. भे.)

ब्रहमकरम—देखो 'ब्रह्मकरम' (रू. भे.)

ब्रहमकवच—देखो 'ब्रह्मकवच' (रू. भे.)

ब्रहमकांड—देखो 'ब्रह्मकांड' (रू. भे.)

ब्रहमकुंड—देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू. भे.)

ब्रहमकूरच—देखो 'ब्रह्मकूरच' (रू. भे.)

ब्रहमक्षत्र, ब्रहमक्षत्री, ब्रहमखत्री—देखो 'ब्रह्मक्षत्र' (रू. भे.)

ब्रहमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

ब्रहमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

उ०—ज्यां नदियां मंजन करै, धरै सदा हरि ध्यांन। उर निरोध हरं आसरै, विसरै नह ब्रहमग्यांन। —अ. मा.

ब्रहमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यांनी सो वडा ब्रहम विचारै। —केसोदास गाडण

ब्रहमघातक, ब्रहमघातकी—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू. भे.)

ब्रहमघातणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ब्रहमघातिक, ब्रहमघातिकी—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू. भे.)

उ०—श्रीनाथ रुद्र गरणपति सकळ, भासंकर मिळ पंच ए। इण मांहि भेद जांणै जिको, ब्रहमघातिकी मांन ए। —मा. वचनिका

ब्रहमघातिणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ब्रहमचरज, ब्रहमचरज्ज, ब्रहमचरच—देखो 'ब्रह्मचरच' (रू. भे.)

उ०—सौ घरण स्त्री कहै इरण हीज धड़ सूं एकरण धरण रौ पनी ग्ररथात ब्रहमचरच व्रत वाळो एकण हीज धरा रौ पनी ग्राप रो वैर लै नै पड़सी। —वी. स टी.

ब्रहमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे.)

ब्रहमपुरांण—देखो 'ब्रह्मपुरांण' (रू. भे.)

उ०—तवतां कुरांण काजी तठै, ब्रहमपुरांण वचाविया। ग्रासुरां धरम मेटै 'ग्रजै', सुरां धरम दरसाविया। —सू प्र.

ब्रहमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे.)

ब्रहमफांस—देखो 'ब्रह्मफास' (रू. भे.)

ब्रहमभोज—'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रहममुहूरत, ब्रहममूहूरत—देखो ब्रह्ममुहूरत' (रू. भे.)

ब्रहमयोनि—देखो 'ब्रह्मयोनि' (रू. भे)

ब्रहमरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू. भे.)

ब्रहमरेख, ब्रहमलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू भे.)

ब्रहमळा—वि.—१ विमल, पवित्र।

उ०—सभंत ब्रह्म कै सिनांन, केक त्रप्पणं करै, धरत्त केक ध्यास ध्यांन, चडि पाठ उच्चरै। जपंत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र ब्रहमळा, करंत पूज नौ प्रकार, केक कंत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रहमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)

ब्रहमवांणी—देखो 'ब्रह्मवांणी' (रू. भे.)

ब्रहमवाचा—देखो 'ब्रह्मवाचा' (रू. भे.)

उ०—देसपति संभ्रम दमण ऊदम ग्रगम गम हींदुग्रां ग्रोपम, सरमधारी करण सुधरम ब्रहमवाचा दांनि विक्रम। जस करन समदि ग्ररण जगम दीपिग्रौ विरदाळ, ताई भूपाळ जी भूपाळ। —ल. पिं.

ब्रहमांड—देखो 'ब्रह्मांड' (मह., रू. भे.)

उ०—नमौ ग्रादि नाराइणी, ब्रहमांणी ब्रहमांड। रुद्रांणी जांणी रिधू, ग्रतुळित तेज ग्रखंड। —मा. वचनिका

ब्रहमांण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू. भे.)

उ०—१ ग्रो जौ हुं ग्राज चूकूं ग्रवसांण, वकै नह वेद मुखां ब्रहमांण। जावै वित ऊभां मूंभ जीयार, धरा नह छोळ दियै इंद्रधार। —गो. रू.

उ०—२ मांनै ब्रहमांण पठै पुरांण, वदै वखांण रिखेसवरं। गुण भणै जगत्त गुर सकौ ग्रसुर सुर, तेम ग्रठारह भार तरं। —रि. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—हुय चौप कोड चमंड हथं, कर कोड नवै कनियांण कथं। भट कोड लखै ब्रहमांण खडी, तव लाखइ लोवड़ियाळ लडी। —पा. प्र.

३ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—पढावै कुरांणां तिकां पढावै काजियां पूजा, सुरांणां पुरांणां वेन ब्रहमांणां सेव। 'राजा' तणौ छत्रधारी खागधारी राजहंस, दांणवां सूं वेधकारी ग्रवत्तारी देव। —महारांणा जयसिंह (दूसरा) रौ गीत

ब्रहमांणी—१ देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

उ०—१ नमौ ग्रादि नाराइणी, ब्रहमांणी ब्रहमांड। रुद्रांणी जांणी रिधू, ग्रतुळित तेज ग्रखंड। —मा. वचनिका

उ०—२ पंचम नांम प्रसिद्ध, सकंदमाता सुररांणी। ब्रहमांणी काळि रुखि, कहां तिम काइययांणी। —मा. वचनिका

२ देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे.)

उ०—चोथी रांणी विनीता ब्रहमांणी। तिणरै पुत्र–पहिलो नवनाटक, बीजो चंद्रमा, तीजो कोरंभ। —रा. वसावळी

ब्रहमोन—१ देखो 'ब्रह्म' (मह; रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा, (मह; रू भे)

ब्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ 'भगवंत' सुतण हुग्रौ त्रहुं भुवणै, घण दीहां लग नांम धणौ। ब्रहमा विसन महेस वदीतौ, तप तुंगिम जस तूझ तणौ। —गोपाळ मीसण

उ०—२ नमौ मात ध्याता नमौ रंग जांणी, नमौ बाळ ध्याती ब्रहमा बखांणी। नमौ राखि सधा नमौ छांह रूपी, नमौ उमया चौभुजी द्रंग ग्रोपी। —मा. वचनिका

उ०—३ नांव परताप सब सत महमा करै, विसन सिव सेस ब्रहमादि सारा। दास हरिरांम निज नांव परताप तैं, होय जुग मांहि नर निसतारा। —ग्रनुभववांणी

उ०—४ कमध कहै कर रूक कळासौ, ग्रातम जोध विद्या ग्रभियासौ। वात रहै ब्रहमा वरसासौ, हुयसी जुद्ध नहीं ऐ हासौ। —गु. रू. बं.

ब्रहमि—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—नरिंदि चौथौ प्रभु नारसींघ नाहरू, विळै पैरमेस वेदां तणौ वाहरू। ब्रहमि पीधा निहीं वेद चत्र वाळिया, ग्रखिकि चारण तणा वचन ग्रजूग्राळिया। —पी. ग्रं.

२ देखो 'ब्रह्म' (ग्रल्पा., रू. भे.)

ब्रहमिण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

ब्रहमौ—देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू. भे.)

ब्रह्म्मंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—**ब्रह्म्मड** कोटेक जो रोम वासं, स तो जोवतां जेणि केतो सरासं। एको रांम रो दास जोरै अपारै, धरा सात दीपावती सेस धारै। —सू. प्र.

ब्रह्म्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ देवी उम्मया खम्मया ईसनारी, देवी धारणी मुंड त्रिभुव्वन्न धारी। देवी सब्बदां रूप ग्रो रूप सीमा, देवी वेद पारख्ख धरणी ब्रह्म्मा। —देवि.

उ०—२ देवी सप्तमी ग्रस्ठमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम्म पूजा। देवी सरसती लख्खमी महाकाळी, देवी कन्न विस्णु ब्रह्म्मा कमाळी। —देवि.

ब्रहब्रह, ब्रह्म्ब्रह-सं. स्त्री.—युद्ध स्थल में वीरों द्वारा की जाने वाली जोशीली आवाज।

उ०—१ कतियांणी क्हक्कह नारद डहडह, हेका टहटह वीर हसै। बड रावत ब्रहब्रह पोरसि प्रहप्रह, दूडी ठहठह होठ डसै। —गु. रू. बं.

उ०—२ टहट्टह रंभ ब्रह्म्ब्रह वीर, मिळै रणताळि कमध्धज मीर। निहट्टां निग्रहि बांध्यौ नेत्र, खरा खुरसांण मरुध्धर खेत्र। —राउ जैतसी रो रासौ

ब्रहसपत, ब्रहसपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहस्पती-सं. पु. [सं. बृहस्पतिः] १ वह व्यक्ति जो महाविद्वान एवं पंडित हो।

२ बुधवार के बाद व शुक्रवार के पहले आने वाला दिन।

३ एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र एवं देवताओं के गुरु माने जाते हैं। (अ. मा.)

उ०—स्री गुरन पति ब्रहस्पति कहै, देवन पति गोविंद। देवन पति ब्रह्मा वदै, साखन पति पति अब। —अग्यात

वि. वि.—इनकी पत्नी तारा को सोम हरण कर ले गया तब इनका सोम के साथ युद्ध हुआ। ब्रह्मा आदि देवताओं ने इनकी पत्नी तो वापिस दिलवादी किन्तु इनकी पत्नी व सोम के समागम से बुध की उत्पत्ति हुई।

४ सौर जगत का पांचवां ग्रह।

उ०—१ तेजमैं रूप बहु पुत्र ताच, सोभा अपार गुण एह साच। ब्रहसपति भवन दसमै वखांणि, जिण हीज भवन रविनंद जांणि। —सू प्र.

उ०—२ सुग्रही मनै कै इंद्र सार, इण रीत ब्रहसपति गुण उदार। अब कहूं सनीसर गुण अनेक, अन्न के तणो तत वचन एक। —सू प्र.

उ०—३ ब्रस्चकसंक्रांत दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सधीस। राजै तदि मंगळ कुंभ रासि, कहि मीन ब्रहस्पति बळ प्रकासि। —सू प्र.

५ नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि की रचना करने वाले एक ऋषि।

उ० – ठग कांमेती ठोठ गुर, चुगल न कीजे सैण। चोर न कीजे पाहरू, ब्रहस्पति रा वैण। —बां. दा.

६ युद्ध, यज्ञ, बुद्धि आदि के अधिष्ठाता देव।

७ वैशाली के मरुत्त आविक्षित मरुत्त राजा का पुरोहित एक अंगिराकुलोत्पन्न ऋषि।

वि० वि०—इसने अपने बड़े भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता से संभोग किया था। गर्भस्त बालक के द्वारा उक्त क्रिया करने में अत्यधिक अड़चनें पैदा किये जाने पर इसने उसे जन्मांध होने का शाप दिया। ममता एवं इसके संसर्ग से भरद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

८ सोलहवें द्वापर के भगवदवतार गोकर्ण के चार पुत्रों में से एक।

९ चौथे द्वापर के एक वेदव्यास का नाम।

रू. भे.—ब्रहतीपति, ब्रहसपत, ब्रहसपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहस्पती, ब्रिहसपत, ब्रिसपत, बिरसपति, ब्रिसपती, बिरस्पत, बिरस्पति, बिरस्पती, बिसपत, बिसपत, बिसपति, बिसपती, ब्रपत, ब्रसपति, ब्रसपती।

ब्रहसपतवार, ब्रहसपतिवार, ब्रहसपतीवार, ब्रहस्पतवार, ब्रहस्पतिवार, ब्रहस्पतीवार—देखो 'ब्रहस्पति' (२)

ब्रहांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—उदै अरक्क ऊगहंत, माळ लक्ख मंडही। स्रीवंत साह लाखपत्ति, कवि क्रोड दी धुही। वियास भट्ट के महत, जोतिकी ब्रहांमणं। कथा पुरांण भागवंत, भारथं रामाइणं। —गु. रू. बं.

उ०—२ मांड नव तैरही नवै ग्रह मांडिया, ब्रहांमण फरै नारद वचाळै। रोद्रणी वीदणी छेह सर राळिया, रुधर तंबोळ मुख हूंत राळै। —दुरसौ आढौ

ब्रहास, ब्रहासि-सं. पु.—अश्व, घोड़ा। (ना. डिं. को.)

उ०—१ अंबाग्गळ ध्रीह ब्रहब्रह तूर, 'कलावत' जंग करंत कहर। वहै असवार अनेक ब्रहास, दियै खग भ्रटक 'गोयंददास'। —सू. प्र.

उ०—२ बिढै महता जुधि ग्रोर ब्रहास, दियै खग भाटक गोकळ-दास। वैरीहर बाढत वीजळ वाह, 'गोपाळ' कराळ करै गजगाह। —सू. प्र.

उ०—३ लूणाक्रन समोभ्रम आइ लास, विलहणा हुअइ छूटइ ब्रहास। अति तेजि अचप्पळ तुरी आपि, तरुणि रथ जेम निळ ग्रहइ आपि। —रा. ज. सी.

उ०—४ फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊंवास असि आरिखि अमूल। वणवीर चड़िय तेवहि ब्रहासि, अहिकार थंभ आडइ अयासि। —रा. ज. सी

उ०—५ नाठै समउ रिगळ आवासि, वांसाइ राजा चव्वइ ब्रहासि। घरि सुना छइ रांणी सही, नळ राजा किणि लखियउ नहीं। —ढो मा.

ब्रहिंनिड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

ब्रहिम—देखो 'ब्रह्मा' (अल्पा., रू. भे.)

ब्रह्मांड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ सोना रा कळस घणूं ताइ सुंदर, खण मांडिया इकवीस अखंड। जडिया कुंदण तणी जेवडी, वास जिकै लागा ब्रह्मांड। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सातै ही ब्रह्मांड संकिया, पुड सातै संकिया पयाळ। वाजियौ लोह रहक सिर वाजइ, लागा युध करिवा लंकाळ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रहिस्यै जुग बोल जितै धर अंबर, सायर सिला तिरावण हार। इकवीसूं ब्रह्मांड उपावै, नांव तमीणै सूं निसतार। —परमानंद वणियाळ

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—१ रोमंच अंग घोम रूप, ब्रह्म तेज मैं वणै, जटास छमंटा जडागि, आग नेत्र ऊफणै। वसिस्ठ आय जेण वार, ग्यांन कीध धू-मती, दईव सेन तुझ नंद, भै न कोइ भूरती। —सू. प्र.

उ०—२ सींचै अम्रत अंग अति संजम, जोवन लगै विकार जरा जम। परमहंस आंणद मैं प्रांणी, ब्रह्म अकासि हुई तदि वांणी। —सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—आरद्र जेयसुत वंस ओप, जै सुत जवनासव ब्रह्म जोप। संभ्रम जवनासव हुवौ साव, ब्रहदस्व जेण सुत तप वधाव। —सू. प्र.

३ देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—दहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगा तै कीध विचार। ईसर तूं जगदीस तणउ अंस, सहु ब्रह्म माडियउ संसार। —महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—सभंत ब्रह्म के गिनांन, केक अप्पण करै, धरत्त केक न्यास ध्यांन, चंडि पाठ उच्चरै। जपंत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र ब्रहमळा, करंत पूज नौ प्रकार, केक कंत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रह्मगिनांन, ब्रह्मग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

उ०—लछ भरतार लील लहरी रव, ताप पाप भौ टाळै। 'ईसर' तणौ रमै तौ आतम, ब्रह्मगिनांन विचाळै। —ईसरदास बारहठ

ब्रह्मग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—सारस बतक मुरगावी वक बेल संजै। हरख नचत तीर खंजन कुमार हुंजै। छहूं रिति जिन्हूं के तट परि ब्रह्मग्यांनी सिध मुनिराज छावै। मांनसरोवर कै भौळै भूल अनेक (क) लीलग आवै। —सू. प्र.

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज, ब्रह्मचरय्य, ब्रह्मचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—सौ घणा स्त्री व्है इण हीज घड़ सूं एकण धण रौ पती अरताथ ब्रहमचरय व्रतवाळौ एकणहीज धण रौ वैर लेनै पड़सी। अरताथ ज्यांरौ ब्रह्मचरय्य व्रत निस्ट हुवोड़ौ है और पर स्त्री गमण आदि कळंका सूं पूरित है तिकै विनां सिर तरवार वाह नहीं सकसी। —वी. स. टी.

ब्रह्मचारिणी—देखो 'ब्रह्मचारिणी' (रू. भे.)

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रह्मजळ—देखो 'ब्रह्मजळ' (रू. भे.)

ब्रह्मजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रह्मदेव—सं. पु.—१ देखो 'ब्रह्मा'।

उ०—सुर मिळै कीध ममलति सकाज, आवौ प्रभु आगळ अरज आज। सुरिइंद्र मिळै ब्रह्मदेव साथ, हरि अग्र रहै सह जोड़ि हाथ। —सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मदेव' (रू. भे.)

ब्रह्मद्वार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे)

ब्रह्मधिया, ब्रह्मधी—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू. भे.)

ब्रह्मपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू. भे)

ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)

ब्रह्मपुतर, ब्रह्मपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रह्मपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)

ब्रह्मपुरांण—देखो 'ब्रह्मपुरांण' (रू. भे.)

ब्रह्मभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रह्ममुहूरत, ब्रह्ममूहूरत—देखो 'ब्रह्ममुहूरत' (रू. भे.)

ब्रह्मयोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रह्मरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू. भे.)

ब्रह्मरिसी—देखो 'ब्रह्मरिसी' (रू. भे.)

ब्रह्मरूप—देखो 'ब्रह्मरूप' (रू. भे.)

उ०—सोडस आखर पय सखर, सहि गुर एकण साथि। ब्रह्मरूप गुण वाचिया, त्याइ एणि अहीनाथि। —वं. प्र

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू. भे)

ब्रह्मलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)

ब्रह्मविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू. भे)

ब्रह्मवेता, ब्रह्मवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)

ब्रह्मसिर—देखो 'ब्रह्मसिर' (रू. भे.)

ब्रह्मसुतन—देखो 'ब्रह्मसुतन' (रू. भे.)

ब्रह्मसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे.)

ब्रह्मसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्यचतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि

उ०—२ ए अनिरुधजी का नांम। चतुरमुख। चतुरवरण। चतु-रातभाविग्य। चतुरजुग विधायक। सरवजीव विस्वकेत। ब्रह्मसू नरवर हंस देहनायक। —वेलि टी

ब्रह्महत्या, ब्रह्महित्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे)

ब्रह्मांड, ब्रह्मांडि—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

ब्रह्मांण—देखो 'ब्रह्म' (मह., रू. भे.)

ब्रह्मांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' (रू. भे.)

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ कूंकतडी मेल्ही चिहुं कनारां, नीघसजइ आगळि नीसांण। ब्रह्मा विस्णु पधारउ वहिला, जोगेसर तेडीया जांण। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सिव ब्रह्मा विसनर कहैं, संत भरै सब साखि। रांम नांम एकौ भला, हरीया हिरदै राखि। —अनुभववांणी

उ०—३ विवध सासत्र रा जांणणहार त्रिकाळदरसी इसा स्त्री ब्रह्माजी कनै सिधाइजै दरद सुणाईजै, कहै तिकां विध कीजै असुर बिहंडीजै, क्रीत्त कांनै सुणीजै। —मा. वचनिका

उ०—४ हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या ब्रह-स्पति तणी, प्रतिग्या फरूसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दांन बलि तणउं, अवस्टभ मेरु तणउ, गरुयाई गगन तणी, तेज तु सूरच तणउं, क्षमा धरणि तणी,......... । —व. स.

ब्रह्माव—१ देखो 'ब्रह्माव' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—तिरा मात वदइ अन्य बीजा भूपति, अति ही गति दाखवइ असंत। ए ब्रह्माव उपाव आखियउ, रिख तीरइ बावउ रेंवत। —महादेव पारवती री वेलि

ब्रह्मावत - देखो 'ब्रह्मावत' (रू. भे.)

ब्रह्मावरत—देखो 'ब्रह्मावरत' (रू. भे.)

उ०—.........रत्नपुर कांमरू ओडियांण जालंधर सिंधु आरब बंगाल त्रिहुण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थान पुरासन मूलथांण मद्र अद्र अजरवेध विराट करहड वाइव हैव आरयावरत्त ब्रह्मावरत्त त्रिगरत्त प्रमुति देसा। —व. स.

ब्रह्मावरि—देखो 'ब्रह्मावरि' (रू. भे.)

ब्रह्मासन—देखो 'ब्रह्मासन' (रू. भे.)

ब्रह्मास्त्र - देखो 'ब्रह्मास्त्र' (रू. भे.)

ब्रांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—कनवज पारस्वै महोरगढ राज करता, तिण आपरौ गुरुगो-त्राचार वीसारचौ, महापुन्यवत तिण एक ब्रांमण देरासर पूजिवा भणी राख्यौ, तिणनै घणां गांव सांसण दीना। ब्रामणां रौ वंस वधारचौ। —रा. वंसावळी

ब्रांस, ब्रांसि, ब्रांसु—१ देखो 'बांस' (रू. भे.)

उ०—उडै खग चोट धडां सू अंत, भडांचा सीस दडांची भंत। अणी सर फूटै कूंत अब्रांस, बबार बपै किरि वाजै ब्रांस। —गु. रू बं.

२ देखो 'भरोसौ' (रू. भे.)

उ०—ब्रांसि परधन को नवि ग्रहि, तिहां चुग्र युग सी विधि रहि? गौ ब्राह्मण नी पूजा घणी, वात मी तै युग तणी? —नळाख्यांन

ब्रांह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—वळै लिखी आ वात विमळ मलिनाथ ब्रांह्मण। स्री सुर मंगळ सबद आदि कहियां नह अवगुण। —सू. प्र.

ब्राचड़-सं. स्त्री.—अपभ्रंश भाषा का एक भेद विशेष जो आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रान्त में व्यवहार में आता था।

ब्राजणौ, ब्राजबौ—देखो 'विराजणौ, विराजबौ' (रू. भे.)

उ० - चढि एण विध चक्रवत्ति, तदि ब्राजियोस तखत्ति। चौसरा चमर सचार, वणि झपट वारंवार। —सू. प्र.

ब्राजणहार, हारौ (हारी), ब्राजणियौ—वि०।

ब्राजिओड़ौ, ब्राजियोड़ौ ब्राज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ब्राजीजणौ, ब्राजीजबौ—भाव वा०।

ब्राजियोड़ौ—देखो 'विराजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्राजियोड़ी)

व्रात-सं. स्त्री. [स. व्रातः] समूह, झुण्ड।

उ०—अर बरात रा प्राघुणकां नूं महानस मैं बुलाय खटरस मय नांना व्यंजना रौ व्रात पूरण त्रप्ति चखावियौ। — वं. भा.

रू. भे.—ब्रात।

व्रात्य-वि. [स. व्रात्यः] व्रत का, व्रत से सम्बन्धित।

सं. पु.—१ नीच या कमीना पुरुष।

२ शूद्र पिता एवं क्षत्रियाणी माता के संसर्ग से उत्पन्न वर्णसंकर।

३ वह ब्राह्मण जिसका समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न होने के कारण पतन हो गया हो।

४ सेना में रहने वाला, सैनिक।

उ०—नरेस देस देस के निदेस मांनतैं नहीं, थिरांन थांन थांन के जबांन जांनतै नहीं। धरा अमात्य व्रात्य मांक माक माधरैं नहीं, करोर हा अतादि आ खमां खमां करैं नहीं। —ऊ. का.

व्राळ-सं. स्त्री.—१ अग्नि शिखा, आग की लपट ।
उ०—खळ हळां चलै रळतळां खाळ, बीजळां भळां वीमळां व्राळ। गूछळां गळां गूथळां गडु, सिघळां कळां सांकळां सडु ।
—गु. रू. बं.

२ वाष्प, भाप ।

व्राहंम—देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)
उ०—अलख जिणांवे सो जगौ, न द्याजो औरां कहीं। जांह के दळ वळ एतळा 'उदा', व्राहंम सोध्यौ ही लाधौ नहीं। —ऊदौनेंण

व्राहंमण, व्राहमण, व्राहम्मण, व्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)
उ०—१ आणद लखण रोमांचित आंसू, वाचत गदगद कंठ न वर्णं। कागळ करि दीधौ करुणाकरि, तिणि तिणि हीज व्राहमण तणै।
—वेलि

उ०—२ वेदमंत्र बोलंत, वेद पाठी व्राहंमण। पहरै पट्ट अबोट, द्रव्व आपै घण सघण। —गु. रू. बं.

उ०—३ विकमाईत नांम व्राहम्मण, वूझै मंत्र कुमंत्री वंभण। अंतह करण दुरम्मति आई, वहै खुरम्मह जेठौ भाई।
—गु. रू. बं.

उ०—४ व्रह्मादिक सारीखा व्राह्मण, वयग्रह कन्हइ अनाथां नाथ। वेई जोड़ी देखतां वरावर, हथलेवइ ले दीधउ हाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

व्राह्मणी—देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे.)

व्राह्मी—देखो 'ब्राह्मी' (रू. भे.)

व्रिंद—देखो 'व्रंद' (रू. भे.)
उ०—सिध थया रिखि काज सहि, वध किआ खळ व्रिंद।
—रांमरासौ

व्रिंदा—देखो 'व्रंदा' (रू. भे.)

व्रिंदारक—देखो 'व्रंदारक' (रू. भे.)

व्रिकोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे.)

व्रिक्ख, व्रिख-सं. पु.—१ जल, वारि।
२ देखो 'व्रक' (रू. भे.)
३ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)
उ०—१ ऐहा जोध वहसिया आया, काजळ मसि (क) वरनी काया। माथै छत्रस ऊजळ दीठा, वळियै व्रिक्ख किरि हंस बयठा।
—गु. रू. बं.

उ०—२ जड ऊवड व्रिक्ख पडंत जुआ, है पाए पहाड मसट्ट हुआ। पतिसाह पयांण पुरं किय, असमांनक अस्सणि ऊलटियं।
—गु. रू. बं.

उ०—३ दळ सिणगार कहै 'गोदाउत', थिर जस अथिर कळू थावंत। व्रिख छाया आचारि खत्री वंस, पातां सूं सोभा पावंत।
—हरिरांम राठौड़ ऊहड़ रौ गीत

उ०—आकुळ थ्या लोक केहवौ अचिरज, वंछित छाया ए विहित। सरण हेम दिसि लीधौ सूरिज, सूरिज ही व्रिख आस्रित। —वेलि
४ देखो 'व्रख' (रू. भे.)
५ देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)
६ देखो 'वरस' (रू. भे.)
७ देखो 'विस' (रू. भे.)

व्रिखभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)
उ०—वांणिज विण साह, सहर हाटां विण, जळ विण गांव वसै जेहड़ौ। विण गायां व्रिखभ, सभा पंडित विण, महमा तीरथ नेहड़ौ। —त्याग-प्रसंसा रौ गीत

उ०—२ काइरै भैरस वीभच्छरस किआ। सुरै सांतरस अदभुतरस किआ। दूणिआं करुणारस किआ। वैकुंठ सूं लिखमी सहित आप विसन गुरड़ चढि आया। कविळास सूं सिधवाहणी चंडी सहित ईसर व्रिखभ चढि आया। —र. वचनिका

व्रिखवात—देखो 'व्रखवात' (रू. भे.) (अ. मा.)

व्रिखसेण, व्रिखसेन—देखो 'व्रखसेण' (रू. भे.)

व्रिख—१ देखो 'व्रक' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रख' (रू. भे.)
३ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)
४ देखो 'वरस' (रू. भे.)
५ देखो 'विस' (रू. भे.)

व्रिज, व्रिज्ज—देखो 'व्रज' (रू. भे.)
उ०—अगम पंथ इण इसक रौ, निभै ठाकुरै नांहि। डग ग्वाळणियां डौलियौ, सुरपुरपत व्रिज मांहि। —र. हमीर

व्रित—१ देखो 'व्रत' (रू. भे.)
२ देखो 'व्रत्त' (रू. भे.)

व्रिति, व्रिती, व्रित्ति, व्रित्ती—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

व्रिया—देखो 'व्रथा' (रू. भे.)
उ०—वकै वयण लंकेस विभीखण, म्है तौ भुजवळ मिता। वांणी व्रिथा हुवै रे वीरा, चित अधकांणी चिंता। —र. रू.

व्रिद—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)
उ०—गुण जांणग लाखौ खत्रीआं गुर, असि दातार अभिनमौ आंमुर। धरती पछिमी करामति धारी, भूपां रूप लियै व्रिद भारी।
—ल. पिं.

२ देखो 'व्रद्ध' (रू. भे.)

व्रिदि, व्रिदी—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)
उ०—तुं सां व्रह्म विसन ही तरिया, तैं उर ऊपरि मांणस धरियां। तैं पावइं बड़ा व्रिदि पाया, तैं जगदीस जिसा नर जाया। —पी. ग्रं.
३ देखो 'व्रद्धि' (रू. भे.)

व्रिद्द—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—९ घेरो नेन्हो होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पै'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर रो माथो बाढ नांख्यो। दुस्मियां रै मन चींती व्ही। —अमरचूंनड़ी

उ०—१० जिण दिन सूं म्हूँ इणरी मां नै खांधै चढायनै आयो हूं, उण दिन सूं लगायनै आज दिन तांई ओ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री बाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलाई व्हो। पण इणरै जावण मैं जेज नीं व्है।

—अमरचूंनड़ी

उ०—११ तनक सुधा लिय अमर तन, पारस अय परसंत। व्है कंचण इण दुख हरण, द्रग 'प्रताप' दरसंत। —जैतदांन बारहठ

उ०—१२ इण उपरांत ई' हसनै बोल्या—वौ रोज गावौ जिकौ चाकरी वाळौ गीत तौ एकर सुणाय दौ नीं लाडू। आज तौ म्हूं साचांणी चाकरी माथै वहिर व्हियो हूं।

—अमरचूनड़ी

उ०—१३ सिळह भडां व्है कंजमां, गुडि पाखर गजथट्ट। सूं बाधौ दखणादि दळ, राठोडै, रिणवट्ट। —गु. रू. बं.

उ०—१४ म्हनै तो हाल तांई भरोसो नीं व्है कै ओ सपनो है कै साच है म्हारी लाडल बेटी थूं दुहाग री चिंता मत करज्यै। राजावां रा तो अै थाट व्हिया करै। —फुलवाड़ी

उ०—१५ कह्यौ—म्हैं तौ इत्ता बरस जांणतौ कै म्हारा सूं वत्तौ विडरूप उणियारौ इण दुनियां मैं भवै ई कोई व्हैला। पण आज म्हारौ भरम मिट्यौ। अैड़ी खुमी तौ आज पै'ली किणी रूपाळां सूं रूपाळां राजकंवर नै ई नीं व्ही व्हैलो। —फुलवाड़ी

२ देखो वहणौ, वहबो' (रू. भे.)

व्हैणहार, हारौ (हारी), व्हैणियौ—वि०।

व्हियोड़ो, व्हैयोड़ो—भू० का० कृ०।

व्हैईजणौ, व्हैईजबो—भाव वा०।

व्हैयोड़ो—१ देखो होयोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्हैयोड़ी)

—